स्वस्ति श्रीयुतमहाराजाधिराजकाशीराज

श्रीउदितनारायणस्याज्ञया

श्रीगोकुलनाथकविना

संग्रहीतभाषामहाभारतदर्पणस्य

आदिपर्व सभापर्व च

कलिकातामहानगरे शास्त्रप्रकाशमुद्रायन्त्रे

श्रीलक्ष्मीनारायणपण्डितेन

शोधितं मुद्रितञ्च

शकाब्दाः १७५१ सम्वत् १८८६

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ महाभारतदर्पण ॥

॥ *❦* ॥ आदिपर्वदर्पणः ॥ *❦* ॥

॥ *❦* ॥ दोहा ॥ *❦* ॥

चिन्तामणि गणनाथके चिन्तामणिसें पाय । दरसत बरषत मोदघन बिघनवृन्द मिटि जाय ॥
श्रीगुरुचरण सरोजसें ओज भरे अभिराम । दाता चारो फलनके कलकमलाके धाम ॥
श्रीनन्दनन्दनके चरण वारिज वरण अमन्द । कामद जनमन मधुप के भरे मोद मकरन्द ॥
अर्थलोभ भारतसमुद मै करिहलों बिचार । भवसागर तारण बिरद प्रभु करि देहैं पार ॥
सर्बबीज अरु सर्बमय सबमे व्यापक ईश । न्यामक प्रभु यह कार्य्य सिधि करि हैं बिस्वेबीश ॥
सुनि द्विप की प्रहलाद को द्रुपदसुता की गोर । जाने प्रभु करुणाउदधि हैं व्यापक सबठौर ॥
कौरवके पक्षी प्रवल जादर नार्णवसार । तहं पांडवपैं करि क्रिपा हरि धीवर किय पार ॥
मंगल मूरति रामप्रिय पौन कुमारहि ध्याय । भारतार्थ दर्पण कियो चाहों जगसुखदाय ॥
नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचौं भारत भाषा सौमि ॥
सियाराम अभिराम रतिकामजैन गुणधाम । कामद काम सकामके स्वय अकामके काम ॥
अलप सरित समजे तरे जलनिधि अगम अपार । ते यहि भारत शब्दनिधि के मोहि करि हैं पार ॥

॥ *❦* ॥ सोरठा ॥ *❦* ॥

मोरमुकुट वनमाल । धरे पीतपट श्यामघन ॥ श्रीजसुमतिको लाल । कृपासिन्धु आनन्द घन ॥

॥ *❦* ॥ दोहा ॥ *❦* ॥

सौतिक पौराणिक गए परम नैमिषारन्य । सत्र जज्ञ जहं करतहें सौनक सह ऋषिधन्य ॥

॥ *❦* ॥ चौपाई ॥ *❦* ॥

सुखासीन ऋषिवृन्द निहारे । अति तीक्षण तपतेज सभारे ॥ सविनय तिन्हें दंडवत करिकै । कुसल प्रश्न बूझे मुद भरिकै ॥ मुनिन सूतको पूजन कीन्हों । प्रेम मए शुचि आसन दीन्हों ॥

विनय नम्र मुनिचरण निहारी । आसन पैं बैठे मुदधारी ॥ गतश्रम सूत पुचकांहं देखे । तब प्रस्ताव मुनिन अवरेखे ॥ कथा शुननकी इच्छा राखे । मधुर बचन शौनक ऋषि भाखे ॥ सूत कहौ तुम कितसों आए । करत बिहार रहे कंह भाए ॥ यह बिरतांत विहित विधि भाषो । चाहत बचन सुधारस चाषो ॥ शुनि यह सौनकऋषि की बानी । बोले सूत पूत बरज्ञानी ॥ सर्प सत्र जनमेजय कीन्हें । पिता बैर सर्पनसों लीन्हें ॥ तहं बैसंपायन मुनिज्ञानी । कथा व्यासकी विविधि बखानी ॥ लहें व्यासकी आज्ञा नीकी । कहत रहे सुखदाइनि जीकी ॥ सो शुनि हौं लहि आनद भारी । कुरुक्षेत्र हूं गे सुखकारी ॥ कुरुक्षेत्रसों इत चलि आए । तुम्है देखि अति आनद पाए ॥ अनुकंपा करि देऊ देशा । सो हम कहैं करैं शुभभेशा ॥ यह शुनि शौनक मुनिवर बोले । परमानन्द बिदित जो सोले ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैसंपायन कहत हें जनमेजयसों जोंन । पावनकर इतिहास मोहि सु मुनि शुनावऊ तोंन ॥
जो बेदार्थमयो बिदित अरु पुराणमय चारु । भारताख्य भवभयहरण मंगलकरण उदारु ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

शौनक ऋषिके बैन । शुनि सौतिक अति मोद लहि ॥ मुद मंगलको ऐन । कहनलगे इतिहास बर ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

मंगलदायक मंगल रूप । बिष्णुबरेन्य सु अनघ अनूप ॥
हृषीकेश जगत गुरु ताहि । नमस्कार करि हिए सराहि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्रह्म असत सत पर कहत विविधि सकल मतिमान । असत अगोचर कहत हैं गोचर सत गुणमान ॥
पर निर्गुणसों कहत हैं जो भवलयको स्थान । ब्रह्मादिक कारण असत कहियतु करि अनुमान ॥
[illegible] सो सत कहैं भयो सु ब्रह्म अनूप । ताके दोय बिधानहैं असत और सतरूप ॥
ज्ञान दृष्टितें असत [illegible] जाने ब्रह्मसरूप । हैं व्यवहार विचारतें सांचो जगत अनूप ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सुमत्र व्यासको मत अनुराग । जो हम शुने मोदसों पागि ॥ परम पूत भवसागर पार । शुने शुनाएँ [illegible] उदारु ॥ यह इतिहास व्यासकृत चारु । त्रिभुवन पावन करण उदारु ॥ शब्द अलंकृत छन्द [illegible] इतिहास बिदुषप्रिय एक ॥ जग उतपत्ति प्रथम शुनिलेऊ । फिरि शुनियो इतिहास [illegible] ॥ [illegible] अन्ध तमसमय लोक । रह्यो भयो जिमि अञ्जन थोक ॥ तहं ईश्वर ईहा [illegible] एक अंड उदार ॥ सो युगादि कारण रमनीय । अव्यय जोतिमयो कमनीय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो वह अंड अनूप अति जगत बीज अभिराम। जोतिमयो तामै भयो ब्रह्म सनातन आम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ब्रह्मा बिष्णु रुद्र मनु जातें। भे परमेष्टि प्रचेतस तातें ॥ दत्त दत्तसुत मुनि मिलि गाए। भए प्रजापति एकइस आए ॥ सृष्टिकार हैं एते गुनिए। यह बिभूति ब्रह्माकी गुनिए ॥ नाना तनुधर विष्णु सुहाए। वेद बिद्रुष मुनि ऋषि गए गाए ॥ अरु आदित्य सुबिश्वेदेवा। भए अश्वनी कुवर सुभेवा ॥ हैं जगपालन करता एते। हैं ए विष्णु बिभूति सचेते ॥ यत्त साध्य अरु पितर पिशाचे। गुह्यक भूरि गुह्य गुणराचे ॥ एते नाशकारहैं जानो। शंकरकी बिभूति अनुमानो ॥ बाइस भए ब्रह्म ऋषि ताते। भए राजऋषि बहुगुण राते ॥ आप नभ भू शिखि मारुत आसा। संवतसर अरु षट् ऋतु मासा ॥ निशि दिन पत्त अशित शित दोऊ। भए अंडतें अकथित सोऊ ॥ तैंतिसदेव प्रथमही जाए। तातें तैंतिस शत छबिछाए ॥ तैंतिस सहस प्रगट भे तातें। जोति रूप बर भरे प्रभातें ॥ दिव पुत्र अरु बृहद्भानु बर। रबि अरु चत्तु रिचीक उग्रकर ॥ भानु बिभावसु अर्क सुफबिता ॥ अरु आसावह सुन्दर सबिता ॥ आत्माअरु मह्यक लवु ए हैं। द्वादश रबि अतितेज मएहैं ॥ सेष्ट सबनमें मह्य कहाए। देवभ्राट सुत ताके जाए ॥ भे सुभ्राट तनय फिरि ताके। रहे प्रबीण तीन सुत जाके ॥ दशज्योतिस शतजोति सोहाए। सहस जोति अतिभासे भाए ॥ *❧*❧*❧

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दशज्योतिसके दश सहस सतज्योतिसके लत्त। सहसजोतिके लाख दश भए पुत्र अति दत्त॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तिनहीसों कुरुवंश भयोहै। अरु यदुवंश प्रसंश भयोहै ॥ इत्त्वाकुजजाति वंशभोनीके। तिन्हतें भरत वंश जुतसीके ॥ राज ऋषिनको अन्वय जैसो। तीरसिन्धुतें *निशिपति जैसो* ॥ दिव्यदृष्टिसों याकों जानो। यातें श्रीमुनि व्यास बखानो ॥ *नित्यवेद*की व्याख्या करिकै। मुनि तप ब्रह्मचर्य ब्रत धरिकै ॥ यह इतिहास पुण्यमय कीन्हे। सत्यवती सुत आनद लीन्हे ॥ चिन्ता भई व्यासके जैसें। विनालिखें पढिहैं कोउ कैसें ॥ व्यासचित्तकी चिन्ता जानी। तहं आए बिधि मंगल दानी ॥ व्यास निरखि ब्रह्मा इत आए। लहि बिसमय आनदसों छाए॥ साञ्जलि दंड प्रणामहि कीन्हे। मुनिन सहितचलि आसन दीन्हे॥ ब्रह्माकी आज्ञा मुनि लहिकै। मुनिन सहित बैठे सुद गहिकै॥ बिधिके आसन ढिग मुनि वैसे। बोले बिहंसि बचन बर ऐसे ॥ ब्रह्मन् यह मैं काव्य करोहै। श्रुति रहस्य उपनिषद भरोहै॥ सृति इतिहास भरो सब यामे। तीनि कालको है बिधि जामे॥ भारताख्य राब

अघतमहारी । राकाशशि श्रुतिज्योत्स्नाधारी ॥ नरमन कुमुद समुदकर भासक । भारत दीपजाड्य तम नाशक ॥ हैं अतिप्रियबिदुषनको जानो । बिस्तर बिधि संक्षेपित मानो ॥ *❦*❦**❦

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जरा व्याधि भय मृत्यु लय बिबिध कर्म व्यवहार । चारि बर्ण बिधि धर्म अरु ब्रह्मचर्य्य तप सार ॥
चन्द्र सूर्य्य भूपालको सह संक्षेप पसार । बरणो या इतिहासमे रहस्य अदृश्य अपार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ग्रह नक्षत्र तारा युग केरो । वर प्रमाण जेहि कह्यो निबेरो ॥ वेद पुराण शास्त्र सब जेहैं ॥ यामे ग्रथित कथित सब तेहैं ॥ तीरथ वन गिरि सागर सरिता । बरणि कहे सहदेश सचरिता ॥ धनु वेदोक्त शस्त्रविधि नीकी । यामे सुखदा भट सुमतीकी ॥ प्रभु याके लिखिवेके जोगू । लेखकसों नहि होत संजोगू ॥ सो यह मो हिय चिन्ताभारी । करैं कहासो कहहु बिचारी ॥ व्यास बचन सुनिकै बिधि सानद । कहो गुणज्ञ गुणीके मानद ॥ तुम कहँ तप वरिष्ठ मुनिगण मै । व्यास श्रेष्ठ हम जाने मनमै ॥ वेदवादिनी बाणी याकी । जग सुखदायिनि भामिनि म्हाकी ॥ काव्य कहत तुम तातें ज्ञानी । व्हैहै ख्याति काव्य सुखदानी ॥ अब यह काव्य लिखनके कारज । सुमिरहु शुभद गणपति हि आरज ॥ यह कहि गे बेधा निजधामा । शुभदहि सुमिरे सुमुनि सकामा ॥ सुमिरतही गणपति तहँ आए । पेखतही मुनि आनद पाए ॥ सबिधि पूजि दै सुरुचि सु आसन । बोले व्यास पाइ अनुशासन ॥ हों भारत कलपित करिराख्यो । तेहि लिखिबे हित चाहत भाख्यो ॥ करि अनुकंपा सहित सनेहू । जग उपकार हेत लिखि देहू ॥ तुमतें और देव यहि लायक । हैन कहा मानुषचितचायक ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो सुनि कहो गणाधिपति सुनिए आनद मौन । तौ लिखिहौं मम लेखणी थिरता पावै जौन ॥
वचन दीन्हे व्यास मुनि अर्थ समुझि सुखदानि । लिखियो आपु प्रबंधके लिखिबे मै दृढ़जानि ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

इमि निबन्ध अमन्दमति करि अमल आनदकन्द । तेहि लिखावन लगे लिखन सुसरुचि सौं शुभछन्द ॥ धन्य बकता धन्य लेखक धन्य जे जन और । सुनत हैं अरु लिखतहैं वह बैठिके जेहि ठौर ॥ ठौर ठौरसगौर भाषे कूट बुधिवर व्यास । तिन्है सुनि गणनाथ [illegible]लौं करैं अर्थ विलास ॥ कहत तौलौं कवित कितने नए व्यास सुजान । प्रेम नेम सुछेम [illegible] लिखि लिखाइ सुजान ॥ भारत पारावारके भे पार अपर अपार । विबुध मानव [illegible] करैं विविध बिहार ॥ मन मरजि अहि ज्ञान संपुटमे प्रबेसि सजन्त । स्वगुण [illegible] गहि [illegible] तामे लहैं जन मुदरन्त ॥ सहस अष्ट अपुर्ब अरु शत अष्ट बिशद बिशेश ।

कूट बिरचे भौंर सम तहं व्याससुमुनि सुभेव॥ तासु अर्थ अभोव जानैं व्यास कै शुकदेव। जाहि जानत हैंनहें धौंसञ्जयो शुभभेव ॥*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भारताख्य सो वृक्षबर ताप नेवारण हार। पावन उपकारक बिसद अति रमणीय उदार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बीज प्रथम अध्याय बखानो। पौलोमास्तिक मूल सुमानो ॥ संभवपर्व स्कंद सुढारो। सभा अरण्य सुकोटर भारो॥ अरणी पूर्व रूपहैं जानो। अरु विराट उद्योग महानो॥ मोंज्जा तासु व्यासमुनि भाखा। भीषमपर्व महा है शाखा॥ पत्र सुद्रोणपर्व है ताको। शल्यपर्वसे गंध प्रभाको॥ स्त्रीपर्व तासह है छाया।शांतिपर्व फल तासु सुहाया॥ अश्वमेधसें रस नीकेको। आश्रमवास थान नीचेको॥ मूसलपर्व महाप्रस्थानो। स्वर्गारोहणपर्व सुठानो॥ एतीनो है तासु महानी। शाखा श्री मुनिव्यास बखानी॥ परम अछेद्य स्वादसें पूरो। धर्म भरो रसमय अतिरूरो॥ सांतन नृपके सुवन सोहाए। गंगाके गर्भज गुणगाए॥ भीषम अरुहैं दूजी तियके। दोय सुवन अति सूधे हियके॥ चित्रवीर्य अति सुषमा गेहू। अरु चित्रांगद मुनि सुनिलेहू॥ तिन तियलहि नहि सुत उपजाए। क्रमतें तन तजि सुरपुर पाए॥ तब माताकी आज्ञा लहिकै। भीषम मत संतति हित गहिकै॥ तिनबंधुनकी तियहीं तिनमै। किए व्यासमुनि सुवन सुदिनमै॥ ते धृतराष्ट्र पांडु गुण गाए।और विदुर ए क्रमसें जाए॥ एसब करि जब भूमिबिलासा। कीन्हे जाइ स्वर्गमै बासा॥ कियो भार्त तब प्रगट सुहायो। शुकाचार्जकहं प्रथम पढायो॥ फिरि वैसंपायनहि पढायो। तिन जनमेजय नृपहि सुनायो॥ साठिलाख सुश्लोक सोहाए। रचि भारत मुनि आनद छाए॥ पंद्रहलाख पितर गए लीन्हे। तीसलाख देवन कह दीन्हे॥ चौदहलाख गंधर्वन पाए। एकलाख लहि मानव भाए॥ है चौवीससहस यह भारत। बिन इतिहास सुनोमे भारत॥ नारदसें सुनि सुर सुख पावैं। सित देवल पितरनहि सुनावैं॥शुक गन्धर्व यक्ष रक्षन कौं। वैसंपायन नरलक्षनको॥ क्रोधमयो दूर्योधन शाषी। शाखा प्रथम कर्णमति साषी॥ शकुनि शल्प शाखासम हेहैं। दुस्सासन फल फूल कहे हैं॥*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मूल नृपति धृतराष्टहैं जाके मतसें नास। नृपगण पत्ती और सब धरैं बीर बिलास॥

युधिष्ठिर तरु स्कन्द नर शाखा भीम सुपर्म। माद्रीसुत फलफूलहैं कृष्ण सुमूल सधर्म॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

पंडु देशबऊ बधिवल जीते। बसे बिपिनि मृगयारस प्रीते॥ मृगा मृगीन्हि मुनि सुखरासी। रमतरहे जहं बिपिनि बिलासी॥ बिनुजाने नृप तिनकंह मारे। मरण समै मुनि सापउचारे॥ जब

तुम करिहो सुरति विहारा । होइहि तबहीं मरण तुह्मारा ॥ सो सुनि नृपति पांडु भय पागा । चिन्ति विहार तरुणीको त्यागे ॥ वंशोत्पत्ति हित ताकी नारी । पतिकीआज्ञा पाय सुढारी ॥ मंत्र जाप सो विधिवत कीन्हों । बालापनमें जो मुनि दीन्हों ॥ धर्म वायु सुरपति तंह आए । अरु नासत्य धरन मुदछाए ॥ तीनि दोय सुत दोऊ रानी ॥ तिनसों लही सरस सुखदानी ॥ मोहित व्है नृप पांडु सुखारे । तिय विहारकरि स्वर्ग सिधारे ॥ सुनि सान्तनसों रक्षित व्हैकै ॥ बरधित भे ते सुत गुण ब्वैकै ॥ तिन्हकहं लै आनदसों छाए । ऋषि धृतराष्ट्र भूप पंह आए ॥ एसुत पांडुभूपके पांचो । इन्हैं देखि अतिसुखहों रांचो ॥ वचन हमारि असंसय जानो । निज पुत्रनसम इनकह मानो ॥ इमि कहिकै मुनि बिपिनि सिधारे । नृपसहस्य जे हैं हित भारे ॥ मुनिके कहे पांडु सुत जानी । पुलके साधु पौर बुधज्ञानी ॥ दुष्टकहैं ए पांडव है ना । जिनके भरे द्रोहसां नैना ॥ अतिशै शब्द गगणने पूरो । शंख दुंदुभी धुनिमय रूरो ॥ पऊचत तिन्हैं पुष्पजर लागी । अतिसुगन्ध जय जय धुनि पागी ॥ अद्भुत देखि स्वजन मुद पागे । वेद शास्त्र तिनपढे सुभागे ॥ निर्भय बसे पांडुसुत तेही ॥ भीष्म पिता मह कौरव जेही ॥ धर्मराजकी शुचिता देखे । भीमसेनको धीरज पखे ॥ पारथ विक्रम अतुल निहारे । माद्रेयनकी विनय विचारे ॥ पंडु सुतनके ए गुण हेरे । लहि संतोष प्रजा मुदघेरे ॥ नृप समुदाय स्वयंबर जेहां । अर्जुन लहीं द्रौपदी तेहां ॥ पार्थजीति चऊदिशिको राजा । ल्याये सुधन धर्मसखकाजा ॥ भीम कृष्णसों नयवल पाए । जरासंध हति नृपधन ल्याए ॥ तासों राजसूयविधि साधी । दीन जननकी बिपदा बाधी ॥ बिदाहोन दुर्योधन आए । करे भूप आदर अतिभाए ॥ हेम रत्न हय गज मदभारे । पूजनकरि दिय धर्म सवांरे ॥ धर्मराजकी लखि औगाढी । दुर्योधन हिय ईर्षा बाढी ॥ प्रतिमविमान सभागृह भाको । लखन गयोदुर्योधन वाको ॥ जंह जल तहां अजलक्षिति देखी । गिरे भूप अतिसै भ्रमभेखी ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हंसे भीम लखिकै हिए बाढो कोप महान । दुर्योधन घरकों गए धरें महल अपमान ॥
कह्यो जाइ धृतराष्ट्रसों भयो जो तहं अपमान । करो बृकोदर हास्य जो सोहिं कृष्णमहान् ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

द्यूत जाय फिरि छलमय कीन्हें ॥ सरबस जीति धर्मसों लीन्हें ॥ यह सुनि कृष्ण कोप अति धारे । बनकों गए धर्म सब हारे ॥ द्यूतमंत्रमें भीष्मादि नाथो । बिदुर द्रोण कृपसों नहि भाषो ॥ क्षत्री भूप युद्धमे मारे । पांडव जीते कौरव हारे ॥ नृपसह कर्ण मंत्र जो कीन्हों । सकुनि समेत जानि सो लीन्हों ॥ बडोबेर धृतराष्ट्र बिचारे । सञ्जयसों बोले दुखभारे ॥ सञ्जय अजस देऊ मति मोकों । सत्यबचन भाषतहों तोकों ॥ विग्रह कुल क्षय मोहिन भाई । पुत्र पांडवन सों न जुदाई ॥ करे असूया

पुत्र हमारे । वृद्ध अंध गुणि रिसिसो भारे ॥ राज सूयमें पांडव ओसो । सभासदनमें भीम आं
हंसो सो ॥ देखि हिएमें अति रिस भारा । मारण मरण कुमंत्र बिचारा ॥ सकुनि द्यूतछल मंत्र
जु दीन्हो । सो हम संजय जानि सु लीन्हो ॥ तब तुम ज्ञान चक्षु सोहि जानो । मेरी कही सुनो
सति मानो ॥ लक्षबेध जब अर्जुन कीन्हो । भूपनजीति द्रौपदिहि लीन्हो ॥ हरी सुभद्रा द्वार
बतते । अर्जुन यादव कोउन जीते ॥ बरिसि इंद्रसह देव न हारे । अर्जुन खांडव बन बर जारे ॥
लाक्षा गृहमें जरे न कोऊ । कुन्ती सहित निकसिगे सोऊ ॥ द्रुपद भए सह पुत्र सहाई । पांडव संग
समर सुखदाई ॥ जरासंध भुज बलतें भारो । भीमसेन अति बल तेहि मारो ॥ भूमिपाल अर्जुन
सबजीते। राजसूयमख कियो बिनीते ॥ सुनो सुनी ए बातें जबहीं। निजसुत हारि गुणी हम तबहीं॥
जब द्रौपदी सभामंह आनी । दुस्सासन गहि दुष्ट अज्ञानी ॥ खैंचत चीर अन्त नहि पायो । नाश
होनको बीज जमायो ॥ सहित सहस्रन ऋषि बनचारी। धर्मराज बन बसे बिहारी॥ शंभु किरात
रूपधरि आए। अर्जुनसंग समरसुख पाए॥ पशुपति अस्त्रदियो हित हेते । अपनो अपनो दिगपति
जेते॥ दिवमधि दिव्य अस्त्र सब सीखे । पार्थ अमोघ इंद्र जे लीखे ॥ अर्जुन कालकेय सब मारे।
देवनसों जे कबऊ न हारे ॥अर्जुन असुर जीति फिरि आए। सुरपुरतें अति आनद छाए ॥ भीमसेन
गंधर्वन जीते । मिले कुबेर आइ अति प्रीते ॥ दुर्योधन बन बिहरन हेंगे। तिन्हें बांधि गंधर्व सु लेंगे ॥
कर्ण सलाह कुपथ मनरोचे । अर्जुन कृपा सहित तब मोचे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यक्ष रूप धरि धर्मजब पूछे प्रश्न सुचारि । धर्मराज बिधि बतदए उत्तर परम सुधारि॥
ए बातें जबही सुमन तबही लीन्ही जानि । हारि आपने सुतनकी संजय दृढ अनुमानि॥

॥*॥ चौपाई ॥*॥

कन्यारत्न मत्सपति दीन्ही। पुत्र हेत अर्जुन सो लीन्ही ॥ निर्जित निधनी बिपिनि सिधारे।पांडु
पुत्र बिपदाके मारे॥ सप्ताक्षोहिनि दल तिन जोरे। गज रथ पत्ति पबन गति थोरे॥ माधव सकल
जगतके स्वामी। सो सहाय पाण्डव अनुगामी ॥ कृष्णार्जुन नररूप बिहारी । नारायण नरमें असु
रारी॥ नारद मुनि हमसों जब भाखी । जयकी आशा तब हम नाखी ॥ जब श्रीकृष्ण लोक हित
आए। करि सलाह चहि कलह मिटाए ॥ तब दुर्योधन कर्ण बिचारो । इन्हें पकरि कारागृह
डारो॥ तब हरि रुप अनन्त देखायो।जय इच्छा हम तबहि नशायो॥ जब श्रीकृष्ण चले रथ आगे।
दृग जल भरे महा दुख पागे॥ देखि प्रथाको क्षमा करायो। तब हम अजय अजाचित पायो॥ सुनो
कृष्णजब मंत्री कीन्हे। भीष्म द्रोण कृप आशिष दीन्हे॥ अनुचित कर्ण भीष्मसों बोलो। युद्ध करत
रहिहौ तुम जौलों॥ हों नहि तबलों धनुष गहोंगो । निकट चमूके खरो रहोंगो ॥ अर्जुन धनु

आं पं गांडीव मुरारी। तीनि एकत्र परम जयकारी ॥ जब अर्जुन यह मनमे चीत । गुरगण गोत्र बधें का जीते॥ रथके ढिग पारथ भे ठाढे। भरें हिए करुणा रस गाढे ॥ हरि बिराटन्है तिन्है दिखा यो। मिटी भ्रांति अर्जुन नर आयो ॥ दश हजार रथ नित्य संघारे। पुरुष प्रधान भीष्म नहि मारे॥ तब हीं जयकी आशा गई। और सुनऊ संजय बिधि नई ॥ मृत्यु मांगि भीषम तन त्यागे। पांडु पुत्र देखत मुद पागे ॥ अर्जुन करि शिखण्डिहि आगे। लरे भीस्म तब धनु शर त्यागे ॥ अर्जुन सरन मारि छिति डारे। कौन भांति जय लहहिं हमारे ॥ अर्जुन हनि सरसज्या डारे। भीषम सोमक सकल संघारे॥ भीषम समर गिरे जबमागे। मो सुत देन सलिल तब लागे॥ नूतन पियो चहत हो पानि। ठगि सब रहे सुनत यहबानि ॥ धरनी बेध धनंजय कीन्हों। कढी धार भीषम मुख लीन्हों॥ यह सुनि जयको आशा भागी। संजय सुनऊ और मुदपागी ॥ पांडव सैन प्रिष्टितें धावै। बायु हमारे सन्मुख आवै॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दुर्योधनकी सैन मे शब्द शिवाको नित्य ॥ होय तहां संजय सुनो जयको कौन निमित्य ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

द्रोण बिबिधिबिधि अस्त्रन डारे। पुरुषप्रधान एक न हि मारे॥ सप्तक साठिहजार निपाते। अर्जुन चहत ताहिते घाते ॥ द्रोण व्यूह रचना करि लीन्ही। रक्षक तंह कर्णादिक कीन्ही॥ शिशु अभिमन्यु भेदि गो सोई। रोंकन जोग भयो नहि कोई॥ सबहिन घेरि एकसो मारो। तब जाना दुर्योधन हारो ॥ अभिमन्यु बिरथ एकाकी बारो। चारो महारथिन मिलि मारो॥ महाक्रोध अर्जुन गहि लीन्हो। सैंधवके बधको पन कीन्हो॥ सो करि सत्य जयद्रथ मारो। कहो ताहि को जीतन हारो ॥ तेहि दिनके रणमे स्रम भारे। रथ हय चारो भए त्रिषारे ॥ रथतें उतरि पार्थ रणबाढो। सरसों बेधि भूमिजल काढा ॥ प्याय तुरगंजल रथपर चढे। तिनसों जय चाहत अनपढे॥ सात्युकि द्रोण चमूकों भेदे। कृसार्जुन पैं गए अखेदे ॥ करण सरनसों भीमहि मारो। करिकै बिरथ भूमिमे डारो ॥ बध नहि कियो कटुक बक्र भाषे। यह सुनि हृत जयेक्षा नाषे ॥ द्रोण करण कृप अरु कृतबर्मा। द्रोणतने रणबिदरण कर्मा॥ ईनकों जीति जयद्रथ मारे। अर्जुन पास कृष्ण रखवारे ॥ देवराज जो शक्ति दईही। अति अमोघ सो कर्ण लईही॥ बासुदेव सो ब्यर्थ कराई। कर्णहिडंब हनो भयपाई॥ अर्जुन समर अबध्यविचारो। संजय जय ईक्षा तब डारो॥ धृष्टद्युम्न द्रोण कंह मारे। करि अधर्म बिन शस्त्र निहारे ॥ अति रथ अस्वत्थामा तासों। नकुल लरत बलभरे महासों ॥ नारायण अस्त्रउग्र तब डारो। ताहूं पांडव एक न मारो ॥ दुस्सासन कों भीम पछारो। पियो रकत तंह काऊन बारो॥ महा सूर जब कर्णहि मारो। अर्जुन तबहि जयेच्छा डारो॥ द्रोण पुत्रदुस्सासन साथी। कृतबर्म्मा रचि समर प्रमाथी॥ लरिकै धर्मराजसों

हारो।जय इच्छा हम तबहीं डारो॥धर्मराज जब शल्यहि मारो। जय बिचार हम तबहीं डारो॥ बिग्रह सूत मूल शकुनी को। सहदेव बधि किय सुचित सुहोको॥ एकाकी दुरयोधन गोए। ह्रदमें जलस्तंभन करि सोए॥ कृप सहित पांडव गे तेहां। दुर्योधन हो जलमे जेहां॥ कर्षण धर्षण बचन सुनायो। क्रोध भरो कढि बाहेर आयो॥ *॰*॰*॰*॰*॰*॰*॰*॰*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गदायुद्ध भो भीमको संग्या दई बताय। छल हनो तब जांघमे गिरे भूमि पै हाय॥
संजय तब सिगरी गई जयकी आशा छूटि।अन्ध दीन मेरे लए शत सुत बिधिने लूटि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कृप अश्वत्थामा कृतवर्मा। ए तीनो अति कुत्सितकर्मा॥ तनै द्रौपदीके सुकुमारे। सोवत रहे पांच इनमारे॥ अनुचित बंशनाश इन कीन्हों। महा अजश जगतीमे लीन्हों॥ ब्रह्मास्त्र गर्भ पातनको कारो। गर्भमाहं डारो अबिचारी॥ निज प्रभावसों अस्त्र नशाए। हरि हित कार उत राहि बजाए॥ भीम क्रोध अतिसैसों पागो। पीछे द्रोण तनैंके लागो॥ फिरि ब्रह्मास्त्र पार्थपर डारो। अस्त्र अस्त्रसों पार्थ संघारो॥ गहि पांचाली पैं तेहि ल्याए। शिरमडि दैकै बिपिनि सिधाए॥ यह वृतान्त सूत हम जाने। हैं अजेय पांडव अनुमाने॥ शोचन जोग भई गांधारी। पुत्र मरण सुनि दुखित बिचारी॥ दुस्तर कर्म पांडवन कीन्हां।कण्टक रहित राज्य करि लीन्हां॥ पाण्डव कृप सात्यकी बांचे। हमरे तीनि तीनि दिशि नाचे॥अष्टादश अक्षौहिणि सेना। महाबीर सब कटे रहेना॥ होत मोह अब अतिसय मोकों। संजय कहा सुनावऊं तोकों॥ यह कहि करि बिलाप अतिरोए।मूर्छित गिरे शोकसों भोए॥ संजय मरण होत तो नीको। अब जियबेको फल है फीको॥ सूतउवाच॥ यों धृतराष्ट्र कह्यो जब जागे। उत्तर देन सूत इमि लागे॥ सुनऊ भूप ए बचन हमारे। जेहें भए भूप बलभारे॥ नारद व्यास बदनतें सुनिकै। तिनकी कथा कहत हम गुणिकै॥ भए जे राज बंशमे नीके। महा धनुर्द्धर सुन्दर सीके॥ पृथ्वी जीति यज्ञ बऊकीन्हे। दान द्विजनकंह ईछित दीन्हें॥ ते सब भए कालबस जानो। तिनकी कथा कहत सति मानो॥ संजय शैव्य सुहोत्र कहेजे। रतिदेव बाल्हीक रहे जे॥ काशीबन्त दमन दुति भारे।जीति अजित नल बर बल धारे॥ बिश्वामित्र समर भूभर्त्ता। अम्बरीष मरुतौमखकर्त्ता॥ मनु इक्ष्वाकु भरत जे गाए।रामचन्द्र दशरथके जाए॥ अरु शशबिन्दुभगीरथ भाए। कार्तवीर्य सु जनमेजय गाए॥ नृप जजाति ए चौबिस नामी। नारद कहो भए दिवगामी॥ सैव्य नृपति सुतशोक सताए। भए काल बस यम पुर धाए॥ इनतें अन्य हजारन राजा। महारथी सह बिपुल समाजा॥ अब खर्बलों कितक गनावैं। आदि सृष्टिते अन्त न पावैं॥ भए कालबस जे जग जाए। नानाबिधिके करि हतभाए॥

अ०प०

*॥ दोहा ॥ *॥

परम दुरात्मा क्रोधमय लुब्ध महा दुरवृत्त । शोचन जोग्य न पुत्र तव शान्त करऊ नृप चित्त ॥
तुम श्रुति मान महान हो शास्त्राधीत कृतज्ञ । तुम्हैं मोह यह जोग्य नहिं करत मोह ते अज्ञ ॥
अकृपा कृपा दुजन पै तबहीं सो जानत मतिमान । कैसें बांचे सुवन तव होनी होति न आन ॥

॥ * ॥ चैापाई ॥ * ॥

॥चरणाकुलक॥ विधि विरचित पथ कौन नशावै।काल मूल सुख दुख मे भावै॥भूतोत्पत्ति प्रलयको कर्ता । जगत चराचर भरता हर्ता ॥ काल शुभाशुभभाव करतहैं । काल प्रजा रचि पालि हरतहैं॥ जागत काल करमको शाखी।सोवत जगत मोह रस चाखी॥ भावी भूत अरु वर्तमान जो। कालज जानि न ज्ञान त जै जो॥ सैातिरुउवाच॥धृतराष्ट्रहि संजय समुझाए।तब सोसुनि ते धीरज पाए ॥ यह उपनिषद भार्तमे भाष्यो । द्वैपायन तिन श्रुतिरस चाष्यो ॥ पुण्याध्ययन भार्तको करिहैं। ते श्रद्धालु पापनिधि तरिहैं ॥ देव देवऋषि कीर्तन लहिऐ । यामे यक्ष नाग शुचि कहिऐ ॥ पुण्यद हरिकीर्तन सों भारो । सत्य अमृत यह व्यास संवारो ॥ ब्रह्म सनातन जे ध्रुव गाए । जाकी कीर्ति कहैं मुनि भाए॥ बिश्व असत सत जातें जायो।उत्पति प्रलय प्रवृत्ति चलायो॥ निर्गुण सो अरु सबगुण जासे । ता हरिको है कीर्तन यामे ॥ जती ध्यानमें पागि बिशेषैं । हरि प्रतिबिंब आपुने देषैं॥श्रद्धा सहित भक्त जे ध्यावैं। यह अध्याय परमगति पावैं॥यह अध्याय नित्य जो कहिहैं। भारत पाठ पुण्य सो लहि हैं॥ माखन सार दहीको जैसो । चारि चरणमे ब्राह्मण तैसो ॥आरण्यक सार बेदको जानो । औषधि सार अमृत अनुमानो ॥ ऋदमे श्रेष्ठ पयोधि कहो है। पशुन मध्य ज्यों गऊ अहो है ॥ इतिहासन महं भारत तैसें।कहो व्यास मुनि पुण्यद औसें॥श्राद्ध माहि यह द्विजन सुनावैं। अक्षै तृप्ति पितरगण पावैं॥ भारत बेद पढत जो कोऊ । छुटत भ्रूणहत्यासों सोऊ ॥ यह अध्याय जो [illegible]। लहिहि पुण्य जो भार्त सरबमे ॥ भारत श्रद्धा सहित सुनै जो ॥ कीर्ति स्वर्गगति परम लहै सो॥चारोवेद एक दिसि धारो॥सुरन्ह एकदिसि भारत डारो।दोना तुला डारिकै तोले॥ महाभार्त भारी लखि बोले। पुण्य महत्व गुरुत्व बिचारो ॥ महाभार्त तब सुरन पुकारो । स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबंदीजन काशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायां भारतान्तर्गतआदिपर्वणि अनुक्रमणिकाध्यायः॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] श्याम भजु कमल नयन अभिराम।बृन्दाबन बासी श्रीराधा बसहिं जासु हियधाम॥
हे पावन [illegible] चरण सरोज निकेत। मो मन मधुकर सो बसो पाय पराग सुचेत॥ ऋषि [illegible] प्रथम कह्यो निरधारि॥ ताको बिस्तर सों कहो रहो सूत बिचारि।

॥ * ॥ सौतिरुवाच ॥ चरणाकुलक छन्द ॥ * ॥

सुनऊ विप्र सब कथा सोहाई । कहत महत अर्थनसों छाई ॥ त्रेता द्वापर संधि समैमे। परशुराम अरिक्रोध हृदयमे ॥ इकइस वार क्षत्र क्षिति मारे। करे अमूल तूल सम जारे ॥ पांच भरे सर रुधिरन्ह ताके । मध्य नहाने अति रिस छाके ॥ तंह पितरनकों तर्पण कीन्हो । पितर छचीक मोदसों लीन्हो ॥ पितर प्रतक्ष रामसों भाषे। मंगिऊ तुम बर जो अभिलाषे ॥ राम कहा पितरनसों ऐसें । भूप हने बस क्रोध अनैसें ॥ पातक यह हमकों नहि होई । पितर हमैं वर दीजै सोई ॥ ए ह्रद होंहि तीर्थ अति नीके । हरहिं पाप परसत जग जीके ॥ पितर तथास्तु कहे फिरि बोले। रहो क्षमासों चित अब तोले ॥ क्षत्रिनके रुधिरनसों भारे। ते समन्तपञ्चक निरधारे ॥ तिनके निकट देशहूं जेते । शुचि समन्तपंचक हैं तेते ॥ कलि द्वापरको अन्तर पाए। तहां लरे कुरुपाण्डव जाए ॥ महा पुण्यमय देश विचारे। मरण मुक्ति मनमे निरधारे ॥ अट्ठारह अक्षोहिणि सेना। निर्भय लरे बचे कोऊ हेना ॥ देश पुण्यमय कलुष नशावन। समन्तपञ्चक अतिहीं पावन ॥ ऋषिरुवाच । अक्षोहिणि की संख्या भाषो। मोमन सुनिबेकों अभिलाषो ॥ सौतिकउवाच ॥ गज रथ एक एक त्रय बाजी। पांच पियादे पत्ति विराजी ॥ सेना मुखत्रय पतिकों जानो। तातें त्रिगुण गुल्म अनुमानो ॥ तीनि गुल्मको गण कहवावै। गणतें त्रिगुण वाहिनी भावै ॥ पृतना तीनि वाहिनी कोहैं। चमू होति त्रय पृतना कोहैं ॥ तीनि चमू की अनीकिनी है। अनीकिनी दश गुणित गिनी है ॥ ताहि सुमति अक्षोहिणि कहहीं। संख्याते सु गणितसों लहहीं ॥ एकइस सहस सुरथ वरहाथी। वसु शत सत्तरि परम प्रमाथी ॥ एक लाख नवसहस गनाए। नर शत तीनि पंचास सहाए ॥ पैंसठि सहस होत वर बाजी। षटशत अधिक कहैं दश राजी ॥ अक्षोहिणि संख्या हैं जेती। मुनि बर कही सुनी हीं तेती ॥ सात अक्षोहिणि पाण्डव साजा। ग्यारह दुर्योधन बर राजा ॥ दश दिन भीष्म पितामह कीन्हा। युद्ध पांच दिन द्रोण प्रबीना ॥ दिवस दोय किय कर्ण लराई। दोय पहर भइ शल्य भिराई ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गदा युद्ध करि द्वै पहर दुर्योधन रण धीर। मुरछि गिरे रण भूमि पैं हनो वृकोदर वीर ॥
कृप कृतवर्मा द्रोणसुत तेहिदिन करि छल खर्व। सूतत निशिमे धर्मकी मारी सेना सर्व ॥
शौनक यह भारत कथा कही जु तुमसों अत्र। व्यास शिष्य सोइ कही जनमेजयके सत्र ॥
पर्वमध्य जे कथा रूप है पर्व कहत हों तीन। शौनक सुनऊ एकाग्र व्है हैं सुख दायक भीन ॥

॥ * ॥ चरणाकुलक ॥ * ॥

प्रथम पौष्यपौलोम कहत हैं । अरु आस्तीक सुबंश महत हैं ॥ संभवकथा पर्बसो कहूहैं। फोर लाहको आलय दहिहैं ॥ फिर हिडंबवधपर्व कहोहै । वकवध कहि आनंद लहोहै ॥

फेरि चैत्ररथ पर्व प्रभाको । फेरि स्वयंबर द्रुपद सुताको ॥ फेरि बिबाहिक पर्व सुढारो । तासे
आ०प० व्याह द्रौपदी वारो ॥ बिदुरागमनपर्व नय भारो । अर्जुन को बनवास बिहारो ॥ शुभदा हरण सुभद्रा केरो । हरण हारिक सुहैं फिरि टेरो ॥ खांडवदाहपर्व भुज जोरे । जहांमिलो मयदैत्य निहोरे॥ सभापर्व सुखसिन्धु भरोहै। मंत्रपर्व में मंत्र खरोहै ॥ जरासन्धु बधपर्व बलीना । बिजय पर्व भुजबल बस कीना ॥ राजसूयहै पर्व करमको । फिरि अर्घाभिसुपर्व धरमको ॥ औगुण बचन कथन सुनि लीन्हों । फिर शिशुपालमरण करिदीन्हों ॥ द्यूतपर्व फिरि राज्य बिनाशी । अनुद्यूत फिरिकल्मषराशी ॥ फिरि बनपर्व भए बनवासी । किर्मिबध ता पाछे खासी ॥ अर्जुन गमनपर्व तपमयो । हरसों युद्ध पर्व तहँ भयो ॥ अर्जुन गमनपर्व सुरपुरको । नलइतिहास सु करुणा करको ॥ तीरथयात्रापर्व कहो है । पर्व जटासुरबधन अहो है ॥ युद्धयक्षसों पर्व शुभारी । पर्व निवात कवचसोरारी ॥ अजगरपर्व नहुष परसंगी । मार्कंडेयकथा तंह अंगी ॥ द्रुपदसुता सत्यभामा राणी । पर्व तासु संवाद सुबाणी॥घोष सु यात्रापर्व कहोहै।पर्व दयो मृगस्वप्न लहोहै ॥ इंद्रद्युम्न उपखान करोहै । ब्रिहीद्रोण फिरि पर्व धरोहै ॥ पर्वद्रौपदीहरण अनैको । जयद्रथ मोचन पर्व अभैको ॥ महत महातिम पतिव्रताको । सावित्री को कथन प्रभाको ॥ रामाख्यानपर्व अति नीको । कुण्डलहरण कर्णकी सीको ॥ पर्व कहे आरण्य पर्वके ।कहत बिराट सुपर्व सर्वके ॥ नगर बिराटहि पांडव गए । साधे समय प्रगट नहि भए ॥ कीचकबध गोग्रहण कहैंगे । अभिमन्यु तरा व्याह लहैंगे ॥ उद्योग पर्वमें नीति सुनाए । संजय कुरुपुरकों चलिआए ॥ चिन्तासह धृत राष्ट्र जगैगे । सनतसुजात वचन उघटैंगे ॥ यानपर्व हरि कुरुपुर जै हैं । धृतराष्ट्रहि बहुबिधि समुझै हैं ॥ उपाख्यान मातलिको नीको । गालव चरित पर्व शुचि सीको ॥ बामदेव अरु सावित्री को ॥ अरु सुबैन्यकोपर्व सुनीको ॥ परशुराम की कथासुनीकी।सभा प्रवेश कृष्ण जश सीकी ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उद्योग पर्वके पर्वकहि कहियत चमू पयान । चलन चमूको पर्व एक अरु सेतोपाख्यान ॥
बिबाद पर्व जहँ कर्ण सों हरिसो भयो बिबाद । महारथी अतिरथिनकी गणना पर्व संबाद ॥

॥ चरणाकुलक ॥ दूत उलूका गमन पर्वहै । संबाख्यान सुपर्वसर्वहै ॥ फिरि अभिषेक भीष्मको नीको । जंबूखंडपर्व अतिसीको ॥ भूमिपर्वहै अतिसम सीको । फिरि बिस्तार द्वीप सबही को ॥ भगवतगीता कहि सुद लहि है ।भीषमपर्व भीष्मबध कहिहै ॥ द्रोण भयो सेनापति तज्ञा।संसप्तक बध फिरि सप्रतिज्ञा ॥ फेरि मरण अभिमन्युकुँ बरको । तीन दुखद अर्जुनक उरको ॥ जयद्रथ बध फिरि अतिबल भारे । घटोत्कचसु जेहि कर्णसंघारे ॥ फेरिद्रोण बधपर्व कहोहै । नारायणास्त्र मोचन फिरि होहै॥कर्णपर्वता आगे जानो।फेरि शल्यको पर्व बखानो॥ ह्रदप्रवेश दुर्योधन कीन्हो।

गदा युद्ध करि धरणलि लीन्हा ॥ फिरि सारस्वत पर्व बखानो। कीर्तन वंश तीर्थमय मानो ॥ सैातिक अ
पर्व बिभत्स भरोहै अरु ऐषीक सुपर्व खरोहै ॥ जलप्रदानको पर्व महाहै। स्त्रीविलापको पर्व कहाहै॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आद्यपर्व कहि कै कहों बध चार्वाक अनूप । राक्षस छलमै विप्रको धरे रहो जोरूप ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

अभिषेक धर्मराजको भयो । प्रजा बिप्रगण आनदमयो ॥ शांतिपर्व ता आगे कहिये । राजधर्म आपद फिरि लहिये ॥ मोक्षदानकोपर्व कहोहै। शुक प्रश्नांतरगमन अहैहै॥ब्रह्म प्रश्न अनुशासन पीछें। दुर्वासा आगम ऋषि ईछें ॥ फिरि अनुशासनपर्व अहाहै। फिरि भीषम दिव गमन लहोहै॥ अश्वमेध शुचि पर्व पापहा । अनुगीता फिरि पर्व तापहा ॥ फिरि अध्यात्म ज्ञान प्रद हीको । आश्रमवासपर्व अति नीको ॥ दर्शन पुत्रपर्व ता आगे। नारदागमन फिरि मति पागे ॥ मैाशलपर्व घोर क्षय कर्त्ता। प्रस्थानिक सुचलत जग भर्त्ता ॥ स्वर्गारोहणपर्व सिधारो । फिरि हरिवंश वंश अवतारो ॥ विष्णुपर्व शिशुपूजन जामे। पर्व कंसवध भो मथुरामे ॥ भविष्यपर्व ता आगे कहे । ए शतपर्व व्यास मुख लहे ॥ कथा रूप शतखंड रहे जे । सूतपुत्र मुनि पास लहे ते ॥ यह अनुक्रमण सकल भारतको॥परम पयोधि पुण्य स्वारथको॥भारत पुण्यपयोनिधि केहैं।पर्व तरंग समान कहेहैं॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आठसहस अरु आठशत चैारासी हैं पद्य । मुनि बिय बिय अध्याय हैं आदिपर्व अनवद्य ॥
सभापवमे मुनि कही अठसत्तरि अध्याय । पद्य सहस द्वै पांचशत अरु ग्यारह सुखदाय ॥
अध्याय कही बनपर्वमे उनसत्तरि शत दोय। सहस एकादश पद्य कहि षटशत चैासठि जोय ॥
हैं बिराट बर पर्वमे मुनि रस मिति अध्याय । दोय सहस अरु अर्धशत पद्य परम सुखदाय ॥
कही पर्व उद्योगमे रस वसु शशि अध्याय । छाछटि शत अट्ठानबे पद्य कहे सुखदाय ॥
भीष्मपर्वमे एकशत है सत्रह अध्याय । पांचसहस वसुशत चैारासी पद्य परम सुखदाय ॥
नभ मुनि शशि अध्यायहैं द्रोणपर्वमे पर्म। आठ सहस नवशत अधिक नव हैं पद्य सधर्म ॥
उनसत्तरि अध्याय हैं कर्णपर्वमे पर्म । चारिसहस नवशत अधिक चैासठि भरे सुधर्म ॥
शल्यपर्वमे मुनि कही ग्रह रस मित अध्याय ।शत बत्तिस नख मिति कहे पद्य परम सुखदाय ॥
वसु शशि सैातिक पर्वमे व्यास कही अध्याय ।नभ मुनि वसु मिति पद्य हैं धरम धरे सुखदाय ॥
अध्याय स्त्रीपर्वमे कही सु सत्ताईश । पद्य सु पैानेआठसै सकरुण कहे मुनीश ॥
नव गुण गुण अध्याय हैं शांतिपर्वमे पर्म । चैादहसहस सातसैा बत्तिश पद्य चारि नृप धर्म ॥
रसफल शशि अध्याय सह फल अनुशासन पर्व ॥ पद्यसु आठ हजारहं धरे धर्म अति सर्व ॥

आ॰प॰ तीनिअधिक शत कहत हैं अश्वमेधमे अध्याय।तैतिसशत नख मिति अधिक पद्य कहैं सुखदाय॥
आश्रम बास पर्वमे जानो दोय चारि अध्याय । पंद्रहशत षट अधिकहैं पद्य परम सुखदाय॥
आठ कहत अध्याहैं मुशलपर्वमे तांन । गुणशत नख मित पद्यहैं अनरथ करता जांन॥
मुनि प्रस्थानकपर्वमे कही तीनि अध्याय ।गुण शत नख मिति पद्यहैं भाषे श्रीमुनिराय॥
स्वर्गारोहणपर्वमे हैं शरमिति अध्याय ।ग्रह गुण मिति बर पद्य हैं जिन्हें सुने अघजाय॥
हैं सुपर्व हरिवंशमे रविसहस मित पद्य । तिनहि सुने अघ मनुजको जात नष्टहैं सद्य॥
व्यासअठारह पर्वमे कहे जितिक उपपर्व । पर्व पर्वमे कहतहैं कथारूप ते सर्व॥
आदिपर्वमे ऊनविस सभापर्वमे अंक। सोरह है बनपर्वमे चारि बिराट निशंक॥
ग्यारह हैं उद्योगमे भीष्मपर्वमे पांच ।द्रोणपर्वमे आठहैं मुनिबर बरणे सांच॥
कर्णपर्वमे एक है शल्य पर्वमे चारि । सुषोप्तिपर्वमे तीनि है कथारूप निरधारि॥
पांच सु इस्त्री पर्वमे शांति पर्वमे चारि। दान पर्वमे एक है द्वै अश्वमेध बिचारि॥
तीनि सु आश्रमवासमे मुशलपर्वमे एक । और पर्वकें पर्वहै कहे व्यास सबिबेक॥
पर्व अठारह भार्तके बरणे परम प्रमान । अब आगें हों कहतहें सेना संगम मान॥

॥ * ॥ चरणाकुलक ॥ * ॥

अक्षोहिणी अठारह पूरी । कुरुक्षेत्रपर आईरूरि॥ दिवस अठारह दारुण जुद्धे। भिरे वीरवर बीर बिरुद्धे॥ चारो बेद पढे जो कोई।भार्त पढे बिनु चतुर न होई॥ अर्थ धर्म अरु काम शास्त्र जो। व्यास कहे भारतमे हैं सो॥ सब पुराण भारतमे असेँ । नभमे सकलचराचर जैसेँ॥ क्रिया सकल गुण भारतमे हैं । मन अधीन इंद्री सब जेहैं॥ भारतमे जो कथा न पावैं। ताहि असूल बिदुषगण गावैं॥दिन मे पाप करै नर कोई।भार्तपढे संध्या शुचि होई॥रजनी मे जो पातक करिहै। भोर पढत भारत सो हरिहै॥ गोशत सबिधि बिप्र कँहँ दीन्हें। सो फल भार्त श्रवणके कीन्हें॥ * ॥
स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायां भारतान्तर्गतेआदिपर्वदर्पणेद्वितीयोऽध्यायः

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

करतरहे जनमेजय राजा । कुरुक्षेत्रमे यज्ञ सुसाजा॥ उग्रसेन श्रुत सेन सुज्ञाता । भीमसेन सह तीना भ्राता॥ श्वान एक तहां चलि आयो। भाइन ताहि मारि दुरिआयो॥ सो बह श्वान सु रोवत भागो। अपनो माताके ढिग लागो॥ श्वानी रोवत देखो बारो । क्यों रोवत बुझो किन मारो॥ कहेउ श्वनीसों श्वान कुमारो। जनमेजयके भ्राता मारो॥ सो सुनि श्वनी पूछसों भाषी । का अपराध कसो कहि माषी॥ जाते भूप भ्रात्ति तोहि मारो। कहो सांच मति झूठ उचारो॥

नहि अपराध कस्यो तेहि भाषो । छुयो न हव्य न मुखतें चाषो ॥ सो सुनि स्वनी यज्ञ मह आई । पुत्र हनने बऊत रिसाई ॥ बोली स्वनी भूपसों ऐसें । मो सुत हनो दोष बिनु कैसें ॥ खायो कछू न हव्य तिहारो । बिनापराध पुत्र कत मारो ॥ यह सुनि भूप कछू नहि बोले । तब ओहि स्वनी क्रोध अति सों ले ॥ बिनादोष तुम याहि हनोहै । अकस्मात भय तुम कहँ होहै ॥ अति बिस्माद भूप सुनि पाए। सत्रसमाप्ति भए पुर आए ॥ पुरी हस्ति नामे मय पागे। पूरोहित शुचि ढूढन लागे ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

स्वनीशाप मेरो हरै परम तपस्या धाम । ऐसो सु पुरोहित मिलै सिध्यहोय तौ काम ॥

॥ * ॥ उपजयकरीछंद ॥ * ॥

एकदिवस मृगया कों गए । जनमेजय नृप चिंतामए ॥ आश्रम श्रुतिस्त्रवा मुनिवरको । देखो जनमेजय अघहरको ॥ ताको पुत्र लखो तपभरो । पिता सुश्रुषनमे ततपरो ॥ नाम सोमस्त्रवा ताको जशो । भयो मनहु सीरधितें शशो ॥ ताके निकट भूप चलिगए । चहत पुरोहित करि मुदमए ॥ नमस्कार करि मुनिसों कही । कथा आपनी जो चित रही ॥ होय पुरहित पुत्र आपको । एसेटैगें दाप शापको ॥ सुनि नृपसों मुनिवर यह कही । भूप कहतहो सोसब सही ॥ *◈*◈*◈*◈◈*◈*◈*◈*◈*◈*

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सांपिनिसों यह पुत्र हमारो । जनमो तेजपुञ्जसों भारो ॥ स्रो तेज तपवीर्ज हमारो । गिरो वेगबस हम न सँभारो । सापिनि बिधिबस पान करो सो । तप प्रभाव तेहि गर्भ धरो सो ॥ पुत्रभयो हम ताते पायो । महातेजमय तपबर छायो ॥ है यह एक गूढव्रत धरे । कहत भूपसो सुनऊ बिचारे ॥ ब्राह्मण यासों जो कछु मागै । देततहि सो बिलंब न लागै ॥ जौ याको यह व्रत निरबाहो । लेऊ करो उपरोहित चाहो ॥ है इतेक तपतेज सभांरो । देवशापसो राखनहारो ॥ एवमस्तु कहि भूपति ल्याए । उपाध्यायकरि आनद छाए ॥ ऋषिसुत जाहि दिवावै जोई । बिना बिचार दीजिवै सोई ॥ इह आज्ञा भ्रातनको दीन्हों । नृप शासन तिन सिर धरि लीन्हों ॥ राजकाज भ्रातनको देकै । धीर बीर सेनासंग लै कै ॥ तद्द शिलापर भूप सिधारे । जनमेजय अति बलसों भारे ॥ जीतिदेश सो निजवस कीन्हो । बसे आपु तहँ आनद लीन्हो ॥ धौम्यनाम मुनि तहँके बासी । तीनि शिष्य ताके तपरासी ॥ वेदारूणि उपमन्यु सुनामा । गुरु सुश्रूषन मे अभिरामा ॥ *◈*◈*◈*◈*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धौम्य खेतकी मेड बांधिबे अरुणिहि दयो पठाइ । दृष्टिभई जल बहतन पावै आज्ञा दई सुनाइ ॥
अरुणि मेंड बाधन लगे करि करि बहुत उपाय । एकराह जल नहि थमैं आपु परो तंह जाय ॥

आ०प० रोकि रहो जल कछुक दिन तब मुनि कियो बिचार। अरुणि गयो कितकों कहो हे उपमन्यु उदार॥
मेंड बांधिबे खेतकी जबसों दयो पठाय। आरुणि वाहीदिनगयो करत कहा उत जाय॥

॥ * ॥ चरणाकुलक ॥ * ॥

मुनि करिसोच तहां चलि आए। आरुणि आरुणि टेर सुनाए॥ मुनि सुनि वचन अरुणि उठि आयो। कर्दम भरो सजल मुदछायो॥ करिप्रणाम भो मुनि ढिग ठाढो। कहि बिरतांत बाढो॥ सुनि मुनि तासु कर्म गुनि गाढो। आज्ञा पालनते मुद बाढो॥ मोदसों आशिर्बाद दयो मुनि ताकों। श्रीश्रुति शास्त्र सहित प्रतिभाको॥ धरेहोहु अब गृहके बासी। आरुणि जाहु भरे छबि खासी॥ मुनिपद बंदि अरुणि मुदछाए। गए देश पंजाब सोहाए॥ बहु उपमन्युहि मुनि मुद लीन्हें। गो चारण को शासन दीन्हें॥ सुनि उपमन्यु हरषसों पागे। गोगोवत्स चरावन लागे॥ बूझे एक दिवस मुनि तासों। जीवनवृत्ति करो तुम कासों॥ हो सुस्थूल गात तुम जातें। सुनि उपमन्यु कहे इमि तातें॥ मागि नगरतें भिक्षा ल्यावैं। सो भोजनकरि क्षुधा मिटावैं॥ मुनि बोल जे भिक्षा ल्यावो। खाऊ जबै मम आज्ञा पावो॥ सुनि उपमन्यु मागि जो ल्यावैं। सो मुनिके ढिग धरि सुख पावैं॥ सोभिक्षा सिगरी मुनि लेहीं। नहि भोजनकी आज्ञा देही॥ ते मुनि ढिग धरि भिक्षा जाहीं। फेरि मागि लै पुरतें खाहीं॥ *******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तै सोई लखि पीन तेहि मुनि बोले इमिबैन। भिक्षा हम सब लेत हैं तुमकों शेष रहैन॥
कहो कहा अब खातहो जातें मोटो गात। सुनि उपमन्यु मुनीशसों बोले साची बात॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

हम प्रथम भिक्षा ल्याय। तव निकट धरि फिरि जाय॥ निति मांगि पुरमे खाय। बन जाय सेवत गाय॥ सुनि कहे इमि मुनि राय। तुम करत हो अन्याय॥ तुमकों न लज्जा हाय। द्वै बार मांगत धाय॥ अब वृत्ति यह तजि देऊ। यह शुभद शिष सिखि लेऊ॥ मुनिको निदेश सु येऊ। उपमन्यु मानि सनेऊ॥ फिरि बिपिनिमे चऊ कोद। चलि चारि सुरभि समोद॥ सह सुरभि संध्या पाय। भो खरो मुनिढिग आय॥ मुनि देखि ताकहँ पीन। इमि कहे परम प्रबीन॥ अब कहा तुम उत खात। जेहि रहत पीवर गात॥ सुनि कह्यो शिष्य सुजान। हम करत गोपय पान॥ यह करतहो अन्याय। मम बिना आज्ञा पाय॥ सुनि मानि बटु बन जाय। फिर लगो चारण गाय॥ उपमन्यु निशि मुखहेरि। गुरु गेह गाइन घेरि॥ गो परम आनद छाय। बर बंदि मुनिके पाय॥ **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धौम्य सुमुनिके निकट सो ठाढो भयो बिनीति। फिरि मुनि बूझो शिष्यसों लए परिच्छा रीति ॥
बृत्ति रोध हम सब कियो कहो कहा अबखात। सत्य कहो उपमन्यु सो जाते पीवर गात ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

उपमन्यु सुनि गुरुबैंन। इमि कहो पूरित चैंन॥ बछरा करैं पयपान। मुख कढत फेण सुजान॥ हम पानसो करिलेत। प्रभु छुधा मेटन हेत॥ मुनि कह्यौ तासों फेरि। तो बच्छ करुणा घेरि॥ पय देत सिगरो डारि। कृश होहिंगे निर्धारि॥ यह तुम्हे जोग्य न पान। उपमन्यु सुनऊ सुजान॥ कहि सो तथास्तु सुगाय। लहि गयो आज्ञा पाय॥ लहि छुधाकों उत पात। सो अर्कपत्रन खात॥ लहि अर्कदलको धर्म। भे अंधलोचन पर्म॥ बन फिरत चारत गाय। सो गिरे कूवां जाय॥ नहि भए आयो साँझ। मुनि शोच किय मन माझँ॥ सबवृत्ति कीन्हो रोध। एहि हेत धरि हिय क्रोध॥ सो गयोरहि बनमाहि। उपमन्यु आयो नाहि॥ यह बोलि मुनिबर नाथ। बनचले शिष्यन्ह साथ॥ तहँ लगे टेरन जाय। उपमन्यु नाम सुनाय॥ उपमन्यु सुनि मुनि बैन। मधि कूपतें लहि चैन॥ इमि कहे बैन सुनाय। हम कूपमे मुनिराय॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गिरे चछुतें अंध व्है अर्कपत्रकों खाय। अब आगे सुख होयगो कृपारावरी पाय॥
यह सुनि मुनि करुणा सहित बोले बचन ललाम। स्तोत्र पढऊ तुम दस्रको होंहि नैन अभिराम॥
उपाध्याय श्रुतिकी रिचा दीन्ही जौन बताय। जपन लगे उपमन्यु सो गुरुकी आज्ञा पाय॥

॥ * ॥ चरणाकुलक ॥ * ॥

तिहि स्तोत्र जप बिधितब करे। तासों दस्र मोद हिय भरे॥ आएहि कृपाकरि तेहां। हो उपमन्यु बिप्रबर जेहां॥ लागे देन पूप ते ताको। कहि इमि बिप्र सुभक्षऊ याको॥ उपमन्यु रुवाच। सुनऊ दस्र हम पूप न लेहैं। खैहें जब गुरु आज्ञा देहैं॥ यह सुनि दस्र मोदसों पागे। दृढ गुरु भक्ति देखि अनुरागे॥ बर बर दयो कृपासों भारे। दिव्य होंहिगे द्विज चष थारे॥ है इहि ज्ञान शतो गुणभारो। शास्त्र श्रुति स्मृति सो निरधारो॥ यह कहि दस्र स्वधाम सिधाए। गुरुके ढिग उपमन्यु सुआए॥ कहि बृत्तांत गुरूपद बंदे। सुनत धौम्य मनमाह अनंदे॥ मुनि शीवर बर ता कहँ दीन्हें। बिदा ताहि निज घरकहँ कीन्हें॥ तब मुनि बेद शिष्यसों भाखे। सेवाकरण हेत ढिग राखे॥ बेद करण गुरुसेवा लागे। बऊत दिवसलों आनद पागे॥ अति निष्कपट करत लखि सेवा। भए

आ॰प॰ प्रसन्न महामुनि देवा ॥ तुम सरबज्ञ होउँ बरदीन्हों । विदा आपने घरकँह कीन्हों ॥ व्है सरबज्ञ बेद घर आए । करि गृहस्थ आश्रम सुख छाए ॥ गुणमिति शिष्यबेद तह कीन्हो । स्मृतिशास्त्र श्रुत शिक्षा दीन्हों ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बेदन शिष्यनसों कछू कारज करिबो कहत। गुरुकुलको अनुभूत करि सहो कष्ट जो महत ॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

जनमेजय अरु राचीपौष । कछू यज्ञ करिबेके तोष ॥ उपाध्याय कीन्हों द्विजबेद । चले भूपसँग परम अखेद ॥ शिष्यउत्तंकहि ज्ञानि सुजान। सब गृहकार्य सौंपि मतिमान ॥उचितकार्य्य कीजो उत्तंक। सौंपि तुम्हैं हम होत अशंक॥यह कहि वेद गए नृपसंग। सोगृह कारज कियो अभंग॥ गुरकुल नियम सुमत ठहराय । इमि उत्तंकसों कहो बुजाय ॥ उपाध्यायनीकों ऋतुस्नान। सुनऊ बिप्र यह बचन प्रमान ॥ ऋतुफल जातें व्यर्थ न होय । हेउत्तंक करऊ तुम सोय ॥ द्विज उत्तंक सुनत यह बैंन। कहो विचारि उचित यह है न ॥ उचित कार्य्यकीजो तुमसर्व । अनुचित करत होत जे खर्ब॥ उपाध्याय यह बचन सुनाय । गए सौंपि गृहकृत सुखदाय ॥ यह सुनि ते तिय रही चुपाय । कछुदिन वीतें यज्ञ कराय ॥ उपाध्याय आए फिरि धाम । सुनेशिष्यके काम ललाम ॥ यह बृत्तांत श्रवण करि बेद । जानि शिष्य शुचि सुमति अखेद ॥ हे उत्तंक जानि तो धर्म ।हम प्रसन्न तुमपँह हैं पर्म ।।सफल होंहि तव सब मनकाम।अब उत्तंक जाऊ निजधाम॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गुरुपद बन्दि कृतार्थ व्है चले स्वगृह उत्तंक । गुरुके चरण सरोज भजि को न होत निःशंक ॥
चलत समे गुरुसों कहो यों उत्तंक बिनीत । देहि सोहम गुरदक्षिणा आज्ञा करऊ सप्रीति॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

यह सुनि बिहसि कहो द्विज बेद। कछु दिन रहऊ उत्तंक अखेद।।फिरि कछु दिन रहिकै उत्तंक । कही दक्षिणा हेत निशंक॥ फिरि सुनि कहो सुमुनि यह बैंन । जाऊ सु मो पतिनीके अैंन ॥ कहै सो देऊ जाय उत्तंक।यह सुनि तहँा गए निःशंक ॥ उपाध्यायनीके ढिग जाय । कहे विनीत बचन सुखदाय ॥ गुरुसैं। कह्यो दक्षिणा हेत । चलत समै गुणि उचित सचेत ॥ गुरु आज्ञा दिए सहित सनेऊ । गुरु पत्नी मांगै सो देऊ ॥ अब आपु जो कहिअै मोहि । गुरु प्रसादतें दैहों तोहि ॥ सुनि गुरुपत्नी बोली बैंन । पौष्य भूप पहँ जाऊ सचैंन ॥ पौष्य स्त्रीके कुण्डल जैंन। ल्यावऊ मागि दीजिअै तैंन ॥ है कछु कारज चौथे द्यौस । वादिन ल्याय दीजियै औस ॥ तासों भूषित होय प्रसन्न । द्विज निमंत्रि पर

माँगी अन्न ॥ चौथे दिवसआनि जो देऊ । सकल सिद्धि सह संपति लेऊ ॥ नतरु सुनऊ यह बचन अशंक । तव विपत्ति ह्वैहै उत्तंक ॥ सुनत पौष्य ढिगको गहि गैल । चले मिलो पथमें एक बैल ॥ पुरुष एक तापैं असवार । ज्यों पहार पर लसत पहार ॥ *❧*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बृषारूढ जो तेहि कहो सुनऊ बचन उत्तंक । याको गोमय खायकै जाऊ चले निःशंक ॥
जबद्विज नहि मानो कह्यो तब तेहि कह्यौ रिसाय।लह्यो सिद्धि तो गुरु प्रथम याको गोमय खाय॥
ताको गोमय खायकै द्विज बर चलो उताल । ठाढे करि आचंमन गो जहँ पौष्य छितिपाल ॥

॥ * ॥ चरणाकुलक ॥ * ॥

पौष्य भूप बैठे हें जे हाँ । द्विज उत्तङ्क खडे भे तेहाँ ॥ करि प्रणाम नृप नाम सुनायो । द्विज आसिष दै आनद पायो ॥ कहो भूप केहि कारण आए । देखत तुम्हैं व्यथता छाए ॥ मागैं भूप हमैं सो दीजै । धर्म रहै तो जग जस लीजै ॥ महिषी रानी जौंन तिहाँरी । ताके कुण्डल देऊ उतारी ॥ पौष्य कही ताके ढिग जैये । भौन हमारे विलंबु न लैये ॥ बिप्र गयो तँह ताहि न देखो । आयो निकसि भूप परतेखो ॥ कहिवो अनृत न लायक तोकों । भूपति उचित न हँसिवो मोकों ॥ कहो बिचारि भूप यह जानो । हो उच्छिष्ट भरे द्विज मानो ॥ पुरुष अशुद्ध न देखत वाकों । पतिव्रत तेजश्पूर्ण प्रभाको॥सुनि उत्तंक स्मरण तव कीन्हो।खडे होय हस आचमन लीन्हो ॥ होय उदङ्मुख आचमन धारो। कर पद धोय शुद्धता भारो ॥ स्मरण सप्तव्याहृतिको करिकै । अंतह पुर पैठे मुद भरिकै ॥ तव सुपौष्यकी रानिहि देखो । पतिव्रत तेज पुंज अब रेखो ॥ अभिबन्दन करि आनद छाए । बूझो विप्र कहासों आए ॥ कोन हेतसों कहो निशंकू । यह सुनिकै बोले उत्तंकू ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हौं गुरुसों गुरुदच्छिणा मागन कहो बिनीति । उपाध्याय मोसों कही भरें हृदयमें प्रीति ॥
मम पत्नी पँह जाऊतुम वे मागैं सो देऊ । गुरु आज्ञा तासों कही सविनय सहित सनेह ॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

गुरुपत्नी बोली सुनि बैंन । जाऊ पौष्यभूपतिके ऐंन ॥ उनको पत्नीकुण्डल जौंन । पहिरैं मागि देऊ तुम तौंन ॥ ते तुम मोहि कृपा करि देऊ । पुण्यसहित यश आनद लेऊ ॥ यह सुनि रानी पात्र बिचारि । सहरष कुण्डल दए उतारि ॥ कुण्डल दै फिरि बोलिसों बैन । रानी कहो पूरि हिय चैन ॥ हे उत्तंक जो तक्षक नाग । करि कुण्डल पर अति अनुराग ॥ माँगे बहुत ताहि नहि दीन्ह । करि उपाय सो चाहत लीन्ह ॥ रानी सों

आ०प० बोले उत्तंक । हे देवी तुम रहो अशंक ॥ तक्षक मोहि न धर्षण जोग । हौं गुरुभक्त विप्र मुनिलोग ॥ बिदा भए तासों तपरास । गए पौष्य भूपतिके पास ॥ कह्यौ प्रसन्न भयो हौं भूप । आशु बिदा कीजै सुख रूप ॥ भूप कहो मुनिसों सुखपाय । पात्र मिलत भाग्यनसों आय ॥ आजु अन्न भोजन करिलेऊ । तृप्तहोय फिरि जायऊ गेऊ ॥ पाक होय जो नृप उपपन्न । बिलंब न करऊ देऊ सो अन्न ॥ सिद्ध रहो सो अन्न मगाय । पौष्य धोय बैठाए पाय ॥ शीतल अन्न बारसह देखि । मुनिबर कीन्हों क्रोध बिशेखि ॥ *❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शीतल अशुचि सकेश जो अन्न दयो तुम मोहि । याही फलतें होऊगे अंध कहत हौं तोहि ॥

॥ पौष्योवाच ॥

कहि अशौच शुचि अन्नकों मोहि दयो तुम शाप । तुमहूँ होऊ अपुत्र द्विज याको पाऐं पाप ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

यह सुनो द्विजवर बैंन । इमि कहो तपबर अैंन ॥ तव अन्न अशुचि सवार । यह प्रथम करि निरधार ॥ प्रति शाप तब तुम देऊ । लखि आइ नीरे लेऊ ॥ तब पौष्यगे आसन्न । सह केश देखो अन्न ॥ सो अशुचि मनमे मानि । इमि कहो जोरें पानि ॥ सहकेश बस अज्ञान । यह अन्न कीन्हो दान ॥ करि क्षमा यह अपराध । कुरु शाप फलको बाध ॥ जेहि अंध होंहि न नैन ॥ यह कऊ अनुग्रह बैन ॥ मुनिरुवाच ॥ मो बैंन होत न बन्ध । कछुधोस रहिहो अन्ध ॥ मुनि कह्यौ अपनो शाप । नृप करऊ मिथ्या दाप ॥ सुनि पौष्य बोले बैन । यह बश्य हमरे है न ॥ नृप कहऊ याको हेत । जो शाप नहिँ हरिलेत ॥ द्विज सुनऊ बंशज रीत । द्विज हृदय ज्यों नवनीत ॥ मुख तीक्ष्ण क्षुरिक समान । कहि तजत क्रोध महान ॥ हृदयास्म क्षत्री गोत । नवनीतसो मुख होत ॥ मुख कहत कोमल बैन । हियमध्य ऋजुता है न ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहि अशौच शुचि अन्नकों दोष देतहो विप्र । यह कहिके प्रतिशाप तुम हमकों दीन्हो क्षिप्र ॥ देखि अशुचि फिरि अन्नकों भूपति भए बिनीत । याते शाप न रावरो करिहै हमकों भीत ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

यह कहिके उत्तंक सिधाए । कछू दूरि पथमें जब आए ॥ क्षपणक एक नग्न तहँ देखो । अनु आवत मनमें छल भेखो ॥ क्षण लखि परे क्षणकमे नाहीं । जैसें चल बादरकी छाहीं ॥ मुनि कुण्डल क्षिति ऊपर धारे । कछुक दूरि जल लेन सिधारे ॥ तव क्षपणक सो आतुर आयो । बेग सहित कुण्डल लेइ धायो ॥ जल कारज करि करपद धोए । व्है पवित्र क्षपणक सो जोए ॥

कुण्डल लए जात दुखछाए। बेग सहित ता पोछे धाए ॥ गए निकट तब क्षपणक सोई। बिलिमे पैठि गयो अहि होई ॥ कुण्डल लए मोदसों छायो। तक्षक नागलोक कहँ आयो॥ मुनि रानीको बचन बिचारे। यह तक्षक मनमे निरधारे ॥ लकुट लेइ बिल खोदन लागे। द्विजवर महा दुःखसों पागे ॥ लखि द्विजदुखी इंद्र भरि दाया। तासु सहायक बज्र पठाया ॥ बज्र लकुटमे पैठि सोहायो। भेदि भूमि पाताल देखायो ॥ नागलोक तेहि पथ मुनि गए। अति बिचित्र पुर देखत भए ॥ नागस्तुति तहँ करिबे लागे। द्विज उत्तंक खेदसों पागे ॥ नागनकी सुस्तुति बड़ कीन्हो। तक्षक कुण्डल ताहि न दीन्हों ॥ ********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इस्त्री देखि दोय तहँ बिनति सुपट अभिराम। सूत पसारें दोय बिधि अति आयत सितश्याम ॥
फिरि देख्यो तहँ चक्र एक जामे बारह आर। ताहि फिरावत हैं खरे बालक षट सुकुमार ॥
एक अस्व देखो तहाँ सुन्दर परम उदार। दिव्यरूप तापैं लखो पुरुष एक असवार ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

सुस्तुति तासु करण मुनि लागे। बेद रीतिसों आनद पागे ॥ सुस्तुति सुनि सो बोले बानी। देख्यो दृष्टि कृपासों सानी ॥ हेतु आपनो द्विजबर भाखो। सो करि देउँ गोपि मति राखो ॥ तब मुनि कहेउ क्रोध मन घेरे। ए सब होहिँ नाग बस मेरे ॥ सो सुनि कहा तुरँगअसवारे। तुरँग गुदा फूँकऊ बलभारे ॥ अस्व गुदा फूँको मुनि जैसें। अग्नि सधूम कढी तन तैसें ॥ अति संताप नागपुर छाए। व्याकुल व्हैं तँह तच्छक आए ॥ व्है बिनीत कुंडल तब दीन्हों। ते उत्तंक सोद भरि लीन्हों ॥ गुरुपती कँह आजु न दीन्हों। कुंडल व्यर्थ परिश्रम कीन्हों ॥ चौथो योस दूरि हम लेखो। यहि चिंतावस मुनिकँह देखो ॥ दिव्य पुरुष करुणाकर बानी। इमि कहि सकल शोच ता भानी ॥ यहि तुरंग चढि तुरित पधारो। शोच करऊ मति साहस धारो ॥ क्षणमे गुरुकुलके ढिग जैहो। चढो बेगि अति आनद पैहो ॥ मुनि उत्तंक तापँह चढि आए। केश सुखावत गुरुतिय पाए ॥ कुण्डल देइ बंदना कीन्हों। गुरुपती मुद आशिष दीन्हों ॥ बिदा होय मुनिवरपँह आए। करिप्रणाम आनदसों छाए ॥ ******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

क्रमसों कहि बृत्तांत सब बिनय सहित उत्तंक। फिरि बूझन मुनिसों लगे रही जो मनमे शंक॥
कौन ऊती तिय दोय वै बिनति रहीं पट जौन। कहा चक्र बालक कहा तुरँग पुरुष हो तौन॥
बृषारूढ को बृषभ हो कहा पुरीष अभच्छ्य। सो निरणै करिकै कहो हे मुनिबर मतिस्वच्छ्य ॥

आ०प०

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

धाता नाम ज्ञानको आम। मायाको सुविधाता नाम ॥ धाता और विधाता तीय। निशि दिन श्याम श्वेत गुण कीय ॥ हायनचक्र मासहैं आर। बालक ऋतु षट रहे उदार ॥ हयशिखि गुर ईश्वर सु सवार। जिन्ह तुम्हार कीन्हों उपकार ॥ वृष ऐरावत इंद्रारूढ। तासु पुरीष सुधा गुण गूढ ॥ सुनत तज्यो संशय उत्तंक।गुरुपद बन्दि भए निःशंक ॥ अब उत्तंक गेहकों जाऊ। सुख औसिद्धि होइ तुवलाऊ ॥ मुनिसों विदा भए उत्तंक। हास्तिन पुरकों गए निशंक ॥ करें महा तक्षकपर क्रोध। कारण मानि वैरको बोध ॥गए जहां जनमेजय भूप। बैठे सभामध्य सुख रूप ॥ तब मिला जयकरि नृप आय। मंत्रिन मध्य लसत सुखदाय॥गए नृपतिढिग मुनिउत्तंक। ज्यों सुरपतिपहँ गुरु गुणवंत ॥ जय आसिष दीन्हो मुनिराज। नृप प्रणामकिय सहित समाज॥ बोले समय पाय उत्तंक। परम सुनीत बचन निःशंक ॥ *

॥ उत्तंकउवाच ॥ है करिबे कहँ कारज जौन। तुम भूपाल करत नहि तौन ॥

॥ सूतउवाच ॥ यह सुनि बचन विप्रको भूप। पूजन कियो यथा अनुरूप ॥

॥ जनमेजय उवाच ॥ करिप्रतिपाल प्रजा निःशंक। क्षात्रधर्म पालत उत्तंक ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कीबे कौन जोग्य कारज है कहो मोहि उत्तंक। जौन हेत आए इहा हे द्विज परम निशंक ॥
सूतउवाच॥सुनिकै ए नृपके बचन बोले विप्र सुनीति।कारज कीजै आपनो न्याय धर्मकी रीति॥
उत्तंकउवाच॥तक्षक मारो तव पिता करिकै अति अन्याय।पितावैर लीबोउचित लहिकै समय॥
सहायकाल कार्जको विधिरचित है यह सुनो नरेश।होऊ पितातें अऋण तुम सुनिए यह उपदेश॥

॥ जयकरीछन्द ॥

डँस्यो दुष्ट तेहि बिनापराध। मरे भूप यशसिंधुअगाध ॥ काश्यप विषहर आवत देखि। ताहि निवारेसि छल अवरेखि ॥ सर्प्पसत्र कीजै नृपराय। ज्वलित अग्निमे ताहि जराय ॥ पितावैर तासों नृप लेऊ। मेरो हित कीजै करि नेऊ ॥ भयो क्रुद्ध तक्षक परभूप। ज्योंघृत सिञ्चित पावक रूप॥ मंत्रिनसों पूछो नृपबीर। पितामरण दुखधरे गम्भीर॥सबहिन पिता मरण बृन्तांत। कहो भए नृप क्रोधाक्रांत ॥ पहिले कहो यथा उत्तंक। मंत्रिन कहो तथा निःशंक ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथकविनाकृतमहाभारतदर्पणेपौष्योपाख्यानेसमाप्तःसप्तमोध्यायः॥

* ॥ दोहा ॥ *

शौनक ऋषिके सत्रमे बैठे ऋषि समुदाय। तिनके मध्य सूत पौराणिक सोहत आसनपाय ॥

सूत कह्यो तुम बहुत श्रम पढत पुराण सुजान। मुनिन कह्यो तब सूत फिरि बोले करि सनमान॥
कहा सुननकी रावरी है इच्छा मुनि तज्ञ। ऋषिरुवाच॥ हो तुम सूत पुराणके कहिबेमे सरबज्ञ॥
कथा सुरासुर मनुजकी गन्धर्बनकी जौन । बेत्ता शौनक मुनि बिना बैठे श्रोता कौन॥
अग्निहोत्र करि आइ जब बैठे मुनि सरबज्ञ । कहैं सो कहिये आपु तब कथा पुराणिक तज्ञ॥

॥ सूतउवाच ॥

शौनक मुनि जब आइकै बैठहिंगे तप धाम। आज्ञा करिहैं जौंन सो कहिहैं कथा ललाम॥
करि तर्पण सुर पितरको जब बैठे मुनि आय। कथा कही सो कहन तब लगे सुनन सुखदाय॥
यज्ञ सदनमे ब्रह्मऋषि जहँ बैठे सरबज्ञ। लहि आज्ञा लगि कहन कथा सूत सुत तज्ञ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृते महाभारतदर्पणे आदिपर्वणि आश्रमप्रवेशो नाम अष्टमोऽध्यायः॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

शौनकउवाच ॥ पिता तुम्हारे सकल पुराण। प्रथम कहे हे सूत सुजान ॥ ते तुम सकल पढे हो तात। नृप बर बंश कथा बिख्यात ॥ कही पिता तव सुनी सु जौंन। तुमहूँ कहो सुनैं हम तौन ॥ तातें कहहु प्रथम भृगुबंश। सुनै सो हम अति परम प्रसंश ॥

सूतउवाच ॥ पढे जो बैसंपायन पास । सो हम कहत सहित इतिहास ॥ देव मनुज पूरित भृगुबंश । सो कहियत हम सुनहु प्रशंस ॥ स्वयंभुवब्रह्मातें भृगु पूत । वरुणयज्ञपावकसंभूत॥ भृगुके पुत्र च्यवन तप धाम । ताके प्रमति भए अभिराम ॥ भए प्रमतिके सुत रुरु तज्ञ घृताचीतें मुनि सरबज्ञ ॥ रुरुके भए शुनक तप धाम । महत पितामह तो मुनि नाम ॥ शौनकउवाच ॥ भृगुके सुतको च्यवन सुनाम। भयो कौनविधि सूत ललाम॥ सूतउवाच ॥ भई पुलोमा भृगुकी दार । तासु वीर्यको गर्भ उदार॥ धरो ताहि तजि सपरण दूरि। भृगु मुनि गए अभय मति पूरि॥ राक्षस तहाँ पुलोमा नाम । सूनो जानि गयो मुनि धाम ॥ भृगुपत्नी कहँ देखो जाय। व्याकुल भयो काममद काय ॥ मुनि पत्नी तेहि अतिथ बिचारि । दीन्हो कंद मूल फल बारि ॥ दुष्ट सो काम मयमतवारि। व्है हरिबेको कियो बिचारि॥ भयो कार्य यह मनमें जानि । पहिले मै माग्यो यह मानि ॥ याके पिता दई नहि मोहि । भृगुको दई मोहि लघु जोहि॥ यह दुख दहत हृदय निति सोर। यातें हरण करौं बर जोर॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अग्निहोत्र गृहमे बरत अग्नि देखिकै दुष्ट । पूछन लागे अग्निसो हरण बिचारे पुष्ट॥

आ०प० अग्निसुनौ यह कौनकी भार्या झूठ कहौ न। भार्या हेत प्रथम हम मागी अनु सो न्याय रहौ न॥
भृगुको दइ ब्याहि फिरि याके पिता अनृत करि कर्म। यह भार्या काको उचित कहौ ऊतासन धर्म॥

॥ * ॥ सूतउवाच। जयकरीछन्द ॥ * ॥

भृगुपत्नीमे करि संदेह। कहत अग्निसों फिरि फिरि एह॥ बसत चराचरके तुम बीच। कहौ अग्नि यह सत्यनि भीच॥ हम मांगी ही भार्या हेत। सो ब्याही भृगु करी अनेत॥ सोई हैं यह पावक तोहि। बूझत सत्य सुनावऊ मोहि॥ तुमसों सुने सत्य सो मानि। भृगुभार्या हरिहौं हों जानि॥ जातबेद साँची तुम कहऊ। नातरु श्राप देत हम लहऊ॥ यह सुनि वचन ऊतासन तास। भृगुपत्नी यह कही सत्रास॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦
अग्निरुवाच॥ प्रथम वरी तुम भार्या हेत। दानव तनय सुनऊ यह नेत॥ बिधिवत तुम नहि पाई ब्याहि। पितुदीन्ही भृगुको विधि चाहि॥ वेद विहित करि साक्षी मोहि। भृगुको दई न दीन्ही तोहि॥ अनृत कहत नहि हम अभिराम। सत्व पुलोमा भृगुकी बाम॥ * ॥ इतिपुलोमापर्व॥ *
अग्नि बचन यह सुनिकै दुष्ट। हरी पुलोमाको अतिरुष्ट॥ धरि बराहको रूप सबेग। हरिलै चलो न राखि दरेग॥ मातृहरण सो गर्भ बिचारि। गिरो कोपकरि तेजस धारि॥ भयो रोषव सच्युत सो गर्व। च्यवन कहत यातें मुनिसर्व॥ भरो तेजसों सूर्य समान। भस्मभयो लखिदैत महान॥ *❦

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिहि तिय लयो उठाय सो अर्भक अति अभिराम। भरी महादुखसों चली रोवति अपने धाम॥
भृगुभार्या रोवति लखें बिधि आए ता पास। शांत बचन कहिकै हरे दुःख दुसह सवतास॥
ताके लोचन वारितें प्रगटी नदीललाम। चली सु अनु मुनि बधूके बधूसरा तेहि नाम॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

भृगु सुनि जन्म विधान सोहाए। राखो नाम च्यवन सुखछाए॥ भृगुस्नान करि आश्रम आए। सुनि वृतांत क्रोपसों छाए॥ भृगुरुवाच॥ हरण हार राक्षस कहं ताको। दयो बताय कहो किन मोको॥ जानत तुम्हैन राक्षस हो सो। भृगुमुनिकी है भार्या को सो॥ सत्य बताय देहु तुम ताको। अबही देंउ शापमै वाको॥ पुलोमाउवाच॥ अग्नि बताय ताहि प्रभु दीन्हों। तब मोहिँ दुष्ट हरण मो कीन्हों॥ तो सुत तेजस मोहि छुडायो। वाहि भस्म करि क्षिति पर नायो॥ सूतउवाच। सुने पुलोमासों भृगु ऐसें। भरे क्रोधकेदारुण रैसें॥ अग्नि कर्म फलसों तुम जूहौ। सर्व भक्ष तुम अबते ह्वहौ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणेपुलोमोपाख्यानेनवमो ऽध्यायः॥ *

श्राप दियो भृगु अग्निकों ऐसो करि अति क्रोध । अग्नि कहो साहस करत ऐसो अज्ञ अबोध॥ श्रा
धर्म मान सांचो सुबुध जानत सकल समाज । पूछत तासों अनृत नहि भाषत सुनहु सुजान ॥
बूझें साखी जानिकै सत्य कहत नहि जौन । सहित सप्तपर पूर्वके परत नरकमे तौन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जानत साखी पूछै जौन । सत्य असत्य कहत नहि तौन ॥ सोई पाप ताहिको होत । यातें कहत न कीन्हों ओत ॥ ब्राह्मण वर्ण मान्यहै मोहि । नातर श्राप देत हौं तोहि ॥ जानतहौ तुम मोहि सुजान । बसत चराचर मध्य समान ॥ मख सत्रादिकमे करि हेत । वेद विहित जे आहुति देत ॥ देव पितरसम सहित बिबेक । पर्व पर्वमे व्है कै एक ॥ देव पितर भुञ्जत सु अखेद । मुख सुर पितर कहत मोहि वेद ॥ अमा पितर पूनोमे देव । मो मुख कव्य हव्यको सेव ॥ देव पितर मुख व्है सरबज्ञ । सर्व भच्छ ह्वैहैं किमि प्रज्ञ ॥ *

सूतउवाच ॥ अग्नि भए कहि अंतर ध्यान । बन्द भये सब यज्ञ विधान ॥ दुखित भए सुर मनुज महान । अग्नि कार्य करताको आन ॥ ऋषिन कहो देवनके पास । बिना अग्नि सो यज्ञ बिनास ॥ स्वाहा स्वधा बषट भए बन्द । अग्नि बिना त्रिभुवनमे दन्द ॥ गए देवता ऋषि बिधि पास । कहो अग्नि बिनु त्रिभुवन नास ॥ दयो अग्निको भृगु जो श्राप । सो बिधि आगे कियो प्रलाप ॥ अग्नि देवमुख है सुनु तौन । होय सो सर्व भच्छ्य बिधि कौन ॥ * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देवऋषिनसों सविधि सुनि बिधि करि हिए बिचार । आवाहन करि अग्निको बोले बचन उदार ॥
लोकनके कर्ता तुम हूतो सुनहु अग्नि मो बैन । क्रिया प्रवर्त्तक यज्ञकी तुमही पालत चैन ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

जातें क्रिया लोप नहि होई । सुनहु हुताशन कीजै सोई ॥ तुमहो पूत हुताशन पूजो सर्व भच्छ्य मति मुखतें हूजे ॥ गुद द्वारमे ज्वाला हेते । भच्छण सर्व सुनहु करि हेते ॥ होत अशुचि शुचि रबिकर परसें । त्यों सब तो ज्वालामे जरसें ॥ अपने तेजसतें करु सांचो । मुनिको श्राप होइ नहि कांचो ॥ भाग आपनो देवनको सो । मुखमे लेहु न तुम अप सोसो ॥ सूतउवाच ॥ विधिकी आज्ञा लहि मुद भारे । एवमस्तु कहि अग्नि सिधारे ॥ ऋषि सुरगण जहँके तहँ गए । यज्ञ करण बिधि मुनिगण ठए ॥ सुर नरलोक मोदसों छाए । छुटो शाप पावक मुद पाए ॥ भृगुसों शाप अग्नि इमि लहो । यह इतिहास पूर्व मुनि कहो ॥ इतिपुलोमापर्व ॥ * * *
च्यवन सुकन्यामे जनमायो । प्रमति नाम सुत तेजस छायो ॥ भए प्रमतिके सुत रुरु नामा ।

प० पाय घृताची उत्तम बामा ॥ रुरु सुत भए शुनक तेजस्वी। प्रमद्वरामे परम जशस्वी ॥ रुरुके चरित सकल मुनि सुनिए। सह विस्तार कहत सो गुनिए ॥ ******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिश्वावसु गंधर्वको गर्भ मेनका धारि। स्थूलकेश मुनिके निकट आश्रमको निरधारि ॥
कन्या भई सो धरिदई निलजनदीके तीर। निर्दय सो अस्नान करि निर्भय गई अपीर ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कन्या स्थूलकेशसो देखि। एकाकी निरजनमे लेखि ॥ ल्याये आश्रममे सुखदाय। मुनि करुणाकर मृदुल स्वभाय ॥ क्रमसों कीन्हों जातक कर्म। स्थूलकेश मुनिपरम सुधर्म ॥ प्रमदनमे लखि बर अभिराम। प्रमद्वरा यह राखो नाम ॥ स्थूलकेशके आश्रम पास। रुरुदेखो ताकों छबिरास ॥ सखियनसो दीन्हो कहवाय। प्रमति पितापहँ रुरु सुखदाय ॥ प्रमद्वराकों भार्या अर्थ। चाहत मुनि तो पुत्र समर्थ ॥ यह सुनि स्थूलकेशपहँ आय। पुत्रहेत मांगो सुखदाय ॥ प्रमति सुमुनिके सुनिके बैन। स्थूलकेश मान्यो लहि चैन ॥ ब्याह दिवस आगे ठहराय। कछुदिन गए कह्यो सुखदाय ॥ प्रमद्वरा सो सखियन संग। क्रीडा करति रहति शुभ अंग ॥ एक दिवस तहँ पथमे आय। सोवत हुतो सर्प अतिकाय ॥ प्रमद्वरा तहँ औचक जाय। तापहँ धस्यो कालबश पाय ॥ अतिविषधर तेहिँ काटो छिप्र। काटत मात्र गिरो सो बिप्र ॥ ******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ह्वै बिवश छितिपैं गिरी प्रमद्वरा गतप्राण। सुनि दौरे मुनिबर भयो हाहाकार महान ॥
आत्रेय कुशिक उद्दाल अरु शंख सुमेखल बिप्र। महाजानु कटश्वेत मुनि भरद्वाज अति छिप्र ॥
गौतम आर्ष्टिषेण कुत्स अरु कौण प्रमति रुरु संग। और बिप्र आए सकल जानि महा सुदभंग ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

कृपाभरे सब रोवन लागे। प्रमद्वराकों लखि दुखपागे ॥ गए तहातें रुरु बन गाढे। रोवनलगे महा दुख बाढे ॥ करि बिलाप रुरु अतिसै रोए। प्रमद्वराके शोक समोए ॥ दान दयो जो तप हम कीन्हो। गुरुपद सेइ पुण्य जो लीन्हो ॥ जन्म प्रभृति जो ब्रतबर धारो। और सकल जो पुण्य हमारो ॥ सो हम प्रमद्वरा कहँ दीन्हो। प्राण सहित बिधि चाहत कीन्हो ॥ जब औसे कहि रुरु अति रोए। बोले देवदूत नभ गोए ॥ देवदूतउवाच ॥ रुरु रोवत कत शोक मयेतं। जियत गतायु न पुण्य दएतें ॥ एक उपाय बिहित बिधि है हो। करि ज्यावहु तुम प्रमद्वरै हो ॥ रुरुरुवाच ॥ कहु उपाय जो बिधिबर कीन्हो। देवदूत चाहहु जश लीन्हो ॥ देवदूतउवाच ॥ अर्धायुष अपनो रुरु दीजे। प्रमद्वरा जीवै सुख लीजे ॥ रुरुरुवाच ॥ आधा आयुष अपनो दीन्हो। हे खेचर हम आनद

लीन्हो ॥ सूतउवाच ॥ बिश्वा बसु गंधर्व सु गए । दूतन सहित सो आनद भए॥ कहन धर्मराजासों आ
लागे । अर्धायुष रुरु आनद पागे ॥ प्रमद्वराकों हे प्रभु दीन्हो । सहित प्राण चाहत है कीन्हो ॥
धर्मराजोवाच ॥ रुरु आयुष्य अमृतसह पीवै । प्रमद्वरा आनदसों जीवै ॥ सूतउवाच ॥ **॰**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्मराज अैसे कहो बिश्वावसुके पास । प्रमद्वरा सोवतसी तबहीं उठि बैठो छबिरास ॥
आयुर्बल रुरुकी महा प्रमद्वराके हेत । दए अर्ध घटिजायगी लिखी रही यह नेत ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

स्थूलकेश मुनि भरि उतसाह । प्रमद्वराको कियो बिबाह॥ प्रमति सुपुत्रबधू लहि पर्म । भरे मोद
लहि आश्रम धर्म ॥ रुरु अति पनधरि दंड उदारि । लखत सर्प सो डारत मारि ॥ सर्पनको
अन्याय बिचारि । नाश करनकों दृढब्रत धारि ॥ बनमह गए एकदिन दूरि । रुरु देखे तहं अज
गर भूरि ॥ मारण चले ताहि धरि क्रोध । सो बोले इमि बचन सुबोध ॥ हम अपराध करो नहि
बिप्र । बिना बिचार हनत कैां छिप्र ॥ इतनो क्रोध जोग्य नहि तोहि । करि अन्याय हनतहो
मोहि ॥ रुरुरुवाच ॥ भार्या प्राण समान हमारि । काटो प्रमद्वरा सुकुमारि ॥ तब हम यह पण
धरो प्रशंस । नाश करहि सर्पनको बंश ॥ तातें तुम्है मारि हैां सर्प । हम अहिकुलके दाहक दर्प ॥
हम डुण्डुभ न करत अपराध।सर्प अन्य जे करता बाध॥करै दोष जैां एक अयान।जाति दण्ड नहि
करत सुजान॥मो बध जोग्य न तुम्है प्रबीन।हों डुंडुभ निष्पृह बिषहीन॥सूतउवाच ॥ ए सुनि डुंडुभ
क रुरु बैन । मारो नही क्रपाके अैन ॥ रुरु पूछो अहिसों यह बात । सांचकहो हमसों तुम तात ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूर्व जन्ममे कोरहे कियो कर्म तुम कैांन । जाते अहितन तुम लहो कहिअैं बिधिबत तैांन ॥

॥ * ॥ डुंडुभउवाच ॥ * ॥

पूर्व जन्ममे मुनि रहे सहसपाद बिख्यात । बिप्र शापसों अहि भए लहे कर्म उतपात ॥

॥ * ॥ रुरुरुवाच ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तुम उतपात कहहु का कीन्हों । बिप्रशाप जाते यह दीन्हों ॥ कबलों यह तन रही तुम्हारो ।
यह कहि शंसय हरो हमारो ॥ इत्यादि पर्वणिपुलोमोपाख्याने दशमोध्यायः ॥ डुंडुभउवाच ॥
पूर्व सखासो रहो हमारो । अगम बिप्रबर तपबल भारो ॥ हम तासों परिहास बिचारो । रचि
तृण सर्प तासु ढिग डारो ॥ अग्निहोत्रमे शक्त रहो सो । देखि डरो अति मोह गहो सो ॥ सज्ञा
पाय मोहि लखि भाषो । तृणमय सर्प देखिके माषो ॥ रचि अबीर्य अहि मोहि भय भारो ।
डुंडुभरूप जाय तुम धारो ॥ तप प्रभाव जानतहें वाके । चरण शरण सबिनय भय ताके ॥ द्विज

अपराध क्षमाकरु मेरो।शापोद्धार होत क्षत तेरो ॥ यह सुनि दुखित देखि मोहि बोलो। अंत शापको प्रकरण तोलो ॥ प्रमति पुत्र रुरु तुम है आगे। बनमह मिलिहै कारज पागे ॥ देखत ताकंह शाप तिहारो। छूटिजाइ गो तन तजि यारो ॥ यह कहि शर्प देह तँहँ डारो। तेजस भरो विप्र तन धारो ॥ रुरुसों कहो विप्र मुद भारे। यह सुनि ए मुनि बचन हमारे ॥ हिंसा करन दंड यह त्यागो। परम अहिंसा सों अनुरागो ॥ प्राणिमात्र कबहू मति मारो। है द्विज धर्म अहिंसा भारो॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अहिंसा सत्य अरु क्षमा शांति विप्रके धर्म। अध्ययनाध्यापन उचित हिंसाकरण कुकर्म ॥
धारण दंड प्रजापालन सो है क्षत्रीको काम। यह तुम सों हम कहतहैं हे रुरु बचन ललाम ॥

॥ * जयकरीछन्द ॥ * ॥

यज्ञ कियो जनमेजय भूप। भस्मकरे तँहँ सर्प अनूप ॥ त्रसित सप जे रहे विचारि। तक्षकादिको लिए उबारि ॥ मुनि आस्तीक कृपा उरधारि। विप्र वर्णको धर्म पसारि ॥ इत्यादिपर्वणि पुलोमोपाख्याने एकादशोध्यायः ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦

रुरुरुवाच ॥ जनमेजय कैसें सहदप। कौंन हेत जारेहें सर्प ॥ लिय आस्तीक हवन विधि राषि। द्विज बरदेहु सकल सो भाषि ॥ ऋषिरुवाच ॥ मिलिहि तुमहिं एक द्विजबर मित्र। सो कहि है आस्तीक चरित्र॥भयो सो यह कहि अन्तरध्यान।रुरु ढूँढन तेहि लगे सूजान॥सो न मिलो तब रुरु श्रमछाय। गिरे भूमिपर मूर्छा पाय ॥ बेर बेर ऋषि बचन्न बिचारि। व्है बिसंज्ञ सति मतिमे धारि ॥ रुरु आए घरकों पितुपास। प्रमति कहा सब सों इतिहास ॥ इत्यादि पर्वणि सर्पसत्रप्रस्तावनायां पौलोमं समाप्तं ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦***

॥ सैनकउवाच ॥ नृपवर जनमेजय केहि हेत। जारे सर्प क्रोध भरि चेत ॥ सो सब कहहु सूत समुझाय। कत लीन्हों आस्तीक बचाय ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जनमेजय क्षितिपालकत सर्पसत्र हढि किन्ह। कस्य सुवन आस्तीक हैं अहि बचाय जिन लीन्ह ॥
सूतउवाच॥महत कहत आस्तीकको सुनिए मुनि आख्यान।जौंनभांतिसों मखभयेतक्षक बचोमहान॥

॥ * ॥ शौनकउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कथा मनोहर है अति जौंन। सुनबेकों चाहत मन तौंन ॥

॥ सूतउवाच ॥ आस्तीकको यह सकल चरित्र। सुनहु विप्र है परम पवित्र ॥ विप्रवृन्दमे व्यास कवीश। नैमिषारमे कहो मुनीश ॥ सो सुनि सकल पिताके पास। कहत तौन सुनिये इतिहास॥ आस्तीक पितु तपतेज सपूरि। उदित मनहु धरणी परसूरि ॥ उग्रसु ब्रह्मचर्य तपधाम। जरत्कारू

हो नाम ललाम ॥ नित्य चलत नहिँ लहत प्रयास ।सांझ होति तँह ताको वास ॥ तीर्थ लहत तँह आ०१
करत स्नान । भोजन तासु पवनको पान ॥ तन सूखत करि अनिमिष नैन । फिरतै रहत करत नहि
सैन ॥ फिरत फिरत कहुँ देखो जाय । पिता पितामहकों यहि भाय ॥ लंबमान ह्वै गर्त मझार ।
ऊर्धपाद अधबदन उदार ॥ जरत्कार तिनसों इमि बैन । बूझन लगे बहुत करि नैंन ॥ लटकि
अधोमुख रहे जु कौन । तुम हो कहो गहो मति मौंन ॥ रहे सु करि तृणको अवलंब । मूषक भक्षक
जाको लंब ॥ जायाबर है नाम हमार । रहे पूर्व संसित व्रत धार ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ चरणदोहा ॥ * ॥

अन्य अन्य ग्रामनमे निति निति बास जौंन एकराति।जाया वृत्तिकहतहैं ताकोंजिनकोबुद्धिबिभाति॥
जो द्विज जाया वृत्तिसो श्रेष्ठ होय अभिराम । ताकों जायाबर कहत महा मनीषा धाम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

संतानक्षय ते गिरण चहत अधोमुख होय । क्षितिपर संतति एकहैं जरत्कार नहि दोय ॥
मंदभाग्य हयकों करत अल्प भाग्य तप निष्ठ । भार्या बरत न होय हे जातें संतति इष्ट ॥
तातें लटकत गर्तमैं वंशक्षयकों देखि । जरत्कारू कुलनाथ लहि भए अनाथ बिशेखि ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तुम को बंधु सदृश जो शोचत । जानो चहत विप्र मोहि रोचत ॥ काहे हेत शोच तुम
कीन्हो। देखि हमै करि चित्त मलीनों ॥ जरत्कारु रुवाच ॥ तुम हो पिता पितामह मेरे ।
जरत्कारु हम कहत निबेरे ॥ जो तुम कहहु करैं हम सोई।पितर वाक्यसों भिन्न न कोई॥
॥ पितरऊचुः ॥ संतति होय जतन सो कीजै । मो तो अर्थ होय सो लीजै ॥ धर्महेत भार्या
ग्रह करिए । संतति होइ सोई ब्रत धरिए ॥ दान धर्म नहिँ तपतें होई । पुत्रबान गति
पावत सोई ॥ पुत्रपरम मो आज्ञा लीजै।हित हमार यह सत्य सोकीजै॥जरत्कारुरुवाच॥
दारा धन संग्रह नहि करिए।तव हित लागि इहौ अनुसरिए॥सदृश नाम बालाजो कोउ।
बंधु तासु बिनु मागे सोउ ॥भिक्षा सदृश मोद भरि देहैं । सबिधि व्याह करि ताकों लेहौं॥
हम दरिद्रको हमकों कन्या । सगुण सरूप देइगो धन्या ॥ लेहैं अवसि जो देइहि कोउ।
तव हित हेत करैंगे सोउ ॥ तामे जंतु होयगो जो सो ।तारण हेतु होयगो तो सो ॥ तुम
सुस्थान निरन्तर लहिकै । करिहो बास मोदकों गहिकै ॥पितर प्रसन्न भए यह सुनिकै ।
स्वर्गबास निज हियमै गुणिकै ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

आ०प० स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि द्वादशोध्यायः ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

॥ सूतउवाच ॥ दाराहेत फिरण सो लागे । जरत्कारु छितिपर मुदपागे ॥ तिन्है न काहूँ कन्या दए । पितृबचन सुधि करि बन गए ॥ तीनि बेर मधुर ध्वनि बोले । कन्या बरन हेतु चित मो ले ॥ सुनि बासुकि भगिनी लेइ आयो । अनुजा रूपवती मुदछायो ॥ लेऊ विप्र यह भगिनो मेरी । देत तुम्है भार्यार्थी हेरी ॥ चहत समान नामकी लीन्हो । जरत्कार यह चिन्ता कीन्हो ॥ कहा नामहै भगिनी थारी । कहऊ सर्पवर सत्य विचारी ॥ बासुकि नाग समुझि यह कहो । चित्त बृत्ति जो मुनिकी रही ॥ *❦*❦*❦*❦

॥ वासुकिरुवाच ॥ जरत्कार नामा यह कन्या । ग्रहण करऊ भार्यार्थक धन्या ॥ यह कहि सो मुनिबर कँह दीन्हे ॥ सविधि स्वस्ति कहिकै मुनि लीन्हो ॥ आदिपर्वणित्रयोदशोध्यायः ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूर्बकालमे माता दीन्हों इमि सपनकों शाप । जनमेजयके जज्ञमे ह्वैहौ भस्म सपाप ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

शापशान्ति करिबेकों दीन्हे । भगिनी सर्पराज मुदलीन्हे ॥ जरत्कारु मुनि सविधि बिवाहो । बंश बृद्धि करिबेकों चाहे ॥ मुनि आस्तीक तासु सुत भए । पिता भक्त तपतेजस मए ॥ श्रुति सर्बज्ञ सुपरम जशस्वी । सर्ब लोक हित उग्र तपस्वी ॥ बऊत काल जनमेजय बीते । यज्ञ रचो अहिनाशन चीते ॥ होन लगो जब यज्ञ सोहायो । तब अहिकुल आस्तीक बचायो ॥ यज्ञकियो ब्रत वेद पढायो । देवपितृ ऋषि ऋण सु मिटायो ॥ महापितर [illegible] सुत सोचे । जरत्कारु दिवगए अशोचे ॥ इत्यादिपर्वणि चतुर्दशोध्यायः ॥ *❦

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

शौनकउवाच ॥ सूत कथा सह विस्तर कहिए । फिरि सुनिजो अति आनन्द लहिए ॥ सो आस्तिक कथाहै ताकों । चाहत सूत सुनो कऊवाकों ॥ सूतउवाच ॥ कृतजुग पूर्ब प्रजापति कन्या । दोय रहीं सतगुणमय धन्या ॥ दोऊ परस्पर प्रीति मईही । पितु तें कश्यप [illegible] दईही ॥ कद्रू विनता अति मुदछाई । ब्रह्मा सदृश परम पति पाई ॥ कश्यप बर दीबेकों भए । देखि स्वभाव रूप मुदसए ॥ बर प्रदानके बचन सुने ते । मुदित भई पति प्रीति गुने ते ॥ दश हजार सुत कद्रू मांगे । भरे तुल्यबल तेजस पागे ॥ विनतैं कहे दोय सुत दीजे । प्रथम विनय सुनिबर सुनि लीजे ॥ कद्रूके पूतनतें भारी । बली सुशील धम

अधिकारी॥एवमस्तु कहि मुनिवर दीन्हों । दुहुन गर्भको धारण कीन्हो ॥ गर्भ जतन कीजो इमि भाषी । आपु गए वन तप अभिलाषी॥ सूतउवाच ॥समय पाय कै कद्रू दीन्हो दश हजार अण्डा मुद लीन्हो॥सघृत भाँडमे अण्डा राखी।दासी यतन करहिँ अभिलाखी॥ शरशत बर्ष बीति गे जबहीं।कद्रू तनय कढे सब तबहीं॥अण्डा दोय दए बिनताहे।शोचति भई न जनमे काहे ॥ सुत दरशनकी कांक्षा भारी । तब बिनता यह मति अनुसारी॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बर्ष पाच शत बीति गे सो सुतमे न सुजान। कद्रू लहत भई सुवन कालसमान अमान ॥
यह बिचारि सहसा कियो देख्यौ अण्ड बिदारि । एक महाव्याकुल भई सुत अधांग निहारी॥
तब तेहिँ सुत ऐसें कहो बिनतासों रिसि छाय। दासी हिहौ पाँचशत बर्ष सौतिकी जाय ॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

मोहि अर्धतन कीन्हो माय । दयो शाप यातें रिसि पाय॥ शरशत बर्ष सुसेवहु याहि। जतन सहित दुखनद अवगाहि॥यासे होइहि सुत अति उग्र।तो दासीपद मेटिहि सुद्र॥ यह कहि गयो सो गगन उडाय।भोर अरुण सो परत लखाय ॥ अरुण प्रताप भरो अति चाहि । करो सारथी दिनमणि ताहि॥ इत्यादि पर्वणि पञ्चदशो ऽध्यायः॥ *❦*❦
सूतउवाच ॥ताहो समै दुओ एक संग ।कद्रू बिनता भरी उमंग॥ देखो उच्चैश्रवा तुरंग। पूजत ताहि सकल सुर संग॥मथें क्षीरनिधि प्रगटे जौन। अश्व रत्न बल अतुलित तौन॥ शौनकउवाच॥ कैसे मथो क्षीर निधि कुत्र।विधि वत कहहु सूतके पुत्र॥ कैसें प्रगट भयो यह अश्व। उच्चैश्रवा सुमहत जगश्व॥ तेजस भरो मेरुगिरि तौन । रोकत भानुप्रभा कहे जौन॥ शृंग रत्नमय ताके जाय। बैठे देव सकल सुखदाय॥करण लगे तह मंत्र बिचारि। लीबे अमृत हिये निरधारि ॥ बिधिसों कहो भरे आनंद । नारायण प्रभु हरता दंद॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दव दनुज मिलिकै मथहु क्षीरसिंधुकों जाय । प्रगट होयगो अमृत तँह मथे सिंधु सुखदाय॥
सकल औषधी होहिँगी सकल रत्न समुदाय । प्रगट होइगो अमृत अनु सुनहु देव सुखदाय॥

॥ * ॥ इत्यादिपर्वणि षोडशोऽध्यायः ॥ * ॥ ❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦

चरणाकुलकछन्द ॥ मन्दरगिरि जुत रत्नप्रभात।सुरन जाइ देखे अवदात॥ लता वृक्ष कुसुमितसों सोहै । खग कूजितसों मुखरित होहै॥ मृग गज व्याघ्र बराहन पूरो। अपसर किन्नर सेबित रूरो॥जोजन सहस एकादश बडो।है एतनो धरणीमें गडो॥यह न उखारन जोग हमारे। देवन्ह हरि बिधि पास पुकारे॥हे प्रभु उतपाटनको याके ।यतन करहु तुम

अैन कृपाके॥ सूतउवाच॥ सुनि हरिविधि फणिपतिसों कहो। मन्दरगिरिहि उखारऊ अहो॥ गिरि उद्धारण हरि जब भाखे। शेष उखारि सिंधु तट राखे॥ समुद्रउवाच॥ सुनऊ सुरासुर बचन हमारो। मथि पय चाहत अमृत निकारो॥ गिरि उप मर्द भ्रमण हम सहिहैं। चाहत अंश कछू सो लहिहैं। मंदर गिरिहि पीठि पर राखो। तुम्हे जोग्य गुनिक हम भाखो॥ कूर्म राजसों कहो बिचारी। तदनु सुरासुर बाणी भारी॥ कहो तथास्तु कूर्मपति जबहीं। धरो सो इन्द्र पीठिपर तबहीं॥ गिरि मंथान मन्दरहि कीन्हों। करि गुण वासुकि नाग प्रबीनो॥ मथि वे सिंधु सुरासुर लागे। अमृत हेत अति आनद पागे॥ एक ओर सब सुरगण लागे। मुखको ओर असुर बल पागे॥ शेष रहे नारायण जेहाँ। ठाढे भये जायके तेहाँ॥ * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

घर्षन त सुर असुरके वासुकि पाय प्रयास। सहित धूम ज्वाला सहित असकृत लेत उसास॥
तीन धूमतें घन भए बिद्युत सहित महास। बरषत श्रम संताप हर सुरगण के सुख दान॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

गिरि सह कूट वृक्ष जे फिरत। तिन तें सुमन समूह न्तगिरत। सुरा सुरण पर ते उडिपरत। श्रमण श्रम संतापहि हरत॥ मंथन नाद होत अति उद्द। गर्जत घन बस पवन अरुद्द॥ गिरि घर्षण लहि नादमहान। भए सकल सम पिसे पिसान॥ अचल भ्रमत तरु धमि धसि जात। ताते उठी अगिनि बसवात॥ चऊँ ओर गिरि फिरत असान। बिद्युत बलि त मनहु जल दान॥ जरन लगे गिरि जीवअनेक। सुरपति शासनतें मरि मेक॥ अगिनि बताय दईघनतीन। जारतहीं गिरि जीवन जौन॥ बहुत भांति के तरु दर तास। दिव्य औषधि निकरेरस रास॥ कढतो भयो अनूप अमंद। ताहि लखें सुर भे सानंद॥ कंचन बहो शलिल व्है जौन। अमर भए सुर पीवत तौन॥ सिंधु शलिल भो क्षीर सुजान। मिलत तौन रस अति सुख दान॥ सो रस मिलें क्षीर जल जौन। तातें घृत भो पावन तौन॥ सुरन कँहो ब्रह्माके पास। भयो हमै प्रभु महत प्रयास॥ अमृत भयो अवलों नहि व्यक्त। हम सब श्रमलहि भए अशक्त॥ नारायणसों विधि वर बैन। कहो कृपाकर आनन्द अैन॥ देव भए श्रमलहि बल हीन। प्रबल करऊ इनके तुम ऐन॥ विष्णुरुवाच॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देत महा बल सुरनकों हे ब्रह्मन सुख दाय। क्षोभित करैं समुद्रकों द्रुत मंदरहि फिराय॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

भए प्रबल खैंचन सुर लागे। मन्दर मथन सिंधु सुख पागे॥ सूतउवाच ॥ आकुल बऊत सिंधुजल कीन्हे। बिष्णुदत्त बल सुरगण लीन्हे॥ प्रथम सुधाधर प्रगटे तातें। फेरि कढी श्री भरी प्रभातें॥ फेरि सुरादेवी तँह निकसी। पाण्डुर बरण मोदसो बिकसी॥ उच्चैःश्रवा तुरँग कढि आयो। पांडुर बर्ण बेगसों छायो॥ अनु कौस्तुभमणि पांडुर निकसो। लगि नारायणके उर बिकसो॥ श्री शशि सुरा तुरँग सुहाए। सुर पुर गए मोदसों छाए॥ सुरन्ह धन्वन्तरि लए निहारो। स्वेत कमण्डल अमृत सुभारो॥ अमृत सु देखत दनुज पुकारे। यह हम लेहैं बर बल भारे॥ चतुर्दन्त ऐरावत भारी। निकसत लयो सुरेश निहारी॥कालकूट ता पीछे निकसो। कालानलसम ज्वालन बिकसो॥ तासु सुगंध धूमसंग धायो। मेर महा त्रिभुवनमें छायो॥ तीनोलोक जरत जब देखे। त्रिभुवन नाथ कृपा अव रेखे॥करि हर पान गरेमे राखो॥नीलकण्ठ तब बेदन भाखो॥ यह अद्भुत दनुजन जब देखे। आशारहित भूरि भय भेखे॥लक्ष्मी अरु सुअमृतके लीन्हे। दितिके सुतन्ह बैर अति कीन्हे॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धरो मोहनी रूप हरि करि माया सुबिलास। मोहन करिबेकों चले गे असुरनके पास॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतेमहाभारतदर्पणेआदिपर्वणि अमृतमथने सप्तदशोध्यायः॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सूतउवाच। बर्म पर्म धरि शक्ती उदार। भए युद्धको दनुज तयार॥ नर सह बिष्णु अमृत लेइ पास। दानवेन्द्रिसों सहित बिलास॥ देवनकों सो अमृत पियाइ। असुरन दए सुरा श्रम छाइ॥ धरि सुर रूप राहु तँह जाय। अमृत सुपियन लगो सुख पाय॥गयो कण्ठलों अमृत सुतास। रबि शसि कहे बिष्णुके पास॥ बिष्णु चक्र कहँ आज्ञा दीन्ह। सिरधर तुरित द्विधातिन कीन्ह॥ गयो शीस सो गगन उडाय। अमृत प्रभाव पाय तह जाय॥ घोर शब्द सो लागो करन। नचो कबंध भूमि भय भरन॥ सो धरि बैर शीस अरु काय। ग्रसत अबऊँ शशि सूरहि आय॥ तजि हरि रूप मोहनी तौन। धरि शस्त्र अति उन्नत जौन॥ कम्पित करो दनुज कुल क्रुद्ध। होन लगो अति दारुण युद्ध॥ लवण सिंधुके निकट महान। भिरे असुर सुर अति बलवान॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुर अरु असुरभरे अतिक्रुद्ध। नाना भांति अस्त्र धरि उद्ध॥ कटे चक्रसों असुर अमान।

आ०प०

रक्त बसत छिति परे महान ॥ भरे रुधिरसों असुर अमान । भूगत मनु गैरिक जुत सान ॥
माचो उद्ध तहां हुङ्कार । हनत परस्पर शस्त्र उदार ॥ छिंधि भिंधि सुर असुर पुकारि ।
लरत अस्त्र अति दारुण धारि ॥ ऐसे तुमुल देखि अति युद्ध । नरनारायण ह्वै अति क्रुद्ध ॥
आए समरसिंह दोउ बीर । धरे उदार धनुष नरधीर ॥ मारन लगे दनुज रण बक्र ।
हन्यो कुलिशसों तिनको शक्र ॥ चक्र सुदर्शन कर हरि लीन्ह।छोडि असुर सेनासंह दीन्ह ॥
चक्र चपल चारो दिशि धाय । काटे असुरसेन गहि चाय॥ खण्ड खण्ड करि छिति पर डारि ।
दनुजन देत दोष बिसतारि ॥ दनुज लेत गिरिबरन उखारि । देत देवदल ऊपर डारि ॥
सुरवर मारि सरनसों काटि । गिरि तरु देत भूमिपर पाटि ॥ चक्र सुदर्शन चढो अकाश ।
काटि कियो असुरनको नाश ॥ हारि गए कोउ समुद समाय । कोऊ भूमिमे पैठे जाय ॥
हारे असुर सुरनसें सर्व । इत उत भाजि गए जे खर्व ॥ सुर जय लहि मन्दरहि उठाय ।
जहँको तहँ धरि दीन्हो जाय ॥ सुर करि नाद गए निज धाम । जल थल भए सकल
अभिराम ॥ अमृत पात्र कहँ धरि शुभ देश । नरकहँ रच्छक कियो सुरेश॥ ** ** ***
स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि
रघुनाथकबीस्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविनाकृतमहाभारतदर्पणेआदिपर्वणि अष्टाशोध्यायः ॥ *

॥ सूतउवाच ॥ अमृत मथन बिधि भाषी सर्व ।उच्चै श्रवाभयो तँह अर्व ॥

॥ *॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सूतउवाच॥ जेहि लखि कद्रू बिनतै बैन । कहे सपत्नि भावके ऐन ॥ उच्चैःश्रवावर्ण है कौन ।
हे बिनता निजु भाषहु तौन ॥ बिनतैं कह्यो श्वेत सब अंग । है यो उच्चैःश्रवा तुरंग ॥कद्रू तुम
देखो सो कहहु । अश्व राज रँग चुप मति रहहु ॥ कद्रूउवाच ॥ बिनता सत्य कहहु तुम
बैन । श्याम पूछहै बाजी तौन ॥ नतरु चलहु सो लीजै जाय । जो हारै सो दासी होय ॥
॥ सूतउवाच ॥ ऐसो पण करि दुहुन कठोर । कह्यो देखि जो चलिए भोर॥ कद्रू पुत्र बोलाय
हजार । श्याम करण कहि दीन्हे वार ॥ हयकी पुछ करहु तुम श्याम । न तरु होत दासी
मो नाम ॥ तिन सुनि यह मान्यो न प्रलाप । कद्रू दियो तिन्है यह शाप ॥ जन्मेजयके सर्प
सत्र महँ । पावक भक्षन करिहि तुह्यै तहं ॥कद्रू दयो शाप अति क्रूर । जगतहेतु हित आनद
पूर॥देवन सहित पिता मह आय।कह्यौ तथास्तु शाप सुख पाय॥जिनके भरे तीक्ष्ण बिषदन्त।
परसि करत जीवनकोअन्त ॥ कद्रू कह्यौ उचित यह बात । नतरु करत ए जगत निपात ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नित्य करतजे जगतके जीवनको अपराध। दंड देत प्राणांत बिधि यामे कछु न बाध ॥

॥ विष्णुपद ॥ याविधि कहि विधिना कद्रूको समाधान करि दीन्हो । ऐसे कहे बचन कश्यपसों आ० बिधि बोलाय ढिग लीन्हो ॥ दंद करण ए पुत्र तिहारे महा भरे बिष जाए । तिन कद्रूसों कारण बस कछु घोरशापकों पाए ॥ तातें क्रोध तुम्हे नहि करिबे यासे सुनिए सांची । इनको नाश जग्यमें भावी रही पुरातन खांची॥ ऐसे कहि ब्रह्मा कश्यपको समाधान करि लीन्हे। विषहर ही विद्यासों गोकुल ताकों ताछण दीन्हे ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबंदीजनकाशीवासि रघुनाथकबीस्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणिएकोनविंशतमोऽध्यायः।

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ सूतउवाच ॥ बीती रजनि उयो जब भानु । कद्रू बिनता दोउ समानु ॥ कियो दुसहपन अमरष भाय। जो हारै सो दासी होय ॥ देखन उच्चैःश्रवा तुरंग। दोऊ चली सँग भरी उमंग॥ दोऊ गई समुद्रके तीर । देखो कहा अपार गँभीर ॥ यामें भरे यादगण घोर। चक्र दिशि सूझि परत नहि छोर ॥ महा तरंगनको संचार । वरुणालय जेहि कहत उदार॥ बडवानलको जामे बास । हरि सोवत जँह जगत निवास ॥ पाँचजन्यको जन्मस्थान। रतनको आकर सुखदान ॥ कियो बराह धराउद्धार। ताते मथित कलुष भो बार ॥ कद्रू बिनता सिंधु सरूप। चकित भई लखि सुमन अनूप ॥ इत्यादिपर्वणि सौपर्णे विंशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नागन यह मत करि कह्यो बिना मनोरथ सिद्धि । अब भस्म करिहैं हमै बाढे कोप समृद्धि॥ हमै मोचिहैं शापसों व्है प्रसन्न सो माय । तातें पुच्छ तुरंगको श्याम कीजिये जाय ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

यह कहि गए पूछसों लागे । अहि गण माताके हित पागे ॥ दोऊ सपत्नी पन करि गई । नभपथ व्है हयके ढिग भई ॥ सूतउवाच ॥ उच्चैःश्रवा पासते आइ । देखन लगी मोदसों छाइ ॥ स्वेतन तात सुधासम देखो । पूँछ श्याम बिनतैं अवरेखो ॥ रही बिचारि भेद नहि पायो । बिनताके हिय बिस्मय छायो ॥ बिनता पर्म धर्मकी रासी । पन बस हारि भई सो दासी॥शर शत वर्ष बीति गो जबहीं । अंड बिदारि गरुड भे तबहीं ॥ महासत्व अति बलसों भारे । महा प्रकाश भरे उजियारे ॥ स्वेच्छारूपी स्वेच्छा गमनी । इच्छा बलकर खलदल दमनी ॥ अग्निरासि सम भासक देखे । महा भयंकर रूप बिशेखे ॥ पीत तडितसम लोचन जाके । अग्निपुञ्ज सम तेज प्रभाके ॥ थोरे दिन महँ अतिशय बाढे । पढे बेदबिद्यागुण गाढे॥ महाकार्य्य कृत चित्त बिचारे । तब खगेश नभदेश पधारे ॥ घोर घोर स्वन रौद्र औबैसे। देव

आ॰प॰ चकित लखि मनमहत्रसी॥शरण अग्नि केशव सुर आए।शङ्कभरे अति विनय सुनाए॥कबहुँ अग्नि हमैनहि जारो।अब जारनको कहा बिचारो॥तेजपुञ्ज तो धावत आयो। लोकान्तक सम चहत जरायो॥अग्निरुवाच॥सुर समुझे तुम सो मतिमानो।गरुडहिदेखि तेजमो जानो॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिनतामे प्रगटित भयो काश्यपेय बलपूर। मम समान तेजस भयो गरुड नाम अति सूर॥ भ्रमभरि डरहु न सुर सुनहु चलहु हमारे साथ। सर्पदमन दितिकुल समन भयो खलहु खगनाथ॥ यह सुनि हित गुनि मोदलहि अग्नि संग समदेव। सुस्तुति लागे करण तहँ भरे बेदबिधि भेव॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

देवउवाच॥ तुम महा भाग खगेश। तुम उग्रऋषिवर भेश॥ तुम प्रजापति हो भानु। तुम इन्द्र तुमहि कृशानु॥ तुम विष्णु हयमुख सत्य। तुम पवन हैं अभिगत्य॥ तुम चतुर्मुख विज्ञान। तुम अमृत सम जगमान॥ तुम प्रभा हो सुर त्रान। तुम सिन्धु सुबल महान॥ तुम करत अति विषनास। तो हरण पोषण पास॥ तुम ध्रुवाध्रुवके समन। तुम मनोजव वर गमन॥ तुम तडितप्रभ बलधाम। तुम अक्षय बिक्रम आम॥ तुम तप्त काञ्चन बर्ण। तुम होत असरण सर्ण॥ तुम परम करुणा कन्द। खगनाथ कश्यप नन्द॥ तुम महामति सनमान। तजि क्रोध देहु महान॥ तजि अग्नि सदृश सरूप। कुरु कृपाहे खगभूप॥ इमि सुरन सुस्तव कीन। सह ऋषिन सुनि खगईन॥ तजि दयो तेज समान। धरि लयो रूप समान॥ इत्यादिपर्व्वणि सौपर्ण स्तुतिः॥ *❁*❁*❁*❁*❁*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुस्तुति सुन्यो खगेश तब अपनो देह निहारि। दूरि करी बर दृहत्ता कृपा हृदयमे धारि॥ गरुडउवाच॥दहत भयानक रूपमो लहत जीव भय भोर।तातें कीन्हो सौम्य शुचि अपनो चारुशरीर॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सूतउवाच॥ तब खगेश कामग भरिचाय। पिता धामते अरुण उठाय॥ धरे पीठिपर माता पास।सिन्धुपार राखो सुखरास॥अति द्युति अरुणहि कारण पाय। उदया चल पर राखो जाय॥उग्रते जतें रवि करि कोप। लोकदमन मत करो अरोप॥ ऋरुरुवाच॥ कौन हेत करि कोप महान। लोक दहन कह चाहोभान॥ कौन करो देवन अपराध। जाते चहो दिवसपति बाध॥प्रमतिउवाच॥ रबि शशि कहो देवहित बैन। दनुज पियत अमृत सुर हैन॥ रबि शशि बैर धरे बहु पास। करत समय लहि दारुण ग्रास॥सुरगण हित कहँ कीन्हो कर्म्म।सो यह हम कहँ लगो अधर्म्म॥देवन कोउ करत सहाय।याते

भानु कोप अतिछाय॥लोकदहनको कियो बिचार।करिकैं तेज सको बिस्तार॥यह बिचारि अस्ताचल सूर।गए क्रोध धरि मनमे पूर॥ करिवे को जैतो बिनाश। करि तेज सकों भूरि प्रकाश॥गए महा ऋषि देवन पास।ऐसे लागे कहन सत्रास॥अद्य निशीथ समै सन्ताप।प्रगट होयगो उग्र अमाप ॥ गए देव ऋषि बिधिके पास। ऐसे कहन लगे भरित्रास ॥ बिधि निशीथमे महत चरित्र। व्हैहै दाह बिनाहि सवित्र॥ कहा होयगो उएँ दिनेश। त्रय भय वारए कहउ अशेश ॥ पितामहोवाच। लोक बिनाश करए कहँ सूर। व्हैहैं उदित आजु अति क्रूर ॥ लोक भष्मसम करिहैं जारि। याते प्रथम जतन निरधारि ॥ धरो अरुण कश्यपको पूत। महा काय सो व्है रबिसूत ॥ आगें बैठि करिहि सारथ्य। हरिहि सूरको तेजस तथ्य॥ ऋषिन सहित सह सुरन बचाव।व्हैहै जगको सुनहु सचाव॥प्रमतिरुवाच॥ अरुण पितामह शासन पाय। भए सारथी रबिके जाय ॥ उए दिवाकर तेजस तास। रोको अरुण मिटी जगत्रास॥भानु कोपको सकल बिधान।जिमि भे अरुण सारथी जान॥ सो सब कहो सुनो तुम नौन। पूर्व प्रसंसो कहियत जौन॥ इत्यादिपर्वणि सौपर्णे ॥ * ॥

॥ सूतउवाच ॥ कामग गरुड पयोनिधि पार। गए सो माता पासउदार॥बिनता कद्रूसों पन हारि। दासी भई महादुख धारि ॥ बिनतहि प्रणत पुत्र ढिग देखि। कद्रू कहो बोलाय बिशेखि॥सिंधुमध्य नागनको धाम। अति रमणीय रहस्य ललाम॥ तहां हमै बिनता लेइ चरऊ।जान समान बेर मति करऊ॥ताहि कंधधरि बिनना बिप्र।चढेगरुडपर पन्नग छिप्र॥चले खगेशदिनेश निकट गहि।मूर्छित भए प्रताप तपे अहि॥कद्रू देखि सुतन्ह कर मरन। शक्रस्तुति लागी तब करन॥ जय जय सर्व देव गए ईश। नमः जयति बलभित जगदीश॥सोनः नमुचिसूदन सहसाक्ष।नमः शचीपति भर्दनरक्ष॥अग्नि वायु अरु मेघ महान। नमोः बज्रधर वर मघवान ॥ नमः ज्योतिमय रबि शिखि रूप।नमः शक्र त्रिभुवनको भूप॥ नमोः बिष्णु देवनके देव। नमः चराचरहित चित भेव॥ नमः सोम सब कास बिभेद। नमः धराधर परकर छेद॥ नमः धरणि गिरि गहन स्वरूप। नमः महोदधि रूप अनूप ॥ नमः महाजश बिगत बिषाद। नमो नमः दायक अहलाद ॥ फलहित बिप्रकरहि तव यज्ञ। तुम मख भाग भोगकर तज्ञ ॥ नो हित सुबिधि परायण बिप्र। पढत बेद बेदांग सु छिप्र ॥ इत्यादिपर्वणि सौपर्णे ॥ *❦*❦*❦*❦*❦**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुस्तुति कद्रूकृत सुने हरषभरे मघवान। बर्षा कारवेकों कहो बोलि महत जलदान ॥

॥ ＊॥ चरणाकुलकछन्द ॥ ＊॥

गरजिमेघ चहुँदिशितें आए। बरषन लगेमोदसें छाए॥बिद्युतजाय छाय छितिदीन्ही। सरवर सदृश भूमि भरि कीन्ही ॥ ऐसी भांति सघन नव बरषे। मिटीताप कद्रूसुत हरषे॥ मोदसहित कद्रू तहँ आई। नागन्हलए गरुड सुखदाई॥ मकराबास द्वीप तँह आए। लवणा सुरहि लख्यो बल छाए॥ सहित सुपर्ण दीप सो देखो। परम बिचित्र चित्रसम देखो॥ तरुबर सघन सुमन फलभारे।पद्माकर सहपद्म निहारे॥ नानाभांति बिहंग कल बोलैं। मधुप मदांध गुञ्जत डोलैं॥ चहुँदिशि बिबिधि सदा गति धावैं। भरत मदन्नमद आनद छावैं॥ नाग नवल तेहि बिपिनि बिहारे।और दीपकहँ चलन बिचारे॥खगपतिसें इमि कहे बिशेषे। खेचर बहुत द्वीप तुम देषे॥ औरो द्वीप जहाँ छबि चाखो। हमै सहित लै तँहकहँ चालो॥ सुनि सुचिंत्य खगपति बिनतासें। बोले देखि भरे दिनतासें॥कारण कहा भाँतिसो कहिए। दास सदृश जो शासन बहिए॥बिनताउवाच॥छलकरि इन पन जीतो मोसें। दासी भइ कहति हम तासें॥ यह सुनि गरुड अहिनपँह आए। रोषभरे ए बचन सुनाए॥ कहा देहिं का पैारुष जटै। जासें दास पनेसें छुटै॥ सूतउवाच॥ बचन गरुडके अहिगण सुनिकै। कहनलगे मातासें गुनिकै॥ बलतें अमृत ल्याय जब देहो।मोच दासपनतेतब लेहो॥तदनु कहत ऐसे मातासें।भयो खगेश भरो बलआसें॥ अमृत हरण हम जैयत अहो। भक्षण बिदित होय सो कहो॥ बिनतेवाच॥ बसत निषाद सिंधुमे आगे। सहसनते भखेहु सुदपागे॥ हे सुत द्विजहि सरिशि मति करियो। बिप्र अवध्य वर्णसें डरियो॥ अग्नि सदृश सब भूतन मे हैं। बिप्र अभक्ष्य भस्मकरि देहैं॥ अग्नि अर्कसम द्विजबर जानो। बाडव सदृश भस्मकर मानो॥ क्रोध भए बिप्रनसें जरिहो। तब तुम सिद्धि वृद्धिसें भरिहो॥ ब्राह्मणद्रोह भूलि जे करहीं। ते जन बिष लि भूरिसें भरहीं॥ अग्रज ब्राह्मणवर्ण बिचारो। गुरू पितासम हियमह धारो॥ ॥ गरुडउवाच॥ रूप शील ब्राह्मणको कहिए। जाकों मानि सभय ह्वै रहिए॥ ॥ बिनतोवाच॥ यचैन उदर गए जेहि जानो। सो है बिप्र बीर्य अनुमानो॥ बिनतै फेरि प्रीति करि कहो। पुन सुपथमह आनद लहो॥ मारुत रक्षहि पक्ष तिहारे। अग्नि शोष [illegible] सुदभारे॥ ＊ ＊ ＊ ＊ ＊ ＊ ＊ ＊ ＊ ＊ ＊

॥ ＊॥ दोहा ॥ ＊॥

शान्ति स्वस्तिके कर्म्मसे निरत भए दिन राति। जाउ कुशलसें पथज जे तेसब बिघन निपाति॥
सुनिकै माताके बचन पन्नगकों महराय। चले गगनगत पवनसम महाबेग खगराय॥

गए निषादालय निकट महावेग खगपाल। देखतहीं हरषितभए मनो बुभुक्षित काल॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

नीषादनकहँ चाहत खाय। धूर उडाई पक्ष हिलाय॥ महा वायुसों तरुन कपाय। महा प्रमाण बदनकों बाय॥ अन्धकार रज रञ्जित छाय। राह रोकि बैठे सो जाय॥ चले निषाद धामकों सर्ब। इस्त्री पुरुष बडे अरु खर्ब॥ लखे नहीं मुख गगन समान। धूरि धुम्मसे बिकल महान॥ सब निषाद मुख भीतर डारि। खगपति लियो बदन संघारि॥ रहो एक द्विज सो गुणमान। गयो कण्ठमहँ अग्नि समान॥ खगपति कहो न भक्षत विप्र। तातें निकसि जाऊ तुम क्षिप्र॥ भार्या छोडि न कढत खगेश। ताहि सहित करिदेऊ निदेश॥ तासों कहो गरुड यह बैन। भार्यासहित कढऊ लहि चैन॥ भार्यासहित निकसि सो आय। दे आशिष गो आनद पाय॥ तब खगेश पक्षन फहराय। चले वेगसों गगन उडाय॥ आगे चलि कश्यपकहँ देषि। कस्यो प्रणाम बिनीत बिशेषि॥ सहित कृपा मुनिके सुनि बैन। उत्तर दियो कुशल लहि चैन॥ कश्यपउवाच॥ प्रथम कहऊ भोजनकी बात। क्षितिपर अन्न बऊलहै तात॥ गरुडउवाच॥ माता भ्राता कुशल महान। भोजन कुशल न क्षुधा समान॥ सर्पन अमृत हरणके काज। पठयो मोहि सुनऊ मुनिराज॥ माता दास्य मोचिवे हेत। हरने मोहि अमृतको नेत॥ माता शासन लहि निर्वाद। खाए सहसन सकुल निषाद॥ गई न क्षुधा तृप्तिकों पाय। तातें दीजे भक्ष्य बताय॥ होय शक्य जो भोजन खाय। अमृत हरण कहँ जाव सचाय॥ कश्यपउवाच॥ पुण्यसरोवर यह सहभाग। जामे लरत कुम्भ अरु नाग॥ जन्मान्तरको बैर सु तास। तत्व विचारऊ सुनि मो पास॥ क्रोधी बिप्र बिभावसु जान। सुप्रतीक हो अनुज सुठान॥ सञ्चित धन बाढन कहँ झगरत। बडो न बाढत छोटा रगरत॥ करें बिभाग परस्पर बैर। बाढत करत दुष्टजन घैर॥ कहो बिभावसु ऐसें जैन। सुप्रतीक मानो नहि तैन॥ भ्राता दोउ भरे अति मोह। अर्थ परायण छोडें चोह॥ दुर्जन कोपबस दीनो शाप। गज कच्छप व्है लसे सदाप॥ कहो बिभावसु इमि धरि द्रोह। सुप्रतीक तुम हाथी होह॥ सुप्रतीक दिय शाप रिसाय। कच्छप होऊ बिभावसु जाय॥ दोऊ ऋषि लहि शाप अयान। गज कच्छप ते भए महान॥ एक योस सो गज सर पास। गरजो आय महाबल रास॥ षट जोजन ऊंचो अतिकाय। दश जोजन आयाम लखाय॥ सो इंहित सुनि कूर्म रिसाय। सरतल ते जल ऊपर आय॥ जोजन तीनि उच्चसम सार। दश जोजन जाको बिस्तार॥ देखत सो गज अति रिसि छाय। हलो सरोवरसे अतिकाय॥ दोऊ

आ०५० लरत महा करि क्रोध। पूर्वजन्मको धरें बिरोध॥ तिनकों पकरि टप्ति हित खाऊ।
अमृत हरण कारयकों जाऊ॥ सूतउवाच॥ यह कहि मङ्गल सगुन समेत। आशिरबाद
दयो सुख सेत॥ अमृत हरत लरिहै सुरराज। तुम जीतहु सुरसहित समाज॥ गरुड
पिताको पाय निदेश। गज कच्छप ढिग गए खगेश॥ सर मे लरत दुऊनकों पाय।चंगुलसों
गहि लये उठाय॥ महाबेग उडि लगे अकास। गए देव वृक्षनके पास॥ पक्ष अनिलसों
कंपत सर्व। लागे दृढ अतिवृक्ष अखर्ब॥ काम तरुनको कानन देखि। फूले फले बऊत
बिधि पेखि॥ सिंधु सलिलतें सिञ्चित सर्व। कनक भूमि भव लसत अखर्व॥ गए महा
रौहिण तरुपास। अति बिशाल मनु छुवत अकास॥ रौहिण वृक्ष गरुडसों कहो। मो
शाखापर बैठऊ अहो॥ कच्छप गज भक्षण करि लेऊ। तब जाएऊ करि कारज नेऊ॥
शत योजनकी आयत डार।तहँ बैठनको कियो बिचार॥ तहां जाय बैठे खगराय॥ डार
गिरी सो परसत पाय॥ सूतउवाच॥ तामे लटकतसाठिहजार। बाल खिल्य जे ब्रह्म
कुमार॥ गिरें डार मरिहैं तपधाम। देहैं शाप पाप अतिमाम॥ यह बिचारिकै चञ्चु
दबाय। शाखा लए चले खगराय॥धरे नखनसों कच्छप नाग। भए गगन गत गरुड सभाग॥
अति दुस्तर यह कर्म बिचारि। भए ब्रह्मसुत सहित बिहारि॥भरे कृपा खगपतिको
नाम॥ कहो गरुड यह बलको धाम॥ मन्द मन्द सोफिरत खगेश। देखे नानां बिधिके
देश॥ शाखा धरण जोग्य नहि लहत। बिधि सुत मरण भीति भरि महत॥ फिरत
गंधमादनके पास। गए लखो कश्यप तपरास॥ कश्यप दिव्य रूप सुत देखि। तेजपुञ्ज
अति बलमय लेखि॥ब्रह्मदण्डसम गिरिवर सान। रौद्ररूप अति अग्नि समान॥ लोक
लोप कर सदृश कृतान्त। मनुज दोनपहँ सानद दान्त॥ संकल्प तास आगमन बिचारि।
कश्यप मुनि बोले मुदधारि॥**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

॥ कश्यपउवाच ॥ ऐसो साहस फेरि मति कीज्यो सुत मतिमान।जारि देहिं नहिं तोहि कऊं करिकै
क्रोध महान॥ मरीचीनको पानकरि मारतण्डकी चण्ड।लहत तृप्ति ए ब्रह्मसुत तेजस भरे अखण्ड॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

॥ सूतउवाच ॥ सुतहित कारण कश्यप ऐसें। कहे बचन भरि नीति बिनैसें॥ खगपति
कृत्ति प्रश्राहित कारी। कृपा करऊ तुम परम बिचारी॥ सूतउवाच॥ कश्यपके सुनि
बचन सोहाए। बालखिल्य तजि शाख सिधाए॥ तपहित ते हिमगिरि कहँ आए। बाल
खिल्य अति आनद छाए॥ तब खगेश कश्यपसो बोले। शाखा तजन बचन अध खोले॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

गदा मुषल पट्टिस अरु पास । भल्ल कुन्तल मुद्गर कर त्रास ॥ शक्ति शतघ्नी चर्म बिशाल । धरे सज्ज सुरगण सुर पाल ॥ वर्म पहिरि वरबीर बिरुद्ध । खडे अमृत घेरे सुर क्रुद्ध ॥ देखत उद्ध युद्धको काल । खग आगमन अमोघ बिशाल ॥ * * * * *

॥ * ॥ इत्यादिपर्बणि सौपर्णे ॥ * ॥

शौनकउवाच ॥ कहापराध करो शहसाच । वालखिल्य तपते अति सच ॥ कैसे जन्म लियो खगराज । कश्यप सुत पछी केहि काज ॥ आपु अजेय जगत जेतार । सुनो चहत सो कहऊ उदार ॥ सूतउवाच ॥ यह पुराणको बिषय मुनींद्र । सुनहु कह्यो जो व्यास कवींद्र ॥ यज्ञ करत कश्यप मुनिराज । पुत्रहेतु तहँ जुरो समाज ॥ रिषि सुरपति गंधर्व समेत । गए सहाय करणके हेत ॥ समिध लेन सुरसहित सुरेश । कश्यपको लहि चले निदेश ॥ शक्य प्रमाण समिध धरि माथ । सुरन संग आए सुरनाथ ॥ समिध लए यष्टि सम एक । वालखिल्य लगि सहस अनेक ॥ आवत महत भरे श्रम सब । तप तनु छाम अँगुठा सम खर्व ॥ गोपद जलमह तरत निहारि । हँसे इंद्र बलमद मति धारि ॥ तिन्हे नाघिकै चलै सुरेश । वालखिल्य भे क्रोधावेश ॥ सक्र भयङ्कर कर्म बिचारि । तपको तेजस मह पत सारि ॥ विधिवत होम लगे ते करण । महा रिचनसों आऊति भरण ॥ काम बीर्य्य कामग बल धाम । सुरपति मदमर्दन अभिराम ॥ अन्य इंद्र सम्भवके हेत । बालखिल्य सब सुतप निकेत ॥ जानि इंद्र यह मत भय भरण । गए सभय कश्यपके शरण बालखिल्यको कपट बिचारि । कश्यपसों बोले निरधारि ॥ सुनि कश्यप जानो तप रास । गए बालखिल्यनके पास ॥ कर्मसिद्धि पूछो मुनि जाय । उनहू कहो सर्व सति भाय ॥ सान्तिपूरवक कश्यप बैंन । तिनसों कहो सुनऊ तप अैन ॥ त्रिभुवन शासन हेत बिचारि । इंद्र करो यह बिधि निरधारि ॥ अन्य इंद्र करि है का कर्म । यह तुम करत उचित नहि धर्म ॥ ब्रह्मावचन जूठ मति करऊ । ब्रह्म तनय यह मनमे धरऊ ॥ यह संकल्प राबरो तौन । मिथ्या करऊ न हे तपभौन ॥ यह खगेंद्र करिअे मुद धारि । कृपा देवपतिपै बिसतारि ॥ ए सुनिकै कश्यपके बैंन । बोले वालखिल्य तपअैन ॥ इंद्र हेतहू मरो आरम्भ । तुम पुत्रार्थ करत आलम्भ ॥ यह मम सकल कर्म्म फल जौंन । कश्यप दियो लेऊ तुम तौंन ॥ दच्छ सुता बिनता तेहि काल । रितु स्नान करि समुद रसाल ॥ तप ब्रत पुण्य भरी अभिराम । गई प्रजापतिपँह सुत काम ॥ कश्यप कहे सुबचन

०घ०

उदार। होय मनोरथ सुफल तुह्मार ॥ व्है हैं दोय पुत्र बलधाम। तुह्मरे महाबीर अभि राम ॥ बालखिल्य तपतें सु अनल्प। परम पाय मेरो संकल्प ॥ पुनि मुनि कहो गर्भ यह रत्न। अप्रमाद व्है कीजो यत्न ॥ ए खगेंद्र व्है है बरबीर। काम रूप रणजेता धीर ॥ कह्यो इंद्रसों मुनि सुखपाय। ए करिहैं तो परम सहाय ॥ ए करिहैं न अनिष्ट तुह्मार। इंद्र रहहु हिय आनद धार ॥ बिनता भई मुदित लहि अर्थ। जनी अरुण सुत गरुड समर्थ ॥ अरुण भए भास्करके सूत। गरुड पक्षिगणके पुरहूत ॥ *❦*❦*❦*

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

सूतउवाच॥ गरुड तहां गज कछ्प खाय। दृप्त होय सुरपुर कहँ आय ॥ अति बल देखि देव भय पागे। सब मिलि शस्त्र चलावन लागे ॥ भौ मन सुर अमृत रखवारे। तण भरि लरे गरुड तेहि मारे ॥ पक्षबातसों धूरि उडायो। अन्धकार सुरपुर महँ छायो ॥ धूरि धूंधमहँ सुरगण अंधा। भए मिटो लरिवेको धंधा ॥ तब खगेश अमृत रखवारे। पक्ष तुण्डसों मारि बिदारे ॥ तुरित सुरेश बायु बोलवाए। धूरि हरण कँह ऊकुम सुनाए ॥ बायु उडाय धूरि सब दीन्हो। भयो प्रकाश सुरन्ह खग चीन्हो ॥ सुरन्ह शस्त्रसों गरुड प्रहारे। गरजो खगपति घनसम भारे ॥ तब उडि गरुड गगनकों गए। सब देवन्हके ऊपर आए ॥ खगपति युद्ध तुमुल अतिधारे। नखन्ह फारि सुर छितिपर डारे ॥ नभते गरुड बेग बर धारे। उर नख पक्ष मरदि सुर डारे ॥ बमत रुधिर सुरगण सब भागे। चहुँ दिगंत गे भयसों पागे ॥ साध्य सहित गंधर्व सुभागे। पूरब दिशा गए भय पागे ॥ रुद्र सहित सुर भय सों भारे। दक्षिण दिशा गए रणहारे ॥ पश्चिम दिशि आदित्य सु गए। दस्र गए उत्तर भयमए ॥ फिरि फिरि देखत लरत परानें। सकल परस्पर भयसों सानें ॥ अश्वक्रंद घोर बल रोषे। रेणुक क्रथन तपन अति चोषे ॥ श्वसन उलूक निमेष रिसाने। प्ररुजु पुलिन अरु शूर सुठाने ॥ ए एकादश पर तेजस्वी। लरेसु तिनसों गरुड जशस्वी ॥ अरु सुर लरे महाबल भारे। अस्त्र शस्त्र नानाबिधि डारे ॥ गरुड तुण्ड नख पक्षन मारे। करि मूर्छित छिति ऊपरडारे ॥ युग अंतहि हर कोपित जैसें। खगपति हने सुरन कँह तैसे ॥ मरण प्राय सुरगण कार धाए। खगपति निकट अमृतके आए ॥ तहँा अग्नि चारो दिशि देखो। लहि बिस्मय मनमे अवरेखो ॥ महाज्वाल अम्बरलों धावै। ईनसों कवन उपाय बनावै ॥ करि अनेक मुख खगपति धाए। घनलों नदी बारि भरि ल्याए ॥ डारि वारिसो अग्नि बितायो ॥ खगपति अग्नि निकट तब आयो ॥ तहा भ्रमत एक चक्र बिलोके। तीक्ष्ण अमृतको पथ रोके ॥ अति तनु भानु किरिणि सम करिकै। आररंध्र मग व्है मुद भरिकै ॥ गए सप

रचक्र द्वै देखे। महाकाल सम अति बिषभेखे॥तिनको चख जो ऊपर परई।बचत न ताहि अघा सो करई॥रज उठाय तिनके चख भारे। नखसों मरदि गरदकरि मारे॥ अमृत लेइ तब खगपति धाए।चक्र तोरिकै बाहेर आए॥महावेगसों गरुड सिधारे। लखि जव तास बिलु मुदभारे॥ आय कहो बरमांगऊ जोई। है प्रसन्न हम देहैं सोई॥ गरुड कहे प्रभु जों इमि भाखो। तो मोहि निति निज ऊपर राखो॥ हे प्रभु और अपर वर दीजै। अमृत पिए बिनु अमर करीजै। कहि तथास्तु हरि आनद पागे।खगपतिसों आपुऊ वर मांगे॥ खगपति तुम साधक शुभ कारज।होऊ सुभद मम वाहन आरज॥ एवमस्तु तव खगपति भाखे। बिलु ताहि ध्वज ऊपर राखे॥खगपति चले महाजव धारे। सुरपति आइ वज्रसों मारे॥ खगपति बिहसि इंद्रसों बोले। बज्रप्रहार कुसुम सम तोले॥ बज्र तुम्हार मान हम राखे। इंद्र एक पर यातें नाखे॥ वज्र घात क्षत रुजन हमारे। यह कहि एक पक्ष खग डारे॥ देखि इंद्र अतिविस्मय भारे। खगपतिकों अति प्रवल बिचारे॥ शक्रउवाच॥ खगपति तो बल चाहत जाना। तुमसों सख्य करो तुम माना॥ *◆*◆*◆*◆

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ गरुडउवाच॥ तुम सों सख्य कियो हम चहत।बल असह्य मम जानउ महत॥वलगुण आपन कहत न सन्त। कियो सख्य तुम यातें भन्त॥ गिरि वन उर्वी सहित समुद्र। गहि लेइ चलत लगत मोहि छुद्र॥ लोक चराचर तुम सह जितिक।करि सपिण्ड बहत मोहि कितक॥ सूतउवाच॥ यह सुनि सुरपति खगपति पास। बोले बचन जगत हितरास॥ यह सव सत्य बचन तव जोंन। खगपति कहत सुनऊ सो तोंन॥ हम तुम सख्य कियो खगराज। देहि अमृत जों तुमहित काज॥ जाहि अमृत तुम देहऊ जाय। बाधा करिहि मले सो आय॥ गरुडउवाच॥ लिए जात कछु कारण पाय। काऊ न देहैं अमृत पियाय॥ जहां अमृत हम धरिहैं जाय। तुम हरि लीजो आतुर आय॥ इन्द्रउवाच॥ भए प्रसन्न सुने यह बैन। वर मांगऊ खगपति सुद अैन॥ सूतउवाच॥ सुनि सुरपतिके वचन खगेश। समुझि अहिनको कपट अशेश॥ सुरपतिसों यह कहो समत्त। नाग होहि सब मेरे भत्त॥ एवमस्तु कहिकै सुरनाथ। चलेसु अनु खगपतिके साथ॥ अमृत जहां धरिहऊ तुम जाय। हम हरिहैं तहतें खगराय॥माता निकट वेगसों आय।नागन सों यह कहो सुनाय॥ ल्याए अमृत जोति सुरेश। कुशपर धरत जानि शुचिदेश॥ स्नान करऊ मंगल युत आवऊ। अमृत लेऊ परम सुख छावऊ॥ तुम मांगो सो लीजै अद्य। भई अदासी बिनता सद्य॥ एवमस्तु नागन कहि बोल। गए स्नान करिवें कँह

लोल ॥ हरि अमृत लै गए सुरेश। खगपतिको लहि पूर्ब निदेश ॥ न्हाय नित्यकरि आए तत्र। धरो रहो अमृतघट यत्र ॥ अमृत बिना सो देखो देश । सुरन्ह हरो यह जानि बिशेश ॥ छल प्रति छल यह भयो बिचारि। नाग लगे कुशचाटन हारि ॥ जीभि भइ तिनकी द्वै फाँक। कहें जूठ यह कर्म निसाँक॥ अमृत स्पर्श पाय कुशपूत। भए द्विजिह्व नाग सब धूत ॥ तब भार आनद माता साथ। बिपिनि बिहार कियो खगनाथ ॥ भक्षण करत भुजंग महान। बिनता नन्दन जग सुखदान ॥ यह खगपति यश कीर्तन पर्म। कथा रूप अति भरो सुधर्म ॥ द्विजबर सभामध्य जन जौन ।सुनिहै कै पढिहै शुचि तौन ॥ स्वर्गबास सो करिहै जाय। व्यास बचन यह सत्य सुभाय ॥ ***

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेनकृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणिबिंशत्यध्याये सौपर्णं समाप्तं ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

अब सुनऊ सूत कुमार। जे अहिनके सरदार ॥ हैं नाम तिनके जौन। तुम कहऊ क्रमसों तौन ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

॥ सूतउवाच ॥ प्रथम शेष फिरि बासुकि जाए । अरावत फिरि तक्षक भाए ॥ अरु कर्कोटक नाग बखानो । बिषधर प्रबल धनञ्जय जानो ॥ काली अरु मणिनाग सोहाए। पूरक अरु पिञ्जरक सोपाए ॥ एलापत्र सु बामन नीलो । कल्माष सबलके प्रथम अनीलो ॥ आर्य्यक उग्रक फिरि भे दोऊ। कलसपोतक सुनामुख सोऊ॥ दधिमुख बिमल पिण्डको जाए । आप्त करोटक शंख सोहाए ॥ बालशिखा निष्ठानक कहिए। हेमगुहा नऊषो फिरि लहिए ॥ पिंगल बाह्यकर्ण फिरि भाए। हस्तिपद मुद्गरपिण्डको आए ॥ कंबल अश्वतरो फिरिजानो । फिरि कालीयक भयो समानो ॥ वृत्त औरु संबर्तक दोऊ। हैं द्वै पद्मनामके सोऊ ॥ कुष्माण्डक शंखमुखो फिरि कहो । क्षेमक पिण्डारक हैलहो ॥ करवीर पुष्पदन्तक बिषभारो। बिल्वक बिल्वपांडुरो कारो ॥ मूष काद सुशंखसुर नामा । पूर्णभद्र हरिद्रक बिषधामा ॥ अपराजित ज्योतिक अहि कहिए। अरु सुग्रीवह बिषमय लहिए ॥ धृतराष्ट्र शंखपिण्ड अहिभारी । बीरज सुबाऊ महत अबिचारी ॥ शालिपिण्ड गजपिण्डक कहिए । पिठरक सुमुख प्रभाकर लहिए ॥ कर्कर और अकर्कर जानो। कुमुद और कुमुदाक्ष बखानो ॥ **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

महोदर सुकुण्डोदरो एतिक नाग प्रधान। तिनके नाम कहे सु हमहे मुनिवर सुखदान ॥

नाग अनकन नामके कहँलों कहैं अनन्त । तिनके वंश पसारको कौन लहतहै अन्त ॥ आ०प०

इत्यादिपर्वणि आस्तीके ॥ *

॥ शौनकउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भुजङ्ग रहे विख्यातजे कहे सु तिनके नाम । शापअन्त तिनको कहो कद्रूसों अभिराम ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सेष छोडि कद्रूके संग । गए करन तप उग्र अभंग ॥ पवन पान करि ध्यान लगाय । रहे गंध मादनमें जाय ॥ फेरि बद्रिकाश्रम कों जाय । करन लगे तप आनद पाय ॥ फेरि गए गोकर्ण अनन्य । तहँते गए पुष्करा रन्य ॥ रहे हिमालयमें फिरि जाय । करत उग्रतप ध्यान लगाय ॥ मास रुधिर नस गई जुराय । करो उग्रतप यों फणि राय ॥ देखि घोरतप आय बिरञ्चि । कहन लगे इमि आनद सञ्चि ॥ शेष लहें तो तपस प्रताप । प्रजा विकल सब भई सताप ॥ तातें प्रजा हेत हित गहऊ । मन बांछित सो हमसों कहऊ ॥ शेषउवाच ॥ सोदर भ्राता मेरे दुष्ट । तिनको सङ्गन चाहत पुष्ट ॥ करत असूया शत्रुसमान । सदा परस्पर महत अयान ॥ याते हों तप करत सचैन । मैं नहिं चाहत लख्यो तिन्हैन ॥ सहित सुतन्ह बिनतासों रोष । राखत मम भ्राता सह दोष ॥ खगपति भ्राता सत्य समान । ताऊपैं अतिसै बलवान ॥ चाहत तप करि छोडन अङ्ग । मरेऊं न बांछित इनको सङ्ग ॥ सुने शेषके ऐसे बैन । कहो पितामह लहिकै चैन ॥ ब्रह्मोवाच ॥ तव भ्रातन की सकल कुरीति । हम जानतहैं शेष सुनीति ॥ अरु कद्रूको शाप महान । भयो जो नागनकों दुख दान ॥ ताकोहों परिहार बिचारि । राखो पूरवहीं निरधारि ॥ ताको शोच न कीजै चित्त । मागहु बर जो बांछित हित्त ॥ हैं तुमपर हम बहुत प्रसन्न । मागहुवर शतधर्मासन्न ॥ शेषउवाच ॥ रहो धर्ममें बुद्धि हमारि । यहै देऊ बर बिधि निरधारि ॥ करऊ प्रजाहित आज्ञा जौन । करहिं प्रजापति हम सब तौन ॥ ब्रह्मोवाच ॥ हम प्रसन्नतो देखि सुकर्म । तप दम सम तव नीति सुधर्म ॥ यह भूसागर सहित पहार । बन पत्तन सह महत अपार ॥ अचल याहि करिकै तुम धरऊ । शेष प्रजाहित कहत सो करऊ ॥ शेषउवाच ॥ यथा कहत तुम हे जगदीश । तथा करब हम बिस्वेबीस ॥ मोसि रपैं धरणी धरि देऊ । औसि धारिहैं सहित सनेऊ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ भू अधजाऊ भुजङ्ग महान । देहैं बिवर धरा सुखदान ॥ धरा धरें अति प्रिय सो होत । तातें धरऊ अवश्य कपोत ॥ सूतउवाच ॥ ए सुनिकै ब्रह्माके बैन । कहत भए इमि शेष सचैन ॥ यह

बसुन्धरा सहित समाज । धरिहों जगके सहित समाज ॥ ब्रह्मोवाच ॥ धर्म्मदेव नागोत्तम शेष । धराधार तुम भए अशेष ॥ तुम अरु हम अरु शक्र समान । जग वल्लभहैं शेषमहान ॥ सूतउवाच ॥ अधो भुवन महं बसत अनंत । धरे शीस पर धरा समंत ॥ बिधि सहाय करि दियो खगेश । तब अनंतकी सहित निदेश ॥ माता दयो जो शाप महान । सुनि बासुकि भे चिंतामान ॥ मिटै शाप यह कौनप्रकार । मनमे लागे करन विचार ॥ करन लगे भ्रातनसह मंत्र । करि ऐरावत दिए कुतंत्र ॥ सूतउवाच ॥ माता दयो जो शाप अखर्व । तुम सब मिलिकै सुनो सोसर्व ॥ तीन शापको मोक्ष बिचारहु । तुम सब शांति मंत्र निर धारहु ॥ अन्य शापको मोक्ष अनेक । मातृशापको हरन न एक ॥ दियो शाप ब्रह्माके अग्र । सोसुनि कँपत हृदय मम व्यग्र ॥ सर्प शापके करता बेधासुनि न पितामह कियो निषेध ॥ तुम सब मंत्र कुशलको करहु । जाते तुम न अग्निमे जरहु ॥ पहिले यत्न बिचारहु तज्ञ । फेरि करै जनमेजय यज्ञ ॥ यह सुनि सकल सर्प सरदार । कहन लगे सब मति अनुसार ॥ एकन कहो धरहु द्विजरूप । चलहु जहां जनमेजय भूप ॥ भिक्षा यहै मागिअे तज्ञ । सर्प समन नृप करहु न यज्ञ ॥ औरन कहो धरहु नररूप । चलहु जहां जनमेजयभूप ॥ व्है हित मंत्री ताके रहहु । यज्ञ मंत्र करबो नहि कहहु ॥ नाना बिधिके दोष सुनाय । यज्ञकरन मत देहि नसाय ॥ उपाध्याय जो क्रतुको होय । सर्प सत्र बिधि कर्ता जोय ॥ ताहिकोउ अहि काटो जाय । ताके मरेसो यज्ञ नसाय ॥ सर्प सत्रमे आवै जिन्हहि । ऋत्विज भए काटिए तिन्हहि ॥ तिनके काटे यज्ञ न होय । यह विचार कीजे सब कोय ॥ रहे सुधर्म कहे तिन बैन । द्विज हिंसातें होत न चैन ॥ भय नाशक करिए व्रत तीन । बढै धर्म करताहै जौन ॥ एकन कहो होहिं जलदान । बरषहि बिद्युत बलित महान ॥ यज्ञ अग्निको करहि बिनास । जेहितें मिटै अनर्थ प्रयास ॥ एकन कहो यज्ञमे जाय । स्रुवा चमस सब लेहि चोराय ॥ एकन कहो हजारन सर्प । चलहु यज्ञमे धारें दर्प ॥ यज्ञ जननको दंसन करहु । मिटै यज्ञ सहजेहिं मुद भरहु ॥ अथवा हव्य बस्तुमे जाय । मुत्र पुरीष देहु बिषनाय ॥ एक कहहि ऋत्विजबनि चलहु । यज्ञ कर्म उलटो करि छलहु ॥ जनमेजय जब आवै न्हान । सब मिलि चलिए सुनो सुजान ॥ ताहि पकरि ल्यावहु एहि लोक । मिटै यज्ञको कारण शोक ॥ जनमेजय कहँ काटहु जाय । कारण दुखको सकल नशाय ॥ यह हमार निश्चयमति सुनहु । हे बासुकि तुम मनमहँ गुणहु ॥ यह न रुचै तो सुनु नागेश । जो हित होय सो देहु निदेश ॥ यह सुनि बासुकि हिएँ बिचारि । तिनसों कहो महामति धारि ॥ यह तुम्हारि मति

रुचति नमोहि। यामे परम न हित तव जोहि॥ कश्यप पास विनय चलि करऊ। जो वै कहैं सो हियमह धरऊ॥ सुनऊनाग तोमति निरधारि। करिवो चहति न बुद्धि हमारि॥ सोई हमै कारण कहँ उचित। हितथिति लहऊ होऊ तुम सुचित॥रहत हमै यह महत विचार। सोसिर भले बुरेको भार॥ सूतउवाच॥ सर्पनके नानाविधि बैन। सुनि बासुकिके बचन अचैन॥ एलापत्र नाग अति तज्ञ। कह्यो अवश्य होयगो यज्ञ॥ नही विघन करिबे अनरूप। पांडवेय जनमेजय भूप॥ सदां दैव ताकँह अनकूल। है भवितव्य हमहि प्रतिकूल॥ तातें दैवाश्रयकँह करऊ। जातें दुःखदुसहतें बरऊ॥ शाप समय सुरबचन अशंक। सुनो रहो कद्रूके अंक॥ देवन्ह कहा पितामह पास। बचन विनीत भरे अतित्रास॥ देवाऊचुः॥ हे प्रभु कद्रू महा कठोर। शाप दियो पुत्रनकहँ घोर। कद्रू बिना करै असकौन। तो समीप अनुचितकोभौन॥ तुमऊ पितामह कह्यो तथास्तु। कारण कहा नबोले मास्तु॥ सो कारण सुनबे कहँ चहत। कहऊ कृपा करि हे प्रभु महत॥ पितामहउवाच॥ पन्नग बऊत सुभाव कठोर। भरे महा विष हिंसक घोर॥ सुनहु प्रजाहित काम बिचारि। कद्रू शाप न दीन्हों वारि॥ सर्पक्षुद्र पापी बिषरास। तिनको भावी बिहित बिनास॥अहि जे पुण्या चरण सधर्म। ते सब कुशल रहहिगे पर्म॥ सर्प बचनको कारण जौंन। सुऊन देवसब भाषत तौंन॥ ह्वैहै जाया बरके बंश। जरत्कारु सुत परम प्रसंश॥ जरत्कारुको सुत अभिराम। है भविता आस्तीक ललाम॥ सो लैहै वह तिन्हे उबारि। रहे जे धर्म कर्म निरधारि॥ देवाउचुः॥ जरत्कारुको भार्या कौन। जनमो मुनि आस्तीकहि जौंन॥ ब्रह्मोवाच॥ भगिनी बासुकिको अभिराम। जरत्कारु है ताको नाम॥ तासु पुत्र आस्तीक मुनीश। क्षीरसिंधुतें ज्यों रजनीश॥ होनहार आगे है जौंन। करिहै शाप समन सब तौंन॥ एलापत्रोवाच॥ एवमस्तु सुर कहि बिधिसंग। गए स्वर्ग कँह भरे उमंग॥ बासुकि तव भगिनी अभिराम। जरत्कारु है याको नाम॥ सो भिक्षा सम मुनिकहँ देह। शाप शांतिको कारण एह॥ सुनो पूर्व सो कहो समस्त। कहो फणीसहोय जो स्वस्त॥ अनुजा जरत्कार करि यत्न। राखत नागराज जिमि रत्न॥ कछुदिन गए सुरासुर संग। मथो सिंधु तब भरे उमंग॥ रज्जुभए बासुकि बलधाम। काढे रत्न सकल अभिराम॥ तापीछे सुरगणके साथ। बासुकि गए जहाँ विधिनाथ॥कहे सुरन इमि सविनय बैन॥सुनऊ पितामह करुणाअैन॥ भरो शापके ताप महान। तपत रहत बासुकि बलवान॥ याको मानस स्वल्प अनर्थ। तुमही काढन जोग समर्थ॥ जननी शाप शांतिहित हेत। रहत खेदसों पूरण

चेत ॥ प्रियकर बासुकि सदा हमार । कीजै देव शाप संहार ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शापोद्धार प्रथम ठहराय । सुनहु अमर यह नियत उपाय॥ एलापत्र कहे जे बैन । काल पायकै करै सचैन॥ पापी नाग रजरहिंगे खर्ब। बचिहैं पुण्यमान ते सर्ब ॥ उपजो जरत्कार तपधाम । भगिनी जरत्कारु अभिराम॥ बासुकि काल पाय तेहि देऊ । शाप शान्तिके कारण येऊ ॥ एसुनि बासुकि बिधिके बैन। भगिनी दीबेकों धरिचैन ॥ बोलि अनेकन सर्प सुजान । शासन दियो परम सुखदान ॥ जरत्कार ऋषि जेहां होंय। ताके निकट रहहु तनुगोय ॥ ऋषि चाहे जब भार्य्या बरण । तब तुम झटित कहेउ हृदिहरण ॥ शौनकउवाच ॥ जैसे भयो सुमुनि आस्तीक । कहहु सूत बरणन करि नीक॥ सूतउवाच ॥ बासुकि नागनसों इमि भाखि । रहे सुचित धीरज हिय राखि ॥ उद्दित रूसादान पन धारि। जरत्कारु प्रति रहे बिचारि॥ दीरघ काल गयो तब बीति । मुनिवर भरो महातप प्रीति ॥ ऊरधरेता फिरतै रहत । चारोओर न थिरता गहत ॥ भार्या बरणन चितमहँ चहत। धरे प्रीति तबसों अति महत ॥ अपर कालमह पाण्डव बंश । भयो परीचित नृप अवतंश ॥ पण्डु यथा प्रपितामह बीर । मृगयाशक्त भए नरधीर ॥ तथा परीचित मृगया शक्त। भयो सदा मृगबध अनुरक्त ॥ हन्यो एकदिन मृगकँह बान। सो घायल बनओर परान ॥ मृग पीछे राजा बनओर । ढूंढत चले बिपिनिमह घोर ॥ धारें धनुष महत बनमाह । मृग अनु चले गए नरनाह ॥ श्रम लहिकै भो मूर्छित भूप। स्वर्गगमनको पूरब रूप॥ बहुत दूरि मृग पीछे जाय । तृषा आर्त भो कुरुकुल राय ॥ तहां जाय देखो मुनि एक। रहत गोष्ठढिग भरो बिबेक॥ बछ पियत गोपयकह जौंन । कढत फेन मुख चाटत तौंन॥ ता मुनिके ढिग भूपति जाय। पूछन लागे धनुष उठाय॥ मुनि हम भूप परीचित नाम। हैं अभिमन्यु पुत्र अभिराम ॥ मो हत शरघायल मृग जौंन। इत आयो तुम देखो तौन॥ मुनि बोलो नहि धरें समाधि। भूप रिसाने पहुंची आधि॥ मृतक सर्प धरि मुनिके कंध। चले क्रोधबस भूपति अंध॥ भूपति कीन्हों नगर प्रबेश । बैठे रहे सुमुनि तेहि भेश॥ भूप करो इतनो उतपात। क्षमाशील मुनि दयो न शाप ॥ मुनि सुत शृङ्गी तरुण सुकाय। सुने पिताकहँ ऐसे भाय॥ ब्रह्मलोकसों आयो तूर्ण। भो तपधाम क्रोधसों पूर्ण ॥ शृङ्गी सखा नाम कृष रहो। हँसत हँसत तेंहि ऐसें कहो॥ कृशउवाच ॥ पिता तुम्हारो सव अहि बहत । कहा तिहारो तप बल महत ॥ शृंगी कहो कहहु कृशमित्र । यहि मृतक अहि कैसें पित्र ॥ कृशउवाच ॥ हनो परीचित मृगकहँ बान। बिद्ध भयो मृग हो बलवान॥ मृग अनु ढूढत नृप इत आय। मृत सर्प कण्ठ लपटाय॥

शृंगीउवाच ॥ पिता दोषका कीन्हो तास। कहहु मित्र सोसव मोपास ॥ कृशउवाच ॥ खोजत मृग एकाकी भूप। वनमें लखो न मृगको रूप ॥ लखि तव जनकनिकट सो आय। ढूंढत मृग लागो सो राय ॥ बेर बेर पूछो तिहि पांहि।उत्तर दियो मौनव्रत नांहि ॥क्षुधा पिपासातुर रिसि छाय। धनुषकोटिसों सर्प उठाय ॥ धरि मुनिकंध परीक्षित क्षिप्र। गयो हस्तिनापुर सुनु विप्र ॥ लए सर्प सो पिता तुह्मार। हैं देखहु तुम तासु कुमार ॥ सूतउवाच ॥ सुनि ऐसें करि राते नैन। सो शृंगी क्रोधानल ऐन ॥ करि आचमन बारिसों विप्र। शाप दियो भूपतिकों क्षिप्र ॥ शृंगीउवाच ॥ जो ममपिता कंधपर सर्प। डारि गयो पापी करि दर्प ॥ ताकहँ सात निशाके बीच। तक्षक डसै मरै सोनीच ॥ ऐसो शाप देइके उद्ध। शृंगी गयो पिताढिग क्रुद्ध ॥ धरें मृतक अहिगो ब्रज मांह। बैठो देखि पिता मुनिनाह ॥ लहि दुख बहुत नयनतें नीर। कहे पितासों वचन गभीर ॥ सुनि तो धर्षन नृप कृत पाप। दयो परीक्षितकों हम शाप ॥ ऐसो कर्म्म करैगो कौन। यातें शाप जोग्य नृप तौन ॥ सतएँदिन जो तक्षक सर्प। ताकहँ डंसिहि नियत करिदर्प ॥नृपति परीक्षित यमके ऐन। निश्चय जाय नियत सो बैन ॥ सूतउवाच ॥ कहो वृद्ध मुनि सुतसों बैन ।धर्म्म तपस्विनको यह है न ॥ जाके वसी देश मह तात। नृप सो करै कछू उतपात॥ क्षमा धर्म्म साधुनको तात। हनत धर्म जो सोहनि जात ॥ राजातें रक्षित नहि जौन। पीडा लहत देश सब तौन ॥ बसत तपस्वी जाके देश। लहत सो तपको अंश नरेश ॥ क्षमा योग्य हो भूप महान। तात परीक्षित पंडुसमान ॥ क्षुधित श्रांत जानो अपमान। भयो न सो मौनव्रत ज्ञान ॥ बिना भूपजन दोष अनेक। करत डरत नहि हरत बिबेक॥ भूपदंडभय शान्ति समस्त। नातरु होत धर्मसव अस्त ॥ नृपतें मख मखतें परजन्य। तातें अन्न सुरस अनगन्य ॥ होत अन्नतें मनुज स्वरूप। यातें कारण सबको भूप ॥ दश श्रोत्रीसम राजा पूत। यह मनुबचन कहो शुचियूत ॥ दियो वात्स्यवस नृपकहँ शाप। सो न योग्य हो इतने पाप ॥ शृंगीउवाच ॥ कैसेहु दियो शाप हम जौन। मिथ्या होय तात नहि तौन ॥ हौं तो मृषा न कबहूँ कहत। मिथ्या होय शाप को महत ॥ समिक उवाच ॥ जानत उग्रसुभाव तुम्हार। विदित सत्य है बचन उदार ॥ पुत्र कितीको होय सयान। शिक्षा पिता करै सुखदान ॥ हौ बालक यातें हम कहत। क्रोध महत किन्हें तप दहत ॥ तातें तुम समताकहँ धरहु। बन्य वस्तु सो भोजन करहु ॥ करत क्रोध तप धर्म बिनास। परगति मिटति धर्मको ह्रास ॥ क्षमापतिनकँह कारण सिद्धि। करति दुक्ख

लोकनकी बृद्धि ॥ जितेंद्री क्षमायुक्त जे रहत । बिधि ढिगके लोकन कँहँ लहत ॥ तब समीक मुनि सौम्य सुभाय । कहो गौरमुख शिष्य बोलाय ॥यह सन्देश लए तुम बिप्र। जनमेजय नृपपँह अति क्षिप्र ॥ पुत्र हमारे दीन्हो शाप । बाल भावतें लखि तो पाप ॥ मृतक सर्प राखो मम कंध ॥ देखो तिहि तो धर्षण धंध ॥ सूतउवाच ॥ कहे शिष्यसों ऐसें बैन। मुनि समीक हिय भरे अचैन॥ कुशल प्रश्न कहिकै अति शान्त। फेरि कहेउ सिगरो बृत्तान्त ॥ ले सन्देश चलो सो बिप्र। भूप भवन महँ पहुँचो क्षिप्र ॥ द्वारपालसों कहो पठाय । सुनतहि भूपति लयो बोलाय ॥ पूजि बिप्रकँक तपसनिकेत । पूछनलग आगमन हेत ॥ कहे गौरमुख मुनिके बैंन । महाघोर अति भरे अचैंन ॥ गौरमुखउवाच॥ मुनि समीक भूपति तपधाम। बसत रावरेदेश ललाम ॥ शान्त दान्त शुचि कृपानिधान । तासस्कन्ध सर्प गतप्राण ॥ धरि आए नृप अपने ऐन । मौनब्रत मुनि कहे न बैन ॥ ताके पुत्र लखो सो आय । दीन्हों शाप तुम्है रिसिआय ॥ सातदिवस महँ तक्षक सर्प। तुम्हैं काटिहै पूरण दर्प ॥ नियत मरण तब होई भूप । तातें करहु यत्न हितरूप ॥ पुनः पुनः इमिसो मुनि सुबेश । कहो शाप यह तथ्य नरेश ॥ तातें पठयो तुह्मरे पास । यत्न करहु नृप सहित प्रयास ॥ सूतउवाच ॥ सुनि तब नृप पूरे अतिताप । समुझि कियो जो मुनि प्रति पाप ॥ सुनत मौनब्रत मुनि बर भूप । भए तप्त मानस कृशरूप ॥ मुनिबर कृपा बिचारि बिचारि । दोष आपनो चित निरधारि ॥ भए बिकल कृत कल्मष मानि । तथा न मृत्युभीति हिय आनि ॥ कियो गौरमुख बिदा नरेश । कहेउ कराँहँ मुनि कृपा बिशेष ॥ तब राजा मंत्रिनसों मंत्र । बूझन लगे होइ एकतंत्र ॥ एक खम्भपर कियो प्रसाद । तहँ बैठे नृप सहित बिसाद ॥ रक्षक राखे सुहित सुजान । भेषज भिषज जानि सुखदान ॥ गरुडसु तंत्र मंत्रबिद जौंन । राखे चहुँदिशि रक्षक तौंन ॥ करे अनेकन ब्राह्मण बर्ग । करत प्रयोग सर्प बिषहर्ग ॥ मंत्री रहत चहुदिशि यत्र । बातो जाय सकत नहि तत्र ॥ तहां परीक्षित रक्षित जाय। बैठे सावधानता छाय ॥ ✻❧✻❧✻

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृत महाभारतदर्पणे आदिपर्वणि आस्तीकोपाख्याने एकविंशोऽध्यायः ॥ ✻❧✻❧✻❧✻❧✻❧✻❧✻❧✻❧✻❧✻❧✻✻

॥ सूतउवाच ॥ ✻ ॥ दोहा ॥ ✻ ॥

काश्यप अवर मंत्रबिद परम तपस्याराश । चलो परीक्षित भूपपँह करणसर्पबिष नाश ॥
सुनो परीक्षित भूपकों आजुड सिहि करि दर्प । कुरकुल कमल महीपकों अति बिष तक्षक सर्प ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

अर्थ धर्मको लाभ बिचारे। आवत तक्षक ताहि निहारे॥ बृद्धबिप्रबनि ता ढिग आयो। बूझो जात कहां द्विज धायो॥ जानि बिप्र तेहि कारण भाखो। सुनि तक्षक अति मनमह माखो॥ तक्षकोवाच ॥ हम तक्षक हैं बिप्र बिचारो। मोदंसितकँह चहत उबारो॥ बिप्र फिरहु घरओरहि धारो। व्यर्थ परिश्रम सकल तिहारो॥ काश्यपउवाच॥ हम तक्षक भूपतिपँह जैहैं। तो दंशित बिज्वर करि ऐहैं॥ है बिद्याबल बुद्धि हमारे। होत कहा अहि डसे तिहारे॥ तक्षकउवाच॥ मो दंशित तुम चहत उबारो। सुनहु बिप्र यह बचन हमारो॥ हम न्यग्रोध दशत तुम ज्याओ। मंत्रपराक्रम मोहि देखाओ॥ काश्यपउवाच॥ हे नागेन्द्र बृक्ष यह काटो। जौं अभिमान हृदय महं पाटो॥ सुने बचन काश्यपके ऐसे। काटो तक्षक बट अतिरैसे॥ काटत मात्र महाबिष जागो। जागी ज्वाल जरन तरु लागो॥ करि तरु भस्म नाग पुनि बोलो। ज्यावहु बृक्ष बिप्र गुण खोलो॥ तरुकोभस्म एकठैं करिकै। काश्यप कहो रोष हियधारकै॥ बिद्याबल मो पन्नग देखो। ज्यावत बृक्ष यथास्थित पेखो॥ तब काश्यप बिद्याबल धारो। भस्मराशितें बृक्ष निकारो॥ अंकुर प्रथम पत्र है तातें। कढो डार बढि भरो प्रभातें॥ जीवित सुतरु यथास्थित देखो। तक्षक कहो समय छलमेखो॥ हे द्विजेन्द्र मो बिष बर जारो। इच्छित काम होय जो धारो॥ चाहत जो भूपतिसों पायो। सोहम देत तुम्है मनभायो॥ मुनिवर शाप गतायुष राजा। जो गुण तव लगिहै न दराजा॥ जग्य प्रदीप्त त्रिभुवन महंयारो। बरि पुब अस्त होयगो भारो॥ काश्यपउवाच॥ धनके अर्थ जात हम जानो। तुमहीं देहु जाहिं फिरि मानो॥ तक्षकउवाच। धन चाहत भूपतिसों जेतो॥ तातें अधिक देत हम हेतो। लेहु यथेच्छित धन फिरि जैऐ। भूप गतायु शापहत हैऐ॥ सूतउवाच॥ काश्यप तक्षक बैन सरेखे। ध्यान धारि भूपति प्रति देखे॥ भूपति भयो गतायुष जानो। फिरो बित्त ले अहि बच मानो॥ काश्यप फिरो समयकँह पायो। तब तक्षक हास्तिनपुर आयो॥ रक्षमाण भूपति सुनि पायो। औषधि मंत्रबिदनसों छायो॥ सूतउवाच॥ तब माया चिन्तित चित दीन्हों। चहत भूपकँह बञ्चित कीन्हों॥ नागन बोलि कहो छल कीजै। भेष तपस्विनको धरि लीजै॥ फल कुशपाणि भूपढिग जैऐ। द्विज सम बोलि बचन छलकैऐ॥ सूतउवाच। तब नागन्ह द्विज बेश बनाए। कुशफलपाणि भूपपँह आए॥ आशिष सहित भूपकँह दीन्हों। करि प्रणाम भूपति फल लीन्हों॥ बिदा करो भूपति धन देकै। फल कुश फूल धरो ढिग लैकै॥ तब राजैं मंत्रिनसों भाखे। परमपक्व फल ते ढिग राखे॥

सरस पुनीत बिप्रबर ल्याए। भरे स्वादसों चहियत खाए ॥ याभे खात एकफल हमहूं। भोजन करऊ सकल ले तुमहूँ॥ एक परम फल भूप उठायो। मुनिबर शाप समय सो आयो। जामे करि प्रबेश अहि आयो ॥ सो फल लै नृप चाहत खायो॥ फल तोरत तामे कृम देखो। अरुण श्याम चख तनु तनु भेखो ॥ गहि नृप सो सचिवन्हसों भाखो। अस्त होत रबि बिष भय नाखो ॥ सत्य बचन मुनिबरको कीजै। या कृमको काटन हम दीजै ॥ तक्षक नाम सो याको धरिऐ। यह प्रतिहार शापको करिऐ॥ यह तथास्तु मंत्रिनऊ कहो। बिधिको लिखो होति सो अहो॥ सो लै कृम ग्रीवापर नाषो। शाप सत्य मुनिबरको भाषो॥ घोररूप तक्षक तब धारो। लपटि ग्रीव सों अति फुफ कारो॥ काठत भूप मृतक व्है गयो। हाहाकार चहाँ दिशि भयो ॥ सूतउवाच ॥ व्है बिबर्न मंत्री सब भागे। भरे महाभय रोवन लागे ॥ तक्षक काटि गगन पथ लागो। अरुणरूप अति तेजस पागो॥ बिषज अग्नि सों मंदिर जारो। चऊदिशि भरो तापअति भारो ॥ नृप परलोक क्रिया सब करिकै। राज पुरोहित जन शुचि धरिकै॥ मंत्रिन परम मूहूरत चीन्हों। जनमेजय कँह राजा कीन्हों ॥ बालक बैस आर्य मति धारें। राज काज सब करत बिचारें ॥ मंत्री सुजन पुरोहित लीन्हें। रक्षन प्रजा जथास्थित कीन्हें ॥ भयो किशोर भूप बर देखो। मंत्रिन व्याह करण अब रेखो ॥ काशीपति नृप सुबरन बरमा। ताकी सुता बपुष्टमा परमा ॥ भार्या हेत माँगि सो लीन्हें। धर्म परीक्षा करि तेहि दीन्हें ॥ जनमेजय करि भार्या ताकों। भरे मोद लहि पूर प्रभाकों ॥ कुसुमाकर बनमे मुद पागे। नृपति तहाँ बर बिहरन लागे ॥ बपुष्टमा सो पति ब्रत धारे। बिहरति पतिचित हित अनुसारे ॥ रति रतिपति सम सुंदर दोऊ। काहि समान कहैं नहि कोऊ ॥ **********

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्बणि आस्तीकीये द्वाविंशोऽध्यायः ॥ ************

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आशाबर मुनि जरत्कारुकी कथा कहो ही जौन। सोई लहो कही नही यातें पीसो पीसत कौन ॥
बासुकि भगनी जरत्कारु कँह लीन्हें सहित सनेह। ल्याए कहो कृपा करिकै यह हे मुनिबर तुमलेह॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ सूतउवाच ॥ जरत्कारु मुनि करि स्वीकार। बासुकिसों इमि कहो उदार ॥ तो भगिनी को पोषन भरन। बासुकि परिहै तुमको करन ॥ बासुकि कही स्वसा मम बरऊ। भरण

हेत चिंता मति करऊ ॥ रक्षण भरण करब हम सर्व । यह चिंता कीजै मतिखर्व ॥
॥ ऋषिरुवाच ॥ करिहि अवज्ञा स्वसा तुम्हारि । तब हम त्याग करब निरधारि ॥ सूतउवाच ॥
सुनि तथास्तु वासुकिके बैन । चले गए मुनि ताके ऐन ॥ टद्ध वेदविद मुनिवर आय । पाणि
ग्रहण सुदियो कराय ॥ बास अथ गृह अति रमणीय । भरो सकल संपति कमनीय ॥ वासुकि
आज्ञा लहि सहदार । बासकियो मुनि तहां उदार ॥ जामहं सज्या रचित बिचित्र । जाहि लखें
मन लहत चरित्र ॥ जरत्कारु तँह भार्यासंग । रहे जाय कारक रसभंग ॥ तहां प्रतिज्ञा कीन्हों
जाय । भार्यासों मुनि उग्रस्वभाय ॥ मो अप्रिय करिहो बसभाग । तब हम करब तिहारो त्याग ॥
यह मो बचन हृदयमह धरऊ । मो अप्रिय कबहू मति करऊ ॥ एवमस्तु कहिकैं सुकुमारि ।
सभय रही मुनिसंग बिहारि ॥ रितुस्नान मुनिसंगमपाय । रहो गर्भ ताके सुखदाय ॥ अग्नि
समान गर्भ सुखदान । यथा अभ्रगत ग्रीषम भान ॥ शुक्लपक्षके शशीलों बढत । नितप्रति परम
प्रभासों मढत ॥ एकदिवस सोए मुनिईश । तास जघनपर धरिकै शीश ॥ अस्तमान सविताकँह
जानि । संध्यासमय हिये अनुमानि ॥ वासुकि भगिनी सभय महानि । संध्याछुटे धर्मकी हानि ॥
हैं भर्ता अतिक्रोध स्वभाय । यातें शकति न तिन्हैं जगाय ॥ भर्ताकोप धर्मको लोप । दुऊ मधि कहा
करों आरोप ॥ धर्म्महानि होनो अतिदोष । करो न करो प्राणपति रोष ॥ यह बिचारि बोली
मृदुबैंन । मधुर भाषिणी सभय अचैंन ॥ उठऊ नाथ तजि निद्रानेऊ । अस्त होत रवि अञ्जलि देऊ ॥
यह सुनि उटे भरे मुनि कोप । करण लगे तब दोषारोप ॥ सर्पस्वसा मेरो अपमान । तुम कीन्हों तजि
परम प्रमान ॥ कह्यो सु तेहिं सुनिए मुनिराय । तो अपमान न कियो जगाय ॥ धर्म्मलोप तो हिए
बिचारि । तुम्हे जगायो साहस धारि ॥ जरत्कारुरुवाच ॥ मो अंञ्जलि लीन्हे बिनु भानु । कैसे होत
अस्त यह जानु ॥ जहँ अपमान लहत जन महत । मम समान तेहां नहि रहत ॥ अमृतवचन नहि
सुनऊ हमार । प्रिय करत हम त्याग तुम्हार ॥ तुम चलि भ्रातभवनमह रहऊ । हम अब जात शोच
नहि गहऊ ॥ यहकहि गमन कियो मुनिराय । जरत्कारु तब कहो अवाय ॥ गद्गद भरो बदन गो
सूखि । बहत नयनजल आनंद दूखि ॥ धर्म्म धरें बोली यह बैंन । हमै छोडिबे उचित तुम्हे न ॥
निरापराध धर्म्मरत मोहि । करिबो त्याग न लायक तोहि ॥ मोहि तुम्हे दीन्हो जेहि हेत । सो न
भयो हे तपसनिकेत ॥ वासुकि मोहि कहिहि का बैन । मातृशापसों महत अचैन ॥ तुमतें पुत्र
प्राप्तिके काम । सो नहि देखि परो अभिराम ॥ तुमतें पुत्रप्राप्त जौं होत । सुखसों रहत हमारो
गोत ॥ तुमतें मम संगम अभिराम । सो न अमोघ भयो तपधाम ॥ ज्ञातिबर्गकों अतिसुखदाय ।
गर्भ भो न प्रापत मुनिराय ॥ होय महात्मा छोडत मोहि । निरापराध योग्य नहि तोहि ॥ सुनिए
नागस्वसाके बैन । बोले जरत्कारु तपऐन ॥ वालें पुत्र भविष्य ललाम । तो तें परमतपस्या धाम ॥

५० ह्वैहै सत्य मातु मम बैन । भानुसमान तेजको ऐन ॥ यह कहि उग्रतपस्या हेत । जरत्कारु तजि गए निकेत ॥ जरत्कारु वासुकिपँह जाय । सबवृत्तांत कह्यो दुखछाय ॥ सुने भुजगपति अप्रिय बैन । भगिनीसों पुनि कह्यो अचैन ॥ वासुकिरुवाच ॥ मुनिकांह दियो तोहि जहि हेत । सो जानति तूँ धर्म्मनिकेत ॥ तातें होत पुत्र तव जौन । रक्षत सर्पकुले तौन ॥ कह्यो पितामह सुरनसमेत । निश्चल बचन सो सत्यनिकेत ॥ कियो गर्भधारण मुनिपास । कहो स्वसासों आनद रास ॥ यह नहि तोसों बूझन योग्य । जरत्कारु कहैं बचन अयोग्य ॥ मुनिबर चलतसमय जो बैंन । कहे कहहु ते आनद ऐन ॥ है दुख सल्यहृदयमह जौन । कीजै दूरि बचनकहि तौन ॥ जरत्कारु सुनि भ्राता बैन । समाधान करि कहो सचैन ॥ जरत्कारुरुवाच ॥ पुत्रहेत हम बूझो ताहि । गए अस्ति कहि सक रुण चाहि ॥ सहजेहु कहत अलीक न बैंन । बूझें कहै सो क्यों तपऐंन ॥ तजि संताप देहु नागेश । सफल मनोरथ जानि अशेष ॥ सूतउवाच ॥ यह सुनि बचन परम अहिराज । भरे मोदसों सहित समाज ॥ धन मणिगण लै भुजगन साथ । कियो स्वसा पूजन अहिनाथ ॥ भरो गर्भ तपतेज अमंद । बढत यथा द्वितियातें चंद ॥ लयो जन्म अलीक कुमार । समयपाय बरलग्न उदार ॥ मुनिआस्तीकढे अभिराम । नागराजके धाम ललाम ॥ पढे अङ्गसह सिगरे बेद । च्यवनक स्टसिसों परम अखेद ॥ बालबैस धारे ब्रत सर्व । मातुलग्टहमह भए अखर्व ॥ नागराज करि महत प्रयत्न । ताको करत रहत नित यत्न ॥ शूलपाणि सम सो तपग्राम । बर्धमान भोसो गुरग्राम ॥ अस्ति गर्भ कहि गो मुनि नीक । यातें नाम धरो आस्तीक ॥ ताहिदेखि पन्नग मुद भरत । सर्पसत्र चिन्ता नहि करत ॥ ❋❋ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेगोकुलनाथकविनाकृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वस्थास्तीके नवोविंशोध्यायः ॥

॥ ❋ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❋ ॥

॥ शौनकउवाच ॥ जनमेजय मंत्रिनसों जौन । पूछो सूत कहहु तुम तौन ॥ सूतउवाच ॥ मंत्रिनसों जनमेजय भूप । पूछो जौन कहत अनुरूप ॥ यथा परीक्षितनृपको मर्न । मंत्रिन कहो खेदमय वर्न ॥ जनमेजयउवाच ॥ जानत हो तुम सब वृतान्त । पिता मरे मम ज्यों क्षिति कान्त ॥ सुनो चहत हों तुह्मारे पास । पितामरणको सब इतिहास ॥ सुनिकै प्रतीकार मै तास । करों लेय बिज्ञनकों पास ॥ सूतउवाच ॥ कहे नृपपति जब ऐसे बैन । मंत्री चतुर पायकै चैंन ॥ मंत्र्युवाच ॥ सुनहु भूप पूछत सो जौन । चरित पिताको सुनिए तौन ॥ पालत प्रजा पिता तो धर्म । चारि वर्णको राखि स्वधर्म ॥ भूरक्षण सो करत अनूप । महा पराक्रमशाली भूप ॥ ताके शत्रु न रहे बिशेष । सो काहुसों न धारत श्रेष ॥ रहे प्रजापतिसम जुत चाव । सबसों राखत समता भाव ॥

द्विज क्षत्री बिश शूद्र सकर्म। करत तास शासन क्षितिपर्म॥ रहत बिदुषजन आदर पाय। क्लिल अनाथ न कोउ सुखदाय॥ देखत मोद लहत जन तास। यथा चकोर चढो लखि सोम॥धनुर्वेदके शिष्य अनूप। भए सु कृपाचार्यके भूप॥ प्रिय गोबिन्दको पिता तुम्हार। षडवर्गशत्रुको जीतन हार॥ जितेंद्री लोकप्रिय मतिमान। साठिवर्ष करि राज्य सुजान॥ गे परलोक स्वर्गकहँ भूप। तुम राजा अब भए अनूप॥वर्षसहस्रलों कीजै राज। पालक सेवक प्रजासमाज॥जनमेजयउवाच॥ भे न कदाचित यहि कुल भूप। होंहि प्रजाकहँ अहित स्वरूप॥ पितामहादिकको सतराह। देखि सुधर्म भए क्षितिनाह॥ कैसें मरे पिता मम पर्म। सो तुम कहहु सचिवसह धर्म॥सूतउवाच॥ पूछो तिनसों जब इमि भूप।सचिव कहन तब लगे अनूप॥भूप परीक्षित वीर बिशाल। मृगयासक्त भयो क्षितिपाल॥ यथा धनुर्धर पाण्डु उदार। राज काजको हम शिरभार॥ राखि गए नृप वन गंभीर। सरसों हनो तहां मृग धीर॥ भजो सोमृग करि ताको ऊह। धरें भूमिपति शस्त्र समूह॥ चले तासु अनु वनमह भूप। हेरत श्रम पायो अतिरूप॥ मिलो न मृग तँह लखि ऋषि एक। गो भ्रजसे तप भरो बिबेक॥ बृद्ध श्रान्तवस तृषित नरेश। चलि ऋषिढिग यह कियो निदेश॥ सरघायल मृग आयो बिप्र। इत कित गयो कहो लखि क्षिप्र॥ बोलो मुनि न मौनव्रतधारि। तब नृपवर अपमान बिचारि॥ भरेक्रोध मृतसर्प उठाय। धनुष कोटिसों नीरे जाय॥ तासकन्ध धरि दीन्हों तौन। जानो भूप न मुनिव्रत मौन॥ साधु असाधु न बोले बैन। अचल समान रहो तपऐंन॥ तब आए हास्तिन पुर भूप। क्षुधा तृषार्त भए कृषरूप॥ मंत्रिन कहो सकल वृत्तान्त। दयो जो मुनिसुत शाप नितान्त॥ मुनिसन्देस भूपकृत यत्न। व्यर्थ भए जे सकल प्रयत्न॥ कश्यप द्विज तक्षक सम्बाद। भूप मरण बिधि सहित बिषाद॥ मंत्रिन कहो सहित बिस्तार। सुनि बोले फिरि भूप उदार॥ जनमेजयउवाच॥ काश्यप तक्षकके सुनि बैन। कौने कहो आय मति ऐन॥ जरे जो तरु तक्षकबिष पाय। सो पुनि तेहि ज्यायो मुनिराय॥ ह्नहै हास मिटै बिषदाप। तक्षक यह बिचारिकै आप॥ मम दंशित नृप ज्याइहि विप्र। यातें धनदै फेरो क्षिप्र॥ करि उपाय ताको अतिदण्ड। देहुँ सचिव सुनहु हम चण्ड॥ सुनो चहत हम यह सम्बाद। भो निर्जनमे मुनि अहि बाद॥ लखि सुनि तौन कहो कोंहँ आय। मंत्री सो कहिए समुझाय॥ मंत्रीउवाच॥ कहो आय जेहिं सो सुनि भूप। काश्यप तक्षक बाद सरूप॥ मनुज एक इधनके हेत। तेहि तरु चढो रहो सो लेत॥ मुनि तक्षक नहि लखो नरेश। तरु संग भयो सो भस्मशेष॥ मुनि प्रभावतें तरुके संग। सोउ जियो सहित सब अंग॥ तेहि नर आइ कहो हम पास। मुनि तक्षकके बाद प्रकाश॥ एहि बिधि सुनो लखो जो भूप। सो हम कहो सकल अनुरूप॥ अब जो करो चहहु सो करहु। हे क्षितिपाल तथा अनुसरहु॥ सूतउवाच॥सुनि मंत्रिनको बचन नरेश। भए तप्त धरि शोक बिशेष॥

प० मीजि पाणिकंह लेत उसास ।अश्रुवहत नैननतें तास ॥ जनमेजयउवाच ॥पितामरण हम सहित विधान । तुमतें सुनो सुनऊ मतिमान ॥ मोमति नियत देनकों दण्ड । भई दुष्ट तक्षककों चण्ड ॥ पिता हमार हतो जेहि सर्प ।ताहिं दण्ड देहौं अतिदर्प ॥ हेतुमात्र करि शृंगीशाप । दंशो भूपकह छल करि पाप ॥ फेरि दयो काश्यपकहँ दुष्ट ।नतरु जियावत नृपकंह तुष्ट ॥ तक्षकको तब कहा न सात । जब ज्यावत काश्यप मम तात ॥ बलात्कार कीन्हे अति दुष्ट । मुनिकंह जो फेरो करि तुष्ट ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आत्मप्रिय उत्तङ्ककों तुमसबकों प्रिय जैांन । धर्षण तक्षकको करे पितृअरिनकरि तौंन ॥
सूतउवाच॥मंत्रिनके सुनिकै वचन करि दृढमत अनूरूप । सर्पसत्रको करणकी करे प्रतिज्ञा भूप॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

नृप जनमेजय ईर्षा छायो । पुरोहित ऋत्विज सहित बोलायो ॥प्रतीकार तेहि अहिको जैसें। होय कहौ हे द्विजवर तैसें ॥ जेहि अहि मारो पिता हमारो । तासों बैरलेन मत धारो ॥ ताको तुमसब कर्म विचारो । चाहत ताहि अग्निमंहं जारो ॥ भूप बिषाग्निमे अहि जैसें । जारोंमम करऊ तेहि तैसें ॥ ऋत्विजउवाच ॥ सर्पसत्रविधि निर्मित है हो । सुनिए भूप पुराण कहै हो ॥ सपसत्रके लायक कर्ता । हौ तुमहों सुनिए क्षितिभर्ता ॥ सूतउवाच ॥ इमि ऋत्विजसों सुनि मुद सांनो । तक्षक भस्म भयो नृप जानो ॥ मंत्रविदनसों नृप यह कहो ।करब सत्र हम निश्चय अहो॥ सामग्री हमसों सब लीजै । तुर श्रुतिविदन कहो मख कीजै ॥ ते ऋत्विज आए सब तहां । सत्र योग्य क्षिति जानत जहां ॥ मखशाला विधिवत तंह कीन्हो । पट धन धान्य बिपुलधरि दीन्हो ॥ ऋत्विज सकल तहां चलि आए । जे द्विज परम मंत्रविद गाए ॥ भूप यज्ञहित दीक्षा लीन्हें। बरण सु मखकर्तनको कीन्हें ॥ यह पूरब तँह सकुन लखानो । मख सालाके कर्तन्ह जानो ॥ यज्ञ समाप्ति होन नहि पाई । करो विघ्न कोउ द्विजवर आई ॥ यज्ञ आयतनमे इमि कहो । स्थपति इक्ष जो कारक रहो ॥ सिल्पसास्त्रकहं बिधिवत जानै । ताके बचन नियतसब मानै ॥ दिक्षा पूर्ब भूप यह सुनिकै । कहो द्वार पालक सों गुनिकै ॥ आज्ञा प्रथम हमारी लीजो । तब काहूकों आवन दीजो ॥ सूतउवाच ॥ मख बिधि बिहित करण द्विज लागे । अपने अपने पदपर रागे॥ भए अरुणचख अंबर कारे । लागे यज्ञ धूम संचारे ॥ देन अग्निमुख आऊति लागे । ऋत्विज महा मंत्रसों पागे ॥ कंम्पित उरग भए भयभरिकै । होता ऊनत मंत्रबल धरिकै ॥ परन अग्निमुख पन्नग लागे । बिगत पराक्रम भए अभागे ॥ बोलत सर्प परस्पर आए । तिन्है मंत्रबिद शिखिमुख नाए ॥ कोउ लपटे कोउ स्वासा भारे । पुच्छओर कोउ मुखदिशि हारे ॥ कोऊ स्वेत कोउ पिङ्गल कारे । कोउ तरुण कोउ बूढे बारे ॥ योजनमान कोसके कोऊ । महा अमानतुरग सम सोऊ ॥

कोऊ सुंड सन गज सम भारी । कोऊ महत नादके कारी ॥ असे अर्बन आहिगण आए । डारि अग्निमुख भूप जराए ॥ कहें कहोलों अतिविष भारे । सर्प असंख्य अग्निमुख डारे ॥ माता शाप पापसों भारे । अहि गण गहन दहनसम जारे ॥ सौनकउवाच ॥ सर्पसत्र जह ऋत्विज जेते । सूत नाम सह कहिए तेते ॥ ************

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

रहो सदस्य कहो मुनि कौन । क्रमसों कहहु सूत तुम तौन ॥ सूतउवाच ॥ क्रमसों कहत सुनहु मुनिराय । जे सदस्य ऋत्विज सुखदाय ॥ चंड भारगव होता तौन । च्यवन बंशभव तपवर जौन ॥ उद्गाता जैमुनि तपधाम । ब्रह्मासुहे संगरव आम ॥ पिङ्गल मुनि अध्वर्जु सुजान । रहे सदस्य व्यास मतिमान ॥ पुत्र शिष्यसह मतिके अैन । जनमेजयके दायक चैन ॥ उद्दालक प्रमतक मुनि पर्म । श्वेतकेतु पिङ्गल मुनिपर्म ॥ देवल असित सनारद जौन । कूंड कालघट जठर सुतौन ॥ बात्स्य श्रुतश्रवा अतिवृद्ध । रहे देवशर्मा तपऋद्ध ॥ कोहल सम सौभर मौद्गल्य । इतने मुनिवर हें तपबल्य ॥ अन्य बेदबिद विप्र अनेक । कँहलों कहिए नाम बिबेक ॥ बसामेदकी नदी समान । बही कुण्डतें धार महान ॥ तुमुल गन्ध फैलो चँहुओर । जरत अग्निमें अहिगण घोर ॥ नभगत परत जरत जे सर्प । हाहाकार करत तजि दर्प ॥ तक्षक गयो इंद्रके पास । सर्प सत्र सुनि पूरित त्रास ॥ सुरपतिसों सब कहि बृतान्त । सरण मोहि दीजै सुरकान्त ॥ नृप अपराध करो हम महत । याते नृप जनमेजय दहत ॥ इंद्र कहो अहिसों करि प्रीति । इहाँ न सर्पसत्रकी भीति ॥ तुम्हरे अर्थ पितामह पास । कहि प्रसन्न कीन्हो सुखरास ॥ इहां न करिहि तुम्है भय शाप । ताते तजहु मानसिक ताप ॥ सूतउवाच ॥ अैसे सुनि सुरपतिके बैन । तहां बसो तक्षक लहि चैन ॥ नित्य परत शिखिमुख अहि लेखि । रहे शेष पंन्नगकुल देखि ॥ भए तप्त बासुकि अहिनाह । बढो खेद कश्मल मन माह ॥ घुर्म्मित व्है भगनीसो बैन । कहन लगे इमि पाय अचैन ॥ दहत अङ्ग हत दिशा बिबेक । घूमत मन भरि मोह अनेक ॥ घूमत चख हिय फटत समान । बिबस परत पावकमह जान ॥ जनमेजयसत्र भयो अहि घात । जानि परत हम यमपुर जात ॥ प्राप्त भयो सो काल अनर्थ । तोहि दयो मुनिकों जेहि अर्थ ॥ सहित बंधु रक्षा मम करहु । हे भगिनी सो हित अनुसरहु ॥ तब आस्तीक सुरक्षण करिहि । सत्र प्रबृति भूप जब धरिहि ॥ कहो पितामह अैसे बैन । कोड़ि भीति हम पायो चैन ॥ कहु स्वपुत्रसों भगिनी तौन । बचैं हमार अग्निमुख जौन ॥ सूतउवाच ॥ जरत्कारु तब सुतहि बोलाय । कह्यो भ्रात प्रिय यों समुझाय ॥ तब पितुकों कछु कारण चाय । मोहि दयो बासुकि सुख पाय ॥ समय रहो कारणको जौन । प्राप्त भयो सुनिए सुत तौन ॥

॥ आस्तीकउवाच ॥ कौन निमित्त पित्ता कँह तोहि। मातुल दई कहो तुम मोहि ॥ कारज तौन करै हम अम्ब। बेगि कहहु मति करहु बिलम्ब ॥ सूतउवाच ॥ जरत्कारु तब सुतसों बैन। कहन लगी कारणको ऐन ॥ जरत्कारूरुवाच ॥ कद्रू बिनताको पण वाद। मातु शापते सर्प बिषाद ॥ कहि तथातु कद्रूसों शाप। विधिवर करो अचल अहि पाप ॥ वासुकि गमन पितामह पास। सुधा हेत कीर महत प्रयास ॥ सुरन सङ्ग वर विधिके बैन। शापहरण कारणके ऐन ॥ सुतको जन्म आपनो दान। जरत्कारु मुनि कहँ तपभान ॥ पूर्व उक्त यह कथा उदार। सुतसों कहो सहित बिस्तार ॥ सो वह समय भयो सुत प्राप्त। रक्षा करहु मातृकुल आप्त ॥ करहु सत्य वह हेतु महान। तो पितुको जेहि लगि मो दान ॥ सूतउवाच ॥ ऐसे सुनि माताके बैन। कियो पुत्र अंगीकृत बैन ॥ जरत्कारु सुतके सुनि बोल। वासुकि आनद लहो अलोल ॥ आस्तीकउवाच ॥ मातुल तुम्हे शापसों बारि। लेहैं हम यह सुनि निरधारि ॥ स्वस्थ होयकै अहिपति रहहु। सत्यवचन मेरे चित गहहु ॥ हम नृप जनमेजयके पास। जात अद्य करि महत प्रयास ॥ कहि कहि परम सुमङ्गल बैन। करब ताहि हर्षित भरि चैन ॥ होइहि जैसें यज्ञ निवृत। सुनहु तहांसो करब प्रवृत ॥ यह तुम जानहु निश्चय नाग। हम मिथ्यानहि कहत सभाग ॥ वासुकिउवाच ॥ हे आस्तिक हम रहत सघूर्ण। शाप दापसों मानस पूर्ण ॥ आस्तीकउवाच ॥ अहिपति चितचिंता मति लेहु। अग्निपातको भय तजि देहु ॥ अग्नि सरिसमा ताको शाप। सुनहु करब हम तास निपात ॥ ॥ सूतउवाच ॥ तब वासुकिको दुख उतारि। आत्म अङ्गपर लीन्हो धारि ॥ त्वरित चले जनमेजय पास। यज्ञ करत जहँ अहिकरनास ॥ अहिकुल करिवे रक्षण तत्र। यज्ञ करतहो भूपति यत्र ॥ लखो यज्ञशाला अभिराम। जहँ सदस्य ऋत्विज तपधाम ॥ द्वारपाल तँह करत प्रवेश। रोकि कहो यह भूप निदेश ॥ भूपतिको आज्ञा लहि विप्र। तुमै जान देहैं तब क्षिप्र ॥ यज्ञलव आस्तीक सुबीय [illegible] सुनि आनदपाय ॥ मुनि आगम नृपपास सुनाय। जान दियो प्रभुशासन पाय ॥ तब आस्तीक भूप ढिग आय। आशीर्वाद दियो सुखदाय ॥ राजा ऋत्विज अग्नि सदस्य। करण लगे तिनको स्तव पश्य ॥ आस्तीकउवाच ॥ सोम बरुणको यज्ञ अनूप। तथा प्रजापतिको अति [illegible] ॥ भूप यज्ञ तव तिन्है समान। होयसु मम प्रियको कल्यान ॥ मय शशबिंदु भूपको यज्ञ। [illegible] यज्ञ धरमज्ञ ॥ भूप यज्ञ तव तिन्है समान। होय सु मम प्रियको कल्यान ॥ नृप अजमीढ [illegible] जैसे रामचन्द्र सरवज्ञ ॥ भूप यज्ञ तव तिन्है समान। होय सो मम प्रियको कल्या[न] [illegible] सुतवर तज्ञ। करो युधिष्ठिर कुरकुल यज्ञ ॥ भूप यज्ञ तव तिन्है समान। होय [illegible] ए सब ऋत्विज भानु समान। तव मख कारक धर्म सुजान ॥ इहै आदि [illegible] भूप विशेष ॥ व्यास समान लोकमे और। हैनहि सुनहु भूप सिर मोर ॥

जाके शिष्य सु दिव्यापाय। ऋत्विज होत जगतमे जाय॥ अग्नि प्रदक्षिण शिखा समेत। सो ऊतहव्य सुरन कहँ देत ॥ तो समान भूपति नहि और। पालक प्रजा भूपशिर मौर ॥ हम प्रसन्न लखि चरण तुम्हार। बरुण धर्म्म सम भूप उदार॥ लोकपाल ज्यों शक्र महान। प्रजापाल तुम त्यों सुख दान॥ तुम पुरुषेंद्र लोकमे बीर। तुम समान को नरवर धीर॥ तुम खट्वांग दिलीप समान। तुम भीषमसम तेज समान॥ तुम वशिष्ठ सम नियमित क्रोध। सम बाल्मीक बीर्य कर रोध॥ हो तुम प्रभु इह इन्द्र समान। नारायण सम सद्दिति महान॥ यम सम धारक धर्म्म बिबेक। कृष्ण सदृश धृत सुगुण अनेक॥ श्रीनिवास तुम वसुसम बीर। क्रतु निधान तुम नरवर धीर॥ बढे क्रोध बल बीर समान। राम सदृश धृतशस्त्रबिधान॥ और्व्व चितयसम पूरित तेज। दुर्द्धर्ष भगीरथ सदृश सुतेज॥ सूतउवाच॥ सुस्तुति सुनि नृप भए प्रसन्न। ऋत्विज सदस्य मोदापन्न॥ तिनकी भावज्ञ इंगित चाहि। नृप जनमेजय कहो सराहि॥ जनमेजयउवाच॥ यह बालक बोलत ज्यों वृद्ध। नहि बालक जो सुमति समृद्ध॥ हम इनको बरदीवे चहत। करि बिचार तुम कछु सब महत॥ सदस्याऊचुः॥ बालो विप्र भूपकँह मान्य। मानत अधिक सविद्य वदन्य॥ हो तुम नृप सबभांति सुज्ञान। यातें कहाकहैं हम आन॥ आयो चहत तक्षकऊ सद्य। तिहि कीन्हों है महत अवद्य॥ बरदेवे कहँ भूप बिचार। कियो कहो नहि बचन उदार॥ तबलों होता बोलो बैंन। व्यग्र भयो मन किए अचैंन॥ भूप न आवत तक्षक सर्प। कियो मंत्रको कौतिक दर्प॥ जनमेजयउवाच॥ होय समाप्ति जौनबिधि सत्र। जैसें आवै तक्षक अत्र॥ तथा करऊ तुम द्विजवर यत्न। तक्षक होय अग्नि महपत्न॥ ऋत्विजउवाच॥ पढतमंत्र हम बऊत प्रकार। करि वर पावकको सतकार॥ इन्द्रभवन महँ तक्षक जाय। भयसों पीडित बसो पराय॥ लोहिताक्ष शिल्पक मतिऐन। कुण्ड रचत जो बोलो बैन॥ कहो जो बिप्रन तुमसों जौंन। होनहार दीसतहैं तौंन॥ पूर्व वृत्त हम कहत नरेंद्र। तक्षककों बरदीन्हों इन्द्र॥ बसऊ पास तुम मेरे सर्प। इहां न चलिहि मंत्रको दर्प॥ तबभए नृप सुनि यह बैंन। होतासों इमि कहो अचैंन॥ होता करऊ यत्न तुम जौंन। इन्द्र सहित आवैं अहि तौंन॥ चढे बिमान चले सुरराज। लए संग सब सुमन समाज॥ उत्तरीय सम धारे नाग। भोव्याकुल सो समुझि अभाग॥ राजा मंत्रबिदनसों फेरि। कहो क्रोधभरि लोचन हेरि॥ जनमेजयउवाच॥ तक्षक गयो इंद्रके धाम। बिप्र करऊ अस कर्म्मललाम॥ मन बसकरि आवाहन लेऊ। इंद्रसहित पावक मुख देऊ॥ सूतउवाच॥ होता सुनि भूपतिके बैंन। आवाहन कीन्हों तप चैन॥ चलेपुरंदर तक्षक संग। महामंत्रसों कीलित अंग॥ कंपमान तक्षक सुरनाह। क्षणभरि रहे व्यथित नभमाह॥ देखि यज्ञ दारुण भय पागि। इंद्र गए तक्षककों त्यागि॥ गए इंद्र तब तक्षक सर्प। भयो मंत्र बस भूलो दर्प॥ व्याकुल भयो समुझि सिखिपात। शिथिल भयो व्याकुल सबगात॥ ऋत्विजउवाच॥ भयो कर्म्म

आ०प० तव सिद्धि नरेश । करऊ विप्र कहँ सुवरनिदेश ॥ जनमेजय उवाच ॥ देहौं विप्र तुम्है अनुरूप । वरमागऊ इमि बोले भूप ॥ ऋत्विजउवाच ॥ यह आयो तक्षक नृप तौंन । करत नाद भैरव अति जौंन ॥ छोडि गए तक्षक मघवान । गिरत स्वर्गते विकल महान ॥ घूर्णित मुर्छित तजत अकास । आवत तक्षक लेत उसास ॥ सूतउवाच ॥ निकट पतन तक्षकको देखि । अन्तर यह आस्तीक नि रेखि ॥ कहनलगे भूपतिसों बैंन । वरके हेतु महातप ऐंन ॥ आस्तीकउवाच ॥ देन कहो जो बर तुम भूप । सो मागत हम देऊ अनूप ॥ भूप समाप्त होउ तबसत्र । फेरि परहि नहि पंन्नग अत्र ॥ यह सुनिके मुनिके नृप बैंन । कहो भूप अति भरे अचैंन ॥ सुबरण रजत गायगण जौन । मागऊ अपर चहऊ तुम तौंन ॥ विप्र करऊ मति सत्र नि बृत्त । और लेन बर होऊ प्रवृत्त ॥ आस्तीकउवाच ॥ सुरबण रजत न मागत गाय । करऊ निबृत्ति सत्र नृपराय ॥ सूतउवाच ॥ सुनि आस्तीक बचन यह भूप । पुनः पुनः सोइ कहत अनूप ॥ और मांगु बर द्विजवर क्षिप्र । सोवर मागत अन्य न विप्र॥ सहित वेदविद ऋत्विज सदस्य। कहे भूपसों बचन प्रसस्य॥ देऊ भूप बर शोचन करऊ।सत्र निबृत भयो चित धरऊ ॥ सत्र निबृत करो तब भूप । गुणि सदस्यको बचन स्वरूप ॥ *❦*❦❦**

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगाभिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वण्यास्तीकवरप्रदानं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

॥ शौनकउवाच॥सर्प सत्रमे सर्प जे परे अग्निमुख आय।सूत नाम तिनके कहऊ भली भांतिसमुझाय ॥सूतउवाच ॥अर्ब खर्ब हैं सर्पते तिनके कहलों नाम । कहिहैं सुनऊ प्रधानजे तास नाम तपधाम ॥

वासुकिकुलके सर्प जे परे अग्निमुख जाय । तिनके नाम कहैं सुनो जेहे मुख्य सुकाय ॥

[illegible] सित सर्पबर भरे घोरविष जौंन । परे आय मुख अग्निके मातशाप हत तौंन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कौणप [illegible] अरु चक्र । पाल हलीमक रहो जो बक्र ॥ कालबेग प्रकालय सुशरण। [illegible] भयभरण ॥ और कालदंतक विषभरे । बासुकि कुलज अग्निमुख परे ॥ तक्षक [illegible] सर्प अतिकाय । इतने परे अग्निमुख आय ॥ पुच्छांडक मंडलक महान । उच्छिक छरभ भंग [illegible] । मिली सलकरो मूक सुकुमार । प्रवेपन मुद्गर महत उदार ॥ सिसुरोम महाहनु [illegible] भरे अग्निमहं सिगरे मन्द ॥ ऐरावतकुल संभलनाग । कौरव्यज कुल जे खलभाग ॥ [illegible] सर्प । कोटिन महा भरे विषदर्प ॥ परे अग्निके मुखमहं सर्व । कहलों कहैं [illegible] सकल प्रसवविस्तार। को कहि सके असंख्य उदार ॥ चोणिसम दशशिरके

सर्प । कालानलसम बिषको दर्प ॥ कोटिन परे अग्निमुख आय । शैलशृंगसम जिनके काय ॥ आ०प
दुइयोजनके लंबे जौंन। योजन एक चाकरे तौंन॥ जनमेजयनृप असे नाग। डारि अग्निमुख कीन्हें
याग ॥ मातृशापसों पीडित तौंन । कियो ज़ताशनके मुख गौन ॥ और सुनऊ अद्भुत अभिराम ।
जो आस्तीक कियो तपधाम ॥ बरप्रदानमह बिलँबबिचारि । इन्द्र गए तजि तक्षक हारि ॥ स्नुगते
सर्प आयो नहि क्षिप्र । नृप बिचारि भो चिंतित बिप्र ॥ ह्रयमान क्यों तक्षकसर्प। परत न शिखि
मुखमे तजि दर्प ॥ शौनकउवाच ॥ तिनबिप्रनकँह मंत्र विधान। भूलि गयो का सूत महान ॥ परो
ज़ताशनमे नहि आय । तक्षक कहऊ सूत समुझाय ॥ सूतउवच ॥ इंद्रहाथतें छुटि फणिराय ।
परण चहत पावकमंह आय ॥ तिष्ठ तिष्ठ बोले आस्तीक। जाके होत न बचन अलीक ॥ कम्पत
हृदय गगण क्षितिबीच। रहो त्रिशंकु समाननि भीच ॥ होय बचन आस्तीक अबश्य।भूप कहो तब
सहित सदस्य ॥ होय हमार यज्ञ अब पूर्ण । होहि अभय सब सर्प अघूर्ण ॥ होय प्रसन्न सुमुनि
आस्तीक । होय न यह बरदान अलीक ॥ भयो हलहलाशब्द महान । भूपति जब दीन्हो बर
दान ॥ ऋत्विजसह सदस्य द्विजवृन्द । करि तिनको सनमान नरिन्द ॥ तिन्है दान दीन्हो अति
भूप।कनक रजत गो बसन अनूप॥ लोहिताक्ष हो सूत जो वृद्ध।तिन्है भूप किय महत समृद्ध।।स्थपति
कहो जेहि सगुण निमित्त। लोहिताक्ष सो नृप हितचित्त ॥ जनमेजयनृप अति सुखदान।फेरिकियो
अवभृथ सुस्नान ॥ बिदाकरो आस्तीकहि भूप । करि पूजा बिधिवत अनुरूप॥ फेरि आगमन कीजो
बिप्र । अश्वमेध करिबे हम क्षिप्र ॥ तुम्हें सदस्य होन तहं परिहि । जाते यज्ञ सिद्धि मम धरिहि॥
कहि तथास्तु मुनि गए प्रसन्न । भूप भए आनन्द सम्पन्न ॥ माता मातुलके ढिग जाय। आस्तीक दई
सब कथा सुनाय ॥ सूतउवाच ॥ सुनि सो मोदमये सबनाग। दुख तजि सुखसों भरे सभाग ॥ पुनः
पुनः सबनाग सचैन। प्रति आस्तीक कहे ए बैन॥ बर मांगऊ तुम इच्छित जौंन। हेआस्तीक देहि हम
तौंन ॥ * ॥ आस्तीकउवाच ॥ सायं प्रात बिप्र नर अन्य । यह आख्यान पढे जे धन्य ॥ तिन्है सर्प
कृत भीति न होइ । तुम बर देऊ यहैँ सबकोइ ॥ सर्पनाथसह सिगरे नाग । कहो तथास्तु सोहत
अनुराग ॥ भागिनेय तो लेहै नाम । सर्प जाय नहि ताकेधाम ॥ सुनऊ मंत्र यह तुमसों कहत ।
सर्पनिवारणकारक महत ॥ * ॥ मंत्रः ॥*॥ असितश्चार्तिमन्तश्च सुनीथश्चापि यः स्मरेत्। दिवावा
यदिबा रात्रैा नास्य सर्पभयं भवेत् ॥ योजरत्कारुणा जातो जरत्कारैा महायशा । आस्तीकः सर्प
सत्रेब पन्नगान्योभ्यरक्षत ॥ तं स्मरन्तं महाभाग नमां हिंसितु मर्हत । सर्पाय सर्प भद्रन्ते दूरं गछ
महाविष ॥ जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर ॥ * ॥ आस्तीकस्य बचः श्रुत्वा यः सर्पो न
निबर्तते । शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिंशबृक्षफलं यथा ॥ *❖*❖*❖*❖*❖*❖*

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ शौनकउवाच ॥ * ॥ सबसर्पन मिलि ग्या वर दीन्हों। कहि तथास्तु सो मुनिवर लीन्हों ॥ परम प्रीति हिय मुनिवर धारो। गमन करणको फेरि बिचारो ॥ सर्प सत्रतें सर्प उबारो। समय पायकै विप्र सिधारो ॥ पुत्रपौत्रमान फिरि ह्वैकै। गए स्वर्गकहँ आनद ग्वैकै ॥ यह आख्यान विप्र जो पढिहै। सर्प भीति नहि ताको मढिहैं॥ * ॥ सूतउवाच ॥ * ॥ प्रमति जो रुरुसुत पास कह्यो हो। तौन कहो सुनि जौन लहो हो ॥ जो आस्तीक चरित्र सुनैगो। पुण्यबृद्धि लहि पाप धुनैगो ॥ डुण्डुभ वचन श्रवण अनुजोहो। तुम बूझो सो सकल कहो हो ॥ *✿*✿*✿*** स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिरजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन श्रीगोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि आस्तीकाख्यानं समाप्तम् पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ *✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿**

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

भृगुको बंश सुन सम्पन्न। अहो सूत हम भए प्रसन्न ॥ अब तुम कहहु सहित बितपत्य। द्वैपायन मुनि कहो जो सत्य ॥ सर्प सत्रमे पाय बिराम। कथा परम पावन अभिराम ॥ सो हम सुनन चहतहैं सूत। तौन कहहु सह बिस्तर पूत ॥ महाभारत पाण्डव आख्यान। द्वैपायनसौं अतिसुखदान ॥ जनमेजय नृप बूझो जौन। कहो व्यासमुनि विधिवत तौन ॥ सूतउवाच ॥ कहियत महाभारत आख्यान। जौन व्यासमुनि कहो महान ॥ सर्पसत्र करिवे कहु ईहित। भए भूप जनमेजय दीक्षित ॥ सुनि द्वैपायनमुनि अभिराम। शिष्यन सह आए तपधाम ॥ काली जाको माता पर्म्म। पराशर सुमुनि पिता सधर्म्म ॥ कालिन्दीके द्वीप मझार। कन्या पनमे जनी कुमार ॥ जात मात्र [illegible]। भए वेदपारग सह अङ्ग ॥ बिना तपस्या बेदाध्यैन। बिन करे व्रत बिद्या अैन ॥ [illegible] बिचारि। बेद एकतें कीन्हें चारि ॥ पूर्व परज्ञ ब्रह्मऋषि तज्ञ। सत्यब्रत [illegible] पाण्डु बिदुर धृतराष्ट्र कुमार। जिन कीन्हें उतपन्न उदार ॥ सान्तनु सन्ततिके कर [illegible] सहित [illegible] नाना ऋद्धि ॥ सो जनमेजयके मखधाम। शिष्यन सहित गए अभिराम ॥ [illegible] जनमेजय भूप। ऋत्विज सहित सदस्य अनूप ॥ देव सभामँह ज्यों सुरनाथ। य्यों नृप द्विज [illegible] ॥ भूपवृन्दमह लसत अमन्द। ज्यों उडुगणमे पूरणचन्द ॥ आवत देखि महा [illegible] चलि सहित समाज ॥ आगें जाय परसिकै पाय। बिनय सहित ल्याए मुनि [illegible] अनूप ॥ आसनकहँ दीनो वर भूप ॥ बरद व्यास तापँह बैठाय। पूजा [illegible] अर्घ्य सुजान। फिरि मधुपर्क दियो सुखदान ॥ बिधिवत नृपसौं पूजनपाय। भए प्रसन्न व्यासमुनिराय ॥ करि पूजन बैठे द्विज भूप। बूझो कुशल बचन सुख

रूप ॥ मुनि बूझा नृप कुशल सप्रीत । कहो कुशल व्है भूप बिनीत ॥ सबिधि सदस्यन पूजे आय । मुनि पूजो तिनको शुभ पाय ॥ फेरि सदस्यन सहित सचैन । यह जनमेजय बूझे बैन ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ कुरु पाण्डवके देखनहार । हो प्रपितामह तुमहि उदार ॥ तिनको चरित सुनो हम चहत । कहहु कृपा करिकै मुनि महत ॥ कैसैं भयो बिरोध महान । धर्म्मशील तेहे मतिमान ॥ कहहु युद्ध कारण इतिहास । जहां भयो भूपनको नास ॥ पितामहादिक सर्ब महान । भए दैव प्रेरित बलवान ॥ कहहु सविस्तर यह वृत्तान्त । हे प्रपितामह मुनिबरकान्त ॥ ॥ * ॥ सूतउवाच ॥ * ॥ सुनि यह मुनि भूपके बैन । वैसम्पामनसौं तपचैन ॥ कहत भए ऐसैं मुनिराय । सहितप्रेम अति निकट बुलाय ॥ व्यासउवाच ॥ वैसम्पायन सुमति अखर्ब । यथा सुनो हमसौं तब सर्ब ॥ पाण्डव कुरुकुल जनित बिरोध । कहहु करहु भूपतिको बोध ॥ वैशम्पायन मुनि मतिधाम । गुरुमुनिशासन बचन ललाम ॥ कहन लगे इतिहास पुरान । जनमेजयनृपसौं मतिमान ॥ कुरुपाण्डवको बैर बिनास । कहने लगे पूरब इतिहास ॥ गुरुपद बन्दि परम अभिराम । ध्यान धारणा करि हिय धाम ॥ द्विजबर बन्दि महत मति ऐन । वैशम्पायन बोले बैन ॥ ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ कहत व्यासमुनिको मत जौन । सुनहु भूप जनमेजय तौन ॥ तुम सुनवेके पात्र नरेश । कथा भारतो परम बिशेस ॥ गुरु मुखकी आज्ञा लहि भूप । मन उत्साह धरत अति रूप ॥ सुनहु भूप भो जैसैं बैर । कुरुपाण्डवसौं पूरण मैर ॥ राज्यअर्थ छलद्यूत प्रकाश । पाण्डुसुतन लीनौ बनवास ॥ जैसैं भयो परस्पर युद्ध । क्षत्रवंश क्षयकारक उद्ध ॥ तौन कहत हम तुमसौं भूप । सुनहु व्यासभाषित अनुरूप ॥ पाण्डु मरे तब पाण्डव बीर । गए हस्तिनापूर रणधीर ॥ बेदसकल बरधनुषविधान । अचिर कालमे पढे सुजान ॥ सत्वबीर्य ओजस सम्पन्न । तिन्है देखि भे पौर प्रसन्न ॥ देखि तिन्है श्रीसहित उदार । सहि न सके धृतराष्ट्रकुमार ॥ दुर्योधनसह शकुनि सकर्ण । लगे बिचारण तिनको मर्ण ॥ दुर्योधन करि मंत्र बिरुद्ध । दियो भीमकंह बिष अतिउद्ध ॥ भीम अन्नसह गरल पचाय । सोय गए अति निद्राछाय ॥ प्रमाण कोटि थल गङ्गातीर । तहां रहो सोवत बरबीर ॥ बांधि भीमके सिगरें अङ्ग । डारि दियो गहिरें मधिगङ्ग ॥ आपु गए घर सहित समाज । दुर्योधन करि ऐसोकाज ॥ शीतल होय जगो बरबीर । बन्धन तोरि गए कढि तीर ॥ भीमसेनकहँ सोवत पाय । दुर्योधन पन्नग समवाय ॥ छोडि दए आशीविष घोर । डसे अङ्ग तिन चारोओर ॥ तबहु न मरे वृकोदर बीर । दुर्योधन लखि भए अधीर ॥ दुर्योधनके बैर बिधान । बिदुर रहे तामैं सावधान ॥ सर्वस्व यथा जनहित [illegible] । बिदुर तथा पाण्डव हितमन्त्र ॥ दुष्ट कर्म्मको करि प्रतिकार । बिदुर करत रक्षण [illegible] ॥ प्रगट करि यके उपाय । लहि स्वपिताकी आज्ञा जाय ॥ चल सु पाण्डवनको समुझाय । [illegible] तब विस्मय पाय ॥ दुर्योधन नृप मंत्र बिचारि । वृष दुःशासनसौं निरधारि ॥ दुर्योधन यह कियो

उपाय । अन्ध भूपसों आज्ञा पाय ॥ पाण्डव पठए लाक्षाभान । माता सहित करोति न गान ॥ बिदुर गए प्रस्थान स्थान । कहि आए सब मर्म सुजान ॥ रहे बर्षभरि तामे जाय । माता सहित लाक्षागृह पाय ॥ अवक पुरोचन ताहि जराय । गए सुरंग राहकौ पाय ॥ निशि निशीथमंह गङ्गा पार । गए तरणिचढि बीर उदार ॥ निशिमह जात चले बनओर । लखो हिडम्ब राक्षसहि घोर ॥ ताहि हनो बरभीम प्रचार । भए हिडम्बाके भर्तार ॥ जई घटोत्कच तनय सु तौन । तब तहतैं किय पाण्डव गौन ॥ बसे एकचक्रामें जाय । ब्राह्मणके घरमे सुखदाय ॥ धर ब्रह्मचारीको रूप । बेदाध्ययन करत शुचिरूप ॥ वकनामा राक्षस तह घोर । मारो भीमसेन भुजजोर ॥ करत स्वयम्बर द्रुपद नरेश । कृष्णाको पाञ्चाल सुदेश ॥ सुनत तहांकौ गए उताल । लही जाय पाञ्चाली बाल ॥ बर्षएक तँह बसे समृद्ध । हस्तिनपुर व्है गए प्रसिद्ध ॥ तब भीषम धृतराष्ट्र नरेश । दियो मंत्र करि परम निदेश ॥ भ्रातृ बिरोधसु जाय नशाय । पाण्डवप्रस्थ बसऊ तुम जाय ॥ जनपद सहित प्रस्थ सो पाय । मत्सर छोडि बसऊ तँह जाय ॥ ते तिनके सुनि बचन महान । सुहृद सहित तंह गए सुजान ॥ लए सकल धनरत्न अतूप । जाय बसे तहँ पाण्डवभूप ॥ शस्त्रप्रताप पसारि महान । जीते औरभूप बलवान ॥ ऐसे धर्म्म परायन तौन । करे बऊत हित सर्जन जौन ॥ प्राचीदिशि जीतो बरभीम । उत्तरदिश अर्जुन बलसीम ॥ पश्चिमदिशा नकुल बलबान । दक्षिणदिश सहदेव सुजान ॥ जीति करी बस पृथ्वी सर्ब । पञ्च सूर्य्यसम लसे अखर्ब ॥ सूर्य्यसहित षट सूरज मान । शोभित भई धरा सुखदान ॥ कछु कारण लहि धर्म्म नरेश । अर्जुनकौ बनबास निदेश ॥ दियो प्राणतं प्रियतर जौन । बरह बर्षबसे बन तौन ॥ तदनंतर अर्जुन बलरास । गए द्वारिका हरिके पास ॥ पद्म लोचना छबिमय तत्र । कृष्णस्वसा सो लही कलत्र ॥ फिरि खांडव सुबिपिनमहँ आय । कियो अनलकहँ तृप्त चराय ॥ बासुदेवकंह पाय सहाय । जीति इन्द्र बन दियो [illegible] ॥ अग्नि धनुष गांण्डीव महान । दिए तुनीर अक्षय भरि बान ॥ दयो कपिध्वज रथ अभिराम । श्वेत [illegible] सहित ललाम ॥ लियो तहां मयदैत्य उबारि । पारथ शिल्पकार [illegible] ॥ सभा [illegible] तेहि रचो अनूप । मणिगण जडित घटित बजरूप ॥ तब दुर्योधन लोभ [illegible] द्यूत रचो छल बल निरधारि ॥ जीते सो बल बञ्चक बेश । बिपिनि बास किय धर्म्म नरेश ॥ [illegible] रचि भूप । एक बर्ष अप्रगट सरूप ॥ बर्ष चौद हैं धर्म्म नरेश । मागो आय सधन [illegible] नहि दयो सदंभ । यातैं भयो युद्ध प्रारंभ ॥ तब तिन क्षत्री सकल संघांरि । [illegible] ॥ पाय राज्य सब शून्य सरूप । राजा भए युधिष्ठिर भूप ॥ *❦❦*

[illegible] अधिराजश्रीउदितनारायणसाज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीबासि [illegible] बिना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्व्वणि षष्टितमोध्यायः ॥

[illegible]

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ कहो तुम संक्षेपसों अब कहहु करि बिस्तार। महाभारत कथा पावनि चरित परम उदार॥ सुनो चाहत तौन सिगरो कहो जो मुनि व्यास। करो कौरव पांडवन मिलि यथा कुरुकुल नास॥ सुनहु कारण अल्पहै नहि जाहि चित मह चाहि। हने सकल अबध्य तापैं जगत संमत ताहि॥ व्है समर्थ न क्रोध कीन्हीं सह्यो क्लेश महान। कौन कारण पाय तुमसब करहु तौन सुजान॥ अयुत गजसम बाहुबल तिन सहो भीम कलेश। महा क्रोध समान पावक रहे रोधि असेश॥ द्रोपदी अति सती साध्वी क्लेश ऐसो पाय। कियो तिनकों भस्म नहि क्यों क्रोध अनल जराय॥ द्यूत हारे भूप तिनके संग चारो भ्रात। गए ते नरव्याघ्र तिनको करो क्यों न निपात॥ धर्म्मभृत बर धर्म्मके सुत धर्म्मराज सुजान। क्लेश सहिबे योग्य नहि किमि सहो क्लेश महान॥ कथं सेना बहुल ताकों एक अर्जुन बीर। मारि तिनकों दियो यमपुर रहे जे रणधीर॥ कहहु सिगरो सहित निर्णय भयो जो तब तौन। महारथिन चरित्र कीन्हों अमित रण रचि जौन॥

॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ करो मन एकाग्र भूपति बिपुल यह आख्यान। लोक पूजित व्यासमुनि जो कहो सहित विधान॥ कहत हौं मत तौन सिगरो एक लक्ष प्रमाण। सुनै यह यों यों सुनावत परम पुण्य पुराण॥ ब्रह्मलोक सो पाय नरवर होत देव समान। लहत चारिपदार्थ सोऊ परम पुण्य महान॥ दानशील अक्षुद्र आस्तिक सत्यबक्ता जौन। तिन्है बेद सुनाय यह द्विज अर्थ लेहैं तौन॥ भ्रूणहत्या आदि पातक जाइगो मिटि सर्ब। सुनत छुटिहै पापतें जे पुरुष दारुण खर्ब॥ पढतहैं जय नाम यह इतिहास जे जयकाम। शत्रु जीतत सकल ते बर लहत भू अभिराम॥ पुत्रकारक परम है यह कुशल कारक भूरि। सहित महिषी सुनत हैं जो भक्ति श्रद्धा पूरि॥ वीर ताके होत पुत्र सु होति कन्या जौन। होति है सौभाग्यशाली भूप भार्या तौन॥ धर्मशास्त्र सु अर्थशास्त्र सु मोक्षशास्त्र स्वरूप। कहो हम इतिहास पावन व्यासमुनिबर भूप॥ करत काया बचन तें नर महापातक जौन। सुनत यह इतिहास पावन क्षिप्र बिनशत तौन॥ सुनत हैं इतिहास जे यह भरत बंश समस्त। मिटति शङ्का व्याधिकी परलोक शङ्का अस्त॥ पुण्य आयुष सुयश धनको परम कारक भूरि। करो है इतिहास यह बर व्यासमुनि मुदपूरि॥ कीर्त्तिकारक पाण्डवनके और क्षत्रिय तास। सर्बबिद्या देतहै यह व्यासकृत इतिहास॥ द्विजनकों यह कथा पावनि देत जान सुनाय। लहतहैं सो परम गतिकों पुण्य निश्चल पाय॥ पढत हैं कुरुबंशकों सो लहत बंश महान। पढत चातुर्मास में तेहि तजत पाप समान॥ पढत भारत बेदपारग होत तौन अखर्ब। देव ब्राह्मण ऋषिनको यह बिष्णुकीर्त्तन सर्ब॥ देव देवी और गुरुको मङ्गल कीर्त्तन शुद्ध ...

५० ब्राह्मण को महातम कहो मुनिवर उड ॥ जो सुनावत द्विजनकौं यह आदिमे इतिहास । लहत तिनके पितर अक्षयतृप्ति आनद रास ॥ करत ज्ञानाज्ञान बस जे इन्द्रियनसौं पाप । जातहै मिटि छोडि जन तनु करत भारत जाप ॥ भरतवंश महानको है जन्म जामे ख्यात । नाम तातैं महाभारत कहतहैं अवदात ॥ नाम अर्थ सहेतु जानत छोडि ताकौ पाप । जात जैसैं शीत भागत लगैं भानु प्रताप ॥ नित्य उठि शुचि लग्न है धरि नियम तप बर रूढि । वर्ष त्रयमे कियो है इतिहास यह मुनि सिद्धि ॥ विप्र यातैं नियम धरिकै कहैं यह इतिहास । सुनै सो धरि नियम जातें लहैं आनद रास ॥ सुनै श्रद्धा सहित जो नर अरु सुनावत जौन । अश्वमेधहि आदि मखको लहतहैं फल तौन ॥ मेरु आकर रत्नको हैं यथा सिंधु महान । तथा भारत पुण्य गुणको परम सम्भव थान ॥ बेद सदृश पवित्र श्रुति कहँ सुनत अति सुख देत । देत भारत की जो पुस्तक बांचिकै करि हेत ॥ लहत सिगरी भूमिके बर दानको फल तौन । भूप हैं यह कथा पुण्या विजय कारण जौन ॥ कही भारत कथा यह मुनि व्यास अद्भुत रूप । देति चारो फलनकौं यह परम पावन भूप ॥ जो कहो यहि कथा मे है अन्य हूँ मे तौन । अन्य मे नहि पाइ हौ नहि कहो यामे जौन ॥ परम पावन कथाकै यह श्रवणको फल भूप । कहो हम जो सुनो मुनिवर व्याससौं अनुरूप ॥ ******

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेनकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि भारतप्रशंसा कथनं नामद्वाविंशोध्यायः ॥ *************

॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नृपति चर बसु सो रहो सत्यव्रत अभिराम । नित्य सो मृगया गमनको धारो व्रत बलधाम ॥
छोडि मख सो बन बसो करन लगो तप भूप । महा उग्र तप देखिकै इंद्र सुशंकित रूप ॥

॥ * ॥ चरणाकूलकछन्द ॥ * ॥

सुरन सहित तापहँ चलि आए । कहन लगे इमि बचन सोहाए ॥ * ॥ देवाउचुः ॥ जौं यह धर्म भूप तुम धारो । धरा धर्म सङ्कर अनु सारो ॥ * ॥ इंद्रउवाच ॥ * ॥ लोक धर्मकंह भूपति पालो । राज नीति तें चरण नचालो ॥ मिलिहि लोक सो धर्महि धारो । परम पुण्यमय कहत बिचारो ॥ हम तुम स्वर्ग भूमिके बासी । भयेउ सखा मम आनद रासी ॥ रम्य देश चितिपर है तेहां । बसऊ भूप भक्ष पशु ह जेहां ॥ पुण्यमयी बसुपूरण धरणी । प्रजा सुनीति पुण्यमय बरणी ॥ भोग्यवस्तु युक्ता गुण सारी । सघन बसत जेहां नर नारी ॥ चेदि देशकहँ भूपति जैये । तहां बासकरि आनद पैये ॥ जनपद परम सुशील सोहाए ॥ सह सन्तोष साधुजन भाए । मिथ्या बचन न बोलत कोऊ ॥ सहजऊँ काम मरे का सोऊ । तहँ गरुभक्त सुमति जन भाए ॥ बर्ण सकल स्वधरम सौं छाए । चेदि नगरके जन गुण

मानो ॥ है सब बिदित तुह्मौ नृप ज्ञानो । दिव्य बिमान लेउ नभ आयो ॥ देत तुह्मै सुर सदृश आ० बनायो । तुम बिमान पर चढिकै सोहो ॥ सुर समान जन मनकौं मोहो । देत जयन्ती माल प्रभा के । म्लानहोत नहि पङ्कज जाके ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वैजयन्तका माल यह उरमे धरिकै बीर । जब जैहो संग्राम मे छ्वैहै च्तत न सरीर ॥
माला व्है है चिन्ह तो परम चेदिपति भूप । इन्द्र माल लखि जगत जन कहिहै धन्य अनूप ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बंश यष्टि दीन्ही सुरनाथ । प्रीति चिन्ह सभ आनद साथ ॥ फेरि कहो यह सुरपति बैंन । यह यष्टी साधरण है न ॥ सम्बत्सर बी तै तब भूप । यष्टी पूजन करो अनूप ॥ यष्टी खडी भूमि महँगाडि । इन्द्रावाहन तामे माडि ॥ विधि षोडश पूजन निर धारि । सह मणि भूषण बसन बिचारि ॥ दूजे दिन उत्सव अति मान । करो चेदिपति नृपति सुजान ॥ ध्याय इन्द्रको तामे रूप ।पूजन कियो यथा विधि भूप ॥ यष्टीपूजन लखि लहि चैन । बोले इन्द्र प्रीतिमय बैंन ॥ ऐसैं पूजन करिहैं जौंन । चेदिभूपकी बिधि लहि तौन ॥ श्रीसह विजय भूमिपति पाय । सहित देश रहिहैं सुखछाय ॥ लहि बसुभूप इन्द्र सत्कार । भरे चेदिपति मोद उदार ॥ इन्द्र कहो उत्सव इमि जौन । करि पूजित छ्वैहैं नृप तौन ॥ चेदि बिषयसों पालत भूप । पांचपुत्र जाए अनुरूप ॥ तिन्है भूप जारो दिशिमाहँ । करि अभिषेक कियो नरनाह ॥ करो बृहद्रथ मगधाधीश । अरु मावेल्ल कुशांब छितीश ॥पटु राजन्य महा बलधाम । पाँचपुत्र ये बसुके आम ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अपने अपने राज्यमे अपने अपने नाम । रचि पत्तन तेहा बसे सह समृद्धि बलधाम ॥
पृथक पृथक तिनके भए बंश बिरद बिख्यात । बैठे रहत बिमान पर बसु रवि सदृश बिभात ॥
बसु राजासों उपरि चर भयो सुरनसम सर्ब । तापहँ आवत नित्य प्रति अमर सह गंधर्ब ॥
नदी चेदि पुरके निकट शुक्तिमती हीं जानि । गिरि कोलाहल कामबस व्है कै रोकी तौंनि ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

हनो गिरिकौं कोप करि तब उपरिचर बसु भूप । बिबर व्है गो अद्रिमे तेहि राह सरित अनूप ॥ बही लहि गिरि पुरुष संगम धरो गर्भ उदार । भए तात दोय बालक सुता सुत सुकुमार ॥ लहि बिमोक्षण प्रीति सरितैं दिए नृप कहँ तौन । करी गिरिका नाम पत्नी रही कन्या जौंन ॥ वसुप्रद धरि नाम सुत सो कियो सेना नाथ । भई गिरिका कछुक दिनमे ऋतुमती सुखसाथ ॥ दियो नृपकौं सकल गिरिका ऋतुस्नान सुनाय । सुरति समय बिचारि भूपति रहे आनद छाय ॥ कहो पितरण आय

आ०प० ता दिन भूपसां इमि बैन । मारि मृग पल आध कीजै अहो पुत्र सचैन ॥ पितृ आज्ञा मानि बनको गए धनुधरि भूप । फिरत बनमे भए कामी समुझि गिरिका रूप ॥तहँा नाना भाँतिके तरु रह कुसुमन छाय ।भरे मनु अनुराग नूतन परम पल्लव पाय ॥ *

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

बऊ भरत मधु मकरन्द । मिलि बहत मारुत मन्द ॥ उडि सघन सुरंग पराग । बन भरत मनु अनुराग ॥ कल करत कोकिल राव । मधुमत्त मधुप सचाव ॥ करिरहे हैँ गुञ्जार । मनु मदन मंत्र उदार ॥ ऋतु सरस हैं ऋतुराज । लहि संग काम समाज ॥ बन देखि सो अभिराम।बस भयो भूपति काम ॥ नहि लखत गिरिका बाल ।हिय वासिनी क्षितिपाल ॥ तेहि फिरत बन श्रमछाय। गो तहां चेदिप राय ॥ जहं बकुल आंब अशोक । बनिरहे सुमनस ओक ॥ तिन्हतरें बैठे जाय । वसु उपरि चर सुखपाय ॥ सो कामबस नृप चेत । तब गिरन लागो रेत ॥ धरि पत्रसंपुट माहं । वह रेत लिय नरनाह।।मम रेत परम अमोघ।यह होय गो गिरि ओघ ॥ यह चित्त माहं बिचारि। लिय रेत भूपति धारि ॥ दिन आजु चौथो हाल । ऋतुवती गिरिका बाल॥ जिमि होय नहि ऋतु व्यर्थ । यह समुझिके नृप अर्थ ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पुत्रोत्पत्ति हेतु जो खच्च ।असे वर सु मंत्रसोँ दच्च ॥ अभि मंत्रित करि भूपति रेत । गिरिका पह पठवनके हेत ॥ गएे सेनढिग भूप सुजान । बोले भूप सहित सनमान ॥ मम हित हेतु शुक यह लेऊ। वेगि जाय गिरिकाकाँ देऊ ॥ सुनत सेन पक्षी ले रेत । चले बेगसोँ जानि सचेत ॥ सेन दूसर घेरो आनि । आमिष लएँ जात यह जानि ॥ दोऊ लरन लगे बलवान । गिरो रेतसम्पुट सुख दान ॥ गिरो तौँन जमुनामे आय ।मत्सी करो पान सो पाय ॥अप्सराद्रिका लहि बिधि शाप ।मीन भई सो करि कछु पाप ॥भए अद्रिकाके अवतार । दुहिए शापतेँ देखि सुसार॥ एक नदी जा गिरिका नाम । दुतिय अद्रिका मत्सी आम ॥ यातेँ नृप संकलप न व्यर्थ ।भयो सुनो भूपाल समर्थ ॥लयो धीवरन ताहि बझाय । प्रसव मास जब पहुंचो आय ॥ फारत पेट कढे द्वै वार । कन्या एक सु एक कुमार ॥ लहि आचर्य भूप पहं जाय । दयो धीवरन तुरित सुनाय ॥ मत्स्य उदरतेँ निकसे भूप । कन्या एक पुत्र शुभरूप ॥ लयो भूप बसु पुत्र सु जौँन । भयो मत्स्य नामक नृप तौँन ॥ सो अप्सरा शापतेँ मुक्त । गई स्वर्गकाँ आनद युक्त ॥ दई धीवरहि कन्या तौँन । नृप बसु मत्स्यगन्धिनी जौँन ॥ धीवर राखी सुता समान । भरी सकल गुण रूप महान ॥ सत्यावती धरि ताको नाम । माता पिता कहैँ अभिराम॥मत्स्यगन्धिनी सो वह बाल।भई सयानी लहि कछु काल॥ पिता खुसी कैँह बाहे नाव । कालिन्दीमे पूरित चाव ॥ तीरथ यात्रा करि अभिराम । तहां पराशरमुनि तप

धाम ॥आय लखो सो बाल अनूप । चारु हासिनी दिव्य स्वरूप ॥ चढे नाव जब गए मझार । मुनि मन बाढे काम बिकार ॥ हे रम्भोरु करऊ मम सङ्ग । लखत तोहि हौं व्यथित अनङ्ग ॥ तब तहि कहो लखत मुनिराज ।खरे दुहूं दिशि सुऋषि समाज ॥ इनके लखत समागम तौंन । हम तुम करहि कहऊ बिधि कौन ॥ यह सुनिके मुनि कियो बिचार । प्रगट करो नीहार उदार ॥ अन्धकार गो चऊदिशि छाय।गयो भानुसह दिशा छपाय ॥ सत्यवती सचकित इमि बैंन । बोली जानि महा तप ऐन ॥ * ॥ सत्यवत्युवाच ॥ * ॥हौं अबहीं कन्या मुनि भूप । चलति पिता शासन अनुरूप ॥ तो सङ्गमते कन्याभाव । कौंन भांति रहिहैं सहचाव ॥ * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कन्याभाव बिनष्ट करि क्यौं सकिहौं घरजाय । कैसें जीवित धारिहैं सुनऊ महा मुनिराय॥

॥ * ॥ श्रुतिसुखछन्द ॥ * ॥

सुनिके यह बैन महामुनिराय । करि प्रीति कहो अति आनद छाय ॥ न डरौ जु करौ प्रिय काम हमार । नहि जायहि कन्यका भाव तुम्हार ॥ बरमागु प्रिये चित चाहत जौंन । मम होत प्रसाद सुव्यर्थ कहौंन ॥ तन होय सुगन्ध महा बर देऊ । यह मांगत भो तन सौरभ गेऊ ॥ लहि सौरभ सुन्दरि पूरित चैन । चलि द्वीप मे दोऊ गए सुख ऐन ॥ करि सङ्गम पाय महा मुनि शर्म्म । तबहीं तेहिको भयो गर्भ सुपर्म्म ॥ तब जात भए बनकौं मुनि राय । करिबेंतप उग्र अचिंत्य प्रभाय ॥ लहि योजन गन्धवती तेहि नाम । तबहीं भयो पूरण गर्भ ललाम ॥ तब व्यास मुनीश लियो अवतार । मधि कालिन्दीके बर दीप उदार ॥ तबहीं परे देखि कुमार स्वरूप । जननीसौं चले कहिके मुनिभूप ॥ जब अम्ब करोगी हमै सुस्मर्न । तबहीं हम आइहैं कारज कर्न ॥ मुनि द्वीपमे जन्म लियो अभिराम । द्वैपायन यातें धरो बिधि नाम ॥ युगआदितें अन्तलौं धर्म्मके पाय । क्रमत एक एकसों जात नशाय ॥ इहि भांतिसो मानुष आयुष जौंन । लखि जात घटो मुनि आनद भौंन ॥करि कैसु अनुग्रह बिप्रन पास । करि बेद बिभाग भए मुनि व्यास ॥ सब बेद पढाय दिये शुचि हेत । शुकजैमिनिपैं लसु मंत्र समेत ॥ * * * * * * * *

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

भारत पञ्चम बेद द्वैपायन मुनि करि कृपा । दियो पठाय अखेद बैंसम्पायन सूतकौं ॥
गङ्गातनय उदार सान्तनुसुत भीषम भए । बसु बीरयसौं वार बेदारथवेत्ता परम ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बेदबेत्ता बिप्रका करि बिना चोरीं चोर । भूप भृत्यन पकरि राखो शूलप अति घोर ॥ बिख्यात

पा० मुनि माण्डव्य इमि भो ब्रह्मऋषि तपधाम । धर्मको आव्हान कीन्हों क्रोध करि तेहि माम ॥ कियो एक सकुन्तिकाका इषिकासौं भेद। बालपनमे कियोहों हम इतो कारण खेद ॥ तेहि अन्त कीन्हों अमित भांति न उग्र तप अभिराम । भयो कासौं नही तातैं तनकपातक छाम ॥ अन्यबधतैं विप्रबध हैं घोर रूप बिशेश । धर्म्म हो तुम किल्विषी कुरु शूद्रयोनि प्रबेश ॥ शापत तेहि धर्म्म राजसु शूद्रयोनिहि पाय । होत भोसो बिदुर बिद्वन धर्म्म बिद सुखदाय॥ भए सु मुनि समान संजय गवलगणतें सूत । कर्ण कुन्ती कन्यकातैं भयो रबितैं पूत ॥ लोक कारण बिष्णु प्रगटे देवकीतैं पर्म्म । दृस्निकुलमे कृपासागर बढावनकौं धर्म्म ॥ अव्यक्त अव्यय प्रबर आत्मा प्रकृति प्रभव अमन्द । बिश्वकारण नित्य अक्षय सत्य आनदकन्द ॥ अचलअनादि अनन्त धाता सगुण निर्गुण रूप। अजर आनदप्रभव प्रभु कैवल्य त्रिभुवन भूप॥ दृष्णिवंश सनाथ कीन्हों परम पावन पूर । भए सत्यकतनय सात्यकि कृष्ण अनुगम सूर ॥ भए कृतबर्म्मा महारथ हृदिकके बरबीर । गिरत रेतस भरद्वाज सु द्रोणिकां धरि धार ॥ भयो तातैं पुत्र ताको द्रोण राखो नाम। भए गौतम बीर्यते सुत कन्यका अभिराम ॥ द्रोणपत्नी कन्यका सो पुत्र कृप बरबीर। अश्वत्थमा द्रोणको सुत भयो अति रणधीर ॥ धृष्टद्युम्न मखाग्नितैं भे द्रोणमारण हेत। द्रौपदी तेहि कुण्डत भई महा रूप निकेत ॥ सुबलके सुत शकुनि जाए भई कन्या जौन । नाम देवप्रकोपना धृतराष्ट्र भार्य्या तौन ॥ ब्यासतैं धृतराष्ट्र पाण्डु सु भए परम कुमार।बिचित्र बीर्यके क्षेत्रमे लहि परम धर्म्म उदार॥ पाण्डुके सुत पाँच जनमे धर्म्मधुर बलवान । भे युधिष्ठिर धर्म्मतैं गुण भरे धर्म्म समान ॥ बायुतैं भए भीम अर्जुन इन्द्रतैं अभिराम । नकुल अरु सहदेव जाए दस्रतैं अभिराम ॥ भए सुत धृतराष्ट्रके शत एक परम सुजान । महावीर बिषादकारण युद्ध कारण जान ॥ ज्येष्ठ दुर्य्योधन सु सबतैं भए कलिके रूप । रहे तिनमे महारथते कहत ग्यारह भूप ॥ करण दुःशासनो दुःसह चित्रसेन बिकर्ण बिबंसति दुर्म्मर्षणो अरु सत्यब्रत अरिदर्प ॥ पुरु मित्रवैश्यापुत्र हो सु युयुत्सु जो बलबान। कहे ग्यारह महारथ हे सुने जे मतिमान ॥ *********

॥*॥ जयकरीछन्द ॥*॥

अर्जुनतनय सुभद्रानन्द । भे अभिमन्यु पण्डुकुलचन्द ॥ पाण्डवपुत्र पांच बलवान । भए द्रौपदीते सुखदान। प्रतिविंध्य युधिष्टिरको सुत भयो। सुत सोम बृकोदरतैं गुणमयो ॥ अर्जुन सुत श्रुतिकीर्त्ति ललाम। नकुल सुता नीतू अभिराम ॥ सहदेव श्रुतसेन सुजान। भीम हिडम्बीतैं बलवान॥ भयो घटोत्कच पुत्र उदार। कर्ण शक्तिसौं जौन ममार ॥ रहो शिखण्डी द्रुपदकुमारि । लहि पुरुषत्व भयो धनुधारि ॥ तेहि पुरुषत्व आपनो दीन्ह। स्थूणयक्ष नारी तनु लीन्ह ॥ आए तेहि रण भूप अनेक। कहिवैं सकत न नाम बिबेक॥ कहे मुख्य जेहे बरबीर। जिन रण कियो प्रवृत्त

गंभीर ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ एते कहे मुख्य जे गन्य । कहे न रहे भूप जे अन्य ॥ सुनो चहत तिनकौं अनुरूप । भए जे महत महारथ भूप ॥ देव सदृश जनमे चिति आय । तिनको तुम सु कहौ समुझाय ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ देव रहस्य परम यह भूप । कहत बन्दि बिधि चरण अनूप ॥ परशुराम छिति एकबिस वार । बिना छत्रको करी उदार ॥ तब महेन्द्र पर्वतमे जाय ॥ करण लगे तप समता पाय ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

लोक सिगरो बिना छत्रीको भयो जब भूप । छत्रपती ऋषिनपैं तब गई दीन स्वरूप ॥ कहन लागी बिप्रवर अब कृपा कीजै तौन । होय छत्रीबंश फिरिकै नाश पावत जौन ॥ ऋतुस्नाता जानि तिनसो ऋषिन करि करि सङ्ग । दियो रेतस लहो तिन सब गर्भ तपको अङ्ग ॥ भए तातैं पुत्र कन्या शतसहस्रन तौन । महाबीर पराक्रमी अति बंशकर्ता जौन ॥ भए ते सब महाभूपति धर्मशील उदार । छत्रमय सब भई छोणी फेरि सागर वार ॥ आधि व्याधि बिमुक्त सिगरे सुजन सुन्दर सूर । ब्राह्मणादिक वर्ण सिगरे करे आनदपूर ॥ दण्ड्य ये तिनको दण्डदेत बिचारिकै श्रुतिधर्म । प्रणत जन ये तिन्हे पालत नीति रीति सुपर्म ॥ धर्ममय लखि देश बर्षत इन्द्र समय समेत । मरत हो नहि बाल कोउ पुण्य पावन हेत ॥ बिना जोबनप्राप्त नर नहि करत इस्त्री संग । जियत यातैं बऊत दिन नहि होत आयुष भंग ॥ करहि छत्री यज्ञ बऊबिधि दच्छिणा बऊ देहि । बिप्र बेद सदंग पढिकै पार तिनको लेहि ॥ बेदबिक्रय करत द्विज नहि पठत शूद्रन पास । करत हैं षटकर्म्म बिधिसौं सहित बेदाभ्यास ॥ गहत अपने हाथ हल नहि करत खेती बैश्य । धरत गोपर बोझ नहि लखि करत पालन कैश्य ॥ चरत जबलौं बत्स तृण नहि दुहत तबलौं गाय । तोलि बेचत बणिकसो नहि घाटि बाट चढाय ॥ लखत धर्म्महि करतहे नर कर्म्म पर्म्म ललाम । निरत अपने धर्म्ममे सब वर्ण हे मतिधाम ॥ धर्म्म ह्रास न होत कबऊँ सुनऊ भूपति भूरि । रही बसुधा अन्न धनमय परम प्राणिन्ह पूरि ॥ मनुज लोकहि देखि ऐसैं उदै कृतयुग पाय । असुर जनमे छत्र कुलमे देवहत ते आय ॥ स्वर्गतश्रै स्वर्यतैं न्है भ्रष्ट छिति पर आय । जन्म लहि दैवत्व चाहत मनुजतनको पाय ॥ असुर जनमे योनि जेहि जेहि सुनऊ अतिबल वान । महिष हय गज्ञ गऊ खर अरु ऊष्ट्रमे अतिमान ॥ भए जे महिपाल तेसब महा मदके धाम । सकी सहि नहि भार तिनको भई धरणी छाम ॥ देत चारिऊ वर्णकौं तेमहा पोडा घोर । छत्र कुलमे जन्मलै जे भए दनुज कठोर ॥ करत ह वनवास ऋषि जे करत धर्षन तास । पोडामाना महीराजन गई ब्रह्मा पास ॥ नहि धारा धरि सकै सब कूर्मादि धारक जौन ॥ भई भारा क्रान्त दैत्य सु दनुज बलभर तौन । गई पोडित सङ्ग ह ता भूमि बिधिके पास । लखो देव महर्षि सेबित पितामह सुखरास ॥ सोदर लहिशरण र्षि नीपद बन्दि भर बृतान्त । कहो सकल दिगीश सेबित पाय त्रिभूवन कान्त ॥ जानि लिन्हों प्रथम

बिधि सब भूमिको दुख जौंन। जगतकर्ता रहत तासौं छपो कारण कौन॥ कहो छितिसो पितामह तब कृपासागर बैंन। भूतपति उतपत्तिकारण प्रजापालक चैंन॥ब्रह्मोवाच॥ हे धरा मम पास आई चाहि कारज जौन। दियो आज्ञा अमरगणकहँ काज कीबे तौन॥ बैसम्पायनउवाच ॥ महीको कहि बिदा कीन्हों बचन यह देवेश। पितामह तब सुरनसौं इमि कियो परम निदेश॥ मनुज व्है धरि अंश अपनो लेऊ तुम अवतार। युद्ध करि सह सुरन्ह सुरपति हरऊ भूको भार॥ तथा सब गन्धर्व अप्सर सहित धरिकै अंश। जाय जनमऊ भूमिपैं बिधि कहे बचन प्रसंश॥ *◈*◈*◈

॥*॥ दोहा ॥*॥

ब्रह्मोवाच॥अपने अपने अंशते पृथक पृथक तुम जाय। लेऊ धरापर जन्म सब सुरन सहित सुरराय॥
बचन पितामहके सुने कहि तथास्तु सरबृन्द। करि बिचार अवतरनको छितिपर अंश सहेन्द्र॥
बिष्णुधाम बैकुण्ठकों तब चलि गए सुरेश। नारायण जगदीशको लीवे अंश निदेश॥
भूभरहर अवतार प्रभु लीजे कहो सुरेश। नारायण अवतरनकों कियो तथास्तु निदेश॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्व्वणि अंशावतरणे त्रयोविंशोध्यायः॥ २३ ॥ *◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*

॥*॥ सोरठा ॥*॥

हरिबेको भूभार करि सम्मत श्रीनाथसौं। इन्द्र अंश अवतार लीवेकौं सह सुरचले॥
दै सब सुरन्ह निदेश जन्म लेनकौं भूमिए। तजि बैकुण्ठ सुरेश फिरि आए सुरलोकको॥

॥*॥जयकरीछन्द॥*॥

तब सुर असुर बिनाश बिचार। करिकै लगे लेन अवतार॥ ब्रह्मर्षि राजऋषिनके वंश। जनमे सकल सुरनके अंश॥ दानव दैत्य सराक्षस दुष्ट। मारे सकल सुरन बल पुष्ट॥*॥ *॥ जनमेजयउवाच॥*॥ सुर दानव राक्षस गन्धर्व। सह अप्सरन मनुज जे सर्व॥तिनको जन्म सहित बिस्तार। सुनो चहत सो कहो उदार॥*॥ बैशम्पायनउवाच॥*॥ बन्दि स्वयम्भुव चरण उदार। कहत भूपसो सहबिस्तार॥ देवादिकको सम्भव नाश। कहत सुनऊ सो सब इतिहास॥ ब्रह्मपुत्र मानस षट जौंन। प्रथम भए जे कहियत तौंन॥ मरीचो अत्रि अङ्गिरस नाम। पुलस्त पुलह क्रतु तेजस धाम॥ मरीचि पुत्र कश्यप मतिमान। जातैं भई सृष्टि सुखदान॥ भई दक्ष कन्या दशतीन। तिनके सुनिए नाम प्रवीन॥ अदिति सदिति दनु काला फेरि। दनायु सिंहिका क्रोधा हेरि॥ प्राधा बिश्वा बिनता जौन। कपिला मुनि कद्रू है तौंन॥ए कश्यपकी पत्नी दिष्टि। सकल भांति ए जाई सृष्टि॥ अदिति पुत्र द्वादश आदित्य। भए भुवन पति भासक नित्य॥ धाता [illegible]

मित्र अर्य्यमा शक्र । वरुण अंश भग होत न वक्र ॥ विवस्वान पूषा सविता वर । त्वष्टा विष्णु कहत
जेहि कविनर ॥ अवरज विष्णु महत गुणधाम । त्रिभुवन पालक परम ललाम ॥ दितिके एक
पुत्र बलवान । नाम हिरण्यकशिपु अतिमान ॥ ताके भए सु पांच कुमार । प्रल्हाद प्रथम संल्हाद
उदार ॥ सिवि अनुल्हाद सुवास्कल जाँन । त्रय प्रल्हाद तनय भे तीँन ॥ बिरोचन कुम्भ निकुम्भ
सुधीर । भए विरोचन सुत बलि वीर ॥ बलिसुतबान भयो शिव भक्त । महाकाल जो सुनियत
व्यक्त ॥ * ॥ इतिर्दितिबंश ॥ * ॥ दनुके चालिस भए कुमार । तिनके वंश अनन्त उदार ॥ * ॥
तेषांनाम ॥ * ॥ विप्रचित्ति सम्बर बलवान । नमुचि पुलोमा असिलोमान ॥ केशी दुर्जय शङ्कु
अमान । अयःशिर और अश्वशिर जान ॥ गगन मूर्द्धा अरु स्वर्भानु । अश्व अश्वपति अर्जक मानु ॥
अश्वग्रीव बृषपर्व्वा जान । सूक्ष्म तुहुण्ड महोदर जाँन ॥ एकपाद एकचक्र अमान । निचन्द्र विरू
पाक्षौ बलवान ॥ निकुम्भ कुपट कपट अरु सरभ । सूर्य्य चन्द्र नामक अरु सलभ ॥ एते दनुसुत भे
विख्यात । औरन कहे जे हैं अज्ञात ॥ दनुसुत भे दश करता वंश । तिनके कहियतु नाम प्रसंश ॥
एकाक्ष मृतप प्रलम्ब सुबीर । बातापी अरु नरक गम्भीर ॥ शत्रुतपन शठ और बविष्ठ । बनायु
दीर्घजिव्हा सु अनिष्ठ ॥ तिनके पुत्र सुपौत्र अनन्त । भे दनुकुलसे सकल असन्त ॥ चारि सिंहिका
जये कुमार । राहु सुचन्द्र चन्द्रहरतार ॥ चन्द्र प्रमर्दन चौथो वीर । सूर्य्य चन्द्र अरि राहु गंभीर
क्रोधातेँ भो वंश अनन्त ॥ कहत क्रोध बस तिनकों सन्त । भे दनायु सुत चारि सुधीर ॥ विक्षर वृत्र
सु अरु बलबीर ॥ भे कालाके पुत्र महान । काल समान महाबलबान ॥ * ॥ नाम ॥ * ॥
विनाशन क्रोध क्रोधहंतार । क्रोधशत्रु ए चारि उदार ॥ असुर पुरोहित शुक्र सुजान । उशना
पुत्र पांच मतिमान ॥ त्वष्टा अधर अत्रि द्वयअन्य । ब्रह्मलोक गत भए सुधन्य ॥ कहो सुरासुर
वंशोत्पत्य । सुनो जो हम मुनिवरसों सत्य ॥ इनके पुत्र सुपौत्र अनन्त । भूप कवन कहि पावत
अन्त ॥ तार्क्ष्य अरिष्टनेमि सुखदान । अरुण सु आरुणि गरुड महान ॥ अरुणि भए षट विनता
नन्द । सुनहु भूपमणि कुरुकुलचन्द ॥ शेष अनन्त सु वासुकि नाग । तक्षक कूर्म कुलिक बडभाग ॥
कद्रू तनय असंख्य अनन्त । कहे ख्यात जे हैं क्षितिकान्त ॥ * ॥ मुनेः पुत्रः ॥ * ॥ भीमसेन सूपर्ण
ललाम । उग्रसेन बरुणौ अभिराम ॥ गोपति अरु धृतराष्ट्र सुजान । सूर्यवर्चसे सप्तम जान ॥ अर्क
पर्ण अरु प्रयुत सुचारु । सत्यवाक चितमे निरधारु ॥ भीम चित्ररथ अरु परजन्य । शालिशिरा
कलि नारद धन्य ॥ सोरह भए देव गन्धर्व । ए मुनि जाए सुन्दर सर्व ॥ * ॥ प्रधापुत्री ॥ * ॥
अनवद्या मनुवंशा चारु । असुरा मार्गणप्रिया उदारु ॥ अनूपा शुभगा भाषी सात । प्रधा सुता जाई
विख्यात ॥ * ॥ प्रधापुत्रा ॥ * ॥ सिद्ध पूर्ण बर्ही पूर्णायु । ब्रह्मचार रतिगुण सुखदायु ॥ सुपर्ण

०प० सु बिश्वाबसु अभिराम। भानु सुचन्द्र दशम गुणधाम ॥ एऊ कहे देव गन्धर्ब। प्रधा पुत्र कश्यप सुत सर्ब ॥ अब अप्सर सबंश अभिराम। कहत प्रधातेँ भयो ललाम ॥ *❦❦❦*❦❦❦❦*

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

अलंबुषा अरु मिस्रकेश बिद्युत्पराणा आस। तिलोत्तमा अरु कहु अरुणा रक्षिता अभिराम ॥ मनोरमा सुरजा सुरभा केशिनी छबिधाम। असुरजा सु सुबाऊ कहिए सुप्रिया बरबाम ॥ कहो ए अप्सरा तेरह प्रधा जाई सर्ब। अतिबाऊ हाहा हूहू तुंबुरु एऊ सुर गन्धर्ब ॥ अमृत ब्राह्मण गो अरु गन्धर्ब अप्सर सरस। भए कपिलातेँ सु सिगरे तनय कश्यप दरस ॥ भुजग रुद्र सुपर्ण ब्राह्मण महत हैँ गो जौन। कह्यो तिनको बंश कीर्तन करत अतिसुख तौन ॥ पुण्य धन आयुष्यकरता बंशकीर्त्तन पर्ब। पापहा संतापहा यह महत दायक शर्ब ॥ सहित श्रद्धा सुनतहै जो अरु सुनावत ताहि। चारि फलकोँ बंश कीर्तन देत तिनका चाहि ॥ * ॥ बैसंपायनउवाच ॥ * ॥ कहे ब्रह्माके सुमानस पुत्र षट अभिराम। भए शिबके पुत्र ग्यारह महातेजस धाम ॥ मृगव्याध सुसर्प निऋति अजैकपाद अमन्द। अहिर्बुध्न सु अरु पिनाकी दहन आनदकन्द ॥ स्थानु अन्धक अरु कपाली कहत भग अभिराम। रुद्रहैँ एई एकादश तरुण तेजसधाम ॥ तीनिसुत अंगिरस ऋषिके महत तिनके रूप। जीव अरु उत्तथ्य अरु संबर्त्त सुनिए भूप ॥ बऊत सुतभे अत्रिके बर बेदबिद्या मान। पुलस्तके सुत यक्ष राक्षस कीश किन्नर वान ॥ पुलहके किंपुरुष सलभा भए सिंह महान। बाघ अरु बृक भए सिगरे सुनऊ भूप सुजान ॥ भए क्रतुके पुत्र क्रतुसम रहत रबि सह स्वच्छ। अंगुष्ठ दक्षिणतेँ सु बिधिके भे प्रजापति दक्ष ॥ दक्षभार्या बाम अंगुठातेँ भई अभिराम। पञ्चास ताके भई कन्या भरी रूप ललाम ॥ दक्ष लालन करत कन्या पाय पुत्राभाव। दई दश ते धर्म्मराजहि परम पूरे चाव ॥ बीशसात सो दई शशिकोँ कश्यपहि दश तीन। ब्याहि बिधिवत कहत तिनके नाम सुनऊ प्रबीन ॥ कीर्त्ति लक्ष्मी धृति सुमेधा पुष्टि श्रद्धा चाहि। क्रिया लज्जा बुद्धि मति अरु दई धर्म्महि ब्याहि ॥ दई शशिकोँ सप्तविंशति बिदित तिनके नाम। काल क्रमतेँ फिरहि निति नक्षत्रमे अभिराम ॥ भए बसुमे धर्मतेँ सुत आठ बसु बररूप। नाम। कहै धर ध्रुव सोम अह पुनि अनिल अनल अनूप ॥ प्रत्यूष और प्रभास कहिए आठ बसु अभिराम। दक्ष बसु कन्यका ए भए तातेँ आम ॥ नाम इनको भयो बसु यह कथा अन्त ललाम। भयो धूम्राके सुधर सुत धर्मतेँ अतिकाम ॥ बसुहिके है नाम ए धूम्रादि जे है सर्ब। कल्पबारे भेदतेँ बर कहत प्रज्ञ अखर्ब ॥ सुमनस्विनीमे सोम होतो भयो ज्योतिस्वरूप। स्वसामे भो स्वसन सुत भो रतामे अहभूप ॥ शांडिलीमे भो ऊताशन पुत्र तेजस रास। भे प्रभाता पुत्रहै प्रत्यूष और प्रभास ॥ भए धरसुत द्रविण अरु ऊतहव्यबह अभिराम। भयो ध्रुवसुत काल प्रभु जनहरण जाको काम ॥ भयो

बर्चस सोमको सुत परम जोति स्वरूप । शिशिर प्राण मनोहरामे तिमि हिरमण अनूप ॥ भए अहसुत ज्योति सम अरु शांत मुनि सुखदान । स्वामिकार्त्तिक अग्निके सुत भए तेजस मान ॥ शाख औरु बिशाख ताके भए अवरजधीर । अनिलके सुत मनोजव अज्ञातगति बरबीर ॥ शिवा भार्यामे भए ए भूप परम सुजान । प्रत्यूषके सुत भए देवल परम मुनि यजमान ॥ भए देवलके सु द्वै सुत महातपके धाम । औ सुता एक बृहस्पतिकी प्रभाभार्या आम ॥ चारु पुत्र प्रभास बसुके बिश्वकर्म्मा देव । भए जे सुर शिल्पकारक करत नीकी सेव ॥ रचे जे सु बिमान सिगरे परम दिव्य स्वरूप । बिश्वकर्म्मा देव बढई भए सुनिए भूप ॥ भए बिधिके स्तन दक्षिण तेँ सहित नररूप । धर्म्मराज सुधर्म्मपालक परम पावन भूप ॥ भए ताके तीनि सुत बर काम सम अरुहर्ष । भई रति बरकाम भार्या रूपमय चितकर्ष ॥ प्राप्ति समकी बाम नन्दा लही हर्ष समान । मरीचिके सुत भए कश्यप सुनऊ भूप सुजान ॥ भए कश्यपतेँ सुरासुर सृष्टिकारण तौन । भई संज्ञा भानुभार्या भई बडबा जौन ॥ भए ताके दस नन्दन द्विधा धारेँ रूप । अदितिके सुत भए बारह विष्णु अवरज भूप ॥ कहे तेँतिस देवता ए भए पहिले जौन । देवगण हम कहत अब हैँ सुनऊ तु चिति रौन ॥ करैँ कीर्त्तन सुने तिनको जात अघ करि गौन ॥ रुद्र साध्य सु मरुत वसुगण और भार्गव जौन ॥ *◯*

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बिश्वेदेवा जे सुखदान । बैनतेय जे कहे महान ॥ बृहस्पति आश्विन गुह्यक जौन । ओषधि दिव्य कहे पशु तौन ॥ ए सब कहे देवगण भूप । सुनत होत नर दिव्य स्वरूप ॥ भृगु ब्रह्माके हृदय सरोज । तातेँ प्रगट भए तप ओज ॥ भृगुको सुत कवि ऋषि भो तौन । शुक्र तास सुत ग्रह ह्वै जौन ॥ जो त्रिभुवनके रक्षण हेत । बर्षि अवर्षि अभय भय देत ॥ योगसिद्ध ह्वै तन धरि जौन । सुर असुरनको भो गुरु तौन ॥ लिख्योबेदमे यह बृत्तान्त । श्रीजनमेजय बरचिति कान्त ॥ भृगुसुत और एक अभिराम । च्यवन कहो जो प्रथम ललाम ॥ आरुषी सुमनु कन्या जौन । भई च्यवनकी पत्नी तौन ॥ और्व भए ताके सुत आम । उरू भे द्विजनमे तपधाम ॥ भए और्व सुत सुमतिऋचीक भे जमदग्नि तास सुत नीक ॥ चारि भए जमदग्नि कुमार । अवरज भए जे राम उदार ॥ अस्त्र शस्त्रवेत्ता रणधीर । क्षत्रिणके अन्तक बरबीर ॥ रहे और्वके शत सुत अन्य । तिनके भए अपत्य अगन्य ॥ बिधि हिय सम्भव द्वै सुत जौन । मनुके संग रहत हैँ तौन ॥ धाता और बिधाता नाम । तिन दोउनके बर मतिधाम ॥ स्वसा तास लक्ष्मी अभिराम । अमल कमलमे जाको धाम ॥ ताके मानस पुत्र अनन्त । ते नभचारी रहत समन्त ॥ बरुणभार्य्या जेष्ठा जौन । सुत अरु कन्या जाई तौन ॥ बल सुत कन्या सुरा अमन्द । जाहि लखत सुर लहत अनन्द ॥ भई क्षुधार्त प्रजा तब जान । प्रबल अबलकहँ भक्षत तौन ॥ भो अधर्म्म ताते उत्पन्न । प्रजा नाशकारण सम्पन्न ॥

आ०प० निकृति भार्य्या लही अधर्म्म। तिहि राक्षस त्रय जने अपर्म्म॥ मृत्यु महाभय भय बलवान। करत जीवजन नाश अमान॥ काकी श्येनी भाषी नाम। धृतराष्ट्री अरु शुकी ललाम॥ दक्षसुता ताम्राते पांच। कन्या भई सुनऊ नृप सांच॥ जई उलूकन्ह काकी जाँन। श्येन जई श्येनीही तीन॥ भासी भास स्वद्दगण सर्व। धृतराष्ट्री जनमी हंस अखर्व॥ चक्रवाक ताहीके चारु। भए शुकी सुत शुक परिवारु॥ दक्षसुता क्रोधातें भई। कन्या नव नव गुण सों भई॥ मृगी और मृगमन्दा बाम। हरी सु भद्रमना अभिराम॥ मातंगी सार्दूली अन्य। श्वेता और सुरभि अति धन्य॥ भरो सकल गुण सुरसा तीन। क्रोधाकी नव कन्या जाँन॥ मृगीपुत्र मृग ऋक्ष उदार। मृग दन्दाके सृमर कुमार॥ भद्रमनाको पुत्र गजेन्द्र। ऐरावत जेहि चढ़त सुरेन्द्र॥ हरीपुत्र हय बानर जाँन। गोला-ङ्गूल श्याम मुख तीन॥सिंह व्याघ्र द्वीपी बलवान। सार्दूलीके पुत्र महान॥मातंगी के भे मातंग। श्वेताके दिग्गज बर अंग॥ सुरभी जाई कन्या चारी। रोहिणी अरु गन्धर्वा नारी॥ बिमला अनला कहे सुजान। तिनके सुनऊ बंश सुखदान॥ भए रोहिणीके वृष पूत। गन्धर्वीके बाजि अकूत॥ बिमला पुत्र पिण्ड फलसात। भए वृक्ष सुनिए अवदात॥ खजूर सुपारी नरियर ताल। खर्जूरिका ताली हिन्ताल॥ अनला सुता शुकी अभिराम। सुरसाके भे कङ्क ललाम॥ अरुण भार्य्या श्येनी जौन। सम्पाति जटायुष जनमी तौन॥ सुरसाके फिरि जनमे नाग। पन्नग कद्रू पुत्र तमाग॥ गरुड़ अरुण बिनता सुत जाँन। पहिले कहे सुने नृप तौन॥ यहि बिधि सकल भूत उत्पत्य। कहे सूत हम सो सब सत्य॥ सुनत होत जाके नर मुक्त। परम पुण्य द्वैपायन सुक्त॥ *

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृत भारतदर्पणे आदिपर्वणि त्रिंशाधरके एकत्रिंशोऽध्यायः॥ २९॥ * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ रूपाकरछन्द ॥ * ॥

॥ जनमेजयउवाच ॥ यह बंश कहो सुर सम्भव जो। मुनिराय सुनो क्रमसों सब सो॥सुर औ असुरादिनके जनमे। कहिए जिमि भे सु मनुष्यन मे॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ नरनाथ भए [illegible] नन्दन जे। पहिले कहिए सुनिए सब से॥ विप्रचित्ति महासुर तौन सुनो। मगधेश भयो [illegible] सुनो॥दितिराज हिरण्यकशीपु जयो। शिशुपाल महान महीप भयो॥सुनिए सु संल्हाद [illegible] वह शल्य भयो प्रतिमद्र कहा॥ अनुल्हाद सु दैत्य महान सुनो। धृष्टकेतु भयो [illegible] बिबिबास सु दैत्य रहो जो कहो। श्रुम नाम महीप भयो सु अहो॥ *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

[illegible] दैत्य सो भयदत्त भो बलवान। अयःशिरा अरु अश्वशिरा अरु अयःशङ्कु अमान

गगनमूर्द्धा वेगवानी पांच असुर अनूप । भए कैकयदेशने ए महा योधा भूप ॥ केतुमान महान योधा हतो दानव जान। अति प्रतापी महाबलको भाँन निभय तान ॥ भयो अमितौजा महीपति दैत्य अरु स्वभानु। उग्रसेन नरेश भो अरु अश्व दानव मानु॥ अशोक भूप अनूप भो अरु अश्वपति असरारि। अति पराक्रमवान भो हार्दिक्य प्रतिपच्छारि ॥ दीर्घप्रज्ञ नरेश भो वृषपर्व दानव जाँन। अजक असुर महान जनमो शाल्व भूपति तौन ॥ अश्वग्रीवा दैत्य भो हे रोचमान नरेश। सूर्य्य दानव वृहद्रथ भो भूमिपाल अशेष॥ भयो सेनाविन्दु भूप तुहुण्ड दिति सुत तान। नमजित भूपाल भो हो इषुप दानव जान ॥एकचक्र सु दैत्य भो प्रतिबिध्य नामक भूप। बिरूपाच्छ सु दैत्य भो नृप चित्रधर्मा रूप ॥ हर असुर तौन सुबाहुराजा भयो अतिबलवान। सुहर असुर महान भो बाल्हीक भूप सुजान॥ निचन्द्र नामक दैत्य भो नृप मुञ्जकेश प्रसिद्ध । निकुम्भ नामक दैत्य भो देवाधिपो नृप ऋद्ध॥ भयो पौरव नाम राजा सरभ दितिसुत जाँन। कुपथ दैत्य सुपार्श्व राजा भयो सुनि श्री तौन ॥ पवतेय महीप भो जो क्रथक दैत्य महान। सलभ दितिसुत भूप भो प्रल्हाद नृपति सुजान॥ चन्द्र नामक दैत्य भो नृप चन्द्रवर्मा वीर॥ अर्क नामक दैत्य भो राजर्षि ऋषिक सुधीर।। पश्चिमानूपक महीपति भयो मृतप सुरारि । गरिष्टनामक असुरसो द्रुमसेन भूपति जान॥ बिश्वनामक भूप भो सु मयूर असुर अमान। भो सुपर्ण दैत्यराजा कालकीर्त्ति महान॥ चन्द्रहन्ता असुर जो सो सुनक भूप प्रवीन। चन्द्र नामक दैत्य भो नृप जानकी छितिईन॥ भयो काशीराज दानव दीर्घ जिव्हा जाँन। राहु ग्रह जो सिंहकासुत भयो क्राथ नृप तौन॥ भयो सो वसुमित्र भूपति दनुज बिक्षर वीर। दैत्य बिक्षर भ्रात जो सो पांड्य नृप भो धीर॥ बलीनर जो दैत्यहो सो पौंड्र मत्स्यक भूप। वृत्र असुर अमान भो मणिमान नृपति अनूप॥ क्रोधहन्ता असुर भो नृप दण्डनाम महान । क्रोधवर्द्धन असुर भो नृप दण्डधार अमान॥ कालेयके जे पुत्रहे वसु महाबल असमान। मगधमे ते आय जनमे सुने तास बिधान॥ बडे सबसौं जयत्सेनसौं भए भूप महान॥ दूसरे बलवान भो अपराजितो सुख दान॥ महातेजसु तीसरो सो भो निषाद नरेश। रहो जान चतुर्थ सो भो श्रेणिमान जनेश॥ रहो पञ्चम जाँन तिनमे भो महौजा वीर। भयो षष्ठम राज ऋषिसु अभीरु नामक धीर ॥ समुद्रसेन महीपतिनमे भयो सप्तम जाँन। वृहत नामक भूप हो कालेय अष्टम तौन॥पार्बतीय महीप भो सो कुक्षि दैत्य अमान। क्रथन नामक दैत्य भो सूर्य्याक्ष भूप महान॥ सूर्य्य नामक दैत्य भो नृप दरदपति बाल्हीक। भए क्रोधाके तनय बहु नाम तिनको ठीक॥ क्रोधवस गण कहोहो जो सुनो नृप मतिधाम। भए हे ते भूप छितिपर कहत तिनके नाम

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

मद्रक कणवेष्ट सिद्धार्थ। कीटक अरु सुर बीर महार्थ ॥ महाबीर बाल्हीक सुबाऊ। क्राथ बिचित्र अरु सुरथ हि चाऊ ॥ बील चीरवासा कौरव्य। दन्तबक्र दुजय अतिभव्य ॥ रुक्मी जनमेजय आषाढ। बायुवेग एकलव्य सचाढ ॥ सुमित्र सुबाटधान सुखदान। गोमुख अरु कारुष जान॥ श्रुतायु क्षेमधूर्त्ति अभिराम। उद्दह दृहत्सेन बलधाम॥ क्षेमोग्रतीर्थ अरु कुहर नरेश। अरु कलिङ्ग पति बली बिशेष॥ईश्वर भूपनके अब तंश।भए क्रोध बस गणके बंश॥असुर सुकालनेमि हो ज्ञान। उग्रसेनिसुत कंश सु तौंन॥ देवक नाम भूप अभिराम। भो गन्धर्बराज छबिधाम॥ सुर गुरु लिये अंश अवतार। द्रोण अयोनिज बीर उदार॥ महादेव अन्तक अरु काम। क्रोध अंश मिलि चारि ललाम॥ अस्वत्थामा तातैं बीर। पैदा भयो महारण धीर ॥ बसु बसु गङ्गातनय उदार। सान्तन नृपतैं भए कुमार॥ तिनमे अवरज भीषम धीर। जीतो परशुराम जिन बीर॥ रुद्रगणांशज कृप अवतार। द्वापर युग भो शकुनि उदार॥ मरुतअंश भव सात्यकि जौंन। मरुत अंशतैं द्रुपदो तौंन॥ मरुत अंशतैं भो कृतवर्म। बिराट मरुतगण अंशज पर्म॥ अरिष्टा पुत्र हंस हो जान। बर गन्धर्बराज बल भौंन॥ धृतराष्ट्रसु भो तौंन उदार। हंस अनुज भो पाण्डु उदार॥ धर्म अंशत बिदुर सुजान। दुर्योधन कलिअंश अमान ॥ रावनबंशज रहे उदार। ते सब भे धृतराष्ट्र कुमार॥ बैश्या पुत्र युयुत्सु उदार। एक अधिक शत भए कुमार॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ ज्येष्ट कनिष्ट नाम सह जौंन। वैशम्पायन कहि ए तौंन॥ *~*~*~*~*~*~*~

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

दुर्योधन युयुत्सु दुःशासनः दुःसहवीर। दुःशलसु दुर्मुखऔ बिविंशति हो बिकर्ण रणधीर॥ जलसन्ध सुलोचनबिन्दु अरु अनुबिन्दु औदुर्धर्ष। सुबाऊ दुःप्रधर्षनो दुर्मर्षनो युतहर्ष॥ दुर्मुखसु अरु दुष्कर्ण कर्णौ चित्र अरु उपचित्र। चित्राक्ष चित्रांगद सुदुर्मद दुःप्रहर्ष पवित्र॥ बिबित्सु बिकट सम ऊर्णनाभ सुपद्मनाभ सुठांन। नन्द उपनन्दक चमुपति अरु सुषेन सुजान॥ कुण्डोदरो सुमहोदरो अरु चित्रबाऊ महान। चित्रबर्मा अरु सुबर्मा दुर्बिरोचन जान॥ अयोबाऊ सु महाबाऊ सुचित्रचाप कुमार। अरु सु कुण्डल भीमबेग सु भीमबल रणकार॥ अरु बलाकी सुनेभूपति भीमबिक्रम धीर। उग्रायुधसु अरु भीमशर कनकायु दृढायुध बीर॥ दृढबर्म अरु दृढ क्षत्र आनो सोमकीर्ति महान। अनूदर अरु जरासन्धो अरु दृढसन्ध अमान॥ सत्यसन्ध सहस्रवाक सुउग्रश्रव उग्रसेन। क्षेममूर्ति सुकहो अरु अपराजितो जयसेन॥ पंडितक बिशालाक्ष दुराधन कहतह दृढहस्त। सुहस्त जानऊ वातबेग सुवर्चसो रणमस्त॥ *~*~*~*~*~

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

आदित्यकेतु बव्हाषी जौन । नागदत्त अनुपाइन तान ॥ कवची और णिषंगी वीर । दंडीदंड धरो रणधीर ॥ धनुग्रह उग्र भीमरथ तौन । वीरसु वीरवाऊ हो जौन ॥ अलोलुप अभय रौद्र कर्मान । दृढरथ अनाधृष्ट बलबान ॥ बिरावी दीर्घलोचना वीर । दीर्घबाऊ अतिबाऊ गम्भीर ॥ बूढोरु सु कनकांगद जौन । कुण्डज चित्रक कहिए तौन॥ए शत पुत्र क्रमहितें भूप। जेष्ठ कनिष्ठ कहे अनुरूप ॥ दुःसाला कन्या अभिराम। सौतें अधिक कही गुणधाम॥ बैश्यापुत्रयुयुत्सु अमन्द । सौत अधिक सुनऊ कुरुचन्द ॥ सब अतिरथी सकल रणधीर । वेद सुवेत्ता सिगरे बीर ॥ सबको व्याह भये अनुरूप । दुःसाला जो सुता अनूप ॥ नृप धृतराष्ट सुताकौं चाहि । सिन्धुराजकौं दई बिबाहि ॥ सोई जयद्रथ सुनऊ सुजान । हनो जाहि पारथ बलवान ॥ धर्मराजको अंश सुपर्म । भयो युधिष्ठिर भूप सधर्म ॥ भीम बायुअंशज बलबान । इंद्र अंश अर्जुन सुखदान ॥ दस्रांशज सु नकुल सहदेव । महावीर जानत सब भेव ॥ बर्चस नाम सोमसुत जौन । नृप अभिमन्यु बीर भो तौन ॥ जासु अवतरणमैं इमि चन्द । कहे सुरणसा बचन अमन्द ॥ प्राणसमान पुत्र प्रिय जान । सोहे दियो अंश मम तौन ॥ सुर कारजके हेतु अवस्य । तात बिदाकरत हम तस्य ॥ असुरणको बध करि बलवान। शीघ्र आइहै सो स्वस्थान ॥ इंद्र अंश नर ह्वै जौन । अर्जुन नाम प्रथासुत तौन॥ ताको पुत्र होयगो जाय। षोडस वर्ष धारि नर काय॥वर्ष सोरहे ह्वैहै युद्ध।तहां महारथ करि रण उद्ध ॥ बिना क्रष्ण सारथि सुतशक्र । महाव्यूह भेदन करि चक्र ॥ बिमुख करैगो क्षत्र समूह। जीति महारथ सब मथि व्यूह ॥ चतूर्थांश सेना हनि तौन । देहै पठै प्रेतपुर जौन ॥ महारथी तब सब मिलि आय । करिहैं युद्ध महाछलछाय ॥ संध्या समय सुवर्चस पाय । तब मो निकट रहैगो आय ॥ एक बंश करबीर कुमार । करि पतीमैंह गर्भी धार ॥ नष्टहोत कुरुबंश प्रसंश। धरि है तौन भूप अवतंस ॥ यह सुनि सोम बचन सुरसाथ । सबहिन पूजो तारा नाथ ॥ भयो पितामह तब इमि भूप। भयो अग्निको अंश अनूप ॥ धृष्ट द्युम्न महारथ तौन । राक्षस भयो सिखंडी जौन ॥ भए द्रौपदीसुत जे पांच। बिश्वेदेव अंश तें सांच ॥ प्रतिबिंध्य सोम श्रुतकीर्त्ति सुआस । शतानीक श्रुतसेन ललास ॥ युधिष्ठिरादिकके ए नन्द । भए पाच मनु पूरण चन्द॥ बसुदेव पिता यदुकुल बर सूर । पृथासुता ताको छबिपूर ॥ पितास्वसासुतको सुत जौन । कुन्तिभोज बर बलको भौन दनकहोहो प्रथम अपत्य। ताहि सुरसो करिबैं सत्य॥ चार सुता पहिले भी जौन । कुन्तिभोजको दीन्ही तौन॥सो बिन पुत्र सुता सो पाय। पुत्रभ्भ वराखी सुखदाय ॥ ब्राह्मण अतिथि सु पूजनधर्म। सौंपो तौन सुताकँह पर्म ॥ दुर्बासा ऋषि उग्र महान । आए ज्यौं ग्रीषमको भान ॥ सेवा तास सु बिधि संपन्न । करि मुनि बरकौं कियो प्रसन्न ॥ तब ऋषि दयो मंत्र अति योग्य । कहि यह

५० परम प्रयोग मनोज्ञ ।। पढि यह मंत्र बोलिहो जौन । तो ढिग देव आइहै तौन ॥ तास तास सुत पाय प्रशाद। लहिहो पुत्र वीर अविशाद ॥ यह सुनि मंत्र सो लयो उदार । कौतुक धरि चित किओ बिचार ।।पढि सो मंत्र बोलायो सूर । आए द्युमणि प्रभाके पूर ॥ धरो गर्भ तातैं सुखदान। जनमो कर्णवीर बलवान ॥ कुण्डल कवच सहित सुखदाय । भ्राता पिता बन्धु भयछाय ।। मञ्जूषा मे धरि सुत जौन । दियो बहाय नदीमे तौन ॥ राधा भर्त्ता सूत उदार । तेहि पायो सो परम कुमार॥ राधाकौं सौंप्यो सो ल्याय । नाम धस्रो वसुषेण सचाय ॥ भयो शस्त्रवेत्ता बलवान। पठि वेदांग सो भयो सुजान॥ पूजा समै जो मांगत जौन । देव सुषेन ताहि सो तौन ॥तव सुरेंद्र व्राह्मण बनि धाय। कुण्डल कवच सु मांगे जाय॥कुण्डल कवच काटिके पर्म । दियो देहतैं जानि स्वधर्म॥ अद्भुत कर्म देखि सुरत्रान । दियो शक्ति जो मृत्युसमान ॥ देवासुर मानुष गन्धर्व । राक्षस किन्नर सर्प अखर्व ।। जापैं शक्ति छोडिहो वीर । सो न एक बचिहैं रणधीर ॥ हो वसुषेण नाम अरिदर्ण।फेरि भयो बैकर्तन कर्ण॥कुण्डल कवच दियो द्रमि बीर। लहो नाम बैकर्त्तन धीर॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बीर सुत कुलमे बढो भो दुर्योधन मित्र । शचीव सुर संग्राममे कर्त्ता युद्ध विचित्र ॥
शुद्ध सनातन व्रह्म जो देवदेव गुणधाम । तास अंश वसुदेवसुत भयोपरम अभिराम ॥
भयो शेषके अंशते यदुवंशी बलवीर । सनतकुमारसु अंशतैं भे प्रद्युम्न गम्भीर ॥
भे ऐसे मनुजेंद्र बहु लहि देवांश उदार । परम वंश वसुदेवके महत वंश कर्त्तार ॥
कहो जो गण अप्सरन को सुरपति शासन पाय । अपने अपने अंशते जनमी छिति पर आय॥
प्रिय भई सोरह सहस श्रीयदुपति पति पाय। भरी रूप गुण गण सकल पुण्य पुञ्ज सुखदाय ॥
श्रीकोभाग सो रुक्मिनी भीष्मक कुलमे आय। जन्म लियो श्रीकृष्णकी सो महिषी सुखदाय ॥
भई द्रुपदके यज्ञके अग्निकूण्डतैं जान । इन्द्राणीके अंशते परम द्रौपदी तौन ।
वडी नाति छोटी लसति कमल गन्धिनी बाम । श्यामा सरसिज लोचना रूप रमाकी धाम ॥
सुश्रोणी मेचक चिकुर जाके लसत उदार । करति प्रसंशित पण्डु कुल सकल लक्षणा गार ॥
सिद्धि और धृति अंशसैं कुन्ती माद्री जान। मतितैं गान्धारी भई सुवल सुता हो तौन ॥
देवासुर गन्धर्वको सह अप्सरन्ह ललाम। कहो अंश अवतरण यह सह राक्षस अभिराम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

धन यश पुत्र सुजान बिजय अंश अवतरण यह। सुनत जो श्रद्धावान सो पावत भूपालमणि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणेआदिपर्वणि त्रिंशोऽध्यायः अंशावतरणं समाप्त॥ ३०॥ * * * * * * *

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह सु अंशअवतार हे ब्राह्मण तुमसां सुनो । जे सुर असुर उदार जौन भांति जेहां भए ॥
सह बिस्तर कुरुवंश तुमसो अब चाहत सुनो । कहिए सादि प्रसंश मुनिगण मण्डल मध्यमे ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ वैसंपायनउवाच ॥ भयो कौरववंशमे दुष्यन्त भूप महान । करी सागर अन्तला बश भूमि सब सुखदानि ॥ वंश सङ्कर होत नहि करत कोऊ पाप । सबिधि पालत प्रजा सिगरी भरो परम प्रताप ॥ धमरत धर्मार्थ पावत प्रजा जेहिके राज । चैार भयको क्षुधा भयको मिटो हेतु दराज ॥ वर्ण रमत स्वधर्ममे सब बिना भय संचार । समय लहि परजन्य वर्षत सरस सस्य उदार ॥ भई रत्न समृद्ध भू अति मुदित जनगण सर्व । भए विप्र स्वधर्मरत नहि अनृत बोलत खर्व ॥ भूप वज्र समान तनको युवा अति मतिमान । दोर्दण्ड पर धरि गिरि सकानन फिरत जो बलवान ॥ चतुर्बिधिको गदा युद्ध समेत शस्त्र अनेक । भयो ताको परमबेत्ता वीर भूपति एक ॥ दूरस्थ अरिपै गदाकेरो छोडिबो प्रक्षेप । अरु समोपस्थहि कोटि करिकै हनन सो विक्षेप ॥ वक्र अरिनमाहि घुमाय कै चक्र दिशि गहाहि सक्रोध । जो हनन ताकोँ परिक्षेप सु कहत परम सबोध ॥ अरु हनन जौन गदाग्रसों है हांकि हूल चलाय । बिधि अभिक्षेप सु कहत ताकोँ बुधनके समुदाय ॥ गज हयरोहनमे चतुर अति बिष्णुसम बलवान । भयो भूप दुष्यन्त तेजस भरो भानुसमान । अक्षोभ्य सिन्धुसमान भोसु सहिष्णु धरणीरूप ॥ जनमेजयउवाच ॥ सु शकुन्तला अरु भरतसंभव कहहु सुमुनि अनूप ॥ सु सकुन्तलाको लही जिमि दुष्यन्त भूप महान । सुनो चाहत तौन तुमसोँ कहहु सुमुनि सुजान ॥ ॥ * ॥ वैसंपायनउवाच ॥ * ॥ साजिकै चतुरङ्ग सेना भूप सो बरबीर । चलो मृगया हेतु बनको एकदिन रणधीर ॥ नागहंहित स्यन्दन सुधुनि अश्वहेषित घोर । सुभट नादनसोँ भरो नभ भूमि चारो ओर ॥ चढि प्रसादन लखैं पुरतिय भूप शक्रसमान । सुमन वर्षहि भूप ऊपर भरि मोद महान ॥ करहि नाना भाँतिसोँ ते परम मंगल गान । चले कढि सह वर्ण चारो कहत जयति सुजान ॥ जायकै कछु हरि पैारनकोँ कह्यो इमि भूप । जाऊ निज निज धामकोँ तुम धारि मोद अनूप ॥ सुपर्णमे चढि भूप स्यन्दन भयो परिसर पार । बजी दुन्दुभि पटह भेरी भरो शब्द उदार ॥ लखो नन्दन सदृश बनघन गए ताके पास । घेरि लागे करण मृगया भूप आनदरास ॥ सिंह व्याघ्र बराह मारे मृगनके समुदाय । करो मन्थन बिपिनिको सह बीर सुभट सहाय ॥ बचे ते नहि बान गोचर भए जे बनजीव । निकसि भागे सिंह बाघ बराह तजि बन सीव ॥ हनत मृग दूरस्थ बानन्ह निकट जे चलि जात । तिन्है डारत मारि क्षितिपर करो सुखड्ग निपात ॥ हने

प० नाना ग्रस्त्रसा लहि बन्यजीव अनन्त । रचो मृगया रङ्गसौं दुष्यन्त पृथिवी कन्त ॥ भाजिकै बन जीव प्यासे गए सरिता पास । लहत जल नहि गिरत मूर्छित होय पाय प्रयास ॥ किते भक्षत मांस मृगको सुभट भूखे जौन । भजे सुण्ड लपेटिकै गज भए घायल तौन॥ मूत्र ग्रौर पुरीष डारत भजे मदगज जात । मरदि धक्कन मारि तिन बज्ज करे मनुज निपात ॥ दुष्टग्रोवन मारिकै छितिपाल अति बलवान । करो शोभन तौन कानन मुनिनको सुखदान ॥ *****

॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच । रोलाछन्द ॥ * ॥

मारिकै मृगबृन्द तेहां खेलि मृगया भूप । गए अन्य अरन्यकौं अति सघन जौन अनूप ॥ छुत्पिपासाकुलित सिगरे सङ्गके बरवीर । छोडि सोऊ गहन जो नृप औार कानन धीर ॥ परम रम्य सुहरित तृणमय लसति भूमि सुठार। भरे सुमन समूह साखी सहित लतन उदार ॥ कूजि कल रव रहे जिनपैं गूँजि मधुकर घेरि।होति झरि मकरन्दको जेहि दन्द भागत हेरि॥बहुत सौरभभारसौं भरि भयो शीतल पौन। लसति सघन पराग धुन्धुरि परम आनद भौन ॥ करत हैं झनकार झिल्ली कीर रव कलमान।भयो अति आनन्द भूपति देखि बन सुखदान ॥ कुञ्ज सोहत सुमन पुञ्ज सु करत अलि गुञ्जार । धाम काम बसन्तको मनु लसत सुषमा गार॥ सुखद छाया सघन साखी भरे सुमन समूह । लसत नाना रंगके द्विज किए जिन पर जूह॥बिना कण्टक फले फूले बिटप सघन उदार। मदन ध्वजसे भरे नाना रंग सुमनस भार॥भूपसम रितु राज जानत देखि सुषमा धाम। पवन प्रेरित मनज्ञ बरषत सुमन बिटप ललाम ॥लखत ऐसो बिपिनि भूपति गयो सरिता तीर । तहाँ आश्रम लखो मुनिको तपस तेज गँभीर॥लसत नाना वृक्ष जेहां ज्वलित पावक यज्ञ। गयो सो चलि निकट आश्रम परम भूपति तज्ञ ।। वालखिल्य सु यती मुनिवर लसत जह तपधाम। लसत अग्नि अगार नाना परम रम्य ललाम ॥ मालिनी जहँ नदी पुण्या लसति जाके पास। बन्यजीव सु साम्य जेहां करे है सहवास ॥ देवलोक समान आश्रम पास भूपति जाय । पुण्य आश्रम देखिकेकौ कियो मन सुखदाय ॥ नदी वेष्टित परम आश्रम लसत सो अभिराम । बदरिकाश्रम सहित गंगा यथा पावन धाम ॥ कन्व काश्यप महा ऋषिके परम आश्रम पास। राखि सेना भट सबाहन भूप आनद रास ॥ संग सचिव पुरोहितहि लै उतरि रथतें भूप । चलो देखन कन्व ऋषिकौं ज्वलित पावक रूप ॥ देखि आश्रमको सुशोभा भयो हर्षित भूप । ब्रह्मलोक समान शोहत भरो तेजस रूप ॥ पढतहैं द्विज बेद चारो बरक्रमे पदयुक्त । यज्ञ नानाभाति ब्राह्मण करतहैं अति मुक्त ॥ सकल शास्त्र विचार बेत्ता करत मत सिद्धान्त।लसत मुनि गण तहाँ बैठे ठौर ठौरहि दान्त॥देखिकै मुनि बृन्दकौं दुष्यन्त भूप अनूप । ब्रह्मलोक सुप्राप्त जानो परम अपनो रूप ॥ कन्व काश्यपके सु आश्रममे गयो छितिपाल। जास चहुँदिश लसत मुनिगण मुकुतकी मनु माल॥ फेरि सचिव पुरोहितहि

तजि गयो एक नरेश। तहां देखो कन्वमुनि नहि शून्य आश्रमदेश॥ कहो भूपति इहां कोऊ वचन आ०प० ऊच गम्भीर।सुनत आई निकसि कन्या श्री समान शरीर॥ चीर निधिसो परम आश्रम रूप अमल अमन्द। निकसि आई तहांते सुशकून्तला जिमि चन्द॥ तापसीको बेश धारे कियो नृप सनमान। पूछि कुशल सु प्रश्न पूजा कियो अति सुखदान ॥ कहो सह मुसकानि आए कौनकारण भूप। कहऊ सो हम करहि भूपति काज सो अनुरूप॥ महा मुनिको चाहि दरशन आगमन यहि हेत। कहो तासों देखि ताकों भरे आनद चेत ॥ गएह कहँ महा मुनिवर कहऊ सुन्दरि तौन । शकुन्तलोवाच ॥ * ॥ गए हैं फलहेतु बनकों पिता मम सुनि जौन ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥* रहो द्वैघटि आय जैहै सु मुनि अच अनूप। तपस तेजस भरी यौवन कहो ऐसे भूप॥ कौन हो तुम कौनकी हो रूप ऐसो धारि।करति आश्रम वास मुनिगण मध्यहे सुकुमारि॥ देखतहि तोहि अहे शुभगे भयो हृत मम चित्त। तुमहि जानो चहतहौं सो कहऊ सकल निमित्त॥ भूपके सु शकुन्तला तब सुनत ऐसे बैन। कहन लागीं पूर्व सब बृत्तान्त बिहसि सचैन ॥ कन्वकी हम सुता हैं दुष्वन्त जानऊ भूप। परमज्ञानी धर्म्मवेत्ता महातपके रूप ॥ * ॥ दुष्वन्तोवाच ॥ * ॥ ऊर्द्धरेता महा मुनिकों कहत जगत प्रसिद्धि।भई तुम केहिभांति ताके कहऊ कन्या ऋद्धि। * ॥ शकुन्तलाबाच॥ यथा मेरो भयो सम्भव तथा सुनिए भूप॥ भई जैसे महा मुनिकी धर्म्म कन्यारूप । कन्व ऋषिसा आय ऐसेहि एक मुनि मतिमान। कहो ऋषि जो कहो सो हम सुनो सकल विधान ॥ * *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कन्वउवाच ॥ * ॥ कौशिक मुनिको तप अतिमान।देखि डरे मनमे सुरत्राण॥ महातेज तपको बलपाय । मोहिन पदतें देई गिराय॥ कहो मेनकासों इमि बैन। सुरपति भयसों भरे अचैन ॥ तुम अप्सरन मध्य छविधाम । करऊ मेनका मम यह काम ॥ होय हमारे अति उपकार। कौशिकको तप भङ्ग उदार ॥ जैसे होय करऊ तुम जाय। अहो मेनका मम सुखदाय॥सुरपतिके सुनि बचन उदार । कहो मेनका सहित बिचार॥ भरे महातप क्रोध अमान। तेजस पुञ्जसदृश शिखिमान॥ जास समुझि तप क्रोधबिधान। तुमऊ डरत रहत सुरत्राण ॥ हम जैहैं कैसे ता पास। ऐसि करैगो मेरो नाश॥ सुनि बशिष्ठके पुत्र अनेक। जेहि मारे नहि छोडे एक ॥ जन्मि क्षत्रकुल भो द्विजवर्ण । सृष्टि दूसरी लागो कर्ण॥ तपबलतें जेहि नदी असान। करी कौशिकी पुण्य महान ॥ कौशिक गे तप करण बिशाल। परो कछूदिनमे अति काल॥ ऋषि मतङ्ग ताको परिवार। पालन करो जीवगण मार॥ भए व्याससम ऋषि मातङ्ग। कौशिक आय कुशल लखि सङ्ग॥ तुम सह तासों यज्ञ कराय। आपु सोम तँह पियो डराय॥ गो त्रिशङ्कु करि गुरु अपराध। दयो शरण ताकों निरबाध॥ऐसे जाके कर्म्म महान। सो न दहै कहि क्यों सुर त्राण॥ सृष्टिनाश

आ०प० कारण समरथ्य। बिश्वामित्र प्रताप अकथ्य ॥ हमसी नारि जितेंद्री ताहि। कौन भांतिसा परसत चाहि ॥जासौं डरत रहत सुर सर्ब्ब ।ताहि जीतिहैं का हम खर्ब्ब ॥तुव शासन शिर राखि सुरेश। औसि जाइ हैं हम तेहि देश ॥ रक्षा मो चिन्तऊ सुरनाथ। फिरि हौं मै नित ताके साथ ॥ क्रीडा करत तत्र छलछाय । बायु उडाय देय पटआय ॥ महा कार्यमे मदन सहाय । करै कृपा करिकै सुखदाय ॥ सुरपति शासन लहिकै पैंन। वहन त्रिबिधि लागो तहँ तौंन ॥ सहित बसन्त मदन तँह आय। खडो भयो शर धनुष चढाय ॥ गई मेनका तँह छबिधाम । करि कौशिककौं प्रथम प्रणाम ॥ भीरुभई क्रीडा बिस्तार। करिलागो तँह करण बिहार ॥ पवन दियो पट तास उडाय। बिहँसि समेटन लगी लजाय ॥ तोरति फूल भुजा न उठाय । उरज उतग निबिड दरशाय ॥ करि कटाक्ष मुनिकी दिशि चाहि। नीबी सिथिल रहत गहि ताहि॥ करि चख चपल बिलोकति तत्र। बैठे लखत महामुनि यत्र ॥ अकथित भरी रूप गुण बास। औसो रचो चरित अभिराम ॥ देखि भरो मुनिके हिय भाव । मारो मदन बान लखि दाव ॥ लई बोलाइ ताहि मुनि पास ॥ गई मेनका करि मृदुहास ॥ करण लगे दोउ सुरति बिहार। बऊत काल गो बीति उदार ॥ एक दिवससम जानो तौंन। रमे मेनकाके सँग जान ॥ सुमुनि मेनकामे अभिराम । जनमाई कन्या गुणधाम ॥ हिमगिरि निकट परम शुचिदेश ।नदी मालिनी तीर सुबेश॥ छोडि मेनका सुता ललाम। गई कार्य्य करि सुरपतिधाम ॥ लखि निर्जनमे कन्या आय। बैठे घेरि शकुन सुखदाय ॥ क्रव्यादनसौं ताहि बचाय ॥ लियो शकुन्त कुन्तसौं छाय ॥ हम सन्ध्या करिवेके हेत। गए नदी तट बिधिबस चेत ॥ तत्र शकुन्तन मधि हम चाहि। ल्याय दियो कन्यापद याहि ॥*⁂*⁂*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जन्मसु दाता प्राणत्राता देइ अन्नकौं औंन।धर्म्मशास्त्र यह कहतहैं पिता तीनि ह तौंन ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

भे शकुन्त बनमे रखवारे। तो शकुन्तला नाम बिचारे ॥ मुनिबर कही कथा हम जैसैं। भई शकुन्तला दन्या औसैं ॥ कन्यहि भूप जनक हम मानैं। हम स्वपिताकौं हूँ नहि जानैं ॥ ॥ * ॥ शकुन्तलोवाच ॥ * ॥ सुनो जन्म अपनो हम जैसैं । तुमसौं कहो भूप सब तैसें ॥ हमै कन्नकी कन्या जानो। हे नरपति कछु औार न मानो ॥ * ॥ दुष्यन्तउवाच ॥ * ॥ प्रगट राज पुत्री तुम बामा। भार्य्या मम ह्लजे गुणधामा ॥ नानारत्न बसन बरनीके । भूषण दिब्य हार सुठीकें ॥ तुमकौं देत औार जो भाखो। राज्य सकल अपनो करि राखो ॥ ब्याह श्रेष्ठ गान्धर्ब सो जानो। सो तव संग करत हम मानो ॥ * ॥ शकुन्तलोवाच॥ * ॥ फल आनन गो पिता हमारो। घरी एकमँह आवन हारो ॥ तुम्है मोहि देहै सो जानो। तबलौं करऊ क्षमा यह मानो ॥ * ॥

॥ दुष्वन्तउवाच ॥ * ॥ तुम्है भजो हों चाहत प्यारी । है त्वदर्थ थिति इहां हमारी ॥ बन्धु आपनो आत्मा जानो । आपनि गति आत्मा अनुमानो ॥ आत्मदान आत्मातैं नीकौं । तातैं करउ धर्म श्रुति श्रीकौं ॥ अष्ट विवाह धर्मविद कहे । ब्राह्म्य दैव आर्ष अरु अहे ॥ प्राजापत्य असुर गान्धर्वौ । राक्षस अरु पैशाच असर्वौ ॥ *********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चारि आदिके विप्रकौं षट क्षत्रिय हि ललाम । आसुर वैश्यशूद्रकैंह जानो फलद अभिराम ॥ राक्षस अरु गान्धर्व द्वै क्षत्रिनकौं सुखदान । आसुर अरु पैशाच ए करिबे जोग्य न जान ॥ सालङ्कार दान कन्याको ब्राह्म्य कहत हैं जौंन । यज्ञ दक्षिणामे कन्याको दान दैव है तौंन ॥ तुम दोऊ मिलिकै सब धर्म हि को ज्यो इमि कहि आम । दीबो जो कन्याको सो है प्राजापत्य ललाम ॥ लै द्वै गाय देत जो कन्या तौन आर्ष अभिराम । एचारों विवाह विहित है विप्रणकों गुणधाम ॥ बऊत लेइ धन देइ फिरि कन्या आसुर सांच ॥ सुप्त प्रमत्तनकी कन्याका हरिबो सो पैशाच ॥ मारि बन्धु रोवत कन्या हरि करै सो राक्षस ऊढ । क्षत्रिनको यह योग्य है और करै सो मूढ ॥ व्है सुकाम बस कन्यका लहि एकान्त सह धर्म । पाणि गहै गान्धर्व सो ईश्वर साक्षी पर्म ॥ हम सकाम तुमपै भए हमपैं तुमऊ सकाम । करि गान्धर्व विवाह मो भार्य्या हो अभिराम ॥ * ॥ शकुन्तलोवाच ॥ * ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

धर्मको पथ कहो यह मम आतमा प्रभु जौंन । दानमे जो सुनो भूपति कहति हैं मै तौन ॥ होय गो मम पुत्र जो जुबराज सोई होय । देऊ जौं यह बचन साचो भूप धर्म समोय ॥ करऊ संगम सुनऊ मम पति भए तुम गुणऐन । वैसंपायनउवाच ॥ एवमस्तु सु कह्यो तासौं पायकै नृप चैन ॥ गहो पाणि शकुन्तलाको करो संगम भूप । कहो दै विश्वास ऐसैं बचन आनद रूप ॥ होत हामै बिदा तुमसौं सुनऊ प्यारी बैन ॥ आनिवेकौं भेजि हौं मै तुम्हैं सिबिका सैन ॥ आइयो तुम भरी आनद धामकौं अभिराम । चले कहि यह भूप मुनि की धरें शङ्का माम ॥ दोय घटिका गएँ आए कन्व आश्रम भौन । लाजबस सु शकुन्तला नहि कियो आगे गौन ॥ दिव्यदृगसौं जानि बोले कन्व सब वृतान्त । अनादृत्य जो मोहि कीन्हो पुरुषसंग नितान्त ॥ धर्म्मघातक नहीं नृपकौं ऊढ जो गान्धर्व । करैं होय सकाम दोऊ रहसनाहि असर्व ॥ धर्म्माधर दुष्वन्त भूपति परम उत्तम बंश । शकुन्तला तू बरी ताकौं लह्यो सुपति प्रसंश ॥ होय गो अति महाबल तो पुत्र परम प्रशंस । भूमि सागर मेखलासो करै गो सब बस्य ॥ शकुन्तला तब आय मुनिके धोय बिधिवत पाय । लियो मुनिको भार फलको धरो शुचि सुखदाय ॥ * ॥ शकुन्तलोवाच ॥ * ॥ तात हा दुष्वन्तनृपकौं बरी जानि सुधर्म ।

५० करऊ सहित अमात्य ताप क्षपा मुनिवर पर्म्भ ॥ * ॥कन्वउवाच॥ *॥ भयो हैा सुप्रसन्न ताप जानि तो भत्तार। लेऊ वर अब मांगि इच्छित होय जैांन उदार॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ हैा हि पैारवबंशमे धर्मिष्ठ अच्युतभूप । लयो यह वर मांगि बरदुष्यन्त हित अनुरूप ॥ तीनि हायन पूर्ण धाखो गर्भ परम उदार । भयो पुत्र शकुन्तलाके भरो तेजसभार ॥ जन्म कर्म्म सु कियो सिगरो कन्वमुनि अभिराम । वर्धमान बिचारि बालक महा बलको धाम ॥ दन्त शुक्ल सकान्ति जाके सिंह सम बरकाय । शंख चक्र गदाङ्क कर वर मत्स्य रेखा पाय ॥ महतमूर्द्धा देवसुतसम बढो तहँ बलवान । भयो सो षटवर्षको मुनि कन्वके सुस्थान ॥ सिंहव्याघ्र वराह महिषा गजनकों गहि लेत । बांधि आश्रम वृक्षसों सो तिन्है बलबश देत॥ करत तिनकों दमन चढिकै तैान बालक बीर । धरो ताको नाम मुनिगण सर्वदमन गंभीर ॥ देखि कै पुरुषार्थ ताको महा ओजस तैान।जानि कै वर कुवरको जुवराज समय सु जैान ॥कह्यैा शिष्यन बोलि कै इमि कन्वमुनिवर धीर। सु शकुन्तलाकों जाऊ लै पतिधाम सहसुत बीर ॥ बऊत रहिबो बन्धुजनमे योग्य नारिनकैान । सुनत सहित शकुन्तला तिन कियो तितकों गैान ॥ गए हस्तिन नगरकों दुष्यन्त नृपके द्वार । द्वारपालन कहो नृपसों तास आगम बार ॥ बोलि भूपति पूजि तिनकों सुनो आगम सुच । बिदा ह्वै ते गए छोडि शकुन्तलै सह पुत्र ॥ * ॥ शकुन्तलोवाच ॥ * ॥ पुत्र भूपति रावरो युवराज कीजै याहि । भयो तुम तैं मोहिमे सुरसदृश लीजै चाहि ॥ दियो हो वर जैान भूपति अेासि कीजै तैान । यदा संगम भयो मोसो कियो हो पन जैान ॥समुझि ए जे कन्व ऋषिके कहे आस्रम माह। बैन सो प्रतिपालिए अब सुनऊ हो नरनाह ॥सुनो भूपति समुझि मनमे तणक रहि कै मैान।कहो आई कहा न है दुष्टतापसि कैांन ॥ पूर्व मम तव भयो संगम कह तिहो तुम जैान। जाऊ भावै रहऊ बैठि हो न समुझत तान ॥ सुनत अैसैं बचन नृपके भई निश्चल रूप । कोपतैं भे चपल रदछद अक्षि अरुण अनूप॥देखन चाहति मनऊ तिरछैं लखति भूपति ओर।परम सैाम्य शकुन्तला सो क्रोध प्रेरित घोर॥ करें तपको तेज धारण कहे नृपसो बैन।जानि कै इमि कहत हैा यह उचित तुमकों है न॥सत्य ओैर असत्य जानत सकल आत्मा जैान । करत जैांन असत्य ताकों महापातक तैान ॥ एक हमहीं रहे जानत नही जो हृदयस्थ । कर्म्म साक्षी जीवजनको सकल पथ्य अपथ्य ॥ सुनऊ भूपति कर्म साक्षी रहत ईश्वर पास । सूर्य्य शशि अरु अनिलअनलो भूमि रूप अकाश॥सलिल अह निशि धर्म साक्षी गुणै अरु यमराज।करत नर जो कर्म तैसो देत फल महराज॥स्वयं आई इहामे पतिधर्म धारे धीर। योग्य आदरसो निरादर करण योग्य न बीर ॥ याम्य जनलैां सभासदमे करत मो अपमान। करति हैां कारुन्य रोदन सुनऊ भूप सुजान ॥ जैांन मांग्यो बचन तुमसों करऊ गे नहि सोय। जाय गो फटि शीष तुम्हरो फूटि शतधा होय ॥ पति करि प्रबेश सुभार्यामे लेत निज फिरि जैान।

सुनऊ जाया कहत यात बेदबेत्ता तान ॥ होत है पतिआतमासो पुत्र अति अभिराम । करत संतति तैान तारत पितर सिगरे आम॥पुन्नामनरक महानतेँ जो पितर तारत सर्व।पुत्र याते कहत ह बेदज्ञ सुमति अखर्व ॥ सो भार्या ग्रहकार्यदक्षा पुत्रवती है तैान। सो भार्या पति प्राण जाको पति ब्रतरत जैान ॥ अर्द्धतन पतिको सुपत्नी सखा अति अभिराम । चिवर्गको है मूल भार्या मोदद‌ायक माम॥बिना भार्या यज्ञ कर्म्म न होतहै न ग्रहस्थ। होत भार्यावंत श्रीयुत जानु भूपति तस्य ॥ सखा होति एकांतमे पतिकी प्रियंबद बाम।धर्म क्रतिमे पिताको सम मातृदुःखमे आम॥होति है बिश्राम दाता दुर्गंप्रथमे तैान । विना भार्या पुरुषको बिस्वास मानत कैान ॥ प्रेतपथमे होति साथिनि एक पति जब जात।लेति गति पति पाय पत्नी प्रथम जास निपात॥करत पाणि ग्रहण यातेँ पुरुष जे मति मान । भारया पति पाय साधत दोऊदिशि सुखदान॥पुरुष आत्मा आपु जनमत पुत्रको धरि रूप पुत्रमाता सदृश माता होति यातेँ भूप ॥ पुत्रभार्या जनित देखत करत यों आनन्द । मुकुरमे प्रति बिंब अपनो देखि सदृश अनन्द॥आधिसोँ अरु व्याधिसोँ पीडितहि यों सुखदान।होति भार्या धर्म तापितकोँ यथा जलपान ॥ क्रोधहूमे करत नर नहि भारया अपमान । धर्मरति अरुप्रीति तामे देखिकै अतिमान ॥ धूरिधूसर देखि सुतकोँ पिता हियसोँ लाय । लहत है आनन्द इतनो तैान बरनि न जाय ॥ भरो सुत अभिलास आयो आपुसोँ तब पास । करत हो अपमान हेरि कटाक्षसो तन तास॥धरति अंडन करति भेद पिपीलिका अतिअज्ञ।भरऊगे का नही आत्मज भूप तुम सर्वज्ञ॥ अस्पर्श बामा बसन जलको तथा सुखद न होत ।पिता पावत लाय हियसोँ यथा आत्मज पोत ॥ जातक्रतिमे पुत्रमस्तक घ्राण जानत तैान । बेदमे यह मन्त्र लिपिहै कहत बेत्ता जैान ॥ * ॥ ॥ मंत्र ॥ अंगादंगात्सम्भवसि हृदयादभिजायसे । आत्मावै पुत्रनामासि स जीव शरदां शतं ॥ ॥ * ॥ जीवितन्त्वदधीनं मे सन्तानमपिचाक्षयं । तस्मात्त्वं जीव मे पुत्र सुसुखी शरदां शतं ॥ * ॥ पुरुषत यह पुरुष भो तव अंगतेँ नृप अन्य । यथा निर्मल सलिलमे प्रतिबिम्ब सदृश अनन्य ॥ आह वनीयमे जिमि अग्नि गार्हपत्यतेँ धरि देत । तथा तुमतेँ भयो सुत यह द्विधारूप सनेत ॥ मृग मारण हेत धाए गए तुम नरनाह । तहां पाई मोहि कन्या पिता आश्रम माह ॥ सब अप्सरनमे मेनका जो ब्रह्मयोनि अनूप । आय क्षितिपर पाय कैाशिक मोहि जाई भूप ॥ गई तजि हिम वानके ढिग यथा असती नारि । पूर्व जन्मज कर्म्मपातक परत नहि निरधारि ॥ बाल्यपनमे पिता माता तजी तुम अब भूप । जाउंगी मै आश्रमहि नहि तजऊ पुत्र अनूप ॥ * ॥ दुष्यन्तउवाच ॥ * ॥ सकुन्तला कब भयो तुमकोँ पुत्र जानत होँ न । कहैँ नारी बैन मिथ्या तिन्हैँ मानत कैान ॥ बन्धकी है मेनका तेहि कर्म अैसो कैान । जनमि तोकोँ छोडि गिरिढिग गई दयाहीन ॥ महानिर्दय पिता तुम्हरो चत्र योनि सक्षुद्र । तैान बिश्वामित्र चाहत होन ब्राह्मण लुद्र ॥ श्रेष्ट तुम्हरे

५० पितर दोऊ रूप गुण तपश्रेन । भई तिनतें कहति हो तुम पुंश्चलीलौं बैन ॥ सुनन योग्य न बचन तुम्हरे रहित लज्जा जौंन । कहति मो ढिग दुष्ट तापसि कुरु जथेच्छित गौंन ॥ कहां कौशिक मुनि मुकुट कहं मेनका गुणधाम । कहा तुम अति कृपिणि धारैं बेष तपस्विनि बाम ॥ पुत्र है अति काय तुम्हरो महाबलमय गात । भयो थोरे द्योसमे किमि कहति झूठी बात ॥ भई योनि निकृष्टतें तुम पुंश्चली इव बैन । कहति जाई मेनका सु जदृच्छया बस मैन ॥ कहति तू जो है परोक्ष न बिदित हमको तौन । हौं न जानत तुम्है कीजै यथा इच्छा गौंन ॥ * ॥ शकुन्तलोवाच ॥ * ॥ सर्षप मात्र दोष औरनको लखत तुम भूप । चाहि चाहत नहो अपनो दोष बिल्व सरूप ॥ मेनका है देवगणमे त्रिदश अनु हैं जास । उच्च तुम्हरे जन्म ते हैं जन्म मो लो पास ॥ अटत हो तुम भूमिमे हौं गगणगामी भूप । बीच हमसों और तुमसों मेरु सर्षप रूप ॥ सत्य है यह बात मेरो कहो तुमसो जौंन । तुमहि जनाइवेकों क्षमा कीजो तौंन ॥ बदन जबलौं आदरसमे लखत है न कुरूप । कहत तबलौं आपकों वह रूपवान अनूप ॥ मुकुरमे जब लखत है मुख चित्त दै अनुमा नि । परत अपनो औरको तब रूप अन्तरजानि ॥ रूप मानन करत कवऊ औरको अपमान । बकत हैं दुर्बचन तेई नीच सुनऊ सुजान ॥ सुनत मूरख नीकि नागा जल्पकनकी शीख । गहत है ते दोषको इमि ज्यौं बराह पुरीख ॥ सुनत हैं बर प्राज्ञ बक्तनके शुभा शुभ बैन । गहत गुणवत बाक्य हंस सुक्षीर पीवत पैन ॥ कहि कठोर सु अन्य सों कछु साधु अनुपछितात । कहि असाधु कठोर तैसें होत पुलकित गात ॥ साधु पावत मोद ज्यौं कहि बडे न प्रति मृदु बैन । साधु सों दुर्बचन कहि त्यौं लेत दुर्जन चैन ॥ दोष जानत नही ते जन लहत मोद महान । दोष दर्शी मूर्ख ते जग कहत आपु समान ॥ कहा है अति हास्य यातें सुनऊ जगमे और । कहत दुर्जन मनुज दुर्जन सुजनकों छिति मौर ॥ धर्म चुततें डरत नास्तिक कहा आस्तिक बात । यथा देखि सक्रोध पन्नग कहऊ कौन डरात ॥ आपु करि उतपन्न पुत्र स्वसदृश छोडत जौंन । हनत देवत तास श्री परलोक लहत न तौंन ॥ पुत्र है कुल बंश थापक कहत पितर सुजान । धर्ममे सब पुत्र उत्तम सोन त्याग समान ॥ पत्नी प्रभव लब्ध स्वरु क्रय हतपालक चौथो तौंन । पञ्चम अन्य क्षेत्र भव जानो पुत्र कहे मनु जौंन ॥ कीर्ति धर्म बढ़ होत ए है पुत्र सुखद सुजान । पितृ बूडत नर्कनिधिमे होत प्लव सुख दान ॥ पुत्र त्याग न करऊ भूपति सत्यधर्म बिचारि । दीजि औ नरसिंह मनते कपट कुत्सित डारि ॥ शौ कूपते बरबावली शतबावलीतें यज्ञ । शतयज्ञ तें बर पुत्र शततें सत्य है बरतज्ञ ॥ अश्वमेध सहस्र सत्य सु तुला पर धरि देऊ । सत्य गरु औ होय गो यह जानि भूपति लेऊ ॥ सर्व बेदाध्ययन अरु सब तीर्थनको स्नान । होय गो नहि सुनऊ भूपति सत्य बचन समान ॥ सत्य सम नहि धर्म है कछु कहत सकल सुजान । झूठ तें नहि पाप कोऊ अधिक बेदति प्रमान ॥ भूप सत्य सु रूप ब्रह्म सु सत्य पनको त्याग ।

करऊ मनि मम संग तुमसौं सत्य है वरभाग॥ अनृत सौं है प्रीति तब नहि रुचत जा सो बैन।आपुही तैा मैं न करि हैा संग तब बलऐंन॥ भूप तुम्हारे अन्त मेरो पुत्र यह बलवान। सिन्धुलौं चहूँ ओर पृथिवी पालि है सुखदान॥ *॥वैसम्पायनउवाच॥ *॥ शकुन्तला कहि भूपसों यों चली जब दुख छाय। गगन वाणी भई तब दुष्यन्त प्रति सुखदाय॥ ऋत्विक पुरोहित सहित मंत्री सुनी भूपति तान। गर्भकी है पात्र माता पिता है सुत जाँन॥ पुत्र पालु शकुन्तलाको करऊ आदर भूप। रेतभव सुत यमपुरीतैं देत गति शुचि रूप॥ सत्य कहति शकुन्तला नृप गर्भ तो अभिराम। अंग दुसरो पिताको सुत जनति जाया आम॥ धारु तातैं पुत्रकों सु शकुन्तलाभव भूप। छोडि जीवत सुतहि जियबो सो अभाग्य अनूप॥ शकुन्तला दुष्यन्त सम्भव पुत्र यह बलवान। भरऊ भूपति मानि तात दिव्य बचन प्रमान॥ भरत तातैं नाम राखऊ पुत्रको अभिराम। भरण तुम सों कहो यातैं अहो भूप ललाम॥ गगनबाणी सुनत यह नृप भरो मोद ललाम। बोलि मंत्रीसों सु ऐसैं कह्यैा अति अभिराम॥*॥

॥ * ॥ जयकारछन्द॥ * ॥

देव दूतके सुने सु बैन। कहे गगन गत आनद ऐन॥ आत्मज सत्य लियो हम जानि। कियो न ग्रहन लोकभय मानि॥ अब यह सुद्ध बिचारहि सर्व। नतरु करत शङ्का जन खर्व॥ *॥ वैसम्पायनउवाच॥ *॥ गगन गिराते सुद्ध बिचारि। नृप लिए पुत्र अङ्कमँह धारि॥ जन्म कर्म ताको सब भूप। किये। मोद भरि कै अनुरूप॥ भूप कियो सुत मूर्द्धा घ्रान। बन्दिन पढे सुजश सुखदान॥ पुत्र स्पर्श मोद नृप पाय। शकुन्तला आदर सुखछाय॥ कियो भूप कहि मीठे बैन। सो परोच्छ तव संगम चैन॥ यातैं तब सुध्यार्थ बिचारि। लोक भीति हियमे निरधारि॥ कहे जे अनूचित वचन अकाम। तैान च्छमा कीजे गुणधाम॥ महिषी प्रिया जानिकै भूप। भूषन बसन दिए अनुरूप॥ भूप भरत सुतकों जुवराज। तब कीन्हो सह सचिव समाज॥ भरत राज्य शासनकों करत। सकल प्रजा आनदसों भरत॥ जीति करे सिगरे बस भूप। चारो धर्म नीति अनुरूप॥ मण्डलेश भो भूप महान। किए यज्ञ वऊ सम मघवान॥ करवायो मख कान्वमुनीश। विपुल दच्छिणा दियो च्छितीश॥भरत वंशमे भए नरेश। देव सदृश जे विपुल विसेश॥ ब्रह्म सदृश भे वऊ तपधाम। तिनके कहैं कहालैां नाम॥ तिनमे भए मुख्य जे भूप। तिनको कहत नाम गुणरूप॥ कारक बंश भए अभिराम। तिनको वर्नण करत ललाम॥ *✤*✤*✤*✤*✤✤*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि शकुन्तलोपाख्यान समाप्तमेकत्रिंशोऽध्यायः॥ **✤*✤*✤*✤*✤*✤*✤*✤*✤*✤**

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ वैसंपायनउवाच ॥ * ॥ भए प्रजापति दच्छ ललाम । वैवस्वतमनु तेजसधाम ॥ कुरु पुरु भरत भए यदुभूप। अरु अजमीढ धर्मको रूप ॥इनको बंश पुन्यको धाम। सो हम कहत भूप अभिराम ॥ दश प्राचेतस पुत्र अखर्व। मुखजअग्नि बन जारे सब ॥ भे प्राचेतस दशत दच्छ। जेहितें भई प्रजा अति स्वच्छ ॥ दच्छ बीरणी भार्य्या मांह। करे अनेक पुत्र नरनाह ॥ तिनकौं योग पढायो नारद। ते नहि भए सु सृष्टि बिशारद ॥ तब पञ्चाशत कन्या दच्छ। जनमाई अतिगुणमय स्वच्छ॥ दई धर्मका दशतिय तीन। कश्यप लही त्रयोदश जौन॥ सप्तविंश दिय शशिकौं दच्छ। जे नक्षत्र रूप हैं स्वच्छ। अदिति त्रयोदश मे जो ज्येष्ट। तातें तेजसमय अतिश्रेष्ट ॥ इन्द्रादि विवस्वत भए उदार। विवस्वत सुत मनु यम सुकुमार ॥ मनुतें मानव भए समृद्ध। ब्राह्मण क्षत्री वर्ण प्रसिद्ध ॥ ब्राह्मण क्षत्री भे एकसंग। ब्राह्मण पढे वेद वेदांग ॥ * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वेण धृष्णु नरिष्यंत अरु इक्ष्वाकु भूप नाभाग। कारूषो सर्याति अरु जो पृषध्र जुतराग ॥
औ अरिष्ट ए नव भए मनुके क्षत्री भूप। इला सुता दशमी भई करता वंश अनूप ॥
पञ्चाशत मनुके भए और सुनो सुत जौन। भए बैर अन्योन्य तें नष्ट सबै सुनु तौन ॥
भो पुरूरवा इलासुत सकल भूमिको भूप। नामन ताके जनकको सुनो न देखो रूप ॥
पुरुरवा उनमत्त व्है करि विप्रन सों बैर। हरि लीन्हो धन रहे पुकारत ते सब करिकै घैर ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

सनतकुमार महामुनि आए। देखि अनीति कोपसों छाए॥ करो न आदर भूपति ताको। दयो शाप ऋषि अनल प्रभाको ॥ नष्ट प्राय शाप लहि भयो। पुरुरवा नृप बल मदमयो ॥ गन्धर्व लोकतें शिखि ले आये। त्रिधा विहित बर यज्ञ रचाये ॥ पाय उर्वसीका सो राजो। तामे लहि षटपुत्र सुभ्राजो॥ आयुधीमान अमावसु भयो। दृढायु वनायु सतायु सुमयो ॥ नहुष वृद्ध सर्मा रजि भए। गयसु अनेनस आयुसुत मए ॥ स्वर्भानु बीतें ए सुत भए। पांच परम गुणगनसों मए ॥ आयुष पुत्र नहुष अवनीको। पालन कियो राज्य शुचि श्रीको॥ चारोवर्ण नहुष नृप पाले। शत्रु समूह समरमे घाले ॥ नहुष ऋषिनसों करबर लीन्हों। तिनकी पृष्ट भार धरि दीन्हों ॥ इन्द्रत्व सुकरि मख बहु लीन्हो। देवन काढि स्वर्गतें दीन्हों ॥ अति तेजसमय षट सुत लहे। यति ययाति संयाति सु कहे॥ आयाति अयति ध्रुव बलसों भारे । ए षट पुत्र नहुष अवतारे ॥ यति करि योग ब्रह्म मुनि भए। भए ययाति भूप गुणमए॥ धर्मनीतिसों प्रिथिवी पाले। करि मख देव अर्चि खलघाले॥ ताके पुत्रधर्मधर भए। इहूँ भार्यनमे गुणमए ॥ * * * * * * * *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

देवजानीके भए यदु और तुर्वसु आम। द्रुह्यु अनु पुरु सर्मिष्ठको भे तनय अभिराम ॥ बहुत सम्वत राज कीन्हो जव महीप यजाति। जरा आई घोररूपा हरणि यौवन कान्ति ॥ जरा कम्पित भूप पुत्रन सा कहे इमि बैन।युवा है युवतीनके सङ्ग बिहरि चाहत चैन॥करहु पुत्र सहाय अपनो देहु यौवन मोहि। जरासह यह राज सिगरो देत हैं हम तोहि ॥ देवजानी पुत्र जेठे कहो यदु लखि रूप। कहा योवनसों हमारे काज करिहो भूप॥ कहो भूप यजाति हे सुत जरा मेरी लेहु। बिषयकों हों भोग करिवे चहत यौवन देहु ॥ करो मै मख काल बहु तब दियो उशनस शाप। काम आतुर होहु यातें दहत मदन सताप॥जरा मेरी लेइ कोउ करै तुम मे राज। युवा व्है कै रमै हम लहि युवा युवतीसमाज ॥ यदुहि आदि न कियो काहूँ जराको स्वीकार। भूपसों तब कहो पुरु इमि जो कनिष्ट कुमार ॥ भूप चरिए तरुणि गणमे लेहु यौवन देत। जरा सह तव राजको बर भार हों धरि लेत॥ सुनत ऐसें राज ऋषि नृप तेज तपको धारि। दई पुरुकों देहत तब जरा आपु निकारि ॥ पुत्रयौवन लेइ भूपति भयो तरुण समान। वृद्ध व्है पुरु करन लागे राज्य अति मतिमान॥ बर्ष एक हजार भूपति रमे भार्यन सङ्ग। विषय तृप्ति न लही तबहूँ भरे काम तरंग ॥ लैं संग बिस्वाची अपसरा चैत्ररथमे जाय। लह्यो नहि सन्तोष तब हूँ काम कौतुकछाय ॥ तब यजाति बिचार कीन्हों सुनहु ऐसें भूप। तृप्ति होति न बिषैकी करि काम भोग अनूप ॥ होत है सुहविष्य प्राएँ यथा पावक बृद्ध। तथा घटति न बिषय इच्छा पाय भोग समृद्ध॥ लही समता चित्तमे यह करि बिचार बिवेक। करैं कबहु पाय नहि जव जीव जनमे नेक ॥ कर्म्म मनसा बचनतें तव शुद्ध होय अनूप। लहत हैं परब्रह्म पदकों परम पावन रूप ॥ आपु काहूत डर नहि डरै आपुहि कोय। राग द्वेष बिसारिकै तव ब्रह्म प्राप्ति सु होय ॥ भोग्य बस्तु समस्त ऐसें तुच्छ मनमे हेरि। लई भूप यजाति पुरुसों जरा आपनि फेरि॥भूप यौवन देइ पुरुकों राज्यको अभिषेक। देइ कै फिरि कहो ऐसें बचन सहित बिवेक ॥ पुत्रवत् हम भए तुमतें बंशकर तुम होय। बंश पौरव कहैं गे तो प्रजाकों सवकोय ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ राज्यमे अभिषेक करि पुरुपुत्रको अभिराम। भृगु तुग थलमे जाय कै तप करण लागे माम ॥ करिसु अनशन महाव्रत कछु द्योस बीतैं भूप। गए सुरपुर सहित पतिन पाय आनद रूप ॥ जनमेजयउवाच। *। प्रजापतितैं जौन दशम यजाति भूपति आम। भए जाके बंशकर पुरुपुत्र परम ललाम ॥ लही कैसैं शुक्रकन्या जौंन परम अलभ्य। सुनो चाहत सहित बिस्तर कहहु सो मुनि सभ्य॥ ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यजातिकों जेहि भाति दीन्ही शुक्र कन्या पर्म्म। कहत हो सो सुनहु भूपति सकल बृत्त सधर्म्म ॥सुरासुरसों बैर बाढो हेतु त्रिभुवन राज। गुरु शुक्रको जय हेत

आ॰प॰ कीन्हो बरण दुजन समाज॥भे पुरोहित दोऊ दुहुँ दिशि महा स्पर्धामान । देव मारत दैत्य तिनको करत शुक्र सप्रान॥ असुर ते फिरि लरत रनमे सुरनसौं अतिकाय । असुर मारत सुरनको गुरु सकतते न जियाय ॥ शुक्रके सञ्जीवनी हो परमबिद्या पास । सो न है गुरु पास यातैं लहो सुरगण त्रास ॥ गए सुर तब सभय कच पैं जेष्ठ गुरसुत जान । भजत हैं हम तुम्हे यातैं करहु हम हित गैान॥ जाहु उशनस पास तापैं जौंन बिद्या पर्म । तौन जैसैं मिलै तैसैं रचहु तेहा कर्म॥ दैत्य है बिषपर्ब ताके रहत उशनस पास । जायबेके योग्य तुमहो करहु मति कछु त्रास ॥ बाल वय तुम सकहुगे करि तास सेवा सर्व । देवजानि सुता पर मुनि करत प्रीति अखर्ब॥ तास सेवन बनी तुमसो पाय बैश समान । देवजानी कृपातैं गुण मिलैंगे सुखदान ॥ तथास्तु कहि कच गए तेहां परम मतिके धाम । पुरीमे बिषपर्बकी जहँ शुक्रमुनि अभिराम ॥ देखि मुनिकौं दण्डवत करि कहो अपनो नाम । अंगिरसके पौत्र हैं हम जीवके सुत आम ॥ शिष्य मोकौं करहु हे मुनि कृपा सिन्धु महान । परमगुरु तव निकट करिहौं ब्रह्मचर्य्य बिधान॥ अब्द एक सहस्र भजि तव चरण चारु सरोज । लहौं मै तव कृपातैं तब पुण्य फलको ओज॥ *॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥भयो कच तो शुभद आगम गहो हम तव वैन।पूज्य हो तुम करत पूजन रहहु इत सह चैन॥वैशम्पायनउवाच॥ कहि तथास्तु सुप्रात उठि कच गहो बरहत सुद्ध । पाय आज्ञा शुक्रमुनिकी ब्रह्मचर्य्य अरुद्ध॥ करत सेवा देवयानी शुक्रकी अभिराम ।भयो यौवन दृश्य तिनको परमरूप ललाम॥ गाय नृत्य सुबाद्य करि किय देवयानिहि तुष्ट। पुष्प फलदै कियो ताकौं कृपा पूरण पुष्ट ॥ देवयानी रंग क्रीडति रहसमैं कच संग । वर्ष बीते पांचसो कच करत ब्रत सुअभंग ॥ जानि सुरगुरु पुत्रकचकौं दानवन अनुमानि । हरण बिद्या हेतु आयो महा द्वेषी जानि॥ पाय गोधन संग कचकौं एक वनमे मारि । अंग सिगरे खंड करि वृक उदरमे दिय डारि ॥ गाय आई सकल घरकों विना कच अभिराम । देवयानी कहो मुनिसों देखि संध्या आम ॥ अग्नि हुत नहि भई अबही भानु अथवन जात । गाय आई बिपिनितैं कच बिना सुनिए तात॥ मरो कचकै हनो काहूँ परत ऐसो सूझि। बिनाकच मो मरण निहचै तात लीजै बूझि॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ आहूत ह्वै प्रगट कच लहि परम बिद्या जोर। कहो मुनि हे देवयानी करहु खेद न घोर॥संजीवनी पढि परम बिद्या कियो मुनि आव्हान। फारि कै वृकपेट गो मुनिपास कच सुखदान॥कहो सबबृतान्त कच तँह कियो दनुजन जौंन। सह सुता मुनिकी परम सेवा करण लागो तौंन ॥ फूल लीवे फेरि पठयो देवयानी ताहि । कछुक दिनमे ताहि चीन्हो दनुज दुर्मति ताहि ॥ मारि पोसि समुद्रमे तिन दियो घोरि बहाय । देवजानी बार लखि फिरि कहो मुनिसौं आय ॥ फेरि मुनि आव्हान कीन्हो पढि सुविद्या कांत। निकसि जलतैं आइ कच सो कहो सब बृत्तान्त ॥ बार तिसरी मारि कचकौं जारि कै करि चूर्ण।

सुरासंग पियाय दीन्हो शुक्रकों अतिपूर्ण ॥ देवजानी आय मुनिसों कहो फिरि भय भेखि । फूल आनन गयो कच चिर भयो परत न देखि ॥ हतो असुरन्हके मरो कच परत असो जानि ॥ बिना कच है मरण मेरो तात नियमिति मानि ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ देवजानी सुनो यमपुर गयो सो कच विप्र । मंत्र बल सो ज्याइ औ तौ मरण मेरो क्षिप्र ॥ करऊ शोच न रुदन तनु धरि मरत है नहि कौन । मंत्र बलसा ज्याइ औ तौ मोहि मारत तौन ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ अंगिरसहैं पितामह अरु जीव जाको तात । शोच रोदन करौं क्यौं नहिं होत ऋषि कुलघात ॥ ब्रह्म चारी तपोधन शुचि कर्म दक्ष उदार । जाउँगो तेहि लोक हो जेहि लोक कच सुकुमार ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ देवजानी कियो पीडित जानिके मुनि बार । कियो कच आव्हान मनमे सुमुनि शुक्र उदार ॥ असुर मेरो द्वेष करि मो शिष्य मारत जौन । बिना ब्राह्मण जगत को वे कर्म नाधो ताव ॥ अन्त इनको होय गो यहि कर्मते अति मान । कियो कचको मृत्यु मुख ते बोलि यह आव्हान ॥ गुरु मृत्यु भय ते मंत्र ह्वल सु कहे कच इमि बैन । तव उदरमे हौं महा मुनि कढनको पथ है न ॥ स्मृति हमारी है यथा स्थिति तव कृपाके जोर । जानि कै गुरु घात अतिहीं सहत हौं दुख घोर ॥ कहो सब वृत्तान्त पूरुब असुर कीन्हो जौन । असुर माया भङ्ग कारण कृपा तो मुनि तौन ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ कौनसो प्रिय करौं तुम्हरो देवजानी अय । मरण मेरो सु कच जीवन होय गो सह सय ॥ कुक्षि भेदन ते हमारो मरण ह्वहै जौन । है हमारे उदरमे कच कढै गो किमि तौन ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ दोऊ बिधि शोकाग्नि हमकों दहनकों अतिमान । नाश कचको मरण तुम्हरो सुनऊ तात सुजान ॥ भए प्राप्त स्वरूप कच सम सुता के प्रिय प्राण ॥ लेऊ बिद्या जीवनी जौं इन्द्र इ न सुजान ॥ कढत है कों फेरि जीवत उदरमे सो आय । बिना ब्राह्मण लेऊ बिद्या परम कच सुख दाय ॥ पुत्र भाव बिचारि अपनो मोहि जनक समान । कढत मेरी देह तें लहि महत बिद्या दान ॥ हम जियावत पुत्र तुमको तुम जिवाएऊ मोहि । दगा पीछें को जियो मति पाप ह्वहै तोहि ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच पाय बिद्या गुरूसों कच उदर ताको फारि । कढे बाहेर शर दशशि मनु जलद पटल बिदारि ॥ देखि कच मुनि परे क्षितिपर ब्रह्म राशि समान । पाय बिद्या ज्याय मुनि सो कहे बचन प्रमान ॥ देइ सञ्जिवनी बिद्या हमै सुमुनि समान ॥ सोइ माता पिता मम हम तास अनुचर जान । बेद दाता गुरूको नाहिं करत आदर जौन । पाय बिद्या शिष्यसो हैं नर्कगामी तौन ॥ बैसम्पायनउवाच सुरा मोहित भए बञ्चित ज्ञान मय मुनि भूप । देखि कचकों सुरा पर इमि क्रोध करि अति रूप ॥ शाप दीन्हो विप्र करि हैं सुराको यो पान । धर्मच्युत सो पाप लहि हैं ब्रह्म घात समान ॥ जगत निन्दित होय लहि ह नर्कको सो वास । बचन मेरे सत्य ए मर्याद मम अविनास ॥ दानवनको

१० बोलि ऐसे कहे मुनिवर बैन । सुनौ हो तुम सकल बालक सुमति तुमको है न ॥ सञ्जिवनी लहि परसबिद्या बसत कच मम पास। मत्सदृश परम प्रभाव जाके भरो ब्रह्म प्रकास ॥ एहि भांति तिन सौं बचन कहिकै कियो मुनि बिश्राम । भरे बिस्मय दनुज सिगरे गए अपने धाम ॥ बर्ष दश शत पास मुनिके बास करि अभिराम। पाय आज्ञा शुक्रकी कच चलन चाहो धाम ॥वैसम्पायनउवाच चलत कचसौं देवजानी कहे ऐसे बैन। अंगिरसके पौत्र सुनि तप तेज बिद्या ऐन ॥ *❦*❦*

॥ * ॥ गीतीछन्द ॥ * ॥

ऋषि मान्य जैसे अंगिरा मम पिताकौं अभिराम।त्यों मान्य हमकौं बृहस्पति हैं सुनहु तपके धाम॥ यह जानि मानहु कहति हैंमै सुनहु सो चक बैन। ब्रत मे तुम्हे लखि कियो सेवन यथा हम दै चैन॥ तुम पाइ बिद्या परम मोकौं भजहु हे अभिराम।मम करहु पाणिग्रहण विधिवत मंत्र पुर्बक आम॥ ॥ *॥ कचउवाच ॥ * ॥ मम पूज्य जैसे पिता तव तुम पूज्य तैसैं मोहि। देवजानी बचन यह नहि योग्य कहिबे तोहि ॥*॥ देवजानी उवाच॥*॥तुम बृहस्पति के पुत्र हो नहिं काव्यके सुतआम। हो पूज्य यात मान्य हमको सुनहु कच अभिराम ॥ हने असुरन्ह तुम्है सुनि हम कियो करतव जाव। सौहार्दत अनुरागतैं कच समुझिऔ तौ तौन॥ नहि त्याग मेरो करहु तुम धर्मज्ञ हो बिनु पाप। ॥ * ॥ कचउवाच ॥ * ॥नहिकाज करिबे योग्यहै सो करन कहियत आप ॥ तुम भई जातैं सुनहु ताके उदरमे करि वास । हम भए याते देवजानी स्वसा हो छबिरास ॥ तुम धर्म तत्व विचारिकै मति कहो ऐसे बैन। हम रहे सुखसौं निकट तव लहि कृपा आनद ऐन॥ अब जात तुमसौं पूछिकै पथ कुशलकौं कहि देहु। सो स्मर्ण करियो धर्मपथसौं समय सहित सनेहु ॥ देवजानी उवाच ॥ हमधर्म अरु कामार्थ जाचति तुम न मानत तौन। नहि फलै बिद्या तुम्है कच सो लई मुनिसो गौन॥ ॥ * कचउवाच ॥ * ॥ गुरु पुत्रिकाहम जानि नाही करत देइ न दोष । नहि गुरू आज्ञा करी दीन्हो शाप तुम करि रोष ॥ बिनु धर्म जाने शाप दीन्हो सुनहु उत्तर तौन। ऋषि तनै तुमको मिलैगो नहि पाणिग्राहक जान ॥ नहि फलैगी यह तुम्है बिद्या शाप तौन तथास्तु। हम जाहि देहैं ताहि फलिहै सुनहु बिद्यावास्तु ॥*॥ वैसम्पायन उवाच॥ *॥ कहि देवजानी सो चले कच गए अपने धाम। कच आगमन सुनि सहित सुरगण इन्द्र लहि मुद माम ॥ भजि बृहस्पतिकौं गए कचपैं प्रीतिपावन छाय ॥ * । देवाउचुः ॥ * ॥ तुम कियो मम हित कर्म सो अतिचित्र बरणि न जाय ॥ ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ कच परम बिद्या लही यातैं भए सुर सुख रूप। पढि तौन सिगरे अमर भए भे मरण निर्भय भूप ॥ सब जायकै सुरनाथसो इमि कहन लागे बैन। अब भो समय तो पराक्रम को हनहु असुर सचैन ॥ सुनि सुरनसौं सह चले सुरपति बिपिनिमे अभिराम। सरमाह क्रीडति लखी युवती भरी रूप ललाम ॥ तब बायु ह्वैकै बसन सबके दिये उडाय मिलाय।

ते निकसि जलत लगी पहिरण तीर सहसा आय।।पट देवजानीको सर्मिष्ठा पहिरि लीन्हो जान । नहि जानि लीन्हे मिले सिगरे भरेरंगन तौंन ॥ तब भो परस्पर कलह तिनसौं भरी अति मदसाज। गुरुसुता यह वह दैत्यपतिकी कन्यका बलवान ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ शिष्यकन्या आसुरी आचारहीन अपूत । पट पहिरि लीन्हो आइ मेरी नहीं हेरो धूत ॥ * ॥ शर्मिष्ठोवाच *॥ तव पिता मेरे पिता की निति करत सुस्तुति आय । लहि भीख ज्यावत तुम्हे सो मो पितासौं बसुपाय ॥ है भिक्षुकी हौ सुता ताकी प्रतिग्रही तो तात । तुम रोय लोटऊ शीश कूटऊ करऊ किन अपघात ॥ मो सदृश है नहि भिक्षुकी तू कहा तेरी बात । हम सहैं अवज्ञा कहो तुम जो मानि गुरुको नात ॥ पट गहैं हीं लखि देवजानी चीन्हि रुठसा छाय । गहि ताहि दिय विषपर्व कन्यै कूपमे डरवाय ॥ मृत जानि सर्मिष्ठा सुघरकौं गई यह करि पाप । तहँ गए आय ययाति भूपति तृषाको लहि दाप॥मृग मारिवेके लोभ लागे श्रान्त व्है अतिभूप।तृणलता छादित बिना जलको जाय देखो कूप ॥ तहँ देखि भूपति परम कन्या दीप योति समान । तब भूप पूछो कौन हौ तुम रूपमय सुखदान ॥ हे कूपमे तुम गिरी कैसे कहऊ कारण जौन । सुनि भूप बचन सुदेवजानी कहन लागी तौन ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥*॥ देव मारत दैत्य तिनको करत जो सह प्रान । हम तौन उसना सुमुनि की हैं कन्यका सुखदान॥यह ताम्र नखको पाणि दक्षिण देति हु हम तोहि । गहि करऊ बाहर कूपके तुम भए सम्मत मोहि ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच * ॥ नृप जानि ताको ब्राह्मणी गहि लियो दक्षिणपानि। किय कूप बाहिर भूप ताको रूपकैसी खानि।। तब भूप तासा बिदा व्है कै गए अपने धाम । तहँ रही बैठी देवजानी रोष पूरितमाम ।। जब गए भूप ययाति आई देवजानी पास । घूर्णिका नामा सुदासी भरी शोक प्रयास ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ यह बेगि दासी जायकै कहि पिता पास निदेश। यहि नगरमे बिषपर्वके हौं कराेगी न प्रवेश ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ सो त्वरित तेहां जाय दासी शुक्रमुनिके पास । सो कहो सब बृत्तान्त तासौं भरो शोक उदास ॥यह कहो है मुनि देवजानी परी बनके माह। बिषपर्व कन्यै हनो ताकौं सुनऊ हे मुनिनाह॥यह सुनत आतुर चले मुनि गे देवजानी पास । लखि ताहि उरसा लाय ऐसैं कहो मुनि तपरास ।। जन लहत अपने दोषतैं सुख दुःख तौन महान । तुम कियो कछु अपराध ताको लहो फल अतिमान ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ बिषपर्वकन्यै कहो है सो सुनसु हे मुनि बात ।मो पिताको हैं द्विज प्रसंशक सदा तेरो तात॥हे भिक्षुकी तो बाप भिक्षुक प्रति ग्राहक बिप्र । बिषपर्वकन्यै कहो ऐसे मोहि प्रति अति छिप्र ॥ करि क्रोध पूरण दर्प ऐसे भरी अति उतपात । हम कहा कन्या रावरी तुम कहा ऐसे तात ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ हम हैं न ऐसे सुनऊ जाकी सुता हो तुम पर्म।बिषपर्व जानत मोहि जानत नऊष सुत युत धर्म॥ बल अचिंत्य

५० अदृष्ट ईश्वर महत सो अभिराम । है हे समस्त सो बस्तु दीसति भूमि मे नभधाम ॥ हम तासु ईश्वर निलह यह है स्वयम्भुववैन । जलवृष्टि हमहीं करतह चित चाहि जगजन चैन ॥ हम ओषधिनको पोषिकै निति भरत गुणगण सब । यह देवजानी सत्य जानज्ञ कहत बचन अखर्व ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनि बचन मधुर सुनीति कहि किय देवजानिहि शान्त । जो रही ही अति भई पीडित छाय क्रोध महान्त ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ जे सहत हैं परबादकों तिन जगत जीते जानि । उत पतित क्रोध तुरङ्गसे जे गहत है मतिमानि ॥ हैं तेई यन्ता सदृश नर लहि नीति रज्जु सनेत । जे क्षमा जलसों क्रोध पावक कों शमन कार देत ॥ हे देवजानी जानि ते सब जीति जगतहि लेत । जे करत मख शतबरषलों प्रति मास हरष समेत ॥ ते क्षमावानहि तुलत नहिं यह कहत ह मतिमान । हे लरत बालक धीर धरि करि क्रोध अतुल अयान ॥ अनुसरत हैं नहि तिन्है तिनके पिता माता तज्ञ । है क्रोधसा नहि पाप दूजो क्षमासों नहि यज्ञ ॥ ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ हमहोय बाला धर्म्म ओर अधर्म्म अन्तर जैांन । अरु क्षमा क्रोध बलाबलो सब नात जानति तैांन ॥ जब शिष्य गहत अशिष्यता तब सहत हैं न सुजान । मम बास रोचत हैं नहीं सङ्कीर्ण बृत्ति विधान ॥ अति बचनतें अभि जननको हैं करत निन्दा जान । ओचहत ते नहि बसत तिनमे पाप पुर है तैांन ॥ जैांन अपनेका सुजानै बृत्तको सुप्रकास । तिन साधुजनके निकट रहिवो होत उत्तम बास ॥ विषपर्ब जाके बचन दुःसह मथत हृदय अमान । अति अग्नि कामी यथा अरणी दारुकों बलवान ॥ निति भजत शत्रु समृद्धिकों हैं जन अकिञ्चन जैांन । सुनु मरेहूतें अधिक ते ह तात बरमति भैांन ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ तब क्रोध करि ऋषिगए हो विष पर्ब जंह बर भूप । इमि कहन लागे बचन तासों भए उग्र स्वरूप ॥ नहि चरित फलत अधर्म्मको ततकाल गो सम जैांन । अघकियो असकृत बऊत दिनमै मूल काटत तैांन ॥ वह पुत्र पैात्रहि देत फल जैां नहीं देखत आपु । सो मिटत है नहि कैसेहूँ ह्यत पापको सन्तापु ॥ तुम हनो कचकों अङ्गिरस को पैात्र द्विज तप धाम । नहि योग्य बधके शिष्य मेरो भक्त अति अभिराम ॥ फिरि देवजानी सुताको तुम कियो अति अपमान । विषपर्ब तुम्हरे बंशको हम करत त्याग महान ॥ नहि रहगे तो देशमे मो बचन जानत सांच । तुम करत अपने दोषकी नहि शान्ति मानत लांच ॥ ॥ * ॥ विषपर्बोवाच ॥ * ॥ हे धर्म्म सत्य समूह मोपर कृपाकीजे नाथ । सबभांतिसा दिति बंश कोहै कुशल तुम्हरें हाथ ॥ तुम जाऊ गे तजि हमै तैा हम जाय सिन्धु समात । है न हमकों शरण अन्यत छोडि तुमकों तात ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ हे देवजानी को न अप्रिय सहो हमसों जात । तुम करऊ ताहि प्रसन्न जातें मिटै सब उतपात ॥ * ॥ विषपर्बोवाच ॥ * ॥ असुरेंद्रकी जो ऋद्धि सिगरी आप ईश्वर तास ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ तो ऋद्धिके हम सत्य ईश्वर सहित बंश विलास ।

कुरु देवजानीकौं प्रसन्न सु दैत्यकुल अवतंश ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ गे देवजानीके आ॰प॰
निकट विषपब सुमुनि प्रसंश ॥ सब कहो मुनि विषपवके बर बचन परम प्रमान ॥ * ॥ देवजानी
उवाच ॥ सुनि देवजानी कहो मो सौं कहहुँ नृपति सुजान ॥ * ॥ विषपर्वोवाच ॥*॥ तुम देवजानी
कहहु सो हम करहिँ सत्य न आन ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ तो सुता कन्या सहस महँ
मम होय दासीमान ॥ अनुजाय मेरे पिता मेरो जहां मोको देय ॥ * ॥ विषपर्वोवाच ॥
विषपर्व धात्री तास पठई जाय आवहु लेय ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ सो जाय धात्री भूप
तनया सौं कहे इमि बैन । उठि चलहु हे शर्मिष्ठ चाहति वंश को जौं चैन ॥ शुक्र छोडत
दितिज कुलकौं देवजानी हेत । जो देवजानी कहै सो चलि करहु सखिन समेत ॥ * ॥ शर्मिष्ठो
वाच ॥ * ॥ जो देवजानी कहैगी हम करैंगीं सो सर्व । नहि शुक्र जांहि न देवजानी दाष
लहि मोखर्व ॥ * वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ तब सहस कन्या सहित आई चढी शिबिका तौन ।
लहि परम शासन पिताको तेहि कियो पुरतेँ गौन ॥ * ॥ शर्मिष्ठोवाच ॥ * ॥ द्वै सहस कन्या
सहित तो परिचारिका अभिराम । अनु चलहिँगी जब जाहुगी तुम परममतिके धाम ॥
॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ हम भिक्षु को प्रतिग्रही कन्या मो प्रसंशक तात । तुम हो प्रसंशित
भूपकन्या कहति हो का बात॥ * शर्मिष्ठोवाच ॥ * ॥ अब होय जैसेँ ज्ञाति रक्षण तथा हमको
कार्य।अनु चलैंगीं तँह जहां तुमकौं पितादेहै आर्य॥सुनिकै प्रतिज्ञां तासकी इमि दास भावप्रमान।
तब देवजानी पितासौं इमि कहे बचन सुजान॥*॥देवजानी उवाच॥*॥है सत्य तो विज्ञान विद्या
महाबल तपधाम ॥ वैसम्पायनउवाच॥*॥ कहि देवजानी यौं सु पूजित गई स्वपुर ललाम ॥ कछु
घोस बीते देवजानी गई क्रीडा हेत । वर विपिनि तेही असुर तनया सङ्ग सखिन समेत ॥ * *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सहस सखी सगँ लएँ सुजान । शर्मिष्ठा सेवति सुखदान ॥ तहां जाय बिहरति अभिराम ।
क्रीडा करति यथा मन काम ॥ पियति माधवी मधु सुखदान । भोजन करै अनेक बिधान ॥ तँह
ययाति नृप मृगया हेत । आए भरे त्रिषासौं चेत ॥ लखो देवजानिहि अभिराम । शर्मिष्ठा
सेवति छवि धाम ॥ शुक्र सुता बैठी लखि भूप । शर्मिष्ठा सेवति अनुरूप ॥ द्वै सहस
कन्या चहुँ पास । बैठी मध्य दोय छबि रास ॥ भूप जाय ढिग बोले बैन । को तुम कहा
नाम छबि अैन ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ शुक्रसुता हमहैँ सुनु भूप । यह मो सखी अनुग
अनु रूप ॥ विषपर्वादनुजेन्द्रकुमारि । अनुचर है यह सखी हमारि ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥
किमि तव भई अनु चरीवाम । दैत्यराजकन्या अभिराम ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ होत
सोई बिधि बिरचित जौन । कथा बिचित्र कहै सब कौन ॥ रूप बेष तो भूप समान । ब्राह्मी

५० बचन कहत सुख दान ॥ कहा नाम तुम काके पुत्र। आए कहाँ बसत तुम कुत्र ॥ यजातिरुवाच॥ ब्रह्म चर्य मे वेदाध्ययन । कियौ समस्त सुनो छबि अयन ॥ नहुषपुत्र हम भूप यजाति । सोम वंश जगमे बिख्याति ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ कौँन हेत इत आए भूप । सो कहिए विधिवत शुभ रूप ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ मृगयासक्त सलिल के हेत। इत आए हम रूप निकेत ॥ सुन्दरि करिए आज्ञा जौन । उचित होय सो करिए तौन ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ द्वै हजार कन्या सह नाथ । शरमिष्ठा दासी मो साथ॥ तो अधीन हम भई उदार । होहु सखा मेरे भर्तार ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ उसनसविप्रसुता अभिराम । हम तो भर्ता योग्य न बाम ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ ब्राह्मण क्षत्री सम्भव सङ्ग। भयो सुनहु वर बिधिके अङ्ग ॥ तुम राजर्षि नहुषसुत भूप। हो ऋषिपुत्र समान अनूप ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ एक देह भव चारो वर्ण । बिप्रा चार बिप्र अनु सर्ण ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ पाणिग्रहण को धर्म अनूप। प्रथम गहे सो भर्ता भूप ॥ प्रथम गहो तुम मेरो पानि । तब हम तुम्हे कियो पति मानि ॥ ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ क्रुद्धसर्प पावक तैं उद्ध । हैँ दुर्धर्ष बिप्रवर इद्ध ॥ देवजानी उवाच ॥ सर्प अग्नि तैं द्विज दुर्धर्ष। कहहु भूप विधिवत उत कर्ष ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ दहत सर्प शिखि तैं है एक । विप्रक्रोध तैं दहत अनेक ॥ यातैं देइ पिता तव तोहि । तब तुम बरहु अवश्यक मोहि ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ तूंतो मागत है नहि मोहि । मै हौं बरती हौं नृप तोहि॥ अदत्त बरहु तुम मोहि नरेश। पिता दानकौं करु न अँदेश ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच धात्रीसौं सब कहि सु निदेश। पठयो पिता पास सन्देश॥ शुक्र पास सो जाय सचैन । कहे देव आनीके वैन ॥ सुनत शुक्र यह बचन अनूप । देखो आय भूपको रूप॥ देखत भूप शुक्र तप धाम प्रणत चरण बन्दे अभिराम ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ राजा नहुषपुत्र यह तात। गहि कर मोचो कूप निपात ॥ मोहि देहु इनकौं सनमानि। और गहै गो को मो पानि ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ बरो सुता मम तुम्हे नरेश। देत तोहि महिषी उद्देश ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ अधर्म मोहि न जाते होय । वर्णसङ्करज करु मुनि सोय ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ तो अधर्म हम मो चब भूप। मागहु वर इच्छा अनुरूप ॥ वरि मम सुता शुभा अति पर्म। लहहु प्रीति अति भूप सधर्म॥ यह कुमारि शर्मिष्ठा जौन। कन्या विषपर्वा की तौन ॥ याको भरण करेहु अनु रूप। सुनहु सैन संगम बिनु भूप ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ मुनि प्रदक्षिणा करि नरनाह । शास्त्ररीति सो कियो बिबाह ॥ पाय देवजानी वर बाम । लहो शुक्र सौं धन अतिमाम ॥ द्वै सहस्र कन्या अति रूप । शर्मिष्ठा सह पायो भूप ॥ पूजो शुक्र सहित दनुजेन्द्र । गए बिदा ह्वै के मनुजेन्द्र ॥ गए यजाति स्वपुर अभिराम । सहित देवजानी छबिधाम ॥ सुदेवजानी को मत पाय । बन

अशोक ढिग धाम बनाय ॥ शर्मिष्ठा को राखो भूप। तहँ भरि सौख यथा अनुरूप ॥ दासी सहस सहित अभिराम । शर्मिंष्ठा तेहि निवसति धाम ॥ सहित देवजानी सुख रूप । करत विहार देव सम भूप ॥बज्जत दिवस बीते ऋतु पाय ।गर्भ देवजानी सुखदाय ॥ धरो गएँ दशमास उदार । प्रथम परस भो दिव्य कुमार ॥ वर्ष सहस जब गयो बिहाय । शर्मिष्ठा यौवन ऋतु पाय ॥ चिन्ता आतुर भई सकाम । बिना लह पति सधरम बाम ॥ कहा भयो का करौं बिचारि । यह दृढ कियों हिए निर धारि॥शुक्र सुतैं जैसैं पति ताहि। बरो तौन विधि हौंहू वाहि॥ भूपपुत्र फल देहे मोहि। निहचै परति चिन्त मो जोहि ॥ जौं एकान्त मे नृप इत आय । विधि बस मो गोचर व्है जाय ॥ विधि बस तहँ कढि आयो भूप । शर्मिष्टहि तहँ लखो अनूप ॥ बनी अशोक पास अभिराम। बैठी सुरति मनो विनु काम॥ अन्य रहित तँह बैठे भूप । लखि शर्मिष्ठा समय अनूप।।साञ्जलि गई भूप के पास । बोली बचन भरी मृदु हास ।। * ।। शर्मिष्ठोवाच ॥ * ॥ बिलु सोम सुरपति तव धाम। बसति जो वास परम अभिराम ।। अन्य पुरुषको देखै ताहि ।कहो भूप यह मिति मत चाहि॥ रूप शील कुल जानत भूप। याते मागति हौं अनुरूप ॥ कृपा सहित रति दीजे मोहि।भर्ता और न मो तजि तोहि ।। हौं जानत तो शील स्वरूप। नख शिखलौं रुचि भरी अनूप ॥ उसना कहो व्याह मे जौन। सुनो सुखश्रुति जानत तौन ॥ ***********

॥ शर्मिष्ठोवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

क्रीडामे बनिता निकट व्याह प्राण भय पाय । धनाहरण मे होति है मिथ्या अति सुखदाय ॥
बुध्ह शास्त्री कहत हैं अनृत जानिके जौन । परत नरकमे जाय सो मिथ्या पतित सो तौन ॥

॥ * ॥यजातिरुवाच ॥ * ॥

राजा शीचक प्रजनको बिनसत मिथ्या बोलि । कष्टऊमे मिथ्या नही कहै सत्यत डोलि ॥

॥ * ॥ शर्मिष्ठोवाच ॥ * ॥

द्वे है सम मत सखी पति होत सो पति सम तौन। सखी व्याह सौं व्याह सम वरै शचीपति तान॥

॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

ब्रत हमारो जौंन मागत देत ताकौं तौंन । याचतीहो हमैं तुम सो कहहु इच्छा जान ॥ शर्मिष्टोवाच ॥पाप तैं मोकौं बचावो राखि स्वधरम भूप।पाय तुम तैं प्रजा जगमैं करौं धर्म्म अनूप॥तीनि हैं ए अधन भूपति पुत्र भार्या दास।सुनो इन तीनोनको धन तास हैं ए जास॥देवजानी प्रिया तो हम भई दासी तास।और पति मो होय गोको भजहु आनद रास॥वैशम्पायनउवाच॥भूप बोलि तथास्तु तासा ताहि अति सनमानि।भरे आनद दनुज जाको गहो करसौं पानि॥करि समागम दुहुनसौं दोउ उलहें अतिशय मोद।दुहूँ न पूजे दुहुनकौं मन मान पाय बिनोद ॥गए दोऊ धाम अपने काम कौ

आ०प० तुकछायालहोशर्मिष्टाजु तासौं गर्भसङ्गम पाय॥कालपाय सुभ जो ताके पुत्र अति अभिराम।देवजानी शोचकरि सुनि गई ताके धाम ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ कहन लागी बचन ऐसे भरी शोच सन्ताप। काम लालच लागि सुन्दरि कियो का यह पाप॥ शर्मिष्टोवाच ॥ अतिथि आयो एक दिन ऋषि महा तपको धाम। दयो वर यह भयो तातें पुत्र अति अभिराम ॥ * ॥ देवजानीउवाच॥ भयो ऐसें बहुत नीको पुत्र तुमकौं बाम। चहति जानो तौन मुनिको कहहु गोत्र सुनाम ॥ * ॥ शर्मिष्टोवाच ॥ * ॥ भरोहो तप तेजसों मुनि यथाग्रीषम भानु। नाम गोत्र न बूझि ताको सकी तात मानु ॥ * ॥ देवजानीउवाच ॥ * ॥ भयो असो जौन है तौ कछू मेरे रोष। पुत्र पाई परम मुनिसो भई तुम निर्दोष ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ अन्योन्य ऐसें कहि सु दोऊ बिहसि कै अभिराम॥ देवजानी भरी आनद गई अपने धाम ॥ देवजानी के भए सुत दोय अति सुखदान। जेष्ठ यदु सु कनिष्ठ तुर्वसु परम देव समान ॥ भए शर्मिष्टातनय त्रय द्रुह्यु अनु पुरुवीर। भरे आनदसो बिलोकि यजाति भूप गम्भीर ॥ कछू दिनपर देवजानी अरु यजाति नरेश। गए बनकौं भरे आनद जहां निर्जन देश ॥ लखे खेलत तहां जाय कुमार चारु सुरूप। भरी बिस्मय देवजानी रही चाहि अनूप ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ कहौ काके कुवर हैं ए भूप अति सुखदान। तेज तें अरु रूपतें ए लगत आपु समान ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ भूपसों तब पूछिकै इमि देवजानी बन। लगी बूझन बालकन सौं करैं चित्त अचैन ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ कहा नाम सु वंश तुम्हरो पिता माता कौन। कहहु तुम सब सत्य हमसों सुनो चाहति तौन ॥ बालकन तब अङ्गुलीसों दियो भूप बताय। अरु कह्यो शर्मिष्ठा हमारी जननिहै सुखदाय ॥ * ॥ बैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ एहि भांति कहि कै सकल बालक गए भूपति पास। भूप आदर कियो नहि लहि देवजानीत्रास ॥ गए शर्मिष्टानिकटते करत रोदन बाल। सुनत बालक बचन ब्रीडित भए तब छितिपाल ॥ बालकन को भूप पैं इमि देखि प्रेम ललाम। देवजानी कहो तेहां कुटिल बाणी आम ॥ * ॥ देवजानोउवाच ॥ * ॥ होयकै आधीन मेरो कियो अप्रिय पर्भ। आसुरीत डरी नेकुन करत आसुर कर्म ॥ * ॥ शर्मिष्टोवाच ॥ * ॥ जान ऋषि हम कहो तुमसों तौन सत्य न आन। डरी यातें नहीं कीन्हों न्याय धर्म समान ॥ बरो तुम जब परम भर्त्ता बरो हम तब तौन। होत भर्त्ता सखी भर्त्ता सुनहु सुन्दरि जान ॥ पूज्य मम तुम ब्रह्मकन्या पूज्य तुमकौं भूप। भयो तुमतें पूज्य हमको भूमिपाल अनूप ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनें ऐसे बचन ताके देव जानी क्रुद्ध। कहो हम इत रहैंगी नहि कियो अप्रिय उद्ध ॥ चली सहसा शुक्रपैं करि सजल राते नैन। भूप ताके चले अनु नहि कह मानति बैन ॥ गई आतुर शुक्रके ढिग प्रणत परसे पाय। भरे खेद यजाति भूपो तहां पहुंचे जाय ॥ * ॥ देवजानी उवाच ॥ * ॥ धर्म्मकौं जु अधर्म्म जीतो भो

व्यतिक्रम सर्व। अधिक मोतेँ असुरकन्या भई सुमुनि अखर्व ॥ तीनि जाए पुत्र ताने नृप यजाति उदार। भए मम दुर्भाग्यनीकेँ तात दोय कुमार॥ धर्मातमा विख्यात हैँ यह नक्रुषनन्दन जान करो है उल्लङ्घ तुम मर्य्याद बाधी तौन ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ धर्मज्ञ ह्वै कै कियो तुम सु अधर्म अप्रिय भूप। जरा धर्षित तुम्हे करि है अचिर आयु कुरूप ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ आइ मांगो सुनऊ ऋतुबर बिहित धर्म्म विचारि। दियो यातेँ जानि उचित अनन्यगति निर धारि ॥ देइ नहिँ ऋतुदान मांगेँ पुरुष करि अपमान। होत है सो भ्रूणहा यह कहत बिदुष प्रमाण ॥ काम आतुरगम्य लिय ऋतुदान मांगै आय। देत नहि सो भ्रूणहा नर बिहित धर्म नशाय ॥ जानि कै यह धर्म कारण सुनऊँ मुनिबर तौन। पापभयतेँ कियो हम बिषपर्बजाको गैान ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ लई मेरी नही आज्ञा होय मो आधीन। चैार यातेँ भयो धर्मा चारमा हि प्रबीन ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ जरा नृपयजाति पाई पूर्बबय तजि तौन। उग्र उशनस शापसोँ अतिशीघ्र सुसुखिति दैान ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ अतृप्त हैाँ मै देवजा नीसे सु यैावन पाय। कुरु कृपा मुनि जरा जातेँ ग्रसै मोहि न आय ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ मृषा होत न बचन मम तुम जरा लहि हैा भूप। जरा चाहऊ देऊ ताको लेऊ बैस अनूप ॥ ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ राज्य कैारनि पुण्य मेरो लेइगो सुत तैान। जरा मेरी लेइ यैावन बयस देहै जैान ॥ * ॥ शुक्र उवाच ॥ * ॥ देऊ जाकोँ चहऊ ताकोँ जरा करि मम ध्यान। लेऊ जाकी बैस ताकोँ करऊ नृप सुखदान ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ जरा पाय यजाति भूपति गए स्वपुर सखेद। ज्येष्ठ तनय बोलाय यदुसोँ कियो बचन निबेद ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ जरा मेरी लेऊ अपनो मोहि यैावन देऊ। बिषय तृप्ति न भई मोकोँ पुत्र यह सुनि लेऊ ॥ वर्ष एक सहस्र यैावन सह बिषै करि भोग। फेरि यैावन दै तुम्है हम जरा लैहैँ रोग ॥ * ॥ यदुरुवाच ॥ * ॥ जरा दोष अनेक भाजन पापपुञ्ज कुरूप। जरा यातेँ नहीं लैहैँ सुनऊ तुमतेँ भूप ॥ पुत्र तुम्हरे बऊत हमसोँ महत प्रियतर ग्रैार। जरा दैकै लेऊ यैावन तास नृप सिरमैार ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ पुत्र ग्रैारस होय तुम नहि देत यैावन मोहि। बंश होय अराज तुम्हरो कहत हैँ हम तोहि ॥ लेऊ तुर्बसु जरा मेरी मोहि यैावन देऊ। गयो अबही नहीं मेरो बिषयभोग सनेऊ ॥ तुर्बसुरुवाच ॥ कामभोगबिनाशिनी बलरूपहरणी जैान। बुद्धिध्वंसनि जरा भूपति हम न लैहैँ तैान ॥ ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ पुत्र ग्रैारस होय तुर्बसु कहत ग्रैसे बैन। सुनऊ यातेँ लहऊगे तुम प्रजा नाश अचैन ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ देइ ग्रैसेँ शाप तुर्बसुकोँ यजाति नरेश। द्रुह्य शर्मिष्टा तनयसोँ कियो फेरि निदेश ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ वर्ण रूपबिनाशिनी यह जरा मेरी लेऊ। द्रुह्य बर्षहजारलोँ तुम मोहि यैावन देऊ ॥ गए बर्ष हजार देहैाँ फेरि यैावन तोहि।

आ०प०

आ०प० जरा पापस्वरूप मेरी फेरि दीजो मोहि ॥ द्रुह्युरुवाच ॥ होत है असमर्थ सबविधि पाय कै नर जौन। भूप ऐसी जरा दारुण लेहिंगे नहिं तौन ॥ ययातिरुवाच ॥ होय औरसपुत्र यौवन देत हौ न हि मोहि। द्रुह्य यातैं कामनाप्रिय नही मिलि हैं तोहि ॥ ययातिरुवाच । पापमय यह जरा मेरी करहु अनु स्वीकार॥ देहु यौवन मोहि अपनो औधि वर्ष हजार॥अनुरुवाच॥ जीर्ण शिशु पुनि होय भोजन करत नर अपवित्र॥ कर्महा नहि जरा लेहौं जास विषम चरित्र॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥*॥ कहत या अनु नही लैहैं जरा अतिदुखदाय। पुत्र लखि हौ आपने सब नृतक यौवन पाय॥ अग्नि होत्रादिकनसौं तुम रहित ह्वै हौ अत्र।पाय मेरे श्राप वारो दोप है अकृतज्ञ॥ययाति रुवाच॥सुनहु सुत प्रियपुत्र मेरी जराको तुम लेहु । हेतु विषयबिलास यौवन आपनो मोहि देहु ॥ लहो उशनसश्राप तृप्त न भयो यौवन पाय । लेहु मेरो जरारूपी पाप यह दुखदाय ॥ विषयको हो भोग कछुदिन करो तो बल लेय। गए बर्ष सहस लेहौं जरा यौवन देय ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥*॥ पिताके सुनि वचन ऐसे पुरू परमसतिमान। भूप तुम जो कहत हौ सो करौंगे सुखदान॥ लेउँगो हौं जरा देहौं तुम्हैं यौवन भूप।तात आपु बिहार कीजै स्वेच्छया अनुरूप॥*॥ययातिरुवाच॥*॥ देत हौं पुरुपुत्र तुमकौं वचन यह सुखदान। होंहिंगे तो प्रजा राजा महत सम्पतिमान ॥ किधौं उशनस ध्यान ऐसैं वचन कहि कै भूप। दई पुरुको जरा लीन्हौं आपु यौवन रूप॥ पाय यौवन भूप लागो करण विषय बिलास। भांति नाना यथा इच्छा रमत आनदरास ॥ काम सुख उत्साह धर्म हि रच्छिकै अभिराम। विषय भोग ययाति भूपति करत भो बलधाम ॥ यज्ञतैं करि तृप्त देवन्ह श्राद्धतैं भरि पित्र। दानतैं करि तृप्त भिक्षुक मानतैं द्विज मित्र॥ भक्ष्य भोजनतैं सु अतिथिन वैश्यजन गण पालि। सूद्र शासन सहित राखे खलनके गण घालि ॥ प्रजा पाल्यो धर्मसौं करि मनोरञ्जन भूप । यथा पालत जगतको सुरराज बरषि अनूप ॥ नरसिंह भूप ययाति पाले प्रजा धर्म सु नीति। करै नाना भांतिसौं वर विषयभोग सप्रीति॥ तृप्त भोगनसौं भयो अरु भयो खिन्न नरेश। गए वर्ष सहस समुझे भूप परम निदेश॥ सहसु विश्वाची अप्सरा जाय नन्दन मांह। भोग कीन्हौं काम कौतुक कलासौं नरनांह॥ जाय अलकापुरीमे चढि मेरुशृंग सुदेश । भोग नाना भांतिसौं करि भयो तृप्त नरेश॥ पूर्णवर्ष सहस्र भो तब पुत्र पुरुपहँ आय। कहो ऐसी भांतिसौं लखि परमआनद पाय॥भोग कीन्हैं भोगकी इमि कामना नहि जाय। हविष डारो जितो तितनो हव्य वह सरसाय॥ दुःख जानो दुर्मतिनसौं सदा जीर्ण न होति।तौन तृष्णारोग छाडैं शान्ति सुमति तनोति ॥ भयो वर्ष सहस्र पूरण पुत्र यौवन लेहु । जरा मेरी पापरूपिनि ताहि मोकौं देहु॥ सुनहु यातैं छोडि याकौं ब्रह्ममाहि ललाम। लई कै वन बसौंगो मृगगणनमे अभिराम॥पुत्र होय प्रसन्न हम तव देत यौवन लेहु। देव राज्य समृद्ध तुमही पुत्र सहित सनेहु ॥ * ॥ बैसम्पायन

उवाच ॥ * ॥ जरा लीन्हो भूप यौवन लियो पुरु अभिराम । राज्यको अभिषेक पुरुकौं चहा भूप ललाम ॥ ब्राह्मणादिक वर्ण आए भूपपैँ मतिमान । कहन लागे सकल ऐस नीति रीति विधान ॥ शुक्रकन्या पुत्र जेठो छोडि कै यदु ताहि । देत पुरुकौं राज भूपति कौन नीति निबाहि ॥ ज्येष्ठको अतिक्रमण करि नहि लहत राज्य कनिष्ठ । दियो तुमहि जनाय भूपति धर्म पालहु शिष्ट ॥ * ॥ ययाति उवाच ॥ * ॥ ब्राह्मणादिक वर्ण सिगरे सुनहु मेरो बैन । ज्येष्ठसुतकौं राज्य यातेँ देय हमकौं हैँन ॥ ज्येष्ठयदु नहि कियो मेरे बचनको सनमान । पिता आज्ञा भंग कारक सो न पुत्र समान ॥ यदु और तुर्वसु द्रुह्यु अनुसौं कियो आज्ञा जौंन । वचन मेरो भंग करि कै कियो नहि इन तौंन ॥ कियो पुरु सो वचन पालन धर्म धारण शिष्ट । जरा मेरी लई पुरु सो राज्यभाक कनिष्ठ ॥ शुक्र मोकौं दयो बर तो जरा ले है जौंन । पुत्र सोई राज्यभागी होय सो नृप तौंन ॥ कहहु तुमहू ब्राह्मणादि सकल वर्ण समाज । उचित है यह देहु पुरुकौं भूप विधिवत राज ॥ * ॥ प्रजाउवाच ॥ * ॥ पुत्र गुणसम्पन्न माता पिताको हित होय । योग्य है सब लहै सो यदपि अवरज सोय ॥ * ॥ बैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ पौर जनपद जननके सुनि बचन भूप ययाति । राज्यको अभिषेक पुरुकौं कियो नीकी भांति ॥ देइ पुरुको राज्य बनकौं लई दीक्षा भूप । गए तापस द्विजनके सँग धारि तपको रूप ॥ भयो यदुको बंश यादव जवन तुर्वसु बंश । द्रुह्युके भे भोज अनुको बंश म्लेच्छन संश ॥ भयो पुरुको बंश पौरव परम कीरतिमान । भए जासे भूप तुमसे धर्मसे सुखदान ॥ बसे बनमे जाय भूपति खाय फल अरु कन्द । अग्नि पितर सु देवतनकौं तृप्त करि तजि द्वन्द ॥ अतिथिको आतिथ्य कीन्हो बन्यफलसौं भूप । रहे कछु दिन धारिकै नृप शिला वृत्ति अनूप ॥ पूर्णबर्ष सहस्र ऐसें रहो भूपति तौंन । रहे बर्ष सु तीस तहां पान कै जल सौंन ॥ एक बर्ष सु बायु भक्षण कियो नितिप्रति भूप । पञ्चाग्निमे तप भए करते एक बर्ष अनूप ॥ *

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

एक चरणसौं ठाढे भूप । रहे मास षट अचल स्वरूप ॥ पुण्य कीर्त्ति करि तप अभिराम । गए स्वर्गकौं तेजसधाम ॥ रहे स्वर्गमे कछुदिन जाय । भूप ययाति मोदसौं छाय ॥ कछू कालमे इन्द्र गिराय । दियो स्वर्गतेँ कारण पाय ॥ नभतेँ गिरि पुहुमीपर भूप । आए नहि यह सुनो अनूप ॥ गए ययाति स्वर्गकौं स्वच्छ । फेरि सुनो हम भूपति दच्छ ॥ राजा बसुमत अष्टक साथ । प्रतर्दन सु शिविसह नरनाथ ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ कौन कर्म्मसौं भूपति फेरि । गए स्वर्गकौं कहहु निबेरि ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ गए स्वर्ग फिरि भूप ययाति । सुरसह रहत पाय बिख्याति ॥ देवलोक अरु ब्रह्म सुलोक । तहां करत सञ्चार अशोक ॥ दीर्घकालसौं तहां बास ।

आ०प० सुनो यजाति कियो सुखरास ॥ नृप यजाति बर पुरुख प्रकाश । गए एकदिन सुरपति पाश ॥ नृपसों कथा प्रसङ्गहि पाय । पूछत भए शक्र सुरराय ॥ * ॥ शक्रउवाच ॥ * ॥ पुरु धरि कै तव जरा उदार । भूप कियो छितिपर सञ्चार ॥ फिरि दे राज्य कहो तुम जौन । कहिए भूप सत्य सो तौन ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ गङ्गा यमुना मधि जो देश । ताके पुरु तुम होऊ नरेश ॥ मध्यदेश अरु भूको जौन । तौन ऊ लहो तुमहि बलभौन ॥ प्रान्तदेश शासन कहँ देऊ । फिरि परस्पर रहेऊ सनेऊ ॥ क्रोधीतैं अक्रोधाविष्ट । क्षमावान अक्षमते शिष्ट ॥ पशुतैं मानुष ज्यौं मति मान । यथा मूर्खतैं विदुष सुजान ॥ क्षमावानसों करत न क्रोध । क्रोधिनसों लहि क्रोध विरोध ॥ क्षमावानको चित्त विकार । करत सो क्रोधिनको संहार ॥ दुःखितकों मति दीजे क्लेश । बचन कठोर न कहिऊ विशेष ॥ करि अभिचार कर्म्म अरिनाश । यह विचार मति लीजो पास ॥ जौन बचन सुनि जन दुख लेत । तौन बचन नहि कहत सचेत ॥ दुखद कठोर तोक्षण कटु बैन । रहति न लक्ष्मी ताके ऐन ॥ सज्जन जाके चहुँदिशि रहत । बचन असज्जनके शत सहत ॥ खलके बचन बाणसे जौन । साधु सहत नहि पलटत तौन ॥ भूतनसे जो दया महान । मधुर बचन कहि दीबो दान ॥ यहि सम ईश्वर भक्ति न और । तातैं कहेऊ न बचन कठोर ॥ पूज्य पूजिए दीजै दान । जाचिए न कब हौऊ सुजान ॥ पुरुसों यह करि परम निदेश । दियो राज्य हम सुनऊ सुरेश ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ करि समाप्त सबकर्म्म नरेश । गृह तजि कै आए बनदेश ॥ बूझत सो कऊ सत्यस्वरूप । तो सम तपमे हो को भूप ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ सुर गन्धर्व मनुज ऋषि माह । मोसमको तपमे सुरनाह ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ करि सुर ऋषि नरको अप मान । गर्व बचन नृप कहे अजान ॥ तात क्षिन्न पुण्य ह्वै भूप । गिरऊ स्वर्गते मलता रूप ॥ * ॥ यजातिरुवाच ॥ * ॥ करि सुर ऋषि नरको अपमान । क्षिन्न पुण्य जौं भयो महान ॥ तौ मोहि डारऊ तहां सुरेश । जहां बसत सज्जन शुभदेश ॥

॥ * ॥ महीधरीछन्द ॥ * ॥

यह जानि सुर नर ऋषिनको नहि फिरि अनादर कीजियो । अब जाऊ भूप यजाति इततै संग सज्जन लीजियो ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ पतमान सुर पुरतैं यजाति हि देखि सुरसम आवते । तब आइ अष्टक राजऋषि इमि कहन लागे भावते ॥ * ॥ अष्टकउवाच ॥ * ॥ तुम कौन हो जुबवा सब सदृश तेज मह ानसे । बरजलद पटल विदारि नभतैं चले आवत भानसे ॥ लखि परत तुमकों गगनतैं हम रहे सर्व विचारि कै । तब नियत ज्ञान न होत हमकों लेहि जो निर धारि कै ॥ हम तुमहि पूछि न शकत आगैं तुम हमै बूझत न हो । तुम कौन हो अति रूप आवत कौन कारणसों कहो ॥ तजि मोह भय सत सङ्गमे तुम आय निर्भय ह्वै रहो । हे सुखच्युत सत

जननकों सतसङ्ग निर्भय पद अहो ॥ है ताप करमे अग्नि प्रभु बिस्तारमे धरणी सुनो । प्रभु होत अभ्यागत सु तैसैं सज्जननको हा गुनो ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ हम नहुष पुत्र ययाति हैं हत पुण्य व्है अनुमानिए । करि गर्वकों सुर लोकतैं चुत गिरत क्षितिपर जानिए ॥ हम बैश बृद्ध न कियो यातैं तुमहि बन्दि प्रणाम हे । हैं द्विजनसे अति पूज्य तपबर और बिद्यावान हे ॥ * ॥ अष्टक उवाच ॥ * ॥ तुम कहतहो सो सत्यहै यह सुजस भूप ययाति हे । हो वढे बिद्या बैश तपसे बंद्य हो सब भांति हे ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ है धर्म्म कर्म्म बिनाश कारक गर्व गहन कठोरजे । नहि लेत ताको सन्त जे हैं धर्म्म रक्षणसों रते ॥ हो पुण्य मेरैं बहुत सो तो गर्वसों बिनशित भयो । यह जानिके कामादिके बस होत नहि सो मतिरयो ॥ धनबान जे करि यज्ञ बर लहि पुण्य अति अवदातहैं । पढि बेद तप करि मोह तजि नर स्वर्गकों जे जातहैं ॥ नहि दुःख लहिके करिय खेद अदृष्ट बलवत मानिए । सुख दुःख पावत जीव सो तो दैव बल बस जानिए ॥ * * *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जानि अदृष्ट बली मतिमान । हर्ष करैं नहि खेद सुजान ॥ सुखतैं हर्ष न दुखतैं खेद । करत धीर जे बेत्ता बेद ॥ भयतैं मोह न अष्टक मोहि । नहि सन्ताप मानसिक जोहि ॥ धाता मोहि करी बिधि जौन । ह्वैहैं नियत तथा हम तौन ॥ स्वेदज अण्डज उद्भिज रूप । कृमि जलजीव भरे जे दर्प ॥ तृण काष्ठादि कर्म्मचय पाय । मिलत आदिकारण मे जाय ॥ सुख दुख दोऊ अनित्यहि जानि । अष्टक चित्त खेद न हिमानि ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनि ययातिके अष्टक बैन । पूछन लगे पुनर्भरि चैन ॥ ये ये लोक प्रधान अनूप । तिनमे बसे जितिक दिन भूप ॥ ते हमकों सब कहिए पर्म । तुम नारद सम वक्ता धर्म ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ हम हैं सार्वभौम बर भूप । तप बल जीते लोक अनूप ॥ सहस्र बर्ष करि तप अभिराम । लहि परलोक गए सुर धाम ॥ गए सुरेश पुरी सुखदान । सहस द्वार शत योजन मान ॥ बर्ष सहस्र तहां करि बास । महा मोद लहि बिबिध बिलास ॥ गए प्रजापतिलोक उदार । तहां बास करि बर्ष हजार ॥ फेरि सुनौ देवेश निवेश । जाइ बसे बहु दिवस सुभेश ॥ अमर पूज्य तँह भए अनूप । ईश्वर सदृश पाइ बर रूप ॥ फेरि बसे नन्दन बन जाय । होय काम रूपी मुद पाय ॥ तहां अयुतशत बर्ष बिहार । कियो अप्सरन संग उदार ॥ देवदूत तँह बोलो आय । तीनि बेर उच्चस्वर छाय ॥ ध्वंश यजाति भूप आत ध्याम । सुनत छोडि नन्दन बन माम ॥ सुनतहि भयो तहांते भ्रष्ट । क्षीणपुण्य व्है कै लहि कष्ट ॥ अन्तरिक्ष गत सुरगण बैन । सुकरुण कहे जे सुने अचैन ॥ गिरो स्वर्ग तैं भूप ययाति । क्षीणपुण्य व्है कै बिख्याति ॥ तब उनसौं हम कहो उदात । सतजनमाहिं करहु मम पात ॥ यज्ञभूमितो

दियो बताय। तिनसों देखि छिप्र सुख पाय॥ आयो यज्ञधूम अनुसार। ज्ञापक भरो सुगन्ध उदार॥ * ॥ अष्टकउवाच ॥ * ॥ नन्दन बनतें कारण कौन। पाय कियो बसुधाको गौन॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ क्षीणवित्तनरकों ज्यो जानि। त्यजत कुटुम्ब भृत्य अपमानि॥ क्षीण भएँ नर पुण्य बिसांति। त्यजत स्वर्गतें सुर तेहि भांति॥ * ॥ अष्टकउवाच ॥ * ॥ क्षीणपुण्य तँह कैसे होत। बढो मोहि यह संशय सोत॥ पुण्यवान जनकेहि के धाम। जात कहो तुम हमको आम॥ कहत भूप यह प्रश्न बिचारि। उत्तर देऊ परम निरधारि॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ क्षीण पुण्य तजि स्वर्ग नरेश। भूमि नर्कमे करत प्रवेश॥ स्वश्वादि जीवके भोजन हेत। तनु धरि विविधवृद्धि को लेत॥ तात दुष्ट कर्मको त्याग। करिवो उचित सुनऊ बरभाग॥ * ॥ अष्टकउवाच ॥ * ॥ नाना जीव खात करि नेह। फिरि सो होति कौन विधि देह॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ देह कर्मकृत धरि बऊरूप। जीव प्रगट व्है फिरत अनूप॥ देह नाशतें सुनऊ प्रकाश। होत नही आत्माको नाश॥ भौम नर्क यह देह बिधान। गनत न तँह बसि वर्ष प्रमान॥ लहिकै महा मोहको फन्द। सहित करै नहि यत्न अमन्द॥ वर्ष अनेक करत स्वर्वास। फेरि गिरत लहि पुण्य बिनास॥ धरत देह सो नर्क समान। नाना दुःख सहत सो प्राण॥ * ॥ अष्टकउवाच ॥ * ॥ नभतें गिरिसो आत्मा रूप। गर्भवास किमि करत सो भूप॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ जलमे मिलि सु होतहैं रेत। कर्म प्रभाव योनि सो लेत॥ रतस तिय रज संगम पाय। होत गर्भ कर्मज फल छाय॥ * ॥ अष्टकउवाच॥ * ॥ जलसों रेत कौन विधि होत। कहऊ ययाति सुमतिनिधि पोत॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ जल संग जीव शस्यमे आय। करत बास ताको जो खाय॥ ताके तनमे रेत स्वरूप। व्है कै रहत सुनऊ सो भूप॥ पूर्व कर्मको लहि अनुसार। जन्म लेत बसि गर्भागार॥ यथा कर्म सुख दुखसों छाय। जन्मत मरत कर्म फल पाय॥ * ॥ अष्टकउवाच ॥ * ॥ कहऊ चतुर्विधि आश्रमधर्म। हे ययाति नृप वक्ता पर्म॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ पाठ लेइ गुरु आज्ञा पाय। गुरुको कार्य्य करै सुखदाय॥ पहिलैं जगै गुरूसों नित्य। अनु शोवै करि सेवन हित्य॥ अप्रमत्त मृदुधीरजवान। दाताभ्यासी सुमति सुजान॥ ऐसो होय बिप्रवर जौन। ब्रह्मचर्य्यफल पावै तौन॥ * ॥ अथ गृहिधर्मः ॥ * ॥ धर्मरीति करि धन उत्पन्न। करै यज्ञ देइ दान प्रसन्न॥ आवै अतिथि अन्न तेहि देइ। आपु कुदान न अनुचित लेइ॥ रहै धरैं आश्रमको धर्म। सो गृहस्थहै पावन पर्म॥ * ॥ अथ बाणप्रस्थधर्मः ॥ * ॥ आपु लेआवै सोई खाय। पाप कर्मसों दूरि पराय॥ देइ औरकों लेइ न आपु। देइ न जीव मात्र कहँ तापु॥ बनमे बसै सु नियताहार। सो मुनि पावै सुसिधि उदार॥ * ॥ अथ भिक्षुकधर्मः ॥ * ॥ करि उत्पन्न आपु नहिं खाय। सबसों भिन्न विरक्त सुभाय॥ मठ बन माहं करैसो शैन। एकस्थलमे नित्य रहैन॥ भोजन कल्प करै

क्षुद्र अन्न । होय जितेन्द्री गुणसम्पन्न ॥ देशान्तरमे फिरै अनन्य । भिक्षुधर्मपालक सो धन्य॥ जाही क्षण उपजै बैराग। तबहीं तजत जगत बडभाग॥ राग द्वेष सुख कामहिं जीति । बनमे बसै सो जाय अभीति॥ दश पूरव दशपर भववंश। भरै पुण्य तजि देह प्रसंश॥ *॥ अष्टकउवाच ॥ *॥ कितिक सुमुनि अरु कति मुनिधर्म । सुनो चहत नृप कहिए पर्म ॥ *॥ ययातिरुवाच ॥ बनमे बसै पृष्ठ देइ ग्राम । ग्राम बसै बन पृष्ठ अकाम ॥ सो है मुनि निस्पृह सुनु भूप। परम पुण्य मय धर्मस्वरूप॥ *॥ अष्टकउवाच॥ *॥ द्वै प्रकारके मुनिवर जौन। नृप विधिवत सो कहिए तौन ॥ *॥ ययातिरुवाच ॥ *॥ ग्राम्यधर्मको करिकै त्याग। बनमे बसै सो मुनिवर भाग ॥ ग्राम पृष्ठ सो मुनि अभिराम । अनग्नि अगोत्राचरण अधाम॥ कौपीन मात्र पट राखत तौन। रक्षक प्राण अशन करि जौन ॥ छोडि कामना कारज सर्व। धारैं मुनि व्रत सकल अखर्व॥ बसत ग्राममे मुनिवर जौन। गहन पृष्ठ कहिए मुनि तौन ॥ शुद्धाहार करै अभिराम । छोडैं हिंसा साधन माम॥ तप तनु क्षीण पीन शुचि कर्म। शून्य वासना विषय अपर्म ॥ जीतित दोऊ लोक ललाम। सो मुनि महत लहत तपधाम॥ गोइव मुख मे लेत अहार । मोक्ष लहत सो सुमुनि उदार॥ *॥ अष्टकउवाच॥ *॥ दुहू भांतिके मुनि मे भूप। प्रथम लहत को मुक्ति अनूप ॥ ॥ *॥ ययातिरुवाच॥ *॥ बनवासीहैं योगी जौन । हैं सबभाति मुक्त बर तौन॥ *

॥ *॥ दोहा॥ *॥

इन दोउनके माहिं जो योगी सो पश्चात।अरु ज्ञानी सो लहत हैं सद्य मोक्ष अवदात॥
करत तपस्या मरत जो योगी व्है अल्पाय। जन्मान्तरमे लहत सो मोक्ष परम सुखदाय॥
सेवत कुमति असत्य जो महा कुकर्म स्वरूप। तिनकों मुक्ति अलभ्य है बिना आर्जव भूप॥

॥ *॥ अष्टकउवाच॥ *॥

तुम्ह बोलायो कौन तुम आए कित कित जात । किन पठये कहिए नृपति भरे तेजसा गात॥

॥ *॥ ययातिरुवाच॥ *॥

क्षीणपुण्य भू भव नरक परिवेको नभ छोडि। कहि तुमसों हम परहिंगे तुर सुर शासन जोडि॥
परत समय सुरवर कहो परऊ सुजनमे जाय। मो देखत सो सङ्गमे सकल सन्तसमुदाय॥

॥ *॥ अष्टकउवाच ॥ *॥

भौमनरकमे मति मरऊ सुनऊ कहत जो बैन। देत पुण्य परलोक हम हैं जे मम मति ऐन॥

॥ *॥ ययातिरुवाच॥ *॥

गज गो अश्वसुवर्णह जितने जीव ललाम। तितने दिव गत लोक हतो अष्टक अभिराम॥

आ०प०

॥ * ॥ अष्टकउवाच ॥ * ॥

ते तुम लेऊ ययाति नृप सकल हँकारे लोक । भू दिविस्थ हम देतहै तजऊ मोहगत शोक ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ हम सम होत न दान प्रवृत्त । लीबो दान विप्रको हित्त ॥ हमहिं दानदीबो अभिराम । लीबो धर्म न क्षात्र ललाम ॥ * ॥ प्रतर्दनउवाच ॥ * ॥ मोहि प्रतर्दन जानु नरेश । कहियत सो यह सुनऊ निदेश ॥ कितिक हमारे लोक अनूप । तुम जानत सो लीजै भूप ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ लोक तिहारे बऊत अमन्द । परम धर्ममय विज्ञ बिलन्द ॥ एक एकमे बसि दिन सात । मिटै न अन्त कल्प लौं जात ॥ * ॥ प्रतर्दनउवाच ॥ * ॥ ते हम देत लेऊ अभिराम । ताके होऊ नाथ सुखधाम ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ तेजस्वी नहिँ पर उपकार । लेत न परेऊँ बिपत्ति उदार ॥ * ॥ बसुमानउवाच ॥ * ॥ हौं बसुमान कहत तो भूप । कितिक दिव्य मम लोक अनूप ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ गगन भूमि दिशि बिदिशि समान । तपत भानु जिन करण महान ॥ तितने लोक बिदित तव भूप । भरे पुण्य कृतकर्म अनूप ॥ ॥ * ॥ बसुमानउवाच ॥ * ॥ प्रपात यत न करऊ नरेश । लेऊ लोक ते पुण्यावेश ॥ तृण एक दैकै क्रय करि लेऊ । प्रतिग्रह दोषज भय तजि देऊ ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ मिथ्या क्रय हम करत न तौन । बालक धन जिमि बञ्चक जौन ॥ काहूँ करो न ऐसो कर्म । तौन करै काहू है धर्म ॥ ऐसैं कहो ययाति नरेश । लीबो दान न हमको बेश ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ बसुमानउवाच ॥ * ॥ देत जे हम लोक सिगरे लीजिए ते भूप । जाहिंगे नहि तहां हम औ तुम्है क्रय न अनूप ॥ * ॥ शिबिरुवाच ॥ * ॥ लोक मेरे स्वर्गमे हैँ सुनऊ भूपति जौन । होऊ ताके जाय भोक्ता देतहैँ हम तौन ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ साधुजनको कियो नहि तुम मनऊँ मे अपमान । भए लोक अनन्त तातैं स्वर्गमे सुखदान ॥ * ॥ शिबिरुवाच ॥ * ॥ देत हैं हम होऊ भोक्ता जाय तिनकै बीर । करऊ क्रय मति जाय पावत जहां आनद धीर ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ इन्द्रसम तुम भूप शिबि तव लोक लसत अनन्त । रमत लोक न दत्तमे हम लहत मोद न सन्त ॥ * ॥ अष्टकउवाच ॥ * ॥ लोक लेतैं एकको है लगत तुमको खर्ब । लेऊ सबके रहैं गे हम भूमिमे नृप सर्ब ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ जौन करिबैं योग्य हमहैं यत्न कीजे तौन । तेहि पन्थमे नहिं चलहिं गे जेहि कियो कबऊ न गौन ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ कियो लोभ न नृप ययाति सुधर्म राख्यो भूपभयो यातैं पुण्य जैसो रह्यो पूर्ब अनूप ॥ पांचरथ पांचऊनका तहँ भए आवत पर्म । देखि अष्टक तिन्है ऐसे भयो कहत सगर्भ ॥ * ॥ अष्टकउवाच ॥ * ॥ कौन केए देखियतहै पांचरथ अतिमान । गगन पथमे चले आवत लसत भानु समान ॥ * ॥ ययाति

रुवाच ॥ * ॥ हैं तुम्हारे पुण्यके ए परम तेजसधाम। स्वर्गतेँ ए चल्ले आवत धराकौं अभिराम ॥
अष्टकउवाच ॥ * ॥ चढहु रथपर जाहु नभकों सुनहु हे क्षितिपाल। हमहू आवत हैं कछू दिन
गँए पाएँ काल ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥ चलैंगे हम संग तुम्हरे स्वर्गकौं तपधाम । देखि परत
सु विरजपथ यह स्वर्गकौं अभिराम ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ चढे ते सब जाय रथपर परम
पावन भूप । भरत क्षितितें गगणलौं बरधर्म भाष अनूप ॥ अष्टकउवाच ॥ पूर्व मम रथ चलैगो
यह रहो मेरे जान। जात शिविरथ चलो आगैं भरो बेग महान ॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥
दियो सब उतपन्न करि बसु धर्म हेत यथेष्ट। भो उसीनर पुत्र शिवि यहिभांति सुनिए श्रेष्ठ ॥ दान
तप ह्री सत्य धर्म सु क्षमा सौम्य सुसंग। बसत ए गुण परमपावन सदा शिविके अंग॥ *॥ वैसम्पायन
उवाच ॥ * ॥ फेरि अष्टक नृप ययाति हि लगे बूझन बैंन। कौन हो तुम कौनके सुत कहां तुम्हरो
ऐंन ॥ कियो तुम जो करै गे अब कौन ऐसे काम ॥ ययातिरुवाच ॥ नहुषपुत्र ययाति हैं हम
पुरुपिता अभिराम ॥ कहत हैं हम गुह्य यह सो सुनहु अष्टक बैंन। हैं सु मातामह तिहारे जानि
मानहुँ चैंन ॥ लई पृथ्वी जीति हम सब कियो अतिसै दान । अश्वमेध अछेद्य कीन्हे एकशत
सबिधान ॥ दई पृथिवी ब्राह्मणनकौं बाजि गज रथ पूरि।दए कोटिन गऊनके गण भरे मणिगण
भूरि ॥ सत्यसौं मो रहति भूमिखि मरुत गगण अनन्त। कहत हौं नहि झूठ यातैं सत्य पूजत सन्त ॥
द्विजनमधि हम पञ्चजन को कथा कहि है जौंन। होय पावन परम सो मम लोक लहि है तौन॥*॥
॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ दुहिता पुत्रन भूप तारे नृपति ययातिकौं । गे
फिरि स्वर्ग अनूप पुण्य कीर्त्तिसौं भरि जगत ॥ * ॥ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदित
नारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना
कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि ययात्युपाख्यानवर्णनोनामद्वात्रिंशोऽध्याय: ॥ * * * *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥*॥जनमेजयउवाच ॥ * ॥ सुनो चाहत भए जे पुरुवंशमे बरभूप। वीर्य्यवान पराक्रमी अति
सत्य धर्म्म स्वरूप ॥ भूमिभर्ता वंशकरता दुःखहर्त्ता बीर । कहहु तिनके वंशको विस्तार सुमुनि
गभीर ॥ * ॥ वैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ कहत हौं नृप जौन बूझत परम पुरुको वंश। भए तामे
वंशकर जे भूप परम प्रसंश ॥ प्रवीर ईश्वर तीसरे रौद्राश्व सुत अभिराम । भए पुरुतें महाबल
ए जए पौष्णाबाम ॥प्रवीर सुवन मनस्यु भे शूरसेनि रानीमाह ।पर्यन्त चारो सिन्धुला सब भूमिके
नरनाह ॥ सु मनस्यु सुत भे शक्त अरु संहनन बाग्मी तीन। जये सौवीरी सु भायात महाबल पीन॥

आ०प०

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

नृप मनस्युके सुत अभिराम। भए मिश्रकेशीमे आम ॥ अन्वग्भानु प्रभृत बड़वीर। तिनको बंश न चलो गँभीर॥ रौद्राश्व पुत्र अतिबलके धाम। भए आसरामे दश आम॥ऋचेयु अरु कक्षेयु उदार। कृकणयु स्थंडिलेयु सुकुमार ॥ बनेयु जलेयु कहे अभिराम। तेजेयु और सत्येयु ललाम॥धर्मेयु सु सन्नतेयु बर धीर।भए दशौ दिगपतिसे बीर॥भे ऋचेयुके पुत्र ललाम।अनाधृष्टि अतिसै बलधाम॥ अनाधृष्टिके सुत मतिनार। धर्म धुरन्धर बीर उदार॥ भे मतिनार कुमार सुधीर।तंसु महानसु अतिरथ बीर ॥ भए द्रुह्य चैाथे बलधाम। भए तंसु सुत इलिनु ललाम ॥ रथान्तरा भार्य्यामे आम। भए इलिनु सुत पांच ललाम॥दुष्यन्त सूर अरु भीम उदार। प्रवसु औारवसु वर सुकुमार॥भए ज्येष्ठ राजा दुष्यन्त। खलदलगञ्जन रञ्जन सन्त ॥ भए तास सुत भरत नरेश। शुचि शकुन्तला मे बलबेश॥ भरतभूपकी भार्यातीन। तिनके नव सुत भए मलीन॥ देखे पुत्र न हीं अनुरूप।भरत उदास भए तब भूप॥रानि न देखे भूप उदास।पुत्रन पठै दए यमपास॥महत यज्ञ तब कीन्हो भूप। भुमन्यु सुत तँह लहो स्वरूप॥ भरद्वाज मुनि कियो सदय्य। पुत्रमान भो भूप प्रसय्य ॥ लखि भुमन्युसुत आशु समान। किय युवराज भूप सुखदान ॥ भो भुमन्यु सुत दिविरथ बीर। ताके भए पांच सुत धीर ॥ सुहोत्र सुहोता सुहवि सुजान। सुयजु ऋचीक महाबलवान ॥ पुष्करिणी रानीके नन्द। भए पांच दिव सुत सुखकन्द ॥ सुहोत्र ज्येष्ठ तामे भो भूप। कियो राज्य अतिसै सुखरूप ॥ इक्ष्वाकी रानीकों पाय। तीनि पुत्र जाए सुखदाय ॥ अजमीढ सुमीढ महाबलबान। भे पुरुमीढ कनिष्ठ सुजान ॥ भे अजमीढ नृपति अभिराम। तीनि तास तिय षड्सुत आम ॥ ज्येष्ठ ऋक्ष धूमिनिके नन्द। नीलिनि तनय दोय सुखकन्द ॥ दुष्यन्त और परमेष्ठि उदार। जन्हु ब्रजिन रूपिण सुकुमार ॥ भए तीनि केशिनिके बार। रबिसम तेजसके आगार ॥ परमबली दुष्यन्त अनूप। अरु परमेष्ठी सुबल सुरूप ॥ इन दोउनके बंश सुढार। भे पञ्चालय उग्र उदार ॥ बलो जन्हुनृपके अभिराम। भए कुशिक बर बलकेधाम ॥ भए ऋक्षके सुत सम्बर्ण। भूमिपाल अति आनद भर्ण ॥ भयो महाक्षय ताके राज। भयो नष्ट सब प्रजा समाज ॥ चढि आए पाञ्चाल नरेश। सम्वरण भूपको जीतो देश॥ सम्बरण भूप तब सहित समाज। भजे ते कुलको तजि राज ॥तीर सिन्धुनदके बनमांह। बसे जाय गिरिकी गहि छांह ॥ गयो बसत तहँ बरिस हजार। गे वशिष्ठ मुनि तहां उदार॥ कियो भूप पूजन अभिराम। भे प्रसन्न मुनि करुणाधाम ॥ बिनीत कहो सम्बरण क्षितीश। होऊ पुरोहित मो मुनिईश॥ कहि तथास्तु मुनिवर तपधाम। सांम्राज करो अभिषेक ललाम ॥ तब पुरुवंश भूप सम्बर्ण। लियो राज्य करि अरिसंहर्ण ॥ तपतीमे सम्बरण महीप। जाए कुरु पैारवकुलदीप ॥ भो जात कुरु जांगल देश। तप करि किय कुरुक्षेत्र नरेश ॥ कुरुके भए बाहिनीमांह। पांचपुत्र

सुनिए नरनाह ॥ अविक्षित अभिस्यन्त मुनि आम। चैत्ररथौ जनमेजय नाम ॥ आठ अविक्षितके आ०प० सुकुमार। कुरुकुल भूषण भए उदार॥ ज्येष्ठ परीक्षित भे सुखदान। सबलाश्व आदि राज गुणवान॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

विराज सालमलि बलमय भाए। उच्चैःश्रवा भङ्कर जाए ॥ जितारि भए अष्टम गुणमए। जिनतैं वंश भाति बऊ भए ॥ सप्त परीक्षितके सुत नीके। भए महाबल अतिशुभ श्रीके॥ जनमेजय अरु कक्षसेन बर। सत्यसेन सु सुषेण सुमिति घर॥ चित्रसेन अरु इन्द्रसेन शुभ। तेजस भरे मनो रबि है उभ ॥ भीमसेन भो अरिदलदर्ता । दानी परम सविधि मखकर्ता ॥ जनमेजयके भए सुहाए। पुत्र आठ सुषमासौं छाए ॥ धृतराष्ट पाण्डु वाल्हीक कहाए । निषध और जाम्बूनद भाए॥ कुण्डोदर सु पदाति सोहाए। भे बसाति लऊरे गुणगाए॥ धृतराष्ट्र भए राजा बलभारे। तिन वाण बसु पुत्र अवतारे॥ कुण्डिक हस्ति बितर्को जानौ। कुण्डिन क्राथ हविश्रव मानौ॥ इन्द्राभवसु सु मन्यु सुढारौ। औ अपराजित बरबल वारौ ॥ धार्तराष्ट्र सुत भे बऊ नीके। तिनके मध्य महाबल श्रीके ॥ प्रतीपादि भे त्रय बलभारी । धर्म्मनेत्र बसुनेत्र बिचारी॥ ****

॥ * ॥जयकरीछन्द ॥ * ॥

भे प्रतीप अनुपम बरभूप । त्रय सुत भे ताके अनुरूप॥ देवापी शांतनु वाल्हीक। बिपिनि बसे देवापी नीक॥ शांतनु भे राजा अभिराम। अरु वाल्हीक महाबलधाम॥ भरत वंशमें नृप बलवान। भए अनेक देवर्षि मान॥ शान्तनु करसों परसत जाहि। तरुण करत है बृद्धो ताहि॥ गंगा भई सुभार्या तास। भीष्म सत्यब्रत भे सुत जास॥ भीषम पितुप्रिय करिबो चाहि। योयनगन्धा व्याही ताहि॥ सु परासरसौं जो सुखदानि। ही व्यासहि जाए गुणखानि॥ शांतनुत भे दोय कुमार। ताके भए जे परमउदार॥ बिचित्रबीर्य्य चित्रांगदखर्ब। चित्रांगद हि हते गंधर्ब॥ काशिराजकी कन्या जान। अम्बिका अंबालिकासु तीन॥ बिचित्रबीर्य्य हि दई बिवाहि। भीष्म जीति रण ल्याए चाहि॥ नृप बिचित्रबीर्य्य दिबमांहि। गए सु लहे अपत्य बिनाहि॥ सत्यवती व्है दुःखितमान। देखि बंशको छेदमहान॥ करो व्यासमुनिको सु स्मर्ण। आए द्वैपायन दुःखहर्ण॥ सत्यबतीसौं बोले व्यास। कहा कारौं सो कहऊ प्रकास॥ सत्यवत्युवाच॥ भ्राता तव बिनु मरो अपत्य। होत बंशको नाश महत्य॥ ताके साधु प्रजा उतपन्न। करऊ पुत्र यह सुनऊ प्रसन्न॥ कहि सु तथास्तु व्यास तपधाम। किय उतपन्न पुत्र अभिराम॥ धृतराष्ट्र पाण्डु अरु बिदुर सुजान। नृप धृतराष्ट्र महामतिमान॥ सौ सुत जाए अतिबलबान। द्वैपायनको लहि बरदान॥ तामें चारि भए परधान। दुर्य्योधन राजा बलबान॥ दुःशासन बिकर्ण बरबीर। चित्रसेन सेनामह धीर॥ भई पाण्डुके भार्य्या दोय। कुन्ती माद्री सुखदा सोय॥ पाण्डु हनो मुनि मृगकेरूप। कामासक्त अजानि अनूप॥ शाप दियो तेहि

आ०प० जब तियसंग। करिहज नृप तब तजिहज अंग॥ सुनत बिबर्ण ह्वै गए भूप। स्त्री प्रसंग तजि दयो अनूप॥ श्राप सौ कुन्ती माद्री पास।जाय कहो सो करण बिनाश॥ पुत्र बिना गति लहत न कोय। करज तीन जातैं सुत होय॥ यह सुनि कुन्ती मंत्रप्रसाद। तीनि पुत्र जाए निर्बाद॥ धर्मराजको करि आव्हान। लहो युधिष्ठिरपुत्र महान॥ भीमसेन मारुततैं बीर। सुरपतितैं अर्जुन रणधीर॥ ॥*॥ पाण्डुरुवाच ॥*॥ कुन्ती माद्रीपर करि नेज। पुत्रोत्पादनि बिद्या देज॥ एवमस्तु कहि कुन्ती जौन। माद्रीहि दई सु बिद्या तौन॥ दस्राबाहन माद्री कीन्ह। नकुल सु सहदेव सुत द्वै लीन्ह॥ माद्रि हि किएँ लख्यो श्रृंगार। परशत मरे पाण्डुभर्त्तार॥ कुन्ति हि सौंपि पुत्रबर तीन। माद्री करो पाण्डु अनुगौन॥ तबते पाण्डव कुन्ती साथ।मुनि लै हास्तिनपुर गे नाथ॥ भीष्म बिदुर सह जन समुदाय। मुनिन कहो तँह ऐसे जाय॥ ए हैं पाण्डुतनय अभिराम। सत्य सुनज अति बलके धाम॥इह कहि गे जब मुनि अनुकूल।सुर दुन्दुभि ह्वै बरखे फूल॥तहाँ रहे पाण्डव अभिराम पितृकर्म सब किया ललाम। बालापनतैं तिनसौं रुष्ट। दुर्योधन दोषकरत हो दुष्ट॥ तिन्ह हि निकारण करे उपाय।धृतराष्ट्रज्ञको मंत्र मिलाय॥छलमिसि पाण्डु सुतन्ह समुझाय।दिए बारुणाबत हि पठाय॥ तहाँ जराय लाहको धाम। बिदुर मंत्र लहि बचे ललाम॥ गए तहाँतैं मारि हिडम्ब। एकचक्रापुरकौं सह अम्ब॥ बकराक्षसकौं मारि महान। गे पञ्चाल पुरी हि सुजान॥

॥*॥ रोलाछन्द ॥*॥

द्रौपदीकौं ब्याहि कै फिरि देश अपने जाय। पुत्र तिन उतपन्न कीन्हैं पाण्डुसुत सुखदाय॥ धर्मके प्रतिबिंध्य भो सुत भीमके सुत सोम। श्रुतकीर्ति अर्जुन तनय भो सो भरो बरबल तोम॥शतानीक सु नकुलके सहदेवके श्रुतकर्म। पांच सुत ए द्रौपदीके भए सबल सधर्म॥ सैव्यनृपको सुता ही जो देविका अभिराम। सो युधिष्ठिर भूप ब्याही चाहि सुषमाधाम॥ भयो तामे पुत्र सो यौधेय पूरण धर्म। सु बलंधरा काशीशकी जो रही कन्या पर्म॥ भीमसेन हि बरी सो बलभूरि बिक्रम देखि। सर्बगन्ता भयो ताके पुत्र बरबल भेखि॥ श्रीकृष्ण भग्नी जो सुभद्रा बरी अर्जुन तौन। अभिमन्यु ताके भए नन्दन कृष्णके प्रिय जौन॥ सु रेणुमतिका चैद्यपतिकी सुता जो अभिराम। नकुलकौं सो बरी सुत निरमित्र भो गुणधाम॥ मद्रपतिकी सुता बिजया बरी सो सहदेव। सुहोत्र ताके भयो नन्दन भूप जानज एव॥ घटोत्कच सह भे एकादश पाण्डवनके नन्द। बंश कर अभिमन्यु तिनमे भए कुरुकुलचन्द॥ सु बिराटतनया उत्तरासौं भयो ताको ब्याह। गर्भ तामे भयो ताको सुनज हो नरनाह॥ ब्रह्मास्त्र प्रेरित गिरो लखि कै गर्भसौं बिनुप्रान। लयो कुन्ती अङ्कमे सो कृष्णआज्ञा मान॥ मास षटको गर्भ जीवित करौंगो अभिराम। कियो जीवित

गर्भ सो काहि कृष्ण करुणाधाम ॥ परिक्षीण सुबंश होतेँ भयो यह अभिराम । कहो श्रीयदुनाथ ताको है परीक्षित नाम ॥ लही माद्रवती सु रानी बर परीक्षित भूप । तीन माता रावरी सुत जास आप अनूप ॥ बपुष्टमा है रावरेकी भूप महिषी जौन । शतानीक सु शङ्कुकर्ण सुपुत्र जाई तौन ॥ लही वैदेही सुपत्नी शतानीक उदार । अश्वमेधदत्त सुपुत्र जाई तौन अतिसुकुमार ॥ सुनै जो पुरुवंशकीर्त्तन परम जो अभिराम । लहै सो सो चारिफलकोँ महाआनदधाम ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि वंशानुकीर्तनो नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः॥ * * * * * * * * * * *

॥ वैशंपायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भीषमोत्पत्ति कहनकोँ श्रीबर बीर बिशाल । शान्तनुनृपकी कहत हैाँ मै उत्पत्ति नृपाल ॥

इक्ष्वाकुवंश सम्भव भयो ख्यात महाभिष भूप । सत्यबाक धर्मात्मा पराक्रमी अतिरूप ॥

अश्वमेध सहस्र करि पुन राजसूय सुठान । दश करि देवेशकोँ सो गयो स्वर्ग सुजान ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

देवऋषि अरु ब्रह्मऋषि अरु राजऋषि अभिराम । रहे सुरगणसंगमे नृप महाभिष विधि धाम ॥ गई गंगा तहा विधिपई धरे नारीरूप । उडो ताको बायुवस पट परमउज्ज्वल भूप ॥ रहे ताकोँ देखि सुरऋषि अधोमुख करि नैन । महाभिष नृप चाहि ताकोँ रहे पूरे चैन ॥ दियो ब्रह्मा शांप ताकोँ धरहु नरको रूप । कर्मान्तमे तुम आइ हो यहि लोककोँ फिरि भूप ॥ चिन्ति सिगरे भूप मनमे महाभिष क्षितिपाल । पुत्र होहि प्रतीपके सो भरो पुण्यबिशाल ॥ धैर्यचुत लखि महाभिषकोँ पुण्यपूरण जैान । ताहि मनमे राखि गंगा कियो तहँते गैान ॥ क्षीणदपु अति भरे कश्मल लखे बसुगण जात । कहो ऐसे भए क्योँ सुरसरित पूछो बात ॥ अल्प लहि अपराध दीन्हो शापसु मुनि बशिष्ट । खिन्न यातेँ भए सुरसरि जानि अप्रत्यदृष्ट ॥ रहे संध्या करत मुनिवर कियो हम न प्रणाम । चले ठिग ह्वै लहि निरादर क्रोध करि तपधाम ॥ शाप दीन्हो योनिगत तुम हाहु सिगरे जाय । महामुनिके वचन सांचे शकत कैान मिटाय ॥ मात गंगे पुत्र कीजे हमहि धरि नररूप । मानुषीके जठरमे नहि बास रोचन रूप ॥ बसुनके सुनि बचन गंगा कहे ऐसे बैन । पिता ह्वै है को तुम्हारो नरनमे मतिऐन ॥ * ॥ बसवऊचुः ॥ * ॥ सुप्रतीपको सुत होनहारो परम शान्तनु भूप । सो हमारे योग्य कर्त्ता होय गो नररूप ॥ * ॥ गंगोवाच ॥ * ॥ यहै है सिध्यागत मेरो कहत हैा तुम जैान । तास प्रिय इच्छित तिहारो मोहि करिबै तैान ॥ * ॥ बसवऊचुः ॥ * ॥ होँहि बालक

आ॰प॰ तान अपने सलिलमांह बहाय ।तुरित दीजो देह छत जेहि होय निसृति जाय॥ * ॥ गंगोवाच॥ पुत्रहेतुक संग मेरो सुनऊ तासों जौन। करे ऐसे कहो तुह्मारो व्यर्थ ह्वैहै तौन॥ * ॥ बसवऊचुः॥ *॥ हम अष्ट अष्टमभाग देहै आपनो अभिराम। पुत्र तासों होय गो सो महाबलको धाम॥ होय गो नहि पुत्र ताके करै गो न बिबाहु।गए यह सिद्धांत करि बसु भरे अतिउतसाह॥ * ॥ बैसम्पायन उवाच॥ *॥ सु प्रतीप भूपति जाय गंगा द्वारमे अभिराम। करत हे बऊकाल तैं तप तरुण तेजस धाम॥ करै भूप समान आकृति धरैं नारीरूप। निकसि गंगा सलिलसों ढ़िग गई जेहां भूप॥ दहजंघा भूपकी अतिरूप तापैं जाय। गई बैठि बिलो कि ताहि प्रतीप संभ्रमछाय॥ कहौहौं सो करों तो प्रिय कहऊ सुन्दरि जौन॥ *॥ गंगोवाच॥ * ॥ भजऊ मोकों चाहि तुमकों कियो हो दृत गौन॥ *॥ प्रतीपउवाच॥ *॥ परस्त्रीको गमन हों नहि करतहौं बसकाम। अस मानवर्णा भार्या नहि बरत मो ब्रतमाम॥ *॥ गंगोवाच॥ * ॥ अश्रेयसी नहि नहि अगम्या कहन जोग्य न भूप। भजति हौं तुम भजऊ मोकों दिव्य कन्यारूप॥ * ॥ प्रतीप उवाच॥ *॥ प्रथम तुमहि निवृत्त कीन्हो कहति होगी जौन। अन्यथा कीन्हें हुवै धर्म्मव्यतिक्रम तौन॥ आइ दक्षिण जंघपैं तुम गई बैठि सुजानि। पुत्र कन्या स्नुषाकोहै तौन निहित स्थानि॥ कामिनीकी भोग्य जंघा बिहित बाम सुजानि। नही तुमकों बरत यातैं होत अनुचित जानि॥ होऊ यातें पुत्र पत्नी बरत सुतहित तोहि। तुमहि कीन्हों प्रथम सो कछु दोष देऊ न मोहि॥ *॥ गंगोवाच॥ *॥ होय सोई कहत हो धर्म्मज्ञ जो तुम बैन। भक्ति सों तव भोग करिहों भरतवंश सचैन॥ धरापर जे भूपतिनके मुकुट तुम अभिराम। बर्षशतलों कहि न पावत पार तो गुणग्राम॥ धर्मज्ञ सुनिए समय लहि कै करों गोहों जौन। रावरेको पुत्र कबहू रोंकि है नहि तौन॥ रहत ऐसें पुत्रसों तव बढै गी मो प्रीति। पुत्रसों प्रिय पुण्यसों सो स्वर्ग लेहै जीति॥ बैसम्पायन उवाच॥ *॥ सु तथास्तु सुनि भूपके बर बचन बाला तौन। भई अन्तरध्यान तबही करि यथाविधि बैन॥ तेहि काल भूप प्रतीप लागे करण तप अभिराम। पुत्रप्राप्ति बिचारि हिय मे सविधि सह बरबाम॥ भो महाभिष पुत्र तिनको बृद्धपनमे आय। धरो शान्तनु नाम यातें शान्तबयमे पाय॥ समुझि अपने पुण्यबारे लोक परम उदार। धर्म्म कर्म्म हि करन लागो जन्मि शान्तनु बार॥ सु प्रतीप शान्तनु यौवनस्थ बिलोकि बोले बैन।बाम आइ हि एक आगैं दिव्य तो हित ऐन॥ मिलै तुमकों आइ थौ वह रहसमे अभिराम। जानि दिव्य महान आदर कीजियो मतिधाम॥ भजैगी वह तुम्है तातैं भजऊ गे तुम ताहि। देत हैं हम तुम्है आज्ञा प्रथम मङ्गल चाहि॥ कहि सु पितावचन सब बिधि पुत्र सौं सुखदान। गए रानी सहित बनकों नृप प्रतीप सुजान॥ भए मृगयाशील शान्तनु भूप अतिबलवान। हनत मृग बराह महिष सु व्याघ्र सिंह महान॥

श्रमत बनमधे एकदिन सो गयो गंगातीर । सिद्ध चारण वृद्ध जँह तप ऋद्धि ध्यावत धीर ॥ तहां देखी परम बाला श्रीसमान स्वरूप।ज्योतिमय तनु तरुण भूषे दिव्यभूषन भूप॥लसति पद्म समान तन दुति सुधा सदृश निचोल । लसति सो एकाकिनी तँह रूपराशि अतोल ॥ लखत ताको भए पुलकित भूप रूप अमन्द । शरदराकामध्यको लखि कुमुद जैसे चन्द ॥ सुधासी छबि पान करि नहि तृप्ति पावत नैन। देखि सो तेहि भूमिपतिको भरी अतिशय चैन ॥ देवजा को दानवी हौ अप्सरा तुम बाम।किन्नरी कै मानुषी कै यच्छिनी अभिराम॥देखि ऐसें भूप तासौं कहे बचन ललाम। तुम्है याँचत होऊ मेरी भारया गुणग्राम॥ * ॥वैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ भूपके सुनि बचन कोमल भरी मृदु मुसुकानी।कहे ऐसें बचन सुन्दरि भूप संनिधि आनि ॥ बसुनसौं जो कियो पन सो स्मरण करि निरधारि। कहन लागी भूपसों बर बचन आनद भारि ॥ वश्य अनुगा हौउंगी तव परम महिषी भूप। करऊ गे जौं सुनऊ मेरे बचनके अनुरूप॥ कौ जो मै शुभ अशुभ नहि करऊ बारण तास । कहऊ गे नहि बचन अप्रिय रहौंगी तो पास॥ नही तौ हौं त्याग करिहौं करें बारण भूप। कह्यौ सुनत तथास्तु शान्तनु बचन तास अनूप॥अतुल पायो हर्ष ताकौं लहत अति अभिराम।पाणि गहि ले गए भूपति ताहि अपने धाम॥ तास इच्छा करत कबहू भंग कहत न बैन। भए भोगाशक्त शान्तनु भरे आनद मैन॥ हाव भाव सनेह चातुर बन्द बिधि बर दच्छ । भए दोऊ दुऊनके मन हरण बासो अच्छ॥ सुरति रंग तरंगमे भे दोऊ मग्न अनूप । मास ऋतु बऊ बर्ष बीतत नही जानेउ भूप॥ भए आठ सुपुत्र ताके दिव्यद्युतिके भौन । भए जब जब दिए तब तब डारि जलसे तौन॥ करति प्रियतो हरति नरतनु धरऊ अपनो रूप। आत्म धारामाह डारे पुत्र यह कहि भूप॥ लगो अप्रिय महा शान्तनु भूपकौं यह कर्म । त्याग भयते कहत हैं नहि जानि महत अधर्म॥भयो अष्टम पुत्र तब इमि हँसत हँसत नरेश । कहो तासौं बचन ऐसें करे धर्म निवेश ॥ कौनहौ तुम कान की यह करति सुतबध कर्म।पुत्रघ्नि डरति न पापकौं यह करनि क्रूर अधर्म॥ * ॥ गंगोवाच ॥ * ॥ पुत्रकाम न हनोगो यह पुत्र लेऊ उदार। जाति हौं मै भयो पूरण रहो जौन करार ॥ नदी गंगा जन्हुतनया सुनऊ हम हैं भूप। देव कारज हेत तोढिग कियो बास अनूप ॥ अष्टबसु ए पुत्र मेरे भए आय सु जौन।पाय शाप बसिष्ठसौं इन जन्म लीन्हौ तौन॥बिना तुम इन योग्य क्षितिपर जन कहो नहि अन्य। और हमसी मानुषी को जननि जगमे धन्य॥ जननि ऊबे हेत तिनकी धरो मानुष रूप। जनक व्है तुम जोति लीन्हो लोक अक्षय भूप॥बसुन हमसौं बचन मागे सुनऊ भूपति तौन। जन्म होतैं डारि जलमे दीजियो निज भौन॥ भए शाप विमुक्त बसु हम जाति अपने धाम । राखि तब यह पुत्र पालेऊ महाब्रत अभिराम ॥ अष्ट अष्टम अंश यामे बसुनको सु अनूप । महाबीर पराक्रमी यह पुत्र मेरो भूप॥

१०५॰ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि भीष्मोत्पत्तिवर्णनो नामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ *✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*

॥*॥ गीतिछन्द ॥ * ॥

॥*॥ शान्तनुरुवाच ॥ * ॥ फिरि कहहु आपव नामको मुनि वसुनको का पाप। सब भए मानुष योनिगत मुनि दयो लहि जो शाप ॥ तुम दियो गङ्गापुत्रसो यह करैगो का कर्म । वसु ईस जे सबलोकके तेँ भए जो निज पर्म ॥ यह कहहु सब वृत्तात सुरसरि आपु सह बिस्तार । वैसम्पायन उवाच ॥ यह सुनत लागी कहन गंगा चरित परमउदार ॥ * ॥ गंगोवाच ॥ * ॥ वरुण सुत भो पूर्व जो सु वशिष्ठ आपव नाम। गिरि मेरुके ढिग तास आश्रम लसत अतिअभिराम ॥ तप करत आपव रहे तेहां परमवनमे भूपाही दक्षकी जो सुता सुरभी जई तिहि गो भूप॥परम कश्यप सुमुनि तेँ नन्दिनी नाम लहि पर्म । दई सुमुनि वशिष्ठकोँ बिधि हवन साधक कर्म ॥ सो चरत ही तेहि विपिनिमे भय रहित धेनु उदार । गए तहँ पृथ्वादि बसु तेहि विपिनि रमत सदार ॥ तह एक बसुद्यौ की सुभार्या लखी धेनु सु आय। सोभरी अति आश्चर्य द्योकोँ दयी तान देखाय॥अति पीन कामदुघा सुसाध्वी श्रृंग पुच्छ ललाम। अति भरी गुणसोँ नन्दिनीकोँ देखि द्यौ अभिराम॥तब कहन लागे स्वप्रियासोँ तास गुणगण तान। हे प्रिये गाय वशिष्ठकी पय पियत याको आँन ॥ सो मनुज जीवत अयुत बर्षन होत यौवन लीन । यह सुनत लागी कहन द्योसोँ प्रिया प्रेमासीन ॥ हे सखी मेरी एक क्षितिपर भूपकन्या पर्म । है जितवती यह नाम ताको रूपराशि सुधर्म ॥ सो उशीनर राजर्षिकी है कन्यका अभिराम। यह गाय ताके हेत मोकोँ आनि देउ ललाम॥पय पान याको कर जबलों सखी सो सुखदान । यह रहैँ बत्सासहित तबलों धेनु मेरे धाम ॥ यह करौ यातेँ परम प्रियहे नही मेरे आन । सुनि बचन ताको द्यौ सुवसु पृथ्वादि सकल सुजान ॥ सब बसुन सो गो हरण कीन्हो भए अतिअज्ञान । सो कियो नहि सुलक्ष्य मुनिको तेज तप अतिमान॥ फल लेइ सुनि वर गए बनतेँ परम आश्रम धाम । लखी नहि तह नन्दिनी सह बत्स अति अभिराम॥तब लगे ढूढन ताहि बनमे लही नहि सो पर्म।तबध्यान धरि कै लखो लीन्हे जात बसु भरि भर्म॥ करि क्रोध दीन्हों शापतिनको होउ मानुष जाय । जिय जानिकै गोहरण मुनि वर दोष अतिसै पाय ॥ लहि शाप ऐसेँ जानि बसु तब गए मुनिबर पास। सब किये बसुबर बिनय तासों भरे अतिसय त्रास ॥ तब भए सु मुनि प्रसन्न तिनसों कहे ऐसेँ बैन। अनु वर्ष भीत रहोउ ग सब शाप मुक्त सचैन॥ हे द्योको यह कर्म इनके शापको नहि नाश। यह करै गो बहुबर्षलों धरि मनुज तनु क्षिति बास॥ नहि होय मेरो बचन मिथ्या कहो तुमसों आँन । यह द्यौ मनुज

शरीर धरि नहि प्रजा करि है तात ॥ हित पिताको करि करैगो नहि व्याह अपनो एह। सब शास्त्र वेत्ता होय गो धृतमान पुण्य सनेह ॥ यह बचन कहि कै गए मुनिबर परम अपने धाम । तब आय वसु सब कहो मोसों बचन विनय ललाम ॥ हमहोंहि जब जब डारि तब तब दीजियो जलबीच। सो कियो हम यह बचन उनको मोक्षदाननि मीच॥यह शापतें मुनिके अकेलो द्यौ बसु अभिराम। क्षिति बसै गो वज्रवर्ष यह बरबीर बलको धाम ॥ * ॥ वैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ यह बचन कहि लै सुत हि गंगा भई अन्तरध्यान । तहांतैं नृप गए घरकों भरे शोकमहान॥ सो देवव्रत गांगेय सोई भीष्म बलको धाम । भो गुणाधिक नृपति शान्तनुसों सुबो अभिराम ॥ हो महाभाग्य सुभूप भारत यास यह इतिहाश । भो पुण्यमय यह महाभारत करण पातक नाश ॥ * ॥ वैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ नृप भयो शान्तनु देवऋषिसौं पूज्य अति मतिमान । गुण भरे जामे श्रेष्ठ अति हो सकल देव समान ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

दान क्षमा धृति बुद्धि विवेक। भरो भयो शान्तनु नृप एक ॥ वंश प्रजाको रक्षक भूप। कम्बुग्रीव बरबाहु अनूप॥ वारण मत्त समान उदार। नृप लक्षणयुत भूभर्तार ॥ नीति भरो लखि तास चरित्र। भए धर्म रत प्रजा पवित्र ॥ पूरण अर्थ सत्यसों युद्ध। ऐसो और भूप को उद्ध ॥ ऐसो लखि तेहि भूप अनेक। राज राजपद कियेभिषेक॥ बिना शोक भय दुःख नरेन्द्र। निशि दिन रहनि प्रजा बरेन्द्र ॥ लहि पति शान्तनुनृपकों भूप। दान यज्ञरत भए अनूप ॥ लहि शीक्षक शान्तनु अभिराम। नियम धर्मरत प्रजा ललाम॥ ब्राह्मणकौं क्षत्री अनुसरत। शासन क्षत्री वैश्यगुण धरत॥ द्विजानुरक्त क्षत्र विशजौंन। शासन करत शूद्रपर तौंन ॥ बसत हस्तिना पुरमें बेश । समुद्रान्तक्षिति कियो निदेश ॥ दान धर्म्म तप तें अभिराम। अतुल लहो श्री नृप बलधाम ॥ राग द्वेषत रहित नरेश। भयो सोम सम सुखद सुवेश॥ भयो भानु सम पूर प्रताप। अन्तक सम सु क्रोधको दाप॥ क्षिति सम लसत क्षमाको धाम। हिंसा रहित महत अभिराम ॥ ब्रह्म धर्म्म करि मुख्य नरेश। करत यथोचित राज निदेश ॥ यथा पराध दंड करि भूप । करत राजसह नीति अनूप ॥ छत्तिशवर्ष कियो बनवास । रतिसुख लहो न बनिता पास ॥ भरो सकलगुण पिता समान ॥ महाबली अति धीरजमान ॥ ताके भयो पुत्र गांगेय। तेजोमय अति सदां अजेय ॥ मृग शरसों हनि शान्तनु भूप। गङ्गातट आए अनुरूप॥ कृश प्रवाह सुरसरिको देखि। भूप रहे चितमें अवरेखि ॥ चले देखिवे कारण तौंन। जल प्रवाह कृश कारक जौंन ॥ लखो तहां चलि दिव्यकुमार। करत शस्त्र अभ्यास उदार ॥ तीक्ष्ण शरनसों अम्बु प्रवाह । राखो रोकि भरो उत्साह ॥ शरसों रोकें सुरसरिनीर। लखो पुत्र बरबीर गम्भीर ॥ * ॥

आ०प०

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भए बिस्मित देखि शांतनु छत अमानुष कर्म्म। बन बसे यात नही चीन्हो आपनो सुत मर्म ॥ भीष्म पितहि बिलोकि मोहित कियो माया छाय। भए अन्तरध्यान तब ही गए सलिल समाय॥ देखि अद्भुत भूप शान्तनु पुत्र यह निरधारि। देऊ मोहि देखाय गङ्गासा कह्यो ढिग बारि॥ धारि उत्तम रूप गङ्गा निकसि जलसों आय। गहैं दक्षिण पाणिसों सुत भीष्मकों सुखदाय ॥ दृष्ट पूर्ब तउन चीन्हों सुरसरीकों भूप । श्वेत बसन अनूप भूषण धरे दिव्यनृरूप॥ लेय कै यह जाऊ घरकों पुत्र है बलधाम। वेद सांग बशिष्टसों सब पढे अति अभिराम ॥ महाधनुष छतास्त्र है सुर असुर सम्मत बीर। पढो उशना पास सिगरे शास्त्र अर्थ गभीर॥ देव गुरुसों पढी बिद्या रही तापै जौन। राम दीन्ही शस्त्र बिद्या आपनी सब तौन॥ राजधर्म समस्तबेत्ता महाकार्मुक बीर। देति हैं हम पुत्र यह लै जाऊ घर रणधीर॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ जान्हबीकी पाय आज्ञा पुत्र लै अभिराम। गए शान्तनु भूप हास्तिन सुपुर अपने धाम ॥ सर्व काम समृद्ध मानो आपुकों क्षिति नाथ। भीष्मकों युवराज कीन्हों सचिव मुनिगण साथ ॥ बंश पौरव राष्ट्र रञ्जित कियो शान्तनु नन्द। पुत्र सह रममान भो नृप भरो मोद अमन्द ॥ वर्ष चारि बिताय ऐसें नृपति शान्तनु बीर। एक दिन मृगयार्थ बनकों गए यमुनातीर॥ लह्यो अद्भुत तहां फैलो परम सौरभ भूप। लगे ढूँढ़त फिरण बनमे तास मूल अनूप ॥ तहां देखि दासकन्या दिव्यरूप अमन्द। लगे पूछन देखि तासों भूप कुरुकुलचन्द ॥ कौन की हो कौन तुम इत करति हो का कर्म। कह्यो तेहि हम दास कन्या नाव बाहति धर्म ॥ दासराज स्वपिताकी हम परम आज्ञा पाय। रूप सौरभ माधुरीसों भरी ताकी काय॥ देखि ताकों बरो मनसे भरो सुगुण अनूप। दासपतिसों जाय मांगो ताहि सान्तनु भूप ॥ दासराज सु वचन नृपसों कहे मितिमय लेय। जात मात्र हि कन्यका सो होति बरकों देय॥ हृदय मे है कामना हो कहत तुमसों भूप।धर्म पत्नी हेत मांगत याहि जो अनुरूप॥ सत्यवादी सत्य मोसों करऊ पन अभिराम। दैंउगो मै तुम्है कन्या परम गुणकी धाम॥ भूप याकों मिलै गो बर कौन तुमसम आन॥ * ॥ शान्तनुरुवाच ॥ * ॥ कहऊ सो बर समुझि ताको प्रथम करि अनुमान॥ ऐसि दैहै योग्य दीबे होयगो बर जौन॥ * ॥ दासउबाच ॥ भूप तो अनु होय राजा पुत्र याको तौन ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ सके देय न ताहि बर सो रहे भूपति मौन। बरी मनसिज आगि अतिशय भरी मानस भौन॥ धरे मनमें दासकन्या रूप राशि अमन्द गए हास्तिन नगरकों भूपाल कुरुकुलचन्द ॥ एकदिन अति शोच पूरित ध्यान धार भूप। देव ब्रत लखि आय लागे कहन बचन अनूप। कुशल है सबभांति तुमकों भूप सेवत सर्व। तात शोच न योग्य तुमकों शोचकारक खर्व ॥ ध्यान धारे सेन मोसों कहत हो कछु बैन । पुत्रके सुनि बचन

बोले अरे भूपति चन ॥ ध्यान धारें रहत हों सो सुनो तास बिबेक । महाभारत बंशमे तुम पुत्र मेरे एक ॥ शस्त्र नियमित नित्य पैारुष युद्धप्रिय तुम बीर । देखि लोक अनित्य यातें डरत हम भय भीर ॥ परे जैां गांगेय तुमकों विपति बिधि बस आय । तो हमारे वंशकी वर बृद्धि बोर नशाय ॥ शतपुत्रतें तुम अधिकहौ बरबीरबिरद बिशाल।वृथा दारा वरणको हों करत उत्सव हाल॥बंशको न बिनाश चाहत चहत तो कल्यान । एक पुत्र अपुत्र तो सम कहत धर्म बिधान॥ अग्निहोत्र सु बेद बिद्या पौत्रलों सुखदान। षोडशांश न पुत्रके ए होत सकल समान ॥ बिदित सकल मनुष्य सेहै प्रजनमे यह बात। रहत सहित अपत्य ताकों कछू न संशय तात ॥ शस्त्र नित्य अमर्षमय तुम हेरि हर्षत युद्ध । होय जौ कछु निधन तो लहि कै अदिष्ट बिरुद्ध ॥ यहै कारण शोचको है हमै घेरे सत्य । होत जनको व्यर्थ जीवन भए नष्ट अपत्य ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ जानि कारण भूपको सब देवब्रत मतिमान । गए मंत्री बृद्धपैं जो भूप सुखद सुजान ॥ ताहि पूछों भूपके । जो शोच कारण रूप । कह्यो मंत्री दासकन्या बरण चाहत भूप॥ बृद्ध क्षत्रिण सहित भीषम गए ताके पास । पिताकै हित जाय मागो तौन कन्या आस ॥ दासेश तिनकों पूजि बिधिवत कहे ऐसे बैन। राज मण्डल मध्य बैठे भीष्म जँह मति ऐन ॥ भए कुलके नाथ शान्तनुभूप पुत्र उदार। शस्त्र भृतमे श्रेष्ट तुम हो भूमिके भर्त्तार ॥ कौन बांछित पाय कै सम्बन्ध अतिशय रूप। छोडि कै शोकाग्निमे सो तपैगो नहि भूप॥भई जाके सुक्रसों सो पुरुष आपु समान।सत्यवतिका नाम राखो चारुगुणकोधाम कह्यो सत्यवती हि व्याहन हेतु मोसों तात। भूप शांतनु पिता तब अति धरमधर अवदात॥ असित नामा देवऋर्षि सत्यबति हि मागो आय । ताहि हों नहि दियो सुनिए भूपसुत सुखदाय ॥ कन्या पिताके भावत कछु कहत हों सुनु भूप । बलवान भाव सपत्न ताको देखि यामे रूप॥ सापत्न जाके भए तुम सुर असुरकै गन्धर्ब । चिरंजीवित जानिए नहि तुह्मे कोपैं सर्ब ॥ यहै यामे दोष है अरु सकल भांति अनूप । दानदोबे माह लीबे माह सुनिए भूप ॥ * ॥ बैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ दासके सुनि बचन बोले देवब्रत तप ऐन । पिताके हित कहत क्षत्रिनमध्य ऐसो बैन ॥ लेत हों मै महाब्रत यह परम दुस्कर तौन । कियो काऊ न करहिगे अब होहिगे नर जौन ॥ करहिगे हम कहत जो तुम सहित दास समाज। पुत्र याको होयगो हम ताहि देहै राज॥ भीष्मकी सुनि कै प्रतिज्ञा फेरि बोले दास । आपु दोन्हों बचन सोहै सत्य सत्यनिबास ॥ एक है सन्देह मेरैं करऊ ताको बोध । रावरेको पुत्र करिहै राजहेत बिरोध ॥ * ॥ बैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ जानि कै मत दासको अरु पिताको हित बीर। करी दुस्कर अति प्रतिज्ञा देवब्रत बरबीर ॥ गांगेयउवाच॥ दास सुनु मो बचन कहत जो पिताके प्रियहेत । आजुतें ले मरणलों ब्रत ब्रह्मचर्य्य सु लेत ॥ अपुत्र मोको मिलैगो स्वर्गस्थ लोक ललाम । देवब्रतके बचन सुनि भो दास पुलकित धाम ॥

आ०प० दइ कन्या लेउ बोलो दास पति अनुकूल । सत्यव्रतपर देइ दुन्दुभि सुरन बरषे फूल ॥ भीष्म व्रत इन लियो याते भीष्म इनको नाम । सुरगण सबहिन बगणतैं यह कहो बचन ललाम ॥ तब कहो सत्यवतीयसों इमि भीष्म सविनय बैन । चढउ रथपर परम माता चलउ अपने ऐन ॥ ॥ * ॥ वैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ वचन कहि यों भीष्म रथपर लियो ताहि चढाय । गए हास्तिन नगरकों ढिग पिताके सुखदाय॥सुनत शान्तनु भीष्मको यह कर्म्म दुष्कर नाम ॥करउ इच्छा मरउ तबही दयो वर अभिराम ॥ * ॥ वैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ व्याह करि लै गए शान्तनु ताहि अपने धाम । भरे अति सन्तोष मनमे पाय पूरण काम ॥ भयो परम सुपुत्र ताके कछू वीतैं काल नाम चित्रांगद सु राखो तास प्रिथ्वीपाल ॥ भए काल वितीत कछु फिरि भयो पुत्र ललाम । विचित्र वीर्यसु भूप शान्तनु धरो ताको नाम ॥ प्राप्त यौवन भए सुत नहि तब हि शान्तनु भूप । काल बस व्है गए सुरपुर लहो लोक अनूप ॥ मरे शान्तनु भूपके लहि जननिको मत नाम । कियो चित्रांगद हि राजा भीष्म अतिबलधाम ॥ * * * * * * * * *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

चित्रांगद निज सौर्य्य समान । मनमे गणत न भूपति आन ॥ अपने बलके आगें धीर । सुर असुर नहि निदरत वीर ॥ गन्धर्बप चित्रांगद नाम । महावीर मायाको धाम ॥ आयो चढि लखि दर्प विरुद्ध । तासों लरो भूप अति क्रुद्ध ॥ कुरुक्षेत्र मह सम्वत तीन । दोऊ लरे शस्त्रपरबीन ॥ सर स्वती सरिताके तीर । नृप गन्धर्ब लरे बरवीर ॥ तुमुल युद्ध तहँ भयो महान । दोऊ शर बरषे मेघ समान ॥ माया बलकरि कै गन्धर्ब । चित्रांगदकँह हनो अखर्व ॥ गो गन्धर्ब स्वर्गकों भूप । जीति समर लहि विजय अनूप॥भीष्म तास देहांतक कर्म । कियो वेदविधि वेत्ता धर्म ॥ विचित्र बीर्य्य को करि अभि षेक । भीष्म कियो राजा सविवेक ॥ विचित्र बीर्य्य हि बालक देखि । पालत राज्य भीष्म हित भेखि ॥ सत्यवतीके मत अनुसार । भीष्म न पालत राज्य उदार ॥ यौवन सह लखि भ्रातृहि भूप । व्याहो चहो भीष्म अनुरूप ॥ काशिराजके कन्या तीनि । भरी रूपसों परम प्रवीनि ॥ तिनको करत स्वयम्बर भूप । सुनो भीष्म यह सुबिर अनूप ॥ रथ चढि गए अकेले वीर । काशीपुरी भीष्म रणधीर ॥ सत्यवती की आज्ञा पाय । देखे तहां भूप समुदाय ॥ भीषम तिनकहनकों देखि । भे प्रसन्न भ्राता सम लेखि ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

करति कीर्त्तन बिरदबंस सु नामको अभिराम । वैतालिका तहँ बरी कन्या स्वयं भीष्म ललाम ॥ लई रथपर राखि तिनकों महाबल रणधीर । कहन लागे व्याह जे सब भांति केबर वीर ॥ ब्राह्म्य आर्ष सु आसुरो अरु राक्षसो गान्धर्ब । दैव प्राजापत्य अरु पैशाच भाषत सर्ब ॥ कहत राक्षस सो स्वयम्बर करत भूपति वीर । जीति कै जो हरत कन्या भूमिपति रणधीर ॥ हरत

हैँ हम सुनऊ कन्या भूप सहित समाज ॥ करऊ यत्न बिचारि कै सब जय पराजय काज ॥ खडे हैँ हम करैँ निश्चय सुनऊ भूपति युद्ध । सह महीपन्ह काशिपति सौँ वचन कहि इमि उद्ध ॥ लई सु रथ चढाय शिगरी कन्यका रणधीर । चले कहि कै वेग सौँ तब भीष्म कौरव बीर ॥ देखि लीन्हे जात कन्यन्ह भीष्म कौँ छितिपाल । उठे सिगरे मञ्च तैँ अति भरे कोप कराल ॥ पहिरि कै सन्नाह रथ चढि लए शस्त्र समूह । चले पीछे भीष्मके सब भूप बाधँ जूह ॥ तब होन लागो नृपनसो अरु भीष्मसौँ अति युद्ध । नृपन एकहि साथ छोडे बाण अयुत सक्रुद्ध ॥ भीष्म ते शर शरण त सब काटि कीन्हे खण्ड । एक एकन कौँ हनें शर तीनि तीनि प्रचण्ड ॥ घेरि लीन्हो चहूं दिशि त कौरवहि तिनि जाय । लगे बर्षन बाण ज्यौँ गिरिराज पैं घन आय ॥ सर्व भूपन पांच पांच सु हने बिशिख महान ।भीष्म तिनकौँ काटि द्वै द्वै हने तिन कौँ बान ॥ शक्ति सङ्कुल तुमुल भो रण बही श्रोणित धार । ध्वज धनुष खण्डन रुण्ड मुण्डन भरी भूमि उदार ॥हने तेहाँ बीर भीषम शत शहस्र न भूप । कौन ताको हस्त लाघव लहै वीर अनूप ॥ जीति भूपति सकल रण मे एक भीषम बीर । लए कन्यन्ह चले हास्तिन नगर कौँ रणधीर ॥ महा रथ तब शाल्व राजा भरो क्रोध महान ।चलो पीछैँ भीष्म के मद भरो दुर्द समान ॥ लयो चाहत कन्यकन कौँ तिष्ठ तिष्ठ पुकारि । हनन लागो शरण सौँ अति बेग सौँ रथ चारि ॥ **********

॥ * ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ * ॥

सुने बैन ताके भरे क्रोध भारी ।करैँ नैन राते महा युद्ध कारी ॥ फिरे भीष्म कालाग्नि से शत्रु मर्द्दी । पुरदाह कर्त्तार जैसेँ कपर्द्दी ॥ भिरो हांक दै शाल्व सौँ वीर ऐसे । महा मत्त मातंग सों सिंह जैसेँ ॥ रहे सर्व राजा चितै दूरिठाढे । भिरे शाल्वसौँ भीष्म बीरारि गाढे ॥ महा वीर सो शाल्व सामन्त मर्षा । महा मेघसौँ भीष्म प बाण वर्षा ॥ लयो छाय बाणावली सौँ सु ऐसे । भरो भार नीहार सौँ सूर जैसे ॥ रहे युद्ध मे भूप जे पूर्व हारे । चितै कै चहूँ ओर ते जै पुकारे ॥ सुने बैन ताके महा क्रोध कीन्हो । शरजाल कौँ काटि कै चूर्ण दीन्हो ॥ लये सु प्रचेतास्त्रकौँ भीष्म कोपे । महा वारि सौँ अस्त्रके वश्य लोपे ॥ हरे अस्त्रसों अस्त्र कौँ शाल्व राजा ।भयो युद्ध का फेरि सन्नद्ध साजा ॥ महाक्रोध कै सारथी भीष्म मारो । हने बाण चन्द्रार्ध सों अर्व चारो ॥ गिरे भूमि पैँ शाल्व संघूर्ण ऐसैँ । हनो शैल वज्रास्त्र सौँ शक्र जैसे ॥ *********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जीति शाल्व कहं विजय लहि भीषम अति बल बीर । कन्यन्ह लै हास्तिन नगर गए महा रणधीर ॥
अपने अपने नगर कौँ गए सकल ते भूप । हिएँ सराहत भीष्मको बल पैारुष अनुरूप ॥

आ०प० कन्यन्ह लै भीषम गए शासत राज्य अमन्द । जहँ बिचित्र बिरय नृपति कौरव कुलकोचन्द ॥
धर्मधुरन्धर सत्यब्रत धर भाव सुख दान । लए गए त कन्यका भगिनी सुता समान ॥

॥ * ॥ गीतिछन्द ॥ * ॥

ते जीति समर बिचित्र बीर्यहि दई कन्या ल्याय । जब व्याह करिबैं चहो तिन सौं भरे भूपति चाय ॥ तब ज्येष्ठकन्या काशिपति की बिहँसि बोलो बैन । हाँ पूर्ब मन मे बरो हो नृप शाल्व कह लहि चैन ॥ नृपशाल्वहूँ मोहि बरी मन मे पिता को मत पाय । कतव्य मोकाँ हो स्वयम्बर सोइ नृप सुखदाय॥यह जानि सो धर्मज्ञ कीजै रहै जासे धर्म । इमि कहो द्विजबरबृन्दमे तेहि भीष्म सौं तजि भर्म ॥ यह सुनि बिचारि सु बूझि बिप्रण सौं सुधर्म स्वरूप।जो ज्येष्ठ अम्बा कन्यका सो बिदा कीन्ही भूप ॥ हीं अम्बिका अम्बालिका बरभाग्य भारी जौंन । ते दई व्याहि बिचित्र बीर्यहि बेद बिधितैं तौन ॥ अति भए कामाशक्त भूप बिचित्र वीर्य ललाम । लहि काशिपति की कन्यका अति रूप गुण की धाम ॥ ते चन्द्रवदनी भरी यौवन चपल चष कटि छीन । पद पाणि राते निबिड जघन नितम्ब उरभव पीन ॥ नृपदस्र सम अति रूप को बर तियन को मन चोर । सो सप्तबर्ष सु भयो रति रसरङ्गमे तरबोर ॥ तब भयो अठयैं बर्ष भूपहि राज जक्ष्मा रोग । सब वैद्य औषध करत हारे यत्न करि हित लोग ॥ बिचित्रबीर्य सबित्र सौं व्है अस्त गो यमलोक । अति भए चिन्तामग्न भीषम भरे पुरजन शोक ॥ सब प्रेतकारज कियो भीषम भरे अतिशय खेद । लहि मातु आज्ञा गोत्र बिप्रण सहित बिधिवत बेद ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ अति दीन व्है सह बंधु सुत को सकल करि मृतकर्म । कहि सत्यवती सु भीष्मसों बर बचन शान्त सधर्म ॥ तब कियो आश्वासन बधुन को पुत्र कान्तिनि भूप । सब बंश धर्म बिचारि भीषम कौं महाब्रत रूप ॥ इमि कहो तेहिं गांगेय कों सुत सुनऊ मेरो बैन । अब रहो तुम लों कौरवन कों पिण्ड पावन चैन ॥ ज्यों कर्म करि शुभ देवपुर को होत निश्चय गौन । त्यों सत्यब्रत है सत्य तुम मे सुनऊ निश्चय तौन ॥ तुम धर्म और अधर्मको सब भांति जानत रीति । हौ पढे श्रुति सहदेव के सब अङ्ग नाना नीति॥तुम बिपति को प्रतिकार जानत शुक्र गुरु सों पाय । हों कहति करि बिश्वास याते धर्म बिद सुखदाय ॥ जो कहति करिबे कार्य सो तुम करऊ सुनि कै बीर । मम पुत्र भ्राता तो मरो अनपत्य बाल शरीर ॥ तो भ्रातपत्नी काशिपति की कन्यका अभिराम । ए पुत्र कामा भामिनी हैं रूप यौवन धाम ॥ तुम करऊ इन मे पुत्र को उतपन्न धर्म बिचारि । यह होत नातरु बंश कौरव अस्त लेऊ उबारि ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ सब सुने माता सहित सुहृदन के कहे ए बैन । तब दयो उत्तर भीष्म ऐस बचन सुधरम ऐन॥ यह कहति हौ सो धर्म हैं जन करत पाय विपत्य । जो कियों पन तव हेत हम सो अम्ब जानऊ सत्य ॥ हम तजैं त्रिभुवन राज्य को नहि सत्य का अभिराम । बरु तजे पृथ्वी

गन्ध को जल तजै रस रसधाम ॥ तजि योति देइ स्वरूप को सु स्पर्श गुण कों वात। अरु शब्द बिनु आकाश होय सु अनल शीतल गात ॥ रवि छोडि देइँ प्रकाश कों अरु शीतता को चन्द। हों सत्य कों नहि तजों कबहूँ बोलि बचन अमन्द ॥ इमि भीष्म के सुनि गन्धकाली बचन मिति के चैन। सो कहन लागी सत्यब्रत सों फेरि ऐसे बैन ॥ हौं सत्य तिथि तो पुत्र जानति भरो अतुल प्रभाव। तुम चहहु त्रिभुवन रचहु अन्य स्वतेज सों युत चाव ॥ जो कहो मेरे अर्थ सो हों सकल जानति पुत्र। सो करहु जात धर्म सह नहिँ मिटै बंशज सूत्र ॥ यह देखि आपत धर्म कों धरु पिता को धुर धीर। लखि प्रजा जाकों होहि हर्षित तौन कीजै बीर॥ सो पुत्र कांक्षिणि धीर्य छोडे दीन करति बिलाप। फिरि भीष्म तासों कहन लागे धरैं धर्म अमाप॥ हे जननि देखहु धर्म मेरो करहु सो न बिनाश। नहि सत्य च्युति यह करति क्षत्रिण को प्रशंस्य प्रकाश॥ यह होय शान्तनु बंश यासो फेरि ऐसो तोहि। हम कहत क्षत्रिय को सनातन धर्म सुमु इत जोहि॥ सो करहु आपद धर्म गुणि कै सह पुरोहित जाय। फिरि होय जाते बंश अक्षय लोक सम्मत पाय॥ ॥ भीष्मउवाच ॥ व्है परशुराम सक्रोध लहि कै पिता बध कृत दोष। बर भुजा काटी सहस्रार्जुनकी महा करि रोष॥ फिरि धनुष लै क्षितिकरी क्षत्री बिना एकइस बार। अति डारि नाना भांति के बर शस्त्र अस्त्र उदार॥ लखि नाश क्षत्रीबंश को तब क्षत्रपत्निन आय। बर बेद बिप्रन संग कीन्हैं सुतन के समुदाय॥ हैं पाणिग्राहक पिता क्षेत्रज पुत्रको यह धर्म। सब बेदबेत्ता कहत हैं मत शास्त्रको यह पर्म॥ फिरि भयो तातें बंशक्षत्री जगतमे यह जौंन। हम कहो यह इतिहास क्षत्रिन को उचित है तौंन॥ फिरि कहत हौं इतिहास माता सुनहु सो अभिराम। हूं तो सुमुनि उत्तथ्य ताकी परम ममता बाम॥ हैं बृहस्पति सु उतथ्य ऋषिके देव गुरु लघु भ्रात। तिन सुरति मम तासौं सु मागो भरे मनसिज गात॥ ॥ ममतोवाच ॥ ॥ तो जेष्ठभ्राता को हमारैं गर्भ है अभिराम। है अन्य गर्भ न धारिबेको उदरमे मो धाम॥ यह बेद पढत षडंग मेरे जठर मे मति मान। तो रेत परम अमोघ सो नहि लहैगो सुस्थान ॥ तुम नहीं मोसौं रमहु यातैं मानि मेरो बैंन। अति भयो कामासक्त जीव न लहत रतिबिनु चैंन ॥ जब करण लागो सुरति तब वह गर्भ बोलो बैंन। है अन्य के इत बास को अवकाश तात सचैन॥ जब रेत लागो गिरन तब वहिँ गर्भ पाय बढाय। दिय रोंकि रेतस राह सो वह गिरो क्षितिपर जाय॥ तब क्रोध करि कै बृहस्पति इमि दियो ताकों शाप। तुम अन्ध होहु सु बीर्य मोकृत ब्यर्थ को लहि पाप॥ तब अन्ध व्हैकै जन्म लीन्हों सो उतथ्य अपत्य। भो ब्याह प्रद्वेषी सु आर्या सो भरी गुण सत्य॥ भे गोतमादिक पुत्र तामे परम तप के धाम। मुनि पढो सुरभी पुत्रसौं गोधर्म अति अभिराम॥ सो बलीवर्द समान लागो रमण बनितन संग। तब और मुनिवर देखि तेहि मर्याद लभो भंग॥ तब क्रोध करि तिन कहो यह नहि योग्य आश्रम बास। यह अन्ध मुनिको

१०५० भलोहै नहि राखिबो गृह पास॥नहि करतिसो सन्तोष पतिको पुत्र लहि कै बाम।तब कहो तासो अन्धमुनि क्यौं करति द्वेष अकाम ॥*॥ प्रद्वेष्युरुबाच ॥*॥ जो करै पालन तौन पति जो भरै भर्त्ता तौन॥ हम भरण करि तो पुत्र पायो रहो निर्धन भौन। हम नित्य श्रम करि भई आर्त्त न भरौंगी अबतोहि ॥*॥ भीष्मउवाच ॥ *॥ तब अन्धमुनि सुनि कहा ऐसें क्रोध सों मन पोहि॥लै मोहि क्षत्री भूप पैं चलि चहति जो धन बाल ॥*॥प्रद्वेष्युरुबाच ॥*॥ तो दत्त हौं नहि लेउ गी धन दुःख कारण हाल ॥ जो होय इक्षा करऊ तुम हम तुम्हे कोउ न भर्त्त॥*॥ दीर्घतमोवाच ॥ *॥ हम आजुतें मर्याद यह जगमाह थापन कर्त्त॥शुचि होय नारी एक पति कीजियै जबलों तौन।जो जाय दूसरे पुरुष पैं तौ लहै पातक भौन॥ है जियत पतिकै मरैं करति जो अन्यसों रति बाम।यह सत्य ताको नर्कमे बऊ कालहूहै धाम ॥*॥ वैसम्पायनउवाच॥ *॥ यह बाम मोहि निकारि कहंन हिरमै ओरे साथ।यह ल्याय आशङ्का हिए द्विज कह्यो इमि नरनाथ॥यह सुनत बचन द्विजान्धके रिसि ब्राह्मणी अति छाय । तब कहो पुत्रन सों पकरि यहि देऊ बेगि बहाय ॥यह सुनत पुत्रन पकरि ताको बांधि उडुप बनाय॥ तब सुरसरीके सलिल मे धरि दियो ताहि बहाय। सो बहत गेः जहं न्हात हो बलि नाम को बर भूप।लखि काढि ताकौ बूझि समुझो वृत्त सकल अनूप ॥करि पुत्र हेतुक बर्ण ताको जानि नृप तप धाम। सो गयो अपने भौन कौं लै भूप अति अभिराम ॥ सुत करऊ मुनि उत्पन्न जे धर्मार्थ कुशल महान । मुनि कहा सुनत तथास्तु तासों जानि भूप सुजान॥

॥*॥जयकरीछन्द॥*॥

भूप सुदेष्णा रानी जौन। ताके पास पठाई तौन ॥ वृद्ध अन्ध लखि रानी ताहि । दासी ता पहँ दई पठाहि ॥ ताके आदि सुकाक्षी बान । पुत्र एकादश भए सुजान॥ तिनकौं पढत बिलोके भूप। कहो हमारे पुत्र अनूप॥ ऋषि नृप सों इमि कहो अनूप। एतो नहि हैं मेरे भूप॥ शूद्रयोनिमे जाए सर्व। काक्षीवदादि पुत्र अखर्व॥ अन्ध वृद्ध मोहि देखि कुरूप। किय अपमान सुदेष्णै भूप॥ मोपहं दासी दई पठाय । ताके भए पुत्र समुदाय ॥ बऊ बिधि कीन्हो बिनय नरेश। भे प्रसन्न तब मुनि तपवेश ॥ बलि भूपति मुनि आज्ञा पाय । दियो सुदेष्णहि तुरित पठाय ॥ रानी को सब परसि शरीर। बोले मुनिबर तप गम्भीर ॥ रानी तुह्मरे पुत्र उदार। ह्वैहैं रबि सम भूभर्त्तार॥ अंग बंग कलिंग अमन्द ।पुंड्र शुह्म भे ताके नन्द॥ भए देश ए तिनके नाम। करो जहां तिन राज्य ललाम॥ ऐसें बलिराजाको बंश । भयो पूर्व बर धर्म प्रसंश॥ और भए क्षत्री बलवान। ब्राह्मण सों उत्पन्न महान॥ यह सुनि कै माता करि तौन। होय बंश है बूडत जौन ॥ ब्राह्मण होय सु तप गुण रास।धन दै करऊ निमंत्रण तास॥ बिचित्र बीर्य्य की रानी माह।

करै प्रजासौं कुरु नरनाह॥ वैसम्पायनउवाच॥ सत्यवती भीषमसौं बैंन। कहो सलज पाइ कै चैन॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

तुम कहत हो सो सत्य भीषम सुनहु मेरे बैंन। बिश्वाससौं तो कहति हौं वर बंश सम्भव चैंन॥ नहि योग्य तुमसौं कहनके है कौंन ऐसो धर्म्म। धर्म्म सत्य स्वरूप हो तुम बंश पावन पर्म्म॥ प्रथम सुनि मो वचन कीजो योग्य जौंन सचाव। रही मेरे पिताके एक धर्मवाहक नाव॥ प्राप्त यौवन हौं गई तहँ नाव बाहन कांम। नदी तरिबे मुनि परासर गए तहँ तपधांम॥ चली उनको पार लै जब नावपैं बैठाय। मधुर वचन सकाम ह्वै कै कह्यो मो ढिग आय॥ शाप भयतें सुमुनिको नहि सकी करि अपमान। तेजलैं मोहि मध्य यमुना कियो बश तपभान॥ अन्धकार पसारि चहुं दिशि नावपैं तपधाम। मत्स्यगन्ध मिटाय मेरो दियो सौरभ माम॥ कहो मोंसौं सुमुनि तजि मो गर्भ यह अतिरूप॥ कालिन्दीके द्वीपमे लहु पूर्वरूप अनूप॥ भो परासर पुत्र योगी महातेजसधाम। पुत्र कन्या पनेको मों महामुनि अभिराम॥ वेदके करि कै बिभाग सो भयो व्यास सुनाम। अष्टादश पुराणहि पूर्ण बिरचे तप गुणधाम॥ पिताकें सङ्ग गयो तबही जन्म लै तपसत्य। उत्पन्न करि है भ्रात पतिनमाह तीन अपत्य॥ गयो कहि जब परै तुमको आय दुःख बिशाल। स्मरण मेरो कीजियो हौं अम्ब ऐहौं हाल॥ भीष्म जौं तुम कहो तौ सुस्मर्णं कीजे तस्य। बिचित्र बीर्य्यके क्षेत्रमे सो करो पुत्र अवस्य॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच॥ * ॥ भीष्म सुनत महर्षि कीर्त्तन कहो अञ्जलि जोरि। श्रेय जाते होय अम्ब सु करहु कहत निहोरि॥ भीष्मके सुनि बचन ऐसे महाआनदभर्ण। गन्धकाली व्यासमुनिको कियो तब सु स्मर्ण॥ मात चिन्तन समुझि कै मुनि पढत आए वेद। भए तासों प्रगट तबहीं महा तप हर खेद॥ कियो विधिवत तत्र पूजन पुत्रको अभिराम। गोदमे लै स्तन्य बरखी भरी करुणा माम॥ बास मोचे गन्धकाली देखि कै सुत पर्म। जननि सोचो बारिसौं तब जानि व्यास सु धर्म॥ व्यास ऐसैं कहे तासौं बचन आँनदभौंन। होय बांछित कहहु माता करौं मै अब तौंन॥ महामुनिको करी पूजा राजप्रोहित पर्म। ग्रहण कीन्हो तौन बिधिवत जानि कै मुनि धर्म॥ देखि पूजित प्रीतिमान सु आसनस्थ ललाम। कुशल बूझो गन्धकाली पुत्रसों अभिराम॥ जनकको अरु जननिको उत्पन्न है सुत तात। पिता स्वामी पुत्रको है तथा स्वामिनि मात॥ सुबिधान बिहित सु पुत्र मेरे हो यथा तुम पर्म। सु बिचित्र बीर्य्य सुपुत्र मेरो तथा अवरज धर्म॥ पितातें ज्यों भीष्म मातातें तथा तुम भ्रात। बिचित्रबीर्य्य सु भूपके हो सुनहु मुनि अवदात॥ भूप शान्तनु पुत्र ए हैं सत्यपालक बीर। करत बुधि अपत्यमे नहि राज्य शासन धीर॥ तुम करहु भ्राता स्नेहतें सन्तान पालक बंश। मम निदेश सु भीष्मको लहि बचन परम प्रसंश॥ कृपा करि कै

आ०प० जननप बर रक्षण रथ पर्म । कहति कोमल बचनसो मम करऊ पूरण धर्म ॥ कनिष्ठ भ्राताकी सुभार्य्या रूप यैाबन धाम । पुत्र चाहै धर्म बिधिसों सुनऊँ अति अभिराम ॥ उतपन्न करऊ अपत्य इनमे हो समर्थ सुजान । बंशके अनुरूप भूपति बंशकर सुखदान ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ गन्धकाली अम्ब तुम पर अपर जानति धर्म । सुमति याते धर्मसे तो रहति निष्ठित पर्म ॥ पाय आज्ञा रावरेकी धर्म कारण जानि । करोंगो तो सकल बांछित पूर्ब बिधि अनुमानि । मित्र बरुणके सम देऊँ भ्राताकों सुपुत्र सुजांन । भ्रातपत्नी करहि ब्रत हों कहत जो सुखदान । बर्ष दिनलैां सुब्रत धरिकै सुद्ध करि कै काय । बिना ब्रत के करैं बामन सकति मो ढिग आय ॥ ॥ * ॥ गन्धकाल्युवाच ॥ * ॥ शीघ्र मेरी स्नुषा जैसैं लहहि गर्भ असन्द । बिना राजा प्रजा जनपद नष्ट होत सदन्द ॥ * ॥ व्यास उवाच ॥ * ॥ पुत्र देउँ अकालमे जैा करै यह ए बाम । बिरूप मेरा देखिकै सहि कर हि भाव ललाम ॥ गन्ध औार बिरूप मेरो सहै गीं जो अद्य । गर्भको सो लहै गीं बरबंशकारक सद्य ॥ जो सहि सकै सजबाय शय्या लखे तो मम राह । हो अम्बिका बर धारि भूषण भारी भूरि उमाह ॥ यहि भांति मुनि कहि जननिसों तब भए अन्तरध्यान । जाय कै तब गन्धकाली स्नुषापैं मतिमान ॥ धर्म्म अर्थ सयुक्त तासैां कहे हितमित बैंन । कहति धर्म रहस्य सो सुनु बधू आनद अैंन ॥ कुरुवंश लहत बिनाशकों मो भाग्यको क्षय पाय । देखि मोकंह व्यथित है कुरुबंश पीडा छाय ॥ भीष्म मोकैां दई है मति बंश कारक बृद्धि । तोन है तो बस्य मोकों करऊ फेरि समृद्धि ॥ धरै ज्ञान भुजानपैं यह राज्यको गुरुभार । गन्धकाली कहि करायो बचन यह स्वीकार ॥ दिए भोजन अतिथि ब्राह्मण बिबिधिभांति बोलाय । * । बैसम्पायन उवाच । * । देखि ताको गन्धकाली ऋतुस्नाता पाय ॥ मधुर बचन सु बोलि पठयो ताहि सैन अवास । हे बधू देबर रावरो सो आइ है तो पास ॥ निशीथमे सो आइ है वह महा तपको धाम । मानि स्वस्रू बचन सोई जाय सेज ललाम ॥ भीष्म बरबल औार कैारब श्रेष्ठ भे हे जैांन । अम्बिका एकाग्र मनसों चित्त कै सब तैांन ॥ अम्बिका पहँ प्रथम आए मानि जननि निदेश । दीप द्योतित भवनमे मुनि कियो जाय प्रवेश ॥ कपिल छूटी जटा जाकी नयन अनल समान । गोंछ मोछसो नकुके रङ्ग घोरवेश महान ॥ अम्बिकासो भरी भयतें देखि मुनिको रूप । कियो मुनि सम्भोग तासों जननि प्रिय अनुरूप ॥ अम्बिका नहि लखी सन्मुख रहो मूंदे नैंन । लहो नहि सम्भोग जन्य प्रसन्न ह्वै कै चैंन ॥ चले जब मुनि गन्धकाली बचन पूछो आय । त्रिकाल दरसी महामुनि यह दियो बचन सुनाय ॥ राजपुत्र सु होय गो बलवान याके अम्ब । अयुत गजबल भरो ह्वैहै शासको अवलम्ब ॥ महा भाग्य सु महा बुद्धि सु राजऋषि अभिराम । होहि गे शत पुत्र ताके महाप्रबल ललाम ॥ बै गुणतें यह सुनऊ माता

अन्ध ह्वै है तौन । वचन मुनिके सुनत माता कह्यो कारण कौन ॥ कुरुवंशको पति अन्ध यह नहि योग्य है तपधाम । ज्ञाति वंश विबृद्धि कारक देऊ दुतिय ललाम ॥ * * * * * *

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

समय प्रसवको पाय अन्ध भए धृतराष्ट नृप । सत्यवती दुखछाय फेरि विनय मुनिसों कियो ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

दीजिए मुनि पुत्र जो कुरुबंशके अनुरूप । तथास्तु कहि कै गन्धकालीसों गए मुनि भूप ॥ फेरि कहि अम्बालिकासों वचन करि परमान । गन्धकाली पूर्व विधिवत कियो मुनिको ध्यान ॥ फेरि आए तथाविधि तहँ महामुनि अभिराम । तथाविधि अम्बालिकाके गए निशिमे धाम ॥ देखि सो मुनि रूप भयतें भई पाण्डु स्वरूप । देखि तासों व्यास ऐसे कह्यो वचन अनूप ॥ भई जो तुम पांडु सोका देखि भय भरिमाम पाण्डु ह्वै है पुत्र तो अम्बालिके बलधाम॥पांडु नामक भूप सो यह चले कहि जब व्यास । गन्धकाली जाय बूझो वचन मुनिके पास ।कहो मुनि सुत पांडु ह्वै है महाबलको धाम। जननी फिरि सुत एक मागों मुनिसो अभिराम । गए व्यास तथास्तु कहि अनुप्राप्त भो जब काल ॥ पुत्र भो अम्बालिकाकें पांडु रूप विशाल ॥ भरो लक्षण सर्वसों औ सिन्धुसो गम्भीर ॥पुत्र जाके भए पाण्डव पांच अतिरथ वीर ॥ ऋतुकालमे फिरि अम्बिकाकों पठै मुनिके पास।गन्धकाली चाहि चितसे पुत्र सुन्दर तास ॥ * * * * * *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सो मुनिको दुरगन्ध विचारि । रूप कुरूप हिएँ निरधारि ॥ दासी मुनिपहँ दई पठाय । पट भूषणसों चारु बनाय ॥ मुनि आगमन देखि सुखदाय । तेहि चलि आगें परसे पाय॥ आज्ञा लहि कै बैठी पास । मुनि तासो किय सुरति बिलास ॥ अतिसै पाय मदन रसरङ्ग । रहे निशा भरि मुनि तेहिसङ्ग ॥ तासों कह्यो जात मुनि ओक । मिलि है तोहि पतिव्रत लोक ॥ बसो गर्भमे तो श्रीमान। धर्म पाय ऋषि शाप महान ॥ बिदुर नाम अति बिद्यामान । धृतराष्ट्र पाण्डु भ्राता सुख दान ॥ सत्यबतीसों कहि यह व्यास । शूद्रा सङ्गमको इतिहास ॥ माताके ऋणसों है मुक्त। कहि दासीकों गर्भ सयुक्त ॥ व्यास भए तब अन्तरध्यान । यहि विधि करि कुरुवंश सुजान॥ * * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकबिनाकृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि बंशोत्पत्तिवर्णनोनाम पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥ * * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ ऐसो करो कौन सो कर्म ।जासों लह्यो शाप प्रभु धर्म ॥ कौन

आ०प० ब्रह्मऋषिकौ लहि शाप। पायो धर्म योनिगत पाप ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ है माण्डव्य सुऋषि तपधाम। आश्रममे तप करत ललाम ॥ ऊरधबाहु बृक्षके मूल । खरे मौनब्रत तरुके तूल ॥ नृप घरमे चोरी करि चोर । मुनिबनमाह छपे लखि भोर ॥ नृपरक्षक अनु बूझौ आय। गए चोर कित देऊ बताय ॥ सु मुनि मौनब्रत कहो न बैंन। ढूंढन लगे ते आश्रम ऐंन॥ धन सह गहे भटन तहँ चोर। पकरि लयो मुनिसह बरजोर ॥ सधन चोर गहि ल्याए भूप। कहो रक्षकन जाय अनूप ॥ रक्षकगए नृप आज्ञा पाय। मुनिकों धरे शूलपहँ जाय॥ बऊत काललौं शूलासीन। मुनिबर रहो अहार बिहीन॥ नहि भूलो मुनि बेदाध्ययन। बैठो शूलशिखा तप अयन॥ताके तपतैं मुनिजन सर्व । पायो तिन सन्ताप अखर्ब॥ निशिमे धारि शकुन्त स्वरूप। ताके पास जात मुनि भूप॥ तासौं पूछत भरे उताप। हे मुनि करो कौन तुम पाप ॥ जातैं सहत महत यह कष्ट। कहऊ तौन मुनिबर सुस्पष्ट ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ *॥कहो मुनिनसों मुनि इमि बैंन। मोसौं दोष परस्पर हैंन ॥ दुख न सहत अपने बिन पाप। कोऊ जानो निश्चय आप ॥ रक्षकजन मुनि जीबित देखि। शूली पर बैठो अब रेखि ॥ तिन सब कहो भूपसौं जाय।सुनत नृपति आयो भय पाय ॥ लगो कहन बिनीत सु बैंन। जो सुनि कै मुनि पावै चैंन॥*॥राजोवाच॥*॥ जो अज्ञान मोह बस कर्म। हेमुनि बर हम कियो अधर्म ॥ क्षमा करऊ सो हे तपधाम। क्रोध योग्य नहि हम मतिमाम ॥ यह सुनि कृपा कियो मुनि भूप। क्षत अज्ञान कुकर्म कुरूप॥ मुनिकौं कृपा युक्त नृप चाहि। लगे शूलसौं काढ न ताहि॥ चितितैं कढो न गुदतैं शूल।बल करि थके खैंचि गहि मूल॥भूप महा मुनिसौं तब भाखि। काटिलयो सो गुदसम राखि ॥ शूल सहित बन गे तपधाम । अणि मांडव्य कहाए नाम ॥ तब बलतें जीतो परलोक । गए धर्मराजाके ओक ॥ धर्मराजकों बैठो देखि। लागे कहन महामुनि तेखि॥ कौन कियो हम दुष्कर कर्म। ऐसो दियो जास फल धर्म॥ बेगि कहऊ तुम हमसौं तौन। फेरि लखऊ मो तपबल जौंन ॥ * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ धर्मउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

पतंगिकाके पूंछमे सीक चलाई जौंन । लहो तास फल महा मुनि शूल सहन भो जौंन ॥

॥ * ॥ अणिमाण्डउवाच ॥ सोरठा ॥ * ॥

तनु अपराध हि पाय दण्ड दियो इतनो बडो। शूद्र योनिमे जाय धर्मराज ह्वजै मनज ॥
हौं थापत मर्य्याद धर्म फलोदय लोकमे । वर्ष चतुर्दश बाद पाप कर्म फल जन लहै ॥
मुनिबर दीन्हो शाप लहि इतने अपराधकौं । धर्मराज बिनुपाप शूद्र योनिगत मनुज भे ॥

॥ * ॥ चरणाकुलछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ जनमैं तीनि कुंवर छबि छाए। कुरु जाङ्गल कुरुवंश सोहाए

कुरुक्षेत्र में बर्द्धित भए। भरे भाग्य राज्यश्री मए ॥ बढी सस्य सब रस मय रूरी। होति वृष्टि आछहि समय सुपूरी ॥ फूले फले वृक्ष छबि सरषे। रिष्ट पुष्ट बाहन सब हरषे ॥ बणिक बजारन्ह मे धन भारे। नानाभांति शिल्पगुण वारे ॥ सुभट साधु कोबिद मुद गहे। खल शठ चोरन कितहूँ रहे ॥ नगर देश शतयुग सों छायो। यज्ञधर्म को कर्म सोहायो ॥ सब अन्योन्य प्रीति हैं राखें। अनृत बचन जन कोउ न भाखैं ॥ दम्भ क्रोध अरु लोभ बिहीनैं। सुजन परस्पर आनद भीनें ॥ नगर सदृश रत्नाकर सोहै। भरो मणिन सों जन मन मोहै ॥ घन प्रासाद गगण सों लागे। पुर महेन्द्र पुर सम छबि पागे ॥ नदी बिपिनि गिरि सरवर जेहां। बिहरत पुरजन मुदभरि तेहां ॥ कोऊ कृपिण न बिधवा नारी। कुरु बर्द्धित पुरजन सुख चारी ॥ कूप अराम सभा सर बापी। जहँ तहँ बसे बिप्रबर जापी ॥ सर्वं ऋद्धिमय मंगल नाना। होत देश मे बेस बिधाना॥रक्षित भीष्म धर्म तें सोह। अति रमणीय राज्य मन मोहैं॥परपुर दलि निज बर्द्धित कीन्हो॥राज्य भीष्म निर्भय करि दीन्हो॥ जन्मकृत्य कुँवरन की चाहैं। प्रजा नित्य उत्सव उत्साहैं ॥ पुरमह घर घर यह धुनि सुनिए। देऊ देऊ गुणियैं निरगुणि ए ॥ धृतराष्ट्र पण्डु अरु बिदुरहि पालैं। सुत सम भीष्म प्रेमकरि लालैं॥सह संस्कार शास्त्र श्रुति पढे। धनुर्बेद पढि योवन मढे ॥ ज्ञान बिधान भली बिधि जाने। नीति रीति पढिके सुखसाने ॥ भे बिख्यात पण्डु धनुधारी। भे धृतराष्ट्र महा बलभारी ॥ नहि मतिमान बिदुर सम कोऊ। सत्य धर्म जानत सबकोऊ ॥ *✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿**

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

काशिराज सुगणी कन्या बीरहू अभिराम। देश भो कुर जाँगलो सब देश मे धनधाम ॥ धर्म बिद मँह भीष्म सम नहि और भूपति धन्य। पुरण मे नहि हस्तिनापुर सदृश है पुर अन्य ॥ चक्षु बिनु धृतराष्ट्र कोँ नहि कियो राजा रूप। कियो भीष्म बिचारि कै यह पण्डु कों तव भूप ॥ भीष्म उवाच ॥ * ॥ गुणन ते यह बंश मेरो बिदुर अति बिख्यात। जीति कै क्षितिपाल सिगरे नीतिसों बरभात। करो रक्षित पूर्व जे कुरुबंश मे भे भूप। उच्छेद कबहू न लहो ममकुल परम पावन रूप॥ व्यास हम अरु कृष्णकाली धर्म पथ गहि सत्य। कुलस्थापन कियो फिरि सब तुमहि करि उतपत्य॥ बंश बर्द्धित होय जैसैं धर्म तैं अनुरूप। करहि हम अरु बिदुर तुम मिलि तथा कार्य अनूप॥ सुनत हैं यदु बंशमे है कन्यका अभिराम। मद्रपति अरु सुबल के है सुता सुषमा धाम ॥ ते योग्य मम सम्बन्ध के है परम बंश प्रशस्य। बिदुर तिनकों बरो चाहत सुतन्ह हेतु अवस्य ॥ बिदुरउवाच ॥ पिता माता परम गुरु हम सबन के हौ बीर। एहि बंश को हित होय जैसे करहु तैसे धीर ॥ ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच॥ * ॥सुनो भीषम द्विजन सों है सुबलकन्या जौन। शत पुत्रको बर लहो है

आ०प० करि शम्भु सेवन तीन ॥ सुबल पैं तब दियो प्रोहित पढै कन्या हेत । गान्धारपति सुनि अम्बर अति भयो चिन्तित चेत ॥ सुकुल ख्याति विचारिकै गान्धारपति मतिमान । धृतराष्ट्रका सो कही कन्या देन कौं सुखदान ॥ गान्धारि सुनि धृतराष्ट्र कों हैं चक्षुहीन सुजान । पिता माता देत भेोकों ताहि व्याहि विधान ॥ बसन सों बक्त भांति बांधे नेत्र अपने पर्म्म । सुबल राज सु सुता शुभगा धारि पतिव्रत धर्म्म ॥ सुबल नृप सुत शकुनि आए लएँ भगिनी साथ । सकल गुण सम्पन्न जेहँा रहे कौरव नाथ ॥ व्याहिकै धृतराष्ट्र कौं सो देइ दाइज भूरि । भीष्मसों सत्कार लहि गे स्वपुर आनद पूरि ॥ सुबलजा पतिधर्म्म धारे रहति अति अभिराम । लेति पुरुष न अन्यको सो बदनह्न तें नाम॥यदुवंश मे बसुदेव को हैं पिता सूर नरेश ।पृथा ताकी सुता हों गुण भरी सुषमा बेश॥ सूर नृपकी फुफू को सुत कुन्ति भोज सु भूप । सूर सों तेहि जाइ मांगो पुत्रदान अनूप ॥ सूर तासों कहो ह्वैहै प्रथम जैान अपत्य । भोज दहै तान तुमकौं बचन जानझ्ञ सत्य॥ प्रथम कुन्ती दई ताकौं दई सूर नरेश । कुन्तिभोज सु पालि तासों कियो परम निदेश ॥ करज्ञ पूजन अतिथ ब्राह्मण इहां आवहिं जैान । पाय आज्ञा पिता को सो करन लागी तान ॥ गए दुर्वासा तहां अति उग्र लखि आसन्न । सब भांति तिनकों पूजि कुन्ती किये बक्तत प्रसन्न ॥ दियो ताकौं मंत्र सुमुनि भबिष्य बिपति बिचारि । प्रयोग की बिधि सहित ऐसें बचन कहि निर धारि ॥ जेहि देवको यहि मंत्रसों तुम करझगी आव्हान । सो आय तुमकौं देयगो बरपुत्र अति बलवान॥ तेहि मंत्रको फल बूझिबे कौं पृथा करि अनुमान। करो तब तेहिं मंत्र कौं पढि भानुको आव्हान ॥ भरी बिस्मय चले आवत भानु कौं लखि नैन । आइ नीरे सूर तासों कहे ऐसे बैन ॥ कहझ सुन्दरि करहि का तो मनोबांछित हाल । * । कुन्त्युवाच । * । दियो हमकौं महा मुनि यह मंत्र हौं दिन पाल ॥ ताहि जानन हेत कीन्हों देव तो आव्हान । करति तुमहि प्रणाम जैपै कृपाकरि जग त्रान ॥ * ॥ भानुरुवाच ॥ * ॥ बिदित हमकौं दियो तुमकौं मंत्र मुनिवर जैान । छोडि भय मम करझ सङ्गम सुनझ सुन्दरि तौन ॥ हु अमोघ दर्शन होत मेरो सुनझ हे सुखदान । नतरु ह्वैहै दोष तुमकौं किए को आव्हान ॥ * ॥ बैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ बचन सुनिकै भानुको कन्यत्व को भय मानि । नहीं सङ्गम कियो चाहति पृथा अति सुखदानि ॥ फेरि ऐसें कहो तासों अर्क आदर युक्त । कृपातें तब होझगी तुम दोषतें अति मुक्त ॥ यहि भांतिसों कहि बचन तासों होय भानु सकाम। आइकै तह किये सङ्गम पृथासों अभिराम ॥भयो तत्रसुपुत्र ताके महा धनुधर वीर । सहित कुण्डल कवच सो श्रीमान सुतनु गभीर ॥ फेरि दै कन्यत्व ताकौं तत्रही अभिराम।तमनाश कर श्रीभासकर दिवकौं गए बल धाम ॥ देखि तैान कुमार कुन्ती भई चिन्ता मग्न॥ रहै मेरी लाज कैसें करों कैान बिधान ॥ दयो सुत सो डारि जलमे लाज कुलकी धारि । बहो जात सो देखि ताकौं लयो सूत निकारि ॥ रही राधा तासु पत्नी दयो ताकौं जाय।

पुत्रसम सो लगी पालन महा आनद छाय ॥ नाम धेय समेत ताको किये जातक कर्म्म। बर्द्ध मान सो शस्त्र बेत्ता होतभो अति पर्म्म॥भानु सन्मुख बैठि तबलोँ करैँ राधन तैाँन। जाहिँ जबलोँ पीठि पीछे महा आतप भैान॥ तेहि समै मे जो बिप्र तासोँ जैाँन मागै जाय। तैाँन ताकोँ देय तबही कर्ण अति सुखपाय॥ धरे ब्राह्मण रूप आए इन्द्र ताके पास। कवच कुण्डल सहित मांगो चाहि सुलहित प्रयास॥ काढि तनते कवच दीन्हो ताहि सङ्कज जैान। भए शक्र प्रसन्न अतिशय कवच लै कै तैान॥दई शक्ति अमोघ ताकोँ बोलि असे बैन।सुनो जापैँ घालि हो सो एक बचिबे है न॥ प्रथम हैाँ बसुषेण बर फिरि कर्ण धारो नाम। कवच दीन्हो काढि तन तैँ काढि अति अभिराम॥ कर्म्म कीन्हो महा अद्भुत छूरिकासोँ फारि। कवच दीन्हो सहित कुंडल दानधर्म्म बिचारि॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजन गोकुलनाथकबिनाकृतमहाभारतदर्पणेआदिपर्वणिकर्णोत्पत्तिबर्णनोनामषड्विंशोऽध्यायः॥ * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ वैसंपायनउवाच ॥ * ॥ गीतीछन्द ॥ * ॥

सो रूप गुण सम्पन्न सुन्दरि धर्मशीला बाम। है कुन्तिभोज महीप कन्या पृथा अति अभिराम॥ सो बरन चाहति भूप कोऊ परम रूप निहारि। तब कुन्तिभोज बिचारि कै यह चित्त मे निरधारि॥ रचिकै स्वयंबर बोलि लीन्हे चहूँदिशि के भूप। नृप रङ्गमे तहँ प्रथै देखो पाण्डु को अनुरूप॥ सम सिंह दर्प बृषाक्ष उन्नत बक्ष अति बलवान। सब सभा छाए तेजसोँ सो लसत मानऊ भान॥ तब देखि ताकोँ भई कामाकुलित कुन्ती बाम। भरि लाज दीन्हो माल सैाँपहि राय ताहि ललाम॥ सो बरी ताहि बिलोकि कै जे रहे अन्य नरेश। ते यथा आए तथा सिगरे गए अपने देश॥ तब कुन्तिभोज बिबाहि दीन्ही पृथा कोँ अभिराम। बर बेदबिधि सोँ पाण्डु नृप कोँ महा छबि को धाम॥ हय हस्तिगण मणि बसन भूषण दिए अमित अनूप। व्है बिदा कुन्ती सहित आए स्वपुर कुरुकुल भूप॥ नृप पाण्डु कुन्ती सहित आए स्वपुर कोँ अभिराम। बर सुदिन पाय प्रवेश कीन्हैाँ सहित मङ्गल धाम॥*॥ वैसंपायनउवाच॥ *॥ तब भीष्म दुसरो व्याह कीबे पांडुको मतिमान। सह सचिव ऋषिन समेत सेना कियो तब प्रस्थान॥ नृप मद्रपति के चले पुर को मद्रपति सुधिपाय। सो आइ आगें करी पूजा गयो स्वपुर लेवाय॥ बरदयो आसन दिव्य ताकोँ अर्घ पाद्य समेत। फिरि देइकै मधुपर्क बुझो कुशलप्रश्न समेत॥ जब आगमन को हेत पूछोँ भीष्म तब मतिमान।सुनि कहो कन्या हेत आये अहो शल्य सुजान॥ हम सुनी भगिनी रावरी है परम माद्री नाम। सो बरो चाहत पांडु नृपके अर्थ अति अभिराम॥ तुम योग्य हो सनबंधके मम हैाँनि हारे भूप। सो बिचारि सु मद्रपति यह कीजिए अनुरूप॥ सुनि भीष्म के ए बैन बोले

७५० मद्रपति अभिराम। नहि मोहि तुमते और है संबन्ध मे गुणधाम॥ मम बंश मेजे पूर्व हैं तिन कियो धर्म प्रवृत्त। सो साधुहै कि असाधुहै सो होत है न निवृत्त ॥ वह व्यक्त ह्वैहै भीष्म तुमको विदित है जगनाह। नहि योग्य तुम सो देऊ कहिबे सुभट कुरु कुल नाह ॥ सुनि मद्रपति के बचन बोले भीष्म नीति सुजान। यह धर्म आपु स्वयंभु भाषो पूर्व परम प्रमान ॥ जो होतहै कुलधर्म अपनो सो प्रमाण महान। नहि दोष तामे होतहै जो बंश बिहित बिधान ॥ यह भीष्म कहि सु मंगाय मणिगण हेम रत्न अतोल। गज अश्व रथगण बसन भूषण दिए अमित अमोल ॥ सो लेइकै धन शल्य भूपति प्रीति करि अभिराम। तब दई अपनी स्वसा माद्री परम गुणगण धाम ॥ सो भीष्म माद्री मद्रपति को स्वसा लै बर बीर। तब गए हास्तिन नगरकौं जँह पण्डु कुरु कुल धीर॥ शुभ पाय लग्न मुहूर्त्त सम्मत भीष्म भरि उत्साह।तब कियो माद्री पांडुको हित बंश वृद्धि बिबाह॥ करि पृथा माद्री सङ्ग भूपति यथाकाम बिहार। नृप पांडु रजनी तीस बीते कियो बिजय बिचार॥ सब जीतिबे कौं भूमि सेना सङ्ग लै चतुरङ्ग। तब निकसि बाहेर परो पुर के भरो बीर उमङ्ग ॥ पद बन्दि भीषम प्रभृति कुरुकुल वृद्धके अभिराम। धृतराष्ट्र ब्राह्मण ऋषिन के बर बन्दि चरण ललाम॥तब चलो सबसौं बिदा ह्वै कै परम आशिष पाय।शङ्ख भेरी पटह बाजे दुन्दुभी सुखदाय॥ बर बुले बाण निशान अति बर सिन्धु लहरि समान। चढि चली सेना हली छिति छपि चार सौं भै भान॥ नृप पांडु लीन्हे महाबल बरबीर सुभटन्ह सङ्ग। सब जीति शत्रु दशार्ण लीन्हें दंड करि रणरङ्ग॥ फिरि मगध के सब भूप जीते समर मे बरबीर। तब तहाँ रहिकै लयो तिनसौं महा धन रणधीर॥ फिरि जाय मैथिल देशमे जे रहे भूप बिदेह। तब तिन्हे जीते समरमे नृप पांडु बर बल गेह॥ नृप काशि पति अरु सुम्हपति जे पौंड्रपति छितिपाल। ते समरमे सब जीति तिनसौं लयो दंड बिशाल ॥ शर ओघ ज्वाल समान जाको पांडु पावक रूप। परि सलभ से सब जरे रणमे महा बल अरि भूप ॥ सहसैन अरिगण जीतिकै नृप पांडु अति बल बीर। ते किए अपने बश्य सिगरे भूप जे रणधीर॥ जे गए जीते समरमे नृप पांडुतैं अतिमान॥ तिन एक मानो सूर ताकौं शक्र सो बलवान॥ ते पाणि जोरि रसाल लीन्हे मिले आय नरेश।गज बाजि रथ गो हेम अम्बर दए मणिगण बेश॥ सो लए तिनसौं दंड नाना भाँति रत्न महान। बड़ महा धन समुदाय लीन्हे पांडु नृप बल वान ॥ मुद करत हास्तिन पुरहि जनपद जनन कौं अभिराम। सो पांडु नृप गो निकट हास्तिन नगरके बलधाम ॥ जे पूर्व कुरु धन देश हारी रहे प्रबल नरेश। ते सकल जीते पांडु नृप करि युद्ध भे निःशेष ॥ सह सचिव पुरजन भीष्म आगें गए भरि आनन्द। अति लए धन नृप पांडु आवत लखो कुरुकुल चन्द ॥ सह कौरवन लखि भीष्म आवत महा बल को धाम ॥ तब उतरि रथतैं पांडु बन्दे चरण चारु ललाम ॥ फिरि यथा योग्य स्वपौर जनपद जनन को

करि मान। अति मर्दि परधुरराष्ट्र आयो देखि पुत्र सुजान ॥ तब भीष्म बरसे लाय हियसों परम लोचन नीर। लखि भरे पुरजन सकल कुरुकुल महामोद गँभीर ॥ बर बजत भेरी शङ्ख दुन्दुभि पटह अति अभिराम । तब गए भीष्म लेवाय हास्तिन नगरकों बलधाम ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ धृतराष्ट्रकी तब लेइ आज्ञा पांडुनृप धन जौन । सो दियो भीष्महि गन्धकालिहि अम्बिकाको तान ॥ फिरि विदुर सुहृद अमात्य जन जे रहे सेवक पर्म्म ।लखि यथायोग्य विचारि कै दिये पांडु नृपति सुधर्म्म ॥ अति भरी माता हर्षसों नृप पांडुकों लै गोद । जिमि सची लाय जयन्तकों हिय लहति अतिशय मोद ॥ *◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈

॥*॥ जयकरीछन्द ॥*॥

पांडु उपार्जित धनकों पाय । नृप धृतराष्ट्र मोदसों छाय ॥ अश्वमेधसम यज्ञ महान। शत संख्या कीन्हें सबिधान ॥ बिपुल दक्षिणा दै कै भूप। भयो प्रसन्न महा शुचिरूप ॥ कुन्ती माद्रीको मत पाय। बनमे बसे पांडुनृप जाय ॥ छोडि प्रसाद भवन अभिराम । नाना भांति शयन सुख धाम ॥ मृगयाशक्त रहत बर बीर । हिमगिरिके दक्षिण रणधीर ॥ गिरि पर शाल सघन बन माह। कुन्ती माद्री सह नरनाह ॥ द्वैक रेनुकामे सुर नाग । लसत पांडुनृप तथा सभाग ॥ खड्ग बाण धनु धारैं पर्म। पहिरैं मणिनजटित बर बर्म ॥ महाशस्त्रबिद नृपकों देखि । बनचर कहैं देव अब देखि ॥ ताकों भोग बसु सुखदान । पठवत निति धृतराष्ट्र सुजान ॥ रहो पारसव देवक नाम । ताके कन्या सुनो ललाम ॥ भीष्म मांगि कै ल्याए ताहि । दई बिदुरकों तौन बिवाहि ॥ तामे करे पुत्र उतपन्न । बिदुर आपु सम मति सम्पन्न ॥*॥ वैसम्पायनउवाच ॥*॥ गान्धारी के शत सुत भए। महाबीर अतिसै बलसए ॥ धृतराष्ट्र पुत्र बेश्यामे एक । भयो भूपसों भरो बिवेक ॥ भए पांडुसुत पांच ललाम । कुन्ती माद्रीमे बलधाम ॥ भए देवतनतें सब तौन। बंश वृद्धिके कारण जौन ॥*॥ जनमेजयउवाच ॥*॥ गान्धारीके शत सुत जौन । भए कौन बिधि कहु द्विज तौन ॥ कालान्तरको कितने पाय । जिए कितिक दिन कहहु बुझाय ॥ धृतराष्ट्रपुत्र बेश्यामें एक । करो कौन बिधि छोडि बिवेक ॥ गान्धारी सम भार्या जास । धर्मचारिणी अति छबिरास ॥ सदा सुश्रूषणमे अनुवृत्त । तासों कैसें भए निवृत्त ॥ शापयुक्त जो पांडु नृपाल । ताके तेजस भरे बिशाल ॥ भए देवतनतें सुत बीर । पांडव पांच कौन बिधि धीर । कहहु सबिस्तर यह बृतान्त । वैसम्पायन मुनि मतिकान्त ॥*॥ वैसम्पायनउवाच ॥*॥ क्षुधा श्रमतें मुनि व्यास । गान्धारीके आए पास ॥ गान्धारी करि यत्न अनेक । तोष्यो मुनिकहँ सहित बिवेक ॥ ताहि कहो मागन बर व्यास। शत सुत तेहि मागे तिन पास ॥ पति सँग लहो गर्भ ऋतु पाय। गान्धारी अति आनद छाय ॥ धरैं

आ०प० गर्भ बीते द्वै बर्ष। प्रसव भयो नहि कारक हर्ष ॥ कुन्तीके सुत भो अभिराम। सुनो भानु सम तेजस धाम ॥ थिरता देखि उदर की भूरि। भई बिकल अति चिन्ता पूरि ॥ सो पतिसों करि यत्न छपाय। उदर आपनो कूटो जाय ॥ गिरो उदरत लोह समान। मांसपिण्ड गुरु कठिन महान ॥ तास फेंकिव कियो बिचार। तब आए मुनि व्यास उदार ॥ मांसपिण्ड सो मुनिबर देखि। गांधारीसों बूझो तेखि ॥ कहा कियो तुम चाहत याहि। सत्य दियो तेहि ताहि बताइ ॥ * ॥ गान्धार्युवाच॥पुत्र भयो कुन्तीके ज्येष्ठ। भरो भानुसो तेजस श्रेष्ठ ॥ सुनि कै भरी खेद उतपात।यातैं कियो उदरको घात ॥ शत सुत दायक तो बरदान। भयो मांस कोपिंड महान ॥व्यास उवाच ॥ दियो सुबर हम तुमकों जौन। हे गान्धारी ह्वैहै तौन ॥ कुंड एकशत घृतसों पूर्ण। मांगहु गान्धारी अति तूर्ण ॥ गुप्त स्थलमहँ देहु धराय। मांसपिंड सींचहु जलनाय ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ भो बहुखंड परंत जल तौन। मांसपिंड हो अति दृढ जौन ॥ खंड अंगुष्ठ पर्व सम मान। एक अधिक शत भए सुजान ॥ ते सब क्रम तें खण्ड अनूप। घृतघटमांह धरे सब भूप ॥ गुप्तस्थल महँ रक्षित राखि। गए व्यास मुनि ऐसें भाखि ॥ बर्ष एक अति कीजो यत्न। फेरि लखोगी सुतचय रत्न॥ तिनमे तें लहि क्रम अनुरूप। प्रथम भए दुर्योधन भूप॥ प्रथम जन्म तें क्रम अनुमान। भए युधिष्ठिर ज्येष्ठ सुजान॥ जेहिदिन भो दुर्य्योधन भूप। तेहि दिन भीमसेन बलरूप ॥ जन्मत दुर्योधन भय भौन। महाराव करि रोयो तौन ॥ ताके सङ्ग गृध्र गोमायु। खर बोले भइ उन्नत बायु ॥ चारो ओर भयो दिग्दाह। सुनि धृतराष्ट्र त्यजो उतसाह ॥ भरे भीति बोले द्रुमि बैंन। स्थावहु द्विजबर जे मति ऐंन। भीष्म बिदुर जे सचिव उदार। बृद्ध जे कुरुकुलमे सरदार ॥ तिन्हैं बोलाय कहे ए बैंन। भरो भीतसों निर्गत चैंन ॥ ज्येष्ठ युधिष्ठिर ह्वैहै भूप।कुलवर्द्धन बर धर्मस्वरूप॥ ताके अनु यह मो सुत जौंन। राज्य करैगो सुनिए तौन॥याके जन्मत चारो ओर।बोली शिवा गृध्रगण घोर ॥ भयो शकुन भयकारक भूरि। कहहु बिप्रबर फल हि बिसूरि ॥ बिदुर सहित बर बिप्रगण तौन। कहो भयो अशकुन भय भौन ॥ ज्येष्ठ पुत्र तो होते भूप। अशकुन भए महाभय रूप ॥ वंश नाश कारक सुव्यक्त। भयो कीजिये याकों त्यक्त ॥ और शान्ति नहि यामे भूप। करि सुत त्याग होहु सुखरूप॥ एक ऊणशत सुत तव पर्म। रहि हैं कुरुकुल कुशल सधर्म ॥ एक त्यागि सुत जगत सचैन।करहु भूप यह मानहु बैंन ॥ सुनहु परम यह नीति निदेश।उचित होय सो करहु नरेश॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एक छाडि कुल राखिए कुल तजि ग्राम सुजान। देश राखिए ग्राम तजि देश राखिये प्राण ॥
द्विजन कहो बिदुरौं कहो कुल रक्षणके हेत। नहि मानो धृतराष्ट्र नृप पुत्रप्रीति भरि चेत ॥
भए पुत्र धृतराष्ट्रके एक मासमे सर्व। दुर्य्योधन जेठे भए तो अनु जेठे खर्व॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भई कन्या एक अधिकी सुतनते अभिराम। भयो शततैं अधिक जान युयुत्सु बलको धाम॥ गर्भ क्लेशित भई जब गन्धार पतिजा भूप। धृतराष्ट्र वेश्यासों रमे व्है काम पीडित रूप ॥ भयो ताही वर्षमे धृतराष्ट्रतैं सुत तौन। महावीर युयुत्सु वेश्यापुत्र मति वर जान ॥ भए ऐसें एक अधिकौ पुत्र शत अभिराम। भई गन्धारी सुता बढि सुतनतैं गुणधाम॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ कहे तुम हम सुने हे धृतराष्ट्र सुत शत जौन। भई कैसें एक अधिकी सुता कहिए तौन ॥ दियो हो शत पुत्रको बर महा मुनि अभिराम। लही कैस कन्यका गन्धार पतिजा माम ॥ खण्ड कीन्हों शत सुमुनि वह मांसपिण्ड उदार। भई नहि सौवली कन्या दुःसला फिरि दार॥ कहहु मुनि समुझायके यह भयो अति सन्देह। अधिक किमि शत सुतनते भइ दुःसला छवि गेह। ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच॥ * ॥ मांस पिण्डहि सींचि के जल शीतसों मुनि व्यास। किए सम शत खंड कल्पित सुनहु भूपति तास॥ यथा कल्पित भाग लहि घृत कुण्डमे ते नाय। लगी सेवन धाय तिनकों यतनसों सुखदाय॥ याके अनन्तर सौवली करि सुताको अनुराग। लगी करण विचार ऐसे भरी भूरी सोहाग॥ होंहि गे शतपुत्र मेरे सत्य मुनिवर बैंन। एक होती कन्यका तो परम सहनी चैंन॥ दौहित्र सम्भव लोककों गति लहत अति अभिराम। जामातृ लखि कै प्रीति पावति महा मनमे वाम॥ शत पुत्रते जो अधिक होती कन्यका लघु मोहि। धन्य कहते पुत्र सह दौहित्र ऊमजन जोहि॥ सत्य मम तप दान व्रत गुरु चरण सेवन धर्म। होउ तो मो एक कन्या रूप राशि सुधर्म॥ मांस पिंड विभाग लागे करणकों जब व्यास। एकशत भए खंड बोले सौवलीके पास व्यास उवाच॥ * ॥ पुत्रके शतखंड ए हैं सत्य मेरे बैंन। एक लेउ सु सुताको यह खंड पावहु चैन॥ सौवली घृतकुम्भ और मगांइ कै अभिराम। धरो ताने कन्यकाको भाग लहि मनकाम॥ कहो भूपति दुःसलाको जन्मको क्रम जौन। कहहुसो अब कहैं आगे होइ इच्छा जौन॥ जनमेजय उवाच॥ *॥ धृतराष्ट्रके सब सुतन को क्रम ज्येष्ठ लघु को आम। सुनो सो जो कहो हौं तुम पूर्व अति अभिराम॥ सकल अतिरथ युद्ध कर्ता रहे सब विद वेद। व्याह करि धृतराष्ट्र तिनको भए निर्गत खेद॥ दुःसलाको व्याहि दीन्हो जयद्रथकों भूप। तौन मुनिवर पूर्व तुमसों सुनो हो अनुरूप। धृतराष्ट के सब सुतनको भो आर्ष सम्भव तौन। अमनुष्य विधिसों मनुज सम्भव कियो मुनिवर जौन॥ पांडुके अब वंशको मुनि कहहु सर्व विधान। भए पांडव सकल जैसें देव राज समान॥ कहो अंश अवतरण से तुम देवसम्भव जौन। कहो तिनके जन्मकों मुनि सहित विस्तर तौन॥ * ॥ वैसम्पायन उवाच ॥ * ॥ महावनमे पांडुनृप हे फिरत मृगया हेत। लखे यूथप मृगन को हो मृगीकों रति देव॥ मृग मृगीकों पांडु मारे पाँच बाण महान। तौन हो मुनि

५० पुत्र भार्य्या सहित तपसनिधान॥शरबिद्ध सो सह मृगी कीन्हें मनुजवत आलाप॥भूमि प गिरि महा
व्याकुल लगो करण बिलाप ॥ काम क्रोधी नष्टमति नहि करत ऐसे कर्म्म । कियो जैसो भूप तुम
यह क्रूर कर्म्म अधर्म्म ॥ नहि बुद्धि दैविहि हरति कबहूँ हरति दैवी बुद्धि । होति दैवी आय
तैसी लहत जन गण शुद्धि॥धरमातमनमे मुख्य है कुल रावरो अभिराम । कियो आपु समान नहि
यह भूप अधरम काम ॥ * ॥ पांडुरुवाच ॥ * ॥ नृप बृत्ति जो है शत्रुमै सो मृगनहूमे उक्त। जोन
मृग मम करत निन्दा तोन नहि बिधि युक्त॥ प्रगट छल करि मारिबो मृग कहो भूपति धर्म्म ।काल
निन्दा बृथा मृग हम कियो क्षत्रीकर्म्म ॥ करी सत्रासोन सुमुनि अगस्त्य मृगया पर्म्म ।दयो आहुति
सुरणकों मृग मांसकी लहि पर्म्म ॥*॥ मृगउवाच ॥*॥ हनत हैं नहि अरिनहूकों बीर समय बि
चारि।सुप्त कामाशक्त और प्रमत्तकों निरधारि ॥ पांडुरुवाच ॥ लहत जैसें हनत तैसें अरि मृगण
को भूप । क्षात्रधर्म बिचारि कै तब कहहु मृग अनुरूप ॥मृगउवाच॥हनत मृग नहि ताहि निन्दत
भूप अपने हेत । नहीं मेरो लखो मैथुन कियो कर्म्म अचेत ॥सर्ब जन हित सर्ब इच्छित सुरति सङ्गम
काल । करत मैथुन हनत मृगको भूप सुमति बिशाल ॥ यह मृगीमे हम प्रजा कारण कियो सुर
ति प्रसङ्ग । तोन मो पुरुषार्थ को फल कियो भूपति भङ्ग ॥भए परम बिवेकमय कुरुबंशमे तुम भूप।
मोहि मारो सुरतिमे यह कियो नहि अनुरूप ॥ स्वर्ग नाशक धर्म्म ध्वंसक अजश कारक जौन।
जानि रति रस रङ्ग सुख यह कियो कारज कौन॥ क्रूर कर्म्म बिचार बिनु यह कियो पापाचार।
हनो मोकों दोष रहित बिचारि कै न उदार॥ फल पत्र भोजन करत धारे रहत मृगको रूप॥
बसत बनमे बिप्र मुनि गहि शांतवृत्ति अनूप ॥ हनो मोहि बिचार बिनु हों देत यातें शाप।
करत बनिता सङ्ग मरिहो भूप लहि यह पाप ॥ सुमुनि किन्दम नाम हों हम धरे मृगको रूप।
रहत बनमे मृगन संग फल पत्र भक्षत भूप ॥ मनुज तनुसों भई हमकों करत रति अति लाज।
मृग मृगी व्है करत यातें ऊते रति सुख साज॥ब्रह्महत्या होयगी नहि तुम्है भूप सुजान ।मानि कै
मृग हनो मोहि न भयो मुनिको ज्ञान॥ काम मोहित जानि कै मृग मोहि मारो भूप। मृगी सह
तेहि पापको फल लहहु गे अनुरूप ॥ प्रिया सङ्गम करहु गे जब कामबश क्षितिपाल। जाहु गे
जमलोककों नृप पांडु लहि सो काल ॥ प्रिया व्है सह गामिनी तो सङ्ग जैहै भूप। जास सङ्गम
करत मरिहो सुनहु भूप अनूप॥ यथा सुखमे दुःख दीन्हो मारि कै नृप मोहि। तथा सुखमे दुःख
हूहै प्राप्त भूपति तोहि ॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ * ॥ मृगरूप मुनि यहि भाति कहिकै छोडि
दीन्हो प्राण। गए पांडु महीप व्है दुःखार्त्त मनस महान॥ बन्धुसा तजि गए मुनि मृत भूप भरि
संताप॥स्थान पैं सह भार्य्य लागे जाय करण बिलाप ॥ * ॥ पांडुरुवाच ॥ * ॥ शत बर्षमे लै जन्म
दुर्गति लहत करि दुःष्कर्म्म। कामजाल बिमोहतैं श्रम भरें भूलत धर्म्म ॥ भूप शान्तनु धर्म्मधुरको

पुत्र मेरो तात । काम बश्य ह्वै बालपनमे लहो सरुज निपात ॥ देवमे तेहि काम आत्मा के महा मुनि व्यास । मोहि जायो भयो व्यसनी धरे हिंसाभ्यास ॥ मोक्षको व्यवसाय करि हौं पिता की लै बृत्ति । त्याग करिकै कामना सब रहौं होय निबृत्ति ॥ एक ह्वै तपनिष्ट बास एकैक तरुके पास । राहि हौं सु भिक्षा बृत्ति करि ह्वै भिक्षु निर्गत आस ॥ भूमिशाई शून्यमे करि बृक्ष मूल निकेत । प्रिया प्रिय तजि शोच हर्ष अमान मान समेत ॥ चतुर्बिध जन चलाचलमे धारि दाया धर्म्म । मानि कै स्वप्रजाइव सब त्यागि हिंसा धर्म्म ॥ एककालमे दश पांच घरतैं मागि भिक्षा खाय । कहुँ अनशन मिले बिनु संतोष मनमे छाय ॥ लाभ और अलाभमे सम रहत हैं तपधाम । देह छोलै काज लावै मलयलेप ललाम ॥ कल्याण अरु कल्याण तिनके चहत नहि मतिमान । जीबितेक्षा मरण इच्छा रहि तजे समज्ञान । असक्य जीवित उदै हित है क्रिया करिबो जौन ॥ छोडि तिनकौं देह जानि निशेष भंगुर तौन । करै जानि अनित्य इन्द्रियकौं क्रियनको त्याग । छोडिकै यमार्य धोवैं आत्मकल्मष दाग ॥ पापसों निर्मुक्त होय सु काटिकै भय जाल । अवस्य ह्वै कै रहगो सम बायु के सबकाल ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

एहि प्रकारसों धीरज धारि । राखैं तनुपथ्य अभय बिचारि ॥ अपत्योत्पादन त हीन । भाखै शाप पाय कै छीन ॥ करिबे जोग्य न है ग्रह धर्म । बाणप्रस्थ योग्य ममपर्म ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ यह कहि कै दुःखारत भूप । ऊरधस्वास लई अति रूप ॥ कुन्ती माद्रीकौं नृप देखि । कहन लगे यह बचन बिसेखि ॥ माता पिता नहींसों जाय । भीष्म बिदुर सों अति समुझाय ॥ कहियो हमि पद तिनके देखि । मेरे ए सुबचन अवरेखि ॥ गए पाण्डु बनकौं बरराज । सकल छोडि कै सहित समाज ॥ सुनि भर्त्ता को बचन महान । कुन्ती माद्री कहो समान ॥ करिबे योग्य सु आश्रम और । हे भूपाल सुनऊ शिरमौर ॥ सो आश्रम संग्रह करु भूप । हम सह तुम तप करऊ अनूप ॥ जातैं स्वर्गऊ माहि उदार । हम तुम्हैंहि पावैं भर्त्तार ॥ करि निग्रह इन्द्रिन को ग्राम । भर्ट लोक लहिबेके काम ॥ छोडि काम सुख सकल ललाम । तुम सँग तप करि हैं अभिराम ॥ जौं हम कौं तजि हौ तुम भूप । प्राण छोडि हैं अब अनूप ॥ पाण्डु रुवाच ॥ * ॥ जौं तुम्हार ऐसो व्यवसाय । सुनऊ प्रिया हम सत्य सुभाय ॥ पिता हत्त हम धरिहैं तौन । धर्म्म भई अति अव्यय जान ॥ छोडि ग्राम्य सुख अन्नाहार । करि हैं तप अति उग्र उदार ॥ बलकल बसन मूल फल भक्ष्य । महा बिपिनि मँह बास अरच्य ॥ हवन स्नान दुहूँ करि काल । फल भोजन मृगचर्म्म जटाल ॥ शीतातप सहि क्षुधा पियास । तन शोषक करि सुतप प्रयास ॥

आ॰प॰ करि एकान्तस्थलमे बास । पक्वापक्व असन जल पास ॥ जाय सु बाणप्रस्थ को पाहि ॥ कबहूँ कछू मागि हैं नाहि ॥ कौन कहै कुलजनकी बात।सत्य कहत हैं तुमसों ख्यात॥ विपिनि बासको शास्त्र विधान।एकएक त उग्र महान॥ कांक्षमाण करिबेकों तौन। जबलौं करै देहँ यह गौन॥ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रानिन सों ऐसें कहि भूप । चूडामणि कुण्डल अनुरूप॥ धन मणि बसन जे रहे महान। रानिनके भूषण सुख दान ॥ पांडुनृपति सब विप्र बोलाय ।दियो सकल यह बचन सुनाय॥जाय हस्तिना पुर नृप पास ।कहेऊ पांडु कीन्हों बनबास॥ अर्थ काम रति सुखद बिलास। तजि नृप पांडु कोयो बन बास ॥गए भार्य्यान सह बनमाँह। कहेऊ जहाँ कुरुकुल नरनाँह ॥तास अनुग परि चारक जौन। ए सुनि पांडु बचन सब तौन ॥ भीम आर्त्तस्वर हाहा कार ।करि रोए भरि शोक उदार ॥ उष्ण अश्रु सुस्वत भरि शोक ।गए नागपुरते नृप ओक॥ धृतराष्ट्र निकट धन लीन्हे तौन। कहो भयो वृत्तान्त सु जौन॥ सुनि तिन तें वृत्तान्त नरेश।भए शोकबस करुणा बेश॥ असन शयन तजि भोग बिरक्त । भए भूप अति शोकाशक्त ॥ करत मूल फल पांडु अहार। करन लगे घनगहन बिहार ॥ गए नागशत गिरिकौं भूप । रानिन सहित धरे मुनि रूप ॥ फिरि चैत्र रथ बनको देखि ॥ कालकूट गिरि छोडि विशेखि ॥ छोडि महा हिमगिरि अति रूप । गए गन्ध मादनकौं भूप ॥ सिद्ध ऋषिगणसौं रक्षित होय । रहत बिषम सम थलमहँ सोय ॥ इन्द्रद्युम्न सरको तब जाय । हंसकूट गिरि गे सुखदाय ॥ गिरि शतशृङ्ग गए नृप नाथ । करण लगे तप मुनिगण साथ॥ मुनिगणके प्रिय दरशन भूप । भए सु पत्निन सह अनुरूप ॥ काहूके भे भ्रात समान ।काहूँ मानो सखा विधान॥ काहूँ पुत्र सदृशकरि प्रीति। वृद्ध मुनिन मानो सह नीति॥ बहुत काल तहँ तप करि भूप ।भए परम निःकल्मषरूप ॥ ब्रह्मऋषिण के सदृश नरेश। भए भरे तप तेज अशेश॥ अमावास्या लहि मुनि सर्व। भरे महा तपतेज अखर्व॥ब्रह्माके दर्शनके काम। चले बिचारि सकल तपधाम ॥ चलत देखि मुनिगण कहँ भूप। बूझन लगे बचन सुखरूप ॥ आजु कहाँ तुम सहित समाज। जात कहौ हमसौं मुनिराज ॥ * ॥ ऋषिरुवाच ॥ * ॥ मेला आजु ब्रह्मपुर माह। देवर्षि पित्रनको नरनाह॥ तहां जात हम सब तपधाम ।स्वायम्भूदर्शन मन काम ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनतहिँ उठे पांडु यह बैन।पत्निन सहित भरे हिय चैन॥ मुनिन सङ्ग चलिबेकों चाहि। स्वर्ग अपार पार अवगाहि॥ चले उदङ्मुख मुनिगण साथ। पत्निन सहित पांडु नरनाथ॥ मुनिन कहो तब नृपसौं बैन।पथ यह भूप योग्य तव हैन॥ स्वर्ग मार्गमे व्है हम जात।दुर्ग मार्ग अति घोर लखात।महा नदिन के घोर करार। गव्हर गुहा शैल बनचार ॥ कोठिन जहां बिमान समूह। देवन के क्रीडा बन जूह॥ उच्च निच्च धनपति उद्यान। सकत जाय को तहँ बिनु जान॥ हिमसौं भरो सो देश महान। तरु पक्षी मृग बंश जहाँ न॥ कहूँ

दूर्ग ऐसे अतिगात। जाके पक्षी पार न जात॥ बायु जाय कै योग समृद्धि। जिनके परम खेचरी सिद्धि॥ शैलराज मह गमन समान। ए नहि राज सुता सुखदान॥ दुःख योग्य ए हैं नहि भूप। लहिहैं कष्ट तहाँ अति रूप॥ *॥ पांडुरुवाच॥ *॥ प्रजाहीन हैं नर मुनि जौंन। स्वर्ग द्वार नहि पावत तौंन॥ तप्त रहत तातें हम नित्य। देखि आपनो अप्रज निमित्य॥ भए न पितृ सु ऋण न मुक्त। यातें रहत पापतें युक्त॥ होत मनुज ऋण धारैं चारि। देव पित्र ऋषि सुनर बिचारि॥ इनतें छुटे बिना नहि स्वर्ग। पावत कहत धर्म बिद बर्ग॥ मखतें देव श्राद्धतें पित्र। ऋषि ऋण पढे सुवेद पवित्र॥ बिना अपत्य श्राद्धको नाश। लहत न पित्र स्वर्गको बास॥ क्रूर कर्मको कीन्हे त्याग। मिटत मनुज ऋण सुनऊ सभाग॥ देव मनुज ऋषि ऋणतें मुक्त। मुनि हम भए कर्म करि युक्त॥ *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

पित्र ऋणसाँ छुटे अबलाँ सुनऊ नहि तपधाम। होत हैं तब प्रजा कारण परम पुरुष ललाम॥ पिताके ज्यौं क्षेत्रमे सुनि मोहि जायो ब्यास। चहत अपने क्षेत्रमे त्यौं प्रजा हौं सुखरास॥ ऋषिरुवाच॥ होयगो तो प्रजा राजन् दिव्य देव समान। दिव्य चखसौं जानि कै हम कहत वचन प्रमान॥ दैव निर्मित कर्म्मको यह कहत नृप उद्देश। प्रगट फलकौं पाइ हो है नियत सुनऊ नरेश॥ तौंन फलको यत्न कीन्हे सुनऊ भूप सुजान। पुत्र गुण सम्पन्न सिगरे लहऊ गे बलवान॥ वैशम्पायनउवाच॥ ऋषिनके सुनि बचन मनमे भए चिन्तित भूप। शाप हत अनुमानिकै सब भाँति अपनो रूप॥ कहो लहि एकान्त कुन्तीसाँ बचन मतिमान। करऊ यत्न अपत्यको यहि बिपतिमैं सुखदान॥ अपत्य नामक धर्म्मके समुदायकी थिति मूल। यह जानु कुन्ती सत्य बादिनि धीर धर्म्म अतूल॥ दानजप तप यज्ञ ब्रत बर नियम निष्ठित जौंन। होतहैं न अपत्य बिनु ए सुनऊ पावन तौंन॥ तौंन हम तहँ प्रगट देखत सुनऊ सुन्दरि बैन। शुभ लोकको नहि लहैंगे अनपत्य व्हैकै चैन॥ मृग शापत मो प्रजा कारक भाव व्है गो नष्ट। पुत्र द्वादश भाँतिके हैं सुनऊ ते अस्पष्ट॥ सुनु बन्धु दायाद हैं षट ए पुत्र धर्म्म विधान। है अबन्धु दायाद षट बिधि प्रिया पुत्र सुजान॥ स्वयं जात प्रणीत दूजो परिक्रीत सुजौंन। पौनर्भवो कानीन पंचम स्वैरिणी भव तौंन॥ स्वयं जात जो पुत्र औरस कहत जौंन प्रणीत। पांडु आदिक पुत्र जैसे करे ब्यास पुनीत॥ परि क्रीत जो धन देय द्विजसाँ लेय पुत्र कराय। पुनर्भू मे होय पौनर्भव सु सो है तहँ सुखदाय॥ ब्याह दूजो होय ताको पुनर्भू सो दार। शास्त्रको अवगाहि कै मत कहत बुद्धि अगार॥ स्वैरिणी भव जौंन जारज होय पतिके धाम। देइ कन्या ब्याहि यह संकल्प पढि अभिराम॥ संकल्पश्च॥ अस्यां यो जायते पुत्रः सते पुत्रो भविष्यति॥ ता कन्यकाके होय पुत्र सो पुत्र धर्म्म बिधान॥ *॥ अथ षट अबन्धु दायादा॥ *॥ देई माता पिता जाकौं दत्त सो गुण मान॥ देय कै धन लेइ कैसो क्रीत कहिये ताहि। सहोढकन्या गर्भमे जो पुत्र

आ॰प॰ आगत व्याहि ॥ पुत्र कत्रिम आपुसोँ सो होय आय प्रसन्न । पुन गोत्रज बन्धु तें जु कराइये उत्पन्न ॥ तौन पञ्चम पुत्र षष्टम चेटिका भव आम । लेत उत्तम तेँ अपत्य विपत्तमे मति धाम ॥ * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुत्र जो भ्राता एक के औरस होय उदार । सो दशभ्रातनको करै धर्म्म सहित उद्धार ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

पुत्र औरस तेँ अधिक हैं श्रेष्ट सम्भव जौन ।स्वयंभु मनुको बचन यह हम कहत तुम सोँ तौन॥ पुत्रके जनमाइबे मैं आपुकोँ लहि हीन । तुम्है तातेँ देत आज्ञा प्रिये जानि प्रबीन ॥ सदृशते कै अधिकतेँ उत्पन्न करहु अपत्य । सुनहु सारद डायनी इतिहास मो सोँ सत्य ॥ सो बीर पत्नी पाय आशा सुमतिकी अभिराम । दुर्जयादिक पुत्र जाए त्रीणि बलके धाम ॥ तथा तुम बर विप्र सोँ अति उग्र तपमय जानि । पुत्रके उत्पत्यकी विधि करहु यत्न सुजानि॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पांडुके सुनि वचन कुन्ती कहन लागी वैन । बचन मो सो कहन कोँ यह योग्य तुम कोँ है न ॥ धर्म्मपत्नी पतिब्रतरत धरैं तुमसे प्रीति । चहति तुमसोँ पुत्र की उत्पत्य धर्म्मज रीति ॥ स्वर्गहू के गरुव को है साध तो मनकाम । देहु मोहि अपत्य तुम तेँ अन्यको अभिराम ॥ सुनहु यह पौराण की तुम कथा मोसोँ भूप । सुनो हैँ हम प्रथम जो द्विजबरन सोँ अनुरूप ॥ पूर्ब नृप व्युषिताश्व हो अति ख्यात बलको धाम । कियो सुर सन्तोष करि बहु यज्ञ अति अभिराम ॥ जीति चारो दिशा लीन्हो भूपते बलवान । काक्षीव पतिकी सुता भार्य्या लही आपु समान ॥ नाम भद्रा तास अति गुण रूप मय सुखदान । भयो भोगासक्त तासोँ भूप अतिबलवान ॥ राज यक्ष्मा भई ताको मरो सो वह भूप । शोक आरत भई भद्रा महा दुःखित रूप ॥ *॥ भद्रोवाच ॥*॥ बिनापति है जियति नारी धर्म्म शीला जौन । मृत कहूतेँ हो तिहै सो अधिक जानहु तौन॥ यहि भांतिसोँ सब गोदमे लै करत ताहि बिलाप । सुनो अन्तरध्यान वाणी भई सरता ताप ॥ उठहु भद्रा जाहु घरकोँ लेहु बर अभिराम । पुत्र तो से करौंगो उतपन्न बलको धाम ॥ चतुर्दशीकै अष्टमीकोँ सेजमे तो आय । सङ्ग तेरो करौं मै हौं ऋतुस्नाता पाय ॥ पुत्रार्थिनी सो बचन सुनि कै कियो तौन बिधान । मृतक पतिबैं भए त्रीणि सु पुत्र शाल्व महान ॥ मद्रपति भे चारि तातेँ पुत्र अति अभिराम । तथा मो से मानसिक सुत करहु भूप ललाम ॥ जनमाइवेके योग्य हो तुम पुत्र तप [illegible] ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यहि भांति कुन्तिके बचन सुनि पाण्डुनृपति सुजान । [illegible] धर्मज्ञ ऐसेँ कहन लागे बैन ॥ कियो यह व्युषिताश्व सो हो अमर सम तप ऐन । कहत हैं [illegible] है तत्व सुनिए तौन । ऋषिन परम पुराण पुरब धर्म भाखो जौन ॥ स्वबश्य आगे रहत [illegible] नारिणि सर्व ।करहि अपने कामना व्यभिचार पाय न सर्व ॥ होय आगे रहो

सुन्दरि सुनऊ ऐसो धर्म । त्रिजग योनिन मेरहो अब धर्मसो वह पर्म ॥ वह धर्म उत्तर कुरु आप सुनामा खण्डमे है दार । अद्यापि ताहि महर्षि धारण करत बुद्धि अगार ॥ सो सनातनधर्म इखिन को अनुग्रह कर्न । यहि देसमे मर्य्याद बांधी महामुनि मिति धर्न ॥ उद्दालक सुमुनिको पुत्र सो मुनि श्वेतकेतु महान । मर्याद यह तेहि परम बाँधी सुनऊ तास विधान ॥ श्वेतकेतु स पिता देखत बिप्र आयो एक । पकरि ताकी जननिको लैं चलो सुरति निकेत ॥ मुनिपुत्र कीन्हो कोप अनुचित हिए मे निरधारि । पिता बारण कियो तेहि प्राचीन धर्म बिचारि ॥ सब वर्ण कीजे अङ्ग नाते सुत असन्धित होय । रमै अपने वर्णमे गो सदृश कामुक जोय ॥ श्वेतकेतुन धर्मसो वह सहो अति करि कोप । करो इस्त्री पुरुषको मर्याद यह आरोप ॥ नारि पतिको छोडि कै रति और नरसों पाय । ब्रह्महत्या पापकों लहि नर्कमे सो जाय ॥ पुरुष जौंन पतिब्रतासों करै गो रति रङ्ग आजुतैं यह पाप ताको तजै गो नहि सङ्ग ॥ पति तियहि भेजै प्रजा काजै पुरुष औरै पांहि । जो जाय नहि तो बसै यहही पाप तिहि तियमांहि ॥ मर्य्याद ऐसी भांति थाप्यो श्वेतकेतु महान । तौन हमकों बिदित है तहँ सुनो हे सुखदान ॥ व्याससैं कुरुबंश जैसैं बृद्धि भो अभिराम । तौन कारण देखि मेरो करऊ बचन ललाम ॥ परि कहै करिबैं जौंन सो कर्त्तव्य तियकों कर्म्म । पति बचनको उल्लङ्घ करिबो सो न पतिब्रत धर्म्म ॥ ऋतुस्नाता होय इस्त्री जाय तब पतिपास । बिना ऋतु संयोग पतितैं मने कामबिलास ॥ सुत लालसी उप जायबेकी सुतहि नहि सामर्थ्य । कही मेरी मानि सांजलि करुण सुन्दरि व्यर्थ्य ॥मम मानि आज्ञा जानि कै वर बिप्र तप सम्पन्न । करऊ गुणमय वीरपुत्र सु प्रथा तुम उतपन्न ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पाण्डुके सुनि बचन कुन्ती कहे बैन ललाम ॥कुन्त्युवाच॥ अतिथि पूजन करत हो हौं पिताके बसि धाम ॥गए दुर्वासा अति तहां उग्रतपके धाम । कियो सेवन तास हौं सब भांतिसों अभिराम ॥तिन दियो होय प्रसन्न मोको मंत्र सहित विधान ।कहो तुम यहि मंत्रतें जेहि देवको आह्वान॥ करौं गी सो बस्य ह्वै है आय तो अभिराम ।प्रजा तास प्रसादते तुम लहै गी बलधाम ॥महा मुनिको वचन सो है सत्य सुनिए भूप । सबै ताको प्राप्त भो तो बचनके अनुरूप ॥कहो तुम जेहि देवको तेहि देवको आह्वान ॥करौं हौं धरि नियम जप करि मंत्र सहित बिधान ॥पांडुरुवाच ॥धर्म्मको आव्हान पहिले करऊ सुन्दरि पर्म्म॥ होय जाते पुत्र पावन प्रजापालक धर्म्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तथास्तु तासों कहो कुन्ती सुपतिशासन पाय । करि प्रदक्षिण दण्डवत किय भूपकों सुखदाय ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ गन्धारजा कौं गर्भ धारे बर्ष बीतो एक । कियो कुन्तो धर्म्मको आव्हान तब सबिबेक ॥ प्रथम पूजन द्रव्यसों करि धर्म्मको अतिपर्म्म । फेरि कीन्हों मन्त्रको जप चाहि आगम धर्म्म ॥ मंत्र बलतैं धर्म्म आए बिप्र ताके पास । चढे चारु बिमानप सम सूर्य्यके सङ्कास ॥ बिहसि बोले

प० कहहु कुन्ती कहा दीजै तोहि। कहो कुन्ती धर्म्मसों प्रभु पुत्र दीजै मोहि। संयोग कुन्ती धर्म्मसों करि पुत्र जायो तोन। धर्म्म सोहै धर्म्ममें सब जीवको हित जौन॥ पञ्चमी शितपक्ष ज्येष्ठ तुला कौ लहि चैन। अष्टमाब्द मुहूर्त्त अभिजित परम पूरित चैन॥ मध्यान्हमे धर्मसिन्धु कुन्ती पुत्र जायो धर्म्म। जात मात्र सुपुत्र नभ से सुनी बाणी पर्म्म॥ धर्म्मभृतने श्रेष्ठ ह्वैहै यह नरोत्तम वीर॥ धरासबको भूप ह्वैहै सत्यबक्ता धीर॥ पांडुको यह प्रथम पुत्र सु है युधिष्ठिर नाम। होय गे तिहुँ लोकमे यह कथित अति अभिराम॥ तेजमय सम धर्म्मतें सुत पाय पांडु सुजान। बल ज्येष्ठ क्षत्री होत है अब करहु सुत बलवान॥ पांडुको सुनि बैन कुन्ती बायुको आव्हान। कियो पढि कै मंत्र आए बायु जे जनप्राण॥ चढे मृगपर परम सुन्दर महाबलके धाम। कहा कुन्ती देहि तुम कौ कहहु सो अभिराम॥ सलज्ज कुन्ती पुत्र मागो महाबल अतिकाय। अरि दर्पहा करि बायु सङ्गम दियो सुत सुखदाय॥

॥ * ॥ चरणाकुलछन्द ॥ * ॥

भीमसेन सुत ताको जायो। महावीर बलमय छबिछायो॥ जनमत ताहि गगनमे बाणी। भई सुनी अतिसै सुखसानी॥ बलिन माह यह अतिबल भायो। कुन्ती तनय भीम यह जायो॥ कुन्ती रही भीमकौ लीन्हैं। धरैं गोदमे निद्रित कीन्हैं॥ आयो ब्याघ्र अचानक तेहां। गिरिपर बैठी कुन्ती जेहां॥ देखत भगी महा भय मानी। गिरा गोदतैं सुतहि भुलानी॥ गिरो शिला जेहि भीम खरारी। भई चूर्ण सम शिला सो भारी॥ पांडु शिला लखि बिस्मय पायो। जेहि दिन भीमसेन तहँ जायो॥ ताहि दिन दुर्योधन भए। फेरि पाण्डु यहि चिन्तत भए॥ लोकाधिक सुत भयो न भारी। देव दनुज सम बरबल धारी॥ देव राजको सेवन कीजै। तप करि महाबीर सुत लीजै॥ पांडु ऋषिणसौं मंत्र सुकीन्हौं। सम्बत्सर ब्रत कुन्तिहि दीन्हौं॥ आपु एकपद छिति पर धारैं। करत महातप मन कह मारैं॥ इन्द्राराधन ऐसैं करिकै। भए भानु सम तेजस भरि कै॥ बहुतकाल पर बासव आए। कहन लगे नृपसौं मुद छाए॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ देत भूप सुत तुमकौं ऐसो। काहू लहो न अबलौं जैसो॥ * * * * * * * *

॥ * ॥ जयककरीछन्द ॥ * ॥

गो ब्राह्मण सुसुहृद हित साधक। खल दुर्जनकौं दुःसह बाधक॥ भूपति सुनि सुरपतिके बैन। सो कुन्ती सो कहो सचैन॥ तुम पह सुरपति महत प्रसन्न। दियो चहत सुत गुण संपन्न॥ पुत्रोत्पन्न करहु तुम तौन। महाबीर जगजेता जौन॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच॥ * ॥ भूपतिके कुन्ती सुनि बैन। इन्द्राबाहन कियो सचैन॥ आए सुरपति तापँह तूर्ण। दियो पुत्र अर्जुन गुणपूर्ण॥ जनमत मात्र ताहि सुखदान। गगण गीरा बोली अतिमान॥ सुनो जीव जन सकल अशेष। जामे कुन्ती नाम विशेष॥ कार्त्तिबीर्य्य सम शिव अभिराम। इन्द्र सदृश तो सुत बलधाम॥ भई

बिष्णुतैं अदिति प्रसन्न। तिमि तुम यह लहि गुणसम्पन्न ॥ सर्व भूमिपति छितिके जीति। बसमह करिहि भुजबल भीति॥ याके प्रबल भुजा बल पाय । पावक खांडव बनमे जाय ॥ बसा मास जीवनका खाय। ह्वै है त्रिप्ति अजीर्न नशाय॥ अश्वमेध आतन सह तीन। करिहै जीति सकल छिति दीन॥ परशुराम सम धनुधर धीर। सा कुन्ती तो सुत बरबीर ॥युद्व माह गहि शस्त्र सुरोष। करि है शङ्करको सन्तोष॥अस्त्र पाशुपत देहै याहि।शङ्कर होय प्रसन्न सराहि॥निवात कवच दानव बलवान। सुरपति द्वेष जो करत महान॥ तो सुत सुरपति आज्ञा पाय।तिनको नाश करैगो जाय॥दिव्यअस्त्र सुरपति सह सत्र। दैहैं याहि सुसीक्षा तत्र॥यह अद्भुत बाणी अभिराम।कुन्ती सुनो सूतिका धाम॥ उच्चे।च्चरित गगण धुनि जैान । हर्षित भए सुनत मुनि तैान॥ सह सुरपति नभमे सुरवृन्द । करण लगे लखन सुखद नरिन्द॥ बजी दुन्दभी गगण गँभीर। बरषत सुमन यथा घन नीर॥ कद्रूके सुत जे बर नाग।बैनतेय सह पक्षि सभाग॥ गन्धर्ब सर्व अप्सरन समेत।आए करत गान शुभहेत॥सकल प्रजापति बसुगण सङ्ग।आए सप्त ऋषि भरे उमंङ्ग॥सकल प्रचेतस मुनिगण सर्व।आए किन्नर यक्ष अखर्व॥ गए महर्षि सकल तपधाम । बशिष्टादिक भरि मोद ललाम ॥ हाहा हूहू तुम्बुरु जान । चढे बिमानन गावत तैान । सैाम्य रूप धरि द्वादश भान ॥ गए एकादश रुद्रमहान ॥ दस मरुत बसु बिश्वेदेव । चढे बिमाननआए एव ॥ देवगणन के सकल बिमान । मुनिन लखे जे तपस महान॥ जे शत शृङ्ग रहे जन आन। तिन नहि देखे दिव्य बिमान॥ महताश्चर्य्य लहो मुनि सर्व। अखिल सुरागम देखि अखर्व॥ पांडु सुतनपर अतिसै प्रीति । मुनिगण करण लगे लखि रीति॥ और पुत्र उत्पादन रूप । देखो कहन चहत हैं भूप॥ * ॥ कुन्त्युवाच॥ * ॥ चैाथे सुतके हेत नरेश। अब हमसैाँ मति करऊ निदेश ॥ तीनि पुत्रलैाँ आपत धर्म्म। चैाथैँ होत स्वैरिणी कर्म्म॥ पञ्चम सुत यहि बिधि करि नारि । दाशी सम सो लेऊ बिचारि ॥ सकल धर्म्मबेत्ता तुम भूप। गुणि कै कहब बचन अनुरूप॥ कुन्तीपुत्र भए अभिराम। भे धृतराष्ट पुत्र शत आम॥ माद्री कहे भूपसैाँ बैन।तब एकान्त मँह पाय अचैन॥ तुम मे हमै नही सन्ताप। रतितैँ रहित भए लहि शाप॥ कनिष्ठा व्है ज्येष्ठाके बस्य। रहिबेकैाँ नहि खेद अवस्य ॥ गान्धारीके भे सुत जैान। दुख नहि भयो सुने ते तैान॥ है मोकैाँ यह दुःख महान। भई अपुत्रा होय समान॥ तब निमित्तत कुन्ती मांह। पुत्र भए सुनिए नरनाह॥ कुन्ती मंत्र पुत्र करमोहि । देय कृपा करि तो हित जोहि ॥ सपति भावको लहि अभिमान।हैाँ काँह शकति न सुनऊ सुजान॥ तुम भूपति करि मोपँह प्रीति। तासा कहऊँ बुझाय सुनीति॥ * ॥ पांडुरुवाच ॥ * ॥ यह मेरे हियमाँह बिचार । निशि दिन रहत सुप्रिये उदार ॥ यातैँ नहि कहि सको सचैन। मानऊ कै नहि मानऊ बैन॥ अब तुम्हरे जिय कैामत जानि। करत यत्न हम सुनऊ सुजानि॥ निहचै बचन हमारो जैान। प्रथा मांनि है सुनिकै तैान॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच॥ *॥ पांडु प्रथाकँह पाइ एकान्त। कहन लगे बिधिवत मतिमन्त॥

आ०प०

आ०प० कुलकी बृद्धिहेत अनुमानि। तुमसौं कहत सुनऊ सुखदानि ॥ कृपा तराणि पर लोऊ चढाय। दुख समुद्रके पार लगाय ॥ माद्रीहूकौं करऊ विशोक। कीर्त्ति बढे तो कामदलोक ॥ करऊ अपत्य सहित अभिराम। तो अनुगमना दुःखितबाम ॥सुनि भूपतिके ऐसे बैन। कुन्ती पाय हियमें चैन॥ तब माद्रीकौं निकट बोलाय। दियो मंत्र व्है शुचि सुखदाय॥ एकबेर करि हौ आव्हान। करी देव सो पुत्र प्रदान ॥ करि माद्री इे पुत्र विचार। आवाहे अश्विनी कुमार॥ *❦*❦*❦*

॥ * ॥ गीतिछन्द ॥ * ॥

तब आइ दस्र उदार तापैं सङ्ग करि सुखदान। द्वै पुत्र बर उतपन्न कीन्हे सङ्ग सुगुण समान॥ हैं नकुल ज्येष्ट कनिष्ट हैं सहदेव अति अभिराम।फिरि होत तातैं गगण बाणी भई परम ललाम॥ ए रूप गुण सम्पन्न व्है हैं दस्र सम सु कुमार। अति भरे तेजस भाग्यशाली धरैं रुप उदार॥ शत शृङ्ग बासी मुनिन कीन्हौं नाम तिनको पर्म। सो युधिष्ठिर ज्येष्ट मध्यम भीमसेन सधर्म ॥ किय नाम अर्जुन इन्द्र सुतके युद्धको जेतार। दिय नकुल अरु सहदेव माद्रीतनय नाम उदार ॥ एक एक बत्सर अनु भए ते सकल पाण्डव पर्म। अति बीर धीर पराक्रमी बलवान सत्य सधर्म॥ लखि पाण्डु पाचौं पुत्र अपने देवरुप समान। अति पुलक पूरे रहत निशि दिन भरे मोद महान॥ सब ऋषीणकौं प्रिय भए ते ऋषितियनकौं सम प्राण। फिरि कहो माद्री हेत कुन्ती सौं महीप सुजान॥ * ॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥ हौं एक सुत हित मंत्र दीन्हो युग्म देव बोलाय। द्वै पुत्र जाये कियो बञ्चन डरी देखि सुभाय॥ फिरि कहऊ मति यहि हेत मोकौं देऊ यह बर भूप। सुनि रहे चुपव्है पाण्डु ताको जानि मानस रूप ॥ इमि देव सम्भव पाण्डुके सुत भए देव समान। कुरुवंश बर्धन सहित लच्छण जगतके सुखदान॥ अति सिंहदर्प सु सिंहगामी सिंहग्रीव ललाम। बर बीर धनुधर महारथ अतिबाऊ बलके धाम ॥ ते बढे गिरि हिमबानमे शत शृङ्ग पैं अभिराम ॥ अति भए अचरज मान मुनिसब देखि कै बलधाम॥ जे पांच पांडु सु तनय धृतराष्ट्रके शत जौन। ते बढे थोरे कालमे कुरुवंश बर्धन तौन ॥ अति दर्शनीय सु सुतन्ह देखत रम्य बनमे भूप। फल पुष्प नबदल भरे साखो सरस सुरभि अनूप ॥ हैं मदन ध्वजसे मत्त मधुकर घिरे अति अभिराम॥ मनु काम क्रीडा हेत ऋतुपति करे रचित ललाम॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविनाकृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणिपांडवोत्पत्तिर्नामत्रि सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

फिरत ऐसे विपिनन्हिमे सह मद्रजा क्षितिपाल। भए मदनाशक्त अति विधि रचित पऊँचो काल॥ एक सुबसना सङ्गमे लखि मद्रजाकौं भूप। भरो काम कृशानुके तनु तापसौं अतिरूप॥ एकान्तमे

कुरङ्गलोचनी तिय चन्द्रवदनी पाय । मथित मन्मथ भए भूपति समय पँऊचे आय ॥ सके सहि आ०प०
नहि काम पीडा बिबस ह्वैकै भूप । पकरि लीन्हो मद्रजा कौं भए कामस्वरूप ॥ बऊत बारण
कियो बल करि छूटि भजिवो चाहि । काम पीडित भूप भूलो शाप दारुण ताहि ॥ सुरति तासों
कियो बलबस कालप्रेरित भूप । लह्यो तबहीं शापबस नृप पांडु सबको रूप । गतचेत भूपहि
देखि माद्री लयो हियमों लाय । लगी रोदन करण अतिशय शब्द करुणा छाय॥सह सुतन तँह
सुनि गई कुन्ती धरैं अतिशय भीति । जहाँ माद्री लए भूप शरीर कौं करि प्रीति ॥ कह्यो माद्री
प्रथासौं तुम एक आवऊ अत्र । छोडिकै सुकुमार चारु कुमार सिगरे तत्र ॥ छोडि कुन्ती तहा
पुत्रन्हि गई ताके पास । करति रोदन भरी दुखसौं देखि सुपति बिनाश ॥ देखि माद्री परी छिति
पर भूपकों हिय लाय । लगी करण बिलाप कुन्ती शोक सिन्धु समाय ॥ रह्यो रक्षित सदा मोसौं
बीर अति मतिमान । कियो तुम अतिक्रमण कैसें जानि शाप महान ॥ नियत रक्षा योग्य करि
बैऊ तोहि पति अनुरूप।सुनो कैसें विजन में तुम कियो लोभित भूप॥शाप तें रति दीन तुमकों रहस
मेसो पाय । भूलिगो मृगवचन कैसें हर्ष हिय उपजाय ॥ धन्य माद्री अधिक मोसों भाग्य तुम्हरो
जौन । भरो रति रस रङ्ग पतिको लखो आनन तौन ॥ * ॥ माद्रीउवाच ॥ * ॥ बऊत ताहि
निवारि हारी रोय नाना भाँति । नही मानो कियो सोई लिखी जो विधि पांति॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥
ज्येष्ठपती ज्येष्ठ मोकों धर्म फल अधिकार । अवश्य भावी भावतें मो करऊ तुम न निवार ॥
प्रेत पति बस खपतिके हौं करौंगी अनुगौन । पुत्र सिगरे पालियो तुम जाय अपने भौन ॥
माद्री उवाच ॥ * ॥ जाहिंगी पतिसाथ पालऊ पुत्र तुम सह चैन । काम तृप्ति न भई मोकों मानि
ए को नैन ॥ गमन मो करि मरे भूपति काम तृप्ति न पाय । करौंगी हौं तृप्त इनकों प्रेत पुरमे
जाय ॥ आत्मसुत सम नही मोमे वृत्ति तो सुत माह । पाप यातें होय गो हौं जाउँगी सह नाह ॥
पालिहो तुम पुत्र मेरो आत्मपुत्र समान । मोहि है विश्वास तुम कौं जानि सम सुख दान ॥ मरे
मेरो सङ्ग करि कै भूप धरि मन काम । सङ्ग मोकों जाइबो है भूपके अभिराम ॥ देह मेरी भूपके
यहि देह सङ्ग ललाम ।जारिबो है उचित तुमकौं सुनऊ कुन्ती बाम॥ सावधान सु होय मेरे सुत
नको प्रति पाल। कीजियो हे प्रथा कहिए बौर कासौं हाल ॥ येहि भाँति कहि कै चिता पर नृप
देह धरि तपधाम । अग्नि देकै जाय बैठी मद्रजा अभिराम ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥
पाण्डुको लखि मरण मुनिबर सकल ह्वै एक तंत्र । कहा करिबे योग्य अब सो करण लागे मंत्र ॥
तापसउवाच ॥ * ॥ राज्य राष्ट्र सु छोडि अपनो आइकै इत भूप । शरण गहि मुनिबरण की तप
करत हो अनुरूप ॥ पुत्र लघु अति सहित दारा छोडि कै हम पास । गयो जमपुर पांडु भूपति
पाय निधन प्रकास ॥ तास आत्मज सहित दारा अस्थि करिबे कर्म्म । लेइ चलि ए हस्तिनापुर

इहै अपनो धर्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ ते परस्पर मंत्र करि ऋषिवृन्द देव समान। हस्तिनापुर चलन कौ सह प्रथा सुत सुखदान॥ चले तब ह्वाँ लेय सिगरो पांडुको परिवार। गए सोरह दिवस में मै प्रथा पुत्र उदार ॥ हस्तिनापुर सबहेदिन चढे घटिका दोय । गए भूपति भौन के बर द्वार पै मुनि लोय ॥ द्वारपालन सौं कहो इमि मुनिन बचन ललाम । आगमन मम भूप सो तुम करहु जाहिर आम ॥ द्वारपालन सभा मे चलि कहो विधिवत तान । सहित कुन्ती पुत्र लै मुनिवृन्द आगम जौन॥ मुनि सहसन्ह सङ्ग चारण आगमन सुनि भूप। हस्तिना पुरमे सभासद भए बिसमय रूप॥ सहित दारन्ह पौरजन मुनिवृन्द देखन हेत। चले चारो बरण घर तैं निकसि हर्षित चेत। भीष्म सह बाह्लीक लीन्हे सोमदत्त उदार ॥ बिदुर सह धृतराष्ट्र भूपति चले सह परिवार। गन्धकाली पांडुसू अम्बालिका है जौन। राजदारण सङ्ग सो गन्धारजा है तौन॥ दुर्य्योधनादिक सर्व सुत धृतराष्ट्रके अभिराम। धरे भूषण एकशत सह शुभट बलके धाम॥ देखि मुनिवरवृन्द करि कै दण्डवत अनुरूप। जाय तिनके निकट बैठे सकल कौरव भूप ॥ भयो जब निःशब्द तब नृप यथा बिधि अभिराम। कियो पूजन भूप भूरि समाज सत तपधाम॥ भीष्म अञ्जलि जोरि बोले मुनिन सों अभिराम। राज्य जनपद आपुको है लीजिए तपधाम॥ तिन ऋषिजमे एक जटा जिनधर बृद्धमुनि तपश्रैन। पाइ मत मुनि गणनको इमि कहन लागो बैन ॥ पांडु नृप तजि कामभोग सुब्रह्मचर्य्य बिधान। आयकै शतशृङ्गगिरिपर कियो तप अति मान ॥ भो युधिष्ठिर धर्मतें यह पुत्र अति अभिराम। भीमसेन सुबायुते यह पुत्र भो बलधाम॥ इन्द्र तैं यह पुत्र अर्जुन भयो अतिरथ धीर। महा धनुधर जगत जेता शक्र सम बरबीर ॥ नकुल अरु सहदेव दोउ दस्रसुत अभिराम। भए माद्रीमाहँ ए नरबीर गुणके धाम ॥ बिपिनिचारी नित्य धर्म्म सु पांडु नृप अवतंस। रहो बूडत कियो उधृत पितामह को बंश। पुत्रजन्म सु बृद्धि बेदाध्ययन लखि कै भूप॥ पांडु पायो परम मनमे प्रीति अति अनुरूप। वर्त्तमान सु धर्म मे लहि पुत्रलाभ बिशोक। भए सत्रह द्योस पाए पांडुकौ पर लोक ॥ भूप तनुधरि चितापर सह बेदबिधि अभिराम। मद्रजा सहगामिनी ह्वै गई पतिव्रत धाम ॥ जौन तिनको छत्ति करिबे होय कीजे तान। अस्थि तिनके पुत्र हैं ए महा बलके भौन ॥ प्रेतकार्य निबृत्ति करिकै पितृमेध बिधान। लहैं जैसे पांडु नृप धर्मज्ञ धर्म्म समान॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ कुरुन सौं यहि भाँति कहि सह गुह्यकन मुनि वृन्द। लखत सबके भए अन्तरध्यान सुनहु नरिन्द ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ सब पांडुको प्रेतकर्म्म सो बिदुर आपु बिचारि। राज बिधि करवाइऔ बर बेदबिधि निर धारि॥ रत्न पसु धन बसन जाको जौन बांछित होय। सतकार पूर्वक भांति नाना देहु ताको सोय ॥ नहि शोच करिबे योग्य है नृपपांडु धर्म सुधीर। देवसम्भव देव सम सुत पांच जाके बीर॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ बिदुर भाषि तथास्तु भीषम सहित कुरुकुलसाथ। राजबिधि सौं चले लै

जहँ सुथल गङ्गा पाथ ॥ अस्थि माद्रीपांडुके धरि परम सिविका मांह । गन्ध पुष्प सुवर्ण बहुविधि धारत्य अरविकै नरनाह॥पौर कुरुकुल सङ्ग चारोवर्ण बाद्य बजाय। यज्ञ अग्नि सु लएँ ब्राह्मण ज्वलित तपमय काय ॥ जाय प्रेतविधान किन्हो सकल गङ्गातीर। सहित पांडव भीष्म कुरुकुल दियो अञ्जलि नीर॥ कियो द्वादश द्यौस लौं सब और्ध्वदैहिक कर्म्म।करि सपिंडीकरण पायो शुद्धताकहँ पर्म ॥ कुरुबंशकौं दे प्रथम भोजन सविधि कुरुकुल भूप। फेरि नाना भांति भोजन द्विजनकौं अनु रूप॥ दिए दान विधानसौं गज अश्व शिविका चीर । रथ बसन मणिगण हेम भूषण ग्रामगण नृपधीर ॥ भीष्म पांडव सहित कुन्ती लएँ सबर निवास । कुरु मुख्य सचिव सुसहित सेवक सकल दासीदास ॥ पारजन पदजनन लीन्हें कियो नगर प्रबेश। रहत शोचत पांडुनृप कौं करैं शोकाबेश॥ शोक दुःख बिमूढ लखि कै व्यासमुनि तहँ आय। गन्धकाली अम्बसौं दमि कहे बचन बुझाय॥ महादारुण काल आयो करै गो सुख नाश । पापिष्ठ निति प्रतिदिवस सिगरे करहि जे परकाश ॥ लहि महि यौवन शस्य व्हैहै लहैं माया जोर। धर्म ह्रहै लोप सिगरे काल आवत घोर॥ कुरुनके अन्याय ते छिति छीण व्हैहै सर्व। तपोवनमे जाय होऊ सु योगयुक्त अखर्व॥ आत्म कुल क्षय लखऊ मति हे अम्ब करि इत बास। व्यासके सुनि बचन मानो सत्य करि बिश्वास ॥ बिदा करिकै व्यास माता अम्बिका पै जाय। कहन लागी बचन ऐसे खेदसौं अतिछाय॥ तो पौत्र के अन्याय तें यह भरत बंश सु जौंन। सहित सेना सचिव सेवक नाश लहिहै तौंन ॥ शोकपीडित पांडु माता सहित बनको गौंन। करतिहौं हौं जौन भावे तुम्हैं कीजै तौंन॥ यह बचन सुनि बन गवन को तेहिं कह्यो करि स्वीकार।बधुन सह तब गन्धकाली गई बिपिनि उदार ॥ भीष्म आज्ञा सहित बन मे कियो तप अतिमान । योगयुक्त सु त्यागि तनुकौं लही गति सुखदान॥ * ॥ वैश म्पायनउवाच ॥ * ॥ संस्कार उपनयनादि लहि अति भरे पांडव कांति । भए वर्धित पायकै वर भोग नाना भाँति॥ खेलमे धृतराष्ट्रके शतसुतन सङ्ग गँभीर। होत सबसौं श्रेष्ठ पांडव महाबल बर बीर॥ केश गहत पछारिकै फिरि शीस ऊपर मारि। खैंचिकै कछुदूरि रोवत देत छितिपर डारि॥ एक शत ते एक मर्दत भीम भीम शरीर। खेलमे गहि पटकि डारत धरत कोउ न धीर ॥ पकरि खैंचत भूमि पै घँसिजात जानु सुबच्छ। छोडि देत सो देखि रोवत भरे असुअन अच्छ॥ *—*

॥ *॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जल क्रीडामहँ भरो उमङ्ग।पकरि लेत दश बालक सङ्ग॥ गहिरे जलमे बूडत जाय।छोडि देत करि मृतकप्राय ॥ धृतराष्ट्र तनय जब फल के हेत । चढे महातरु देखैं लेत॥ भीमसेन तव बिटप हलाय।तिन्हे बिकल करि देय गिराय॥ बाहुयुद्ध मे जव मे जौन। होय भीम समकौरव कौन॥ स्पर्धमान धृतराष्ट्र कुमार। उत्तर देत न डरे उदार॥ देत सुभीमसेन दुख भूरि। सहत ते अति बलवान बिसूरि॥ करत बाल्यबस अप्रिय जौंन। नहो द्रोह धरि मनमे तौंन ॥ जान

प॰ भीमकहँ अति बलवान । दुर्योधन धरि क्रोध महान ॥ पाप कर्म तिन कियो बिचार । कुमति बिरोध हिए अनुसार ॥ ऐश्वर्य्य मोह धरि द्रोह उदार । तब यह कीन्हो मंत्र विचार ॥ मध्यम कुन्तीसुत बलवान । याको निग्रह करी महान॥उद्यान माहँ याको लहि सुप्त । गहि गङ्गामे कीजै गुप्त ॥ युधिष्ठिर अर्जुन गुरु लघु जौन । गहि कारागृह डारैं तौन ॥ करौं राज्य तब निर्भय होय। यह निश्चयकरि पापसमोय ॥ भीमसेन सों दाव बिचार । देखत रहत सो सदा उदार ॥ दुर्योधन जल विहरण हेत । बिरचे बहुबिध सुपट निकेत ॥ सर्ववस्तु तें पूरण तौन । कम्बलपट बिरचित गृह जौन ॥ कीन्हो ऊदक क्रीडन नाम । प्रमाण कोटि सो थल अभिराम ॥ भक्ष्य भोज्य अरु पेय सु चोष्य । लेह्य पदारथ षटरस पोष्य ॥ नाना व्यञ्जन सूद बनाय । तहाँ धरे अतिसै सुखदाय । परिचारक तहँके सब आय । दुर्योधन सों कहो सुनाय ॥ तब दुर्योधन दुर्मति जौन । कहे पांडवन सों इमि बैन ॥ गङ्गातीर परम उद्यान । तहाँ जातहौं क्रीडामान ॥ भ्रातन सह जल क्रीडा हेत । चलहु युधिष्ठिर सुमति निकेत । एवमस्तु कहि पांडव बीर । चले रथन पर चढि रण धीर ॥ चले जानचढि कौरव सर्व । सहित पांडवन सैन अखर्व ॥ कढि पुरते कुरु पांडव बीर । गए जहाँ उद्यान गँभीर ॥ सेना छोडि सबल कुरुबंश । गए सु पांडव बीर प्रसंश ॥ बैठे पट कुटिकन महँ जाय । हिमगिरि दरिन सिंह मनु आय ॥ लसैं बिचित्र चारु पटधाम । सर बापी जिन बिकट ललाम ॥ कुरु पांडव तहँ बैठे जाय । भोजन करत बस्तु सुखदाय ॥ दुर्योधन करि पाप बिचार । कालकूट सह भक्ष्य उदार ॥ दियो भीम कहँ भोजन तौन । अपने हाथ सविष हो जौन ॥ हँसि हँसिकै अति आनद छाय । दियो भीमकह बहुत खवाय ॥ भीमसेन नहि जानत दोष । भोजन करि पायो सन्तोष ॥ दुर्योधन अति भए प्रसन्न । पुरुषाधमकृत पापासन्न । भीमसेन दारुणविष खाय । अन्न सङ्ग सो गए पचाय ॥ धार्त्तराष्ट्र सह पाण्डव बीर जलक्रीडा सब करत गभीर ॥ जलक्रीडा करि अथवत भान । पहिरे शुभ्र बसन सुखदान ॥ करि बिहार लिए सबन बिराम । थके भीम करि अति व्यायाम ॥ प्रमाण कोटिमे सुस्थल पाय । भीमसेन तहँ सोए जाय ॥ शीतबात श्रम बिषबस होय । भीमसेन गे अतिसै सोय ॥ बांधि लतन सों सिगरे अङ्ग । दुर्योधन भरि पाप तरङ्ग ॥ मृतक सदृश सों बीर उठाय । दियो अथाह सलिल मे नाय ॥ गे निःसंज्ञ सलिलके अन्त । गिरो नागपुर मे बलवन्त ॥ नाग कुमार मानि अतिदोष । काटन लगे महा करि रोष ॥ सर्पदंश के बिषको पाय । कालकूट बिष गयो नशाय ॥ भीमसेन तब लहो प्रबोध । बन्धन डारि तोरि सक्रोध ॥ डसत रहे जे अहिगण सर्व । मारे बृहव भाजिगे खर्व ॥ सर्प राज बासुकि के पास । कहन लगे ते पूरित त्रास ॥ बद्ध मृतक सम पुरुष महान । गिरो आय इत सुनहु सुजान ॥ जानि परै विष कीन्ह पान । मम दंशित सो

भनेो सुजान ॥ मारत हमै महाबल कौँन । नागराज चलि देखऊ तौँन ॥ नागराज बासुकि तहँ आ॰
आय । देखोँ भीमसेन अतिकाय ॥ आर्य्यक नाग तास दौहित्र । ताको यह दौहित्र पवित्र ॥
यह सम्बन्ध जानि नागेश । व्है प्रसन्न यह कियो निदेश ॥ करेँ कहा प्रिय याको माम । देऊ रत
धन मणि अभिराम ॥ यह सुनि कै बोलो सो नाग । नागराज तुम भए सेराग॥ दिए कहा धनके
सनमान । कृपा सहित दीजे रस पान ॥ सहस्र नागबल कारक जौँन । तुम रसकुण्ड पियावऊ
तौन ॥ यह बासुकि शासन सुनि नाग । कहो भीमसोँ भरि अनूराग ॥ सुचि व्है पूरबमुख उपबिष्ट
पियऊ सो रस लहि परम सुदिष्ट ॥ करण लगे रस भीम सो पान। एक स्वासमहँ कुण्ड प्रमाण ॥
ऐसे आठ कुण्ड गम्भीर । पान कियो कुन्तीसुत बीर ॥ नागदत्त लहि शय्यापर्म्म । शोए भीम
सेन गत भर्म्म ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कुरु पांडव बिनु भीम प्रभात । चले हस्तिनापुर
अवदात ॥ नाना भांति जान असवार । कहत भीम गे प्रथम उदार ॥ पापी दुर्योधन खलमान ।
लखो न भीमसेन बलवान ॥ भ्रातनसह अति भए प्रसन्न । भए सो हास्तिन नगरासन्न ॥ युधि
ष्ठिर धर्म्मशील अतिशुद्ध । जानत तास न पाप बिरुद्ध ॥ करि अपने मनसे अनुमान । जानो तास
कलङ्क सुजान ॥ कुन्तीसाँ बूझो घर जाय । आए भीम कहा हैँ माय ॥ कहा गए न परे हैँ काहि
थके ढूंढि नहि पावत ताहि ॥ हम जानो घर आयो अग्र । इहां न लखत होत मन व्यग्र ॥ कहा
पठायो ताकाँ अम्ब । आयो नहि अति भई बिलम्ब ॥ कहऊ अब मोसाँ तुम तौँन । भीम करण
को कारज जौँन ॥ गहत न मो मन ता प्रति चाव । बढत शोकसो अन्तर्भाव ॥ भीमसेन हो शोवत
अत्र । मारो गयो जानि यत तत्र ॥ युधिष्ठिरके सुनि ए बैन । प्रथा कहन लागी हत चैन ॥ * ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

न ही देखो भीमकाँ नहि इहां आयो बीर । करऊ सानुज ढूँढिबेको तास यत्न गँभीर ॥ कहि
युधिष्ठिरसाँ सो ऐसेँ भई व्यग्र महान । बोलि मांगो बिदुरकाँ हित जानि परम सुजान ॥ बिदुर
हा नहि लखत भीमहि भयो का अभिराम । उद्यानतेँ सब चले आए गो कहां बलधाम ॥ दुर्यो
धनाके चक्षुको नहि प्रीतिकर है तौँन । दुष्ट दुर्म्मति हनो ताको नतरु आवत भौँन ॥ महा
व्याकुल भई यातेँ कहति तुमसाँ बैन । तात कहिए बात सो जेहि सुनत आवै चैन ॥ * ॥ बिदुर
उवाच ॥ * ॥ कहऊ ऐसेँ बैन मति ए शेष है सुत जौँन । ए सुने गो जो बचन वह ताे मारि है सब
तौँन ॥ दीर्घायु हैँ सब पुत्र तो हैँ सत्य मुनिके बैन । आइ है तो पुत्र देहै फेरि तुमको चैँन ॥ * ॥
बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बिदुर यह कहि गए घरकाँ समय साधक जौँन । भरी चिन्ता रही
कुन्ती सुतन सह सुनि तौँन ॥ भीम अठए दौस जागे पचै सो रस बीर । शांत्व पूर्बक नाग लागे
कहन बचन गभीर ॥ जौन तुम यह पियो रस अति बीर्य्य बलके धाम । युद्ध दर्जय अयुत गज बल

होऊ ते अभिराम ॥ दिव्य जलमे स्नान करि यहि जाऊ घरकौं बीर । होहिँ गे तो भ्रात चिन्ता करत दुखित गम्भीर । स्नान करि शुचि बसन धरि वर गन्ध स्रज अभिराम । बिषघ्न औषधि सहित किय परमान्न भोजन साम ॥ दिव्य भूषण दियो नागन पूजि कै अभिराम । बिदा ह्वै कै नागप तिसौं चले अपने धाम ॥ शीष पर धरि नाग ल्याय प्रनाए कोटि द्वि पास । बिदा ह्वै कै भीमसौं ते गए अपने बास ॥ तहांतैं तव भीम कीन्हैं हस्तिनापुर गौन । मात भ्रातन निकट आए भरो आनद भौन ॥ बन्दि जननी ज्येष्ठभ्राता के चरण अभिराम । करे लङ्करे बन्धु तिनके घ्राण मस्तक साम ॥ लियो सबहिन अङ्कमे भरि भाग्य बस तुम आय । मिले असे कहत फिरि फिरि मोद हियन समाया ॥ कियो जेदुर्योधने सो कहो छत सब तौन ॥ कहो सबसौं नाग पुरमे दोष गुण भो जौन ॥ धर्म्म भूपति भीमसों यह कहो सार्थक बैन । रहो अबहो मौन कछु दिन योग्य कहिबे हैं न ॥ यहि भाँति कहि सब भ्रातरण सों तब युधिष्ठिर भूप । रहत हैं अन्योन्य निशि दिन सावधान स्वरूप ॥ सकुनि दुःसासन सुयोधन कर्ण कुटिल स्वभाय । पाण्डवनके मारिवेकौं चहत रहत उपाय ॥ पाण्डु नन्दन मंत्र तिनको सकल जानत तौन । करत सोइ परम हित लहि बिदुरको मत जौन ॥ गुरू शिक्षा हेत तिनके समुझि कै अभिराम । शर समुद्भव कृपाचार कौं कियो मतिधाम ॥ * ॥ जनमेजय उवाच ॥ * ॥ कहहु कृपको जन्म कैसे भयो शरतें विप्र । शस्त्र बिद्या लही कैसैं शास्त्र बिद्या छिप्र ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ शरद्वान सुपुत्र गौतम के भयो जनि सङ्ग । धनुष धारो पढो बिधिवत धनुर्वेद सुरङ्ग ॥ महातप करि शस्त्र विद्या सकल सीखो तौन । महा तप तैं अस्त्र तैं भो इन्द्रको भय भौन ॥ इन्द्र जानपदी पठाई अप्सरा अभिराम । गई सो तपभङ्ग कौं मुनि निकट आश्रम धाम ॥ एक बसना देखि ताके अङ्ग काम कृशान । बरो मुनिवर कँपो करतैं गिरो धन्वाबान ॥ धीर धरि तजि भजे आश्रम कँपो मुनिको अङ्ग । गिरो रेत अचेत शरमे द्विधा ह्वै कै भङ्ग ॥ भई कन्या पुत्र मुनिके बीर्यतैं शरमाह । गए मृगया हेत सान्तनु तहा कुरु नरनाह ॥ गयो तहँ एकचार शरमे देखि कै द्वै बाल । परो तहँ शर अजिन धनु लखि गयो नृप पँहहाल ॥ कहो सो वृत्तान्त नृपसौं भूप गो चलि तत्र । लखो बालक मिथुन शरमे अजिन शर धनु यत्र ॥ जानि मुनिके तनय भूपति लिए ते उठवाय । कृपा करि लै गए घरकौं पुत्र बत सुखदाय ॥ कियो जातक कर्म्म बर्द्धित भए ते अभिराम । कृपा सह ल्याए महीपति धरो कृप यह नाम ॥ जानि तपबल सौं शरद्वत भूपके ढिग आय । दियो सान्तनु नृप हि सो कुल जाति गोत्र बताय ॥ चतुर्विध धनुर्वेदविद्या दई सकल पढाय । रहे कृप कछु द्योसमे आचार्य ताकों पाय ॥ धनुर्वेद सु पढे तासौं सकल विधिवत धीर । पाण्डुसुत धृतराष्ट्रके से महारथ बर बीर ॥ वृष्णि यादव अन्यनृपके तनय तापैं आय । धनुर्विद्या पाय कृपके गए शिष्य कहाय ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ भीष्म पौत्रनकौं सुचाहत अधिक बिद्या देन । महाबल धनुर्वेदविदको

खोध लाये खेन ॥ देवसत्व सुबुद्धि बर धनु बेदपारग धीर । भरद्वाज तनय द्रोण प्रसुरामशिष्य अ॰थ सु वीर ॥ पाण्डवनकौं कौरवन कौं शिष्यताके हेत ॥ द्रोण पूजन कियो विधिवत भीष्म प्रमुदित चेत ॥ द्रोण प्रमुदित भए तिनकौं कियो शिष्य उदार । कियो शिक्षा धनुर्बिद्या विविधि भाँति अपार ॥ भए थोरे द्योसमे ते शस्त्रवेत्ता सर्व । सकल कौरव सकल पाण्डव बीर बिरद अखर्व ॥ जनमेजय उवाच ॥ * ॥ भए कैसें द्रोण काके पुत्र अति बलवान । शस्त्रविद्या लहो कासौं कहौ शीन सुजान ॥ केहि भाँति आए हस्तिनापुर पुत्र अश्वत्थाम । लहो कैसें तीन कहिए सहित बिस्तर साम ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ यज्ञ शालामे घृताची अप्सराकौ देखि । गए गङ्गा स्नानकौं फिरि भरद्वाज विशेखि ॥ फेरि ताकौं लखी तँहा न्हात ही छविधाम । सूक्ष्मपटतन साह लपटो बढो मन्मथ साम ॥ गिरण लागो रेत सो मुनि धरो द्रोणी माह । भयो तामे पुत्र सोई द्रोण हे नरनाह॥पढे बेद सदङ्ग सिगरे द्रोण तपके धाम।अग्नि बेश मुनीन्द्रकौं तब भरद्वाज ललाम॥ आग्न्यास्त्र पढिबे हेत दीन्हो सौंपि सुनिए भूप। आग्नेय अस्त्र सु लहो तासौं द्रोण सबिधि अनूप॥ भरद्वाज मुनीन्द्रको हो सखा पृषत नरेश। द्रुपद ताको पुत्र भो पांचाल जाको देश ॥ द्रोणके संग द्रुपद खेलत पढत हो अनुरूप । मरे पृषत नरेश पाछैं द्रुपद भो तँह भूप ॥ स्वर्गकौं मुनि भरद्वाजो गए तपके धाम । द्रोण आश्रममे तहां रहि कियो तप अभिराम ॥ पुत्र कारण पिता आज्ञा सहित मुनिबर द्रोण । शरद्वतोसौं ब्याह कीन्हौं स्वसा कृपको जौंन ॥ अग्निहोत्र सुधर्म्म पालिक गौतमी तपधाम । जई अश्वत्थाम नामक द्रोणसुत अभिराम ॥ पुत्र लहि कै द्रोण मुनिबर देखि कै आसन्न । बास करि कै रहत तेहां भए अतिहि प्रसन्न ॥ सुनो द्रोण सु विप्र गणकौं देत भृगुपति बित्त । चले शिष्यन सहित ता पँह धरे धनमे चित्त॥ गए द्रोण महेंद्र गिरिकौं लखो भृगुपति राम। जन्म कुल कहि गोत्र अपनो कियो सबिधि प्रणाम॥छोडि कै सब चलो चाहत बिपिनिकों जब राम। कहन लागे द्रोण तासौं बचन मधुर ललाम ॥ बित्त मागन हेत आयो तुम्है जानि बदान्य। भरद्वाज सुबंससम्भव होय जो निज मान्य ॥ कहो तब भृगुनाथ ऐसें द्रोणसौं अभिराम । भयो आगम बिप्र अपनो कहहु जो मनकाम ॥ द्रोण ऐसें कहो सुनि भृगुनन्दके इमि बैन। दीजिए धन बिबिधि हमकौं अहे तपवर ऐन ॥ * ॥ राम उवाच ॥ * ॥ रहो जो धन अद्य हमसौं हेम रत्न ललाम।ब्राह्मणनकौं दियो हौं सो निसेष हे तपधाम॥धरा देवी सागरांता लई ही हम जौंन। दई कश्यपकौं सो सिगरो सहित पत्तन तौन ॥ रहो शेष शरीर मेरो सुनहु हे तपधाम। अस्त्र शस्त्र महार्ह बाकी रहे हैं अभिराम ॥ शस्त्र और शरीर मेरो चहहु मागहु तौन। द्रोण तुमकौं देहिं गे हम होय इच्छा जौंन ॥ प्रयोग सह संहार दीजे अस्त्र हमकौं सर्व । अरु रहस्य बिधान तिनके कृपा सहित अखर्व ॥ कहि तथास्तु सु दिये ताकौं अस्त्र सिगरे राम । धनुर्बेद पढाय दीन्हो सह रहस्य ललाम ॥ बिदा व्है भृगुनन्द सौं लहि अस्त्र शस्त्र प्रकाश। जानि कै प्रिय सखा आए द्रुपद

नृपके पास ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ द्रोण आए द्रुपद प तब कहो ऐसे बैन। भूप आयो सखा मोका जानिए भरि चैन ॥ द्रोणके इमि बचन सुन ते भरो अमरष भूप। कहन लागे द्रुपद ऐसे होय उग्र स्वरूप ॥ द्रुपदउवाच ॥ अज्ञान कैसी बुद्धि हो तो विप्र अप्रिय भान। कहो मोका सखा सहसा आय कै तुम ज्ञान ॥ सखा ऐसे नरनके नहि होत भूप महान। धनहीन कृपण सु विप्र भिक्षुक फिरत मागत दान ॥ सौहार्द्द बीतैं कालकैं बहु जीर्णताकौं लेत। रही तुमसौ मित्र तासें बाल्यवय लहि हेत ॥ रहत सख्य न अजर काहूके हृदयमे विप्र। काल बीतैं बहुतकालहि कोध बिनशत चिप्र ॥ रहो हमसौं प्रीति तुमसौं एक बासहि पाय। सख्य निर्धन धनिकसौं नहि होत है सुखदाय॥ सूरसैं अरु क्लीबसौं नहि होति प्रीति समान। होति है कृश स्थूलसौं नहि प्रीति चित्तसुख दान॥ सम बित्ततैं सम जातितैं द्विज होत सख्य बिवाह। रथी अरथी सा नही है सख्यको उतसाह ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ द्रुपदके सुनि बचन ऐसे द्रोण भरि कै क्रोध। धरी द्वै लौं मौन रहि कै कियो मनको बोध ॥ प्रतीकार विचारि मनमे कारणान्तर पाय । गए हास्तिन नगरको कुरुवंश जहँ सुखदाय॥ रहे गौतम सदनमे प्रच्छन्न करि कै बास। कृपाचार्य्य न होत जब सुत द्रोणको बल रास॥ शस्त्र सिक्षा देत तब कुरु पाण्डवनकौं भूप॥ रहे ऐसे कछूदिन तँह गूढ धारे रूप ॥ निकसि हास्तिन नगरतैं कुरु पाण्डुपुत्र ललाम। जाय परिसरमे सु खेलत दण्ड गुल्ली आन ॥ परो गुल्ली बेग बसते कूपमे सो जाय । ताहि काढिन शकत कोऊ करत बहुत उपाय ॥ श्वेतकेश सु बिप्र तेहां लखो श्याम स्वरूप । करत कछु सत कर्म बैठो निकट निर्जल कूप ॥ गए ते तँह सकल बालक मममन उतसाह । कहन लागे द्रोण तिनसो धरे कछु चितचाह ॥ मन्द हँसिकै कुशल तासौं शस्त्र बेत्ताबीर। निन्द्य तव है क्षत्री बल औ शस्त्रविद्या धीर ॥ सकत हो नहि काढि गुल्ली भरतबंशज होय । सहित गुल्ली मुद्रिका हौं काढि देहौं दोय ॥ चारु मुदरी काढि करतैं कूपमे बिनु बारि । डारि दीन्ही लखत सबकैं कछू कार्य्य बिचारि ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ काढिहो औ कूपतैं यह सुनहु हे वरविप्र । मंत्रतैं कृपके सु लहिहौ सदा भिक्षा चिप्र ॥ * ॥ द्रोणउवाच सीकि मुष्टि प्रमान हो करि मंत्र योजित जौन । कहत ताको वीर्य्य देखहु अन्य सों नहि तौन ॥ सीकसो सो भेदि गुल्ली सीकसौं सो सीक । काढि तुमकौं देत गुल्ली लखहु नृपसुत नीक ॥ * ॥ वैशम्पयनउवाच ॥ * ॥ कहो जो सो द्रोण कीन्हो देखि अद्भुत कर्म । भरे अति आश्चर्य्य ते सब भरे आनंद पर्म ॥ * ॥ कुमारउवाच ॥ * ॥ मुद्रिकाव अबस्स काढहु सुनहु हेवर बिप्र । * ॥ वैश म्पायनउवाच ॥ * ॥ धनुष धरि शरबिद्ध मुदरी काढि लीन्ही चिप्र ॥ कढी मुद्रा देखि अद्भुत कर्म जानि कुमार । * ॥ कुमारउवाच ॥ * । और मे यह परम बिद्या है न बिप्र उदार ॥ कौन हो तुम बिप्र कीजै कहा तुम्हरो काम। कहहु सो हम करहि कारज आपुको अभिराम ॥ * ॥ वैश म्पायनउवाच ॥ * ॥ द्रोण सुनि कै बचन तिनके कहे ऐसे बैन। भीष्म सो गुण रूप हमरो कहहु

आय सवैन ॥ सुनत हमकों जानि लेहै अहे राजकुमार । * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जाय कै आप॰ तिन भीष्मसों सब कह्यो कर्म उदार ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनत कुमारन के वचन जानि द्रोण बरवीर । भीष्म मानि गुरुयोग्य जिय हर्षित भए गँभीर ॥
आपु आय आदर सहित ताकों गए लेवाय । पूजन करि पूछन लगे सकल वृत्त सुखदाय ॥
हेतु आगमन को सकल कहन लगे तब द्रोण । पूर्व चरित सब आदि ते आत्म वृत्त सम तौन ॥
अग्नि वेश्य ऋषि पैं गए शस्त्राभ्यास विचारि । पूर्व वयक्रम मे पठन धनुर्वेद निरधारि ॥
ब्रह्मचर्य्य धारे जटा रहे तहां बहुवर्ष । गुरु शुश्रूषण करि लहे अस्त्र शस्त्र युत हर्ष ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पांचाल राजको द्रुपद कुमार । शरविद्या हित गयो उदार ॥ तहाँ बहुत दिन करि सह बास । सखा भयो सो मोहित रास ॥ कहन लगो इमि मोहि सधर्म । हम स्वपिताके प्यारे पर्म ॥ पिता करी जब मो अभिषेक । कहत सुनहु तव सहित विवेक ॥ वर तो भोग्य होय गो सर्व । कहत सपथ करि वचन अखर्व ॥ मोसुख भोग रही तो वश्य। यह जानहु तुम सखा अवश्य॥ यह कहिकै लहि शस्त्राभ्यास।विदा होय सो गयो आवास ॥ ताको वचन सत्य अनुमानि । नित्य स्मरण कियो सुख मानि॥पितृ नियोग पुत्रको लाह । चाहि कियो हौं भूप विवाह ॥ लहो गौतमी माहँ अपत्य । औरस अश्वत्थामा सत्य ॥ महा बिक्रमी सूर समान । भरो तेज अतिबल सुखदान ॥ धनिक सुतन कँह पीवत छीर । लखि बालकपन भरो गँभीर ॥ मागै अश्वत्थामा छीर । पाए बिनु रोवै सु अधीर ॥तबहौं भयौं दुखित अति भूप।नहि ग्रहस्थ सीदत शुचि रूप॥फिरे देश बहु चिन्ता चाय। कहू न लहो एक हम गाय ॥ शुद्ध प्रतिग्रह चाहत भूप ।कहू न लहो आपु अनुरूप॥पिष्ट घोरि जल स्वेत बनाय । ताहि देत कहि छीर पियाय ॥ छीर मानिकै सो करि पान । नचत बाल्य बस सुत सुखदान॥ ताहि देखि जे बालक आन । करत हास्य मेरो अपमान॥हे धिग यह निर्धन द्विज द्रोन । कहू न पावत है धन जौन ॥ जासु पुत्र पिष्टोदक पान । करि नाचत है छीर समान ॥ यह सुनि भई बुद्धि मो भ्रंश । करो आत्म निन्दा कुरुबंश ॥ यह चिन्तन करि भयो उदाश । कियो दूरि तजि सबसों बाश ॥ परसेवा न करौं पापिष्ट । यह बिचार मनमे करि शिष्ट ॥ भीषम हम सह पुत्र सदार।गयो द्रुपदनृपपाश उदार॥प्रीतिपुरातन जानि सुजानि।सख्य वचन ताको अनुमानि॥ राज्याभिषिक्त सुनो जब ताहि। कार्य सिद्ध भो चितमे चाहि ॥सो प्रिय सखा हमारो भूप।समुझि बचन ताको अनुरूप ॥ आयो जानि मित्र नृप तोहि । जानहु पूर्व सखा प्रभु मोहि ॥ यह सुनि बचन हमारो भूप। बोलो वचन निरादर रूप ॥द्रोण कहे ताके ते बैन।पहिले कहे ते फेरि कहै न॥ हम जानत तुमकौं नहि विप्र । रहत कहातैं आए छिप्र ॥ जानत हम न प्रतिज्ञा तौन । राज्यार्धक

पं० भाषत तुम जौन॥ एक दिवसको भोजन देत। जाऊ आपने विप्र निकेत॥ यह सुनि तास वचन अपमान॥ तब सदार हम कियो पयान॥ किया प्रतिज्ञा मनमे तौन। कछु दिनमे है करिहैं जौन। द्रुपद वचन सुनिकै धरि क्रोध। चाहि शिष्यकीवे श्रुतिबोध॥ भीष्म तिहारो जो मनकाम। इस वर्धित करिहैं अभिराम॥हास्तिनपुर हम आए भूप।कहहु सो करैं कार्य अनुरूप॥*॥ वैशम्पायन उवाच॥*॥ सुनत द्रोणके ऐसे वैन। भरे भीष्म अतिसै चित चैन॥*॥ भीष्मउवाच॥*॥ धनुष उतारि बैठिए आपु। द्रोणाचारय बुद्धि कलापु॥ तुमतैं व्हैहै मम सब कार्य। सत विद्या सो दीजै आर्य॥ भोग्य भोग सब करहु सप्रीति। कुरु कुलमे व्है पूज्य सुनीति॥ कुरुकुलमे है वित्त जो सर्व। यह जो राज्य सराष्ट्र अखर्व॥ ताके तुम राजा अभिराम। यह तो सब कुरुवंश ललाम॥ तुम्हे होय जो वांछित विप्र। जानहु सो सम्पादित छिप्र॥ हमहि मिले तुम भाग्याधीन। करो अनुग्रह अति द्विज ईन॥*॥ वैशम्पायनउवाच॥*॥ द्रोण कियो तहँ सुचित विराम। पूजो भीष्म सविधि गुणधाम। शिष्यहेत सब पौत्र बोलाय। सौंपि दिए तिनको सुखदाय॥ विविधि भाँति धन धान्य समेत। दियो रचित करि चारु निकेत॥ कुरु पाण्डव करि शिष्य सप्रेम। शिक्षा करत द्रोण धरिनेम॥ शिष्यनको लहि प्रणत सचैन। एकदिन द्रोण कहो इमि वैन॥*॥ द्रोण उवाच॥*॥ वांछित कारय मो हरि एक।तुम कृताख व्है भाँति अनेक॥ दीजो मोहि कहौं गो जौन। कहहु भरत कुल वर्धन तौन॥ यह सुनि कौरव रहे चुपाय। कहो तथास्तु पार्थ सुखपाय॥ तब अर्जुनको मूर्धा घ्रान। कीन्हों द्रोण परम सुत दान॥ भरे प्रेम अति हिय सों लाय। बरषे नेत्र सलिल सुखदाय॥ द्रोण दिव्य सब अस्त्र विधान। दिए पाण्डवनकौं जयदान॥ राजनके सुत तहाँ अनेक। सस्त्र हेत गे सहित विवेक॥अन्धक वृष्णि वंशके भूप।आय भए तँह शिष्य अनूप॥ कर्ण सूत सुत आयो तौन। धरत पार्थ सौं ईर्षा जौन॥ दुर्योधनको आश्रय पाय। करत कुटिलता दुष्टस्वभाय॥ अस्त्राभ्यास माहँ अभिराम। अर्जुन अधिक भए बलधाम॥ अस्त्र शस्त्र विधिमे अ समान। द्रोण पार्थकौं कहत सुजान॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥*॥ महिखरीछन्द॥*॥

अस्त्र शस्त्र विधान ऐसें द्रोण सबहि बताय कै।सूदन सुखको दै कमंडल नीर हेत पठाय कै॥ वर वदनको दै कुम्भ सुतकौं शीघ्र भरिकै जाय सो। लहि एक तब लौं ताहि अस्त्र रहस्य देत बताय हो॥ यह जानि अर्जुन वारुणास्त्र सुपढि कमंडलकौं भरै। द्रोणसुतके साथ गुरुढिग आय सो तुरतहि धरै॥ गुरुपुत्रसौं निजु लेत विद्या एकक्षण न जुदे रहै। तब भयो पारथ सरस सबसें अस्त्र विद्यामे महै॥गुरु सुश्रुषामे सुअर्जुन नित्य तत्पर रहत हे।अति अस्त्रके अभ्यास तैं सो द्रोणकौं प्रिय महत हे॥ सो अस्त्रके अभ्यासमे लखि पार्थकौं तत्पर अहो। पुनि बोलिकै तब सूदको यहि भांति द्रोण शिखै कहो॥ नहि बिना दीप न कवहु दीजो पार्थकौं भोजन सुनो।

यह नही मेरो बचन कबहू कहेऊ तासौं हे गुनो॥करत अर्जुन रहे भोजन बात अतिशय आयगो। आंप०
हो बरत जौंन प्रदीप म्हहमे लगे तौन बताय गो ॥ तब करत भोजन हाय मुखतैं अनत जानत
जानिकै। अभ्यास कारण पार्थ मनमे लियो तब अनुमानि कै ॥ तब करण शस्त्राभ्यास निशिमे
लगे लच्य निपात कौं। सुनि गए तहँ चलि द्रोण निशिमे सहत ज्या आघात कौं ॥ तब लियो
हियसौं लाय ताकौं परम प्रीति विचारि कै। नहि होय तोसो और धनुधर कहत सो निरधारि
कै॥ * ॥वैशम्पायनउवाच॥ * ॥गज अश्व रथ चढि भूमिमे रचि दई रणविधि जौंन है।
असि गदा तोमर शक्ति पट्टिस शस्त्रविधि जो तौन है॥ सब दियो द्रोण बताय ताकौं युद्धविधि
अभिराम कौं। नहि जीति जातैं सकै कोऊ पार्थ बलकेधाम का॥ सुनि धनुर्विद्या कुशल ताकौं
चहूँ दिशिते आय कै। भे राजपुत्र अनेक ताके शिष्य गुणगण पाय कै॥ तब एकलव्य हिरण्य
धनुष निषादपतिको पुत्र जो। सो शिष्यह्वैवेहेत धनु गुरु द्रोणके चलि पास गो॥नहि कियो ताकौं
शिष्य द्रोण निषाद नीच विचारि कै। सो गयो शीस छुवाइ पदसों मूर्ति हियमे धारि कै॥ तब
जाय बनमे द्रोणकी मृतमई मूर्त्ति बनाय कै।गुरु भावना करि अर्चि विधिवत भक्तिसौं मन लाय
कै॥ सो करण शस्त्राभ्यास लागो मूर्ति गुरुवत पाय कै॥ सह शीघ्रता सन्धान मोचन हस्त लाघव
परम जो। सो करि अनिस अभ्यास सीखो धनुर्धर बर करम को॥ लहि द्रोण आज्ञा कुरु सपां
डव गए मृगया करण ते। संग लेय मृगया साज गे बर भृत्य आनद भरण जे ॥ तहँ एक श्वान सु
छोडि दीन्हौं भ्रमत सो बन मह गयो। जहँ करत शस्त्राभ्यास हो एकलव्य बलसौं अतिसयो॥
सो लगो भूकन देखि तह तेहि सात सर मुख भरि दयो। वह श्वान शरसौं भरो मुख चलि पांडवन
के ढिग गयो॥ सो श्वा भरो मुखबाण पांडव देखि अति विस्मय भए। अति हस्त लाघव शस्त्र बेधन
जानिकै ब्रीडित भए॥ तब ताहि ढूढत गए बनमे देखिकै बूझन लगे। तुम शिष्य काके कौन के
सुत शस्त्र शिक्षामे पगे॥ * ॥ एकलव्यउवाच॥ * ॥ बर सुत निषाधाधीशके सुहिरण्य धनु जेहि
कहत हैं। हैं शिष्य द्रोणाचार्यके धनुबेद तासौं लहत हैं॥ * ॥वैशम्पायनउवाच॥ * ॥तब
पांडवन तेहि जानि नीकी भांतिसौं मन मह लियो। तिन आय अद्भुत कर्म ताको द्रोणसौं सब
कहि दियो॥लखि एकलव्यहि पार्थ मनमे महा चिन्तित ह्वै रहे। लहि द्रोणकौं एकान्तमे यहि
भांतिसौं बोलत भए॥ * ॥ अर्जुनउवाच॥ * ॥ यह कहो तुम नहि शिष्य मेरो अधिक तुम ते
होय गो। सो देखि शिष्य निषाद तुम्हरो बचन सिगरो खोय गो॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥
तब घरी इक बिचारि मनमे द्रोण निहचै करि लए। तव सव्यसाची सहित द्रोण निषादपति
सुत पहँ गए॥ सो धरें रूप किरातको शर धनुष कर लीन्हैं खरो। हो करत शस्त्राभ्यास बनमे
अनिस अतिबलसौं भरो॥ लखि चले आवत द्रोणकौं गुरु मानिकै आगैं गयो। सो एकलव्य सु

भीसमसौं पर बन्दिकै ठाढो भयो ॥ तब कियो पूजन यथाबिधि गुरु द्रोणको सनमानिकै।करजोरि आग रहो ठाढो शिष्य आपुहि जानि कै ॥ *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

द्रोण तब एकलव्यसौं यहि भांति बोले बैन। शिष्य हौ तौ दीजिए गुरुदछिणा बल ऐन ॥ एकलव्य सुनि गुरु बचन ऐसैं कहो भरि आनन्द ॥ एकलव्यउवाच॥करऊ आज्ञा कृपा करि दो देहि गुरु गुण कन्द ॥ बैशम्पायनउवाच॥ सुने ऐसे वचन ताके बीरताके धामा दत्त करको देऊ अगुठा कहो द्रोण ललाम ॥ द्रोणके सुनि वचन दारुण एकलव्य बिचारि। काटिकै धरि दयो अँगुठा वचन बिरद निहारि ॥ निषाद तबते धनुष खैचत अंगुलीसौं सर्ब। तासु तबल हस्त लाघव है गयो कछु खर्ब ॥ द्रोण साचें भए अर्जुनको गयो मिटि खेद। पार्थसो नहि और बेत्ता जगतमे धनुबेर ॥ भीम दुर्योधन भए अति गदारणमे तज्ञ। धनुर्बेद रहस्य ज्ञाता द्रोण सुत सर्बज्ञ ॥ गन्धा रजाके पुत्र भे असिचर्म बिधिबिर ज्ञान। शस्त्रास्त्र बिद्या गगन पारग भए अर्जुन भान॥ श्रेष्ट सबते सुरथ बाहक भे युधिष्टिर जौन। अस्त्रको उपदेश कीन्हौं तुल्य सबको द्रोण ॥ बुद्धि बल उत्साह अस्त्राभ्यास ते अभिराम। भए सबने एक अर्जुन महारथ बलधाम ॥ बलाधिक लखि भीमकौं हत भस्त पार्थ महान। धृतराष्ट्रके सुत दुष्ट तिनसौं करत द्वेष बिधान ॥ शिष्य सिगरे लेइकै गुरु द्रोण अति बलवान। प्रहार पटुता जानि बेकौं रचो लच्छ बिधान ॥ एक वतक बनाय राखी वृच्छ ऊपर दूरि। द्रोण लच्य बताय शिष्यनकौं दयो मुद पूरि ॥*॥ द्रोणउवाच ॥ * ॥ रहऊ तुम यह लच्छ बेधन हेत करि सन्धान। कहैं हम तब शीसयाको काटियो तजि बान ॥ कहो प्रथम युधिष्टिरहि सो द्रोण बचन ललाम। करऊ सर सन्धान छोडेऊ बचन मो सुनि आम ॥ पांडुसुत तब धनुष लीन्हौं जोरि खैचो बान। रहे लच्य चितौत ठाढे घरी द्वै परिमान ॥ द्रोण पांडव नन्दसौं तब कहो ऐसे बैन। लखत लच्छ द्रुमस्थ पच्छी कहो बलके ऐन ॥ कहो पांडव द्रोणहौं प्रभु लखत हैं हमताहि। घरी द्वै पर द्रोण तासो फेरि बोले चाहि ॥ * ॥ द्रोणउवाच ॥ * ॥ बृच्छपच्छी हमै भ्रातन सहित देखत भूप। कहो तिन तुम कहत तिनको देखि परत स्वरूप ॥ पूछि फिरि फिरि द्रोण तिनसौं कहे अप्रिय बैन। जाऊ तुममे लच्छ बेधन योग्यताई हैन ॥ धृतराष्ट्र के दुर्योधनादिक पुत्र सकल बोलाय। बूझि ऐसैं बिदा कीन्हे अरुचि बचन सुनाय ॥ भीम आदिक और जे हैं शिष्य अति बलवान। बूझि ऐसैं बिदा कीन्हो द्रोण करि अपमान ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ द्रोण ऐसैं पार्थसों तब कहो हँसिकै बैन। करऊ तुम यह लच्छ बेधन महाबलके ऐन ॥ रहऊ मेरे बाक्यके समकाल शर सन्धानि। सुनऊ पारथ द्वै घरी लौं समर कार्म्मूक तानि ॥ सुनत मंडल कार धनु करि सव्य साची बीर। लखत ठाढे लच्छ पच्छी ध्यान धारे धीर ॥ द्वै घरीपर द्रोण पूछो पार्थ सो इमि बैन। लच्छ देखत मोहि देखत और कौं मति ऐन ॥

लखत हौ मै लक्ष पक्षी वृक्ष तुमहि न बीर । द्रोण होय प्रसन्न घटिका दोयलौं धरि धीर ॥ आ०प० द्रोण अर्जुनसों कहो फिरि लखतहौ तुम जौंन । भारतबंशावतंस मोसों सत्य कहिए तौन ॥ कहो पारथ लक्षकोहौं शीष देखत एक । कहो द्रोण सु तजहु सायक करहु बिलंब न नेक । सुनतहीं गुरु बचन पारथ छोडि दीन्हो बान ॥ लक्षको शिरकाटि छिति पर दयो डारि सुजान ॥ हर्षभरि तब द्रोण लीन्हौ पार्थकों हिय लाय । द्रुपदकों सह बन्धु जीतो जानिकै सुख पाय ॥ एक दिन सह शिष्य गङ्गा न्हानगे भरि चाह । न्हातमे तँह द्रोण जङ्घा आय पकरो ग्राह ॥ छुटनकी सामथ है पर कहो शिष्यन्ह पास । सुनत जलतें निकसिगे सब भरे मनमे त्रास ॥ सुनतही शरपाच अर्जुन जोरि धनुमे चंड । मारिकै जल मग्न कीन्हें ग्राहके षटखंड ॥ द्रोण अर्जुन रहे तेहो गए जहँ तहँ सब । भरे अतिआनन्दसों आचार्य प्रीति अखर्ब ॥ द्रोण अर्जुनकों महात्मा जानिकै बलधाम । कहो दुर्धर ब्रह्मशर यह अस्त्र लेहु ललाम ॥ प्रयोग सह संहार तुमकों देतहैं हम बीर । डारियो न मनुष्यपैं यह सुनहु कबहु धीर ॥ जगत करिहै भस्म पाए अल्प यह आधार । समन याके जगत मेहै और अस्त्र उदार ॥ करै बाधा शत्रुकोउ महारणमे वीर । छोडियो यह अस्त्र पावक पुञ्ज सो तब धीर ॥ कहि तथास्तु पवित्र व्है कै जोरि अञ्जलि आय । लियो सो परमास्त्र गुरुसों सहित बिधि सुखदाय ॥ धनुर्द्धर तो सदृश जगमे होइगो नहि और । पराभवकों लहैगो नहि सुनहु क्षत्रीमौर ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ धृतराष्टके सुत पाण्डुके सुतताम्ब द्रोण बिचारि । जायकै धृतराष्ट नृपलों कहो मति निर धारि ॥ बाल्हीक कृप अरु सोमदत्त सभीष्म बिदुर सुजान । रहे बैठे सभामे जहँ व्यासमुनि भगवान ॥ प्राप्तबिद्या रावरेके भए सब सुत भूप । लखहु तिनकी शस्त्रशिक्षा महाराज अनूप ॥ ते देखायो चहत तुमकों शस्त्रको अभ्यास । जौंन हमसों लियो करिकै बहुत भाँति प्रयास ॥ व्है प्रसन्न सुबहुत ऐसे कहन लागे भूप ॥ *॥ धृतराष्टउवाच ॥ *॥ भरद्वाज सुतनय कीन्हो महत कर्म्म अनूप । शुभयोसको अनुसान करि जेहि देश मे अभिराम । जौन चहत बिधान तहँ सो कहहु हे मतिधाम ॥ सचतु जनन्ह देखाइबेकों चहत हैं हम तौन । अस्त्र हेतु प्रयास करिकै सुतन लीन्हें जौन ॥ बिदुर जो गुरु कहै सो सब सौज तुम करि देहु । लगत सबसों अधिक मोकों परम प्रिय अति येहु ॥ सम अदृत्तणि गुल्म बिस्तर उच्च दक्षिण ओर । रङ्ग भूमि बनाय पूजनद्रव्य धरि तेहि ठौर ॥ इमि सुनि बुलाय समाज कों करवाय डिण्डिम राव । रङ्गभूमि बिशाल कीन्ही बिदुर प्रज्ञ सचाव ॥ भूपके तँह बैठबेके जोग्य बिरचो धाम । धरे नाना भाँतिके तहँ शस्त्र अति अभिराम ॥ तिय जननके बैठिवेके जोग्य कीन्हें भौन । मञ्च ऊचे जान पदजन बैठिवेकों तौन ॥ बेहि द्योस भूपति सहित भीषम सचिव लीन्हें सङ्ग । कृपाचारय सहित आए रची जँह छिति रङ्ग ॥ सहित मुक्ताजाल मणिगण कनक रचित अनूप । महत प्रेक्षागारमे तँह जाय बैठे भूप ॥ गन्धारजा

आ॰प॰ सह प्रथाआई राजवनितन सङ्ग । जाय बैठी तँहा जँह ते परत देखो रङ्ग ॥ ब्राह्मणादिक बर्ण चारो पौरजन सविलास । कुरु पाण्डवनको चहत देखो महा शस्त्राभ्यास ॥ बजे वाद्य अनेक विधि धुनि करत मनु जलदान । कौतूहलीजन शङ्ख सोहत रङ्ग सिन्धु समान ॥ स्वेतपट उपवीत तनुरुह स्वेत पहिरे माल । पुत्रसह तँह द्रोण आए अस्त्र सिन्धु बिशाल ॥ चैत्र पूजन कियो बिधि बत द्रोण धारकधर्म्म । पाय पूजामंत्र मङ्गल पढे बिप्रन्ह पर्म्म ॥ लएँ नाना शस्त्र आए भृत्यवर्ग उदार ॥ पहिरिकै सन्नाह ठाढे भए राज्य कुमार ॥ धरे धनुष तुणीर पैठे रंगमे अभिराम। और अनु क्रमतैं युधिष्ठिर भए आगें आन ॥ करन लागे अस्त्रबिद्या धरे अद्भुत कर्म्म । कुवर नृपधृतराष्ट्रके सब शस्त्र शीचित पर्म्म ॥ चहूँदिशि शरचले कोऊ लेत शीस नवाय । कोऊ निर्भय लखत बाण बलीको हरषाय ॥नाम अङ्कित शरण सौं ते लगे बेधन लक्षहस्त लाघव करत नाना बाजिसादी दक्ष॥ लगे तिनहि सराहिवे जनवृन्द अद्भुत जानि। भो कोलाहल शब्द तहँा सुनत अति सुखदा नि ॥ चल लक्षबेधन करय नाना भाँति रथचढि बीर। गज अश्व पैं चढि शस्त्र डारत भाँति भाँ।तिन धीर ।।खड्ग चर्म्म सु धरे कोऊ भूमिपैं बलवान।शस्त्र शिक्षा करन लागे धरे बिबिधि बिधान ॥ सु भीमसेन सु जोधनो लै गदा अति बलवान । रङ्ग भूपर गए दोऊ शैल शृङ्ग समान ॥लगें गर्जन बीर दोऊ महाप्रबलउदार।बांधि सव्यासव्यमंडल लगे करण प्रहार॥ धृतराष्ट्रसो सब बिदुर बिधिवत कहत सबको कर्म्म। सौबली सौं कहति कुन्ती देखि सो कृतपर्म्म॥ वैशम्पायनउवाच॥ कुरुराजके अरु भीमके हैं पक्षके जन जौन। खेदकरत सराहि बोलत हर्ष बिस्मय तौन॥ करण जनघन शोर लागे मचेरोर अपार। क्रोध करि करि गदाको दोऊ करत घोर प्रहार॥ क्षुब्ध अर्णव सदृश लखि कै रङ्गभूमि महान। पुत्रसौं तब द्रोण ऐसैं कहो अति मतिमान॥ द्रोणउवाच॥जायकै तुम करऊ वारण दोऊअति बरबीर। होय जाते रङ्गमे नहि भङ्गभाव गँभीर॥वैशम्पायनउवाच॥दोऊ उद्दित गदा कीन्हे क्रोधकौं अति धारि। मध्यमे तँह जाय गुरुसुत दियो तिनहि निवारि॥रङ्ग अंगण माह आए द्रोणबोले बैंन। कहऊ बाद्य निवृत्ति करिवैं हे विदुर मतिऐन॥ पुत्रतैं अति मोहि प्रियतर शस्त्रबेत्ता जान। बिष्णुके सम बीर अर्जुन कौं लखऊ तुम तौन ॥ द्रोणके सुनि बचन ताके चरण चिन्ति सु धीर। पहिरि अंगुलि त्राण सिगरे भये ठाढो बीर॥ धरैं काञ्चन कवच अर्जन लए धनुष महान।इन्द्रधनु सह तडित मानो लसतहै जलदान ॥ फूलि सो तब उठो ताके उठत सिगरे रङ्ग। बाद्य नाना लगे बाजन शङ्खधुनि शुभ सङ्ग॥ इन्द्रको यह पुत्र कुन्तीतनय पाण्डव बीर। कहन ऐसे लगे सिगरे भरे मोद गँभीर।सुनत ऐसे बैंन कुन्ती भरी मोद उदार॥ बहन ताके उरजते तब लगी पयकी धार।धृतराष्ट्र ऐसो सुनत शब्द सु तुमुल अति गम्भीर॥ क्षुब्ध सिन्धु समानहै यह बिदुर को धुनि धीर॥ * ॥ बिदुर उवाच॥ * ॥ नृप परिक्षा हन फालन उठो बलको धाम। देखि ता कौं होतहै यह शब्द अति अभिराम ॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ * ॥ धन्य हम बिधि कृपा करि ए

दिए सुत बलवान। यथा अरणी ते विधा भ पुत्र अग्निसमान॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच॥ *॥ आ०प०
रङ्गजन तनु भरे आनद भए स्वस्थ गँभीर। लगे गुरु कहँ अस्त्र लाघव तब देखावन बीर॥ छोडि
कै आग्नेयास्त्र चहुँदिशि करी अग्नि महान। डारिकै वरुणास्त्र ताकोँ कियो शान्ति सुजान॥
वायव्य अस्त्र चलाय कीन्हो वायु अति बलवान। अस्त्रतजि पर्जन्य चहुँदिशि करे जलद
महान॥ छोडिकै भौमास्त्र कीन्हों भूमि माह प्रवेश। डारिकै गिरि अस्त्र अपनो धरो गिरिसम
वेश॥ छोडि अन्तर्धान अस्त्र सु भए अन्तर्ध्यान। क्षणकमे लघु क्षणकमे गुरु परे देखि सुजान॥
क्षणकमे रथ अग्र ऊपर क्षणकमे रथ बीच। उतरि रथते शस्त्रके प्रक्षेप करत निभीच॥ सुकुमार
सूक्ष्म कठार शरसा लक्ष्यभेदे बीर। भ्रमत लोह बराह छेदो मारि मुखमे तीर॥ पंच एक समान
फेरि न फिरन पायो तीन। गोविषाण सरज्जु घूमत कोश ताको जौँन॥ तेहिँ राह काढे भेदिकै
बर एक विंशत बान। यहि भांति लक्ष्य अनेकबिधि के करे वेध सुजान॥ बाँधिमखड्ग गदा शिक्षा
सो देखाई बीर। सस्त्र नाना भांति की करि क्रिया बिधिवत धीर॥ शस्त्र कर्म समाप्त कीन्हो पार्थ
यहि बिधि सर्व। भयो मन्दी भूत स्वजनन वाद्यको सु अखर्व॥ चण्ड धुनि भुजदण्ड की बर सबल
सूचक जौँन। सुनी वज्राघातसम सब द्वारतेँ अति तौँन॥ गिरे गिरि कै भूमि फाटी किधौ घन
घहरात। द्वारदिशि इमि कहत हेरत रङ्गके जन सात॥ पञ्च पाण्डव सहित शोभित भए द्रोण
अमन्द। यथा हस्त नक्षत्रके संगलसत राका चन्द॥ नृप सु योधन सहित भ्रातन्ह सङ्ग अश्वत्थाम।
उदितायुध इन्दमे इमि लसत अति अभिराम॥ दानवन को जीति कै सुरसङ्ग ज्यासुरनाथ।
लसत योँ धृतराष्ट्र नन्दन मध्य भ्रातन साथ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जन घन गे बिलगाय कर्ण महाबल पाय पथ। रङ्ग भूमि मे आय चकित चखन चाहत भयो॥
सहज कवच अभिराम लसत कर्ण कुण्डल परम। धरेँ धनुष बलधाम मनउ चरणचारी सु गिरि॥
सिंह सदृश बलवान भरो भास सम भानुके। कनकलता सममान महा दान गुण गण भरो॥
रङ्ग चहुँदिशि देखि नमस्कार कृप द्रोणकोँ। आदर सहित विशेखि कियो कर्ण बर धनुषधर॥
कोआयो यह बीर चाहि चकित सब व्है रहे। बोलो बचन गँभीर कर्ण महाबल दर्पसोँ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पार्थ कर्म तुम कीन्हो जौँन। तातेँ करत अधिक हम तौँन॥ सुनत बचन यह जनगण वृन्द।
खरे भए ते दरि नरिन्द॥ सुनत लहो दुर्योधन मोद। अर्जुन भरे लाज अरु क्रोध॥ पाय द्रोण
की आज्ञा तौँन। कियो कर्म अर्जुन किय जौँन॥ भाइन सह दुर्योधन बीर। यो कहि भरो अङ्ग
मह धीर॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ तो आगम भो अति सुभचार। मिले भाग्यवश मोहि
उदार॥ राज्य सहित सम्पति मो जौन। करउ यथेष्ट भोग तुम तौन॥ * ॥ कर्णउवाच॥ * ॥

तुम सहसख्य जौन यह भूप । सो सब कृत्य समान अनूप ॥ इन्द्व युद्ध पारथके साथ । चहत कियो हम हे कुरुनाथ ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ करि प्रिय भोग सकल मो साथ । धरऊ चरण दुसमनके माथ ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जानि निरादर अपनो बीर । अर्जुन बोले बचन गँभीर ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ बिना बोलाएँ आवत जौन । बिनु पूछँ बोलत है तौन ॥ इनको गमन लोक है यत्र । तुह्मे मारिहौं पठवत तत्र ॥ ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ सबकौं रङ्ग समान अशेष । यामे है तौ कहा विशेष ॥ वीर्य्य श्रेष्ठ राजा अभिराम । बल क्षत्रीको धर्म ललाम ॥ क्षेप बचन दुर्बल को काम । शरसौं कहऊ जौ हो बलधाम ॥ सौंहै गुरुके तेरो शीस । हरि हौ शर सौं दिखे बीस ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ गुरु की आज्ञा पाय ललाम । पार्थ उठे धरि धनु बलधाम ॥ भ्रातन सह दुर्योधन पास । भयो कर्ण ठाढो बलरास ॥ युद्ध हेत दोऊ बर बीर । भे सन्नद्ध उद्ध रण धीर ॥ तब घन आए मढे अकाश । सह विद्युत इन्द्रायुध पाश ॥ धरि अर्जुन पर प्रीति सदङ्ग । सुरपति आए देखन रङ्ग ॥ तब भास्कर आए घन पाश । घन गत कियो तिमिर को नाश ॥ अर्जुन घन छाया उप गूढ । लखेो जनन्ह सब समरारूढ ॥ परे भानु आतप शुचि बर्ण । देखि परे सबही कौं कर्ण ॥ जहँ धृतराष्ट्र तनय बल बीर । इस्थित कर्ण तहां रणधीर ॥ जहां भीष्म क्रप गुरुबर द्रोण । तहां रहे पारथ बल भौन ॥ भयो द्विधा तब रङ्ग स्वरूप । भई भिन्न रानी सब भूप ॥ भई मोह बश प्रथा महान । जानि पुत्र दोनो सुखदान ॥ आश्वासन कुन्ती को आय । कियो बिदुर चन्दन छिरकाय ॥ पाय चेत लखि पुत्र बिरोध । कुन्ती लहति न मनमे बोध ॥ उद्दित चाँप दुहुनको देखि । बोले क्रप अतिमति अवरेखि ॥ कुन्ती पुत्र पार्थ कुरुबंश । पाण्डु तनय नृप सुकुल प्रसंश ॥ माता पिता तुम्हारे जौन । कर्ण स्वबंश कहऊ तुम तौन ॥ तब अर्जुन लहि तुम्हे समान । करै न करै युद्ध बलवान ॥ * ॥ वैशंपायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि कै गो कर्ण लजाय । कहो न कछु रहि गयो चुपाय ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ आचार्य सुनऊ यह शास्त्र प्रमान । राज जोनिहै त्रिबिधि समान ॥ सूर कुलीन सु सेना धीश । इन्हे कहत क्षत्री बुध ईश ॥ जो अराज अर्जुन निरधारि । लरत न इनसौं असम बिचारि ॥ तो हौं करत अङ्गको भूप । करि अभिषेक कर्ण अनुरूप ॥ दुर्योधन करि कै अभिषेक । राज चिन्ह दीन्हे सबिबेक ॥ चामर छत्र सहित अभिराम । शोभित भयो कर्ण बलधाम ॥ राज्य प्रदान सदृश तुम जौन । देउँ भूपसो कहिए तौन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ अत्यन्तसख्य तुमसों हम बीर । चाहत कहो सुयोधन धीर ॥ कहो तथास्तु कर्ण सुनि भूप । मिले लाय हियसौं सुख रूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ शिथिल सखेद कँपत सब गात । अधिरथ नाम कर्णको तात ॥ गयो रङ्गमे यष्टी हाथ । धरेो कर्ण लखि पदपर माथ ॥ तेहि गहि हिय लायो कहि पूत । भर मोद जलसा चष सूत ॥ अभिषेकार्द्र शीस करि घ्रान । दृगजलसौं सीचो सुखदान ॥

जानि सूतसुत वचन सहास । भीमसेन बोले तो पास ॥ तोहि धारिबे योग्य प्रतोद । आ०प० कुलहि देखु का भयो समोद ॥ तो बध उचित न है रणमाह । सूत पुत्र कहँ कुरुकुलनाह ॥ अङ्ग राज्य नहि तोहि समान । पुरोडास कऊँ भच्छत स्वान ॥ सुनो कर्ण करि कोप महान । लखो गगण दिशि करि मुख भान ॥ उठो सुयोधन सुनि व्है क्रुद्ध । आट विपिनि तें ज्यों हरि उद्ध ॥ भीमसेनसों ऐसे बैंन । कहन लगे राते करि नैंन॥ तुम्है योग्य ए वचन न भीम। छत्री ज्येष्ट होत बल सीम ॥छत्री नदी सु प्रभवस्थान । नही देखि वो योग्य सुजान ॥ सलिलोद्भव है पावक जौन। सकल जगतमे व्यापक तौन ॥ दधिच अस्थि भव वज्र महान। हने दनुज जेहि अति बलवान ॥ शर सम्भव सब कहत कुमार । जाको अतुल प्रभाव उदार ॥ छत्री भए जे ब्राह्मण रूप। कौशिकादि तप तेज अनूप ॥ कलसोद्भव आचारय द्रोण। अस्त्र शस्त्रवेत्ता बर जौन ॥ गौतम शरसम्भव कृप बीर। अस्त्र शस्त्रवेत्ता रणधीर ॥ जन्म तुम्हारो जैसे जौन। सुनऊ भीम हम जानत तौन ॥ कुण्डल कवच सहित बलधाम। रविके सदृश सूत सुत आम ॥ जनति मृगी नहि व्याघ्र महान। जानऊ कर्ण तथा बलवान ॥ पृथ्वी राज्य योग्य बरबीर। अङ्गराज्य है कितिक गँभीर ॥ अनेक बाऊबल सह हम जौन । सम न तास भुजबलकहँ तौन ॥ रथ चढि धनु खैचो बरबीर। सुनि भो हाहाकार गँभीर ॥ साधुवाद धुनि सहित विशेश। गए अस्तकों तबहि दिनेश ॥ दुर्योधन गहि करसों कर्ण।चले धामकहँ प्रमुदित वर्ण॥ बरी मसाल विशाल ललाम।चले रङ्ग तजि कै निजधाम॥ पांडव भीष्म द्रोण कृपबीर । गए स्वधाम सकल रणधीर ॥ प्रथा दिव्य लच्छण सब देखि । पूर्व पुत्र मनमाहँ विशेखि ॥ गुप्तप्रीति मनमे अभिराम । धरैं कर्ण पर रहति ललाम ॥ लहि दुर्योधन कर्ण सप्रीति । डारि दई अर्जुन कृतभीति ॥ कर्णबीर कहि नाना बैन । दुर्योधन कहँ कियो सचैन ॥ कियो युधिष्ठिर यह अनुमान। कर्ण सदृश नहि धनुधर आन ॥ ***** स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि शस्त्रदर्शनोनामाष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ *********************

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भे कृतास्त्र कुरुपांडुसुत देखि द्रोण मतिधाम।दियो चहत गुरु दच्छिणा लखत काल अभिराम ॥ तब सब शिष्य बोलाय कै कुरुपाण्डव बरबीर । देऊ हमै गुरुदच्छिणा कहो द्रोण रणधीर ॥ द्रुपदराज पांचालको पकरि समरमे लेऊ । ताहि हमै गुरुदच्छिणामे तुमसब मिलिकै देऊ ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सुनत गुरुके बचन रथ चढि चले सिगरे बीर । सहित द्रोणाचार्य्य कौरव परम पांडव धीर ॥

तुम सहसख्य जौन यह भूप। सो सब कृत्य समान अनूप॥ इन्द्र युद्ध पारथके साथ। चहत कियो हम हे कुरुनाथ॥ *॥ दुर्योधनउवाच॥ *॥ करि प्रिय भोग सकल मो साथ। धरऊ चरण दुसमनके माथ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच॥ *॥ जानि निरादर अपनो बीर। अर्जुन बोले बचन गँभीर॥ *॥ अर्जुनउवाच॥ *॥ बिना बोलाएँ आवत जौन। बिनु पूछेँ बोलत है तौन॥ इनको गमन लोक है यत्र। तुम्है मारिहौं पठवत तत्र॥ ॥ *॥ कर्णउवाच॥ सबकौ रङ्ग समान अशेष। यामे है तोकहा विशेष॥ बीर्य श्रेष्ठ राजा अभिराम। बल क्षत्रीको धर्म ललाम॥ क्षेप बचन दुर्बल को काम। शरसौं कहऊ जौ हो बलधाम॥ सौंहे गुरुके तेरो शीस। हरि हौ शर सौं लिखे बीस॥ *॥ वैशम्पायनउवाच॥ *॥ गुरु की आज्ञा पाय ललाम। पार्थ उठे धरि धनु बलधाम॥ भ्रातन सह दुर्योधन पास। भयो कर्ण ठाढो बलरास॥ युद्ध हेत दोऊ बर बीर। भे सन्नद्ध उद्ध रण धीर॥ तब घन आए मढे अकाश। सह बिद्युत इन्द्रायुध पाश॥ धरि अर्जुन पर प्रीति सदङ्ग। सुरपति आए देखन रङ्ग॥ तब भास्कर आए घन पाश। घन गत कियो तिमिर को नाश॥ अर्जुन घन छाया उप गूढ। लखे जनन्ह सब समरारूढ॥ परे भानु आतप शुचि बर्ण। देखि परे सबही कौ कर्ण॥ जहँ धृतराष्ट्र तनय बल बीर। इस्थित कर्ण तहां रणधीर॥ जहां भीष्म कृप गुरुबर द्रोण। तहां रहे पारथ बल भौन॥ भयो द्विधा तब रङ्ग स्वरूप। भई भिन्न रानी सब भूप॥ भई मोह बश शथा महान। जानि पुत्र दोनो सुखदान॥ आश्वासन कुन्ती को आय। कियो बिदुर चन्दन छिरकाय॥ पाय चेत लखि पुत्र बिरोध। कुन्ती लहति न मनमे बोध॥ उद्दित चाँप दुहुनको देखि। बोले कृप अतिमति अवरेखि॥ कुन्ती पुत्र पार्थ कुरुबंश। पाण्डु तनय नृप सुकुल प्रसंश॥ माता पिता तुम्हारे जौन। कर्ण स्वबंश कहऊ तुम तौन॥ तब अर्जुन लहि तुम्है समान। करै न करै युद्ध बलवान॥ *॥ वैशंपायनउवाच॥ *॥ यह सुनि कै गो कर्ण लजाय। कहो न कछु रहि गयो चुपाय॥ *॥ दुर्योधनउवाच॥ *॥ आचार्य सुनऊ यह शास्त्र प्रमान। राज जोनिहै त्रिबिधि समान॥ सूर कुलीन सु सेना धीश। इन्है कहत क्षत्री बुध ईश॥ जौ अराज अर्जुन निरधारि। लरत न इनसौं असम बिचारि॥ तौ हौं करत अङ्गको भूप। करि अभिषेक कर्ण अनुरूप॥ दुर्योधन करि कै अभिषेक। राज चिन्ह दीन्हे सबिबेक॥ चामर छत्र सहित अभिराम। शोभित भयो कर्ण बलधाम॥ राज्य प्रदान सदृश तुम जौन। देउँ भूपसो कहिए तौन॥ *॥ दुर्योधनउवाच॥ *॥ अत्यन्तसख्य तुमसौं हम बीर। चाहत कहो सुयोधन धीर॥ कहो तथास्तु कर्ण सुनि भूप। मिले लाय हियसौं सुख रूप॥ *॥ वैशम्पायनउवाच॥ *॥ शिथिल सखेद कँपत सब गात। अधिरथ नाम कर्णको तात॥ गयो रङ्गमे यष्टी हाथ। धरो कर्ण लखि पदपर माथ॥ तेहि गहि हिय लायो कहि पूत। भर मोद जलसा चष सूत॥ अभिषेकाद्र शीस करि घ्रान। दृगजलसौं सींचो सुखदान॥

जानि सूतसुत बचन सहास । भीमसेन बोले तो पास ॥ तोहि धारिवे योग्य प्रतोद । आ०प०
कुलहि देखु का भयो समोद ॥ तो बध उचित न है रणमाह । सूत पुत्र कहँ कुरुकुलनाह ॥
अङ्ग राज्य नहि तोहि समान । पुरोडास कऊँ भच्चत श्वान ॥ सुनो कर्ण करि कोप महान । लखो
गगण दिशि करि मुख भान ॥ उठो सुयोधन सुनि ह्वै क्रुद्ध । भाट विपिनि तेँ ज्यों हरि उद्ध ॥
भीमसेनसों असे बैन । कहन लगो राते करि नैंन॥ तुम्है योग्य ए बचन न भीम। च्चत्री ज्येष्ठ होत
बल सीम ॥च्चत्री नदी सु प्रभवस्थान । नही देखि वो योग्य सुजान ॥ सलिलोद्भव है पावक जोन।
सकल जगतमे व्यापक तोन ॥ दधिच अस्थि भव बज्र महान । हने दनुज जेहि अति बलवान ॥
शर सम्भव सब कहत कुमार । जाको अतुल प्रभाव उदार ॥ च्चत्री भए जे ब्राह्मण रूप । कौशि
कादि तप तेज अनूप ॥ कलसोद्भव आचारय द्रोण । अस्त्र शस्त्रबेत्ता बर जौन ॥ गौतम शरसम्भव
कृप बीर । अस्त्र शस्त्रबेत्ता रणधीर ॥ जन्म तुम्हारो जैसे जोन । सुनऊ भीम हम जानत तोन ॥
कुण्डल कवच सहित बलधाम । रविके सदृश सूत सुत आम ॥ जनति मृगी नहि व्याघ्र महान।
जानऊ कर्ण तथा बलवान ॥ पृथ्वी राज्य योग्य बरबीर । अङ्गराज्य है कितिक गँभीर ॥ अनेक
बाऊबल सह हम जोन । सम न तास भुजबलकहँ तोन ॥ रथ चढि धनु खैचो बरबीर । सुनि भो
हाहाकार गँभीर ॥ साधुवाद धुनि सहित विशेश । गए अस्तकों तबहि दिनेश ॥ दुर्योधन गहि
करसों कर्ण।चले धामकहँ प्रमुदित वर्ण॥ बरी मसाल विशाल ललाम।चले रङ्ग तजि कै निजधाम॥
पांडव भीष्म द्रोण कृपबीर । गए स्वधाम सकल रणधीर ॥ प्रथा दिव्य लच्चण सब देखि । पूर्ब
पुत्र मनमाहँ विशेखि ॥ गुप्तप्रीति मनमे अभिराम । धरैं कर्ण पर रहति ललाम ॥ लहि दुर्योधन
कर्ण सप्रीति । डारि दई अर्जुन कृतभीति ॥ कर्णबीर कहि नाना बैन । दुर्योधन कहँ कियो
सचैन ॥ कियो युधिष्ठिर यह अनुमान । कर्ण सदृश नहि धनुधर आन ॥ *****
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्बणि शस्त्रदर्शनोना
माष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ***************

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भे कृतास्त्र कुरुपांडुसुत देखि द्रोण मतिधाम।दियो चहत गुरु दच्चिणा लखत काल अभिराम ॥
तब सब शिष्य बोलाय कै कुरुपाण्डव बरबीर । देऊ हमैं गुरुदच्चिणा कहो द्रोण रणधीर ॥
द्रुपदराज पांचालको पकरि समरमे लेऊ । ताहि हमै गुरुदच्चिणामे तुमसब मिलिके देऊ ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सुनत गुरुके बचन रथ चढि चले सिगरे वीर । सहित द्रोणाचार्य्य कौरब परम पांडव धीर ॥

१०५० गए ते पंचालकों सह नगर मर्दत देश। महाबल सह द्रुपद पुरमें कियो जाय प्रवेश॥ कर्ण दुर्यो धन युयुत्सु विकर्ण अतिबल वीर। जलसिन्धु दुःशासन सुलोचन युद्धमें अतिधीर॥ और बहुत कुमार नानाभाँति कारक युद्ध। पूर्व समर प्रवेश कों सब वचन बोलत उद्ध॥ रथी शादी वीर ते पुर पैठि के बलवान।राज पथमें गए लीन्हे सङ्ग सैन महान॥द्रुपद नृप सुधि पाय सेना देखि पहिरि सन्नाह। कढ़ेभ्रातन सङ्ग रथचढ़ि भरो युद्ध उछाह॥ करत ते शरवृष्टि गर्जत घोर शब्द महान। स्वच्छ रथ चढ़ि द्रुपद आयो निसित बर्षत बान॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ द्रोणसों करि मंत्र अर्जुन कहे ऐसे बैन। द्रुपद नृपके जीतिवेकी शक्य इनमें है न॥ करि पराक्रम चुकहि कौरव तज हि दर्प महान। युद्धमें तब द्रुपदकों गहि लेउँ गो बलवान॥ अर्धक्रोश सुनगरतें यह मंत्र दृढ़ करि घोर। रहे ठाढ़े पार्थ भ्रातन सहित गुरुढिग बीर॥ लखे धावत कौरवनको द्रुपद करि कै क्रोध। महासेना सग लीन्हे आइ कीन्हो रोध॥ चढ़ो रथपै शीघ्रगामी द्रुपद धावत एक। त्रास वर्सतें कौरवन तेहि लियो मानि अनेक॥ द्रुपदके अति तीक्ष्ण शरवर चले चारो ओर। बजे शङ्ख मृदङ्ग भेरी द्रुपद पुरमें घोर॥ करण तब पांचाल लागे सिंहनाद महान। धनुज्यातल शब्द न भलों भरत भो अतिमान॥ दुर्योधनो सह बन्धु लागे बाण बर्षण बीर। बाण बिद्धन द्रुपद मानत महान दुर्जय धीर॥ व्यथित कीन्ही महासेना कौरवनकी सर्व।सह बन्धु दुर्योधन सकर्ण विकर्ण बीर अखर्व॥ और भूपति तनय सिगरे रहे जे बल भूरि। चक्रलौं संचार करि दिय द्रुपद बाणन्ह पूरि॥निकसि पुरजन लए यष्टी मुसल परिघ उदार। कौरवनकी चमू चक्र दिशि लग करण घोर प्रहार॥भजे कौरव देखिअतिसे तुमुलरण अतिघोर।करत हाहाकार सिगरे गए पाण्डव ओर॥ आर्त्त तिनको शब्द सुनिके हर्षि पांडव बीर। बन्दि गुरुके चरण रथ पर चढ़े रणरस धीर॥ धर्मसों इमि कहो अर्जुन करहु तुम मति युद्ध। करे माद्रीतनय रक्षक चक्रके अति उद्ध॥ करो सेनाअग्र गामी भीमकों बलवान। शत्रु सेना शब्द सुनि कै भरे क्रोध महान॥ गए कुन्तीपुत्र आतुर हाँकि कै रथ बीर।पांचाल सेना सिन्धु सी भइ भरीशब्द गँभीर॥गदा धरिकै भीमसेना मध्य पैठे जाय। जहाँ गज समुदाय जंता चढ़े बर बल पाय॥ गदा गहि मदमत्त बारण लगे मारण बीर। कुम्भ मस्तक भिन्न कुञ्जर गिरत धरत न धीर॥ लगे बज्र निपात जैसें गिरत गिरवर सान।गदा की लहि घात ऐसे गिरत द्विरद महान॥ अश्व रथ सपदाति गण घन लगे मरदन भीम। चलित कीन्ही द्रुपद सेना बाहुबल बर सीम॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ द्रोणको प्रिय करण हेतु बिचारि पार्थ महान। द्रुपदपै रथ हाँकि आए निसित छाडत बान॥ मारि कै चतुरङ्गिणी तब दई सेना डारि। यथा दावादहन क्षणमें देत बनघन जारि॥ पांचाल सृंजय क्रोध करि कै धनुष धरि अतिकाय। पार्थको रथ शरणसों बहु लियो चहुंदिशि छाय॥ सिंहनाद उदार करि पांचाल लरत समान। युद्ध भो अति घोर अद्भुत निसित बर्षत बान॥ सिंहनाद न सहो

अर्जुन कियो क्रोध अखर्ब। डारि कै शर जालमे ते किए मोहित सर्ब ॥ लेत छोडत बाणके नहि परत अन्तर देखि । पार्थके धनु ते कढै मनु बिशिख पाँति विशेखि ॥ सत्यजित सह द्रुपद धायो भरो क्रोध महान। छाय लीन्हो पार्थको रथ वर्षि कै बर बान ॥ हलहला अति शब्द बाढो द्रुपद सेना बीच। गहो चाहत सिंह ज्यौं गजनाथ मत्त निभीच ॥ देखि अर्जुन चलो आवत सत्यजित बर बीर। द्रुपद रक्षाहेत धायो पार्थ पै रण धीर ॥ द्रुपद अर्जुन युद्ध दुमद बीर बिरद अखर्ब। द्वन्द्व बलि सौं लगे दोऊ मथन सेना सर्ब ॥ सत्य जितके पार्थ मारे मर्ममे दश मान। सत्यजित शत शर चलाए पार्थ पै अतिमान ॥ छन्न शरसो हस्त लाघव कियो फाल्गुण बीर । काटि दीन्हो सत्यजितके धनुषको गुणधीर ॥ सत्यजितसो डारिकै धनु चाप लीन्हो आन। हत हय रथ सहित पारथकौं हने बज्र बान ॥ सत्यजितके लगत शर करि कोप पार्थ प्रचंड । नाश तास बिचारि खैंचो जोरि शर कोदंड ॥ अश्व ध्वज धनु सूत बाणन्ह मारि डारे बीर । लेत फिरि फिरि चाप तेऊ काटि डारत धीर ॥ बिरथ ह्वैकै सत्यजित गो छोडिकै संग्राम। द्रुपद भ्राता भजो लखि करि क्रोध अति बलधाम ॥ पार्थपै अतिवेग लागो निसित बर्षण बान । तुमुल कीन्हो युद्ध अर्जुन सौं महा अतिमान ॥ पञ्चशरसौं पार्थ धनु ध्वज अश्व सूत सँघारि । कियो अतिशय हस्त लाघव दियो छितिपर डारि ॥ धनुश शर तजि बीर अर्जुन खड्ग धरि उदंड। द्रुपदके रथपै गयो चढि नाद करि अति चंड ॥ लियो गहि पाचांल पतिकौं बामकरसौं बीर । देखि भागी द्रुपद नृपकी सकल सैन अधीर ॥ देखाइवैं सबसैन्यकौं अति बाहुबल अभिराम। सिंहनाद महान कीन्हौं पार्थ अतिबलधाम ॥ चले लै पाञ्चाल नृपकौं देखि सकल कुमार । लगे लूटन द्रुपद पुर तजि बंश बिरद उदार ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ द्रुपद सम्बन्धी सुभ्रय नो भीम करहु सनेहु । तास सेना हनहु मति गुरुदक्षिणा चलि देहु ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ मानि बचन सु पार्थको तब तजि वृकोदर युद्ध। फिरे प्राय न होत रणमे बीररस बश उद्ध ॥ पार्थ गहि पाञ्चालकौं गुरु द्रोणके ढिग आय । सौंपि दीन्हो दक्षिणा जो कही हो सुखदाय ॥ तथा बिधि लखि द्रुपदकौं इमि द्रोण बोले बैन । लहो अपने योग्य भूपति पूर्ब सख्य सचैन ॥ हास्य करि इमि द्रोण बोले फेरि भूपति पास । क्षमाभाजन बिप्र हम सो प्राण को नहि त्रास ॥ बाल्यपनमे कियो क्रीडा साथ हम तुम जौन। फेरि बाढति प्रीति मनमे समुझि कै सब तौन ॥ योग्य तुम सो सख्य करिवैं भयो चाहत भूप। देहु आधो राज्य हमकौं कीजि ज्यै अनुरूप ॥ होत है न अराज राजहि सख्य सुनहु ललाम। कियो यात राज्यकौं हो यत सह बलधाम ॥ करहु दक्षिण कूलको तुम राज्य सुरशरि वार । देहु उत्तर कूलको जो देश हम हि उदार ॥ * ॥ द्रुपदउवाच ॥ * ॥ भूलि दो भुलाय ऐसो महत जन की रीति। कियो तुम सौं चहत हैं हम द्रोण अव्यय प्रीति ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सत्कार करि

आ०प०

आ॰प॰ कै द्रुपदकौं तब छोडि दीन्हो द्रोण । द्रुपद आधो बांटि दीन्हो राज्य अपनो जौन ॥ माकन्दि नामा पुरी गङ्गातीर अति अभिराम । दीनमन ह्वै बसे तेहां द्रुपद बिगलित काम ॥ नदी चर्मन्वतीलौं सुर शरित दक्षिण भाग । देश शासन करत लहि पाञ्चाल बिभव बिराग ॥ क्षात्र बलते नहीं देखत द्रोण परिभव भूप । हीन मानत आपु कौं द्विज उग्र बलतें भूप ॥ पुत्र प्राप्ति बिचारि क्षितिपर फिरत रहत नरेश । द्रोण बसि अहिछत्र पुरमे करत पालन देश ॥ *

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जब गयो सम्बत एक । धृतराष्ट्र सहित बिबेक ॥ युधिष्ठिर हि युवराज । तब कियो सहित समाज ॥ अति जानि कै गुण धाम । मन धर्म्म रत अभिराम ॥ थिर धीर सहन सुभाव । जन पालिवेमे चाव ॥ कछु करत क्रूर न कर्म्म । श्रुति शास्त्रवेत्ता पर्म ॥ कछु दिवसमे मति स्वच्छ । भो पितातें गुण बृद्ध ॥ असि गदा रथ धनु युद्ध । बलिरामतें लहि उद्ध ॥ लहि शस्त्र शिक्षा सर्व । भो भीम प्रबल अखर्व ॥ पढि धनुर्वेद समस्त । शर त्यागमे लघु हस्त ॥ सब भाँति बेधत लक्ष । दृढ मुष्टिमे अति दक्ष ॥ है धनुर्धरमह गण्य । नहि पार्थ सम कोउ अन्य ॥ इमि द्रोण बोले बैन । लखि शिष्यसम बल ऐन ॥ इमि द्रोण अर्जुन पास । बर कहे बचन प्रकाश ॥ लहि सभामे बर बीर । जेंहि सकल कौरव धीर ॥ सु अगस्त्य शिष्य ललाम । धनुवेदमे अभिराम ॥ मुनि अग्नि बेश उदारमम गुरू सुतप अपार ॥ दिय कृपा करि जो मोहि ॥ सो देत पारथ तोहि ॥ बरपात्रतें निधि काढि । लहि धरी भाजन बाढि ॥ बर ब्रह्मशिर है नाम । अति अस्त्र तेजस धाम ॥ सो देत मोसों बैन । यह कहो करुणा ऐन ॥ यहि अस्त्र को न प्रयोग । है मनुज सहिवे योग ॥ सो पाय अल्प अधार । यह दहै गो संसार ॥ यह देत तुमको जौन । सो और योग्य रहो न ॥ जो महा मुनिको बैन । सो पालियो बल ऐन ॥ गुरु दक्षिणा मोहि देह । यह पार्थ सहित सनेह ॥ जब करण चाहो युद्ध । तब लेउ मोसों उद्ध ॥ यह पार्थ करि स्वीकार । गुरु चरण बन्दि उदार ॥ तब चले उत्तर ओर । यह भयो क्षिति परसोर ॥ नहि सदृश अर्जुन बीर । है धरा धनुधर धीर ॥ असि गदा रथ धनु युद्ध । भे पार्थ पारग उद्ध ॥ सहदेव नीति बिधान । गुरु पास पाय महान ॥ धरि भक्ति प्रीति सदङ्ग । नितिरहत भ्रातन सङ्ग ॥ गुरुते सुशिक्षा पाय । प्रिय बन्धु नकुल सचाय ॥ अति चित्र योधी बीर । भो महारथ रणधीर ॥ त्रयवर्ष कारी यज्ञ । सौवीर भूप रणज्ञ ॥ चढि पार्थ मारो ताहि । अति युद्ध दुर्मद चाहि ॥ नहि पांडु जीतो जौन । जवनाधिपति बल भौन ॥ किय ताहि अर्जुन बश्य । हो बीर धीर प्रसभ्य ॥ सौवीर बित्तल भूप । सो हनो पार्थ अनूप ॥ प्रिय युद्ध नृप सौवीर । सुमित्र नामक धीर ॥ बर शरण मारो ताहि । बीभत्सु जय यश चाहि ॥ लै भीमसेन सहाय । मरुदेश पारथ जाय ॥ सब जीति तहके भूप । धन लियो अमित अनूप ॥ सो एकरथ बलवान । जिमि उदित ग्रीषम भान ॥ फिरि गए दक्षिण देश । तँह जीति सकल नरेश ॥ धन ओघ लैं अभिराम । गे पार्थ कुरुकुल धाम ॥ यहि भाँति पांडव बीर । परदेश जीति गँभीर ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तिन्है जानि अति वीर विचारि। महा धनुष धारी निरधारि ॥ पांडु सुतन मह दूषित भाव। धरि धृतराष्ट भए गत चाव॥ चिन्तापर नहि निद्रा लेत। दुष्ट विचारण लागे हेत॥*॥वैशम्पायन उवाच॥*॥राजनीतिवेत्ता मंत्रज्ञ। कनिक विप्र वोलवायो तज्ञ ॥*॥धृतराष्ट उवाच॥*॥कनिक कहहु तुम करि है तौन। राजनीतिके लायक जौन॥ *॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ वोलो कनिक तीव्र अति वैन। राज नीतिके विधिवत अैन ॥ हमते सुनहु वचन यह भूप। राजनीति विधि विहित अनूप ॥ उद्दित दंड रहे नृप तौन। प्रगट देखावै पौरुष जौन॥भेद रहित राखै निज अङ्ग॥ लखै और को भेद प्रसंग॥ परको देखै भेद विरोध॥ तेहि पथ पैठै करिकै सोध। उद्दित दंड रहै इमि भात। लखि जाकौ सब रहै डरात॥ सर्व कार्य्य साधक जो दंड। ताहि न भूलै भूप प्रचंड॥ पर नहि देखैं अपनो छिद्र। यों करि राखैं भूप विनिद्र॥ रहै कूर्म्मसम अङ्ग छपाय।जातें छिद्र न परै लखाय॥ करैं अपूरण कार्य नकोय। करै सोई जो पूरण होय॥ छोडि न देय शत्रुकहँ शेष। होय दुखद लहि समय विशेष॥ टूटि रहै कांटो गडि पाय। देइ दुःख लहि समय सहाय ॥ शत्रु होय अपकारक जौन। निश्चै मारि डारिये तौन॥ शत्रु युद्ध कारक बलवान।जो होय लहि विपति महान॥ जौं वह मिलै तो हनै नरेश। छोडिदए नहि कारण वेश ॥ निर्बल रिपु नहि निदरण योग। याय अग्निकण तृणसंयोग॥ दहत महावन घन अभिराम॥ देखि शत्रु अतिसै बलधाम॥ अन्ध बधिर सम रहैं सुजान। हनै समय पाएँ बलवान॥ लुब्धक मृतसम धारैं घात। मृगको करत समय लहि पात॥ करि सामादि उपाय सुजान। करि वश हनै शत्रु दुखदान॥ दया न करिए कबहूँ जोय। रिपु व्है दीन शरणगत होय॥ मरैं शत्रुके भयको नाश। रहे शत्रु है अवसि विनाश॥ दंड शत्रुकौं देइ महान। रिपुके निकट जात बलवान॥ तीनि तास पहिलैं हरि लेय॥ फेरि शत्रुको बध सु विधेय॥ होय दासइव रहि रिपुपाश। समय पायकै करै विनाश॥ प्रथम हरै ऐस्वर्य महान। रिपुके अङ्ग करै वसमान॥ सचिव अमात्य सहित सेनेश। करै शत्रुके स्ववश नरेश॥ सब चारितें लेइ मगाय। अैसे चारि करै सुखदाय॥ हनै प्रथम जो नरवर मूल। फेरि हनै शाखा प्रतिकूल॥ राष्ट्र दुर्ग सह कोश महान। पाँच करै बश प्रथम सुजान॥ फेरि तास मारण मत धारि। दण्डदावि रणमे अरि मारि॥ साम दाम बिधि भेद पसारि। मत्त पाय अरि बन्ध न डारि॥ गहै प्रयत्न फिरि हनै रिसाय। तांबूल पर्ण भोजनमे नाय॥ साधिभृत्य विषदेय दिवाय॥ सोवत जारै अग्नि लगाय॥ करि एकाग्रमन रचित होय। रहि अरिछिद्र विलोकै सोय॥ रहै शत्रु तें सभय सुजान॥ साधु वेश धारे मुनिमान॥ अरि जब करै विश्वास निहारि। तब वृकलौं तुर मारैडारि॥ नमितन डार करै फल लेय। अरिबध फल तामे चित देय॥ धरे कन्धपर शत्रु

आ०प० सराहि। घटला पटकै औसर चाहि ॥ छोड़े शत्रु न दुर्बल देखि। बिनय बचन कै कहैं बिशेखि॥ हनो शत्रु करि चारि उपाय। होत शत्रु छोड़े दुखदाय॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦

॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कैसैं चारि उपाय करि हनै शत्रु बलवान। बिधिवत सो कहिए कणिक यथातथ्य मतिमान॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ कणिकउवाच ॥ * ॥ सुनऊ यह वृत्तान्त भूपति कहतहैं हम जौंन। नीति बेत्ता कर्म्म जम्बुक कियो बनमे जौंन॥ आखु जम्बुक व्याघ्र वृक अरु बधु पाँचो मित्र। लखो बनमे कियो जम्बुक कहत तीन चरित्र॥ तिन लखो बनसे मृगनको एकरहो जूथप जौंन। कियो ताके ग्रहणमे यह मंत्र मतिबर भौंन॥ * ॥ जम्बुकउवाच ॥ * ॥ व्याघ्र तुमतैं ग्रहणमे यह शक्यहै नहि औन॥ बेग याको महत अतिही युवा प्रबल सचैंन॥ व्याघ्र बऊ उद्योग कीन्हा सको हनि है तन। कहत यातैं सुनऊ मेरो मंत्रमय यहबैन॥ करे यह जब शैन मूषक चरण काटै तास। गहऊ तुम तब याहि मृगपति बिना पाय प्रयास॥ करहिं भोजन मास सबमिलि पाय अति अभिराम। सुनत जम्बुकबचन तेसब भए मुदित ललाम॥ मानि जम्बुक बचन मूषक चरण काटो तास। बेगते असमर्थ मृग पति कियो ताकोनाश॥ देखि मृगको मृतक जम्बुक कहो तिनसों बैन। आइए अस्नान करि हम करत रक्षित ऐन॥ नदीके अस्नानको ते गए सिगरे भूप। रहो जम्बुक तहाँ बैठो धरे चिन्तित रूप॥ स्नान करिकै प्रथम आयो व्याघ्र अति बलवान। लखो जम्बुक तहाँ बैठो भरो शोच महान॥*॥ व्याघ्रउवाच ॥*॥ कहा चिन्तित भए जम्बुक कहऊ बुद्धि उदार। मांस भोजन करऊ फिरि सब करहिं बिपिनि बिहार॥ * ॥ जम्बुकउवाच ॥ * ॥ महाबल मृगराज सुनिए कहो मूषक औन। लगो परम असह्य हमको बचन निन्दित तौंन॥ धिग्महा मृगराज बल मम हनित मृगपल खाय। शाइहैं अति तृप्ति पैारुषबिना बीर कहाय। तास सगरब बैन सुनि नहि रुचत भोजन मोहि। मोहि रुचत न आखु अति लघु नाय निन्दत तोहि॥ * ॥ व्याघ्रउवाच ॥ * ॥ कहे मूषक क्षुद्र ऐसैं बचन तो सुनि मित्र। तास दंशित मास यह तजि जातहैं अपबित्र॥ मारि नाना भांतिके मृग खात बनमे जाय। खाऊ तुमऊ लखऊ मेरो बाहुबल उत आय॥ बाघ्र यह कहि गयो तँहा गयो इक सुभुखान। कहो तासो व्याघ्र तुमपै करे क्रोध महान॥ भलो तुम्हरो होयगो नहि परत ऐसो जानि। सुनत सह परिवार भाज्ञो महाइक भयसानि॥ आखु आयो कहो जम्बुक देखिकै मतिऐन। मित्र आयो नकुल ऐसे गयो कहिकै बैन॥ रुचत नहि मृग मांस हमको करत गरदब नास। महा कोमल आखुको हों चहत खायो मास॥ सुनत भागो आखु भयबस पैठि गो बिलमाहं। यहि बीच आयो नकुल तासों कहो जम्बुक नाह॥ बिना कीन्हें युद्ध मोसों मांस भोजन है न। कहो बाऊ उठाय जम्बुकनकुलसों इमि बैन॥ नकुलउवाच॥ व्याघ्र इक मति

मान मूषक गए तुम सौं हारि । जात हम तुम वीरवर नहि लहैं गे निरधारि ॥ कणिकउवाच ॥ आ०प०
एहि भांति सबकौं बश्चिकै मतिमान जम्बुक धीर । एक व्हैकै करण लागो मांस भोजन वीर ॥
होय ऐसो सुमति भूपति लहै गो सुखतोन । करै भीति देखाय सबकौं भीरु भूपति जैान ॥ करै
बिनय देखाय बशमहँ सूर नृप वलमैान । तेजसौं सम न्यून कौं बसमे करै छितिरान ॥ लब्ध
अरिको देइ धन सह क्रोधको धरि श्रोज । यह कहो आगैं औार सुनिए भरतबंश सरोज ॥
सखा भ्राता पिता सुत गुरु मिलै अरिसैां जाय । अवसि ताको करै वध नहि तजै सन्मुख पाय ॥
सपथ धरि दै दान माया बिरचि बिषकौं देय । हनै अरि जेहि भांति पावै मंत्र यह दृढ लेय ॥
अभिमानमे रत गुरुऊ कार्य्या कार्य्य को न विचार । जो करै नहिं तो दण्ड ताहिऊ देय भूप
उदार ॥ शत्रु दुऊन समानमे उद्योग करि जय लेय । क्रुद्ध आपु अक्रुद्ध सो व्है बिहँसि उत्तर देय ॥
क्रोधहूम शत्रुको नहि करै निन्दा भूप । हनै जबलैां कहै तबलैां वचन प्रिय अनुरूप ॥ मारि
अरिका कृपाकरि फिरि करै शोच महान ॥ शांतके कहि बचन परको करैं बोध महान ॥ चलित पथ
लैं देय ताकौं दण्ड कर्म्म समान । घोरकरि अपराध को फिरि धर्मपथ जो लेत । ग्रसत सो अपराध
ताकौं राहु शशि सम नेत ॥ मारि अरिकौं युद्धमे फिरि देय धाम जराय । अधम नास्तिक चैारकौं
नहि अभय देय बुलाय ॥ देइ प्रत्युत्थान आसन औार धन अभिराम । हनै अरिकौं समय लहि करि
प्रथम विश्वस्त धाम ॥ विश्वासहूके नरनसैां नहि रहै कबहू निशङ्क । नहीं जास बिश्वास तासैां नित्य
शङ्का अङ्क ॥ बिश्वसिततैं जो होय भयसो करै मूल बिनाश । रहै शङ्कित ताहू सो है जास अति बिश्वास ॥
चारि लाधक जननकौं करि चारि जे बहु रङ्ग । स्वदेशमे परदेशमे ते पढै देय सुढङ्ग ॥ धरैं नाना
बेषकौं ते रहैं जँह जनजूह । चैाहटे बन बागमे करि कूपके ढिग ऊह ॥ देवतालय सुराग्रह सुवजा
रमे अभिराम । बिहारमे गिरि गहनमे जहँ जन समूह ललाम ॥ कहत बचन बिनीत धरैं हृदयमे
छुर रूप । हँसत बोलै कर्म्म जाके रैाद्रहँ अति भूप ॥ शांत पथ शुचि बिनय सबसैां करै दंड प्रणाम
अरिदेशमे एहिभांति राखै चारि मतिकेधाम ॥ सदा रहत प्रसन्न सबसैां निठुर कारज काल ।
सदा जयकौं लहत ऐसैं रहत जो भूपाल ॥ ज्यों धरैं फल पक्वकों रति छुएँ काचो होय । सो न
जीरण होय कबहूँ कहतहैं कबिलोय ॥ अर्थ धर्म्म सु काम साधन कौं भए फल पर्म्म । तीनिहू
सो तीन पीडा भए अतिशय कर्म्म ॥ धर्म्म अतिशय करैं पीडा करत अर्थ सुकाम । अर्थ कामहूकों
सो है दै व्यथाकारी नाम ॥ गर्ब नृपकौं जोग्य नहि नितिरहै शांत स्वरूप । मंत्र द्विजसों करै राखैं
अर्थ इच्छाभूप ॥ जैान तैान सुकर्म्म करिकै मृदुल दारुण सर्ब । दीनताकों दूरि करिकै व्है समर्थ
अखर्ब ॥ करण लागै बिहित सिगरे धर्म्मके तब कर्म्म । कष्टके बिनु लहैं लहत न भद्रकों नर
पर्म्म ॥ कष्टकों सहि जियत जो सो लहत मोद उदार । बुद्धिहारैं शान्ति कीजै पूर्बहत्त बिचार ॥
करि कूटआदर तोषिऐ दुरबुद्धि आवत जैान । तृप्तकीजै देइकै धन बिदुष जो मति भैान ॥ शत्रु

आ०प० सों करि सन्धि सोवत अभय माने जौंन। वृत्तपैं ज्यों सोयकै नर गिरें जागत तौन ॥ मंत्रकों करि गुप्त राखै सावधान नरेश। आकारकों अप्रगट राखैं राखि चार सुवेश ॥ अरि मर्म भेदे बिना कीन्हें बिना दारुण कर्म्म। मत्स्यघातीलों हनेबिनु लहत कछु न पर्म्म॥ खिन्न दुर्बल अन्न जल बिनु देखि वर बल बीर। हनै दै बिश्वासकों काहु करै बिलम्बन धीर॥जात दीन न दीनपैं कृतकार्य्य यहत न साथ। निःशेष कार्य्य न कीजिए कछु रखी अपने हाथ॥ जौंन संग्रह कीजिए सो राखिए करि यत्न॥ प्रथम करि उत्साह कीजै कार्य्य माह प्रयत्न॥ कियो चाहै सो न जानैं कोऊ बिनु प्रारम्भ। प्रथम कीजै यत्न बारण सभय हरि आरम्भ॥प्राप्त भयकों देखि ताकों हनै निर्भय होय। दण्डतें अरि हारि आवे ताहि राखत जोय॥ मृत्युको सो ग्रहण खचरि गर्भलों निरधारि। कार्य्य आगे होय गो सो प्रथम लेय बिचारि॥ बिन किए निश्चय बुद्धिसों नहि करे कार्य्य महान। उत्साह कीजै यत्नतें जो चहै श्रीसुखदान॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥*॥ चरणाकुलकछन्द ॥*॥

प्रथम देशअरु काल बिचारै। भाग्यसदृशतबकार्य निहारै॥ देश काल श्रेयस्के कारण। कहत तुम्हैं हो करि निरधारण॥अल्प जानिकै अरि जो छाडैं। तासु समान मूल दृढ माडैं॥ पावक कण ज्यों बनमह डारै। करैवृद्धि अति कानन जारै॥ लीजै आपु न अरिको दीजै। आशादेय ताहि थिर कीजै॥ दूरिकालको वादो राखै। आए समै बहानो भाखै॥ समय पायकै ताहि प्रहारै। अरिमर्दन नृप आनद भारै॥ पांडवादि गणिए अरि जिनकैां। भूपति करहु नीतिबश तिनकैां। भूपति राज्य न बूडै जैसैं। सावधान करु कारज तैसैं॥ भरे सकल कल्याण बिचारो। बचन हमारे हियमह धारो॥ रक्षण अपनो हियमे धारो। पाण्डुसुतनते भूप बिचारो॥ हैं बलवान करहु अब सोई। पश्चात्ताप न जाते होई॥ यह कहि कणिक स्वधाम सिधाए। नृप धृतराष्ट्र शोकसैां छाए॥ नीति परम यह जो चित धरिहै। भूपति अभयराज सो करिहै॥ *❦*❦*❦*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीबासि रघुनाथात्मजेन गोकुलनाथकबिना बिरचिते महाभारतदर्पणे आदिपर्व्वणि राजनीतिवर्णनोनाम एचलारिंशोध्यायः॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦

॥*॥ वैशम्पायनउवाच ॥*॥ दोहा ॥*॥

नृप दुर्योधन अरु शकुनि कर्ण दुशासन बीर। दुष्ट चतुष्टय मिलि कियो दुष्टमंत्र गम्भीर॥ आज्ञालहि धृतराष्ट्रकी रचो लाहको धाम। पाण्डुतनय कुन्ती सहित दहिबेकों अभिराम॥

॥*॥ जनमेजय उवाच ॥*॥

हे मुनि बिस्तरसह कहो जतुग्रह सुनियत जौंन। जरो तान पाण्डव गए सुरसरितरि बिधि कौन॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ आ०प०

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनऊ भूप सह बिस्तर तौन। जतुग्टह दहन पांडुसुत गौन॥ भीमसेनकौं अतिबल जानि। पार्थहि महा धनुधर मानि॥भो सताप दुर्योधन भूप। हिए बिचारो मंत्र कुरूप॥ कर्ण शकुनि दुःशासन सङ्ग। हनन उपाय करत बऊ रङ्ग॥पांडव ताहि बराएँ जात। पाय बिदुरको मत अवदात॥ पौर देखि पांडव गुणधाम। कहत प्रसंशित वचन ललाम॥ लहि हैं कै लहि ह नहि राज। ज्येष्ठ पांडुसुत सहित समाज॥ कहँ सभा चत्वरमह सर्व। पुरजन परिजन कहँ अखर्व॥ प्रज्ञा चक्षु अचक्षु निहारि। दियो न मंत्रिन्ह राज्य बिचारि॥ अब कैसें ताके ए पोत। सुनऊ कौनबिधि राजा होत॥ भीष्म प्रथम तजि सहित समाज। कीबो चहो बऊरि नहि राज॥ ज्येष्ट पांडुसुत तरुण महान। धर्मशील ते वृद्ध समान॥ सो करुणाकर राजा होय। जगजन साधु कहै सब कोय॥ भीषम बिदुर सहित परिवार।नृप धृतराष्ट सपुत्र उदार॥तिन्है भोग नानाबिधि देत।पूजन करत सनीति सचेत॥ पांडु तनयके भरेनुराग। कहत पौरजन इमि वडभाग॥ दुर्योधन तिनके सुनि बैन। भयो क्रोधमय सहत अचैन॥ गो धृतराष्ट्र पिताके पास।बन्दि चरण इमि कहे प्रकास॥कहत पौरजन सुनी सो बात।भरी अशुभ सो सुनिए तात॥तुमहि भीष्म कहँ निदरि महान। चहत पांडवनकौं पतिमान॥यह मत भीष्मऊको है भूप। तजे राज्य याते अनुरूप॥ हम कौं दुखद कहत जे बैन। पुरजन सुनऊ तात मतिऐन॥ पितृराज्य गुणतैं अभिराम। पांडु पूब पायो बलधाम॥ अन्ध दोषतैं समुचित राज। तुम नहि पायो सहित समाज॥ अब व्है हैं जौ पांडव भूप। क्रमतैं तासु तनय अनुरूप॥ हम सब राजबंशतैं हीन। सुतन सहित व्है हैं अतिदीन॥ करि हैं लोक निरादर सर्व। जानि अराज मानिकै खर्व॥ सदा कष्टकौं लहि हैं भूप। परसौं जीवन पाय कुरूप॥ तिनकौं होय न जातें राज। तात करऊ सो नीति समाज॥ जौं तुम होते पहिले भूप। राज्य श्रीसि हम लहत अनूप॥ ऐसे सुनें पुत्रके बैन। कणिक बचन गुणिकै मति ऐन॥ द्विधा चित्त व्है रहे बिचारि। धर्माधर्म पत्त निरधारि॥ नृप दुर्योधन शकुनि सकर्ण। दुःशासन अति दुर्मति भर्ण॥ ए चारौ मिलि बैठि एकान्त॥ कियो मंत्र दृढ महत अशान्त॥ तब धृतराष्ट भूप पहं जाय। दुर्योधन इमि कहो बनाय॥ हमकौं भय पांडवतैं तात।इन्है निकासैं हत उतपात॥ तातैं युक्ति करऊ तुम तौन।पांडव करहिँ इहातैं गौन॥ भेद दाम करि साम उपाय। तिन्है शांत पूर्वक समुझाय॥ वार्णावत कहं पठवऊ भूप। सुनिए सुतके बचन अनूप॥ चिन्ति घरिक लों रहे चुपाय। फेरि वचन बोले मतिछाय॥ पांडु नृपति हो धर्म निधान। निज परिवार भरे मनमान जोसो भक्ति करत अभिराम। राज्यकृत्य पूंछत सब आम॥ भोजन मात्र न जानत आन। देत हमैं धनस्याय महान॥ पाण्डु तुल्यहै पांडव धर्म्म। गुणवान लोक बिज्ञात सु पर्म्म॥ तिन्है निकासि

सकल विधि कीन। राज्य पितामहको यह जौन ॥ पाले पाण्डु अमात्य स सैन। ते सब पांडवकौं हित ऐन ॥पाले तिनके पुत्र पउच। ते सहाय करिहैं नहि कुच ॥ सत्कृत ताके नागर सर्ब। करिहैं तास सहाय अखर्ब ॥ ************

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ दुर्योधन उवाच ॥ * ॥ जानिकै जनजन्य दोष सु कियो हम यह भूप। देइकै धन मान सबकौं किए स्ववश अनूप ॥ नियत सकल सहाय मेरो करहिंगे सप्रधान । पांडवनकहँ बिदा कीजै आसु अभय सुजान ॥ शान्ति पूर्वक बारणावत नगरकौं अभिराम । होयगो जब राज्य मेरे स्ववन सकल ललाम ॥ सहित कुन्ती लेहिंगे तव पांडु सुतन्ह बोलाय । स्ववशव्है कै रहैंगे तव भक्ष्य भोजन पाय ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ अभिप्राय सु रहति मेरे नित्य यह समचित्त। करत प्रगट न पुत्र याते जानि पाप निमित्त ॥ भीष्म बिदुरसु द्रोण गौतम सकल ए वलवान॥ बिदा कीबो पांडवनको मानिहैं न सुजान ॥ और कौरव वंशमे वर सदृश है मम जौन। मानिहैं नहि बिषम अति यह धर्म्मयुक्त सु तौन ॥ तिन्है कैसैं मारिहैं हम हैं महावलधाम । सङ्ग तिनके पौर जग जन मरहिगे अभिराम ॥ * ॥ दुर्योधन उवाच ॥ * ॥ मध्यस्थ भीषम द्रोणसुत नहि तजी हमकौं भूप । जहाँ सुत तहँ द्रोण रहिहैं है अवश्य अनूप ॥ द्रोणकौं नहि तजत गौतम सहित सुत अभिराम। प्रगट मो हित गुप्त परको बिदुर सो धनकाम ॥ एक शक्य न हमै बाधा करणकौं बलवान। पांडवनके अर्थ याको तजञ्ञ शोच महान॥ सहित माता पांडवनकौं बिदा कीजै भूप। बारणावत जाहि ऐसो करञ युक्ति अनूप ॥ बिनिद्र कारक शल्यहियको देञ मेटि महान। शोक पावक कर्म्मते एहिं लही नाश अमान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भूप दुर्योधन क्रमहि ते राज्यके जन जौन । देइकै धन मान विधिवत किए बश सबतौन ॥ धृतराष्ट्र प्रेरित चतुर मंत्री सभामे अभिराम। बारणावत नगर बर्णन लगो करण ललाम ॥ रतरचित सुवारणावत नगरके ढिग भूप। शैव यात्रानिकट आई परम रम्य अनूप ॥ भूप आज्ञातैं कथा यह कही मंत्री जौन। सुनत पांण्डव नृपति चाहो तहाँ कीबो गौन ॥ पापमन धृतराष्ट तिनकौं कहो ऐसे बैन। कहत मोसों आइकै सबलोग देखि सचैन ॥ बारणावत नगरहै अति रम्य सुषमा धाम । बसत चारो वर्ण जेहँा सुमति सधन ललाम ॥ बारणावत जानकौं जौं होत सुमन उदार। तो युधिष्ठिर सहित भ्रातन करञ जाय विहार ॥ सहित कुन्तो जाञ तेहाँ लेञ धन मनमान । द्विजनकौं अरु याइअनकौं करञ स्वेच्छादान॥ कछू दिन तँह विहरिकै सुख सकल करि अनुभूत। फेरि हास्तिन नगरकौं सह मोद ऐयो पूत ॥ बूझिकै धृतराष्ट्रको मत आपुकौं असहाय । तथास्तु उत्तर दियो ताकौं धर्म्म नृप शुचि भाय ॥ भीष्म द्रोण सु कृपाचारज बिदुर कुरु कुल वृद्ध। सोमदत्त सु भूरि अव बाल्हीक सुमति समृद्ध ॥ रहे बृद्ध अमात्य जे वरबिप्र जे तपधाम । गन्धारजा अरु सह पुरो

हित पौरजन अभिराम॥ युधिष्ठिर बर नृपति तिनके पास कमते जाय । बारणावत जात ह्व हम कहा दीन सुनाय ॥ भूप शासन पायकै तहँ जात सहपरिवार । प्रसन्नह्वैकै बिदा करऊ सु बोलि बचन उदार॥ देऊ आशीर्बाद जातैं होय सो कल्यान। सकल कौरव पांडु सुतके बचन सुनि सुखदान ॥ होउ शुभ तव इमि सु आशीर्बाद दै अभिराम । व्है प्रसन्न सु बिदा कीन्हो भरे मोद ललाम॥ सहित मङ्गलचारकरि गृहकार्य हो सब जौन।कियो सहपरिवार पाण्डव बारणावतगौन॥ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि बारणावतगमनो नाम चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ **********

॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच॥ * ॥ सुनि धृतराष्ट्र भूपके बैन । पांडु सुतनप्रति छलके ऐन॥ भरेमोद दुर्योधन भूप।जानि मनोरथ सिद्धि अनूप॥बैठे आपु रहसमें जाय।लयो पुरोचनकों बोलवाय॥पाणि पकरि कै बोले बैन।तुमसो हितू हमारे है न॥अति विश्वास तुह्मारो मोहि।तातैं कहत मंत्र यह तोहि॥ गुप्त राखिकै हियमह तौन।करि निर्मूल शत्रु मो जौन॥ कहत जो हम सो करिए जाय। अति चतुरापन भरो उपाय॥ पांडु सुतन्ह कँह दियो निदेश । सभामध्य धृतराष्ट्र नरेश॥ नगर बारणावत विख्यात।तँह उत्सव बिहरणकों जात॥ रासभयुक्त करऊ रथ तौन।होय शीघ्रगामी अति जौन॥आजु बारणावत लेइ जाय।तौन सारथी करऊ सहाय॥तहाँ जाय बिरचेऊ अभिराम। चतुः शाल लाक्षाको धाम॥ घृत सन तैल सुराल मिलाय। ऊपर सघन मृत्तिका लाय॥ चऊं दिशिबन्द एक दिशि द्वार। तामे लाएऊ अरर उदार॥ अग्नि सहायक बस्तु सु जौन। चहूंओर राखेऊ बऊ तौन॥ नगर बाहिरे रचेऊ सो धाम। गुप्त किहेऊ लाचा अभिराम॥ करेऊँ परीक्षा लखहि न तौन। पांडव लाखरचित गृह जौन॥ राखऊ ऐसो धाम बनाय। परम बिचित्र लखत सुखदाय ॥ तहाँ जाहि जब पांडव भूप । पूजन किहेऊ आइ अनुरूप ॥ कुन्ती सह तहँ दीजो बास। सहित सुहृदजन बिहित बिलास॥ आसन जान शयन सुखदान। दीजो बिधि बर बिहित सुजान ॥ प्रथापुत्र जानै नहि तौन। ऐसी करियो रचना जौन॥ कछू काल जब जाय बिहाय। सुखसों सोवै निद्रा पाय ॥ तब तुम दीजो अग्नि लगाय। द्वारओर लहि बायु सहाय॥ घरके सङ्ग जरैंगे तौन। हमै दोष फिरि देहै कौन॥ पुरोचन सु दुर्योधन पास। करी प्रतिज्ञा पाप प्रकास॥ रासभ रथपर चढो उताल । गयो बारणावतकों हाल॥ जौन कहो दुर्योधन भूप। करो पुरोचन सो अनुरूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच॥ * ॥ बायुवेग घोरे भगवाय। लए पांडवन रथमे लाय॥ बन्दि भीष्म के चरणललाम । कुरु कुल बृद्ध सगुरु अभिराम॥ तिनके चरण बन्दि मति धीर। चढे रथनपर पांडव बीर॥ समान बैस तिन सों मिलि भूप। लघु न तिन्हे बंदे अनुरूप॥ सर्व अमात्यनकों सनमानि। चले बारणावत सुख दानि॥ बिदुर आदि कुरु पुङ्गव जौन । भरे शोक कछुगे

सह तौन ॥ तहां एक द्विज दुःखित बैन । कहन लगो यहिभाँति अचैन॥ विषम लखत धृतराष्ट्र नरेश॥सु सुत पांडवनकों छल वेश॥पांडव परम पुनीत अमन्द।सहि नहि सकत तिन्है मतिमन्द॥ पिता राज्य पायो इन जौन। नृप धृतराष्ट्र सहो नहि तौन॥ यह अधर्म्मको कर्म्म कुमन्द। कैसे सहत भीष्म कुरु नन्द ॥ इन्है निकासो पुरतैं जौन । कियो अनीति परम यह तौन ॥ रहे पिता सन शान्तन भूप । तथा विचित्रबीर्य अनुरूप ॥ तैसे पांडु भूप सहधर्म्म । गए स्वर्ग कों लहि गति पर्म्म॥पांडु पुत्र ए बालक जान।नृप धृतराष्ट्र सहत नहि तौन॥हम सबकों यह सुखद न हेत।कियो भूप यह जौन अनेत॥ग्टहतजि तहाँ चलै हम सर्व।जात युधिष्ठिर जहा अखर्व ॥ दुखित प्रजनको लखि नृप धर्म्म । तिनसों कहो वचन यह पर्म॥ पिता मान्य गुरु नृप है जौन। कहैं अबश्य कीजिए तौन ॥ तुम सब सुहृद हमारे पर्म । जाउ धाम कों तजि दुख भर्म॥ जब देखेऊ कछु कार्य हमार । तब तुम कीन्हेउ प्रिय उपकार॥यहसुनि पुरजन सहित सनेह।आशीर्वाद दै गए स्वगेह॥ बिदुर युधिष्ठिर सा तब बैन। कहिबे चहे अर्थके ऐन ॥ बिदा भए जब पुरजन सब । करे युधिष्ठिर ठाढ अर्व॥पद्य बिदुर तब कहे सु गूढ।जाको अर्थ न समुझै मूढ॥गेह लाखको दियो बुजाय।भावी अग्नि दाह दुखदाय॥करिकै सुरसरि ओर सुरङ्ग।कढिबेकों करि कुञ्चित अंग॥संगपुरोचन छलको भौन॥ ताहि जराय कीजियो गौन॥ मिलिहै तरणि सुरसरी माँह। तापैं चढि जैयो नरनाह ॥ यह सुनि कहो युधिष्ठिर भूप। सो जानो हम बिदुर स्वरूप॥ यह शिक्षा करि बिदुर ललाम । गए प्रदच्छिण करि निजधाम ॥ बिदुर भीष्म पुरजन गए जान। हास्तिन पुर जब गे करि गौन ॥ कुन्ती आइ युधिष्ठिर पास। पूछन लगी सो अर्थ प्रकास॥ बिदुर गूढ जो बोले बैन। जानो कहो जो तुम लहि चैन॥ मो सा कहो तासु तुम अर्थ। पुत्र युधिष्ठिर सुमति समर्थ ॥ हौं सुनि वेकौं चाहति तौन॥ बिदुर तुम्हार बचन मत जौन ॥

॥ * युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ग्टहमे उठि है अग्नि जब कढिबेको पथ जान । रहिबे सदा बिनिद्र ह्वै कहो बिदुर सब तौन ॥
गूढ बचन शुभ तासु हम जानि अर्थ अभिराम । उत्तर अपने बोधको तासों कहो ललाम ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ गए अठए द्योस तहाँ पाण्डु नन्दन बीर । बारणावत नगर को ढिग धीरनिधि गम्भीर ॥ बारणावत नगरमे जे रहे पुरुष प्रधान । गए आगे लेन कों ते भरे मोद महान ॥ चढे हय गज रथनपर बर बसन भूषण धारि । बन्दि चऊदिशि खरे भे बर भरे मोद निहारि ॥ मध्य तिनके लसे ऐसैं पांडु पुत्र नरेश । तारकागण मध्य शशि ज्यौं सुरन माझ सुरेश ॥ सत्कार लहि पुरजनन सौं बर तासु करि सत्कार। बारणावत मे गए जन वृन्द सहित उदार ॥ बिप्र बर जे तहा हैं तब गए तिनके धाम। अरु पुरुष हे सु प्रधान तहँ गे तजनके अभिराम ॥ जाय

करि सत्कार आए सह पुरोचन वीर । शिबिरमें जहँ कुंती माता भरी मोद गँभीर ॥ भक्त पान सु शयन आसन यथा योग्य ललाम । दिय पुरोचन आनि सबकों बिहित बिधि अभिराम ॥ पुरजननते तें सेव्यमान सु परम पाण्डव धीर । बारणावत नगरमें वर बसे दश दिन धीर ॥ फिरि पुरोचन कहो तिनसों धाम बिरचो ऑन । बास करिबेहेत पाण्डव करऊ प्रभु तँह गौन ॥ पुरुष व्याघ्र सु गए तहँ चलि लाखको जँह धाम । ध्यान करि श्रीकृष्णको तँह किय प्रवेश ललाम ॥ धर्म्म भूपति भीमसों तहँ कहे ऐसे बैन । देखिकै चहुँ ओर ताकों अग्निको यह ऐन ॥ बसा घृत है लाख गिश्रित गन्ध कीजै घ्रान । सर्जरस हि मिलाय कै कृत शिल्पकर्म्म विधान ॥ मुञ्जगुण अरु बांश दारु सु भरे घृतसों सर्व । व्यक्त कीन्हे आश जेहे शिल्पकर्म्मी अखर्व ॥ विश्वास घाती यह पुरोचन दाहिबेकों चाहि । साधमो धृतराष्ट्र सुतको मंचकों अवगाहि ॥ बिपति भावी जानि हमकों बिदर अति मति मान । कियो बोधित प्रथम हमकों परमहित सुखदान ॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ आग्नेय जों यह गेह है अति बिदित तुमकों भूप । पूर्व जेहाँ रहे तँह चलि रहैं निर्भय रूप ॥ इहां रहिए यत्नसों व्है सावधान महान । गुप्त कीन्हे जानिबो यहि धामको गुणभान ॥ यहि धामको गुण जानिबो जों जानि है यह दुष्टातो पुरोचन क्षिप्र देहै अग्नि करि बिधि पुष्ट ॥ डरत हैं न अधर्म्म निन्दाते पुरोचन क्रूर । धृतराष्ट्र सुतके मंच धारें महापातक पूर ॥ हम हि जारे बाद करि है भीष्म क्रोध किमर्थ । जानि कै दुर्योधन हि फिरि भए कोपित व्यर्थ ॥ जाहि जो हम भागि कितहूँ दाह भयतें क्षुब्ध । चारतें करि सोध हनि है सो सुयोधन लुब्ध ॥ पदच्युत्य धन हीन हम वह सपद अति धनवान । अवश्य हमको हने सो करि कै उपाय महान ॥ यहि पुरोचन पापकों छलि गुप्त करि कै रूप । कबहुँ कबहुँ धाममें यहि बास बिहित अनूप ॥ रहै मृगयाशील व्हैकै फिरै बनमें जाय । भागिबेकों पन्थ सूधो लीजिए ठहराय ॥ बिबर अबहीं करैं क्षितिमें भागिबेकों राह । गुप्त जामें भए ते नहि करै पावक दाह ॥ बसत जामें नही जानै यह पुरोचन पाप । पुरोचनसों गुप्त कारज राखिए करि आप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बिदुर पठयो सुहृद अपनो खनक एक सुजान । मिलो आइ एकान्तमें नृप धर्मसों सुखदान ॥ कहन लागो बिदुर मोकों दियो भूप पठाय । कहो मोसों पाण्डु बनको करऊ प्रिय तुम जाय ॥ कहऊ सो हम करहि कारज आपुको प्रिय ऑन । खनक है क्षिति खननकी बिधि सकल जानत तॉन ॥ गुप्त दीन्हें बिदुर कहि बिश्वासके ए बैन । सुनऊ सो मैं कहत हौं नृपधर्म आनद ऐन ॥ कृष्णपक्ष चतुर्दशी निशिमें पुरोचन ऑन । भौनके तव द्वार अग्नि लगाय देहै तॉन ॥ दहनकों सह प्रथा तुमकों कियो मंत्र बिचार । गेहमें यहि लाखके है अधम अन्धकुमार ॥ चलतमें जे बिदुर तुमसों कूट बोले पद्य । कहो सो बिश्वास कारण सुनऊ हमसों अद्य ॥ सुनत तासों नृप युधिष्ठिर कहे ऐसे बैन । तुम्है जानो बिदुरके विश्वासके हो ऐन ॥ छपो है नहि

आ०प० मो प्रयोजन है। महामतिमान । बिदुरके प्रिय यथा है। तुम तथा मो सुखदान ॥ अग्नि कारक द्रव्यमय ग्टह रचो मेरे हेत । रचो पाप पुरोचनै धृतराष्ट्र सुतको नेत ॥ सधन है सह सैन सहित सहाय दुर्मति तैान । कियो चाहत हमहि बाधा महा पातकभैान ॥ हम हि मोचऊ अग्नितें यह करऊ मो उपकार । मो दहनतें धृतराष्ट सुतको होत काम उदार ॥ सुदृढ आयुध भवन चऊं दिशि कियो दुष्ट महान । जास नहि प्रतिकार है मम अशुभकर दुखदान ॥ कहो पहिले बिदुर हमसो जानि आपत्काल ॥ प्राप्त सो अब भयो हमको देखिपरत कराल ॥ करि पुरोचनसोँ सु हमकोँ गुप्त मोचऊ मित्र । कहि तथास्तु सो खनक लागो करण सु निजचरित्र ॥ लगो परिखा भारिबेको करैं मिसि अभिराम । कियो गुप्त सुडङ्ग तंह तैं मध्य लाक्षाधाम ॥ कपाट तापैं राखि कै सम भूमिके करि तैान । नहि पुरोचन लख्ये कीन्हे भैान भीतर गैान ॥ भैाँनहीके द्वारप भ्रोरहत है निति मन्द । बसत सायुध तपामे तहँ सजुग पाण्डु सु नन्द ॥ फिरत मृगया करत दिनमे लखत पथ अभिराम । बिश्वास देइ पुरोचन हि तिन ठगो मतिके धाम ॥ अतुष्ट ह्वै समतुष्ट तेहां रहे पाण्डव भूप । खनक ते नहि और जानत तास मान सरूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तिन्है सुमनस देखि कै बिश्वासवश अनुमानि । भो पुरोचन सुखी मनमे सिद्धि कारज जानि ॥ पुरोचन हि एकवर्ष बीतैं देखि हर्षित रूप । कहो भ्रातन पास ऐसैं तब युधिष्ठिर भूप ॥ बिश्वसितसे जानि हर्षित भो पुरोचन दुष्ट । भयो बञ्चित भागिबेकोँ समय आयो पुष्ट ॥ बारि आयुध गेह जारि पुरोचन हि अघरूप । डारिकै षटमनुज इत तब भजऊ गुप्त अनूप ॥ सस्त्रीक बिप्र बोलाय कुन्ती दिए भोजन भूरि । लेत आज्ञा धामको निज गए आनद पूरि ॥ निषादपत्नी पञ्चपुत्रन सहित बिधिबश आय । पाय भोजन मद्य पान सो गिरी अतिमदछाय ॥ लाखके मधि भैानमे सह सुतन मृतक समान । जहां सूतत हो पुरोचन महापाप निधान ॥ तहां आगि लगाय दीन्हो भीमसेन सुक्रुद्ध । लाख ग्टहके द्वारमे फिरि प्रबल पावक उद्ध ॥ फिरि चऊँ दिशि लाख ग्टहके दई आगि लगाय । जरत सो सब धाम लखि कै पाण्डुसुत सह माय ॥ गए पैठि सुडङ्गमे कढि सहित जननी बीर । लपट बाढी चहुँदिशि भो अनल शब्द गँभीर ॥ सुनत जागे पैारजन कढि आय ताके पास । कहन लागे बचन ऐसे भरे खेद अयास ॥ * ॥ पैार उवाच ॥ एहि पुरोचन धाम बिरचो आत्म नाशन हेत । मानि मत धृतराष्ट सुतको महापाप निकेत ॥ धिक्कार है धृतराष्टकोँ यहि भांतिकी मति जास । भ्रातसुत अति सुमति तिनको कियो ऐसैं नाश ॥ यहि पुरोचन लहो तैसो कियो जैसो कर्म्म । बिश्वाससोँ हा जरे पाण्डव परम पूरण धर्म्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ बारणावत नगरबासी करत महत प्रलाप । घेरिकै सो धाम निशिभरि रहे सहित सताप ॥ गए पाण्डव निकसि बिलितै सहित जननी भूप । चले निशिमे गए सो दुख भरे गुप्त स्वरूप ॥ भीति निद्रा भरे पाण्डव सहित माता सब । भए चलत अलक्ष्य बर सुकुमार परम अखर्ब ॥ **

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

भीमसेन अतिबल गँभीर । तिनकौं लियो उठाय सुधीर ॥ लियो कन्धपर कुन्ति हि धारि । माद्री तनय अङ्कमे डारि ॥ युधिष्ठिर अर्जुनकौं गहि पानि । चले निशामे श्रमबश जानि ॥ पथमे परत वृक्ष जे अग्र । उरतैं तोरत तिन्है समग्र ॥ पदतैं उन्नत भूमि बिदारि । चले बेगतैं अतिबल धारि ॥ सुर सरितको गहँ करार । गए तहातैं दूरि उदार ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकबिना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि लाक्षागृहदहनोनामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जेहि बनको संकेत पहिले कहि पठयो बिदुर । तेहाँ मनुज सचेत पठै दियो प्रति पांडवन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तेहि तहँ देखे बनमे जाय । कुन्ती सहित बीर बरकाय ॥ चारनतैं दुर्योधन कर्म । जानो प्रथम बिदुर मति पर्म ॥ तब सो पठयो मनुज सुजान । जानि आपनो आप्त महान ॥ तब तेहि कह्यो पांडवन पास । यह नौका अति दृढ सुखरास ॥ चढे निषाद मढे बिश्वास । फेरि कहो सो बचन प्रकाश ॥ कूटपद्य जो बिदुर सुजान । पढो चलतमे अति मतिमान ॥ पढो पद्य सो करि बिश्वास । युधिष्ठिर भूपतिके पास ॥ बिदुर पठायो हमकौं भूप । बिश्वासक दै पद्य अनूप ॥ कर्ण सुयोधन भ्रातन सङ्ग । तुम जीतहुगे करि रणरङ्ग ॥ यहि नौकापर चढहु उदार । सुखसौं जाहु सुरसरी पार ॥ तिन्हैं नावपर व्यथित चढाय । दियो बिदुरको बचन सुनाय ॥ मूर्द्धाघ्राण लाइके अङ्क । तुमकौं सत्ता कहो अशङ्क ॥ बिदुर पठायो नरबर जौन । नाव चढाय पांडवन्ह तौन ॥ गयो छिप्र लै गङ्गापार । जय आशिष तब दियो उदार ॥ पांडुसुतनको सुनि सँदेस । बिदा भयो सो पाय निदेश ॥ गङ्गा उतरि युधिष्ठिर भूप । चले छिप्र धरि गूढ स्वरूप ॥ *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भोर भयो तब पौरजन गे लाक्षागृह पास । अग्नि बतायो डारि जल करिकै महत प्रयास ॥

ढूढन लागे पांडवनकौं सब अग्नि बुताय । तहाँ पुरोचनकौं लखो जरो प्रथमही जाय ॥

लखी किराती सुतन सह जरी परी गृह बीच । जानो कुन्ती सुतन सह मरी डरी लहि मीच ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पाण्डव नाश हेतु यह कर्म्म । करो सुयोधन भरो अधर्म्म ॥ यह कहि पुरजन भरे उताप । तह सब लागे करण बिलाप ॥ यह जानत धृतराष्ट्रजो कर्म्म । कियो सुयोधन भरो अधर्म्म ॥ भीष्म द्रोण कृप कुरुज उदार । इनहूँ करो न धर्म्म बिचार ॥ नृप धृतराष्ट्र हि लिखिय पत्र ।

सिद्धि भयो तब कारज अत्र ॥ पाण्डव जारे जननि शबीर । भरऊ हृदय मह मोद गभीर॥ खनक तौन सैं तेहां आय । मूदि दयो बिलि मुखर जनाय ॥ पैारजनन वृतान्त लिखाय । कौरव पतिपहँ दियो पठाय ॥ धृतराष्ट्र सुनत अति अप्रिय तौंन । पांडव जरे लाखके भैान ॥ लगे शोक भरि करण बिलाप। जानि पुत्रकृत कर्म्मज पाप ॥ आजु मरो मो भ्राता बीर । जरे न पाण्डव धीर गँभीर ॥ कुन्ती राजकन्या छबिधाम। सुतन सङ्ग सो जरी ललाम ॥ जाहि शीघ्र तहँ पुरुष सुजान। क्रिया करहि तिनकी सबिधान ॥ तिनको अस्थि बिहित संस्कार । करै वेदबिधि क्रिया उदार॥ यथा योग्य बिप्रनकैां दान । देहि बिहित भोजन पट जान॥ तहां मरे जे नरबर और । तिनके सुहृद जाहि तेहि ठैार ॥ धृतराष्ट्र सहित कुरुकुल समुदाय । दई जलांजलि सलिल मिलाय ॥ तहँ रोए करि सकुल बिलाप । करिबेको गोपन निजु पाप ॥ भरे पैारजन शोक कहान । कियो बिदुर कछु समय समान ॥ *॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ पांडव दक्षिण दिशि निरधारि । चले निशामे नखत निहारि ॥ पथबश गए सघन बन माह । भए श्रान्त सब कुरु नरनाह ॥ फेरि भीमसैं असे बैन। कहो युधिष्ठिर करुणा ऐन ॥ यातैं अधिक कष्ट है कैान। दिशा ज्ञान बिनु बनमह गैान ॥ जानि न परो हमै यह पुष्ट। जरो कि बचो पुरोचन दुष्ट ॥ फेरि हमै वाही विधि बोर । लए चलऊ बनमाह गभीर ॥ यह सुनि भीम युधिष्ठिर बैन । लयो उठाय महाबल ऐन ॥ कुन्ती सहित सुचारो भ्रात । लै कै चले यथा बरबात ॥ तास बेगको बायु अखर्व । लगैं लगे घूमन तरु सर्व ॥ भीम कियो जेहि पथ ह्वै गैान। अतरु भयो तहँ कानन तैान ॥ जैसे अति मद भरो मतङ्ग। बलवश करत गहन घन भङ्ग ॥ सह माता भ्राता सुकुमार । भे मूर्छितसे अमित उदार॥ तरे अनेक नदी भुजजोर । नांघे कूटक गारे घोर ॥ पऊंचे अजल अफल बनमाझ।घोर जीव जहँ भइ तहँ सांझ ॥ भरो महातम कछु न लखात। वहन लगो अति दारुन बात ॥ भए तृषाश्रम पीडित बीर । चलि न शकत धरि नीद गँभीर ॥ प्रथा तृषावश व्याकुल होय । मांगो सलिल सुतनसैं जोय ॥ सुनि कै भीमसेन बरबीर । लेइ गएँ जहँ बिपिन गँभीर ॥ माताबचन सुनत अति दीन । दुखित भए भरि करुणा पीन ॥ लखि बटवृक्ष महा घन छाह । तहां राखि कुरुकुल नरनाह ॥ कहो युधिष्ठिरसैं इमि भीम । आपु रहऊ इत कुरुकुलसीम ॥ हैं। जल ढूढन जात ललाम ॥ इत बोलत सारस जल धाम ॥ इतै जलाशय औपसि गँभीर । सुमति करति सो निहचै धीर॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आज्ञा पाइ सुधर्मकी भीमसेन बलधाम । गए बेगसैं तहँ चले लेन सलिल अभिराम ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

रहे सारस जहाँ बोलत गए तहँ तुर भीम । देखि हरषे बिमल सरबर महाबलके सीम ॥ तहाँ प्राणी पान करि सुस्नान करि बरबीर । सलिल बस्त्र भिगोय आए भरे मोद गँभीर॥ द्वै कोस तहते

क्र तो सर करि वेग बाकुलमान। भ्रातृवत्सल मातृभक्त सु भीम कुरुकुल भान॥ शोक श्रमसो भरे तिनकौं परे छितिपर देखि। उरगसे सब बिना शय्या श्वास शोवत लेखि॥ शोकतेँ अति आर्त लागे करण भीम बिलाप। कष्ट यातेँ और देहै कौन पूरबपाप॥ लखत हैँ छिति परे भ्राता जननिकौं हम तौन। इन्द्रकेसे भवनमे निति रहे शोवत जौन॥ कुन्तीभोज सु कन्यका बसुदेव भगिनी पर्म। तौन कुन्ती परा छितिपर पुत्र जाके धर्म॥ विचित्र वीर्य्यस्नुषा भार्या पांडु नृपकी जौन। जननि हमस सुतन की निस्सरण सोवति तौन॥ नरव्याघ्र सु सर्वभ्राता योग्य त्रिभुवन भूप। श्रान्त छिति पर परे सोवत दीन जनके रूप॥ नील अम्बुद सदृश अर्जुन कौन जास समान। परा छिति पर लखत यातें कान कष्ट महान। दोऊ दस्र समान माद्री तनय सुषमाधाम। विना ते आस्तर्ण सोवत भूमिपैँ श्रम क्षाम॥ नही जाको ज्ञाति है कुल नाश कारण भौन। जियत सुखसौं ग्राम मध्यज एक तरुसम तौन॥ एक तरु जो ग्राममे फल पुष्प पत्र समृद्ध। कहत ताको चैत्य पूजत सकल जन हैँ वृद्ध॥ ज्ञातिके बहु सूर जाके धर्मबिद मतिमान। जियत है सर्बाय लहि सो छित हि सुहृद सुजान॥ पुत्र सह धृतराष्ट्र भूपति दुष्ट दुर्मति पीन। कै बिवासित चहो जारो बचे दैवाधीन॥ दाहतेँ बचि आय यह तरु पाय पावत चैन। जाहिंगे केहि दिशाकौं लहि क्लेश कानन ऐन॥ रहै होय सकाम अब धृतराष्ट्र नन्दन पुष्ट। हमहि आज्ञा देत नहि नृप धर्म ह्वैकै रुष्ट॥ नतरु सहित समाज तिनकौं मरदि गरद मिलाय। क्रोध करतो शान्त अन्तक ओक तिनहि पठाय॥ यहि भाँति कहि करि क्रोध लीन्हो भीम भूरि उसांश। दीन मन लखि भए ज्यो बिनु अर्चि अनलप्रकाश॥ विश्वसित श्रम भरे सोवत पृथकजन से सर्ब। जागिबेके योग्य है यह बिपिनि भयद अखर्ब॥ यहाँ तेँहैँ जानि मोकौं परत नगर नगीच। जागिहै कोउ आय जाय न मनुज इत बनबीच॥ श्रम रहित ह्वै जब जागिहैँ सह जननि मेरे भ्रात। सलिल ए तब पियहिगे हौं जगत जबलौं प्रात॥ करि सु निश्चय भीम तेहाँ रहे जाग्रित बीर। मातृ भ्राता भक्त अति धर्म्मज्ञ धारे धीर॥ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ ॥ तेहि बिपिनितेँ कछु दूर बैठो शाल तरुपर आय। हिडिम्ब राक्षस मांस भक्षक श्याम घन सो काय॥ दारुणाकृति पिङ्गलोचन दशन वदन कराल। लम्बउदर नितम्ब लाल स्मश्रु भूरे बाल॥ महा तरुसमग्रीव कन्धर खडे जाके कान। इश्वरेच्छा सो लखो तेहि पाण्डुपुत्र महान॥ बेर बेर जभांय फिरि फिरि लखत तिनकीओर। पाय मानुषगन्ध बोला स्वसासौं इमि घोर॥ बहुत दिनमे मिलोहै अब भक्ष्य सुप्रिय जौन। स्नेह सलिल सु बहति जिह्वा करति आतुर गौन॥ दन्तोष्ठ ए अति तीक्ष्ण मेरे जास दुःसह पात। सफल तिनकौं करौंगो लहि मनुज चिक्कन गात॥ पकरि मानुष कण्ठ धमनी काटि करि गत प्रान। रुधिर भूरन सुरस फेनिल कियो चाहत पान॥ जायकै तुँ जानु के ए करत बनमे सैन। मनुज गन्ध सु महत इनको घ्राण कारक चैन॥ मारिकै ए मनुज सिगरे ल्याय मेरे पास। करत निद्रा देश मेरे नही तोका

घास ॥मानुषनको मांस हम तुम उदर भरिकै खाय। करै नाना भाँति सों तब नृत्य ताल बजाय॥ हिडिम्बके यहि भाँतिके सुनिकै हिडिम्बा बैन। गई भ्राता बचनतें जँह करत पाण्डव सैन॥ जाय देखो पाण्डवनकों प्रथा सह अभिराम। तहाँ जागत रहे बैठे भीम अति बलधाम॥ नैरिती सो भीमसेनहि देखि दिव्य स्वरूप। बरो कामा शक्त ह्वै कै हृदय माह अनूप॥ महा बाहु कुमार बय कमलाक्ष सिंह समान। करौं भर्त्ता इन्है मेरे योग्यहैं सुखदान॥ क्रूर हिंसक बचन भ्राता के करों नहि तौन। बली भ्राता प्रीति सों है स्नेह पतिको जौन॥मारि खाएँ इन्है ह्वैहै तृप्ति नहि चिरकाल। ततरु यातें मोद मिलिहै बहुत काल बिशाल॥ कामरूपिणि मानुषीको रूप धारि ललाम। भीम सेन समीप आई सलज पूरित काम॥दिव्य भूषण बसन धारें मधुर बोली बैन।इतै आए कहातें हो कौन सुषमा ऐन॥ देवरूपी पुरुषहैं ए कौंन सोवत जौंन। कौंनहै यह बाम सोवति रूप तेजस भान॥स्वगेहसे निश्चिन्त सोवत हौ न चाहत भोर। नही जानत बिपिनि यह क्रव्याद सेवित घोर॥ हिडिम्ब राक्षस बसतहै यहि बिपिनिमे बलवान। तेहिं पठाई मोहि करिबे क्रूर कर्म्म बिधान॥ सो हमारो है सहोदर दुष्टभाव बिचारि। तौन तुमको चहत भोजन कियो बलबश मारि॥ देखि तुमकों देवसम बररूप गुणको धाम। करो तुमकों चहतिहौं पति आपनो अभिराम॥ जानिकै यह करहु मोसों योग्य जैसो कर्म्म। काम हतहो नही मेरो त्याग तुमको धर्म्म॥ पुरुषाद राक्षस सों करौगी तुम्है रक्षित बीर। मोहि सह गिरि दुर्गमे चलि बास करिए धीर॥ खेचरी हौं तुम्हैं सह अति रम्य थलमे जाय।रमौगी तो सङ्ग लहिहैं प्रीति अति सुखपाय॥भीमसेनउवाच॥ जननि भ्राता जेष्ठ सोवत छोडिकै तजि धर्म। राक्षसी अनु जाय तो यह करै कौंन कुकर्म॥ असुर भक्षण हेत सोवत छोडि जननी भ्रात। कामबश ह्वै अधम ऐसो कौंन तो सँग जात॥राक्षस्युवाच॥ करहिगी प्रिय रावरो हम इन्है देहु जगाय। तुम्हैं सहपरिवार राक्षस सों सुलेउँ बचाय॥ भीमउवाच॥*॥ राक्षसी सुख सुप्त भ्राता सहित माता जौन। अधम राक्षस भीति तें अब करै बोधित कौंन॥ गन्धर्ब किन्नर मनुज सह तन मो पराक्रम घोर।कहा राक्षस बापुरो यह जौंन भ्राता तोर॥जाहु कै तुम रहहु सुन्दरि करहु चाहहु तौन। पठै कै तुम देहु भ्राता अधम है तो जान॥ बैशम्पायन उवाच॥ * ॥बडी लागी बेर जानि हिडिम्ब राक्षस दुष्ट। उतरि तरु तें चलो पाण्डव ओर ह्वै अति रुष्ट॥घोर धारे रूप आवत भरो क्रोध महान।लखि हिडिम्बा भीमसों भरि भीतिसों मतिमान॥ कहन लागी दुष्ट राक्षस चलो आवत जौन। कहति जो मै सहित भ्रातन करहु हे प्रभु तौन॥ काम चारी राक्षसी हौं भरी बल अभिराम। चढो मेरो पीठिपैं हो जाउ लै नभ धाम॥ देऊ बेगि जगाय माता सहित भ्राता बीर। जाउँ लैकै गगण मै हौं तुम्है सबकों धीर॥ भीमउवाच॥*॥डरै मनि मो पास सुन्दरि कौंनको भय तोहि।हनतहौं हौं अधम राक्षस महा देखत तोहि॥ नहीं मो बल सहम है यह अधम राक्षस जौन। सहै प्रबल प्रहार मेरो बीर ऐसो

कौन ॥ देखि मत्तमतङ्ग सुण्डादंड से दोर्दंड।उरू परिघ समान औ उर अति समुन्नत चंड ॥इन्द्र विक्रम सदृश विक्रम है हमारो जानि। नहि निरादर करऊ मनमें मोहि मानुष मानि॥ हिडिम्बो वाच ॥ देव रूपी नरव्याघ्र न करति तो अपमान।लखो राक्षस को पराक्रम मनुजमे अतिमान॥ वैशम्पायनउवाच ॥ भीमके सुनि वचन राक्षस देखि भगिनी रूप। बनी रतिसम धरे भूषण बसन माल अनूप॥पुंशार्थिनी तेहि जानि राक्षस क्रोधकरि अतिघोर। कहन लागो स्वसासौं दृगफारि लखि तेहि ओर॥ कौन मेरे भक्षमे करि सकत अप्रिय काम। डरति है मम कोपसौं नहि भई मोहित बाम॥धिक्कार असती तोहि है मो अहितकारिणि सर्व। भई राक्षस वंशमे त अयश कर्त्री खर्व॥इन्हे मारत सहित तोहि हिडम्ब हौं वलऐन। चलो कहि यौं दशन चावत किए राते नैन॥ ताहि आवत देखि सोहैं भीमसेन उदार। कहे भर्त्सन बैन बहुविधि तिष्ठ तिष्ठ प्रचार ॥ भीमसेन विलोकि राक्षससौं कहे इमि बैन । स्वसापर अति क्रोध कीन्हैं हनो चहत अचैन॥ वेगतें इत आउ मोपै रे नराशन दुष्ट । बाल बधतें कहा पैहै सुयश राक्षस रुष्ट॥ अनयकारी अन्य कोऊ अपरको नहि बाध । स्ववश मोकौं वरी यह नहिँ भईहै अपराध॥ देहचारी कामप्रेरित स्वसा तेरीबाल। तो पठाई देखि मोछबि भई बिबस बेहाल॥करो मोपै कामना यह पाय मनसिज दोष। करतनिन्दा हनो चाहत वृथा कीन्हैं रोष॥ चहत मारो याहि मेरे लखतरे मतिमूढ।युद्धमो सौं आय करु जौं भयो क्रोधारूढ॥ तोहि जमको पुरीको हौं एक देत पठाय। ताल फलसौं फोरि तेरो शीस करि बिनु काय॥ तोरिकैतो अङ्ग छितिपर डारिहौ सामर्ष। अघ कंक शृगाल गृध्रक ढोरिह करिहर्ष ॥ विना राक्षस करतहौं यह अघ कानन भूरि। फिरहिंगे इत मनुज बनचर अभय आनद पूरि॥लखै गी तो स्वसा तोकों हतो मोतें अद्य।यथा मारो सिंहको। गज गिरो उन्मदसद्य॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बाधाबिन तब होयगो यह बन रम्य ललाम।तोहि मारि जब देउ गो पठै प्रेतपतिधाम॥

॥ * ॥ हिडम्बउवाच ॥ * ॥

गर्जे व्यर्थ कहेंकहा करऊ सो कर्म महान । हे मनुष्य जातैं बचे काल बश्यतो प्रान ॥

होय पराक्रम जौन सो प्रगट देखावऊ मोहि । बलाबलो तब आपनो समुजि परैगो तोहि ॥

॥ * ॥ गीतिछन्द ॥ * ॥

तब बली आपुहि मानिहो जब भिरेऊ मोसौं आय । हौं मारिकै जमलोक तोकों देत दुष्ट पठाय ॥ करि पान तेरो रुधिर पीछे सुप्त तिनहि सँहारि । अनु स्वसा अप्रिय कारिणीको प्राण लेहों मारि ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सो बोलिकै एहि भाँति बाहु उठायकै अति उड्ड। तब चलो सोहैं भीमके वलभरो बहुत क्रुद्ध ॥ कतिभीम भीमपराक्रमी चलि बेगसौं बलबीर। गहि लई ताकी भुजासौं कछु हसतसे रणधीर। तब खैंचिकै तेहि ले गए धनु आठ भूमि प्रमान।

प॰ ज्यों अल्प मृगकों सिंह मर्दत पकरिकै बलवान ॥ सो क्रुद्ध राक्षस भयो मर्दित भीम भुजके जोर। तब वाकसों गहि भीमसेनहि लगो गर्जन घोर॥फिरि खैचिकै बल सों बृकोदर लै गए तेहिदूरि। नहि सुनत जागहिं भ्रात माता शब्द्याको भूरि॥तब लरे ते अन्योन्य दोऊ भरे सुबल गंभीर। सुनि शब्दतिनको सहित माता जगे पाण्डव वीर॥तँह लखि हिडिम्बाको खडी अति प्रथा बिस्मयछाय॥तब लगी बूझन देखिकै अति सुन्दरी अतिकाय ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ अतिभए बिस्मित पाण्डुनन्दन लखत ताको रूप । फिरि लगी कुन्ती बोलि मीठे बैन बूझन भूप ॥ तुम कौन आई कहातें इत चहति हौ का काम । हो बिपिनि देवी अप्सरा कै भरी रूप ललाम ॥ सो कहहु हमसों सत्य सुन्दरि बोलि मीठे बैन ॥ हिडिम्बोवाच ॥ यह वन हिडिम्ब सु रक्षकोहै खच्छ बासक ऐन ॥ सो मोहि ताकी स्वसा जानहु अंब अति अभिराम। । हो भ्रात प्रेरित इतै आई तुम्हैं बधिबेकाम ॥ इत देखि अतिबल पुत्र तो नव कनक बनक स्वरूप। व्है रही ताके स्ववश प्रेरित करी मन्मथ भूप ॥ हौं बरी करि भर्त्तार तोसुत महाबल बरकाय॥तब ताहि हौं लै जान चाहे कियो बहुत उपाय॥ जब लगी मोकों बेर बहु लखि महा राक्षस दुष्ट। तब इतै मो सह तुम्है हनिबे हेत आयो रुष्ट ॥ गहि ताहि सो लै गयोहै तव पुत्र मो भर्तार। ते लरतहैं बनमाह गर्जत बलीबीर उदार ॥ * ॥ वैशंपायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनत ताके बचन धर्म नरेश अर्जुन बीर । उठि चले तेहां राखि माता पास अवरज धीर ॥ तिन लखे दोऊ लरतहैं जय चाहि कै बलवान। अति उठी छितितैं धूरि दावा धूम धार समान ॥ ते पांसु रञ्जित धराधरसे जपे उग्र निहार । तब देखि भीमहि लरत तासों कहो पार्थ उदार॥ हे बृकोदर डरहु मति अति करहु निर्भय रारि॥हम तो सहायक इतै आए याहि डारत मारि ॥*॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ तुम करहु मति संदेह तेहालएहुठाढे मौन। सुनु मो भुजातर भए ऐसे बचतहै कहु कौन ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ इत हमै रहिबो है न यातैं हनहु याहि उताल । लखि भई प्राची अरुणहूबे चहत प्रातःकाल ॥ यह करी माया राक्षसीको पाय रौद्र मुहूर्त। अब भीम क्रीडा करहु मति कछु वेगि मारहु धूर्त्त ॥ * ॥ वैशंपायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनत अर्जुनको बचन भे भीम ज्वलन स्वरूप । वह धरो बल जो जगत लयहत धरत बायु अनूप ॥ गहि ताहि लागे यों फिरावन महा चक्र समान। सो तजत है नहि देहतैं वह राक्षसाधम प्रान ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ जो भयो तुमको भार यह तो तजहु राक्षस युद्ध । हौं हनत याहि सहाय तो करि होउ तुम श्रम शुद्ध ॥ यह सुनत पारथको बचन करि भीम क्रोध गँभीर । तब डारि ताको भूमिपर गहि लगो मर्दन वीर ॥ परो छितिपर करण लागो घोर आरत घोर। तब भीमसेन उखारिडारो मध्य तैं भुज जोर ॥ सो मरो जानि हिडिम्बकों छितिपरो देखि महान। अति भए हर्षित धर्म्मनृप करि भीमको सुन्मान॥तब करो पूजन भीमको सब पाण्डवन अभिराम । अति भरे आँनद जानिकै सम प्राण प्रिय बलधाम ॥ यह कहो

अर्जुन भीमसों नहि भलो यह बनवास । यह नगरह अति निकट यातैं उचित दूरि निवास॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सँहतैं चलिबेको कियो पाण्डु सुतन प्रस्थान । भीम हिडिम्बा सौं कहो बचन सक्रोध महान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभि गामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि हिडिम्ब बधोनाम द्विचत्वारिंशोऽध्यायः॥ *

॥ * ॥ भीमउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैर लेति हैं राचसी बिबिधि मोहन डारि। जाऊ हिडिम्बा आपने भ्राताको पथ धारि॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ भएँ क्रोध लहि दोष गँभीर । इस्त्रीको बध करत न धीर ॥तनु रच्छणतैं रच्छणधर्म्म। कहत बिचारि बेदबिद पर्म्म ॥बध करिबेकौं आयो रच्छ।हनो ताहि बर बल रणदच्छ॥ है ताकी यह भगिनी दार।कहा क्रोध कारै करौ तुम्हार॥ वैशम्पायनउवाच॥हिडिम्बा करि कुन्तिहि परणाम। बन्दि युधिष्ठिरकौं अभिराम॥ कहन लगी कुन्तीसौं बैन।भई बिनीत भरे जल नैन॥ दुख इस्त्रिनको मनभव जौन।हे अम्बा तुम जानति तौन॥भीमसेन कृत सो हम पाय।...हो समय गुणि कै हे माय ॥ भयो चिराय काल अब तौन। भयो समय अब आनद भौन॥ छोडि सुहृद प्रिय स्वजन सुधर्म। बरो जो नरव्याघ्र पति पर्म ॥ जो तुम अरु तव सुत बलवान। तजि है तो तजिहा मै प्रान॥ सत्य कहति तुमसौं यह बैन । करऊ कृपा मो पैं यश ऐन॥ मूढ भक्त अनुगामिनि जानि। स्वसुत करऊ मो पति सुखदानि॥देऊ जाउँ लै तिन्हैं यथेच्छ। प्राण सहश्र जो मोहिअपेच्छ॥ फेरि ले ऐहौं तुम्हरे पास। यह निश्चय मानऊ बिश्वास॥ जब मेरो करि हो अस्मर्न।तब तो आय देखिहौं चर्न॥ तब दुखतैं करिहौं उद्धार । अपथ बिपिनि गिरिमाह उदार ॥तब लै जैहौं पीठि चढाय। महा शीघ्र करि गति सुखदाय॥अम्ब कृपा करु सहित सनेह।स्वसुत भीम मोकौं पति देह॥ आपतकाल पाय कै प्राण। राखत जेहि तेहि भांति सुजान॥ सब स्वधर्मकौं अङ्गीकार। करि कै राखत साधु उदार॥ आपतकाल मह जो धर्म्म । राखत सोइ धर्म्मबिद पर्म्म॥रक्षक प्राण धर्म्म सुखदान । छोडेतैं सोइ भक्षक प्राण ॥ करत धर्म्मबश यो यो कर्म्म। ताहि न निन्दत सुमति सुधर्म्म॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ कहति हिडिम्बा सो सब सांच। यह सब कहत बेदबिद पांच॥ स्थिर व्है रहेऊ सत्यमे तौन। हे सुन्दरि तुम भाखो जौन ॥ स्नान नित्य करि कर्म्म ललाम। मङ्गल बिधि धारे अभिराम॥ जबलौं भानु होहि नहि अस्त। भजऊ भीम सँग दिवस समस्त ॥ संध्या होत हमारे पास । भीमसेन आवहि सुखरास॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥

कियो हिडिम्बा सो स्वीकार। सुनि बोले तब भीम उदार॥ सुनज्ञ राक्षसी मेरो बैन। समय बद्ध यह सत्य सचैन॥ पुत्र होय गो जबलौं तोहि। तबलौं तो सङ्ग रहिबो मोहि ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ कहि तथास्तु तिनके पास। लेय भीमकहँ चली अकाश॥ शैल शृङ्ग जहँ अति रम णीय। जहाँ देवतायतन कमनीय॥मृग पक्षीगण जहँ कल रूप। तहां जाय धरि बेश अनूप॥ मधुर बचन बोलति मृदु अङ्ग। रमति तहां पांडव के सङ्ग॥ जहां नदी गिरि गहन ललाम। तँह तहँ जाय रमति अभिराम॥ नाना भांतिन करति बिहार। जई हिडम्बा पुत्र उदार॥ वक्त्र महान बिरूप सुनैन। खडे कर्ण अति जबको ऐन॥ महाकाय अतिमाया धाम। बिपुल अङ्ग सब सबल ललाम॥ सम्भव मनुज अमानुष रूप। बाल बयस तनु युवा अनूप॥ सर्ब अस्त्रमे पर वर बीर। महा प्रकर्ष बली रणधीर॥ लहति राक्षसी जबही गर्भ। तब प्रसब करतिहै अर्भ॥ कामग काम रूप अभि राम। पुत्र हिडिम्बाको बलधाम॥अकच आय कै परशे पाय। भीमसेनको अति सुखदाय॥माता पिता तासको नाम। धरो घटोत्कच बलको धाम॥ भयो पांडवनसोँ अनुरक्त।सो प्रिय भो तिनको बरे भक्त॥बास काल भो जीर्ण सुजान।कहि सु पांडवनसोँ परमान॥ समय बन्ध करिकै अभिराम। गई हिडिम्बा अपने धाम॥ कार्य्यकालमे कीन्हे स्मरण। आशु पिता लखि हौं तो चरण॥ह्वैकै बिदा घटोत्कचबीर।गयोसो उत्तर दिशिकौं धीर॥तिहिको इन्द्र कियो उतपन्न।हेतु शक्ति जो कर्णासन्न॥ स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशी बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुल नाथेन कविना कृत महाभारतदर्पणे आदिपर्वणि हिडिम्बा बिवाह घटोत्कचोत्पत्तिर्नाम त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦**

तीन तीन बन नाघत जाय। हनि बराह मृगके समुदाय॥ राज्यांतरकों गए उताल। सह कुन्ती कुरुकुल क्षितिपाल॥ कीन्हें जटा सुवल्कल बास। अजिनाम्बर धारैं छबिरास॥ बने तपस्वीस बर काय। सबैं लेत कबहुँ जननि उठाय॥ गुप्तजात कहुँ प्रगट अमन्द। पढत बेद बेदाङ्ग सचन्द॥ आगे जाय लखो मुनिव्यास। जास भानु सम सु तप प्रकाश॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तास चरण बन्दन तिन कीन्हों। मुनि प्रसन्न ह्वै आशिष दीन्हों॥ माता सहित सु अंजलि [illegible] बैठे जाय सु मुनिके धोरैं॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ हम पूर्वहि सब जानत रहे। यह जो [illegible] तुम लहे॥ अन्ध सुतन छल जौँन बिचारो। पापकर्म्म करि तुम्हैं निकारो॥ सो सब कर्म्म [illegible] कीन्हा। मिले तुम्हे हित चाहत कीन्हाँ॥ अब चित माह बिषाद न आनो। होनहार [illegible]॥ हमको तुम समानहौ दोऊ। न्यूनाधिक यामे नहि कोऊ॥ साधु दीन सब बालकी [illegible] प्रीति तिनपैं अवरेखैं॥ अधिक प्रीति है तुमपैं तातैं। कियो चहत मो हित हम यातैं॥ यह रमणीय नगर ढिग यारैं। तहाँ बसऊ चलि गुप्त बिचारैं॥ फिरि जब

हम तुम पै चलि औ हैं। तहाँ जाइयौ जहाँ वतै हैं ॥ आश्वासन तिनको इमि करि कै। एक चक्राके ढिग मुद भरिकै ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ जीवत्पुत्रि पृथा सुन मोसौं। वचन भविष्य कहत हम तो सों ॥ धर्म युधिष्ठिर पुत्र तिहारो। जीति हि धरा सिन्धुलौं चारो ॥ अर्जुन भीम महा बल दोऊ। इन सों जीति हि भूप न कोऊ ॥ राजसूय हयमेध सु विधिसौं। धरा जीति करि हैं बहु निधि सों ॥ जाचमान जन मानस भरि हैं। राज्य हस्तिना पुरको करि हैं ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ यों कहि विप्र धाममे राखो। चलत व्यास तिनसों यह भाखो ॥ कुन्ती रहु सपुत्र इत तबलौं। फिरि आवै तो पँह हम जबलौं ॥ कहि तथास्तु पांडव शिर नाए। गए व्यासमुनि जहतैं आए ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ एक चक्राको पांडव गए। कहा करत ते तेहाँ भए ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ पांडव रहे कछुदिन तेहाँ। मुनिवर व्यास राखि गे जेहाँ॥ सरिता वाग सरोवर भाए। लखत फिरत पांडव छवि छाए॥ पांडव भिक्षा मांगि ले आवै। देहि जननिकों जो कछु पावै ॥ देइ लगाय भाग जो माता। भोजन करहि तीन सब भ्राता ॥ आधेमे जननी सब भाई। आधो खाहि भीम सुखदाई ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

औसैं बीति गयो बहुकाल। रहत तहाँ वर वीर विशाल ॥ एक दिवस भिक्षाके हेत। पांडव चारि गए सहनेत ॥ भीम रहे माताको पास। भयो विप्र घर रुदन प्रकास ॥ सो सुनि कुन्ती दायाधाम। सहि न सकी सो करुणा माम॥ दुख तैं मथित भयो हिय औन। कहो भीमसो तव यह बैन॥ सुखसौं बसे विप्रके धाम। सहित सनेह पाय विश्राम ॥ चिन्तितही हम चितमे नित्य। कहा विप्रको कीजै हित्य ॥ हमसे साधु बसत जेहि पास। ताके करत दुःखको नाश ॥ तेई पुरुष जगतमे सार। जे नहि नाशत पर उपकार॥ तनु उपकार पाय मतिमन्त। प्रत्युपकार करैं गुरु सन्त ॥ तातैं यहि ब्राह्मणको कष्ट। प्रत्युपकार हरे अस्पष्ट ॥ * ॥ भीमउवाच ॥ * ॥ दुःख हेत जो जानो जाय। दुस्कर हूँ करिए व्यवसाय ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ इतनेमे सह भार्य्या विप्र। फिरि रोयो सुनि कुन्ती चिप्र॥ गई तास अन्तःपुर माह। ज्यौं गो वत्सपास नरनाह ॥ पुत्र सुता सह विप्र सभार्य्य। भरे शोकसों देखो आर्य्य ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ धिग जीवन जाको गतसार। जीवन दुखसो भरो अपार ॥ करत त्रिबर्ग आतमा भोग। सहत दुख लहि तास बियोग॥ सुनत मोक्ष सो देखत कौन। अर्थ कष्ट करि लहिए जौन ॥ ताको नाश होत अति दुख। लखो कछू नहि कारण सुःख ॥ सह कुटुम्ब तँह जे औ भागि। जहँ निश्चिन्त रही सुख पागि॥ तुम न ब्राह्मणी मानो तौन। बचन हमारो आनदभौन॥ माता पिता कुटुम्ब समेत। यहि पुर बसे मरे यहि हेत ॥ औसे नगर बसे का चैन। तुम मानो नहि मेरो बैन ॥ पहुचो बन्धुनाश सो आय। कारक महा दुःख समुदाय ॥ तातें औसि मरत हम जाय। बन्धु त्यागि नहि जीवन न्याय ॥ गृहस्थ आश्रम की सुख

मूल। धर्म्म चारिणी निति अनुकूल॥ पुत्र प्रसूता भार्य्या धर्म्म। त्याग तुम्हारो हमै न पर्म्म॥ पुत्र प्राणसम अतिप्रिय जौन। ताको त्याग सहत है कौंन॥ प्राप्त भयो नहि यौवनतास। पति हित राखो धरि विधि न्यास॥ दौहित्र लोकको दाता जौन। दुहिता त्याग सकै सहि कौंन॥ अधिक नेह सुतसौं सब कहत। कोऊ प्रीति कन्यामे लहत॥ मोकौं दोऊ सदा समान। करौं देहको अपने दान॥ तौ परलोक माँहि यह मोहि। व्है है दुःख कहत सो तोहि॥ मेरे भार्य्यादिक हैं जौन। तिनको पालन करि है कौंन॥ तुममे त्याग एकको जौन। राखि आपुकौं निन्दित तौन॥ परो विपति सागरमे व्यक्त। होत नहो तरिबेकौं शक्त॥ जहै कौंन गतिहिँ हम अद्य। सबके सङ्ग मरण सुख सद्य॥ * ॥ ब्राह्मण्युवाच ॥ * ॥ दुःख करऊ मति अज्ञ समान। हे पति तुमहो परम सुजान॥ जो जनमत सो मरत अवश्य। होत कार्य्य जो भावी बश्य॥ स्त्री सुत सुता आत्म हित अर्थ। करत जगत सब जानि समर्थ॥ व्यथा छोडि सब देऊ सुजान। मेरो त्याग करऊ मतिमान॥ नारिनको यह कारज धर्म्म। करैं प्राण तजि पतिहित पर्म्म॥ करैं सु भार्य्याकौं जेहि अर्थ। सोभो मोमे तुम्है समर्थ॥ कन्या पुत्र सु तुमतैं पाय। तुमसौं भई उरिण सुखदाय॥ कन्या सुतको रक्षण जौन। पोषण सह करि हो तुम तौन॥ तुम बिनु हम सब त्रिधि असमर्थ। करि हैं कहा बिना प्रभु अर्थ॥ गर्वित भरे दोष नर जौन। लेहैं हठि कन्या यह तौन॥ जे संबन्ध जोग नहि जाति। हौं रक्षण करिहौं केहि भाँति॥ विधवास्त्रीकौं लम्पट जौन। चाहत भ्रष्ट कियो हठि तौन॥ तासौं हो केहि भाँति बचाय। कुल पथमे रहिहौ सुख पाय॥ सुतकौं विद्या दीबे योग। हौंहि समर्थ न बनिता लोग॥ निन्दा पाय लोकमे विप्र। तजि हौं देह अवश्यक क्षिप्र॥ तब ए बालक मोसौं हीन। मरि है यथा मीन जलहीन॥ तुम बिनु मरत तीनि हम विप्र। तातैं करऊ त्याग मो क्षिप्र॥ सधवा मरै सुपुत्रा वाम। तास भाग्य बुध कहत ललाम॥ दान यज्ञ व्रततैं अभिराम। तियकौं पति हित कृत फल नाम॥ तौन कियो हौं चाहति धर्म्म। तुमकौं इष्ट सु कुलकों पर्म्म॥ मित्र पुत्र धन भार्य्या जौन। करत बिपत्ति हरण हित तौन॥ आपत हेत राखिए बित्त। धन दै दारा रक्षण हित्त॥ आत्माको धन दारा देय। करि रक्षण बुध वर सो लेय॥ दुहूँ लोकमे फलद बिचारि। कर सुत स्त्री बुध निरधारि॥ कुल आत्मा मति तुला चढाय। तौलें आत्मा अधिक लखाय॥ आत्मा राखऊ [illegible]ऊ मोहि। मोसुत पालेऊ मागति तोहि॥ अवध्य दारहि बुध जन कहत। राक्षस होत धर्म्म [illegible]त॥ यह बिचारि नहि मारिहि मोहि। पुरुष जानि नहि छोडि हि तोहि॥ यातें मोहि पठा[illegible] कियो बहुत सुख तुम्हरे साथ॥ पुत्रादिक फल तुम्ह तें पाय। करण उचित यह मोहि व्य[illegible] कीजियो भार्य्या जौन। रक्षण करी धर्म्मतेर तौन॥ मोहि तजऊ यह समुझि निमित्त। क[illegible] रक्षण सुत बित्त॥ *❧*❧*❧*❧*❧*❧*❧*❧*

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनि ताकों लाय हिय रोयो विप्र सुजान । दुःखार्णवमे मग्न भो जानि प्रिया प्रियप्रान ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

देखि माता पितहि दुःखित तास कन्या जौंन । भई दुःखित कहन लागी वचन ऐसे तौंन ॥ भए दुःखित कहा रोवत करहु मो सुनि बैंन । धर्म तेहों त्याज्यकों तुम तजहु पावहु चैंन ॥ अपत्यको यह होतु दुखते लेइ पितहि उवारि । यहि कालमे हौं होति प्लव दुखसिन्धु देति उतारि ॥ नर्कते जो करै तारण पुत्र कहिए तौंन । दौहित्र चाहत पितर याते करण तारण जौंन ॥ लेति जीवित राखि तो हौं पिता यह निरधारि । बाल भ्राता मरैं तो यह नष्ट होत विचारि ॥ तब पिण्ड हु है सुनहु पितरणको क्रिया हत हीन । पिता माता हीन भ्राता होहि गी हम दीन ॥ मरैगो लहि महत दुर्गति सुनहु यातैं तात । रहो तोतैं पित्रपिण्ड शुचित्त माता भ्रात ॥ पुत्र आत्मा सखा भार्य्या सुता दुःख समान । त्याग करि मो आत्म रक्षण करहु तात सुजान ॥ अनाथ तुम बिनु फिरौं गी जँह तहां कृपिनि समान । तुम्हें तारें लहौं गी हौं परमपद सुखदान ॥ हौंउगी सब भांति दुःखित तजैं तुमकों तात । तजहु मोकों राखिए सो सुखी माता भ्रात ॥ रुदन करि द्विज सुता ऐसे कहो नाना भांति । कहत बनत न तौन सिगरो महा दुखकी पांति ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह बचन सुनि सह ताहि रोए पिता माता भूरि । सुनत बालक पुत्र बोलो विहँसि बचन बिसूरि ॥ करहु रुदन न पिता माता अरी भगिनी बाल।कहो सबके पास चलि इमि बचन ललित रसाल॥ एक लै तृण हाथमे इमि कहो बालक बैन । पिता यातैं मारिहौं मैं राक्षसहि बल ऐन ॥ अव्यक्त ताके बचन सुनि लखि रहो द्विज मुसकाय । कहन लागी वचन कुन्ती समय तासों पाय ॥ * ॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥ दुःखको जो मूल है सो कहहु मोसों विप्र । करौं मैं प्रतिकार ताको समुझि शक्य सक्षिप्र ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ यह दुःख हरिबे जोग्य है नहि मनुज के मतिमान । बसत राक्षस महा बक यहि नगरढिग बलवान ॥ यहि देशको यहि नगरको सो ईश है अति दुष्ट । सो नित्य मानुष मांस भोजन पाय होत सुतुष्ट ॥ करत है पर चक्रते यह नगर रक्षण तौन । लेत बाह प्रमाण भोजन नित्य व्यञ्जन जौंन ॥ महिष द्वै एक मनुष गृहप्रति क्रमहि ते कर चण्ड । सो बार आवत बहुत बीतें वर्ष दारुण दण्ड ॥ पञ्च विंशति सेरको है कहत खारी मान।बीस खारीको कहत हैं बाह सकल सुजान ॥ नहि दण्डदोबे करै यो जन यत जानि अवार । क्रोध करि सो करै ताको नाश सह परिवार ॥ वेत्रकीय स्थानमे है भूप सबरव तौंन । करत है नहि मन्द बुद्धि उपाय याको जौंन ॥ कुराजमे यहि बसत हैं उद्विग्न नित्य महान । जँह रहैं सब वर्णके वर विदुष विप्र समान॥भूप भार्य्या वित्त हैं ए तीनि सुखद अमन्द । भई सङ्गति तिहुनकी

अब हनै कारक दन्द ॥ भयो प्राप्त सो बार हमकों कष्ट कारक नेत । परो देन सु एक मानुष असुर भक्षण हेत ॥ मनुज लीजै मोल इतनो वित्त मो ढिग है न । सुहृद तनको दान यह नहि सह्यो जात अचैन ॥ छुट जासों असुरसों यह परति गति नहि जोहि । महा दुःख समुद्र बाढो चहत बोरन मोहि ॥ चहत सह परिवार राक्षस पास कोवैं गौन । दुष्ट भक्षण करो हमकों तृप्त ह्वै करि तौन ॥ कुन्त्युवाच ॥ करहु कछु न विषाद यह दुख देखिकै हे विप्र । कियो यत्न बिचार हम तो बिपति हारक क्षिप्र ॥ बाल कन्या पुत्रहैं तोइ नहि पालि हि कौन। पास राक्षस दुखदके तुम करहु न दम्पति गौन॥पाँच मेरे पुत्र तामे एक जैहैं तत्र ।बिप्र तोहित अधम राक्षस रहत बलिप्रिय यत्र॥ ॥ब्राह्मणउवाच ॥ जीव हेतन करहिंगे हम बिप्र बधको कर्म । करत हैं अकुलीन ऐसो स्वार्थ हेत अधर्म ॥ आत्म आत्मज मरण हमकों बिप्र बधतें श्रेय ।बिप्र बधके पाप कीन्हे नहीं निष्कृति अमेय। जानिकै बध बिप्रके तें आत्मबध अभिराम । आत्मबधको पाप तब जब मरै अपने काम ॥ गेह आयो आपने के सरण लहि भयदाप । ताहि त्यागें अभय मागें हने पूरण पाप ॥ नहि करत निन्दित कर्म आए बिपति धर्म बिचार । सहित पत्नी मरण हमकों श्रेय सुनहु उदार ॥ ॥ * ॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥ बिप्र रक्षण कियो चाहति बुद्धि मेरी नित्य । पुत्र शतलौं होंहि तबहूँ लहत तृप्ति न चित्य ॥ नहीं राक्षस शक्यको है विप्र मेरो पूत । महाबल बर मंत्रबेत्ता कहा राक्षस धूत ॥ जायगो यह सकल भोजन लए राक्षस पास । होयगो नहि बश्यताके लहैगो न प्रयास ॥ आइ मेरे पुत्रसों करि युद्ध असुर महान । गए ते यमलोककों तन छोडि भाजो प्रान ॥ पुत्रकों मम जीतिबेके योग्य है नहि बीर । अस्त्रबिद्या पढें सिगरी कौतुकी रणधीर ॥ यह बात मेरी द्विज न कहियो कबहु काहू पास । नहि छात्र मेरे सुतनको करि है उपद्रव आस ॥ यह बचन सुनिकै पृथाको द्विज भरे दम्पति मोद । लगे पूजन पृथाको लहि बिबिधि भाँति बिनोद ॥ गई कुन्ती सहित द्विजबर पवन सुतके पास । कहो दोन्हों बचन हम यह करहु पुत्र प्रयास ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ भीमसेन तथास्तु बोले सुनत माता बैन । जानिकै धुरधर्म पुलके बीरबर बल ऐन॥लेइ भिक्षा तहां आए बेद पाण्डव बीर। जानिकै आकार बूझो धर्म भूप गँभीर ॥ जननिसों एकान्तमे लहि महत कारण तौन ॥*॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ कियो चाहत भीम तो मन पाय कारज कौन ॥ * ॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥ बचन तें मो करैगो यहि बिप्रको उपकार । महत क्षति तें होयगो यहि नगरको उद्धार ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ कियो तुम यह महातीक्षण कर्म दुस्कर कौन । परित्याग सुपुत्रको यह साधु निन्दित तौन ॥ त्यजति अपने पुत्रकों परपुत्रके अनुराग। लोक बेद बिरुद्ध भाषत सुमति सुतको त्याग ॥ बाहुबलतें जास सोवत पाय अभया मन्द । राज्य अपनो लियो चाहत मारि दुर्जन मन्द ॥ धृतराष्ट सुत नहि लेत निद्रा जाहि करि शङ्कर्ण । भरो चिन्ता रहत है सह बन्धु बर्ग सकर्ण ॥ कढे जाके बाहुबलतें जारि लाक्षा गौन ।

हतो दुष्ट पुरोचनकों शत्रु संमत जान ॥ जास भुजबलतें सु चाहत लयो अपनो राज । युद्धमें आं०प० धृतराष्ट्र सुतकों मारि सहित समाज ॥ करो यह व्यवसाय करि कै बुद्धि धारण कौन । दुःखत ह्वै गई है का लोप मति गति भौन ॥ कुन्त्युवाच ॥ पुत्र बुद्धि विनाशतें यह कियो हम नहि कर्म। रहे यहि द्विज भौनमें ह्वै गुप्त सुखसों पर्म ॥ कियो प्रतिउपकार याके रहो चाहति नित्य । पुरुष सो उपकार प्रतिउपकार चाहै चित्य ॥ लाक्षगृह सु हिडम्बवधमें भीम बरबल भौन । जानि कै विश्वास कीन्हों भीम अति बलभौन ॥ तुम्है गजते चारि भ्राता महा विपिनि मझार । लएँ आयो गरुव सोरत लह्यो नेक न भार ॥ जन्मत हि मो क्रते जो गिरो गिरिपर चण्ड । भई जाके भारतें गिरिशिला पृथु अति खण्ड ॥ तब हि जानो भीम ह्वै है महाबल बर वीर । विप्रको उपकारकों तब कियो यह मति धीर ॥ लोभतें अज्ञानतें नहि कियो यह हम कर्म । विप्रको उपकार कीबो जानि पूरण धर्म ॥ करि विप्रको उपकार क्षत्री लहत पावन लोक । करत क्षत्रीको सु क्षत्री जान बधते रोंक॥कहत ताहि सराहि सबकोंउ धन्यबीर विराम । लहत सो अति कीर्त्तिकों दुऊ लोकमें अभिराम ॥ करत रक्षण बैश्यको जो भूप अति बलवान।प्रजा रञ्जन लहत सो दुऊलोकमें सुखदान॥

॥ * ॥ गीतिछन्द ॥ * ॥

जो शरण आएँ करत पालन शूद्रको बलधाम ।सो लहत जन्म धनाढ्य कुल में राज पूजित नाम॥ यह कहो हम सों व्यासमुनि बर बचन पावन पर्म । है कठिन करिवो तीन कीन्हैं रहत महत सु धर्म ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ द्विज कियो जो तुम त्राण माता कृपा करि अवदात । फिरि भीम यातैं आइ हैं करि जातुधान निपात ॥ यहि द्विज हि सहित कुटम्ब जैसे जननि कहतू बैन । भीमकेरो गमन यातैं पौरजन जो नैन ॥ * । वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सो रात्रि बीतत भक्ष्य लैगे भीम तँह बलदान । हो रहत जौने विपिनिमें बक जातुधान महान ॥ तब नाम लैकै लगे टेरण करन भोजन अन्न । सो भीमके सुनि बचन आयो महा क्रोधापन्न ॥ अति लोहिताक्ष कराल सिगरे अरुण जाके बाल । हो कानलों मुख फटो जाको खडे कर्ण कराल ॥ सो चलत दाबत भूमि भयकर श्यामगिरि सो काय॥ लखि किए भृकुटी भङ्ग चाबत दशन अति रिसि छाय। तँह करत भोजन अन्न देखो भीमकों बर बीर । तब कहन लागो बचन जैसें भरो क्रोध गंभीर ॥ जो अन्न मेरे अर्थ आयो करत भोजन कौन । रे महामति अन्ध चाहत कियो यमपुर गौन ॥ सुनि बैन ताके भीमसेन सु हँसत सो बर बीर । सो अन्न लागे करण भोजन महाबल धरि धीर ॥ इमि गर्जि बाऊ उठाय दोऊ पृष्ठिको दिशि आय । अति बेगसों दुऊ करण ताडो महाबल सों छाय ॥ नहि भीम ताकों गनो कछु नहि तजो भोजन भूरि । तब वृक्ष एक उखारि लै सो चलो अमरष पूरि । करि भीम भोजन पान करि जल पाणि धोय उदार ॥ तब रुण ठाढे युद्ध को अति क्रोध सु बल अगार । सो वृक्ष डारो आय तँह तब बामकरसों भीम । गहि डारि दीन्हो भूमि पै

महा तुङ्ग वर बल सीम ॥ तब लरण लागे तहणसों दोउ महा बरबल वीर । बक बोलि कै फिरि नाम अपनो गहो भीम हि धीर॥ अति भीम भुज वर युद्धमे तेहि कियो श्रमवश भूरि।तब लगे मर्दन डारि छितिपर जानुसों रिसि पूरि ॥ गहि दच्छकरसों ग्रीव ताकी बामसैं कटिबास । करि दुगुण ताको तोरि डारो भीम बरबल रास॥ रव करत भैरव तास मुखतैं वही श्रोणित धार। तब गयो तनु तजि प्राण ताको महा पापागार ॥ सो शब्द सुनि जे रहे राक्षस तहाँ सेवक तास। ते गए घरतें निकसि कै सब मृतक बकके पास ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि बकबधोनामचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆**

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तिनसों भीमसेन बलवान। समाधान करि कियो प्रमान॥ अबतें मानुष हिंसा जान। फेरि न इत तुम कीजो तान॥ कहे तथास्तु राक्षसन बैन। गए दीन ह्वै अपने ऐन॥ भीमसेन बक लयो उठाय। पुरद्वार पैं राखो जाय ॥ देखि भीम बल बकको नाश । राक्षस भजे भरे अतिचास ॥ भीमसेन करि गुप्त सरूप।ब्राह्मणके घर आए भूप॥कहो युधिष्ठिरसों बृतान्त। जो राक्षससों भयो नितान्त॥ उठे पौरजन होत प्रभात। मरो लखो तहँ बकको गात । भरो रुधिर गैरिक गिरिमान। मुदित भए जन देखि महान ॥ ते एक चक्रापुरमे जाय। कहो सु समाचार सुखदाय॥ सुनि साचरज चले जनबृन्द। पुरके छोटे बडे नरिन्द॥ बिस्मित भए देखि जन पर्म। बक बध समुझि अमानुष कर्म॥ जानि गणित करि सबको बार। द्विजसों बूझन लगे उदार॥पांडु सुतन कहँ विप्र छपाय। कहन लगो इमि बैन बनाय । रोवत देखि हमै एक विप्र। मंत्रसिद्ध इत आयो छिप्र॥ पुर सह मेरे रोझो छोभ । तब यह मोसों कियो निदेश ॥ हम लै जैहैं ताको अन्न । मोहित होउ न भय आपन्न॥ सो लै गयो अन्न बक पास । तेहि यह कियो कमसुखरास॥ यह सुनि चारोवर्ण सुपर्म। ब्राह्मण पूजन कियो सधर्म। पुरजन स्वगृह गए सुखरास। तब कीन्हो तहँ पांडव बास ॥ जनमेजयउवाच॥ करि बकबध पांडव धृत धर्म। फेरि कियो आगें का कर्म॥ वैशम्पायनउवाच॥ तेहि बधि रहे तहाँ बक मारि। वेदाध्ययन करत ब्रत धारि॥ कछु दिन बीतें ब्राह्मण एक। बसो आनि तहँ भरो बिबेक॥ ताको करि पूजन तेहि विप्र। बासस्थान दियो शुचि छिप्र॥ देशान्तरकी कथा अनूप। कहन लगो सो द्विज वर भूप॥ सह कुन्ती पांडव तहँ जाय।सुनत सो बिधिवत श्रुति [illegible]॥ कहो सो तेहि यह कथा अनूप। है पाञ्चाल देशको भूप॥द्रुपद सुता ताकी छबि रास। [illegible] तास॥धृष्टद्युम्न महाबल धाम।सुता द्रौपदी सुषमा भौन॥ यज्ञागिनि तैं भए [illegible] अभिराम॥ यह सुनि पांडव कथा अनूप।तब पूछो सह पिस्तर भूप॥

पांडवा जचु ॥ * ॥ इनको जन्म सहित बिस्तार । कहहु विप्र हे सुमति उदार ॥ लही शस्त्र शिक्षा किमि क्षत्त । धृष्टद्युम्न द्रोणसों दत्त ॥ पूर्व द्रोणसों अतिहि बढाय । तज्यो द्रुपद क्यों सख्य शुभाय ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ ऐसे सुनि पांडवके बैन । सविधि लगो द्विज कहन सचैन ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ भरद्वाजतें द्रोणोत्पत्ति । भई यथा लहि कामासक्ति ॥ द्रुपद मैत्री शस्त्राभ्यास । फेरि सख्यको यथा विनास ॥ परशुराम शरविद्यादान । कियो द्रोणको ज्यों सविधान ॥ द्रोण शिष्य कुरुकुल अभिराम । भए लहे जिमि शस्त्र ललाम ॥ सु गुरुदक्षिणा पन करि जौन । पारथ गहो द्रुपदकों तौन ॥ दियो बठाय द्रोणकह राज । जीति द्रुपदकहँ सहित समाज ॥ प्रथम कथा यह बरणी जौन । द्विजबर कही फेरि सो तौन ॥ प्रथम कथा यह सब हम कही । फेरि कहत मति गति अमलही ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ द्रुपद अमर्षी नृपअभिराम । ढूढत फिरत विप्र तपधाम ॥ पुत्र जन्मको धरि हिय हेत । महा शोचसों पूरित चेत ॥ चहत द्रोणसों लीन्हों बैर । राज्य हरणको पूरण मैर ॥ जानत द्रोण प्रबल अति मान । श्वास लेत भरि शोच महान ॥ प्रतीकार करिबेके हेत । ढूढत द्विजबर तपस निकेत ॥ गङ्गा यमुनाजूके तीर । बसत जहाँ मुनि पुण्य शरीर ॥ बसत जहाँ ब्राह्मण तपधाम । भ्रमत गयो तँह भूप ललाम ॥ याज उपयाज विप्र तँह भूप । देखे भरे तेज तपरूप ॥ कन्या सम्भव कर्ण समान । दोऊ सहोदर श्रुति पथ मान ॥ जाय द्रुपद नृपतिनके पास । कहो बिनीत मानि बिश्वास ॥ जानि भरो तपबल उपयाज । कहोविनीत द्रुपद महराज ॥ जैसें होय पुत्र बलवान । हनै द्रोणकों समर अमान ॥ करऊ कृपा करि सो क्रतु क्षिप्र । देहों गो अर्बुद बरविप्र ॥ तुमकों वांछित ह्वैहै जौन । देहौं सकल सुनऊ द्विज तौन ॥ कियो न यह सुनि कै स्वीकार । मुनि उपयाज विवेक उदार ॥ यह सुनि भए उदास न भूप । सेवा करत रहे अनुरूप ॥ गयो एक संवत्सर बीति । तब उपयाज कहो यहि रीति ॥ याज हमारो भ्राता जौन । महा लुब्ध करि है यह तौन ॥ ताके पास जाइए भूप । सो कराइ है मख अनुरूप ॥ सुनि उपयाज वचन क्षितिपाल । गयो याजके आश्रम हाल ॥ अयुत आठ देकै अभिराम । गऊ सु दुग्धवती छबिधाम ॥ मुनिको करि पूजन अनुरूप । तासों कहो बचन इमि भूप ॥ अर्बुद एक देहँ हम गाय । तुमसों मुनिबर यज्ञ कराय ॥ द्रोण बैर पावकको ताप । हरऊ बरसि अनुकम्पा आप ॥ द्रोण महाबल तपको धाम । महाबीर जेता रणमाम ॥ ब्राह्म क्षात्र दोनो धरि धर्म । महा धनुर्धर बेधक मर्म ॥ क्षत्रतेजतें ब्राह्मणतेज । होत अधिक अतिभरो मजेज ॥ यातें डरि आयो तव पांहि । अति तेजोमय गुणि भू माहि ॥ अधिक द्रोणसों तुम द्विज पर्म । ब्रह्म कर्मसों भरे सधर्म ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

द्रोणनाशकर पुत्र जो प्राप्त होय ज्यों मोहि । याज करऊ सो कर्म गो अर्बुद देहौं तोहि ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यह सुनि याज यज्ञ बिधि कर्म । नीकी भाँति बिचारि सु धर्म ॥ महत कर्म चितमे अनुमान । लिय उपयाजहि बोलि सुजान ॥ नाश द्रोणको करिबे हेत । याज बिचारो कर्म सचेत ॥ यज्ञ द्रव्य सब लयो मगाय । अरु ऋत्विज बोले शुचिकाय ॥ यज्ञ करण लागो मुनि याज । लए बेद बिद बिप्र समाज ॥ कहो याजमुनि नृपके पास । सुत कन्या ह्वैहै छबिरास ॥ पुत्र महाबल वीर उदार । रणदुर्जय दुर्जन हन्तार ॥ रणमे करिहि द्रोणको नाश । महा बीरवर बलको राश ॥ याज समाप्ति यज्ञकी पाय । रानीसों इमि कहो बोलाय ॥ मोढिग आवऊ शुचिता धारि । सुत कन्या लीजै सुकुमारि ॥ * ॥ राज्युवाच ॥ * ॥ * ॥ ऋतुस्नानसों शुचि व्है विप्र । तब तो ढिग आंऔंगी छिप्र ॥ हौं सुतार्थिनी बांछित चेत । तबलौं रहऊ सु मोप्रिय हेत ॥ * ॥ याजउवाच ॥ याज हव्य जो कीन्हों सिद्ध । किय उपयाज सो मंत्र समृद्ध ॥ सो का काम न देय ललाम । रानी रहऊ जाऊ कै धाम ॥ * ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ * ॥ यह कहि याज अग्नि मुखतीन । दियो हव्य सुतकल्पित जोंन ॥ परत हव्य पावकमे भूप । प्रगट भयो सुत देवस्वरूप ॥ * * * * * *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

ज्वाल वर्ण सु घोर रूप किरीट धारें बर्म । खड्ग धनु शर लएँ निनदत बेर बेर सो धर्म ॥ अग्नि तें सो निकसि तबही चढो रथपर बीर । देखिकै पांचालजन जय कियो शब्द गँभीर ॥ भूपको भो शोकहर बर द्रोणहा करि युद्ध । सुनो सबहिन गगण बानी भई उन्नत शुद्ध ॥ मख कुंडतें फिरि कढी कन्या भरी रूप ललाम । लसति श्यामा कमल नयना कुंचितालक माम ॥ करज राते पीन उरसिज बनी भोहँ अनूप । धरें मानुष बेश प्रगटी परम शक्ति स्वरूप ॥ नील उत्पल सदृश जाको गन्धकोश प्रमान । रहत पसरो रूप जाके होति कौन समान ॥ देव दानव मनुज जाको चहत अद्भुत रूप । गगणवाणी भई ताके प्रगटहोत अनूप ॥ हेतु है यह छत्र कुलके नाश को बर बाम । करैगी सुरकार्य लहिकै समय अति अभिराम ॥ यहि हेत कौरव बंशको क्षय होय गो अतिमान । यह सुनत जन पांचाल हर्षित कियो शब्द महान ॥ द्रुपद महिषी याजसों इमि कहे बचन सुधन्य । मोहि तजि ए पुत्र जननी नही जानै अन्य ॥ कहो याज तथास्तु तासों होय कै संतुष्ट । कियो तिनको नाम बिप्रन्ह दक्षिणा लहि पुष्ट ॥ धृष्ट भाषण माहि अरु भो बित्तवत बर रूप । धृष्टद्युम्न सुनाम याते द्विजन राखो भूप ॥ द्युम्ननाम सुबित्तको है कहतहै मतिमान । शस्त्रादि है सब क्षत्रियनको बित्त परम महान ॥ धृष्टद्युम्न सु भयो तेजस्वी महाबल धाम । कहो कृष्णा कन्यकाको देखिकै तनश्याम ॥ भये पुत्र सु कन्यका यों द्रुपदके मखमाह । गए तिनकों धाम अपने लेइ कै नरनाह ॥ अस्त्रबिद्या दियो ताकों द्रोण अति मतिमान । अमिट भावी जानि कीबे हेत सुयश महान ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ यह सुनत कुन्ती पुत्र सिगरे शल्यबिद्ध समान ।

भए तेहाँ चलो चाहत महामति बलवान ॥ देखि कुन्ती सुतनको तँह चलो चाहत चित्त। लगी कहिबे धर्मसों इमि सत्यबादिनि हित्त ॥ *॥ कुंत्युवाच ॥ *॥ बऊत दिन एहि रम्य पुरमे रहे द्विजके धाम। लखे सिगरे बिपिनि वापी चारु थल अभिराम ॥ मिलति है अब नही भिक्षा इतै भक्ष्य समान। सु भिक्ष है पाञ्चाल देश सु चलै तहँ सुखदान ॥ यज्ञसेन महीप सुनियत ब्रह्म भक्त ललाम । बऊतदिन एक ठैार रहिबो होत नहि अभिराम ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुमत तुमकौं जान कारज सुहित हमकौं तौन । मम कनिष्ठनकी बात मन की हम न जानत जौन ॥

॥ *॥ वैशम्पायन उवाच ॥ *॥ *॥ दोहा ॥*।

सुनि ब्राह्मणसौं सो कथा तहाँ रहे कछुद्योस। करत परीक्षा व्यास जो कहो आगमन ओस॥

॥ *॥ रोलाछन्द ॥ *॥

कहो कुन्ती सुतन सौं जब गमन कीवैं बैन। बिप्र सौं तब लई आज्ञा भरे पाण्डव चन॥ कियो पुर पाञ्चालकौं प्रस्थान धर्म नरेश । तहाँ आए महा मुनिबर व्यास पुण्यदिनेश॥ देखि आवत व्यासकौं चलि गए आगैं धर्म । सहित भ्रातन्ह दण्डवत करि कियो पूजन पर्म ॥पाय आज्ञा जाय बैठे पांडुसुत मुनिपास। कुशल बूझि सु कहन लागे महामुनि इतिहास ॥ *॥ व्यासउवाच॥ रही बनमे महा मुनिकी कन्यका अभिराम। भरी लक्षण सकल साध्वी रूप गुणकी धाम॥ पूर्व जन्मज कर्मकौं लहि भई बिधवा तौन । नही ताका मिलो सुखकर सङ्ग पतिको जौन ॥ पत्यर्थ तप तेहि कियो तातैं भए शङ्कर तुष्ट।कहो तासो मागिवैं बर कामना कर पुष्ट ॥ पञ्च आवृत तेहि सु मागो भरो गुण भर्त्तार ।कहो शङ्कर पञ्च मिलि हैं तोहि सुपति उदार॥ तेहि कह्यो कन्ये एक माग्यो बरद बर अभिराम। पञ्चपति मोहि देत कैसैं ईश करुणाधाम॥ कहो शङ्कर पञ्च आवृत मोहि मागो जौन। लहहुगी तुम पञ्चपति धरि अन्य देह सु तौन ॥ द्रुपदके यज्ञाग्नि त सो भई प्रगट ललाम । बिहित बिधिसो तुम्हे पती मिलैगी छबिधाम ॥ जाऊ अब पाञ्चाल पुरका तौन पती पाय । होऊ गे लहि सुखित आगैं परम श्री सुखदाय॥ यहि भाँति कहि कै पांडवन्हसे। गए मुनिवर व्यास ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ गए जब मुनि व्यास पांडव भरे मोद ऊलास॥ चले उत्तर दिशाकौं करि जननि आगे सर्व । गए शङ्कर तीर्थ जेहाँ परमपूत अखर्व ॥ गए पांडव निशामे चलि सुरशरीके पास । लए उलमुक पार्थ आगें चलत हेतु प्रकाश ॥ गन्धर्व तँह जल्ल माहँ क्रीडा करत बनितन सङ्ग। देखि इनकौं चले आवत भरो क्रोध उमङ्ग ॥ तानि कै धनु बाण बोलो बचन यों गन्धर्व। भई संध्या घोर इत सञ्चार समय न खर्व ॥ असीलव निशि उपरि सरिता निकट मनुज न जात। गन्धर्व राक्षस यक्ष कीन्हे गमन करत बिघात ॥कहत निन्दित नदी तटको गमन निशिमें तज्ञ॥ सबल राजा जाय नहि का ग्रौर मानुष अज्ञ ॥ गन्धर्व हैं। अङ्गारपर्णसु महा बलको धाम। नही जानत चलो आवत अरे मानुष चाम॥ *॥ अर्जुनउवाच ॥ *॥ समुद्र

७५० हिमगिरि पार्श्व सुरसरि निकट आवत रोध। दिवस निशिमें कहत है को महा मूर्ख अबोध॥ मुक्त होय अमुक्त के निशि दिवसमें अभिराम। नियम काल न कहूँ सुरसरि गमनमें मतिधाम॥ शक्ति तें सम्पन्न हैं हम तोहि धर्षण योग। नहि युद्धबेत्ता तुम्हें पूजत मनुज दुर्बल लोग॥ कालिंदी सरस्वती गङ्गा गण्डकी अभिराम। गोमती शरजू रथस्था सप्त सरित ललाम॥ नदी हैं ए पापहारिणि पुण्य पावनि सर्व। पास इनको जाइवेको काल नियम न खर्व॥ जात गङ्गा निकट बारण करत हो तुम जौन। है सनातन धर्म नहि तो कहो मानै कौन॥ वैशम्पायनउवाच॥ अंगारपर्ण सो सुनत ऐसें क्रोध करि अति मान। तानि कै धनु लगो छोडन विशिख निसित महान॥ सुंफिराय उल्मुक पार्थ कीन्हे बाण ताके भंग। यथा नलिनी नाल तोरत दिरद दुर्मद अंग॥ ****

॥*॥ अर्जुनउवाच॥*॥ जयकरीछन्द॥*॥

मोहि देखावत भीति अयान। हौं क्षत्री अस्त्रज्ञ महान॥ डारत अस्त्र अमोघ अरुद्ध। छोडि देऊ यह माया युद्ध॥ वैशम्पायनउवाच॥ यह कहि अर्जुन क्रुद्ध महान। छोडो अग्नि अस्त्र सम भान॥ तेहि दीन्हों रथ तास जराय। खेचर गिरो भूमिपर आय॥ ज्वलित अङ्ग अति मूर्छा छाय। गन्धर्व गिरो धरणीपर आय॥ पार्थ पकरि कच खैचत बीर। लैगे जहाँ जुधिष्ठिर धीर॥ तब गन्धर्व की भार्य्या जौन। शरण युधिष्ठिरके गइ तौन॥ ताको कुम्भीनसी सुनाम। त्राण कियो चाहति पति आम॥*॥ गन्धर्वउवाच॥*॥ रक्षित करऊ मोहि बरबीर। छोडऊ पति मो कृपा गँभीर॥ ॥*॥ युधिष्ठिरउवाच॥*॥ रणमे हारो यशते हीन। बाम सहाय जास अतिदीन॥ ताहि हने का सुयश गँभीर। याको तजऊ पार्थ बरबीर॥*॥ अर्जुनउवाच॥*॥ जाहि जिवो गन्धर्व अनूप। दीन्हों अभै युधिष्ठिर भूप॥*॥ गन्धर्वउवाच॥*॥ जीते गए समरमे आम। अङ्गारपर्ण हों तजि हो नाम॥ तुमसों दिव्य शस्त्रधर धीर। भयो समागम लाभ गँभीर॥ है गन्धर्व सुमाया जौन। दियो चहत अर्जुनको तौन॥ हम करि पूर्व तपस्या माम। यह बिद्या पायी अभिराम॥ रणमे जीति पकरि बलवान। छोडि देत जो रिपुको प्राण॥ सो कल्याण लहत बरबीर। नाना भाँति सुनऊ रण धीर॥ दयो सोमको मनु अभिराम। बिद्या परम चाक्षुषी नाम॥ बिश्वावसु सो शशिसों पाय। मोहि दई बिद्या सुखदाय॥ औ गुरुदत्त लहै नर खर्ब। होय नष्ट बिद्या शुचि सर्ब॥ यहि बिद्याको बीर्य्य महान। कहत तौन सुनिए सुखदान॥ चहै चक्षुसों देखो जौन॥ परै यथास्थित देखि सु तौन॥ एक चरण तप करि षटमास। तब यह बिद्या लही प्रकाश॥ बिना किएँ ब्रत तुम्है सो देत। देखि तुम्है सबभाँति सनेत॥ यह बिद्या लहि कै अभिराम। देवन सदृश भए क्षतकाम॥ जे गन्धर्बज अश्व अनूप। देव जान जे मनगति भूप॥ दृढ़ होत नहि क्षीण खसात। महा तेजमय सम बर बात॥ शत शत पाचौ भ्रातन्ह तौन। देहौं अश्व महागति जौन॥ पुरा इन्द्रके शीष प्रहार। कियो वृत्रको द्वन्द्व उदार॥ शतधा फूटि बज्र सो गयो। सुरन बटोरि

खंड सो लयो ॥ ताको सुरन्ह लगायो भाग । सकल जगतमह सह अनुराग॥ सहित सार जो बस्तु प्रसंश। तामे प्रबल बज्रको अंश ॥ द्विजके पाणि वज्रको वास। छत्रीके रथमांह निवास॥ दान वज्र है वैश्य सुजान। शूद्रसो काम बज्र सुखदान॥ रथमे हय है मुख्य ससत्व। याते तिनमे है बज्रत्व ॥ गन्धर्वज जे अश्व अखर्ब । करिहै सिद्ध काम ते सर्व ॥ जनमे अश्व जो वडवासूर। रथ बाहक अति बलको पूर ॥ यथा काम जब कामज वर्ण । प्राप्त होत कीन्हे अस्पर्ण॥ *❁*❁*

॥ * ॥ अर्जुनउवाच॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

प्रीतितें के भीतितैं तुम देत बिद्याजौंन । सुनहु हे गन्धर्व हमकौं लेत रुचत न तौंन॥ गन्धर्वउवाच॥ * ॥ संयोग जो बर नरनको सो प्रीतिकर अभिराम । प्राणदान सुप्रीतितौं हम देत बिद्या माम॥ लेहिगे अग्न्यस्त्र तुमसो परम उत्तम जौंन। योग्य है प्रतिदान तुमको सुनहु पारथ तौंन॥ अर्जुनउवाच ॥अश्व देकै लेहिगे गन्धर्व तुमसो अर्ब। कियो हमहि जो देखि धर्षण कहहु कारण सर्ब ॥ चले आवत निशामे हम बेदबिद सम बिप्र। देखि हमको कियो बाधा धनुष धरि जो क्षिप्र॥ * ॥ गन्धर्वउवाच ॥ * ॥नहो आश्रम चारिमे नहि बिप्र अनुग निहारि।कियो धर्षित तुम्हे यातैं दूरितें निरधारि॥ देव दानव नारदादिक ब्रह्मऋषि जे सर्ब। पढत हैं कुरुवंशको यश सुनो तीन अखर्ब॥ बेद औ धनुवेदमे हैं बिदित तो आचार्य्य।धर्म वायु सुरेश दस्र सु पांडु अरु नृप आर्य्य॥ देव मनुज सु पितर हैं बर ए तुम्हारे पार्थ। तिन्है जानत है सु हम ह कहत तोहि यथार्थ। सकल भ्राता सूर है तव चरित जिनके पर्म। जानि कै सब भाँति तुमकौं कियो धर्षणकर्म ॥ रहत इस्त्री सङ्गमे लखि पुरुष आवत आन। क्षमा नहि करि शकत हैं जे बीर बर बलवान॥बल बढत रजनीमे हमारो भरो भूरि प्रताप।कियो बनिता सङ्गतैं अति क्रोध प्रबल प्रलाप॥ गयो जीतो युद्धमे हौं कहत कारण तौंन। हौं जितेन्द्री सकल तुम बर युद्धकर बल भौंन॥ औ र कामासक्त छत्री लरत मोसौं आय। निशामे हे सुनहु पारथ शकत जियत न जाय॥ जौंन कामाशक्त छत्री करि पुरोहित बिप्र । पाय ब्रह्म प्रसाद जीतै निशाचरगण क्षिप्र ॥ सत्यबादी बेदबिद तपमय पुरोहित जास । लहत जय सो जियत भूपति मरैं सुरपुर बास ॥ करत रक्षण राज्य श्रीको धर्मको अभिराम । सदवृत्त जाको है पुरोहित बेदबिद तपधाम ॥ लहत केवल सौर्यसौं नहि बिजय भूप महान । पाय बिप्र सहाय ताको होय अनुग सुजान ॥ नियत यह तापत्य कुरुकुल बंशबर्द्धन बीर । बिप्रप्रमुख नरेश पावत ऋद्धि सिद्धि गभीर ॥ *॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ तापत्य हमकों कहो सो को हुतो तपती बाम । कहहु सो गन्धर्व हमको ते यहै अभिराम ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ *॥ पार्थके सुनि बचन ए गन्धर्व परम सुजान। कहन लागो पूर्ब सो वृत्तान्त सुखद महान॥ * ॥गन्धबउवाच॥ *॥ भई तपती भानुकन्या जोतिमय समसूर। नही जाके

आ॰प॰ सदृश बनिता जगतमें छबिपूर ॥ प्राप्त यौवन देखि ताको भए चिन्तित भान। लहत नहि भर्त्तार ताके रूप शील समान॥कुरु बंशमे सुत ऋक्षको सम्बरण भो अभिराम।करत सो रबिको उपासन सबिधि पूजन नाम ॥सदृश तपती के बिचारो तास लखि रबिरूप।दियो कन्या चहे। ताकों जानि कै अनूरूप॥ एकाकी सम्बरण बनकों गयो मृगया हेत।तृषापीडित अश्वताको गिरो तहँ गत चेत॥ सम्बरण बनमे व्है पदाती फिरण लागो भूप। तहाँ कन्या जोतिमय एक लखी श्रीसम रूप॥ नहो तीनोलोकमे तिय तास रूप समान । धरें तियतन जोति रबिको भूमि पै सुखदान॥ ताहि लखी मदनाग्निसों व्हें तप्ततन अति भूप । सम्बरण नृप तब लगो बूझन बोलि वचन अनूप॥ कौँन हो तुम कौन की यहि बिपिनिमे का काम।हो अकेली फिरति सुन्दरि रूप कैसी धाम॥असुर सुरजा किन्नरी गन्धर्व मनुजा जौँन।आजुलों नहि लखी तोमस बाम छबिकी भौंन ॥कमलनयने चन्द्रमासों बदन तो अभिराम । देखिकै मन मथत मेरो महा उन्मद काम ॥ कहो ऐसैं भूप तासों नहो बोली तौँन।बोजुरीसी दूर देखत कियो नभकों गौँन ॥ताहि ढूढन बिपिनिमे सम्बरण लागे भूप। लहो ताहि न फेरि चहुँदिशि भए व्याकुल रूप ॥ मदन मोहित गिरो क्षितिपर भूप अति अभिराम । देखि तपती फेरि आई तहा छबिको धाम ॥ उठहु उठहु महीप ऐसैं मधुर बोली बैन। होइ गो कल्यान तो नृप मोह जोग्य तुम्है न ॥सुनत नृप सम्बरण ताके मधुर वचन ललाम। स्खलित बोले बैन मुखतैं मोह मण्डित काम ॥ ऐासि मोकों भजहु तुमका उचित है सुखदान। मनहु मोकों काम शरतैं व्यथित छोडत प्राण ॥ सुनो जीवित राखिवेकों हौं न होत समर्थ। भयो किङ्कर रावरो मनमथ्य मारत व्यर्थ॥कृपा करि कै सुनहु सुन्दरि भजहु यातैं मोहि। जानि अपनो भक्त मेरो त्याग उचित न तोहि॥ व्याह करि गान्धर्व मोकों भजहु हे छबिधाम । व्याहमे गान्धर्व मुनिगण कहत हैं अभिराम ॥ * ॥ तपत्युवाच ॥ * ॥ नहो हौं स्वाधीन कन्या पितावश कुल धर्म। सोहि मागहु पितासों जौं प्रीति मोमे पर्म्म॥ हैं परस्पर चित्तहारी सुनहु हम तुम भूप। मोहि लखि तुम बिकल तैसैं देखि हौं तो रूप ॥ पिता भयतें निकट तो नहि शकति आय उदार। कौन कन्या चहति हे नहि प्राणपति भर्त्तार॥ भानु मेरे पिताको तुम जाय मागहु भूप। नमस्कार सु नियम ब्रत करि कृपा युक्त अनूप ॥देहि तुमकों मोहि तौ हो हौंउ पत्नी नाथ। रावरेकी होय अनुचर दाससें जौं साथ ॥ सावर्णिसों हों कनिष्ठा हे भानुकन्या भूप। नाम तपती कहत मेरो [illegible] तीन स्वरूप ॥ * ॥ गन्धर्वउवाच ॥ * ॥ यहि भांति कहि सो गई नभकों भानुजा अभि राम।[illegible] भूपति गिरे क्षितिपर व्यथित कीन्हों काम॥ सचिव ढूढत सहित सेना भूपकों मति [illegible] परो क्षितिपर बिगत सँज्ञ सुजान॥ * * * * * * *

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

लखि सम्बरण भूपपहँ आयो । सचिव महा शोकानल छायो ॥ दौरि उठाय भूपकँह देखो । कामानलसों मोहित लेखो ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

वृद्ध कुलीन सचिव मतिमान । हरषो देखि भूप सह प्राण ॥ फिरि शुभ मधुर कहे कल बैन । तजु भय भूप होय गो चैन ॥ क्षुधा पिपासा व्यथित बिचारि । मुख शिर सींचो शीतल बारि ॥ पुण्डरीकको मुकुट बनाय । धरत शीषपर गयो सुखाय ॥ भो सचेत जब नृप बलवान । करे बिदा सब सुभट सुजान ॥ राखो एक सचिवको पास । बैठो शिला उपरि नृपनाथ ॥ शुचि व्है कै भूपति मतिमान । लगो अराधन भानु सुजान ॥ अंजलि जोरि उर्द्ध मुख भूप । करत अराधन मति अनुरूप ॥ वशिष्ठ महामुनिको स्मर्ण । करण लगे भूपति सम्बर्ण ॥ द्वादश दिवस निशा गइ बीति । सकुल पुरोहित मुनि करि प्रीति ॥ तपतीतें हृत चित्त विचारि । दिव्य चक्षुतें मुनि तिरधारि ॥ गए बारहे दिन नृप पास । करिवैं चाहि कार्य सब तास ॥ लखत भूपके मुनि तपधाम । गए गगण पथ गहि अभिराम ॥ सुमुनि कृतांजलि रवि ढिग जाय । खडे भए निज नाम सुनाय ॥ कहो भानु लखि मुनिसों बैन । कौनहेतु आए तप ऐन ॥ इच्छा हो सो मांगऊ विप्र । देहौं तुम्है दुस्करौ क्षिप्र ॥ यह सुनि मुनि बशिष्ठ तपधाम । कहे विनीत वचन अभिराम ॥ * ॥ वशिष्ठउवाच ॥ * ॥ तव कन्या तपती है जौन । सम्बरणहेतु मागत हम तौन ॥ है राजा सो धर्म्म धुरीन । भर्त्ता तपती योग्य कुलीन ॥ सुने दिवाकर मुनिके बैन । कहन लगे मुनिसों लहि चैन ॥ सम्बर नृपनमह श्रेष्ठ कुलीन । तुम बशिष्ठ मुनिबर तप पीन ॥ तपती योषित वरा सुजान । सबतें अधिक कन्यकादान । यों कहि दिनमनि बचन ललाम । तपती कन्याको अभिराम ॥ मुनिकँह दियो सम्बरण हेत । भरे कृपासों प्रभा निकेत ॥ रविसों बिदा भए मुनिनाथ । चले लेइ तपतीको साथ ॥ चले गगणतें नृपके पास । देखि भरे सम्बरण ऊलास ॥ मुनि लीन्हें तपतीको साथ ॥ आए जहां रहो नृपनाथ ॥ विधिवत पाणि ग्रहण कराय । तपतीको दीन्हों मुनिराय ॥ मुनिबरकी लहि कृपा अनूप । भूप प्रिया पाई अतिरूप ॥ नृप मुनिआज्ञा पाय उदार । तेहि गिरि बिहरत समुद सदार ॥ बिदा होय नृपसों अभिराम । गए बशिष्ठ आपनें धाम ॥ द्वादश बर्ष रमे तहँ भूप । गिरिकानन लहि परम अनूप ॥ ताके देश नहीं जलदान । बर्षे द्वादश वर्ष प्रमाण ॥ क्षुधा पिपासाको लहि त्रास । स्थावर जङ्गम भए बिनास ॥ परो न ओस बून्द तहँ भूप । गए जीव तजि देश अनूप ॥ तजि मर्य्याद जाति कुल धर्म्म । करत भए जन कुत्सित कर्म्म ॥ भयो नगर यमपुर सम तौन । प्रेत समान करँ जन गौन ॥ लखि वशिष्ठ करि कृपा महान । बरषे तपबल व्है जलदान ॥ तपती सहित भूपको ल्याय । स्वपुर माह राखो सुखछाय ॥ फिरि बरषे सुरपति सुखदान । भई शस्य तातें अति

आ०प० मान ॥ तातें भरे प्रजा अति हर्ष। यज्ञ कियो नृप द्वादश वर्ष ॥ * ॥ गन्धर्वउवाच ॥ * ॥ तपती सो रबिसुता ललाम ॥ ताको भयो पुत्र कुरुनाम ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तातें हम तुमकों कहो हे पारथ तापत्य।तौन बिदित तुमकों कियो कथा पुरातन सत्य ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि तपती उपाख्यानवर्णनोनाम पञ्चचत्वारिंशोध्यायः ॥ *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनिकै गन्धर्वको वचन भरे आनन्द । लसे पार्थ छबिसों भरे ज्यों पुर्णको चन्द ॥

कहन लगे गन्धर्वसों यो पारथ मतिमान । चित्र भयो सुनि सुमुनिको तप बल चरित महान ॥

बंश पुरोहित पूर्व जे रहे हमारे इष्ट । बिस्तरसह ताकी कहो कथा जो सुमुनि बशिष्ट ॥

॥*॥गन्धर्वउवाच॥*॥

ब्रह्माको सुत मानसिक भयो महा तपधाम । दम समसो जेहि बश करे जीति क्रोध अरु काम ॥

क्रूर करो अपराध अति जाको बिश्वामित्र । कौशिक कुल नाशो नहो सम सरि सुमुनि सबित्र ॥

पुत्र शोकसों तन्न कै तजो न समता पर्म्म ।बिश्वामित्र बिनाशकों दारुण कियो न कर्म्म ॥

मरेपुत्र यमलोकतें फेरि ल्याइबे हेत । कीन्हों यत्न न जानिकै गुणि मर्याद समेत ॥

जाहि पुरोहित करि कियो सकल भूमि बशरूप । इक्ष्वाकु बंशमे भए जे पूर्व महाबल भूप ॥

यज्ञ कराए नृपएकों नाना भांति अनेक । यथा बृहस्पति इन्द्रको पूरोहितस बिबेक ॥

तातें कोऊ बेदबिद धर्म्मशील द्विज जौन । भरो सुगुण तपनिष्ठ तुम करऊ पुरोहित तौन ॥

सत्री चाहत बृद्धि जो कीवे राज्य समृद्ध । करै पुरोहित बेदबिद धर्म्मकर्म्म मे सिद्ध ॥

ऐसो द्विजवर देखिकै करहि पुरोहित आप। जातें दुख मिटि जाय सब सम्पति मिलै अमाप ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द॥ * ॥

॥ * ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥ बिश्वामित्र बशिष्ट सुजान । कियो बैर केहि हेतु महान ॥ आश्रम बासी राजस हीन । बैर कियो केहि कारण पीन ॥ सो हमसों सब कहऊ बुझाय । हे गन्धर्व परम सुखदाय ॥ * ॥ गन्धर्व उवाच ॥ * ॥ यह बशिष्ठ उपाख्यान प्रसिद्ध । त्रिभुनमे सब भाखत वृद्ध ॥ कान्यकुब्ज जो देश महान । गाधि भूपहो तास सुजान ॥ कुशिक बंश भूषण अभिराम । बिश्वामित्र तास सुत श्याम ॥ बिश्वामित्र सबल नरनाह । मृगया हेतु गयो बनमाह ॥ मरु थलमे मारे मृग भूरि। क्षुधा तृषा श्रमसों अतिपूरि ॥ गो बशिष्ठके आश्रम भूप। मुनि पूजन कीन्हो अनुरूप ॥ दियो वन्य भोजन अभिराम । मधुफल कन्द सुमधुर ललाम ॥ कामधेनुसों कहो

बशिष्ठ। देऊ भच्य सबकौं स्वादिष्ट॥ जाकौं भयो अभीप्सित जौन। दयो नन्दिनी ताको तौन॥ आ०प० षट रस दीन्हे अमृत समान। भच्य नन्दिनी अति सुखदान॥ रत्न बसन भूषण अभिराम। सबका दिये यथा मनकाम॥ पीनं ऊध मंडुकसम नैन। सुन्दरि पुछ शृङ्ग छविऐन॥ ग्रीव दृष्टिसु आयत पृष्ठ। देखि भयो भूपति सन्तुष्ट॥ देखि नन्दिनिहि बिस्वामित्र।लगो सराहन भरो चरित्र॥ देखि नन्दिनिहि पूरित चैन। ऋषिसौं कहन लगो इमि बैन॥ *॥ बिस्वामित्र उवाच॥ *॥ अर्बुद गाय घटोध्नी लेऊ। हे मुनि मोहि नन्दिनी देऊ॥ *॥ बसिष्ठउवाच॥ *॥ देव पितर यज्ञारथ जौन। नृपति अदेय नन्दिनी तौन॥ *॥ बिस्वामित्र उवाच॥ *॥ हौं चत्री सबविधि बलवान। तुम द्विज लेत वेद पढि दान॥ तपकरि शान्त वृत्ति बलहीन। हौं भूपाल सकल विधि पीन॥ नहि देहौ लै अर्बुद गाय। तौ लेहौं बरबश छोरवाय॥ *॥ बसिष्ठउवाच॥ *॥ जौ तुम भूप प्रबल बरबीर। तौ लेइ जाऊ करऊ मतिधीर॥ *॥ गन्धर्वउवाच॥ *॥ बिस्वामित्र सुनत यह भूप। हरी नन्दिनी गाय अनूप॥ कसा दण्डसौं मारत घेरि। भजति नन्दिनी मुनि दिशि हेरि॥ खडी भई मुनि सन्मुख जाय। हम्मा शब्द बोलि सो गाय॥ *॥बसिष्ठउवाच॥ *॥ तो रव सुनियत रुदन समान। हरत भूप यह प्रबल अयान॥ कहा नन्दिनी कीजै यत्न॥ चमा त्यागत होत प्रयत्न॥ गौरुवाच॥ कसा दण्डसौं मारत मोहि। मुनि अनाथलौं देखत तोहि॥ *॥

॥ *॥ रोलाछन्द ॥ *॥

॥ *॥ गन्धर्वउवाच ॥ *॥ नन्दिनीको सुनत क्रन्दित लखत दंड प्रहार। धैर्यसो नहि चले मुनिवर चमासिन्धु अपार॥ तेज बलबर होत चत्री चमा बल द्विज जौन। चमा मोहि न तजति नन्दिनि रुचै कीजै तौन॥ *॥ नन्दिनी उवाच॥ *॥ कहा मोकौं तजतहौ मुनि कहत ऐसे बैन। त्याग बिनु तव मोहि हरिवैं योग्य को बल ऐन॥ *॥ बसिष्ठउवाच॥ तजत तुमकौं नन्दिनी नहि रहऊ जौ बल गात। बस तो दृढ दामसौं नृपबाधि लीन्हे जात॥ रहऊ यह सुनि बचन मुनिके भई रुद्र स्वरूप। अरुण चख करि ऊर्ध ग्रीवाँ कियो घनरव भूप॥ सैन बिस्वामित्र की बऊ शृङ्ग घात चलाय। क्रोध करिकै दौरि चऊदिशि दियो दूरि भजाय॥ क्रोध करिकै पुछतैं अङ्गार बरषो भूरि। जरन लागी सकल सेना महा भयसौं पूरि॥ करे पैदा अङ्गते सब सबर म्लेछ अनन्त। धरे आयुध कवच कार्मुक सुभट कारक अन्त॥ बीर नाना भाँतिके अति काय बिबिध स्वरुप। लगे बिस्वामित्र सेना मारि मरदन भूप॥ एक एक सुभटन प्रति ते सप्त सप्त प्रमान। हनन लागे घेरि चऊदिशि तैं अजेय महान॥ अस्त्रवर्षे भाँति नाना व्यथितव्है चतुरङ्ग। चमू बिस्वामित्रकी चऊँ ओर भाजी भङ्ग॥ नहि मरे कोऊ म्लेछते रण रङ्ग राते बीर। भजी सेना कौशिको अधमरी होय अधीर॥ चमू बिस्वामित्रकी गइ भाजि योजन तीनि। नहो रचण भयो

आ॰प॰ कौशिक रहे देखत दीन ॥ नन्दिनी फिरि गई मुनि ढिग भजी सेना चाहि। देखिकै मुनि लगे लालन करण ताहि सराहि ॥ ब्रह्म तेज बिचारिकै अति चंड परम प्रशक्त। क्षात्र बलसों भए बिश्वामित्र देखि बिरक्त ॥ धिक्कार है यहि क्षात्र बलको ब्रह्मबल बल तीन। महाबल सो होत है तपतेज सम्भव जौन ॥ बिचारिकै यह ऋद्धि राज्यसमृद्धिकों सब त्यागि। भोग सो ह्वै बिमुख लागे करण तप अनुरागि ॥ लोक तपके तेजसों अति तप्त कीन्हे सर्व। पियो सोम द्विजत्व लहिकै इन्द्र सङ्ग अखर्व ॥ * ॥ गन्धर्व उवाच ॥ * ॥ इक्ष्वाकु वंशज भूपहो कल्माषपाद ललाम। गयो मृगया हेत बनमे हने मृग अभिराम॥श्रांतह्वैकै चलो बनते सो अकेलो भूप।यजमान बिस्वामित्र ताकों कियो चहत अनूप ॥ संकीर्ण बन पथ गहे आवत तृषापीडित तौन।बसिष्ठको सुत लखो आवत शक्ति जेष्ठो जौन॥छोडि मेरो देऊ पथ यों कहो भूपति ताहि। तजऊ मोपथ भूपसों इमि कहो मुनिसुत चाहि॥ कहत ऐसे दुऊनसों बढि बाद गो अतिमान।हनो भूपति कसासों मुनि पुत्रकों बलवान॥ कसाको लहि घाव मुनिसुत भरो क्रोध उताप। दियो ऐसे शाप ताकों भरो सुतप प्रताप ॥ होय राक्षस सदृश मोकों हनो है तुम भूप। होऊ राक्षस मनुज भक्षक धरऊ अधम स्वरूप ॥ गच्छ राजा अधम ह्वै नरमाँस भक्षक लुब्ध। फिरऊ क्षितिपर कहो ऐसे शक्ति मुनिसुत क्षुब्ध ॥ समुझि पहिलो बैर बिश्वामित्र गुप्त स्वरूप। तहाँ आए जहाँ कीन्हों कर्म्म ऐसो भूप ॥ समुझि पुत्र बसिष्ठको नृप शक्तिकों तपधाम। शरण चाहो गहनकों जब जानि अपनो काम ॥ पढै राक्षस दियो कौशिक मन्त्र बल तब छाय। कियो त्वरित प्रवेश नृपको देहमे तेहि आय ॥ बसो किङ्कर नाम राक्षस भूपके हिय बीच। गए बिश्वामित्र तब यह जानि करि छत नीच॥ राक्षसान्तर बशेतें कल्माष नृप मति मान। भयो पीडित चलो तह तें नष्ट ह्वै गो ज्ञान ॥ चलत बनतें मिलो नपकों क्षुधा पीडित बिप्र। सहित आमिष अन्न मागो भूपसों तेह क्षिप्र ॥ कहो नृप कल्माष तासों रहऊ इत आसन्न। कछू क्षणमे आइकै हम तुम्है देहैं अन्न ॥ इतै उत फिरि भूप सोयो भौन भीतर जाय। जागि आधी रातिमे इमि कहो सूद बोलाय॥ भक्ष्य मागो बिप्र मोसों बिपिनि ढिग तहँ जाय। सहित आमिष अन्न ताकों देऊ पाक बनाय। यहि भाँति सुनिकै भूपसों करि सूद महत प्रयाश।नहो पावत कछ आमिष कहो नृपके पाश॥कल्माष राक्षस स्ववश ऐसे कहो तासों बैन। देऊ लै नरमांस जो कछ और माँस मिलैन॥बद्ध नरको होत जँह बध सूद तेहाँ पाय।मांस मानुष ल्यायकै करि पक्व दीन्हो भाय ॥ दिव्य चखसों जानि ब्राह्मण मनुज मांस अभक्ष। क्रोध करिकै कहो यातें होऊ भूपति रक्ष ॥ शक्तिको हो शाप पहिलें भयो फिरि यह ओर।तीसरे हिय मध्य राक्षस भयो भूपति घोर॥ एकयोस बनमे फिरत बेखो शक्तिकों अभिराम। कहो दीन्हौं शाप मोकों लेऊ सो फल आम ॥ तुम्है यातें खातहों अब जाऊ यमके गेह। पकरिकै तब शक्ति मुनिकी कियो भक्षण देह ॥ शक्तिको लखि मरण कौशिक कहो भो फिरि ताहि। बसिष्ठके शत पुत्र भक्षण हेत बऊत सराहि ॥

बशिष्टके शत पुत्र ऐसे लियो तेहि नृप खाय। यथा मृगपति धायकै मृगजूथ रहित सुहाय॥ सुने कौशिक हने शत सुत भरे शोक महान। यथा बाडव अग्निका हिय मध्य समुद्र अमान॥ कियो अपने मरणको मुनिराज नियत विचार। नही कौशिक नाशकों हिय धरो क्रोध उदार॥ मेरुके चढि शृङ्ग ऊपर गिरे मुनिबर जाय। परे जापर शिला सो भइ तूलसम सुखदाय॥ मरे नहि गिरि शिखर तें तब कियो अग्नि प्रबेश। महा इन्धन बृद्धि ज्वाला भई शीतल भेश॥ बाँधिकै गुरु शिला गरसा सिन्धु जलमें जाय। शोक पूरित गिरे मुनिबर मरण इच्छा छाय॥ दियो बाहेर काढि मुनिकों सिंधु लहरिन्ह माम। खिन्न व्है कै गए मुनिबर फेरि आश्रम धाम॥ सुतन्ह बिनु सो देखि आश्रम भरे शोक समूह। चले कढि फिरि गहन गिरि से मरण कीन्हे ऊह॥ नदीबर्षा काल की लखि बढी शरय तरङ्ग। गिरे यामे ताधि अपने पास सों सबअङ्ग॥ तोरि सरितैं पास दीन्हो काढि सो तप धाम। सो बिपासा नाम तबसों लही अति अभिराम॥ शोक सों भरि गहन गिरिमे फिरत मुनि चऊँ ओर। भरी हिमजल नदी देखी ग्राह पूरित घोर॥ गिरे तामे गिरतभाजी नदी शतधा होय। है शतद्रूनाम ताकह कहत मुनि जन लोय॥ आपु कों लखि परे थलमे नदीजल बिनु जानि। मानि मरण अशक्य अपने चले मुनि तप खानि॥ गए नाना भाँति के गिरि गहनमे तपधाम। अदृश्यन्ती शक्ति भार्या जाति अनु अभिराम॥ सुनो सहित षडङ्ग निखन बेद को सुखदान। पढत है इत कौन बूजो सुमुनि शक्ति समान॥ करत को अनुगमन मेरे चलो आवत साथ। अदृश्यन्ती शक्तिभार्या सुषा तो मुनिनाथ॥ बसिष्ठउवाच॥ पुत्रि को यह करत बेदाध्ययन धुनि अभिराम। शक्ति सों यह धुराश्रुति धुनि सुनत हे सुख धाम॥ अदृश्यन्ती उवाच॥ कुक्षिमे मो शक्तिको है गर्भ हे तप ऐन भयो द्वादश बर्षको सो करत बेदाध्ययन॥ गन्धर्वउवाच॥ सुनत व्है सन्तुष्ट मुनिबर फिरे आश्रम ओर। कल्माषपाद सो रहो बैठो तहाँपथमे घोर॥ उठो भक्षण करनकों सो महा मुनिकों हेरि। अदृश्यन्ती देखि ताकों कहो मुनि सो टेरि॥ मृत्यु सो यह दण्ड लीन्हें महादारुण रूप। हनन आवत हमै देखो तात मुनिबर भूप॥ कौन याहि निबारिबे हैं योग्य त्रिभुवन बीच। करऊ रक्षा सोहि नातरु हनोचाहत नीच॥ बसिष्ठउवाच॥ *॥ डरऊमति यह भूपहै कल्माष पाद सुजान। भयो राक्षस शापतें यहिँ बसत बिपिनि महान॥ *॥ गन्धर्वउवाच॥ *॥ ऊंकार सों मुनि कियो बारित देखि आवत ताहि। मंत्र पूत सुडरिकै जल्ल कियो पावन वाहि। छूटि गो नृप शाप सों लहि बर्ष बारह अन्त। कौन छूटत पाप सज्जन कृपा पाए सन्त॥ गयो ताके देह तें कढि महा राक्षस घोर। भए भोर बिलोकि दिनकर भजत जैसें चोर॥ पाय संज्ञा भूप मुनि सों कहे ऐसे बैन। दास हौं मैरावरे को शिष्यहैं तप ऐन॥ होय जो तव इष्ट कहिए करों सो मै काज। बसिष्ठउवाच॥ *॥ कियो तुम सब जाय कै अब करऊ अपनो राज॥ नहि अनादर बिप्रको तुम फेरिकी जो भूप॥ *॥ राजोवाच॥ *॥ नही ब्राह्मणको अनादर करों गो लखि रूप। कुहौं जै

आ०प० से पितर ऋषि सों चहत तुम सों तीँन। देऊ मोहि अपत्य यात छपाकरि तप भौन॥तथास्तु कहि के महा मुनि तब गए नृपके साथ। पुरी पावन कोशलाकौं कियो फेरि सनाथ ॥भए हर्षित प्रजा सिगरे लियो आगें जाय।भाग्य वस बड़ चोसमे प्रभु सहित मुनिबर पाय॥ भई हर्षित पुरी अति शय पाय कै पति भूप।यथा लहत सुरेशकों अमरावती अनुरूप॥पाय आज्ञा भूप महिषी पठै दीन्हौ तौंन।समय लहि के महा मुनि पहँ पुत्र चाहति जौंन॥सुमुनि तासों किए सङ्गम देइ गर्भ अनूप। बिदा व्है कै चले आश्रम आपने सुख रूप॥ गर्भकों बड़ का लबीतो भयो प्रसव न अर्भ। अस्म ले कै भूप पत्नी तदा कूटो गर्भ॥ भयो बीते वर्ष बारह पुत्र तब बलधाम। पार्थ यातें धरो अस्मक पुत्र को नृप नाम ॥*॥ गन्धर्वउवाच ॥*॥ अदृश्यन्ती पुत्र जन्मी जाय आश्रम माह। शक्ति कुलको वृद्धि कारक सुनऊ कुरुकुल नाह॥ जात कर्म्म सु पौत्रको सब कियो मुनि भगवान। जात मुनि को प्राण राखो पौत्र व्है सुख दान॥

॥*॥ जयकरीछन्द ॥*॥

धरो परासर यातें नाम। मुनि वसिष्ठ लहि आनद माम॥ सो जानत मुनिबर कहँ तात। जन्म प्रभृति लखि के अवदात॥ तात कहत मुनिबर कह तौंन। लखोन पिता आपनो जौंन॥ पिता अदृश्यन्ती ढिग ताहि। कहन लगो मुनिबर कहँ चाहि॥ अदृश्यन्ती सुनिकै भरि नैंन। कहो परासर सौं इमि बैंन॥ भयो पिता तो इनते जात। राचस भखो तुम्हारो तात॥ सुनि मुनि सुत करि क्रोध उदार। दहन लोक सब कियो बिचार॥ तब वसिष्ठ मुनि बारण तास। कीन्हो यह कहिकै इतिहास॥ छत वीर्य नामहो पूरब भूप। भृगु कुलको हो शिष्य अनूप॥ तेहि करि यज्ञ बऊत धन धान्य। गुरु कुलकों दीन्हो करि मान्य॥ गयो स्वर्गको सो बर भूप। भए जे तेहि कुल पुत्र कुरूप॥ तिनको भयो कछू धन काम। जानि बित्त बड़ गुरु कुल धाम॥ लीबे हेत गए ते सर्ब। तिन काहूँ धन दीन्हो खर्ब॥ काहूँ धरो भूमिमे गाडि। जानि छत्र भय धनमे बाडि॥ काहूँ दयो द्विजनको बित्त। तिनको दीबो जानि अदित्त॥ खनत कढो गृहमे धन भूरि। चत्री देखि महा रिसि पूरि॥ भृगु कुल जनको करि अपमान। तानि शरासन मारे बान॥ मारे तिन्हे गर्भ सो फारि। कीबे भृगु कुल नाश बिचारि॥ भृगुकुल पत्नी गिरिमे भागि। बसी जाय अतिशय भय पागि॥ एक सगर्भा भृगुकुल बाम। भरी महा तपतेज ललाम॥ चत्रिणको भय भूरि विचारि। राखो गर्भ उरूमे धारि॥ तहां अन्यही भृगु कुल बाल। देखि परम सो गर्भ बिसाल॥ आतो मरण के भय सौं जाय। चत्रिण औंसो दियो बताय॥ हनिबे गर्भ गए तहँ तौंन। लखो ब्राह्मणी तेजस भौन॥ कढो गर्भ सो ऊरू फारि। भरो क्रोध अतितेजस धारि॥ भए अन्ध चत्री लखि ताहि। यथा उलूक भानुको चाहि॥ बिना चचुते गिरिबन माह। गिरत फिरत कोउ गहत न बाँह॥ शरण ब्राह्मणीके ते जाय। विनती करन लगे शिर नाय॥ तो प्रसाद ते चचु समेत। हम

त्तर जात अधर्म अनेत ॥ कृपा सपुत्र करज़ तुम अम्ब। सापराध हम गत अवलम्ब ॥ *॥ ब्राह्मणी उबाच ॥ * ॥ हम नहि कियो दृष्टि तव रोध । ऊरुज यह भार्गव अति क्रोध ॥ मारे यव तुम भृगुकुल जात । करण लगे यव गर्भ निपात ॥ हम यह गर्भ बर्ष शतमान। ऊरुमे धारो वर सम भान ॥ गर्भ मांह ये वेद अखर्ब । यहिके बदन बसे ते सर्ब ॥ पिता घातको बैर बिचारि । हनो चहत यह तुम्है निहारि ॥ हरो और्वके तेजस नैन । भजऊ ताहि चाहत जौं चैन ॥ यह सुनि ते गे ऊरुज पास । लागे बिनय करण सम दास ॥ सुने बिनीत कृपानिधि बैंन । भए प्रसन्न लहे तिन नैन ॥ जनमे उरु भेदि अवदात । और्ब नाम याते बिख्यात ॥ सर्बलोकको नाश बिचार । और्ब कियो मनमाह उदार॥ चहो उरिन पितरनसौं हौन । लोम नास करि तेजस भौन ॥ तपते तपित कियो सब लोक । देव दनुज सब भए सशोक ॥ कियो अनन्दित पितरन्ह सर्ब । कुल बन्दन तिन लहो अखर्ब ॥ पितृलोक ते पितर सचैन।आइ कहन लागे इमि बैन ॥ * ॥ पितरऊचुः॥ *॥ और्ब लखो तो तपस प्रभाव । धरऊ पुत्र अव कृपास्वभाव ॥ हम सब रहे अशनु न तात। क्षत्रिण सो जो लहो निपात ॥ बऊत दिवसलौं नर तनु धारि । लोकान्तरको बास बिचारि ॥ चाहि हावकर मरण निमित्त। खनित निकासो याते बित्त ॥ बैर हेत धन राखो तौन । हमै बित्तसो कारज कौंन ॥ हमपैं शकै मृत्यु नहि आय। तव हम सब यह रचौ उपाय॥ लहत आतमहा लोक न पर्म । क्षत्रिणसो जानो बध धर्म ॥ क्षत्री लोक दहऊ नहि तात। क्रोध करत तप तेज निपात ॥ ॥ * ॥ और्वउवाच ॥ * ॥ कियो क्रोध बस हम पन जौंन । लोकनाशको अनृत न तौंन ॥ होत जात कारण लहि क्रोध । वाको करत मनुज ये रोध ॥ कहत त्रिवर्ग सुमतिजन जौंन। करि न शकत ते रक्षण तौंन ॥ पालन शिष्ट दुष्टको नाश। करिबो नृपको धर्म प्रकाश ॥ ******

॥ * ॥ गीतीछन्द ॥ * ॥

हम गर्भमे सब सुनो माता रुदन सहित बिलाप । यव आय मारो तात मेरो कियो क्षत्रिण पाप ॥ सहगर्भ भृगु कुल नाश कीन्हों क्षुद्र क्षत्रिण आय। अति क्रोध आय प्रवेश तवहो कियो मेरे काय ॥ लै गर्भमे मोहि पिता माता गए चऊदिशि भागि । नहि शरण तिनकौं दयो काहू देखि करुणा पागि॥ यव पापको प्रतिषेधकर्त्ता होय प्रवल महान। तव पापकौं नहि करै कोउ लोकमे मतिमान ॥ जहँ पापको प्रतिषेधकरता होत है नहि तात। तह लोकमे सब बढत है अति पापको उतपात ॥ जो जानिकै प्रभु पापको नहि करत है प्रतिकार। सो पाप ताकौं लगत है यह कहत सुमति उदार ॥ नहि कियो रक्षित पितर मेरे भूप ये बलवान। हौं कियो चाहत भस्म यात लोककों अतिमान ॥ यह वचन करिबे रावरेको होत हों न समर्थ। हमलोक ईश्वर लगत याते हमै पाप अनर्थ ॥ मम क्रोधसम्भव अग्नि चाहत दहै लोक अमान । सो किए ते संहार करि है

आ॰प॰ मोहि भस्म महान॥ हम जानि लीन्हो लोककी हित कामना तव जौन।तुम कहहु जामे लोककौ मम श्रेय कारक तौन॥ पितरऊचुः॥ है क्रोध जन्य यो अग्नि चाहत दहन लोक अखर्ब।सो छोडि दीजै सलिलमे जो सृष्टि कारक सर्ब ॥ हैं सलिल भवरस सकल करता जगतकौ है आप। तुम तजहु तामे सिन्धुमे जो रहै क्रोध प्रताप ॥ यह क्रोधजाग्नि सु दहैगो जल लोकमय अभिराम। तब होयगो पन सत्य थारो सुनहु हे तपधाम॥ नहि लोक सह सुर भस्म ह्वहै सहित जनपद सर्व॥ बशिष्ठउवाच ॥ तब और्व डारत सिन्धुमे भो क्रोध अनल अखर्व ॥ सो अग्नि बडवावदन ह्वैकै लगो शोषण बार। तुम हे परासर करहु मति अब लोक दहन विचार॥ *॥ गन्धर्बउवाच॥ *॥ यह सुनत वचन बशिष्ठके तजि क्रोध दीन्हे तज्ञ।सह मुनिपरासर वेदविद बर करण लागे यज्ञ ॥ *॥

॥*॥ रोलाछन्द ॥ *॥

सकल राक्षस भस्म कारक करत सत्र सुजान। शक्तिको बध समुझि जारे बाल वृद्ध महान॥ बशिष्ठ मुनि नहि ताहि बरजो रक्षवध अनुमानि।है प्रतिज्ञा दूसरी यह तजै गे नहि जानि॥अग्नि त्रयमधि सत्रमे इमि लसत मुनि अभिराम। मूर्तिमत है अग्नि चौथो महा तेजस धाम॥ अन्य तैं यह सत्र दुस्कर कहत मुनि हि सराहि । अत्रि सहित पुलस्ति तेहाँ गे समापन चाहि ॥ सत्रसों सब राक्षसनको वंश रक्षण चाहि। परम सत्र स्थानमे सुपुलस्त्य बूझो ताहि॥ अजान जौन अदोष राक्षस बधे तिनकौ क्षिप्र। नाश मेरी प्रजाको हो योग्य तुम हि न बिप्र॥ धर्म्म है द्विजको न यह तजि सम परासर कर्म्म। कियो जौन अधर्म्म यह बश क्रोधके मुनि पर्म्म।धर्म्मज्ञ शक्ति हि चहतका व्यतिक्रमन कोवो क्षिप्र। प्रजा मेरी नाशिवो नहि योग्य तुमकौ विप्र॥ स दोष मारो शक्तिकौ हो शापसौं जो जन्य।नही हिंसा कियो काहूँ आय राक्षस अन्य॥नहिशक्ति राक्षस भक्ष्य करिवे योग्य हे तप धाम। भए विस्वामित्र विप्र निमित्त मोचक माम॥ वास पायो स्वर्गमे कल्माषपाद सु भूप शक्ति सह सब पुत्र मुनिके सुरण सङ्ग सुखरूप॥ *॥ गन्धर्ब उवाच॥ *॥ पुलस्त्य सहित दशर्षि ऐसैं कहो तासौं बैन। कियो सत्र समाप्ति तबही शक्ति सुत तपऐन॥ सर्व राक्षस सत्रको जो रहो पावक इद्ध। हिमाद्रिके सो जाय उत्तर पार्श्व राखो रुद्ध॥ वृत्त राक्षस भस्म अबहू करत भक्षण तौन। देखि परत सो पर्व पर्वनमाह तेजसभौन॥ *॥ अर्जुन उवाच॥ *॥ कल्माषपाद सु कौन कारणसौं स्वभार्य्या जौन। दियो सुमुनि बशिष्ठ तामे कियो कैसैं गौन॥ कैंा अगम्या गमन कीन्हो धर्मधर मुनि होय। शिष्यपत्नी जानिकै यह कहहु कारण जोय॥ * ॥ गन्धर्ब उवाच॥ *॥ कहो पूरब वृत्त सब अब कहत बूझत जौन। सुनहु सो एकाग्रमन करि पार्थ बरबल भौन॥ शाप बस ह्वै भूप बनमे सहित भार्य्या जाय। फिरण लागो भयो व्याकुल क्षुत्पिपासा पाय॥ तहाँ देखो बिप्र मैथुन करत पत्नी संग। देखि भाजो भूपको सो छोडिकै रतिरङ्ग॥ पकरि लीन्हो बिप्रको नृप दौरि कै बलवान। ब्राह्मणी लखि कहन लागी भयाक्रांत महान॥ कहति हौ सो सुनहु भूपति

कृपाकरि मो बात । सूर्यबंश सप्रभव तुमहो लोकमे विख्यात॥ धर्मरत व्है शापबश यह करऊ आपु न पाप । ऋतुसमयमे पति मरणको मति देऊ मोहि उताप ॥ नहि भयो मेरो अर्थ नहि सुत हेतु कीन्हो जौन । कृपा करि कै छोडिए मो गहो भर्त्ता तौन ॥ यहि भाँति करति बिलाप ताके लियो भर्तहि खाय । क्रोधमय जहँ अस्रु ताको परो छिति पर आय ॥ वरण लागी अग्नि तहँ भरि ब्राह्मणी सन्ताप ।कल्माषपाद महीपकौ इमि दियो दारूण शाप ॥ निज भार्य्या पहँ जाऊगे ऋतु समयमे जब भूप । होयगो तव मरण मेरे शापके अनुरूप ॥ जौन सुमुति बशिष्टके तुम लिए सुत सब खाय । भारया तो पुत्र लहिहै तासु संगम पाय ॥ सो पुत्र ह्वैहै बंशकर तो अरे अधम नरेश । अंगिरस कन्या ब्राह्मणी कहि कियो अग्नि प्रबेश ॥ शापसों नृप मुक्त भार्य्यापै गयो ऋतु जानि । शाप कहि तेहि कियो बारण प्रिया पति सुखदानि ॥ वशिष्ठ तपतें ज्ञानतें सब जानिकै वृत्तान्त । तासु भार्य्या गमन कीन्हों प्रजा हेतु नितान्त ॥ प्रजाहेतु बिचारि भूपति जानि शाप महान । दियो मुनिके संग पत्नी आपनी सुखदान ॥ पार्थ सुनि वृतान्त यह गन्धर्वको हित हेरि । बिप्र पैरोहित्य लायक लगे बूझन फेरि ॥ *◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि महामुनिबशिष्ठ प्रभावकथनं नाम षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ *◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*

॥ अर्जुन उवाच ॥ योग्य यो कुरुबंशके द्विज बेदबिद तपधाम । सर्बज्ञ हो गन्धर्ब तातें कहऊ सो अभिराम ॥ गन्धर्व उवाच॥ कनिष्ठ देवल सुमुनि भ्राता धौम्य अति तपरास ।बरण ताको करऊ है उत्कोच तीरथ पास॥वैशम्पायन उवाच॥अग्न्यस्त्र पारथ दियो सो गन्धर्बकौ सविधान।गन्धर्ब अप नी दई बिद्या चाक्षुषी सुखदान॥तदनु दर गन्धर्ब लागो अर्बदैन अनूप।पार्थ तब गन्धर्बसों इमि कहन लागे भूप ॥ रहो तबलौं सर्ब तुमपै अर्ब अतिजब जौन।परै कारज काल लेहैं सकल तुमसों तौन ॥ गन्धर्ब पाण्डव कियो पूजन प्रेमसो अन्योन्य । चले गङ्गानिकट सो तब बीर धीर सुधन्य ॥ उत्कोच तीरथको गए जहँ धौम्य मुनि तपधाम । कहो पैरोहित्यकौ सह बिनय बचन ललाम ॥ बेदबिद मुनि धौम्य तिनकौ जानिकै यजमान । किये कुरु कुलबंश भूषण महाबल गुणमान ॥ पाण्डवन फल मूलसों मुनि पूजि कै तपधाम । राज्य लक्ष्मी प्राप्त जानो आपुकौ अभिराम ॥ पूज्य ब्राह्मण धौम्यकौ सह चले पाण्डव बीर । धर्म्म कर्म्म सु पाय मुनिसों भरे मोद गँभीर॥ बुद्धि बल उत्साह सह सम देव तिनकौ जानि॥तिन्हें प्राप्त सुराज्य मनमे लियो मुनि अनुमानि॥स्वस्त्ययन लहि मुनि धौम्यसों भरि मोद पाण्डव बीर । सहित माता गमन कीन्हों द्रुपद पुरकौ धीर ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ मिले ब्राह्मण जात पथमे द्रुपदपुर अभिराम।करि परस्पर प्रश्न तिथि अरु गमनको सु ललाम ॥ कहत बार्त्ता द्रुपद पुरकी चले पथसे जात । लगे पाण्डव सुनन बूझन तहाँकी सब

आ०प० बात ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ जात हम पाञ्चाल पुरकों तहाँ उत्सव भूरि । है स्वयम्बर द्रौपदीको करत नृप मुद पूरि ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यज्ञागिनि तें भई ललाम । तेजस भरी रूपकी धाम ॥ धृष्टद्युम्नकी भगिनी तौन । अग्नि कुण्डते प्रगटे जौन ॥ खड्ग कवच धनु धरें ललाम । द्रोण शत्रु अति बलको धाम ॥ राजा राज्य पुत्र बल भान । सहित समाज गए तहँ तौन ॥ गए वेदबिद ब्राह्मण सर्ब । गए महामुनि तपस अखर्ब ॥ गए तरुण सुन्दर नर जौर । बेत्ता अस्त्र महारथ तौन ॥ ते तहँ बिजय हेतु छिति पाल । गो सुवर्ण मणि देत बिशाल ॥ तहाँ लेहु धन मणि अभिराम । उत्सव देखि जाहि गे धाम ॥ देव सदृश तुम सुन्दर सर्ब । लक्षण मण्डित अङ्ग अखर्ब ॥ कृष्णा तुममे तें कोउ एक । देखि बरै गो भरी बिवेक ॥ यह धाता सब तें श्रीमान । महाबाहु तन मुदिर समान ॥ बिजय योग्य दरशत सब भाँति । भरो सकल लक्षण युत काँति ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ चाहत भोजन अन्न सुधर्म्म । देखो चहत स्वयम्बर पर्म्म ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ यह कहि चले सुपाण्डव नन्द । लखत देश पाञ्चाल अमन्द ॥ पथमे मिले महामुनि व्यास ॥ देखत पाण्डव लहो हुलास ॥ पूजन कीन्हें यथा प्रकार । लहो महामुनिसों सत्कार ॥ कथा कहतभे आज्ञा पाय । गए द्रुपद पुरकों सुखदाय ॥ बन सरबाग लखत रमणीय । गए द्रुपदपुरकों कमणीय ॥ शनैः शनैः तँह करिकै बास । कुन्ती लहै न पथा प्रयास ॥ लखो नगर लखि सेना स्थान । कुम्भकार घर बसे सुजान ॥ ब्रह्मवृत्तिसों भिक्षा ल्याय । निशिमे भोजन कियो बनाय ॥ कोऊ जानत भए तिन्हैं न । पौर रहे तकि गुनि बल ऐन ॥ भूप द्रुपदके यह मनकाम । देउ अर्जुन हि सुता ललाम ॥ ढूढन हेत पार्थको बीर । करो अनन्य धनुष गँभीर ॥ अन्तरिक्षमे बिरचो यंत्र । मध्य छिद्र अति भ्रमत स्वतंत्र ॥ ताके ऊपर बिरचो लक्ष । छिद्र मध्य शरसाधि समक्ष ॥ लक्षबेध जो करिहै बीर । सोई पारथ धनुधर धीर ॥ और भूपको होय न काम । यह करि है अर्जुन बलधाम ॥ * ॥ द्रुपद उवाच ॥ * ॥ यह धनुकरै सज्य जो बीर । बेधै लक्ष धनुर्द्धर धीर ॥ ताहि बरै कृष्णा छवि भान । ऐसो कर्म करै गो जौन ॥ * ॥ वैशंपायनउवाच ॥ * ॥ द्रुपद दियो यह बचन सुनाय । उच्च बोलि कै सत्य स्वभाय ॥ यह सुनि तहँ आए बर भूप । कर्ण सुजोधनादि अतिरूप ॥ ब्राह्मण सुमुनि तपस्या धाम । बैठे मञ्चनपर अभिराम ॥ आए पुरजन भरे उमङ्ग । पुर ईशान रचो जहँ रङ्ग ॥ चित्र बिचित्र रचे तहँ मञ्च । मणिन जडित युत सुषमा सञ्च ॥ चहुँदिशि सौध सुधासे सुद्ध । लखत रजत गिरिसे अति उद्ध ॥ पुष्प माल सों बेष्टित सर्ब । चन्दन सिञ्चित भूमि अखर्ब ॥ मणि तोरण सोहत चहुँ पास । रजत रचित चत्वर छबिरास ॥ कनक जाल मण्डित चहुमान । धूप धूम घन घेर समान ॥ कहलो कहै रङ्ग छवि जौन । थकति गिरा बरणत सब तौन ॥ असम्बाध

भूत द्वार ललाम । रचित मणिनसों अति अभिराम ॥ तहाँ आय मञ्चनपर भूप । बैठे करि मंडन अनुरूप ॥ विप्रवृन्दमे पांडव आय । बैठे ब्राह्मण वेश बनाय ॥ जब आए चऊँदिशिके भूप । भरे भूरि बलरूप अनूप ॥ दिवस सोरहें जुरो समाज । विहित मुहूर्त सुमङ्गल काज ॥ तब कृष्णाको करि शृङ्गार । सङ्ग सखी बर विप्र उदार ॥ कनकमाल दै कै अभिराम । ल्याए रङ्ग मध्य छविधाम ॥ सोमककुलप्रोहित तप वृद्ध । कियो तहाँ तेहि होम समृद्ध ॥ विप्र पढन लागे स्वस्तैन । पाय दक्षिणा पूरित चैन ॥ वारण कियो बाद्य तब भूप । भयो रङ्ग निस्वन अनुरूप ॥ धृष्टद्युम्न महाबल ऐन । रङ्ग मध्य इमि बोलो बैन ॥ सकल भूप यह सुनऊ प्रमाण । है यह धनुष लक्ष यह बाण ॥ यंत्र रंध्रमे ह्वै शर बाण । काढि लक्ष बेधैं अतिमाण ॥ करै कुलीन कर्म यह जौन । बरै ताहि कृष्णा छवि भौन ॥ *●*●*●*●*●*●*●*●*●*●

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इमि भूपनसों कहि बचन धृष्टद्युम्न बलधाम । फेरि द्रौपदीसों कह्यो नीति निपुण अभिराम ॥

आए सब क्षितिपाल ए रहे धरापर जौन । लक्ष बेधको जो करै कुलप्रसूत बलभौन ॥

ताहि बरऊ तुम द्रौपदी राज सभामे आय । करऊ प्रतिज्ञा तातकी सत्य शुभे अनवद्य ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

भरे ईरषा परसपर ते सिगरे क्षितिपाल । उठे अलंकृत स्वबलको धार गर्व विशाल ॥

रूप बल कुल शील यौवनके भरे मदराग । धरे मनसिजबेग जैसे मत्त हिमगिरि नाग ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

द्रौपदीकों बरहिंगे हम महाबल बरवीर । कहत ऐसें उठे सिगरे भूप वृंद अधीर ॥ चहत जीतो द्रौपदीकों भूप सिगरे तौन । काम प्रेरित मञ्च तजि कियो रङ्ग क्षितिपर गौन ॥ तहां बैठि बिमानपर सुर असुरगण गन्धर्व । यक्ष किन्नर अप्सरन सह लखत आय अखर्व ॥ रहे यदुकुल बीर देखत उठे नहि अभिराम । पाय मत श्रीकृष्णको अति परम आनदधाम ॥ श्रीकृष्ण देखो जहां बैठे रहे पाण्डव बीर । रामसों कहि दियो तिनहिं देखाय पुलकित धीर ॥ भए मन्मथ व्यथित सिगरे भूप अति बलधाम । बसी तिनके हृदयमे एक मूर्त्ति कृष्णा बाम ॥ बजत नाना दुन्दुभी भरि गयो गगन बिराम । भयो सङ्कुल गगणमे अति फिरत बिमल बिमान । बेणु बीणा प्रणव बाजत मुरज अति सुखदान ॥ भूपगण तब चलि धनुष धरि करि पराक्रम भूरि । गए फिरि दुर्योधनादिक अति परिश्रम पूरि ॥ अङ्ग बङ्ग कलिङ्गके नृप द्रोणसुत सह कर्ण । पौंड्रपति जब नाधियो सब भए हारि बिवर्ण ॥ धरे मण्डन भरे मनमथ करैं भुज बल गर्व । धनुष सज्जन भयो सिगरे हारि ह्वै मे खर्व ॥ महाधनुष कठोरसो नृप गए मनमे हारि । चलत एक न करत कल बल

आ०प० बहुत भांति विचारि॥ करत हा हा शब्द नृप मन करेँ कृष्णाओर। गई आशा टूटि सिगरी भरे श्रमसो घोर॥ देखि सब एहिभांति नृप उठि कर्ण धीर महान। धनुषकों करि सज्ज गुणसो किए योजित बाण॥ लक्ष्य बेधित करै गो यह जानि पाण्डव बीर। ध्यान धरि श्रीकृष्णको मनमाह धारो धीर॥ देखि कै तब द्रौपदी द्रुमि टेरि बोली बैन। सूतसुतको बरौंगी नहि योग्य मेरे है न॥ सामर्ष हँसि लखि सूर्य्यकौं तब भए कर्ण निवृत्त। चेदिपति शिशुपाल सो तब धनुष हेतु प्रवृत्त॥ धनु उठावत महाश्रम करि गिरो छितिपर जाय। जरासिन्धु सु महाबल तब उठो अति रिसि छाय॥ धनु उठावत पाय कै श्रम गिरो भूपर तौन। गिरे छितिपर धनु उठावत शल्य भूपति जौन॥ भए संभ्रम भूप सिगरे गयो मिटि उतसाह। हारि मनसे भए लज्जित सुनहु कुरु कुलनाह॥ भए भूप निवृत्त जब तब महाबलको धाम। उठे पारथ विप्र गणके मध्यतें अभिराम॥ लगे ऐसेँ कहन ब्राह्मण देखि धनुढिग जात। पार्थकौं व्है बिमन कोऊ कोऊ पुलकित गात॥ कर्ण शल्य प्रभृति नृपसौं नयो नहि धनु जौन। शक्य होत नवाइवेकौं ताहि द्विजकुल कौन॥ हँसे ब्राह्मण जाँहि गे यह कार्य्य होत असिद्धि। राजगणमे कहो जैहे चपलताई ऋद्धि॥ दर्पसों कि अदर्पसों कै चपलतासौं विप्र। जात धनुष नवाइवेकों साधु वारण छिप्र॥ *॥ अन्यब्राह्मणाउचुः॥ *॥ हास्य लाघव होयगो नहि भूपगणसैं द्वेष। जानिए नहि कौन हैं यह धरे द्विजबर वेश॥ युवा अति श्रीमान सुण्डा दण्डसे दोर्दण्ड। पीन कन्धर उर सुगिरि सम धैर्य्यमान प्रचण्ड॥ सिंहगति उत्साहसो यह जात है बर बीर। सिद्धि करि है कार्य्य यह उत्साह कारण धीर॥ कौन कार्य्य असाध्य है द्विजबरणसों अभिराम। महाबलसौं भरे देखत करैं तप व्रत क्षाम॥ परशुराम निक्षत्र छिति किय पियो सिन्धु अगस्त्य। सज्य करि है धनुषकों यह बिप्र याते सत्य॥ सुनत ऐसैं द्विजनके बहु भांतिके बर बैन। जाय धनुढिग भए ठाढे पार्थ अतिबलऐन॥ करि प्रदच्छिण धनषकों धरि कृष्णको हिय ध्यान। लियो धनुष उठाय जोरे सगुण करि कै बान। कियो जो नहि सज्य काहूँ भूप करि बल यत्न। लियो पार्थ उठाय धनु सो कियो कछु न प्रयत्न॥ साधि कै शरपांच बेधो लक्ष्य विधिसों तौन। कहो धृष्टद्युम्न पहिले बेध बिधिसौं जौन॥ गिरत छितिपर लक्ष्य बाढो जयति शब्द अमन्द। लगे बरषण सुमन सुरगण भरे द्रुपद अनन्द॥ करो हाहाकार भूपन्ह शब्द मानि अमर्ष। बाद्य लागे बजन नानाभांति पूरित हर्ष॥ सूत बन्दी सहित मागध करत गुणिगण गान। भरो राजा द्रुपद तिनकों देखि प्रीति महान॥ सहाय कीबैं पार्थकी नृप चहो सहित समाज। गए माद्रीसुतन सहित निवासकों कुरुराज॥ देखि बेधो लक्ष्य कृष्णै महा आनंद पाय। काञ्चनी जयमाल दीन्हो पार्थकों पहिराय॥ रङ्गसे तेहि जीति पारथ बन्दि द्विजबर पाय। चले कृष्णा सहित कुन्ती जहा तँह सुखदाय॥ दई कन्या विप्रकों यह देखिकैं सब भूप। अन्योन्य लागे लखन इतउत कोप करि अनुरूप॥ निदरि कै सब नृपतिगणकों सदृश तृण अनुमानी। दियो चाहत बिप्रकों यह द्रौपदी गुणखानि॥ रोपि कै फिरि वृत्त काढत

लगत परम अभिराम । तथा हम हि बोलाय कीन्हो द्रुपद अनुचित काम ॥ विप्रको अधिकार है
नहि इहां सुनहु प्रसिद्ध । वरत छत्री स्वयम्बरमें भूप कन्या ऋद्ध ॥ जौन कन्या वरै काहू भूपकों
गुणमान । डारि ताकों अग्निमें सब चलो नृपति सुजान॥ विप्र जौं चापल्यसौं यह करै कोऊ कर्म्म।
ताहि मारत नही छत्री जानि कुलको धर्म्म ॥ फिरि स्वयम्बरमें न ऐसो करै कोऊ भूप ॥ हनहु
यातें द्रुपदकौं यहि कर्म्मके अनुरूप ॥ मारिबेकौं द्रुपदकौं नृप चले आयुध धारि । पाञ्चालपति
द्विज शरण लीन्हों भाजि अभय विचारि॥ चले आवत धरैं आयुध भूप वृन्द सुक्रुद्ध । भीम पारथ
फिरे सोई धनुष धारे उद्ध ॥ भीम वृक्ष उखारि कै करि कालदण्ड समान । भए ठाढे समरकौं
फिरि भरे क्रोध महान ॥ भीमको लखि कर्म अर्जुन भयो निर्भय बीर । विजय धनु धरि भए ठाढे
युद्धकौं फिरि धीर ॥ देखि कै श्रीकृष्ण हलधरसों कहो इमि बैन । महाधनु जो धरे अर्जुन नियत
सो बल ऐन ॥ वृक्ष जौन उखारि लीन्हे खरो है बलधाम । शत्रुहन्ता भीम सो यह और को नहि
काम ॥ जाहि देखो रङ्गमें अति प्रांशु कनक समान । पङ्कजाक्ष प्रलम्ब भुज सोइ धर्मपुत्र सुजान ॥
सम रूप दोय कुमार देखो रङ्गमें तुम जौन । मद्रजाके तनय ते हैं महाबल मतिभौन ॥ कहन यौं
वलभद्र लागे कृष्णसौं सुख पूरि । बची कून्ती सुतन सह बह आजु भो दुख दूरि ॥ ले कमंडलु
अजिन ठाढे भए द्विज वर सर्व।करहु भीति न पार्थसौं कहि कहा ए नृप खर्व।।कहो पारथ विहंसि
कै तुम लखहु सब वर विप्र । दूरि ठाढे इन्हें बाणन्ह मारि जीतत छिप्र ॥ कर्णादि आवत देखि
क्षत्रिण भरे क्रोध गँभीर । चले धनु धरि युद्धकौं कुरुवंश भूषण बीर ॥ बध्य है द्विज युद्धमें इमि
बोलि भूपति बैन । धरैं आयुध चले सहसा करैं राते नैन॥ कर्ण अर्जुन भिरे दोऊ भरे वल उद्दत्त।
यथा करिणी एक पैं गज दोय अति मदमत्त ॥ भीम पै नृप शल्य आयो भरो गर्व महान। करण
लागे धीर दोऊ मल्ल युद्ध समान ॥ दुर्योधनादिक भूप सब द्विज वृन्दके ढिग जाय । करण लागे
युद्ध तिनसौं धरे मृदुल स्वभाय ॥ * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

हनो कर्णकों आवत देखि । पारथ निसित शरन सौं तेखि ॥ लगे जिष्णुके शर लहि सोह । सँभरि
कर्ण धाय करि कोह ॥ दोऊ लरे बीर बलवान । नाना भांतिन्ह बरखे बान ॥ गरजि गरजि
बोले बर बैन । समर सिंह दोऊ बल ऐन ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥ लहो विप्र बर हम सन्तोष ।
करि तुमसौं यह युद्ध सरोष ॥ हो तुम धनुर्वेदके रूप । परशुराम हो कै सुरभूप ॥ कै तुम बिष्णु
अजेय अमान । तनु रक्षणकौं धरि घनुवान ॥ आए धारि विप्रको रूप । कै तुम अर्जुन कुरुकुल
भूप ॥ मोसो और करै को युद्ध । धारि धरापर शर धनु उद्ध ॥ * ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥ हम
नामेते कर्ण न एक । हैं ब्राह्मण विद बेद अनेक ॥ ब्रह्मास्त्र ऐन्द्र अस्त्र गुरु पास । शीखे अति श्रम
करि अभ्यास ॥ चाहत तुम्हें जीतिबे सद्य । ताते रहहु खडे तुम अद्य ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

आ०प० ब्रह्म तेजको जानि अजेय।गयो छोडि कै रण राधेय॥लरे भीम नृपशल्यसुकद्ध। जैसैं मत्त महागज उद्ध ॥ मल्लयुद्धमहँ मुष्टि प्रहार। करत बीर बल भरे उदार ॥ नाना दाव करत बरवीर।भीमसेन करि क्रोध गभीर ॥ शल्य भूपकहँ छितिपर डारि। छोडि दियो करि स्ववश पछारि॥ हँसे विप्र वर आनद पाय । भए शल्य उठि बज्रत लजाय ॥ शल्य कर्णको हारि निहारि । भे संकित सब भूप विचारि ॥ द्रोण राम बिनु अर्जुन जौन । असकर्ण कहँ जीतै कौन ॥ बिना भीम बलदेव महान। जीतै कौन शल्यकोँ आन ॥ तजउ बिप्रगणसों अब युद्ध । रच्छ सदा ब्राह्मण हैं शुद्ध ॥ यह कहि फिरे युद्धतें भूप । गए करैं सब लज्जितरूप॥ तिनके ए सुनि वचन गँभीर। चुपव्है रहे खडे कुरुबीर॥ ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ भीमार्जुनके कर्म बिचारि । कुन्तीसुत मनमे निरधारि ॥ कृष्ण सिवारे ते सब भूप। कहि कै बचन नीति अनुरूप ॥ जीते ब्राह्मण रङ्ग महान। कहन लगे इमि सकल सुजान ॥ कृष्णा द्रुपद सुता छबिधाम । ब्राह्मण बरो जीति अभिराम ॥ कृष्णाजिन धारी द्विजभोर। तातें चले निकसि कुरुबीर ॥ मनमे कुन्ती कियो बिचार । आए पुत्रन भई अवार ॥ हने नही दुर्योधन दुष्ट । जानि इन्हे करि यत्न दुरुष्ट ॥ बीति गयो भिक्षाको काल। आए नहि मो पुत्र बिशाल ॥ नियत व्यासको बचन महान । भो विपरीति कहा अतिमान॥ चिन्ता करति प्रथा इमि भूरि। रहो गगण घनसों अति पूरि॥ भए परान्ह गए बल सीम। सहित द्रौपदी अर्जुन भीम ॥ जेहि कुलालके रही अगार । शोचति कुन्ती अम्ब उदार ॥ भार्गवशालाके ढिग जाय। भीमार्जुन बोले सुखदाय ॥ कहो अंब हम भिक्षापर्म। ल्याए हैं सो लेउ सधर्म॥ कुटी मध्यतें कुन्ती बैन। ताके बिन बोली भरि चैन॥ भोजन करउ पुत्र तुमसर्व। लखो कुटीतैं निकसि अखर्व॥कृष्णा सहित देखि अभिराम। भीमार्जुन ठाढे बलधाम ॥ संशय भरो प्रथा अतिचैन। बिनु बिचार हौं बोली बैन ॥ धर्मनीतिसों भरी महान। गहि कर कृष्णाको सुखदान ॥ भूप युधिष्ठिरके ढिग जाय। कहे बचन चिन्तासों छाय ॥ * ॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥ पुत्र सकल तुम जानत धर्म । कहउ बिचारि उचित जो पर्म ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦**

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

रङ्गमे यह जीति कन्या द्रुपदको अभिराम। भैक्ष्य मोसों कहो अबिदित अनुज तो बलधाम॥ कहे मै तुम करउ भोजन सहित भ्राता सर्व। बचन मेरो होत मिथ्या नही पुत्र अखर्व ॥ पांचाल [illegible]सुताकों नहि लगै आय अधर्म। करउ तैसें पुत्र धर्म बिचारि कै अति पर्म॥ * ॥वैशम्पायन [illegible]॥ * ॥ धर्मराज सु प्रथाके सुनि बचन क्षणक बिचारि। कहन लागे पार्थसों इमि बैन नीति [illegible] जीति ल्याए द्रौपदीकों तुम हि सोहति बीर। अमि सात्विक करउ याको पाणि ग्रहण [illegible] उवाच ॥ * ॥ अधर्म भाजन मोहि करउ न बिहित नहि यह धर्म। प्रथम करउ [illegible] हमहि क्रमतें पर्म ॥ भीमादि चारो बन्धु हम अरु यह सु कृष्णा जौन।

अनुगहैं नृप रावरेके उचित कीजै तौन ॥ पांचालको हित होत जामें नष्टहोय न धर्म। रावरेके बश्यहैं हम उचित कीजै पर्म ॥ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ ॥ धर्मनृप सुनि जिष्णुके सह बचन भक्ति सनेह। द्रौपदीकौं रहे लखि तव भूप सुधरम गेह ॥ द्रौपदीकौं लगे देखन सकल पांडव बीर । लखति सबकौं द्रुपदजा बसि हृदय माह गँभीर ॥ द्रौपदीकौं लखत सबको भयो मन्मथ चित्त। धर्म भूपति लयो सबको जानि मानस वृत्त ॥ स्मरण करिकै व्यासमुनिको बचन परम प्रमान। परस्परके द्वेषतैं डरि कह्यो इमि मतिमांन॥ होय सबकी भारया यह द्रौपदी छबिधाम। प्रथा व्यासमुनीन्द्रकोहै बचन सत्य ललाम॥ बचन भ्राता जेष्ठको सुनि सकल पांडवबीर।सोई अर्थ हियमें धारिके भरिरहे मोद गँभीर ॥ तहां सह बलदेव आए कृष्ण करुणाधाम।रहे अविदित तहां पांडव प्रथा सहित ललाम॥ लखो भ्रातन मध्य बैठो धर्म नृपति सुजांन । पंच पावक सदृश हरि अति भरे मोद महांन॥ चरण गहि कुरुनाथके कहि बासुदेव स्वनाम । प्रथाके फिरि पाय बंदे कृष्ण सह बलराम ॥ कहो बूजि सुकुशल हरिसौं यो युधिष्ठिर भूप। हमें जानो कौनबिधि इत रहत अविदित रूप॥ बासुदेव सुबिहसि ऐसैं कहो तिनसो बैन। बिना पांडव करैं ऐसे कर्म को बल ऐंन॥ बचे लाक्षा भौनतैं तुम भाग्यबस बरबीर। भयो नहि धृतराष्ट्रसुत को पाप काम गँभीर॥ हमै आए इतै लेहैं जानि तुमकौं भूप। रहो जबलों इतै तबलो किएँ गुप्तस्वरूप॥लेइ आज्ञा पांडवनसौं कृष्ण सह बलबीर। गए बासस्थानकौं तुर किए गुप्त शरीर॥ गुप्त ह्वैकै तहां आयो धृष्टद्युम्न अनन्य। लीनहोय कुलालगृह में रहो बैठि सुधन्य॥ भीमादिपांडव जाय ल्याए मागि भिक्षा पर्म। धरो आगे धर्मनृपके नीति निर्मित कर्म ॥ प्रथा ऐसे द्रौपदीसौं कहो बचन प्रसन्न। लेऊ यह बलि करऊ देऊ जो दीन चाहत अन्न॥ शेषको द्वै भाग करिकै एक भीमहि देऊ। एकमें षटभागकरि हम सहित तुमसब लेऊ॥ प्रसन्न ह्वैकै द्रौपदी सब कियोबचन प्रमान। कियो सहपरिवार भोजन प्रथा अति सुखदान॥ सह देव तब कुश ल्याय क्षितिपर दियो सेज बिछाय। अजिन तापर डारि पांडव तहां सोए जाय॥ शीसकी दिशि प्रथा कृष्णा रही पाइन ओर। मध्यमें करि धर्मकौं भीमादि दोनो कोर॥ खेद कृष्णा नही मनमें लही नहि अपमान।लगेबार्त्ता करन पाण्डव धरैं बीरबिधान ॥ व्यूहरचना अस्त्रकी अरु शस्त्रकी अभिराम। रथनकी अरु हयनकी अरु गजनकी बलधाम॥ युद्ध नाना भाँतिके अति उद्ध बेद प्रमान। कही बिधिवत गरजि घन से बीरबर बलवान ॥ देखिकै आचार तिनको श्रवण करि बर बैन। देखि कृष्णहि गए धृष्टद्युम्न पूरित चैन॥ जायकै नृप द्रुपदसों सब कहो बिधिवत्त तौन। देखि सुनि मै पाण्डवनको चरित चर्चा जौन॥ देखि करत प्रलाप नृपकौं हरो द्वन्द्व अमन्द। बरषिकै घन करत जैसैं दूरि चातक द्वन्द्व॥ युवा यो रक्ताक्ष कृष्णाजिनी देव स्वरूप। सज्ज करि धनु लक्ष्य बेधा यथाबिधि जेहि भूप॥

आ०प० गहे कृष्णाजिन जाको गई सह अभिराम। सघन घन सो महा भुज बरबीर बलको धाम॥ कनक वर्ण सुमत्त गजसों दूसरो हो जैांन। देखि आवत युद्धकों नृप क्रुद्ध व्है बलभैान॥ महा बृक्ष उखारि कै जेहि हने भूप बिशाल। जीतिकै ते गए दोऊ समरसिंह कराल॥ अग्नि अर्चि समान भार्गव कर्म्म शाला माह। रही बैठी जननितिनकी जानिए नरनाह॥ बन्दि ताके चरण तिन तब कहो कृष्णा पास। बन्दिवेकों चरण बन्दे द्रैापदी छबिरास॥ रहे बैठे तासढिग सम अग्नि नरबर तीनि। जाय तिनमे एक बैठे दोऊ भुजबलपीन॥ कहो धृष्टद्युम्न फिरि तहँ सुनो देखो जैांन। पाण्डवनको चरित क्रम तैं बिहित बिधिबर तैांन॥ महा क्षत्री तिनहि जानऊ तजऊ संशय तात। भई आशा रावरे की सफल अति अवदात॥ सुनत हे यो बचें पाण्डव अग्नि ते बलधाम। किम्बदन्ती भई साँचो जानिए अभिराम॥ सज्ज करि धनु लक्ष्य बेधै महा दुस्तर जैांन। बिना अर्जुन और क्षत्री भूमि भूषण कैांन॥ भरे आनद सुनत राजा द्रुपद सुतके बैन। बोलि प्रोहित तहाँ पठयो सभासद मतिऐन॥ बचन सुनि कै द्रुपदके द्विज गयो तहँ अभिराम। जहाँ कुरुकुलबंशभूषण रहे बर बलधाम॥ कहन लागो बिप्रसों नृप दियो जो कहि बैन। सहित आदर बिहित बर्णन सुनत श्रुतिकर चैन॥ तुम्है जानो चहत भूपति द्रुपद हे बलधाम। बेध कर लखि लक्ष्यको हिय भरे आनदमाम॥ख्यात ज्ञाति सुबंश अपनो कहऊ हे बरबीर। भरऊ आनद हृदय मेरे सहित द्रुपद गँभीर॥ पाण्डुनृप पाञ्चाल दोऊ सखा हे सुखदान। स्नुषा ताकी कियो चाहत सुता द्रुपद सुजान॥ रही यह निति कामना हिय भूपके अभिराम। देउ कृष्णा पार्थकों यह अग्निजा छबिधाम॥ भयो जों यह परम कारय सुकृतको फल तैांन। पुण्य ते कुरुबंशके अति मुदित आनद भैान॥ कहत बचन पुरोहित हि इमि देखिकै नृप धर्म्म। भीम सों तब कहो ताकी करन पूजा पर्म्म॥ भीम आसन देय विधि बत करी पूजा तास। लगे कुरुकुल भूप तासों कहन बचन प्रकास॥ लक्ष्य भेदन दावपर नृप सुता राखो जैांन॥ भेदिकै सो लक्ष्य लायो बीर धनुधर तैांन॥ वर्ण बंश सुशील कुलको कियो कछुन बिचार। करत अब उत्ताप मनमे भूप ब्यर्थ उदार॥ द्रुपद अपनी कामनाकों देखिहै सम सिद्धि। योग्य रूपा कन्यका यह साधु हमकों ऋद्धि॥ सहित मैार्वी धनुष करिबो निबलका नहि काम। धनुर्बिद्या बिदबिना को लक्ष्य बेधत माम॥ उत्ताप करहि न हेतु दुहिता सुनऊ यातैं भूप। लक्ष्य बेधन करत को बिनु क्षत्र बंश अनूप॥ करत बार्त्ता धर्म्मनृप हैं बिप्र सों आसन्न। आय तँह नृप [illegible]लो सिद्ध भोजन अन्न॥ *॥ दूतउवाच॥ *॥ सिद्धि है जेवनार भूपति रावरेके हेत। चलऊ [illegible] हासाब्याहि लहऊ सनेत॥ लसत काञ्चन पद्म चित्रित परम स्यन्दन भूप। बैठि तिन [illegible] सनुज आनद रूप॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ चले रथन पर चढि अभिराम। सानुज भूप युधिष्ठिर आम॥

कुन्ती कृष्णा रथपर एक । बैठि चली अति भरी विवेक ॥ प्रथम पुरोहित गयो प्रसन्न । द्रुपद नृपति जहँ हे आसन्न ॥ कहे युधिष्ठिर नृप जे बैन । कहे पुरोहित ते सह चैन ॥ सो सुनि भूप द्रुपद सुख पाय । धरी तहां सब वस्तु मगाय ॥ धूप परीक्षाकरिबे हेत । यथा व्यसन चाहत जन चेत ॥ फल मणिमाल वसन बऊ रङ्ग । गो वृषभादि परम पशु सङ्ग ॥ शिल्प करणके द्रव्य विधान । ते तहँ धरे बिरचि सुखदान ॥ खड्ग चर्म धनु इषुधि उदार । तोमर परिघ गदाबर भार ॥ शक्ति रिष्टि वर वर्म विचित्र । रत्न रचित रथ विहित बहित्र ॥ जे रण जयकारक अभिराम । अस्त्र शस्त्र तहँ धरे ललाम ॥ कुन्ती कृष्णा सहित उदार । द्रुपद नृपतिके गई अगार ॥ नृप महिषी ते आगे जाय । कुन्तीकौं पूजो सुख पाय ॥ चले उतरि रथतैं बर बीर । सिंह समान धरैं गति धीर ॥ राजा सचिव सहित समुदाय । पुलकित भए देखि सुखपाय ॥ आसन परम जहां अभिराम । तहँ पांडव बैठे बलधाम ॥ नृप भोजन थल गयो लेवाय । कनक पीठ ऊपर बैठाय ॥ सूद लगे तब परसन अन्न । नाना भांति स्वाद सम्पन्न ॥ तृप्त भए भोजन करि बीर । शिशिर सलिल करि पान गँभीर ॥ उठिके चले खात ताम्बूल । नहि देखो ते वस्तु अतूल ॥ गए तहाँ जहँ शस्त्र समाज । देखि प्रसन्न भए कुरुराज ॥ देखि भए नृप द्रुपद प्रसन्न । जानो क्षत्रबंश सम्पन्न ॥ द्रुपद बोलाय युधिष्ठिर भूप । द्विज सम किय व्यवहार अनूप । यौं बूझन लागे करि प्रीति । तुम्हे जानिए हम केहि रीति ॥ कौन वर्ण सम्भव अभिराम । हौ तुम सब भ्राता बलधाम ॥ कै तुम देवरूप धरि आय । कृष्णाहेत बीर बर काय ॥ करऊ दूरि तुम मो संदेह । सत्यसार भाषत मति गेह ॥ संशयान्त आनद अभिराम । देऊ कृपाकरिकै बलधाम ॥ तुमकौं जानि व्याह तेहि रीति । कृष्णाकौं करिए करि प्रीति ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ होऊ व्यग्रमति द्रुपद नरेश । ईप्सित तो सिधि करिहि अशेष ॥ हम क्षत्री पाण्डव कुरु बंश । तनय प्रथाके परम प्रसंश ॥ ज्येष्ठ युधिष्ठिर मेरो नाम । भीमार्जुन ए दर बल धाम ॥ इन जीती तो सुता नरेश । रहे भूप सब लखत सुबेश ॥ जहँ कुन्ती कृष्णा अभिराम । माद्री तनय तहां बलधाम ॥ तजऊ दुःख हम क्षत्री भूप । लही सुता तो सुकुल अनूप ॥ मानऊ सत्य सु बचन सुजान । हौ हमकौं तुम गुरू समान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भए मोद बश गद गद भूप । रहे न सके उत्तर अनुरूप ॥ बडी बेरमे यत्न समेत । बोले बचन द्रुपद हित हेत ॥ कौन भांति पुर तजो नरेश । सो कहिए कुरुकमलदिनेश ॥ कहो सो सब बिधिवत नृप धर्म । तजो कौनबिधिसौं पुर पर्म ॥ नृप धृतराष्ट्रहि निद्यो भूप । सुनि ताके सब कर्म कुरूप ॥ द्रुपद भूप आश्वासन बैन । राज्य हेत बोले भरि चैन ॥ दियो द्रुपद बर भौन बताय । रहे धर्मनृप तासे जाय ॥ सौंज सकल तहँ द्रुपद नरेश । पठय देत सह बिभव हमेश ॥ धर्म नृपतिसौं द्रुपद नरेश । सुदिन बिचारि सु कियो निदेश ॥ पाणिग्रहण कृष्णाको भूप । पार्थ करैं लहि सुदिन अनूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि कहो धर्म नरनाह । है हमहूँकौं करिबे व्याह ॥ द्रुपदउवाच

आ०प० तुमही पाणिग्रहण करि लेऊ। नतरु चहऊ भ्रातन कहँ देऊ ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ हम सबकी महिषी अभिराम। द्रुपद होयगी कृष्णा बाम ॥ प्रथम कहो जो मातैं बैन। करिवैं त्याग हमैं सो हैंन ॥ कृष्णा इसी रत्न ललाम। सो जीतो अर्जुन बलधाम॥ है हममें एक नियम अखर्ब। रत्नभोग करिए हम सर्ब ॥ तीन प्रतिज्ञा सकत न टारि। धर्महानि मनमाह बिचारि॥ सबकी पत्नी कृष्णा पर्म। होय अग्नि साक्षिक युत धर्म॥* ॥ द्रुपद उवाच ॥ * ॥ बड़त एकके पत्नी होय। बऊ पति करति न बनिता कोय॥ लोक बेद बिधि बिहित बिरुद्ध। कैसैं यह कहियत मतिशुद्ध॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ जानत सूक्ष्मन धर्म बिचार। चलत पूर्बजन पथानुसार॥ कहत असत्य न करत अधर्म। सुनऊ भूप यह मो मति पर्म॥ कहो बचन सो माता जौंन। करिवें हमैं अवश्यक तौंन॥ तामे करऊ न शङ्का भूप। करिवैं तुम्है तौन अनुरूप॥ * ॥ द्रुपदउवाच ॥ *॥ धृष्टद्युम्न तुम कुन्ती सर्ब। करऊ नियतसों करैं अखर्ब॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ करत जहाँ ए बचन बिलास। आए तहाँ महामुनि व्यास॥ पाण्डव सहित द्रुपद महराज। पूजो मुनिकोँ सहित समाज॥ परमासनपर बैठि ललाम। बूझो कुशल महा तपधाम॥ आज्ञा लहि मुनिबरकी भूप। आसनपर बैठे सुखरूप॥ बूझो द्रुपद मधुर कहि बैन। हेतु द्रौपदी के मतिऐन। होय धर्मपत्नी तिय एक। बऊ पतिकी यह कहऊ बिबेक॥ **❁*❁*❁**

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ व्यासउवाच॥ * ॥ लोक बेद बिरुद्ध है अति गूढ यह नृप धर्म। कहऊ मत तुम आपनो सब यथामति गुणि पर्म॥ * ॥ द्रुपदउवाच ॥ * ॥ जानि परत अधर्म्म हमकों बऊत पति तिय एक। पूर्व काहूँ कियो नहि यह कर्म सहित बिबेक॥ एहि कर्मको ब्यवसाय हमसों होयगो नहि जानि। धर्म यह सन्देह पूरण परतु है अनुमानि ॥ *॥ धृष्टद्युम्नउवाच॥ * ॥ कनिष्ठकी तिय माह रमिहै जेष्ठ भ्राता जौन। सदबृत्त होय सुधर्म ताको रहैगो विधि कौन ॥ धर्म होय अधर्मके यह उचित है नहि कर्म्म। पांचपतिकी होय भार्या द्रौपदी नहि पर्म्म॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ * ॥ अनृत सो नहि कहति बाणी गहति मति न अधर्म्म। है अधर्म न जानि यामें गहत मो मनमर्म्म॥ रही गौतम बंश कन्या पूर्ब जटिला नाम। बरी सो बऊ ऋषिन तौंही भरी धर्म ललाम॥ मुनि जासु बार्क्षी महा सुन्दरि पूर्बही तपधाम। बरी सु दश प्रचेतसनकों भरी पुण्य सु साम॥ धर्म मत गुरु बचन जननी परम गुरु गुण भौंन। हमैं करिवो थोसि ताको परम आज्ञा जौंन॥ ॥ * ॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥ यो युधिष्ठिर कहतहैं सो सत्य मेरो बैन। अनृतहौं नहि कहति कबहूँ जानि पातक ऐन ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ कहोंगो नहि भूप सबसों धर्म यह अभिराम। यो युधिष्ठिर कहतहैं सो सत्य धर्म ललाम॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ द्रुपदकी गहि बाह मुनि लै गए भीतर भौंन। धर्म कुन्ती धृष्टद्युम्न सु कियो तेहा मौंन॥ जाय तहँ मुनि कहन लागे द्रुपदसों

सो धर्म्म । बऊत पतिके एक पत्नी होय जैसे धर्म्म ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ सत्र नैमिषारण्यमे आ०प० हे करत सुरगण सर्ब । पशुनको यमराज बध तहँ रहे करत अखर्ब ॥ रहे दीक्षित पितृपति नहि हने प्रजन विशाल । मरण बिनु जगजीव भे बऊ पाय कै चिरकाल ॥ सोम शक्र कुबेर साध्य प्रचेत सादि अखर्ब । देव बिधिपँह जाय बोले मनुज भय भरि सर्ब ॥ पितामहउवाच ॥ मनुजतें भय कहा तुमकों अमर तुम बलधाम ॥ देवाऊचुः ॥ भए अमर समान मनुज न मरत बाढे माम ॥ अमर भे सब मनुज याते सुनो हे लोकेश । अमरगण अरु मनुजगणमे रह्यो कछु न विशेष ॥ * ॥ पितामहउवाच ॥ * ॥सत्रमे हैं प्रवृत यम नहि मनुज मारत तौन। भएँ सत्र निवृत्त ह्वै है मनुज मारण जौन॥ कीवो यतन यमराज धरि ले बीर्य्य तुम्हरो पाश। गतबीर्य्य ह्वै है मनुज तिनको करहि गे ते नाश॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ गए तहँ सब देव जेहाँ होत सत्र महान । जाय बैठे सुरशरीको पास लहि सुखदान ॥ तहाँ देखे बहे आवत पुण्डरीक अनन्त । चले तिनको मूलदेश न तहांतें सुरकन्त॥लखी गङ्गा मूलमे जलमध्य ठाढी बाम।करति रोदन गिरत अश्रु सो होत कञ्ज ललाम॥ देखि अद्भुत लगे पूछन इन्द्र ता ढिग जाय । कौन कारण करति रोदन कौन हो इत आय ॥ ॥ * ॥ स्त्र्युवाच ॥ * ॥ जानि हो तुम शक्र जो हौं करति रुदन सदन्द । चले आवऊ लखऊ मेरो रुदन कारण कन्द ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ गए ताके चले पीछे लखो पुरुष महान। अत्त क्रीडत सहित बनिता सिद्ध आसनमान ॥ गिरि शृङ्ग ऊपर देखि ऐसें इन्द्र बोले बैन। लोक तीनो बश्य मो सुरराज हौं बल ऐन ॥ बिहँसि कै तब देव देखो जानि शक्र हि क्रुद्ध। भए काष्ठ समान देखत इन्द्र अङ्ग सुरुद्ध ॥ अत्तक्रीडा अन्त रुदती बामसौं इमि बैन। कहो देव सु ल्याय इत जेहि गर्ब फेरि लहै न॥ छुवत ताके गिरे क्षितिपर सभय कँपत सुरेश। फेरि ऐसो कीजियो मति कियो देव निदेश ॥ टारि यह गिरि बिबर शिलकों पैठि कै बलवान । चारि तामे और देखेऊ आपु रूप समान ॥ टारि गिरि शिल बिबरमे समरूप देखे चारि । हौंहि गे यहि भाँति हम यह भए दुखित बिचारि॥ क्रोध करि कै शक्रसौं इमि कहो देव महान । कियो हमसों गर्ब ताको लहऊ फल अभिमान॥ देवके सुनि बचन सुर पति गिरे कम्पित पीन। जोरि कै कर देवसों व्है कहन लागे दीन॥ * ॥ देवउवाच॥ * ॥ लहत मो न प्रसाद तुमसे शीलके जन जौन। भए ऐसे पूर्ब ए तुम रहऊ तहँ करि भौन ॥ जन्म ले नरयोनिमे करि बऊत जनको नाश। स्वकर्म बश व्है करऊगे फिरि इन्द्रलोक निवास ॥*॥ पूर्बेन्द्रउवाच॥ *॥ मनुज लोकहि जाहिंगे हम जहा मोच्छ बिधान । धरहि जननीमे हमारो गर्भ देव महान ॥ धर्म वायु सुरेश दस्र सु पिता हौंहि ललाम । युद्ध करि दिव्यास्त्रसौं नरपतिनसौं बलधाम॥ देह तजि सुरलोकमें फिरि करैं बास महान ॥ * ॥ व्यासउवाच॥ * ॥ बचन तिनके सुनत पञ्चम इन्द्र गुणि मति मानं॥

आ०प० देव मोकों कार्य्य है सुरलोकमें सम्पन्न। वीर्य्य मेरो होयगो नर योनिमें उतपन्न॥ विश्वभुक अरु भूत धामासि विभु चौथो शाँति। गुहामें जे रहे बहुदिन परे होय अकाँति॥ अरु सुतेजखी सु पञ्चम इन्द्र ए वर सर्व।दियो तिनकों इष्ट सिगरो कहो जौन अखर्व॥सुन्दरी सो वाल रुदती तीन्हें भार्य्या हेत। कहो लीबैं जन्म तियको कृपासिन्धु निकेत॥ गयो तिन सह देव सो जहँहे नरायण पर्म। कहो तिनसों करण सो जगदीश धारक धर्म॥दियो रोम उखारि द्वै तिन श्वेत कृष्ण ललाम। बसो देवकि रोहिणीके गर्भमे सो माम॥श्वेत भो वलभद्र कृष्ण सो कृष्ण जगदाधार। भए पाछे इन्द्र पाण्डव बीर धीर उदार॥ भयो पञ्चम इन्द्रतें यह सव्यसाची बीर। भई लक्ष्मी तौन कृष्णा भरी रूप गँभीर॥ नतरु इस्त्री होति क्यों मख कुंडतें अभिराम। गन्ध जाको कोश चारी रूप शशि सम माम॥ दिव्य चक्षु सुदेत तुमकों लखहु तिनको भूप।प्रथा पुत्रनको सु पूरब जौन इन्द्र स्वरूप॥ * ॥ वैशंपायनउवाच ॥ * ॥ दिव्य चक्षु सु द्रुपदको तब दियो मुनिबर व्यास। लखन लागे पांडवनको पूर्व रूप प्रकास॥ धरे हेमकिरीट माला दिव्य भूषण सर्व। प्रौढ उन्नत ताल से सुरनाथ सदृश अखर्व॥ लह्यो अति आश्चर्य भूपति देखि माया माम। द्रौपदीको लखी औसम जोतिमय अभिराम॥ जानि तिनकी परम पत्नी देखि कै अनुरूप। होय हर्षित व्यास मुनिके चरण अरचे भूप॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ विप्र कन्यै शम्भु पूजो चाहि सुपति उदार। देत बर बस प्रेम मागो ईशसों सरवार॥ मिलहि गे पति पांच तो बर बचनके परमान। देह धरिकै और लहि है दिव्य पति सुखदान॥ देव रूपिनि सुता सो यह भई है तो भूप। देव बिहित सु लहैगी यह पञ्चपति अनु रूप॥ स्वर्ग लक्ष्मी महा तप करि पांडवनके हेत। भई तो मखकुंडतें धरि परम पति ब्रत नेत॥ * ॥ द्रुपदउवाच ॥ * ॥ सुता एकहि ब्याहिबेकों कियो सम्मत पर्म। कौनके है शक्यमे जो देव निर्मित कर्म॥ होउ पत्नी पांडवनकी परम कृष्णा जौन। शम्भुको बर भयो पहिले तौन टारत कौंन॥ * ॥ वैशंपायनउवाच ॥ * ॥ कहो मुनिबर आजु है दिन लहे शशि बल पर्म। प्रथम पाणि ग्रहण कृष्णाको करो नृप धर्म॥ वसन भूषण दिव्य मणिमय द्रुपद भूप मगाय। किए भूषित पांडवनकों जानिकै सुखदाय॥ करि अलंकृत द्रौपदीकों तहँ बोलाई भूप। सुहृद मंत्री तहाँ आए धारि दिव्य स्वरूप॥ वेश्मजन गण मणिन मंडित लसो अति अभिराम। यथा राका शशी तारणसहित गगण ललाम॥ महा अद्भुत आय तेहा कह्यो नारद चैन। ब्याह जबलौं हौं हिंगे यह रही कन्या ऐन॥ धौम्य सुमुनि समान पावक बिहित विधि अभिराम॥ मंत्रविद करि चषि स्थापन होम करि तपधाम॥ कियो योजित धर्म नृपसों द्रौपदीकों ल्याय। सह प्रदक्षिण ब्याह कीन्हों पाणि ग्रहण कराय॥ अहनि अहनि सुक्रमहितैं भीमादि पांडव सर्व।पाणि ग्रहण सु द्रौपदीको कियो सबिधि अखर्व॥दियो दायज पांडवनकों द्रुपद वित्त सु माम।दिए स्यन्दन तिन्है शत शत मणिन जडित ललाम॥ दिए तितने मत्तवारण मेरुसे बलधाम। दई दासी

सुन्दरी नवयौवना अभिराम ॥ दए भूषण वसन नाना भाँतिके बहुरङ्ग ।पृथक पृथक सु पांडवन कों भरे मोद तरङ्ग ॥ व्याह करि बर पाय लक्ष्मी परम पांडव बीर । लगे सुरपति सदृश बिहरण भरे मोद गँभीर ॥ पांडवनकों सँङ्ग लहिकै द्रुपद नृप बलधाम । दानवनसों देवतन सों भए निर्भय माम ॥ द्रुपद दासी दई तेकहि नाम अपनो जाय । भरी आनद लगी परसन प्रथाके बर पाय ॥ भरी मङ्गल आय कृष्णा प्रथाके पदकञ्ज । बन्दि आशिष परम पाए मोदमय मनरञ्ज ॥ व्याह उत्तर पांडवनकों दये कृष्ण पठाय । अश्व रथ मणि वसन भूषण गज नके समुदाय ॥ दास दासी रूपगुणमय मणिन्ह मंडित पर्म्म । दिये सहसन पठै जानै जौंन सेवा धर्म्म ॥ सैाज धनद समानको सो लियो पांडव नन्द। दियो जौंन पठाय आनद भरे यदुकुलचन्द। भरे विभव विभूतिसो सम इन्द्रके अभिराम । लसे कृष्णा सहित पांडव बीरवर बलधाम ॥ * ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि द्रौपदी स्वयम्बरवर्णनोनाम सप्तचत्वारिंशोध्यायः ॥ *—*—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ समाचार भूपन मगवाए । पठै विश्वसित दूत सोहाए ॥ सुनो द्रौपदी आनद भरी । बीर पाण्डवनके सँगबरी ॥ करि धनु सज्य लक्ष्य जेहि मारो ।सो हो अर्जुन अतिबल भारो ॥ शल्य भूप जेहि मर्दन कीन्हो । बृक्ष उपारि नृपन्ह भय दीन्हो ॥ सो है भीमसेन बलभारी। अरिगण गहन दहन समचारी ॥ पांडव ब्रह्म रूप धरि आए ।रङ्गमाह सुनि बिस्मय छाए ॥ प्रथा ससुत जतुगृहमह जरी । अैसि खबरि प्रथम सुनि परी ॥ भूपन्ह फिरि जनमे से माने । पांडव बीर भाग्य बर जाने ॥ भीष्म और धृतराष्ट्र नरेशै । कहि धिक्कार गए निज देशै ॥ चले सुयोधन बिमन सभाई । कर्णादिक सहसैन सहाई ॥ दुःशासन इमि कहत लजानो । बिप्र रूपत तिन्हैँ न जानो ॥ नतरु द्रौपदी हि कैसैँ बरते। पांडव जानि हमै जौं परते ॥ होत दैव बिरचित सो साँचो। पैारुष बिधि सहाय बिनु काँचो ॥ आनद बिगत खेदसों छाए । हास्तिन नगर सुयोधन आए ॥ देखि पांडवनकों भय भारे । अग्नि दाह कृतकर्म्म बिचारे ॥ जानि द्रुपद सह सुतन सहाई । चिन्ति पांडवनकों दुखदाई ॥ बिदुर सुनो कृष्णाकों बरे । पांडव सकल मोदसों भरे ॥ दर्प बिहीन सुयोधन भए । भरे लाज अतिसै दुखमए ॥ *—*—*—*—*

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

धृतराष्ट्र पास इमि बोले बैन । बिदुर भरे हियमे अतिचैन ॥ बढे भाग्यबश कुरुकुल भूप। यह सुनिकै धृतराष्ट्र अनूप ॥ लही सुयोधन कृष्णाबाम। जानि कहो बर बैन ललाम ॥ भाग्य भाग्य यह बोले बैन। बीप्सा सहित भरे अति चैन ॥ सहित सुयोधन कृष्णा बाम । त्याबहु मो

आ०प० समीप अभिराम ॥ भूषण बसन अमोल मगाय । दीबैं चहत ताहि सुखदाय ॥ कहो विदुर सुनिए छितिपाल । बरो पाण्डवन कृष्णाबाल ॥ द्रुपद तिन्हे पूजे भरि प्रेम । हैँ पांडव तेहां सहछेम ॥ द्रुपद सहायक भूपति जौन । मिले पांडुपुत्रणसो तौन ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ मम पुत्रनतेँ पांडव सर्व । मोहि विदुर कर मोद अखर्व ॥ पाण्डव कुशली सहित सहाय । द्रुपद भूप सम्बन्धी पाय ॥ निर्धन होय कौन बर भूप । अपनो बिभव न चहत अनूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ विदुर कहो सुनि नृपके वैन । रहो बुद्धि यह तुम्है सचैन ॥ गए विदुर तब कर्ण समेत । दुर्योधन आए हतचेत ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ विदुर निकट तो अपगुण भूप । तुम्है न हम कहि सकत अनूप ॥ करिवें अन्य करत हो आन । यह तो भूप न तुम्है समान ॥ तिनकेबल विधातके वैन । कहिवे योग्य तुम्है मति ऐन ॥ करिवें समय योग्य जो मंत्र । सो विचार हम कियो स्वतंत्र ॥ ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ करिवें हमै चहत तुम जौन । बिदुरहि नही लखावत तौन ॥ याते कहत तास गुण धर्म । जातैं बिदुर न पावै मर्म ॥ जो तुम पुत्र विचारो मंत्र । सहित कर्णसो कहऊ स्वतंत्र ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ बिप्र चतुर अति आप्त महान । पठै देऊ तिनपास सुजान ॥ ऐसो भेद करै सो जाय । तिनमे विग्रह देय कराय ॥ की द्रुपदहि दे वित्त महान । सहित पुत्र सह सचिव सुजान ॥ ऐसें लोभित करै अनूप । पांडव त्याग करैँ ज्यौं भूप ॥ इहां बासकों दूषण धारि । कै राखै तंह तिन्है विचारि ॥ कै करि भीमहि कछू उपाय । हनै गुप्तविष भक्ष [illegible] ॥ ताके मरे विगत उतसाह । होहिँ पांडुसुत सुनु नरनाह ॥ राज्य हेत फिरि करै न यत्न । [illegible] इनको प्रवल सपत्न ॥ है अजेय अर्जुन बलवान । सङ्ग रहै जों भीम महान ॥ ताहि मरे अर्जुन बलहीन । जीतै कर्ण समरसे पीन ॥ व्है बलहीन उहांतें आय । रहैँ हमारो शासन पाय ॥ तब तिनके निग्रहको यत्न । भूप करैँ तब सहित प्रयत्न ॥ जो इनमे निर्दोष उपाय । तास प्रयोग करऊ सुखदाय ॥ तबलों पांडव नृप पांचाल । करैँ न जबलों प्रीति बिशाल ॥ निग्रह यत्न करणको [illegible] ॥ साधु असाधु विचारऊ तौन । करऊ कर्ण मनभावै जौन ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥ दुर्योधन यह गिरा तुम्हारी । सम्यक हमै न परति विचारि ॥ करैं उपाय न पांडव [illegible] । होत तिहारि सुनऊ अवश्य ॥ प्रथम उपाय करे तुम जौन । बिधि बश भए व्यर्थ सब तौन ॥ [illegible] निवारे हे ते सर्व । पक्षहीन पांडव वय खर्व ॥ तब तो चलो उपाय न एक । तुम चाहो बिधि [illegible] ॥ आतपत्र भे ते बलधान । होत वश्यके बीर सुजान ॥ चहत पिताको पद अभिराम । [illegible] बीर बलधाम ॥ तिनमे भेद विचारत जौन । हूवें योग्य न भूपति तौन ॥ एक नारिमे [illegible] धारें प्रेम अखर्व ॥ भेद परस्पर तिनके मांहि । जानो निश्चय व्है है नाहि ॥ धृष्टद्युम्न [illegible] प्रीति गँभीर ॥ ते उपाय सब होत न भूप । कहत सो किजे तुरित अनूप ॥
[illegible]

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जबलौं बल बाधै नहीं पांडव सह पांचाल । तबलौं चलिकै मारिबो परम मंत्र छितिपाल ॥
सबल हमारो पक्षहै अबल द्रुपदको पक्ष । तातैं अबहो मारिबो मंत्र परम है दक्ष ॥
सहित पांडवन जीति हैं चक्रादिकनकी छिति स्वृद्धि । बाहन मित्र सबंश तब द्रुपद पाइहै वृद्धि ॥
पाण्डुतनयके राज्यको सो करिहै तब यत्न । तब न कछू बनिआइ है ह्वैहै व्यर्थ प्रयत्न ॥
सुतन सहित जबलौं नहीं करै सैन समुदाय । तबलौं द्रुपदहि मारिबो मंत्र परम सुखदाय ॥
बासुदेव जबलौं नही लए सैन समुदाय । पांडव राज्य निमित्तकौं करैं न आय सहाय ॥
बसु बाहन समुदायकौं जबलौं नहि बलबीर । पठवै यदुबंशी सुभट सैन सहायक धीर ॥
दीबो चाहत राज्यलौं पांडव हित यदुनन्द । बिक्रमतें पाई मही भरत भूप कुरुचन्द ॥
बिक्रमतें सुरपति किये जीति लोक सब बश्य । क्षत्र बंशकों योग्यहै बिक्रम भूप अवश्य ॥
तातें तबलों लै चमू सह सहाय छितिपाल । बस करि ल्यावऊ पांडवन्ह मारि भूप पांचाल ॥
साम दान नहि भेदतें पांडव साध्य नरेश । यातें बिक्रम कीजिए क्षत्रधर्म उद्देश ॥
याते और न परतहै मंत्र देखि अभिराम । पांडव जाते होहि बश महाबीर बलधाम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनत कर्णके बैन नृप धृतराष्ट्र महाबली । कहन लगे मतिऐन नीति निपुण जे बचन बर ॥ भीष्म द्रोणसों मंत्र बिदुर सहित करि लेऊ तुम । होय जौंन दृढ तंत्र सुखकर सोई कीजिए ॥ तब सबकों बोलवाय मंत्र करण लागे नृपति । आशय सकल सुनाय भरे खेद धृतराष्ट नृप ॥ * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

रुचतहै नहि पांडवनसों हमै बिग्रह भूप । यथा हमकों रहे पांडु सुतथा तुम अनुरूप ॥ हमै प्रिय गान्धारजा अरु प्रथाके सुत सर्व । यथा हमकों रक्षते तव पुत्र त्यौं हि अखर्व ॥ तथा कुरुकुल सर्वको ए रक्ष्यहै अभिराम । हमहि याते रुचतहै नहि सुनऊ बिग्रह साम ॥ देऊ याते बांटि तिनको भूमि आधी भूप । जो पितामह पिताकोहै अंश तास अनूप ॥ यथा जानत तुम सुयोधन राज्य अपनो सर्व । तथा जानत सुनऊ तेऊ पिता अंश अखर्व ॥ जौन उनको अंश सह तौ रावरो किमि भूप । धर्मतेहै दुऊनको यह राज्य सुनऊ अनूप ॥ देऊ तिनको राज्य आधो बांटि साम समेत । मंत्रहै यह परम भूपति सकुलकुशल निकेत ॥ करऊ कीर्त्ति न नष्ट जगमे कीर्त्ति जीवन सार । कहति कीरति जियत तबलों मरेऊ मनुज उदार ॥ कीर्त्तिबिन से लोकमे जन जियत मरण समान । उचित कुलके करऊ अपने पूर्व सदृश महान ॥ जियत पारथ प्रथाह निज भाग्यते अभिराम ॥

आ॰प॰ भाग्यते नहि भो पुरोचन अधमको कृतकाम ॥ सुनो जबसों जरी कुन्ती सुतन सहित अनूप । सुजन को नहि सके सोहैं ताकि तबसो भूप । पाण्डवनको जरे सुनिकै लोक तुमको दोष । देतहैं न पुरोच नहि करि धर्म दूषण दोष ॥ भयो जीवन पाण्डवनको दोष हरतब भूप । करज्ञ दर्शन पांडवनको उचित तो अनुरूप ॥ नतरु जीवत पाण्डवनको अंशहै बर जौन । नही लीबे इन्द्रहूके शक्य सुनिए तौन । नित्यहै ते सत्यमे रत धर्मसे अभिराम । राज्य भागो पुत्र तव तिमि पाण्डु सुतऊ ललाम ॥ धर्मकरिबे तुम्हैं जो कुल कुशलमो प्रिय भूप । देऊ आधो बाँटि तिनको राज्य यह अनुरूप ॥ ॥ *॥ द्रोणउवाच ॥ *॥ धृतराष्ट्र नृप सतमंत्र बूझे जानिकै नर पर्म । ताहि कहिबो उचित बचन यशस्य कारक धर्म ॥ भीष्म जो यह कहतहै सो हमे सम्मत भूप । देऊ तिनको राज्य आधो बाँटिकै सुखरूप ॥ पठैदीजै द्रुपदपैं है प्रियम्बद नर जौन । देइकै बज्ररत्न भूषण द्रुपदजा हित तौन ॥ कहै सो तहँ जायकेतो बचनके अनुरूप। होहि जाके सुनत पांडव सुखी सोमक भूप॥ शान्त बचन सुनाय फिरि फिरि पांडवनको तौन । हरै मनगत खेद सिगरो पूर्वसंभव जौन ॥ द्रुपद पुत्र नको सु भूषण बसन देय ललाम । करै कृष्णासहित तौन प्रसन्न अति अभिराम ॥ उक्तिसो तब हस्तिनापुर को कहै सो गौन । करहि जब स्वीकार पाण्डव महाबर बलभौन ॥ लेइ आज्ञा पाण्डवनकी जाय शोभन सैन । सहित दुःशासन सु और बिकर्ण मतिको ऐन ॥ पाय तुमसो प्रीति मत परधान को लै पर्म । पितृपद बर रहै ते व्है प्रसन्न सुधर्म॥ सहित पुत्रन तुम्है करिबे योग्यहै यह भूप । कहो भीषम बचन यह सो सुहित धर्म स्वरूप ॥ * ॥ कर्ण उवाच ॥ * ॥ अर्थमान सु लहत तुमसो अन्तरङ्ग सु जौन । अश्रेय मंत्रसो देत याते और अद्भुत कौन ॥ दुष्टता मनमाहि राखै कहै सुहित समान । करै ताको बचन कैसे श्रेय सुनऊ सुजान ॥ होतहै बिधि बिहित दुखसुख सुनऊ सबको भूप । मूर्ख बिदुष बिवेक है नहि प्रबल कर्म अनूप ॥ अस्तु बीच महीप आगे रहो मगध नरेश । चीण जाकी सकल इन्द्री रही स्वासाशेश ॥ महाकर्णि अमात्य ताको राज्यको धरि भार । राज्य सर्बस रत्न बनिता कियो स्वबश उदार ॥ स्वबश करि ऐश्वर्य्य सिगरो कियो चाहो राज । तेहि न पायो राज्य ताको बिना भाग्य रुमाज ॥ होय गो तो भाग्यमे जौ राज्य बिहित अनूप । लखत सबके करज्ञ गे तुम नियत कुरुकुल भूप ॥ दुष्टको सु अदुष्टको सब लेऊ भाषित जानि । होतहै बिधि बिहित सबको राज्य लीजै मानि ॥ * ॥ द्रोणउवाच ॥ * ॥ पाण्डवनसों दुष्टताधरि भाग्य दोष बिचारि । कहत हौ राधेय ऐसे बचन तुम निरधारि ॥ स्वकुल बर्द्धन परम हित यह मंत्र सुनि अभिराम । याहि मानत दुष्ट हौ तुम दुष्ट तासों साम॥ अन्यथा जौ करहि गे यह मंत्र नृप हित रास । लहै गो कुरुबंश थोरे कालमाह बिनास ॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ रहित संशय श्रेयकर गुरु भीष्मके ए बैन । नही सुनिबे योग्ययामे बाक्य एको है न ॥ भीष्मके गुरु द्रोणके बर बचन मित हित धाम । कहत सुनि राधेय

तिनको अहितसो न ललाम ॥ करहु चिन्तित और इनसों अधिक नहि मतिमान। कौंन इनसो आप्य॰ सुहित तुमकौं सुनहु भूप सुजान ॥ कियो नहि अपकार इनको कछू तुम मतिऐन । दोष दिनु ए कहैं गे क्यों अहित तुमसों बैन ॥ यहि लोकमे मतिमान उत्तम पुरुष ए अभिराम । देहिंगे कोहि भांति तुमकों जिम्ह मंत्र अकाम ॥ यथा तवसुत तथा पांडव रहित संशय भूप । करै इनमे भेद सो नहि चहत श्रेय अनूप॥प्रीति अपने सुतनमे है तुमहि भूप विशेष। करत है सो प्रगट सबकों सूतको सुत एष ॥ असमर्थ सोंहिं पांडवनके पुत्र हैं तव सर्व। कहत भीषम द्रोणसो है सत्य भूप अखर्व ॥ सव्यसाची महाधनुधर क्रुद्ध पांडव बीर । जीति सकत न युद्धमे मघवान लों रणधीर ॥ अयुतगज बल भीमसेन सु युद्धमे लखि क्रुद्ध । देवतो नहि सकत ताकों जीति हे मति उद्ध ॥ नकुल अरु सहदेव तैसे युद्ध निपुण महान । क्षमा दाया सत्य सागरकों न धर्म समान ॥ जासु मंत्री कृष्ण जाको पक्षधर बलराम । है सहायक सात्यकी सो जासु धनुधर माम ॥ ससुर जाको द्रुपद स्याला धृष्टद्युम्न सभ्रात । अशक्य तिनकों जीतिबो है सुनहु कुरुकुल तात ॥ करहु सुतको भाव तिनसों भली बिधिसों भूप। क्षत पुरोचन अयश जातें धोय जाय कुरूप॥ अनुग्रह जो भूप तिनपै कुरुनकों गुणधाम । सहित जीवित श्रेय दायक वंश बर्धन माम ॥ महाराजा द्रुपद तासों पूर्व बैर नसाय। प्रीति कीन्हैं बढैगो बर पक्ष अति सुखदाय॥बहुत है यदुवंश सिगरे धीर बीर स्वरूप। कृष्ण जहँ तहँ रहैंगे ते कृष्ण जहँ जय भूप ॥ सामहीसों कार्य साधन करत हैं मतिमान। भए बिग्रह जय पराजय विहित बिधिसु सुजान॥ सुने पांडव जियत उत्सुक देखिबेकों सर्व। महत जन पद स्वपुरबासी भरे मोद अखर्व । कर्ण शकुनि सुयोधनहि हतधर्म देत कुबुद्धि। सो न करिबें योग तुमकों पाय सुमत समृद्धि ॥ पूर्व तुमसों कहो हो हम तैान समुझहु भूप। है सुयोधन दोषतैँ क्षय क्षत्रको अति रूप ॥ *॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ भीष्म शान्तनु तनय द्रोण महान ऋषि मतिमाम। बिदुर तुम जो कहत हो सो सत्य आनद धाम ॥ पांडुसुत मो पुत्र मोकों धर्मते सु स मान। बिहित है यह दुहुनकों सम राज्य सत्य सुजान ॥ क्षत्र ल्यावहु पांडवनकों प्रथा सह मति ऐन। परम आदर सहित तिनसों बोलिकै बर बैन ॥ स्नुषा कृष्णा परम मेरी भाग्य सालिनि जैान। जिए मेरे भाग्यतैं सह प्रथा पांडव तैान ॥ भाग्यतें तिन लहो कन्या द्रुपदकी छबिधाम। भाग्यतें जरिगो पुरोचन बचे पांडव माम ॥ भाग्यतें यह दुःख मेरो मिटो बिदुर अखर्व। भाग्यतें फिरि मिलहिंगे मोहि पांडुके सुत सर्व ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धृतराष्ट्रको लहि परम शासन बिदुर मतिके धाम। चले लै पांचाल पहँ धन बसन भूषण माम॥ प्रथा कृष्णा पांडवनकों सहित द्रुपद समाज । दियो दीबे हेत तिनकों जैान कुरुकुल राज ॥ धर्मशास्त्र बिवेक बिद तहँ जाय बिदुर सुजान । सहित पांडव द्रुपद भूपति सों मिले सहमान ॥ कुशल बूझो द्रुपद पांडव बासुदेव समेत। आनन्द पूरित मिले सबसों स्नेहरञ्जित चेत ॥ कियो पूजन पांडवन तब बिदुरको

आ०प० लहि चैन । बिदुर बूझो कुशल तिनसों स्नेहसों भरि बैन ॥ दिए धन मणि बसन भूषण भाँति नाना जौन । कहे फिरि धृतराष्ट्रके बर बचन प्रियकर तौन ॥ द्रुपद तनयनकों दए बर बसन भूषण पर्म । फेरि कुन्ती द्रौपदीकों दियो बिदुर सधर्म ॥ द्रुपद पाण्डव कृष्णसों इमि कहन लागे बैन ॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ कहे जे धृतराष्ट्र बूझन कुशल प्रश्न सबैन ॥ कुशल बूझो भीष्म तुमसों सहित द्रोण सप्रीति । चहत तो सम्बन्धहे कुरुबंश भूप सुनीति ॥ सम्बन्ध तुमसों करि कृतारथ भए चित अनुमानि । भयो है कुरुबंश सानद लाभ दुर्लभ जानि ॥ बिदाकीजै पाण्डवनकों जानिकै यह भूप । चहत सह कुरुबंश देखो नृपति इनको रूप ॥ लखो चाहैं सहित कृष्णा प्रथाकों कुरु बाम । बिदाकीजै सहित कृष्णा पाण्डवनकों नाम ॥ पाय आज्ञा रावरी हौं देउ दूत पठाय।पांडवनको आगमन सो कहै नृप यह जाय ॥ *॥ द्रुपदउवाच॥ कहतहो तुम बिदुरसोहै बचन बिहित महान । पांडवनको गमन हास्तिन नगरकों सुखदान ॥ नहो कहिबे योग्य हमकों गमनके जे बैन। कहैं पांडव प्रथम हमसों महा मति बलऐन ॥ सहित राम सुकृष्ण पांडव गमनहै अभिराम।नहा प्रियकर पांडवनके पक्ष पालक श्याम ॥ *◇*◇

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ पराधीन हम भूप सुजान । कहो जो तुम सो हमै प्रमान ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बोले बासुदेव मतिधाम । गमन लगत हमकों अभिराम ॥ अथवा जौन कहैं पाञ्चाल । जानतहै सबधर्म बिशाल ॥ * ॥ द्रुपदउवाच ॥ * ॥ जो सम्मत तुमकों यदुबीर । समैं सदृश सोकीजै धीर॥ जैसैं पांडव हमकों सर्ब । बासुदेवकों तथा अखर्ब ॥ तथान चाहत पांडव श्रेय । कियो चहत ज्यौं कृष्ण अमेय ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ द्रुपद नृपतिको आज्ञापाय । पांडव सहित कृष्ण सुखदाय ॥ कृष्णा प्रथा बिदुर मतिमान । हास्तिन पुरकों कियो पयान ॥ सुनि आवत पांडव बलबीर । पठए कौरव नृपति गँभीर ॥ चित्रसेन बर पुत्र बिकर्ण । गौतम द्रोण चमू आभर्ण॥ तिन्है समेत सु पांडव बीर । हास्तिन पुर आए रणधीर ॥ शोभित भयो नगर अभिराम । बरैं दीप ज्यौं बहु ललाम ॥ पुरजनपरजन भरि हिय चैन । कहन लगे इमि मङ्गल बैन ॥ आए दुखहारी नरबीर । पालतहे जे सुतवत धीर ॥ आजु पांडु नृप बनते फेरि । आए मनहु प्रगट इमि हेरि॥ सुनत प्रजनके प्रियकर बैन । पांडव भरे मोद हिय ऐंन॥ धृतराष्ट्र भीष्मके बन्दि सु पाय।बंध रहे तिनके [illegible] जाय ॥ कुशल प्रश्न कहि सबसों बीर । भरे हृदयमह मोद गँभीर ॥ धृतराष्ट्र नृपतिकी आज्ञा पाय । कियो प्रवेश धामसे जाय ॥ कियो तहाँ कछुदिन बिश्राम । सहित सु बासुदेव ब्रज धाम । [illegible] सहित धृतराष्ट्र बोलाय । कहो पांडवनसों समुझाय ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ बियह होय न फेरि महान । यातैं यह तुम करहु सुजान ॥ इन्द्रप्रस्थमह कीजै बास । परम रम्य सब योग्य निवास॥ पारथतैं रचित अभिराम । सुरपति तैं ज्यौं सुरसब नाम ॥ आधेराज्य लेहु

अभिराम। खांडव प्रस्थ जाऊ बलधाम ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भूप वचन लहिके सु प्रमान। कियो पांडवन तुरित पयान॥गे श्रीकृष्ण सहित तँह बीर। जहाँ बिपिनि खांडव गम्भीर॥ तहँ करि शान्ति वेदविधि धर्म। चाहि नगर रचना तहँ पर्म॥ सह द्वैपायन मुनि तपधाम। नेई नगरकी दई ललाम॥ परिखा कीन्ही सिन्धु समान। गिरि सम रचे प्रकार महान॥ हिमगिरि कन्दर सम पुरद्वार। रत्न जडित वर लगे केवार॥ तहँ बैठे रक्षक बरबीर। धरे शस्त्र बऊ बल गम्भीर॥ धरी शतघ्नि ऊर्द्ध प्राकार। अरिदल बल कारक संहार। बऊ विस्तीरण रचित बजार॥ वणिक सवन धन धरे उदार॥ महत शुभ्र हिमगिरिसे भौन। नगर लसो सुरपुरसो तौन॥ मध्य नगरमे भूपतिधाम। वैजयन्त सम लसत ललाम॥ आय बसे तँह द्विजबर वृन्द। धर्म धुरन्धर पाय नरिन्द॥ चऊँदिशितैं व्यापारी आय। क्रय विक्रयके रचत उपाय॥ बसे शिल्पविद आय अनेक। बऊ भाषाबिद जन सविवेक॥ नानाविधिके बाग विशाल। नगर निकट बिरचे छवि जाल॥फूले फरे बिटप बऊरङ्ग। बऊतभाँतिके लतिकन सङ्ग॥ कलरव मंडित अति अभिराम॥ मधुकर निकर करैं जहँ धाम॥ लताभौन कुसुमित अतिमाम। सर पञ्जर कीन्हे मनुकाम॥बापी लसैं भरी बरनीर। भू मुद्रा सम लसै गँभीर॥ सरबर भरे सलिल अभिराम। हंस करँड चकनके धाम॥ फूले कमल लसत सह भौर। श्रीके मनु विधि विरचित चौर॥ परम सुदिन लहि कियो प्रवेश। खांडव प्रस्थमाहि अवलेश॥ पञ्चपांडवनसों पुर तौन। सुरपुर सदृश लसो छवि भौन॥ तिनको तहा प्रवेश कराय। गए द्वारिकाकों यदुराय॥ *~*~*~*~*~*~*~

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना बिरचिते महाभारतदर्पणे आदिपर्वणि युधिष्ठिरराज्य लाभोनाम अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जनमेजयउवाच॥ इमि लहि पांडव राज्य महान। आगे कहा कियो मतिमान॥ ते सब महा सत्ववर बीर। रमे द्रौपदीसों किमि धीर॥ पाँच पाण्डव द्रौपदी एक। रहो कौन विधि धर्म्म विबेक॥ सुनो चहत सो सह विस्तार। कहो सो विधिवत सुमुनि उदार॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच राज्य पायके बिधिवत धर्म्म। पालन कियो युधिष्ठिर पर्म॥ पांडव जहँ बैठे रणधीर। आए नारद तपस गँभीर॥ आसन जौन आपनो पर्म। दयो महामुनिकौं नृप धर्म॥ बैठे मुनिबर जब तब भूप। पूजन कियो यथा अनुरूप॥ राज्य निबेदन करिके पर्म। ठाढे भए जोरि कर धर्म॥ आशीर्बाद देइ तपधाम। नृपसों बैठन कहो ललाम॥ पठयो कृष्णा पास कहाय। आए नारद मुनि बरदाय॥ कृष्णा शुचि व्है धरि पट पर्म। मुनिपद बन्दे आय सधर्म॥ ठाढी भई जोरि कै पानि। आशीर्बाद

आ०प०

पाय सुख दानि॥ बिदा कियो जब मुनि तपधाम। कृष्णा गई स्वभौन ललाम ॥ तब रहस्यमें मुनि मति ऐन। कहे पांडवनसोँ इमि बैन ॥ नारदउवाच॥ कृष्णा धर्म सुपत्नी एक। तुम पति पांचसों सहित बिबेक ॥ जाते तुममें भेद न होय। हे पांडव करिए बिधि सोय ॥ सुन्द उपसुन्द दनुज हे दोय। तिनकोँ जीति सकै नहि कोय ॥ भ्राता दोऊ अतिबल भौन ।बध्य अन्यसोँ रहे न तौन॥ एकराज्य अरु एकै धाम। आसन शय्या एक ललाम॥ मरे सु तिलोत्तमाके हेत। भए काममद मोहित चेत ॥ अन्योन्य प्रीतिकर सौहृद जौन। भूपति तुम्है राखिवँ तौन॥जाते तुममें भेद न होय। अहो युधिष्ठिर कीजै सोय॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सुन्द उपसुन्द कौनके पुत्र । कैसेँ भयो भेदको सूत्र ॥ कैसे मारेगए सु तौन। हो तिलोत्तमा नारी कौन॥ सुनो चहत सो सह बिस्तार।कहो महा मुनि कृपाअगार ॥ नारदउवाच ॥ सुनऊ पुरातन यह इतिहास ॥ भ्रातन सहित हमारे पास ॥ हिरण्यकश्यपके कुल मांह। भयो निकुम्भ दैत्य नरनाह ॥ताके तनय भए बलवान। सुन्द और उपसुन्द सुजान ॥ निश्चय एक सुकारज एक। रहो दुहून समान बिबेक ॥ भोजन निद्रा प्रिय कृतकर्म। हो अन्योन्य दुऊनको पर्म ॥ प्राण एक द्वै रूप समान। ऐसे जानि परे बलवान ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

त्रिभुवन जीतनकोँ कियो तिन बिचार बलधाम। जाय बिंध्यगिरिमें लगे करण तपस्या माम॥
बायु भचत अपनो करत मांस हवन हविपुष्ट।ऊर्ध बाऊ ठाढे रहे छितिपर दए अँगुष्ठ॥
व्है बिनिद्र तिन तप करो महा घोर अति मान। लहि तप तेजस प्रगट भो गिरिमें धूम महान॥
विघ्न करण तव देवता लगे भरे भय भूरि। तिन एको मानो नहीं रहे ध्यानमें पूरि॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

आय विधितव कहो तिनसों कहऊ बांछित जौन । सुन्द हे उपसुन्द तुमकोँ देहि हम बर तौन॥देखि बिधि कोँ जोरि अञ्जलि दोऊ ठाढे होय। कहन लागे जौन इच्छा रही सो सुख भोय॥ काम रूपी सहित माया शस्त्र बिया जौन। अमर व्है हम रहैं दोऊ दीजिए बर तौन॥ब्रह्मोवाच अमरत्व बिनु बर होयगो सब तुम्है असुर महान।अमरत्वको शङ्कल्प पहिलैं करो तुम न सुजान॥ त्रैलोक्यको जय चाहिके तुम कियो तप अतिमान। होयगो सो सकल तुमकोँ नियत मो बरदान॥ अमर सम तुम मृत्युकी विधि कहऊ और बिचारि। देहि सो हम तुमहि नियमित चित्तमें निर धारि ॥ * ॥ सुन्दोपसुन्दाबूचतुः ॥ * ॥ जीव त्रिभुवनके न हमको होहिँ भयकर अन्य। मरहि तब हम बन्धु दोऊ मारिकै अन्योन्य ॥ * ॥ पितामहउवाच ॥ * ॥ मरण तुम्हरो होयगो एहि भांतिसों वरवीर । औरसों नहि मरऊगे तुम सुनऊ हे रणधीर ॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ देइ बिधि बरदान तिनकोँ गए अपने धाम। भए ते तपतेँ निबृत्ति सु पाय कै मनकाम ॥ जानि तिनकोँ लब्ध वर हे सुहित तिनके जौन।गए तिनके पास पूरित हर्षसों हिय भौन ॥ बसन भूषण

विविधि विधिके पहिरि कै अभिराम। एक मत व्है करण लागे दोऊ अपनो काम॥ दैत्यपुरमे आ०प०
भो कोलाहल मोदमय सुखदान। करत क्रीडा भयो तिनकों बर्ष दिवस समान॥ करि निवृत्त
सु परम उत्सव दैत्य ते बलधाम। कियो त्रिभुवन जीतिवेकौं सविधि सबल पयान॥ कूदि कै दोउ
दैत्य नभकौं गए जहँ सुरलोक। जानिकै बरदान भाजे गए सुर विधिलोक॥ जीति सुरपुर यक्ष
राक्षस भूत खेचर जौन। मारि तिनकौं भूमिपर फिरि गये दुर्म्मद तौन॥ पैठिकै पातालमे सब
जीति लीन्हे नाग। सिन्धुवासी म्लेछ जीते रहे जे बरभाग॥ जीतिवेकौं भूमि सिगरी दियो फिरि
फरमाय। वाक्य ऐसो बोलि तीक्षण सैन सकल बोलाय॥ देवर्षि अरु राजर्षि जे हवि देत मख
करि माम। हनऊ तिनको देवबल जे बृद्धि कारक काम॥ भए असुर प्रवृत्त लागे हनन ऋषि
द्विज धाय। देखिकै गिरि गहनमे भए लीन विप्र पराय॥ दियो अतिशय क्रोध करि जिन मुनिन
तिनकौं शाप। भयो वर बश तौन निष्फल सकल तपस प्रताप॥ भग्न आश्रम किए सिगरे
स्रुवा डारे तोरि। अग्निहोत्र ऊताशनो लै दए जलमे बोरि॥ भयो हाहाकार दशदिशि भजे
सुर मुनि सर्ब। गए विधिके पास व्याकुल भरे भीति अखर्ब॥ जीति करि त्रैलोक कम्पित स्ववश
करिकै माम। जायकै कुरुक्षेत्रमे ते रहे बरबल धाम॥ भे पितामह पास सिगरे देव मुनि गण
जात। कहो क्रमते सुन्द औ उपसुन्द कृत उत्पात॥ पितामह सुनि छणक चितमे रहे तौन
बिचारि। जौन विधिसौं होय तिनको नाश सो निरधारि॥ विश्वकर्म्मासौं पितामह कहो तब एहि
भांति। रचऊ बनिता एक अद्भुत भरी नख शिख कांति॥ विश्वकर्म्मा पितामहके बन्दि पद अभि
राम। रची बनिता चिन्ति चितमे रूप कैसी धाम॥ रत्नकोटिन तास तनमे पचित करि रुचिरङ्ग
करे नखतैं शीषलौं सब प्रभा पूरित अङ्ग॥ नही कोऊ अङ्ग ऐसे दृष्टि जिनमे जाय। फेरि बाहेर
कढो चाहै सिन्धु सुषमा पाय॥ लेइ तिल तिल सार सुषमा तिहूँपुरमे जौन। नाम तास ति
लोत्तमा बिधि धरो लखि छबि मौन॥ जायकै तेहि पितामहके बन्दि पद अभिराम। कहो
मोकौं रची जाके हेतु सो बिधि काम॥*॥ पितामहउवाच॥*॥ सुन्द अरु उपसुन्दकौं तुम
करऊ लोभित जाय। ते परस्पर मरहि जातैं क्रोधकौं अतिपाय॥*॥ नारदउवाच॥*॥ पिता
महके बन्दि पद तहँ देव गए हे जौन। करण लागी तिन्है मण्डल चऊँदिशि छबिभौन॥ पूर्ब
मुखहे पितामह हे तास दक्षिण ईश। रहे उत्तर देवता चऊँ ओर ऋषि अवनीश॥ इन्द्र हरको
धैर्य्य वश नहि फिरो मुख अभिराम। कढो हरकौ बदन चऊदिशि गई जित वरबाम॥ इन्द्रके चऊँ
ओर निकसे देहमे वर अक्ष। भे चतुर्मुख ईश तबलौं इन्द्र भे सहसाक्ष॥ देव और महर्षि तेहि
दिशि फिरे करि मुख लैन। तिलोत्तमा जेहि ओरकौं किय करत मण्डल गौन॥ भयो कारज
चलत ताकैं लियो सुरगण मानि। महत अद्भुत रूपकी अति सिद्धि सम्पति जानि॥ जीति त्रिभु
वन दैत्य ते जग निःसपत्न बिचारि। लगे बिहरण छोडि कै पर यत्न आनद धारि॥ भोग्यवस्तु सम्हि

आ०प० सैं लहि मोद वृद्धि ललाम। लगे नाना भांति विहरण पाय थल अभिराम॥ विंध्यके सम शिखर पर तरु सघन सुमन समूह। जाय तहते लगे विहरण सङ्ग वनिता जूह॥ पान करि अति वारुणी मद मत्त सबविधि तौन। तिलोत्तमे सो समै लखिकै तहां कीन्हौ गौन॥ पहिरि सूहा सूक्ष्म अम्बर एक अतिहि ललाम। सुमन बीनति परी तिनकी दृष्टिमे छबिधाम॥ सुन्द औ उपसुन्द लखि कै होय कामासक्त। दुऊन पकरे जाय दोऊ हाथ व्है मदमत्त॥ कहन लागे परस्पर यह उचित हमकौं बाल। होय क्रोधाशक्त कीन्ही दुऊन भृकुटि कराल॥ कोप अग्नि अमान बाढो भसम व्है गो नेह। लई तिन गुरु गदा करमे भरे दारुण तेह॥ लगे करण प्रहार दोउ भरे मद बल वान। गदाको लहि घात दोउ गिरे विगलित प्रान॥ भजे सहचर सकल तिनके गए पैठि पताल। सहित देवन तहां आए पितामह चितिपाल॥ दियो सुवर तिलोत्तमाकौं पितामह अभिराम। यथा सुख तुम करऊ सञ्चर जगतमे छबि धाम॥ देय ताकौं सुवर ऐसो इन्द्रकौ त्रयलोक। व्है प्रसन्न सु पितामह तब गए अपने ओक॥ नारदउवाच ॥ एक निश्चय सुहृद दोऊ हे सहोदर तौन। लरे हेत तिलोत्तमाके करे यमपुर गौन॥ कहत यातैं सो हते हम सुनऊ नृपति सनेत। होय तुमने भेद जैसैं नही कृष्णाहेत॥ करऊ तैसो होयमो तब भद्र मम प्रिय पर्म॥ वैशम्पायन उवाच॥ बचन सुनि यह महामुनिके पांडुसुत सह धर्म्म॥ वर्ष दिनको वार बांधो क्रमहितैं तिन सर्व। महामुनिके निकट ऐसो कियो नियम अखर्व॥ द्रौपदीके निकट देखै अन्यकौं जो अन्य। वर्ष बारहि नियम करि सो करै बास अरन्य॥ नियम यह ठहराय नारद गए अपने धाम। रहे तैसैं सकल पाण्डव सङ्ग कृष्णा बाम॥ *********

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतमहाभारतदर्पणे आदिपर्वणि सुन्दोपसुन्दवध वर्णनो नामैकपञ्चाशो ऽध्यायः॥***********

॥*॥ रोलाछन्द॥*॥

॥*॥ वैशम्पायन उवाच॥*॥ करि प्रतिज्ञा रहे ऐसैं पाण्डुतनय ललाम। अन्य भूप स्ववश्य कीन्हे शस्त्रबल बलधाम॥ रहो ऐसे पाण्डवनके स्ववश कृष्णापर्म। तौन नियम निबाहि वैसे चारु चाहि स्वधर्म॥ बऊत बर्ष सुराज्य तिनकौं करत गे जब तुष्ट। विप्रगोधन हरो काहूँ आय तस्कर दुष्ट॥ हरें गोधन क्रोध करि नृप द्वारपै द्विज आय। करण लागो सोर नाना भाँति बचन सुनाय॥ षष्ठांशहारी भूप जौ नहि करै रक्षा पर्म। ताहि सिगरे देशको सब लगत आय अधर्म॥*॥ वैशम्पायन उवाच॥*॥ हरो द्विजधन चोर याते धर्मलोप विचारि। अभय दीन्हो पार्थ ताकौं पाणिमे कर धारि॥ पाण्डवनके परम आयुध रहे हे जेहिधाम। द्रौपदी सङ्ग रहे तेहाँ धर्म नृपति सकाम॥ तहाँ चाहत जाइवेकौ शस्त्र लीबे बीर। समुझि के सो नियम तेहाँ सकल

जायन धीर ॥ रुदन द्विजको गो हरण क्षत सुनत पावत खेद । जानि पातक लगो चाहत जौन निन्दित वेद ॥ जौँन रोवतविप्रकौँ हौँ करौँ रक्षण पर्म। क्षात्रकर्म बिरोध लागत आय नास्तिक धर्म ॥ अजात शत्रु महीपको करिकै निरादर जौन। गए गेहमे लगै हमकों अनृत पातक तौन॥ भूप भौन प्रवेश कीन्हें होयगो बनवास । बिप्र गोधन राखिए वरु लहे देह विनाश ॥ यह शोचि अर्जुन जाय नृपढिग लेय आज्ञापर्म । लै सु धनुष तूणीर रथचढि चले पहिरि सुबर्म ॥ मारि चैार समूह द्विजकौं देइ गोधन सर्व । आयकै नृपचरण वन्दे पाय प्रीति अखर्व ॥ कहो पारथ नृपति सों तब देऊ बनब्रत मोहि । सत्य जातें रहै मेरो पूर्व पनकौं जोहि ॥ सुनत अप्रिय भूप आरत खलित बोले बैन । कियो जौन प्रवेश द्विजहित हमे अप्रिय है न ॥ जाय जौ गुरुनिकट अवरज ता न धर्म बिरोध । जाय अवरज पास गुरु तौ धर्मलोप सुबोध ॥ नहीं बनकौं जाऊ यातें लगतहै न अधर्म । * । अर्जुन उवाच । * । सत्यसों नहि चलौंगो है सत्य भूपति पर्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच लेइ आज्ञा भूपकी बन चले पारथ वीर । बेदबिद बर द्विजनको संग चलो भीर गभीर ॥ सूत बन्दी सह पुराणिक साधुसङ्ग उदार । पार्थ सङ्ग सहाय लीन्हे गए गङ्गाद्वार ॥ लखत पथमे सरित सरवर बिपिनि नाना पर्म । सुनऊ भूपति कियो तेहाँ जौन अद्भुत कर्म ॥ करे बिप्रन अग्निहोत्र अनेक तहँ अभिराम । भयो तातें तीरगङ्गा द्वारको छबिधाम ॥ * * * * * *

अ०८०

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

गङ्गास्नान करणकौं धीर । जिष्णु गए बरबीर गभीर ॥ करिकै स्नान सु संध्या पर्म । तर्पण कीन्हों सबिधि सधर्म ॥ काढन चहो जब जलतें भूप । तब यह कौतुक भयो अनूप ॥ नागराज कन्या अभिराम । हरिलै गई आपने धाम ॥ लखि पारथको अद्भुत रूप । कामासक्त सु होय अनूप ॥ बरत लखोतहँ पावक पर्म । नागराज गेह माह सधर्म ॥ तहाँ हवन कीन्हो कुरुनन्द । अग्निलहो अतिमोद अमन्द ॥ अग्निकर्म करि फाल्गुणवीर । तासों बोले बचन गभीर ॥ कान हेत यह साहस बाम । कियो कौंन हो तुम अभिराम ॥ भई कौनतें भर। सुवेश। कहौ कौनको है यह देश ॥ * ॥ उलूप्युवाच ॥ * ॥ ऐरावतकुल सम्भव नाग । है कौरव्य महा बलभाग ॥ ताकी हौं दुहिता यह धाम । देखि रूप तव भई सकाम ॥ मोहि अनन्य जानि कुरुचन्द । आत्म दानदै भरऊ अनन्द ॥ * ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥ ब्रह्मचर्यब्रत हमकौं पर्म । द्वादश वर्ष दियो नृपधर्म ॥ सो न अनृत करि सकत महान । चहत कियो तो प्रिय सुखदान ॥ * ॥ उलूप्युवाच ॥* ब्रह्मचर्य कारण सबिधान । हमसब जानति सुतऊ सुजान ॥ कृष्णाकारण यह ब्रत वीर ।नहीं औरसों सुनऊ गभीर ॥ इतहू है नहि दूषित धर्म ।सुन्दर सो रक्षण क्षतपर्म ।।भक्त आर्त्तका भजिबो जौन ।सुभग सुनऊ है सतमत तौन ॥नहि ऐसो करिहौ सुखदान । हमे देखिहौ तौ गत प्राण॥

आ०प० प्राणदानको धर्म अमन्द । तौन करऊ हे कुरुकुलचन्द ॥आरत दीननके सु शरण्य । शरण्द होऊ हमै तुमधन्य ॥ कामारत हम याचति तोहि । पूरण काम करऊ प्रभु मोहि ॥ अहिपति जाके सुनि इमि बैन । करो तास सङ्गम सह चैन ॥ रहे निशाभरि ताके भौन । भोरहोत किय पारथ गौन॥ सहित उलूपी बीर उदार । अहि स्वहतें गे गङ्गाद्वार ॥गई उलूपी अपने धाम ।दे पारथकौं सुवर ललाम॥ जलचरतें तुम होऊ अजेय। मोप्रिय पारथ बीर अमेय ॥ बिप्रनसों सब कहि सुख दान। किय हिमगिरिके पार्श्व पयान॥ लखि अगस्त्य बटको बलधाम । गिरि बशिष्टको गए ललाम॥ करि भृगुतुंग तीर्थमे स्नान। दिए अनेक दान अतिमान॥ हिरण्य बिंदुके तीरथ जाय। लखत चले गिरिबन सुखदाय ॥ गए द्विजनसह बीर सुधर्म । प्राचीदिशि देखनको पर्म ॥ अङ्गबङ्ग के तीरथ जोन। करि सुगयादिक सिगरे तौन ॥ दै बिप्रणको दान अनेक । गे कलिङ्गढिग भर बिबेक ॥ बिदा भए ते द्विजबर सर्ब । रहैं जे पारथ सङ्ग अखर्ब॥ स्वल्प जननसगं पारथ बीर। गए समोद सरित्पति तीर॥लखत कलिङ्ग देश अभिराम। गे महेंद्रगिरि पास ललाम गए सिन्धु तट ह्वै मणिपूर। भरे महा आनदसो हूर ॥ तँह तँहके तीरथ अभिराम। लखत देवतनके बरधाम॥ मणिपूरनगरमे देखो जाय । चित्रांगदा नाम सुखदाय ॥ भूप सुता सुषमाकी धाम । भए देखि पारथ सह काम ॥ गए चित्र बाहन नृप पास । कहन लगे फाल्गुण मतिरास॥ बरो चहत तो कन्या भूप। हम त्वचो तो कुल अनूरूप॥ सुनि बूझो तेहि भूप ललाम। काके पुत्र कहो तो नाम॥ हम पाण्डव कुन्तीसुत भूप । कहत धनञ्जय नाम अनूप ॥कहो नृपति तेहि पारथ पास । पूर्ब हमारे भो बलरास ॥ भूप प्रभञ्जन नामक बीर । बिना पुत्र ह्वै दुखित गँभीर ॥करन तपस्या लगो महान। भए प्रसन्न शम्भु सुखदान ॥ एकैक प्रसवतो कुलमे भूप। ह्वैहै दिय बरदान अनूप॥ सबके भए सु पूर्ब कुमार। भई हमारे सुता उदार ॥ ताहि पुत्रसम मानि प्रसंश। ताते चहत चलायो बंश ॥तामे होय एकसुत जौन।होय सो मो कुल बर्धन तौन॥ यह करि प्रथम प्रतिज्ञा पर्म। फेरि बरऊ तुम याहि सधर्म ॥ करिकै प्रथम प्रतिज्ञा तौन। पारथ बरी ताहि छबिभौन ॥ बर्ष तीनि तहँ करिकै बास। करि उत्पन्न पुत्र बलरास॥ पार्थ बिदा भूपति सौं होय । चले सु दक्षिणदिशि सुखभोय॥ दक्षिण तीर्थ सिन्धुके तीर। ते सब देखत सुमति गँभीर॥ सौभद्र अगस्त्य तीर्थ अभिराम। कारन्धम पौलोम ललाम ॥भारद्वाज तीर्थ शुचि नीर। देखो जाय धनञ्जय बीर॥ तिन ढिग कोऊ मनुज न जाय। तब पूछो मन बिस्मय छाय॥ मुनिबर ये तीरथ अभिराम। इन ढिग जात न क्यों तपधाम ॥ * * * * * *

॥ * ॥ तापसउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पारथ इनमे बसत है पाँच ग्राह अति घोर । स्नान करन जे जात तेहि पकरि खात बरजोर॥
बरजो मुनिन सुवचन यों कहिकै निर्भय बीर। तऊ गए पारथ तहाँ देखो तीर्थ गभीर॥

वैशम्पायनउवाच॥सौभद्रतीर्थमें जायकै महाबीर बलवान।लगे पैठि कै करन तहँ अति निर्भय अम्लान॥ आ०प०
ग्राह आइकै पायगहि तब खैंचो अति घोर। जल बाहेर पारथ कढे ताहि गहेँ बरजोर॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कढत जलतें भई सो अति सुन्दरी बर बाम । देखि ताकों पार्थ बूझो कौंन तुम अभिराम॥ बर्गोवाच ॥ * ॥ नाम बर्गा अप्सरा हम रही धनपति पास । सखी चारि समेत कामग भरी रूप बिकास ॥ गई सुरगति लोकमें तहँ लखो ब्राह्मण पर्म। भरो तेज स्वरूप जाको सुतप नियमित कर्म्म॥ देखिकै तपरूप ताको विघ्न करिबे हेत। गई आश्रम माह ताके भरी मन्मथ चेत॥ सौरभेयी सह समीची बुद्बुदा अभिराम। लतो पँचई सहित कीवैं ताहिकी बश काम॥ नाचि गाय सुभाव नाना भाँति कीन्हे सर्व। भयो च्युत नहि ध्यानते मन तास अचल अखर्व॥शाप हमकों दियो तेहि द्विज धारि महत अमर्ष।ग्राह व्है कै रहो जलमें जाय सहसन वर्ष॥शरण ताके भई विनती करति इमि हम सर्व । शापसों तब भयो हमकों मरण प्राप्त अखर्व ॥ क्षमा करऊ अज्ञानतासों कियो हम बश काम । जानि बाम अवध्य नियमित विप्र करुणाधाम ॥ धर्मधुर मति होऊ हमकों सुनऊ हिंसन योग। बाल अबल अवध्य सिगरी कहत सतमत लोग॥ * ॥वैशम्पायनउवाच॥* सुनत ऐसे बचन तिनके भयो सुमुनि प्रसन्न । कहो ऐसे बचन तिनसों परम करुणापन्न ॥ शत सहस अन्तवाचक कहतहै मतिरास। होय तुमकों बरष शतलों ग्राह तनमें बास॥ करै गो जल बाहिरे जो ग्रसत तुमकों बीर । लहऊगी तब पूर्व तनु तुम सुनऊ बचन गँभीर ॥ बचन हों नहि कहत मिथ्या हँसतहूमें बाम । मोसते तब होहिंगे ते तीर्थ नारी नाम ॥ * ॥ बर्गोवाच॥ * ॥ बन्दिकै तेहि विप्रकों करि तीर्थ चिन्तन तान। फेरि सो नर लगी चिन्तन अचिर मोहिहि जौंन॥ भरी दुखसों रही जहँ हम करत चिन्तन सर्व। देखि नारद सुमुनि आए लही मोद अखर्व॥ बन्दि कै मुनिचरण ठाढी रही लज्जित होय। सुमुनि बूझो मूल दुखको दियो कहि हम रोय ॥ कहा सुनि मुनि दक्षिणाब्धि समीप तीरथ बान। रहऊ तिनमें आइहै तहँ पार्थ बीर महान॥काढि जल तें देइगो सो तुम्हे पूरव रूप। सुनो तब अब भयो हमकों तौन सत्य अनूप॥ यथा मोचन कियो मोकों तथा हैं ए चारि। सखी मेरी बीर इनहू करऊ बाहर बारि। * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * तिनहि जल तें काढि कीन्हो शाप मोचन बीर । पूर्व रूप समेत तिनकों बिदा करिकै धीर॥ गए फिरि चित्राङ्गदाके लखनकों मणिपूर। बभ्रुवाहन पुत्रकों लखि मोद पूरे सूर॥गए फिरि गो कर्णकों तहँतें बिभसु महान । गए पश्चिम सिन्धुतटके लखत तीर्थ सुजान ॥ तीर्थ परम प्रभास ताकों गए अति अभिराम।सुनत ताकों तहा आए कृष्ण आनद धाम॥मिले लखि अन्योन्य दोऊ भरे मोद गँभीर । बूझि कुशल सु तहाँ बैठे सत्य साधन धीर ॥ हेतु बूझो पार्थसों बन गमनको यदुनन्द।कहो अर्जुन भयो जो बृत्तान्त पूर्ब अमन्द॥ बिहरि तेहाँ कृष्ण पाण्डव बासकों अभिराम॥

आ०प० गए रैवत अद्रिकों सुखभरे वीर ललाम ॥ कृष्ण आज्ञाते रचे हे बासभौंन सुभृत्य । सहित भोजन भाँति नानाशैन शय्याहित्य ॥ ग्रहण करि मणि बसन भोजन कियो पार्थ ललाम । नृत्य देखन लगे दोऊ वीर अति बलधाम ॥ विदा करिके नर्तकनकौं सहित पाण्डववीर।लगे विहरन सेजपै कहि वृत्तपूर्व गँभीर॥ दिशनके बृत्तान्त कहि सुनि गए दोऊ सोय । भोर जागे नित्यकृतकरिकै अलंकृत होय ॥ मणिन जडित सु रथनपै चढि कृष्ण अर्जुनवीर । द्वारिकाकों चले मंडित पूर्व सु पुर गँभीर॥ पौर प्रमदा पुरुष पार्थहि देखिबेको आय । राजपथमें भए ठाढे वेष बिबिधि बनाय ॥ भोज अन्धक बीर सिगरे सहित सुषमा धीर। भे यथोचित मिलत ते सब भरे मोद गँभीर ॥ बहुत दिन श्रीकृष्णके वर भौंनमें अभिराम । रहे पारथ कृष्णकेसँग भरे मोद ललाम॥ भयो उत्सव वृष्णि अन्धक वंशकों अति पर्म्म ।गए तेहाँ सकुल सिगरे ससुद भूप सधर्म्म॥दिए नाना भाँतिके तिन दाज तहँ अभिराम। रत्न रचित सु लसत गिरिके चहूदिशि बरधाम ॥ बजत नाना भाँतिके बादित्र तहँ सुखदान । ठौर ठौरहि नचत नर्त्तक होत गान महान ॥ युवा बाल सु वृष्णिवंशज धरें वेष विचित्र । चढे रथपर लसत कोटिन लखत होत चरित्र ॥ उग्रसेन सराम काम ससाम्ब यदुकुल वीर । चढे मणिमय रथनपैं तहँ गए ससुद गँभीर ॥अक्रूर सारण बभ्रु गद सु बिदूरथ पृथु जौंन। असंख्यहे यदु वृष्णिवंशज कहैं कहलौ तौन ॥ सहित प्रमदन नृत्य देखन लगे ते तँह जाय। भयो उत्सव रम्य अतिशय भरो सुख समुदाय॥ वासुदेव सु सहित पारथ तहाँ आए वीर। फिरन लागे मध्य उत्सव चढे रथपर धीर ॥ लखो अर्जुन तहँ सुभद्राकों परम छविधाम। देखतहि अति भए ध्याकुल पार्थ्हे वश काम ॥ देखि मन्मथ व्यथित बोले हँसतसे यदुबीर । बनेचरको कामबश्य हमि होतहे जु अधीर ॥ हे सहोदर सार्णकी यह स्वसा मो अभिराम। परम प्रिय बसुदेवकोंहे यह सुभद्रानाम॥ चहत तो मन कहैंतो बसुदेवसों यह बैंन ।। * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ स्वसा तो यह नही मोहे कौनकों छबिऐन ॥ होय ध्रुव कल्याण मेरो सर्वबिधि अभिराम। होय महिषा स्वसा तो यदुवीर जो गुणधाम॥ प्राप्ति की जो उपाय हमसौं कहहु यदुपति तौन । करहिगे सो करन लायक नरणकेहे जौंन ॥ *॥ बासुदेवउवाच ॥ * ॥ हे स्वयम्बर व्याह क्षत्री नृपनकौं अति पर्म्म । वरे काको कन्यका यह जानि परतन मर्म्म॥ हरणकरि बलसो यो क्षत्री लेतहे कन्याहि । धर्म्महे यह पम सिगरे कहत विदुष सराहि ॥ हरहु अर्जुन स्वबलसों तुम स्वसा मेरी ताहि । है स्वयम्बर महा संशय बरैकाकों वाहि ॥ कृष्णको मत जानि धावन शीघ्र गामी जौंन। पार्थ पठयो धर्म पै कहि कियो चाहत जौंन ॥ सुनत आज्ञा दै पठायो भूप भूषण धर्म्म । भे सुभद्रा हरणकौं सुनि पार्थ हर्षित पर्म्म।सुनि सुभद्रा गई रैवत पूजिबेकौं अयापाइ आज्ञा कृष्णकी भए पार्थ सज्जित सद्या। घटित काञ्चन चढे रथपर धरे धनुवर बर्म।सक्ति खड्ग तुणीर तोमर भरे भेदक मर्म ॥वायुवेगी अश्वरथमे लगे किङ्किणि जाल। लए शस्त्र समूह सोहत ज्वलन सदृश विशाल ॥ चलो मृगया

आजत कढि द्वारिकासों वीर। पूजि रैवतकों सुभद्रा फिरी देखत धीर ॥ बाह गहि कै लई रथसों अङ्क ऊपर धारि। गहो हास्तिन नगरको पथ खरय घन रव चारि ॥ हरी ताकों देखि रक्षक भजे पुरकी ओर। सभाद्वार समीप लागे कहन करि कै सोर ॥सभापालक सौं कह्यौ तिन कियो पारथ जौंन। सुनत तेहि वजवाय दीन्ही युद्ध भेरी तौंन॥ सुनत ताको वृष्णि अन्धक भरे क्षोभ महान। सभाकौं चलि गए ते सब वीरवर बलवान॥ दिव्य आसनपर सु बैठे जाय कै तै सर्व।जिष्णु विक्रम सभापालक लगो कहन अखर्ब॥ सुनत ते सब क्रोध करिकै करे राते नैन। कहन ऐसे लगे भृत्यन्ह बोलि आतुर बैन॥ करऊ योजित रथनकौं धरि शस्त्र नाना पर्म। धनुष ल्यावऊ कठिन गुर्वी गदा काञ्चनवर्म॥ कहत ऐसैं तुमुल बाढो रोर चारोओर। वारुणीमदमत्त गे बलभद्र तहँ सुनि सोर॥ कहन तिनसौं लगे ऐसे वचन वर बलभौंन।करत हौ का सर्व तुम हैं कृष्ण बैठे मौन॥ जानि इनको भाव तब तुम करऊ क्रोध महान। रुचित इनकों होय जो सो करऊ सुनऊँ सुजान॥ सुनि हला युधके वचन बस वृष्णिवंश सुजान। रहे चुप व्है कृष्णको मत सुननकों सुखदान॥ कहन फिरि बलभद्र लागे कृष्णसों इमि बैन। कहा बैठे मौन व्है कै सुनऊ हे मति ऐन॥ प्रीतिसौं तव पार्थको सत्कार कीन्हौं सर्व। सुनऊ तेहि यहि भांति हम प्रतिकर्म कीन्हो खर्व॥ देय शिरपर पाव मम तेहि हरी भगिनी पर्म। नही सहिवे योग्य हमकों कियो जो तेहि कर्म॥ निष्कौरवी क्षिति करौ गो करि क्रोध हे यदुवीर। बलभद्रके सँग बलकि बोले सकल यादव धीर॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ कृष्ण सुनि यह वचन बोले धर्म नीति समान। कियो नहि अपमान जानऊ पार्थ सकल सुजान॥ अर्थ लुब्ध न तुम्है जानो वरै जो धन देय। गोसदृशको मागि कन्या वीर क्षत्री लेय॥ करै विक्रम कौंन कन्याको सुयह अनुमानि। हरण क्षत्री योग्य याते कियो पारथ जानि॥ भो सुभद्रा सु यश यातैं योग्य वरकौं पाय। पृथाको सुत पांडु नन्दन वीरवर बल काय॥ नही देखत समरमे जो लेइ पार्थ हि जीति। विना रुद्रन सुरा सुर तेहि सकत देइ न भीति॥ हस्त लाघव शस्त्र शाली कौन ताहि समान। फेरि ल्यावऊ सामते तेहि सुनऊ सकल सुजान॥ स्वपुर अर्जुन जाय गो जौं तुम्है रणमे जीति। नष्टव्है है सुयश तो है साम करिबो नीति॥ वचन सुनि श्रीकृष्णके बलभद्र कीन्हो तौंन।फेरि ल्याए याय यादव पार्थकौं निज भौंन॥ व्याहि दीन्ही स्वसा ताकौं विहित विधि अभिराम। रहे सम्वत एक तेहँा धनञ्जय बलधाम॥वृष्णि पूजित विहरि तेहां सह सुभद्रा वीर। जाय पुष्कर पास बाकी काल बितयो धीर॥ गए खांडवप्रस्थ अर्जुन वर्ष द्विदश बिताय। नियम सहित सुजाय बन्दे धर्म नृपके पाय॥ बिप्र चरण सु पूजि पारथ गए कृष्णा पास। कहन लागी द्रौपदी इमि बिहँसि बचन बिलास॥ प्रथम बाधो होय तामे लगैं नूतन बन्ध। पूर्व

आ०प० बन्धन होय ढीलो अगतको यह धन्ध ॥ देखि करति विलाप कृष्ण हि सामके कहि बैन। कियो शीतल औ सपत्नी दाह हो हिय अैन ॥ आय आतुर दै सुभद्रहि गोप जाको रूप । भो पठावत भौन माहीं पार्थ बीर अनूप ॥ *

॥*॥ दोहा ॥*॥

लसी सुभद्रा अधिक अति लहि गोपीको बेष। श्रेष्ठ भवनमे जायकै भूषित कियो अशेष॥
बन्द कृष्ण स्वसा चरण कुन्तीके अभिराम। घ्राण कुन्ती सुमूर्द्धाको कियो लहि मुद साम॥

॥*॥ रोलाछन्द ॥*॥

दियो आशीर्वाद कुन्ती ताहि भाँति अनेक। फेरि कृष्णा पास भद्रा गई सहित बिबेक॥
बन्दि अनुगा कहो आपुहि पाय कृष्णा चैन। मिली उठि कै सहित आदर जाय कै हिय अैन॥

॥*॥ दोहा ॥*॥

निःसपत्न तो होय पति कहो द्रौपदी ताहि। भद्रै कहो तथास्तु सो बिहँसि सामुहे चाहि॥
सहित मोद पांडव भए कुन्ती पायो चैन। प्रजा भई हर्षित सकल अर्जुन आए अैन॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायांमहाभारतदर्पणे आदिपर्बणि अर्जुनबनयात्रासुभद्राहरणवर्णनोनाम पञ्चाशदध्याय: ॥ *

॥*॥ जयकरीछन्द ॥*॥

इन्द्रप्रस्थ गो अर्जुन बीर। कृष्ण सुनो लहि मोद गँभीर॥ चले राम सह कृष्ण उदार। सहित बृष्णि बंशी सरदार ॥ सह अमात्य सह भ्रातृकुमार । सह अन्धक यदुबंश उदार ॥ सहित सङ्ग सेना अभिराम। उद्धव अरु अक्रूर ललाम॥ प्रद्युम्न साम्ब अरु पुत्र अनेक। महाबीरबर भरे बिबेक॥ आए इन्द्रप्रस्थके पास। दीवैं दायज सहित बिलास ॥ सुनत युधिष्ठिर भरि आनन्द। पठए माद्रीसुत कुलचन्द ॥ आगें जाय मिले दोउ बीर। भरे परस्पर मोद गँभीर ॥ ते ल्याए सह कृष्ण उदार। हलधर यदुबंशी सरदार॥ खांडवप्रस्थ नगरमे आय। लखो राजपथ अति सुखदाय॥ मार्जित मलय सिक्त अभिराम। फैले सघन सुमन छबि धाम ॥ भरो सुढार धूपको गन्ध। मधुकर गुञ्जत फिरत मदन्ध ॥ धनिक बनिक जन सहित बजार। लसत भरो धनधान्य उदार॥ राम सहितके सब यदुबंश। गए भूपके धाम प्रसंश ॥ विप्र पौरजन जौन उदार। पूजे तिन यदुकुल सरदार ॥ हलधरसों मिलि कै नृपधर्म। कृष्णहि लाय हृदयसों पर्म॥ मूर्ध घ्राण कियो सह प्रेम। मुद लहि लागे बूझन क्षेम॥ बिनय सहित कहि कुशल ललाम। भीमहि पूजो यदुपति साम ॥ सब यदुबंशिनको नृप धर्म। विधिवत किय सत्कार सुपर्म॥ दायज धन जो ल्याए साम। दियो युधिष्ठिरकों अभिराम॥ घटित कनक मणि मंडित जौन। चारि अश्व योजित मन गौन॥

सहित सारथी सुरथ हजार । कृष्ण चन्द्र ते दए उदार ॥ अयुत गाय मथुराकी जौन । घट भरि देहि परम पय तान ॥ घोरी दई हजार अमन्द । जिनकी रङ्ग रूप सम चन्द ॥ *❁*❁*

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

दई पाञ्चशत चपल बछेरी । जाती बातपुञ्ज सम हेरी ॥ दासी सहस सुन्दरी श्यामा । मणिन जडित मनु कञ्चन दामा ॥ सेवा सकल भाँतिकी जानै । मनकी वृत्ति चित्तमे आनै ॥ बाल्हीक देशके घोरे दोने । एकलक्ष मणि जडित नवीने ॥ दीन्हो मनुज भार घृत सोनो । क्षत अरु अक्षत भाँतिके दोनो ॥ द्विरद दिए अति मदमतवारे मणिन जडित कज्जलसे कारे ॥ एक सहस गिरि वरसे बाढे । अरिदल बल मर्दन अति गाढे ॥ राम गुणें सम्बन्ध सु ढारो । दायजमे धन दोन्हीं भारो ॥ धर्म नृपति सो सब धन लीन्हों । राम कृष्ण जो दायज दीन्हों ॥ अन्धक वृष्णि रहे वर जेते। नृप विधिवत पूजे सब तेते।।अन्धक वृष्णि मोदसों भारे।तहँ कुरु वंशिन सङ्ग विहारे॥ तहँ कछु दिन रहि आनद मए ।बिदा धर्म भूपतिसों भए ॥रामवृष्णि अन्धक सँग लीन्हे गए द्वारिका आनद भीने ॥ बासुदेव पारथ सँग रहे । इन्द्रप्रस्थमे आनद गहे ॥ मृगया करत बिपिनिमे दोऊ । दुष्ट जीव बाँचत नहि कोऊ ॥ पुत्र सुभद्राके तब भयो । कुरु कुल कमल भानुसो नयो ॥ निर्भय मन्युमान वर भाको । भो अभिमन्यु नाम है ताको ॥ ज्यौं जयन्त सुरपतिकें जायो । तैसो पुत्र धनञ्जय पायो ॥ महा उरक्क दीर्घभुज भारो । वृषभाक्ष भानु सम तेजस धारो ॥ अयुत धेनु काञ्चन बहु दयो । भूप युधिष्ठिर आनद भयो ॥ बासुदेवकों परम पियारो । बालपनेतें भो मुद भारो ॥ भयो पाण्डवनको हिय हारी । हितचख कमल मधुव्रत चारी ॥ शुभ कर्म रहे चूडादिक जेते । बिधिवत किए कृष्ण सब तेते ॥ बढो सुभद्रा सुत तहँ ऐसे । शुक्लद्वितीयातें शशि जैसे॥ धनुबेद चारि भाँतिनको जेतो । शीखो अर्जुनसों सब तेतो॥ मन्त्रमुक्त कर मुक्त सु तौन । मुक्त हरणकी है विधि जौन ॥ विना मुक्त जो अरि संहारी । शिखो बेदके भेद बिचारी ॥ अस्त्र बिधान रहो सब जेतो। फाल्गुण दयो पुत्रकों तेतो ॥क्रिया विशेष युद्धकी जेतो। पार्थ दई ताकों सब तेतो॥अस्त्र प्रयोग विहित बिधि दीन्हों । सुभद्रहि अपने सम कीन्हों ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*❁*

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

दुर्धर्ष सिंह समान दर्प सु महाधनुधर बीर । मत्तगजबल दुन्दुभी सम जास घोष गँभीर ॥ कृष्ण सम सब भाँति ताको लसो रूप महान । जई कृष्णा पाञ्चपतिते पाञ्च पुत्र सुजान ॥ धर्मको प्रति बिंध्य सुत भो भीमते सुत सोम । भयो श्रुतकर्मा सु अर्जुनतनय वर बलतोम ॥ शतानीक सु नकुलसुतसहदेव सुत श्रुतसेन। एक एक सु वर्ष अन्तर पाय कै गुण ऐन॥द्रौपदीके भए ऐसें पञ्च पुत्र सु पर्म। जातकर्मादिक सु तिनके किए सविधि सशर्म ॥ धौम्य आय कराय दीन्हें कर्म बिधिवत सर्ब । पढो तिन श्रुतिशास्त्र धरि ब्रत ब्रह्मचर्य्य अखर्ब ॥ शिखी सिगरी शस्त्र विद्या दिव्य मानुष

आ०प० जौन। दई तिनहि पढाइ पारथ युद्ध विधि सब तौन॥ भीष्म अरु धृतराष्ट्रकी लहि परम आज्ञा मान। जीति लीन्हें चहूँदिशिके भूप जे बलधाम॥ धर्म नृप लहि भए सिगरे सुखी जनपद लोग। पुण्यकृत जिमि रहत देही पाय देह निरोग॥धर्म काम सुअर्थ आपुहि प्राप्त होत हमेश।तिन्हे पालत भूप चौथो होय आपु सुनरेश॥ अचल लक्ष्मी तास थिरि अति धर्म बिधिवत धारि।धर्म नृपति सु राज्य पालत वंशविहित बिचारि॥लसै भ्रातन सहित ऐसें धर्म भूपति तज्ञ।यथा चारो बेदके सँग परम सोहत यज्ञ॥ धौम्य आदिक विप्र नृपके लसे यों चहूँपास। यथा सुरगण मध्यमे सुरनाथ आनंदरास॥ नही केवल जानि राजा प्रजा पूरे प्रीति। प्रजाको प्रिय यथा तैसैं करत भूपति नीति॥ नहि असह्य असत्य अप्रिय कहत भूपति बैन। लोकको हित होय भूपति रमत दायक चैन॥ बिगतचिन्ता मुदित पाण्डव लसत यों अभिराम। मनहु परपुर दहनको हैं पांच पावक नाम॥ गए कछुदिन कृष्णसों इमि कहो जिष्णु गँभीर। होति उष्णा बहुत याते चलहु यमुना तीर॥ सुहृदजन सह बिहरि तेहाँ आइ हैं लहि साँज॥*॥बासुदेवउवाच॥ *॥ यहै पार्थ परम इच्छा रही मो हिय माँझ॥ बैशम्पायनउवाच॥ धर्म नृपकी लेइ आज्ञा चले दोउ बीर।गए सुथल बिहारको तहँ भरे मोद गँभीर॥ बने नाना भाँतिके तहँ रम्य हर्म्य उदार। लसत सुरपुर सदृश यमुनातीर सह बिस्तार॥भच्छ्य भोज्य सुपेय रसमय महा धन कृत जौन।गन्ध माल्य समेत सोहत अयिन मंडित भौन॥ गए तामे कृष्ण फाल्गुण भरे मोद उदार।सङ्ग बनितनके लगे तहँ करण बीर बिहार॥चन्द्र बदना पृथुल श्रोणी पीनउरसिज जास॥लगे तिनके सङ्ग बिहरण भरे बीरबिलास॥ बिपिनिमे अलसे सु अङ्गन धाममे अभिराम।कृष्ण पांडव सङ्ग बिहरैं भरी मन्मथ बाम॥ देहि कृष्णा अरु सुभद्रा तिन्हे भूषण बास। बारुणीसों छको बैठो दोऊ रानी पास॥कोऊ नाच कोउ गावैं हसै कोउ मत्त। पान कोउ करैं मदिरा चलत गिरहि अशक्त॥ बेणु बीण मृदङ्ग धुनिसों भरो भौन ललाम। जाय अर्जुन कृष्ण बैठे बिपिनिमे अभिराम॥परम आसन बनो जेहाँ सघन बिटप महान। बिबिध बार्ता कहन लागे पूर्व कृत सुखदान॥ तप्त काञ्चन सदृश आवत लखो बिप्र महान। जोति जाल बिशाख अग्नि लसत ताल प्रमान॥ समश्रु जाको अरुण मुख सम कंज जटिल उदार। चीर बसन गँभीर आवत धीर ज्वालागार॥ देखि ताको भए ठाढे कृष्ण अर्जुन बीर।कहन लागो बिप्र तिनसों बोलि बचन गभीर॥ निकट खांडव प्रस्थके तुम बीर बर बलधाम।बहुत भोजी बिप्र मोको [illegible] सलाम॥ कृष्ण जिष्णु सु एकदिन मोहि करहु तृप्त महान।सुनत ताके बचन बोले बीर [illegible]॥ कहहु हमसों करहुगे तुम अन्न भोजन जौन।करहि सबिधि तयार नाना भांतिसों [illegible] [illegible]उवाच॥ अन्न भोजन करत हम नहि अनल हैं बलवान। जौन हमको योग्य भोजन [illegible] जान॥ इन्द्र खाण्डव बिपिनि रक्षण करत हैं बलवान। मोहि दहन न देत बर्षत आइ मेघ महान॥ बसत ताको सखा तक्षक नाग यासे बीर। सगण रक्षण करत ताके हेतु

विपिनि गँभीर ॥ अस्त्रविद तुम बीर दोने होऊ मोहि सहाय । विपिनि खाण्डव करो भक्षण तुमहि रक्षक पाय ॥ अस्त्रविद तुम उदक धारा करऊ वारण सर्व । चरों हों तब विपिनि खाण्डव सहित मोद अखर्व ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ भगवान अग्नि किमर्थ चाहो दहो खाण्डव विप्र । कहऊ सहविस्तार ताकों सुनो चाहत छिप्र ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ प्राचीन भूपति रहो श्वेतकि यज्ञ करता नाम । किए यज्ञ अनेक दीन्हे द्विजनकों धनधाम ॥ यज्ञ कीबो दान दीबो सहित ऋत्विज पर्म्म । नित्य बारहमास ताको यहै नियमित कर्म्म ॥ यज्ञको अति धूम लागें काल चिरलों भूप भजे ऋत्विज होय व्याकुल सकल अन्ध स्वरूप॥ पाइ आज्ञा ऋत्विजनकी भूप यज्ञ समाप्त । और विप्रण सङ्गकीन्हो दानदै परजाप्त ॥ शत बर्षलों फिरि कियो चाहो सत्र भूपति तैंान । करत कोऊ नही ब्राह्मण बर्णकों तहँ गैांन ॥ बहुत भूपति यत्न कीन्हो सहित सुहृद सुजान । शान्त सहित बिनीत दीवैं कहि यथेप्सित दान ॥ क्रुद्ध व्है राजर्षि विप्रणसों कहो इमि बैन । होंहि जैां हम पतित कीजे त्याग तो तपत्रैन ॥ यज्ञश्रद्धा को न कीबो योग्य है उपघात । परित्याग न उचित करिबे त्याग योग्य न तात ॥ कियो चाहत कार्य्य पाय प्रसाद तुमसों छिप्र । कपत मेरो त्यागजैां तुम द्वेषसों सब विप्र ॥ करैंगे हम और ऋत्विज यज्ञ हेतु सुजान । यह बचन कहि द्विजवरनसों चुप रहे भूप महान ॥ भए शक्य न यज्ञ जब करवायबेकों विप्र । कहो ऐसें क्रोधकरिकै भूपसैां तब छिप्र ॥ नित्य रहय प्रवृत्त तुम्हरो कर्म्म सुनिए भूप । त्यागकरिबो चहत लखत न शान्त हमरो रूप ॥ त्वराकों अति करतहो कछु भए भूपति अज्ञ । रुद्रपैं तुम जाऊ तुमहि करावहैं सो यज्ञ ॥ चलो तिनके वचन सुनि करिक्रोध श्वेतकि भूप । कैलाशके ढिग जाय लागो करन तप अतिरूप ॥ करत वरहैं सोरहैं दिन मूल फल आहार । करैं अनमिष उर्द्धबाऊ सु रहत सहस्र पहार । षट मास बीतैं कृपाकरि शिव गए भूपति पास । भूप मागऊ तैान बर जो तुम हि आनद रास ॥ रुद्रसों करजोरिकै यह सुबर मागो भूप । देऊ यज्ञ कराय मोकों ईश करुण रूप ॥ भूपको सुनि बचन बोले रुद्र करुणाधाम ॥ * ॥ रुद्रउवाच ॥ * ॥ भूप यज्ञ कराइबो नही है हमारो काम ॥ उग्रतप तुम कियो यातैं सुनऊ भूपति बैन । समय पाय कराइह हम तुम्हे मख मलिनैन ॥ करऊ द्वादशवर्षलों व्रत ब्रह्मचर्य्य उदार । देऊ अनिश अखण्ड हुतभुक बदन मे घृत धार ॥ जायकै नृपकियो सो हर दियो आज्ञा जैान ॥ तहां बारह वर्ष बीते कियो शङ्कर गैांन ॥ भए हम सन्तुष्ट तुमसैां सुनऊ श्वेतकि भूप । ममांश दुर्वासा करैहैं तुम्हे यज्ञ अनूप ॥ यज्ञको सम्भार सिगरो करऊ सञ्चित जाय । यज्ञको सम्भार सुनि नृप कियो सञ्चित आय ॥ जाय कै नृप रुद्रत फिरि कहो सञ्चित पर्म्म । होय दिया भोर मोकैां करऊसो प्रभु कर्म्म ॥ रुद्र सुनि नृप बैन लीन्हो बोलि मुनि दुर्वास । कहो देऊ कराय नृपकों यज्ञ हे तपरास ॥ स्वीकार करि मुनि

आ०प०

आ०४० आय नृपकों दियो सत्र कराय। यथाकाम यथोक्त विधि बहु दक्षिणायुत चाय॥ भए सत्र समाप्त ऋत्विज बिदा करिकै सर्व। गो स्वपुरकों श्वेतकीनृप भरो मोद अखर्व॥ बन्हिकों तबतें अजीरणको भयो सुबिकार। जानि हीन स्वतेज पावक लही ग्लानि उदार जाय तब विधि पास पावक कहो अपनो क्लेश। लहौं पूरव प्रकृति जैसें करहु तौन निदेश॥ कहो हँसि विधि वर्ष बारह पियो आज्य उदार। भो अजीरणको सु यातैं तुमहि अग्नि बिकार॥ लहहुगे तुम पूर्व प्रकृतिहि कहत करहु सु तौन। दहहु खाण्डव बिपिनि पूरब दहोहो तुम जौन॥ बसत तहँ सब जीव तिनकी बसा को करि पान। पूर्व प्रकृतिहि लहहु गे तब अनल तुम सुखदान॥ सुनत बिधिसो जाय खाण्डव पिबिनि मे सहबात। लगे भक्षण करन धारें क्रोध को उतपात॥ देखि पावक बरत तँह जे रहैं जीव महान। अग्निकों ते शमन लागे करन सहित बिधान॥ करनसों गज बृन्द लै जल लगे डारन सर्व। बहु बदनके अहि सलिल लै तहँ लगे तजन अखर्व॥ और सिगरे जीव करिकै यथा योग्य उपाय। अग्निको नहि चलो बल तिन दियो बेगि वताय॥ यहि भांति बार सु सात पावक लगे तँह कार क्रोध। चलोनहि बलकछू तँह तिन कियो शमित सरोध॥ ग्लानि पाय निरास व्है शिखि गए बिधिके पास। कहो सब बृतान्त अपनो भयो जौन प्रयास॥ रहे क्षणक बिचारि बिधि फिरि कहो पावक पास। सुनहु खाण्डव दहन को यह जवन बिगत प्रयास॥ धरो नर नारायणौ बररूप क्षितिपर जाय। करणकों सुरकार्य्य कुरु यदुबंशमें सुखदाय॥ बासुदेव सु कहत अर्जुन तिन्हैं लोक ललाम। गए खाण्डव निकट दोऊ बीरवर बलधाम। सहाय तिनसों जाय मागहु दहन खाण्डव दाव। सुरपतिहुतें नहि होइ रक्षण करहु भक्ष्य सचाव॥ *○*○*○*○

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पावक सुनि बिधिके वरबैन। जिष्णु कृष्णपैं गए सचैन॥कहो जाय तिनसौं जो भूप। सोपहिले हम कहों अनूप॥ अग्नि बचन सुनि अर्जुनबीर। समय सदृश बोले रणधीर॥ हमपै उत्तम अस्त्र सु सर्व। बहुत भाँतिके दिव्य अखर्व॥ धनुष नही सो मेरे हाथ।जातैं हों जीतों सुरनाथ॥नहि मो भुज बीरय समतौन। सहै समरमे बरबल जौन॥ हमै चाहि यह इतने बाण। चुकै न क्षिप्र किए सन्धान॥ रथपर भार न सकत चलाय। जितिक हमै चहिए रणपाय॥ अश्व दिव्य मनबेगी जौन। पांडुरबर्ण चाहिए तौन॥ घन निर्घोष सु भानु समान। रथकाञ्चन जो रण जयदान॥ शस्त्र कृष्णके सुबल समान।हे न हनै जो असुर महान॥ कर्म्म सिद्धि की जौन उपाय। हे पावक ते देहु बताय॥ जातैं होय निवारित शक्र। बारिधार बर्षत व्है बक्र॥ पौरुष कृत जें कारय सर्ब। ते करिहैं हम अनल अखर्व॥ करन स्वकार्य्य सिद्धिके जौन। दोबेयोग्य होहु तुम तौन॥यह सुनि शिखि पारथके बैन।कियो बरुणको स्मरण सचैन॥ पावक चिन्तित आपुहि जानि। आए तहाँ बरुण सुखदानि॥ कहो बरुणसों अग्नि गभीर।सोम दयो जो धनुष तुणीर॥ देहु बरुण तुम हमकों तौन।कपि भूषित

काञ्चनरथ जौंन ॥ गांडिव धनुष लहि अर्जुनबीर । करिहैं मो कारय गम्भीर ॥ बासुदेव लहि चक्र महान । करिहैं मो कारय सुखदान ॥ बरुण देऊ हमको सो अय । धनुष तुणीर चक्र अनवद्य ॥ बरुण तथास्तु कहो सुनि तौंन । दीन्हो सर्व कहो शिखि जौंन ॥ सबशस्त्रणतें जान अविद्ध । भयो सकल शस्त्रणकों रिद्ध ॥ परदल गहन दहन अति मान । सहस शस्त्रसम एक महान ॥ सुरासुरणसों पूजित जौंन । दीन्हो बरुण महा धनु तौंन ॥ अक्षय दीन्हो दोय तुणीर । जिनतें घटै न बाण गँभीर ॥ कपिध्वज रथ सह दिव्य तुरङ्ग । जिनके रुचिर रजतसे अङ्ग ॥ रत्न जडित अति घाष अनूप । रचो बिश्वकर्म्माको भूप ॥ जेहिरथपैं चढि सोम समर्थ । मारि करे असुरणकों व्यर्थ ॥ तेहि रथपर चढि अर्जुन बीर । सहित कृष्ण अति लसे गँभीर ॥ कनक यष्टिध्वज लसत ललाम । ताप कपि अङ्कित अभिराम ॥ जाको शब्द सुनत अरिसैन । महा भीति भरि लहत न चैन ॥ रथकों करि सु प्रदक्षिण जिष्णु । मनमे बन्दि जगत्पति बिष्णु ॥ चढो सुरथपर धनुधर वीर । धरैं शस्त्र बर बर्म गँभीर ॥ गांडीव चाप बिधि निर्मित पाय । लसोपार्थ अति आनद छाय ॥ अग्नि पुरस्सर करि बलधाम । धारि धनुषपर ज्या अभिराम ॥ वीर करो धनु ज्या टङ्कार । खांडव जीव भरे भयभार ॥ लहिरथ धनु अक्षय तूणीर । भयो समर्थ पार्थ रणधीर ॥ दयो कृष्णको चक्र उदार । अग्नि समान बज्रमय सार ॥ याते त्रिभुवनमे जे बीर । असुर नाग नर राक्षस धीर ॥ रणमे तिन्हैं जीति हौं सर्व । दहन सु अरिदल गहन अखर्व ॥ दरि अरिदल फिरि कर मे आय । रहिहै तोपहँ चक्र सुभाय ॥ बरुण दई गुरु गदा उदार ॥ करणि हार दितिकुल संहार ॥ कौमोदकी सु नाम प्रसिद्ध । भरी महा अरिमर्दन सिद्ध ॥ अर्जुन बासुदेवसों बैन । ऐसैं पावक कहो सचैन ॥ शस्त्र धनुष रथपाय अखर्व । भए योग्य त्रिभुवन जय सर्व ॥ एक इन्द्र पन्नगहित अर्थ । करिकै युद्ध होयगो व्यर्थ ॥ **

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ बासुदेव सु चक्रकौं धरि युद्धमे वरवीर । करैं काहि न भस्म क्षणमे क्रोध करि रणधीर ॥ गांडीवधनु धरि इषुधि अक्षय पायकै उत्साह । चहत जीतो लोक हौं सब युद्धमे कृतवाह ॥ घेरिकै चऊओर बन यह होऊ ज्वलित कृताश । अभय व्हैकै चरऊ रक्षण करत हम चऊँपाश ॥ अग्नि सुनिकै कृष्ण अर्जुन के बचन अभिराम । धरो तेज सरूप खांडव दहनकों अतिमाम ॥ फैलि चारो ओर लागे दहन बिपिनि महान । भो दिखावत प्रलयको सो रूप अति बलवान ॥ सोर भो घन घोरकैसो जीव कांपे सर्व । लसो बन गिरि कनक ज्यों लहि भानु किरण अखर्व ॥ चढे रथपर बीर दोऊ घेरि बन चऊँओर । हनन लागे जीव जे कढि चलत सूधे घोर ॥ परत अन्तर जानि नहि चऊँ ओर अति गति रेखि । लसे चक्र अलातसे रथ दोऊ सबदिशि देखि ॥ जरत खांडव बिपिनि जीव अनेक उडि नभ जात । करत भैरवनाद तिनको करत पार्थ निपात ॥ कोऊ आधे जरे जरसे कोउ बरत महान । जरत कोउ हियलाय सुत पितु मातकौं अति मान ॥

आ०प० दाविदन्तन उछरि कोऊ निकसि चाहत जान। घूमिकै ते गिरत पावक माह आय अमान ॥ अध
पच्छ सदग्ध पछी गिरत सकरुण मन्त । भए क्वाथ जलासयो जरि मरे जीव अनन्त ॥ वरत कोऊ
परत देखे जीव अग्नि स्वरूप । शरविद्ध कोटिन गिरे नभतैं जीव शिखिमे भूप ॥ शरण मारे जीव
बनके करत शोर महान । भयो सिन्धु समान तेहा रोर घोर सुजान ॥ बढे पावक शिखा व्याकुल
भे दिवौकश सर्व । जाय लागे इन्द्रसौं ते कहन सभय अखर्व ॥ * ॥ देवाऊचुः ॥ * ॥ दहत पावक
मनुज सिगरे भयो का कलपान्त ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनत तिनसो लगे देखन आपुह्व
सुरकान्त ॥ विपिनि खांडव रछिवेकों सुरण सह सुरनाथ।आय नभमे भए ठाढे लगे वरषण पाथ ॥
मुषल कैसन महतिधारा लगी गिरन अखर्व । गई बीचहिँ सूखि पावक तेजतैं ते सर्व ॥ लगे वारण
बारि धारा छोडि अस्त्र महान।छाय लीन्हो विपिनि खांडव शरणसों अति मान॥सकत निकसि न
जीव बनतैं गए शर नभछाय । रहो तच्छक कुरुछेत्र समीप पहिले जाय ॥ रहो तच्छक पुत्र तँहा
अश्वसेन महान। यत्न कढिबे को न देखत गगण मंडित बाण ॥ रच्छणार्थ सु तास माता लीनि
आधो काय । पुत्र सहित सु बेग धरि अति चली गगण उडाय ॥ पन्नगीको शीस दीन्हे काढि
अर्जुन बीर । चलो कढिसुत नागको तेहि लखो सुरपति धीर ॥ ताहि वारण हेत वज्री बात
वर्षि महान । छोडि मोहित कियो तेहिछण पार्थकौं बलवान ॥ देखि माया तास बञ्चित
नागतैं ह्वै बीर । खगत जीवनकौं करत द्वै तीनि खंड गँभीर ॥ कृष्ण जिष्णु सु अग्नि अहिकौं
दियो तब इमि शाप । रहैगो स्वस्थानतैं तूं भ्रष्ट पन्नग पाप ॥ देखिनभमे इन्द्रकौं करि क्रोध पारथ
बोर । समुजि बचन लरण लागे छौंडि शर बर धीर ॥ देखि सुरपति लरत रणमे करँ पारथ
क्रोध । डारिकै बर अस्त्र कोन्हो गगण पथको रोध ॥ बायु सागर छोभ करि किय जनित मेघ
महान । लगे डारन बारि धारा प्रलयसम जलदान ॥ वायव्य अस्त्र सु छोडि अर्जुन कियो
तास बिनाश । भयो गगण विकास छणमे सहित सूर प्रकाश ॥ बिबिधि आहुत धरो पावक नष्ट
लखि प्रतिकार । जीव देहज बसाको करिपान अग्नि उदार ॥ अधिक ह्वै जाज्वल्य ध्वनिसौं भरो
जगत महान । कृष्ण अर्जुनसौं सु रछित देखिवन अतिमान ॥ सम सुपर्ण सु बिहग जिनके वज्र
से नख तुण्ड । मारिबेकौं कृष्ण अर्जुनकौं गए करिझुण्ड ॥ बमन लागे महा बिष अहि पार्थके ढिग
आय । शरणसौं किय जिष्णु शिरबिनु पन्नगनके काय ॥ असुर किन्नर यच्छ राछस क्रोधकरि अति
मान । लरन आए पार्थसौं करि नाद घोर महान ॥ शस्त्र नानाभाँतिके धरि अधर दातन पीस ।
पार्थतिनके शरणसौं धर किए बिगलित शीस ॥ कृष्ण चक्र चलाय कीन्हे दैत्य दानव नाश । रहे
ठाढे सिन्धुबेला सदृश हरि बलराश ॥ शक्र स्वेत मतंगपै चढि लएँ सुरगण सङ्ग । चले लरिबे जिष्णु
सों अति भरे क्रोधउमङ्ग ॥ असनि लैकै चले कहि यह हनन अब यहिवार । देखि उदित इन्द्रकों
सब चले देव उदार ॥ कालधारे दंड लीन्हे गदा धनद महान । बरुणपाश सुशक्ति सम्मुख चले

सह मघवान ॥ दस्र वसुगण मृत्यु सुरसब लिएँ आयुध सर्व । इन्द्रके सगँ चले कोटिन अमर क्रुद्ध आ०प०
अखर्व ॥ मारिबें हरि जिष्णु कों तब भए अशकुन भूरि। प्रलयमेजेहि भाँतिसों अतिसै भयानक पूरि ॥ देखि आवत इन्द्रकों सह सुरण युद्ध बिचारि । कृष्ण पारथ चले आगे क्रोधकरि धनुधारि॥ देखि आगें चले आवत अमरइन्द्र महान । कृष्ण पारथ लगे मारण वज्रसे बर बान ॥ संकल्प भग्न सु होय सुरगण भूरिधारे त्रास । छोडिकै रण आस सुरगण गए सुरपति पास ॥ सुनिन अति आश्चर्य मानो भजे लखि सुरसर्व । इन्द्र हर्षित भए तिनको देखि सुवल अखर्व ॥ पाकशासन लरण लागे बरषिकै बरबान। जानिबेकों जिष्णुको बल जहाँलों अतिमान ॥ इन्द्रवर्षे बाण अर्जुन काटि डारे तीन। अस्त्र फिरि मघवान वर्षे क्रोधकरि बल भीन ॥ जिष्णु काटे शरणसों ते उपल पूरि अमर्ष । पराक्रम लखि पुत्रको अति इन्द्र पूरे हर्ष ॥ इन्द्र फिरि गिरि शिखर डारो जिष्णु पै अतिमान । कियो अर्जुन शिखर तिल सम वज्रसे हनिबान ॥ देखि खण्डित शिखर भाजे बिपिनि जीव उदार । मरे केते गिरे ऊपर चूर्ण भूत पहार ॥ शोर जीवनको भयो अति महा पावक रोर। भयो पूरित शब्द नभमे दिशनमे अति घोर ॥ कृष्ण छोडो चक्रकों धरिक्रोध अति बलराश । किए असुरण सङ्ग सिगरे वण्य जीव बिनाश ॥ पिशाच गज मृग सिंह कोल किरातके गणबीर । मारि डारत अनलमे रथहाँकि अर्जुन धीर ॥ चक्र छुटि हरि पाणिते करि जीव इन्द निपात। चड करसों फेरि फिरि श्रीकृष्णके कर जात ॥ पिशाच राक्षस उरग मारत क्रोध करिकै भूप। भयो तब यदुनाथको अति अलख दारुण रूप॥ बिपिन रछि न सके सिगरे देव करि बल भूरि। भजे अर्जुन कृष्णसों रण छोडि भयसों पूरि ॥ देखिकै सुर सकल भाजे भए भीत स्वरूप । शक्रलागे कृष्ण अर्जुनकों प्रसंशन भूप ॥ भई तब इमि गगणबाणी सुनो सुरपति तीन। नही खांडवबिपिनिमे तो सखा तक्षक जीन॥ प्रथम गो कुरुक्षेत्रको वह नाग भाग्य गँभीर। जीतिबेकों शक्यहैं नहि कृष्ण पारथ वीर ॥ पूर्वदेव सु नर नरायण महा बलके धाम।तुमऊ जानत शक्र इनकों भाँति सब अभिराम ॥ जीतिबेके शक्यहैं नहि समरमे ए वीर। सुरासुरसों पूज्यहै ए पूर्व ऋषि तपधीर ॥ जाऊ ताते लोक अपने सहित सुरगण शक्र। भोग्य खांडव बिपिनिको निज जानि सुरपति वक्र ॥ गगण बाणी सुनत सुरपति छोडि महत अमर्ष। चले सुरगण सहित अपने लोक पूरित हर्ष ॥ समर तजिकै जात सुरपति सहित सुरगण भीर । देखि अर्जुन कृष्ण कीन्हो सिंहनाद गभीर ॥ गए ज। सुरनाथ सुरगण सहित अपने धाम। होय निर्भय कृष्ण अर्जुन बिपिनि जारो माम॥ देखि सकल न जीव बनके कृष्ण अर्जुन ओर। जरे सिगरे मरे मारे अग्निके मुख घोर ॥ मांस शोणित बसावे। करि पान पावक भूरि।धूम रहित सु महति ज्वाला दियो नभलों पूरि।।अरु आनन ज्वलित जिन्हा केश बर्चस मान। पिंगाक्ष पावक पिवत प्राणिनको बसा अतिमान ॥ कृष्ण अर्जुन कात्यत वज्र बसा

षा०प० शोणित पाय । वलिको लहि परम पावक भए मुदमय काय ॥ कटो तत्तक धामते मय नाम असुर महान। देखि धावत कृष्ण तापैं कियो शरसन्धान ॥ देह धरिकै अग्निमागो ताहि भक्षण हेत। भयो सो वह शरण अर्जुन पास विह्वलचेत ॥ बैंन ताको दीन ताको अवण करि बलधाम । डरै मति इमि कह्यो तासो वीर पार्थ ललाम ॥ नमुचि भ्राता दैत्य मयको दियो अर्जुन शर्ण। नह्यो मारो कृष्ण करिकै चत्रधर्मविहर्ण ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पावक दाह्यो पञ्चदश दिनलौं खांडव दाव । रचित ह्वै हरि पार्थसौं लह्यो अनामय चाव ॥

तामें बांचे जीव षट मय तत्तकसुत नाग । सार्ङ्गक पत्ती चारि अरु जिनके पूरण भाग ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥

सार्ङ्गक पत्ती नहि दहे अग्नि कहो केहि हेत। वैशम्पायन कहत सो सुनवे काहऊ सनेत॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ सार्ङ्गक पत्तिनकौं जेहि हेत। दह्यो न शिखि सो सुनऊ सनेत॥ मन्दपाल हो ऋषि तपधाम । करे नेमव्रत विहित ललाम ॥ लहि तप पार देह तजि तौंन । पितृलोककौं कीन्हों गौंन॥ तहाँ न तप फल पायो विप्र । फिरो सकल लोकन्हमह चिप्र ॥ रहत पितृपतिढिग सुर जौंन । तासों कारण पूछो तौंन॥ * ॥ मन्दपालउवाच ॥ * ॥ मो तप सार्जित लोक ललाम । तिनके द्वार मुदे अभिराम ॥ करो न चितिपर कौन सुकर्म। जाको फल यह भयो अधर्म। तौन करै तप हम फिरि जाय । जातैं लोक खुलैं सुखदाय ॥ * ॥ देवा ऊचुः ॥ * ॥ जाते ऋणी होत नर धर्म। सुनऊ विप्र सो धर्म सुकर्म ॥ देव पितृ ऋषि ऋणहै तीन। तास हरण विधि सुनऊ प्रवीन॥ वेदाध्ययन यज्ञते विप्र। ऋषि सु देव ऋण विनशत चिप्र॥ द्विज तुम कियो न दारा धर्म। होत पुत्र रक्षक कुलधर्म॥ सुनऊ भए विनु पुत्र ललाम। खुलत न लोक द्वार अभिराम ॥ पुत्रोत्पन्न करऊ जब विप्र। लहऊ लोकफल तब तुम चिप्र ॥ पुन्नाम नर्कते लेत उवारि। तातैं पुत्र कहत निरधारि ॥ वेद विदनको सम्मत धर्म। प्रजोत्पत्तिद्विज करहु सधर्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ मन्दपाल मुनि दैवत बैन। प्रजा यत्नमहं लगो सचैन॥ होत योनि केहि प्रजा सु चिप्र। असें चलो विचारत विप्र॥ बहुप्रज सार्ङ्गिकपत्ती देखि । भो द्विज सार्ङ्गिक योग्य लेखि ॥जरिता पत्नी करि छवि धाम। जनमाए सुत चारि ललाम॥पत्तिताकों लखि तापहँ जाय। करि पत्नी तेहि रह्यो लुभाय ॥ जरिता चिन्तित भई सनेह । पुत्रन तन तिन लखि तनु देह ॥ पुत्रन्ह भरति खवृत्ति समान। करति रहति रक्षण सुखदान ॥ आत हुताशन खांडव दाव। दहन हेत धारैं अतिचाव ॥ मन्दपाल मुनि देखि विचारि। जरितहि सह सुत तहँ निरधारि ॥ अग्निस्तव भो करण विचारि । मन्दपाल मुनि मतिसों भारि ॥ * ॥ मन्दपालउवाच ॥ * ॥

जीव रूप तुम भोक्ता सर्व। ब्रह्म रूप हौ प्रगट अखर्व ॥ जाठर भौम दिव्य अभिराम। विविधि कहत तुमकों मतिधाम॥ पञ्चभूत रवि शशि यजमान। आठ रूप तो कहत सुजान॥ तुमतें रचित विश्व अभिराम। तुम बिनु नष्ट कहत मतिधाम॥ नमस्कार करि तुमकों विप्र। सकुल जात पर गतिको चिप्र॥ तडित जलद तुमही जगपाल। भूतदाह कारक तो ज्वाल॥ तुमतें कर्म कर्मते भूप। तो भव अप जग कारत अनूप॥ तुमही हव्य कव्यकौं लेत। देव पितृगणकौं तुम देत॥ पावक तुम धाता गुरु दक्ष। तुमही शशि अरु सूर अजस्र॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ सुनिस्तोत्र मुनिकृत अभिराम। पावक पायो मोद ललाम॥ मन्दपाल मुनिसों इमि बैन। कहन लगे हुतभुक् लहि चैन॥ तुमको मुनिवर वांछित जौन। चिप्र कहौ हम करिहै तौन॥ मन्दपाल करजोरि विनीत। कहे अग्निसों बचन सुनीत॥ पत्नी पुत्र हमारे जान॥ खांडव वन बासी है तौन॥ प्रभु तुम खांडव दाहन जात। तिनको कीजो नहा निपात॥ कहो तथास्तु अनल लहि चाव। तिनकों दहो न दाहत दाव॥ सार्ङ्कते वन दहत निहारि। भए विकल अतिसै दुख धारि॥ सुतन देखि जरिता भरि ताप। शरण हीनव्है कियो बिलाप॥ * ॥ जरितोवाच॥ * ॥ अग्नि दहत इत आवत दाव। धरें कराल कालको भाव॥ पीडित करत मोहि ए बाल। अपक्ष अरक्षक चरण अवाल॥ नहि हौं सकति इन्हे लै जाय। सुतको त्यागन जननि स्वभाय॥ पुत्रन्ह भूरि पक्ष सो पर्भ॥ सह जरिबोहै समै सुधर्म॥ कुलपाल सु जरिता रिपु ढार। शारि सृक्क सु प्रजा करतार॥ व्है है लम्ब मित्र तप धाम। द्रोण ब्रह्मवेत्ता मतिधाम॥ औसे कहिगो निर्दय तात। केहि लेइजाउ नाथि यह घात॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ औसे सुनि माताके बैन। बोले सार्ङ्कसुत मतिऐन॥ जाऊ स्नेह तजिमाता तत्र। होय न दहत हुताशन यत्र॥ हमै मरे नहि बिनसत वंश। तुमको ह्वहै पुत्र प्रसंश॥ यह विचारि जो उत्तम होय। शीघ्र करऊ माता तुम सोय॥ ॥ * ॥ जरितोवाच॥ * ॥ जरिते कहो बिचारि अधीर। आखु बिवर यह निकट गँभीर॥ याने पैठि जाऊ सुत दूरि। तहा न अग्निदाह भय भूरि॥ हम तब बिलमुखमे रज डारि। लहै मूँदि सन यत्न बिचारि॥ शान्त भए पावक निरधारि। तब हम रज देहै सब टारि॥ बचिबेको यह परम उपाय। पावक सो सुनु सुत सुखदाय॥ * ॥ सार्ङ्कउवाच॥ * ॥ पक्षहीन हम निर्बल काय। आखु हमै भक्षण करि जाय॥ निश्चय जानि परै भय यत्र। भुलेऊ अम्ब न जाई तत्र॥ पावकदाह अवश्यक तौन। निश्चय मरण आखुके भौन॥ तातें अग्निदाह है पर्म। ह्वैबो आखुभक्ष नहि धर्म॥ *

॥ * ॥ जरितोवाच॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिल बाहेर लखि आखुकौं सो ल गयो लै ताहि। शून्य बिबरमे जात तुम तात डरतहौ काहि॥

॥ * ॥ सार्ङ्कउवाच ॥ * ॥

नहि देखो हम लेनकौं गहै आखुकौं तौन। भक्षण करिहै बिवरमे और होंहिंगे जौन॥

आ०प०

है संशय दूत आइबो पावक को बसवात। गए बिवरमे अन्ध गहि इंदुर निश्चय खात ॥
निश्चयतें संशय भलो मरिबेमे सुनु अम्ब।पुत्र होहिगे तोहि बज्ञ करऊ गमण अवलम्ब॥

॥ * ॥ जरितोवाच ॥ * ॥

गहे आखु हम सेनको लखो गगणमे जात। हाँ ताके अनु दूरि कछु गई प्रसंशत तात ॥
तजि संशय सुत बिवरमे तुम सब करऊ प्रवेश। सो देखत पल आखुको खायो सेन निशेश॥

॥ * ॥ साङ्ग उवाच ॥ * ॥

हम देखो नहि शेनको मास आखुको खात। बिनु देखे संशय नही दूरि होतहै मात॥
नहि तुम मिथ्या कहतिहो सो रक्षणको अम्ब । संशयमे नहि ज्ञानको करति सुमति अवलम्ब॥
तवन कियो उपकार तुम नहि जानति हम जौन । ह्वैबो पीडित व्यर्थ हम अम्ब तिहारे कौन॥
हो तरुणी तुम सुन्दरी पति चित चाव समान । जाऊ पास पति होहिगे हमसे पुत्र महान॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

हम करि पावक माह प्रवेश। लहि हैपावन लोक सुदेश॥ जौ पावक मो करो न धात। तौ हम पास आइयो मात॥ * * * * * * * * * * * * *

॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रेखाछन्द ॥ * ॥

सुनत सो यहि भाँति जरिता पाय परम निदेश। गई उठि कै तहाँ पावक कियो जह न निवेश॥
तहा आए अग्नि सुनिसुत रहे जँह अभिराम । जरितारि लागे अग्निसों है कहन बचन ललाम॥
कष्ट आवत होत जाग्रत प्रथम पुरुष सुजान । समय आए नही पावत तौन कष्ट महान॥
समय आयो कष्टको जन नही जानत जौन । लहतहै अति कष्टकों जन कालपाए तौन॥
॥ * ॥ सारिष्टकउवाच ॥ * ॥ सुमति धीर सुबन्धुहै तुम कष्टके यहि काल । जननमे तुम एक हो मतिमान सूर बिशाल ॥ * ॥ स्तम्बमित्रउवाच ॥ * ॥ ज्येष्ठ तात समान हरता कष्टको अभिराम । ज्येष्ठकी बिनु कृपा अवरज सकतको कार काम ॥ * ॥ द्रोणउवाच ॥ * ॥ अग्नि आवत धामको सम धरे रूप कराल । सप्त जिव्हा ग्रासकर्ता भयद बदन बिशाल ॥ * ॥ वैशंपायनउवाच ॥ * ॥ अन्योन्य ऐसँ बचन कहि मुनि पुत्र मतिके धाम । अग्निको सुस्तोत्र लागे करन अति अभिराम ॥ बायु उद्भव ज्वलन हो तुम भूमि भूमिज रूप। आयहै तो शुक्र जातें जात बिश्व अनूप॥ चलैँ चारो ओरकों तो अर्चि अनल महान।भानुकर बर दिशनमे ज्यों जात पसरि समान॥ सारिसक्कउवाच ॥ नही माता पिता जातन पक्ष नहि त्रातार । जानिबालक शरण हमकों देऊ अनल उदार ॥ जौन है शिव रूप तव वर शिखा सप्त महान। करऊ तिनतें हमहि रक्षित अनल जगसुखदान ॥ * ॥ स्तम्बमित्रउवाच ॥ * ॥ सर्व हो तुम एक पावक सर्वम अभिराम । धरतहो तुम भूप सिगरे भरत भूत ललाम ॥ अग्नि हो तुम हव्यबाह सु हव्य हो

सुखदान। एक कहत अनेक तुमको बेदबिद मतिमान ॥ बिरचि तीनो लोकको फिरि करत आ०प० तुम संहार ।उत्पत्ति लयके स्थान हौ तुम अग्नि कहत उदार ॥ * ॥ द्रोणउवाच ॥ * ॥ खात जो जन अन्न ताके उदरमे करि बास । पचन ताको करत पावक सर्व सर्वनिवास ॥ सूर्य्य व्है कै करणतैं करि भूमिको रस पान । काल लहि करि वृष्टि सृष्टि सु करत बिबिधि बिधान ॥ करत अङ्कुर हरित नवदल भरत सर सुखदान । सलिल सो तुम करत पूरण सिन्धु पूर महान॥ करऊ रक्षित हमहि मङ्गल मूर्त्ति होय अनूप । करऊ नाशन पाहि पावक बाल पालनरूप ॥ पिङ्गाक्ष लोहित ग्रीव हमको छोडि सह उतसाह।दूरि जै औ अग्नि जिमि जन तजत सरित प्रबाह ॥*॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ द्रोणके सुनि बचन पावक होय परम प्रसन्न । मन्द पालहि दियो हो बरदान जो सम्पन्न ॥ अग्निरुवाच ॥ द्रोण ऋषि तुम कहो सिगरो ब्रह्मज्ञान सधर्म । अभय सो तुम रहऊगे लहि मोद मङ्गल पर्म॥मन्दपाल सु दियो हमको प्रथम तुमहि जनाय।छोडि मेरे पुत्र दीजो दहत खांडव दाय॥पिताको तब द्रोण तुम्हरे बचनको लहि भार।कहऊ सो सब करहि हम मुनिपुत्र तो उपकार॥द्रोणउवाच ॥ करत है उद्वेग हमको आखुभुक् निति आय। करऊ याको भस्म सहपरिबार उबरि न जाय॥बैशम्पायन उवाच ॥ तथास्तु कहिकै लगे पावक दहन खाण्डव दाव। सुतन प्रति मुनि मन्दपाल सु भए बिगलित चाव ॥ अग्निसों तो कहो हो नहि तऊ पावत चैन। पुत्रार्थ चिन्तित कह्यो लपितासों तहा इमिबैन।।अशक्त मेरे पुत्र कैसें होहिंगे अभिराम।बहत बायु प्रचण्ड बर्धितभयो पावक नाम॥तिन्हे रक्षण हेत जरिता करैं गी का यत्न। होय गी शोकार्त्त पुत्रन्ह देखि बिगत प्रयत्न ॥ उडनमे असमर्थ पुत्रन्ह देखि तिनकी मात। होय कै शोकार्त्त चऊंदिशि फिरगी बिलखात॥ पुत्र मम किमि होहिंगे सह जननि निर्गत पाप। मन्दपाल हि कहत ऐसें बचन सुनि सबिलाप॥ कहन लपिता लगी ऐसैं सह असूया बैन। सुतनके तुम हेत ऐसें कहत होय अचैन॥ तेज मानस बीर्य्य तिनकों अनलसों भय है न। दियो मेरे निकट तिनकों अग्नि अभय सचैन॥ लोकपाल न करत मिथ्या बचन अपनो पर्म। सुतनते तुम स्वस्थ हो यह कहत गोपैं मर्म ॥ मो सपत्नी हेत तुम इमि कहत हो दुखपूरि। नही मोमे स्नेह तैसो यथा तामे भूरि॥ स्नेह पात्र सपुत्र दारा त्यागिबो नही न्याय। जाऊ जरिता पास पावऊ चाव ताकों पाय॥फिरैं गी हम ह्व अकेली कुपतिकैसी बास। * । मन्दपाल उवाच। * । नही ऐसो करत हैं हम कर्म व्है बश काम॥ करत शोच सु सुतनके हित जानि तिन हि सदन्द।भूत छोडि भबिष्यको जो यत्न करत सो मन्द॥सुतन्ह देखन जात हम तुम करऊ स्वरुचि समान। बढो लखत प्रचण्ड पावक करत शोच महान॥ ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ तहां जब नहि गयो पावक देखि जरिता आय। लगी लालन सुतनको एक एकको हिय लाय॥ देखि जरितहि अस्तु मोचति करति रुदन महान । नही तासों कछू बोले पुत्र ते मतिमान॥ मन्दपालो गए सहसा सुतनप तव भूप। नही तिन कछु करो बन्दन रहे

आ०प० है संशय इत आइबो पावक को बसबात। गए विवरमे अन्य गहि इंदुर निश्चय खात॥
निश्चयतें संशय भलो मरिबेमे सुनु अम्बा पुत्र होहिगे तोहि बङ करङ गगण अवलम्ब॥
॥ * ॥ जरितोवाच ॥ * ॥
गहें आखु हम सेनको लखो गगणमे जात। हां ताके अनु दूरि कछु गई प्रसंशत तात॥
तजि संशय सुत विवरमे तुम सब करङ प्रवेश। मो देखत पल आखुको खायो सेन निशेश॥
॥ * ॥ साङ्ग उवाच ॥ * ॥
हम देखो नहि शेनकों मास आखुको खात। बिनु देखे संशय नही दूरि होतहै मात॥
नहि तुम मिथ्या कहतिहो मो रक्षणको अम्ब। संशयमे नहि ज्ञानको करति सुमति अवलम्ब॥
तवन कियो उपकार तुम नहि जानति हम जैान। ह्वैबो पीडित व्यर्थ हम अम्ब तिहारे कैान॥
हो तरुणी तुम सुन्दरी पति चित चाव समान। जाङ पास पति होहिगे हमसे पुत्र महान॥
॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥
हम करि पावक माह प्रवेश। लहि हैंपावन लोक सुदेश॥ जैां पावक मो करो न घात। तौ हम पास आइयो मात॥ * * * * * * * * * * * * * *
॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥
सुनत सो यहि भाँति जरिता पाय परम निदेश। गई उठि कै तहाँ पावक कियो जह न निवेश॥
तहा आए अग्नि मुनिसुत रहे जँह अभिराम। जरितारि लागे अग्निसों है कहन वचन ललाम॥
कष्ट आवत होत जाग्रत प्रथम पुरुष सुजान। समय आए नही पावत तैान कष्ट महान॥
समय आयो कष्टको जन नही जानत जैान। लहतहै अति कष्टकों जन कालपाए तैान॥
॥ * ॥ सारिष्टकउवाच ॥ * ॥ सुमति धीर सुबन्धुहै तुम कष्टके यहि काल। जननमे तुम एक हो मतिमान सूर विशाल॥ * ॥ स्तम्बमित्रउवाच ॥ * ॥ ज्येष्ठ तात समान हरता कष्टको अभिराम। ज्येष्ठकी बिनु कृपा अवरज सकतको कार काम॥ * ॥ द्रोणउवाच ॥ * ॥ अग्नि आवत धामको सम धरे रूप कराल। सप्त जिव्हा ग्रासकर्ता भयद बदन बिशाल॥ * ॥ वैशं पायनउवाच ॥ * ॥ अन्योन्य ऐसें बचन कहि मुनि पुत्र मतिके धाम। अग्निको सुस्तोत्र लागे करन अति अभिराम॥ वायु उद्भव ज्वलन हो तुम भूमि भूमिज रूप। आयहै तो शुक्र जातें जात बिश्व अनूप॥ चलैं चारो ओरकों तो अर्चि अनल महान। भानुकर बर दिशनमे ज्यों जात पसरि समान॥ सारिसक्कउवाच॥ नही माता पिता जातन पक्ष नहि त्रातार। जानिबालक शरण हमकों देङ अनल उदार॥ जैान है शिव रूप तव बर शिखा सप्त महान। करङ तिनते हमहि रक्षित अनल जगसुखदान॥ * ॥ स्तम्बमित्रउवाच ॥ * ॥ सर्व हो तुम एक पावक सर्वम अभिराम। धरतहो तुम भूप सिगरे भरत भूत ललाम॥ अग्नि हो तुम हव्यबाह सु हव्य हो

सुखदान। एक कहत अनेक तुमको बेदबिद मतिमान ॥ बिरचि तीनो लोकको फिरि करत तुम संहार।उत्पत्ति लयके स्थान हो तुम अग्नि कहत उदार॥*॥ द्रोणउवाच॥*॥ खात जो जन अन्न ताके उदरमें करि बास। पचन ताको करत पावक सर्व सर्बनिवास॥ सूर्य्य व्है के करणतें करि भूमिको रस पान । काल लहि करि बृष्टि सृष्टि सु करत बिविधि बिधान ॥ करत अङ्कुर हरित नवदल भरत सर सुखदान। सलिल सो तुम करत पूरण सिन्धु पूर महान॥ करउ रक्षित हमहि मङ्गल मूर्त्ति होय अनूप । करउ नाशन पाहि पावक बाल पालनरूप॥ पिङ्गाक्ष लोहित ग्रीव हमको छोडि सह उतसाह।दूरि जै अै अग्नि जिमि जन तजत सरित प्रवाह॥*॥ बैशम्पायन उवाच॥*॥ द्रोणके सुनि बचन पावक होय परम प्रसन्न। मन्द पालहि दियो हो बरदान जो सम्पन्न॥ अग्निरुवाच ॥ द्रोण ऋषि तुम कहो सिगरो ब्रह्मज्ञान सधर्म। अभय सो तुम रहउगे लहि मोद मङ्गल पर्म॥मन्दपाल सु दियो हमको प्रथम तुमहि जनाय।छोडि मेरे पुत्र दीजो दहत खांडव दाय॥पिताको तब द्रोण तुम्हरे बचनको लहि भार।कहउ सो सब करहि हम मुनिपुत्र तो उपकार॥द्रोणउवाच॥ करत है उद्वेग हमको आखुभुक् निति आय। करउ याको भक्ष सहपरिबार उबरि न जाय॥बैशम्पायन उवाच॥ तथास्तु कहिकै लगे पावक दहन खाण्डव दाव। सुतन प्रति मुनि मन्दपाल सु भए बिगलित चाव॥ अग्निसों तौ कहो हो नहि तउ पावत चैन।पुत्रार्थ चिन्तित कह्यो लपितासों तहा इमिबैन॥अशक्त मेरे पुत्र कैसें होहिगे अभिराम।बहत बायु प्रचण्ड बर्धित भयो पावक माम॥तिन्है रक्षण हेत जरिता करैगी का यत्न। होय गी शोकार्त्त पुत्रन्ह देखि बिगत प्रयत्न ॥ उडनमें असमर्थ पुत्रन्ह देखि तिनकी मात। होय कै शोकार्त्त चऊंदिशि फिरगी बिलखात॥ पुत्र मम किमि होहिंगे सह जननि निर्गत पाप। मन्दपाल हि कहत ऐसें बचन सुनि सबिलाप॥ कहन लपिता लगी ऐसें सह असूया बैन। सुतनके तुम हेत ऐसें कहत होय अचैन॥ तेज मानस बीर्य्य तिनकौं अनलसौं भय है न। दियो मेरे निकट तिनकौं अग्नि अभय सचैन॥ लोकपाल न करत मिथ्या बचन अपनो पर्म। सुतनते तुम स्वस्थ हो यह कहत गोपैं मर्म ॥ सो सपत्नी हेत तुम इमि कहत हो दुखपूरि। नहीं मोमें स्नेह तैसो यथा तामें भूरि॥ स्नेह पात्र सपुत्र दारा त्यागिबो नहीं न्याय। जाउ जरिता पास पावउ चाव ताकौं पाय॥फिरैंगी हम ह्व अकेली कुपतिकैसी बास।*। मन्दपाल उवाच।*। नहीं ऐसो करत हैं हम कर्म व्है बश काम॥ करत शोच सु सुतनके हित जानि तिन हि सदन्द।भूत छोडि भविष्यको जो यत्न करत सो मन्द॥सुतन्ह देखन जात हम तुम करउ स्वरुचि समान। बढो लखत प्रचण्ड पावक करत शोच महान॥ ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ तहां जब नहि गयो पावक देखि जरिता आय। लगी लालन सुतनको एक एकको हिय लाय॥ देखि जरितहि अस्रु मोचति करति रुदन महान । नहीं तासों कछू बोले पुत्र ते मतिमान॥ मन्दपालो गए सहसा सुतनप तव भूप। नहीं तिन कछु करो बन्दन रहे

मैान स्वरूप ॥ * ॥ मन्दपालउवाच ॥ * ॥ इनसुतनमे लघु जेष्ठ कोहै कहहु प्राण समान। नहो बोलति कौंनकारण भई मैान महान ॥ * ॥ जरितोवाच ॥ * ॥ कहा तुमसौं सुतनसौं है कार्य्य मुनि मतिराय ।गए हमकौं छोडि जँह तँह जाहु प्रियतम पास ॥ * ॥ मन्दपाल उवाच ॥ छोनको नहि और हारक स्वर्ग पथको गैान । जारगमन सपत्नि दुखतैं पिति निरादर जौन ॥ अरुन्धती भगवती मुनि सुबशिष्ट तपको धाम । नहि सपत्नी करहि शोचत भई यातैं छाम ॥ हैां अपत्यन्ह हेतु आयो कहति तुम इमि बैन । भई है तो भाँति लपिता भरी भूरि अचैन ॥ नारिको विश्वास करिबो पुरुषकैां नहि काम । होतिहै नहि आत्मपतिकी स्वार्थ चाहति बास ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ लगे सेवन पिताकैां मुनि पुत्र सुनि इमि बैन । लगे लालन मन्दपाल स्वसुतनकैां लहि चैन ॥ * ॥ मन्दपालउवाच ॥ * ॥ प्रथम कीन्हो बिनय तुमकैां मोचिवेके हेत। स्वीकार हमसों कियो पावक परम सत्य निकेत ॥ धर्म तुह्मारी मातुको अरु अग्निको बरदान। जानिकै नहि पूर्व आए बीर्य तो अतिमान॥ हमै प्रति सन्ताप करिबो योग्य तुमकों है नापुत्र तुमकों अग्नि जानत ब्रह्मऋषि तपश्चैन ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ समाधान स्वसुतनकों यहि भाँति करि अभिराम। और थलकों गए लै मुनि मन्दपाल सबाम ॥ अग्नि दाहो बिपिनि खांडव पार्थ हरि बल पाय। बसा मेद प्रवाहको किय पान आनद छाय ॥ देखि पार्थहि परे पावक भरे तृप्ति उमङ्ग। स्वर्गते मघवान आए लएँ सुरगण सङ्ग ॥ कृष्ण अर्जुनसों कहो यह कियो दुस्तर कर्म [illegible] हम लेहु बर तुम जौंन चाहहु पर्म ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ पार्थ मांगे अस्त्र सुशिगरे दिव्य जे अभिमान।कहो देबे तो न आए समय शक्र सुजान॥ प्रसन्न तुमसों होहिगे जब शंभु सुनहु सपर्व ।पार्थ तुमको देहिंगे तब अस्त्र विधिवत सर्व॥काल हमकों बिदित है सोसुनहु कुरुबर बीर। करहु जेतप उग्र तुम तब देहिगे रणधीर॥आग्नेय अरु बायव्य सिगरे अस्त्र मेरे जौंन।देहिगें सरहस्य परम अमोघ तुमको तैान ॥ प्रीति अर्जुनसों निरन्तर रहै मो अभिराम । कृष्ण मागो इन्द्रसो यह देउ बर सुखधाम॥ देय यह बर अग्निसों ह्वै बिदा सुरण समेत ।गए आनद भरे सुरपति फेरि स्वक निकेत ॥ मांस भक्षि सबसा शोणित पान करि हुतबाह । कृष्णपारथसों कहो यहि भाति [illegible] ॥ [illegible] तुम नरव्याघ्र हमकों तृप्त कीन्हों पर्म । देत आज्ञा जाहु भावै करो सो [illegible] ॥ [illegible] यहि भाँति अर्जुन कृष्ण आज्ञा पाय। परिक्रम्य मय सह नदीकेतट गए फिरि [illegible]॥ [illegible] भजि चरण चारु उदार।आदि पर्व समुद्रको करिभयो दर्पण पार॥

[illegible] ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] सोहत सब सुषमा धाम । बसैा राधाकृष्ण सो मनमाह मो अभिराम॥

[illegible] राजाधिराजश्रीउदितनारायणसाज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासि [illegible] गोकुलनाथ [illegible] बिना कृतभाषामहाभारतदर्पणे आदिपर्वसमाप्तिनामैकपञ्चाशदध्यायः ॥ * शुभमस्तु शकाब्दाः १७५१ सम्बत् १८८६ भाद्रस्य ७ दिवसे मुद्रा समाप्ता ॥

॥ * ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ * ॥

॥ * ॥ महाभारदर्पण ॥ * ॥

॥ * ॥सभापर्व ॥ * ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

चरण चारिफल धाम चिन्तामणि गणनाथके। लहत यथा मनकाम दरशत अरचत जगतजन॥
नन्दनन्दनके पाय बन्दनीय चरअचरके। सदा सन्त सुखदाय जनमन मानसके कमल॥
चरण सरोज उदार तापहरण हरिके परम। जिनतें निकसति धार सुरसरिता मकरन्दकी॥
राधाजूके पाय भवभयहरण सरोजसे। बसत जहां सुखदाय मनमधुकरो ब्रजराजको॥
चरण कमल अभिराम परम सन्त बलभद्रके। मो मन अलिकेधाम सरस मोद मकरन्दमय॥
॥*॥ श्लोकः ॥नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमं। देवीं सरस्वतीं व्यासंततो जयमुदीरयेत्॥ * ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पारथसों तब मय कहों कृष्णचन्द्रके पास। ह्वै बिनीत करजोरि कै बचन मधुर सुखरास॥

॥ * ॥ मयउवाच ॥ * ॥

कृष्ण उदित हे हननकों भक्षणकों कृतवाह। तुम रक्षित कीन्हें हमैं करिकै कृपा अथाह॥
काहऊ करैं सो राबरे कारय बांछित जौन। तुम हमकों शरणद भए पारथ करणाभौन॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

अर्जुनउवाच॥ * ॥ तुम करि चूके सकल मो काम। हम प्रसन्न तुमसों अभिराम॥ * ॥मय उवाच॥ * ॥ कहत सो तुमकों योग्य सुजान। चहत कियो हम प्रीतिसमान॥ हम सु बिश्वकर्मा अभिराम। दैत्यनके सुनिए मतिधाम॥ तो कारज कछु चाहत करण। हे बरबीर धीर सुद भरण॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ हमतें रक्षित आपुहि जानत। तौ हम तो कृतकार्य्य न मानत॥ तो सङ्कल्प अमोघ नशाय। तौ हरि कार्य्य करऊ कछु जाय॥ मयको बचन सुनत बलबीर। क्षण एक रहे बिचारि गँभीर॥ मनसह लोकनाथ निरधारि। सभा करन कँह कहो बिचारि॥ योग्य धर्म्मराजाके जौन। सभा सदन रचिए मय तौन॥ जाको लहै न जन उपमान। ऐसो रचऊ सभा

स०प० सुखदान ॥ जातैं तो मतिको परभाव । दिय कहँ जनगण श्रुतचाव ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ वचन ग्रहण करि तौन सुदार । सम विमान किय सभा विचार ॥ तब हरि अर्जुन मयकों साथ । लएँ गए जेहां कुरुनाथ ॥ कहो पूर्व सिगरे बृत्तान्त । सभा करण मत तास नितान्त ॥ धर्म्म तास कीन्हों सत्कार । भे प्रसन्न मय दैत्य उदार ॥ बृषपर्वा दानव जो भूप । तिहिं कीन्हँ वज्ञयज्ञ अनूप ॥ विमल विन्दु सरवरके पांहि । ताकी कथा सभाके मांहि ॥ धर्म्म भूपकों कही बखानि । तदनु दैत्यमय मेधा तानि ॥ स्वस्थ होय कै कियो विचार । सभा रचनको परम उदार ॥ आज्ञा कृष्ण पार्थकी पाय । शुभ मुहूर्त लहि कै सुखदाय ॥ करि द्विज पूजन दै वज्ञदान । सर्व ऋतुनमे सुखद सुठांन ॥ सभारचनके काज अनूप । वर सुप्रज्ञ मयदानव भूप ॥ हस्त अयुत चहुँदिशि विस्तार । समभू नापी परम सुठार ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ खाण्डवप्रस्थमांह करिवास । कछुदिन वासुदेव सुखरास ॥ पाण्डवसों लहि प्रीति अमन्द । विदा होंन चाहो ब्रजचन्द ॥ चाहि पिता दरशन सुखदाय । धर्म्मराजकी आज्ञा पाय ॥ प्रथा चरण बन्दे अभिराम । कहि सु विदाके बचन ललाम ॥ मूर्धाघ्राण कियो हियलाय । कुन्ती दृगभरि आनदछाय ॥ फेरि गए भगिनीढिग नाथ भरे विलोचन आनद पाय ॥ सत्य सार्थ हित कहि कै बैंन । जाँन अनुतर पूरित चैंन ॥ स्वजन संदेस तासु सुनि सर्व । बन्दित पूजित होय अखर्व ॥ भगिनीसों ह्वै विदा ललाम । गए द्रौपदीके चलि धाम ॥ तासें विदा होय कै सौम्य । गए जहां है मुनिवर धौम्य ॥ वंद्य धौम्यके चरण ललाम । गए पांडवनके फिरि धाम ॥ यात्रा योग्य कर्म्म करि सर्व । ह्वै शुचि दीन्हों दान अखर्व ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

पहिरि भूषण बसन अरचे द्विजनकों अभिराम । बन्दि कै गणनाथकों किय कृष्ण गमन ललाम ॥ स्वस्ति बाचन द्विजनसों सुनि पाय दधि फल फूल । चढे काञ्चन सुरथपैं कढि नगरतैं अनुकूल ॥ लएँ आयुध सकल लागे सकुन होन अखर्व । लगे रथमे सैव्य अरु सुग्रीव मन जव अर्व । प्रेम भरि नृपधर्म्म बाहन लगे रथ अभिराम । चढे पारथ सुरथ पीछें चमर लै छबिधाम ॥ भीम माद्रीतनय ऋत्विज पौर जनगण सङ्ग । रथन पैं चढि चले पीछें भरे प्रेम उमङ्ग ॥ अनुग भ्रातन सहित ऐसैं लसे कृष्ण ललाम । नम्र शिष्यन सहित जैसैं लसत गुरु गुण धाम ॥ धर्म्म नृपके वन्दि पद तिमि बृकोदरके पाय । पार्थसों फिरि मिले यदुपति अङ्क भरि सुखपाय ॥ नकुल अरु सहदेव बन्दे चरण हरिके मास । गए पांडव कोस द्वै यदुवीर सङ्ग ललाम ॥ मांगि आज्ञा धर्म्म नृपसों भूप श्रीबलबीर । फेरि सहजन पांडवनकों बोलो बचन गँभीर ॥ चले द्वारावतीको गहि परम पथ अभिराम । लगे पांडव लखन हरिकों भरे प्रेम ललाम ॥ देखि रथ यव परो नहि तब दियो मन करि साथ । प्रेम पूरित गए खांडवप्रस्थकों कुरुनाथ ॥ चढे रथपर सहित दारुक बेगसौं बलबीर । गए द्वारावतीकौं हिय भरे मोद गँभीर ॥ महति सेना सह सकल यदुबंश आगैं आय

यथोचित करि कृष्ण पूजन गए धाम लेवाय॥ वृद्ध माता पिताके हरि पाय बन्दि ललाम। बन्दि कै बलभद्रको मुद भरे आनद धाम ॥ प्रद्युम्न साम्ब सु निसठ मद अनिरुद्धकों हिय लाय। भरे आनद रुक्मिणीके धाममे फिरि जाय॥ सभा मणिमय रचनको मयदैत्य मनमे धारि। कहन लागो पार्थसों यहि भांतिसों सुविचारि॥ जात उत्तरदिशाकों फिरि आइ हैं करि कार्य्य। कैलाशगिरिमै नाकके ढिग कहत तुमसों आर्य्य ॥ वृषपर्व दितिसुत यज्ञ करिवेकों चहो अभिराम। रची मै मणिमयी नीकी सभा परम ललाम॥ विन्दुसरके पास सो है सभाद्रव्य सु तत्र। धरो है वज्र सभा रचिहो ल्याय कै सो अत्र॥ विषपर्वभूपति मारि अरिदल महाबलको धाम। गयी काञ्चन गदा राखी विन्दुसरढिग माम॥ विदित सोकों भीमके वज्र योग्य है वरभार॥ यथा है गांडीव पारथ योग्य धनुष उदार।वरुणकेरो शङ्ख है तँह देवदत्त गँभीर।महाघोष सो देत तुमकों आनिके बरवीर॥ यह वचन कहि ईशान दिशिकों चलो दनुज निसांक।गयो तुर कैलाश उत्तर जहां गिरिमैनाक ॥ हिरण्य शृङ्ग सु अद्रिकेढिग विन्दुसर अभिराम। लही सुरसरि कियो जेहां भगीरथ तपमाम॥ जगतहित जहँ करे ब्रह्मा यज्ञ परम अनेक। जूपचैत्य सु कनकमय जँह रचित सहित विवेक॥ इन्द्र जँह करि यज्ञ पाई सिद्धिकों अभिराम। कियो विधि जँह सृष्टिकों अतितिग्मतेजसधाम॥ सहित नर नारायणो विधि शम्भू यम जँह जाय। कियो सु युग सहसलौं तप परम आनद पाय॥ वासुदेव सु जाय जेहां करे सत्र अनन्त। कनक चैत्य सु दए मणिमय जूप रूप सिमन्त॥ जाय कै तहँ गदा शङ्ख सु सभाद्रव्य सु जौन। सहित धन सो उडाय ल्यायो दनुजगण सह तौन॥ ल्याय कै मय सभा तेहा रची भासुरपर्म्म। तिऊँलोकमे विख्यात है जो योग्य भूपति धर्म्म॥भीमसेन हि गदा दीन्ही रत्न रचित उदार। शङ्ख दीन्हों पार्थकों जो महा शब्दागार॥ अयुतहस्त प्रमाण चऊदिशि स्वर्णमय अभिराम। सभा सुरपतिसभा सम वर भानुभास ललाम॥ ताहि रचत पाय मयको परम शासन मान। आठ सहस सुनाम किङ्कर रक्षगण बलवान॥ घोर खेचर रक्त पिङ्गल नेत्रके वरकाय। तहां सरसी रची मय अप्रतिम मणिगण लाय॥ मणिनके विरचे मनोहर कञ्ज परम सुढार। विहग मणिमय कूर्म्म झषबर कनकके सहचार॥ वज्र रङ्गके सोपान विरचे फटिकके अभिराम। निष्पङ्कजलमे लहरि मुक्तातुल्य विन्दु ललाम॥ नीलमणिकी बँधी वेदी चारु अति चऊँओर। परैं तिनकी झलक सरसी माहि स्वच्छ सुठोर॥ निरखि ताकों नीलमणिमय जानि जगती ताहि। भूरि भ्रमसों परे ताने परत हैं जन चाहि॥ ता सभाके चऊँ दिशि तरु भरे सुमन सुरङ्ग। चारु सैारभ भरे सरवर चऊँदिशि सुतरङ्ग॥ हंस कोक करण्ड बोलत जलज मधुकर मान। पाण्डु वनकों देत तिनको गन्ध अनिल सुजान॥ रची चैादहमासमे मय सभा ऐसी पर्म्म। धर्म्म नृपकों दई सो अति चातुरी कृतकर्म्म॥ *🙞*🙞*🙞*🙞*🙞*🙞*🙞*🙞*🙞*🙞*🙞*🙞*

स॰प्र॰ स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायांमहाभारतदर्पणे सभापर्वणि सभाप्रवेशोनामप्रथमोध्यायः ॥ * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

सभामाह प्रवेशको जब कियो शुभदिन भूप।दियो भोजन भूप द्विजदशसहसकौं अनुरूप ॥ आज्य पायस मिलित मधु सह सकुली अभिराम । मांस छाग बराह मृगको स्वाद पूरित माम॥ मूल फल दल साक व्यञ्जन खाय जे सुखदेय । चोस्य चर्व्य अनेक विधिके रचित खट रसपेय॥ बसन माल्य सुगन्ध लेपन गो कनक अतिमान । पूजि नाना भाँतिसौं दिय द्विजनकौं बऊदान॥ पुण्याह बाचनको भयो तहँ घोष मङ्गलकार । बजे नाना भाँतिके बर बाद्य पटह उदार॥ तहाँ बन्दी बृन्द लागे पढ़ण सुयश प्रबन्ध । जल्ल मल्ल सु नट्ट लागे करण नाटक धन्ध॥ दयो तिनको दान भूपति सहित भ्रातन्ह पर्म । लसे सदश सुरेश सो लहि सभा चितिपति धर्म॥ व्यास आदिक सकल मुनिवर रहे जे तपधाम । आइ बैठे भूपकेढिग सभामे अभिराम ॥ भूप नाना देशके जे रहे सुहृद अखर्व। आइ कै ते सभामे नृप पास बैठे सर्व॥ असित देवल सत्य सुनक सुमन्त जैमिनि आम। पौलस्त्य शुक मैत्रेय तित्तिरि धौम्य मुनि तपधाम ॥ याज्ञवल्क्य सुलोमहर्षन अरु पराशर पर्म। पर्वतो सावर्ण बालव नासकेतु सुधर्म ॥ कौण्डिन्य भृगु शांडिल्य गौतम और शौनक आम। मार्कण्डेय अरु कहे कहलौ और जे तपधाम ॥ कथा भूपति पास त सब कहत धर्म विधान। भूप हि जे कहत तिनके नाम सुनऊ सुजान ॥ संग्रामजित अरु मुञ्जकेतु सु उग्रसेन ललाम। कक्षसेन सु दुर्मुखो अरुक्षेमको बलधाम ॥ अङ्ग बङ्ग कलिङ्ग भूपति कमठ अरु काम्बोज। पुलिन्द कम्पन चित्रकर्षण चेकितान सओज॥ श्रुतायुध जवनाधिपति अरु भीमरथ बलवान। शिशुपाल आदिक भूप नानादेशके अतिमान ॥ भजत बैठे सभामे नृपधर्मको अभिराम । यदुवृष्णिकुलके कुँवर जे दुर्द्धर्ष अतिबलधाम॥ अक्रूर कृतबर्मा सु सात्यकि आऊको मतिमान। गद सु बिष्ठथु और सारण महाबल सुखदान ॥ कैकेय अरु बसुमान सोमिकि और बऊ वरभूप । सभामेहूँ भजत धर्म नरेशकौं अनुरूप॥ पार्थ आश्रित राजपुत्र अनेक अतिबलवान । धनुर्वेद सु पढत धारे ब्रह्मचर्य्य महान॥ लेत शिक्षा वृष्णिवंशज कुँवर ए बर बीर। साम्ब अरु युयुधान सात्यकि अरु सुधर्मा धीर॥ अनिरुद्धके संग भूपसुत बऊ शिखत शस्त्राभ्यास । सखा तुम्बुरु पार्थको सो रहत है निति पास॥ गन्धर्व अप्सर तौर्य्यत्रिकमे कुसलमति अति जौन। गान बाद्य सुबाद्य बिधिवत करण लागे तौन॥ तेहि सभामे नृपधर्मकौं सब भूप भजत अखर्व । यथा सुरपतिकौं सुधर्म्मामाहि सुरगण सर्व॥ **

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भूप ऋषि गन्धर्वसह नृपधर्म जहँ अभिराम। सभामधि तहँ नारद आए

ब्रह्म ऋषि तपधाम ॥ तेजपुञ्ज अमोघवार्ता परम तपनिधि आम । देखि नृप उठि अगरि दीन्हे अर्घ्य पाद्य अछाम ॥ अभ्यवादन सहित आनन करत भे अतिमान । दियो आसन महा मुनिको प्रीति सहित सुजान ॥ देत भे मधुपर्क करिकै आसनस्थ अनूप । सविधि पूजन कियो मुनिको धम नृपवर भूप ॥ लहो मुनि सन्तोष पूजन पाय नृप सौं पर्म। लगे पूछन भूप सौं सह अर्थ काम सुधर्म॥ नारदउवाच॥ * ॥ अर्थहै सबसिद्धि मन तो धर्म रतहै भूप । रहतहै मन सुखासीन अविघ्नव्है अनुरूप॥ जौन पितृ पितामहादिक की रही सत वृत्ति ।अर्थ धर्म सुकाममें सो भई तीन निवृत्ति ॥ अर्थ सो नहि होत बाधित धर्म तो अभिराम।धर्मअर्थहि तौन बाधत अर्थ धर्महि काम॥ धर्म अर्थ सुकाम सेवन करत काल बिचारि ।आदि मध्य सु अन्त दिनके यथाक्रम निरधारि ॥ ** **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

षट् गुण सेवत नृपनके साधत सांत उपाय । रहत परीक्षत चौदहो उभै प्रकार सचाय॥

॥ * ॥ षट्गुणनाम ॥ * ॥

बचन कुशलता बिक्रम तर्क स्मृति मतिमान । करिबो ऊह भविष्यको नीति शास्त्रको ज्ञान॥

॥ * ॥ सप्त उपाय नामः ॥ * ॥

साम दान बिधि भेद अरु दण्ड मंत्र अवदात । औषध और बलाबलौ को बिचार ए सात ॥

॥ * ॥ चौदह दोष यथा छपै ॥ * ॥

मिथ्याबाक प्रमाद क्रोध नास्तिकता आलस । दीर्घ सुचता शुभ रहव इन्द्रियबस लालस ॥ निज मतको करतव्य अपटुसौं मंत्र करव सोउ । औरहि जौन करतव्य तासु है अनारम्भ जोउ ॥ नहि करव देव उतसव शुभद मंत्र प्रकाशव अनय अति । अरु बहुत शत्रुसौं लरन कह तुरित चलव चौदह अनिति ॥ * * ॥ चौदह निरीक्षणीय नाम ॥ * ॥ छपै ॥ * ॥ * * *

हय गज गढ भट देश कोश अधिकार दिए जन । शत्रु शास्त्र बेवहार चार अन्तहपुर दमन ॥ आमद खर्च बिधान तासु कागद बिसतारन । हय गज भट रथ आदि तासु संख्या अवधारन ॥ अरु अनाजको साज सब ए चौदह करिकै रुचित । देशकाल अनुमान करि निति निरखव भूप हिं उचित ॥ * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * * *

आठ कर्म्म सेवन करत सुनो भार्त कुल दीप । कृषी बणिक गढखानि अरु करलीबो अवनीप ॥ बन ग्रामणि गज राखिबो सदा चराई हेत । उजरो देखि बसाइबो नदिन बाँधिबो सेत ॥ सात प्रकृति तुव कुशल है लोभ रहित हित रूप। बेद योतिसी सैनपति धर्माध्यक्ष अनूप ॥ देत जान चतुरङ्गिनिहि सविधि अहार बिधान।शुभद पुरोहित शास्त्रबिद किलेदार बलवान॥ तुव सुख तुव मंत्रीनसुख चार भृत्य सुख तौन। मंत्र प्रकाशित होत तुव कहो भूप मतिभौन॥

स०प० मित्र शत्रु अरु मध्य को करतब जानत भूप। विग्रहको अरु सन्धिको जानत सेवन रूप ॥
वृद्ध शुद्ध मतिमान हो कीन्हे मंत्री दक्ष। मंत्र मूल है विजयको दायक ईछित अक्ष॥
ब्राह्मी शुद्ध मुहूर्त मैं हित चिन्तवत नरेश। निद्रावश तो रहत नहि निद्रा देति कलेश॥
थोरो श्रम अरु अधिक फल शीघ्र करत सो कर्म। जानतहो सब प्रजनको नाम ग्राम हित धर्म॥

॥*॥ रोलाछन्द ॥*॥

सहस मूरख देइ भूपति लेत पण्डित एक। बुद्धिमान सुजानसो कल्याण करत अनेक॥ धान्य धन जल अन्न सुभटन भरे गढतो सर्व। गढन नगरन सुघर शिल्पी चार बसत अखर्ब ॥ *❁**

॥*॥ दोहा ॥*॥

प्रगट अठारह अङ्गहै जिनके अरिके जौन।चार बदन तिनके सुनत निति करतब थिति गौन॥
छपै ॥ मंत्री अरु युवराज पुरोहित सेना नायक। जो कारागृहपाल जिते अन्तःपुर लायक॥
अरु खजानची दक्ष दिवान नगरपति चायक। धर्माध्यक्ष सुजान सभागृह शासन दायक ॥
अरु न्याय दण्ड अधिकार जेहि द्वारपाल न्यामक प्रबुधि। अरु देश प्रजापालक जिते अटबी गढपालक सुबुधि॥ *❁❁*❁❁* ॥*॥ दोहा ॥*॥ ❁*❁❁*❁❁*❁❁*

अरु कारज करता जिते ए अष्टादश अङ्ग। खबार लेत इनकी सदा चार राखिकै सङ्ग॥
चारचक्षु करिकै रहत देखत अहित समस्त। रहत पुरोहित कहत तुव सुधरम करम प्रशस्त॥
कुशल तुम्हारे ज्योतिसी रहत जनावत सर्व।ग्रह कृत तन धन अवनिको जो उतपात अखर्व॥
देत रहत हो चाकरन समै समै धनमान। देत रहत हो आचकन अन्न धन सहित बिधान॥
विद्यावन्त गुणीनकहँ यथायोग सनमानि। यथा उचित धन देतहै निज सुधर्म अनुमानि॥
तोहित त्यागे देह जिन तिनके तिय सुत आदि। तिनको पोषण करत हो कै नहि करत प्रमादि॥
अनर्थ व्यसनी अरिहि सुनि शीघ्र जातकै नाहि। देश कोश अरु सुभट बल आनत निजबशमाहि॥
मणि धन दै कै करत हो अरि मधि भेद उपाय। निज इन्द्रिणकह जीतिकै जीतत अरिन सचाय॥
करषत रक्षत धन प्रजा तो चाकर देशीय। द्यूतादिक दुरव्यसन तौ नहि बरतत कृत भीय॥
उत्तम मध्यम अधम नर तिन्है परखि क्षितिपाल।यथा उचित पद देत हो गुणि नृप नीति बिशाल॥

॥*॥ दोहा ॥*॥

ग्राम ग्राम की खबरि निति सुनत रहत सविधान। एक नबर समदेश सब रक्षत हो मनमान॥
बिप्लव कछू सुनि देशमै कीन्हे बिना उपाय। सोवत तौ नहि सुचितव्है अन्तह पुरमै जाय॥
ललित वस्त्र धारण किए गह रुङ्ग अभिराम। तुम कहँ सेवन रहतहै सुभट जूह सब जाम॥
वृद्ध सुबुधिको सङ्गकरि खोवत मानस ताप। सेवत औषध नियमकरि रोगादिकको दाप॥
अरथी याचक बिरति ह्वन देखत कृपा समेत। रोकत तौ नहि वृत्तिद न की सुवृत्ति धनहेत॥

हतो बंश छितिपाल जे ते बिगरे तो सङ्ग । तो शत्रुण सौं लरनकों है अति गहे उमङ्ग ॥ सं०प०
ब्राह्मण बृन्द सुपात्र निति असन करत तुव गेह । सरुचि दछिणा पाय ते आशिष करत सनेह ॥
वाजपेय मख अमल अरु पुण्डरीक मख पर्म । करिबेकी बर भावना आनत हिएँ सधर्म ॥
वृद्ध विप्र गुरु साधुजन तरु उत्तम जे अच्छ । तिनहि देखिकै करतहौ नमस्कार है दच्छ ॥
मङ्गल द्रव्य लिए रहत नित्य पुरोहित साथ । पढत रहत खस्तेन द्विज करता सुभद सनाथ ॥
बुद्धिबृत्ति तुव थिर रहति सतकारज पैं भूप । यश सुधरम आयुष करणि काम अर्थ अनुरूप ॥
थिरमति भूपति सुबुधि सौं विजय लहत सब काल।बचनपालिबो नृपनको सुधरम सुगुन बिशाल॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कुत्सित कर्म प्रजाको देखि । ताडि हरत तुम सुधन बिशेखि ॥ तुव अमात्य पकरि फिरि ताहि । ताडत तौन अधिक धन चाहि ॥ सधन चोरकह पकरि सबाह । तुम राखत कारा गृह माहँ ॥ तासों लहि कछु धनबेवहार । छोडत तौन अमात्य तुम्हार ॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *

धन दारा श्रुत बेद तुव है सु सफल हे भूप ।सकल काज फल प्रभवहै फलतैं सबै अनूप॥

॥ * ॥युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

धन दारा श्रुत बेद ए सफल कौनबिधि तात । सो कहिए अब पृथक करि नारदमुनि अवदात॥

॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥

अग्नि होत्र फल वेदको दान भोगफल बित्त । रति सन्तति फल दारके श्रुतफल शील सुचित्त ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

प्रश्नोत्तर कहिकै इबिधि नारदमुनि बिधिपुत्र । फिरि बूझन नृपसौं लगे कुशल राजनय सुत्र ॥

॥ * ॥ नारदउवाच ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

व्यापारी चहुदिशिके आय । देत तुम्हैं कर सबिधि सचाय ॥ बेचि खरीदि कुशल सौं जात ॥ तुम्है प्रशंसत सरुचि बिभाँत ॥ निति कर लेत हाटमें जौन । तासधि दास दुरावत तौन ॥ साचर माल उभै परकार । धन आमद निर बिघन बिचार ॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * *

सुफल अन्न घृत सिद्धकरि प्रजा तुम्हारे भूप । अंश विप्रको देतहै यो शुभदायक रूप ॥
शुभ कारज जानत नृपति करताको सतकार । करत प्रशंसत हौ सबिधि राजि सभा आगार ॥
हय गज रथ सेवन सबिधि अरु लच्छण बेवहार । जानतहैं तौ भृत्यसब यथायोग निरधार ॥
अति दृढ बिबिधि प्रकारके अस्त्र शस्त्र समुदाय ।हौ अरजन कीन्हे नृपति दायक बिजय सहाय॥
मारन मंत्रप्रयोग सौं शत्रुनकों जन जौन । अति आदर करिकै तिन्है राखतहौ बल भौन ॥
अग्नि सर्प अरि रोग अरु तस्कर दुसह कुभेश । तिनके भयसो भूमिपति रखत हौ निज देश ॥
पङ्गु अन्ध निरबन्धु अरु जिर आश्रयी अयान । तिनको पालन करतहौ भूपति पितासमान ॥

स०प०

क्रोध आदि षटदोष जे तिन्हे किएहौ दूरि । निद्रालस भय मृदुलता दीर्घ सूत्रता भूरि ॥
देत कहतहौ जाहि जो शीघ्र देत सो ताहि । निदरत तौ नहि ताहि कछु देन कहतहौ जाहि ॥
काज अपूरव जौन जेहि करि न सकत जन और । ताको करता ताहि नृप तोषत सबिधि षडौर॥
अनुपम कारज करत जो ताको मनको भाव । बूझि भूमिपति करतहौ बरधित ताको चाव ॥
काज अनूपम करत सो लहत न धन अधिकार । कैसो मरिबोबर गुणत कै तौ बिपिनि बिहार ॥
जासौं कारज लेत कछु दे आशा आधार । सो आशा पूरण करत आशा बश संसार ॥
शुद्ध सुबुधि सतकारजी सुगुणी भृत्य सहोस । निदरत तौ नहि ताहि लखि तासु बर्ग छत दोस ॥
नाम सुयशके अचल हित करत सुकारज जौन । तासु त्यागतौ गुणत नहि सुनो भूप मति भौन ॥
दान युद्ध मे गहत तौ नहि लालच अरु भीति । दान युद्धमै शीघ्रता कारबोई नृप नीति॥
बाक्यदत्तके देनमै गहर करत तौ नाहि । सो बिनु पाए याचकहि कल न परत हिय माहि ॥
सुयश पुण्यमधि भूमिपति रुचि राखत अधिकाय।सुयश पुण्य दुऊलोककी गति शोधक सुखदाय
करता उत्तम करमके बन्धु सुभट कबियार । तिन्है प्रशंसत भूमिपति बैठि सभा आगार ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ *॥

तिन्है प्रशंसत नृपहि सुनि सब साधत शुभकाज । तातेबरधत नृपतिको धरमदेश यशसाज ॥
भरतबंशके चरितको करत रहत अनुमान । सबदिन गोपीनाथकी सुधिराखत मनमान ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

नारद मुनिके बचनसुनि नीतिभरे नृपधर्म ।करिप्रणाम कर जोरिकै कहन लगे इमि पर्म ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

यथा कहत हम करहिंगे तथा सुनऊँ तपधाम । जासौं सागर मेखला छिति लहिहैं अभिराम ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ नारद उवाच ॥ * ॥ तेजतैं नृपकरत चारो बर्ण रक्षण पर्म । करिविहार समोद फिरि सुरलोक लहत सधर्म ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ पूजिकै फिरि पाय आज्ञा कहन लागे भूप । धर्मनिश्चय यथातथ्य सु कहो सुमुनि अनूप॥ यथान्याय स्वशक्ति मिलि हम करहिंगे सो सर्व। हेतुमान सदर्थ जो तुमकहे बचनं अखर्ब ॥ चलो चाहत पूर्बजनके सुपथमे अभिराम । तथाचलिबे सक्कहम नहि यथा ते तपधाम ॥ यहिभाँति कहिकै वाक्य मुनिसौं धर्मबिद नृपधर्म । रहत जानि मुहूर्त्त भरि मुनिलोकचारी पर्म ॥ * ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ * * * *
॥ * ॥ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ रहत तुम विधिरचित लोकनमे फिरत तपधाम । सभा ऐसी और कितहूँ लखोहै अभिराम ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ भूपके सुनि बचन बोले बिहसि सुमुनि सुजान । लखीनहि नरलोकमे हम सभा ऐसी आन॥सभा जैसी रावरी मणिमई

यह अभिराम॥सभाविधि यम वरुण सुरपति धनदकी सुखलान॥लखीसो हम कहत भूपति सकल सुनिए तौन। दिव्यरूपा सुरनतैं अति सेव्य मान सु जौन॥ बचन नारदके सुनत सह मुनिन्ह नृपति सुजान। कहन लागे सुनोचाहत कहहु मुनि सुखदान ॥ रचितहै केहि द्रव्यतैं विस्तार केतिक अयाम। पितामहकौ कौन सेवत सभामे अभिराम॥ इन्द्र वरुण कुबेर यमको कहहु सेवत कौन। सभामे तिहि सभासद व्है सुनो चाहत तौन ॥ यहि भाँतिके सुनि धर्मनृपके महामुनिवर बैन। ।*। नारद उवाच ।*। विश्वकर्मा रचित सुरपतिसभा सुषमाऐन ॥ विस्तीर्ण शतयोजन लसत शतअर्ध तास अयाम । पञ्चयोजन उच्च कामग योतिमय अभिराम ॥ जराशोकविवर्जिता कल्याण शुभदा सर्व । वेस आसन रम्य शाखी सुमन सहित अखर्व ॥ तेहि सभामे परमासनोपरि लसत शक्र ललाम।श्रीसहित शुभदा शची जाके लसति है दिशि बाम॥तेहिसभामे सुरनाथ सेवन करत सुरगण सर्व । गुरु आदि देकै देवऋषि अरु सिद्ध साध्य अखर्व ॥ इन्द्रअनुचर हेममाली सकल दिव्यस्वरूप। भूप जे बर यज्ञकर्त्ता धर्मकर्म अनूप ॥ हरिचन्द्रमहीप नरवर महाऋषि तप धाम। भजत कोटिन्ह सभामे सुरनाथकों अभिराम ॥ गन्धर्व किन्नर यक्ष अप्सर सूरशशिग्रह पौन। अग्नि जल क्षितिभो सहायन भजत सुरपति तौन॥ अर्थधर्म सु काम विद्युत जलदगण अभिराम। यक्षसर्व सदक्षिणा रति सहित सेवत काम॥ गन्धर्व अप्सर गान नृत्य सुकरत रहत अखर्व। इन्द्रके मन मोदकारक कृपाचाहत सर्व॥ गुरु शुक्र सुरपति पाश रहत सुनित्य पूजित तौन । सर्व लोकाधीश सेवत चराचर शुचि जौन॥ और सकल महातमा चढि दिव्य विमल विमान। जात पूजि अनन्त ते सुरनाथसो लहि मान ॥ सभा पुष्कर मालिनी सुरनाथकी अभिराम। लखी ऐसी कही सो रमणीय तेजस धाम॥ इति इन्द्रसभावर्णनं ॥ कहत अब यमराजकी हम सभा देखी जौन। विश्वकर्मै करी निर्मित पार्थ सुनिए तौन ॥ तेजमय शतयोजना चहुँओर विस्तर मान । शीत उष्ण समान जामे भरी हर्षमहान॥ क्षुत्पिपाशा जराशोक न दैन्य जामे नेक । भक्ष्य भोज्य अनेक जामे मिलत कर्म्म विवेक॥ भोग्य कारक वस्तु जामे मिलै कर्म्म समान।राजर्षि अरु ब्रह्मर्षि जामे सभासद मतिमान॥इन्द्रद्युम्न ययाति नहुष सुभरत आदिक भूपाभए अवलौं गए जे तजि भूमि धर्म स्वरूप॥ करत सेवन धर्मको ते भरे परमानन्द । जात जे दुःकर्म करि ते तहाँ पावत दन्द ॥ भूप नाम समानके जँह लसत अमित अखर्व। लहत फल समकर्मके तनत्यागि जात जो सर्व॥स्वधा स्वाहा यज्ञ पतिरङ्ग तास मूरतिमान। धर्म नृपकों भजतहैं ते सभामध्य महान॥ जगत जन ते जात ऐसी सभामे सुखरूप। तास वर्णन कीजिए हम कहाँलौं कुरुभूप॥*॥ इति यमसभावर्णनं॥ **

॥*॥ जयकरीछन्द ॥*॥

॥*॥ नारदउवाच ॥*॥ वरुणसभा सुनिए कुरुभूप । धर्मसभा सम बृहत अनूप ॥ सलिल

स०प० मध्य जो निर्भय पर्म । वरुण वारुणी सहित सुधर्म ॥ मणिमय आसनपैं अभिराम । बैठे लसत परम छविधाम ॥ वासुकि आदिक नाग अखर्व । भरे मोद सेवत ते सर्व ॥ भानु भजत जलमांह अनन्द । वरुणसभा मह पाइ अनन्द ॥ वलि आदिक दितिके सुत जौन । वरुणसभाकँह सेवत तौन ॥ सिन्धु सकल धरि मूर्त्ति ललाम । गङ्गादिक सरिता अभिराम ॥ पल्वन वापी कूप तडाग । मूर्त्तिमन्त सेवत बडभाग ॥ गन्धर्वाप्सर किन्नर जौन । करत तौर्यत्रिक सब तौन ॥ मंत्री मतिवर सुनाभ नाम । सो सेवत सह वंश ललाम ॥ ऐसीसभा वरुणकों भूप । हम देखी सो कही अनूप ॥ ॥ * ॥ इतिवरुणसभावर्णनं ॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ सभासदनकी सुनिए भूप । रत्नमयी भा भरी अनूप । वरुण सभाकेसम बिस्तार । ज्योतिमयी सो लसति उदार ॥ तपवलरची आपु है जौन । शशि समान भा भूषित तौन ॥ है रजताचल शिखर समान । उन्नत सुखदा परम सुठांन ॥ गुह्यक कहत गगणमे जाहि । सदृश विमान कहत सुर ताहि ॥ कनक प्रशाद उच्च बङ्करङ्ग । दिव्य लसत मणिमण्डित अङ्ग ॥ दिव्य गन्धलौं पूरित तौन । विद्युत बलित अभ्र इव जौन ॥ तहँ कुबेर बैठे धनपाल । मणिमय भूषण धरे विशाल ॥ बनितादिव्य सहस्रन्ह पास । तहाँ करत धनपाल बिलास ॥ सोहति अलकापुरी बिचित्र । मणिन जडित मनु उदित सचित्र ॥ सुरतरु गन्धहि लीन्हें पौन । अनिश करत तहँ मन्थर गौन ॥ तहाँ लसत सुरमुनि बर जूह । अप्सर सह गन्धर्व समूह ॥ तौर्यत्रिक अति करत ललाम । धनपतिसौं लहिकै मनकाम ॥ किन्नरमुख्य लसत तँह सर्व । तौर्यत्रिक ते करत अखर्व ॥ लक्षणयत्त सगण अभिराम । धनदराज कँह भजत ललाम ॥ लसति भगवती लक्ष्मी तत्र । नलकूबर सह धनपति यत्र ॥ बङ्गत जात हम तहाँ सुजान । और जात जे हमै समान ॥ बर ब्रह्मर्षि देवऋषि तत्र । रहत अनेकन धनपति यत्र ॥ प्रीति सहित शङ्कर भगवान । लए भूतगण सङ्ग महान ॥ कृपाभरे धनपतिके पास । आवत उमासहित सुखरास ॥ धनद पूजि शङ्करके पाय । भयो सखा शिवको सुखदाय ॥ भगदत्तादिक भूप अनेक । भजत धनेश्वरको सविवेक ॥ बन्धु बिभीषण भजत सुजान । हिमालयादिक गिरि अतिमान ॥ शङ्ख पद्म आदिक निधि जौन । भजैं धनदकौं वसिकै भौंन ॥ इति कुबेरसभावर्णनं ॥ नारद उवाच ॥ * ॥ सभा पितामहकी अब भूप । वर्णन करत तथा अनुरूप ॥ फिरत मनुज वपु मोकौं पाय । दयो भासकर मोहि सुनाय ॥ सभा मानसिक ज्योतिस्स्वरूप । जाको रूप अमन्द अनूप ॥ हौं सुनि सभा सुगुण अभिराम । कह्यो भानुसौं बचन ललाम ॥ सभा देखिवैं इच्छित जोहि । दीयेव नाथ भासकर मोहि ॥ बिधि उपासनाको बिधि सर्व । करिकै मोपै कृपा अखर्व ॥ सहस वर्षलौं कीन्ही तौन । सभा लखी तब तेजस भौंन ॥ जानो पै न तास परमान । बिस्तर अरु आयामस्थान ॥ सुख स्वरूप है उष्ण न शीत । जरा व्याधिको बिगलितभीत ॥ क्षुधा पिपासा जहाँ न मानि । परति

समान सु सुखमय जानि ॥ नानारूप मणिन हैं पर्म्म । मनु बिरची सो सभा सुकर्म ॥ निदरति रवि शशि अगिनि प्रकास । गगण अन्तमह जाको बास ॥ रचत चराचर लोक अमान । रहत पितामह तँह सुखदान ॥ दक्ष प्रचेता पुलह वशिष्ठ। भृगु मरीचि कश्यप तप शिष्ठ ॥ गौतम अत्रि अङ्गिरस जौन । पुलस्त्य बालखिल्या तपभौन ॥ मुनि अगस्त्य अरु वर यमदग्नि । भरद्वाज दुर्बास समग्नि ॥ सनत्कुमारादिक तपधाम । रहत ब्रह्मऋषि तहां ललाम ॥ गगणजाल जितनो बिनु लिम्ब । लख तहाँ सो समप्रतिबिम्ब ॥ वेद शास्त्र सबबिद्या जौन । मूर्तिमन्त सोहैं तँह तौन॥ सहस अठासी ऋषि समुदाय। ब्रह्मसभामें नितिप्रति जाय ॥ बन्दि पितामहके पद तौन । ते सब करत यथा गत बौन॥गुह्यक दैत्य देव बर बर्ब ।गन्धर्बासुर सिद्ध सुपर्ण॥दर्शन हेत जात ए सर्ब। करत पितामह कृपा अखर्ब ॥ प्रति पदकाँ ए सिगरे जात । होति सभा सङ्कुल अवदात ॥ दीप्यमान ब्रह्मश्री पाय। द्योतिमयी सो सभा ललाय ॥ लोकन माह सुदुर्लभ जौन। ब्रह्मसभा देखी हम तौन ॥भूप मनुष्यनमे अभिराम। सभा तुह्मारी यथा ललाम ॥ *****

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुकबीनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचितेभाषां महाभारतदर्पणे सभापर्वणि नारदनोति कथने इन्द्रयमवरुणकुबेरपितामहसभावर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः॥ **

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

सभा बिडौजादिकनकी सुनी सहितबिस्तार । अब कछु पूछत और सो कहिए बुद्धिअगार ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कहो तुम यमलोक कौं तजि देहकौं नृप सर्ब। एक सुर पुरकौं गए हरिचन्द्र नृपति अखर्ब ॥ पिता मेरे पांडु नृपवर गए सो केहि लोक । तौन हमसों कहो बिधिवत महामुनि तपश्रोक॥ नारदउवाच ॥ * ॥ हरिचन्द्र भूपति शस्त्रबल तें जीतिकै सब भूप । करी सागर मेखला छिति स्ववश सधन अनूप ॥ कियो नृप हरिचन्द्र यज्ञ सु राजसूय महान। पाय आज्ञादयो भूपन्ह ल्याय धन अतिमान ॥ द्विजनकौं तँह दई भूपति दक्षिणा बऊ भूरि । दए नानाभाँति भोजन बसन आनद पुरि ॥ राजसूय सुयज्ञ करि हरिचन्द भूपति तौन। पाय पुण्याधिक्य कीन्हो अमरपतिपुर गौन॥राजसूय सु यज्ञ भूपति करत जो अभिराम। जायकै सो बशत सुरपुर शक्र साथ ललाम ॥ संग्राममे जे निधन पावत सूर सनमुख जाय । लहतहैं सुरलोक को ते महत सुख समुदाय ॥ उग्र तप करि तजतहैं यो देह यह अभिराम ॥ जाय सुरपति लोकमे सो बसतहै तपधाम ॥ पिता तो नृपपांडु भूपति कहे हमसों बैन । देखि श्री हरिचन्द्र की मनभरे भूरि अचैन ॥ जातहौ छिति लोककौं मुनि सुनऊ मो सन्देश। युधिष्ठिरकौं कहि सु दीजो यह तु परम निदेश ॥ भूमि जीतन योग्यहौ तुम बीर भ्रातन साथ। राजसूय सु यज्ञ कीजै हेतु मो कुरुनाथ ॥ पाय तुमसो पुत्र हम सुर

लोकमे नहि आय। बसत सम हरिचन्द्रके सुर सभामे सुखदाय॥ कहो हम यह भूप तुमसों पांडु
को सन्देश॥ करऊ तुम सङ्कल्प तिनको सत्यसहित निदेश॥ जाऊंगे सह पूर्व सुरपति लोककों
अभिराम॥ विघ्न होत अनेक यहि मखमाह हे मतिधाम। छिद्र देखत रहतहैं यज्ञघ्न राक्षस
सबोथह चली समन होत सु छिति अराजक सर्व॥ जौन पूंछो भूप हमसों कहो हम सब जौन। देऊ
आज्ञा द्वारिकाकों करैं अब हम गौन॥ *॥ वैशम्पायनउवाच॥ *॥ यहि भांति कहिकै पार्थ
सों व्है बिदा मुनि तपधाम। गए मुनिन समेत द्वारावती कों अभिराम॥ महा मुनिके वचन सुनि नि
श्वास लै नृपधर्म। राजसूय विचारि करिबो लहतहै नहि शर्म॥ महर्षि करिकै यज्ञ पावत पुण्य
लोक विचारि। हरिचन्द्र श्रीमुनि यज्ञ करि बो नियत किय निरधारि॥ भूप पूजे सभासद सब
सभासदन्ह नरेश। होय जैसें प्रजनको हित करि विचार विशेश॥ करि अनुग्रह प्रजनपर सम
करत हित अभिराम॥ साधुधर्म सुधर्म सुनत सधर्म नृपति ललाम। भूप संग्रह भीम पालन जिष्णु
हात पर नाम। पाय करत स्वकर्म सिगरे प्रजा बिगलित त्रास॥ करत शासन धर्मको सहदेव बर
मतिमान। करतहैं ताको प्रशंसा नित्य विबुध महान॥ यथा कान सु होति वर्षा भए जनपद
पुष्ट। करत बाधा नहीं कबहूं चोर ठगजन दुष्ट॥ प्रजा मानत धर्म नृपको पितृ मातृसमान।
धर्म चारो रहत हैं अनुरक्त अति सुखदान॥ वैशम्पायन उवाच॥ सहित मंत्रिन्ह भ्रातरण
सों कह्यो फिरि फिरि भूप। राजसूय सुयज्ञ करिबे हेत बचन अनूप॥ मन्त्रिण ऊचुः॥ राजसूय सु
यज्ञसों जिमि वरुण जल सब जीति। सम्राट भो तिमि होत नृपहूं जीति भूमि निभीति॥ सम्राट
गुणके योग्यहो तुम धर्मधुर कुरु भूप। सुखद तो शुचि समय मानत यज्ञको अनुरूप॥ क्षत्र सम्प
ति खवसहे तब यज्ञकोजे लौन। अग्नि षटजिहि माहि बर्धित करैं वर तपभौन॥ प्रथम दर्वी
होम करि फिरि क्रमहि ते सब यज्ञ। सर्वजित नृप होतहै अभिषेक लहि तव तज्ञ॥ सामर्थ हो
सब भांति तुम हम रावरे वश सर्व॥ यज्ञ कीजै अचिर भूपति राजसूय अखर्व॥ सुहृद सब
हिम कहो अस भूप सो बरबैन। बचन सुनत सधर्म्म तिनके पायकै नृपचैन॥ यज्ञ करिबैं योग्य
आपहि जानिकै तब भूप। धरो श्रीश्रीकृष्णको हियमांह ध्यान अनूप॥ सहित भ्रातन्ह
ऋत्विजनसों यज्ञ करिबे हेत। बचन लागे कहन फिरि फिरि भरे आनद चेत॥ धौम्यव्यास द्वि
[illegible] भे इमि तदनुरूप सऊल्लास॥ *॥ युधिष्ठिरउवाच॥ *॥ मो यज्ञ इच्छा सिद्धि कैसे
[illegible] राम॥ *॥ वैशम्पायनउवाच॥ *॥ यह बचन सुनिकै भूपके ते मन्त्र बिदजन सर्व।
[illegible] कह्यो नृप तुम यज्ञ योग्य अखर्व॥ कियो तिनके बचनको सत्कार भ्रातन्ह पर्म।
[illegible] काल आगम फिरि बिचारो धर्म्म॥ सामर्थ्य आगम देशकों जो खेद प्रथम
बिचारि [illegible] कस्तें नहीं पावै हारि॥ स्वमंत्रते नहि यज्ञको प्रारम्भ कीबो पर्म।

यह जानिकै श्रीकृष्णको सुखर्ण कीन्हों धर्म्म ॥ जगत्कर्त्ता जगन्मय जगदीश योग्य विचारि। सं०प० त्वरित पठयो त्वरितगामी दूतकों निरधारि ॥ इन्द्रसेन सो दूत पहुंचो द्वारिकामें आय । कहो नृप सन्देस सिगरो बन्दि हरिके पाय ॥ दर्शनोत्सुक धर्म्मनृपकों जानिकै अभिराम । चले आतुर दूतकों सँग लए आनदधाम ॥ इन्द्रप्रस्थ सु त्वरित आए जहां है नृपपर्म्म । कियो पूजन सहित भ्रातन्ह नृप युधिष्ठिर पर्म्म ॥ बन्दि कुन्तीकों गए जहँ रहे अर्जुन वीर । नकुल अरु सहदेव बन्दे चरण ससुद गभीर ॥ कियो चणक विराम हरि तब धर्म्मनृप तँह आय । स्वप्रयोजन कहन लागे कृष्णसों सुखपाय ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ हमै बांछित राजसूय सो कहत तुमसों नाथ । जानि कै सब भांतिकी है योग्यता तव साथ ॥ भूप सर्वेश्वर लहत यो राजसूय सु यज्ञ । तीन हमसों कहत करिवैं सुहृद सिगरे तज्ञ ॥ हमै निश्चय सोइ करिवैं गिरा तब जो पर्म्म । कोउ सौहृद त कहत नहि दोषको जो मर्म्म ॥ कोउ अपने स्वार्थकों प्रिय कहत हैं सब तौन । यहि भांतिको सब जननको लखि परत कहिवो जौन ॥ सर्वज्ञ हो तुम तास हमसों कहउ योग्य बिचारि ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ * ॥ राजसूय सु योग्य तुम हो गुणनतें निरधारि ॥ भूप तुमकों बिदित सब हम कहत कछुक विशेष । कियो चत्रीवंशको सब परशुराम अशेष ॥ क्षत्रवंश सु भयो नूतन जौन अब अभिराम । कियो यहसङ्कल्प चत्रिण नियम बन्ध ललाम ॥ ऐल अरु इक्ष्वाकु सम्भव क्षत्र वंश अनेक । भोग छितिको करत चहुँदिशि भरे सुबल बिवेक ॥ जरासन्ध महीपकों ते सहित लखी भूप । करत अब उपासना व्है तास वंश अनुरूप ॥ शिशुपाल नृप सेनेश ताको भयो है बलवान । दन्तवक्र सु हंस डिम्भक भजत ताहि सुजान ॥ यवनेश पश्चिमदिशाके सह भूपवृन्द अनेक । जरासन्ध नरेशकों ते भजत सहित बिवेक ॥ भगदत्त पांडु नरेशको जो सखा है बलवान । पूर्व दिशिके नृपन सह सो भजत ताहि सुजान ॥ भूप उत्तरदिशाके जे महाबल रणधीर । जरासन्ध नरेशकों तें भजत सुमति गँभीर ॥ भोजवंशज पांड्य पौंड्रक भूप जे छितिपाल । पाञ्चाल दक्षिण तजी छिति धरि भीति तास विशाल ॥ जरासन्ध नरेश सिगरे जीति कै छितिनाथ । स्ववश कीन्हें भजत हैं ते रहत ताके साथ ॥ यादवनकों जीति पीडित कियो कँस महान । जरासन्ध सु दई ताकों सुता द्वै सुखदान ॥ स्वजाति पीडित कियो तासों पाय कै बल भूरि । कँस करण अनीत लागो महामदसों पूरि ॥ कियो मेरो स्मरण रक्षणहेत तिन दुखपाय ॥ कियो हम बध तास सह बलभद्र तेहां आय ॥ जरासन्ध नरेश यह सुनि चलो तब करि कोप । जानि कै अति प्रबल हम यह कियो मंत्र अरोप ॥ * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * *

महा अस्त्रसों मारि हैं नित्य बर्षसो तीनि ।तऊन हमसों होयगो याको अति बलछीनि ॥

सुरसम प्रबल सहाय हे हँस डिम्भक बलवान। बध नहि जिनको शस्त्रसों करता युद्ध महान ॥

हनो हंसको राम यह कहो डिम्भकसों आय। काहूसो सुनि कै डिभक महा शोकसों छाय॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

यमुनामांह बूडि सो मरो। यह सुनि हंस शोकसौं भरो॥ सोउ महाबली रणधीर। बूडो यमुनामांह गँभीर॥ जरासन्ध तिनको सुनि मर्ण। बलक्षय अपनो करि सुस्मर्ण॥ शोच भरो हिय माह गभीर। गयो स्वपुरकों फिरि रणधीर॥ तब हम सब लहि मोद अमन्द। मथुरामाह बसे तजि दन्द॥ जरासन्धकी दुहिता तीन। कँस कुमतिकी पत्नी जौन॥ गई पितापहँ भरी उताप। हनु पतिको करि कहो विलाप॥ जरासन्ध लै सैन महान। चलो क्रोध करिकै बलवान॥ कियो रहो जो पूर्व विचार। सो मनमे करिकै निरधार॥ कुल कुटुम्ब सब वित्त समेत। भजे छोडि बर विभव निकेत॥ उन्नत पश्चिम दिशके मांहि। रैवत नामा पर्वत पाहि॥ कुशस्थली नगरीमे जाय रहे दुर्ग अति उग्र बनाय॥ सह परिवार महा बलवान। सावधान तहँ बसत सुजान॥ जरासन्ध सों दुनि भय पाय॥ हम छोडी मथुरा सुखदाय॥ तुम साम्राज योग्य हो भूप। क्षत्र धर्म्मसों भरे अनूप॥ जबलों जरासन्ध महिमाह। तबलों होय न मख नरनाह॥ लहि जिन क्षितिपन तासा हारि। गिरि कन्दरमे राखे डारि॥ कियो चहत है सोऊ यज्ञ। राजसूय सुनिए नृप तज्ञ॥ यातें लए भूप सब जीति। किए शङ्कर सेवन सह प्रीति॥ ताके डरतें हमहूँ भूप। गए छोडि मथुरा सुखरूप॥ यज्ञ कियो जो चहत नरेश। तास हनन मह करो प्रवेश॥ नृपन्ह छुटाय रचहु वर यज्ञ। औरन विधि यामे नृपतज्ञ। यह है मत मेरो सिद्धान्त। तुम्हैं रुचै सो कुरु नृपकान्त॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ कहे कृष्ण तुम जे ए बैन। संशय हरण परम सुखऐन॥ तातें हमा क्षेमको धाम। करिबो कृष्ण हमै अभिराम॥ यज्ञारम्भ करेतें ऋद्ध। ह्वबो तास दुरासद सिद्ध॥ हमहू शङ्कित भए महान। तास दुष्टता करि अनुमान॥ तब भुज बलको आश्रय बीर। करि हम रहत अशङ्कित धीर॥ जरासन्धसौं शङ्कापाय। तुमहूँ बसे द्वारिका जाय॥ तुम कै ताहि हनै बलबीर। भीमसेन कै अर्जुन धीर॥ और हनै को ताकौं भूप। जरासन्ध नृप प्रबल अनूप॥ हमको सकलभांति सुखदान। बचन कृष्ण तो परम प्रमाण॥ यह सुनि भीमसेन बरबीर। बोले बचन सुनीत गँभीर॥

॥ * ॥ भीमसेन उवाच॥ * ॥ बिन उद्योग नृपति बलवान। लहत न वृद्धि ऋद्धि सुखदान॥ उद्योगी दुर्बल क्षितिपाल। जीतत सो अरि प्रबल बिशाल॥ कृष्ण माह नय बल अति मान। अर्जुनमे रणजय सु महान॥ मगधेश्वरको साधन जौन। करि हैं सत्य सुनहु नृप तौन॥

॥ * ॥ श्रीकृष्णउवाच॥ * ॥ कार्यारम्भ करत अज्ञान। देखत नही शत्रु बलवान॥ मान्धाता जयतें साम्राज। पुनि भगीरथ प्रजा समाज॥ तपतें कार्तबीर्य बलवान। बलतें भरत भूप मतिमान॥ महत मरुत्त ऋद्धि समाज। लहे सुदमि इन पद साम्राज॥ लहिबेमे साम्राज्य अनूप। पञ्च जयादि हेतु बर भूप॥ ते तुमसे लखि परत सदाहि। क्यो साम्राज्य पायहो नाहि॥ है साम्राज्य योग्य बलवान।

जरासन्ध ह्व वर मतिमान ॥ पै न चहत हैँ ताहि महीप। कौज सुनो भारतकुलदीप ॥ तुम्है चहतहै सर्व नृपाल। जरासन्ध एक बिना बिशाल ॥ भजत भूप दै रत्न महान। तिनसौं मोद न लहत अज्ञान ॥ नृप मूर्द्धा अभिषेकित जौन। बलतैं करे वश्य सब तौन ॥ बलिकारक बलिपशुसौं प्रीति। होति नही यह नियमित नीति ॥ तासों और नृपनसो हैँ न। इमिहो प्रीति सुनो बलअैन ॥ शस्त्र मरणतैं क्षत्री पूत। होत सुनहु यह धर्म अकूत ॥ जरासन्ध वध यातें भूप। हमको करिबो योग्य अनूप ॥ नृपति कुलीन छियासी जोति। कारागृहमे करे अनीति ॥ बाको रहे चतुर्दश जौन। स्ववश कियो चाहत है तौन ॥ जरासन्धकँह हनै जो वीर। लहै जगतमहँ सुयश गँभीर ॥ सो सम्राट भूप अभिराम। होय जगतमँह सुषमाधाम ॥ *॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ *॥ स्वारथ चाहि तुम्है वरवीर। हम नहि पठै सकत रणधीर ॥ भीमार्जुन मम नेत्र समान। तुम मन सम केशव सुखदान ॥ नर मन चक्षुहीन है जौन। व्यर्थ तास है जीवन तौन ॥ जरासन्ध बलभीम अपार। यमौ न तास होय जीतार ॥ यहि स्वारथ मे सुनिए मोहि। प्राप्तअनर्थ परत ह्व जोहि ॥ तातें कियो नियत हम एक। सुनहु कृष्ण सो सहित विबेक ॥ यज्ञकार्यको करिबो त्याग। रुचत हमै है वर वडभाग ॥ राजसूयकी इच्छा जौन। देति परंतु हमै दुखतौन ॥ *॥ वैशम्पायन उवाच ॥ *॥ श्रेष्ठ धनुष लै अक्षय तुणीर। चढो कपिध्वज रथपर बीर ॥ अर्जुन आय सभाके ऐन। कहे युधिष्ठिरसों इमि बैन ॥ शस्त्र धनुष चाहत हैं जौन। प्राप्त भए हमकों सब तौन ॥ **॥ *॥ दोहा ॥ *॥***

भयो सुकुलमे जन्म सो सुमति सराहत सर्व। कियो पराक्रम चाहिए तैसो भूप अखर्व ॥
होत न परबश बीर्य सौं दीर्घ रुचत है मोहि। बंश बीर्यसम नहि भयो सो गत प्राय सो जोहि ॥
कुलनि बीर्यमे जो भयो बीर्यवान नर धीर। सो असंख्य सब जगतमे सुनिए बुद्धि गँभीर ॥
मनो वृत्ति अरिजीतबे मे है जाको भूप। ताकौं क्षत्री कहतहैं रहित अन्य गुण रूप ॥
निर्बीर्य सबगुणयुक्त है सो क्षत्री निष्काम। और सर्वगुण गौणहै बीर्यहि मुख्य ललाम ॥
जो बलवान प्रमाद बश सो नहि कार्य समर्थ। पैठि प्रमादद्वार रिपु करत सकल बल व्यर्थ ॥
मोह दीनता भूपको करत सकल बलनाश। सावधान तातैं तजैं दोऊ होत ऊलाश ॥
जरासन्धको मारिबो भूप सोचिमे सर्व। यज्ञ कार्यको साधिबो याते कहा अखर्व ॥
कर्मारम्भ किए बिना जन निर्गुण ठहरात। प्रगट करैं गुण नियतकैं जन गुलमान लहात ॥
लोबो जिमि सन्यासको सुलभ मुनिनकौं सर्व। तिमि हि सुलभ साम्राज्य है हमकौं भूप अखर्व ॥

॥ * ॥ वासुदेवउवाच ॥ * ॥

भरतबंश कुन्तीतनय अर्जुन बीर महान। कहे भूप ए वचन वर आपु योग्य मतिमान ॥
अमर सुने नहि युद्धमे जे न करत है गौन। रात दिवसमे जात मरि सुयशी अयशी जन ॥

३०५०

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

नीति विधिसों शत्रु पै चढि जाइबो सुखदान। सुनव सो अनुपायसों लरि लहत श्रम अतिमान॥ दोऊ जय नहि लहत लरि बज्र लेय सङ्ग सहाय। नीति यह अति प्रबल अरिके निकट ह्वै जे जाय॥ कूलद्रुमके निकट आएँ नदी देति गिराय। तथा अरि ढिग गए मारण सधत सकल उपाय॥ रंध्र अपनो गुप्त करि पररंध्र देखै भूप। लरै नहि बलवान रिपुसों देखि अपनो रूप॥ नीति यह मतिमानको सो रुचति हमकों धर्म। बेष अतधरि गुप्त व्है अरि निकट ह्वबो पर्म॥ गएँ अरि तनुके निकट फिरि सधत हैं सबकाम। एक सो सत्र भूमि भोगत महाबलकों धाम॥ जरा सन्ध हि भए प्रापत मरण अपनो होय। स्वर्ग मिलिहै जन प्रसंशा करैंगे सबकोय॥ युधिष्ठिरउवाच॥ जरासन्ध सो भयो कैसें कृष्ण प्रबल महान। अग्निसे लहि तुम्है सो नहि जरो सलभ समान॥ ॥ * ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ * ॥ जरासन्ध चरित्र बूझत भूप सुनिए तौन। बृहद्रथ हो मगधको क्षितिपाल अतिबलभौन॥ काशिपतिकी सुता द्वै अङ्गजा अभिराम। व्याहि दीन्ही बृहद्रथकों भरी गुण छबिधाम॥ कियो पन सम राखिबेको भूप तिनसों पर्म। रमो भूप समान तिनसों बचन पालि सधर्म॥ गयो यौबन भयो सुत नहि बंशकर अभिराम। पुण्य यज्ञ सु किए नाना भाँतिके सुतकाम॥ काक्षीव गौतमको तनै मुनि चण्ड कौशीक जौन। गयो इक्षा आपनीसों तहाँ पुर ढिग तौन॥ सुनत आए भूप तँहा लए पत्निन्हँ साथ। आम्रतरुतर रहे बैठे जहाँ मुनिबर नाथ॥ सहित पत्निन्ह पूजि मुनिकों तुष्ट कीन्हों भूप। कृपा करिकै कहो मुनिबर बचन सत्य स्वरूप॥ तुष्ट है हम भूप मागऊ होय बांछित जौन। सहित पत्निन्ह प्रणत व्है नृप कहन लागो तौन॥ राजोवाच॥ तपोवनकों जाइ हैं हम राज्य तजि तपधाम। भाग्यहीन अपुत्र हमकों कहा बरको काम॥ क्षुभित व्है मुनि ध्यान धारो महामुनि तपधाम। गिरो मुनि उत्सङ्गमे तब आम्रफल अभिराम॥ तौन फल लै मंत्र पढि करि कै कृपा तपभौन। भूपकों सो दियो अतिबल पुत्रकारक तौन॥ कहो मुनिबर जाऊ अपने भौनकों तुम भूप। भए तुम कृत कृत्य यह फल पाय मङ्गलरूप॥ भूप मुनिके बचन सुनि पद बन्दि आए धाम। दुऊन पत्निनकों दियो सो आम्रफल अभिराम॥ तिन कियो भोजन द्विधा करिकै दुऊन लहि अतिचैन। दुऊन धारो गर्भ मुनिको महा अबिचल बैन॥ देखि तिन्हहि सगर्भ भूपति लहो मोद गँभीर। भयो तिनकों प्रसव सुतको अर्द्ध अर्द्धशरीर॥ देखि ते उदबिग्न व्है अति लगी काँपन भूप। मंत्र करि कै त्याग कीन्हों दुऊन जानि कुरूप॥ नृप सद्म बाहेर चतुष्पथमे गई धात्री डारि। सप्राण दोऊ खण्ड मनमे मृतकसे निरधारि॥ मांस अशना जरा आई राक्षसी तहँ जौन। लै जाइबेकों दोऊ बांधे खण्ड सम करि तौन॥ खण्ड दोऊ मिलत हो जुरिगए सुनिए भूप। एक रूप कुमार भो अति चारु बीर स्वरूप॥ चकित चख करि राक्षसी नहि शकी ताहि उठाय। बज्रसार समान बालक देखि कै बरकाय॥ रक्ततल करमुष्टि मुखमे देइ सो सुखदान। लगे

रोदन कारण गरजो मनऊ मेघ महान ॥ शब्द सुनिसो आंत अन्तःपुर सुजन बर भूप। निकसि सं०पु०
कै तँह गए कीन्हें चकित चिन्तत रूप ॥ राजपत्नी गई ते तँह श्रवत उरसिज क्षीर ॥ पुत्र प्राप्ति
निराश जिनको व्यथित मनसँ गँभीर ॥ सहित पत्निन्ह देखि भूपहि चाहि सो सुकुमार। भई
चिन्तित राक्षसी हिय दया धारि उदार॥करति हैाँ यहि भूपके हैाँ देशमे स्थिति बास। मोहि याके
पुत्रको नहि उचित कीबो नाश॥ मानुषी तनु धारि बालक गोदमे ले तैान। प्रगट बोली भूपसोँ
इमि बचन आनदभैान॥ *॥ राक्षसुवाच॥*॥ देति हैाँ तव पुत्र हम यह लेऊ नृप अभिराम।
सो भारजनमे भयो है द्विज बचन तेँ बलधाम ॥ डारि धात्री गई है हम कियो रक्षण भूप।
श्रीकृष्णउवाच॥*॥ स्तन्य सिञ्चित लियो सुत नृप भारजन अनुरूप॥ भूप सुनि वृत्तान्त सो सब
भयो हर्षित भूरि।लगे पूछन राक्षसीसोँ प्रीतिसोँ अति पूरि॥कैान हो तुम कहऊ सुन्दरि देवतासो
पर्ण। कृपा करि कै दियो हमको पुत्र पूरित धर्म॥*॥ राक्षसुवाच॥*॥ जरा नामा राक्षसी
हम कामरूपीनि भूप। बसति पूजित धाममे तव देवता अनुरूप॥गेह गेहन्ह मनुजके हम रहति
नित्य नरेश। गृहदेवता धरि नाम विधि रचि कियो नित्य निदेश॥ दानवनके नाशकोँ विधि हमै
बिरचो भूप। भीत्तिपर लिखि मूर्ति मो सुत सहित तरुण स्वरूप ॥ सहित विधि जो मोहि पूजत
होति ताकी वृद्धि। जो न पूजत लहत सो क्षय प्रजासहित समृद्धि॥भई पूजित धाममे तव बिबिधि
निधि अभिराम।कियो तव उपकार चाहत रही नित्य ललाम॥तब पुत्रके द्वै भाग विधिवश लखो
हम इत आय। जोरि दोन्हो भयो तैान कुमार अति बरकाय॥ भई कारण मात्र हमभो
आप्यते सब भूप। मेरु भक्षण शक्य हमकोँ कितक बालक रूप॥ दियो व्है हम तुष्ट तो गृह माँह
पूजन पाय॥*॥ श्रीकृष्णउवाच॥*॥ भई अन्तर्ध्यान सो एहि भाँति कहि सुखदाय॥ लेय
तैान कुमार भूपति गए अपने धाम।किए जातक कर्म सिगरे मोदमय अभिराम॥जरासन्ध सुनाम
यातेँ पुत्रको मगधेश। कियो करिके जराउत्सव भमधमाह निदेश॥ भयो वर्द्धित महा तेजस मगध
पतिसुत तैान। अप्रमाण महान बलको भूप है अब जैान॥ * * * * * *
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना।श्रीवन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतभाषामहाभारतदर्पणे सभापर्वणि मंत्रविचार
जरासन्धोत्पत्ति वर्णनोनामद्वितीयोध्यायः॥ * *॥श्रीकृष्णउवाच॥ दोहा॥ * * *
तहां चंड कैाशिक सु सुनि गर्ए कछु फिरि काल। आए सुनि नृप बृहद्रथ पायो मोद बिशाल॥
सचिव सपत्नी सहित नृप लए पुत्र अभिराम।आए बन्दि सुनिके चरण पूजो सविधि ललाम॥
राज्य सहित नृपपुत्र कैाँ कियो निबेदन ताहि।पूजा लहि सुनि नृपतिसोँ कहन लगे इमि चाहि॥
हम जानो बृत्तान्त सब ज्ञान चक्षुसोँ भूप। पुत्र तिहारो होय्गो जैसो प्रबल अनूप॥

स॰प॰ सत्व बल श्रीरूपको क्रमतें पाय महान । स्ववश भूमि सब भूमिपति जीति करिहि बलवान ॥
सहि हुँ परिपन्थी सकल याके भूप विनाश। सफल वर्णको होय गो यह रक्षक सुखके रास ॥
त्रिपुरान्तकको होय गो याकौं दर्शन भूप । भयो बृहद्रथ पुत्र तो अति बलवान अनूप ॥
यह कहि मुनि नृपकौं कियो विदा अपने धाम । गए बृहद्रथ नगरकौं सहपरिवार ललाम ॥
ज्ञाति कुटुम्ब बोलाय सब भूपति सहित विवेक।जरासन्ध को वेदविधि कियो राज्य अभिषेक॥
भए सुवृद्ध निवृत्ति लहि भूप बृहद्रथ तौन । पत्निन सह तपहेतु नृप कियो तपोबन गौन॥
कछु दिनमे पत्निन सहित गए स्वर्ग कौ भूप । जरासन्ध बल वीर्य्यतैं जीते नृपति अनूप ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जरासन्ध अति प्रवल महान। जीते सकल भूप बलवान ॥ तासों आय लरे नृप जौन। मारे गए समरमे तौन ॥ जीति लई श्री सबकी सर्व। नदी नीर ज्यौं सिन्धु अखर्व ॥ दियो चण्ड कौशिक वर जौन। जरासन्ध कीन्हों सब तौन ॥ कंस हि हनो कृष्ण बरबीर। तातें बाढो बैर गँभीर ॥ जरासन्ध शतबार फिराय। फेकी गदा महारिषि छाय ॥ शौ योजन मथुरामे तौन। गिरी जाइ अति गुर्वी जौन ॥ कहो कृष्णसों पुरजन जाय। गदापात लखि बिस्मय छाय ॥ गदाबसान देश सो भूप। अबलौं कहत सुलोक अनूप ॥ हंस डिम्भक मंत्री मतिमान। जरासन्धके भए सुजान ॥जे न शस्त्रतें मारे जात। युद्ध निपुण बलभारे गात ॥ तिनसों लरे न नीति सुढार। गुणि कै अन्धक वृष्णि कुमार ॥ * ॥ बासुदेवउवाच ॥ * ॥ हँस डिम्भक जल बूडे तौन। मारो गयो कंस खल जौन ॥ जरासन्धके बधको काल। प्राप्त भयो अब भूप विशाल ॥ जरासन्धको जीतनहार। सुरासुरो नहि भूप उदार ॥ मल्ल युद्धसों जीतो जाय ॥ हम यह चाहत रचो उपाय ॥ हममे नीति भीम बलवान। रक्षण करता पार्थ सुजान ॥ करो चहत मागधको नाश। सेनारहित पाय बलराश ॥ करि हि एकसों मागँ युद्ध। हनि हैं भीमसेन तब क्रुद्ध ॥ जौं तुमकौं मेरो बिश्वास। बन्धु दोउ दीजै ज्यौं न्यास ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धर्म्म नृपति सुनि मतिसम्पन्न। भीमार्जुन मुख देखि प्रसन्न ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ हे अच्युत नहि तुम्हैं समान। यह कहिवो जगजन सुखदान ॥ तुम पांडव कुलके हो नाथ। हम आश्रित तव सेवक साथ ॥ कहहु नाथ हम कीजै तौन। तुम बिनु है श्रीदायक कौन ॥ जरासन्ध को मरिबो जौन। नृपगण मोचन यशके भौन ॥ राजसूय को ह्वैबो सिद्धि। तो आज्ञामे चलौं समृद्धि ॥ छिप्र होय जैसे यह काम। तैसे करहु कृपाके धाम ॥ तुम्ह हि तीनिसों भए बियोग। जीवन लगत हम हि सम रोग ॥ जहाँ कृष्ण तहँ अर्जुन धीर। जह अर्जुन तहँ यदुपति बीर ॥ बलिनमाँह है अति बलवान। भीमसेनके कौन समान ॥ भीमार्जुनकौं लेकै साथ। कहा न तुम करिहो यदुनाथ ॥ ज्यौं नेता सह सैन समर्थ। नतरु सुमति नेता बिनु अर्थ ॥ नय-विधान बेसा

बलधाम । तुमकौं करि आगे अभिराम ॥ लहिहैं सकल कार्य्यकी सिद्धि । हम श्रीमाधव तुमतें स०प० वृद्धि ॥सकल कार्यके साधक अर्थ । कृष्ण तुम्है बिनु कौन समर्थ ॥ जबलौं कार्य होय नहि नाथ। तबलौं पार्थ रहैं तो साथ ॥ भीमसु अर्जुन कीन्हे सङ्ग । रहैं बोर दोउ भरे उमङ्ग ॥ नय जय बल कँह पाथ समान । बिक्रम करत कार्य्य सुखदान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ इमि सुनि श्रीमार्जुन बलवीर । चले मगधपतिवधकौं धीर ॥ धरि मुनिवेश परम अभिराम । लसे वीरवर बलके धाम ॥ भए अमर्ष भरे बरवीर । रवि सोमाग्नि समान शरीर ॥ जरासन्धकौं मृतक समान। आनो इन्है देखि बलवान ॥ नाना देखत देश उदार । गए गण्डकी सरजू पार ॥ देखि च योध्या मैथिल देश । गए सुरसरीपार नरेश ॥ चले पूर्वदिशिकौं बलधाम । भए मगधपुरपास ललाम ॥ गोरथगिरिपर चढि के भूप । लखो मगधपुर रम्य अनूप ॥ * ॥ वासुदेवउवाच ॥ * ॥ लखङ्ग मगधपुर पार्थ सुरम्य । चङँ दिशि गिरि आवरण अगम्य ॥ पशु पच्छी बन बापी जौन । अति रम नीय लसत हैं तौन ॥ शूद्रामे गैातम उतपन्न । किय काक्षीवादिक सम्पन्न ॥ मुनिकी कृपा जाय अभिराम ॥ ए मनु वँशी नृपी आम ॥ स्वस्तिक कौशिक आलय नाग । अरु मणिमान भरे चित राग ॥ रक्षत हैं ते पुरहि सदाहि । अप्रमादत धरि हिय माहि ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ ऐसे कहि कृष्णार्जुन भीम । चले मगधपुरकौं बलसीम ॥ हृष्ट पुष्ट जहँ चारो वर्ण । धरे सु उत्सव बसनाभर्ण ॥ गए नहीं ते पुरके द्वार । कियो प्रवेश नांघि प्राकार ॥ चैत्यक गूरे दिए गिराय । ढहे शिखर पर जो छबिछाय ॥ जहँ मासाद वृषासुर दुष्ट । भूप वृहद्रथ मारो रुष्ट ॥ तासु चर्मके पटह बनाय । राखे तीनि महत धरवाय ॥ डारे फोरि तिन्है तिन वीर । जरासन्ध शिरसमरण धीर ॥ शृङ्ग मगधपति पूजित जौन । दियो गिराय भुजबल तौन ॥ तब देखन कहँ मगध नरेश । करो बीरत्रय पुर परवेश ॥ दुष्ट सकुन लखि द्विजन अनेक । कहो भूपसो शान्ति बिबेक ॥ जरासन्धकौं द्विरद चढाय । डारो ऊपर अग्नि फिराय ॥ शान्तिहेत मगधेश्वर भूप ॥ नियम ब्रत कीन्हौं शुचिरूप ॥ निरायुध ब्रह्मचर्य्य धरि वेश । युद्धाकाङ्क्षी कियो प्रवेश ॥ ****

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देखि समृद्ध बजारते महावीर बरजोर । लए माल्य भूषण बसन रङ्गन भरे सजोर ॥
जरासन्धके सदनमे कियो प्रवेश अमान । लखत तथा गो गोष्टकों तरुण सिंह बलवान ॥
भीमार्जुन गोबिन्द बर धारें बसनाभर्ण । जरासन्धको सभाकौं चले चाहि अरिदर्ण ॥
शालतम्भसे बाङ्कबर चन्दन चर्चित पर्म । शोहत जिनके जगत जयकारक धारक धर्म ॥
तिन्ह चाहि पुरजन सकल मत्त मतङ्ग समान । रहे चाहि चख चकित करि बिस्मय भरे महान ॥
नांघि तीनि कक्षा गए चले तहां बरवीर । जरासन्ध बैठो रहो जहां महा रणधीर ॥
पूजन योग्य निहारि उठि आय निकट मगधेश । कुशल प्रश्न आगे मनको कीन्हो परम निदेश ॥

सं०८०

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भीम अर्जुन रहे चुप ह्वै सुनत ताके बैन । महाबक्ता कृष्ण बोले नीति मतिके ऐन ॥ मौनव्रत सु निशीथ बिनए नहीं बोलत भूप ।गयो नृप म्हहकौं सवालयमांह राखि अनूप ॥ जरासन्ध निशी थमें तँह फेरि आयो बीर । कहन तासों लगे ते इमि बचन बोलि गँभीर ॥ दूरितैं हम इहां आए अतिथि जानऊँ भूप । जौन मांगै देऊ हमकौं तौंन दान अनूप ॥ सहनशील न सहैं का खल करै कौन न कर्म । का अदेय बदान्यकौं नहि शान्तकौं परधर्म ॥ यहि शरीर अनित्यतैं नहीं करत ध्रुव यश जौन।ह्वैसमर्थ सो शोचकरिबे योग्य निन्दत तौंन॥हरिचन्द्र व्याध कपोत सिबि बलि रन्ति देवसुजान।भए नित्य अनित्य तैं यश परम राखि महान॥लखि परस्पर तिन्हैं देखत जरासन्ध नरेश। कहन तिनसों लगो ऐसैं बचन सहित अँदेश॥ बैठि जैए बिप्रको यह धरे कौ तव बेश । भीम अर्जुन कृष्ण तेंहा गए बैठि नरेश ॥ मगधेश बोलो बचन फिरि इमि बेश दूषण देत । नहीं स्नातक फिरत बाहेर गन्ध माल्य समेत ॥ कौंनहो ज्याघात अङ्कित भुजनके बर बीर ।क्षात्र ओजस धरैं ब्राह्मण कहत व्याज गभीर॥धरैं बसन सराग चौसर मलय लेपित काय । सत्य कहिए कौन हो तुम कपट बेश बनाय॥ चैत्यगिरिको शृङ्ग तोरो नांघि कै प्राकार।इहाँ आए द्वार तजि तब प्रगट छद्मउदार॥ होत ब्राह्मण बचन बल नहि कर्ममें बलवान। कर्म है यह रावरेको बेष कनक समान॥लियो हमसों क्यौंन पूजन आय रहित बिधान । सुनत यह श्रीकृष्ण बोले बचन अति नतिमान ॥ श्रीकृष्ण उवाच॥ * ॥ विप्र क्षत्री वैश्य स्नातक लेत व्रत अभिराम। बिशेष नेम सुलेत कोउ अबिशेष नेम ललाम॥ बिशेषनेम जो लेत क्षत्री लहत श्री सुखदान।पुष्पधारक लहत सुश्री सुनऊ भूप सुजान ॥ बाहुबल वर होत क्षत्री बचन बल न हिभूप ।कहत बचन प्रगल्भ नहि बिधि रचित भुजबल रूप॥ भूपदेखो चहत हो तो देखिहो अब तौंन।अद्वारतैं अरिगेहमें शुभद्वारतैं हितभौन॥करत धीर प्रबेश याते बिहित बिधि अनुमानि। करत ग्रहण न शत्रु पूजन कार्य भावी जानि॥ *॥ जरासन्धउवाच बैर तुमसों कियो हम कब कियो सो अपराध। कारण हमको होत नहि तुम करत व्यर्थ बिराध ॥ अर्थ धर्ममें हनो तब तुम कहत अरि केहि हेत।बाधबिनु अपराध रोपत सो बृजिन गति लेत॥क्षात्र धर्म सुधर्ममें सब श्रेष्ठ कहत सुजान।निष्पाप हम तेहि धर्ममें तुम कहत सहस अयायन॥श्रीकृष्ण उवाच॥ * ॥ कुलकार्यबाहक पुरुष कोऊ होत ए बलवान। हम भए तुमपैं आय उहित तासु बचन प्रमाण॥ दिए कारागेहमें सब पकरि क्षत्री भूप। कियो चाहत रुद्रबलि करि तिन्हैं बश पशु रूप॥ साधु क्षत्रिनकों हनत नहि भूप यह ब्रत पर्म। कौन यातैं अधिक आगैं कियो चहत अधर्म॥ फिरत हैं हम धर्म रक्षण करत हैं बलवान।इमि मनुजको आलम्भ अबलौं लखो सुनत न कान॥ तुम होय क्षत्रिय करि सु क्षत्रिहि पशूसदृश अमान।कियो चाहत रुद्रकौं बलि कहौ कौन बिधान॥ करत हैं जे कर्मकों जेहि जेहि अवस्थामाह। तेहि तेहि अवस्थामें करत ते भोगकों नरनाह॥ज्ञात

सुखकर जानि तुमकौं भरो पाप गँभीर। तुम्हैँ हनिबे हेत आए अर्त्तरत्तक बीर ॥ ज्ञाति पालन हेत सं॰प॰
छत्री बली नर मतिधाम। जाय रणमे लहैगो नहि कौन स्वर्ग ललाम॥ रण यज्ञ दी. तत होय छत्री स्वर्ग
कौं जो जात। मौन जीतत लोककौं यह धर्म है विख्यात॥ स्वर्गदायक यज्ञ जग यश उग्रतप अभिराम।
मरत जो निष्कपट रणमे लहत स्वर्ग ललाम ॥ सैन्यकी बाहुल्यतैं बलदर्पते नरनाह । पर निरादर
योग्य नहि बल बीर्य नर नरमांह॥ मिलैगो समके अधिक बलको तुम्हैँ जब बीर । जानि परिहै
तुम्है तब बल आपनो गँभीर ।। जाहु मति यमलोककौं सह सुत अमात्य ससैन। युद्ध तुमसो चहत
हैँ हम नियत ब्राह्मण है न॥ कृष्ण हम वसुदेवके सुत पंडुसुत ए बीर। भीम अर्जुन ख्यात जगमे महाबल
रणधीर। कहत हैँ हम सुनहु थिर व्है करहु युद्ध नरेश। छोडि देहु नरेश कै सब जाहु कै यमदेश॥
॥*॥ जरासन्धउवाच ॥*॥ बिना जीतैं युद्धमे हम गहे नहि छितिपाल । कौन हमसौं युद्धमे
लरिकै भयो बश काल॥ दुखद जीविन्ह जीतिबो यह छात्रधर्म ललाम। जीति बश करि कीजिए
जो रुचै सो मनकाम॥ जीति हम बश करे जिनकौं देवतार्थ बिचारि। छात्रधर्म बिसारि तिनकौं तजैं
को निरधारि॥ सहसैन्यसों सहसन्य लरि हैँ एकसों हम एक। द्वै तीनि हूसौं लरैँगे हम बाँधि बल
अतिरेक ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यहि भाँति कहि कै कृष्णसौं चितचाहि युद्ध अनूप । पुत्रको
अभिषेक करिबेकौं दयो कहि भूप॥ सु स्मर्ण सेनापतिनको मगधेश कीन्हौं तौन। हँस डिम्भक रहे
हे जे महाबलके भौन ॥ युद्धमे हे गए मारे जन्मकौं फिरि पाय । ख्यात कौशिक चित्र
सेन सु नामसों भे राय ॥ आकाशबाणी भई ही जो प्रथम रणसे भूप । भीमसौं यह
बध्य है तब तज्यो जानि अनूप ॥ तौन करि सुस्मर्ण मनमे कृष्ण अति बलधाम । तहाँ आए भीम
सह मगधेश हनिबे काम ॥ युद्ध निश्चय किए ताकौं जानि कै यदुबीर। कहन लागे मगधपतिसौं
भाँति इमि रणधीर ॥ * ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ * ॥ कियो चाहत युद्ध तुम हम तीनमे केहिं साथ।
होइ तुमसों लरणकौं सो सज्ज कहु मनु नाथ॥ जरासन्ध नरेश सुनि यह कृष्णवचन बिशेष। भीम
सौं हम लरहिंगे यह दियो कहि मगधेश॥ भीरु हौ तुम कृष्ण मथुरा छोडि कै स्वस्थान। भीतितैं
मम भाजि लीन्हो सिन्धुशरण महान॥ युद्धके तुम योग्य हौ नहि जिष्णु है यह बाल। युद्धमे मम
योग्य है यह भीमसेन बिशाल॥ गन्धमाला धारि औषध व्यथाहर लै पर्म। आय प्रोहित कियो तब
स्वस्त्ययन मङ्गल कर्म॥ सज्ज व्हैकै जरासन्ध सु छत्रधर्म बिचारि। किरीट तजि कै केश बाँधो सुदृढ
करि निरधारि ॥ उठो कहि इमि भीमसौं मगधेश बलको धाम । बीर भीम सु लरे तोसों हारेहु
यश नाम ॥ भीमसों यहि भाँति कहिकै उठो मगधनरेश । भीम लहि स्वस्त्ययन हरिसों कृपा
सहित निदेश॥ जरासन्ध समीप आए चाहि युद्ध गँभीर। भए नरशार्दुलसौं हैँ बाहुआयुध बीर॥
भए दोउ अन्योन्य हर्षित चाहि जय बलवान। कर ग्रहण पूर्वक किये बन्दित दुहून दुहून महान॥

स०प० दोऊ व्है रणमत्त उन्नत बाऊ ताल बजाय। दुहूँन धारे दुहूँनके कर कन्ध ऊपर आय॥ मल्लयुद्ध विधान सिगरे करण लागे वीर। लरण लागे विहँसि दोउ महाबल रणधीर॥ दाव नाना भावके दोउ करत अति बलवान। हनत हैं अन्योन्य करि कै क्रोध उद्ध महान॥ लरे दोउ उत्साहसों दोउ भरे बल बर वीर। लगे देखन पौरजन चहुँ ओर आय अधीर॥ प्रथम कार्तिक प्रतिपदाकों हौंन लागो युद्ध। चतुर्दशि निशिमे भरो मगधेश श्रमसों उद्ध॥ श्रान्त लखि मगधेशकों इमि कहे सु यदुपति बैंन। भीमकों तँह कियो बोधित अमित भो बलअैन॥ कौन्तेय श्रान्त न करत पीडित शत्रुकों बरवीर। फारि कै तृण एक दीन्हों डारि सो हँ धीर॥ भयो पीडित तजै गो यह कष्टतें पर प्राण। नहो तातें याहि पीडित करण योग्य महान॥ कृष्णके सुनि बैन जाने जरासन्ध हि श्रान्त॥ मारिबेकों ताहि कीन्हों भीम सुमति नितान्त॥ ताहि जीतनहेत कीन्हो क्रोधकों अति उद्ध। करण घोर प्रहार लागे भीमसेन विरुद्ध॥ कृष्णसों यहि भाँति बोले भीम यह बर बैंन। जरासन्ध हि मारिबे की बुद्धि धरि मतिअैन॥ नहो बलतें रुकत है यह दुष्ट है बर बीर। बँधी है कटि कस याको बसनसों गम्भीर॥ भीमके सुनि वचन ऐसे कृष्ण बोले बैंन। त्वरा याके मारिबेमे कीजिए बल अैन॥ देव जो बल रावरो है अनिलको अभिराम। तौंन कीजे प्रगट यापै भीम अतिबलधाम॥ कृष्णको यह वचनसुनि कै भीम अति बलवान। उठाय कै गहि लगे फेरण ताहि चक्र समान॥ सौ बारता हि फिराय छिति पर डारि कै बर बीर। जानुसों कटि दाबि कै गहि तोरि डारो धीर॥ पाणिसों गहि पाय दोऊ फारि कीन्हों दोय। फेरि गरजे भीम घनसम महादुर्भद होय॥ नाद सुनि सो मगधवासी भए कम्पित सर्व। तियन्ह डारे गर्भ सुनि सो भरी भीती अखर्व॥ डारि पुरके द्वार ताकों गए निशिमे बीर। कियो सज्जित जरासन्ध महीपको रथधीर। कृष्ण चढि सह पांडवन सब जाय मोचे भूप। रत्न अर्पे भूपतिन्ह तिन कृष्णकों अनुरूप॥ तेहि दिव्य रथ चढि भीम अर्जुन सहित श्रीयदुनाथ। गए गिरिपुर बाहि रैं सब लएँ भूपति साथ॥ तारकासुर युद्धमे चढि जौन रथपर भूप। जिष्णु विष्णु सँहारि दनुजन लही जय अनुरूप॥ शक्र दीन्हों उपरिचर वसुकों सुरथ अभिराम। लहो बसुसों वृहद्रथसों जरासन्ध ललाम॥ तौन रथ लहि भए हर्षित कृष्ण अरु कुरुवीर। दिव्य हयसों युक्त जो बर वायुगमन गँभीर॥ निरालम्ब सु रहति जापै ध्वजा अति अभिराम। कियो चिन्तित गरुडकों तब कृष्ण आनद धाम॥ बेगसों तव ध्वजा पर खगनाथ बैठे आय। लसो सानुसुमेरुको ज्यों उदित दिनकर पाय॥ चढे रथपर चले भीमार्जुन सहित बलवीर। भए समथलमांह ठाढे निकसि गिरितें धीर॥ तहां आए मगधके सब निकसि चारो वर्ण। कियो पूजन कृष्णको विधिसहित बसनाभर्ण॥ भए बन्धन मुक्त जे छितिपाल आंनद चाहि॥ कियो पूजन कृष्णको सविधान भूरि सराहि॥ भीम अर्जुन युक्त तुमकों चिर को बलवीर। धर्मको प्रतिपाल यह जो कियो कर्म गभीर॥ जरासन्ध सुग्राहसों तुम हमे मोचो जौन। और जगमे करैगो यह दूसरो क्रत कौन॥ परे हे गिरि दुर्गमे तुम कियो

मोचन ईश। भयो तुमकों प्राप्त यश अति अतुल हे जगदीश ॥ करऊ आज्ञा जौंन सो हम करहिँ दुस्कर बीर। आपने करि जानिए सब नृपनको रणधीर ॥ * ॥ अथकरीछन्द ॥ * ॥

हृषीकेश तिनसों इमि बैंन। कहे कृपा करि राजिव नैंन ॥ राजसूय जो यज्ञ महान। कियो चहत नृप धर्म्म सुजान ॥ ताको तुम सब करऊ सहाय। कहे तथास्तु नृपन सुख पाय ॥ दिए रत्न तिन हरिकों भूरि। लिए कृपा करि आनंद पूरि ॥ जरासन्ध सुत जो सहदेव। सह अमात्य आयो सो एव ॥ नम्र होय अति कियो प्रणाम। दिए रत्न अतिशय अभिराम॥ दियो अभय ताकों यदु बीर। कियो राज्य अभिषेक गँभीर ॥ कियो एकत्व पार्थिवन्ह सर्ब। कृष्णदेवसों समुद अखर्ब ॥ जरासन्ध सुत अपने धाम। गयो पाय अभिषेक ललाम ॥ भीमार्जुन सह कृष्ण कृपाल। लीन्हे रत्न असँख्य विशाल॥ आए इन्द्रप्रस्थकों बीर। गए युधिष्ठिर नृपपँह धीर ॥ भरे मोदसों मिले सचैन। कहे कृष्ण नृपसों इमि बैंन॥ तो बश भाग्य भीम बलवान। जरासन्धकों हनो महान॥ कारागृहते भूप छुटाय। दिए रहो तो यश चितिछाय ॥ कुसल सहित भीमार्जुन बीर। अक्षत मिले तुमसों रणधीर ॥ पूजे धर्म्म नृपति सुखदान। बासुदेवकों सहित विधान ॥ भीमार्जुनसों मिले सचैन। लाय हृदयसों आनद ऐन ॥ जरासन्धके हने अनूप। भए अजातशत्रु कुरुभूप। बिदा किए ते भूपति सर्ब। ल्याए जिन्हैं छुटाय अखर्ब ॥ धर्म्म नृपतिसों लहि सत्कार। गए भूप भरि हर्ष उदार ॥ ऐसैं बासुदेव मतिमान। मारो जरासन्ध बलवान ॥ जरासन्धको बध कर वाय। धर्म्मराजकी आज्ञा पाय॥ बन्दे चरण पार्थके जाय। आशीर्वाद पाय सुखदाय ॥ बिदा द्रौप दीसों फिरि होय। सुभद्राहि कहि मोदसो मोय॥ भीमार्जुन सह माद्रीनन्द। सबसों बिदा होय ब्रज चन्द ॥ बन्दि धौम्यकों तपस गँभीर। चले द्वारिकाकों यदुबीर ॥ चढे तीन रथपैं अति गौन॥ जरासन्ध हति ल्याए जौंन ॥ युधिष्ठिरादिक पाण्डव आय। कियो प्रदक्षिण आनद पाय ॥ गए कृष्ण तब धर्म्मनरेश। कियो नृपनकँह अभय निदेश ॥ प्रजापालनादिक जे कर्म्म। करे धर्म्म नृप पालक धर्म्म ॥ *************

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतभाषा महाभारतदर्पणे सभापर्वणि जरासन्ध बधो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ************

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अक्षय पाय तुनीर धनु रथ सु कपिध्वज नाम। अर्जुन धर्म नरेशसों बोले वचन ललाम॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

धनुष अस्त्र लहि पक्ष हरि भूमि सुयश बल भूप। बर्द्धित कीवो कोशको कारज हमैं अनूप॥ लियो चहत सब नृपनसों कर वर धर्म्म नरेश। धनद दिशाके बिजयको दीजे हमैं निदेश॥ तिथि मुहूर्त्त नक्षत्र है आजु परम अभिराम। धर्म्मराज करि कै कृपा आज्ञा देऊ ललाम॥

स०प०

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

अर्जुन को सुनि कै बचन धर्मराज सुख पाय। कहे बचन गँभीर मृदु भरे सनेह सुभाय॥
विप्र पूजि स्वस्त्ययन सुनि सहित सैन गँभीर। जाऊ दुहुद अप्रिय करण सुहृदनके हित बीर॥
विजय होय ध्रुव पार्थ तो सिद्ध होय सब काम। यह सुनि भूपतिके बचन चले ससैन्य ललाम॥
अग्निदत्त रथपै चढे धरे धनुष गांडीव। विजय करण धनपति दिशा चलो पार्थ बलसीव॥
भीमनसेन माद्रीतनय एक सैन समेत। चले चाहि चारोदिशा बिजय करणके हेत॥
भीमसेन पूरबदिशा शासन नृपसों पाय। दक्षिण गे सहदेव अरु पश्चिम नकुल सचाय॥
रहे सु खांडवप्रस्थमे धर्म राज अभिराम। सहित परम लक्ष्मी लएँ सुहृदनको गण भाम॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

जनमेजयउवाच ॥ * ॥ दिशा बिजय विस्तरसौं कहिए। सुने बिना मुनि मोद न लहिए॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ अर्जुन कियो बिजै दिशि जाको। प्रथम चरित्र कहत हम ताको॥ प्रथम कुलिन्ददेश वश कीन्हों। अनर्त पुलिन्द देश जय लीन्हों॥ तिनके भूप सहित बलमए। साकलद्वीप विजयकों गए॥ प्रतिबिंध्यादि भूप वश कीन्हें। तिनसौं दंड यथेच्छित लीन्हें॥ प्राग् ज्योतिषकौं तिनसह गए। नृप भगदत्त युद्ध सुख भए॥ तहां युद्ध दारुण अति कोन्हों। आठ दिब सलौं रण रस भीन्हों॥ तव भगदत्त वचन इमि कहे। रणमे अजित पार्थकों लहे॥ ***

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

पुत्र हो तुम इन्द्रके अति युद्धमे बलवान। शक्रके हम सखा हैं रणमे सुरेश समान॥ तज तुमसौं युद्धमें हम रुचत हैं नहि बीर। कहहु हमसौं है अभीप्सित तुम्हें जो रणधीर॥ कहहु हमसों करै हो तुम हमै पुत्र समान॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ कुरुबंश भूषण नृप युधिष्ठिर धर्मपुत्र महान। कियो चाहत यज्ञ सो अति दियो चाहत दान॥ राजसूय सो कियो चाहत सुनहु भूप सुजान॥ दीजिए कर पिताके तुम सखा हौ अनुरूप।भए हौ जु प्रसन्न हमसौं योग्य तुमकौं भूप॥ भगदत्तउवाच ॥ * ॥ यथा तुम हौ तथा हमकौं धर्म नृपति समान। कहो गे सो करैंगे हम पार्थ वीर महान॥ भगदत्तके सुनि वचन ऐसैं कह्यौ अर्जुन वीर। करदान मे द्यत सर्व है भगदत्त भूप गँभीर॥ जीति कै भगदत्तनृपकौं कियो अर्जुन गौन। गए उत्तरदिशाकौं धनपाल पालित भौन॥ गिरिवीचके गिरिवाह्यके गिरिपासक जे देश। तिन्हैं अर्जुन जीति लीन्हों दण्ड सहित नरेश॥ उलूकपति सु बृहन्त नृपपैं गए पार्थ ससैन। निकसि पुरतें लरो नृपति बृहन्त बलको ऐन॥ महारण करि शको शहि नहि पार्थको सो प्रहार। हारि कै तेहि दियो कर वर रत्न अमित उदार। सुबृहन्तकौं फिरि राज्य दै कै सङ्ग लीन्हें वीर॥ गए सेनाबिन्दुकौं करि लियो स्ववश गँभीर॥ रहे मोदापुरीके चहुँओर जौन नरेश। लिए पारथ जीति तिनसौं दण्ड रत्न बिशेष॥

जीति सेनाबिंदुको पुर देवप्रस्थ महान। विश्वगश्च नरेश पैरवपैँ गयो बलबान॥ जीति ताको दं॰ समरमे कर लियो तासैं भूरि। गयो फिरि काश्मीरकैाँ कुरुबीर आनद पूरि॥ काश्मीरपति नृप लोहिततहि सहसङ्ग जीतो बीर। कोकनद सु त्रिगर्तनृपसौं लियो दण्ड गँभीर॥ जीति अभिसारी पुरी नृप उरगबासी जैान। रोचमानहिँ जीति कीन्हो सिंहपुरकैाँ गैान॥ बाल्हीक अरु कांबोज सुम्भ महीप जीते सर्ब। पार्थ तिनसैाँ दण्ड लीन्हेँा रत्न जाति अखर्ब॥ युद्ध ऋषिकनसैाँ भयो अति सुरासुर सम भूप। जीति तिनसैाँ लिए वसु हय सुकोदर सम रूप॥ मयूर समके लिए तिनसैाँ दण्डमे वज्ञ अर्व। जीतिकै हिमवान बासी भूप अर्जुन सर्ब॥ श्वेत गिरिकैाँ गए तहँ के जीतिकै सब भूप। गए तहँ जहँ बसत है किम्पुरुष दिव्य सरूप॥ द्रुमपुत्रकैाँ तहँ जीति रणमे लियो कर बर बीर। गए हाटक नाम गुह्यक देशसैाँ रणधीर॥सांत्वसैाँ बश तिन्है करिकै लेइ कर अभिरान। गए मानस सर जहां है ऋषिनको बिश्राम॥ गन्धर्व रक्षित देश जीते लिए कर बर अर्व। बिचित्र तित्तिर रङ्गके मंडूक नामक सर्ब॥ फेरि उत्तर गए बर हरिवर्षकैाँ कुरुबीर। चहो जीतन देशसो जब भरे हर्ष गँभीर॥ द्वारपालक तहांके तब धरेँ अतिबर काय।कहन लागे आय अर्जुन बीरसैाँ समुभाय॥ पार्थ तुमसैाँ जीतिवेकैाँ शक्य नहि यह देश। जाउ अब कल्याण तुमकैाँ भयो प्राप्त अशेष॥ जात यामे मनुज सो नहि जियत है सुनु भूप। युद्धकर्त्तन को न यामे देखि परि है रूप॥ और इच्छा होय जो तुम कहहु तैाँन अखर्व। देहिँगे करि पूर्ण तुमकैाँ तैाँन अर्जुन सर्ब॥ कहो अर्जुन धर्म नृपको देहु कर अभिराम। जाहिँगे तब देशमे नहि हमहि जैाँन ललाम॥ दिव्य भूषण बसन मणिगण दिए तिन अतिमान। लेय कै सो पार्थ तहँतैँ फिरे सबल सुजान॥ लेइ कै धन बसन मणिगण अश्व रत्न अमान। फिरे करि धनपाल दिशिकी विजय पार्थ महान॥ आय खांडवप्रस्थकैाँ करि बिजय पार्थ अखर्ब। कियो अर्पण धर्म नृपके आयसैाँहैँ सर्ब॥ पाइ आज्ञा धर्मनृपकी गए अपने धाम। पार्थ आनदसैाँ भरे सब पूर्ण करि मनकाम॥ *❁*❁*❁*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविना कृतभाषा महाभारतदर्पणे सभापर्वणि अर्जुनदिग्बिजयबर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः॥ *❁*❁* ॥ वैशम्पायनउवाच॥*॥दोहा॥*॥ *❁*❁*

भीमसेन दिग बिजयकैाँ बर बल लीन्हेँ सङ्ग। आज्ञा लहि नृपधर्मकी सङ्ग चमू चतुरङ्ग॥
चले पूर्बदिशिकैाँ गए प्रथम जहां पाञ्चाल। तिन्हैँ शांत्वसैाँ बश कियो लीन्हेँा सु कर बिशाल॥
फेरि गए कुँडिननगर जीते सकल बिदेह। गए दशार्णव देशकैाँ जहां सुधर्मा गेह॥
किया निरायुध युद्ध तेहि भीमसेनके सङ्ग। भीम जीति ताकैाँ कियो सेनापति बर अङ्ग॥

अश्वमेधपति रोचमानकौं जीति महा बलवान। पूर्वदेशकौं जीति सब लीन्हौं दंड महान॥
फिरि दक्षिणदिशिकौं गए जहँ पुलिन्दपुर पर्म। जीति सुमित्र महीपकौं कर लीन्हौं जय धर्म॥
फेरि चेदिपुरकौं गए जहाँ नृपति शिशुपाल। मिले चेदिपति आयके पूछो कुशल रसाल॥
किए निवेदन राज्यकौं करिकै सेष्टाचार। हँसिकै पूछो भीमसौं कीबैं कहा बिचार॥
धर्मराज कीबैं चहत राजसूय वर यज्ञ। यातैं लीबैं नृपनसौं हमकौं दण्ड क्रतज्ञ॥
भीमसेन तेरह दिवस तहाँ रहे बलवान। बिदाभए शिशुपालसौं लैंकर रत्न महान॥
जीति कुमार अधीशजो श्रेणिमानहो भूप। कोशलपति नृप वृहदल कौं जीता अनुरूप॥
दीर्घयज्ञ नृप महाबल अवध पुरीको जौन। जीति ताहि कर लै कियो भीमसेन फिरि गौन॥

॥*॥ जयकरीछन्द ॥*॥

नृप गोपाल बत्सके जौन। लियोदण्ड सब जीते तौन॥ मल्लाधिप सब जीति नरेश। गए जे हिम गिरिके ढिग देश॥ अल्पकालमे जीते तौन। फेरि तहाँते कीन्हो गौन॥ काशिराज जो बीर महान। ताहि जीति कर लियो अमान॥ मत्स्य मलयके भूपति सर्ब। जीति भीम कर लए अखर्ब॥ भीमसेन उत्तरदिशि जाय। बत्स भूमि जीतो कर पाय॥ दक्षिण मल्ल लिए सब जीति। तुरित दण्ड तिन दियो सभीति॥ बैदेह जनक जीते नृपसर्व। शर्मक वर्मक भूप अखर्ब॥ जीति किराताधिप बलवान। जीते मगधनरेश अमान॥ दण्ड प्रचण्ड जीति नृप तौन। जरासंध पुरकौं किय गौन॥ जरासन्ध सुतसौं बरबीर। कहे शान्तिमय बचन गँभीर॥ ते सब भूपन्ह लीन्हें सङ्ग। गए कर्ण पर भरे उमङ्ग॥ भयो कर्णसौं दारुण युद्ध। जीतो ताहि भीम रणउद्ध॥ मोदागिरि बासी नृप जौन। भीमसेन जीते सब तौन॥ बासुदेव जो पौंड्र नरेश। जीतो ताहि भीम सह देश॥ समुद्रसेन वंगाधिप जौन। ताहि सैन सह जीतो तौन॥ ताम्रलिप्त कर्वटपति धीर। सुह्मज बसत सरितपति तीर॥ ए मलेच्छनृप जीते सर्ब। भीमसेन बलवान अखर्ब॥ बङ्गबिधानके देश गँभीर। ते सब जीति बृकोदर बीर॥ लए हेम मणिरत्न उदार। जीतिम्लेच्छ जे सागरनार॥ तिन धन मणि मुकुता अभिराम। कोटिन दीन्हें परम ललाम॥ सो सब लएँ भीम रनबीर। आए इन्द्रप्रस्थकौं धीर॥ धर्मराजकौं अर्पण तौन। ल्याए जीति महाधन जौन॥ *…*…*…*…*…*…*…*…**

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कवीना कृतभाषा महाभारतदर्पणे सभापर्बणि भीमसेन दिग्विजयबर्णनो नामत्रिंशोऽध्यायः॥ *॥ बैशम्पायन उवाच॥ *॥ दोहा॥ *॥ *…*

आज्ञा लहि नृपधर्म की लए सैन चतुरङ्ग। दक्षिण दिशि सहदेव गे जीतन भरे उमङ्ग॥
जीति सूरसेनाधिपन्ह मत्स्यदेश कौं जाय। जीते मत्स्याधिपनकौं लयो दंड बरकाय॥
दन्तवक्र छितिपालकौं जीति लियो कर सास। फिरि सुकुमार सुमित्र नृपकौं जीते बलधाम॥

बासी गिरि गोशृङ्ग के जीति निषादनरेश । श्रेणिमन्त कौं जीति कर लीन्ह रत्न विशेश ॥ स०प०
नर राष्ट्रहि सो जीति गो कुन्तिभोजपुर बीर । कर बर लीन्हो रत्न वज्र करिके प्रेम गंभीर ॥
सरिता चर्मन्वती पै जम्भक सुत को बास । सैन्य सहित सहदेव तँह गए महा बलरास ॥
जीति युद्धमे कर लयो तासौं बीर महान । फिरि दक्षिण दिशिकोँ गए कुरुकुल पङ्कज भान ॥
जीति सेक परसेक नृप लीन्हेँ रत्न महान । तिन्हैँ सहित फिरि नर्मदातीर गयो बलवान ॥
जीति अवन्तीके नृपति प्रबल बिंद अनु विन्द । कर लैकै फिरि भोजकट पै चढि गयो नरिन्द ॥
युद्ध भयो तँह दिवस द्वै भीष्मक नृपके साथ।जीति ताहि कर बर लयो अतिबल कौरव नाथ ॥
बेणातटकान्तारके प्राकोटकके भूप । नाटक के हेरम्बके मारुधके अनुरूप ॥
रम्यग्राम नाचीनके अर्बुक के बलवाँन । तिन्हैँ जीति रणमे लयो कर बर कुरुकुल भान ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

जीति बाताधिपहि जीति पुलिन्दपतिकौं बीर। दिशा दक्षिण जाय जीतो पांड्य नृपहि गंभीर॥ भए दक्षिण देश किष्किन्धा पुरी जँह भूप । मयंद द्विविदसु लरेवानर निकसि अतिबल रूप सात दिन तँह भयो तिनसौं घोरयुद्ध महान ॥ कहन द्विविद मयन्द लागे जानि कै बलवान । आऊपाण्डव तुष्टहै हम लेऊ रत्न ललाम। होय नहि नृपधर्मको मखभंग अति अभिराम ॥ रत्न लै सहदेव माहिषमतीकौं बलवान । नील भूपति जहाँहो दुर्धर्ष अग्नि समान ॥ भयो तँह सहदेव सौं अतिघोर तासौं युद्ध । अग्नि देवसहाय ताकी करत भो अति उद्ध ॥ जरन लागी सैन सब चतुरङ्ग प्रगटी ज्वाल । बरन लागे बसन सबके शस्त्र सुरथ बिशाल ॥ देखि सेना जरत ह्वैके भ्रान्तमन कुरुबीर । मौन ह्वैके रहे तँह सहदेव धारैँ धीर ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ यज्ञके हित करतहे सहदेव दिग जय कर्म । अग्नि कीन्हो क्रोध इतनो कैान हेत सधर्म ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ पुरी माहिषमती बासी अग्निदेव पवित्र । भएहें परदाररत यह सुनो पूर्व चरित्र ॥ नील नृपकी रही कन्या सुन्दरी अति भूप । होमाग्नि बारण जाय सो सह पिताके शुचिरूप ॥ व्यजन सों बज्र धमन कीन्हे बरै अग्नि न तैान । चारु ओष्ठन सों न जबलैाँ देइ सुन्दरि पैान ॥ करी ताषैँ कामना हुतबाह अति अभिराम । कियो तासों चहत सङ्गम अग्निन्है बशकाम ॥ जायसो जँह तहाँ पावक धारि सुन्दररूप । बिप्रह्वैके कहे तासों बचन सङ्गम भूप ॥ कियो तेहिँ स्वीकार सङ्गम लियो पावक साथ । नहीं माहिषमतीको यह चरित जानत नाथ ॥ रमत ब्राह्मण रूप सों एक द्यौस देखो भूप । लये शस्त्र बिधान सों तबदेन दंड अनूप ॥ कोपतैँ प्रज्वलित पावक भए तब अति सास। देखिकै भय भरो भूपति कियो दण्डप्रणाम ॥ समय लहिकै दई कन्या अग्निकौं सो भूप । कियो बिनय बिधान सौं अति भए नम्रस्वरूप ॥ नील नृपकी सुताको करि ग्रहण तब हुतबाह। मागि ए बर भूप लागे कहन भरि उतसाह॥भूपमागो सैन्यमे मो होय परभय नाश।

भए अन्तरध्यान तबहीं कहि तथास्तु ऊताश ॥ जातबश अज्ञान भूपति पुरीकों तेहि औन । जीतिबेकों हठत हैं शिखि शिखासों नृपतौन ॥ माहिष्मतीकी तियनकों बरदयो अनल अखर्ब । होउ स्वेच्छाचारिणी सम स्वैरिणीके सर्ब ॥ जातहे नहि कोउ तेहाँ विजयकारक भूप । अग्निको भय मानि मनमे महा दारुण रूप ॥ अग्नि भयतें भई पीडित देखि सेनासर्ब । धरमात्मा सहदेव धारे रहो धैर्य्य अखर्ब ॥ होयकै शुचि अग्नि सुस्तव करन लागे भूप ॥ * ॥ सहदेव उवाच ॥ * ॥ त्वदर्थहै हे अग्नि यह आरम्भ धर्म सरूप॥बदन हो तुम देवतनके अग्नि हे अभिराम।करत पावन जगत यातेंहे सो पावक नाम ॥ बहत हव्य सु कहत यातें हव्य बाह समर्थ । जातवेदस कहत याते भए बेद त्वदर्थ ॥ चित्र भानु सुरेश अनल हिरण्यरेता आम । स्वर्गके तुम द्वारदाता ज्वलन शिखि अभिराम ॥ पिङ्गेश बैश्वानर प्लबङ्ग सु भूरि तेजस सर्ब । कुमारसू भगवान रुद्र हिरण्य गर्भ अखर्ब ॥ अग्नि देऊ सु तेज हमकौं पवन देऊ सु प्राण । होय दाता भूमि बल जल शर्मकौं सुखदान ॥ अप गर्भ हो तुम ममहा सत्वसु जातवेद सुरेश । देवमुख मो करऊ रत्तण सत्य तेजसदेश ॥ ऋषि बिप्र दैवत दनुजके तुम यज्ञ कारण नाम । धूमकेतु सु शिखी हो तुम पापहा अभिराम ॥ अनिल संभव सकल प्राणा माँहँ प्राणी सरूप । कृपाकीजे यज्ञ कारण जानि धर्म अनूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ अग्निको यह मंत्र पढिकै होम करिहै जौन । आहुकौं सो पाय छुटिहै पापसों सब तौन ॥ * ॥ सहदेवउवाच ॥ * ॥ यज्ञकौं नहि विघ्न करिवो अग्नि तो अनुरूप । कुश बिछाय सु भूमिपैं यह बचन कहिकै भूप ॥सेनाग्रमे तब जाय बैठे महा ब्रतधरि धीर।कियो अग्नि प्रवेश नहि फिरि सैनमाहँ गभीर ॥ रूपधारें विप्रकौं करि कृपा तेजसचैन । शान्ति पूर्वक अग्नि तहँ इमि आय बोले बैन ॥उठऊ हे सहदेव जानो रावरो हम कर्म । पुरी माहिष्मती है यह रत्त्य हमसों पर्म ॥ करहिंगे सहदेव रत्तित रावरो अनुरूप । कियो दण्डप्रणाम अञ्जलिजोरकै कुरु भूप ॥ कियो पूजन अग्निको सहदेव सहित बिधान । जाय पावक नील नृपकौं दियो पठय सुजान ॥ पूजिकै सहदेवकौं दिय नील कर बर भूरि । लेय सों सहदेव दत्तिणकौं चले मुदपूरि॥ लियो कर बर जीति दत्तिणदिशाके सब भूप । गए भीष्मक भूपके बर बिषय पास अनूप ॥जानि पौ हर रुक्मिणीको लियो करसम सङ्ग । जीति सागर निकटकेसब भूप करि बर जङ्ग ॥ रावणानुज पास दूत पठायकै बर बीर । लिए नाना भाँतिके बऊ रत्न कुरुकुल धीर ॥ सूरसेनहि जीति करि बश बिपिनि दण्डक सर्ब । द्वीप वासीम्लेच्छ राक्षस जे निखाद अखर्ब ॥ कालमुख नर रत्त सम्भव सुरभि पट्टन जौन । ताम्रदीप सु एकपाद तिमिङ्गिलाधिप तौन ॥ कर हाटके रत्न सहित को मन पठे कै तहँ चार।तहांके अधिपतिन सों लिए दण्ड रत्न उदार॥मरु कच्छको फिरि जाय जीतो लियो दण्ड अमान । जीति दत्तिण दिसाव्है सन्तुष्ट अति बलवान ॥ गए खांडव प्रस्थको

बज्ञ लिएँ रत्न अखर्व । कियो अर्पण धर्मनृपके जाय आगे सर्व ॥ कृतकर्म व्है भरि भक्ति बन्दे पार्थ चरण ललाम। सहदेव द्विजवर पूजि कीन्हौं बास सानद धाम ॥ *❦*❦*❦*❦*
इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्वणि सहदेवदिग्विजयवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ॥❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

कहत नकुलको बिजय अब पश्चिमदिशिको जौन। वासुदेव जीती दिशा बिजै करी फिरि तौन ॥ लएँ सधन चतुरङ्गिनी चाव चढो बरबीर। करत भूमि कम्पित गयो रोहीतकपुर धीर॥ मत्त मयूरण सौं भयो तहां युद्ध अतिघोर । जीति तिन्हैं रणमे लयो दंड बीर बरजोर ॥ सैरी सक फिरि महा गिरि जीति कियो बश बीर । जीत्यो फिरि आक्रोशकौं करिकै युद्ध गँभीर ॥ जीति दशार्णमहीप सब चलो दंड लै भूप । शिबि त्रिगर्त्त मालव बिजय कीन्हो जाय अनूप ॥ कर्पट मध्यमकेय अरु बाटधान द्विज सर्व । भूप पुष्करारण्यके जीते सकल अखर्व ॥ सिन्धुतीर बासी नृपति अरु अभी रगण जौन । भूप सरस्वतिके निकट बसत जीति लिय तौन ॥ रोलाछन्द ॥ मत्स्यके अरु पर्वताश्रित दिव्य कटपुर भूप। जीति सह पञ्चाव लीन्हो दंड नकुल अनूप ॥ * ॥ अर्द्धचरण ॥
द्वारपालक सु हारहूणके रामठके नृप जौन । जीति दंड लै किय स्ववश पश्चिमके नृप तौन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

वासुदेवपहँ दूत पठाय । नृप शासन पठयो कहवाय ॥ सहित यादवन शासन तौन। मानो वासुदेव बलभौन ॥ मद्रदेशकौं गयो सो बीर। जँह मातुल नृप शल्यगँभीर ॥ तासौं लियो दण्ड करि साँम । रत्न हेम मणि बसन ललाम ॥ चले तहाँ ते नकुल नरेश। गए सिन्धु तटके जहँ देश ॥ जीते म्लेच्छ भूप बलवाँन। सैयद सेखो मुगल पठान ॥ तिनसौं लीन्हे रत्न महान ॥ नाना भाँतिनके सुखदान ॥ फिरो नकुल कुरुकुल अभिराम। लए महाधन रत्न ललाम ॥ दश हजार भरि ऊँट उदार। रत्न सैन सह पांडु कुमार॥ इन्द्रप्रस्थकौं आयो बीर। धर्मनृपतिकौ दयो गँभीर॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्वणिनकुलदिग्विजयवर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सत्यपालक धर्मनृपतैं नित्य रक्षा पाय । प्रजा निर्भय प्रजा करत स्वकर्म सब सुखदाय ॥ पाय नाना भाँति पूजा आदि दै जल दान । करत वर्षा यथा काल सुदेशकौं सुखमान ॥ ईति भीति न होति

सं०प० कबहूँ पाय नृपति सुधर्म। प्रातिसौं सब आइ भूपति करत सेना पर्म ॥ धर्म विधिवत धनागमतैं भई अति धनवृद्धि। बर्षतलौं खर्च कीन्हें घटै जो न समृद्धि ॥ कोष्ट कोश समृद्ध अति लखि धर्मराज उदार। यज्ञ करिबेको कियो मनमाह परम विचार॥ आय नृपसौं कहन लागे सुहृद सुमति विशाल। भूप करिए यज्ञ करिवैं योग्य है यह काल॥ सुनो तबही कृष्ण आए निकट करुणाभौन। जगतकारण जगन्मय जगदीश अव्यय जौन ॥ बसुदेवकौं सब राजकारज सौंपि कै अभिराम। लएँ बहुधन ओघ सेना सङ्ग अति बलधाम ॥ तौन धन सब धर्मनृपकौं दियो सिन्धु समान। महा धनसौं भरो अतिशै इन्द्रप्रस्थ महान॥ उदैते ज्यौं सूर्यके सब लहत जगत प्रकास। इन्द्रप्रस्थ सु भयो तैसैं भरो आनदरास ॥ मोदसौं चलि कृष्णसौं मिलि धर्मनृप अभिराम। सत्कार करि कै लगे बूझन कुसल प्रश्न ललाम ॥ धौम्य मुनि व्यासादि ऋत्विज सहित भ्रातन्ह सर्व। कहे यौं श्रीकृष्णसौं नृपधर्म वचन अखर्ब ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ श्रीकृष्ण है तब कृपाते सब भूमि मेरे सर्व। तो दयाते भयो है धनवृद्धि भूरि अखर्ब ॥ दियो चाहत तौन हम सब वासुदेव सुजान। अग्निके अरु द्विजनके मुखमाह सहित विधान ॥ कियो चाहत यज्ञ हम तुम सङ्ग हे बलबीर। सहित भ्रातन्ह करहु आज्ञा कृपा सहित गँभीर॥ करहु दीक्षित आपुकौं तुम यज्ञ पुरुष महान। यज्ञतैं तब होंहिगे हम पापमुक्त सुजान ॥ नाहि हमकौं देहु आज्ञा सहित भ्रातन्ह बीर। राजसूय सु करै हम तवकृपा पाय गँभीर ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ श्रीकृष्ण सो सुनि कहो ऐसे बरणि गुण अभिराम। साम्राटके तुम योग्य हौ नृपधर्म गुणगण धाम॥ लहैं तुमको यज्ञके हम होत सब कृतकृत्य। करहु स्वेछित यज्ञ है हम श्रेय कारक नित्य॥ कहहुगे तुम कृत्य जो हम करहिगे सो सर्ब।*॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ भए मम सङ्कल्प सफल ससिद्धि नियत अखर्ब ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सहित भ्रातन्ह पाय आज्ञा कृष्णकी नृप धर्म। यज्ञकी सब वस्तु सञ्चय करण लागे पर्म ॥ सहदेवकौं तब दियो आज्ञा सहित मंत्रिन्ह भूप। यज्ञाङ्ग वस्तु यथोक्त सञ्चहु द्विजन सह अनुरूप॥ धौम्यकी आज्ञा प्रमाण सु यज्ञको सँभार। जथाक्रमसो लेहु सकल मगाय वीर उदार ॥ इन्द्रसेन विशोक पुरु सारथिनकौं बोलवाय। कह्यो अन्नसु सकल रसको करहु सञ्चय जाय॥ जथा काम सु गन्ध रसमय द्विजनको प्रिय जौन। भक्ष चारि प्रकारके बहु करहु सञ्चित तौन ॥ भूपसौं सहदेव ऐसैं कहो आतुर आय। कियो हम सम्भार सञ्चय भूरि सब सुखदाय ॥ व्यासमुनि तब लिए ऋत्विज बोलि बेदस्वरूप। भए ब्रह्मा आपु सामग भो सुसामा भूप॥याज्ञबल्क्य अध्वर्य्य भे भो पैल होता पर्म।धौम्य मुनिवर सहित कीन्हो होमको जिन कर्म॥ सुत शिष्य वर इन सबनके भे और होत्रक भूप। पुन्याह वाचन कियो तिन करि जह सु विधि अनूप॥विहित विधि मखसदनमे सब तहाँ ऋत्विज जाय।कुण्ड बेदी शिल्पकनसौं यथाविधि बनवाय ॥ वेश्म बनवाए तहाँ बहु गन्धमय अभिराम। सहदेवसों

तब कियो आज्ञा धर्मनृपति ललाम ॥ निमंत्रणार्थक दूत चऊदिशि तुरित देऊ पठाय । विप्र भूपति बनिक शूद्र सु मान्य लेऊ बोलाय ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दै निमंत्रण पत्र पठए दूत जे तुरगैांन । जाय कै ते यथा आसन न्यौति आए भैांन ॥ राजसूय सु यज्ञदीक्षा दियो परम ललाम।मुनिन्ह धर्म नरेशकैां वर वेद बिधि अभिराम॥यज्ञायतनकैां भए दीक्षित गए भूपतिधर्म। द्विज सहस्रन सङ्ग लीन्हे भरे तपस सुधर्म ॥ भात ज्ञातिसु सुहृद सचिवन क्षत्रि सहसन सङ्ग । भूप नानादेशके बऊ भरे प्रीति उमङ्ग ॥ देश देशनके सु आए विप्र अगिनित पर्म । बेदवेत्ता साङ्ग धारैं नियम सुव्रत सुधर्म ॥ दिए बास बनाय तिनकैां भिन्न भिन्न ललाम।अन्न बसन सु सैन बऊरस भरे अति अभिराम ॥ बसे तिनमे जाय कै बऊ विप्र आदर पाय । कहन लागे कथा नाना भातिकी सुखछाय॥करत भोजन विप्र वृन्द अनेक परिसनहार। कहत तिनके होत ऐसो शब्द परम उदार देऊ देऊ सु इन्हैं भोजन करऊ करऊ सु सोर । रहत राती द्यौस फैलो तहाँ चारौओर ॥ भूप हास्तिनपुर पठायो नकुलकैां मतिमान । भीष्म द्रोण सबिदुर नृप धृतराष्ट्र ससुत महान ॥ कृपा चार्य्य सु और जे कुरुबंशके बरमान। तिन्है जाय लेवाय आवऊ यथा उचित सुजान ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ नकुल हास्तिननगरकैां तब जाय कै सुखरूप । भीष्मकैां धृतराष्ट्र नृपकैां दिय निमंत्रण भूप॥सत्कार सैां लहि कै निमंत्रण द्रोण आदिक सर्व। चले मनमे प्रीति धारैं द्विजन सहित अखर्व॥ चले सुनत प्रसन्न ह्वै बऊ पैारजन गए इन्द । सभा यज्ञ बिलोकिबेकैां सहित धर्म नरिन्द ॥ दिश नके सब आय क्षत्री भूप अति अभिराम।गए खांडवप्रस्थकैां बऊ लए रत्न ललाम ॥ भीष्म नृप धृत राष्ट्र भ्रातनसह सुयोधन भूप। विदुर सैाबल कर्ण भूपति यज्ञसेन अनूप ॥ शल्य भूरिश्रवा कैारव सोमदत्त सुजान। द्रोण सह सुत कृप जयद्रथ साल्वनृपति महान॥सिन्धुतटके म्लेच्छ भूपन सहित नृप भगदत्त। बृहद्बल अरु पार्वतीय अनेक नृप बलमत्त ॥ कालिङ्ग कुन्तल भूप पैांड्रक बासुदेव महान। बङ्ग मालव भूप आन्धक द्रविडपति बलवान॥ कास्मीर सिंहल कुन्ति भोज सु गोरबाहन भूप। बाल्हीक ससुत बिराट अरु शिशुपाल सबल अनूप ॥ और नानादेशके जे रहे भूपति सर्व। लए आए रत्नकोचय यज्ञमाह अखर्व ॥ राम गद अनिरुद्ध सारण सांब सह बरबीर। प्रद्युम्न उल्मुक निसठ आए वृष्णिबंश गभीर॥वृष्णिबंशी और हे जे महारथ बलवान। सकल आए यज्ञमे नृपधर्मके सुखदान ॥ बास भैान सु दिए तिनकैां जथा योग्य ललाम । भूरि भरि बऊ भक्ष्यसैां सह बापिका अभिराम॥ किया पूजन धर्म्म भूपति नृपनको सविधान।गए ते तहँ दियो जाकैां जैांन बासस्थान॥ कैलाश शिखर समान बासस्थान लहि बर भूप।घटित कञ्चन जडित मणिन्ह सुरेश सदन सरूप ॥ छणक करि बिश्राम देखन सभा यज्ञ महान । तहां आए भूप ज्यैां सुरलोक अमर समान ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ गुरूके अरु पितामहके जाय बन्दे पाय। धर्मनृप फिरि कहन लागे वचन सत्य सुभाय ॥ यह यज्ञमे मोपै अनुग्रह कीजिए तुम सर्व। करैा श्रेय हि

प्राप्त मोहि यह देय द्रव्य अखर्ब ॥ यहि भाँति कहि कै किये योजित कर्म्ममे नृपधर्म्म । यथायोग्य विचारि सौंपे नृपनकों मखकर्म्म ॥ दुश्शासन हि दिय भक्ष्यभोजन कर्म्मको अधिकार । द्रोणसुत सों कहो करिवे द्विजनको सहकार॥ नृपति पूजन करण सञ्जयसों दियो कहि भूप। और सूपनको दयो बहुकार्य सदृश स्वरूप ॥ वाल्हीक अरु धृतराष्ट्र जयद्रथ सोमदत्त उदार । रमत स्वामी सदृश सबपर धरत शासन भार ॥ नृपसुयोधन लेत सबकी नजरिकों धन जौन । करो व्ययकर विदुरकों नृप महामतिको भौन ॥कृष्ण लीन्हों द्विजनके पद धोयबेको कर्म्म । चाहि तीनोलोकमे फलप्राप्ति पावन धर्म्म ॥ रहे ऊपर छाय सिगरे आय देवविमान । सु रसदन सदृश सुद्विजनके बर बास बिबिधि बिधान ॥ नृपनके बहु बास गृह अति रचित रत्न अनूप । लसी श्री सह अमित शोभा बरणि सकत न भूप ॥ सहित राजन्ह धर्मनृपकी सभा अनुपम जौन । सो सुधर्म्म सदृश शोभित भई सुषमाभौन ॥ ऋद्धितें नृपधर्म्म शोभित भयो बरुण समान । बहु दक्षिणा सुख अमित मखकार भयो सम मघवान ॥ बिप्र भोजन रत्न दान सु देई आकृति पर्म । तृप्त कीन्हें सुरणकों सब भाँतिसों नृपधर्म्म ॥ सुर बिप्र आदिक वर्ण चारो भरे मोद ललाम । अन्न दान महान आकृति पाय कै अभिराम ॥ यज्ञपूरण दिवसमे जे रहे बिप्र अखर्ब ।सहित भूपन्ह गए ते मखभौन भीतर सर्ब ॥ नारदादिक ब्रह्मऋषि तँह लसत वेदीपाश । राजऋषिण समेत कीन्हें धर्मनृपति प्रकाश ॥ कर्मअन्तर पाय बिदुषण कियो शास्त्र विचार । करत नाना भाँतिसों सिद्धान्त मत निर्धार ॥ नारद लखमी धर्मनृपकी भए देखि प्रसन्न । देखि क्षत्र समूह गुणि मुनि भए चिन्तासन्न ॥ समुझि अंश अवतरण भेओ भयो हो निरधार ।सुरणसों बिधिभवनमे क्षिति गमन करत बिचार ॥ कियो छल स्मरण मुनि हरि भयो क्षत्री तौन । घालि हैं अरिपालि हैं पन कियो पूरब जौन ॥ जगतकारक सुरणसों इमि कहो हो समुझाय ।अन्योन्य हनि कै लोकमे फिरि बास कीजो आय॥सुरणकों यहि भाँति आज्ञा देय कै जगदीश। आपु लीन्हों जन्म क्षत्री होय यदुकुल ईश ॥ औसि क्षत्रिण को करै नो नाश श्रीभगवान ।समुझि कै यह भए मुनिमनमे सुचिन्तित ध्यान ॥ *❦*❦*❦

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

तब भीष्म बर मतिमान । इमि कहे बचन प्रमाण॥ बरसमै योग्य बिचारि । नृपधर्मसों निरधारि ॥ इन नृपनकों सनमान ।करि पूजिए मतिमान॥आचार्य ऋत्विज जौन ।सम्बन्धमे बर तौन॥ सुत और प्रिय जो पर्म । नृप पूज्य हैं षटधर्म ॥सुनु क्रमहिते इक एकए पूज्यहैं सबिबेक॥ है श्रेष्ठ [illegible] जौन । है पूज्य पहिले तौन ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ तुम पूज्य प्रथम विचारि । काऊ पित्त [illegible] निरधारि ॥ ❦*❦*❦ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ *❦*❦*❦*

करि [illegible] निरधार धर्मराजसों यों कहो । पूजन योग्य उदार कौन कृष्णतें और है ॥
सो सब नृपन मझार सबल पराक्रमतें महा । रविसे लसत उदार भरे महा तपतेजसों ॥

स०प०

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

भीषमको आज्ञाको पाय । सहदेव कृष्णको पूजो जाय ॥ शास्त्र विहित विधि पूजन जौन। यदुपति ग्रहण कियो सब तौन ॥ कृष्णहि पूजित लखि शिशुपाल । सहि न सको धरि क्रोध बिशाल ॥ भीषमकी करि निन्दा भूप । कहेधर्म्मसों बचन कुरूप ॥ वासुदेवकों निन्दित बैन । कहन लगो दुर्मतिको ऐन ॥ है वार्ष्णेय न पूजन रूप। छोडि महात्मा एसब भूप॥ नही पाण्डवन्ह योग्य अचार। पूजो वृष्णिवंशको बार ॥ जानत उचित न पाण्डव बाल । भीष्मवृद्ध हतमति बशकाल ॥ धर्म्म नृपति तुम प्रीति बिचारि। कियो अनीति हिएँ निरधारि ॥ सम्मत से अबभीष्म अयान।गने जाहिते सहित विधान ॥ वृष्णि अराजक राजनमाह । ताहि पूजिहे को नरनाह ॥ पूजो कृष्णहि वृद्ध समान । मरें तात सुत पूज्य सुजान॥ वर्त्तमान नृप द्रुपद उदार । पूजन योग्य न वृष्णि कुमार ॥ अरचो कृष्णहि गुणि आचार्य।रहत द्रोण यह अनुचित कार्य॥ ऋत्विज मानि पूजिबो जौन । रहत व्यास अति अनुचित तौन ॥ शान्तनु तनय भीष्म कुरु वृद्ध । लेहि तजि पूजन कृष्ण असिद्ध ॥ अश्वत्थामा जँह नृपधर्म्म । कृष्ण पूजिबो तहा न पर्म्म ॥ कृपसह जहाँ सुयोधन भूप। कृष्णार्चन सँह अनुचित रूप ॥ जेहाँ द्रुम किंपुरुषाचार्य । तहाँ कृष्णको अरचन आर्ज ॥ भीष्मक भूप जहाँ बलवान तँहँ कृष्णहि को पूजत सुजान॥जहाँ रुक्म भूपाल कुलीन।तँहँ कृष्णहि को पूजत दीन॥एक लव्य जँह शल्य नरेश। कृष्णहि पूजत को तेहि देश॥ बलिन माह अतिसै बलवान। परशुरामको शिष्य सुजान॥ छोडि कर्ण बरबीर अजेय। कृष्ण पूज्य कैसें वार्ष्णेय ॥ ऋत्विज नही अचार्य न तौन। वंश अराजक सम्भव जौन ॥अरचो कृष्ण सो तुम कुरु भूप।चाहि आपनो स्वार्थ अनूप॥रहो पूजिबें वृष्णि कुमार।व्यर्थ बोलाए भूप उदार॥ भीति लोभ नहिं साम बिचारि । कर दीन्हों हम यह निरधारि ॥ प्रवृत धर्म्म कारयमे जानि । हम सबहिन मनमे अनुमानि ॥ तुम भूपनको करि अपमान। पूजो कृष्ण अपूज्य महान ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्महीन याकी करै पूजा कौन अयान । जरासन्ध सो नृप हनो करि अन्याय महान ॥
छोडि युधिष्ठिरको गई अब धर्मता सर्ब । प्रगट कृपिणताई भई कृष्णहि पूजें खर्ब ॥
भीरु कृपिण कुन्तीतनय तुमको पूजो जौन । नही बिचारो कृष्ण तुम योग्य न हमको तौन ॥
योग्य तुम्हें पूजन न जो सोतुम लियो समान। निर्जनमे लहि हव्य ज्यों निर्भय भखत श्वान॥
भयो न यामे नृपनको कछु अपमान प्रकाश ।करो कौरवन कृष्ण तो पूजन मिषि परिहास॥
क्लीव कामिनी लहत ज्यों भयो कृष्ण यह कर्म्म। भूपनकी विधिसों करी पूजा जो नृपधर्म्म ॥
लखे युधिष्ठिर भीष्म अरु वासुदेव सहसर्ब । हैं जैसे तैसे मुहे करता असद अखर्ब ॥
यों कहिके शिशुपाल उठि तजि आसन अनुरूप । चलो सभा तजि बाहिरें सहित सपक्षी भूप॥

तब उठिकै शिशुपाल प्रति चले युधिष्ठिर भूप । नीति शान्ति पूरण कहत ऐसे वचन अनूप ॥
ऐसे कहिवे योग्य नहि कहे यथा तुम बैन । परुष वचन शिशुपाल हैं महापापके ऐन ॥
भीष्म न जानत धर्मकों यह को कहै सुजान ॥ भीष्म महाब्रत धर्म निधि बेत्ता सत्य प्रमाण ॥
सबउ भूप तुमत अधिक सकल बृद्ध बलधाम । बैठे लखि हरषित भए हरि पूजन अभिराम ॥
गत छलको भीष्म सब जानत यथा विधान । तुम तैसो जानत नही हे शिशुपाल समान ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

यह अनुनयके योग्य नहि है नृपधर्म कृतज्ञ । कृष्ण जगद्गुरुको लखैं पूजन सहत न अज्ञ ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

जीति क्षत्रिहि समरमे करि स्ववश क्षत्री जौन । छोडिदेत सु कृपाकरिहै तास गुरु बर तौन ॥ यहि भूपगणकी सभामे नहि कृष्ण जीतो जाहि । समर मे हम सात्वतीसुत नही देखत ताहि ॥ नही केवल हमे अच्युत अर्च्यहैं अभिराम । लोकत्रीनो माह पूजित महा बलके धाम ॥ कृष्णतें बहु गए जीते प्रबल क्षत्री बीर । जगत सिगरो है प्रतिष्ठित कृष्ण मे रण धीर ॥ कियो ताते बृद्ध गणमे कृष्ण पूजा भूप । बुद्धि यह नहि सदृश है तो अचन नहि अनुरूप ॥ ज्ञान बृद्धन सों सुन हम कृष्णके गुणग्राम । बाल्य पनते कर्म सिगरे सुने अति अभिराम ॥ प्रीतिकों सम्बन्ध कों न बिचारिकै मनमाँह । सौर्य जययश देखि पूजो कृष्णकौं नरनाह ॥ करि परीक्षा भूप गणको स गुण सकल बिचारि । बृद्ध भूपन छोडि पूजो कृष्ण गुण निरधारि ॥ ज्ञान बृद्ध सु द्विजनमे क्षितिपति न्हमे बलवान । शूद्रमे वय बृद्ध तैसे वैश्य जो धनमान ॥ साङ्ग बेत्ता बेदके हैं महा बलके धाम । पूजिबेके हेतु हैं द्वै कृष्णमे अभिराम ॥ अधिक हैं श्रीकृष्णतें यहि जगतमे नर कौंन । सौर्य स्रो श्री दान धृति मति कीर्त्ति सन्तति भौंन ॥ पूज्य गुरु आचार्य्य यातैं जानि पूजो जौंन । सुनहु सबकौं उचितहै अब क्षमा कीबो तौंन ॥ चराचर मय जगत कारक कृष्ण अव्यय रूप । प्रकृति है अव्यक्त यातैं कृष्ण पूज्य अनूप ॥ मन बुद्धि मह अरु तत्त्वमय यह चतुर्विध जग जौन । चराचरके कृष्ण है आधार आनद भौन ॥ सूर शशि सु न क्षत्र ग्रह दिशि दशो जे अभिराम । सकल जगत प्रपञ्च ताको कृष्णके बलधाम ॥ गायत्री मुखहै छन्दको मुख बेदको हुतबाह । सरित मुखहै सिन्धु त्यो मनुज मुख नरनाह ॥ नक्षत्र मुख शशि सूरहै मुख तेजमयको सर्व । मेरु गिरिमुख बिहंगके मुख बैनतेय अखर्व ॥ उर्ध अध अरु जौन तिर्यग जगतकी गति जौन । देवलोक समेतको मुख कृष्ण आनद भौन ॥ बाल यह शिशुपाल कहत अयान ऐसे बैन । बिना जाने कृष्णकौं जगदीश आनद ऐन ॥ को न मानत पूज्य पूजत कृष्णकौं नहि कौंन । दुष्कृत्य मानत कृष्ण पूजन दुष्ट दुर्मति भौंन ॥ दुष्कृत्य तिनकौं योग्यहै सोलहैगो फल हाल । काल बश यह कहत ऐसे बचन नृप शिशुपाल ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ यहिभाँति कहिकै रहे चुप व्है भीष्म अति मतिमान । कहन यों सहदेव लागे भरे

क्रोध महान॥ कृष्ण हमसौं पुज्यमान न सहैगो जो भूप॥शीसपै हम चरण ताकी दहिगे अनुरूप॥ सं०प० बचनको मो देइ उत्तर होय जो बरबीर । बध्य हमसौं होय सो धनु धारिकै रणधीर ॥ पितर गुरु आचार्य सब विधि पूज्य कृष्णहि जानि । करी सहित बिधान पूजा सुनो सब मतिमानि॥ नही काऊ दियो उत्तर भूप जे बलवैन । रहे सुनि सहदेवके यहि भांतिके बरबैन॥ सुमन बृष्टि सुभई तब सहदेवपैं अभिराम। गगण त बर भई बाणी साधु साधु ललाम ॥ बजाय कृष्णाजिन सु बोले नारदमुनि तपभौन। जो न पूजे कृष्णकौं सो जियत मृतक समान॥ वैशम्पायनउवाच॥ * रहे पूजा योग्य जे तँह विप्र चत्री आप्त। पूजि कै सहदेव तिनकौं कियो कर्म समाप्त॥ देखि पूजित कृष्णकौं अति कोप करि शिशुपाल।कहन लागो नृपनसों करि तासनेत्र विशाल॥होत हम सेनेश सबके सुनऊ तुम नर भूप।बृष्णिबंशी पांडवन पै होऊ शत्रु स्वरूप॥चेदिपति सब नृपनसों यहि भाँतिके कहि बैन।यज्ञके विघ्नको किय मंत्र दुर्मति ऐन॥ क्रोधबश्य विवर्ण आनन भए तब छितिपाल। लिए तिन्हहि बोलाय सिगरे दुष्टमति शिशुपाल॥ कृष्णपूजन नृप युधिष्ठिरको नहीं अभिषेक। होन पावै तथा करिए होय कै सब एक॥ क्रोध मूर्छित भए कीन्हे सबल निश्चयभूप।कहन लागे बचन ऐसैं बिकृत मन अनुरूप॥सुहृद बारित बपुष तिनके लसे ऐसैं उद्द। यथा गर्जत सिंह आमिष हरत व्है अतिक्रुद्ध॥ देखि तौन बलौघ सागर सदृश नृप समुदाय। युद्ध कौं श्रीकृष्ण इच्छा किये बर बलकाय॥ वैशम्पायनउवाच॥ भूप मंडल देखि सागर सदृश तब नृप धर्म। कहन लागे भीष्मसौं तब बचन ऐसैं पर्म॥अब जो करतव्य सो कऊ पितामह मतिमान। यज्ञ बिघ्न न होय जाते प्रजनको सुखदान॥ धर्मनृपके बचन सुनि इमि कहे भीषम बैन। करऊ भयमति कुशलको हम प्रथम साधो ऐन॥ यथा सोवत सिंहकौं लखि बहुरि भूँकत स्वान।बृष्णि सिंह न जगत तौलौं बको नृपति अयान॥ कृष्ण सिंह समान उठिहै क्रोधकरि जब उद्ध। भगैंगे तब स्वानसे ए नृपति परिहरि युद्ध॥ कृष्ण जाको चहत पठयो सर्बथा यमधाम। करत बुद्धि बिरोधताकी ऐसेहीं मति बाम॥ चतुर्बिधिकी सृष्टि जो तिऊँलोकसे अभिराम। उतपत्य कारक नाश तिनको कृष्णहै छतधाम॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भीष्मके सुनि बचन ऐसे चेदिपति अतिक्रुद्ध। कहन फेरि कठोर लागो बैन धारि बिरुद्ध ॥ * ॥ शिशुपालउवाच ॥ * ॥ चहत भूपन्ह सभयकीबैं भीतिके कहि बैन। बंशबालक जराहूमे तोहि लाज लगै न॥ तीसरेपन धर्म बिगलित कहत ऐसैं ज्ञान। बंशके तुम भए भूषण योग्य तुमको तौन॥ अन्ध ज्यों पय पार चाहत अन्धको गहि अंश। अग्रणी करि तुम्है तैसैं भयो यह कुरबंश॥ पूतनाको घात पूर्वक कर्म याको ज्ञान। होतहै सुनि व्यथित अति मन कहत तुम्हरे तौन॥ कृष्णको गुण करत कीर्तन भीष्म ह्वै मतिछिन्न। होति जिह्वा रावती क्यों नहो शतधा भिन्न॥ करैं बालो निखिल निन्दा जगतके जन जास। करत हो तुम बृद्ध व्है कै भीष्म सुस्तुति तास॥ बालपनमे हनो केशी बृषभ बक करि क्रोध। कहा यासे चिन्हे पशु

प० पक्षि युद्ध अबोध ॥ दार सकट अचेतको यहि कियो जौन निपात । पाय सो हैं कौन अद्भुत भीष्म याने बात ॥ वल्मीक सम गिरि सात दिनलों धरो कर पर जौन । सुनहु भीषम चित्र मानत महा याने कान ॥ बालनमे बहुत खायो अन्न गिरि पर जौन । कहा मानत चित्र यामे सुनहु भीषम तौन ॥ अन्न जाको खायके यह भयो अति बलवान ॥ हनो सो नृप कंसकों करि निंद्य कर्म महान ॥ नहि सुनो यह मत सतनको तुम कहत सो हम पर्म । सुनहु सो कुरुकुलाधम हे भीष्म अविदित धर्म ॥ विप्र गो स्त्री अन्नदाता बसी जाके पास । धर्मबिद करि शस्त्रपात न करत तास बिनास ॥ सन्त शासन करत ऐसे सुजनकों मतिमान । देखि उलटो परत तुमकों भीष्म धर्म विधान ॥ ज्ञान बृद्ध सुबृद्धकहि करि कृष्ण सुस्तव जौन । अजान सो व्है कहत हमसों कौरवाधम तौन ॥ गो स्त्रीघ्न व्है जो बचनतें तव लहो पूजन पर्म ॥ होत सुस्तव योग्य सो किमि भीष्म ए करि कर्म ॥ नीच है तो प्रकृति भीषम भूरि भाँति अशुद्धि । सङ्गतें भइ पांडवनकी पापकारिणि बुद्धि ॥ कृष्ण जाके पूज्य तुमसे धर्म दर्शक यस्य । कौन पांडव धर्मपथते होहि भ्रंश अवस्य ॥ धर्मबिद व्है भीष्म कन्या काशिपतिकी पर्म । नाम अम्बा अन्यकों जो बरो चाहति धर्म ॥ हरो कैसे ताहि कीन्हो महा कुत्सित काम । तजी ताही विचित्र बीर्यसो धर्मको हो धाम ॥ भ्रात दारनमे भए सुत अन्यतें अभिराम । धर्म मानी लखत हे तुम भीष्म चरित ललाम ॥ भीष्म तुमकों धर्मकारक ब्रह्मचर्यन जौन । दान वेदाध्ययन मख जो दक्षिणा बाहुल्य । पुत्रके षोडशांसहुके होतहै नहि तुल्य ॥ करै व्रत उपवास नाना भांतिके तप सर्व । व्यर्थ होत अपुत्रके बहु भाँति सुकृत अखर्व ॥ अनपत्य बृद्ध अधर्मचारक भीष्म हो तुम जौन । लहहु गे तुम हंसकी विधि अब यमपुर गौन ॥ ज्ञान बिद जन सो सुनो हम पूर्व यह इतिहास । भीष्मसो हम कहत हैं सुनिए तिहारे पास ॥ हंस एक समुद्रके हो द्वीपमे अतिवृद्ध । कहत कहत अपनी ज्ञातिमे सो बचन धर्म समृद्ध ॥ *******

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पक्षिन धर्ममान अनुमानि । ताकों देहिं भक्ष्य निति आनि ॥ अंड दिए तिन ताके पास । जानि धर्मबिद छोडैं त्रास ॥ पक्षी जाहिं भक्ष्य हित सर्व । तब वह खाय अंडमतिखर्व ॥ छीण भए जब अंड अनेक । शङ्कित भयो चतुर द्विज एक ॥ छपि तेहि देखो ताको कर्म । सात अंड यह भरो अधर्म ॥ तेहिं कहि दियो द्विजनपहँ जाय । तिनहूँ देखो तहां छपाय ॥ मिथ्या बृत्त जानि कै ताहि । अंड क्षयको दुख अब गाहि ॥ महापापमय ताहि बिचारि । सब पक्षिण मिलि डारो मारि ॥ तुमहू ज्ञाति हनते अद्य । भीषम बध पावोगे सद्य ॥ यातें यासों कियो न युद्ध । इन कीन्हें सो न्याय विरुद्ध ॥ द्विजबनि भीमार्जुन सह भाय । हनो ताहि करि सकल उपाय ॥ कृष्ण लखो हो तास प्रभाव । यातें छल करि साधो दाव ॥ इन्है न अर्घ दियो मगधेश । भोजनहीकों कियो निदेश ॥ जा जगकारक हो यह मूढ । बन्यो विप्र क्यों छल करि गूढ ॥ सत पथतें तुम दिए गिराय ।

तुम्है कहत हित कुरुकुल राय ॥ हम यह जानत अद्भुत कर्म। तुम मंत्री तहँ सकल अधर्म ॥ * ॥ सं०प०
वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बचन तासु सुनि अनुचित भीम । भए क्रोध अतिशै बल सीम ॥ ज्यों युगान्तमे काल कराल।देखि परे इमि भीम विशाल॥उठे भीम करि क्रोध महान।गहो आय भीष्म बलवान ॥ नीतिबिहित कहि नाना बैंन । भीमहि शान्ति कियो मतिऐंन ॥ लखि शिशुपाल भीम कहँ क्रुद्ध । सह मो नेक बरबल उद्ध ॥ कहो चेदिपति हँसि इमि बैंन। भीमहि क्रुद्ध देखि बल ऐंन ॥ भीम हि तजऊ भीष्म बलवान। सो पावकपहँ सलभ समान ॥ भीष्म चेदिपतिके सुनि बैंन। कहे भीमसों यों मति ऐंन ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ** * * * **

भयो चेदिपतितनय यह अक्ष धरे भुज चारि । रोदन लागो करुण अह घोर खरस्वर धारि ॥
भए समय माता पिता सुबत सहित परिवार । विकलरूप लखि त्यागको लागे करण बिचार ॥
तब अकाश बाणी भई ऐसी भाँति उदार । भयो नृपति श्रीमान तो अतिबल भरो कुमार ॥
तातैं डरऊ न करऊ शिशुपालन हे भूपाल । है अजेय यह शस्त्रतें याको मृत्यु न काल ॥
सुनि अकाशबाणी भरी सुत स्नेहसों भूरि । कहन लगी याकी जननि महा मोदसों पूरि ॥
कह्यो देववाणी जो यह फिरि सो कृपा समेत।कहै सो याके मरणको बिधि बिरचित जो हेत॥
फेरि गगणबाणी भई गए अङ्कमे जास । द्वै भुज गिरि हैं होइ गो तिसरा नैन बिनाश॥
सो याको हन्तार है यह बिधि बिहित प्रमान। यह सुनि भूपति दिशनके अद्भुत जानि महान॥
अक्ष चतुर्भुज भयो है चेदिनृपतिकैं पूत । गए देखिवेकों तँहा अचरज भरे अकूत ॥
तिन्हैं पूजि कै यथाबिधि चेदिपति मतिमान । लै सब तिनके गोदमे राखो पुत्र सुजान ॥
अक्ष चतुर्भुज यह रहोभयो न बिकृत स्वरूप। राम कृष्ण यह सुनि गए जहाँ चेदिपति भूप ॥
पितृ स्वसाके धाममे गए दोउ बरबीर। बूझि कुशल पूजन कियो आनद भरी गँभीर ॥
धरो कृष्णके गोदमे जननी याकों ल्याय । गिरी दोय भुज तीसरो गो चख भाल समाय ॥
देखि सभय करि कै बिनय जननी याकी जैंन । बर मागो श्रीकृष्णसों जानि कृपाको भैंन ॥
मोहितसों शिशुपालके कीजो क्षमा पराध। पितृस्वसा मोहि जानि कै यह बर देऊ अबाध ॥

॥ * ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ * ॥

पितृ स्वसा अपराध हम याके शैलों उद्द। क्षमा करैं गे मानि तो बचन प्रमाण बिशुद्ध ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

यह दर्पित शिशुपाल लहि दयो जो बर ब्रजचन्द। यातें ऐसे कहत है बचन महा मतिमन्द ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भलीभति नहि चेदिपति तुम करी जो स्वीकार। करत निन्दा कृष्णकी जो जगन्नाथ उदार ॥

स० प० भीमसेनादिकन मेरे सदृश है चितिपाल । कहत ऐसे जानि परति सु भए हौ बश काल॥ तेज याको अंश हरिकै परत है निरधारि । कृष्णसो फिरि लियो चाहत नियत याकों मारि॥ सुनऊ कुरुशार्दूल यातें चेदिपति सब काल । नही हमकों गणत सबकों रहो गर्जि बिशाल ॥ वैशम्पायन उवाच॥सहो बचन न भीष्मको व्है चेदिपति अति क्रुद्ध।लगो उत्तर देन ऐसी भाँतिसो अतिउद्ध॥शिशुपालउवाच ॥ द्वेषी हमारो कृष्ण ताको करत गुणगण गान।करत सु स्तव रहत बन्दी सदृश होय महान॥करत संस्तव जो रमत मन भीष्म तो अभिराम। कृष्णकों तजि करऊ तिनको भूप जे बलधाम॥बाल्हीक दरद सु कर्ण द्रोण सपुत्र अतिरथ जौन।करऊ संस्तव भीष्म इनको योग्य जेवल भौन॥ समुद्रान्ता महीमें अप्रतिम जो है भूप।सो सुयोधन छोडि बर्णत कृष्णकों मतिकूप॥ कृपजयद्रथ रूक्म भीष्मक दन्तवक्र नरिन्द।भगदत्त द्रुपद बिराट शकुनि सु भूपविन्द अनुविन्द॥ बृषसेन शंख सु एकलव्य कलिङ्ग पति वरवीर। शल्यादि भूपन कोन काहे करत कीर्त्तन धीर॥धर्म वादिनके बचन तुम सुने हो नहि पर्म।आत्म निन्दा आत्म अस्तुति करत है न सु धर्म॥पर स्तुति पर निन्दनीके किए लागत पाप। एन चारो बृत्तिकबहूँ करत बुद्धि अमाप॥ अस्तुत्य नहि यह कृष्ण ताको करत अस्तव जौन । भक्तितेंके मोहतें यह भीष्म मानत कौन ॥ भोजनृपकी प्रजा यादव वहत नित्य निदेश।जगत उत्पत्ति प्रलयको तेहि कहत कारण बेश॥नही शत पथ गहति है तो बुद्धि बचन बिरोध। भूलिङ्ग पक्षी कहत कछु कछु करत कर्म अवरोध॥भूलिङ्ग शकुनि हिमाद्रि उत्तर रहत ताको ऐन। नही साहस करऊ ऐसे रहत बोलत बैन॥ सिंह दशनन्हमध्य जो लगि मांस कछु रहि जात।लखत अपनो नही साहस काढि कै सो खात॥ सिंह इच्छासें सु जीवत भीष्म पक्षी तौन । नृपनकी इच्छासें जीवन त्यौं तिहारो जौन ॥ लोकमे यह दुष्ट कर्मा भीष्म तुमसो है न। वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भीष्म उत्तर दियो इमि सुनि चेदिपतिके बैन । जेहि नृपपनकी इच्छा जियत इच्छातें सु नऊ शिशुपाल। तिन्हैं तृण सम गणत जानत भए सब बशकाल ॥ भीष्मके सुनि बचन बोले दुष्टनृप जे सर्ब। कृपा योग्य न बृद्ध है यह भरो गर्ब अखर्ब ॥ मारि पशु सम याहि सब मिलि देहिं सहरण जराय। सुनत तिनके बचन बोले पितामह रिषि छाय ॥ कहत हैं सो सुनो पशुसम चहत मारण जौन। देत ताके शीशपर पद होय सन्मुख तौन ॥ पूज्य हमसों जगतसों ए लसत अच्युत वीर। निकट जाकी होय मृत्यु सो होय सन्मुख धीर॥ भीष्मके सुनि बचन बोलो चेदिपति बलवान। राखि इच्छा युद्धको श्रीकृष्णसों अतिमान॥वासुदेव सुचलो हम सों युद्धकों रणमाँह। तुम्है हनि हो सहित पांडव लखत सब नरनाँह॥ छोडि राजन्ह तुम्है अरचो जिन्ह अराजक दास। बाल्यतासों चहत तुम सह कियो तिनको नाश॥ यहि भाँति कहि कै गर्जि कै सो भयो ठाढो बीर । तास सुनि इमि बचन बोले कृष्णचन्द्र गँभीर ॥ सात्वती सुत भयो मो अरि सुनऊ सिगरे भूप।नृशंस ऐसो और है नहि पापपूरण रूप॥ प्राग्जोतिष नगरकों हम गए तब

यदुआय । शून्य द्वारावतीकौं लहि दियो सकल जराय ॥ करत क्रीडा भोज नृपका रैवता सं०पृ०
चलमाह। मारि कै लै गयो गहि यह सुनऊ सब नरनाह॥अश्वमेध सु करत हे बसुदेव मेरे तात।
मारि रक्षक गयो हय लै कियो यज्ञ बिघात॥ बभ्रुपत्नी पितापहँ सो बीरपुर ही जात। बीचहीमे
हरी यहि हत कियो धर्म बिघात ॥ बिशालापतिकी सुकन्या नाम भद्रा जौन। कारूष पतिको
बेष धरि यहि हरण कीन्हो तौन ॥ जनकभगीहेत इतनो सहो हम अपराध । लखो सो तुम
सकल भूपन्ह कियो अघ जो बाध॥ कियो जौन परोक्ष सो हम सहो सकल नरेश । नहो मोमे
होत है अब क्षमाको आवेश ॥रुक्मिनीमे रही याकी व्याह बाँछा जौन।शूद्रकौं श्रुति संहिता ज्यौं
भई प्राप्ति न तौन॥ *॥ वैशम्पायन उवाच॥ *॥ आदितैं यहि भाँति सुनि कै कृष्णके सब बैन।
शिशुपालकौं तब लगे निन्दन भूपपति कै ऐन॥ कृष्णके यहि भाँतिके सुनि बचनकौं शिशुपाल।
उच्च करि कै हास बोलो बचन बीर बिशाल॥ पूर्व पति हो रुक्मिनीको सभामे यह बैन। कहत
तुमकों कृष्ण लज्जा नेक लागति है न॥और मानी कहै को इमि सभामे हरिबात।अन्य पूरुब पति
सपत्नी को निलज बिख्यात॥ क्षमा करऊ न क्षमा तुम तौ लेऊ सुनि यह बैन । क्रोधतैं तो प्रीतितैं
कछु हमै ह्वै है न॥ चक्रकौं तब कियो चिन्तित कृष्ण मनमे बीर। चक्र आयो पाणिमे अति भरो
तेज गँभीर॥ उच्चस्वरसौं कहो तब श्रीकृष्ण भूपन्ह पास।कियो अबला क्षमा जो सो सुनऊ कारण
तास॥पूर्व बर हम दियो याकी जननिकौं निरबाध।क्षमा याको करहिंगे हम एकशत अपराध॥
तौन पूरण भयो अब तुम लखऊ सिगरे भूप। देत याकौं दंड हम अब यथा योग्य अनूप॥ यहि
भाँति कहि कै चक्र दीन्हों छोडि श्री यदुराय। कायतैं शिशुपालको शिर परो क्षितिपर जाय॥
शिशुपालको कढि तेज तनतैं महा सूर समान । कियो जाय प्रवेश श्रीश्रीकृष्णमे सुखदान॥ रहे
मानि सुमहत अद्भुत देखि कै सबभूप।अनभ्र बरषो गगनतैं जल असनि पात अनूप॥ हली क्षिति
क्षितिपाल सिगरे भए अचल समान । श्रीकृष्णकौं लखि कै भए सब बिगतचेत महान ॥ कोऊ
मीजत हाथ कोऊ रसन दाबे दन्त । कोउ सराहत कृष्णको लहि मोद अति क्षितिकन्त॥ गए
केशव पास मुनिबर भरे मोद अखर्ब। सहित बिप्रन्ह भूप सज्जन प्रीति पूरित सर्ब॥ करण सुलख
लगे सिगरे भरे मोद महान । धर्मनृपकी पाय आज्ञा पार्थ परम सुजान॥ चेदिपतिके तनयको
अभिषेक अति अभिराम। कियो भूपन्ह सङ्ग लीन्हे बिहित सुबिधि ललाम॥ भयो बिधिवत यज्ञ
पूरण धर्मनृपको पर्म । सुखारम्भ अविघ्न बऊ धन धान्यमय सह शर्म ॥ समाप्त कीन्हों धर्म भूपति
राजसूय सुयज्ञ। सहाय करता पाय कै श्रीकृष्णकों सर्बज्ञ ॥ कियो अबभृथ स्नान जब यज्ञांन्तमे
नृपधर्म। आय कै सब भूप तब यों कहन लागे पर्म॥साम्राज्य लहि तुम भए बर्धित भाग्यतें अभि
राम। अजमीढकुलके सुयशतें तो सुयश भो अतिनाम॥ बिबिधि बिधिसों भए पूजित देऊ आज्ञा
भूप। जाहिँ अपने नगरकों हम सकल नृप सुखरूप ॥ सुनि युधिष्ठिर नृपनके यहि भाँतिके बर

बैन। बिदा कीन्हे दै यथोचित परम पूजन चैन ॥ प्रीतिसों मम इहां आए यज्ञमें सुखदाय। कहो भ्रातनसों सु इनके देशलों सह जाय ॥ कुसलसों पऊंचाय इनकों बेगि आवऊ बीर। एक एकन सङ्गते तव चले धर्म्म गँभीर ॥ धृष्टद्युम्न बिराटके सँग द्रुपदके सँग पार्थ। भीष्म नृपधृतराष्ट्रके सँग बली भीम महार्थ ॥ सपुत्र द्रोणाचार्य्यकों सहदेव अति मतिमान। सुबलके सँग गए पठवन नकुल बीर महान ॥ द्रौपदीके तनय अरु अभिमन्यु ए बर बीर। गए पर्वतके नृपनके सँग पठवन धीर ॥ गए पठवन और छत्री अन्य जे हे भूप। यहि भाँति कीन्हों बिदा सबको पूजि कै अनुरूप ॥ गए पूजा पाय कै जे रहे द्विजबर सर्ब। यों युधिष्ठिरसों कहो तव बासुदेव अखर्ब ॥ देऊ आज्ञा जाहि हमऊँ द्वारिकाकों भूप। भाग्यते भो प्राप्त तुमकों राजसूय अनूप ॥ यह बचन सुनि कै कहो ऐसे धर्मनृप अभिराम। कृपाते तव यज्ञ बर हम लहो करुणाधाम ॥ कहै कैसे चलन तुमकों सुनऊ हे प्रियप्राण। तुम्है देखैं बिना लहत न मोदकों सुखदान ॥ अवश्य तुमकों योग्य जावैं द्वारिकाकों बीर। बचन सुनि यह धर्मनृप सह कृष्ण समुद गभीर ॥ बिदा ऊबेकों गए तव प्रथाके चलि पास। साम्राज्य पायो पुत्र तव तो पुख्वतें सुखरास ॥ सिद्धार्थ बसुमत पुत्र भे तव लहऊ मोद महान। बिदा तुमसों होय चाहत द्वारिका हों जान ॥ बिदा कुन्ती सह सुभद्रा द्रौपदीसों होय। कढे अन्तः पुर सु बाहेर महा आनद भोय॥ स्नान करि दै दान सुनि कै द्विजनसों स्वस्तैन। सुरथ दारुक तहाँ ल्यायो मेघसम गति औन ॥ तार्क्ष्यके तन सुरथकों करिकै प्रदच्छिण धीर। चढे रथपर चले द्वारावतीकों बलबीर ॥ चले प्यादे साथ रथके सहित भ्रातन्ह धर्म। भरे लोचन बारिसों अतिप्रेम पूरित पर्म ॥ तव करो ठाढो सुरथ हरि इमि कहन लागे बैन। प्रजा पालन कीजियो व्है सावधान सचैन॥ प्रीतिसों सम्पन्न कीजो बान्धवनकों सर्ब। यहिभाँति कहि नृप धर्मसों श्रीकृष्ण बचन अखर्ब ॥ गए द्वारावतीकों व्हैं बिदा श्रीबलबीर। सहित भ्रातन्ह धर्म नृप गे धामकों धरिधीर ॥ सभा गृहमे नृप सुयोधन रहे शकुनि समेत। लखत शोभा परम अद्भुत भरे अचरज चेत ॥ * * * * * * * * * * * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्वणि राजसूय शिशुपालबधवर्णनोनाम नवमोऽध्यायः ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * * *

भो समाप्त जब यज्ञ बर राजसूय अतिमान। शिष्यन सह आए तहाँ द्वैपायन तपभान ॥
देखि युधिष्ठिर नृप उठे सह भ्रातन अभिराम। अर्घ्य पाद्य दै कै दियो आसन कनक ललाम ॥
बैठि सु मुनि नृपसों कह्यो बैठन कृपा समेत। बिदा होनकों मुनि कह्यो सुनि सो बचन सनेत ॥
कह्यो युधिष्ठिर नृपति तव गहि मुनि चरण ललाम। संशय जो मनमे रह्यो सहित बिनय अभिराम॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

संशय हमकों जो भयो सुनिए मुनिवर तौंन । करता तास निवृत्तिको तुम बिनु जगमें कौन ॥
त्रिविधिकहे उतपात जो नारद मुनि तपधाम । अन्तरूक्ष अरु दिव्य अरु पार्थिव जो अतिभाम ॥
भए चेदिपतिके मरत ए तीनो उतपात । ताकौं लखि संशय हमें कहो तास फल तात ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

भूपतिके सुनिके बचन बोले व्यास अधर्ष । रहिहै फल उतपातको भूपति तेरह वर्ष ॥
तुमकौं कारण करि नृपति क्षत्रवंशको नाश।दुर्योधनको दोषलहि ह्वैहै नृपति प्रकाश॥
भीमार्जुनको लहि प्रबल बिक्रम धूप अखर्व। क्षयको क्षत्री लहैंगे जे धरणीपै सर्व॥
ह्वैहै सम निशान्तमें तुम्हें आजु नृपधर्म । तामें दरशन होय गो नीलकण्ठको पर्म ॥
पिन्टराजकी दशाकौं देखत उग्र स्वरूप । हर दरशन ऐसे तुम्हें ह्वैहै हे कुरुभूप ॥
यासे अब तुम शोच कछु करहु न नृप अनुरूप । करत कालको अतिक्रम कौन जगतमें भूप ॥
यहकहिकै कैलाशकों गए महामुनि व्यास। शोच भरे नृपधर्म इमि बोले भ्रातन्ह पास॥
सुने बचन सबव्यासके सत्यसुमेरु समान। क्षत्र निधन कारण हमें मरिबो सुयश महान॥
फाल्गुण बोले बचन सुनि धर्मराजके भूप । शोच न कीबो उचितहै बुद्धि बिसनके रूप॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बोले धर्मराज इमि बैंन । व्यास बचन सुधिकरि मतिऐंन ॥ करत आजुतें मैं पन जौन। सुनऊँ बन्धु भीमादिक तौंन ॥ वर्ष त्रयोदशलौं मैं नाहि । बचन कठोर कहौं गो ताहि॥ काहूसोंहूं होय सगर्व। करि बिचार तजि बुद्धि अखर्व॥सुत महँ अन्य माहियुत चाव। राखों गो मैं निति सम भाव॥ जातैं भेद न होय अमूल। भेद महा बिग्रहको मूल॥ बिग्रह रक्षण करौं बिचारि। सम पर जन्य रहौं निरधारि॥ जातैं निन्दा करै न लोक। होय न बिग्रह कारण तोक॥ धर्म नृपतिके सुनि इमि बैंन। तथा चले पाण्डव मतिऐंन॥सभामाह करि यह निरधार । धर्मराज सह बन्धु उदार॥ देव पितृ करि तर्पित भूप। करि मङ्गल अस्नान अनूप॥भ्रातन सह भरि मोद अखर्व॥करिकै बिदा भूपगण सर्व॥ कियो युधिष्ठिर स्वपुर प्रवेश। सचिव पुरोहित सह सुखदेश॥ रहे सु योधन सकुनि समेत। लखत सभा भरि अद्भुत चेत॥ लखो फटिकमय थल अभिराम॥ भरो मनो जलसौं अति माम॥ तहाँ छलनको राखि बिचारि। चले सुयोधन बसन उतारि॥ तहाँ जानिथल गए लजाय। आगेचले शोचसौं छाय॥ भरो फटिक सर जलसौं जौंन । भूमि समान जानिकै तौंन॥ चले गिरे तामें भ्रमछाय ॥ लखिकै हँसे भीम बरकाय । बसन पठायो सुनि नृपधर्म। आगे चले पहिरिसो पर्म ॥ भीमार्जुन अरु माद्रीनन्द । लखो हँसत कौरव कुलचन्द॥ भरो अमर्ष क्रोधसों छाय॥

स०प० प्रीतिसों मम इहां आए यज्ञमे सुखदाय। कहो बैन। बिदा कीन्हे दै यथोचित परम पूजन चैंन ॥ कुसलसों पऊचाय इनकों बेगि आवऊ बीर। एक एकन भ्रातनसों सु इनके देशलों सह जाय ॥ भीष्म नृपधृतराष्ट्रके सङ्गते तब चले धर्म गँभीर ॥ धृष्टद्युम्न विराटके सँग द्रुपदके सँग पार्थ। सुबलके सँग गए पठवन सँग बली भीम महार्थ ॥ सपुत्र द्रोणाचार्य्यकों सहदेव अति मतिमान। गए पर्वतके नृपनके सँग नकुल वीर महान ॥ द्रौपदीके तनय अरु अभिमन्यु ए बर बीर। यहि भाँति कीन्हों बिदा सबको पूजि पठवन धीर ॥ गए पठवन और क्षत्री अन्य जे हे भूप। यों युधिष्ठिरसों कहो तब बासुदेव अखर्ब ॥ कै अनुरूप ॥ गए पूजा पाय कै जे रहे द्विजबर सर्ब। भाग्यते भो प्राप्त तुमकों राजसूय अनूप ॥ यह बचन देऊ आज्ञा जाहि हमहूँ द्वारिकाकों भूप। कृपाते तब यज्ञ बर हम लहो करुणाधाम ॥ कहे कैसे सुनि कै कहो ऐसे धर्मनृप अभिराम। अवश्य तुमकों चलन तुमकों सुनऊ हे प्रियप्राण। तुम्हे देखेँ बिना लहत न मोदकों सुखदान ॥ बिदा ऊबेकों योग्य जावैं द्वारिकाकों बीर। बचन सुनि यह धर्मनृप सह कृष्ण समुद गभीर ॥ सिद्धार्थ बसुमत पुत्र भे गए तब प्रथाके चलि पास। साम्राज्य पायो पुत्र तव तो पुण्यतेँ सुखरास ॥ बिदा कुन्ती सह सुभद्रा तव लहऊ मोद महान। बिदा तुमसों होय चाहत द्वारिका हों जान ॥ स्नान करि दै दान सुनि कै द्विजनसों द्रौपदीसों होय। कढे अन्तः पुर सु बाहेर महा आनद भोय ॥ तार्क्ष्यके तन सुरथकों करिकै प्रदक्षिण स्वलैन। सुरथ दारुक तहाँ ल्यायो मेघसम गति ऐन ॥ चले प्यारे साथ रथके सहित भ्रातन्ह धर्म। भरें धीर। चढे रथपर चले द्वारावतीकों बलबीर ॥ तब करो ठाढो सुरथ हरि इमि कहन लागे बैन। प्रजा लोचन बारिसों अतिप्रेम पूरित पर्म ॥ प्रीतिसों सम्पन्न कीजो बान्धवनकों सर्व। यहिभाँति कहि नृप पालन कीजियो व्है सावधान सचैंन ॥ गए द्वारावतीकों व्हैं बिदा श्रीबलबीर। सहित भ्रातन्ह धर्म धर्मसों श्रीकृष्ण बचन अखर्ब ॥ सभा ग्रहमे नृप सुयोधन रहे शकुनि समेत। लखत शोभा परम नृप गे धामकों धरिधीर ॥ अद्भुत भरे अचरज चेत ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्वणि राजसूय शिशुपालबधवर्णनोनाम नवमोऽध्यायः ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ *❦*❦**

भो समाप्त जब यज्ञ बर राजसूय अतिमान। शिष्यन सह आए तहाँ द्वैपायन तपभान ॥
देखि युधिष्ठिर नृप उठे सह भ्रातन अभिराम। अर्घ्य पाद्य दै कै दियो आसन कनक ललाम ॥
बैठि सु मुनि नृपसों कहा बैठन कृपा समेत। बिदा होनकों मुनि कहो सुनि सो बचन सनेत ॥
कहो युधिष्ठिर नृपति तब गहि मुनि चरण ललाम। संशय जो मनमे रहो सहित बिनय अभिराम ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

संशय हमकों जो भयो सुनिए मुनिवर तौंन। करता तास निवृत्तिको तुम बिनु जगमे कौन॥
त्रिविधिकहे उतपात जो नारद मुनि तपधाम। अन्तरूर्च अरु दिव्य अरु पार्थिव जो अतिमाम॥
भए चेदिपतिके मरत ए तीनो उतपात। ताकौं लखि संशय हमै कहो तास फल तात॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

भूपतिके सुनिकै बचन बोले व्यास अधर्ष। रहिहै फल उतपातको भूपति तेरह बर्ष॥
तुमकौं कारण करि नृपति क्षत्रवंशको नाश।दुर्योधनको दोष लहि ह्वहै नृपति प्रकाश॥
भीमार्जुनको लहि प्रबल विक्रम धूप अखर्ब। व्ययको त्तची लहैंगे जे धरणीपैं सर्ब॥
व्हैहै स्वप्न निशान्तमे तुम्हे आजु नृपधर्म। तामे दरशन होय गो नीलकण्ठको पर्म॥
पितृराजकी दशाकौं देखत उग्र स्वरूप। हर दरशन ऐसे तुम्हे ह्वहै हे कुरुभूप॥
यासे अब तुम शोच कछु करऊ न नृप अनुरूप। करत कालको अतिक्रम कौन जगतमे भूप॥
यहकहिकै कैलाशकों गए महामुनि व्यास। शोच भरे नृपधर्म इमि बोले भ्रातन्ह पास॥
सुने बचन सबव्यासके सत्यसुमेरु समान। क्षत्र निधन कारण हमै मरिबो सुयश महान॥
फाल्गुण बोले बचन सुनि धर्मराजके भूप। शोच न कीबो उचितहै बुद्धि बिसनके रूप॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बोले धर्मराज इमि बैंन। व्यास बचन सुधिकरि मतिऐंन॥ करत आजुतें मै पन जौन। सुनऊँ बन्धु भीमादिक तौंन॥ बर्ष त्रयोदशलौं मैं नाहि। बचन कठोर कहौं गो ताहि॥ काहूसोऊं होय सगर्व। करि विचार तजि बुद्धि अखर्ब॥सुत महँ अन्य साहियुत चाव। राखों गो मै निति सम भाव॥ जातें भेद न होय अमूल। भेद महा विग्रहको मूल॥ विग्रह रत्तण करैं विचारि। सम पर जन्य रहैं निरधारि॥ जातें निन्दा करै न लोक। होय न विग्रह कारण तोक॥ धर्म नृपतिके सुनि इमि बैंन। तथा चले पाण्डव मतिऐंन॥सभामाह करि यह निरधार। धर्मराज सह बन्धु उदार॥ देव पितृ करि तर्पित भूप। करि मङ्गल अस्नान अनूप॥भ्रातन सह भरि मोद अखर्ब॥करिकै विदा भूपगण सर्ब॥ कियो युधिष्ठिर स्वपुर प्रवेश। सचिव पुरोहित सह सुखदेश॥ रहे सु योधन सकुनि समेत। लखत सभा भरि अद्भुत चेत॥ लखो फटिकमय थल अभिराम॥ भरो मनो जलसों अति साम॥ तहाँ हलनको राखि बिचारि। चले सुयोधन बसन उतारि॥ तहाँ जानियल गए लजाय। आगेचले शोचसों छाय॥ भरो फटिक सर जलसौं जौन। भूमि समान जानिकै तौन॥ चले गिरे तामे भ्रमछाय॥ लखिकै हँसे भीम बरकाय। बसन पठायो सुनि नृपधर्म। आगे चले पहिरिसो पर्म॥ भीमार्जुन अरु माद्रीनन्द। लखो हँसत कौरव कुलचन्द॥ भरो अमर्ष क्रोधसों छाय॥

तिन्है न लखो सो चलो छपाय ॥ लखि आगे छिति नदी समानि। तामे पैरनको अनुमानि ॥ वसन उतारि परे तँह कूदि। गिरे तहाँ छितिपर भ्रममूदि ॥ हमे देखि तँह जन समुदाय। उठि तँहते फिरि चले लजाय ॥ खुलो कपाट देखि सभद्वार। पैठत यामे भिरोकपार ॥ घूर्मित व्हैकै रहो निहारि। आगे चलो क्रोधको धारि ॥ तैसो द्वार देखिकै और। लगो कपाट भूप शिरमौर ॥ बलसों खोलन लगे केवार। सुखभर गिरो सो भूप उदार ॥ उठि आगेचलि देखो भूप। लगो कपाठ द्वार अतिरूप ॥ तहाँ रहे ठाढे व्है जाय। खोलि न सके भ्रमसम पाय ॥ ऐसें छलित होय तँह भूप। भयो दुखित सक्रोध कुरूप ॥ व्हैकै बिदा पाण्डवन पाश। चले क्रोध कीन्हें अप्रकाश ॥ भरो खेद दुर्योधन भूप। हास्तिनपुरको चलो कुरूप ॥ पांडव श्री पावक को ताप। ताको कर हृदय सह थाप ॥ नृपगण पांडव बश निरधारि। दुर्योधन मन पाप बिचारि ॥ भयो बिवर्ण बिचार अनेक। करत लहत सिद्धान्त न एक ॥ धर्म नृपति श्रीचिन्ति अनूप। भयो प्रमत्त सदृश कुरु भूप ॥ सौबल व्यग्र महा तब चाहि। फिरि फिरि बूझत कहत न ताहि ॥ हठ करि सकुनि शोचको रूप। बूझो तब बोलो कुरुभूप ॥ ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ भू बश करी युधिष्टिर सर्व। जिष्णु शस्त्र बल पाय अखर्व ॥ कियो पांडवन यज्ञ महान। भए भूमिपर इन्द्र समान ॥ तिन्है देखि भरि भूरि अमर्ष। मातुल दहत रहत तजि हर्ष ॥ कृष्ण हनो शिशुपाल नरेश। रहे बिलोकत भूप अशेष ॥ काहूँ न कियो तास प्रतिकार। लहि पांडव भय भूप उदार ॥ दए महीपन्ह रत्न महान। पंडु पुत्रकहँ बणिक समान ॥ देखि पांडवनको श्रीशुद्ध। दहत अमर्ष हुताशन उद्ध ॥ हम मातुल यह कियो बिचार। अमरष सहो न जात उदार ॥ गरल खाँहि कै अग्नि प्रवेश। करै मरण जिय बैंतन बेश ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शक्ति मानको पुरुषव्है सहँ अमर्ष उदार। ऋद्धिमान लखि शत्रुकों आपुहि निदलाकार ॥
इस्त्री पुरुष न षण्ड सम हैं हम मातुल भूप। सहै जो सम्पति शत्रुकी लखि अति उग्र स्वरूप ॥
सार्बभौम बसुमान अति कीन्हो यज्ञ महान। या बिधिको लखि शत्रुको जरै न हमै समान ॥
हरिबेकों असमर्थ हौं ताकी ऋद्धि उदार। एकाकी असहायकों मरिबो भलो बिचार ॥
दैव करत सो होतहै पौरुष होत निरर्थ। करे बल हम पूर्व जे भए ते सिगरे व्यर्थ ॥
तातैं मानत प्रबल हम दैव यतनतैं सर्व। नतरु रहत अबलौं सु क्यो कुन्तीपुत्र अखर्व ॥
ताकी श्री लखि कै सभा कियो जो हास महान। मातुलसो हमकों दहत निशिदिन अग्नि समान ॥
कहियो तुम धृतराष्ट्र सौं लहि अमर्ष अतिमान। दुःखित व्है हम जाहिगे हे मातुल यमधाम ॥

॥ * ॥ सकुनिरुवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

नृप युधिष्टिर सौं अमर्ष न तुम्हैं करिबे योग। आपनी श्री जानिए जो करत पांडव भोग ॥ बचे पांडव भाग्यबश तुम किए यत्न अनेक। भए ते सब व्यर्थ उनपैं नही लागे एक ॥ लहीहै तिन

द्रौपदीसह द्रुपदपुत्र सहाय । वासुदेव सहाय जाके महाबल वरकाय ॥ पिताके तिन अंशसे श्री लहीहै अतिमान । बढे ताके तेजसो तो रुदन व्यर्थ सुजान ॥ धनंजय गांडीव धनु दै इषुधि अक्षय जौन। दिव्य अस्त्र अनेक पाए पूजि पावक तौन॥ धनुषतैं अरु बाहुबलतैं किए बस क्षिति पाल। अग्नितै मय दैत्य रक्षित कियो बीर विशाल ॥ सभा मय करि रचित तहँ बसु सहस राखे रक्ष। बहत ताकों तौन यामे रोइबो का पक्ष ॥ कहतहेैा असहाय आपुहि जो सुयोधन बीर। तौन मिथ्या रावरेहैं बन्धु शत रणधीर॥ द्रोण अतिरथ पुत्र सह अरु कर्ण अति बलबीर। कृपाचार्य्य सभ्रात हम नृप सोमदत्त सुधीर॥ इन्हहि सहित सहाय तुमसब भूमि जीतहु भूप । *॥ दुर्योधनउवाच॥ *॥ तुम सहित ए अतिरथन्ह हम बल बाँधिकै अतिरूप ।। पांडवनकों जीति पहिले भूमिकै बश सर्व। स्ववश दीजै सभा सह क्षितिपाल सकल अखर्व।। *॥ सकुनिरुवाच॥ धनञ्जय अरु वासुदेव सभीम धर्मनरेश । नकुल अरु सहदेव सह सुत द्रुपद नृप बलवेश ॥ इन्है जीतन योग्यहै नहि सुरासुर बलधाम । दिव्यास्त्र जानत सकल ए हैं महारथ धनुमाम॥ जाहिँ जीते जौन बिधि हम तौन जानत भूप । कहत तुमसों तौन सुनि हिय माह धरहु अनूप ॥ *॥ दुर्योधनउवाच॥ *॥ मरै सुहृद न सैन जाते होय बश नृपधर्म । कहहु तौन उपाय मातुल महामति अतिपर्म ॥*॥ सकुनिरुवाच॥ *॥ द्यूतप्रिय नृप धर्म जानत द्यूत खेलि न भूप ।आन्हान कीन्है द्यूततैं न निवृत्त होत अनूप ॥ द्यूतमे हों कुशल मो सम नही त्रिभुवन माँह । करहु तुम आह्वान यातैं द्यूतको नरनाह ॥ राज्यसह श्री जीति ताकी लेहिगे हम सर्ब । कहहु तुम धृतराष्ट्र पैं यह मंत्र परम अखर्व ॥ *॥ दुर्योधनउवाच॥ *॥ कुरुराज सों तुम प्रथम मातुल आपु कहिए जाय। प्रथम नहि कहि सकत हम फिरि कहब औसर पाय ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ देखि आए सह सुयोधन धर्म नृपको यज्ञ । धृतराष्ट्र सों एहि भाँनि सैाबल कहन लागे तज्ञ ॥ गन्धारराजके तनयसों जो कियो मंत्र उदार । सकुनि नृप धृतराष्ट्रसों तेहि मंत्रके अनुसार॥ ॥ *॥ सकुनि रुवाच॥ *॥ कहन लागे नृप सुयोधन भयो दुर्बल भूरि । जानिए नहि कौनसो हियमाह कारण पूरि ॥ रहत चिन्ता भरो होय बिबर्ण गोतम सर्ब। परत जानि न शत्रु संभवको न हेतु अखर्ब ॥ नही तुम सुत ज्येष्ठको हिय शोक करत विचार। *। धृतराष्ट्र उवाच । * । कहि सुयोधन शोकको का मूल पुत्र उदार ॥ सुनो चाहत सकुनि मोसों कहत दुर्बल तोहि । पुत्र कृसता को न कारण परत हमकों जोहि ॥ राज्यको अधिकार तुमको दियोहै हमसर्ब। सकल भ्राता सुहृद तुमसों करत प्रीति अखर्ब॥ बसन दिव्य सुस्वाद भोजन यान तुर सुखदान। परम सज्या गेह उत्तम बास रूप निधान ॥ प्रजा जन अनुसरत साशन करत आज्ञां जौन। पुत्र दुर्बल दीन ताको कहहु कारण कौन ॥ *॥ दुर्योधन उवाच ॥ * ॥ करत भोजन बसन पहिरत यथा कुपुष भूप। लखत धारि अमर्षकों हम काल अन्त अनूप॥सन्तोष दाया गर्ब भय जो करत

१०८० धारण भूप। लहतहै नहि महत श्री से कहत सुमति अनूप ॥ रुचतहै नहि भोग हमकाँ रहत रहत शरीर। पाण्डवनकी देखिकै अति ज्वलित ऋद्धि गँभीर ॥ देखि शत्रु समृद्ध आपुहि हीन मानि नरेश। भयो यातैं दीनमन तन क्षीण बिबरण बेश ॥ अट्ठी स्नातक द्विज अठासीसहस जाके पास।रहत दाशो तीस तीस सु करैं सेवा जास॥दश सहस्र सु विप्र भोजन करत जाके धाम। धर्म नृपके साथ सुवरण पात्रमे अभिराम॥कांबोज नृप बहु रङ्गके बहु मूल्य कंबल्ल जान।गज अश्व गोबरवाम अनगण रूप गुणकी भौन॥उष्ट्र खच्चर भरे अनगण कनक अति अभिराम।हेतु वलिके लिए आए धर्मनृपके धाम ॥ रत्न नाना भाँतिके बहु लएँ अमित अनूप। यज्ञमे चहुँ ओरके सब तहाँ आए भूप॥ दयो कुन्तीपुत्रकाँ तिन आइ नृपन्ह महान। नहि लखो हम यहि भाँतिको कहुँ धनागम अति मान॥ अपार देखि धनौघ अरिको सुनहु हे नृप पर्म। भरे चिन्ता रहत निशि दिन नेक लहतन शर्म ॥ क्षपी कारक बिप्र लीन्हैं परम वलिपशु सर्व। द्वारपैं ते खरे बारित रहत नित्य निखर्ब॥कनक केते कुम्भ लीन्हैं भरे उदक ललाम। यज्ञांतके सुस्नान कारण महा मङ्गल धाम॥ औषधिनको सुरस दीन्हों ओषधीश पठाय। बरुण श्रीसलिलेशके पठए महा सुखदाय॥ पूर्व पश्चिम और दक्षिण सिन्धुको बरवार। रत्न रचित सुकुम्भ आए भरे सहसन भार॥ वासुदेव सु शङ्खमे भरि सलिल उत्तम तौन। सांम्राजको अभिषेक कीन्हों महा मङ्गल भौन॥देखिकै सो भयो हमकाँ शोक अति ज्वर रूप। और अद्भुत लखो तँह सो कहत सुनिए भूप ॥ विप्र परिसन हार तँहा रहे लक्ष प्रमान। शङ्ख धुनिको रही संज्ञा बँधी ज्ञापक बान॥ होतहै रोमांच हमकाँ शङ्ख धुनि सुनि भूप। राति दिवश अनन्त बाजत घनस्वन अनुरूप ॥ सभासो नृपगणनतैं अति लसी यों अभिराम। यथा उडुगण सङ्ग शशि लहि बिमल गगण बिराम॥ पार्थिवन बहु भाँतिके बहु रत्नके बर भार। दिए कुन्तीतनयकों तिन वणिक सदृश उदार ॥ इन्द्र वरुण कुबेरकी श्रीयथाहै अभिराम। तथा सम्पतिहै युधिष्टिर नृपतिकी अतिमाम॥देखि सो हों दहत हौं नहि शांति पावत भूप। ॥ * ॥ सकुनि रुवाच ॥ * ॥ पांडवनकी लखो लक्ष्मी भौन अतुल अनूप॥ पांडवी श्री हरणको यह सुनो यत्न नबीन। द्यूतमे मो सदृश जगमे है न और प्रवीन॥ द्यूत प्रियकों ते यहै नहि खेलि जानत तौन। द्यूतकों रणकौं बोलाएँ करत आतुर गौन॥ नियत ताकाँ जीतिहैँ हम कपट करिकै भूप। हरैं गे सब रिद्धिताको ज्वलित ज्योत्स्ना रूप ॥*॥ वैशम्पायनउवाच॥*॥ कहो आतुर सुनि सुयोधन सकुनिके ए बैंन। धृतराष्ट्रसों ए अब बिरहैं महामतिके औंन ॥ जीति लेहैं पँडु सुतकी परम सोश्री सर्व। द्यूतकाँ आह्वान कीजै तास तात अखर्व ॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ * ॥ महा मति सो बिदुर मंत्री बूझि लीजै ताहि। द्यूत करिवो कहैगे हम तास मत अवगाहि ॥ * ॥ दुर्योधन उवाच ॥ * ॥ नही करिवो द्यूतकहिहैं बिदुर नृप मतिमान। तात कीन्हें द्यूत बिनु हम नियत तजिहैं प्राण ॥ मरे हमरेबिदुर सह तुम सुखी रहिहो भूप। हमे बिनु यह भोगकी जो भूमि

सकल अनूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ आर्त मुनि के वचन ताके प्रणययुक्त नरेश। काव्य कारिण बोलि कै इमि कियो भूप निदेश ॥ सहस्र खम्भ लगाय मणिमय सभा अति अभिराम । मनोरमा शतद्वार जामे आसु रचऊ ललाम ॥ रचित करि कै सभा ऐसी बेगि कहियो आय । शान्ति अर्थ सुपुत्रके इमि कहो नृप सुखदाय ॥ बोलि कै तब विदुरकौं इमि लगे बूझन भूप। आपु जानत द्यूतकै सब दोषकौं अनुरूप ॥ * ॥ विदुरउवाच ॥ * ॥ व्यवसायमे एहि रावरे हम नही मोदत पर्म। पुत्र भेदन होय जातें कीजिए सो कर्म ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ विदुर पुत्रनमे न मेरे बढै विग्रह रूप । देव ऐसी करै मोपै कृपा परम अनूप ॥ अशुभ कै शुभ होय कारबो द्यूत सुहृद समान । विदुर करिबो भयो निश्चय दैव अति बलवान ॥ विदुर हम तुम भीष्म द्रोण सु तहाँ बैठैं पास । द्यूतमे नहि होयगो वश दैव अनय प्रकास ॥ जाऊ खाण्डव प्रस्थकौं तुम नृपयुधिष्ठिर पास । बोलि ल्यावऊ यह न कीजो तहाँ मंत्र प्रकास ॥ दैव इच्छाप्रबल जातैं भयो यह उत्पन्न। वचन सुनि धृतराष्ट्रको व्है विदुर चिन्तासन्न ॥ गए भीषम पास बृद्ध बिचार सुमति उदार ॥ * ॥ जनमेजय उवाच ॥ * ॥ भयो कैसें द्यूत यह छिति छत्रको संहार ॥ रहे तासे मुख्य कै नृप द्यूत भायो जाहि । द्यूत रूप अनर्थ सो नहि रचो कहिए काहि ॥ छत्रनाशक द्यूतकौं मुनि कहऊ सह विस्तार ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ विदुरको मत मानिकै धृतराष्ट्र नृप सुखसार ॥ एकान्तमे सुतसौं लगे एहिभाँति कहन सुजान। पुत्र द्यूत न करऊ सम्मत विदुरको न महान ॥ कहैं गे नहि विदुर हमसौं अहित कहै जौंन । लेत मानि सो परम हित हम विदुर भाषत तौंन ॥ बृहस्पति जो इन्द्रसौं बर कही नीति प्रमान । पढी सो सब विदुर सहित रहस्य सुमति महान ॥ बचनमे हम चलत ताके जानि कै मतिधाम । यथा उद्धव वृष्णि कुलमे महामति अभिराम ॥ द्यूतमे अति भेद पुत्र बिलोकि परत प्रकाश । करऊ द्यूत न भेद बाढे राज्य लहि है नाश ॥ पिता माता योग्य कारज कियो हम तो तौंन । प्राप्त तुमको भयो सो पद पितामहको जौंन ॥ शास्त्रविद सुत ज्येष्ठ पायो राज्य पद अभिराम । औरकौं जो अलभ्य सोहै भोग्य तुम हि ललाम ॥ पाय राज्य समृद्ध करिबो शोक उचित न तोहि ॥ शोकको सुत जान कारण सो सुनावऊ मोहि ॥ * ॥ दुर्योधन उवाच ॥ * ॥ नही मोकौं रुचति है साधा रणी श्री भूप। पाण्डवनकी देखि कै श्री महत ज्वलित स्वरूप ॥ पाण्डवनके स्ववश पृथ्वी देखि कै अतिमान । दुःख पूरित धीरतासौं धरेहौं हौं प्रान ॥ सिन्धुतटके भूप बासी लए रत्न उदार । लखे बारित खरे अनगण धर्मनृपके द्वार ॥ जैष्ठ हमकौं जानि कै नृपधर्म करि सनमान । कहो लीबो रत्नको जो दण्डको अतिमान ॥ रत्न ल्याए भूप जिनि सो लेत हम अभिराम। हारि कै व्है रहे ठाढे लहो अन्त न नाम ॥ *—*—*—*—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिन्दु शरसा ल्याय कै मय रत्न फाटिक जौन । सभा बिरची तहा हौं किय देखिवेकौं गौंन ॥
भरो जलसौं सहित पङ्कज स्फटिक मय स्थल देखि । चलो बस्त्र उठाय कै तँह हँसो भीम निरेखि ॥
क्रोध करि हौं कियो चाहो छुद्रि ताकी व्यर्थ । क्षमा करिकै रहो आपु हि जानि कै असमर्थ ॥
भीमसेन हि मारि वेकौं हियेमाह बिचारि । गयो रहि शिशुपाल बारी दशाकौं निरधारि ॥
तहाँ तैसी देखि बापी पूर्व भ्रम मन ल्याय । चलो सहसा जानि थल हौं गिरो जलमे जाय ॥
कृष्ण पारथ सहित कृष्णा हसैं हम हि निहारि। लहत हौं अति व्यथाकौं अपमान तीन बिचारि ॥
राज प्रेरित किङ्करन पट दयो हमकौं आय । ता समैको दुःख हमसो तात बरणि न जाय ॥
द्वार हों नहि जहाँ तेहाँ जानि द्वार समान । घाव लागो सभ्रम पैठत भाल माहि महान ॥
आय कै सहदेव हमकौं गहो शोचि उदार । कहो इत व्है चलु भूपति परम सुन्दर द्वार ॥
धृतराष्ट्रसुत उत जाइये है द्वार शुलभ महान । भीमको यह वचन हमकौं भयो शल्य समान ॥
नाम जिनको सुनो नहि हम पूर्व कबहूँ भूप । रत्न ऐसे लखे तेहाँ परम दिव्य स्वरूप ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जितने रहे भूमि पर भूप । द्वीप शैल बन बसत अनूप ॥ अबलौं सुने न जिनके नाम । ते लीन्हे धन रत्न ललाम ॥ जिनकी संख्या कही न जाय । देखत पार शकै को पाय ॥ जो देखत भो अवरज मोहि । कहलौं कहौं तात सब तोहि ॥ सो धनधर्म नृपति कहँ आय । तिन दीन्हौं अति आनद पाय ॥ सो लखि बढो तापअति तात । करत सो मोहियमहँ उतपात ॥ जिन दीन्हें गज अयुत अनूप । तेऊ रुके द्वारपर भूप ॥ चित्ररथो गन्धर्व नरेश । जो बासवको अनुग सुरेश ॥ दिव्य चारि शत दीन्ह अर्व । बायु सदृशगति माह अखर्व ॥ बिराट मत्स्यनृप कुञ्जर मत्त । बर द्वै सहस दये जनमत्त ॥ द्वै सहस हय छव्विस नाग । नृप बसुदान दए बडभाग ॥ दासी सहस चतुर्दश वेश । दास अयुत पटु बिहित निदेश ॥ हय गज रत्न अमेय बिशाल । दयेयुधिष्ठिरकों पाञ्चाल ॥ बासुदेव करिकै सनमान । दयो किरीटीकौं सुखदान ॥ सहस चतुर्दश कुञ्जर तौंन । घनसे बरषत मदजल जौंन ॥ कृष्ण पार्थआत्मा सुखदान । पार्थ कृष्णको प्राण समान ॥ बासुदेव अर्जुनके अर्थ । स्वर्ग लोककौं तजो समर्थ ॥ कृष्ण अर्थ अर्जुन मतिमान । चाहत दयो महाबल प्रान ॥ मलयाधीश मलयको सार । कनक पात्र भरि अमित उदार ॥ धन मणि रत्न अनेकन भार । लै आए पाण्डवनृप द्वार ॥ रूपे सुमणि मुकुतनके जाल । गज असंख्य गिरि सदृश बिशाल ॥ पठए सिंहल भूप उदार । बारित लखे धर्म नृप द्वार ॥ लाखन भूप महाबल रास । बारित देखि पौरिके पास ॥ ऐसो बिभव शत्रुको जोहि । अतिशय भई मूर्छा मोहि ॥ तीनि अयुत गजप असवार । धर्मनृपतिके भृत्य उदार ॥ सादी पद्म एक बलवान । अर्बुद रथ गज मए महान ॥ पदातिकी संख्या को कहै । भक्ष्य भोज्य जे नितिप्रति लहैं ॥ भोजन कियो कियो नहि जौंन । निर्णय करति

द्रौपदी तौन ॥ दुऊन दियो नहिं दख समान। भूप द्रुपद श्रीकस सुजान॥सम्बन्ध सु मैत्रीके भाव। दयो जथेच्छासों भरि चाव ॥ मूर्धाभिषिक्त भूप समुदाय। सेवत धर्म नृपतिकौं आय ॥कोटिन गज घटोत्री जौन। दई युधिष्ठिरकौं तिन तौन॥ अभिषेकार्थ भाण्डनृप सर्व।ल्याय कनकके देत अखर्व॥ कञ्चन रथ बाल्हीक ललाम। दयो अस्खलित वर अभिराम॥ जोरत भयो सु दच्छिण राय।अतिही महत हर्षसौं छाय॥दयो चेदिपति ध्वजा लगाय। मख सु दाक्षिणात्य नृप ल्याय॥नृप बसु दान दयो वरपील । ल्यायो मत्स्य सकट समशील ॥ जल अभिषेक अवन्तीनाथ । दियो उठाय आपने हाथ॥ चकितान दिय आनि निषङ्ग । काशीपति दिय धनु बहुरङ्ग॥ मणिन जडित असि शल्य ललाम। दीन्हों ल्याय परम छबिधाम॥ धौम्य व्यास मुनि नारद सङ्ग।देवल असित भरे मुद अङ्ग॥ यामदग्नि सह कियो भिषेक । धर्मनृपतिको सहित बिबेक ॥ धरो सात्यकी छत्र ललाम। व्यजन भीम अर्जुन अभिराम॥ पूर्व कल्पमँह इन्द्र हि जौन। शङ्ख प्रजापति दीन्हों तौन॥दियो चीरनिधि तौन पठाय।वारुण महत परम सुखदाय॥तातैं कृष्ण कियो अभिषेक।नृपति युधिष्ठिरकौं सबिवेक॥ देखि भयो हौं मूर्छित भूप।तासु भाग्य श्रीसहित अनूप॥ बजे तहाँ बहुशङ्ख महान। सो सुनि उठो रोम अति मान॥ धृष्टद्युम्न अरु पाण्डव सर्व। सात्यकि केशव हँसे अखर्व॥हमै देखिकै मूर्छित भूप। सो बिलोकि हौं भयो कुरूप ॥ भए जे पूर्व भूप अतिपर्म। तिनते अधिक भयो नृपधर्म॥ राजसूय करि यज्ञ महान। हरिश्चन्द्रके भए समान॥ ऐसी देखि पार्थ श्रीभूप।हमै न जीवन लगत अनूप॥

॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ज्येष्टतनय तुम करऊ मति पाण्डुसुतनसो द्वेष । द्वेषीजन तेहि लहत हैं कबहू सुख न अशेष॥
जानत कपट न मित्र सो सद्दश युधिष्ठिर भूप। तुमसों कबहू धरत सो नहीं द्वेषको रूप॥
तुल्य स्वजन बलवीर्यतैं जो भ्राता मतिमान। ताकी श्री लोवैं चहत करि कै मोह महान॥
कांक्षा तुमकौं यज्ञकी भई होय जौं पर्म । सप्ततन्तु मख कीजिए सह ऋत्विजन सुधर्म॥
तुमहूँको भूपति सकल देहैं धन अतिमान। परधनमें बांछा करत सो नहि आर्ज सुजान॥
नित्योद्योग स्वकर्म रति परधन प्रीति न जौन । शरणागतको पालिबो बैभव लच्छण तौन॥
दच्छ बिपत्ति व्यथा सहै धरै नित्य उत्साह । होय अमत्त बिनीत सो पावै मोद प्रबाह॥
बाहु समान जो पाण्डुसुत तिन्हैं न छेदन धर्म । स्वार्थहेत कीजै न सुत मित्रद्रोहको कर्म॥
पाण्डुसुतनसो द्रोहको करिबो है न बिवेक । रहो हमारो पण्डुको पिता पितामह एक॥
देऊ यज्ञ करि दान बहु करऊ सो भोग महान।बनितन सँग क्रीडऊ अभय करि चित्तवृत्ति समान॥

॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

है न जाके बुद्धि ताको सकल पढिबो बाद। यथा दर्वी नहीं जानति सूपको सुख स्वाद॥ जानि कैं का हमै मोहत कहत ऐसो जौन । स्वार्थको कै ज्ञान तुमहि न हमहि दूखत तौन ॥ जिन्ह नहि

प्रथ ज्ञान तिनके चले पीछे भूप । औरस्य भ्रमसों भरो भटकत लहत पथ न अनूप ॥ वृद्धसेवी जि
तेन्द्री दृढबुद्धि हो तुम तात । स्वकार्य्य जानत मोहकार क्या कहत हमसों बात ॥ लोककी है वृत्तित
नृप वृत्ति भिन्न प्रमाण । अर्थ चिन्त न करै नित्य अमत्त भूप सुजान ॥ जीतिबो सब भाँतिसो यह
राजवृत्ति ललाम । धर्मको न अधर्मको सुबिबेक करिबो काम ॥ शत्रुसम्पति लीजिए करि गुप्त
प्रगट उपाय । शत्रुबाधक बुद्धि सो है शस्त्रअति सुखदाय ॥ शत्रुकों अरु मित्रकों नहि लिखत
कछु मतिमान । दुःखदाता आपुकों सो शत्रु सुनऊ सुजान ॥ असन्तोष सो मूल श्रीको कहत
नृपकों भूप । वृद्धिको है यत्न करिबो परम नीति स्वरूप ॥ ममत्व सो नहि कीजिए ऐश्वर्य्यबाधक
माहि । नमुचिसों सखाह करि फिरि हनो सुरपति ताहि ॥ सु सनातनी है वृत्ति हनिबो अरिनकों
सहदर्प । दोयकों छिति ग्रसति जैसें बिवर बासिन्ह सर्प ॥ अप्रबासी द्विजन नृप जो करत शत्रु
बिरोध । जातितें अरि मनुजको नहि होत मनुज सुबोध ॥ वृत्ति जास समान बैरी होत है नर
तौन । करत है सो नाश जैसें रोग सञ्चित जौन ॥ पांडवनकी महालक्ष्मी हमें भावति है न । लेहि
गे सो औसिकै रणमाह करि है सैन ॥ बढत पांडव नित्य मेरो घटत जात स्वरूप । नहीं हमको
रुचत जीवन होय ऐसो भूप ॥ * ॥ शकुनिरुवाच ॥ * ॥ सन्ताप पावत पांडवनकी देखि कै श्री
जान । जीति लेहैं द्यूतमें हम बेगि भूपति तौन ॥ नृप युधिष्ठिरकों बोलावऊ हस्तिनापुर भूप । जीति
ताकी लेउँ श्री सब तजऊ संशय रूप ॥ धनुष पन शर अरु मौर्वी खेल पटुता जौन । अक्षको है
फेंकिबो मम महा स्यन्दन तौन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ अक्षविद ए करत है श्री हरणको
उतसाह । देऊ याते द्यूत आज्ञा हमें हे नरनाह ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ बिदुर शासन
हमें सन्मत बूझि तासो लेहि । यहि कार्य्यको फलपाक निश्चय फेरि आज्ञा देहि ॥ * ॥ दुर्यो
धनउवाच ॥ * ॥ बिदुर देहै फेरि तो मति हमें निश्चय भूप । पांडवनके परमहित नहि चहत
हम हि अनूप ॥ औरकी सामर्थतें नर करत है नहि काम । एकसी मति होति है नहि दोय की
अभिराम ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ बलिनके सँग जौन बिग्रह हमें रुचत न तौन । पुत्र होत
बिकार तासों महाभयको भौन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ कियो पूरब जनम पहिले द्यूतको
ब्यवहार । होत है नहि नाश तामें शस्त्रको न प्रहार ॥ बचन मानऊ शकुनिको करि देऊ आज्ञा
भूप । सभा रचना करणको मणिगणन्ह जडित अनूप ॥ द्यूत है सुखद्वार पावत मोद खेलत जौन ।
योग्यहमको पांडवनके सङ्ग कीबो तौन ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ हमें रुचत न कहत जो
तुम करऊ भावै जौन । फेरि पीछे तपऊ गे तुम समुझि होत न तौन ॥ बिदुर सो यह सकल जानत
महामतिको धाम । प्राप्त ऊहै जौन भय छिति चचयकर माम ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥
यहि भाँति कहि कै दैवइच्छा प्रबल मानि नरेश । कामकारन्हसों कहो यहिभाँति उच निदेश ॥
मणिनमय सु सहस्रखम्भ लगाय कै अभिराम । सभा कोसप्रमाण चऊँदिशि रचऊ सुषमा

धाम ॥ सुनत कारीगर हजारन जाय सुमति महान।सभा बेगि बनाय आए भूपपै सुखदान॥ सभा की सुनि सिद्धि भूपति शोच सो हिय छाय । महा मंत्री बिदुरसो इमि कहे बचन बोलाय ॥ नृप युधिष्ठिरकोँ सु ल्यावहु बिदुर जाय बोलाय। सभा देखैँ रतनमय तहँ रचै द्यूत सु आय ॥ सकल भ्रातन सङ्ग लीन्हे मोदसोँ अभिराम । पुत्रको मत मानिकै इमि कहे बचन ललाम॥ अन्यायके सुनि बचन बोले बिदुर सुमति स्वरूप ॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * । तहाँ हमकोँ जायबो यह रुचतहै नहि भूप ॥ करहु मति कुलनाशको यह द्यूत मूल महान। भिन्न ह्वैहै पुत्र ते। क्षत कलह लहि अतिमान ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ * ॥खेद करत न कलह हमकोँ देव इच्छा जैान । बिदुर ताहि निवारिबेके योग्य जगमे कैान ॥ बिदुर मेरो मानि शासन बेगि ताते जाय ।तुरत आवहु धर्मनृपकोँ सहित बन्धु लेवाय ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बिदुर यह सुनि चढे रथपर चल जँह नृपधर्म । गए खांडवप्रस्थकोँ धृतराष्ट्र पीडित मर्म ॥ गए भूपति भैाँनको जो धनद धाम समान । देखिकै नृपधर्मको अति लहो मोद महान ॥ पूजि भूपति बिदुरको हिय भरे मोद उदार । फेरि बूझो कुशलहै धृतराष्ट्र सह परिवार ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ बिदुर तुम्हरो लखतहैँ मन हर्ष हीन मलान । लहो पथमे कष्ट तो नहि कछू कहहु सुजान॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ कुशलहैँ धृतराष्ट्र भूपति कुशल सुतन समेत । पुत्रके गुण नीतिसोँ अति प्रीति पूरित चेत ॥ बूझिकै सब कुशल कहिवेँ कहो फिरि यह बैँन । सभा यह तो सभासम सो लखहु आइ सचैँन॥ तहां खेलहु सहित भ्रातन्ह द्यूत सुहृद समान। देखि सङ्गम सुतनको हैाँ लहो मोद महान ॥ रचोहै तँह द्यूत जेजे कितवहै तहँ दक्ष। तिन्हैँ लखिहो जायकै तहँ धर्म नृपति समक्ष ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ * ॥ कलह मूलक द्यूत कार्कों रुचत बिदुर सुजान। योग्य तुम को लगत का तो बचन हमहि प्रमाण ॥ बिदुरउवाच ॥ द्यूत मूल अनर्थको हम नियत जानत भूप। कियो तास निवारिबेको यत हम बहु रूप॥पास तो धृतराष्ट्र हम कां दियो सहठ पठाय । श्रेय अपनो इहा चिन्तन करहु तुम सुखदाय ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ औरके तँह कितवहै धृतराष्ट्रके सुत सङ्ग । बिदुर कहिए सङ्ग जिनके होय द्यूत उमङ्ग॥ * ॥बिदुरउवाच ॥ * ॥ सकुनिहै क्षत हस्त जानत बिविधि बिधिको द्यूत। हैँ बिबिंशति आदि सिगरे कितव भूपतिधूत ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ लगत संशय धूत धोरी कितव तेहां सर्ब । विधि रचित सोई होतहै बस जास जगत अखर्ब ॥ बिदुर हों धृतराष्ट्रको नहि सकत शासन टारि। द्यूत रणकोँ हम बोलायेतँ रहत नहि हारि ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बिदुरसोँ यहि भांति कहि दिय सैन माह कहाय। भोर रानिन सहित सेना चले कुरुकुलराय ॥ चढे रथ पर लगे जासे वायु बेग तुरङ्ग। गए हास्तिन नगरको भीमादि भ्रातन्ह सङ्ग ॥ जायकै धृतराष्ट्रसोँ सब मिले पांडव बीर । भीष्म

द्रोणादिकनसों फिरि मिले सबसों धीर ॥ सहित भ्रातन्ह धर्म्मनृप धृतराष्ट्रके गृह जाय। गांधारजा पतिव्रताके तहँ परम परसे पाय ॥ हर्ष कुरुकुलमे भयो तँह पांडवनकों देखि। बसे ते ते हि धाममे जे रत्न रचित बिशेखि ॥ बहू जे धृतराष्ट्रकी श्री द्रौपदी की चाहि। खेदसों भरि भूरि हियको रही प्रगट सराहि ॥ कियो सन्ध्या पूजि बिप्रन्ह अङ्गराग लगाय। सस्त्रीक पांडव भरे आनंद सज सोए जाय ॥ प्रात उठि करि नित्य आन्हिक द्विजनकों दै दान। सभाकों फिरि गए सानुज धर्म्म नृपति महान ॥ सभा मे जे जाय पहिले रहे बैठे भूप। मिले तिनसों सहित भ्रातन्ह धर्म्मनृपति अनूप ॥ * * * * * * * * * * * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्वणि युधिष्ठिरनृपतेर्द्यूतसभाप्रवेशोनामसप्तदशमोऽध्यायः ॥ * * * * * * *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सभामे जब जाय बैठे पाय आसन पर्म्म। सकुनि तब हँसि कहन लागो कपट कारक कर्म्म ॥ सकुनिरुवाच ॥ * ॥ बिछी चौपरि सभामे सब लखत तुमकों भूप। धरे अच्छ अनूप कीजे द्यूत समय सुरूप ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ द्यूत छन्दन मूल जासे भरो सौबल पाप। नीति रहित अनीतिमय भय भूरि कारक ताप ॥ कितवको सनमान बरणै नहीं सज्जन लोग। सकुनि हम सु कुमार्गमे नहि तुम्हैं जीतन योग ॥ * ॥ सकुनिरुवाच ॥ * ॥ द्यूत जानत भूपनीकी भांतिसों नरजौन। सकल भांतिनकी क्रियामह होतहै पटु तौन ॥ अच्छके आधीन पनको जीति हारि नरेश। हारिबो अरु जीतिबो व्यवहार मात्र निदेश ॥ छोडि शङ्का बचनतें कै प्रगट पन धरि भूप। द्यूत कीजे पांडु नन्दन आपने अनुरूप ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ असित देवल महामुनि जे जात लोकन्ह सर्व। कहोहै तिन द्यूतमाहँ बिचारि पाप अखर्व ॥ युद्धमे जयधर्म्म कारक द्यूत मे जय पाप। कहतहैं नहि आर्य मिथ्या बचन कारक ताप ॥ कपट माया रहित मत ब्रत युद्ध जय अभिराम। यथाशक्ति सुद्विजनके हित जौन धनसो धाम ॥ द्यूत अति करि जीतिबो नहि तुमहि सकुनि समान। कपट करि पर धन हरण हम चहतहैं न सुजान ॥ कितवजनकों कपट वृत्त न हेतु सुखद महान ॥ * ॥ सकुनिरुवाच ॥ * ॥ जीति पण्डित लेत मूर्खहि अबलकों बलवान ॥ [illegible] होतहै जेहि कर्म्म माह उदार। जीतिलेत असीखिनहि तँह कपट को न बिचार ॥ [illegible] जीति हमपै कहत कपट प्रवृत्त। लगै जौं भय द्यूतसों तौ होउ भूप निवृत्त ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रणद्यूतकों आह्वान कीन्हें हौं न होत निवृत्त। ब्रतहै हमारो जगतमे [illegible] बस्यहै बिधि रचितहै हम भाग्यके बस भूप। द्यूत हमसों कौन खेलै गो इहां अनुरूप ॥ * ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥ *

धरिहै पण मो सदृशको कहिए सौबल तौन। सुगमे ताके द्यूतको प्रारभँ कीजै जौन ॥

॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ स०प०

यज्ञ धन धरिहै भूप हम तो पन सदृश महान। सौबल मातुल खेलिहै तुमसो द्यूत सुजान॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

और धरै पन द्यूतको दुसरो होय खेलार। बिषम द्यूत तासौं कहत जे है सुमति उदार॥
इतनो कहत सो जानिकै कीजै द्यूत सुजान। होत अन्यथा सो नही जो बिधि लिखित प्रमाण॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

होत द्यूत प्रारम्भ सुनि नृप धृतराष्ट्र समेत। भीष्म द्रोण कृप बिदुर तँह आए दुःखित चेत॥
सुहृद द्यूतप्रारम्भभो पहिलेसुनिएभूप॥युधिष्ठिरउवाच॥यहमणिमालबिशालममजासयोतिमयरूप॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

याके सम पन धरिए भूप। जातैं होय द्यूत अनुरूप॥ * ॥ दुर्योधन उवाच ॥ * ॥ मणिधन बहुत हमारे जौन। याके सम पन राखत तौन॥ द्यूतारंभ कीजिए भूप। यामे योग्य न मत्सर रूप॥ ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ तब लै अक्ष सकुनि बिद द्यूत। जीतो कहो फेकिकै भूत॥ ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ कनक भरे ए कुम्भ हजार। हौंसो राखो सह भंडार॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ फेकि अक्ष सो बल छल रूप। बोलो यह हौं जीतो भूप॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच॥ * ॥ यह रथ स्यंदन सहस समान। व्याघ्र चर्म मंडित सुखदान॥ कनक घटित मणि जडित ललाम। घन सम नाद सु जैच सुनाम॥ युत सित बसु बाजिन्ह सह जौन। धरत सकुनि हम पण रथ तौन॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सो बल छल ऐन। हो जीतो यह बोलो बैन॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच॥ * ॥ तरुणी दाशी लक्ष ललाम। कनकाभरण दसन अभिराम॥ रूप भरी पहिरे मणि हार। जेजानै सब कला उदार॥ संगीत रीतिमें कुशल सुजान। सेवा दक्ष बिनीत महान॥ बिप्र बरन्ह कँह सेवै तौन। आज्ञा पाय हमारी जौन॥ यह धन हो पण धरत अनूप। अक्ष फेकिऐ सौबल भूप॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ सुनत हर्षि सौबल छल ऐन। हो जीतो यह बोलो बैन॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच॥ * ॥ लक्ष दक्ष मो दास समूह। जेमनकी समुझत सबजूह॥ मणिमय भूषण बसन उदार। पहिरैं सकल सुबेश कुमार॥ कनक पात्र कर लोन्हैं सर्ब। अतिथिन्ह भोजन देत अखर्ब॥ यह धन हौं पण धरत अनूप। अक्ष फेकिऐ सौबल भूप॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ सुनि हर्षित सौबल छल ऐन। हौं जीतो यह बोलो बैन॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच॥ * ॥ गज सहस्र मदमत्त महान। कनक झूल झम्पित गिरि मान॥ कनकाभरण भरे अभिराम। निर्भय सरल सुभाव ललाम॥ आठ आठ करणी जिन सङ्ग। महा दन्त अरि पुरकर भङ्ग॥ यह धन हौं पन धरत अनूप। अक्ष फेकिए सौबल भूप॥ ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सौबल छल ऐन। हौं जीतो यह बोलो बैन॥

स॰प॰ ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ रथ सहस्र मणि जडित स अर्ब । कनक चक्र ध्वज भूषित सर्ब ॥ चढे चित्र योधी रथवान । बायुवेग गति जे अतिमान ॥ यह धनहौं पण धरत अनूप । अच्च फेंकिए सैाबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सैाबल छल ऐन । हाँ जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ तित्तिर वर्ण अश्व गान्धर्ब । दियो चित्ररथ तुष्ट अखर्ब ॥ जीतो जिष्णु युद्धमे जाहि । दीन्हँ तेहि करि प्रीति सराहि ॥ यह धन हौं पन धरत अनूप । अच्च फेंकिऐ सैाबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ सुनि हर्षित सैाबल छल ऐन । हो जीतो यह बोलो बैंन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ रथ अरु सकट अयुत अभिराम । बाह युक्त अति रचित ललाम ॥ वर्ण वर्णके जिनपैं बीर । साठि हजार चढे रणधीर ॥ यह धनहौं पण धरत अनूप । अच्च फेंकिए सैाबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सैाबल छल ऐँन । हैं जीतो यह बोलो बैंन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ पात्र लोह तामेके जाैंन । कनक द्रोण सुर पूरित तैान ॥ हैं निधि भरे धरे सत चारि । द्विजन हेत राखे निरधारि ॥ सो धन हों पन धरत अनूप । अच्च फेंकिऐ सैाबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनत हर्षि सैाबल छल ऐँन । हों जीतो यह बोलो बैंन ॥ * * * * ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ * * * * *

सरबस हारी द्यूत यों जब भयो घोर महान । सर्ब संशय हरण बोले बचन बिदुर सुजान ॥ भूप पहिले कहा हम तुम नही मानो तैान । नही औषधि रुचति ताहि असाध्य रोगी जैान ॥ गोमायुके सम जाैंन रोयो जन्म लेतहि पाप । कुलघ्न दुर्योधन भयो कुरु बंशको सन्ताप ॥ ग्रह बसत यह गो मायु जानो नहीं तुम बश मोह ॥ सुनऊ उसन सनीति यातैं छोडि दीजै छोह ॥ चढत माध्विक लेनकों मधुवृक्ष ऊपर जाय । लहत दैवाधीन मधु सो पतन नियत लखाय ॥ करत द्यूतासक्त यह अतिरथिनं सौं अति वैर । पूर्ब याकों तजो नहि तुम मोहको लहि सैर ॥ भोज अन्धक यादवनमिलि कंसको किय त्याग । कृष्ण ताकों हनो तिनको पाय मत बडभाग ॥ धृतराष्ट्र शासन पाय तो त्यों जिष्णु अति धनुधारि । कुल कुशल हित दुर्योधनहि सम दरित डारै मारि ॥ काक देइ मयूर लीजै श्यार दै शार्दूल । करऊ अघ इमि पांडवनको भूपआनद मूल ॥ श्लोकः ॥ त्यजे त्कुलार्थ पुरुषं ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् । ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ॥ शुक्रसों यह नीति सुनिकै असुर अति बल सर्ब । जम्भको करि त्याग दीन्हों जानि अधम अखर्ब ॥ जैान पक्षो कनक उगिलत बसै सो निज भाैंन । ताहि मारत लोभवश व्है कुमति पापी तैान ॥ पांडवनसौं नही कीजै द्रोह यातैं भूप । पचिहो नर सदृश लहिहो तापको अति रूप ॥ काम तरु से पांडवनके सुगुण सुमन समान । भूप मालाकारसे व्है चुनऊ अति सुखदान ॥ अनल व्है मति भस्म कीजै मूलतैं अभिराम । ससुत सह परिवार बरबस जाऊ मति यमधाम ॥ सकल पार्थन सा करै को युद्ध अति बर बीर । सुरन सहित सुरेश जैसैं महा बल गम्भीर ॥ द्यूत बिग्रह मूल

दारुण भयो यह अतिमान । धृतराष्ट्रसुत उतपन्न तामे करत बैर महान ॥ कुरुवंश हत समूह सं॰प
जात लहै गो दुख भूरि । होय गो मदतें सुयोधन लेम त्तितित दूरि ॥ अनुसर परमति बिदुष
अपनी छोडि कै मति जौंन ॥ चढि नाव बाल मलाहकी पै सुनो बूडत तौंन ॥ द्यूत जीतत पुत्रको
प्रिय लगत सो सुनि भूप। हास अनु जिमि होत विग्रह नाशकारण रूप॥ शकुनि शीखित द्यूतको
मत बढो अति हियमाँह । कियो सम्वत धर्म नृपसौं कलह तौ नरनाह ॥ प्रतीप शान्तनुवंशके
तुम सुनहु उशन सनीति। परहु ज्वलित न अनलमे करि मन्दको मत प्रीति॥ क्रोध पांडव कर
हि गे जब प्रलय पावक मान। कौनसे तुम दीपमे तब राखि हो भजि प्राण ॥ पर्वतिनसौं शकुनि
शीखो द्यूतको छल सर्व। तहाँको यह जाउ सैाबल दुष्ट दूर्मति खर्व ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥
औरकी तुम करत अस्तुति निन्दि हमकौं छत्त ॥तुम्हे जानत भले हम तुम अन्यमे अनुरक्त। कहति
रसना रावरी हियमाह आशय जौंन ॥ व्यालसे मार्जारसे तुम वसत हमरे भौंन। महै निन्दक
बिदुर है नहि पापते भय तोहि । जीति हों अरि लयो फल मति परुष बोलहु मोहि॥ अमित्र
होत असह्य कहि करि शत्रुको गुणगान । धृतराष्ट्र आश्रित कहत यातें रुचति जो मनमान॥
करहु नहि अपमान मो मति शिखहु वृद्धन पाश । परकार्य्यमे व्यापार करि मति करहु यशको
नाश ॥ परुष बोलु न बिदुर कर्त्ता आपुकों अनुमानि। स्वस्तिके नहि वचन तुमकों बूझि हैं हम
जौंनि। गर्भमे जो करत रत्तण सोई कर्ता एक । तास प्रेरित जगत सिगरो बहत सहित बिबेक ॥
होति ताको जौंन इच्छा करत हैं हम तौंन । परवर्ग द्वेषीको न दीजे बास अपने भौंन॥
बिदुर जेहाँ रुचै तेहाँ जाय कीजे बास ॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ नीति बक्ताके न ऐसैं कहत
कोउ पास॥ प्रथम राखत चित्त अपनो गुप्त कोन्हैं भूप। समय लहिकै हनत द्वेषि हि धारि अपनो
रूप॥ प्रथम करिकै सुहृद पीछैं देत दूषण जौंन। श्रेयकौं नहि लहत सो मति हीन भूपति तौंन॥
कुरुनायकौं हित मंत्र रुचत न यथा तरुणि हिँ वृद्ध। हिताहित सब कार्यमे प्रिय कियो चाहत
सिद्ध॥ प्रिय अपथ्य जो कहत पापी रुचत सबकों तौंन।कटुपथ्य बक्ता है सुदुर्लभ तास श्रोता जौंन॥
धर्मरत प्रिय अप्रियको भय तजेसत्य स्वरूप। कटुपथ्यबक्ता सुहृद जास सहायवान सो भूप॥ व्याधि
हर कटुतीक्ष्ण उष्ण सु सुयशमुख सुखभौंन। शान्ति लहु नृप पान करि सत मंत्र औषधि तौंन॥चहत
हौं कुरुवंशको कल्यान कारण भूप। पाण्डवनकौं करौ तौ मति भूलि कोपित रूप॥ हम कहो सो
धृतराष्ट्र मनमे राखि मंत्र उदार। जौंन इच्छा होय आगैं करहु तौंन बिचार॥ * ॥ शकुनिरुवाच
बहुत हारे बित्ति उबरो होय भूपति जौंन । राखि ए पन समुझि कै कौन्तेय निजधन तौंन ॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥कहा बूझत शकुनि मेरे बित्ति आध अखर्ब।है न संख्या लत्त कोटिन
कीन प्रयुत सअर्ब॥ तौन हौं पण धरत हौं धन सकल असित अनूप । फौंकि दीजे अत्तकौं अब

स०प० ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ रथ सहस्र मणि जडित स अर्व । कनक चक्र ध्वज भूषित सर्व ॥ चढे चित्र योधी रथवान । वायुवेग गति जे अतिमान ॥ यह धनहौं पण धरत अनूप । अक्ष फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सौबल छल औन । हौं जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ तित्तिर वर्ण अश्व गान्धर्व । दियो चित्ररथ तुष्ट अखर्व ॥ जीतो जिष्णु युद्धमे जाहि । दीन्हें तेहि करि प्रीति सराहि ॥ यह धन हौं पन धरत अनूप । अक्ष फेंकिये सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ सुनि हर्षित सौबल छल औन । हो जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ रथ अरु सकट अयुत अभिराम । वाह युक्त अति रचित ललाम ॥ वर्ष वर्षके जिनपैं बीर । साठि हजार चढे रणधीर ॥ यह धनहौं पण धरत अनूप । अक्ष फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनि हर्षित सौबल छल औंन । हौं जीतो यह बोलो बैंन ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ पाच लोह तामेके जौन । कनक द्रोण सुर पूरित तौंन ॥ हैं निधि भरे धरे सत चारि । द्विजन हेत राखे निरधारि ॥ सो धन हों पन धरत अनूप । अक्ष फेंकिये सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनत हर्ष सौबल छल औंन । हों जीतो यह बोलो बैंन ॥ * * * * ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ * * * * *

सरबस हारी द्यूत यों जब भयो घोर महान । सर्व संशय हरण बोले बचन बिदुर सुजान ॥ भूप पहिले कहा हम तुम नही मानो तौंन । नही औषधि रुचति ताहि असाध्य रोगी जौन ॥ गोमायुके सम जौंन रोयो जन्म लेतहि पाप । कुलघ्न दुर्योधन भयो कुरु बंशको सन्ताप ॥ गृह बसत यह गोमायु जानो नहीं तुम बश मोह । सुनऊ उसन सनीति यातैं छोडि दीजै छोह ॥ चढत माक्षिक लेनकों मधुवृक्ष ऊपर जाय । लहत दैवाधीन मधु सो पतन नियत लखाय ॥ करत द्यूतासक्त यह अतिरथिनं सौं अति बैर । पूर्व याकों तजो नहि तुम मोहको लहि सैर ॥ भोज अन्धक यादवनमिलि कंसको किय त्याग । कृष्ण ताकों हनो तिनको पाय मत बडभाग ॥ धृतराष्ट्र शासन पाय तो त्यौं जिष्णु अति धनुधारि । कुल कुशल हित दुर्योधनहि सम दरित डारे मारि ॥ काक देइ मयूर लीजै श्यार दै शार्दूल । करऊ क्रय इमि पांडवनको भूपआनद मूल ॥ श्लोकः ॥ त्यजे त्कुलार्थ पुरुषं ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् । ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ॥ शुकसौं यह नीति सुनिकै असुर अति बल सर्व । जम्भको करि त्याग दीन्हों जानि अधम अखर्व ॥ जौम पक्षी कनक उगिलत बसै सो निज भौंन । ताहि मारत लोभवश ह्वै कुमति पापी तौंन ॥ पांडवनसों नही कीजै द्रोह यातैं भूप । पछिहा नर सदृश लहिहो तापको अति रूप ॥ काम तरु से पांडवनके सुगुण सुमन समान । भूप मालाकारसे ह्वै चुनऊ अति सुखदान ॥ अनल ह्वै मति भस्म कीजै मूलतैं अभिराम । ससुत सह परिवार बरबस जाऊ मति यमधाम ॥ सकल पार्थन सा करै को युद्ध अति बर बीर । सुरन सहित सुरेश जैसैं महा बल गम्भीर ॥ द्यूत बिग्रह मूल

दारुण भयो यह अतिमान । धृतराष्ट्रसुत उतपन्न तामे करत बैर महान ॥ कुरुवंश हत समूह संप
जात लहैगो दुख भूरि । होय गो मदतें सुयोधन छेम सितित दूरि ॥ अनुसर परमति विदुष
अपनी छोडि कै मति जौन ॥ चढि नाव वाल मलाहकी पै सुनो बूडत तौन ॥ द्यूत जीतत पुत्रको
प्रिय लगत सो सुनि भूप। हास अनु जिमि होत विग्रह नामकारण रूप॥ शकुनि शीखित द्यूतको
मत बढो अति हियमाह । कियो सम्बत धर्म नृपसों कलह तौ नरनाह ॥ प्रतीप शान्तनुवंशके
तुम सुनहु उशन सनीति। परहु ज्वलित न अनलमे करि मन्दको मत प्रीति॥ क्रोध पांडव कर
हिगे जब प्रलय पावक मान। कौनसे तुम द्वीपमे तब राखि हो भजि प्राण॥ पर्वतिनसों शकुनि
शीखो द्यूतको छल सर्व। तहांको यह जाउ सौवल दुष्ट दूर्मति खर्व॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥
औरकी तुम करत अस्तुति निन्दि हमकों छत्त॥तुम्हे जानत भले हम तुम अन्यमे अनुरक्त।कहति
रसना रावरी हियमाह आशय जौन ॥ व्यालसे मार्जारसे तुम बसत हमरे भौन। भर्ई निन्दक
विदुर है नहि पापते भय तोहि । जीति हो अरि लयो फल मति परुष वोलहु मोहि॥ अमित्र
होत असह्य कहि करि शत्रुको गुणगान । धृतराष्ट्र आश्रित कहत यातें रुचति जो मनमान॥
करहु नहि अपमान मो मति शिखहु वृद्धन पाश । परकार्य्यमे व्यापार करि मति करहु यशको
नाश ॥ परुष वोलु न विदुर कर्त्ता आपुकों अनुमानि। सुनिके नहि बचन तुमकों बूझि हैं हम
जौनि। गर्भसे जो करत रक्षण सोई कर्ता एक । तासु प्रेरित जगत सिगरो बहत सहित बिबेक ॥
होति ताकी जौन इच्छा करत हैं हम तौन। परवर्ग द्वेषीको न दीजै बास अपने भौन॥
विदुर जेहाँ रुचै तेहाँ जाय कीजै बास ॥ * ॥ विदुरउवाच ॥ * ॥ नीति वक्ताके न ऐसैं कहत
कोऊ पास॥ प्रथम राखत चित्त अपनो गुप्त कीन्हें भूप। समय लहिके हनत द्वेषि हि धारि अपनो
रूप॥ प्रथम करिके सुहृद पीछैं देत दूषण जौन। श्रेयकों नहि लहत सो मति हीन भूपति तौन॥
कुरुनायकों हित मंत्र रुचत न यथा तरुणि हिं वृद्ध। हिताहित सब कार्यमे प्रिय कियो चाहत
सिद्ध॥ प्रिय अपथ्य जो कहत पापी रुचत सबकों तौन।कटुपथ्य वक्ता है सुदुर्लभ तासु श्रोता जौन॥
धर्मरत प्रिय अप्रियको भय तजे सत्य स्वरूप। कटुपथ्यवक्ता सुहृद जासु सहायवान सो भूप॥ व्याधि
हर कटुतीक्ष्ण उष्ण सु सुयशमुख सुखभौन। शान्ति लहु नृप पान करि सत मंत्र औषधि तौन॥चहत
हों कुरुवंशको कल्यान कारण भूप। पाण्डवनकों करो तौ मति भूलि कोपित रूप॥ हम कहो सो
धृतराष्ट्र मनमे राखि मंत्र उदार। जौन इच्छा होय आगें करहु तौन विचार॥ * ॥ शकुनिरुवाच
बहुत हारे वित्ति उबरो होय भूपति जौन । राखि ए पन समुझि कै कौन्तेय निजधन तौन॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥कहा बूझत शकुनि मेरे वित्ति आध अखर्व।है न संख्या लक्ष कोटिन
नीन प्रयुत सअर्व॥ तीन हों पण धरत हों धन सकल अमित अनूप । फेंकि दीजे अक्षकों अब

स०प० सुनहु सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धारिकै छल डारि पासे शकुनि पूरित चैन। जितो हौं यह नृप युधिष्ठिरसों सो बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ अजा अश्व बहुधेनु उदार । रहैं जे अमित सरितपति वार ॥ सो धन हौं पण धरत अनूप । अच्छ फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनत हर्षि सौबल छल अैन। हौं जीतो यह बोलो बैन ॥*॥ युधिष्ठिरउवाच ॥*॥ पुरजन पद भू दत्त न जौन।द्विज बिनु जन पन राखत तौन॥ वैशम्पायनउवाच ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैन। हौं जीतो यह बोलो बैन ॥ युधिष्ठिरउवाच राज पुत्र मणिभूषित बीर । यह धन परम हमारे धीर ॥ यह धन पण हम धरत अनूप । अच्छ फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैन । हौं जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ श्याम युवा कञ्जायत नैन । सिंह सदृश बर भुज बल अैन ॥ धरत नकुलकों सु पण अनूप। अच्छ फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ शकुनिरुवाच *॥ हारे नकुल सुनो प्रिय पर्म। तब का पण धरि हौ नृपधर्म ॥*॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैन। हौं जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ करत धर्म शासन अभिराम। पण्डित परम महामति धाम ॥ मम अति प्रिय सहदेव अनूप। धरत सो पन हे सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैन। हौं जीतो यह बोलो बैन ॥ ॥ * ॥ शकुनिरुवाच ॥ * ॥ माद्री पुत्र तुम्हें प्रिय जौन । भूपति जीति लए हम तौन ॥ भीमसेन अर्जुन मह भूप। तो प्रिय गौरव अतिशय रूप ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥कहत अधर्म अनयके बैन । सुहृद भ्रातभेदक छल अैन ॥ समर सिन्धुको बोहित जौन । अरिदल मर्दन बरबल भौन ॥ कौन धनुर्द्धर जिष्णु समान। शत्रु समूह तिमिरिको भान ॥ यह धन हम पण धरत अनूप। अच्छ फेंकिये सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैन। हौं जीतो यह बोलो बन ॥ * ॥ शकुनिरुवाच ॥ * ॥ जो पाण्डवमह धनुधर बीर । हौं जीतो सो जीष्णु गभीर ॥ भीमसेन जो अतिप्रिय भूप। करहु ताहि अब पण धन रूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ जो मम मंत्री परम सुजान । बज्रीसम रणमध्य महान ॥ नतभ्रू लखत तिरीछे जौन। अरिगण गज पञ्चानन तौन ॥ गदा युद्धमें उद्ध कराल। भएँ क्रुद्ध परपीडन काल ॥ करत भीमकहँ पण धन रूप। अच्छ फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैन। हौं जीतो यह बोलो बैन ॥ * ॥ शकुनिरुवाच ॥ * ॥ होय शेषधन जौन अनूप । कीजै द्यूत सो पण धरि भूप ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सकल भ्रात प्रिय हम अवशेष । करि हैं द्यूत धारि पणवेष ॥ हौं आपुहि पण धरो अनूप। अच्छ फेंकिए सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छल अैन। हौं जीतो यह बोले बैन ॥ * ॥ शकुनिरुवाच ॥ * ॥ यह तौ पाप कर्म कियभूप। छोडि शेष धन आपनो रूप ॥ हारे सो नहि तुम्हरे योग। कहा कहैंगे सुनि

सब लोग ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ हारे धर्मनृपतिसों बैन । ऐसे कहे शकुनि छलऐंन ॥ स०प०
शकुनिरुवाच ॥ * ॥ हारे बिना प्रिया धन एक । है पांचाली नृप सबिबेक ॥ सो धन पण राखऊ
नृपधर्म । आपुहि जीति लीजिए पर्म ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ नहि अति बडी न छोटी
जौन । नहि अतिपीन न कृशत तौंन ॥ नील प्रलंब सु कुञ्चित केश । मुख समान शशि तनु कटिदेश ॥
भरी सकल गुणगण अभिराम । कमलायत लोचन छबिधाम ॥ इन्दीवर बरणी सुखरास ।
सदृश मालती अङ्ग सुबास ॥ सदृश इन्दिराजाको रूप । बचन सुधासम कहति अनूप ॥ शील
सुमति दयाको धाम । पांचालदुहिता अतिगुणग्राम ॥ सो धन हौं पण धरत अनूप । अक्ष फेंकिए
सौबल भूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि धर्मनृपतिके बैंन । धिग धिग भो तहँ शब्द
अचैंन ॥ क्षोभित भई सभासह खेद । भीष्म द्रोण कृप भे युत स्वेद ॥ शिर गहि बिदुर यथा गत
प्राण । लेत अधोमुख स्वास महान ॥ फिरि फिरि बूझत नृपति अनैन । का का जीतै बचन सचैंन ॥
कर्णादिक युत मोद गँभीर । औरनके बरषे दृगनीर ॥ यह सुनि हर्षि शकुनि छलऐंन । हा
जीतो यह बोलो बैंन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ बिदुर द्रौपदि हि ल्यावऊ जाय । प्रिया
पांडवनको सुखदाय ॥ दासिन सङ्ग बहारै धाम । जो अपुण्यशीलनको काम ॥ *❦❦❦*

॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥

कहत सुयोधन दुर्बचन हमसों कारक नाश । परो चहत हो नर्कमे बद्ध भयो यम पास ॥
मृगपतिको कोपित करत ज्यों मृग नीरे जाय । तुम जानत नहि शिर चढे सर्प दर्पसों छाय ॥
इन्हैँ न अब कोपित करऊ जाऊ न हठि यमधाम । दासी योग्य न द्रौपदी भरी पुण्य अभिराम ॥
प्रथम आपुकों हारि फिरि ताहि धरो पण भूप । रहे ईश नहि धर्मनृप सो क्यों दासीरूप ॥
धरो बेणु फल सदृश यह तुम दुर्योधन जौंन । द्यूत बैरभय नाशको कारण कीन्हों तौंन ॥
कहत शल्यसे बचन अब नीचकर्म करि पाय । सुनत सुजन दुख लहत जे करत नर्कमह ताप ॥
मत्स्य यथा बँडसी गिलै पिष्ट लोभके मैर । करै कंठभेदन सो त्यों करो न तुम यह बैर ॥
जगजनसों पारथ कबऊ ऐसे कहत न बैंन । भूकत जे नर स्वानसे इमि अनीतिके ऐंन ॥
धार्तराष्ट्र नहि सुनत भो बचन पथ्य सुखराश । सर्ब हरण ह्वै चहत अन्त कुरुनको नाश ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

दुर्योधन करि कोप कहि है धिग तोकों क्षत्त । प्रातिकामिको बोलि कै बोलो इमि मदमत्त ॥

॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

प्रातिकामी सूत ल्यावऊ द्रौपदीका जाय । पांडवनसों डरऊ मति ज्यों बिदुर भीरु सुभाय ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ प्रातिकामी बचन सुनि गो द्रौपदीके पास । दूरि ठाढो जोरि कर यों
कहे बचन सत्रास ॥ द्यूत मदसों मत्त हारे तुम्है धर्म नरेश । जीति तुमको नृप सुयोधन दियो

स०प० हम हि निदेश ॥ द्रौपदीका आज्ञ लै धृतराष्ट्रनृपके धाम। सङ्ग दासिनके कर तहँ जाय के गृह काम ॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ प्रतीकामी कौन हारत भूप भार्या पर्म । द्यूतको धन और कछु का लहो नहि नृपधर्म ॥ * ॥ प्रातिकाम्युवाच ॥ * ॥ रहो नहि धन और जब तब दियो भ्रातन्ह हारि। आपुकौं फिरि हारि तुमकौं हारि गे सुकुमारि ॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ कितव सो तुम जाय बूझ्ऊ सूतसुत मति भौंन । प्रथम हारे आपुकौं कै हमै कहिए तौंन ॥ सभामे यह जानि कै फिरि चलऊ हमहि लेवाय। जानि कै हत भूपकौं हम चलै गी निजु पाय ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जाय कै सो सभामे इमि कहन लागे सूत। नृप युधिष्ठिर पास भूपन्ह मध्य भो जहँ द्यूत। प्रथम हारे आपुकौं कै हम हि धर्म नरेश । द्रौपदी यह तौन बूझति कहऊ सत्य निदेश ॥ गतचेत व्है गे धर्मनृप सुनि सूत सुतके बैन । कहो साधु असाधु नहि कछु व्यथित व्है अति ऐन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ पांचालजा यह प्रश्न पूछै सभामे इत आय। सुनै गे सब भूप एऊ कहैं गे सतिभाय ॥*॥ वैशम्पायनउवाच ॥*॥ प्रातिकामी राजभवनहि गयो शासन मानि। कहे ऐसें द्रौपदीसौं बचन जोरे पानि ॥ * ॥ प्रातिकाम्युवाच ॥ * ॥ सभामे तुमकौं बोलावत राजपुत्र अमान। नाश कौरव वंशको अब हौंन चहत महान ॥ द्रौपद्युवाच ॥ सुख दुःखकौं बिधि रचत है सो लहत अज्ञ सुजान। धर्म रक्षित करत है सो स्वास्थ्यकौं अतिमान ॥ तजै धर्म न तिन्है सो सम बचन जाय सधर्म। कहऊ हमकौं जे बोलावत ज्येष्ट पावन पर्म ॥ तेहि सभामे चलि द्रौपदीके दिए बचन सुनात। धृतराष्ट्रसुतको जानि हठ सब रहे शीस नवाय ॥ वैशम्पायनउवाच *॥ सुनि युधिष्ठिर कियो चाहत है सुयोधन तौंन। दूत पठयो द्रौपदीकौं रहो सम्मत जौन॥ एक बस्त्रा रुदन करत रजस्वला असहाय । ससुर नृप धृतराष्ट्र आगे होऊ ठाढी आय ॥ राजपुत्री सभामे लखि तुम्है भूपति सर्व । निन्दि है धृतराष्ट्र सुतको जानिकै हत खर्व ॥ दूत कृष्णाके सदन सो सुनत पऊँचो पर्म । कही बार्त्ता सकल सो जो कहीही नृपधर्म ॥ भए पांडव दीनसे सब धर्मके परिपास। कहो सुत धृतराष्ट्रके लखि सूतसौं सम हास॥प्रातीकामी इहां ल्यावऊ द्रौपदीकौं जाय। सूत लागो सभ्यजनसौं कहन इमि भय छाय। कहा कहिहैं द्रौपदीसौं जाय अब हम बैन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ भीमतैं भय लहत सूत सो सुनु ऊ शासन बैन ॥ जाय कृष्णहि ल्याय गहि सब शत्रु कीन्हैं बश्य। चलो सो सुनि भूपको युत क्रोध बचन अवश्य ॥ धाममे अति रयनके सो गयो कृष्णा पास । लाज तजि नृपपास चलि इमि कहे बचन सहास ॥ उठो यह सुनि पोछि दृग जल द्रौपदी अभिराम।भरी भयसौं चली जहां अन्धनृपको धाम।।गहि दुःशासन लए ताके पकरि पावन केश। खैचि लैकै चल्यो हो जहँ सभामध्य नरेश ॥ गहे चोटी नमितमुख करि पापमय शठ तान । खैचि ल्यायो द्रुपदजाकौं महा दुर्मति भौंन ॥ रितुमती हौं मै एकबसना कहो सकरुण मन्द। जान योग्य न सभामे हौं कृपाकुरु कुरुनन्द ॥ गहि दुःशासन केश बलसो चलो लै बर

ओर। कृष्ण क्रम सुजिष्णु कृशा करति सकरुण शोर ॥ * ॥ दुःशासनउवाच ॥ * ॥ रजस्वलाके स०प०
एकबसना होउ कै बिनबास। यूतमे तुम गई जीति बसहु दासिनपास ॥ * ॥ वैशम्पायन
उवाच ॥ * ॥ ग्रहीतकेशी आर्द्रबसना कम्पमान अचेन। लाजभय अति कोपसों इमि कहे कृष्णी
बैन ॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ एहि सभा माह कृतज्ञ सिगरे धर्म्मवेत्ता भूप। इहां ठाढे हो
न लायक नहो मेरो रूप ॥ क्रूरकर्म्म अनार्य मोकौं खैंचि नति बशपाय ॥ कोपि है अब राजसुत
तो करिहि कौन सहाय ॥ धर्म्मसुतहै धर्म्म मे रत सूक्ष्म धर्म्म बिचारि। छोडि गुण अणुमात्र दोष
न लहति तास निहारि॥दुष्ट खैचत केश मो नहि कोउ निन्दत तोहि। धर्म्म हत धिग भारतनकौं
व्यथित मोकौं जोहि ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कहति ऐसें लखति तिरछैं कुपित भर्त
न ओर। कोपाग्नि बारति द्रौपदी तन पांडवनके घोर ॥ लखति कृष्णा पांडवनकौं लखि दुशा
सन क्रुद्ध। खैंचि आतुर बोलि दासी हँसतसो अति उद्ध ॥ कर्ण शकुनि दुशासनो दुर्योधनादिक
चारि। भए हर्षित भूप सिगरे और दुखित निहारि ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ पणपै लगाय न
सकतहै परधनहि कोउ जगमाहि। हम गए जीते प्रथम नृप इमि कह्या सबहिन पाहि ॥ है
पतिहि के आधीन नारी होति संशय है न। पणपै लगाई फेरितोकौं कहैं का हम बैन॥सर्बस्व तजि
नृप धर्म्म करिहै धर्म्मतें दृढ प्रीति। यह हेतुतें नहि देय उत्तर सकत गुणिकै नीति ॥ कहे
कीन्हों शकुनिके फिरि तुम्हैं पणधन भूप ॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ कैतवन्ह करि कपट
खेलो द्यूत करि छल रूप ॥ धर्म्म नृप नहि कपट जानत हारि गे केहि भाय। हारि आपुहि नृप
हमै पणकरो सो नहि न्याय ॥ सभामे कुरु वृद्धहै सुत वधूके सबईश। प्रश्नको मम दैहि उत्तर
समुझि बिस्वेबीश ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रुदति कृष्णा व्यथित देखति कृपिण से पति
ओर। पुरुष अप्रिय वाक्य बोलो तब दुशासन घोर ॥ गिरो अञ्चल दुष्ट खैचत द्रुपदजाहि महान
धर्म्म नृप पर किये वृकोदर देखि क्रोध महान ॥ * ॥ भीमउवाच ॥ * ॥ होति कितवनके जो
दासी ताहि नहि पणलाय। नहो खेलत द्यूतकौं हिय दया तास बसाय ॥ दियो जो धन रत
भूपन्ह शस्त्र वाह अनूप। राज्य आत्मा हमै सबकौं जीन हारे भूप ॥नहो याते क्रोध हमकौं ईश
हो तुम सर्व। द्रौपदीको हारिबो सो किय अयोग्य अखर्व ॥ पांडवनकौं पाय पति यह क्लेश
योग्य न जौंन। क्रूर कर्म्मा कौरवनसौं दुःख पावति तौन ॥ देतहौं यहि कर्म्मको फल तुम्हैं अति
रिसि पागि। करत तो कर भस्महौं सहदेव ल्यावहु आगि ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ भीमसेन
न कहे ऐसे पूर्व कबहूँ बैंन। धर्म्म गौरव गयो तो पर पास पाय अचैन ॥शत्रुतें आहूत राजा द्याच
धर्म्म बिचारि। हारिगे सरबस्व सोउ कीर्त्तिकर निरधारि ॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ यदि
भांतिको जो जानते नहि कर्म्म फाल्गुण बीर। बाहु दोउ भस्म करते धर्म्म नृपकी धीर ॥ * ॥

स॰प॰ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ पांडवनको द्रौपदीको दुःख करि असमर्ण। धर्म्म बिद धृतराष्ट्र सुत इसि कहे बचन बिकर्ण ॥ द्रौपदीके प्रश्नकौं नृप कहऊ सहित बिवेक। बिना बचन बिवेक कीन्हे लगत पाप अनेक ॥ भीष्म अरु धृतराष्ट्र गुरु बर कहो सम्मत जौन। द्रोण कृप आचार्य सबके बिदुर अति मति भौन ॥ काम क्रोधहि छोडिकै सति कहऊ सिगरे भूप। द्रुपद जाके प्रश्नको सबिवेक करि मति रूप॥ कहो ऐसे भांति बऊत बिकर्ण मतिके ऐन।साधु औ न असाधु बोले भूप कोऊ बैन ॥ कोप करि तब श्वास लेइ बिकर्ण बीर सुजान।कहन लागो नृपनसों यहि भांति बाक्य महान ॥ न्याय यामे कहत सो हम सुनऊ सिगरे भूप।महीपतिकौं चारिहैं ए व्यसनके अति रूप॥ द्यूत मृगया पानमद अति सुरति सङ्गम जौन। धर्म्म तजि अनुरक्त इनमे होतहै नृप तौन ॥ यहि ब्यसन रत जो क्रिया करत सो नही मानत तज्ञ। भए तातैं व्यसनरत यहि पांडु नन्दन ग्रज्ञ ॥ कितव प्रेरित द्रौपदीकौं कियो पण नृपधर्म। समान जो सब पांडवनकौं द्रुपदजाहै पर्म। प्रथम जीते गएहें जे पाडु नन्दन सर्व ॥ फेरि कृसाकों कहो पण करन सौवल खर्व ॥ यह सकल हेतु बिचारि जानत अजित कृष्णा पर्म। यह सुनत सभ्यन्ह शब्द जय जय कियो पूरित धर्म्म। प्रशं समान बिकर्णकौं जब शकुनि निन्दित सोर। नितान्त भो तब कर्ण बोलो क्रोधमूर्छित घोर ॥ *॥

कर्णउवाच ॥ * ॥ बिकर्ण बऊत बिकार देखत जगतमे निरधारि। अनल अरणीतैं प्रगटि फिरि देत ताकौं जारि ॥ नही भूपन्ह कहे कछु सुनि द्रौपदीके बैन। बिजित जानो धर्म्मतैं चुपव्है रहे मतिऐन ॥ बाल्यते तुम दृद्धकैसे बचन बोले जौन। नही नीको भांति जानत धर्म्मको पथ तौन ॥ अजित जान्यौ द्रौपदिहि तुमकौं न बिधि मतिधाम ॥ सरबस्व हारे धर्म्म नृप तेहि सभ्य कृष्णा बाम ॥ एक बसना ताहि ल्याए इहां सो न अधर्म्म। कहत तौन बिकर्ण सुनिए बचन मेरे पर्म्म ॥ एकभर्त्तास्त्रियनकौं बिधि रचित धर्म्म ललाम। एक रमति अनेकसौं सो बन्धकीहै बाम ॥ कहे बाल बिकर्णके का सुनु दुशासन बीर। पांडवनके छोरि लीजै द्रौपदी सहचीर ॥ कर्णके सुनिके दुशासन पाप पूरित बैन। बसन खैंचन द्रौपदीको लगो दुर्मति ऐन ॥ * ॥ बिष्णुपद ॥ * ॥

दुशासन लगो खैचन चीर। कृष्णकृष्ण सो जपति कृष्णा भरी सोच गंभीर ॥ जगत व्यापक जगत आत्मा कृष्ण करुणा ऐन। भए गद गद सुनत आरत द्रौपदीके बैन ॥ आय आतुर पास ताकें भए बसन स्वरूप। दीन बन्धु सो करत दीन सहाय त्रिभुवन भूप ॥ कढन अम्बर लगे नाना रङ्गके अभिराम। बसन रूपी परी सबकौं देखि कृष्णाबाम ॥ जयति जयति सु शब्द बोलत सभा सद जन सर्ब। धिग धिग दुशासनकौं कहत धृतराष्ट्रनृपकौं खर्ब ॥ भयो हाहाकार चऊदिशि देखि दुस्कर कर्म्म। कहत सभ्य प्रसंशि सिगरे द्रौपदीकों पर्म्म ॥ दीनबन्धु दयाल दीनानाथ बिरद अमान। क्योन त्रिभुवन नाथ पाले शरणकौं सुखदान ॥ गे दुशासन दुष्टक थकि बसन खेचत हाथ। अमि तन्हे छितिपैं गिरो जय जयति गोकुलनाथ ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

भीमसेन करि क्रोध महान। कहन लगे इमि बचन अमान ॥ * ॥ भीम उवाच ॥ * ॥ बसत लोकमे हमी जौन। सुनै बचन यह मेरो तौन ॥ कहे न काहु ऐसे बैन। भए पूर्वजे अति बलऐन॥ जौयह करौं सत्य नहि भूप। पितृलोक नहिँ लहौं अनूप ॥ यह दुःशासन पूरित पाप। याको हृदय फारि सह दाप ॥ जौ नहि करौं रुधिरकौ पान। रणमे तौ शत शपथ महान ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ भूपन्ह सुने भीमके बैन। लगे सराहन जे मति ऐन ॥ धार्तराष्ट्रकों निन्दत सर्ब॥ देखि बसनकी राशि अखर्ब ॥ बाहु उठाय विदुर मति धाम। कियो सो शब्द निवारण माम॥ कहन लगे इमि बचन प्रमाण। करे नीति नृपधर्म महान ॥ * ॥ विदुर उवाच ॥ * ॥ प्रश्न द्रौपदी कीन्हौ जौन। सकरुण सुनो नृपन्ह तुम तौन ॥ उत्तर तासु कहत नहि भूप। पीडित होत स्वधर्म अनूप ॥ आर्त्त सभामे आवत जौन। ज्वलित दुःख पावकसौं तौन ॥ सभ्य सुधासम कहि मित बैन। करत सधर्म सोचि युत चैन ॥ कहो विकर्ण यथा युत धर्म। तथा सत्यसब भाषहु पर्म ॥ देखत धर्म सो सुनिकै न्याय। उत्तर देय न रहै चुपाय ॥ आधो पाप अनृतको ताहि। मनमे न्याय नियत अवगाहि ॥ उलटो कहै न्यायसे जौन। पूर्ण पाप फल पावत तौन॥ प्रश्न सधर्म द्रौपदी जौन। कहो सुनो तुमसब नृप तौन ॥ उत्तर याको जौन सधर्म। कहहु विचारि सुमति सो पर्म ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुनिकै परम विदुरके बैन। बोले कोउ न नृप मति ऐन॥ कहो दुशासनसौं राधेय। दासिहि जाहु धाम महँ लेय ॥ कँपति द्रौपदिहि सो मति मन्द। खैचो पकरि राहु ज्यो चन्द ॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ दुःशासन दाया करु नेक। करवैहो जो प्रथम बिबेक ॥ सो मै कियो न उत्तम कर्म्म। अब करिलउ जो उचित सुधर्म्म॥ कौरव वृद्ध जो अति मतिधाम। करति तिन्हैं हौं दण्ड प्रणाम ॥ कम्पित लहि दुःशासन दाप। परी भूमि पर करति विलाप ॥ * ॥ द्रौपद्यु उवाच ॥ * ॥ जिन मोहि लखी स्वयंबर मांह। लखत सभामे ते नरनाह ॥ * * ** ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ * * **

लखो रविशशि नही मेरो पूर्व कबहु रूप। सभामे अब लखत मोकों चहूँ दिशिके भूप ॥ बायुको स्पर्श मेरो सहत है नहि बीर। मोहि खैंचत दुष्ट यह अब सहत सो रणधीर ॥ सहतहैं कुरु वृद्ध देखत कालकों बिपरीति। स्नुषा कन्या लगति जिनको ते न गनत अनीति ॥ सती बनिता सभामे यह आनिबो सो जौन। करतहै चिति पतिनको यह धर्म नाश सु तौन ॥ धर्म युक्ता बामको जो सभा माह प्रवेश। धर्मवेत्तन कहो नहि यह बेद बिहित निदेश॥ धर्म नृपकी जौन महिषी द्रुपद कन्या जौन। कृष्णकी हों सखी योग्य न सभामे मो गौन॥ कहत दासी देत मोकों क्लेश दुष्ट महान। सो न हौं सहि सकति अब चिरकाल दुःख अमान॥ गई जीती कै न जीती सत्य कौरव सर्ब। कहहु उत्तर तौन लहि हत करौ जौन अखर्ब॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ कही पहिलैं धर्मकी गति रही सूक्ष्म जौन। जानिबेके शक्य है नहि बिदुष जनकों तौन ॥ धर्म जो बलवान मानत लोकमे सो

धर्म। तिहि धर्मकी मर्यादसें पर होत दुर्बल पर्म ॥ तो प्रश्नको न विवेक को कहि सकत निश्चित बिचारि। निकट होयहि वंशको क्षय परतहै निरधारि॥भए कौरव लोभ मोहासक्त यहि कुलमाह। हो बधूतुम भीमकी सो धर्म च्युत नरनाह ॥ भयो तुमकों द्रौपदी यह कष्ट प्राप्त महान। तऊ तजति न धर्मको तुम जानिकै सुखदान ॥ धर्मबिद द्रोणादि बृद्ध बिलोकि यह छल खर्व। शून्यसे ए भए बैठे प्राण गतसे सर्व॥ नृप युधिष्ठिर प्रश्नमें यहि कहैं सोय प्रमान।अजित हो कै गई जीति तोन सत्य महान ॥*॥ वैशम्पायनउवाच ॥*॥ बक्रत कुररी सदृश रोवत द्रौपदीकों देखि। नहो बोलत कोउ भय धृतराष्ट्रसुतको लेखि ॥ मौन लखि सब नृपनकों सुत अन्धनृपको जौन। हँसत सो इमि कहन लागो द्रौपदीसो तौन ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ *॥ भीमादि पांडव द्रौपदी तो प्रश्नको निरधारि । नहो प्रभु तो धर्म नृपकों कहैं सकल बिचारि ॥ करैं झूठो धर्म नृपको सुनत सिगरे पाँच। छुटजगी तब द्रौपदी दासित्वतैं तुम साँच ॥ धर्म भूपति कहै तो नहि आपुकों जब ईश । दासित्व तजि तब एककों तुम भजऊ बिस्वबोश ॥ दुखितहैं ए सकल कौरव दुःख तो निरधारि । सत्य कहत न पांडवनको हीनभाग्य बिचारि ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यह सुनि सुयोधनकों प्रसंशन लगे सिगरे भूप । धर्म नृपके बचनकों सब रहे चाहि अनूप॥ कहत पांडव कहा सुनि धृतराष्ट्रसुतके बैन । लगे सब नृप लखन तिनको ओर कीन्हे नैन ॥ ॥ * ॥ भीमउवाच ॥ * ॥ ईश जौं यहि वंशको नहि होत धर्म नरेश। तौन हम यह सहत तो छत पाप जन्य कलेश ॥ प्राणके मम ईशहैं ए धर्म नृपति अखर्ब। हारिमाने ते इन्हे हम गए जीते सर्व॥ नहो जीवत जीव मोसों भूमि धारी जात । द्रौपदीके केशको असपरस करि बिनु बात ॥ लखऊ मो भुजदण्ड सुंडादंडसे अतिमान । इन मध्यपरि नहि जाय जीवत इन्द्रसो बलवान ॥ धर्मके हम पाशबद्ध सु करत जिष्णु निरोध। नहो यातें कष्टतें हम छूटि पावत बोध॥ धर्मनृप जौं कह तो ज्यों मृगन्ह सिंह महान । धृतराष्ट्रके इन सुतन्हकों करमर्दि करत पिसान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ भीष्म द्रोण सु बिदुर बोले क्षमा कीजै बैन। तुम्है हम सबभांति जानत योग्य हो बलऐन ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥ भीष्म क्षत्ता द्रोणहैं यहि सभामें धनमान। स्वामि निन्दा करत जे सम शत्रुके बलवान॥ निधनहै जन तीनि जगमें पुत्र नारीदास। पितापति प्रभु लेह सिगरो बित्त जो इन पास ॥ द्यूत हारे भए पति तो दास क्ष्माबान। दासपत्नी रहति स्वामीके बशम अभिराम ॥ जायके नृप सदनमें तुम करऊ दासी कर्म। धृतराष्ट्रके सब पुत्रहैं पति रावरे के पर्म ॥ और पति करहोय जातैं भाव दासी मुक्त। निन्दि दासिनकों नहै बऊ पतिन सो रति युक्त। द्यूतमें सब हारि पांडव भए दास अखर्ब । भई दासी द्रौपदी तुम ए न तो पति सर्व॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भरे भीम अमर्ष यह सुनि करे दारुण रूप। बंधे धर्म सुपाससों इमि कहन लागे भूप ॥ * ॥ भीमसेनउवाच॥ *॥ करत कोप न सूतसुत पर पाय हम पद दास ॥

आपु याहि न हारते इमि कहत को मो पास ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भीमको सुनि बचन बोले यों सुयोधन भूप। धर्म्म नृपसों व्यलक बैठे धरें मौन स्वरूप॥ भीम अर्जुन मद्रजासुत स्ववश हैं तो पर्म्म। प्रश्न कृष्णाको कहहु जों अजित जानहु धर्म्म॥ यहि भांति कहि पट टारि जङ्घा बामकों हँसि हेरि। द्रौपदीसों कहो ओधन मोहमदसों घेरि॥ सुंड सम दृढ बज्रसी बर भरी लक्षण सर्व। लखहु हाला प्रीतिसों यह उरू बाम अखर्व॥ भीमसेन बिलोकि ऐसें कहन लागे बैंन। सभाजनन्ह सुनाइ कै अति करें राते नैंन। पितृलोक न लहों हत यह करों जो न उदार। हनौ जरू युद्धमे करि गदाको सुप्रहार॥ भीमके तन श्रोततें कोपाग्नि किरण कराल। जरत ज्यों तरु कोटरनतें कढति ज्वाल बिशाल॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ धृतराष्ट्रसुत अति द्यूत किय पण भई कृष्णा बाम। देखि परत न क्षेम मंत्री जहां दुर्म्मति धाम॥ आपु हारे विना कृष्णहिं करत जो पण भूप। जाति जीति नतरु है यह स्वपण सदृश अनूप॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ भीमादि पांण्डव धर्म्म नृपको देहिँ बोलि अनीश। दासित्वतें तब द्रौपदी छुटि जाय बिस्वेबीश॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ हमसबके ऐ ईश पहिलें द्यूतके हे भूप। हारि आपुन पें गए नहि रहो ईश स्वरूप॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ मख भवन हो धृतराष्ट्रको तहँ आइ सघन शृगाल। लगे बोलन रासभो बहु करत शब्द कराल॥ शब्द सुनि गान्धारजा कृप भीष्म बिदुर सद्रोण। लखि लखि सु कहन लागे जानि अतिभय भौंन। बिदुर अरु गान्धारजा धृतराष्ट्रके चलिपास कहो सो उतपात सिगरो भरे अश्रेतय त्रास॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ नष्ट भो दुर्योधना यह महा दुर्मति ऐंन। द्रोपदी नृपधर्मपत्नीसों कहत इमि बैंन॥ यहि भाँति कहि धृतराष्ट्र गुणि भय भूरिकर उतपात। कहे कृष्णासों बचन शुचि शांतिमय अवदात॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ द्रौपदी बर मागि मोसों जौन बांछित तोहि। बधुनमे लखि श्रेष्ठ तोकों होत आंनद मोहि॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ देत जौं बर दीजिए तौ भूप मागति जौन। धर्म नृपति अदास होहिँ सुधर्मको बर भौंन॥ दाससुत प्रतिविन्ध मेरे पुत्रकों अभिराम। कहै कोउ जगतमे नहि महा निन्दित नाम॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ * ॥ होय कल्याणी सो तैसो कहति हो तुम जौन। दूसरो बर मागिए अब होय बांछित तौन॥ चहत मो मन देनकों बर तुहीँ बहु अभिराम ॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ सरथ सधनु सु भीम अर्जुन माद्रिसुत बलधाम॥ दास पदतें मुक्त होंहि सो देउ सुबर सुजान॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ * द्रौपदी तुम कहति तौन तथास्तु बर सुखदान। तीसरो बर मांगि कृष्णा जौन भावै तोहि। बहुनमे तुम श्रेयसी अति प्रीतिकारक मोहि॥ * ॥ द्रौपद्युवाच लोभ नाशक धर्मको नहि मोहि भावत भूप। तीसरो बर मागिवो है नहो मो अनुरूप॥ एक बर है वैश्य इस्त्रीक्षेत्रजनकों दोय। तीनि बर है भूपकों द्विजवर्ण बहु बर होय॥ पापाब्धितें ए

स॰प॰ भए हैं उत्तीर्ण सोपति पर्म । भद्रकौं बऊ लहैंगे करि पुण्यकारक कर्म ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥ सुनी है तिय श्राजुलौं जो भद्ररूप प्रधान । नहो ओसो कर्म काहूँ ओरको सुखदान ॥ क्रोध पाण्डव कौरवनको महा दारुणरूप । शान्त कीन्हों द्रौपदी नृपकृपा पाय अनूप ॥ दुःखाब्धिमे ए रहे बूडत पाण्डुसुत सह धर्म । भई नौका द्रौपदी यह पारकारणि पर्म ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच पाण्डवनकौं भई सुख्खी परम गति क्वत हर्ष।तौन सुनि कै भीम बोले पाय अमित अमर्ष। भीमउवाच पुरुषकौं ए तीनि जोतिसु कार परम प्रकास। पुत्र औ सतकर्म विद्या सुनो देवलभास ॥ प्राण गत अपवित्रतन हत होत सहित विकार। देत तीनो पुरुषकौं ए उर्ध सुगति उदार॥ज्योति सो मम हतो इन करि भारयाको पर्ष। होइ सो शतपुत्र कैसैं जिसु कारक हर्ष ॥ अर्जुनउवाच॥ कहत हैं जे नीच जनगण परुष अप्रिय बैन। नहो कवँहू कहत ताकौं साधुजन मति ऐन॥ सन्त समुझत सुव्रतकौं सुसर्ण करत न बैर। विज्ञ जानत सदृश अपने जीवकौं तजि बैर॥ भीमउवाच॥ तात सतुर सँहारि शत्रुन इहाँ सो चलि वीर। बाहिरैं निर्मूल कीजे बचै एक न धीर ॥ इहाँ व्यर्थ विवाद कीवो करैं कर्म अखर्ब। मारि कै सब शत्रु कीजे भूमिकौं वश सर्ब॥ भीम ओसे बचन कहि के मद्रजासुत सङ्ग। लखत तिनकौं एनसे सम सिंह करि भ्रूभङ्ग ॥ क्रोधतैं सब श्रोततें तब काढन लागी ज्वाल। परो देखि कराल कारक प्रलय कैसो काल॥बाऊ गहि कै करि निवारण धर्मनृप मतिमान। गए अञ्जलि जोरि ढिग धृतराष्ट्रके सुखदान॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ * ॥ होय आज्ञा करै सो हम कृपा कुरु नरनाँह। चहत हैं हम रावरेकी रहो आज्ञा माँह॥धृतराष्ट्र उवाच ॥ * ॥ होय तो कल्याण जाहि अरिष्ट सकल नशाय । राज्य अपनो सधन तुम अब करऊ पालन जाय॥ वृद्ध शासन मानि मेरो जानि पथ्य सुजान।धर्मगति तुम सूक्ष्म जानत धर्मनृप सुखदान॥ धर्म जँह तँह बुद्धि है जहँ बुद्धि तँह सन्तोष। परुष भाषत अधम नर सम्वादमे करि रोष॥ आर्य्यजनकी तजत नहि मर्यादकौं अन सन्त। द्युतसङ्गमेद्दूत आइकै तुम कियो सो चितिकन्त॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वचन सुयोधनको परुष हियमे धरऊ न धीर। अन्ध हमहि देख ऊ चितै गान्धारी दिशि वीर॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

[illegible] करिवो योग्य कैनहि भूप यह कुरुवंश। जास शासन करत हो तुम तात परम प्रसंश॥

॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ * ॥

[illegible]प्रस्थकों अब धर्मनृपति ललाम । प्रीति शासनसों रहौ मन धर्ममे अभिराम ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

यों सुनिकै धृतराष्ट्रके वचन बोलि सत बैन । चले सु खांडवप्रस्थकों धर्मनृपति मति ऐन ॥

चढे मेघसे रथनपै पंडुतनय बलवान । चले सु खांडवप्रस्थकों सह कृष्णा सुखदान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी सं॰प॰ वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनायकविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्वणि द्यूत वर्णनो नामैकादशो ध्यायः॥ **********

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जनमेजयउवाच ॥ * ॥ अन्ध नृपतिकी आज्ञा पाय । चले युधिष्ठिर सधन सहाय ॥ सुनत सुयोधन जौंन चरित्र । कियो तौन कहिए मुनि मित्र ॥ बिदा कियो धृतराष्ट्र नरेश । सधन जात पांडव निजदेश ॥ यह सुधि पाय दुःशासन दुष्ट । गो दुर्योधन पास अपुष्ट ॥ दुखसौं भरे कहे ए बैंन । सहित कर्ण सौबल छल ऐन ॥ * ॥ दुःशासनउवाच ॥ * ॥ दुखसौं कियो स्ववश हम जौंन । बृद्ध कियो कृत नाशित तौंन ॥ गयो सहित धन शत्रु महान । तिन्हैं महारथ जानु सुजान ॥ कर्ण शकुनि दुःशासन सांथ । गए सुयोधन जँह कुरुनाथ ॥ आतुर कहन लगे मृद बोल । धरैं हृदयमहँ दुःख अतोल ॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ तात नीति तुम सुनी न तौंन । कही शक्र सो सुरगुर जौंन ॥ शत्रु हनी करि बिविधि उपाय । नतरु युद्ध करि सहित सहाय ॥ गहि अहिकौं करि कुपित कराल । शिर धरि नहि छोडी छितिपाल ॥ नानाशास्त्र धरे बरबीर । रथारूढ धरि कोप गँभीर ॥ तो कुलकौं करिहैं निःशेष । ए आसीविषसे सु बिशेष ॥ अर्जुन धरे अक्षय तूणीर जात धनुष टङ्कारत बीर ॥ भीम गदा उद्यम्य महान । जात सुनो हम हे मतिमान ॥ नकुल खड्ग धरि चर्म उदार । सहदेव धर्मनृप गुणाकार ॥ ते रथपर चढि आतुर जात । सैन जोरि करि है उतपात ॥ सहि हैं सो कृत नही बिकार । समुझि द्रौपदी क्लेश उदार ॥ फेरि द्यूत बनबास निमित्त । कीबो हमै तात है हित्त ॥ यहि बिधि तिन्हैं स्ववश करि भूप । द्वादशब्द बनबास अनूप ॥ करैं तेकि हम निर्जित होय । बनमे बसैं दोयमह कोय ॥ बर्ष तेरहैं रहैं अज्ञात । बनमे बसैं भए फिर ज्ञात ॥ फेरि द्यूतकौं करिए भूप । यह हमकौं कृत परम अनूप ॥ सौबल जानत द्यूत अतूल । जीति होहिगे हम दृढ मूल ॥ सेना सङ्ग लेइ अतिरूप । बीतैं बर्ष त्रयोदश भूप ॥ तिन्हैं जीति है रणमे मारि । करज्ञ मंत्र यहतात बिचारि ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ बेगि प्राति कामी तुम जाय । फेरि पांडवन स्याय बोलाय ॥ करै द्यूत पांडव फिरि आय । मेरे सुतन सङ्ग पण लाय ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ गौतम द्रोण बिदुर मतिमान । सोमदत्त बाल्हीक सुजान ॥ गुरुसुत भूरिस्रवा बिकर्ण । भीष्म सहित सब धर्माचर्ण ॥ बोले करज्ञ द्यूत मति भूप। कारक कुसल छामको रूप ॥ सुत प्रिय सुनो न भूपति अन्ध । कियो बोलाय द्यूतको धन्ध ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ गान्धारी तब नृपपँह आय । कहे धर्मयुत बचन बनाय ॥ जन्मत दुर्योधनके छत्त । ऐसैं कहे बचन दुखमत्त ॥ यह सुत तजऊ छोडि प्रतित्राश । यह कारक कुरुकुलको नाश ॥ जनमत शब्द कियो सम स्यार । भो यह नाशक बंश कुमार ॥ अपने दोष सलिलमे भूप । तुम्हैं

स॰प॰ बूडिबो नही अनूप ॥ बाल अशिष्टनको मत मानि। नाशक बंश होऊ मति जानि ॥ बाँधो सेत न देऊ गिराय। कुपित पांडवन्ह कुरु न बोलाय ॥ शास्त्र देत नहि काहूदंड। होत बालमति हड्ढ न चंड॥ कुलनाशक तजि दीजे याहि। यह व्रत करि कुरुकुलकों पाहि॥गान्धारी कहि नीति अनूप। हो धृतराष्ट्र न मानो भूप ॥ प्राप्त नाश नहि कुलको जौन। हम नहि टारि सकत है तौन ॥ जो तुम कहति होय सब तौन।पांडव करै इहाँ फिरि गौन॥ पांडव और हमारे पूत। खेलै फेरि यथा बिधि द्यूत ॥ पांडव पास सूत सुत जाय। दिए भूपके बचन सुनाय॥ बैठी सभा सकल नृप धर्म्म। तेहाँ धरे अक्ष अति पर्म॥ तुम्हे बोलायो तुम्हरे तात।द्यूत खेलिबेकों सह भ्रात॥सुने प्राति कामीके बैन।बोले नृपति धर्म्म मति ऐन॥युधिष्ठिर उवाच ॥बिधि बश लहत सुखा सुख सर्व। तास न स्ववश निवृत्ति अखर्व ॥ जानत क्षयकर द्यूत महान। है उल्लंघ्य न बृद्धाह्वान ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ अद्भुत हेम हारिए अभिराम। विधि बश लुब्ध भए श्रीराम ॥ नीरे होति बिपति जब भूप। व्है बिपरीति जात मतिरूप ॥ यह कहि भ्रातन्ह सह नृपधर्म्म। फिरि आए शुणि सौबल कर्म्म॥ गए सभामह पांडव भूप। करत दुखितहित चेत सरूप ॥ * ॥ शकुनि रुवाच ॥ * ॥ छोडि वृद्ध धन दीन्हो जौन। कहत एक पण धरिए तौन ॥ द्यूत हारि हम कै तुम भूप। बनमे बसैं धारि मुनि रूप ॥ बारह बर्ष तेरहे जाय। काहू पुरमे रहै छपाय ॥ हाँहिं प्रगट तौ तेरह वर्ष। ऐसैं बिपिनि बसैं तजि हर्ष॥ जो जीतै सो दोनो राज। करैं भोग सम्पति ससमाज ॥ वर्ष त्रयोदश यह ब्रत जौन। पार यथा विधि करि कै तौन ॥ लेय आपनो फिरि सो राज। करौ भोग सुख सहित समाज ॥ ऐसो करि ब्यवसाय विवेक। खेलऊ द्यूत राखि पण एक ॥ यह विचारि कै धर्म्म नरेश। राखऊ पण बन राज्य निसेश ॥ यह शुनि रहे सभासद जौन। कर उठाय सब बोले तौन ॥ ॥ * ॥ सभ्याऊचुः ॥ * ॥ इन बान्धव जनकों धिकार। कहत न जे भय जानि उदार॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ सुने धर्म्म नृप जनधन बैन। लाज धर्म्मवश व्है मति ऐन॥ फेरि द्यूत चाहो मति राश। जानि कुरुणको निकट विनाश ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ पालक धर्म्म सु हमसो भूप। द्यूताह्वत आइ अनुरूप ॥ नहि निवृत्त ह्वैहैं तो सङ्ग। शकुनी करहि गे द्यूत प्रसङ्ग ॥ राज्य एकदिशि सह धन राश। एक ओरपण धरि बनबाश ॥ राज्य करै पण जीतै जौन। हारै जाय बिपिनि कँह तौन॥ करो धर्म्म नृपसो स्वीकार। फैंको अक्ष शकुनि छलसार ॥ हौं जीतो यह बोलो बैन। सौबल महापापको ऐन ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ हारि पार्थ बनबास बिचारि। सबहिन लियो मृगाजिन धारि ॥ धरैं तिन्है अजिनाम्बर देखि। चलो चहत बनको अवरेखि ॥ दुःशासन हसि बोलो बक्र। भयो प्रवृत्त सुयोधन चक्र ॥ पाण्डव बिपतिनर्ककों पाय। बहुत कालकों गिरे अबाय ॥ धनतें मत्त न मानो त्रास। कियो सुयोधन नृपको हास ॥ *❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सु०प०

तब पाण्डव बनकों चले हारि राज्य धन धाम। तजे शस्त्र भूषण बसन धरे अजिन अभिराम ॥
हम सम पुरुष न जगतमे रहे जे करत बिचार। ते अब देखैं आपुकों ज्यों तिल षण्ड असार ॥
बुद्धिमान व्है द्रुपदनृप कियो कहा यह कर्म्म। क्लीब पांडवनकों दइ कृष्णा कन्या पर्म्म ॥
अजिन बास धनपास नहि हतश्री राज्य निहारि।सुख न लहैगी द्रौपदी पति कुरु अन्य बिचारि॥
ए कुरुवंशी गुण भरे महाबली धनवान। इनमे कोऊ एकपति कृष्णा बरऊ समान ॥
यथा चर्म्मको रचित मृग तथा पंडुसुत सर्ब। इन पतितन्ह सेएँ कहा व्यर्थ षण्ड पति खर्ब ॥
कहे दुश्शसन क्रूर मति परुष महा इमि बैन। सुनत भीम अतिक्रोध करि कहन लगे यों बैन ॥

॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥

क्रूर पाप जनलौं कहत ऐसे बचन अनर्थ। सौबलकी बिद्या लहें बोलत भयो समर्थ।
यथा वाकशरतें व्यथित करत अरे शठ मोहि। तथा मारि कै समरमे समुझावौं गों तोहि ॥
जे अनुगामी तो सकल सम्बन्धीजन जौंन। तिन्हे मारि देहौं पठै समरमध्य यमभौंन॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

भरा क्रोध ऐसे कहत भीमाजिन धरिबास। दुःशासन उठि कै लगे नाचन ताके पास ॥
धर्म्म बद्ध लखि पांडवन्हमधि नृप सभासमाज। गऊ गऊ लागे कहन दुःशासन तजि लाज ॥

॥ * ॥ भीम उवाच ॥ * ॥

अरे क्रूरकर्म्मा परुष कहिबो तोहि समर्थ। छल बलते धन पायकै ऐसे ब्रकत अनर्थ ॥
तौन वृकोदर सुकृतको पावै लोक महान। फारि हृदय तो समरमे करै न शोनित पान॥
महारथिनके लखत हनि अन्धनृपतिसुत सर्ब। समर मध्य तब लहैगो मो मन शान्ति अखर्ब ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

चलत बनकों भीमकी गति सहश खगति बनाय। चलन लागे नृप सुयोधन हँसतसे सुख छाय ॥ फेरि आधो काय लखि सो भीम क्रोधारूढ। कहो सह परिवार हनि समुझाइ हौं तोहि मूढ ॥ देखि कै अपमान यह धरि क्रोधकौं अतिमान ॥ जात अनु नृपधर्मके इमि कहो भीम सुजान ॥ भीमउवाच ॥ * ॥ हम सुयोधनहा सु अर्जुन कर्णहा बर बीर। शकुनिहा सहदेव रणमे होहिगे धरि धीर ॥ कहत हैं हम सभामे फिरि टेरि बचन महान। करै सो बिधि सत्य हमसो भए रण अतिमान ॥ गदा सौं हनि कै सुयोधन पापकौं शिर जौंन। चरण तलसौं दाबि कहिहै वृहद्वाणी तौंन ॥ वाक्यसूर दुःशासनाको फारि उरस महान। समर मे मृगराजसे हम रुधिर करि है पान ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ रहे गो सो लखे गो यदि बचनको व्यवसाय।

भीम तेरह वर्ष बीत समय संयुग पाय ॥ भीमसेनउवाच ॥ कर्ण दुःशासन सुयोधन शकुनि शोणित जौन । चैादहँ वर्षान्त मे भू पान करिहै तैान ॥ * ॥ अर्जुनउवाच * ॥ भीमसेन नियोगतें तव समर सोह पाय। हनो गो हा कर्णकोँ जो महादुष्ट स्वभाय ॥ कर्णके जे सङ्ग लरि है और भूप महान। तिन्है यमपुर देहिगे पङ्कचाय मेरे बान ॥ प्रभा छोडैँ सूर शशि गिरि चलै जो हिमवान। तो प्रतिज्ञा होय मेरो व्यर्थ सुनङ्क सुजान ॥ चैादहँ जो वर्ष देहै नहि सुयोधन राज । होय गो सो सत्य जो हम कहत मध्य समाज ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ पार्थ ऐसेँ कह्यो तब सहदेव करि अतिक्रोध । कहन लागे शकुनिके बध करणको करि बोध ॥ * ॥ सहदेवउवाच ॥ * गांधारकुल यश हरण यह नहि मातुल अयान । प्राणहर्त्ता समरमे ए है निमंत्रित बान ॥ तुम्है करि उद्देश मातुल भीम बोले जैाँन । सह बन्धु तुमकोँ समरमे हम मारिहै बलभैाँन ॥ नकुलउवाच ॥ * ॥ दुखित कृष्णहि कियो जिन धृतराष्ट्रसुतन्ह महान। मारि रणमे देहि गे फल तिन्है तास समान ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ करि प्रतिज्ञावन्त योँ नरव्याघ्र पांडव बीर । गए ह्वैँ बिदा तब धृतराष्ट्रपहँ रणधीर ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ सोमदत्त सभीष्म कृप वाल्हीकसों मतिमान । विदुर द्रोण सपुत्रसों नृप और जैाँन सुजान ॥ बिदा हम धृतराष्ट्रसों अब होत आनद पाय। देङ आज्ञा कृपा करि तुम मिलहि गे फिरि आय ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ नहीं काह्रूँ दियो उत्तर लाजवश नत नैन ।मानसिक कल्याण तिनको भे मनावत ऐन ॥ * ॥ विदुरउवाच ॥ * ॥ राजकन्या पृथा वृद्धा अवल दुर्बल रूप । योग्य नहि बनवासके है सुनङ्क कुरुकुल भूप ॥ बसैगी मम धाममे सो यत्नसोँ अभिराम । जाङ्क तुम कछु योसम तो सुफल ह्वै है काम ॥ * ॥ पाण्डवाऊचुः ॥ * ॥ तथास्तु कहि फिरि कहे तिन भरि प्रीति बचन अखर्ब। पितृव्य हो तुम पितासम हम तुम्है जानत सर्ब ॥ परम गुरु तुम कहो हमकोँ करैँ गे हम तैान। सकल जानत आपु हो करतव्य हमकोँ जैाँन ॥ * ॥ विदुरउवाच ॥ * ॥ होत व्यथित न बिपतिमे ते सुनङ्क भूपति धर्म। जिन्है जीतत शत्रु कोज करि कुनीति अधर्म ॥ धर्मज्ञ तुम हैँ युद्धजेता जिष्णु अरिहा भीम । नकुल अर्जक बित्तको सहदेव अति मति सीम ॥ धर्मचारिणि द्रैापदी सुँग धैाम्यमुनि तपधाम । होयगो कछु योसमे कल्याण तो अभिराम ॥ यहि भाँतिसोँ कहि विदुर मनमे भरे भूरि विषाद । धर्मनृपको दिए नाना भाँति आशीर्वाद ॥ ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धर्म नृपति तथास्तु बोले बिदुरके सुनि बैन। भीष्म द्रोण हि बन्दि बनकोँ चले अतिबल ऐँन ॥ बिदा ह्वैँ द्रैापदी तब गई कुन्ती पास ।बचन बोलो चलनके बन भरे जे दुख रास ॥ बन्दि मिलि कै सविधि कृष्णा चली जब बन ओर। भयो पाण्डव भैाँनमे अति भोर करुणा सोर॥ जात देखत द्रैापदीकोँ भरी ताप अचैन। शोक बिन्हल कहन कुन्ती लगी ऐसे बैन॥ नही तोकोँ शोक करिवो व्यसनकोँ यहि पाय । धर्म जानि सुशील बनितनको परम सुखदाय ॥

किए भूषित दोउकुल तुम साधुतासों पर्स। भाग्यते नहि जरे कुरु जिन कहे बचन अधर्म ॥ बिन्न सं०प० रहित सु जाऊ पथमे भरो पतिब्रत प्रीति । बिपतिमे कुलबधुनको नहि होत मन बिपरीति ॥ धर्म रक्षित मनुज श्री सब लहत बिनऊ प्रयत्न ।सहदेव मो प्रिय पुत्रको सबभांति कीजो यत्न॥तथास्तु कहि कै चली कृष्णा बिदा होय अचैन। एक बसना रजखला दुखबारि बरषत नैन ॥ प्रथा रोवत देखि ताके चली अनु दुख पाय ।जाय कै तहँ लखे सिगरे सुतनकों सुखदाय॥ लाज भारे अधोमुख रुरुचर्म्म धारे सर्ब। खुसी देखत शत्रु तिनको दुखित सुत हि अखर्ब ॥ देखि ऐसैं सुतनकौं भरि प्रथा मनसन्ताप। करि अलिङ्गित भांति नाना लगी करण बिलाप ॥ * ॥ कुन्त्युवाच ॥ * ॥ धर्म्म इत्त चरित्र भूषित देवरति मति जौंन। दुःख ते जन लहत हैं यह बिधि बिपर्जय कौंन॥ कौनको यह शाप लागो जानि परत न मोहि। दोष मेरे भाग्यकौं सुत जान जननी तोहि ॥ भरे सद्गुण पुरुष ते नहि दुःख भोगी होत । हाय कैसैं बसैं गे बनदुर्गमे मम पोत ॥ जानती हम पुत्र तुमको नित्य जौं बनवास। पण्डु पीछैं आवती नहि हस्तिना पुर पास ॥ पितु हो तुम्हारो धन्य ताको भयो पूर्ब हि मर्ण ।नहि देख तो यह जो तुम्हारो समय बऊदुख कर्ण ॥ धन्य माद्री गईजो पतिसङ्ग पतिव्रतलोक । भयो जीवन जगत मे यह हमै दायक शोक॥ भूलि गे कर्माङ्क लिखत न परो बिधिकौं जोहि । अन्त मेरो नहीं यातैं मृत्यु पावति मोहि ॥ कृष्ण बासी द्वारिकाके महा मोद निकेत। करऊ रक्षित मोहि करुणासिन्धु सुतन्ह समेत ॥ आदि अन्त बिहीन तुमकौं भजत हैं नर जौंन। तिन्है रक्षत बिरद व्यर्थ न तुम्हैं कोवे तौन॥धर्मशील सु पुत्र मेरे बिपति जोग्य अहै न। दीनबन्धु सु करै इनपै कृपा करुणा ऐन॥ नीतिवेत्ता भीष्म गौतम द्रोण जँह बर बीर। तहाँ बिपति अनीति सम्भव लहै कौन गँभीर॥ यहिभाँति बिलपति प्रथाके बर बन्दि पांडव पाय। चले बनकौं बिदुर कुन्तिहि गए दुखित लेवाय ॥ कौरवनकी तियन सुनि सब द्रौपदी अपमान। लगीं रोदन करण अपने पतिन्ह निन्दि महान ॥ अनय पुत्रन्हको सकल धृतराष्ट्र नृप निरधारि ॥ उद बिग्न मन ह्वै धरत हैं नहि शांतिकौं सुबिचारि ॥ बिदुरकौं बोलवाय मागो अन्ध कौरव भूप ॥ लगे बूझन पांडवनके गमनको अनुरूप ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ गए कैसैं सकल पांडव द्रौपदी मुनि धौम्य। कहऊ सहित बिधान हमसों हे बिदुर मति सौम्य ॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ धर्म नृप मुख मूँदि पटसौं बाऊ निरखत भीम। जिष्णु शिकता गए छींटत भूप अनुबल सीम॥लीपि मुख प मृत्तिका सहदेव अति मतिमान । पांशु सिगरे अङ्गमाह लगाय नकुल सुजान ॥ केशसौं मुख मूँदि कृष्णा भरैं लोचन बारि। साम पढत सो धौम्यमुनि यम देवता निरधारि ॥ दर्भ लीन्हे हाथ मे नृप साथ तप बर जात । करैं लोचन अरुण अतिशय चहत सो उतपात ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ गए पांडव बिबिधि कीन्हे रूप याकोहेत । तौन हमसौं कहऊ बिधिवत बिदुर समुझि सुचेत ॥

स॰प॰ बिदुरउवाच ॥ * ॥ तनय तुम्हरे राज्य धन सब लियो छलसो जीति । तजत तबहूँ धर्मरूप नहि धर्मपथसो प्रीति ॥ दया करि तव सुतनपैं किय धर्म नृपमुखरोध । जानि व्है इ भस्म मेरी पर दृष्टि सक्रोध॥नही मेरे बाहुबलसम औरको बलभूप।भीमसेन सु जात यातैं लखत स्वभुज स्वरूप॥ सङ्ग शत्रुनके चहत हत कियो बाहु समान। बाहु देखत जात याते भीम अति बलवान ॥ पार्थ छीटत जात सिकता क्रोधसोँ बरबीर । बाण बर्षण चहत रणमे तथा तीन गँभीर ॥ नही कोऊ हमै चीन्है चित्तमे निरधारि । जातहै मुखलिप्त करि सहदेव सुमति बिचारि ॥ नकुल पांसु लगाय तनमे जात है छबिधाम । नही मोहित होय तरुणी देखि कोउ अभिराम॥ एकबस्त्रा रुदति कृष्णा जाति महत अचैन। रजस्वला रजरक्तबसना कहति ऐसे बैंन ॥ किए जिनकैं भयो हमकोँ प्राप्त यह दुखमाम । होंहि वर्ष चतुर्दशे हतनाथ तिनकी बाम ॥ भरी रजके रक्तसोँ करि पतिनका जलदान । आहि हास्तिन नगरकों ते भरीशोक महान ॥ किए नैऋत दर्भ पढत कृतान्त दैवत बेद । जात तपनिधि धैाम्य आगैं भरो जो अति खेद ॥ मरे कुरुकुल बेद ऐसैं पढो चाहत तान । क्रोधसोँ भरि देखिऐसे करत पांडव गैान ॥ धिक्कारहै कुरु गुरुणकोँ जे वृद्ध शिशुमतिउद्ध । देश बाहेर पंडसुत जिन किए छलकरि उद्ध ॥ प्रीति नीति न कैारवनमे दुर्बिनीत अखर्ब। भरे दुखसो कहतहैँ पुर प्रजा ऐसैं सर्ब ॥ कढत तिनके गिरी बिद्युत दाहिने पुरपास । रहो पर्ब न राहु रविकों आय कीन्हो ग्रास ॥ भयो उल्कापात हास्तिन नगर दहिनी ओर । लगे बोलन गृद्ध अरु गोमायु बायस घोर ॥ भए नानाभाँतिके उतपात अमित स्वतंत्र । भरत कुलको नाशह्वै पाय तोदुर्मंत्र ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * *

कहत रहे धृतराष्ट्रसोँ जहाँ बिदुर रसभङ्ग । नारदमुनि आए तहाँ लएँ महर्षिन्ह सङ्ग ॥
कहे कैारवी सभामे बचन महा मुनि क्रुद्ध । वर्ष चैादहे आजुतैं घोर होयगो युद्ध ॥
दुर्याधनको दोष हत कारण पाय महान । भीमार्जुन कुरुवंशको करिहैं नाश असान॥
ऐसैं कहिकै महा मुनि व्है गए अन्तरध्यान। धारे ब्राह्मी सिद्धिकों बैठे बिमल बिमान॥

॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

तब दुःशासन शकुनि सह कर्ण सु योधन भूप। द्रोणहि जानि शरण्य चलि सैांप्यैा राज अनूप ॥
द्रोण सुयोधन भूपसों कहन लगे इमि बैंन । कर्ण दुशासन शकुनि सह देखि सभीति अचैन ॥
बध्य न पांडवकों कहत देव तनय बलधाम । है त्रिकाल बेत्ता जठर जे द्विजबर मतिमाम ॥
शरण गतको करत रक्षण यथाबल अनुमान । तथा सुत धृतराष्ट्रके नहि त्याज्यहै सुखदान ॥
पाण्डु तनय बश कर्म्मके हारि गए बन भूप । द्वादशाब्द बसि बिपिनिमे करि ब्रत नियम अनूप ॥
दुःख सम्मुक्ति सब आपनो तो हत दोष महान । बैर लेहिंगे ऐासि ते महाबीर बलवान ॥
सख्य भेदत द्रुपदको हम लिय राज्य बढाय । पुत्रहेतु तेहि मख कियो मो बध करण उपाय ॥

स॰प॰

तपत जाज उपजाजके पुत्र लहो तेहि भूप । धृष्टद्युम्न अरु द्रौपदी कन्या अग्निस्वरूप॥
अग्नि कुण्डतें भयो सो धरे धनुष असि दर्म । ताते हमकों होय गो मरणरूप भयकर्म ॥
द्रुपद पक्ष नृपधर्मके सुतन सहित रणधीर । भीमार्जुन जाके अनुज अतिबल अतिरथ बीर ॥
भए युद्ध तिनसों नियत मरण हमारो भूप। धृष्टद्युम्नकों कहत सब द्रोणमृत्युको रूप ॥
नियत प्राप्त सो काल भो तो कृतते कुरुनाहालही जो श्री यह कर्म्म करि तैान तालतरुछाह॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

करज्ञ यज्ञ वर भोग बिधान । वर्षचौदहँ युद्ध महान ॥ ह्वहै सुनज्ञ भूप मतिराश। क्षत्र वंशको जाने नाश ॥ सुनि धृतराष्ट्र द्रोणके बैन । कहो बिदुरसों भरो अचैन ॥ फेरि पांडवन ल्यावज्ञ क्षत्त। होहि कदाचित ते न निबृत्त॥ तौ ते जाहिँ सहित सतकार। रथन्ह चढे सहमल्ल उदार ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्वणि पांडववनगमनवर्णनोनाम द्वादशोऽध्यायः ॥ * * * * * * * * *

॥ * ॥ छन्द ॥ ॥

हारि द्यूतमे पाण्डव भूप । जब बन गए धारि मुनिरूप ॥ तब चिन्तावश भए नरेश। लेत श्वास भरि भूरि अदेश॥ देखि व्यग्रमन भूप महान। बोले सञ्जय नीति समान॥ सञ्जयउवाच॥ भू वसुमती पाय कै भूप। पठै पांडवन्ह बन मुनि रूप॥ तुम अब शोच करत केहिकाम। लहि श्री करज्ञ भाग अभिराम ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ सञ्जय करि पार्थन्हसों बैर। बढो न काहि शोचको मैर ॥ सञ्जयउवाच ॥ * ॥ तो कृत बैर भयो यह भूप । लोकनाश भवितव्य अनूप॥ भीषम द्रोण बिदुरको बैँन । तो सुत नहि मानो सुखऐँन ॥ सूत प्रातिकामिहि पठवाय । किय अनीति द्रौपदि हि बोलाय ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ जाकोँ दैव पराभव देत। ताकी बुद्धि प्रथम हरि लेत ॥ भएँ विपर्यय बुद्धि सुजान । लखत अनय नर नीति समान॥ लखत अनर्थ अर्थ सम तौँन। अनरथ गणत अर्थ है जौँन॥ खैचत कृष्णा हि सभामझार। सम्भावित रण भयो उदार॥ श्री सम रूप अयो निजा जौँन। अग्निकुण्डतें प्रगटी तौँन ॥ज्योति समान सभामह चाहि। बिना कितव को खैँचत ताहि॥ सो रजस्वला शोणितयुक्त। एकबसन कच बन्धन मुक्त॥कृष्णा लखत पांडवन ओर। हारे जौँन द्यूतमहँ घोर॥ सुने सक्रोध सभाके औँन । मो पुत्रनके अनुचित बैँन॥ जासु चक्षु क्रोधानल सर्ब । भस्म करै यह भूमि अखर्ब ॥ सोसुत भस्माशेष समान। सञ्जय जानिपरत सबिधान ॥ सभामध्य कृष्णाको गौँन।सुनत शोक पूरो मो भौँन ॥ गान्धारी सह कुरुकुल बाम। रोदन करण लगी अतिभाम॥ अग्निहोत्र नहि सायङ्काल । कीन्हो बिप्रन्ह कुपित बिशाल ॥ प्रलय दुन्दभी

स०प० बाजी घोर। बायु प्रचण्ड बहो अति जोर ॥ ॥ दिनमहँ उल्का परे अखर्ब। ग्रसो राहु रबिको बिनु पर्ब ॥ रथशालामहँ अनल प्रचण्ड। लगो गिरे ध्वजखंडित दण्ड ॥ दुर्योधनके हवनागार। शिवा सोर भो प्रगट उदार ॥ करण लगे रासभ अतिसोर। सो उतपात समुझि अतिघोर ॥ भीष्म द्रोण बाल्हीक सु भूप। सोमदत्त कृत चिन्तित रूप॥ बिदुरसहित तिन कहे अचैंन। हो सुनि ताक्ष मानि हितबैंन ॥ कहो द्रौपदीसों हम जौंन। इच्छित होय मागु बर तौंन॥ बर कृष्णा मागे मो पास। होंहिं पांडुसुत सकल अदास॥ सरथ सशस्त्र जाहिं निजधाम। और न भूप हमे मन काम॥ तब इमि कहो बिदुर मतिमन्त। इहलों रहो भरत कुल अन्त॥ श्री समान कृष्णा छबि पीन। लही पांडवन दैबाधीन॥ तास क्लेश पांडव बलवान। सहि हैं नही अमर्ष अमान॥ वृष्णि बंशके जे बरबीर। अरु पाञ्चाल महा रणधीर॥ तिन सह सत्य प्रतिज्ञा बीर। बासुदेव तें रक्षित धीर॥ जिष्णु आइ करि हैं संहार। सहित भीम पाञ्चाल उदार॥ सुनि गांडीव धनुष टङ्कार। गदा भ्रमण स्वन सबल अपार॥ को रणमे सहि है सुनि भूप। हमे साम रुचि नहि रणरूप॥ कौरव बँ पांडव बलवान। जरासन्ध जिन हनो महान॥ तातें करिबो साम सुनीति। कहे बिदुर दुहुँ कुलकर प्रीति ॥ *◈*◈*◈* ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *◈*◈*◈*◈*◈*

साम करे ते होयगो नितिप्रति श्रेय महान। हम सञ्जय मानो न यह बिदुरबचन सुखदान॥
पुत्रछोहके मोहबश भयो भ्रष्ट मो ज्ञान। बिदुर बचन मान्यो न मैं हे सञ्जय मतिमान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथकविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे सभापर्बसमाप्तिर्नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ *◈*◈*◈ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *◈*◈*◈*◈*◈*

बिधुबिधु मुनिद्दग पद्य यहि पबमाँह अभिराम। प्रथम सभा रचणा पुनः सभा प्रबेश ललाम॥
नारद मुनिको आगमन कुशल प्रश्न सह नीति। देबसभा बरणन कियो सहित महामुनि प्रीति॥
राजसूयको मंत्र फिरि जरासन्ध उतपत्ति। जरासन्ध बध नृपनका मोक्षण प्रिय करि अत्ति॥
सकल दिग्गनको बिजय कहि राजसूय अभिरान। राजनको आगमन कहि फिरि धनदान ललाम॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

फेरि कृष्णको पूजन जौंन। फिरि शिशुपाल क्रोध किय तौंन ॥ गो शिशुपाल भूप सुरभौंन। यज्ञ समाप्ति कृष्णको गौंन ॥ खांडवप्रस्थ सुयोधन बास। सभा लखत फिरि ताको हास ॥ सुयोधन शोच अन्धनृप मंत्र। फिरि पांडव आवाहन तंत्र॥ सरबस द्यूतमे हारे धर्म। केशाकर्षण रूप कुकर्म॥ दियो द्रौपदी हि नृप बरदान। फिरि अनुद्यूत भयो अतिमान। बनप्रस्थान कियो नृपधर्म ॥ इतिक प्रसङ्ग पर्बमे पर्म ॥ * ◈ ॥ * ॥ शुभमस्तु शकाब्दा १७५१ भाद्रस्य २२ सम्बत् १८८६ * ॥

स्वस्ति श्रीयुतमहाराजाधिराजकाशीराज

श्रीउदितनारायणस्याज्ञया

श्रीगोकुलनाथकविना

संग्रहीतभाषामहाभारतदर्पणस्य

वनपर्व

कलिकातामहानगरे शास्त्रप्रकाशमुद्रायन्त्रे

श्रीलक्ष्मीनारायणपण्डितेन

शोधितं मुद्रितञ्च

शकाब्दाः १७५१ सम्वत् १८८६

॥ * ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ * ॥

॥ * ॥ महाभारतदर्पणः ॥ * ॥

॥ * ॥ बनपर्व ॥ * ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अरचि चरण सुकुमार चिन्तामणिगणनायके । भवसागरको पार सुलभ जानि जनकों परै ॥
बन्दि चरण अभिराम चिन्तामणिगणनाथके । पाई सुमति ललाम भारतदर्पण रचन को ॥
जास गोद गणनाथ ध्यान धरऊँ ता अम्बको । बितरत चारिऊँ हाथ चारु चारिफल चाहत ॥
करपर धरि गिरिराज बसे राधिकाके हिएँ । पालत सन्तसमाज गोकुलको गोपाल भजु ॥
त्रिभुवनपति नन्दनन्द जास ध्यान धारें रहत । सो राधा हर दन्द जास ननद विंध्याचली ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ ॥

धर्म धुरन्धर वीरवर मम प्रपितामह सर्व । हारि द्यूत लहि कौरवन सों अपमान अखर्व ॥
कियो कौन कृत सो कहऊ हे मुनि महत सुजान । वैशम्पायन सु बसि वन पांडव शक्र समान ॥
अनु तिनके वनकों गए कौन सुहृद मतिमान । कहां बसे भोजन कहा कीन्हो प्राप्ति समान ॥
कृष्णा सह कैसें भये द्वादशवर्ष व्यतीति । पाय महत बनवासको दुःख सहो केहि रीति ॥
कहऊ तौन बिस्तर सहित सुनो चहत हम तौन । कियो पाण्डवन विपिनि बसि वैशम्पायन जौन॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

द्यूत हारि धृतराष्ट्र सुतसों लहि कै अपमान । हास्तिनपुरसों क्रोध करि चले महाबलधाम ॥
बर्द्धमानपुरद्वारसों निकसि सकृष्णा धीर । चल सु उत्तरदिशाको धरें शस्त्र बरबीर ॥
इन्द्रसेन आदिक तहां पन्द्रह भृत्य सुजान । रथ लीन्हें गयमेय सकल आए अतिजवमान ॥
गए पाण्डवन्ह जानि कै पुरजन पूरे शोक । लगे कौरवनकों कहन बचन जे निन्दित लोक ॥
भीष्म द्रोण कृप बिदुरकी मति अनुमानि अनीति । लगे बचन निन्दित कहँन चारोवर्ण अभीति ॥

॥ * ॥ पौराऊचुः ॥ * ॥

कर्ण दुःशासन सकुनि नृप दुर्य्योधन खल सर्व । राज्य करण चाहत सकल पूरे पाप अखर्व ॥
यह कुरवंश नशायगो सहित प्रजा पुरदेश । कौंन मोद पावत तहां पापी जहां नरेश ॥
गुरुद्वेषी धृतराष्ट्रसुत पापाचार सहाय । अभिमानी निर्दय महालोभी नीच सुभाय ॥
सिगरो भूमि न है इहाँ जँह दुर्य्योधन भूप । तहां बसैं चलि जात जँह पाण्डव धर्म सरूप ॥

ब०प० यह कहि पुरजन मिलि गए जँह पांडव सुखदान। कहन लगे कर जारि यों सहित सनेह सुजान ॥
हम दुखभागिन्ह छोडि के जात कहां बरबीर। हमहू सब चलि है तहां जात जहाँ तुम धीर ॥

॥ * ॥ जयकराछन्द ॥ * ॥

छल करि जीतो तुम्हैं अनेत। दुष्टन्ह सुनि व्याकुल है चेत ॥ त्याग हमारो करऊ न भूप। जानि भक्त अनुरक्त स्वरूप ॥ दुष्ट भूपके बसि कै राज। हम विनशहि गे सहित समाज॥ गुण अरु दोष सङ्ग फल जौन। सुनऊँ भूप हम कहियत तौन ॥ बर सुगन्ध दुर्गन्ध हि पाय। व्है सुगन्ध दुर्गन्ध सो जाय ॥ बढत मोह मूर्खनके सङ्ग। साधु सङ्गतें सुमति तरङ्ग ॥ सुमति सङ्ग करिवो अभिराम। बसिए नहीं कुमतिके धाम ॥ धर्मवानसँग बाढत धर्म। पापिनके सँग बढत कुकर्म ॥ दरश परश पापिनको पाय। बाढै पाप पुण्य घटि जाय ॥ करत सङ्ग पापिनको जौन। सिद्धि समृद्धि न पावत तौन॥ नीच कुकर्मिनके बसि पास। लहति सुमति जनकी मतिनाश ॥ करैं सुमति श्रेष्ठनको सङ्ग। ऋद्धि सिद्धि बुधि लहति उमङ्ग ॥ सुमति साधु इद्धनको साथ। किए समृद्धि लहत चितिनाथ ॥ विद्या वंश कर्म अवदात। जाको नाहि सेइये तात ॥ मिले भिन्न सब सुगुण ललाम। तुमहीमे लहिए अभिराम ॥ बसो चहत गुणभूषण पास। लहिवेको श्री सुखद निवास ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ हम हैं धन्य जगतमे सर्व। जास प्रजा करि प्रीति अखर्व ॥ निर्गुण हम हि भाषत गुणवान। जे द्विजादि वर वर्ण सुजान ॥ तातें हौं भाखत सह बैन। तुमसों कहत जानि हित चैन ॥ सो न अन्यथा करिवे योग। तुम्है स्नेह वश जानि बियोग॥ भीष्म बिदुर कन्ती अति बृद्ध। पालनीय ते तुम्है समृद्ध ॥ तुम सब तिन्हैं शोकवश जानि। पालनकीजो हित अनुमानि॥ होऊ निवृत्त मानि मो बैन। शपथ हमारि तुम्हैं मतिऐन ॥ सुजन हमारे न्यास समान। स्नेह सहित पालेऊ सुखदान ॥ कारज एतनो परम हमार। कीजो सो मेरो सतकार ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धर्मराज ए बैन सुनाय। तिन्हैं निवृत्त किये समुझाय ॥ तेरो ए करुणारत घोर। हाहाकार भयो अति शोर ॥ पाण्डवगुण बरणत अभिराम। ते सब गए आपने धाम ॥ गए पौरजन जानि गँभीर। महाधनुर्धर पांडव बीर ॥ रथ चढि गए जान्हवी तीर। जहँ बट रहो प्रमाण गँभीर ॥ सलिल पान करि कै तेहि रैंन। भरे दुःखसों कीन्हों शैन ॥ भरे स्नेहसों दुःखित चिप्र। साथि अनभि गए तहँ बिप्र ॥ तिन सह शोभित भयो नरेश। ज्यौं नक्षत्रगण मध्य निशेश ॥ अग्निहोत्र कीन्हे तपधाम। पढत बेदधुनि धारि ललाम॥ मधुर बचन कहि बेदबिधान। किय नृप आश्वाशन मतिमान ॥ कहत पुराण कथा इतिहास। बीति गई निशि भयो प्रकाश ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथकविश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि पौरप्रत्यागमन बनप्रस्थानवर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लहि प्रभात बेला परम नित्यकर्म करि विप्र। चलिबेकों नृपधर्मके भए अग्र सब छिप्र॥
धर्मनृपति तब द्विजनसों कहन लगे यहि भाँति। हृत सरवस्व रही नही हमसों नेक बिसाँति॥
हम मृगपल फल मूल दल करि हैं नित्य अहार। सङ्ग हमारे होय तो तुमकों कष्ट उदार॥
भए क्लेश द्विजवरनको लहत देवता क्लेश। हमै सह्य द्विजदुःख नहि फिरिए मानि निदेश॥

॥ * ॥ ब्राह्मणाऊचुः ॥ * ॥

भूप तिहारी जौंन गति ताको उहित सर्ब। हम हि तजञ्ञ मति भक्त तव दर्सक धर्म अखर्ब॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

परम भक्ति मम द्विजनमे हम है हीन सहाय। तो सेवन बनि है नही हे द्विजवर सुखदाय॥
देखि द्रौपदी क्लेश अति राज्यहरणदुख पाय॥ भ्राता मेरे मोहवश भरे व्यकलता काय॥
दुःखार्दित लखि कै इन्हें दों कछुकार्य्य निदेश। कहि न सकत इनसों कछू हे द्विजवरन विशेश॥

॥ * ॥ ब्राह्मणाऊचुः ॥ * ॥

करऊ हमारे भरणकी नहि चिन्ता तुम भूप। ल्यावहिगे हम आपुकों भक्ष्य भोज्य अनुरूप॥
ध्यान जाप करि कहैं गे सब विधि तो कल्याण। चित्त रमण करि हु सदा कहि कै कथा पुराण॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

कहत विप्र तुम सत्य सो रमि है तुममे चित्त। न्यून भाव लखि आपनो म्लान होत हम मित्त॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥

लख हि हम केहि भाति भोजन करऊ तुम सब ल्याय।कृपा हमपैं करत तुम यह सहो दुख न जाय॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यहि भाँतिसों कहि धर्मनृप गिरिपरे छितिपर छिप्र। लगो लखि इमि कहन शौनक नाम मुनिवर विप्र॥ भूप कारण शोकके अनघणित हैं दुखराश। मूढ़कों ते ग्रसत हैं नहि जात पंडित पास॥ श्रेय ज्ञानविरुद्ध जे हैं दोषकारक कर्म। जात तिनके निकट तुमसे भूप नहि नृपधर्म॥ यम नियम प्राणायाम आसन धारणा अरु ध्यान। प्रत्याहार और समाधि ए वसु अंग योग विधान॥ तिन सहित जो है बुद्धिविमला श्रेयकारक सर्ब। श्रुति स्मृतिमे कथित तुममे बसत तौंन अखर्ब॥पाय कै अतिदुःखकों हैं मनुज तुमसे जौंन। शारीर मानस व्यथातें नहि होत पीडित तौंन॥ मनस्थिरकी करणि गीता कही जनक विदेह। कहत हैं हम तौंन सुनिए भूप सहित सनेह॥ मनज देहज दुःखते जन होत पीडित सर्ब। तास हों उपसमन तुमसों कहत सुनऊँ अखर्ब॥ व्याधि इष्टवियोग श्रम अरु दुष्टको संयोग। देह सम्भव दुःखकारण कहत चारि सुलोग॥ करैं औषधि व्याधि दिनप्रति आधि मनको रोध। मतिमान जनते ज्ञान सेती करत मानस बोध॥ करत मानस दुःख सिगरी देहकों उत्ताप। तप्त लोहो परैं घटको

व०प० तपत जैसें आप ॥ ताप मनको शान्ति कीजे ज्ञान जलकों डारि । मिटैं मानस दुःखके सुख लहत सुमति बिचारि ॥ स्नेह मानस दुःखको है मूल सुनऊँ सुजान । स्नेह बश व्है जन्तु दुखको करत यत्न महांन॥ शोक भय श्रम दुःखकारण स्नेह जानऊ भूप । भाव उपजत स्नेहतें अनुरागको फिरि रूप ॥ अश्रेय करते दोऊ इनमे भाव मूल महान। यथा सिगरो बिटप जारति कोठराग्नि सुजान ॥ बिना पाए विषयकें सब होत त्यागी रूप । करत त्याग जो बिषयकों लहि सोई त्यागी भूप॥धन मित्र पायन लिप्त तातें होत त्यागी जौंन ।मनज स्नेह विनाशकारक ज्ञान कहिए तौंन॥ स्नेह लिप्त न होत ज्ञानी पुरुषकों अवदात । लगत सलिल न यथा सङ्गत पाय पंकज पात ॥ राग जीतो पुरुष कर्मज दुःखसों परिपूरि। लहत इच्छा होति तातें बिषय तृष्णा भूरि॥ उद्वेग कारणि पाय पूरणि महति तृष्णा जौंन । दुःत्याज्य है दुर्मतिनकों नहि होति जीरण तौंन ॥ राज पावक चोरको भय धनिककों अतिमान। अर्थ करत अनर्थ काकों नहीं सुनऊ सुजान ॥ अर्थ आगम करत सबबिधि मोह बन्धन भूप। कार्पण्य अरु उद्वेग ममताको बढावत रूप ॥ अर्थ कारण करत नाना भाँतिके जन कर्म । होत दुखतें बित्तक्षयतें करत पोडित मर्म ॥ मूर्खकों सन्तोष नहि सन्तोष पण्डित कर्त । अन्त तृष्णाको नहीं सन्तोष आनद भर्त ॥ बिना इच्छा बित्त आगम कहत परम सुज्ञान । धर्मार्थहूकी जौन इच्छा बदत विज्ञ महान ॥ धर्मनृप नहि करऊ बांछा कछू बस्तु नमाह । धर्मसों तव कार्य्य तो तजु बित्त इच्छा चाह ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ अर्थ इच्छा नही मेरे भोगकरिबे हेत । द्विजन्ह भरिबे हेत मन मो बित्त इच्छा लेत ॥विप्र हमसो होय कोंन गृहस्थ आश्रम नाह । अनुगको नहि भरण पालन करै गो नरनाह ॥ वैश्वदेव विधानसों सब प्रथम करि कै धर्म । अतिथकों फिरि देय भोजन यथा योग्य सधर्म ॥ उदक आसन ठौर देय सु बोलि मीठे बैंन । गृहीको यहधर्म आवै जौंन अपने ऐंन ॥ अतियको सतकार करिबो गृहीको है धर्म । अन्न जल थल देइ सादर बचन बोलै पर्म ॥ नहीं अपनेअर्थ कीबो पाकको अधिकार । देव पितृ निमित्त बिनु पशुमारिबो न बिचार ॥ देत हैं जो कृपाकरि कै अतिथ श्रान्त हि अन्न ।माहत पावत पुण्यकों सो भए क्षुधित प्रसन्न ॥ रहत ऐसी भाँति जौंन गृहस्थ धर्म बिचारि । लहत पावन पुण्यकों है विप्र सो निरधारि ॥ * ॥ शौनकउवाच ॥ * ॥ जगत यह बिपरीत पडमें कष्ट है अति मान । रसहरण इन्द्री करहि बशमे मनुजकों सु महान॥मूढ जैसे सारथीकों चपल तुरङ्ग कुराह । करैं इन्द्री आपने जब विषयको उतसाह ॥ पूर्वके संकल्पतें जो भयो मन तहँ आय । भरो इच्छा चलत इन्द्री विषयको है धाय ॥ संकल्प बीज सुकाम जनकों विषय शरसों मारि । करत दग्ध पतङ्गलौं लोभाग्निमे सो डारि॥ विहार अरु आहार मोहित होय कै सो भूप।मोह मुखमे परो सो नहि लखत आत्मारूप ॥ यहि भाँति नाना योनिमे सो आय जीव अयान । बश अबिद्या रहत है सो भ्रमत चक्र समान । कहो यहगति भूपतिनकी अबुध हैं जन जौंन ॥ मोक्षकामी धर्मरतकी

कहत अति सुनु तौन ॥ वेदको यह वचन है सुत कर्मकों निःकाम। मानकों तजि करौ तातें सबै कर्म ललाम ॥यज्ञ वेदाध्ययन दान सु तप क्षमादम साँच।अलोभ अरु ए आठ वरणत धर्मके पथ पाँच ॥आदिके जे चारि दायक पितृलोक महान। अन्तके ते चारि दायक देवलोक सुजान॥धर्मके अष्टाङ्ग पथचलि शुद्ध आत्मा जौन।शुद्ध करि कै कर्मकों नर जगत जीतत तौन॥ रागद्वेष विमुक्त ह्वै ऐश्वर्य्य दैवत लेत ।प्रजा पालन करत हैं ते कृपा सहित सनेत ।।तथा समता धारि तुमहूँ करि तपस्या पर्म। सिद्धिको लहि ऋद्धि होऊ अचिन्त है नृपधर्म ॥पितलोक सु प्राप्तकी सिधि लही तुम करि कर्म। भरणकों द्विज करि तपस्या लेऊ सिद्धि सशर्म ॥ कियो चाहत जौन करत सो करि तपस्या सिद्ध ।करि तपस्या होऊ तातें भूप सिद्धि समृद्ध॥ वैशम्पायन उवाच॥सुनि सु शौनकके वचन यहि भाँतिके नृपधर्म । कहे जाय सो धौम्यमुनिसों मध्य भ्रातन्ह पर्म ॥ वेदपारग विप्रजे मो भए अनुगम सर्व । तिन्हैं पोषण शक्त हौं नहि भरो दुःख अखर्व ॥ तिन्हैं तजिवे शक्त हौं नहि योग्य दीजैं दान । कहा करिवे योग्य हमकों कहऊ धौम्य सुजान ॥ मुहूर्त भरि धरि ध्यान बोले धौम्य मुनि तपधाम। धर्मनृपसों कहन लागे वचन अति अभिराम ॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥ क्षुधा पीडित पुरा जिगरे भए जीव महान। कृपा कीन्हीं भानु तब लखि पितासे सुखदान॥उत्तरायण होय रसकों करषि करि सो पान। दक्षिणायन होय क्षितिमे धरत ऊष्मा मान ॥ क्षेत्र भूत सो भए रवि तब होय ऊष्मा रूप। गगनगत रवि तेज मेघाकार सो लहि भूप ।।बारि बरषि सु प्रगट कीन्हा औषधी निशिनाह।चन्द्र तेज सम्भिक्त भो रवि आपु आपुहि माह॥ षटरसालय औषधी भो अन्न तातैं पर्म। भानुमय यह अन्न जानऊ जगत जीवन धर्म॥पिता हैं सब जगतके रवि शरण ताको लेऊ। भूप तप करि प्रजनको उद्धार करु ससनेह ॥ पूर्व भूपन्ह हरो तप करि प्रजन्हको दुख सर्व। तथा तप करि करऊ तुमहूँ विप्र भरण अखर्व ॥ जनमेजयउवाच ॥ धर्म भूपति कौन विधि सौं कियो तप अभिराम। भानु राधित कियो किमि द्विज भरण धरि मनकाम ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ कहत हैं हम तौन भूपति सुनऊ सुचित ललाम । धौम्य दिये नृप धर्मकों जे अष्टशत रवि नाम ॥ धौम्यउवाच ॥ स्तोत्रं ॥ सूर्य्यो ऽर्य्यमा भगस्त्वष्टा पूषार्कः सविता रविः। गभस्तिमानजः कालो मृत्यु धाता प्रभाकरः ॥ पृथिव्यापश्च तेजश्च खंवायुश्च परायणं। सोमो बृहस्पतिः शुक्रो बुधो ऽङ्गारक एव च ॥ इन्द्रो विवस्वान् दीप्तांशुः शुचिः शौरिः शनैश्चरः। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणो यमः॥वैद्युतो जाठरश्चाग्निरैंधनस्तेजसांपतिः । धर्मध्वजो वेदकर्त्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः ॥ कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिः सर्वमलाश्रयः। कला काष्ठा मुहूर्तश्च क्षपा यामस्तथा क्षणः ॥ सम्वत्सरकरोऽश्वत्थः कालचक्रो विभावसुः।पुरुषः शाश्वतो योगी व्यक्ताव्यक्तः सनातनः॥कालाध्यक्षः प्रजाध्यक्षो विश्वकर्मा तमोनुदः।वरुणः सागरोंऽशश्च जीमूतो जीवनो ऽरिहा ॥ भूताश्रयो भूतपतिः सर्वलोकनमस्कृतः। स्रष्टा सम्वर्तको वह्निः

सर्वस्यादिरलोलुपः ॥ अनन्तः कपिलोभानुः कामदः सर्वतोमुखः। जयोबिशालोबरदः सर्वधातुनिषे
बितः॥मनःसुपर्णोभूतादिः शीघ्रगः प्राणधारणः।धन्वन्तरिःधूमकेतुरादिदेवोदितेःसुतः॥द्वादशात्मा
रबिन्दाक्षः पिता माता पितामहः। स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपं॥ देहकर्त्ता प्रशान्तात्मा
बिश्वात्मा बिश्वतोमुखः।चराचरात्मा सूक्ष्मात्मामैत्रेयः करुणान्वितः॥एतद्वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्यामित
तेजसः नामाष्टशतकञ्चेदं प्रोक्तमेतत्स्वयंभुवा। सुरगणपितृयक्षसेवितं ह्यसुरनिशाचरसिद्धबन्दितं॥
बरकनकहुताशनप्रभंप्रणिपतितोस्मि हिताय भास्करं।सूर्योदयेयः सुसमाहितःपठेत्सपुत्रदारान्धन
रत्नसञ्चयान् ॥लभेत जातिस्मरतान्नरः सदा धृतिञ्चमेधाञ्च सबिन्दते पुमान्।इमंस्तवं देववरस्य यो
नरःप्रकीर्तयेच्छुचिसुमनाःसमाहितः॥बिमुच्यते शोकदवाग्निसागराल्लभेत कामान्मनसा यथेप्सितान्।।

॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

धौम्यपुरोहितके सुनि बैंन। समय समान परम मतिश्रैन ॥ बिप्र त्यागके भरे बिचार। रहे
युधिष्ठिर भूप उदार॥ तप करिवेकों धरि मति धीर। रबि पूजन करि सबिधि गभीर॥ रबि सन
मुख जलभीतर जाय।वायुपान करिकै कुरुराय॥योग धारणा करिकै धीर।लगे करण जप कुरुबर
बीर॥ शुचि व्है नियतवाक नृपधर्म। लागे पठन रबिस्तव पर्म॥ युधिष्ठिरउवाच ॥जगदात्मा जग
चक्षुमहान।तुम हो जगतोत्पति स्थान॥तुम योगिनकी गति अभिराम।तुमही धारक लोक ललाम॥
मुमुक्षुणके स्वर्गद्वार। हो तुम भानु तेजसागार॥ ऋषिगण अर्चित तुमहों सूर। तोरय दिव्य काम
ना पूर॥ सिद्ध यक्ष चारण गन्धर्व। गुह्यक पन्नग सुर गण सर्व॥ इन्द्र उपेन्द्र असुरगण जौंन। लहत
कामना तुमतें तौंन॥ बालखिल्य सब तुमकों सेय।सबसों श्रेष्ठभए सिधि लेय॥सप्त लोक मह कौंन
महांन। भानु होय तो तेज समान।भानु लेय तो तेज महान॥रचो बिश्वकर्मै अतिमान।सु नाभचक्र
सो लै हरि पाश। कीन्हौं दनुज बंशको नाश॥ करि निदाघमे तुम रस पान। प्राविटमे बर्षत सुख
दान॥ महो त्रयोदश द्वीपा जौंन।तव कर करत प्रकाशित तौंन॥ उदय बिना तो भानु महान।
होत जगत सब अन्ध समान॥ उदय बिना तो जे मखकर्म। होत प्रवृत्त नही श्रुति धर्म॥ जो
बिधि दिवस सहस युगमान। आदि अन्त तुम तास महान॥ मनुमनु पुत्र जगत जन जौंन॥
ताके तुम प्रभु तेजसभौंन॥ प्रलय समय तव क्रोधज आगि। करति त्रिलोक भस्म सो लागि॥
तव करजनित मेघ बहुरङ्ग। करै जगत मय सलिल तरङ्ग॥ तुम फिरि द्वादश आत्मा धारि।
सोषत महत प्रलय कर बारि॥ बिष्णु प्रजापति रुद्र सुरेश। अग्नि समान तुम ब्रह्म अशेष॥
सबिता सूर भानु तुम हंस। मिहिर वृषाकपि सूर प्रसंश॥ पूषा बिवस्वान रबि धर्म। मित्र सहस्र
रश्मि तुम पर्म॥ तपन अंशुमाली आदित्य। गोपति मार्तण्ड तुम नित्य॥ दिन कृत् सूर्य्य खरराय
दिनेश। सुखस्राश्व हरिताश्व ग्रहेश॥ तुरगामी तमोघ्न तपधाम। दिवाकरार्क अनन्त बिराम॥
षष्टि सप्तमीकों नर जौंन। करत सु तो पूजन मतिभौंन॥ भक्त शान्त एकाग्र सु जान। लहत सो

ऋद्धि सिद्धि अतिमान ॥आधि ब्याधि नहि लहत बिपत्य। रबि तो पूजन ब्रत धरि सत्य॥पाप रोगतें बिरहित तौंन। जीवत सुखी भक्त तो जौंन॥ अतिथि भरण ब्रत भरें उदार। अन्नकाम मोहि कृपा अगार॥ होऊ अन्नपति दाता अन्न। भक्त जानि हे करुणा सन्न ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुखद सुनि इन धर्म नरेश। भए कृपा करि प्रगट दिनेश ॥ * ॥ विवस्वानुवाच ॥ * ॥ जो अभिलषित तुम्हे हे भूप। सो लहिहऊ तुम परम अनूप ॥ देत अन्न तुमकों हम सर्व। द्वादश बर्ष प्रमाण अखर्व ॥ ताम्र पिठर यह लीजै भूप। देत तुम्हें करि कृपा अनूप ॥ नाना बिधिके भच्छ्य अमान। यातें मिलहि तुम्हें सुखदान॥ द्रुपद सुता भोजन पर्य्यन्त। रहै पिठर सुभच्छ्य अनन्त॥ वर्ष चौदहे तुमको राज। फेरि मिलै गो सहित समाज ❦ * ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ * ❦

भानु ऐसी भाँति कहिकै भए अन्तरध्यान। सोच यह जो पढै गो एकाग्र व्है मतिमान॥ सुनै गो शुचि होय कै ऋधि सिद्धि लहि है तौंन। लहै गो सुमनोर्थकों दुऊकाल पढि है जौंन॥ समरमे जय लहै गो जो नित्य पढि है धीर। मरे मेरो लोक लहि है भरो तेज गँभीर॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कढे जलतें धर्मनृप इमि सूरसों बर पाय। भरे आँनद धौन्यमुनिके जाय परशे पाय॥ मिले भ्रातन अङ्कमे लै द्रौपदीकों साथ। महानसमे कियो स्थापित पिठर सो कुरुनाथ॥ पाक तामे किएँ थोरो भूरि बाढत जात। चतुर्विधको भच्छ्य चुकत न अनेकन जन खात॥ अच्चय्य सो वह अन्न भोजन द्विजनकों करवाय। अनुग भ्रातन सहित भोजन आपु कीन्हों जाय॥ द्रौपदी फिरि कियो भोजन शेष सो सुखदान। द्विजगणनकों इमि देत भोजन बिहित बिधि सनमान॥ धौम्यसों स्वस्त्ययन लहि सर्बद्विजन पांडव बीर। काम्यबनकों गए गङ्गातीरतें मतिधीर॥ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे सूर्योपासन पाकपात्रप्राप्तिकाम्यवनगमनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गए पाण्डु सुत बिपिनिकों तब धृतराष्ट्र नरेश। बोलि बिदुरकों इमि कह्यो पूरें बचन अदेश॥

॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥

उशना सम मतिमान तुम जानत धर्म बिधान। मानत कुरुकुलमे तुम्हें सबकों गुणत समान॥
कुरुकुलकों जो पथ्य है कहो तौंन मतिमान। भयो अकारज महत हम तौंन करें सुखदान॥
पाण्डव जासो मूलतें नहो उखारें मोहि। बूझत मंत्र सो जानि कै बिदुर परम हित तोहि॥

॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥

सकल बर्ण अरु राज्य है धर्म मूल हे भूप। व्है प्रवृत्त तुम धर्म्ममे पालऊ स्वकुल अनूप॥
गयो धर्म सब सभामे बढो पाप अतिकाय। कीन्हों सो छल धारि कै सौबल सहित सहाय॥

स०प० द्यूत सभामे धरमधुर ज्ञान्यो तनय बोलाय। कियो पराजित शकुनि करि छलमय द्यूत उपाय ॥
पाण्डुसुतनको मानहर रूप कियो बध जौन । पापभुक्त व्है सुत बचैं कछ उपाय नृप तौन ॥
बांटि पाण्डवनको दयो राज्य सु धन तुम जौन । देऊ तिन्हैं सनमानकरि नृप धृतराष्ट्र सु तौन ॥
पाण्डुतनय सनमानतें सबबिधि कुशल सुजान। अधिक तुष्ट ह्वैहै तिन्हैं करें शकुनि अपमान ॥
ऐसो कीन्हें बचैंगे पुत्र तिहारे भूप । नतरु होयगो कुरुनके कर्मनाशको रूप ॥
क्रुद्ध भीम अर्जुन भए करिहैं सर्वोनास । सो अर्जुन गाण्डीवहै महाधनुष जा पास ॥
अन्मत तो सुत जगत हित वचन कहो हम जौन।पुत्र तजऊ कुलहित नृपति तुम नहि मानो तौन ॥
साम करैं तो पुत्र तौ होय राज्य सुखरूप। तुमको होय सँताप नहि प्रीति योगतें भूप ॥
नतरु सु योधनको पकरि देऊ पाण्डवन्ह राज।अजा तारिं पालन करिहि बिधिवत प्रजा समाज॥
पार्थिव भजिहै बैश्यसे तुमकों सकल नरेश । शकुनि सु योधन सूत सुत धरिहैं धर्म निदेश ॥
सभाजन्य अपराधकों दुःशासन करजोरि । क्षमा करावै भीमसों कृष्णा पास निहोरि ॥
तुम बूझो हमकों कहा और कहैं हम भूप। यह करिकै तुम होऊगे नृप कृत कृत्य स्वरूप ॥

॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥रोलाछन्द ॥ * ॥

बाक्य पाण्डव हित कहे तुम बिदुर हमसों जौन। अहित मेरे सुतनके नहि हमै करिबे तौन॥ पाण्डवनके हितूहो तुम परे यातें जानि । नहो मेरे करै को सुतत्याग करि हित हानि ॥ भ्रातृ सुततें पुत्र औरस है सुयोधन पर्म । पार्थ त्यागै देहकों यह करैगो को कर्म ॥ बिदुर भावै जाऊ तहँ तुम कुटिल कहत महान । यथा असती तजति पतिकों करें छ सनमान ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ एहि भांति कहि धृतराष्ट्र नप किय बसन भीतर गौन। क्षोभ लहिकै बिदर किय उठि पाण्डवन पह गौन ॥ पाण्डवन बनवासको उद्देश करि अभिराम। गए गङ्गातीर तें चलि कुरु क्षेत्र ललाम ॥ कालिन्दी सरस्वती सरिता तीरपै करि बास । गए पश्चिमदिशाकों करि बनन माहि निवास ॥ मरु धन्वमे सरस्वतीको लहि परम सुन्दर तीर । बसत मुनिवर वृन्द जँह लखि काम्य बिपिनि गभीर॥ द्विजन सह तँह बसे जेहा मृगनको समुदाय । शान्त मानस पाय मुनिवर वृन्दको सु सहाय॥ पाण्डवनके देखिबेकी लालसा धरि पर्म । काम्यबनकों बिदुर आए जहा हैं नृपधर्म ॥ धर्मनृप लखि बिदुर आवत लगे करए बिचार। कहन लागे भीमसों यहि भांति बचन उदार ॥ कहा क्षत्ता कहैगो इत आय हमसों बैन। शकुनि प्रेरित द्यूत करिबें फेरि आवत हैन ॥ बेंधिबें ममशस्त्र जीतो शकुनि चाहत तौन।द्यूतकों आहूत व्है हम औसि करिहैं गौन ॥गाण्डीव जीतो गयो मिलिबो राज्यको सन्देह। भीम आगम बिदुरको यह लगत संशय गेह ॥बिदुर देखो निकट व्है नृपधर्मकों अभिराम। सहित भ्रातन्ह द्रौपदी द्विजवृन्द माह ललाम ॥सहित भ्रातन्ह बिदुरकों चलि लियो आगें भूप। बिदुर सबसों मिले हर्षित भरे प्रेम अनूप ॥ हेतु बूझन लग

भूपति आगमनको जौन। वृत्तान्त सब धृतराष्ट्रको कहि विदुर दीन्हो तान ॥ विदुरउवाच ॥ *॥ व॰प॰
धृतराष्ट्र हमसों कह्यो कहिबे पथ्य जानि समान । मम सुतनकों अरु पाण्डवनकों होइ जो सुख
दान ॥ कौरवनकों पथ्यसो हम कह्यो नीति विधान। सो न तोकों रुचो श्रीकर सुनऊ कुरुकुल
भान॥ क्रोध करिके कह्यो तुमकों रुचै तँह तुम जाय। रह्यो चाहत विदुरहैं हम रावरी न सहाय॥
त्यक्त तासों पास आए रावरे मतिऐन॥ सभामे हम कह्यो सो सब यादि राखऊ बैन। शत्रुसों लहि
क्लेश साधत छमा करि जो काल। बढत सो तनु अग्नि ज्यों लहि समिध होति विशाल ॥भिन्न होय
सहाय जाके करत नहि धनभोग। दुःख भागी होतहै ते पाय समय सयोग॥ स्वजन जनकों सहित
आदर राखिहै जो भूप। सहाय बलसों तौन लेहै जीति भूमि अनूप ॥ *॥ युधिष्ठिरउवाच॥ *॥
आलस्य तजि सो करहिगे तुम कहत जो मतिमान । और करिहै कहौगे जो देशकाल समान॥
॥*॥ वैशम्पायन उवाच ॥ *॥ विदुर पाण्डव पासको जब गए बनको भूप। खेदसों धृतराष्ट्रको
तब भयो व्यथित स्वरूप ॥ स्मर्र मोहित बिदुरके नृप सभा गृहमे जाय। गिरे मूर्छित पाय संज्ञा उठे
फेरि अवाय॥ कहन संजयसों लगे यहि भांति सकरुण बैन। जाय ल्यावऊ विदुरकों जो बन्धु मेरो
मतिऐन॥बिना विदुर न रहत मेरो सुनऊ संजय प्रान।कियो कबऊ नही जेहिँ अपराध मो अनुमान॥
मानि सञ्जय चले नृपके सुनत करुणा बैन। गए जँह नृपधर्म हे सह विदुर मतिके ऐन॥ रौरवा
जिन धरे भ्रातन्ह सहित द्विजगण सङ्ग। बिदुर सह नृपधर्मकों लखि भरो तेजतरङ्ग॥ धर्मनृपको
करो पूजन जाय सञ्जय पास। भीम अर्जुन किय यथोचित बिहित पूजन तास॥ भूप बूझो कुशल
सञ्जय भए जब आसीन। कुशल आगम हेतु सञ्जय लगे कहन प्रवीन॥सञ्जयउवाच॥करत हैं अब
रण तो धृतराष्ट्र विदुर सुजाँन। चलौ तिनकों देखि ए तुम बिना त्यागत प्रांन॥ धर्मनृपसों बूजि
छत्ता करऊ वेगि पयान॥ वैशम्पायनउवाच॥ धर्म आज्ञा लैगए फिरि बिदुर अपने स्थान॥ कह
न इमि धृतराष्ट्र लागे बिदुर सों करि प्रीति। मिले मेरे भाग्य सों फिरि हमै बन्धु सनीति॥ राति
दिन मह लहो निद्रा नही तुमबिनु छत्त। रहे देखत आपुकों हम मोहमद उनमत्त॥ अङ्कमे लै
विदुरकों करि घ्राण मूर्धा भूप। छमाकोजो तौन जो हों कह्यो बचन कुरूप ॥बिदुरउवाच॥ शान्त
हम सब भाँति हो तुम परम गुरु मम भूप॥ पाण्डु सुत तव पुत्रकों हम लखत हैं समरूप॥ अन्यो
न्य ऐसें बचन कहिके दोऊ भ्राता पर्म। बिदुर अरु धृतराष्ट्र भूपति लह्यो अतिशय शर्म॥
॥*॥ वैशम्पायनउवाच॥ *॥ बिदुर आए कियो तिनको परम आदर भूप। सुनि महा दुर्मति
नप सुयोधन होय दुःखित रूप ॥ कर्ण शकुनि दुःशासनहि सो भयो कहतो बैन । यहि भाँतिके
अति खेद कारक मोह अतिके ऐन ॥ *॥ दुर्योधनउवाच ॥ *॥ बिदुर हित अति पाण्डवनके
भूप मंत्री पर्म । फेरि जबलौं नही फेरै तात को मत मर्म॥ करो तासों मंत्र करि यहि भाँति बुद्धि

व०प० चरित्र। नहीं देखैं पाण्डवनकों हहा आए मित्र॥मरैंगे विष शस्त्रसों के करै अग्नि प्रवेश।आगमन जौं पाण्डवनकों लखैं गे यहि देश॥ शकुनिरुवाच ॥बाल मतिकौं छोजिए नहि सुनु सुयोधन भूप। फिरैंगे नहि गए पाण्डव नियम करि अति रूप ॥ सत्यवादी पाण्डुसुत नहि नाघिहैं सिति धर्म । मानिहैं तो तातको नहि वचन जे नृपधर्म ॥ मानि कुरुपति बचनकों ते आइहैं जौं भूप । फेरि तिन कों द्यूत करि हम जीति हैं अनुरूप ॥ होंहिगे मध्यस्थ हम सब परम हित तो जौंन। छिद्र तिनको देखिहैं करि गुप्त अपनो तौंन॥ कर्णउवाच ॥ कियो ईप्सित चहत हम सब रावरो मतिश्रैंन ।मानि कै यह धरौ अपने चित्तमे तुम चैंन ॥ एक मति हम सर्व है तो सुमतिके अनुरूप। नहो पाण्डव आइहैं बिनु काल बीते भूप ॥ मोहते जो आइहैं तो जीतिहै करि द्यूत ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सो सुयोधन बैन सुनिकै कहो जो सुतसूत ॥ नहीं हर्षित भयो बैठो बदन फेरि उदास। देखिकै तब कर्ण गुणिकै तहां अति बलराश ॥ सौबल दुःशासन सोंह ऐसैं होयकै अति क्रुद्ध। होय उन्नत बलकि बोलो भुजनकों करि उद्ध॥नहीं मानत मत हमारो भूप जौं मतिधाम।करैं हम सब भूपको प्रिय सहश कर अभिराम ॥ सज्जव्है चढि रथनपै हम सर्व सह दल उद्ध। पाण्डवनकों हनैं बनमें मायकै करि युद्ध ॥ शान्त व्हैकै बसैं बनमें जाय दूरि अजान।होंहिं तब धृतराष्ट्रके सुत निर्बिबाद महान॥ पाण्डुसुत धन रहित जौलौं मित्रगणसों हीन । मारिवेकोश्क्यतौलौंसुनऊँ मो मत पीन ॥ सूतसुतको बचन यह सो भयो सम्मत सर्व। चढे ते सब भूप रथपर सज्ज होय अखर्व ॥चले हनिबें पाण्डवनकों करैं निश्चय माम। तिन्हैं प्रस्थित जानि आए व्यास तँह तपधाम ॥ मने करिकै तिन्हैं आए अन्धनृपके पास। बचन प्रज्ञा चक्षुसों इमि कहन लागे व्यास ॥ व्यासउवाच ॥ सुनऊँ सो धृतराष्ट्र तुमसों कहत जो हम बैंन ।कुशल जासों रहै कुरुकुल करऊ सो मतिश्रैंन ॥ प्रिय न हमकों पाण्डु सुत जे गए बनकों भूप। तो पुत्र जीतो जिन्हैं छलकरि द्यूत कपट स्वरूप ॥गए तेरह वर्ष ते बनवास दुःख बिचारि । कौरवन्ह ते भस्म करिहै क्रोध पावक डारि ॥ सुनऊँ तातें पापमय तो पुत्र दुर्मतिभौन। पाण्डवन्हकों हनो चाहत राज्य कारण तौंन॥ बारि बोहै उचित तातें मूढ सुतको भूप। हनो चाहत तिन्हैं अपनो तजो प्राण अनूप॥ बिदुर भीषम द्रोण कृप हम यथाहैं मतिमान । तथा नृपधृतराष्ट्र तुमकों कहत साधु सुजान॥ महा बिग्रह स्वजनते सो कहत नीति न तज्ञ। लेऊ अजय अधर्म मति यह कर्म करि जिमि अज्ञ॥ बिबादकी मति पाण्डवन प्रति जास ऐसी भूप। सो न तुमसौं होति वारित अनय कारण रूप ॥ मन्दमति तो पुत्र अथवा बसैं बनमेजाय । पाण्डवनके सङ्गमे सब छोडि सैन सहाय ॥ पार्थसौं तव पुत्रसौं जब होय सहज प्रीति । होऊ तब कृत कार्य तुम धृतराष्ट्रभूप सुनीति॥ जन्मतें जो शीलजनको होत सुनऊ सुजान। मनुजकौं देह त लौं सो तजतहैं न अमान॥ भीष्म द्रोण सविदुर तुम गुणि बुद्धिसो बर आर्य। नष्ट पूर्व न होय पहिलें करऊ अपनो कार्य॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ महामुनि नहि रुचो हमकों द्यूत सम्भव कर्म। दैव प्रेरित कियो हम यह लोक निन्दित धर्म॥ भीष्म द्रोण सु बिदुर

अरु गान्धारजाको तौंन। रचो नहि यह भयो कारज मोहके बस औंन॥ सुनु सुयोधन कुमति को हों सकत नहि करि त्याग। तजत नहि मनकों महामुनि पुत्रको अनुराग॥ व्यासउवाच ॥ कहत सुन धृतराष्ट्रसो है सत्य वचन सधर्म। पुत्र तें नहि है पदारथ जगतमे कछु पर्म॥ करत दुर्बल पुत्रमे अति स्नेह जननी तात। जानिकै असमर्थ पोषण भरणमे अवदात॥ पाण्डु तुम अरु विदुरमेरे पुत्र हो सु समान। पुत्र तो चिरकाल जीवित चहत सुत सुखदान॥ पांडुके सुत पांच दुःखित रहत कपट विहीन। जियहि गे कोहि भांति वर्धित होहिगे किमि पीन॥ पाण्डवनकों हीन लखि हों लहत ताप अखर्व। जौं जियायो चहत भूपति कौरवनकों सर्व॥ पुत्र तो तौ गहैं समता पाण्डवन्ह सों भूप। धृतराष्ट्रउवाच ॥ कहतहौ तुम महामुनि सो परम सत्य अनूप॥ भीष्म द्रोण सविदुर हारे कहि कहत तुम जौंन। आपुहु समुझाइ देहौ पितामह मतिभौंन॥ व्यासउवाच॥ हमै देखन हेतु आवत महामुनि मैत्रेय। पाण्डवनकों देखि आए तेजपुञ्ज अमेय॥ तो सुत सुयोधनकों सुशिक्षित करैगें ऋषि तौंन। करैगो नहि पुत्र तो जब कहैंगे ऋषि जान॥ शापदेहैं महाऋषि तब क्रोध करि कै मान। वैशम्पायनउवाच॥ गए यह कहि व्यास आए तौंन ऋषि तपधाम॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऋषि पूजन करि विहित विधि सहित सुयोधन भूप। प्रणय सहित लागे कहन मुनिसों वचन अनूप॥
कुरजाङ्गल सें आगमन भयो ससुख अभिराम। सुखसों पाण्डव हैं सकल महावीर बलधाम॥
चहत प्रतिज्ञाते रहे सुस्थिर ह्वैके सर्व। छिन्न होंयगो तौ नहो कुरु सौभ्रात्र अखर्व॥

॥ * ॥ मैत्रेयउवाच ॥ * ॥

तीर्थ सुयात्रा करत हम कुरुजाङ्गलकों जाय। देवो इच्छासों लखो धर्म राजकों पाय॥
धरें जटाजिन द्विजन सह करत बिपिनमे बास। लखिवेकों तिनकों तहां आए मुनि तपरास॥
तहाँ सुनो तव पुत्रको द्यूत अनर्थ कुरूप। जियत तिहारे भीष्मके यह न योग्य हो भूप॥
होते निग्रह रज्जुके सम्भ्रम कृपा करि भूप। तो प्रवृत्त होतो नही विग्रह घोर स्वरूप॥
चोरन कैसी सभा लों भई जो वार्त्ता सर्व। सो नहि राजति मुनिनकी सभामाह अतिखर्व॥
तजि धृतराष्ट्रमहीपकों दुर्योधनसों बैंन। ऋषि मैत्रेय लगे कहन नीति निपुण मतिऐन॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सुनहु सुयोधन वचन मम तोहित जो बलधाम। द्रोह पाण्डवनसों करत सो न तुम्ह अभिराम॥
शूर महा पाण्डव प्रबल अयुतनाग बल बीर। सत्यव्रत राक्षस दमन है अतिरथ रणधीर॥
बक हिडिम्ब किर्मीरको जिन बध करो महान। जात तिन्हैं लखि पथ गहैं हो किर्मीर समान॥
ताहि भीम तत्रहि हनो मखपशु सो अतिकाय। गिरि समान सो सिंह ज्यों हनत क्षुद्रमृगपाय॥
जरा सन्ध नृपको हनो भीमसेन बरबीर। अयुत नाग बलजास हो युद्ध निपुण रण धीर॥

सम्बन्धी पाञ्चालहैं बासुदेव से जास। मरण भील नहि होयको समर सामुह तास॥
तास पाण्डवनसों करो सुनऊ सुयोधन भूप। बचन हमारो मानिकै छोडि क्रोधको रूप॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सुनि मैत्रेय बचन सुखदान। नृपति सुयोधन परम अयान॥जंघा ठोकि चरण सों भूमि।लागो लिखन गरबसों घूमि॥ बिहसि न बोलो मुनि सो बैन। फेरि रहो मुख दुर्मतिऐन॥ देखत ताकों अग्नि समान। क्रोध भयो ऋषिकों अतिमान॥ बिधिप्रेरित दीवेकों शाप। जलस्पर्श ऋषि कियो सदाप॥ दियो शाप राते करि नैंन।यह दुर्य्योधनकों तपऐन॥ भीमसेन रणमें व्है रुष्ट।भेदन करी उरू तो दुष्ट॥ महा प्रहार गदासों मारि। देहै तोहि भूमिमें डारि॥ तब धृतराष्ट्र कह्यो इमि बैन। ऐसो होय न हे तपऐन॥ * ॥ मैत्रेयउवाच॥ * ॥ समता लहै पुत्र तव भूप। गहै शाप तब व्यर्थ स्वरूप॥ नतरु होयगो शाप अवश्य। बचन हमारे जानु अनश्य॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ भीमसेन बल जानन हेत। ऋषिसों नृप इमि कहो सनेत॥ कैस हने भीम किर्मीर। राक्षस रहो महाबल बीर॥ ॥ मैत्रेयउवाच॥ ॥ अब न कहैंगे तुमसों भूप। तो सुत शासन गहत अनूप॥ यह वृत्ता कहिहै मतिमान। गए हमारे भूप सुजान॥ ऋषि मैत्रेय सु कहि यह बैन। गए आपने आश्रम अन॥ ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ ॥ सुनो चहत किर्मीर निपात। कहऊ सविस्तर मतिअवदात॥ राक्षस भीम भिरे जेहि रीस। तौन बिदुर सुनवेकी हीस॥ * ॥ बिदुरउवाच॥ * ॥भीम अमानुष कीन्हो कर्म। सुनो तौन हम कहत सधर्म॥ हारि द्यूत इत पाण्डव बीर। चले तीनि निशि द्योस अधीर॥ काम्यकवन महँ पहुँचे जाय। निशि निशीथमह राक्षस आय॥ राक्षस रहत बिपिनि मह जौन। करत न तहँ पशु मानुष गौन॥ पेखत तहँ तिनको पथ आय। तेहिं रोको करि भयङ्कर काय॥ज्वलित अग्निसे जाके नैंन। उल्मुक लए भूरि भय ऐन॥ आनन बाऊ करे अतिमान। कढे दन्त कच ऊर्ध महान॥ करे राक्षसी माया भूरि। शब्द भयङ्कर करि दिशि पूरि॥ तास नाद सुनि घन सम तौन। भजे सोर करि खगगण जौन॥ बनचर भाजे जीव अखर्ब। कम्पित भयो बिपिनिसो सर्ब॥ तेहि क्षण कहो भयङ्कर बात। भरो गगण रज तम सरसात॥ रहे न जानत पाण्डव बीर। ताहि बसत तिहि बिपिनि गभीर॥ कृष्णाजिनधर देखि स्वरूप। गिरि सम तेहि पथ रोको भूप॥ तास भयङ्कर देखत काय। कम्पित कृष्णा भई डराय॥ पतिही सो तहँ पाय अचैंन। किए आपने मुद्रित नैन॥ मूर्छित देखि द्रोपदिहि भूप। गही पाण्डु बन आय अनूप॥ देखि राक्षसीमाया घोर। नाशो धौम्य मंत्रके जोर॥ देखि नष्ट सो माया छद्म। राक्षस चलो फारि चख क्रुद्ध॥ भूरि क्रूर धरि काय महान। काल सदृश लखि परो अमान॥ धर्मनृपति इमि बूझो ताहि। को तुम आए का इत चाहि॥ कहो युधिष्ठिर सो तेहि बैन॥ हम किर्मीर महाबल ऐन॥ वक भ्राता हम राक्षस बीर। बसत काम्यवन जानि गँभीर॥ जीति युद्धमे

मानुष पाय । होत क्षुधा हम ताको खाय ॥ को तुम इतै आए करि गान । भक्षसमान हमारे बन्प॰ भान ॥ जीति युद्धमे तुमकों सर्व । खाय पाइहै तृप्ति अखर्व ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ वचन तास सुनि सगरब माम । बोले धर्मनृपति बलधाम ॥ धर्मराज हम पाण्डव धीर । भीमार्जुन सह भ्राता बीर ॥ हम हृत राज्य चाहि बन बास । आए जंह तो पिबिनि बिलास ॥ विदुर उवाच ॥ * ॥ तब बोलो हम दैवाधीन । लहे भक्ष्य तुमसे अतिपीन ॥ भीमसेनके मारण हेत । हम धरि आयुध उद्दित चेत ॥ ढूंढत फिरो भूमिमे सर्व । मिलो न कहू भ्रातृहा खर्व ॥ सो उह मिलो भ्रातृहा अद्य । सोचन चहत भ्रातृऋण सद्य ॥ बनवासी मम सखा हिडिम्ब । हनो दुष्ट ताकों बिनु लिम्ब ॥ हरण करी यहि भगिनी तास । यह अन्याय धरे हों पास ॥ अर्धनिशामँह याकों पाय । औरिन मारिहों सहित सहाय ॥ याको रुधिर माँस लै भूरि । बक तर्पण करिहों मुद पूरि ॥ भ्रातसखाको हो ऋण जान । मोचन आजु करौं गो तौन ॥ करिवें भक्षण याको सोहि । आजु युधिष्ठिर देखत तोहि ॥ बोले यह सुनि कै नृपधर्म । यह असक्य तो करिवे कर्म ॥ दशव्यायाम सुष्टयु तरु जौन । भीम उखारि लियो कर तौन ॥ धनुष चढायो अर्जुन बीर । बारित कियो भीम रणधीर ॥ तरु लै चलो महाबल औंन । तिष्ठ तिष्ठ यह बोलत बैन ॥ दौरि भीम तरु तान उदार । तास शीषपरि कियो प्रहार ॥ तरु प्रहार तें चलो न तौन । उल्मुक हनो लए हो जौन ॥ बाम चरणसों उल्मुक भीम । बारण कियो महाबल सीम ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तरु उखारि लै राक्षस धायो । भीमसेन पर आय चलायो ॥ बारि भीम फिरि ताहि प्रहारो राक्षसहूँ फिरि तरुवर मारो ॥ ऐसे लरे परस्पर दोऊ । महाबली नहि हारत कोऊ ॥ वृक्ष प्रहार शीषपर डारैं । फटै न शीषक शीष बिचारैं ॥ भए मूलसे जर्जर साखी । लरत क्रोध करि दोऊ प्रसाखी ॥ तरुसों लरे घरी द्वै दोऊ । महा प्रबल नहि हारे कोऊ ॥ राक्षस शिला भीमकों मारो । अचल अचल सम भयो निहारो ॥ बाहू उठाय भीमपँह धायो । मनहु राहु रवि ग्रासन आयो ॥ दोऊ प्रचारि दुहुन लपटाने । लरण लगे अति बलसों साने ॥ तुमल युद्ध तिनसों अति बाढो । नख दातनसों दारुण गाढो ॥ भीम स्वभुज बल बर निरधारो । कृष्णा लखति सभीति निहारो ॥ गहो भुजनसों भीम अमर्षी । लौं किर्मीर महा दुर्धर्षी ॥ भयो प्रहार शब्द अति ऐसें । चटकत जरत बेनुबन जैसें ॥ भीम मध्य गहि ताहि पछारो । जैसें तरुवर अनिल उखारो ॥ भीमसेनसों मर्दित हारो । कम्पित भयो भूमिमे डारो ॥ गहो भीम ताकों चहि मारो । फूटे पटह सम गरज संहारो ॥ बडीबेरलों ताहि फिरायो । पशु सम हनन लगे मनभायो ॥ मरदि जानुसों कटि कुरुधारी । ग्रीवा पकरि पाणिसों तोरी ॥ क्षितिपर पकरि कठोरन लागे । बोले वचन क्रोधसों पागे ॥ पोछो नहीं अधम बक आशु । यमपुरकों ह्वै चले गतासु ॥ ऐसे

व॰प॰ बालि भीम बलभारो । मृतक जानि तेहि चितिपर डारो ॥ घन सम मारि दनुज मुदछाए । कृष्णा सहित द्वैतबन आए ॥ भीमसेन गुण बरणन लागे । धर्मराज अति आनंद पागे ॥ * ॥ बिदुरउवाच ॥ * ॥ भीम हनो किर्मीर हि ऐसें । हम तँह सुनो कहो सो तैसें ॥ तौंन बिपिनि निःकण्टक करि कै । पाण्डव रहे तहां मुद भरि कै ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यों किर्मीर निपातन सुनि कै । भरे शोच कुरुपति मन गुणि कै ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि काम्यवन गमनकिर्मीरवध वर्णनोनाम तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि पाण्डव बनकों गए वृष्टन्धक सह भोज । गए ते काम्यक बिपिनिकों श्रोज भरे करि खोज ॥
धृष्टकेतु पाञ्चालसुत चेदिनृपति बरवीर । आये अरु कैकेय तहँ जहां धर्मनृप धीर ॥
निन्दि कौरवनकों कहे कहो कर हम तौंन । आगैं करि श्रीकृष्णकों है क्षत्री बर जौंन ॥
सुस्तुति करि नृपधर्मकी कहो कृष्ण यदुभान॥वासुदेवउवाच॥कर्ण सुयोधन शकुनिको रक्त करो भूपान॥
कहो नृपन्ह अभिषेक करि धर्मराजसों पर्म । छलाचरणको मारिबो बेदबिहित है धर्म ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

दुःख पाण्डवनको चिते भए जनार्दन क्रुद्ध । समन पार्थ लागे करण बर्णि पर्म गुण शुद्ध ॥
पूर्वदेह धरि कृष्ण जो किए कर्म अभिराम । सो वर्णन लागे करण फाल्गुण सद्गुनधाम ॥
दिगमिति बर्ष सहस्र प्रभु सांयग्टह व्रत धारि । कृष्ण गन्धमादन फिरे करि भक्षण फल बारि ॥
बर्ष एकादश सहस तुम पुष्करके तट जाय । करो महातप बास करि अम्बु पानकों पाय ॥
बसे बिशाला पुरीमे ऊर्ध बाहु शतबर्ष । बायु पान करि कै करो तप अति उग्र अधर्ष ॥
रहे बदरिकाश्रम तहाँ एक पाद तेहि भाँति । उत्तरीय बिनु अङ्गमे धमनी रही सकांति ॥
रहे सरस्वतीतीर त्यों कृष्ण सु द्वादश वर्ष । दिव्य सहस सम बसि प्रभासमे कियो सुतप सह हर्ष॥
एक चरण ठाढे रहे अचल समान महान । लोक रचणके हेतु तुम कहो व्यास मतिमान ॥
सबमे व्यापक आपु हो आदि अन्त अभिराम । यज्ञ यज्ञपति नित्य हो कृष्ण तपस्याधाम ॥
प्रगट भए तुम मनुजमे हरि नारायण रूप । ब्रह्मा तुम शशि सूर्य्य यम बरुण सुरासुर भूप ॥
बायु रुद्र भू काल नभ अग्नि दिन धनपाल । कर्ता चर अरु अचरके तुम श्रीकृष्ण बिशाल ॥
बिष्णु होय अवरज भए सुरपतिके सुखधाम । त्रिभुवण नायो चरणसों बामन व्है अभिराम ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भय प्रादुर्भाव तुम्हरे कृष्ण देव अनन्त॥करो तव तुम दैत्य दानव राक्षसनको अन्त॥जीति भूप अनेक

कीन्हों रुक्मिनीसों व्याह। बसे द्वारावतीमे यदुबंशके नरनाह॥मारि भूप अनेक कीन्ही द्वारिका सुखराश। मात्सर्य्यको पन अनृत तुममे रहत कीन्हें बास॥ अभय मागत सभामे ऋषि बृन्द तुमसों धीर। भूतनाश युगान्तमे करि धरत आपु गँभीर॥ युगादिमे तव नाभिपङ्कजतें सु ब्रह्मा होत। चराचर बहु भाँतिके जे जगतमाह तनोत॥ मधुकैटभ हि तेहि हनत उद्दित देखि तुम करि क्रोध। भालते किय प्रगट त्र्यम्बक शूलपाणि सबोध॥ भये शम्भु सयम्भु ऐसें देहतें तव बीर। सासनानुग रावरे इमि कह्यो नारद धीर॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ यहि भाँति कहि कै रहे चुप व्है पार्थ अति मतिमान। कहन तब श्रीकृष्ण लागे जगतके सुखदान॥ हम सो तुम हो तुम सो हम तव जे हमारे तौन। तव अहितते मम अहित हैं मो मित्र तो हित जौन॥ पार्थ तुम नर हम नारायण लोक काल स्वरूप। भए क्षितिपर आइ कै कुरु वृष्णिकुलके भूप॥ अनन्य हमसों पार्थ तुम हम नही तुमसों अन्य। मम तोन अन्तर जानिबेकों सक्य कोउ धन्य॥ ❦॥ वैशम्पायनउवाच॥ ❦॥ यहिभाँति पारथसों कह्यो नृपबृन्दमे यदुबीर। धृष्टद्युम्न सु पाण्डवन मधितें सु कृष्णा धीर॥ कहन लागी कृष्णसों चलि क्रोधभारे बैन॥ *॥ द्रौपद्युवाच ॥ *॥ पूर्व तुमकों प्रजापति सव कहत हैं मतिऐन॥ देव देव सुलोकनायक भूत व्यापक सर्व। ब्रह्मादि देवन संङ्ग क्रीडत यथा बालक खर्व॥ बिराट रुप सु रावरो है बासुदेव महान। आत्मदरशी ऋषिणके तुम परम हो सुखदान॥ सधर्म जे हैं राजऋषि हो पर्म गति तुम तास। लोकपाल सुलोक हो स्थिति प्रलय तुम्हरे पास॥ तौन हो दुःख कहति तुमसों सुनहु मो यदुबीर। ईश हो तुम जगतके सह मनुज अमरशरीर॥भार्य्या हों पाण्डवनकी सखी तो यदुनन्द।स्वस्रा धृष्टद्युम्नकी हों लहो इतनो दन्द॥ रही इस्त्रीधर्मसों हों बस्त्र धारे एक। मोहि खैची सभामे कुरुतनय अनय अनेक॥ देखि मोहि रज रक्त बस्त्रा हसे कौरव रुष्ट।मानि दासी भाव मोसों भजन चाहो दुष्ट॥ धृष्टद्युम्न सु जियत पाण्डव बृष्णि भूषण तोहि। धृतराष्ट्र भीषम सुषा दासी कियो बर बश मोहि॥ करति निन्दा पांण्डवनकी महा जे बलवान। धर्मपत्नीको बिलोकत रहे कष्ट महान॥ भीमबलकों पार्थके गाण्डीवकों धिक्कार। क्षुद्र खैंचत मोहि जे सहि रहे देखि उदार॥ कृष्ण सास्वत धर्म यह सतपुरुष पालत जौन। धर्मपत्नी करै रक्षित अल्पबल पति तौन॥ किए रक्षण भार्य्याको प्रजारक्षण तौन। प्रजा रक्षित करै रक्षित होत आत्मा जौन॥ लेत आत्मा भार्य्यामे जन्म पुत्र स्वरूप। कहत जाया भार्य्याकों सुमति यातैं भूप॥ रक्ष्य भर्त्ता भार्य्यातें सुनहु प्रभु एहि हेत। पुत्ररूपी होय कै परि जन्म मोमे लेत॥ ए न ताकों त्यजत लेत जो शरण इनकी आय। नही रक्षण कियो मेरो शरण गत इन पाय॥ भए मोमे पाण्डवनतें पांच परम कुमार। नही तिनकों देखि रक्षित कियो मोहि उदार॥ धनुर्धर परसों अजेय कुमार मेरे सर्व। सहो क्यों अपमान इन धृतराष्ट्र सुतको खर्व॥ अधर्मतें तिन राज्य लीन्हों कियो इनकों दास।

व॰प॰

द०प० सभामे जिन मोहि खैंचो पकरि कुन्तल पास ॥ सकै को करि सज्ज धनु गाण्डीव जौंन गभीर। जगतमे बिनु भीम अर्जुन तुम्हैं बिनु बलबीर ॥ भीम बलकों पार्थ पौरुषकों महत धिक्कार। जियत जो धृतराष्ट्रको सुत तौन दुष्ट उदार ॥ राज्यबाहर कियो माता सहित चाहि अधर्म। सुनऊ प्रभु तेहि किये इनसों बाल्यसे जे कर्म ॥ शयनमे अहि आनि दारुण सकल अङ्ग कटाय। बांधि डारो भीमकों जलमाह गरल खवाय ॥ बारणावत इन्हैं पठयो लाखको रचि भौन। पाण्डुसुत विश्वाससों सह प्रथा कीन्हों गौन॥जरत बांचे भागि तहँ तो कृपातें यदुबीर।गए बसत हिडिम्ब हो जेहि बिपिनिमांह गभीर ॥ एक चक्राकों गए तेहि मारि तहँ बलवान। हनो द्विज हित तहाँ बक जो रहो असुर महान ॥ द्रुपद पुरकों गए तहँतें जहां पाई मोहि। करि अमानुष कर्म अर्जुन लक्ष्य भेदो जोहि ॥ जीति नृपगण रुक्मिणी तुम लई ज्यौं बलबीर। तौन हों बन बसति खसू बिना दुखित गँभीर ॥ तौन ए बरबीर अति बल सूर सिंह समान। रहे सहि किमि दखि मोमे क्षुद्रको अपमान ॥ प्रियापत्नी पांडवनकी जौन रणमह रुद्र। कृष्ण तिनके लखत मेरो गहो कच कुरु क्षुद्र ॥ यहि भांति कहि मुख मूदि पटसों द्रौपदी दुख पूरि। लगी रोदन करण दृगजल बुंद बर्षत भूरि ॥ पूँछि कै दृग पुनः कृष्णा कहन लागी बैंन। गरो गद गद करे ऐसें भरी महत अचन ॥ नहो मेरे पुत्र भ्राता पतिन तुम यदुबीर। क्षुद्र सेसों कियो अप्रिय लखो जिन धरिधीर ॥ क्षमा होत न दुःख मेरो हँसो सूतज जौंन। कृष्ण तुमसों रक्ष्यहों विधि चारिसों सुनु तौंन ॥ सम्बन्ध गुरुता सख्य प्रभुतातें सुनो बलबीर * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * कहो बीर समाजमे इमि कृष्ण तासों धीर ॥ * ॥ वासुदेवउवाच ॥ * ॥ क्रोध जिनपैं द्रौपदी तो रोइ हैं तिय तास। पार्थके शर बृष्टिसों लखि युद्धमे पतिनाश ॥ अर्थ जो से पाण्डवनको करहि गे हम तौंन। सत्य तुमकों होइ हैं क्षितिपालपत्नी जौंन ॥ गिरै नभ हिमवान हालै धरा जा फटि जाय। कृष्ण बचन न होत मिथ्या सुनऊँ औसर पाय॥ कृष्णके सुनि बचन कृष्णा छोडि कै दुख घोर। लगी सस्मित लखब तिरछ जिष्णुके मुख ओर ॥ कहो अर्जुन द्रौपदीसों बिहसि कै तब बन। नहो रोदन करऊ सुन्दरि धरऊ चितमे चैंन ॥ होय गे सो कहो जो यदुनाथ वचन गँभीर। *। धृष्टद्युम्नउवाच। *। द्रोणको हां हनो गे भीष्महि शिखण्डी बीर ॥ भीम मारै गे सुयोधन दुष्टकों सह भ्रात। जिष्णु करि है सूत सुतको युद्धमाह निपात ॥ अथवा कृष्णसहायतें सु अजेय हैं हम सर्व । इन्द्रहूसों नहो हारैं का सुयोधन खर्व ॥ कहो सन्मुख कृष्णके यहि भांति बीरन्ह बैंन। मध्य तिनके कृष्ण ऐसें कहो आनँद ऐन ॥ आहूतहू बिनु आवते हम द्यूतमे नृपधर्म। द्यूत होन न पावतो हम तान करते कर्म ॥ दोष नाना भांतिके हम द्यूतमांह दिखाय। भीष्म आदिक सङ्ग लै कुरु बृद्धके समुदाय॥ कहो मम नहि मानते तौ करत निग्रह तास। द्यूत प्रेरक रहे तिनको करत तेहां नाश ॥ एक दिनमे होत आसे नाश धनको सर्व। प्रबर्त होन न देत ऐसो द्यूतकम अखर्व ॥ रह नहि हम

द्वारिकामे नतरु आवत भूप । होन पावत द्यूत नहि तो दुःखकर अति रूप ॥ आइकै हम द्वारिकामे सुनो सो नृपधर्म । दुःख तो सब कहा सात्यिकि द्यूत सम्भव कर्म ॥ सुनत दुःखित भए अतिशय दुःख तो अतिरूप । देखिबेकों बेगि आए रावरेकों भूप ॥ दुःख मग्न बिलोकि तुमको धर्मनृपति महान । भई हमकों दुसह दारुण व्यथा अकथ अमान ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रहे कैसें दूरि हरि कहँ गए कहिए तौन । कौन ऐसो रहो कारज करन लागे जौन ॥ * श्रीकृष्ण उवाच ॥ शाल्व नृपके मारिबेकों गए हे हम भूप । सौभपुर कहँ तहां ताको सुनहु कारण रूप ॥ यज्ञमे शिशुपालकों हम हनो जो करि क्रोध । तौन सुनि तेहि हो नहो लहि भूरि भ्रातृ विरोध ॥ क्रोध करि सो शून्य द्वारावतीकों चढि आय । रहे हम इत लरो वृष्णिकुमार कोमल पाय ॥ चढो मनग बिमान पर सो तहां आयो दुष्ट । हने वृष्णिकुमार कितने लरे जे रण रुष्ट ॥ भङ्ग करि पुर बिपिनि ऐसे बचन बोलो तौन । कहा हैं वह भ्रातहा वसुदेवको सुत जौन ॥ कहहु द्वारावती बासिहु भयो सो कहँ दुष्ट । ताहि रणमे मारि जैहो सौभपुरको तुष्ट ॥ गयो नाना भांतिके दुर्बचन कहिकै जौन । सुनो द्वारावतीमे हम जायकै सब तान ॥ ताहि हनिबेको कियो हम नियत मनमे भूप । देशमे नहि युद्ध जानो प्रजनकों सुखरूप ॥ शाल्वके वधकों गए हम सौभपुरकों बीर । तान ढूढत मिलो हमकों सरितपतिके तीर ॥ आव्हान ताको कियो हम तब पांचजन्य बजाय । मरो सो द्वैघरी लरिकै युद्ध सन्मुख आय । यहि कार्य तें हम नहो आए हस्तिनापुर भूप । रहत मेरे होत कैसे द्यूत अनय स्वरूप ॥ सुनो हास्तिन नगरमे जो भयो द्यूत कुकर्म । बेगि आए तुम्हे दुःखित देखिबे नृपधर्म ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ शाल्वको बध सहित बिस्तर कहहु फिरि बलबीर । होत तृप्त न श्रोत्र सुनिकै तो पराक्रम धीर ॥ * ॥ वासुदेवउवाच ॥ * ॥ हतो हम शिशुपालकों सुनि शाल्व नृप करि क्रोध । सहित सेना आइ कीन्हों द्वारिकाको रोध ॥ व्योमचारी जानप चढि शाल्व नभमे जाय । कियो रुन्धित दसौ दिशिते सहित सैन सहाय ॥ होन लागो युद्ध तिनसों रहे जे तहं बीर । चले आयुध सकल दिशिते सघन चंड गंभीर ॥ सुदृढ नाना भांति रचित पुरी सो अतिमान । रक्षजामे वृष्णि यादव बीरवर बलवान ॥ सैन सह चतुरङ्ग राजा उग्रसेन सुजान । शाम्ब गद प्रद्युम्न उद्धव बीरवर बलवान ॥ शस्त्र नाना भांतिके अति उग्र यंत्र उदार । सहित पुरके ओर चारो बज्रसार प्रकार ॥ सावधान सु रहत हे तहँ वृष्णि अन्धक बीर । जानि आगम शाल्वको सह सैन सुभट गँभीर ॥ ओर चारो महत परिखा भरी सलिल अखर्व । धरी बुर्जनपैं भुसुण्डी महत आयत सर्व ॥ दुर्ग अतिही महत रचित भटनसों चहुओर । तौन घेरो शाल्व भूपति सैन लै अति घोर ॥ एक मानुष निकसिबेकी रही कितहु न राह । परी सेना शाल्वकी अति भरी युद्ध उछाह ॥ सौभनाम बिमानपै चढि छोडि सैन गँभीर । शाल्व द्वारा

वं०प० बतीप गो पतगँसो वरवीर ॥ शाल्व सेना देखि आवत वीर वृष्णिकुमार । चारु देष्ण सु शाम्ब अरु प्रद्युम्न वीर उदार ॥ साल्व सेनासों भिरे ते निकसि बाहेर वीर । कठिन कार्मुक धारि करमें शाम्ब क्रुद्ध गँभीर ॥ क्षेम वृद्धि जो शाल्वको हो चमूपति बलवान । लरे तासों मारिबाणन्ह करो व्यथित महान ॥ क्षेम वृद्धिऊभई साया क्रोध करि शरजाल । शाम्ब ऊपर डारि दीन्हों महा घोर कराल ॥ शाम्ब माया शरणसों सो काटिकै बलवान । तास रथपै क्रोध करिकै सहस बर्षे बान ॥ क्षेम वृद्धि सो भजो रणतें बाणवेधित भूप । देखि आयो बेगवान सु दैत्य क्रुद्ध कुरूप ॥ बेगवान सु दैत्य पर तब गदा शाम्ब फिराय । मारिकै यमराजपुरकों दियो ताहि पठाय ॥ मारि ताको शाल्व सेना माह पैठो बीर । मथनलागो शरणसों अति भरो क्रोध गभीँर ॥ चारुदेष्ण कुमारसों तहँ बीबिध दानव आय । तुमुल रण तहँ भयो दोऊ महाबल अतिकाय ॥ अन्योन्य दोऊ क्रोध व्हैकै गरजि गरजि महान । वृत्र बासव सदृश लागे निशित बर्षण बान ॥ चारुदेष्ण सुबाण लीन्हों अग्नि अर्क समान । सुमहास्त्रको पढि मंत्र छोडो क्रोध करि बलवान ॥ ❧❧*

॥*॥ जयकरीछन्द ॥ *॥

लगत बाण सो रथतें वीर । गिरो धरणिपर छोडि शरीर ॥ गिरो विविन्ध्य शाल्व नृप देखि । सेना भई व्यथित अवरेखि ॥ कामग सौभजान असवार । फेरि समरमह गयो उदार ॥ देखि द्वारिका वासी सैन । चढो सौभपर अतिबलऐन ॥ शाल्व नृपति कह अतिबल मानी । कम्पित भई विषम रण जानी ॥ तव प्रद्युम्न निकसि बलऐन । यों सुभटनसों बोलो बैन ॥ समाधानसों तुम सब वीर । ठाढे इहां रहो धरि धीर ॥ लखो हमारो युद्ध महान । शाल्व निवारण करत सुजान ॥ निशित शरणसों सेना मारि । देत शाल्वको छितिपर डारि ॥ करौ अभीत स्वसेना सर्व ॥ लरन लगो प्रद्युम्न अखर्व ॥ यदुवंशिनिसों कहि इमि बैन । चढो परमरथपैं बलऐन ॥ मकर केतु यों लसो विशाल । मुख पसारि मनु धावत काल ॥ चपल तुरगँ इमि लसै अमान । मनऊ गगण मह चहत उडान ॥ विद्युत सदृश चाप अति घोर । फिरत दुहू करलै दुहू ओर ॥ ओरत खैचत छोडत बान । अन्तर देखि न परो अमान ॥ वर्णविकृत नहि भयो अनूप । कँपो न अङ्ग तास कुरुभूप ॥ गर्जनि ताकी सिंह समान । सुनत वृष्णिवंशी सुखदान ॥ कढि प्रद्युम्न फौजतें तूर्ण । चलो शाल्वपर अमरष पूर्ण ॥ प्रद्युम्नागम लखि बलवान । शाल्व क्रोध करिकै अति मान ॥ छोडि सौभ नभचारी जान । माया मय रथ बिरचि महान ॥ तापै चढि धनु धरि रणधीर । मीनकेतुसों लरा गभीँर ॥ करीबाणवर्षा अति घोर । मीनकेतु रथप चऊँओर ॥ तव बरषे मकरध्वज बान । लहो शाल्वनृप मोह महान ॥ सौभराज लहि तास प्रहार । भरो क्रोध धरि धनुष उदार ॥ दरयो अग्नि सदृश वर बान । मकरध्वजपर जलद समान ॥ तव प्रद्युम्न क्रोध करि वीर । लीन्हों मर्मभेदकर तीर ॥ शाल्व हृदयमह हनो सो बान । भेदो हृदय सबमेँ

महान ॥ रथसे गिरो शाल्व वर वीर। तासु चमू लखि भजी अधीर ॥ हाहाकार भयो अति शोर। गिरत शाल्व भूपति बलवान ॥ कछुकबेर मह संज्ञा पाय। उठे शाल्वनृप फेरि रिसाय ॥ लै कोदण्ड चण्ड भुजजोर। हनो मीनध्वजके शर घोर ॥ शर सहि सो प्रद्युम्न गँभीर। रहो अचल सो ठाढ़ो धीर ॥ मूर्छा पाय गिरो रथमाह। गरजो देखि शाल्व नरनाह ॥ फेरि चला वन लागे बाल। शाल्वनृपति भरि हर्ष महान ॥ लखि मकरध्वजको वश मोह। व्याकुल भए वृष्णि भरि छोह ॥ तब दारुकसुत सूत प्रवीन। हाँकि चलो रथ रण तजि दीन ॥ कछू दूरि रथ रण तजि जात। उठि प्रद्युम्न कहो इमि बात ॥ सूत करो तुम यह का कर्म। रण तजि चले छोडिके धर्म ॥ वृष्णिवंश सम्भव जे वीर। तिनको तहँ नहि धर्म गभीर ॥ देखि शाल्वको रणमे उद्ध। भयो कहा भय तुम्हे विरुद्ध ॥ सूतउवाच ॥ भयो न मोह हमै भय वीर। जानो शाल्व प्रबल रणधीर ॥ रच्छ्य सारथिहि मोहित सूर। रथी सारथिहि ज्यों बलवीर ॥ तो रच्छण हम धर्म विचारि। ल्यायो हों रणतें रथ टारि ॥ सुनि प्रद्युम्न सूतके बैन। कहो स्वरथ फेरण बल ऐन ॥ ऐसो फेर न कीजो कर्म। यह न महावीरनको धर्म ॥ सो न वृष्णि कुल जात पुमान। जियत तजे रण भूमि महान ॥ भूमे गिरे शरण जो लेय। भजै कि शस्त्र डारि जो देय ॥ वाला बाल वृद्ध रथ हीन। तिन्हैं हनत नहि वीर प्रवीन ॥ सूत कर्म शिच्छित तुम परम। जानत वृष्णिवंशको धर्म ॥ धर्म वृष्णिवंशिनको जानि। रण भू फेरि न तजियो मानि ॥ भजो युद्धते होय सभीति। कृष्ण विलोकि न करिहै प्रीति ॥ गद बलभद्र सामुहें मोहि। कहिहैं कहा पलाइत जोहि ॥ हलिवंशकी नारी जौन। मोकों देखि पलाइत तौन ॥ करिहैं हाँस लेय मम नाम। याते हमै भलो यमधाम ॥ धरिकै भार हमारे माथ। गए यज्ञ देखन यदुनाथ ॥ कृतवर्मा आवत मो साथ। माहि निवारेहो गहि हाथ ॥ शाल्वहि जीति सकत हो वीर। तुम इत रहउ महारणधीर ॥ हमको भाव पलाइत देखि। कहा कहैंगे बचन विशेखि ॥ रण तजि पितापास करि गौन। कहिहैं कहा सूत मतिभौन ॥ करु प्रवृत्त रथ रणमुख हेरि। ऐसो कर्म न कीजो फेरि ॥ दारुक नन्दन योग्य न तोहि। रणते करिबो बाहेर मोहि ॥ हमयुद्धार्थी हैं अतिमान। चलउ जहां नृपशाल्व महान ॥

॥ * ॥ बासुदेव उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्मराज प्रद्युम्नके सूतपुत्र सुनि बैन। कहन लगे यहि भांतिसों नीति निपुण मतिऐन ॥
बिहित सूतको धर्म जो प्रथम कहो हम तौन। सूत कर्मकी निपुणता बीर लखउ अब जौन ॥
दारुकतें उतपन्न हों तातें शोभित बीर। रथतो करत प्रवेश जँह शाल्वसैन गम्भीर ॥

॥ * ॥ बासुदेव उवाच ॥ * ॥

यह कहि बाग उठायकै हयन्ह कशासों मारि। चलो शाल्वकी सैनप्रति महाबेगको धारि ॥
मण्डल नाना भांतिके करत बिचित्र बिधान। बाम ओर करि शाल्वकी सेना धरि जवजान ॥

ब०प० हत प्रतोदतें तुरगँते चहत गगणकों जान। धरणि नचावत चरणतें महा बेग बलवान॥
दच्छिणदिशि प्रद्युम्नकों देखि शाल्व अतिउद्ध। दारुक सुतकों तीनि शर हनो होय अतिक्रुद्ध॥
दारुक सुत मानो नहीं शरप्रहार अतिघोर। चलो हाँकि रथ बेगसों शाल्व दाहिनी ओर॥
बाण अनेक विधानके सौभराट बलवान। छोडतभो प्रद्युम्नपै करिकै क्रोध महान॥
ते शर अपने शरणसों काटि गिराए बीर। मकरध्वज अतिरथिनमें महाधनुर्धर धीर॥
कटे देखिशर शाल्व तब करिकै क्रोध महान। धरिकै माया आसुरी बरषण लागो बान॥
असुर अस्त्र अनुमानिकै मीनकेतु बरबीर। योजित करि ब्रम्हास्त्रकों दरो ताहि रणधीर॥
दमन लगो ब्रम्हास्त्र सो दनुजनको समुदाय। शिर मुख हृदय बिदारिकै कियो जर्ज्जरित काय॥
शरपीडित निपतित चितै सुद्र शाल्वकों बीर। कियो बाणसन्धान सो जो परसमन गँभीर॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

बृसिवृन्दमह अर्चित जोहै। अग्नि समान बाण बर सो है॥ ज्यासङ्गम शरसों जब भयो। हाहाकार गगणमँह भयो॥ सुरन्हसमेत अमरपति आए। तहँ नारदकँह बेगि पठाए॥ नारद कही सुरणकी बानी। रौहिणेयसों आनद सानी॥ शाल्व बध्य तुमतें नहि मानो। याकी मृत्यु हलकर जानो॥ एहि बिधिकी लिपि व्यर्थ न कीजै। शर संहारि तूणमह दीजै॥ या शरसों उबरत नहि कोऊ। बीर बिचार करहु तुम दोऊ॥ व्है प्रसन्न प्रद्युम्न बिचारो। ज्यासों शर सन्धान नेवारो॥ शाल्व नृपति शर पीडित भागो। उठि चढि सौभ गगणमग लागो॥ ॥ बासुदेवउवाच॥ कुरुपति जब तो मखतें गयो। द्वारावतिहि बिलोकत भयो॥ * * * * * * *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

लखी हों द्वारवतीकों खेद पूरण भूप। यज्ञ बेदाध्ययन होत न प्रजाम्लान सरूप॥ भ्रष्ट उपवन नगरके चहुओरके अभिराम। देखि प्रमदा पुरुष सिगरे भरे क्षोभ अकाम॥ कृतवर्मसों हम लगे बूझन कहहु कारण जौन। पायकै हत श्री भयो यह नगर आनदभौन॥ कहो तेहि बृतान्त सिगरो शाल्व कृत नृपधर्म। सुनत हों तेहि मारिबेको कियो निश्चय पर्म॥ समाधान सु प्रजनको सबभांतिसो करि भूप। लेइ शासन उग्रसेन महीपको अनुरूप॥ बृष्णिबंशिनसों कहे हम हर्ष कारक बैन। शाल्व बधकों जात हमको देखियो सहचैन॥ शाल्व नृपको मारि तुमको देखिहै फिरि आय। दुन्दभी बजवाय दीन्हो स्वपुरको सुखदाय॥ बृष्णिवंशिन कहो ताको जाय मारहु बीर। द्विजनके पदबन्दि आशिष लेय मोद गँभीर॥ चढे नन्दीघोष रथपर पाञ्चजन्य बजाय। सौभपुरको चले सह चतुरङ्ग सैन सहाय॥ देश गिरि बन सरित नानाभांतिकी अवगाहि। सौभना मा नगर ताको जाय घेरो चाहि॥ सुनो तहँ है शाल्वभूपति सरितपतिके तीर। सौभपै चढिगयो तेहाँ सहित सेना बीर॥ तहाँको हम जाय देखो सिन्धु नाभी माह। सौभपैं चढि रमत सो सह दनुज

बलनर नाह ॥ देखि हमकों दूरसो आव्हान लागो कर्ण । युद्धको कछु हँसत सो बलमत्त भूलो बं॰प॰
मर्ण ॥ शार्ङ्ग मुक्त न तहाँ पहुचे बाण मेरे पम । क्रोध मेरे भयो तब अति सुनहु हे नृपधम ॥ बाण
धारा लगे बर्षण मेघसो सो बीर । कियो छादित हमै सेना सहित अति गम्भीर ॥ शरबर्षतें नहि भई
शंकित सैन मेरी भूप । युद्ध लागे करण सैनिक बीरवर अनुरूप ॥ शाल्व सैनिक असुर बीरन्ह बाणकी
झरि लाय । दई मेरी सैन सिगरी चहूदिशिते छाय ॥ कोउ देखि न परो काहु हि भयो शर तम
जाल । मंत्रपढि हमहूँ चलाए बाण बहु चितिपाल ॥ युद्धको मम सैनिकनको मिलो नहि
अस्थान । गगणमे सो सैाभ देखो भयो कोस प्रमान ॥ तहा मेरी सैन ठाढी रही देखत भूप । मोहि
दर्पित करत हे करि नादको अनुरूप ॥ बाण मेरे दानवनके अङ्गने अतिमान । सलभ ज्यो गिरि
शृङ्गमे त्यौं लगे सकल समान ॥ हलहला शब्द सो भयो तब तेहि सैाभमे अतिघोर । गिरण लागे दनुज
कटि कटि सिन्धुमे करि सोर ॥ शङ्खको हैां नाद कीन्हा मनुजभयकर भूरि । कढत अपनी चमूकों
लखि शाल्व भयसों पूरि ॥ प्रगट करि कै दनुज माया करण लागो युद्ध । शस्त्र नाना भांतिके बहु
लगो बर्षण उद्ध ॥ ताहि मायाअस्त्रसों हों कियो बारण भूप । शिखर डारन लगो तब धरि दुष्ट माया
रूप ॥ धूरि पूरि अँगार बर्षण लगो सो अतिमान । तास मायामयी शरसों कियो नाश महान ॥
व्योममे शशिसूर तारा परे शत सह देखि । दिवश निशि दिशि बिदिस हमकों परी नहि कछु लेखि ॥
कियो प्रज्ञां अस्त्र योजित जानि माया खर्ब । तूल चयकों अनल जैसे कियो नाशित सर्ब ॥ भयो तब
सब दिशनमे अति बिमल भूप प्रकाश । करण लागे युद्ध हम तब देखि मायानाश ॥ युद्ध करि कै
शाल्व हमसों भयो फिरि नभलीन । शस्त्र नाना भांतिके बहु लगो बर्षण पीन ॥ शरनसों ते काटि
के करि खण्ड डारे भूप । भयो तब नभमाह हाहाकार भयङ्कर रूप ॥ तब सहस्त्रन्ह शरनसों
रथ बाजि सूत समेत । छाय हमकों लियो दनुजन्ह कियो व्याकुल चेत ॥ कहो हमसों व्यथित
दारुक शराकंन्न शरीर । भागिबे नहि योग्य यातें रहत हों यदुबीर ॥ शक्य हों नहि रहन केशव
अङ्ग बेधित बान । सारथीको बचन सुनि हम दुखित दीन महान ॥ लखे हम तब बाण बेधित अङ्ग
ताके सर्ब । बहति ताकी देहतें सब रुधिरधार अखर्ब ॥ कियो आश्वासन सु ताको बचन कहि
सबिबेक । चढो रथ तँह पुरुष आयो द्वारिकातें एक । शाल्व मारो जनककों तव द्वारिकाकों
जाय । बोलिबेकों तुम्हैं दीन्हों उग्रसेन पठाय ॥ युद्ध छोडहु बेगि चलिए द्वारिकाकों बीर । तुम्है
रक्षा योग्य करिबे वृष्णिबंश गभीर ॥ सुनत ताको बचन व्याकुल भयो मेरो चेत । छोडि आए
द्वारिकामे इन्हैं रक्षा हेत ॥ प्रद्युम्न अरु बलभद्र सात्विकि साम्ब सह अनिरुद्ध । सके रक्षि न द्वारि
काकों मरे का करि युद्ध ॥ इन्हैं जीवत मारिबेकों शक्य को बसुदेव । मरे आनकदुन्दभीके सङ्ग ए
सब एव ॥ भयो बिह्वल नाश सबको ेर बेर बिचारि । शाल्व सों फिरि युद्ध लागो करण धीरज

धारि ॥ फेरि देखो पिताकों हों गिरत नभतें भूप । हाथ पाय पसारि बिथरे केश मृतक स्वरूप ॥ हनत आवत शूल पट्टिशसों निशाचर घोर । लए आवत गगणसों यहि भांति कीन्हें सोर ॥ मोहवश हम भए करतें गिरो धनुष महान । परे रथपर हाथ पाय पसारि मृतक समान ॥ घरी द्वैमे भई संज्ञा हमें जब नृप धर्म्म । फेरि हम नहि कछू देखो दनुजमाया कर्म्म ॥ जानि माया राक्षसी फिरि छेद्र धनुष सहान । शरनसों पुनि मारि डारण लगे असुर अमान ॥ शाल्व अन्तर ध्यान भो फिरि सहित सोभ नरेश । परो जब नहि देखि मनमे भयो महत अँदेश ॥ दनुज लागे करण जहँ जँह गगणमे अतिसोर । शब्दवेधी अस्त्र तहँ तहँ लगो डारण घोर ॥ दैत्य दारुण लगे वर्षण शैल शिखरन्ह कोपि । सहित रथ तिन दियो हमकों चहूँदिशितें तोपि ॥ भए हम अप्र गट चारोओरतें गिरिमाँह । लखें बिनु सो सैंन भाबी हहा करि नरनाह ॥ देखि हमकों परो नहि नभ दिशा चारोंओर । देखि हर्षित भए अरि करि सुहृद रोए सोर ॥ कियो हम सु स्मर्ण हरिप्रिय वज्रको तव भूप । स्मर्ण करत सो पाणिमे मम बसो आय अनूप ॥ मारि तासों चूर्ण सम हम किए पाहन सर्ब । भए लहि गिरि भार कम्पित सु रथवाहक अर्ब ॥ देखि मोकों बन्धु मेरे लहो हर्ष महान । जलद पटल बिदारि निकसो क्रोक जैसें भान ॥ सूत दारुक कहो मोसों शमदूक तव बैंन । कृष्ण देखो सोभ पर यह शाल्व है बलऐंन ॥ वेगि याके मारिबेको यत्न कीजै धीर । मरत नहि मृदुयुद्धसों यह करऊ कर्करु बीर ॥ यत्न नानाभाँतिके करि हनो शत्रु विचारि । नहि निरादर कीजिए लघु शत्रुकों निरधारि ॥ हनऊ यातें बेगि याकों महो ।बत बऊकाल । बध्य नहि मृदुयुद्धतें यह करऊ बीर कराल ॥ जेहि हेतुतें यहि कियो महित द्वारिकाकों जाय । तैांन तत्व बिचारि बधकों करऊ बेगि उपाय ॥ सोभ जातें गिरै मारो जाय यह खल बीर । करऊ तैांन उपाय आतुर करऊ बेर न धीर ॥ मुहूर्तभरि थिर रहो दारुक सो सु कहि कै बैंन । स्मर्ण चक्र सुनाभको हम कियो तेजस ऐन ॥ चक्र आयो पाणिमे मम दनुज अन्तक रूप । करो प्रेरित वचन यह कहि सुनऊ सो कुरु भूप ॥ हनऊ सोभ निपाति दानव वृन्द मेरे जैांन । चलो नभकों चक्र सो मम पाणि प्रेरित तैांन ॥ प्रलय कारक दूसरो मनु उदय भो मार्तण्ड । लखि सुदर्शनको परो यहिभाँति रूप प्रचण्ड ॥ सोभ डारो द्विधा करि हर हनित त्रिपुर समान । फेरि आयो पाणिसे हनि दनुज वृन्द महान ॥ फेरि प्रेरित कियो हम कहि शाल्वको वध भूप । शाल्वकों करि द्विधा डारो लसो चण्ड स्वरूप ॥ शाल्वको बध देखि भाजे दैत्य चारोओर । बऊत डारे मारि क्षितिपर शायकनसों घोर ॥ गए रथ लै सोभके ढिग शङ्खको करि नाद । भए हर्षित सुहृद जन सुनि जानि कै निर्बाद ॥ मेरु शिखर समान सोभस सोध गो पुर मान । देखि भाजी तरुणि तिनकी लए दुःखित प्रान ॥ सोभ शाल्व निपाति ऐसी भाँतिसेँ। नृपधर्म । गए द्वाराबतीकों तँह भयो आनद पर्म ॥ याह

हेतुत हम नहि आए हस्तिना पुर भूप । होत द्यूत न नृप सुयोधन रहत जीवित रूप ॥ होत का थ्य०
ब सेतु फूटे निकसि ज्यों जल जात । होन हारी होयगी सो समे पाएँ तात ॥ * ॥ वैशम्पायन
उवाच ॥ * ॥ यह भाँति कहि कै पाण्डवनसों बिदा ह्वै यदुनाथ । स्वसा सह अभि मन्युकों ले
गए घरकों साथ ॥ धृष्टद्युम्नो बिदा ह्वै सुत द्रौपदीके सर्व । गए ले पाञ्चाल पुरकों भरे दुःख
अखर्व ॥ धृष्ट केतु सुस्वसा अपनी भागिनेय समेत । सुक्तिमति स्वपुरिकों ले गए विह्वल चेत ॥
कैकेय भूपति बिदा ह्वै कै पांडवनसों वीर । गए अपने नगरकों मन भरे शोच गँभीर ॥ रहे
ब्राह्मण वैश्य जे कुरुदेश वासी पर्म । सहित आदर बिदा कीन्हें तिन्हें भूपति धर्म ॥ भयो काम्यक
विपिनिमे समुदाय हो इमि पर्म । धौम्य आज्ञा ले करायो सज्ज रथ नृपधर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे श्रीकृष्णागमन
शाल्वबधोपाख्यान वर्णनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ * ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥ *

धर्मराज भ्रातन सहित कृष्णासह अभिराम । धौम्य सहित रथ पै चढे चले छोडि बनकाम ॥
बसन हेम बहु द्विजनकों देय दच्छिणा भूरि । चले महाबन द्वैतकों द्विजन्ह सहित मुदपूरि ॥
सकल सुभद्राके बसन भूषण बर कुरुनाथ । पठये द्वारावतीकों इन्द्रसेनके साथ ॥
आय तहाँके विप्रबर सकल वर्ण समुदाय । ऐसें सब लागे कहन सकरुण बचन सुनाय ॥
पिता सदृश नृपधर्म तुम हमकों पुत्र समान । छोढि कहाँकों जात हो कृपासिन्धु सुखदान ॥
बहुत बार तिनके बचन सकरुण सुनि भरि प्रीति । अर्जुन तब तिनसों लगे ऐसे कहन सनीति ॥
बारह वर्ष बिताय कै बनवास अतिमान । तब हम अरि कै सुयशको करि है ग्रास महान ॥
अर्जुनके ए वचन सुनि ब्राह्मणादि सब वर्ण । स्तुति करि नृपधर्मकी लगे प्रदच्छिण कर्ण ॥
ले आज्ञा नृपधर्मकी प्रजा सविप्र अखर्व । चले आपनें देशकों भरे शोचसों सर्व ॥
बिदा तिन्हें करि धर्मनृपभ्रातनसों इमि बैन । सादर लागे कहन तब शील सुमतिके ऐन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

द्वादश वर्ष विपिनिको बास । करिबे हमें सुनहु मतिरास ॥ देखहु होय महाबन जौन ।
बहु मृग बहु पच्छिणको भौन ॥ बहुत पुष्प फलनतें रमणीय । बसें जहाँ मुनिगण कमनीय ॥
तहां करैं ए वर्ष व्यतीत । यह सुनि बोले जिष्णु सनीत ॥ नारद व्यासादिक मुनि जौन । करत
सर्वलोकन महं गौन ॥ तुम सेवत तिनकों मतितज्ञ । तुमसो और कौन सरवज्ञ ॥ मनुजलोकमे
अविदित जौन । तुमसों भूमि भागसो कौन ॥ श्रेय हेतु तुम जानत भूप । कहो करैं तँह बास
अनूप ॥ यह बन द्वैतनाम अभिराम । जहां सुपुण्य सरोवर नाम ॥ पुष्प फलनसों अति रम
णीय । बसत जहां द्विज बर कमनीय ॥ द्वादशाब्द तहँ करौ बिहार । तो सम्मत जो होय उदार ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ तुम जो कहो हमैं सो पर्स । तँह चलि पार्थ बसङ्ग सह शर्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तहां गए चलि पाण्डव सर्ब । द्वैतविपिनि जँह ससर अखर्ब ॥ साग्नि अनग्नि द्विजनके साथ । रथतैं उतरि गए कुरुनाथ ॥ तहँ वनबासी द्विज तपरास । आए बऊत धर्मनृप पास ॥ नाना भांतिनके तरु पर्स । फूले फले लखे नृपधर्म ॥ बऊत जातिके सुरंग विहङ्ग । बोलत स्तुति सुख भरे उमङ्ग ॥ करिणिन सह गजजूथप जौंन । गिरिस फिरत अन गणित जौंन ॥ सरस्वती सरिताके तीर । देखि सिद्धगण बसत गँभीर ॥ तँह तजि जान गए कुरुबीर ॥ आए तँह मुनिबृन्द सुधीर ॥ बनबासी देखनके हेत । आए भरे कुतूहल चेत ॥ सिद्ध मुनिनको पूजन पर्स । वेदविहित कीन्हों नृपधर्म ॥ पाणि जोरि नृपधर्म सुजान । बैठे तिनमह भूप महान ॥ पाय मुनिनसों पूजन पर्स । हर्षित भयो महा नृपधर्स ॥ लहि कदम्ब तरुकी घनछाँह । बैठे सह भ्रातन्ह कुरुनाह ॥ तेहि बन विहरत भूप कुमार । लहि बनबासज दुःख उदार ॥ सरस्वती सरिताके तीर । जहँ शाल तरु विपिन गँभीर ॥ जती द्विजनकहँ भोजन भूप । देत मूल फल अन्न अनूप ॥ यज्ञसु श्राद्धादिक जे कर्म । धौम्य करावत नित्यसो पर्स ॥ मार्कण्डेय सु मुनि तपराश । आए तँह भूपतिके पास ॥ ज्वलित ऊताशन सम मुनि पर्स । कियो तास पूजन नृपधर्म ॥ कृष्णा सहित पाण्डवन्ह देखि । मुनिगण मध्य लसत अवरेखि ॥ स्मर्ण हिएँ रघुबरको धारि । बिहँसे सुमुनि महा निरधारि ॥ भए विमन लखि कै नृपधर्म । मुनिगण भए सुलज्जित पर्म ॥ तब मुनिसों बूझो कुरुभूप । हेतु बिहँसिबेको अनुरूप ॥ * मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ हँसे न खुसी भए कुरुबीर । हर्षज दर्पण सोमे धीर ॥ तो विपत्य यह लखि अतिमाम । समुझो दाशरथी हम राम ॥ मानि पिताको शासन माम । लक्ष्मण सहित बसे बन राम ॥ हम ऋषि मूक शिखर पर धीर । देखो धनुष धरे वर बीर ॥ सहस्राक्ष सम त्रिभुवन भूप । लोकपाल नेता अनुरूप ॥ त्यागि भोग बन बसे सधर्म । अतिबल करत न दुःकृत कर्म ॥ वर भगीरथादि जे भूप । भए महाबल धर्म स्वरूप ॥ भूमि जीतिबश कीन्ही सर्ब । कियो अधर्म न प्रबल अखर्ब ॥ विधितैं बिहित जौंन मर्य्याद । सन्त करत नहि ताके बाद ॥ करि विधि विहित सप्तऋषि कर्म । नभमे बसत प्रभा धरि पर्म ॥ अति बल गिरिसम गजबर जान । नहि विधि विहित तजत पथ तौंन ॥ नाना योनिज भूत अखर्ब । नहि विधि विहित तजत पथ सर्ब ॥ तुम हो सत्य धर्मप्रिय नीति । तुम सब सकत भूत गण जीति ॥ तो यश तेज दीप्त अतिजौंन । लियो सुयोधन छल करि तौंन ॥ यथा प्रतिज्ञा करि बनवास । सो लैहो करि कौरव नाश ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धर्म नृपतिसों कहि इमि बैंन । मार्कण्डेय तपस्याऐंन ॥ विदा होय कुरुपतिके पास । गए पुरातन मुनि तपराश ॥ पाण्डव बसे द्वैतवन सर्ब । ब्राह्मण सङ्कुल भयो अखर्ब ॥ वेद घोषसों पूर्ण महान । ब्रह्मलोकके भयो समान ॥ ज्या निर्घोष वेद धुनि पाय । शोभित विपिनि भयो सुखदाय ॥ बकदाल्भ्यकुलो[illegible]

नृपधर्म । वक दाल्भ्य कुलोद्भव पर्म ॥ संध्या करण लगे जब भूप । अैसे बचन परम सुखरूप ॥ लखऊ द्वैतबन हे कुरु बीर । संध्या समय पाय द्विज धीर ॥ करैं प्रज्वलित होम हुतास । लसत चहूं दिशि सरबर पास ॥ तुमतें रक्षित बिरचें धर्म । नाना मुनि सम्भव द्विज पर्म ॥ जगत श्रेष्ठ जे ब्राह्मण भूप । करे एकत्र तिन्हें अनुरूप ॥ सुनऊँ बचन यह मेरो पर्म । भ्रातन्ह सहित अहो नृपधर्म ॥ ◈◈◈◈◈◈◈◈ ॥ * ॥ दोहा ॥ ◈◈◈◈◈◈◈◈◈◈◈

ब्राह्मण क्षत्रीसों मिलें क्षत्री ब्राह्मण माँह । दहै शत्रु ज्यों बन अनल अनिल मिलें नरनाह ॥
क्षत्री ब्राह्मण हीन जो सो न युद्ध जय लेत । दुहूं लोकतें होतहै नष्ट सो भ्रष्ट अचेत ॥
सुधरम रत गत मोह द्विज जा भूपतिके पास । सोई बैरिणको करत रणमह मारि बिनाश ॥
श्रीकर पालन प्रजाको धर्म धरत नृप जौन । लहत उपाय न सिद्धिको तजि ब्राह्मण कहूं तौन ॥
पाई बिप्रप्रसादतें बलि श्री अक्षय रूप । द्विजसों कीन्हें दुष्टता भई नष्ट सो भूप ॥
बिप्र बिमुख भूपाल जो भूमि बरत नहि ताहि । जैसें निर्गुण पुरुषकों तजति सुन्दरी चाहि ॥
क्षत्री ब्राह्मण हीनको नष्ट होत बल सर्व । अनुपम मतिहै बिप्रकी क्षत्री प्रबल अखर्व ॥
दोऊ जब मिलिकै चलै जीतैं लोक महान । दहत महा बनकों यथा अग्नि मिलें पवमान ॥
लेत बिप्रसों बुद्धि बर मेधावी नृप जौन । अलभ लाभकों लाभ जो वृद्धि करणकों तौन ॥
यशी बेदबिद बहुत श्रुत धरें जो नीति बिचार । भूपति अैसे बिप्रकों राखै पास उदार ॥
ब्राह्मणमे है वृत्ति ते उत्तम हे नृपधर्म । यातैं तो यश जगतमे पसरो है अतिपर्म ॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

महामुनिनके पुत्र जे रहे महाश्रुतिधर्म । तिन सब नहि पूजित कियो तब बक मुनिकों पर्म ॥
बैठे भ्रातन सहित तँह धर्मनृपति अभिराम । कहन लगे इतिहास कछु दुसह दुःख बिश्राम ॥
प्रिया पंडिता सुन्दरी कृष्णा पति मतिअैन । कहन लगी नृपधर्मसों बचन बिसारे बैन ॥

॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥

धार्तराष्ट्र कृत दुःखको नियत नमोमे भूप । कुशशायी अजिनीबरी देखि तपति तव रूप ॥
मा सह तुमकों चलत बन अजिनम्बरकों धारि । रोए सिगरे जगत जन बिना दुष्ट ए चारि ॥
शकुनि सुयोधन सूतसुत दुःशासन अघअैन । चलत हमैं बनकौ नहीं इनक पसिजे नैंन ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

लखति यथ्या रावरीयह कहावह अभिराम ॥ सुखोचित दख लहत तुम यह क्लेश मोहत माम ॥ सभामे मणिमरे आसन पैं स नृप समुदाय । लखति तुमको रही सो हों लखति अैसें हाय ॥ चीर अजिनम्बरधरें कुशशयन पर तो गात । देखिकै नृपधर्म मोसों सहो दुःख न

जात॥ जौन चन्दन लिप्त तो तन सूर्यकान्ति समान। धूलि धूसर लखति सो दुख कहा यातें आन॥ जौन सुवरण पात्रमें भरि अन्न अमृत समान। देति सहसन द्विजनकों हम रही अति सुखदान॥ बन्यभोजी भई हमसो पत्रपुटकन माह। दुःख यातें और ह्वहै कौन हे नरनाह॥ कनक कुण्डल धरें मणिमय ह्वद जे मतिमान।तव भ्रातरनकों करावतहे मिष्ट भोजन पान॥तिन्हे सब कों लखति हौं मै बन्यभोजन कर्त्त। दुःख योग्य न रहे ते सब महा दुखसों भर्त्त॥भीमसेनहि करत कारज सकल अपने हाथ। देखि बढत न क्रोध क्यों तो समय लहि कुरुनाथ॥ जान भूषण बसन बिहरत रहे जे बज्र रूप। अजिनाम्बरा लखि तिन्हैं तो किम चढत क्रोध न भूप॥ सर्व्व कौरव हन नको जो करतहैं उतसाह। भीम तो यनकी प्रतीक्षा करतहैं नरनाह॥ बक्रबाक्र अर्जुन तुल्य जौन दुबाहु अर्जुनवीर। बाणवर्षत युद्धमे करि हस्त लाघव धीर॥ जास पाय प्रताप सिगरे आइकै बरभूप। यज्ञमें तो कियो सेवन होय भृत्य स्वरूप॥ पुरुषसिंह सो मनुज दानव देवपूजित बीर। देखि दुःखित ताहि क्यों नहि करत क्रोध गभीर॥ पांडु नृपकी स्नुषा कन्या द्रुपदकी अभि राम। वीरपत्नी धर्म्मचारिणि अनुग तो बलधाम॥ सहति दुख बनबासको लहि दुष्टसों अप मान। देखि मोहि न होत तुमकों क्रोध भूप महान॥ क्रोधहै नहि रावरे यह नियत जानो भूप। लखत दुःखित सहित भ्रातन्ह हमै शान्तस्वरूप॥ क्रोध रहित न होत क्षत्री कहतहैं संसार। तौन उलटी लखति तुममे सुनऊ भूप उदार॥ करत तेज न प्रगट क्षत्री जौन औसर पाय। सो न आदर लहै जगमे षंड सदृश लखाय॥ क्षमाकरिबो योग्यहै नहि शत्रु प्रति रणधीर। मारिबेके शक्यहैं ते तेजसों तवबीर। क्षमाको लहि काल क्षत्री क्षमा करत न जौन॥ होत अप्रिय जगतमे परलोक नाशक तौन॥ कहतिहौं इतिहास यामे तौन सुनिए भूप। प्रल्हादसों बलि जौन बूझ्यो क्षमा तेज सरूप॥ बलिरुवाच॥ तात श्रीकर क्षमाहै के तेज बहए तौन। सहित निर्णय सिद्धै जासों भयो संशय जौन॥ प्रल्हाद उवाच॥ क्षमा ते यश नित्यमे नहि श्रेयकर मतिमान। तात जानऊँ रूप ऐसो दुऊनको सविधान॥नित्य कीन्हें क्षमाके नृपलहत दोष महान। भृत्य आदर करतहैं नहि डरत रिपु न समान॥ जीव मात्र न डरत ताकों तेहीन बिचारि। नित्यकीबो क्षमा को अश्रेयकर निरधारि॥ भृत्य हरत सुवित्त ताको जौन शान्त स्वरूप। हरबस्त्र ताको लियो चाहत जेऽधिकारी भूप॥ देत जाहि देवाय धन नहि देत भृत्य अमान। क्षमीकों नहि कोऊ मानत होत मृतक समान॥कटुक बोलत क्षमिहि अरिलौं मित्रभृत्य सपुत्रदार धामहि हरणको निति रहत बाधें सूत्र॥ क्षमी की बनिता करैं जहँ चहैं तँह स्वार। क्षण लागें प्रजा निर्भय होयकै व्यभिचार॥नित्य कीन्हें क्षमाकें नर लहत दोष अनेक। क्षमा जेहाँ येग्य तेहाँ कीजिए सबि बेक॥क्षमावानन माहिँ ऐसे होत दोष अनेक।क्षमिनको ए दोष तुम अब नो सहित बिबेक॥यो ग्यमे सु अयोग्यमे हे दण्ड करिबो जौन। होत बिग्रह मित्र ह्नसों अयशस्य जौन॥द्वेष कारी

लोकमे सब स्वजन ताके होत। लहत सो अपमान जातें वित्त हानि तनोत॥ सन्ताप द्वेष समोह व॰प॰
मातें बढत शत्रु अनेक। दण्डतें अरु क्रोधतें जो करत विगत विवेक॥ स्वजनतें ऐश्वर्य तें गिरि परत
हु नर तौन। अहित हित ह्नमे रहत नित तेज धारें जौन॥ होत ताते व्यथित सब जिमि सर्प आएँ
धाम। लोक जासों व्यथित ताको होत विभव न साम॥छिद्र ताको रहत देखत लोक जातें सर्व।
योग्य धरिबो उग्रता अरु मृदुलता न अखर्व॥ यथा काल सु धरी मृदु ता उग्रता मतिमान।
करें साधन कालको सुख लहत सुनऊ सुजान॥ क्षमाको अब कहतहै हम काल सुनिए तौन।
कहत हैं मतिमान जाकों नीतिवेत्ता जौन॥ पूर्व जेहि उपकार कीन्हौ करै सो अपराध। क्षमा तेहां
करत बुधजन करत तास न बाध॥ अबुद्धि कृत अपराध लखिकै क्षमा करत सुजान। पाण्डित्य
सबकों होति नहि सब ठौर सुनऊ प्रमान॥ बुधिसों अपराध करि जो कहै वश अज्ञान। ताहि
दीजै दण्डकों अन्याय जानि महान॥ क्षमा कीजै एक प्रथमहि जानिकै अपराध। दूसरो जैां
करै करिए तुरित ताको बाध॥ अज्ञानतें अपराध जैां कछु होय दानव भूप। समुझि नीको
भाँति सों तह क्षमा करन अनूप॥ शामसों हनिए सुदारुण औ अदारुण ताहि। शांमसों कछु
है असाध्य न कहत सुमति सराहि॥ देश काल बिचारि अपनो बलाबल अनुमानि।सिद्धि होय
सो करै जो जन देश कालहि जानि॥ होत जामे जौन ताको तौन देश न काल। तहाँ करत न
कार्यको प्रारम्भ सुमति बिशाल॥ क्षमाको नहि काल है अब धरऊ तेजसरूप। कार्यको जो काल
जानत भूप सो कुरु भूप॥ *॥ युधिष्ठिरउवाच॥*॥ क्रोध हर्ता क्रोध कर्ता राजश्रीको सर्व।
जानि सुन्दरि क्रोध है क्षय वृद्धि करण अखर्व॥ क्रोधकों संहरत जो है जन्म ताको पर्म। नित्य
क्रोधी पुरुषको है क्रोध नाशक कर्म॥ प्रजनको जो नाश ताको मूल क्रोधहि होत। करै हमसो
कौन ऐसे क्रोधको सु उदोत॥ पाप कारक होत क्रोधी हनत गुरुके प्रान। परुष क्रोधी कहत
है करि महतको अपमान॥ वाच्य और अवाच्यको है कुपितकौंन बिचार। कुपितकों नहि कार्य
कछु दुर्वचनको आधार॥अवध्यहूकों बधत क्रोधी बध्य राखत पास।देत अपनी आतमाकों कुपित
यमपुर बास॥ क्रोधमे लखि दोष नाना धीर हमसे जौन। जीति क्रोधहि अभय राखत लोक
दोनो तौन॥यह बिचारि न बढत क्रष्णा क्रोध मेरो पर्म। आत्म परको करे रक्षण होत है अति
धर्म्म॥ मूढन रहत शक्ति करत जो बली ऊपर कोप।करत अपनो प्राण सो यमपुरी माह अरोप॥
तजे आत्मा आपु सों परलोक बिनसत माम। अशक्तकों हैं क्रोध हरिबे द्रौपदी अभिराम॥
सुनऊँ सुन्दरि बली दुर्बलकों सदां सुखदान। क्षमा करिबो पुरुषको हित कहत सकल सुजान॥
क्रोधको जो बिजय करिबो साधु बरणत तौन।क्षमा करिबो जगतमे है बिजयको वर भौन॥ असत्य
सों हैं सत्य श्रेय नृशंस सो अनृशंस। यथा करिबो क्रोध बर्जित कियो सुमति प्रशंस॥ क्रोध बर्धित
की जो बाधा करत हैं मतिमान। कहत तेजस्वी तिन्हैं जे जगत माह सुजान॥ नहीं क्रोधी कार्य

और अकार्य देखत मन्द। सुनऊ तातें दूरि कीजे क्रोध दायक दन्द ॥ दाक्षिण्य सौर्य अमर्ष तुरता है तेजस्वी माह। क्रोध जीते जिन्हें ते गुण लहत नहि नरनांह॥ क्रोधकों तजि पुरुष पावत तेज कों अभिराम। मनुज लोक बिनाश कारक क्रोध है अतिमाम ॥ तजतहैं रुतपुरुष होतें क्रोधकों अतिमान। करहिँ कैसे त्याग सो हम क्षमाको सुखदान॥ क्षमावानन पुरुष होते धरासे धृतधीर। होति प्रीति न मनुजसे अति बढति कलह गँभीर ॥ क्रुद्ध व्हैके कहत क्रोधी औरऊकों क्रुद्ध। होत तातें जगतमे जन नाश कारण उद्ध ॥ क्रोध बश सुत हनत जन कहि पिता सुतकों तौंन। हनति भार्या पतिहि भार्यहि हनत है पतिजौंन॥ कोपवशजग होत तौ जनजन्म कैसें लेत। जन्मकारण प्रीति है यहि लोक माँह समेत॥ क्षमावान सो लोकमे हैं मोद कारणसर्व। क्षमाही सों होत हैं सब सिद्धि कार्य अखर्व ॥ कही काश्यप महा मुनि यह सुनऊँ गीता तौंन । जानि तुमकों परै सुन्दरि क्षमाकों गुण जौंन॥ धर्म यज्ञ सु शास्त्र श्रुति है क्षमा अति अभिराम। जौंन जानत करत सबपैं क्षमा तौंन ललाम ॥ सत्य धर्म सु भूत भावी शौच सुतप उदार। तौंन सब तुम क्षमा जानऊँ जगतको आधार ॥ ब्रह्मलोक सो लहत है जे क्षमावान सुजान। तौन कृष्णा बजै कैसें क्षमाकों अति मान ॥ क्षमावान समान कोऊ जगतमे नहि आन । ब्रह्म परकों लहत हैं जे क्षमा धरत सुजान॥ क्षमा गीता महा मुनिकी कही सुनि करि बोध। क्षमा धरिकै रहऊ कृष्णा करऊ अब मति क्रोध ॥ पितामह आचार्य गोतम बिदुर सञ्जय जौंन । सोमदत्त युयुत्सु अरु श्रीकृष्ण मेधा भौंन ॥ व्यासादि सब ए साम नितिहों कहत नृपके पास। राज्य देहैं हमै जानत नतरु लहि ह नास ॥ भयो भामिनि प्राप्त दारुण कौरवनकों काल । हमै निश्चय रहो सुनऊ सुपूर्बही सों हाल॥ नहि सुयोधन राज्य योग्य सु क्षमा तामे हैं न। राज्यके हम योग्य यातें क्षमावें हैं चैंन॥

॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तौंन बिधाताकों करति नमस्कार हों भूप। जिन दीन्हो मति आपुकों महा मोहको रूप ॥
पिता पितामहकी रही नित्य वृत्ति जो धर्म । मति तामे भइ अन्यथा जातें तो अधर्म ॥
पूर्व कर्म अनुसार विधि भोग जन्म दै देत । नित्य सो तातें चहत हैं व्यर्थहि मोक्ष स्वेत ॥
दया धर्म ऋजुता करे मिलति न श्री अभिराम। पूर्व कर्म सो देत है सुख दुख श्री अा माम ॥

॥ * ॥रोलाछन्द ॥ * ॥

भयो तुमकों प्राप्त यह जो दुःख दुःसह भूप । नही ताको योग्य तुम नहि बन्धु तोअनु रूप ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्मप्रिय तुम हो सदा सहित बन्धु वर बीर । हौं धर्मार्थक राज्य तो जीवन सति गँभीर ॥
भ्रातनसह तजि हो हमहि तुम न तजऊगे धर्म । बुद्धि हमारी भूप यह नीके जानति मर्म ॥
धर्म सरक्षक भूपको रक्षित करत सु धर्म। सो न तुम्है रक्षित करत यह भो उलटो कर्म ॥

सुधर्ममाह अनन्य ता मति सुनिए नरनाह । तजत सङ्ग नहि धर्मको यथा मनुजकों छाह ॥ व०प०

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तुम नहि करत निरादर भूप । जगतमाह सबको अनुरूप ॥ सिन्धुमेखला पृथिवी पाय। तुममे गर्व न परो लखाय ॥ स्वाहा स्वधाकार करि पुष्ट । देव पितरकों कीन्हें तुष्ट ॥ देइ ब्राह्मणन्हको मनकाम । करो तृप्त तुम भूप ललाम ॥ स्वर्णपात्रमह भोजन सर्व । अतिथिनकों हम दियो अखर्व ॥ नहि अदेय विप्रन्हकों भूप । तुमकों रहो न कछू अनूप ॥ अश्वमेध आदिक सब यज्ञ । बिधिवत तुम कीन्हें सरवज्ञ ॥ द्यूत कियो धरि मति बिपरीति । तामे हारे पाय अनीति ॥ सहित राज्य धन शस्त्र अखर्व । हम सह भ्रातन्ह हारे सर्व ॥ ऋजु तुम बक्ता सत्य बदान्य । द्यूत व्यसन मति कियो अमान्य ॥ देखि दुःख तो बिपति अमान । हमें होत है क्लेश महान ॥ इहा कहति इतिहास पुरान । सो सुनिए भूपति सुखदान ॥ दैवाधीन जगत जन जौन । सुख दुखदाता बिधि बर तौन ॥ पूर्व जन्मके कर्म समान । नभ सम्मान व्यापक भगवान ॥ पाप पुण्यके माहो सोच । करत प्रबृत जानत बुध लोच ॥ बँधो डोरिसों पक्षी जौन । प्रभुबश रहत स्वबश नहि तौन ॥ तैसें जगजन दैवाधीन । रहत स्वतंत्र न कर्मासीन ॥ स्वर्ग नर्ककों बिधिबश जात । ज्यों तृणतूल भए बश बात ॥ युक्त सुधर्म अधर्मनमाह । ईश्वर करत सुनउ नरनाह ॥ व्यापक भूतनमे जगदीश । लखित होत न बिश्वे बीश ॥ हेतु मात्र है पूरब कर्म । देह क्षेत्रसंज्ञक है पर्म ॥ जातें कर्म शुभा शुभ सर्व । करावत सो ईश अखर्व ॥ लखु प्रभाव मायाको तास । यथा कर्म जो किए प्रकाश ॥ हनत भूत भूतनके हाथ । करि कै मायाबश जगनाथ ॥ मिथ्या मानत जे दृढज्ञान । मृगतृष्णा सम जगत महान ॥ मिथ्या जगतहि मानत सांच । देखि मूढजन बिधिकृत नाच ॥ रचत मिटावत सांच देखाय । कर्त्ता करत चरित्र स्वभाय ॥ करत अचेतन चेतन काय । काष्ठ हि काटत काठ लगाय ॥ ऐसें भूत भूतके हाथ । नाश करावत त्रिभुवननाथ ॥ संयोग बियोग करावत तौन । प्रभु क्रीडत बालक सम जौन ॥ माता पिता न सम सुखदान । होत रोष करि शत्रु समान ॥ पण्डित शीलवान सह क्लेश । लखति दुष्टको आनंद बेश ॥ तुमकों बिपति सुयोधन ऋद्ध । यह बिधि कारज निंद्य समृद्ध ॥ कर्त्ताकौं लागत कृत कर्म । और लगत न धर्माधर्म ॥ ईश्वर कर्त्ता ताकें योग । करिबो कर्मजन्य फल भोग ॥ ईश्वर प्रबल न भोगै तौन । है असक्त दुर्बल जन जौन ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ यह बिचित्र कृष्णा तो बैंन । हैं नास्तीक धर्मके ऐंन ॥ हम नहि चहत कर्मफल तौन । दीजै देय बस्तु है जौन ॥ कीजै होम जो है हवनीय । बेदाज्ञा यह है कमनीय ॥ यामे फल कछु होय न होय । करै गृहस्थ बेदबिधि जोय ॥ धर्म करी न धर्म फल चाहि । शास्त्र बेदको मत अवगाहि ॥ शङ्कित करै धर्मको जौन । है नास्तिक सम हि नर तौन ॥ करै धर्मेमे

व०प० शङ्का पात । सा जन तिर्य्यग योनिकों जात ॥ यथा बेदते सूद्र बिहीन । होत न तैंान सुलोका सोन ॥ पापी महा सूद्र सम तैंान । करत धर्ममे शङ्का जान ॥ मार्कण्डेय महातपधाम । धर्महितें चिरञ्जीवी आम ॥ व्यास बशिष्ठादिक मुनि जैान । भए धर्मतें चेतसभैान ॥ शापानुग्रह करिबें शक्त । लखऊ द्रौपदी इनकों व्यक्त ॥ करत प्रसंशित ते सब धर्म । सुर सम धर्मधुरी ऋषि पर्म ॥ तोहि न योग कहिबो छबिश्रैन । धाता धर्म हि निन्दित बैन ॥ धर्मा शङ्की श्रोर प्रमान । मानत मूढ न बश अज्ञान ॥ समुजि आपनो सांच बिचारि । सुमलिनको मत देत बिगारि ॥ इन्द्रिनके प्रियमे करि छोह । लहत धर्म पथ लखि अतिमोह ॥ प्रायश्चित्त शुद्ध नहि तैांन । करत धर्मम शङ्का जैान ॥ तिनको नष्ट होत परलोक । करत जो शास्त्र धर्म पथ रोक ॥ काम लोभको लहि उतपात । ते नर मूढ नर्कमे जात ॥ शिष्ट जननतेँ बिहित जो धर्म । तामे शङ्का होति न पर्म ॥ ऋषिए कहो जो धर्म उदार । सो स्वर्गिएकों नैा कर पार ॥ निःफल होय सुकृत जैां धर्म । बूड जगत पाय तम भर्म ॥ तैान लहै सज्जन निर्बान । पशु सम जीवै बश अज्ञान ॥ बेदाध्ययन तपस्या दान । होहि बिफल जैां कर्म महान ॥ तो मुनि कर हि न धर्माचार । बिफल होय जैां कृपा उदार ॥ फलद जानि श्रेयसकृत कर्म । बिज्ञ सनातन धारत धर्म ॥ कृष्णा आपनो जन्म बिचारि । लेऊ धर्मको फल निरधारि ॥ यह दृष्टान्त देखु छबिश्रैन । बिना धर्म बरजन्म लह न ॥ तोक लाभतेँ सुमति हि तोष । बऊ लहि मूर्खन पावत मोष ॥ जन्म नाश हैं बिरचित देव । याको कोऊ न जानत भेव ॥ मोह भरे जे प्रजा महान । जन्मत मरत रहित निर्बान ॥ करिए दान यज्ञ जे पर्म । देत कर्मफल सास्वत धर्म ॥ ब्रह्मै कहो सुतम्हके पास । यह जानो कश्यप मतिरास ॥ तातें तो संशय अतिमान । कृष्णा सिटो निहार समान ॥ सर्व सत्य करि मति व्यवसाय । नास्तिक बुद्धि सो देऊ नशाय ॥ ईश्वर सबको धारक तास । निन्दा करऊ न हे मतिरास ॥ जाको पाय प्रसाद ललाम । मानुष होत अमर अभिराम ॥ ****

॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ईश्वर निन्दा करति नहि औा न करति अपमान । प्रजा रचत जो प्रजापति निन्दति ताहि सुजान ॥
आरत करति प्रलापकों मोहि बिचारऊ धीर । फिरि बिलाप चाहति कियो सुनिए तान गंभीर ॥
निश्चय कीजे कर्मको जीवन कर्म सुजन्य । बिना कर्मसों जियत हैं स्थावर जीव न अन्य ॥
बत्सा जन्मत हीं करत उठि कै गोस्तन पान । पूर्व जन्म संस्कार बिनु ऐसो होत न ज्ञान ॥
जङ्गममांहि बिशेषतें मानुष होत सुचेत । कर्म बृत्तिकी प्राप्तिको करत दुर्ज्ञदिशि हेत ॥
पूर्व जन्म संस्कारको फल भोगत सब कोय । प्रगट तैान कर्मज कहत सकल सयाने लोय ॥
बिना कर्म नहि जीवकों बृत्ति मिलति है भूप । कर्मज फल भोगत नियत सो न मिटत अनुरूप ॥
कर्म करऊ सांनन्द है भूपति होऊ न म्लान । जानत करिबो कर्मको सो जन बिरल सुजान ॥
जानत रचए बृद्धि जो ताको बाढत कार्य्य । भत्तए कर न भरै सो चीए होत है आर्य्य ॥

दैवाश्रय करि रहत जो अरु जो हठ मत कूट ।कर्म बुद्धि जो सो सरस हैं ए दोऊ मूढ ॥ व०प०
छोडि कर्म जे रहत हैं दैवाधीन अयान। काँचो घटगत सलिल ज्यों दुःखित होत निदान ॥
कर्म शक्त हठ बुद्धि जो करत न कर्म समान। सो न जियत दुर्बल यथा बिना नाव बलवान ॥
अकस्मात धन जगतमे लहत पुरुषहै जौंन। हठबुद्धो सो यतनकों व्यर्थ कहत है तौंन ॥
दैवाधीन जो पुरुष धन पावतहै अभिराम। दैवदत्त सो जानिए निश्चय सुनऊँ ललाम ॥
जो करि अपने कर्मकों पावतहै धन भूप। पौरुष ताकों कहतहैं लखि प्रत्यक्ष अनुरूप॥
पुरुष प्रवृत्त स्वभावतें बिनु कारण धन पाय। तौंन पूर्व अनुग्रहतें कर्मनको सुखदाय ॥
हठतें विधितें कर्मतें भावतें अरु सु जौंन। फल पावतहैं पुरुष सो पूर्व कर्मभव तौंन ॥
पुरुष शुभाशुभ जगतमे कर्म करतहै जौंन। पूर्व कर्म फलको उदय भूप जानिए तौंन ॥
संख्या करिबे शक्य नहि कर्म सुनऊँ कुरुवीर। नगर धामकी सिद्धिको कारण पुरुष गँभीर ॥
तिलतें तैल सुदारुतें पावक गोतें छीर। करि उपायकों बुद्धितें सुमनस लेत गँभीर ॥
ऐसें स्थिति कर सिद्धि सो होति लोककों वीर। कही सिद्धि गति कालकी यथा अवस्था धीर ॥
ब्राह्मण राखो पिता मम ऊतो महा मतिमान। कही नीति यह तातसों लीन्हें शास्त्र विधान ॥
नीति बृहस्पतिकी कही सकल कही तेहि जौंन। हों बैठीही गोदमे सुनी नृपति सब तौन ॥
सो तुमसों वर्णन कियो कर्म प्रसंशित गीति। करिबो तुमकों योग्यहै सुनऊँ भूप करि प्रीति ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ द्रौपदीके वचन सुनि करि भीमसेन अमर्ष। श्वास लै कै कहन लागे वचन यों दुर्धर्ष ॥ राज्य धर्म सु भई पथमे चलऊ सुनिए वीर। धर्मार्थ काम बिहीन व्है बन बसें का रणधीर ॥ धर्मतें ऋजुतर्दतें नहि ओजतें ससमाज। द्यूत छलसों नृप सुयोधन हरो हमरो राज ॥ सिंहसों गोमायु आमिष लेइ छल करि धूत। लियो तैसें राज्य हमसों अन्ध नृपके पूत ॥ धर्मसों कछु छन्न व्है तजि राज्य अर्थहि भूप। दुःखसों हो तपत क्यों बन बासकों लहिरूप ॥ सावधान न रहे तुम तो हरो तिन तव राज। जिष्णु रक्षित कोन हरिबो इन्द्रहूको काज। ऐश्वर्य्य हरणसो जियत हमरे भयो तो छत भूप।भए जातें सुहृद दुःखित शत्रुगण सुखरूप॥बन्द हम व्है गए आज्ञा पाय तो चितिपाल ॥नतरु हम धृतराष्ट्र सुतकों हनत तँह ततकाल। मृगवृत्ति लखि यह रावरी हम भूप सह परिवार। महा दुखसों भरे मनमे रहत तपत उदार ॥ धर्म्म धर्म्मसु रहत हो तुम कहत व्है कृश भूप ।निर्वेदतें जन लहत है जगमाह क्लीव स्वरूप ॥ ज्ञानवान समर्थ तुम हम सबनको बल देखि। क्षमावश न अनर्थ आगम परत तुम को लेखि॥ क्षमावान सु हमहि सबकों नृप सुयोधन तौन। अशक्त मानत दुःख यातें युद्ध मरण स जौंन।। निःकपट व्हैकै युद्धमे है मरण श्रेय महान। कीर्त्ति जगमें होति मिलत सुलोक अति

अ०५० शङ्का पात । सो जन तिर्य्यग योनिकों जात ॥ यथा बेदते सूद्र बिहीन । होत न तैंन सुलोका सीन ॥ पापी महा सूद्र सम तैंन । करत धर्मसे शङ्का जान ॥ मार्कण्डेय महातपधाम । धर्महितें चिरञ्जीवी आम ॥ व्यास बशिष्ठादिक मुनि जैंन । भए धर्मतैं चेतसभैंन ॥ शापानुग्रह करिबें शक्त । लखऊ द्रौपदी इनकों व्यक्त ॥ करत प्रसंशित ते सब धर्म । सुर सम धर्मधुरी ऋषि पर्म ॥ तोहि न योग कहिबो छबिअैंन । धाता धर्म हि निन्दित बैंन ॥ धर्म शक्ती और प्रमान । मानत मूढ न बश अज्ञान ॥ समुझि आपनो सांच बिचारि । सुमतिनको मत देत बिगारि ॥ इन्द्रिनके प्रियमे करि कोह । लहत धर्म पथ लखि अतिमोह ॥ प्रायश्चित्त शुद्ध नहि तैंन । करत धर्मम शङ्का जैंन ॥ तिनको नष्ट होत परलोक । करत जो शास्त्र धर्म पथ रोक ॥ काम लोभको लहि उतपात । ते नर मूढ नर्कमे जात ॥ शिष्ट जननतैं बिहित जो धर्म । तामे शङ्का होति न पर्म ॥ ऋषिए कहो जो धर्म उदार । सो स्वर्गिएकों नौ कर पार ॥ निःफल होय सुकृत जौं धर्म । बूड जगत पाय तम भर्म ॥ तैंन लहै सज्जन निर्बान । पशु सम जीवै बश अज्ञान ॥ बेदाध्ययन तपस्या दान । हौंहि बिफल जौं कर्म महान ॥ तौ मुनि कर हि न धर्माचार । बिफल होय जौं कृपा उदार ॥ फलद जानि श्रेयसकृत कर्म । बिश्व सनातन धारत धर्म ॥ कृष्णा आपनो जन्म बिचारि । लेऊ धर्मको फल निरधारि ॥ यह दृष्टान्त देखु छबिअैंन । बिना धर्म बरजन्म लह न ॥ तोक लाभतैं सुमति हि तोष । बऊ लहि मूर्खन पावत मोष ॥ जन्म नाश हैं बिरचित देव । याको कोऊ न जानत भेव ॥ मोह भरे जे प्रजा महान । जन्मत मरत रहित निर्बान ॥ करिए दान यज्ञ जे पर्म । देत कर्मफल सास्वत धर्म ॥ ब्रह्मै कहो सुतन्हके पास । यह जानो कश्यप मतिरास ॥ तातें तो संशय अतिमान । कृष्णा मिटो निहार समान ॥ सर्व सत्य करि मति व्यवसाय । नास्तिक बुद्धि सो देऊ नशाय ॥ ईश्वर सबको धारक तास । निन्दा करऊ न हे मतिरास ॥ जाको पाय प्रसाद ललाम । मानुष होत अमर अभिराम ॥ ****

॥*॥ द्रौपद्युवाच ॥*॥ दोहा ॥*॥

ईश्वर निन्दा करति नहि औ न करति अपमान । प्रजा रचत जो प्रजापति निन्दति ताहि सुजान ॥
आरत करति प्रलापकों मोहि बिचारऊ धीर । फिरि बिलाप चाहति कियो सुनिए तात गंभीर ॥
निश्चय कीजे कर्मको जीवन कर्म सुजन्य । बिना कर्मसों जियत हैं स्थावर जीव न अन्य ॥
बत्सा जन्मत हीं करत उठि कै गोस्तन पान । पूर्ब जन्म संस्कार बिनु ऐसो होत न ज्ञान ॥
जङ्गममांहि बिशेषतें मानुष होत सुचेत । कर्म बृत्तिकी प्राप्तिको करत दुऊँ दिशि हेत ॥
पूर्बजन्म संस्कारको फल भोगत सब कोय । प्रगट तौन कर्मज कहत सकल सयाने लोय ॥
बिना कर्म नहि जीवकों बृत्ति मिलति है भूप । कर्मज फल भोगत नियत सो न मिटत अनुरूप ॥
कर्म करऊ सानन्द ह्वै भूपति होऊ न म्लान । जानत करिबो कर्मको सो जन बिरल सुजान ॥
जानत रक्षण बृद्धि जो ताको बाढत कार्य्य । भक्षण कर न भरै सो छीण होत है आर्य्य ॥

दैवाश्रय करि रहत जो अरु जो हठ मत कूट । कर्म बुद्धि जो सो सरस हैं ए दोऊ मूढ ॥ व॰प॰
छोड़ि कर्म जे रहत हैं दैवाधीन अयान । काँचो घटगत सलिल ज्यों दुःखित होत निदान ॥
कर्म अशक्त हठ बुद्धि जो करत न कर्म समान । सो न जियत दुर्बल यथा बिना नाथ बलवान ॥
अकस्मात धन जगतमें लहत पुरुषहै जौन । हठबुद्धी सो यत्नकों व्यर्थ कहत है तौन ॥
दैवाधीन जो पुरुष धन पावतहै अभिराम । दैवदत्त सो जानिए निश्चय सुनऊँ ललाम ॥
जो करि अपने कर्मकों पावतहै धन भूप । पौरुष ताकों कहतहैं लखि प्रत्यक्ष अनुरूप ॥
पुरुष प्रवृत्त स्वभावतें बिनु कारण धन पाय । तौन पूर्व अनुग्रहतें कर्मनकी सुखदाय ॥
हठतें विधितें कर्मतें भावतें अरु सु जौन । फल पावतहैं पुरुष सो पूर्व कर्मभव तौन ॥
पुरुष शुभाशुभ जगतमें कर्म करतहै जौन । पूर्व कर्म फलको उदय भूप जानिए तौन ॥
संख्या करिवे शक्य नहि कर्म सुनऊँ कुरुवीर । नगर धामकी सिद्धिको कारण पुरुष गँभीर ॥
तिलतें तेल सुदारुतें पावक गोतें चीर । करि उपायकों बुद्धितें सुमनस लेत गँभीर ॥
ऐसें स्थिति कर सिद्धि सो होति लोककों वीर । कही सिद्धि गति कालकी यथा अवस्था धीर ॥
ब्राह्मण राखो पिता मम ऋतो महा मतिमान । कही नीति यह तातसों लीन्हें शास्त्र विधान ॥
नीति वृहस्पतिकी कही सकल कही तेहि जौन । हों बैठीही गोदमें सुनी नृपति सब तौन ॥
सो तुमसों वर्णन कियो कर्म प्रशंसित नीति । करिबो तुमकों योग्यहै सुनऊँ भूप करि प्रीति ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ द्रौपदीके बचन सुनि करि भीमसेन अमर्ष । श्वास लैके कहन लागे बचन यों दुर्धर्ष ॥ राज्य धर्म सु भई पथमें चलऊ सुनिए वीर । धर्मार्थ काम विहीन ह्वै वन बसें का रणधीर ॥ धर्मतें ऋजुतर्दतें नहि ओजतें ससमाज । द्यूत छलसों नृप सुयोधन हरो हमरो राज ॥ सिंहसों गोमायु आमिष लेइ छल करि धूत । लियो तैसें राज्य हमसों अन्ध नृपके पूत ॥ धर्मसों कछु छन्न ह्वै तजि राज्य अर्थहि भूप । दुःखसों हो तपत क्यों वन वासको लहिरूप ॥ सावधान न रहे तुम तो हरो तिन तब राज । जिष्णु रक्षित कोन हरिबो इन्द्रहूको काज । ऐश्वर्य्य हरणसो जियत हमरे भयो तो क्षत भूप । भए जातें सुहृद दुःखित शत्रुगण सुखरूप ॥ बन्द हम ह्वै गए आज्ञा पाय तो क्षितिपाल ॥ नतरु हम धृतराष्ट्र सुतकों हनत तँह ततकाल । मृगवृत्ति लखि यह रावरी हम भूप सह परिवार । महा दुखसों भरे मनमें रहत तपत उदार ॥ धर्म्म धर्म्मसु रहत हो तुम कहत ह्वै कृश भूप । निर्वेदतें जन लहत है जगमाह क्लीव स्वरूप ॥ ज्ञानवान समर्थ तुम हम सबनको बल देखि । क्षमावश न अनर्थ आगम परत तुम को लेखि ॥ क्षमावान सु हमहि सबकों नृप सुयोधन तौन । अशक्त मानत दुःख यातें युद्ध मरण न जौन ॥ निःकपट ह्वैके युद्धमें है मरण श्रेय महान । कीर्त्ति जगमें होति मिलत सुलोक अति

व०प० सुखदान ॥ हने जो रणमाह अरिकों युद्ध करिकै भूप । श्री सहित तौ लहँ सिगरी भूमि
परम अनूप ॥ सर्वथा यह कार्य करिबो योग्य हमकों आम । क्षात्रधर्म न दुःख सहिबो
महा कुत्सितकाम ॥ जो निरन्तर काम अर्थी धर्म्म अर्थ विहीन । नष्ट होत सुमित्र ताके अर्थ
धर्मै ।क्षीण ॥ बारि सूखें मीनको है यथा मरण प्रकाश । नहीं तातें धर्म्म अर्थहि तजत जे
मतिराश ॥ धर्म्मार्थ कारण कामके ज्यों अग्नि अरणी पर्म्म। धर्म्म मूलक अर्थहै त्यों अर्थ मूलक
धर्म्म ॥ धर्म्मार्थ कारण दुहूनके दोउ मेघ जलधि समान। काम अर्थी चहतहै नहि कामतें कछु
आन ॥ काम लोभाधीन देखत धर्म्म मूल न जौंन। वध्य सो सब जीवमें है नर्कपातो तौंन॥
अर्थ काम बिनाश पावत जरा मरणहि पाय । यह अनर्थ महीप हममें परत तौंन देखाय॥ पञ्च
इन्द्री हृदय मनकी बिषय बश जो प्रीति। कामसो फल कर्म्म उत्तमको सुनहु नृप नीति ॥ अर्थ
धर्म्म सुकाम इनकों भिन्न भिन्न सुजान। सदा सेवत यथा काल विचारिकै मतिमान॥ धर्म्म पहिले
अर्थकों फिरि कामकों अभिराम । दिवसमें निति करत सेवन शास्त्रबिधि मतिधाम॥ कामकों
फिरि अर्थकों फिरि धर्म्मकों मतिमान । त्रिधा करिकै बयसकों बुध भजत शास्त्रबिधान ॥ परम
श्रेय सु मोक्षमें मति कहहु यातें भूप। नतरु राज्यसु प्राप्तिमें मन दीजिए अनुरूप॥ आचरित
तुमतें धर्म्म सो है विदित हमकों सर्व। धर्म्मज्ञ संशित करतहैं जे सुहृद सुमति अखर्ब॥दान मख
सतपुरुष पूजन बेदधारण जौंन । यहि धर्म्ममें रत बसोहैं दुहूँलोकमें नृप तौंन॥ अर्थहीन न
शकहैं यहि धर्म्म सेवनमाह । और सब गुण आपुमें हैं सुनहु हे नरनाह ॥ धर्म्म मूलक जगत
अधिक न धर्म्मतें कछु और । बहुत धनसों होत साधन धर्म्मको नृपमौर ॥ होत भिक्षातें न
अर्थ न क्षीवतातें भूप।नहो तुमकों योग्य जांचना द्विजनको अनुरूप॥तेजतें करु अर्थ इच्छा यत
आपु समान। भुजाबलहै विदित क्षत्रिणको स्वधर्म्म महान॥ धर्म अपनो लेय हनिए शत्रुको समु
दाय। पार्थ हम सह तुम सुयोधनकों हनहु दुखदाय॥ धर्म अपनो जो सनातन तौन धरिए भूप
क्रूरकर्मा होत क्षत्री भयो तँह तो रूप॥ प्रजा पालन रूप फल सो भूपकों यशदान। है सनातन
बिहित बिधि यह क्षात्रधर्म महान ॥ भए स्वधरम हीन जगमें लहत जन परिहास। हृदय क्षत्री
सहज कीजै शिथिलताको नास॥बीर्य धरिकै धराको धुर करहु धारण धीर। शुद्ध धर्मात्मा धराको
करत भोग गँभीर ॥ बन्धु जेठे असुर हु जे धरे परम समृद्धि । जीति तिनकों कपटसों सब सुरन्ह
लीन्ही ऋद्धि॥तुमहु जीतहु कपट करि इमि वली शत्रुन्ह धीर।नहीं अर्जुन सो धनुर्द्धर भूत भावी
बीर॥ गदाधर यहि जगतमें नहि और मोहि समान। करहु बलतें युद्ध नृप बलवान सम नहि
आन॥ अर्थ देत सो प्रथम चाहत लियो बहुधन जौंन । बीज बोवत तोक पावत बहुत फलकों
तौन॥उदय होय न बीज तें हो बिपिन कीबो व्यर्थ। प्रथम उदय विचारिकै तँह दान कीजै अर्थ॥
बहुमित्र जौन अमित्र ताके मित्रमें करि भेद । मित्रबिनु करि ताहि कीजै स्ववश भूप अखेद॥

बटुरिकैं बक्ष अबल मारै शत्रुकों बलवान। काढिकै मधुहारको ज्यो लेत मधुकर प्रान॥ सूर्य्य व०प०
पालत हरतहै ज्यो जीव जगके सर्व। होऊ भूपति भानुसे तुम हरण भरण अखर्व॥ नही त्यो लोक
पावत तैान तपतें घोर। लेत रणमे जीतिकै कै मरणतें बरबीर॥ करत जो कछु पाप राजा पाय
भूमि अखर्व। दान दै करि यज्ञ अनु सो तैान मेटत सर्व॥ जानपद अरु पैारजन हैं बाल
बूढे जैान। विप्रबर तुमकों प्रसंशित करत भूपति तैान॥ बेद जैसें शूद्रके मुख चैारमे ज्यौ
साँच। राज्य तैसें है सुयोधनमाँह भाषत पांच॥ यह अवस्था पाय हमसब लहो अैसो
रूप। तो उपद्रवसों भए हम नष्ट सिगरे भूप॥ चढऊ रथपर सज्य व्है लै विप्र आशिष
पर्म। बेगि हास्तिन नगरकों अब चलऊ भूपति धर्म॥ अस्त्रविद भट सहित भ्रातन्ह
धनुर्द्धर बलवान। आसीविषोपम महाबल सह मरुत ज्यों मघवान॥ सबल तें अरि मरदि
मारऊ युद्धमे अनु रूप। राज्य अपनो लीजिए धृतराष्ट्र सुत सो भूप॥ सहै कों गाण्डीव मुक्त सु शि
लीमुख बरबीर। बेग मेरी गदाको सहि सकै को रणधीर॥ कैकेय सृञ्जय बासुदेव समेत हम रण
मांह। लहहि क्यों नहि राज्य अपनो सुनऊ हे नरनाह॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यहि
भाँतिके सुनि भीमके बर बचन भूपति धर्म। कहन लागे धैर्य्य लीन्हे बैन जैसे पर्म॥ धृतराष्ट्र सुतको
राज्य लीबे हेत खेलो द्यूत। कितवमे प्रति होत भो तहँ तात सैाबल धूत॥ भयो तँह जो द्यूत
सो है बिदित तुमकों सर्व। शकुनि फेंके अक्ष देखे भरे कपट अखर्व॥ भए हम न निवृत्त तेहा
धीर धरिकै बीर। क्रोध हनत कु पुरुषके लहि समय धैर्य्य हि धीर॥ होत पैारुष सत्वसों नहि
आतमाको रोध। होनहारी होति जैसी होत तैसो बोध॥ दियो दुख धृतराष्ट्रके सुत हमै यों
अतिमान। दास कीन्हें हमै कीन्हों द्रौपदी तँह चान॥ तुम धनञ्जय सकल जानत भयो जो
तँह धन्य। सभामे सतनरनके ढिग सहित धर्म निबन्ध॥ राज्य हेत न जात हमसों तजो तैान
गँभीर। भलो मरण सु धर्म तजि नहि भूमि मागत बीर॥ होय उद्दित द्यूतमे तुम गदा मागो
धाय। तब न कीन्हों क्षत्य जो व्है जिष्णु कारित सय॥ समै पहिलें रहो करिबें कहत हो अब
जैान। कहत फिरि फिरि मोहि क्यों अब काल बीतो तैान॥ करत दुःखित बऊत हमकों यथा
बिषरस पान। देखि कृष्णा दुःख तबहों क्षमा तुम न समान॥ सो न लङ्घन शक्य पन कुरुमध्य
कीन्हों जैान। सुखोदयको काल देखऊ भीम नियमित तान॥ सत्य मेरी जो प्रतिज्ञा सुनऊ सो
कुरुबीर। राज्य धन नहि सत्य की है कलातुल्य गँभीर॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ सर्व हारी
कालकी कीन्हीं प्रतिज्ञा भूप। काल बन्धन मर्त्य व्हैकै देखि काल स्वरूप॥ अमित होय सु आयु
जानै कै सु आयु प्रमान। होय तीनो कालको कै जाहि ज्ञान सुजान॥ सो प्रतिज्ञा कालवारी
करै श्री महिपाल। कहैं का हम अैार तुमसों आपु विज्ञ विशाल॥ काल तेरहवर्ष हमकों

५० दखिबे मतिमान। आयुको करि नाश आवत मरण जास न ज्ञान॥ मरण देही को रहत है देहमें नित्ति साथ। करऊ तातें राज्य मिलबेकी सु घटना नाथ॥ बैर लेय न शत्रुसों सो अबल अधम पुमान। अफल ताको जन्म व्यर्थहि जियत सो अज्ञान॥ हिरण्य दायक पाणि तो पृथु की सि कीर्ति सुजान। मारि अरिसों युद्धमें भू भोगिए अति मान॥ अमर्ष जात कृतासमों अति चण्ड हैं नरनाह। तब तासों लेत निद्रा नहीं निशि दिन माह॥ महा फाल्गुण तप है अति जो धनुर्द्धर बीर। सिंह जैसे गुहा पैठो भरो क्रोध गँभीर॥ सहित मातुल नकुल अरु सहदेव बर बलवान। रहत ईच्छत रावरो प्रिय परम जो सुखदान॥ पाप पूरित बिपति ऐसी भई हमकों भूप। नीच दुर्बल राज्य हमरो करत भोग अनूप॥ घृणा च्युता शील जन्यज दोषतें अति मान। सहत ह बनबासकों यह घोर दुःख महान॥ क्षमाको धृतराष्ट्रसुतपर करत हो का भूप। करतव्यमे आलस्य करि जन होत कुष्ठुभ रूप॥ बर्ष बारह बिपिनिमें हम रहेंगे सुखबास। तेरहें केहि भाति रहि ह गुप्त व्है मतिरास॥ मूठि भरि तृण डारि मूंदो जात नहि हिमवान। को न जानत आपुकों किमि करऊ गे अपिधान॥ ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

छपत न सूर गगण मह भूप। तथा जगत जाहिर तो रूप॥ शाल वृक्ष सम्पन्न समान। छपि है क्यों पारथ बलवान॥ माद्रीसुत सम सिंह अनूप। कैसे ए छपिहैं कुरुभूप॥ राजसुता कृष्णा अभिराम। गुप्त होयगी क्यों मतिधाम॥ अति उन्नत यह मेरो रूप। कौन भाँति छपिहै कुरू भूप॥ किमि बनि है रहिबो अज्ञात। और सुनऊ भूपति उतपात॥ जिन्है राज्यतें दए निकारि। ते सब भूप क्रोधकों धारि॥ पाय सुयोधनसों सनमान। सेवत ताहि जानि सुखदान॥ ते सब सेध हमारो पाय। ताकों देहैं तुरित बताय॥ तेरहमास कियो बनबास। हम सब सुनऊ भूप मतिरास॥ देखऊ तौंन सहित परमान। वर्षत्रयोदश आधि समान॥ मास वर्षके प्रति निधि सर्व। कह बेदबिद सुमति अखर्ब॥ एक बृषभकों बदर प्रमान। देइ भक्ष तृण सह पयपान॥ सत्य त्यागको प्राश्चित जौन। कुरु नृप कहत धर्मबिद जौन॥ करऊ शत्रु बध निश्चय भूप। चात्र धर्म नहि और अनूप॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भीम बचन सुनिकै नृपधर्म। रहे बिचारि श्वास ले पर्म॥ राजनीति हम सुनी अनेक। वर्णाश्रमको धर्म बिबेक॥ हम जानत सब बिधि निर धारि। घरी द्वैक इमि रहे बिचारि॥ भीमसेनसों आतुर बैन। बोले धर्मनृपति मतिऐन॥ युधिष्ठिरउवाच॥ नीके कहत बचन तुम भीम। हों अब कहत सो सुनु बलसीम॥ साहस करि जो करिए कर्म। ताहि जानिए भरो अधर्म॥ सुकृत सुसंचित कर्म जे बीर। सिद्धि करत सो शीघ्र गँभीर॥ बाल्य चपलतातें करि कर्म। चहत सिद्धि सो सुनु तजि भर्म॥ भूरिश्रवा भीषम कृप द्रोण। सतपुत्र सम धनुधर कोन॥ अश्वत्थाम शल्य जलसन्ध। महा धनुर्द्धर बीर मदन्ध॥ दुर्योधन सह भ्रातन्ह सब। अस्त्रशस्त्रबिद बीर अखर्ब॥ हम तें दुःखित भूपति जौन। ताके साथ सुनत सब तौन॥

खुल काम बल लहि सनमान। धरैं युद्ध जय यत्न महान ॥दीवैं चहत प्राण करि युद्ध। मो मतिसे यह निश्चय उद्ध ॥ भीष्म द्रोण कृप बीर सुजान। जानत हमकों तिन्हैं समान ॥लहि धन तासों सह सनमान। दियो युद्धमे चाहत प्रान॥ दिव्य अस्त्रके वेत्ता सर्व । हैं अजेय रणमाह अखर्व ॥ युद्धामर्षी कर्ण सुबीर। धरैं अभेद्य कवच रणधीर ॥ ए अजेय वर पुरुष महान। जाके सङ्ग महा बलवान ॥ बिना सहाय सुयोधन नास। है अशक्य यह तजऊ प्रयास॥लहत न निद्रा चिन्ता लीन। जानि सूतसुत युद्ध प्रवीन ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भीमसेन यह बचन बिचारि। चुप व्है रहे शङ्कि निरधारि ॥ तिनसों होत सु यों सम्वाद। व्यास गए तँह तप मर्याद ॥ पूजित होय महा मतिऐन। कहे धर्मनृपसों इमि बैन ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ पाण्डव तो चित बृत्ति बिचारि। हम आए यह मति निरधारि ॥ * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * *

भीष्म द्रोण कृप कर्ण तें द्रोण तनय तें बीर। शङ्का जो तुमकों भई जानि सो लई गँभीर॥
ताकों हों नाशो चहत शास्त्रहि लखि करि धर्म। तैंान करऊ धरि धैर्यकों होऊ बिगत भयभर्म॥
तब लै गए एकान्तमे धर्मनृपतिकों व्यास। सार्थ बचन लागे कहन करिकै कृपा प्रकास ॥
श्रेय काल तुमकों भयो प्राप्त युधिष्ठिर धीर। दैहै अर्जुन अरिनकों जातें अबिभव बीर॥
इम तें उक्त सुसिद्धिकी मूर्ति सदृश अभिराम। बिद्या तुमकों देत सो जास प्रति स्मृति नाम॥
अर्जुन साधन करैगो महाबाऊ जेहि पाय। लैहै अस्त्र अनेक विधि इन्द्र रुद्र पहँ जाय॥
बरुण धनद यमराजकों लखि शकिहै सो बीर। महा पराक्रम तें भरो तपतें परम गँभीर॥
ऋषि पुराण अति तेजमय अच्युत जिष्णु अजेय। नारायण आकों रहत सदां सहाय अमेय॥
लोकपतिनसों अस्त्र लहि महा दिव्य बर बीर। महत कर्मकों करैगो युद्ध जुरें रणधीर॥
एहि बनकों तजि और बन बसऊ जाय नृपधर्म। एकठौर चिरकालको बसिबो होत न पर्म॥
होत हेतु उद्वेगको तपस्वीनकों भूप। होत जानि क्षय मृगजको दन्द मूलको रूप॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

ऐसें कहि नृपधर्मसों व्यास महामुनि बैन। अन्तरध्यान भए चलत बिदा होय तपऐन॥
नृपति युधिष्ठिर मंत्र सो धरि मनमे अभिराम। काल कालमे जप करण लगे तास मतिधाम॥
व्यास बचनतें छोडि कै द्वैतविपिनि सुखदान। गए सरस्वति निकट जहँ काम्यक गहन महान॥
द्विजन सङ्ग तँह जायकै धर्मनृपति मतिरास। भ्रातन्ह सहित अमात्य तहँ कियो बिपिनिमें बास॥
बेदाध्ययन सुनत करत मृगया नित्य महान। पितृ दैव अरु द्विजनकों करत तृप्त बलवान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासिरघुनाथकविश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे श्रीयुधिष्ठिर प्रति द्रौपदीभीमसंबादेव्यासागमनमंत्रदानपार्थस्यतपाभिगमनवर्णनेंपञ्चमोऽध्यायः॥ * *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

कछुदिन बीते धर्मनृप समुझि व्यासके बैंन । अर्जुन सों लागे कहन रहस महाँमतिअन ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

भीष्म द्रोण कृप कर्ण अरु द्रोणपुत्र वरबीर । चतुष्चरण इनमे बसत धनुर्वेद गम्भीर ॥
दैव ब्राह्म मानुष सकल जानत अस्त्र विधान । देत तिन्हैं धृतराष्ट्रसुत भोजन करि सनमान ॥
शक्ति देखायो चहत ते ताहि पाय रणकाल । करत सुयोधन भूमिको सागरान्त प्रतिपाल ॥
हमकों तुम प्रिय प्राण सम है तुमपै सब भार । कृत्य काल अब प्राप्त है आगें बीर उदार ॥
द्वैपायन हमकों दियो मंत्र महारणधीर । जातें कारय जगतमे होत प्रकाश गँभीर ॥
तीन मंत्रसो युक्त व्है स्रवण राखि मन बीर । पावऊ देवप्रसादकों यथाकाल रणधीर ॥
होऊ उग्रतप युक्त तुम धरें शस्त्र विख्यात । मार्ग न काह्रसों कहो उत्तर दिशिको जात ॥
वृत्रासुरसों भीत व्है सुरन्ह अस्त्र समुदाय । दिए इन्द्रकों आपने सुनऊ धनञ्जय जाय ॥
ते सब अस्त्र एकत्र हैं इन्द्र पास अतिमान । जाऊ तहां ते देहिगे अस्त्र सकल मघवान ॥
तपब्रत धरि लै मंत्र अब जाऊ देवपति पास । यह कहि दीन्हो धर्मनृप मंत्र सो तेजस रास ॥
दीक्षित धारें नियम ब्रत निश्चल उग्र गँभीर । बिदा कियो तब धर्मनृप अर्जुनकों बरवीर ॥
आज्ञा लहि नृपधर्मकी लखिवेकों सुरराज । धरे तूण गाण्डीव धनु वर्म सु शस्त्र समाज॥
दान देइकै द्विजनकों सुनि स्वस्तयन महान । धनुष धरें बनकों चले अर्जुन हर अरिप्रान॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

चलत देखि अर्जुन अभिराम । बोली कृष्णा बचन ललाम ॥ आशिर्बाद अनेक अनूप । दए प्रीति भरिकै अनुरूप ॥ सुनि कृष्णाके बहुविधि बैंन । आशीर्वाद नीतिक अैंन ॥ करो प्रदक्षिण भ्रातन्ह साथ । धौम्य महामुनिकों कुरुनाथ ॥ चले धनुषधारें कुरुबीर । गए क्षोडि पथ जीव अधीर ॥ ऐंद्रयोगते युक्त महान । जात वीर पथमे बलवान ॥ तपसिनतें सेवित हिमवान । पर्वत कों पहुचो बलवान ॥ योगयुक्त मनगति धरि धीर । नाघि चलो हिमगिरिकों बीर ॥ गयो गन्धमादनके पास । निशि दिनि चलो न धरो प्रयास ॥ इन्द्रकील गिरि नीरे जाय । ठाढो भयो बीर सुखदाय ॥ दिव्य गिरा सुनिकै तहँ बीर । चहुदिशि लगो विलोकन धीर ॥ वृक्षतरे बैंठो तपधाम । देखो भरो तेजसों माम ॥ सो बोलो अर्जुनसों बैंन । धनुधर हो तुम कौंन अचैंन ॥ सर्व शस्त्रकों धारें बीर । क्षात्रधर्मकों धरे गभीर ॥ इहां शस्त्रको कारज कान । यह है शान्त ऋषिणको भौंन॥ धनुष कार्य्य नहि इहा न युद्ध । फेंकि देऊ यह धनुष बिरुद्ध ॥ प्राप्त परमगतिकों तुम तौंन । ओज तेजते सोति न जौंन ॥ हँसत हँसत इमि बोलो बैंन । ब्राह्मण तौंन महा तपअैंन॥ चलो नमिति ते फाल्गु वीर । लखि प्रसन्न सो भयो गँभीर ॥ व्है प्रसन्न अर्जुनके पास। कहे बचन इमि आनदरास॥

बर मांगऊ हम इन्द्र सुजान। होय जौन तुमकों सुखदान ॥ शक्र बचन मुनि कै मतिचैन। बोले अर्जुन साञ्जलि बैन॥ शक्र हमारो यह मनकाम। अस्त्र सकल तुमसों अभिराम ॥ हम चाहत सो देऊ सिखाय। यह बर देऊ परम सुखदाय॥ बोले इन्द्र कृपाकेभान। इहाँ अस्त्रको कारज कौन॥ आंगऊ लोक भोग सुख आप्त। भए परमगतिकों तुम प्राप्त ॥ यह सुनि इंद्र बचन कुरुबीर। कहन लगे अति धारे धीर ॥ हम चाहत अमरत्व न तात। कामलोभतें सुनिए ख्यात ॥ भ्रातन्ह छाडि बिपिनिके मांह। हम आए तुम पै सुरनांह ॥ लीन्हे बिना बैर अरिपास। लोकनऊमे कीर्ति न तास ॥ तैसे सुनि पाण्डवके बैन। बोले शक्र कृपाके ऐन ॥ जब देखऊगे तुम भूतेश। शूलपाणि त्र्यम्बक सु महेश॥ तब हम देहैं तुमकों तौन। अस्त्र समूह पास मो जान॥ चल देव दर्शनको बीर। कीजै इच्छा धारि कै धीर॥ दर्शन लहिहौ हो तुम सिद्ध। तब लहिहौ सब अस्त्र समृद्ध॥ फाल्गुणसों इमि कहि सुखदान। भए इन्द्र तब अन्तरध्यान॥ रहे जिष्णु तहां धरि धीर। करण तपस्या लगे गँभीर॥ *॥ जनमेजयउवाच ॥*॥ भगवन् पार्थ कथा अभिराम। सुनो चहत सह बिस्तर साम ॥ जैसैं लहे अस्त्र बर बीर। ज्यों बनमे गे। एक गँभीर ॥ कैसैं हरकों किये प्रसन्न। सो सब कहऊ बिस्तरापन्न॥ अत्यद्भुत हरसो संग्राम। सुनो करो पार्थ बल धाम॥ सो सब कहऊ सबिस्तर छिप्र। तुम त्रिकालदर्शी हो बिप्र॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कहि हु हम सह बिस्तर तौन। महाराज पूछत तुम जौन॥ कुरुपतिकी आज्ञा लहि भूप। गए बिपिनिकों पार्थ अनूप॥ दर्शन चाहि शक्रको बीर। धरें शस्त्र सब धनुष गँभीर॥ कार्य्य सिद्धिकों हिए बिचारि। दिशा उदीचीकों निरधारि॥ गिरि हिमवान शिखर पर जाय। करण लगे तप अति मनलाय॥ नाना तरु फल पुष्पित सर्ब। बऊ मृग कूजत बिहँग अखर्ब॥ चारण सिद्ध जहां तप पीन। अन्य मनुज दर्शनसों हीन॥ गयो तौनबनमहँ जब बीर। गगण दुन्दुभी बजी गँभीर॥ नाना दुर्ग गिरि बिपिनि बिहाय। हिम गिरि परशे हो कुरुराय॥ तहां लखत तरु बिपिनि बिचित्र। सरित बिहँग नादित सुपबित्र॥ *॥ रोलाछन्द ॥*

बिपिनिमे तेहि रमत अर्जुन उग्र तप धरि धीर। दर्भ आसन अजिन पठको पीन कीन्हे चीर॥ पक्क पत्र जो गिरत छितिपर करत भोजन तौन। तीसरे दिन मास ऐसे एक गो करि गौन॥ दिवस छटएँ मास दुसरे पत्र भोजन कर्त। अगा पुनो मास तिसरे तथा भोजन धर्त॥ मास चौथें करण लागे वायुपान अहार। ऊर्द्ध बाऊ सुनिरा लम्ब अंगुष्टके आधार॥ रहे ठाढे जटा धारे तडित पुञ्ज समान। तब महर्षिन्ह देखि ताको उग्रतप अतिमान॥ जाय कै हरपास लागे कहन ऋषि बर सर्ब। पार्थ जो हिमवान पै तप करत उग्र अखर्ब॥ देव पारथ करत हु तप महा उग्र अमान। तास तपके तेजसों भो धूममय हिमवान॥ कहा करिबें चहत है

प० हम सही आवत देश । तब ताके तेजसों हम भए हैं जगदीश ॥ निहत्त ताकों करहु करि के कृपा करुणाधाम । सुनत तिनके बचन बोले उमापति अभिराम ॥ महादेव उवाच ॥ * ॥ करहु तुम न बिषाद फाल्गुन हेतु धारहु धीर । खुसी ह्वै के बेगि जै है यथा आयो बीर ॥ तास हों संकल्प जानत धरैं मनमे जौन । नही सो ऐश्वर्य चाहत स्वर्ग सुखको भौन ॥ जौन कांछित ताहि सो हम करत अय सुजान । देवके सुनि बचन हर्षित कियो ऋषिगण पयान ॥ किरातको धरि बेश शङ्कर कनक बिटप समान । धनुष ले श्रीमान आए बिष सदृश बर बान ॥ बेगसों तहँ चले मानो देह धरि ऋतुराह । सती देवी सङ्ग त्यों धरि रूप भरि उतसाह ॥ चलु नाना बेश धारैं भूतगण घन सङ्ग । बाम सहसन साथमे बहु रूपकी बहु रङ्ग ॥ भयो बन निःशब्द सो तब पाय के कछु त्रास । मूक नामक दनुज तेहि क्षण गयो फाल्गुन पास ॥ मारिबेकों जिष्णुकों बाराहको धरि रूप । देखि अर्जुन सज्ज करि धनु कहो ऐसें भूप ॥ हनन आयो मोहि बिनु अपराध अधम अकास । पठै यातें देत तोकों अरे अन्तकधाम ॥ देखि ताको हनत अर्जुन महाधनुधर बीर । शम्भु रूप किरात बारण कियो बोलि गँभीर ॥ प्रथम है यह लक्ष्य मेरो हनो याहि न जानि । ताहि मारो बाण अर्जुन बचन तासु न मानि ॥ शम्भु रूप किरात ताकों हनो साथ हि बान । दुहुनके शर सङ्ग लागे बज्रपात समान ॥ मरो सो बहुबाण बेधित धारि राक्षस रूप । फेरि जिष्णु किरात देखो कनक बनक अनूप ॥ सहस्र स्त्रीय सहाय बनिता धरैं धनुष महान ॥ प्रसन्न ह्वै के लगे बूझन बोलि बचन प्रमान । कौन हो यहि शून्य बनमे फिरत बनितन सङ्ग । डरत हो नहि कहो तन तो लसत सुबरन रङ्ग ॥ कोलरूपी दनुज मेरो प्रथम लक्ष्य किरात । निदरि मोकों सुनहु तामे कियो क्यों शरपात ॥ नही मृगया धर्म यह जो कियो तुम सो पास । नही यातें बचत जीवत करत हों तो नाश ॥ किरात सुनि कै पार्थके इमि बचन बोलो बैन । देखि हमकों शून्य बनमे डरहु मति मतिऐन ॥ सदा यहिबन भूमिमे है बास मेरो बीर । बसे तुम किमि आइके यह बिपिनिमांह गँभीर ॥ शून्यबनमे तुम एकाकी बसत क्यों सुकुमार । सदां सुखकों उचित हो तुम अग्निवर्ण उदार ॥ * ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥ गाण्डीव आयुध परम हमकों अग्निसे बरबान । बसत बनमे जानि आपुहि सुनु कुमार समान ॥ हन समान बिचारि याकों हनो दानव जौन । हमै मारणकों सो आयो पापको अति भौन ॥ * ॥ किरातउवाच ॥ * ॥ प्रथम मेरे बाणसों यह हनो गो बलवान । गयो यमके सदन याको छोडि कै तन प्रान ॥ लक्ष्य मेरो प्रथम हो यह सुनहु यातें बीर । प्रथम मारि पछारि दीन्हो भूमिमे हम धीर ॥ * ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥ दोष अपनो गनत नहि कार और पैं आरोप । मन्द दर्पित करत हो मै आजु तेरो लोप ॥ खरो रहि अब बज्रसे शर करत तोपैं पात । करो चेष्टा बांचिबेकी तजहु बाण किरात ॥ बाणकी करि दृष्टि अर्जुन लियो ताकों हाथ ।

भए तीन किरातकी सब देहमाह समाय॥ कहे फिरि फिरि मन्द मन्द किरात ऐसे बैंन। मर्म भेदी बाण करज्ञ प्रहार हे बलऐंन॥ बैन सुनि यह निसित लागे जिष्णु बर्षण बान। भए शोभित बीर दोऊ करत युद्ध महान॥ बाणवर्षण लगे दोऊ दोऊ पर बलधाम। कियो जिष्णु किरातपर तब बाण झरि अतिमाम॥ तुष्ट मन करि लिए शङ्कर लीन करि ते बान। फेरि अक्षत शरीरसों लखि परे आचल समान॥ देखि अर्जुन भए विस्मित बाण व्यर्थ बिचारि। लगे कहन किरातसों तब साधु साधु पुकारि॥ आश्चर्य यह सुकुमार गिरि हिमवानको सुकिरात। गाण्डीव मुक्त नाराचसों क्षत होय अविकल गात॥ रुद्र कै यह यक्ष सुरपति परत जानि प्रकाश। दिव्य गिरि हिमवानमें है देवतनको बास॥ नही मेरो बाण जाल समान पावक भौंन। बिना शङ्कर जगतमें सहि सकै नरवर कौंन॥ देवता कै यक्ष कोउ रुद्र बिनु रणकाम। लरै मोसों देउँ ताको पठै हों यमधाम॥ होय हर्षित जिष्णु शतधा लगे छोडन बाँन। शूलपाणि प्रसन्न व्है सो करण लागे पान॥ भए ते तूनीर खाली क्षणकमें सुनि भूप। देखि कै सो भए अर्जुन सभय विस्मित रूप॥ लगे चिन्तन करण अर्जुन अग्निकों तब तौंन। दियो खाण्डवदाहमें धनु तून अक्षय जौंन॥ कहा जोरै धनुषमें नहि रहे एकौ बांन। सहत है यह पुरुष कोऊ करत जो शरपान॥ कोटिसों अब धनुषकी अह मारि कै बलधाम। पठै कै यमसदन पाऔं युद्ध जय अभिराम॥ धनुष गलमें डारि लीन्हो खैंचि अपने पास। हनन लागे मुष्टिसों करि जिष्णु कोप प्रकाश॥ धनुष तैंान किरात लीन्हों लीन करि बलवान। भए ठाढे जिष्णु लै तब खड्ग निशित महान॥ अन्त करिवे युद्धको धरि वेग आए चंड। हनो शीश किरातके असि भई सो द्वै खंड॥ शिलासों अरु तरूणसों तब करण लागे युद्ध। ग्रहण तैंान किरात कीन्हों शिला तरु बर उद्ध। फेरि लागे जिष्णु मारण मुष्टि वज्र समान। मुष्टिघात किरात रूपी कियो श्रीभगवान॥ भयो तब चट चटा शब्द सु मुष्टिघातज उद्ध। जिष्णु और किरात दोऊ करत अति बल युद्ध॥ लोम हर्षन युद्ध कीन्हों भुजनसों बर बीर। द्वैघरीलों वृत्र वासव यथा अति रणधीर॥ फेरि जिष्णु किरातकों तब कियो उरसों घात। मरदि उरसों कियो मूर्छित जिष्णुकों सु किरात॥ भुज उर सङ्घर्षन सों सु पावक भयो प्रगटित भूप। शम्भु कीन्हों गात्रसों अति मर्दि पीडित रूप॥ जिष्णु हरके तेजसों तब लहो मोह महान। भए फाल्गुन गात्र पीडित सिकुरि पिण्ड समान॥ निश्वाश व्हैकै गिरे क्षितिपर जिष्णु सबसल बीर। घरीद्वैमहँ पाय संज्ञा उठो फिरि रणधीर॥ शरण्य जानि महेशकों तब लियो शरण अनूप। लिङ्ग पार्थिव बिरचि अरच्यो सुमन माला भूप॥ सुमन माल किरातके सो शीश पर अभिराम। देखि हर्षित भए अर्जुन पाय बोध ललाम॥ परे हरके पाय पैं तब जाय कै मति मान। कृपा करि कै ईश घन गंभीर बोले बैंन॥ *॥ महादेवउवाच ॥*॥ तुष्ट तुम पैं भए हम लखि तो अमानुष कर्म। शौर्य्य धीरज तैं न चनी और तो सम पर्म॥ तेज बल सम है हमारो अव

१०४० तुम्हारो बीर । जिष्णु जानऊ हमै आपु न प प्रसन्न गँभीर ॥ देत हैं हम दिव्य अर्जुन परम तुमकों ज्ञांन । जीति हो रणमाह अरिगण सुरासुर बलवान ॥ अस्त्र अनवारित जो तुमकों देत हैं हम बीर । धरापर सो बिना तुम नहि और धारक धीर ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ शूलपाणि पिनाकधरको सहित देवी रूप । तहाँ देखत भए अर्जुन कृपा पाय अनूप ॥ जानु शीश लगाय छितिसों कियो दण्ड प्रणाम । तुष्ट हरकों कियो अर्जुन भक्तिसों अभिराम ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥ नीलकण्ठ पिनाकधर हर शम्भु भव भूतेश । लोककार कार्य्य तं यत् मय लोकेश ॥ देव देव गिरीश त्र्यम्बक शंभु गिरिजानाथ । नीलकण्ठ कपालधर कलकलाधर सुत माथ ॥ दक्षयज्ञ विनाशकारण रुद्र सुरहर सर्व । पार्वतीपति कमललोचन कृपासिन्धु अखर्व ॥ कृपा चाहत रावरी अब कृपा कीजै ईश । क्षमा कुरु अपराध मेरो क्षमामय जगदीश ॥ इहां आयो परम दर्शन रावरो निरधारि ॥ महागिरि हिमवान पर तो प्रीति नित्य बिचारि ॥ नहीं मोकों होय मै अपराध कीन्हो जौंन । अज्ञानवश यह दोष मेरो क्षमा कीजै तौंन ॥ किया वश अज्ञान आ हम रावरेसों युद्ध । शरण मोहि बिचारि कीजै क्षमा करुणा उद्ध ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ कहो हँसि कै शंभु ऐसैं पार्थसों अभिराम । बाऊ गहि कै लाय उरसों महा करुणा धाम ॥ महादेवउवाच ॥ रहे नारायण सहित तुम पूर्व तन नररूप । बद्रिकाश्रममे कियो तप वष अमित अनूप ॥ तुम्हैमे अरु विष्णु मे है तेज पुञ्ज महान । तेजतैं तुम विष्णु दोऊ धरत जगत महान ॥ शक्रके अभिषेकमे तुम धनुष धरि घननाद । सङ्ग हरिके किये दनुजन्ह मारि कै निर्बाद ॥ सो करोचित धनुष हो गाण्डीव जो बलधाम । करि सुमाया कियो सो हम ग्रस्त अति अभिराम ॥ तूण अक्षय रहे दोऊ योग्य तुम कौं जौंन । देत हैं हम लेऊ फाल्गुन तूण धनुबर तौंन ॥ अरुज तो तनु होय गो मम प्रीतित बलवान । लेऊ हमसों मागि बर तुम चहो जौंन सुजान ॥ अर्जुनउवाच देत हौ प्रभु हमै बर तौ देऊ मागत जौंन । दिव्य अस्त्र जो पाशुपत है घोर दीजै तौंन ॥ ब्रम्ह शिर है नाम जाको भरो तेज अखर्व । करत पाय युगान्तकों जो प्रलय यह जग सर्व ॥ कर्ण भीषम द्रोणसों भवितव्य है प्रभु युद्ध । महादेव प्रसादतैं तब तिन्हैं जीतौं उद्ध ॥ दनुज राक्षस यक्ष पन्नग भूत गण गन्धर्व ॥ संग्राममे हो करौं जातें भस्म तिनकों सर्व ॥ कढैं जातें शस्त्र नाना भांतिके बर बान । करें मंचित धनुषतें पर गहन दहन समान ॥ द्रोण भीषम कर्ण कृपको लेउँ रणमे जीति । काम हमको प्रथम यह सो देऊ प्रभु करि प्रीति ॥ * ॥ भवउवाच ॥ * ॥ देत तुमको पाशुपत यह अस्त्र मो प्रिय बीर । समर्थ धारण मोक्ष अरु संहारमे तुम धीर ॥ बरुण इन्द्र कुबेर यम नहि बायु जानत जौंन । पाशुपत यह अस्त्र जानै जिष्णु मानुष कौन ॥ नहो काहू मनुज पै यह वेगि तजियो बीर । जगतको सबनाश करि है पाय अल्प शरीर ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तुरित सुनि सो पार्थ शुचि ह्वै शम्भुके ढिग आय । कहुअ

लागे जोरिकै कर देऊ माथ पठाय ॥ दियो तौन पठाय शङ्कर मात्र सह संहार । मूर्तिमान व०प० समान अन्तक अस्त्र तौन उदार ॥ पार्थपँह सो गयो जैसें उमापतिके पास। मोद धरि करि प्रीति अर्जुन ग्रहण कीन्हो तास ॥ हलन लागी भूमि तब गिरि सहित कानन सर्व। भई भेरी शङ्खकी धुनि गगणमाह अखर्व ॥ जाज्वल्यमान सु घोर अस्त्र सो मूर्तिमान विशेखि । देव दानव भए विस्मित जिष्णुके ढिग देखि ॥ स्पर्श हरको पाय फाल्गुण लहे परम प्रकाश । जौन किल्विष रहो किञ्चित् भयो ताको नाश ॥ फेरि शङ्कर कृपाकरिकै धनुष दीन्हो तौन । गाण्डीव नामक दनुज नाशन प्रथम लीन्हों जौन ॥ छोडि हिमगिरि परम शङ्कर उमासह अभिराम । गए नभकौं लखत अर्जुन रहे आनदधाम ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ देखि हरकौं जात नभकों भानु ग्रस्त समान। पाय विस्मय रहे ठाढे जिष्णु तँह बलवान ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ * * भयो कृतारथ जगमे धन्य । मो समान को नरवर अन्य ॥ शङ्कर मोहि पाणिसौं पर्श । कियो कृपा करिकै दै दर्श ॥ परमात्मासें लहि रण साम । जीतें जानें अरिगण ग्राम ॥ ऐसे चिन्तित पारथ पास । आए तहा वरुण छविरास ॥ मणि वैदूर्य्य सदृश आभास। सकल दिशन कहँ करत प्रकाश ॥ जादन दीनन नाग महान । लए सङ्गमे मूरतिमान ॥ कनक वनक तन चढे विमान। आए तहँ धनपाल महान ॥ सहित यक्ष लहि दुतिवर जास । सकल दिशन्ह मह भरो प्रकाश ॥ पार्थ पास आए यमराज । लए सङ्ग सब पितृ समाज ॥ प्रलय चण्ड करवे अतिचण्ड । चढे विमान लए कर दण्ड ॥ ऐरावतपर चढे सुरेश । अर्जुन ढिग आए तेहि देश ॥ सुरन सङ्ग धारे शित छत्र । मनु हिमगिरिपर शशि स नक्षत्र ॥ दक्षिणदिशि ठाढे यमराज। भरे प्रीतिसों सहित समाज ॥ धर्मराज तब वचन गँभीर । अर्जु सों बोले हसि धीर ॥ लखऊ जिष्णु करि दृष्टि विशाल। हम सह सब आए दिक्पाल ॥ दिव्य दृष्टि तुमकों हम देत । तुम मम दर्शन योग्य सनेत ॥ तुम पुराण ऋषि हो नरनाम । अति तपपुञ्ज महा बलधाम ॥ विधि आज्ञा कर्तव्य विचारि । आए इहां मनुजतनु धारि ॥ जनमो वसु धरि भीष्म स्वरूप । सो तुमसों मरिहै कुरु भूप ॥ मम पितु अंश कर्ण बरवीर । जिष्णु मरिहि तो मारैं भीर ॥ जनमे दनुज जे भूपति रूप । मरिहैं तो मारैंते भूप ॥ दनुज निपात कवच जे धीर । मरि हैं ते तोतें बरवीर ॥ तो यश अचल रही कुरुनाह । तुम तोषो हरकों रणमाह ॥ हरिवे हैं भू भार अखर्व । फाल्गुण हरि सह तुमकों सर्व ॥ लेऊ दण्ड मम अस्त्र अमान । करऊ अमानुष कर्म महान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ लियो सो अस्त्र सविधि कुरुवीर । मंत्र सहित उपचार गँभीर ॥ पश्चिमदिशि ठाढे व्है वँन। बोले वरुण महा जलऐंन। क्षत्री मुख्य पार्थ तुम वीर । क्षात्रधर्मधारक गंभीर ॥ हम ह वरुण लखऊ छतिरास । देत अस्त्र वारुण वर पास॥सहित मोक्ष संहार विधान। याते वचन न यारि बलवान॥

उत्तरदिशितें बचन रसाल। अर्जुनसों बोले धनपाल ॥ देत अस्त्र प्रस्वापन नाम। सहित बिधान लेऊ बलधाम ॥ नृप धृतराष्ट्र चमू बरबीर। धर्षित करऊ युद्धमे धीर ॥ तब अर्जुन सो अस्त्र महान। लियो धनदसों सहित बिधान ॥ तब बोले सुरपति इमि बन। कोमल आनदकार सबैन ॥ कुन्तीपुत्र सिद्ध सुखदाय। लही प्रयत्त देवगति पाय ॥ करिबे देवकार्य्य अभिराम। चलिबे परी तुम्हैं सुरधाम॥सज्ज होऊ तुम अर्जुन पूत। रथ लेइ आवत मातलि सूत ॥तहां दिव्य बर अस्त्र अखर्ब। सहित बिधान देहिगे सब॥ पूजन कीन्हो सहित बिधान। दिगपालनको जिष्णु सुजान॥ गए दिशापति अपने धाम।करि अर्जुनसों प्रीति ललाम॥ जानि मनोरथ सिद्धि उदार। भरे मादसों पांडु कुमार॥ सुरपुरकों चलिबो निरधारि। सुरपति रथपथ रहे निहारि।*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्व्वणि किरातार्जुन युद्ध बर्णनोनाम षष्ठमोऽध्यायः॥ ****

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

आवत रथ नभतें अभिराम। करत प्रकाशित अम्बर माम॥भरत दिशनमहं नाद महान। जवन पठल भेदत सम भान॥ दिव्य शस्त्र बज्रादिक जौन। जापै धरे प्रभामय तौन॥दश हजार बाजी सम बात। जाकों वहत हरित रँग गात॥ नीलध्वजा जापै फहराति। कनकदण्ड मणि मय अति कान्ति॥ ** ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ***

ता रथपैं देखो चढो सूत कनक रँग भूप। लगे बिचारन पार्थ तब यह कोउ देव अनूप॥
तब पारथ पँह आइके रथ तजिके अभिराम। बचन लगो ऐसें कहन मातलि सहित प्रणाम॥

॥ * ॥ मातलिरुवाच ॥ * ॥

पार्थ पार्थ हे शक्रसुत महावीर बलधाम। तुम्हैं सुरेश लखो चहत सुरन सहित अभिराम॥
बेगि चढो या सुरथपैं यह सुरपति प्रिय बीर। तात पठाये रावरे करिके कृपा गँभीर॥
ऋषि सुर गन्धर्बन सहित उत्सुक लखिबे तोहि। तुम्हैं लेन या लोकतें बेगि पठायो मोहि॥
चढऊ सुरथपर सङ्ग मम सुरपुरकों चलु बीर। दिव्य अस्त्र सब पायकैं बहुरि आइयो धीर॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

मातलि पहिले बेगि तुम चढऊ सुरथ पर तौन। दान यज्ञ तपतें नहीं प्राप्त होतहै जौन॥
तुम चढिकै पहिले करऊ सुस्थिर बाजी सर्ब। फिरि चढिहै हम सुजन ज्यौं शतपथ पाय अखर्ब॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

मातलि सुनि फाल्गुण बचन चढो सुरथपर जाय।बाग पकरि नियमित करे तुरगँ सकल सुरकाय॥
हर्षितव्है अर्जुन चढे फेरि सुरथपर जाय। ध्यान धारि श्रीकृष्णको गङ्गाजलसों न्हाय॥

देव पितरगण अर्चिकै वेद बिहित कुरुबीर। नानाविधि करि प्रार्थना शैलराजसों धीर॥ व०प०
रथ चढि ऊरधकों चले अर्जुन भानु स्वरूप। सुकृतिनके नभमे लखत बिमल बिमान अनूप॥
सोम सूर्य्य अरु अग्निको तहँा न लखो प्रकाश। पुण्यमान जन सुतनुको फैलो बिमल बिकाश॥
तारा रूप जो जगतमे जानि परतहै भूप। दीप सदृश अति दूरतें जौन महान स्वरूप॥
अपने अपने लोकमे भरे प्रकाश गभीर। भूप सिद्ध लखिये मरे युद्धमाह जे बीर॥
गन्धर्व गुह्यक ब्रह्म ऋषि अपार सूर समान। भरे तेज लखिकै भए फाल्गुण बिसमयमान॥
पूछन मातलिसों लगे ए को भरे प्रकाश। मातलि उवाच। ए सुकृतीहैं आपने लोकनमे मतिरास॥
तब देखो द्वारे खरो ऐरावत गज स्वेत। चतुर्दंत कैलाशगिरि की समताकों लेत॥
सिद्धिमार्गमे जात इमि सो हो पाण्डव रूप। जैसे पूरब कालमे हो मान्धाता भूप॥
ऐसे देखत लोक सब राजनके समुदाय। स्वर्गलोकको गो चलो महाबीर कुरुराय॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

पुरी सो अमरावती तहँ जाय देखो बीर। सर्वर्तु कुसुमित तरुणसो चहुओर लसति गभीर॥ पुण्य सौगन्धिक तरुणके भरो गन्ध समीर। लहल ताको परम पावन मोद मण्डित धीर॥ लखो नन्दन बिपिनि जामे अप्सरनको सङ्ग। दिव्य जामे कुसुम सोहल भरे नानारङ्ग॥ करत तप ब्रत सत्रु रणमे मरत निर्भय जौन। तीर्थमे बहु न्हात पावत तासु दर्शन तौन॥ मंसाद गुरुतल्पग सुरापी नहीं देखत ताहि। यज्ञ हन्ता दुष्ट ताको सकै कैसे चाहि॥ अप्सरनके गीत बाद्दित बिपिनि देखत तौन। शक्रकी प्रिय पुरीको तब कियो फाल्गुण गौन॥ तहां देवबिमान शत सह लखे अर्जुनवीर। खरे आवत जात चाहत खहो अद्भुत धीर॥ गन्धर्व अप्सर बृन्दतें कुरुवीर सुस्तुति मान। सुमन गन्धित बायु बीजित भरो मोदमहान॥ देवऋषि गन्धर्व सिद्ध प्रसन्नव्है अभिराम। पार्थको बहु भाँति पूजन कियो परम ललाम॥ शङ्ख भेरी नाद सुस्तुति परम आशिष पाय। नक्षत्र पथ सुरवीथिकाकों लखो अर्जुन जाय॥ इन्द्रआज्ञा पाय अर्जुन सुनत आशिष बैन। देवगण सों मिले ऋषिबर भूप जे तप ऐन॥ करत आश्वासन सुस्वको मोद मङ्गल पाय। शतक्रतु सुरनाथकों तब तहां देखो जाय॥ उतरि रथतें वीर अर्जुन गए शतक्रतु पास। राजचिन्ह समेत सोहत धरे परम प्रकाश॥ गन्धर्व बंदी बिप्र बेद स्तुति करत अभिराम। जायकै तब देखि अर्जुन कियो दण्डप्रणाम॥ भुजनसों गहि इन्द्र लायो हृदयसों सुखदान। पाणि गहिकै दियो आसन पास शक्र महान॥ अङ्कमे लै कियो मूर्धाघ्राण फिरि सुरनाह। लियो फिरि बैठाय अपने शक्र आसनमाह॥ प्रेम करि तब इन्द्र अर्जुनकों सुरुख अभिराम। परशि करसों कियो श्रमसों शान्त सुषमाधाम॥ बेर बेर सु भुजा करसों कनक दण्ड समान॥ लगे पेखन कथा करिकै पुत्रकों मघवान। बिहँसिकै सहजात शालाक्षसों भरे चित चैन॥ लगे चाहन चावसों नहि तृप्ति पावत नैन। एक आसनपर लसे दोउ परम परमापूर।

व०प० उए चौदिशिकों गगणमे मनो सह शशिसूर ॥ करत गाथागान तुम्बुर आदि सब गन्धर्व । जगी नाचन अप्सरा सब भरी रूप अखर्व ॥ कमलसे चख चपल जिनके कठिन उरसिज पीन । पृथुल जघन नितम्ब त्रिबली बलित अति कटि छीण ॥ छबनि छहरे चिकुर चिकने पदुमसे पद पानि। सुधा बरषत सुधानिधि द्युति लसति है मुसुकानि ॥ भौंह बक्र कटाछ शितशर तानि मन्मथबीर। सिद्ध मन मृग मारिवेकों धनुष धारै धीर ॥ हाव भाव कटाछ करि करि नृत्य भेद ललाम । नची सिगरी अप्सरा सुरसभामे अभिराम ॥ वैशम्पायनउवाच॥ देव सह गन्धर्व तव सुरराजको मत पाय। देय अर्घ्य सु पाद्य पूजो जिष्णुकों सुखदाय ॥ गए फेरि लेवाय सुरपति भौनमे अभिराम । बसे अर्जुन जाय तेहां पिताको लहि धाम॥ इन्द्र शिक्षा करण लागे दिव्य अस्त्र सुदार । संधानको अरु मोक्षको सु बिधान सह संहार ॥ वज्र अशनि सु अस्त्र दोऊ इन्द्रप्रिय लहि तौन। जिष्णु भ्रातनको स्मरण करि कियो चाहो गौन ॥ पाय शासन इन्द्रको तहँ रहे शरमिति वर्ष। कृतार्थ फाल्गुण हो कहो हरि समय पाय सहर्ष॥ चित्रसेनसों लेऊ अर्जुन नृत्य गीत विधान । बादित्र जो सुर विहित छहे श्रेयकर सुखदान॥ गीत बाद्य सु नृत्य तासों सिखो अर्जुन बीर । द्यूतको दुख समुझि मनमे लहत सोद न धीर ॥ चहत दुःशासन शकुनिको कियो बध बलवान। तौर्य्यत्रिक गुण पाय पावत मोदको न सुजान ॥ चित्रसेनहि रहसमे लै कहे सुरपति बैन। उर्वशी मे पार्थके आसक्त देखत नैन ॥ उर्वशीकों जाय पे बऊ पार्थ पास सुजान । होय जासों दिव्य रतिरस विज्ञसों बलवान॥ चित्रसेन तथास्तु कहि गो उर्वशीके पास। बचन तासों कहन लागो मृदुल मधुर सहास ॥ तु है सुन्दरि विदितहै त्रिदिवेश पठयो मोहि । कियो चहत प्रसन्न जो छविधान जानत तोहि ॥ विख्यात जो गुण शील ते वर बीर धीरजधाम । एक रचक त्रिदिवको मघवान सम गुणग्राम॥ रूपते बय वंशतें तप तेजतें सु महान । पुरुष त्रिभुवनमे न कोउ और पार्थ समान॥ शक्र शासन सहित अर्जुन विदित तो सुखदाय । स्वर्गको सुख लहैं तव पदपदुम संनिधि पाय॥ तौन करिए सुनऊ सुन्दरि शक्र शासन सङ्ग । सुनत सो मुसकाय हेरी भरी आनद रङ्ग॥ चित्रसेनसों कहे ऐसें उर्वशी तब बैन। कहत तुमसो सत्य फाल्गुण सकल गुणको ऐंन॥ सुतन ताको व्यथित मोकों कियो अतिशय मार।जिष्णुकों जौं बरौं याते लाभ कौन उदार ॥ शक्र शासन वचनतें तव जिष्णु गुण अभिराम। सुनत हे गन्धर्वपति मोहि स्ववश कीन्हों काम ॥ चित्रसेन सु जाऊ तुम हम जाति जहँ सुखदाय । उर्वशी अस्नान किन्हों सुरभ शलिल नहाय ॥ बसन भूषण दिव्य धरि वर गन्ध माल समृद्ध। धनञ्जयके रूप प्रेरित मदन शरसों बिद्ध॥ रमति मनमे सङ्ग फाल्गुणके भरी उतसाह । चन्द्रमोदय देखि संध्या भरी रतिरस चाह॥ चली अर्जुन सदनकों धरि मन्दगति कचभार । पृथुल जङ्घ नितम्ब तनु कटि कठिन उरज उदार॥ सुधाधरसो बदन भृकुटी बङ्क चञ्चल नैन । उदर क्षम बलि रोमराजी जघन सुषमाऐन ॥

नमित उरसिज भारसों कटि बधी त्रिवलीवन्ध । अङ्गराग सुगन्धसों अलि रहे घेरि मदन्ध॥ व०पु० चीण पटसे प्रगट दरशत कनक बनक सुत्रङ्ग । छबिनहूको भरे मनने महत काम तरङ्ग ॥ अरुण पदतल अङ्गुली नख गूढ गुल्फ लखात । करे ईषत पान मधुसो मदनमद मय गात ॥ सूक्ष्म ओढें उत्तरीय सो लसत मेचक रङ्ग । मनऊ राकाको सुधाधर चीण जलधर सङ्ग ॥ गई सो मनगामि नी चणमाह फाल्गुण धाम । द्वारपालन जाय अर्जुन सों कहो अभिराम ॥ उर्वसीहै द्वार ठाढी करे सब शृङ्गार । देऊ आवन कहो तिनसो पार्थ परमउदार ॥ मन सशङ्कित करे आगे गए धावे धीर । भए लज्जित लखत ताको धरमधुरधर वीर । प्रणाम करि गुरुवत् सु पुजा कियो सहित विधान ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ देवि आज्ञा करतिहो का कहो नीति समान ॥ जिष्णुके सुनि वचन बोली उर्वसी नतिरास । वचनते गन्धर्वके सब कहे सहित प्रकास ॥ * ॥ उर्वश्यु वाच ॥ * ॥ चित्रसेन जो आइ मोसों कहे वचन प्रमान । तौन सुनि हों इहाँ आई सुनऊ सो सुखदान ॥ सभामे सुरराजकी सुरवृन्द आए सर्व । तहाँ हम सब अप्सरण मिलि कियो नृत्य अखर्व ॥ तहाँ हमको रहे लखि तुम होय अनिमिष वीर । नृत्यान्तमे करि बिदा सबको शक्र सुमति गभीँर ॥ चित्रसेनहि पडै दीजो इन्द्र तब मो पास। शक्र शासन चित्रसेन सुकहो इमि छबि रास ॥ मम तुल्य पारथको भजऊ तुम जाय सुन्दरि अद्य। सकलगुण संपन्न सुन्दर सूर शुचि अन बद्य ॥ तातकी तो मानि आज्ञा इहाँ आई वीर । चित्त मेरो प्रथमही तुम हरो हो रणधीर ॥ ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कर्ण करसों मूदि लज्जित जिष्णु बोले बन। कहति जो तुम वचन हमको योग्य सुनवे हैं न ॥ सत्य हो गुरुदारके तुम उर्वशी सह धर्म। सम सुकुन्ती सचीके हम तुम्हें जानत पर्म ॥ जौन तुमको लखतहैं हम किए अनमिष नैंन।सहित कारण कहतहैं सो सुनऊ सुन्दरि बैंन ॥ जननि पौरव वंशकी यह भरी मोद ललाम । तुम्हे देखत रहे याते उर्वशी अभि राम ॥ अन्यथा चित वृत्ति मम नहि तुम्हें योग्य विचार । गुरुऊते गुरुतरा तुमहो वंशकरणि उदार ॥ * ॥ उर्वश्युवाच ॥ * ॥ प्रगट हमहैं वार बनिता सुनु सुरेशकुमार । गुरुस्थानार्पन हमकों कीजिए न उदार ॥ कामते हो तप्त मोकों भजऊ भक्त बिचारि ॥ अर्जुन उवाच ॥ उर्वशी सो सुनऊ जो हम कहतहैं निरधारि ॥ दिशा बिदिशा देव मेरे सुनत वचन महान ॥ यथा माद्री सची कुन्ती तथा तुम सुखदान ॥ जाऊ तुमको करतहो मैं दण्डवत सु प्रणाम। मातृ वत तुम पूज्य सुतवत रच हौं अभिराम ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ पार्थके सुनि बचन ऐसें उर्वशी व्है क्रुद्ध । करे भृकुटी वंक कांपत शाप दीन्हों उद्ध ॥ * ॥ उर्वश्युवाच ॥ * ॥ पाइ शासन पिताको तव इहां आई वीर।मोहि वरत न ह्रौत याते तुम्हें शाप गभीँर॥नृत्य शीचक होय दूखिणमाह बसिहऊ जाय । हीन व्है पुरुषत्वते तुम रहऊ षंड कहाय ॥ उर्वशी यह शाप देके

व०प० गइ अपने धाम। चित्रसेन समीप अर्जुन जाय आतुर साम। निशाको वृत्तान्त तासों प्रगट कीन्हों सर्व। चित्रसेन सो इन्द्रसों सब कहो बात अखर्व ॥ पार्थकों तब इन्द्र लीन्हों बोलि अपने अन। समाधान सु कियो कहिके शान्तिपूर्बक बैंन॥ पुत्र तुमकों उर्बशी जो दियो शाप महान। अज्ञात चितिपर बसऊगे तब होयगो सुखदान ॥ तेरहें सो बर्ष ह्वै है शाप भोग बिनाश। क्लीवत्व नर्तन बेष तजिहै पुत्र तेरो पाश ॥ शक्रके सुनि बचन ऐसें मोद लहि अभिराम । शाप चिन्तन तजो अर्जुन बीरबर बलधाम ॥ चित्रसेन समेत बिहरण लगे सुरपुर माह । चरित यह पढि काम भयतें बचैं गो नरनाह ॥ *********

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि अर्जुनस्यस्वर्गगमनान्तसुर्बशीशापोपाख्याने सप्तमोऽध्यायः ॥ **

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

इन्द्रहि देखनको करि काम। लोमस ऋषि आए तपधाम ॥ कियो प्रणाम इन्द्रके पास। बैठो देखि पार्थ बलराश॥ जीतो लोक कौंन करि कर्म। इन्द्रासन पर बैठो पर्म॥ यही अस्य इन्द्रके पास। बैठो आसन पर गत त्रास ॥ ऋषिको चित्त बृत्तिको जानि। बोले इन्द्र बचन सनमानि॥ ऋषि जो भयो तुम्हैं सन्देह । तौन सुनऊ हमसों तपगेह ॥ केवल मनुज न पार्थ ललाम । पुत्र हमारो है बलधाम ॥ कुन्तीपुत्र महा रणधीर। अस्त्र हेतु इत आयो बीर ॥ इन्हैं न जानत तुम मतिमान। हैं ऋषि ए अति परम पुरान ॥ नर नारायण मुनियत जौंन। फाल्गुण हृषीकेश है तौंन ॥ कार्य्य अर्थ लीन्हों अवतार। बदरिकाश्रम मे जौंन उदार ॥ बिष्णु जिष्णुको आश्रम तौंन। मूलदेश गङ्गाको जौंन ॥ मम नियोगते जिन अवतार। लीन्हों हरिबेकों भू भार॥ असुर निपात कवच बलवान। करैं जे मो अप्रिय अतिमान ॥ सुरन्ह गगण नहि लहि बर जौंन ॥ दनुके पुत्र रसातल भौंन। भूगत जौंन बिष्णु बलधाम ॥ जाको कपिल कहत मुनि नाम। सुनु जे सगर तनय बलराश। भए भस्म देखतही जाश ॥ इमि हरि कारय करण अखर्ब। पार्थ हनैंगे तिनको सर्ब॥ अल्प कार्य्यके हेत हृषीश। बोधित करैं कौंन जगदीश॥ दनुजन्ह मारि पार्थ बलधाम। जैहै फिरि चितिपर अभिराम ॥ मम आज्ञातें तुम ऋषि पर्म। चितिपर जाय लखऊ नृपधर्म॥ यह सन्देश हमारो जाय। कहेऊ युधिष्ठिरसो समुझाय ॥ दिव्य अस्त्र सब लहि अभिराम। जिष्णु आइ हैं इत बलधाम॥ तुम जे परम तीर्थहैं सर्ब। सह भ्रातन्ह तें करऊ अखर्ब ॥ पाप बिगत करि तीर्थस्नान। करिहौ राज्य भोग बलवान ॥ अटत तीर्थसे भूपति धर्म। तुम रक्षित कीजो ऋषि पर्म॥ जिष्णु इन्द्रके सुनिकै बैंन। लोमससों बोले सह चैंन॥ तुमसो रक्षितह्वै नृपधर्म। तीरथ करैं यथाबिधि पर्म ॥ तथा कीजियो हे तपधाम। करिकै कृपा

उदार ललाम ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ कहि तथास्तु लोमस तपभौन । गए काम्य वनको करि गौन ॥ देखो तहाँ जात नृपधर्म । द्विज भ्रातनसह शोभित पर्म ॥ जनमेजय उवाच ॥ सुनि पारथका कम महान । कहा कहो धृतराष्ट्र सुजान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ पारथ गए शक्रके लोक । सुनत व्याससों भए सशोक ॥ सञ्जयसों बोले इमि बैंन । नृपधृतराष्ट्र तजैं चित चैन ॥ सञ्जय सुनो पार्थके कर्म । हमकों विदित रहो कछु मर्म ॥ मत्त विषय रत दुर्मति मन्द । पुत्र हमारो कर जग दन्द ॥ बीर धनञ्जय जाके साथ । सो जानऊ त्रिभुवनको नाथ ॥ जाके बर्षत बाण गँभीर । सन्मुख जाय कौंन असबीर ॥ मो सुत लहिहै मृत्यु अभंग । जिन्हकों युद्ध पाण्डवन्ह संग । को अर्जुनके सोहैं बीर । हों चिन्तत जय लही गँभीर ॥ कर्ण प्रमादी द्रोण सो वृद्ध । भीष्म तथा अर्जुन बल क्रुद्ध ॥ सञ्जय होनहार अति युद्ध । सूर सकल अपराजित उद्ध ॥ ए सब मरैं को अर्जुन बीर । होय शान्ति तब सुनऊँ गँभीर ॥ अर्जुनको हन्ता जेतार । नहीं जगतमे बीर उदार ॥ इन्द्र सदृश पारथ बल पुष्ट । किए खाण्डवमे पावक तुष्ट ॥ सकल भूमिके पार्थिव जीति । राजसूय जिन करो सनीति ॥ रबि करता पित जगत अखर्ब । त्यों अर्जुनशर मो सुत सर्ब ॥ सुनत जिष्णु रथ घोष महान । भजति भारती सैंन अमान ॥ * ॥ सञ्जयउवाच ॥ * ॥ जे तुम कहे भूप ए बैन ॥ ते सब सत्य महामतिऐंन ॥ ❦❦❦ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ❦❦❦❦❦❦ *

क्रोध भरे पाण्डव सकल महाबीर बलवान । लखि कृष्णाको सभामे कियो जौंन अपमान ॥
कर्ण दुशासनको बचन सुनि अति दारुण बीर । भरे क्रोध पांडव सकल यह मो मति गंभीर ॥
संतोषित हरकों कियो करि पारथ अति युद्ध । सुनो तौंन धृतराष्ट्र हम तास महत क्रत उद्ध ॥
करि किरातके भेषकों धारि धनुष बर भाथ । सुबल परीक्षा करनकों लरे जिष्णुके साथ ॥
लोकपाल तहँ आय सब दिये अस्त्र सविधान । फाल्गुणको तपतेज लखि भरे प्रीति अतिमान ॥
अष्टमूर्ति हरसों नही जीर्ण भयो जो वीर । कौंन ताहि जीतो चहत समरमाह रणधीर ॥
खैंचि द्रौपदीकों कियो घोर युद्ध सम्पन्न । दुष्ट दुशासन तब भए पांडव क्रोधासन्न ॥
कहो भीम जो क्रोध करि सत्य बचन सो भूप । उरू सुयोधनको हनन मारि गदा अति रूप ॥
हैं पांडव सब अस्त्रबिद अमर न जीतैं जाहि । अन्त तिहारे सुतनको करिह रण अवगाहि ॥

॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥

कहें भयो का कर्णके क्रूर बचन भरि मैर । कृष्णा आई सभामे पूर्ण भयो तब बैर ॥
मन्द भाग्य मेरो बचन सुनत नही मितिमान । जानि अचक्षु अशक्त मोहि मेरे सुत अज्ञान ॥
सौबल कर्णादिक सचिव जौंन सुयोधन पास । दोष सिखावत नित्य ते करता कुरुकुल नास ॥
सहज मुक्त शर पार्थके दाहक मम सुत सर्ब । ह्वैहै का जब क्रोध करि बर्षिहि बाण अखर्ब ॥
मंत्री रक्षक कृष्णहैं जाके त्रिभुवननाथ । को जीतैगो जगतमे खरिकै ताके साथ ॥

ब०प० यह सञ्जय हम जिष्णु को सुनो कर्म अतिमान। बाहुयुद्ध हरसों कियो महाबीर बलवान ॥
पुत्र हमारे सर्वथा नाश लहैं गे सर्व। भीम पार्थ श्रीकृष्ण जब करिहैं क्रोध अखर्व ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥

शोच कियो धृतराष्ट्र जो सो सब व्यर्थ बिचार। धर्मनृपतिकों प्रथमही दै बनवास उदार ॥
भोजन बनमें करत हे पांडव कहा सुजान। वण्य वस्तु के खेत्र अब कहौ तौन मतिमान॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

वण्य वस्तु अरु मृगनको मांस मारि शर शुद्ध। ब्राह्मण पितरनकों अरपि किय भोजन अविरुद्ध ॥
ब्राह्मण सहसन्ह साग्नि जे अरु अनग्नि तपधाम। तिनकों भोजन देत हैं मृगपल नृप अभिराम
सविधि पतिनकों द्रौपदी भोजन प्रथम कराय। पीछे तें माता सदृश आपु यथाविधि खाय ॥
मृगयाकों नृप पूर्वदिशि जात्यवृकोदर बीर। पश्चिम उत्तर जात हे माद्रीसुत रणधीर ॥
पांच बर्ष अर्जुन बिना काम्यकबनमें भूप। यज्ञ होम करिकै बसे धर्मनृपति शुचि रूप ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सुनि ताको अद्भुत चरित पूरे शोक महान। सञ्जयसों धृतराष्ट्र नृप बोले दुःखित मान ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

दिवश निशि नहि परति निद्रा एक क्षण भरि मोहि। द्यूत सम्भव अनय अपने सुतनको अति जोहि ॥ पांडवनको धैर्य्य सौर्य्य बिचारिकै अतिमान। परसपर अनुराग भ्रातनमें परम सुखदान ॥ नकुल अरु सहदेव अतिशय युद्ध दुर्मद बीर। भीम अर्जुन सहित तिनसों लरै गो को धीर॥ निःशेष मेरी सैनकों ते करैंगे बलवान। द्रौपदी को क्लेशसो नहि सहैंगे अतिमान ॥ वृष्णि अरु पाञ्चाल रक्षित कृष्णसों सब जौन। भस्म मेरे सुतनकों रणमाह करिहैं तौन ॥ महा धनुर्धर भीम तिनमें बीर अमित उदार। बीर घातिनि गदा लै जब करै गो सञ्चार ॥ गदाके बरबेगकों सहि सको भूपति कौन। सुहृद वचन न कियो जो हम समुझिहैं तब तौन ॥ * ॥ सञ्जयउवाच ॥ * ॥ व्यति क्रम तुम कियो तौन समर्थ ह्वै कै भूप। नही रोके सुतन्हकों तव करत बिग्रह रूप ॥ तिन्हैं निर्जित द्यूतमें सुनि काम्यबनमें आय। समाधान सु कियो यदुपति बचन सत्य सुनाय ॥ द्रुपदके सुत धृष्टकेतु बिराट नृप कैकेय। कहे जे तिन बचन लखि नृपधर्म दुखित अमेय ॥ चारसों हम सुने ते सब कहत तुमसों मर्म। जिष्णु को सारथ्य मागो कृष्णसों नृप धर्म ॥ कियो सो स्वीकार कीबैं युद्धमो यदुबीर। धर्मनृपकों देखि धारैं अजिन वल्कल चीर ॥ धर्मनृपसों कृष्ण बोले भर क्रोध महान। यज्ञमें जो लखी ही तो परम श्री अतिमान ॥ तौन सम्पति हरी तो करि द्यूत जिन कुरुनाथ। मारि तिनको लेउगो सो सुनऊ जीवित साथ ॥ राम सह यदुबंशके जे महारथ बर बीर। सहित धृष्टद्युम्न अरु शिशुपाल सुत रणधीर ॥ सङ्ग लै धृतराष्ट्रसुतकों कर्ण सह र

नाह। शकुनि सह दुःशासनहि हनिहौं सुनो हे कुरुनाह॥ हस्तिनापुर बसहु गे तब जाय तुम कुरुभूप। लेहुकै धृतराष्ट्रकी श्री तीन परम अनूप॥ भूपगणमे कहो तब श्रीकृष्ण नृपधर्म। धृष्टद्युम्न हि आदि तुम सब सुनहु भूपति पर्म॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥*॥ ग्रहण हम सब करत हैं तो वचन सत्य गँभीर। मारिहो तुम शत्रु मेरे युद्धमे बलवीर॥ वर्षतेरहकी प्रतिज्ञा सत्य कीजै तौन। करी हम नृपवृन्दमे यदुनाथ अनृत न जौन॥ धर्मनृपको वचन सुनिकै सभासद नृप वीर। धृष्टद्युम्न हि आदि दै सब भए शान्त गँभीर॥ क्रुद्ध हरिको शान्त कीन्हों मधुर कहि नृप धर्म। द्रुपदजासों कृष्ण तब इमि कहन लागे पर्म॥ द्रौपदी तब क्रोधसो तजिहै सुयोधन प्रान। सत्य जानहु शोचको तुम धरहु मति सुखदान॥ द्यूतनिर्जित देखि तुमको कियो है जिन हास। लसैंगे गोमायु वृक करि मांस तिनको ग्रास॥ टारि तिनको शीष करिहैं गृद्ध शोणित पान। द्रौपदी जिन तुम्हैं खैंची सभामे हतज्ञान॥ यहि भांति तहँ श्रीकृष्ण बोले सहित सिगरे भूप। शूर सब संग्रामकर्त्ता तेजमय अतिरूप॥ गए तेरहवर्ष व्योते तिन्हैं भूपति धर्म। गए सह श्रीकृष्ण नृप सब धाम अपने पर्म॥ राम कृष्ण सवृष्णिवंशी वीर सह पाञ्चाल। सहित पाण्डव मत्स्यपति कैकेय भूप विशाल॥ जाय इनके सामुहें को युद्धमे बलवान। यथा सोहैं सिंहके मृग चरै गो न अयान॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ * ॥ द्यूतमे हम नही मानो विदुरको वर बैन॥ नाश कौरववंशको भवितव्य है सह सैन॥ अस्त्र कारण स्वर्गको जब गए फाल्गुण वीर। सहित भ्रातन धर्मनृप तब कियो का धरि धीर॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ गए फाल्गुण स्वर्गको तब काम्य बनमे जाय। विप्र भ्रातन सहित कृष्णा बसे तहँ सुखपाय॥ धनंजय अरु राज्यको लहि कै वियोग महान। शोकसागर मग्न चिन्ता करत हे अतिमान॥ भीम लागे कहन ऐसें धर्मनृपसों बैन। गए शासनसों तिहारे धनञ्जय बलऐन॥ भएँ जाके नष्ट हम सब वृष्णिवंश समेत। कृष्ण अरु पाञ्चालके सुत नाश लहत समेत॥ जास भुजबलके भरोसे समरमे हम सर्व। जीति कै सब शत्रु चाहत भूमिभोग अखर्व॥ कृष्ण सह हम कर्ण प्रमुख संहारि कै परपच्छ। बाहुबलतैं कियो चाहत भूमि भोग समच्छ॥ करहु धारण धर्म क्षत्रिनको महामति रास। क्षत्रि धर्म न विहित करिबो भूपको बनबास॥ कहत हैं बुध राज्य करिबो क्षात्रधर्म सुजान। प्रथम द्वादशवर्षके हनु शत्रुको बलवान॥ वासुदेव समेत सेना लेइ कै अतिमान। दीजिए धृतराष्ट्रसुतको मारि कै यम धाम॥ मारि हे धृतराष्ट्रके सुत सकल हम रणधीर। कर्ण आदिक और जे भट होहिँ सन्मुख वीर॥ मारि हैं हम शत्रुको तब आय कै बनबास। दोष तजिबे सत्यको तुम कीजियो मतिरास॥ यज्ञ नाना भांतिके करि पापको करि नाश। स्वर्गको तब जाहु गे तुम अमरपतिके पास॥ छलीको करि मारिऔ छल नही यामे पाप। धर्मविद सब कहत हैं नहि लहत धर्म उताप॥ एक कीन्ह

व०प० कृच्छ्रव्रत सो होत सर्व समान । धर्म शास्त्र सु बेदको सब कहत बचन प्रमान ॥ तैंग देखत देश नहिं जहँ जांय कै हम सब । कृप्यै मे जहँ तेरहे सम मांह व्हैकै खर्व ॥पठैकै सो चार हमकों जानि लेहै दुष्ट । फेरि हमकों बास बनको आनि परत सु पुष्ट ॥नाथि ह जो तेरहो हम वर्ष है बाधीन। द्यूतकों फिरि बोलि है सो तुम्हें पापाधीन ॥ आव्हांन कीन्हें द्यूतते न निवृत्त ह्वहो भूप। द्यूतमे ते कुशल तुमकों जीति हैं छलरूप ॥ पुनः करिहो बास बनको सुनऊ हे नरनाह। योग्य होऊ न आपु हमकों क्षपिन करिवे माह॥ देऊ आज्ञा हनै हम धृतराष्ट्रसुतकों भूप। दहै जैसें पाय पावक सघन गहण अनूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ कहत ऐसें भीमकों नृप शान्तिमय कहि बैन । लाय हियसों घ्राण मूर्द्धाको कियो लहि चैन ॥ नियत दुर्योधन हि हनि हो युद्धमे तुम बीर । वर्षतेरह देऊ बीतन रहऊँ धारे धीर ॥भीम जो तुम कहत ताको भयो प्राप्त सु काल। अनृत हम नहि करैं गे यह सुनऊ बीर बिशाल॥ बिना छल तब मारि हो धृतराष्ट्रसुतकों बीर। कहे ऐसे भीमसों नृप धर्म बचन गँभीर ॥ गए ताही समै तेहा धर्मनृपके पास। बृहदश्व ऋषिकों चले आवत धर्मनृप तपराश ॥ जाय आगे ल्याय आसन देइ कै अभिराम । वेदबिधिसों कियो पूजन पुण्यमय तपधाम ॥ बृहदश्वसों नृपधर्म लागे कहन सकरुण बैन। द्यूतकृत बृत्तान्त सिगरे आदितें मतिऐन॥ सुहृद जन ए आर्त्त हमसों बचन बोलत जौन । करत हैं सबराति चिन्ता समुझि कै हम तौन॥ हमहि आदिक बसत जामे नित्य सबके प्रान। तान फाल्गुन बिना है हम सत्व हीन महान॥कृतास्त्र आयो देखि है कब जिष्णुकों अभिराम।अल्पभाग्य न भूप हमसो भयो हो तपधाम॥ मन्दभागी पुरुष हमसो कोऊ और न आन। नहीं देखो सुनेऊ है महत मुनि मतिमान॥ * ॥बृहदश्वउवाच॥ * ॥ कहत तुम नृप मन्दभागो नहीं हमसो और। जौंन तुमहूँतें दुखित हम कहत सुनु नृपमौर ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कहन लागे भूप कहिए कृपा करि तपधाम । पाय हम यह दशा चाहत सुनो सो अभिराम ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच॥ * ॥ स्वस्थ व्हैकै सुनऊ भ्रातन सहित कुरुकुल भूप । भयो तुमतें अधिक दुःखित नृपति जौन अनूप ॥ निषधदेशाधिप रहो नृप बीरसेन महान।महत बली सो नियम युत धर्मिष्ठ देवसमान॥भयो ताकों पुत्र जो नल नाम सत्य दराज।ताहि पुष्कर द्यूत छलकरि जीति लीन्हों राज॥बसे बनमे एक भार्य्या सहित बिगलित जान। नही दास न सखा भ्राता सङ्गमे सुखदान॥ लए ब्राह्मणबृन्द हो तुम सहित भ्रातन्ह बीर। तुम्हें करिबो शोच इतनो योग्य है नहि धीर॥ युधिष्ठिरउवाच॥ कहऊँ नलको चरित बिस्तर सहित हे मतिमान । कौंन तुमसो और बक्ता सुनो चहत सुजान ॥ ॥ * ॥बृहदश्वउवाच॥ * ॥ भूप नल हो बीरसेन महीपको सुत बीर । रूपवान सुजान जानत अश्व गुणिनह धीर ॥ सत्यवादी द्यूतप्रिय अक्षोहिणीपति भूप। जितेंद्री नर नारिको प्रिय करत हो अनुरूप ॥ भीम भूप बिदर्भको हो तैसोई बलवान। सर्वगुणसों भरो ताके रहो नहि सन्तान॥

प्रजा हेतु सो करत हो यज्ञयत्नकों अभिराम । भाग्य वश ब्रह्मर्षि आए दमन तहँ तपधाम ॥ दम्प०
कियो तोषित भीम भार्य्या सहित तिनकों भूप । प्रजाकी मनमाह राखे कामना अतिरूप ॥ प्रसन्न
व्हे ऋषि दमन दीन्हों तिन्हे बर अभिराम । भई कन्या रत्न एकसु पुत्र त्रय गुणधाम ॥ मददान्त
दमनसु पुत्र कन्या भई सो दमयन्ती । भरे गुणसों परम जिनकी विमल कीर्ति फिरन्ति ॥ भई
दमयन्ती सुविधित वर्ण सुषमा धाम। सुन्दरी श्री सदृश जासी और को अभिराम ॥ गन्धर्व यक्षन
देवमे तिय तास रूप समान। मनुजमे हम सुनि देखि सुन्दरी नहि आन ॥ तिहसो नल लोकमें
अप्रतिम जास स्वरूप । कन्दर्प मानो देह धरि कै भयो भूपर भूप ॥ कहो दमयन्ती निकट
नल रूप काहूँ जाय । भीमजाको रूप काहू कहो नलसों आय ॥ सुनत रूप सु बढो तनम
दुऊनके अतिकाम। भए नल न समर्थ धरिवे कामको हियधाम॥ बसे अन्तःपुर समीपी बागमे तव
जाय। कनकवर्ण सु हंसको नृप लखो तह समुदाय ॥ एक तामे हंसको गहि लियो तहां भूप।
मनुज सम तव कहन लागो हंस वचन अनूप ॥ मारिवे हम योग्य नहि तो करेंगे प्रिय काम।
भीमजाके निकट तव गुण कहेंगे अभिराम ॥ यथा और न पुरुषमे सो करि हि मनसा भूप।
तथा तासों कहैंगे हम वचन जाय अनूप ॥ छोडि दीन्हों हंसकों नृप वचन सुनि सुखदाय।
गयो सो वैदर्भपुरकों हंसको समुदाय॥ विदर्भ पुरकों जाय दमयन्ती निकट ते हंस । तिन्हें
विहरत भीमजा लखि कनक बनक प्रसंस ।सखिन संगसों चली गहिवे तिन्हें देखि ललाम। चले
पसरि ते हंसकान्ता विपिनमे अभिराम ॥ हंसप्रति एक एक आली गहनकों छविराम। गई दम
यन्ती सुगहिवे हंसकों जेहि पास ॥ मानुषी धरि गिरा बोलो भीमजासों तौन । नाम नल निषधेश
भूपति भूरि छविको भौन॥ दस्रसम है रूपमे नहि तास मनुज समान । भयो भूपति काम मानो
धारि रूप महान ॥ होऊ ताकी प्रिया तुम तौ सफल जन्म स्वरूप। देवगण गन्धर्वमे हम फिरत
लखत अनूप ॥ यदि रूपको हम और देखो सुनो नहि नरनाह । रत्न हो तुम तियनमे सो रत्न
पुरुषन माह ॥ होत सुन्दर सुन्दरीको सङ्ग अति गुणवान। भीमजा सुनि हंसके वर वचन अति
सुखदान ॥ हंससों इमि कहो ऐसे कहऊ नल सों जाय । हंस बोलि तथास्तु नलपै गए ते सुख
दाय ॥ रूप यौवन कामना वैदर्भजाकी सर्व। कहो हंस सो जाय नलसों यथा बुद्धि अखर्व ॥
बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ सुने दमयन्ती सु जबसों हंसके वर बैन। रहति नलको धरे चितमे चिन्त
बन तजि चैन ॥ ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ *
भइ विवर्ण वदना सुखदान । लेति रति निश्वास महान ॥ ऊर्ध दृष्टि उनमत्त समान । रहति
अहर्निशि धारें ध्यान ॥ पाण्डुर वर्ण भई सबदेह। कामानल तन तपत अछेह॥ निश्चल भरे नीरसों
नैन । गदगद गरो खलित मृदु बैन ॥ निशिदिन लागै पलकन नेक । गयो भूलि सो शयन विवेक॥
दमयन्ती लक्षण वश काम। सखिन विचारि हिये अभिराम॥ कुँवरि दशा भूपति पहँ जाय ॥

ब०प० विधिवत दीन्हों सखिन सुनाय॥ भीमनृपति आलिनके बैंन। सुनि लागे चिन्तन मतिऐंन॥ है अस्वस्थ सुता केहि हेत। लगे विचारन चिन्तितचेत॥ भीमनृपति मनमाह बिचारि। यौवन प्राप्त भयो निरधारि॥सुता स्वयम्बर करिबो कार्य्य।निश्चय कियो हिएमहँ आर्य्य॥ दियो निमंत्रण भीम पठाय। सम जे रहे भूप बर काय॥ दमयन्ती स्वयम्बर जानि। भूपति चले वेष रच ठानि॥ भीम कियो तिनको सतकार। पूजित ते तहँ बसे उदार॥ याही समै गए सुरधाम। नारद मुनि पर्बत अभिराम॥ सुरपति भौनँ गए तपरास। पूजित बैठे सुरपति पास॥ त्रिभुवनचारी तिनको जानि। बूझो इन्द्र कुशल सनमानि॥ नारदउवाच॥ है हम कुशल अनामय रूप। कुशल लोक महँ सिगरे भूप॥ बृहदश्वउवाच॥ सुनि नारदके सुरपति बैंन। लगे फेरि बूझन लहि चैंन॥ जे नृप धर्मज्ञ अभीत। पाय शस्त्रसों मरण पुनीत॥ आवत रहे स्वर्गको जौंन। ते नहि आवत कारण कौंन॥ नारदउवाच॥ जाते स्वर्ग न आवत भूप। सो कारण सुनु नाथ अनूप॥ बिदर्भनृपदुहिता छबि शुद्ध। दमयन्ती है नाम प्रसिद्ध॥ तासु सयम्बर होत उदार। तहां जात सबभूप कुमार॥ ताको रत्न समान अनूप। हैं बांछित कीन्हें सबभूप॥ ऐसे कहत बचन तेहिकाल। अग्नि सहित आए दिगपाल॥ ते सब सुनि नारदके बैंन। ऐसे कहन लगे भरि चैंन॥ हमहूँ तहां चले गे सर्व। लखन स्वयम्बर तासु अखर्व॥ सगण सवाहन सब दिगपाल। चले बिदर्भ नगरको हाल॥ चलो स्वयंवरको नल भूप। भरोमोद अप्रतिम स्वरूप॥ नलको लखो सकल दिगपाल। धरे मूर्त्तिमनु मदन विशाल॥ ते सब भए बिगत सङ्कल्प। रविसो लखि नल रूप अनल्प॥ कछु क्षण राखि बिमान अकास। उतरि कहन लागे नल पास॥ हेहे नल सुनि बचन हमार। मम सहाय करु ह्वै कै चार॥ * ॥ बृहदश्वउवाच॥ * ॥ नल कीबो कीन्हो स्वीकार।फिरि बूझो निष धेश उदार॥ को तुम हौंहि कौंनक दूत। कौंन कार्य्य तो करै सकूत॥ यह सुनि नैषधेशके बैंन। बोले इन्द्र पाय कै चैंन॥ जानऊ हमको अमर समर्थ। दमयन्तीके आए अर्थ॥ हम हैं इन्द्र अग्नि ए भूप। ए यम बरुण अनूपस्वरूप॥ आए हम तौ पावन आस। कहऊ जाय दमयन्ती पास॥ तुम्हैं प्राप्तको इच्छत सर्व। इन्द्र बरुण यम अग्नि अखर्व॥तिनमे देव अनुत्तम जौंन। बरऊ एकको तुम छबिभौन॥ यह सुनि नल सुरपतिके बैंन। प्रणय सहित बोले मतिऐंन॥ हम तुम चाहत एक सु अर्थ। पठवऊ यामे मोहि न समर्थ॥ आपु चहत बरिबे तिय जान। कहै अन्य सो बर तेहि कौंन॥ * ॥ देवाऊचुः॥ * ॥ पूर्व कियो करिबो स्वीकार। काहे करत न तौंन उदार॥ बेगि कीजिए तान नरेश। जो हम तुमसों कहत निदेश॥*॥ बृहदश्वउवाच॥*॥ देव बचन सुनि कै नल भूप। बोले फेरि बैंन अनुरूप॥ रक्षित सदनमाह परवेश। कौनभांति हम करैं सुरेश॥ ॥ * ॥ इन्द्रउवाच॥ * ॥ भूप भौंनमहँ करत प्रबेश। तुम्हैं न देखि हि कोऊ नरेश॥ कहि तथास्तु तेहाँ गो भूप। दमयन्तीके सदन अनूप॥ तहाँ लखो दमयन्ती हि जाय। सखिनमध्य बैठी

सुखदाय ॥ दीप्यमान तन श्रीसम रूप। तनु कटि बडडे नैंन अनूपं ॥ चन्द्र चन्द्रिका को जेतार। बं०प० स्मित सोहत बदन उदार ॥ देखि चारु हासिनि सो बाल। बढो भूपतन काम विशाल ॥ सत्य धर्म भूपाल विचारि। याम्यो मदन हिए निरधारि ॥ देखि सखीगण नैषध भूप। उठी छोडि आसन अतिरूप ॥ लगी प्रसंशन नलकों तौंन। विस्मय भरी देखि छबिभौंन॥ मनही मांह न भाषे बैंन। चाहैं रूप अनूप सचैंन॥ देव यक्ष यह कै गन्धर्व। मनमें लगी विचारण सर्व॥ सक न बोलि भूपसों बैंन। लखैं सकल अनमिष करि नैंन॥ स्मित दमयन्ती अभिराम। नलसों बोली वचन ललाम॥ हो तुम को दायक चख चैन। वर्धित करत हिए मम मैन॥ आए इहां अमर वत वीर। जानो चहति तुम्है हौं धीर॥ इहाँ गमन कीन्हो कैंहि भांति।लखो न काहू तो तन कांति॥ रक्षक चऊंदिशि धारक दण्ड। धरे भूप शासन अति चण्ड॥ बोले यह सुनिकै नल वीर। दमयन्ती सों बचन गँभीर ॥ सुन्दरि जानु हमैं नल भूप। देव दूत पन धारि अनूप ॥ आए पास तिहारे बाल। लहो तुम्है चाहत दिगपाल ॥ इन्द्र अग्नि यम वरुण जलेश। आए वरण तुम्हैं यहि देश ॥ रुचै देव यामें तो जौंन। वरि ए ताहि सुनो छबिभौंन ॥ तास प्रभाव चहो नहि मोहि। काहूँ आवत लखिबे तोहि ॥ यहि कारजकों इनै सुरेश। पठयो तो ढिग देय निदेश ॥ यह सुनि तुम्हैं रुचै कहु तौंन। करि विचार मनमें छबिभौंन॥ बृहदश्वउवाच॥ देवनकों करिकै परनाम। बोली दमयन्ती छबिधाम॥ गहऊ पाणि मम सहित सनेह। तुम मेरे पति हौ छबिगेह॥ हम अरु जो मेरो धन सर्व। सो तव करऊ व्याह गान्धर्व॥ हंस बचन सो दाहत चेत। आए भूप सकल मम हेत॥ तुम भ्रजमान न भजिहौ मोहि। तौ यह सुनऊ कहति प्रभु तोहि॥ विष भक्षण करिकै जलमाह। बूडि मरौंगी सुनु नरनाँह॥ दमयन्तीके सुनि ए बैंन। कहे बचन ऐसें मतिऐंन॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दमयन्तीके सुनि बचन ऐसे नल बर भूप।फिरि ऐसे लागे कहन नीति प्रीति अनुरूप ॥
छोडि लोकपति देव तुम हमहि बरति सुखदान। हम मानुष पदरज सदृश तिनके हैं न सुजान॥
करत जो अप्रिय अमरको मृत्यु लहत नर तौंन। तातें बरिए सुरनकौं चाहि मोहि छबिभौंन ॥
चौंसर भूषण बसन बर दिव्य सुगन्ध महान । पाय देवपति लहऊगी भोग परम सुखदान ॥
जौंन चराचर भूमिपैं करत ग्रास नहि काहि।जगत ईश लहि अग्निकौं बरै न को तिय ताहि॥
जास दण्ड भय भूत सब करत धर्म अभिराम। धर्मराज पति पाय सो को न बरै बरबाम॥
देवराज दानव दरन सहस्राक्ष छबिभौंन । सुनाशीरपति पाय सो बरै नही तिय कौंन ॥
वरुण बारि पतिकों बरऊ छोडि शङ्क छबिधाम।करि विचार मनमें धरऊ सुहृद वाक्य अभिराम॥
नैषधेशके बचन सुनि दमयन्ती फिरि बैंन । शोचाकुल लागी कहन भरे बारिसों नैंन ॥

ब०प० नमस्कार करि सुरन्हकों सुनु नैषधपति भूप । तुम्है कियो भर्त्तार हम कहति सो सत्य स्वरूप ॥

॥ * ॥ नलउवाच ॥ * ॥

दूत भए हम दूतको रहै जौंन विधि धर्म्म । सो उपाय सुन्दरि करहु लगै न मोहि अधर्म्म ॥
करि परार्थको यत्न हम करैं आपनो अर्थ । देवनसों भाषें विना होय धर्म्म सब व्यर्थ ॥
भावी यह स्वारथ हमै होय जौंन विधि धर्म्म । सुन्दरि कीजै यत्न सो बिरचि बुद्धिबल पर्म ॥
तब दमयन्ती सो बडे बडे भारि जल नैंन । कहन लगी गद गदभरे नल भूपतिसों बैंन ॥
यह उपाय हम बुद्धिसों कहति विचारि अनूप । जौंन करें तुमकों कछू दोष न लागै भूप ॥
तुम भूपति अरु अग्नि यम वरुण अमरपुर नाथ । सभा स्वयम्बरमे रहौ आय बैठि एकसाथ ॥
निकट सुरन्हके बरैंगो तब हम तुमकों भूप । तातें तुम्हैं न लागिहै नेक दोषको रूप ॥
दमयन्तीके बचनए सुनिकै नृप निषधेश । गए तहां जहँ अग्नि यम बैठे वरुण सुरेश ॥
नलकों आवत देखि तब इन्द्र सहित दिगपाल । निकट पाय पूछन लगे तहँको बात बिशाल ॥
तुम देखो नैषधनृपति दमयन्ती छबिभौंन । कहो तौन सुनिकै हमै कहो बचन तिहि जौंन ॥

॥ * ॥ नलउवाच ॥ * ॥

तव शासनसों हम गए दमयन्तीके भौंन । रच्छत जाको दण्डधरि थबिर बिश्वसित जौंन ॥
हमै न तहँ काहूँ लखो पैठत तास निकेत । दमयन्ती देखो हमै तेहां सखिन समेत ॥
देखि हमै बिस्मित भई सो सह सखिन सुरेश । हम गुण यज्ञवर्णन कियो कहि तो नाथ निदेश ॥
मोहीमे सङ्कल्पहै ताको बरिबे हेत । दमयन्ती मोसों कहो तौन सुनञ्ज कहि देत ॥
तुम सह सुर आवैं सकल सभा स्वयम्बर माह । बरिहौंमै तिनके निकट तुमकों नल नरनाह ॥
तब तुमकों नहि लगैगो दोष कछू चितिकान्त । हे सुरेश तँह जो भयो कहो सो सब बृत्तान्त ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥

बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ काल तिथि क्षण पायकै शुभ भीम नृपति सुजान । किय स्वयम्बर सभामे सब नृपनको आम्हान ॥ सुनत पृथिवीपाल आतुर चले पीडित काम । भीमजा के पाय बेको करें इच्छा माम ॥ कनक तम्भ सुरुचिर मणिमय लसत तोरण सर्व । तहां आए भूप ज्यों गिरि माहँ सिंह अखर्व ॥ दिव्य आसन माह तेहाँ भए सब आसीन । धरे कुण्डल माल भूषण वसन सुषमा पीन ॥ तहां दमयन्ती सु आई रङ्गमे छबिधाम । हरण सबके किये देखत चक्षु मन अभिराम ॥ परे ताकी देहमे जहँ जाय जाके नैंन । रहै निश्चल होय तेहाँ पायकै छबिचैंन ॥ तहाँ देखे पुरुष बैठे पाँच एक स्वरूप ॥ कीर्त्यमान महीपगणमे सकल बिधि अनुरूप ॥ भीमजा लखि तुल्य आकृति तिन्हैं भेद विहीन । सकी चीन्हि न भूप नलकों भरी संशय पीन ॥ चिन्ह जिनने लखे नलमे लखे तिनमे तौन । भई चिन्तित जानिबेकों नियत नल छबिभौन ॥ जानि कैसें परे

के है देवता नल भूप। भीमजा यहि भाँति चिन्तित भई दुःखित रूप॥ देवतनके चिन्ह वृद्धनसों सुने हे जान॥ भूमि बैठे लखतिहौं नहि एक इनमे तीन॥ बहुत भाँति बिचारि फिरि फिरि लहत नियत न एक। शरण लीजै देवतनकी धरो तब शुभ टेक॥ कियो मनसा बचनसों तब सुरनकों सु प्रणाम। जोरि अञ्जलि कम्प पूरित बचन बोली बाम॥ हंसकोहौं बचन सुनि पति कियो बरि नल भूप। सत्यसों तेहि परै हमको देखि देव स्वरूप॥ जौन मनसा बचनसों पति चहौ बरिवें आन। सत्यसों तेहि देवको लखि परै रूप महान॥ होय जौं निषधेश मेरो बिधि बिहित भर्तार। सत्यतें तेहि लखौ तौ मै देव रूप उदार॥ यथा मैं यह नलाराधन धरो पतिब्रत धर्म। सत्यतें तेहि देवको लखि परौ रूप सुपर्म॥ लोक पाल स्वरूप अपनो धरैं जो अभिराम। जानि जातें परैं मोकों नैषधेश ललाम॥ सहित करुणा भीमजाके बचन रुदन समेत। सुनत नलमें जानिके अनुराग सत्यनिकेत॥ देखिशुद्धि सुबुद्धि भक्ति सुराग नलके माह। शक्ति आपुहि देखिवेकी दई तेहि सुरनाह॥ सुरणकों तेहि लखे बिन प्रस्वेद अनिमिख नैंन। चलमान चौंसर धरे ठाढे भूमि परसत हैंन॥ पास छायाम्लान माला स्वेद रज सह गात। लखो नलकों भूमि परसें नैंन सनिमिष भात॥ देवतनकों देखि देखो भूप नलकों मर्म। भूप नैषधकों बरी तब भीमजा सह धर्म॥ डारि माला कण्ठमें फिरि किए लज्जित नैंन। छोर दुपटाको गहो नल भूपके छबिऐन॥ कियो हाहा शब्द तब जे अन्य हे सब भूप। देव ऋषि गन्धर्व बोले साधु साधु अनूप॥ भीमजा सौं कहे तब नल भूप ऐसें बैंन। देवतनकों छोडि हमकों बरो तुम छबि ऐन॥ सुनहु तातें कहहुंगी तुम करैंगे हम तौन। देहते करिहैं न मेरो प्राण जबलों गौन॥ कहे दमयन्ती सों ऐसे बचन भूप ललाम। भए दोऊ परसपर अति प्रीतिमय अभिराम॥ शरण सानस बृतिसों लखि तिन्ह ते दिगपाल। आठ बर तिन दिये नलकों भरे मोद बिशाल॥ मनोगति प्रत्यक्षदर्शन सुरणको मखमाह। दिए बर ए दोय नलकों कृपा करि सुरनाह॥ अग्नि दीन्हों प्रगटिहैं हम चाहि हौ तुम यत्र। लोक लहिहौ अन्तमें जे कहे सम्भव तत्र॥ अन्नमें रस होयगो अति करहुगे जो पाक। कर्ममें मति रहैगी थिर दियो यम मित बाक॥ वारि तेहाँ होयगो तुम चहौगे जँह भूप। बरुण दीन्हों माल जो निति रहै नूतन रूप॥ देइ बर इमि लोक अपने गए ते विदिवेश। भूप आए रहे ते सब गए अपने देश॥ व्याह कीन्हों भीमभूपतिसुताको नल साथ। कछू दिन रहि गए अपने देश नैषधनाथ॥ पाय नारी रत्न पुण्य श्लोक नैषध भूप। रमे नाना भाँतिसों सम सची सुरपति रूप॥ अश्वमेधहि आदि देकरि यज्ञ बहु दै दान। बाग बनमें रमे नल सह भीमजा सुखदान॥ भए भैमी माह नलतें सुत सुता अभिराम। इन्द्रसेन सुपुत्र कन्या इन्द्रसेना नाम॥ यज्ञकरि बहुदान दीन्हों कियो बिबिधि बिहार। भरी प्रभुसों करी रक्षित भूमि भूप उदार॥ ❊❊❊❊❊❊❊❊❊

व॰प॰ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि दमयंतीस्वयम्बरवर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ बृहदश्व उवाच ॥ * ॥ छन्दः ॥ * ॥

लखि स्वयम्बर जातहे दिगपाल सह सुरनाथ । लखो कलिकों चलो आवत मिला द्वापर साथ ॥ देखि कलिकों लगे बूझन इन्द्र ऐसें बात। साथ द्वापरके कहो कलि कहाकों तुम जात॥ होत भैमीको स्वयम्बर सुनो हम सुरनाह। जाय ताकों बरों गो मन लगो ताके माह ॥ इन्द्र हँसि तासों कहो व्हैगो स्वयम्बर तोन। लखत हे हम बरी नलकों भीमजा छबिमैान ॥ क्रोध करि तब कहो कलि सुरनाथसों इमि बैंन । देवतनके मध्य मानुषकों बरी यह नैंन ॥ दण्ड दीबे योग्य ताकों देउगो हैां दण्ड। बिहँसि बोले इन्द्र ता प्रति बचन सुनिकै चण्ड ॥ बरी भैमी ताहि आज्ञा पाय मम अभिराम । सर्वगुण संयुक्त नलकों बरै कैांन न बाम ॥ धर्मके सब भाँतिसों आचरण जाके पर्म। बेद पढि सबसाङ्ग जाके यज्ञ नियमित कर्म ॥ देवता सब नित्य जाके होतमखमे तृप्त । रहित हिंसा सत्यबादी दृढब्रतमे लिप्त ॥ सत्य धृति तप शैाच दम सम ज्ञान अचल महान। बसत जामे भूपहै सो लोकपाल समान ॥ यहि भांतिके बर पुरुषकों जो दियो चाहत त्राश। करतहैं सो मूढ अपने हाथ अपनो नाश ॥ परै गो सो जाय नर्क अगाधमे अतिमाम । गए कहि यहि भाँति कलिसों इन्द्र अपने धाम ॥ कहो तब यहि भाँति द्वापर पास कलिजुग बैंन । भ्रष्ट नलकों राज्यतें करि भीमजा हत चैंन॥लहैांगो सन्तोष द्वापर मित्र सुनऊ निदेश॥अक्षमे तुम जाय कै अब करऊ झटित प्रवेश॥ बृहदश्व उवाच॥ यहि भाँति कलि जुगपास द्वापर नियत दै बिश्वास। छिद्र लखन प्रवेशकों सो लगो बसि नल पास ॥ लहो बरहें वर्ष कलि नलमे प्रवेश स्वरूप। मूत्र करिकै चरण शैाच न कियो बिधिवत भूप॥ लगे संध्या करन जल आचमन करि निषधेश। जानि नृपकों अशुचि कलि किय भूप माँहँ प्रवेश ॥ जाय पुष्कर पास कलि तब कहे ऐसैं बैंन। द्यूतमे तुम जीतिहो नलनृपतिकों मतिअैंन ॥ सुनत कलिके वचन पुष्कर भूप गो नल पास। गयो कलि फिरि साथ ताके अक्षमे करि बास॥ बचन पुष्कर कहे नल सों बेर बेर समक्ष। आजु भ्राता करहि गे हम द्यूत तुमसों अक्ष ॥ सहो नहि आव्हान ताको भूप नैषध बीर । भीमजाके लखत नृपपण लगे धरन गँभीर ॥ हेम मणि रथ बसन भूषण लगे हारन भूप। निबिष्ट कलि नलमे परा जय लगो देन कुरूप॥ द्यूत वदसों मत्त भूपति नहिँ निवारण बैंन । सुहृदजनके सुनत हो जो महामतिको अैंन ॥ पैारजन सह मंत्रिगण सब चले भूपति पास। तथा बिधिको द्यूत सुनि करिबे निवारण तास॥ सूत भैमी सों कहो तब जाय आतुर चित्त । पैार मंत्री पैारि परहे खरे कार्य निमित्त ॥ भूप ब्यसनहि असह मान सु सजल कीन्हे नैंन । पैारजनके आगमनको कहो नृप सों

बैन ॥ सहित मंत्रिन पौरजन तो देखिबेको आय। पौरपर ह्वैं खरे भूपति लज्ञ तिन्ह हिँ बोलाय ॥ देखि करुणा भरी ताकों बारि पूरित बैंन। नही बोले भूप कलिवश भए तासों बैंन ॥ पौर मंत्री गए कहि यह नष्ट भो नलभूप। मास कैयो द्यूत पुष्करसों भयो अतिरूप ॥ बृहदश्वउवाच ॥ देखि भैमी भूपकों उनमत्त देवनमाह। शोक भयसों भरी कारज चिन्ति कै कुरुनाह ॥ द्यूत पातक जानि कै हित भूपको निरधारि। बृहत्सेना धायसों तब कहो जाय विचारि॥ अमात्य लेऊ बोलाय सब करि भूप शासन जाय। गयो हारो वचो जो धन देऊ तौंन सुनाय॥ भूप शासन मानि बोलि अमात्य अपनो भाग। पौरि पैं फिरि गए पुरजन सहित भरि अनुराग॥ भीमजै फिरि कहो तिनको आगमन सुनि भूप। नही बोले बचन कछु नहि भए मुदित स्वरूप॥ जानि कै नहि शक्यमें नल भूपकों अभिराम। गई भैमी सजल कीन्हैं नैंन अपने धाम॥ कहो भैमी बृहत्सेना धायसों हत चैंन। वार्ष्णेय सूत हि जाय ल्यावऊ भूपके कहि बैंन॥ बृहत्सेना भीमजाके बचन सुनि उठि जाय। पठै कै हित दूत सूतहि लियो वेगि बोलाय॥ भीमजा वार्ष्णेयसों तब सहित आदर बैंन। देश काल समान लागी कहन शाय अचैंन॥ तौन जानत करत हो नृप यथा तुमसों प्रीति। सो भयो बिपरीति ताकी करु सहाय सुनीति॥जात पुष्करके परत हैं जौंन चाहत तान। परत पाशे भूप नलके हारि कै से भान॥ स्वजन मंत्रीएके न भूपति सुनत बचन प्रमाण। बचन मेरो नही मानत कहति जो सुखदान॥ सूत मेरो कहो कीजै शरण मोकों जानि। होत शुद्ध न भाव मेरो बिपतिकों अनुमानि॥ जोरि ल्यावऊ अश्व रथमें भूपको प्रिय जौंन। पुत्र दुहिता सहित कुण्डिन नगरकों करु गौंन॥ सहित रथ द्वन वालकनकों भीम नृपके भौंन। छोडिके तुम तहां रहियो नतरु की जो गौंन ॥सूत पूछि अमात्य गणसों भीमजाके बैंन। लेय सम्मत चलो लै सुत सुताकों मतिऐंन॥ बेग सों रथ हांकि पहुंचो भीमनृपके धाम। इन्द्रसेन सु पुत्र कन्या इन्द्रसेना नाम॥ सौंपि कै नृपभीमकों रथसहित सूत सुजान। गो अयोध्या पुरीकों सो सूत दुखित महान॥ जाय कै ऋतुपर्ण भूपति पास पहुंचो तौंन। भयो ताको सारथी रथ पाय कै मनगौंन॥

॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ लियो पुष्कर सकल वसु अरु राज्य नलको जीति। बिहँसि पुष्कर कहो तब नल पास होय अभीति॥ रहो धन नहि धरऊ अब पण भीमजाकों भूप। भए दुःखित कहो नहि कछु चितै ताको रूप॥ क्रोध करि तब वसन भूषण देहतें सु उतारि। एक राखो वसन दीन्हों सकल तहां डारि॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि नलोपाख्याने द्यूतवर्णनोनाम नवमोऽध्यायः॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बिपुल श्री तजि चलो पुरतें निकसि छोडि निकेत । एकबसना भीमजा अनुचली बिव्हल
चेत ॥ सहित दमयन्ती रहे पुर बाहिरे दिन तीन । दियो पुस्कर नगरमे तब फेरि डौंडी पीन ॥
जाय गो नलपास जो है बध्य हमसों तौन । गए नहि नल निकट कोऊ पैारजन हे जौन ॥ रहे
दमयन्ती सहित दिन तीनि करि जलपान । छुधा पीडित होय तहतैं चले नृपति महान ॥ छुधा
पीडित भए बहुदिन मिलो नहि कछु भच्छ्य। कनक बनक सु लखे पच्छी बिपिनिमाह समच्छ॥ पास
तिनके जाय भूपति तिन्हैं भच्छ्य बिचारि । गहनकों पट छोरि कटिते दियो तिनपैं डारि॥ बसन लै
सो उड पच्छी गगणमे ते जाय । कहन लागे भूपसों यहि भांति बचन सुनाय ॥ देखि कै दिग बसन
नलकों अधोमुख धृत मैान। अच्छ हैं हम तौन भूपति तुम्हैं जीतो जौन॥बसन हरिबैं हेत आए रुचो
नहि तो रूप । जात बसन समेत बनमे देखि तुमकों भूप ॥ देखि तिनकों जानि तेई अच्छ नल मति
भ्रन। कहन भैमीसों लगे तव भूप अैसे बैंन ॥ गिरे जिनके कोपतें ऐश्वर्य्यसों हम बाम । प्राणबाको
रहो सोऊ छुधापीडित माम ॥ करैं जाकें पैारजन नहि कियो मम सत्कार । अच्छ ते व्है बिहँग मेरो
हरो बसन उदार ॥ बिषम प्राप्त कुदशाकों हम भए ते पति जौन । आपनो हित सुनऊँ हमसों
करऊ सुन्दरि तौन ॥ जात हैं बहु पथिक दच्छिण दिशाको पथ पाय । व्है अवन्ती च्छच्छवान सो
नाघि गिरि अतिकाय ॥ बिंध्यगिरि यह पयोष्णी है नदी अति सुखदान । बहुत आश्रम च्छषिणके
जहँ कन्द सुफल महान ॥ बिदर्भको यह परम पन्था कोसलाको एह । बसत आगें देश दच्छिण
भीमनृपको गेह॥भूप अैसें कहे आरत बचन दुखसों छाय । चित्तमांह बिचार करि हिय भीमजा
हि सुनाय ॥ बचन सुनि कै भूपके दृग भरे गद गद बैंन । कहन लागी भीमजा नलनृपतिसों
मति अैन॥बढो है उदबेग हियमे भएं बिव्हल गात । चिन्ति कै सङ्कल्प तुमरो कहत जो तुम बात॥
राज्यहृत बिनबस्त्र हो श्रम छुधा पीडित रूप । छोडि कैसे जाऊ बनमे एक तुमकों भूप ॥
छुधा पीडित करत चिन्तन पूर्व सुख अभिराम । तजौं कैसें बिपिनिमे व्है दुःख हारिनि बाम ॥
नही भार्य्या सदृश औषध सर्व दुखको आन । बैद्य सम ते कहत हैं जे जगतमे मतिमान ॥ * ॥
नलउवाच ॥ * ॥ कहति हो सो सत्य सुन्दरि भार्य्यासम मित्र । नही जगमे अैार कोऊ सुनऊ
सुमति पवित्र ॥ तुम्है हौं नहि त्यजो चाहत प्रिया करुन सँदेह । तजौं बरु यह प्रान मेरो देहरूपी
गेह ॥ * ॥ दमयन्तीउवाच॥ * ॥ जैान मोकों छोडिबेकी भूप इच्छा तोहि । तो बिदर्भ सुदेशकों
पथ को देखावत मोहि ॥ नही त्यजिबे योग मेरे आपु धर्मस्वरूप। चेत है हृत राबरो तुम औसि
तजि हो भूप॥ बेर बेर सु कहत दच्छिण देशको पथ जौन । भूप मेरे शोकको अति होत कारण
तौन ॥ जाय अपने पिहरकौं यह चहत जौं तुम भूप। चलैं हम तुम सङ्ग जहँ बैदर्भ नगर अनूप ॥
तुम्है पूजित करै गो बैदर्भपति सुख पाय । वहाँ बसियो भूप पूजित होय कै शुभदाय ॥ * ॥ नल

उवाच ॥ * ॥ राज्य जैसो पिताको तव तथा मेरो राज।तहाँ हम नहि जाहिंगे यहिभाँति विगत समाज॥ कियो ताकों शान्त ऐसे बचन कहि कै भूप।जौन आधो बसन पहिरे भीमजा अतिरूप॥ दोऊ पहिरे एकपट जइ तहाँ वनके माह। फिरत देखो धर्मशाला एक तहँ नरनाह॥ जाय तामें सहित भैमी कियो भूप प्रवेश। धूलि धूसर बसन बिनु अति मलिन धारे वेश॥ सहित दमयन्ती लगे तहँ करण क्षितिपर शैंन। शोय दमयन्ती गई अति अमित सुषमाऐंन। शोक बश नलको न निद्रा परी तब कुरुभूप। करैं का नहि करैं का यह बढो चिन्तारूप॥ मरण हमकों श्रेय है की भीमजाको त्याग। सहति है अति दुःखकों यह भरी मो अनुराग॥ सङ्ग मेरे नियत दुखकों लहैगी यह बाम। तजे संशय दुःखसुखके प्राप्तिमें अभिराम॥ बेर बेर विचारि कीन्हों नियत मनमें भूप। भीमजाको त्याग कीबो मोहि श्रेय अनूप॥ तेजसों नहि करी धर्षित कोउ पथमें याहि। भरी तप अनुराग मोमें पतिव्रत व्रत जाहि। भीमजाके त्यागमें मति कियो नियत नरेश। क्यों न ऐसो करै कलि है करें जामें वेश॥ वस्त्रहीन विचारि आपुहि एक वसना ताहि। लगे करण विचार भूपति वस्त्र छन्तन चाहि॥ जगे जैसें नही भैमी काटिए त्यों बास। धर्मशालाके लगे नृप फिरण चारोपास॥ धरी देखि खड्ग तेहां निसित निर्मल जौन। लेइ ताको बसन आधो काटि लीन्हों तौन॥ छोड़ि शोवत भीमजाकों चले पट लै भूप। फेरि आय जाय कै कछु दूर सकरुण रूप॥ देखि सोवत भीमजाकों लगे रोदन कर्ण। भरी रजसों परी क्षितिपर भई बिरहित शर्ण॥ धरे आधो वस्त्र क्षितिपर परी मत्त समान। जगैं कैसे रहैगी हम बिना यह सुखदान॥ हमें बिन यह सती साध्वी विपिनमें अतिमान। फिरैगी केहिभाँति जामें व्याघ्र व्याल महान॥ आदित्य आश्विन रुद्र वर अरु मरुत गण जे सर्व। भीमजा तो करैं रक्षण कृपा सहित अखर्व॥ एहिभाँति कहि कै बचन मोहित प्रियाको लखि रूप। चले कलिहृतज्ञान बनकों लौटि कै फिरि भूप॥जाय फिरि फिरि लौटि आवत भूप दोल समान। स्नेह अरु कलि दुहूनके बश भए भूप महान॥ छोडि शोवत भीमजाकों भरे करुणा माम। भए कलि बश चले वनमें भूप नल बलधाम॥ * ॥ बृहदश्वउवाच॥ * ॥ गए नल तव जगी भैमी लखो भूप न पास। बिजनबनमें चाहि चहुंदिशि भरी अतिशय त्रास॥ ॥ जयकरीछन्द ॥

चहुँदिशि लखन लगी भर्तार। दुःख शोकसों भरी अपार॥ हा नृप हा नृप कहि करि सोर। रोदन करण लगी अतिघोर॥ महा त्राससों भरी अचैंन। कहति विलाप भरे बहु बैंन॥ हिय हनि हाहा नाथ पुकारि। चहुँदिशि लखति बहत दृगबारि॥ मरी विनष्ट भई बनमाह। तुम्हैं बिना प्रियपति नरनाह॥ तुम धर्मज्ञ नाम बर वीर। वक्ता सत्य बचन गंभीर॥ बोले सत्य बचन तुम जौन। शोवत मोहि तजी तजि तौन॥ प्रिय अनुरक्त जानि कै मोहि। छोडि जात यह उचित न तोहि॥ सत्यगिरा करिवे तुम तौन॥ लोकपाल ढिग बोले जौन॥ मृत्यु न

५० होति बिदित बिनु काल । तुम बिनु हम जीवति चितिपाल ॥ भो परिहास पूर्ण यह भूप । दुःखित मोहि देखावऊ रूप ॥ रहे लतन्ह मह कहां छपाय । बोलत क्यों न पास मो आय ॥ क्रूर सकान भए तुम भूप । लखत हमारो दुःखित रूप ॥ बिलपति मोहि देखि छबिरास । आय न शान्त करत मो पास ॥ शोच आपनो हमै न भूप । तुम किमि रहि हो एक सुरूप ॥ मो बिनु छुधा तृषारत होय । वृक्षाश्रित रहि हो किमि शोय ॥ भरी शोक धरि क्रोध महान । इत उत रुदति फिरति सुखदान ॥ गिरति उठति फिरि फिरि छबिधाम । दुःखति भीति भरि रोवति माम ॥ होय शोकसों तप्त महान । कहति स्वास लैके अतिमान ॥ दियो कष्ट जेहि नलकों भूरि । रहो सो महा दुःखसों पूरि ॥ ऐसे बिलपति फिरति महान । बिपिनिमाह उनमत्त समान ॥ ऐसें रुदन करति छबिराश । गई महा अजगरके पास ॥ ग्रहण कियो तेहि अति बलवान । भीम सुताकों छुधित महान ॥ ग्रसत न शोचति आपुहि तौन । नलको शोच करति छबिभौन ॥ असर न ग्राऊ ग्रसत हो बीर । क्यों नहि धावत धारो धीर ॥ साप मुक्त लहि मति नरनाह । छुधातृषार्त बिपिनिके माह ॥ सो श्रम तो हरि है तव कौन । मोहि बिना भूपति छबि भौन ॥ तहँ मृगव्याध रहो कोऊ एक । बिहरत हिंसाको गहि टेक ॥ भैमीको सुनि रोदन तौन । आय तहां तुरित करि गौन ॥ अजगर ग्रसित देखि कै ताहि । मृगव्याधक करुणा अवगाहि ॥ निसित शस्त्र तेहि मुखमे डारि । महा सर्पकों डारो फारि ॥ अहि मुखतें गहि लियो निकालि । दमयन्तिहि जलसों प्रक्षालि ॥ आश्वासन करि देन अहार । बूझन लागो सो चरित उदार ॥ हो केहिकी मृगनैना बाम । बनमे क्यों आई छबिधाम ॥ महत कष्टकों कैसें प्राप्त । भई बिपिनिमे बिरहित आप्त ॥ दमयन्ती सुनि ताके बैन । सब वृतान्त कहो मतिऐन ॥ आधा पट पहिरे छबिधाम निबिड नितम्ब पयोधर माम ॥ सुकुमारी सब अङ्ग अमन्द । आनन लशतपूर्ण ज्यों चन्द ॥ कुटिल भौंह खञ्जनसे नैन । मधुर सहास सुधासे बैन ॥ ऐसो देखि व्याध सो रूप । भयो सकाम सुनऊ कुरुभूप ॥ सुनि सस्नेह बधिकके बैन । समाधान पूर्वक मति ऐँन ॥ भयो जानि तेहि कामासक्त । मानरु भाव देखि कै व्यक्त ॥ तीव्र रोषसों भरी महान । भई ज्वालसी ज्वलित सुजान ॥ भैमीके धर्षनकों क्रुद्ध । पापी बधिक कियो मति उद्ध ॥ जैसे भरो धपान उमङ्ग । परो अनलमे चहत पतङ्ग ॥ भरी क्रोध भैमी अतिमान । दयो बधिककों शाप महान ॥ नलतें अन्य पुरुष जौं पर्म । चिन्तन कियो न मन वच कर्म ॥ तो यह अधम बधिक दुखदान । गिरो भूमि पर बिरहित प्राण ॥ * ॥ बृहदश्व उवाच ॥ * ॥ हनि मृगव्याध हि कियो पयान । दमयन्ती बनमे अतिमान ॥ झिल्लीधुनिसों नादित सर्ब । सिंह व्याघ्र जँह बसत अखर्ब ॥ जामे पक्षिणको समुदाय । तस्कर म्लेच्छ बसत अतिकाय ॥ नाना भाँतिनके तरु जान । निबिड बढे तम गिरिसे तौन ॥ लसत धातुमय गिरिबर माम । दरी कुञ्ज अद्भुतके धाम ॥ सर सरिता बापी जलरास । बनबासी

बऊ असुर पिशाच ॥ पल्लल निर्झर अद्भुत रूप । बनचर पशु बऊ लखे अनूप ॥ भरी तेजसों धारे धीर । ढूढति फिरति तहाँ नलबीर ॥ भैमी डरति न लखि बनरूप । पतिदुखसों दुःखित अति भूप ॥ बैठी सिला उपरि सुखदान । भरी कष्ट शिखि शिखा समान ॥ * ॥ दमयंत्युवाच ॥ * ॥ कहाँ गए नैषधपति मोहि । बनमे छोडि उचित नहि तोहि ॥ विपुल यज्ञ करि मिथ्या बैंन । सो हमसों बोले सतिऐंन ॥ कहे बचन जे मेरे पास । सत्य तौन कीजै छबिरास ॥ तब मम निकट कहे जे हंस । बचन विचारऊ तौन प्रशंस ॥ धरें तुलापर सत्य सुबेद । परिहि नही समताने भेद ॥ ताते करऊ सत्य सो बीर । कहो जो मेरेपास गँभीर ॥ नष्ट भई हम हा नल भूप । बोलत हमसों क्यों न अनूप ॥ भक्षत हमै मृगादन एह । जौं तुम रक्षत नहि करि स्नेह ॥ नहि तुमते मेरे प्रिय आन । करऊ सत्य जो कहो सुजान ॥ अर्धाम्बर धारे छमरूप । बिलपति सम अनाथ हो भूप ॥ रुदति मोहि रक्षऊ नरनाह । एकाकिनी सती बनमाह ॥ हम भाषति तुमसों नल बीर । तुम हमसों कछु कहत न धीर ॥ गए कहां बूझौं कोहि पाश । तुमकों हों दुःखित सुखराश ॥ तुमको वेढे सो वत जौंन । आयो देखि कहै सो कौन ॥ बिपिनराज सार्दूल महान । तो सोहें आवति सुखदान ॥ पति ढूढति हों दुःखित दीन । करु आश्वासन मो बलपीन ॥ जौ तुम नलको देखो होय । तौ मोसों कहु दुःखित जोय ॥ नतरु खाय मोकों बरबीर । मोचऊ यहि दुखतें गम्भीर ॥ स्वादु सलिल यह सरिता जौंन । समाधान मो करिहै तौंन ॥ यह गिरि शृङ्ग सहित अति मान । बिपिनि केतु समतानु महान ॥ गिरिवर पह पूछौगी जाय । समाचार नलको सुखदाय ॥ हे गिरिराज सु तुम्हे प्रणाम । आई तो दुहिता सम आम ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * * * *

भूपति भीम विदर्भपति धर्मधुरन्धर आम । तासु सुता जानऊ हमै दमयन्ती है नाम ॥

स्वसुर हमारो निषधपति बीरसेन बरबीर । ताको सुत नलबीर वर धर्मधुरन्धर धीर ॥

पुण्यश्लोक प्रसिद्ध सो भूप रूप अभिराम । भार्याहौं ताकी बिदित दमयन्ती मम नाम ॥

आईहौं गिरि तो निकट त्यक्त सुप्रिय भर्त्तार । जानऊ दीन अनाथ मोहि पति बिनु दुखित उदार ॥

ढूढति मम पति नृपतिकों दीर्घबाऊ बरकाय । लखो होय जौं आपु गिरि हमकों देहु बताय ॥

एकाकी बनमे फिरति बिव्हल दुखित महान । जानऊ गिरिवर करि कृपा मोको सुता समान ॥

सत्य सन्ध धर्मज्ञ तुम बीर धीर निषधेश । जौं मोकों या बिपिनिमे दर्शन देऊ नरेश ॥

स्निग्ध मेघस्वन सम भरे प्रीति परम सुखदान । कब सुनिहौं तो बचन हम नल नृप अमृत समान ॥

हे वैदर्भी आय कब कहिहो मो प्रति बैंन । श्रुति सुखकर सब शोकहर नाथ कृपाके ऐंन ॥

करि प्रलाप गिरिके निकट दमयन्ती इमि भूप । उत्तरदिशिकों उठि चली भरी शोक अतिरूप ॥

चली तीनिनिशिदिवस तब तहां बिलोको जाय । भृगु बशिष्ठ सम ऋषिन्हको आश्रम अतिसुखदाय ॥

व०प०

वायुभक्ष अपभक्ष हैं कोऊ पर्णाहार । तेजपुञ्ज तपधाम तहँ बैठे लसत उदार ॥
पहिरे बल्कल अजिन धरि जटाजूटको भार । रम्य तपस्विनको लखो मण्डल परम उदार ॥
समाधान करि चित्तको मुनि मण्डल लखि तौन । किय प्रबेश तँह भीमजा तेजपुञ्ज छबिभौन ॥
बन्दि तिन्हैं ठाढी भई जोरें पाणि बिनीत । शुभ आगम ताको कहो तब मुनिवरन्ह सप्रीत ॥
भैमीको पूजन कियो यथाउचित तपऐन । फेरि बैठिबेको कहो कृपा सहित बर बैन ॥
मुनि दमयन्तीसों कहो कहा करैं तो कार्य । भैमी बूझो मुनिनसों कुशल यथास्थित आर्य ॥
मुनिन्ह कुशल कहिकै कहो को तुम हौ छबिधाम । कहा कियो चाहति तजौ शोक लहउ बिश्राम ॥
बन देवी कै देवता या गिरिकी छबिऐन । कै तुम दीन स्वरूप धरि आई कहिए बैन ॥

॥ * ॥ दमयन्त्युवाच ॥ * ॥

हम हैं मुनिवर मानुषी कहति सबिस्तर तौन । भीमबिदर्भनरेशकी कन्या हम तपभौन ॥
निषधाधिप नल भूपकी भार्या हौं अभिराम । धर्मधुरन्धर बीर बर जेता पर पुर ग्राम ॥
छली कितव एक द्यूतमे ताको करि आह्वान । सत्य धर्म नल नृपतिको जीतो राज्य महान ॥
ताकी मै भार्या बिदित दमयन्ती मम नाम । ढूढति ताकों फिरति गिरि गहन माँह तपधाम ॥
रम्य रावरे तपोबन नलनृप धारक धर्म । आयो होय तौ कहि करौ समाधान मो पर्म ॥
कछुदिनमे नहि लखौंगी जौं नलनृप अभिराम । देह त्यागि कै करौंगी स्वर्ग गमन तपधाम ॥
जिंए हमारे ग्रर्थका मिलै बिना नल भूप । व्यर्थ सहौंगी दुःखकों परी शोकके कूप ॥
करति बिलाप बिलोकिकै दमयन्तिहि अभिराम । दमयन्तीसों कहन इमि लागे ते तपधाम ॥
कछू दिवसमे होयगो आगे तो कल्याण । योग दृष्टि सों देखि हम तुमसों कहत प्रमाँण ॥
देखउगी नल नृपतिकों भरो मोद छबिभौन । ताके सङ्ग फिरि करउगी राज्य तिहारो जौन ॥
दमयन्ती सों बचन इमि कहि करि कृपा महान । भए तपस्वी सब सहित आश्रम अन्तरध्यान ॥
दमयन्ती बिस्मित भई अद्भुत देखि चरित्र । कहा भयो आश्रम गए कहँ मुनि सदृश सबित्र ॥
शैल सरित बन कहँ गयो फूलो फरो महान । भयो स्वप्न मोकों कहा रही शोचि सुखदान ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

शोच करिकै भई बिबरण दीन दुखित महान । और चितिकों गई करत बिलाप सो अतिमान ॥ देखि बिटप अशोक फूलो महत मधुकर ऐन । कहन ता प्रति लगी ऐसें भरे लोचन बैन ॥ करु बिशोक अशोक मोकों नाम सदृश अनूप । कहूँ बनमे फिरत देखो कुशलसों नल भूप ॥ बोलि ऐसे गई दारुण देशमे छबिधाम । तहाँ देखो शैल सरिता बिपिनि सरबर ग्राम ॥ तहाँ ढूढति फिरी नलको करति रुदन बिलाप महाते बहु दूरि आई भरी शोक उताप । तहाँ देखो काफिला गज तुरय बहु जन मान ॥ रहो उत्तर नदीको सो भरो सलिल महान । चली तिनके पास भैमी मनुजगण घन जोय ॥

कियो जाय प्रवश तिनमे महाहर्षित हाय ॥ धरें आधे वस्त्रकों शोकात उन्मत रूप। भरे रज कच मलिन विवरण देखि ते सुनु भूप ॥ लखत ताकों भजे कोऊ मनुज भय भरि भूरि।सोर लागे करन कोउ लखत चिन्ता पूरि॥कोऊ लागे हँसन कोऊ करन निन्दा तास।दया करिकै लगे बूझन कोऊ भैमी पास॥कौंन हो तुम कौंन कोइन फिरति ढूढति काहि।मानुषी हो कहा हम सब डरत तुमको चाहि ॥ देवता यहि बिपिनि गिरि की आपु हो छबिधाम। सत्य कहिए जानि हमकों शरणगत अभिराम॥ किधौं यक्षी राक्षसी कै मानुषी बर बाम। करऊ सो हम जाहि ज्यों। सब कुशल सों लहि काम॥ काफिलाके जननके इमि सुनत भैमी बैंन। कहन ऐसें लगी तिनसों भरी दुखमति ऐंन॥ काफिलाके जुवा बालक थबिर हैं जन जौंन। सहित नेता हमे जानैं मानुषी सब तौंन॥ पिता मम सुविदर्भपति निषधेसहैं भर्त्तार। फिरति ढूढति ताहि हौं नल नाम भूप उदार ॥ ताहि जानत होऊ तुम तौ देऊ छिप्र बताय। नाम नल नरव्याघ्र अरिहा परम सुन्दरकाय॥ रहो जो शुचि नाम नायक काफिलाकौ जौंन। मनुज नहि नल नाम कोऊ लखो हम छबिभौंन॥ सिंह कुञ्जर महिष मृग यहि बिपिनि माह अनूप। लखत आए नही देखो कहूँ मानुष रूप॥ मिली तुमही मानुषी वनमे न तरु सब बन्य। मणिभद्र होउ प्रसन्न हमकों यक्षराज सुधन्य॥ काफिला पति बणिक सों तब कहे भैमी बैंन। जाऊगे तुम कहाकों सब कहउ हे मतिऐंन॥ ॥ * ॥ वणिकपतिरुवाच ॥ * ॥ चेदिराज सुबाऊके पुर जाहिगे हम सर्व। गयो चाहत शीघ्र लेहा लाभ देत अखर्व ॥ काफिला पतिके बचन सुनि भरी मोद ललाम। चेदिपुरकों चली तिनके साथ सो छबिधाम॥चलो बनमे बऊत दिन सो बणिकको समुदाय।लहो सरवर भद्रनामक बसे तेहाँ जाय ॥ बऊत इन्धन घास लखिकै सलिल अमल अनूप ॥ पाय नायकको सुआज्ञा बसे सब तँह भूप॥ काफिला जब सोयगो सब श्रमित निद्रा पाय। अर्ध निशिमे तहाँ आयो बन्य गज समुदाय ॥ पियन जल तहँ देखि गज हे काफिलाके जौंन। तिन्है मारन हेत दौरे बिपिनि कुञ्जर तौन॥ रहे जे पथमाह सोवत मनुजके समुदाय। मरदि मारे गए ते लगि कुञ्जरनके पाय॥ भयो हाहाकार चऊँदिशि काफिलामे सोर। भजत कोऊ गिरत कोऊ भरे भयसों घोर॥ मनुज ऊड अनेक मारे द्विरद दुर्मद सर्व। बचे ते बन ओर भाजे भरे भीति अखर्ब ॥ दैव बश यहि भाँति बनके द्विरद आय अमान। मरदि मारो काफिला सो सुनऊ भूप सुजान ॥ रन ते सब बियरिगे हे बणिक लादे जौंन। कहत भाजे लेउ जाकों जौन भावै तौन॥ जनक्षय यहि भातिको जब भयो भूप महान। जगी भैमी भरी भयसों सोर सुनि मतिमान ॥ गए जब गज बचे जे हे काफिलाके लोग। कहन लागे कौंन से यह पापको भो भोग ॥ मणिभद्रकों नहि कियो पूजन कहन लागे सर्व। भयो तातें आय हमकों प्राप्त कष्ट अखर्ब ॥ धनदको गणनायको नहि कियो पूजन आदि। कहैं कोउ नहि शकुन पायो चले हे जब लादि॥ कहैं कोउ उनमत्त रूपा मिली

नारी जौन। कियो है यह पाप तेही मानुषी नहि तौन ॥ तेही माया विरचि दारुण कियोहै संहार। राक्षसी कै यक्षिणी कै प्रेतिनी नहि दार ॥ पाय ताकों मारिहैं वज्र भांतिसों हम सर्व। डारिकै तृण धूरि तापैं लकुट लेइ अखर्व ॥ भीमजै यहि भांति के सब सुने तिनके बैंन। गई वनमे भाजिकै भय भरी अतुल अचैंन ॥ जायकै तहँ करण लागी विविधि भांति विलाप। भयो मोपैं विधि विरुद्ध सो कौन सो लहि पाप ॥ अन्त मेरे कष्टको अब भयो परत विचारि। और यातैं देयगो विधि कौनसो निरधारि॥ मिलो निर्जन देशमे यह हमे जन समुदाय। तौन मेरे भाग्य वश वन गजन मारो आय। प्राप्त काल विना न कोऊ मरत है यह सत्य। मरी मै नहि पायकै क्यों गज विमर्दन अत्य ॥ लोकपालनकों स्वयम्बर मे वरी नहि जौन। नियत तास प्रभावतें यह लही हौं दुखभान ॥ यहि भांति विविधि विलाप करिकै भीमजा अभिराम। गई तहँ द्विज वरण तामे बचे जे तपधाम॥ चेदिपुरकों गई तिनके साथ अचिर अनूपा होत संध्या जहां बसत सुबाहु नामक भूप। धरैं आधो बसन भैमी कियो सुपुर प्रवेश। दीन कृश उनमत्तसी लखि तास पुरजन बेश ॥ धरि कुतूहल लगे पीछें पौर बालक बाम। गई तिनसह भीमजा जहँ भूपको हो धाम॥ राजमाता देखि ताकों भरी करुणा रास। बोलि धात्रीसों कहो यहिं ल्याउ मेरे पास ॥ देत हैं जन क्लेश चाहति शरण दुःखित बाम। रूप याको करैगो सु प्रकाश मेरे धाम॥ श्री सदृश उनमत्त बेषा भरी रूप महान। जाय धात्री ताहि ल्याई सौधमे सु सुजान ॥ तहां भैमीसों सो बूझन लगी ऐसे बैंन। कान हौं तुम कौनकी दुखभरी सुषमाऐन॥ मानुषी तुम मोहि जानो धरे पतिव्रत धर्म। राजसेवक जाति मेरी करति सेवा कर्म॥ लायकै फल मूल संध्या भई जहं तहं बास। रहो मो अनुकूल भर्ता सकल गुणको रास॥ रहतही पति पास छाया सदृशहौं सुखदान। भयो दैवाधीन तासों अक्ष द्यूत महान ॥ हारिकै सरबस्व धारे एक बसन सो वीर। चलो बनकों चली ताके सङ्ग हौं धरिधीर॥ कारणान्तर पाय बनमे बसन ताको तौन॥ गयो सो उनमत्त नग्नस्वरूप भो छविभौन। बहुत दिनमे भई निद्रा स्ववस हौं श्रम धारि। छोडि मोकों गयो पतिलै बसन आधो फारि ॥ महावनमे फिरी ढूढत हौं न पायो ताहि। भरी करुणा राजमाता ताहि बिलपति चाहि॥ कहो बसु मो निकट तामे प्रीति मोहि उदार। ल्याइहैं मम मनुज तेरो ढूढिकै भरतार॥ नतरु इत उत फिरत इतहीं आइ है करि गान। बसत इतहीं लहौगी भर तारकों तुम तौन ॥ राजमाताके बचन सुनि कहे भैमी बैंन। करउ नित्य निबन्ध इतनो बसौं तो छविऐंन ॥ उच्छिष्ट भोजन करौंगी नहि धोइ हो नहि पाय। बोलि हो नहि और काहू पुरुषके ढिग जाय ॥ और चाहै मोहि कोउ दण्ड वध्य सो तौन। जाहिं मो भर्तार ढूढन सुहित ब्राह्मण जौन॥ होय ऐसो नियम तो हो बसों तुम्हरे पास। न तरु मेरो बास इत नहि होयगो मतिरास ॥ कहो तासों राजमातैं सुखी ह्वै इमि बैंन। कहतिहो सो करौंगी सब बसऊ इत छबिअन ॥ राज

जननी भीमजासें बोलि यों अभिराम । कहो दुहिता पास ऐसें जो सुनन्दा नाम ॥ याहि सैरंध्री बिचारऊ तुल्य वय मतिमान। सखी थारी होय गो यह भरी रूप महान ॥ लेय भैमीको सुनन्दा गई अपने धाम। रही दमयन्ती सुपूजीत तहां मोदित माम॥ *❁*❁*❁*❁*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि नलोपाख्याने दमयंत्या चेदिपुरप्राप्तिवर्णनोनाम दशमोऽध्यायः॥ *❁*❁*❁*❁*❁

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तजि दमयन्तीकों नल भूप । चले बिपिनमे दुःखित रूप॥ लखो लगो दावा वनमाहँ। सुनो शब्द यह तह नरनाह ॥ पुण्यश्लोक धाव नल बीर। डरऊ न मोहि उबारऊ धीर॥ दावामध्य भूप नल जाय। देखो तहां नाग अतिकाय ॥ करैं कुण्डली अचल समान। बैठो भरो सो भोति महान॥ बोलो नाग सो करि परनाम । नल भूपतिसों बचन ललाम॥ हों कर्कोटक नाग अनूप लहो शाप नारदसों भूप॥ कछु अपराध पाय तपधाम। ऐसें कहो क्रोध करि साम॥ रहो इहां तुम अचल समान। जब नल नृप आई बलवान॥ तुम्है लेय जाइहि थल और । तब तोहि तजी शाप अहिमौर ॥ इस मुनि शाप स्ववश अतिरूप। पदभरि चलिबे सक्य न भूप ॥ तुम्हैं श्रेय देहैं सुखदान। मो रक्षा करु नृप बलवान॥ सखा होहिगे हम तो भूप। मो सम नाग न और अनूप॥ हम लघु होत बिलोकु समक्ष। मोहि लेय कै भूपति रक्ष॥ यों कहि भयो अँगुष्ट प्रमान। रहो जो सो नागेन्द्र महान॥ ताहि लेइ कै चलो नरेश। सो जहँ दाव विवर्जित देश॥ मोहि तजत यह भूप महान। जानि नाग बोलो मतिमान ॥ गणत चलऊ अपने पद भूप । देहौं श्री पद पाय अनूप ॥ गणत चले पद नल बडभाग। दश जब कहो दशो तेहि नाग॥ दशत मात्र नलरूप महान । होय गयो सब अन्तरध्यान ॥ देखि आपनो बिकृत स्वरूप । खडो रहो बिस्मित ह्वै भूप॥ स्वस्वरूप धारे नागेश । ताकों देखो निषधनरेश ॥ तब कर्कोटक बोले बैन। भूपतिसों अति दायक चैन ॥ हम तो हरो सु आतँ रूप । तुम्हें न चीन्हैं कोऊ भूप ॥ जेहि छल करि दिय तुमकों दुःख। सोमो विषवश लहो न सुख॥ मोविष जबलों तजो न काय।तबलों सो रहि है दुःख पाय ॥ बिन अपराध छलो जेहिँ तोहि। तासों रक्षण कोबैं मोहि॥ दन्तिनसों भय तुम्हैं न भूप। सो प्रसाद यह पाय अनूप॥ चारिवर्ण ते तुम्हैं न भीति। लेहो शत्रु समरमे जीति॥ जाऊ इहांतें कहत ललाम। बाऊक सूत आपनो नाम॥ है ऋतुपर्ण निकट बर भूप । जानत अक्ष हृदयको रूप॥ पुरी अयोध्याको पति बीर। है इक्ष्वाकुबंशमे धीर॥ ताप जाऊ बेगि करि गौन। ह्वैहै मित्र तिहारो तौन॥ देहै अक्ष हृदय सुखदाय। अश्व हृदय सो तुमसों पाय ॥ अक्षहृद

रूहौ जब बीर । श्री समृद्धि तव मिली गँभीर ॥ ससुत सदार मिलौतो राज । शोक करऊ मति सहित समाज ॥ बचन सत्य यह मेरे भूप । हरो जो हम तो अनुपमरूप ॥ स्वस्वरूप लखिबेके काम । स्वर्ण हमारो करि अभिराम ॥ बसन देत यह लीजे तौन । याहि ओढिहौ जब बलभौन ॥ तब तुम लखि हौ अपनो रूप । सत्य बचन ए मेरे भूप ॥ दे द्वै नृपकों बास ललाम । गयो नाग सो अपने धाम ॥ चलो तहाँते तब निषधेश । ऋतुपर्ण पुरीमे कियो प्रबेश ॥ दशए दिवश जाय तहँ भूप । देखो नृपऋतुपर्ण अनूप ॥ मिलि तासों कहि बाऊक नाम । सूतकर्ममे अति अभिराम ॥ अश्व न बाऊत मो सम और । जगतमाह सुनु नृपशिरमौर ॥ पाककर्ममे परम प्रवीन । हम जानत सब शिल्प अहीन॥जान होयगो दुस्तर कर्म । हम सब तौन करैंगे पर्म ॥ ऋतुपर्णउवाच ॥ बाऊक बसऊ हमारे पास । तुम करिहौ सब हो मतिरास ॥ सीघ्र जानपर हमकों प्रीत । करऊ तथा तुम तुरग बिनीत ॥ अश्वाध्यक्ष करत करि प्रेम । मासिक अयुत लीजिए हेम ॥ वार्ष्णेय सु जीवन हैं जौन । तो स्वाधीन रहैंगे तौन ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऐसे सुनि ऋतुपर्णके सादर बचन अनूप । जीवन अरु वार्ष्णेय सह बसे तहां नल भूप ॥
दमयन्तीको स्मर्ण करि तहँ बसि नल नरनाह । पउत पद्य यह लहि निशा बढे बिरह तनमांह ॥
क्षुधा पिपासा आर्त कहँ करत होयगी सैन । तौन मन्दको स्मर्ण करि आश्रित काके ऐन ॥
सुनि प्रतिसंध्या नल बचन बोलो जीवन बैन । करत शोच तुम कौनकों हे बाऊक मतिऐन ॥
शोचत जाकों नित्य सो कहो कौनकी बास । मन्दभाग्य वह कौन है पुरुष कहो मतिधाम ॥

॥ * ॥ नलउवाच ॥ * ॥

रहो सुन्दरी जौनकी तास अनृत सब बैन । पाय कछू कारण तजी ताहि कुमतिके ऐन ॥
मन्दबुद्धि तजि ताहि व्है दुखित भ्रमत बऊदेश । श्लोक एकगावत रहत लहि निति निशा प्रवेश ॥
सकल महीमे भ्रमत सो कऊ जीवन कछु पाय । ताहि करत अस्मर्ण सो तहां बसत दुखकाय ॥
परे दुःख बनमे गई सङ्ग सुनारी जौन । ताकों तजि सो जियत है यातें दुस्तर कौन ॥
बाला एक अनभिज्ञपथ बिपिनि योग्य नहि तौन । क्षुधा पिपासाक्रान्तको दुस्तर जीवन जौन ॥
सिंह व्याघ्र सेवित बिपिनिमे तजि ऐसी बाम । मन्दभाग्य मतिहीन सो सूत करै यह काम ॥
ऐसें करि नैषधनृपति दमयन्ती अस्मर्ण । करत बास अज्ञात है जहँ भूपति ऋतुपर्ण ॥

॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥

नष्ट राज्य नलनृपतिको महिषी सह बनगौन । भीमनृपति सुनि व्है दुखित करि बिचार मतिभौन
ढूंढनकों दीन्हें पठै ब्राह्मण सुहित अनेक । तिनसों ऐसे बचन कहि दै धन बऊ सबिबेक ॥
दमयन्ती नलनृपतिकों ढूढऊ चऊदिशि जाय । देखि आइ है देउँगो ताहि सहस्र सु गाय ॥
तिन्हें लेआवै ग्राम तेहि देहौं नगर समान । यह सुनि कै चऊदिशि चले ढूंढन बिप्र सुजान ॥

राज्य नगर पुर गिरि गहन ढूंढत फिरत अखर्ब । कहूं नपावत नृपतिनल अमित भए द्विजसर्ब ॥ ३०५०
सुदेव नामा बिप्र बर चेदिनगरमे आय । भैमीकों देखो सु तेहि भूपभौनमे जाय ॥
पुण्यकार्य्य हो भूपके तहँा सु नन्दा साथ । जाय सुदेव लखी तहँा भैमी बिरहित नाथ ॥
मलिन बेष धारें लखी द्विज सुदेव इमि ताहि । धूम धारमे परति है अग्निशिखा जिमि चाहि ॥
ताहि देखि अति मलिन कृश मनमे कियो बिचार । है दमयन्ती नियत यह लक्षण भरी उदार ॥
भूप कहो हो रूप जो सो यामे सुखदान । धन्य भए हम यह लखी भैमी रमा समान ॥
पूर्णचन्द्रसे बदनसों दशदिशि करति प्रकाश । दीप शिखाशी देह है भरी सु लक्षण जास ॥
दुष्कर कीन्हो कर्म नल कियो जो याको त्याग । देह आपनो धरै गो कैसें सो बड भाग ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

देखि याको दुःख सो मन होत दुखित महान । दुःखके यह पार कैसें जायगी सुखदान ॥ पाय कै नल राज्य यासो करैंगे इमि प्रीति । भ्रष्ट राज्य महीप जैसें पाय भूमि सुनीति ॥ तुल्य हैं बय शील कुलतें भूरि भारें धर्म । योग्य भैमी भूप नल नल योग्य भैमी पर्म ॥ समाधान सु हमें याको उचित करिबो भूरि । दुःख देखो नही कबहूँ रहो सो दुख पूरि ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ ताहि लक्षण भरी सबबिधि देखि कै निरधारि । गयो भैमी निकट बिप्र सुदेव बुद्धि बिचारि ॥ बिप्र नाम सुदेव मेरो सुनहु भैमी बैंन । सखा भ्राताको तिहारे जानिए मतिअैंन ॥ भीमनृपको पाय शासन तुम्हें ढूढन हेत । इहां आयो तुम्हैं देखत भरो आनद चेत ॥ कुशल हैं तो पिता माता सहित भ्राता सर्ब । सुता सुत तो कुशलहैं तहँ भरे मोद अखर्ब ॥ दुखितहैं सब बन्धु तो दुख समुजि कै अतिघोर । बिप्र सहसन्ह फिरत हेरत तुम्हैं चारोओर ॥ जानि बिप्र सुदेवकों करि भीमजा सनमान । लगी बूझन क्रमहिते सब बन्धु बर्ग सुजान ॥ लगी रोदन करण भैमी शोकसों अति पूरि । लखि सुनन्दा ताहि रोवत भरो दुखसों भूरि ॥ रुदन सैरंध्री करति चलि कहो जननी पास । बिप्रके ढिग जाय याकों जानिए मतिरास ॥ चेदिपतिकी तहँा भार्य्या सुनत आई छिप्र जहां भैमी रही सहित सुदेव नामक बिप्र ॥ बोलि बूझो बिप्रसों इमि राजमातैं बैन । सुता किन को भारजा यह कैांनको छबिअैंन ॥ बन्धुसों भर्त्तारसों यह भई कैसें नष्ट । कहो हमसों तैांन द्विज बिस्तार सह सुस्पष्ट ॥ बिप्र सुनिकै राज माताके सु अैसे बैंन । कहन लागो बैठि सुखसों यथा क्रम मतिअैंन ॥ * ॥ सुदेवउवाच ॥ * ॥ भीम नाम बिदर्भपतिकी सुताहै यह पर्म । नाम दमयन्ती सु याको रूपराशि सुधर्म ॥ निषधपति हो बीरसेन महीप जो बरबीर । पुत्र ताको भूप नल धुर धरमधारक धीर ॥ भार्य्या नल भूपकी यह भरी सुगुण समाज । जीति भ्रातैं लियो ताको द्यूतमे धन राज ॥ गई दमयन्ती सुनृपके सङ्ग बनमे एक । खोज तिनको नही पायो कहू काहू नेक ॥ फिरत हेरत बिप्र सहसन्ह भूमिमे चहुँपास । मिली सो तव कृत्यकाके धाममे

क०प०छबिराम ॥ चिन्ह है भ्रूमध्य याके समा ललित ललाम। लखो सो हम जैल सूदो प्रभामय छबि धाम ॥ चिन्ह भूत बिरञ्चि बिरचो भाग्य कारक सर्व। अग्नि जानोजात जैसें धूमसाह अखर्व ॥ सुनत बचन सुदेवके लै कै सु नन्दा नीर। भालधोय सुतिलक देखो जोतिजाल गँभीर ॥ लगी रोदन करण सो लखि गोदमें ले ताहि। राजमाता सह सुनन्दा मोदकों अवगाहि ॥ सुदाम्न भूप दशार्णपति जो भरो गुण अवदात। सुता ताको दोय हम अरु दूसरी तो मात ॥ भीमकों सो दई मोहि सुबाहुकों अभिराम। तोहि देखो बाल्यमें सुदशार्ण पतिके धाम ॥ यथा भैमी गेह है तो तथा मेरो धाम। कहत भैमी लगी तब कर जोरिकै अभिराम॥ अज्ञातहूँ हम रही सुखसों अम्ब थारे गेह। सर्बथा लहि मोद रक्षित भई लहित सनेह ॥ बहुत दिन मोहि भये बिछुरैं जन निसों अभिराम। चहति हौं अब लखों ताकों महत मो मनकाम ॥ बसत मेरे तहां बालक जननि जनक बिहीन। देखिबेकी तिन्हैं मोकों लालसा अतिपीन ॥ जो सु मेरो चहति हौ प्रिय कियो अति सुखदान। तौसु अब बैदर्भपुरकों जात दीजे जान ॥ कहि तथास्तु सुमातभगिनी पुत्र शासन पाय। सहित सेना दिव्य दीन्हों सुखद जान मगाय ॥ बिदा कीन्हों राजमातैं देइ धन अभिराम। बन्धुगण सब आय पूजन कियो तास ललाम ॥ गई सो बैपुरदर्भकों छिप्र भैमी भूप। कुशलसों तहँ जाय देखो बन्धुवर्ग अनूप ॥ पिता माता सहित भ्राता सुता सुत अभिराम। कुशलसों सब जाय देखे भरी मोद ललाम ॥ किये पूजित देव ब्राह्मण बिबिधिबिधिसों पर्म। दियो बिप्र सुदेवकों गो सहस भूप सधर्म ॥ सुताकों लखि दए सानद ग्राम सधन महान। रही भैमी निशामें तह जननि पास सुजान ॥ बिश्राम लहिकै जननिसों इमि कहे भैमो बैन। चहति जीवन सहित मोको सुनहु तौ मतिऐन ॥ यत नलके आनिबेको करहु तौ मतिमान। बचन सुनि कै सुताके सो भई दुखित महान ॥ अश्रुपूरित नैन आइ भीमनृपके पास। कहे ऐसें बचन नृपसों भरी शोक प्रयास ॥ करति दमयन्ती सु पतिको शोच भूप महान। छोड़ि लज्जा बचन हमसों कहे प्रगट सुजान ॥ करैं नलके हेरिबेमें यत नृप तो चार। सुनत ताके बचन नृप द्विज लए देखि उदार ॥ चहूँदिशिकों बिप्र सहसन दिए भूप पठाय ॥ चले ते चहुँ ओरकों नृप भीमशासन पाय ॥ गए दमयन्ती निकट तिन कहो हम सब जात। कहो भैमी द्विजनसों यह बचन अति अवदात ॥ जाहु तुम जेहिदेश पुरमें पाय जन समुदाय। तहाँ कहियो बचन यह हम देति जौन सिखाय ॥ गए कहँ लै कितव आधा बस्त्र मेरो फारि। छोड़ि शोवति बिपिनिमें प्रिय प्रियाकों हित हारि ॥ ताहि देखो यथा तुम सो तथा है बर बाम। रहति आधाबसन धारें चहति तोहि ललाम ॥ शोकसों सो भरी रोवति रहति निशि दिन भूप। ताहि उत्तर दीजिए सुनि कृपा सहित अनूप॥ कृपा जातें करैं ऐसे और कहियो बैन। भरण पालन करै सो पति कहत हैं मतिऐन॥ करे ते तुम त्याग क्यो धर्मज्ञ व्है कै बीर। ख्यात प्राज्ञ

कुलीन हो तुम दयावान गँभीर ॥ भए निर्दय आपु मेरे भाग्यको वय तौंन । करऊ अब नर सिंह मोपैं कृपा आनदभौंन ॥ वचन सुनि यह रावरो नर देइ उत्तर जान। विप्र ताकों जानि यो नल भूप है नर तौंन ॥ कहै जो सो वचन हमसों तौन कहियो आय । धनिक निर्धन होय कै सु अशक्त शक्त लखाय ॥ जानियो करतव्य ताको बोलि ऐसे बैंन। सहित आदर बिदा कीन्हें द्विजनकों मतिऐंन ॥ गए ब्राह्मण चहूँदिशिकों नगर पुर बनबाग। घोष आश्रम सरित गिरिबर रहै जौंग तडाग॥ तौंन भैमीको वचन तहँ तहाँ कहत सुनाय । लहत नहि नल नृपतिकों द्विज भए सश्रम काय ॥ * ॥ वृहदश्वउवाच ॥ * ॥ पर्णद नामक विप्र सो बहु दिननमें फिरि आय। कहन भैमी सों लगे यहि भाँति वचन सुनाय ॥ गयो खोजत नलनृपतिकों कोशलापुर माँह। कहो बचन सुनाय तो ऋतुपर्ण जहँ नरनाहँ ॥ नहो उत्तर दयो काहूँ सभाजन सह भूप। चले हम तब बिजनमें नर मिलो कुत्सित रूप ॥ नाम बाहुक सारथी ऋतुपर्णको है तौंन। पाकमें अति निपुण बाहक शीघ्र स्यन्दन गौंन॥ स्वास फिरि फिरि लेय रोदन लगो करन महान। बूझि हम सों कुशल ऐसें लगो कहन सुजान ॥ बिपतिहूँमे करैं रक्षण कुलस्त्री कुलधर्म। करैं रक्षण आपु अपनो जीति स्वर्ग सधर्म ॥ भिन्न भर्तासों करैं नहि कोप जे बरबाम। चरित कवच सुप्राण धारण करति हैं अभिराम ॥ मूढ पाय बिपत्य जौं नर करै नारी त्याग। क्रोधको नहि करैं जे पतिव्रता हैं बरभाग॥ प्राण यात्रा हेतु जाको हरो पक्षिन्ह बास।आधि पीडित करैं पतिपैं क्रोधनहि मतिरास॥ राज्य श्रीसों भ्रष्ट दुःखित क्षुधितहूँ पर तौंन। करति हैं नहि क्रोध नारी परम उत्तम जौंन॥तौंन ताके बचन सुनि हम दियो तुम्हहि सुनाय। जौंन चाहहु करहु तुम नृप पास देहु जनाय॥पर्णाद के सुनि बचन भैमी भरे लोचन नीर। जाय जननीसों कहो एकान्त माँह गभीर ॥ यहि अर्थकों नहि नेक जानै भीमभूप महान । निकट पठवति जननि विप्र सुदेवकों मतिमान ॥ यथा भीम न लहै मो मत तथा करिवें तोहि । चहति हो जौं प्रीति करिके सहित जीवन मोहि ॥ यथा ल्यायो जननि तुमपहँ मोहि यह बर बिप्र । तथा जाय सुदेव तेहाँ भरो मङ्गल क्षिप्र ॥ आनिबें नलभूपकों जँह कोशलापुर माम । आन्त द्विज पर्णादकों दिय भूरि धन अभिराम ॥ पायके नलभूपकों धन देउँगी अतिमान। बचन सुनि पर्णाद आशीर्वाद दिय सु महान ॥ बोलि विप्र सुदेवकों इमि कहे भैमी भूप। जननि संनिधि पायकै अति भरी शोक अनूप ॥ जाहु क्षिप्र सुदेव पुर जहँ कोशला छबिरास। कहहु गे ऋतुपर्ण नृपसों बचन यह सुखरास ॥ करि स्वयम्बर फेरि भैमी बरै मी भर्तार । जात हैं तहँ भूप जे वर रूप राज कुमार ॥ कालिह सूरय उदैकी है लग्न अति अभिराम। बरो चाहत जाहु तौ तुम भूमिपति छबिधाम॥जानि परत न जियत सो नल भूप अति अभिराम। कहो पे यहि भाँति तुम तहँ जाय बचन ललाम॥ तास बचन सुदेव सुनि तहँ जायकै

अ०८० छबिरास ॥ चिन्ह है भ्रूमध्य याके समा ललित ललाम। लखो सो हम लैल मूंदो प्रभामय छबि धाम ॥ चिन्ह भूत बिरञ्चि बिरचो भाग्य कारक सर्व। अग्नि जाने जात जैसें धूममाह अखर्व ॥ सुनत बचन सुदेवके लै कै सु नन्दा नीर। भालधाेय सुतिलक देखो जोतिजाल गँभीर ॥ लगी रादन करन सो लखि गोदमे लै ताहि। राजमाता सह सुनन्दा मोदकों अवगाहि ॥ सुदाम्न भूप दशार्णपति जो भरो गुण अवदात। सुता ताकी दोय हम अरु दूसरी तो मात ॥ भीमकों सो दई मोहि सुबाऊकों अभिराम। तोहि देखो बाल्यमे सुदशार्ण पतिके धाम ॥ यथा भैमी गेह है तो तथा मेरो धाम। कहन भैमी लगी तव कर जोरिकै अभिराम ॥ अज्ञातहूँ हम रही सुखसों अम्ब थारे गेह। सर्वथा लहि मोद रक्षित भई सहित सनेह ॥ बऊत दिन मोहि भये बिछुरैं जन निसों अभिराम। चहति हों अव लखों ताकों महत मो मनकाम ॥ बसत मेरे तहां बालक जननि जनक बिहीन। देखिबेकी तिन्हें मोकों लालसा अतिपीन ॥ जो सु मेरो चहति हो प्रिय कियो अति सुखदान। तो सु अब बैदर्भपुरकों जात दीजै जान ॥ कहि तथास्तु सुमातृभगिनी सुत शासन पाय। सहित सेना दिव्य दीन्हों सुखद जान मगाय ॥ बिदा कीन्हों राजमातैं देइ धन अभिराम। बन्धुगण सब आय पूजन कियो तास ललाम ॥ गइ सो बैपुर दर्भकों छिप्र भैमी भूप। कुशलसों तहँ जाय देखो बन्धु बर्ग अनूप ॥ पिता माता सहित भ्राता सुता सुत अभिराम। कुशलसों सब जाय देखे भरी मोद ललाम ॥ किये पूजित देव ब्राह्मण बिबिधिबिधिसों पम। दियो बिप्र सुदेवकों गो सहस भूप सधर्म ॥ सुताकों लखि दए सानद ग्राम सधन महान। रही भैमी निशामे तह जननि पास सुजान ॥ बिश्राम लहिकै जननिसों इमि कहे भैमी बैन। चहति जीवन सहित मोको सुनऊ तो मतिश्रैन ॥ यत्न नलके आनिबेको करऊ तो मतिमान। बचन सुनि कै सुताके सो भई दुखित महान ॥ अश्रुपूरित नैन आइ भीमनृपके पास। कहे ऐसें बचन नृपसों भरी शोक प्रयास ॥ करति दमयन्ती सु पतिको शोच भूप महान। छोड़ि लज्जा बचन हमसों कहे प्रगट सुजान ॥ करैं नलके हेरिबेमे यत्न नृप तो चार। सुनत ताके बचन नृप द्विज लए बोलि उदार ॥ चहूँदिशिकों बिप्र सहसन दिए भूप पठाय ॥ चले ते चऊँ ओरकों नृप भीमशासन पाय ॥ गए दमयन्ती निकट तिन कहो हम सब जात। कहो भैमी द्विजनसों यह बचन अति अवदात ॥ जाऊ तुम जेहिदेश पुरमे पाय जन समुदाय। तहाँ कहियो बचन यह हम देति जैांन सिखाय ॥ गए कहँ लै कितव आधो बस्त्र मेरो फारि। छोड़ि शोवति बिपिनिमे प्रिय प्रियाकों हित हारि ॥ ताहि देखो यथा तुम सो तथा है बर बाम। रहति आधो बसन धारें चहति तोहि ललाम ॥ शोकसों सो भरी रोवति रहति निशि दिन भूप। ताहि उत्तर दीजिए सुनि कृपा सहित अनूप ॥ कृपा जातें करैं जैसे आैर कहियो बैंन। भरण पालन करे सो पति कहत हैं मतिश्रैन ॥ करे ते तुम त्याग क्यों धर्मज्ञ व्है कै बीर। ख्यात प्राज्ञ

कुलीन हो तुम दयावान गँभीर ॥ भए निर्दय आपु मेरे भाग्यको हय तौन । करऊ अब नर व०प० सिंह मोपैं कृपा आनदभौन ॥ बचन सुनि यह रावरो नर देइ उत्तर जान । विप्र ताकों आनि यो नल भूप है नर तौन ॥ कहै जो सो बचन हमसों तौन कहियो आय । धनिक निर्धन होय कै सु अशक्त शक्त ललाय ॥ जानियो करतव्य ताको बोलि अैसे बैन । सहित आदर बिदा कीन्हें द्विजनकों मतिअैन ॥ गए ब्राह्मण चहूँदिशिकों नगर पुर बनबाग । घोष आश्रम सरित गिरिबर रहै जौन तडाग ॥ तौन भैमीको बचन तहँ तहाँ कहत सुनाय । लहत नहि नल नृपतिकों द्विज भए सश्रम काय ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ पर्णद नामक विप्र सो बहु दिननमें फिरि आय । कहन भैमी सों लगे यहि भाँति बचन सुनाय ॥ गयो खोजत नलनृपतिकों कोशलापुर माँह । कहो बचन सुनाय तो ऋतुपर्ण जहँ नरनाहँ ॥ नहो उत्तर दयो काहूँ सभाजन सह भूप । चले हम तब विजनमें नर मिलो कुत्सित रूप ॥ नाम बाहुक सारथी ऋतुपर्णको है तौन । पाकमें अति निपुण बाहक शीघ्र स्यन्दन गौन ॥ श्वास फिरि फिरि खेय रोदन लगो करन महान । बूझि हम सों कुशल अैसें लगो कहन सुजान ॥ विपतिहूँ मे करैं रक्षण कुलस्त्री कुलधर्म । करैं रक्षण आपु अपनो जीति स्वर्ग सधर्म ॥ भिन्न भर्तासों करैं नहि कोप जे बरबाम । चरित कवच सुप्राण धारण करति हैं अभिराम ॥ मूढ पाय बिपत्य जौं नर करै नारी त्याग । क्रोधको नहि करैं जे पतिब्रता हैं बरभाग ॥ प्राण याचा हेतु जाको हरो पक्षिन्ह बास । आधि पीडित करैं पतिपैं क्रोधनहि मतिरास ॥ राज्य श्रीसों भ्रष्ट दुःखित क्षुधितहूँ पर तौन । करति हैं नहि क्रोध नारी परम उत्तम जौन ॥ तौन ताके बचन सुनि हम दियो तुम्हहि सुनाय । जौन चाहहु करहु तुम नृप पास देहु जनाय ॥ पर्णाद के सुनि बचन भैमी भरे लोचन नीर । जाय जननीसों कहो एकान्त माँह गभीर ॥ यहि अर्थकों नहि नेक जानै भीमभूप महान । निकट पठवति जननि विप्र सुदेवकों मतिमान ॥ यथा भीम न लहै मो मत तथा करिवें तोहि । चहति हो जौं प्रीति करिकै सहित जीवन मोहि ॥ यथा ल्यायो जननि तुमपहँ मोहि यह वर विप्र । तथा जाय सुदेव तहाँ भरो मङ्गल छिप्र ॥ आनि वे नलभूपकों जँह कोशलापुर माम । आन्त द्विज पर्णादकों दिय भूरि धन अभिराम ॥ पायकै नलभूपकों धन देउँगी अतिमान । बचन सुनि पर्णाद आशीर्वाद दिय सु महान ॥ बोलि विप्र सुदेवकों इमि कहै भैमी भूप । जननि संनिधि पायकै अति भरी शोक अनूप ॥ जाहु छिप्र सुदेव पुर जहँ कोशला छबिरास । कहहु गे ऋतुपर्ण नृपसों बचन यह सुखरास ॥ करि स्वयम्बर फेरि भैमी बरै मी भर्तार । जात हैं तहँ भूपजे वर रूप राज कुमार ॥ कालिह सूर्य उदैकी हैं लग्न अति अभिराम । बरो चाहत जाहु तो तुम भूमिपति छबिधाम ॥ जानि परत न जियत सो नल भूप अति अभिराम । कहो ये यहि भाँति तुम तहँ जाय बचन ललाम ॥ तासु बचन सुदेव सुनि तहँ जायकै

मतिमान। कहे नृप ऋतुपर्ण सों सब यथा विधि अभिराम। बृहदश्वउवाच॥ वचन सुनत सुदेवके ऋतुपर्ण भूप सुजान। बोलि बाहुकसों कह्यो यहि भाँति करि सनमान। सुनत दमयन्ती स्वयम्बर भयो चहत विदर्भ।एकदिनमे जाहि बाहुक ओति चैसे धर्म॥सुनत सो नल भूपको मन भयो दुखित महान। दुःख मोहित करति भैमी कर्म यह अविधान॥ सोचि ऐसे रहे कछुक्षण अचल सोच्यौ भूप।कियो चिन्तित अर्थ मेरे यह उपाय अनूप॥भक्ति कामाके विदर्भी करति यह दुःकर्म। दीन ताकों तजो हम छल छाय बिरचि अधर्म॥ स्वभाव चञ्चल तियनको मम दोष दारुण पाय। करैं ऐसो सुत बिरह बस गो होय सुहृ दनसाय॥कैसेहुँ यहकर्म सो नहि करैगी बरबाम। सती सो सहित कन्या पिताके ससि धाम॥ सत्य होय असत्यकै तहँ देखिए करि गौन। साधिए ऋतुपर्णकों यह महत कारज तौन॥ नियत करि ऋतुपर्णसों यह कह्यो बाहुक बैन। चलैंगे हम जानिकै यह यावतो मति ऐन॥ एकदिनमे जाहिंगे वैदर्भपुरनरनाह। गो परीक्षण अश्वबाहुक अश्वशाला माह॥ समर्थ अध्वा जौन ल्यायो अश्व जे कृशकाय। तेज सबल सुजाति गुणमय परम शुद्ध स्वभाव॥ शुद्ध दश आवर्त जिनमे सिन्धु संभव जौन। कहन लागे क्रोधकारि कछु भूप देखत तौन॥कहा ल्याए अश्व ए है हास्य योग्य न तोहि। सबल कृशए अश्वबाहुक वहैंगे किमि मोहि॥
॥ * ॥ बाहुक उवाच ॥ * ॥ भालमे एकशीसपे बिय वक्षमेश्वर दोय। पार्श्वमे द्वय दोय भंवरी पीठिप एक होय॥ जाहिंगे बैदर्भकों ए तुरग संशय हो न। नतरु कहिए भूप जोरैं ल्याय बाजी पीन॥ * ॥ ऋतुपर्ण उवाच ॥ * ॥ अश्वके तत्वज्ञ तुमहो सुनऊ बाहुक बैन। शीघ्र गामी तुरँग रथमे जोरिए मतिऐन॥ चारि ऐसे तुरँ रथमे ल्याय जोरे भूप। भरे सुगुण सुजाति गतिमे बायु सदृश अनूप॥ चढे रथपर जाय तब ऋतुपर्ण आतुर माम। जानु केवल गिरेते तब तुरँग अति बलवान॥ वेगसों नलभूप तुरगनपास आय उदार। शान्त कीन्हों फेरिकै कर पोंछि करि सतकार॥ चढ़ै बाम उठाय तब वार्ष्णेय सूतहि टारि। जालकों बैदर्भ पुरकों धरो वेग बिचारि॥ करो उद्दित तिन्हैं बाहुक परम उत्तम अर्व। चलो रथ छिति छोडि नभमे भरो वेग अखर्व॥ देखिकै ते अश्व रथकों वहत बायु स्वरूप। भयो नृप ऋतुपर्ण मनमे महत विस्मित भूप॥ वार्ष्णेय चिन्तित भयो बाहुकको चिते हय ज्ञान। इन्द्रको है सूत मातलि जानिपरत सुजान॥ देखि बाहुकमे परे यहि भाँति लक्षण रूप। बाजिकुल तत्वज्ञ है यह शालिहोत्र अनूप॥ किधौं है नलभूप यह बर बाजि बाहक बीर। किधौ नलको पढी विद्या धारि बाहुक धीर॥ यहि भांतिसों वार्ष्णेय मनमे करत बिविध बिचार। भयो प्रथमे चढो रथपर भूप सङ्ग उदार॥ देखि बाहुकको सु सारथि कर्म नृप मतिमान। लहो सह वार्ष्णेय मनमे मोह महत सुजान॥ नदी पर्बत बिपिन सरबर देश पर बिसतार। चलो रथ चरसो सो तिनकों नाघि तुरय उदार॥ *~*~*~*~*~*

॥*॥ जयकरीछन्द ॥*॥

उत्तरीय भूपतिको जौंन । गिरो वेगवस छितिपर तौंन ॥ लीबैं ताहि कहो तव भूप । गिरो भूमिपर देखि अनूप ॥ बाहुक रथ रोकहु अतिमान। भरो वेगसम वायु महान॥ उत्तरीय यह गिरो उड़ाय । ताहि लेय वार्ष्णेय उठाय ॥ बोले नल ऐसे तब बैंन। बिहँसि भूप सुनु मतिके ऐन॥ गिरो वेग वश उड़िपट जौंन। दूरिगयो योजनतैं तौंन ॥ सो न मिलत तुमको अब भूप। चलो वेगसों रथ अतिरूप ॥ बिटप बिभीतक को पथ मांह । मिलो देखि बोलो नरनाह ॥ बाहुक लखो हमारो ज्ञान। संख्या माह परम अति मान ॥ नहि जानत सब कोउ सर्व । नहि कोउ सर्वज्ञ अखर्व॥ काहू पुरुषमाह नहि एक । सर्वज्ञानको बिहित बिवेक ॥ बाहुक यामे जे फलपात। कहत गिरे जे लहि बर बात ॥ गिरे एक अधिकी शतपत्र । तिनतैं एक अधिक फल अत्र ॥ पँाच कोटिहैं पत्र नवीन । दोय सहस फल शाखासीन ॥ करि ठाढो रथ बाहुक बैन। कहन लगो नृपसों मतिऐन ॥ यह अतथ्य सम भाषत भूप । कियो चहत हम सत्य स्वरूप ॥ तोरि बिभीतकके दल सर्व। करत सत्य गनि भूप अखर्व ॥ लखत तुम्हैं तोरत हम पत्र। रहु मूहूर्त भरि भूपति अत्र ॥ न तह जाहु यह पथ सुखदान । सङ्ग सूत वार्ष्णेय सुजान ॥ भूप शान्तिमय बोले बैंन । तो सम रथ वाहक छिति पैं न ॥ हम बिदर्भ तो कारनतैं वोर । गयो चहत हय कोविद धीर॥ हम बाहुक तो शरण सुजान। कार्य बिघ्न नहि करु मतिमान ॥ करिहैं हम कहिहो तुम जौंन। निशिमुख पाय भीमके भौन ॥*॥ बाहुकउवाच ॥*॥ कलिद्रुमके गनि कै हम पत्र। चलिहैं वेगि भीम नृप यत्र ॥ वैमनस्य व्है भाषो भूप । जो शाखा हम कहैं अनूप ॥ ताके पत्र गनहु तुम जाय। देखहु निवृत्त सत्यता पाय ॥ बाहुक रथ तजि करि द्रुत गौन । चढो जाय शाखापर तौन ॥ गनिकै बाहुक फल दल तास । गयो सविस्मय भूपति पास ॥ कहो कहे तुम जितने भूप। तितने फल दल गने अनूप ॥ अतिअद्भुत हम लखो सुजान । तुममे यहि बिद्याको ज्ञान॥ तुमतैं यह हम चहत अनूप। बिद्या देहु कृपा करि भूप ॥ त्वरित गमनको करि अनुमान। कहो भूप यह लेहु सुजान॥ जानहु अक्ष हृदय यह तज्ञ । हम संख्याकर भे सरवज्ञ ॥ बाहुक कहो हमै यह देहु। हमसों अश्व हृदय नृप लेहु ॥ भूप कार्य गौरवके छोभ। अश्व ज्ञान लेवेकैं लोभ॥ कहो लेहु बाहुक यह ज्ञान। अक्ष हृदय मोसों सविधान ॥ अश्व हृदय तुमसों है जौन। रहो धरे सो मो धन तौंन ॥ यह करि अक्ष ज्ञान सुखदान । बाहुकको दिय भूप सुजान॥ अक्ष हृदय पायो जब भूप । तब तनतजि कलि कढो कुरूप ॥ कर्कोटकको बिष अति घोर। मुखतें बमन करत नहि थोर ॥ भैमीको शापानल जौंन। मुखते कढन लगो तब तौन ॥ धर्मधुरन्धर नल छिति पाल । ताका कष्ट दियो बहुकाल ॥ व्है बिमुक्त कलि बिषसों तान। धरो रूप अपनो निज जौंन ॥ कियो क्रोध नल कलिको चाहि । चाहो शाप देनको ताहि ॥ तब कलि कँपत कहे द्रवि

प॰ बैन। जोरि पाणि भरि भीतिअचैंन ॥ भूप कोप कीजै संहार। कीर्ति देत हम तुम्हैं उदार॥ नाग राजके विषकों पाय। जरो योस निधि मेरो काय ॥ तुम भैमिहिं अब तजी सुजान। तब तेहि शाप दियो अतिमान॥ तबतें दुःख घोर अति पाय। बसत रहे हम नृप तो काय॥ हम तो शरण बीर बलअैंन। सुनु निषधेश हमारो बैंन ॥ तो कीर्तन जो करिहि अनूप। सो नो कत दुख लहिहि न भूप॥ हमै भयार्त शरणगत जोहि। जैंन शाप देहौ नृप मोहि॥ यह सुनि कलिको बचन निदेश। कियो कोपसंहार नरेश ॥ यह कहिकै कलि भय भरि काय। बसो बिभीतक तरुमे जाय॥ व्है अदृश्य सबसों कलि तौंन। कहे बचन नल नृपसों जौंन॥ गत ज्वर भयो भूप निषधेश। भए नष्ट कलिकाय प्रवेश॥ तज पुरातन पाय सहर्ष। चलो हाँकि रथकों दर्धर्ष॥ करत बिभीतकमे कलि-वास। जावो भलो न ताके पास॥ उडे जात हय बिहँग समान। प्रेरित नलतें अति बलवान ॥ गो बिदर्भ पुर सन्मुख भूप। गो कलि स्वगृह धरे छमरूप॥ भरो भूप नल आनद पोन। रहो एकतन रूप मलोन॥ * ॥ बृहदस्वउवाच॥ * ॥ साँझ होत ऋतुपर्ण उदार। गए बिदर्भ नगरके द्वार॥ पुर रक्षकन्ह भीमपहँ जाय। कहो तास आगम सुखदाय॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भीम नृपति ऋतुपर्णको सुनि आगम बिन कार्य। कहो देऊ आवन इहाँ कोशलेश नृप आर्य॥
गए करत नादित दिशा रथध्वनिसों बरवाम॥दमयन्ती जानो सुनत नल रथ शब्द अभिराम॥
घन निर्घोष समान धुनि सुनि दमयन्ती भूप। नल प्रेरित रथ रावसम भई सो बिस्मत रूप॥

॥ * ॥ दमयन्त्युवाच ॥ * ॥

भूमि भरति यह सुरथ धुनि करति सो मोदित चैंन॥जानि परतिहै मोहि यह आयो नल छबिअैंन॥
चन्द्रानन नल नृपतिकों जौं न लखौंगी अद्य। तौ हो या तन दुखितको त्याग करौंगी सद्य॥
जौं नलके भुज पासमे आजु न फसिहौं जाय। तौं हों अग्नि प्रवेश करि दहिहौं दुःखित काय॥
जौ न आइहै पास मो सिंह सदृश नल भूप। आजु आपनी देहको करिहौं नाश अनूप॥
अनृत तास अपकारहों स्मरण न करिहैं एक। मर्य्यादा उलङ्घनो कहिहैं कबहू न नेक॥
क्षमावान अनुकूल प्रभु बीर बदान्य ललाम। गुणस्मर्ण ताके करति हों निशिदिन अभिराम॥
ऐसे करति बिलाप सो दमयन्ती छबिधाम। चढी जायकै सौधपै नल दरशनके काम॥
मध्यम कच्छामे लखो रथ ऋतुपर्ण समेत। बाहुक अरु बार्ष्णेय है तातैं सूत सनेत॥
बाहुक अरु बार्ष्णेय तब रथ तजि उतरि सुजान। रथ ठाढो करि तुरगतें छोरि लए बलवान॥
रथ तजिकै ऋतुपर्ण तब गए भीम नृप पास। भीम भूप पूजन कियो तास सबिधि मतिरास॥
तासों पूजित होयकैं कोशलेश बरभूप। बसो सो कुण्डिन नगरमे भरे बिचार अनूप॥
तहाँ स्वयम्बरको लखत कहूँ न चर्चा चाल। इत उत देखत रहतहैं चकित भए क्षितिपाल॥

दक्षिणके नहि मंत्रकों जानत भीम नरेश । सहसा आगम तास लखि मनसे भरे अँदेश ॥ व०प०
भीमनृपति ऋतुपर्णसों ऐसे बूझे बैन । अकस्मात आगम भयो कौनहेतु मतिऐन ॥
लखो नही ऋतुपर्ण नृप कछू स्वयम्बर रूप । दुहिताहेतु आयो कहो नही भूपसों भूप ॥
तब विचारि ऋतुपर्ण नृप ऐसे बोलो बन । दर्शनार्थ आयो तुम्हं जानि पुख्यको ऐन ॥
मनमे रहे विचारि तब भीमनृपति मतिभौन। शतयोजनसों अधिक तहँ आगम कारण कौन ॥
भोर जो याको होयगो हेतु जानि हैं तौन। यह विचारि ऋतुपर्णकों दियो वासको भौन ॥
अल्पकार्य्य आगमनको हमसों बोलो भूप। कारण याको परैगो भोर जानि अनुरूप ॥
भीम नृपतिके मनुज सँग कोशलेशके जाय। यथा सौध शय्या सहित दीन्हों धाम बताय ॥
वार्ष्णेय सह ऋतुपर्ण बसे भौनमे जाय । रथ लै के बाहुक बसे रथशालामे आय ॥
सेवा करिकै हयनकी बाहुक शास्त्रविधान । बसे आपु रथके निकट भरे मोद सुखदान ॥
वार्ष्णेय बाहुक सहित लखि ऋतुपर्ण नरेश । भई रथध्वनि कौनकी भैमी भरो अदेश ॥
नलरथकैसी ध्वनि भई यह रथध्वनि अतिसाम । शिखी कहा वार्ष्णेय सो नलविद्या अभिराम।
जातें रथनिर्घोष यह भो नलरथ सम मान । नैषधेश सो भो कहा यह ऋतुपर्ण महान ॥
दमयन्ती यह तर्क करि मनमे निजु ठहराय । नैषधनृपके लखनकों दूती दई पठाय ॥

॥ * ॥ दमयन्त्युवाच ॥ * ॥

रथ बाहक यह कौन है केशिनि जानन जाऊ । विकृत रूप रथकेनिकट बैठो जो लघु बाऊ ॥
निकट जाय मृदु बचनसों कुशल बूझि अभिराम।तब तास सब समुझियो जौन बसत हियधाम॥
याकों लखि कै होति है शङ्का मोहि महान। यह मेरे मन हृदयकों लखत होत सुखदान ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कहियो फेरि कथा तुम तौन । द्विजपर्णाद कही ही जौन ॥ ताको उत्तर समुझि सुजान । मोसों आय कहेउ सुखदान॥गई दूती बाऊक पैं धाय।भैमी लखति अटापैं आय ॥ * ॥ केशिन्यु वाच ॥ * ॥ तुम मनुजेन्द्र कुशल सह चैन । जानउ यह दमयन्ती बैन ॥ कब तुम चले इहांकों बीर । आए कौनहेत गम्भीर ॥ तौन कहो तुम सत्य सुजान । भैमी सुनो चहति सुखदान ॥ ॥ * ॥ बाऊकउवाच ॥ * ॥ सुनो स्वयम्बर कोशल भूप । भैमीको फिरि होत अनूप ॥ द्विजसों सुनि सो भूप महान । चलो इहांकों आतुरमान ॥ शतयोजन चारी बर अर्व । हम जोते रथमाह अखर्व ॥ * ॥ केशिन्युवाच ॥ * ॥ तुममे मनुज तीसरो जौन । कहँ गो कहो कौनको तौन ॥ तुमहो कौन कौनके बीर । यह विद्या कहँ लही गभीर ॥ * ॥ बाऊकउवाच ॥ * ॥ वार्ष्णेय सूत है नलको तौन । नल जब कियो बिपिनिकों गौन ॥ तब ऋतुपर्ण भूपपहँ जाय । बसो सूत सो जीवन पाय ॥ * ॥ केशिन्युवाच ॥ * ॥ जानत कावार्ष्णेय सो मर्म । कहा गए नलभूप सधर्म ॥

१० कहो कौन विधि तुमसों तैंन ॥ हे बाहुक नल भूपति गैंन ॥ * ॥ बाहुकउवाच ॥ * ॥ नलके सुत अरु सुता सुजान । इतै छोडि सो गो मतिमान ॥ नलकों जानत पुरुष न आन । गूढ फिरत तजि रूप महान ॥ नल आत्मा जानत नलरूप । कै ताकी जो प्रिया अनूप ॥ कहत न नल अपनो आकार । काहूसों जो परम उदार ॥ * ॥ केशिन्युवाच ॥ * ॥ प्रथम अयोध्या गयो जो विप्र । नारी बचन सो कहत पवित्र ॥ कितव गए तुम कित करि गैंन । आधाबसन लेइ मम तैंन ॥ सोवत छोडि विपिनिमे मोहि । हों अनुरक्त प्रिया प्रिय तोहि ॥ यथा बिलोकी हो तुम ताहि । तथासो तुम्हे परीक्षति चाहि ॥ दहति रहति निशिदिन छबिरास । पहिरे सोई आधाबास ॥ रोवति रहति निरन्तर तैंन । भरी दुःख पीडित छबिमैंन ॥ कहि प्रतिबाक्य विहित सुखदान । तास तैंन यह प्रिय आख्यान ॥ कहहु फेरि तुम कृपा निधान । पूछति हैं मैं तुम्हे सुजान ॥ सुना चहति दमयन्ती तैंन । तो सुखतें हे आनदमैंन ॥ यह सुनि कै तुम उत्तर ताहि । दियो जो पूर्ब कृपा अवगाहि ॥ सुनो चहति है भैमी तैंन । तातें फेरि कहो छबिमैंन ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * यह सुनि व्यथित भए नलभूप । भरे बारि लोचन अतिरूप ॥ गद गद गरें खलित मुखबैंन । लगे सँभारि कहन मतिअैंन ॥ * ॥ बाहुकउवाच ॥ * ॥ लहि कै विपति कुलीना बाम । आपुहि रक्षति आपु ललाम ॥ सत्य स्वर्गकों जीतैं तैंन । पतिबिन करैं क्रोध नहि जैंन ॥ चरित कवच करि राखैं प्रान । जे कुलबधू सुमति सुखदान ॥ गयो प्रान जात्राको आस । पक्षिण हरो तास बरबास ॥ पीडित भयो आधिसों उद्ध । कुलतिय हौंहि न तापैं क्रुद्ध ॥ आदर करौ निरादर बाम । लखैं तथाविधि पतिकों बाम ॥ भ्रष्टराज्य सो प्रियाविहीन । क्षुधित व्यसनसों व्यथित मलीन ॥ तैंन बाक्य यहिविधि कहि भूप । रुदन करण लागे अतिरूप ॥ सो केशिनि तहाँतें आय । दमयन्ती हि सब दियो सुनाय ॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ दमयन्ती सो सुनि मतिमान । भई शोकमें मग्न महान ॥ शङ्कमान नलमे मति अैंन । कहो केशिनीसों इमि बैंन ॥ केशिनी जाहु भूपके पास । तास परीक्षा करु मतिरास ॥ चरित तास देखहु तुम तैंन । कारज कारण करै सो जान ॥ मागेहु अग्नि न दीजो ताहि । औ न देहु जल हठ अवगाहि ॥ याको चरित बिलोकहु अैंन । हमसों आइ कहेहु सब तैंन ॥ लखहु अमानुष जो तुम कर्म । हमसों आय कहेहु सो पर्म ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सुनत भैमीके बचन यह केशिनी तहँ जाय । देखि बाहुक कर्म सिगरे भीमजा पँह आय ॥ दैव मानुष कर्म देखे अैंन ताके भूरि । तैंन भैमीसों लगी सब कहन आनद पूरि ॥ केशिन्युवाच ॥ परम शुचि आचार ताके हैं अमानुष सर्व । आजुलौं नहि लखो काहु औरमाह अखर्व ॥ देखि छोटो द्वार [illegible] नसत न तैंन । शीशमे नहि लगत है सो करत ताके गैंन ॥ जात ताक द्वार छोटो सो बडो ह्वै जात । अर्थ नृपऋतुपर्णके बहुमास शुचि अवदात ॥ भीमभूप पठाय दीन्हे

प्रसुनको अतिनर्म। बिना सलिल सु कुम्भ पटए तहाँ रीते पर्म॥ लखत ताके भए घट ते सलिलसों २०५० सब पूर्ण।धाय बाऊक मांस राखो चुल्हिकापैं तूर्ण ॥मूटि भरि टए लेइ रविके कियो सन्मुख तौंन। बरण लागो तौंन तवहो बिना पावक पौंन॥तौन अद्भुत देखि आई इहांआनदधाम।ओैर अद्भुत लख तामे सुनऊ सो अभिराम॥अग्निको अस्पर्श कीन्हें दहत हैं न उदार।वहति ताकी जितै इच्छा तितैको जलधार॥ ओैर यह आश्चर्य्य देखो सुनऊ भैमी तौन। हाथमे ले सुमन सो गहिमीजि डारत जौंन॥ भरत भूरि सुगन्धसौं सो धरत अधिक प्रकास। देखि आइ महत अद्भुत कहतिहौं तो पास॥ बृहदश्वउवाच॥ सुनो भैमी तास यह सब महत अद्भुत कर्म। जानि मनमे लियो आए नियत नल नृप धर्म ॥ देखि बाऊक रूप नलमे शङ्कमान अचैन । केशिनीसौं कहे ओैसे मधुरसकरुणा बैन॥ जाऊ पाय सुचित्त बाऊक पक्क कीन्हें जौन। मास मेरे पास ल्यावऊ कछू केशिनि तौन॥ जायकै सो लखत बाऊक लियो मांस उठाय।मांस सो अतिउष्ण दीन्हों भीमजाकों आय।मास नलतें पचित बऊधा स्वाद जानति तास। खाय जानो सूतकों नलप्राप्त भो मतिरास ॥ व्यकल व्है कै धाय आनन परम सुन्दर हाथ। पढै दोन्हों सुतासुत तई केशिनीके साथ॥ इन्द्रसेन हि सहित भगिनी जानि आत्मज भूप। वेगि आय उटाय लीन्हों श्रवत नेत्र अनूप। सुरसुतोपम अङ्कमे लै भरे करुणा भूरि। लगे रोदन करण भूपति दुसहदुखसों पूरि॥ छोडि तिनकों लगें बाऊक कहन ओैसे बैंन। केशिनी मम सुतन्ह सम ए पोत हैं छविऐैन॥ बेर बेर सु तुम्हें आवत दोखको अनुमान। करैंगे जन हम विदेशी सुनऊ हे सुखदान॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ देखि सर्व बिकार नलको केशिनी सो बाम। जाय भैमी पास सो सब दियो कहि अभिराम ॥ सुनत दमयन्ती पठायो जननि पैं फिरि ताहि। भरी दुख यहिभाँति कहि नलको सुदर्शन चाहि ॥ हौं परीक्षित कियो बाऊककौं सुनल अनुमानि। एक शंका रूपमे हौं चहति लीवें जानि॥ ताहि इतहि बोलाइऔै कै जाउ हों ता पास । बिदित अविदित तातसों सो देऊ कहि मतिरास ॥ सुनत जननी जाय नृप पै कहो सो अनुरूप। अभिप्राय बिचारि ताको दियो आज्ञा भूप ॥ भूप आज्ञा पाय जननी बाऊ कै बोलवाय । भीमजाके धामकों तव दियो ताहि पठाय॥ देखि कै नलभूप भैमीकों सदुःख बिचारि। शोक दुखसों भरे लागे बहन लोचन बारि॥ तथाविधि लखि भूपनल कों भरी शोक उदार। भई दारुण दुःख सागरमाह मग्न अपार॥ धरे बसन कषाय जटिला मलिन रूप अचैंन। कहन बाऊकसों लगी यहिभाँति भैमी बैंन॥ पूर्व बाऊक [illegible] कहूँ धर्मज्ञ जाको नाम। सुप्त बनमे तजे बनिता पुरुष जो अभिराम॥ अनाथ सखम [illegible] मोहित भारया बनमाँह। छोडि कै को जाय पुण्यश्लोक बिन नरनाँह॥ बाल्यवश [illegible] ताके कियो कासो जोहि। भरी निद्रा बिपिनिमे जो गयो तजि कै मोहि॥ छेडि दे[illegible] बरो जाकों पूर्व व्हे अनुरक्त॥ पतिब्रत मोहि पुत्रिणीको करै सो किमि त्यक्त ॥ [illegible] धार्मिक देवतनके पास पकरो पानि।

व०प० भरैं गो कहि सत्य सो तजि दयो का अनुमानि ॥ सुनत भैमीके बचन ए भरे शोक संताप। वहन नलक नेत्रते तब लगी धारा आप ॥ भष्ट मेरो राज्य भो हम कियो जो तो त्याग। तौन कलिद्धत भयो भैमी सुनऊ सत्य सभाग॥ दुःखतें बनमांह जाको दियो हो तुम साप।दह्यमान सो बसत हो मम देहमे कलिपाप ॥ गयो मम व्यवसाय तपतें व्यकल निर्जित तौन। दुखःके सो अन्त व्है कलि पाप कै सो भौन॥ मोहि तजि कलि गयो तब हम इहां आए बाम। अर्थ सुन्दरि रावरे नहि इहां हो कछुकांम॥नहो नारी छोडि कै अनुरक्त पतिकों पर्म।वरो चाहति और पति तो सद्दश लच्छित धर्म ॥ फिरत चऊदिशि दूत जेहां बसत भूप उदार। कहत भैमी कियो चाहति दूसरो भरतार॥ सुनत सो ऋतुपर्ण आयो इहां त्वरित महान।सुनत यह नलवचन भैमी महा रुदन समान॥ जोरि अञ्जलि कम्प भयसों भरी बोली बैंन ॥ दमयंत्युवाच ॥ दोष शङ्का भूपमोमे योग्य तुमकों है न ॥ देवतनकों छोडि कै हम बरो तुमकों भूप।तुम्है हेनरहेत पठए विप्र धर्मस्वरूप॥ पद्य मेरे बचनको करि फिरे गावत तौन।भयो कोशल पुरीकों पर्णाद नामक जौन॥ जाय कै ऋतुपर्णके गृह तौन गायो विप्र।पाय कै प्रतिवाक्य ताको इहा आयो छिप्र॥ आइवेकों तुम्हैं हम यह रचो भूप उपाय। एकदिनमे तुम्हैं बिन को सकैगो इत आय ॥सकै बाहि तुरङ्गको शतएक योजन बीर। सत्य मै हिय चरनकी तब करति सपथ गम्भीर॥ मनऊ तें जौं पायको छत करौंनेक बिचार । भूत साछी सदां गति तौ हरौ प्राण हमार॥ भूत साछी चरत जो रबि भुवनमाह उदार। हरौ मेरो प्राण जौं हम कियो पाप बिचार ॥ चन्द्रमा भूतस्थ जो यह फिरै साछि समान । हरौ मेरो प्राण जौं मम धरै किल्बिष ज्ञान॥देवत्रय ए जगतजनके महत भूत अधार।कहौं ते सब सत्यकै अब तजौ मोहि उदार॥ सुनत अैसे गगणगत यह बायु बोले बैन। पाप भैमी कियो नहि यह सत्य सुनु मति अैन॥ शील सिन्धु समान भैमी किए रच्छित धर्म। प्राप्त भैमीकों भए तुम तुम्हैं भैमी पर्म॥ छोडि शङ्का जाऊ भैमी पास हे नलभूप।कहत अैसें गगणतें भइ सुमन बृष्टि अनूप॥ बजन दुन्दुभि लगी नभसे बहन सुखद समीर।महत अद्भुत देखि नल नृप भरे मोद गँभीर॥रहित शङ्का खैचि भैमि हि लियो हिय सौ लाय। नागेशदत्त सु बस्त्र लीन्हो ओढि नृप सुखदाय॥स्मर्ण करि नागेशको तब लहो अपनो रूप। लखो भैमी स्वसरूप सुलहो भर्ता भूप ॥ उच्च रोदन कियो हियसे लाय कै भर्तार। भूप लीन्हो गोदमे तब सुता सहित कुमार ॥ धरें मलिन स्वरूप भैमी हि लाय कै हिय भूप। बेर लौं रहे सुस्थिर मोदमग्न अनूप ॥ जाय सब बृतान्त जननी कहो नृपसौं तौन। सुनत सो नृप भीम आनंदसौ भरो हि भौन॥ भोर जब सुस्नान मङ्गल करहि गे सुखरूप। सहित दमयन्ती बिलोक हिले सु तब नलभूप॥ व भैमी निशाभरि कहि बिपिनिकों बृत्तान्त।अपुन अपनो समुझि फिरि फिरि भरे मोद नितान्त॥ मि[illegible]येबष भूपति भीमजासों आय।भयो कारज सिद्धि सब तहँ बसे आनँद पाय॥ प्राइ कै भर्तार भैमी [illegible]आनद पूर्ण। यथा सूखत धान जलधर आइ बर्षत तूर्ण॥

शोक तजि एहि भाँति भैमी विरहज्वर अपहाय। भई शोभित यथा राका शरद शशिकों पाय॥ ३०५०

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिमानिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि दमयंतीनलसमागमवर्णनो नाम एकादशोऽध्यायः॥ *******

॥ * ॥ बृहदश्वउवाच ॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

भोर करि सुस्नान धरि बर बसन भूषण पर्म। गए भैमी सहित जहँा भीमनृपति सधर्म॥ कियो बन्दन ससुरको तब नृपति नल धृति धीर। गई भैमो पिता ढिग पद बन्दि मुदित गँभीर॥ भीम नृप निषधेशकों हिय लाय लीन्हो पर्म। पुत्रवत फिरि कियो पूजन यथाविहित सधर्म॥ कियो पूजन नृपतिको सह भीमजा नल भूप। हर्षसों सब नगरमे तब भयो शब्द अनूप॥ तथा लखि नल नृपतिकों जन भरे मोद तरङ्ग। सहित ध्वज पुर लसो ज्यौं शशि पाय चीरधि सङ्ग॥ सिक्त बीथी सुमन तोरण बँधे द्वारिहि द्वार। भए पूजित देवता जे नगर माह उदार॥ सुनो नृप ऋतुपर्ण बाहुक रूपहै नल भूप॥ मिले भैमीपास पायोमहत मोद अनूप॥ बोलि नलकों क्षमा मागो कोशलेशनरेश। कहो नल ऋतु पर्ण सों कुरु क्षमा बुद्धिनिवेश॥ सत्कार लहि ऋतुपर्ण ऐसे कहें नलसों बैन। भाग्य सों तुम लही दारा भीमजा छबिऐन॥ अपराध हमसों भयो नहि कछु रावरो नलभूप। बसत हे अज्ञात मेरें धाममे सुखरूप॥ कछू जौं अपराध मोसों भयो होय सुजान। कीजिए सो क्षमा मोपैं कृपा करि मतिमान॥ कियो नहि अपराध मेरो तो कुबुद्धि बिशेश॥ किएहूँ नहि कोप मेरे क्षमाकरत नरेश॥ पूर्व हम तुम सखाहैं सम्बन्ध तुम सों भूप॥ प्रीति कीजे बसे हम तुम पास सुखित अनूप॥ बसत यह हय ज्ञान तो सम न्यास मेरे पास। देतहौं सो लीजिए सविधान नृप मतिरास॥ यहि भाँति कहि सो दई बिद्या भूप नल अभिराम॥ तौन सो ऋतुपर्ण लीन्हो भरे मोद ललाम॥ देइकै सो अक्ष बिद्या सरहस्य औ सविधान। और लैकै सूत किय ऋतुपर्ण भूप पयान॥ भए जब ऋतुपर्ण तब नल भीमनृपके पास॥ बसे कुण्डिन नगरमे बङ्क योस नहि मतिरास॥ * ॥ बृहदश्वउवाच॥ * ॥ भीम नृप सों बिदा व्है रहि मास भरि नल भूप। चले आप्त सहायसों जहँ निषध देश अनूप॥ एक रथ बर द्विरद षोडश तुरग सबल पचास। छ शत प्यादे सङ्ग लीन्हे सूर जे बलरास॥ करत कम्पित भूमिकों अति बेगसों तहँ जाय। कहन पुष्कर सों लगे यहि भाँति बचन सुनाय॥ करऊ हमसों द्यूत आए जोरि बित्त अखर्ब। धरत भैमी सहित पण धन जौन मेरे सर्ब॥ यहै है सन्या समे तो राज्य प्राप्ति बिशुद्धि। फेरि करिए द्यूतकों यह निश्चल मेरी बुद्धि॥ एक पणकों धरें हम तुम प्राण जो अभिराम। जीति याकों लीजिए सरबस राज्य ललाम॥ फेरि चाहै द्यूत तासों द्यूत करिबो धर्म। नही चाहत द्यूत तौ करु युद्ध द्यूत सु पर्म॥ शान्ति लेहैं युद्ध करि हम कै सु तुम

व०प० मतिभौन। अंश भोज्य जो राज्य जैसे मिलै कीजै तौन ॥ करहु पुष्कर दोयमें एकमाह बुद्धि बिचारि। अब द्यूतहि कीजिए कै लरहु तुम धनुधारि ॥ बचन नलके सुनत पुष्कर बिहसि दुर्मतिभैन। आपनी जय जानि निश्चय कहन लागो बैन ॥ भाग्यतें मम बित्त ल्याए जोरिकै तुम्ह पीन। भाग्यतें दुःकर्म भैमी को भयो सब छीन॥ भाग्यतें हम लेत तुमकों जीति आजु सदार। जीतिके यहि बित्तसों रचि अलङ्कार उदार ॥ तौन भूषण पहिरि भैमी रही मेरे साथ । सदा जैसे अपसरा लहि स्वर्गमे सुरनाथ ॥ नित्य तुम्हरो स्मरणहै हम करत नैषध भूप। द्यूतमे मम प्रीति रूचत न और सङ्ग अनूप॥ जीति तुमकों सहित भैमी भरौगो मनकाम। होउँगो कृत कृत्य भैमी बसति मम हियधाम ॥ सुनत ऐसे बचन ताके नैषधेश बिरुद्ध । खङ्गसों शिर चहो काटो कोप करि अति उद्ध॥ बिहँसि नल करि अरुण चख धरि बचन बोले तेह। धरहु पण करि द्यूत हमसों जीतिकै सब लेह॥ द्यूत फेरि प्रवृत्त भो नलनृपति पुष्कर साथ । एक पणको धारि जीतो ताहि नैषधनाथ॥ जीतिके सरवस्व ताको भूप नल सह प्राण । कहन पुष्करसों लगे इमि बचन बिहँसि महान ॥ बिगत कण्टक मोर भय यह राज्य मम सुखधाम । नहो देखन योग्य पुष्कर तुम्है भैमी बाम॥ भए मेरे दास पुष्कर सहित तुम परिचार। हमै जीतन योग्य तुम कृत कर्मसों न उदार॥ कियो कलि यह कर्म पुष्कर परो तुमहि न जानि । नहो तुमपैं धरत हम यह दोष पर कृत मानि ॥ यथासुख तुम जाय जीवहु तजत हम तो प्रान। जीतिकै धन अंश अपनो देत तोहि महान॥ यथा मेरो प्रीति तुमपैं सुनहु पुष्कर बीर । जियहु भ्राता वर्ष शतलों भरे मोद गँभीर ॥ शान्त करि यहि भाँति ताकों भूप नल सुखदाय । पठै दीन्हों स्वपुरकों हिय मांहि फिरि फिरि लाय॥ शान्त ह्वै यहि भाँति नलसों कहे पुष्कर बैन । जोरि अञ्जलि बन्दना करि भरो चितमें चैन ॥ कीर्त्ति अक्षय रहै जीवहु वर्ष अयुत प्रमान । देत मेरे प्राणकों जो भयो हारि सुजान॥ सत्कार लहिकै भूपसों तहँ मास भरि करि बास। गयो पुष्कर [illegible] अपने स्वजन सह सुखरास॥ बिदा करिकै पुष्करहि नल भूप सुषमाधाम। पुरी माह प्रवेश कीन्हों दोष लहि अभिराम ॥ पुरीमे पुरजननको किय समाधान नरेश । पौरजन सह जानपद लखि भए पुलकित वेष॥ कहन फिरि फिरि लगे पुरजन सह अमात्य अनूप। भए हम [illegible] आजु बिलोकि तुमकों भूप॥ बिगत बलि भय स्वर्गमे फिरि पाइकै मघवान। लगे सेवन [illegible] तथा देव समान॥ लगे पुरजन शान्त उत्सव करण जब सुखरूप। पठै सेना महत भैमी[illegible]बुलायो भूप ॥ भीमनृप सत्कार करिकै सुताको अभिराम। बिदा कीन्हों पुत्र कन्या [illegible]॥ लसे दमयन्ती सहित इमि भूपनल निषधेश । सची सहित जयन्त ज्यों सुर पुरी [illegible]॥ राज्य शासन कियो करिकै यज्ञ बिबिधि बिधान। तथा तुमहू लहौगे नृपधर्म राज्य महान ॥ दुःख ऐसो लह्यो नलनृप द्यूत करि सह बाम। फेरि अपनो राज्य पायो

आयकै अभिराम ॥ रहित भ्रातन द्रौपदी सह बिप्रगण तपधाम। धर्म चिन्तन करतहौ तुम बिपिनिमे अभिराम ॥ देत भोजन द्विजनकों बहु धर्मनृपति समर्थ। रम्य काम्यक गहनमे बसि रुदन करिबो व्यर्थ ॥ * ॥ मंत्र ॥ * ॥ कर्कोटकस्य नागस्य दमयंत्या नलस्यच। ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्त्तनं कलिनाशनं ॥ * * * * * * * *
भूपहै इतिहास यह कलिनाश कारक पर्म। तिन्है करिहै समाधान जे सदृश तो नृपधर्म ॥ जानि चलता बिभवकी सबभांति सों बर भूप। नही ताके उदय क्षयमे होत शोच अनूप ॥शोच करहु न भूप यह इतिहास सुनि धरि धीर। दुःखमे नहि तुम्है करिबो योग्य खेद गँभीर॥ बिषम बिधिके भएँ पौरुष होत अफल सुजान। नही खेदित करत आत्मा जिन्हैं सत्व प्रधान ॥ चरित जे नल नृपतिको यह पढैगे अभिराम। नहि अलक्ष्मी जाय कबहूँ निकट तिनके धाम ॥ सुनहिंगे ते अर्थकों लहि होहिंगे नर धन्य। पुत्र परम पउत्र पशु गण पाइहैं अनगन्य॥ होय गो आरोग्य तापैं करैंगे सब प्रीति। आइहै नहि निकट तिनके आधि व्याधिज भीति ॥ द्यूतके आव्हानको भय भयो तुमको जौन। अक्षज्ञ हम हैं धर्मनृप भय नाशिहैं सब तौन ॥ अक्षको हम हृदय जानत सबिधि सुनिए भूप। देत है हम तौन तुमकों ह्वै प्रसन्न अनूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥
धर्मनृप बृहदश्व सों तब कहे ऐसें बैंन। अक्ष हृदय सो चहत तुमसों जानिबैं तपऐंन ॥ अक्ष हृदय बतायकै नृपधर्मकों अभिराम। बिदा व्है बृहदश्व ऋषि तब गए अपने धाम ॥ सुनो काहूँ बिप्रसों नृपधर्म पारथ कर्म। बायु भक्षण करि करत तप उग्र अतिशय पर्म ॥ तीर्थयात्रा करत आए बिप्र जे तपधाम। पार्थको तप कहो तिन नृपधर्म सो अभिराम ॥ शोच करिकै धर्मनृप सुनि उग्रतप अति काय। बिप्र जे सरबज्ञ तिनसों लगे बूझन जाय ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि पार्थतपश्रवणवर्णनोनाम द्वादशोऽध्यायः ॥ नलोपाख्यानंसमाप्तं ॥ * *

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

भगवन काम्यक बनते पार्थ। गए चाहि जब तप मय स्वार्थ॥ पाण्डव पार्थ बिना का कर्म। कियो कहो सो बिप्र सधर्म ॥ भ्रातनकों पारथ गति पर्म। आदित्य माह जिमि बिष्णु सुमर्म ॥बिना ताहि कैसें नृपधर्म। बनमे रहे कौन करि कर्म ॥ वैशम्पायनउवाच॥गए पार्थ काम्यकते यथा। भए दुखित सब पाण्डव तथा ॥ बिना सूत्र जिमि मुकताहार। ज्यों पक्षी बिलुप्त उदार ॥ आह्मणार्थ मृग याकों जात।शुद्धबाणसों करि मृगघात॥यज्ञार्थ बिप्रन्हकों देत।तहां बसत उत्कण्ठित चेत॥जिष्णु बिना सब रहत मलान।कृष्णा शोच करति अति मान॥पार्थ बिना कृष्णा हत चैंन। कहे युधिष्ठिर सों इमि बैंन॥ सहस बाहु अर्जुन सम बीर। है द्विबाहु अर्जुन रणधीर ॥ ताहि बिना सुनिए

व०प० नृपधर्म। हमैं न यह बन लागत पर्म ॥ ताहि बिना यह भूमि महान। हम देखतिहैं शून्य समान॥ नीलाम्बुज सम सुन्दर काय। चलत मत्तगज सम सुखदाय ॥ बारिजाच्छ ताकों बिन जोहि। काम्यक बन यह रुचत न मोहि॥ अशनिस्वन सम धनुटङ्कार। तासु सुनें बिन भूप उदार ॥नहीं लहत मेरो मन शर्म।करत धनञ्जयको सुमर्म॥सुनि बिलाप कृष्णाको बीर।बोले भीमसेन गम्भीर॥ भीमसेन उवाच ॥ कहति प्रीतिकर सुन्दरि बैंन । अमृतपानसम आनँदऐंन ॥ पीन बाहु परिघोपम जास।मौर्बी घर्षण सह छबिरास॥ताहि बिना यह जगत महान।लगत सूर बिन गगण समान॥ जाको करि आश्रय पांचाल। डरत नहीं रण माह बिशाल॥ हम लहि जासु बाहु आधार। जीते जानत शत्रु उदार॥ बिना एक फाल्गुण बर बीर। धृति न लहत बन माह गभीर ॥ नकुल पाण्डुनन्दन मतिऐंन। कहे बाष्पपूरित इमि बैंन ॥ नकुलउवाच ॥ रणमे जास अमानुष कर्म। बरणन करत देवता पर्म ॥ ताहि बिना बनमे रति कौंन । उत्तरदिशिकों करि जेहि गौंन ॥ रणमे जीति प्रबल गन्धर्ब। ल्याए दिव्य अनेकन्ह अर्ब॥ दिए धर्मनृपकों जेहि ल्याय।राज सूयमे हय समुदाय॥ भीमावरज भीमकरकर्म । तेहि बिना लगत न काम्यक पर्म ॥ * ॥ सहदेवउवाच ॥ * ॥ धन कन्या रणमे जेहि जीति। नृपकों दियो अखर्ब सप्रीति ॥ जीति बृष्णिवंशी बर काय। हरी सुभद्रा हरि मत पाय ॥ शून्य जिष्णुको आसन देखि । मन न लहत संतोष बिशेखि ॥ यहि बनतें बरु भलो बिदेश । बिना जिष्णु नहि रुचत नरेश॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धनञ्जयकों उत्सुक बीर। सुनि भ्रातन्हके बचन गँभीर॥ कृष्णा सहित युधिष्ठिर भूप। भए शोच करि बिमन स्वरूप ॥ नारद मुनि आवत तपधाम । देखो धर्मनृपति अभिराम॥ भ्रातन्ह सह चलि आगें ल्याय। पूजन कियो सबिधि सुखदाय ॥ पूजा तौंन लेइ अभिराम । आश्वासन कीन्हों तपधाम ॥ कहोधर्म नृपसों मुनि बैंन। कहहु सो देहिं तुम्हें मतिऐंन ॥ भ्रातन सह करिकै परणाम । कहो धर्मनृप हे तपधाम ॥ तुम्है प्रसन्न भए सब कार्य । पूर्ण भए मानत हम आर्य॥ जौ हम कृपा योग्य तप ऐंन। हरु संशय मम कहि सित बैन॥ करत जे भूमिप्रदच्छिण गौंन। तीर्थन माह तत्पर नर जौंन॥ ताको फल सब सहित सुधर्म । कहिए तौंन महा मुनि पर्म ॥ ❁ ॥ नारदउवाच ॥ ❁ ॥ सुनहुँ स्वस्थ व्है भूपति तौंन। कहो पुलस्त्य भीष्मसों जौंन ॥ भीष्म पूर्व सुरसरिता तीर। रहे पित्र ब्रतधारि गँभीर॥ मुनिन सहित जहँ गङ्गा द्वार। रहे बसत तहँ भीष्म उदार॥देव पितृ ऋषि तर्पण तत्र।करत रहे भीषम नृप यत्र ॥ तँह पुलस्त्यऋषि अति तपधाम । आइ गए कबहूँ अभिराम॥ तिन्हैं देखिकै भीषम भूप । भरे हर्षसों अमित अनूप ॥ पूजन करि मुनिको अभिराम॥ कहो अनघ मै भयो ललाम ॥ अञ्जलि जोरि रहे करि मौन । देखि प्रसँन्न भए तपभौंन ॥ ॥ * ॥ पुलस्त्यउवाच ॥ * ॥ देखि सत्यसतो समदम धीर । हम प्रसँन्न अति भए गँभीर ॥ ऐशो पित्र भक्तितो देखि। हम प्रसँन्न तुम माह बिशेखि ॥ हम अमोघ दर्शी गाङ्गेय। कहहु जो तुम

हमकों सो देय ॥ कहउ जौन तुम भीषम श्याम । हम ताके दाता अभिराम ॥ भीष्मउवाच ॥ ब०प०
तुम्हैं प्रसन्न भए तपधाम । जानत सिद्धि भए सब काम ॥ जानत कृपा योग्य जौ मोहि । संशय कहत सो हरिवे तोहि ॥ है मुनि कछु मेरे हिय गेह । तीर्थनमाह धर्म सन्देह ॥ तौन सुनो चाहत तपधाम । कहहु सबिस्तरसों अभिराम ॥ छितिको करत प्रदक्षिण गौन । अमर समान परम नर जौन ॥ ताको कहा होत फल धर्म । कहिए तौन महामुनि पर्म ॥ * ॥ पुलस्त्यउवाच ॥ * ॥ करि एकाग्रमन सुनो सु तौन । कहैं ऋषिन्हको है पथ जौन ॥ * ॥ दोहा ॥ *

हाथ पाय मन स्ववश है जे बिद्या तपधाम । कीर्त्तिमान ते तीर्थको फल पावत अभिराम ॥
लेत प्रतिग्रह जे नहीं उदरपूर्तिसों तुष्ट । अहङ्कारसों रहित जे लहत तीर्थफल पुष्ट ॥
दम्भादिकसों हीन जो कार्य्यारम्भ न जाहि । लघ्वाहार जे होत नर मिलत तीर्थफल ताहि ॥
मुक्त पापतें क्रोध तजि होत जितेंद्री जौन । सत्यशील दृढव्रत लहत भीष्म तीर्थफल तौन ॥
ऋषिन्ह बिबिधि बिधि मख कहे देवविषय अभिराम । यथातथ्य तिनको मिलत फल इत उत दुहु धाम ॥
नहि ते सक्य दरिद्रके प्राप्त होनकों तौन । सामग्री ताकी बहुत मखबिस्तरकी जौन ॥
करिबे योग्य सो नृपति कै कै समृद्ध जन जौन । अर्थशून्य निर्जन नही सकै यज्ञ करि तौन ॥
करिबे सक्य दरिद्रके तुल्य यज्ञफल सर्व । हे भीषम हम कहत हैं सो बिधि सुनहु अखर्व ॥
जौन गुह्य मत ऋषिणको कहत सुनहुँ मतिधाम । तीर्थगमन है यज्ञतें पुण्यद अति अभिराम ॥
तीन दिवस उपबास करि जोन तीर्थमे जाय । देत हेम गो जे न ते धरत दरिद्री काय ॥
अग्निष्टोमादिक करत यज्ञ भूरि दै दान । तीर्थगमनफल पुण्यके ते नहि होत समान ॥
मनुज लोकमे बिधि रचित तीर्थ लोक बिख्यात । पुष्कर नामक बसत जँह महाभाग अवदात ॥
तँह दश कोटि सहस्त्र जे तीर्थ पुण्यके धाम । जात त्रिसंध्यमे तहाँ सुनु कुरुकुल अभिराम ॥
आदित्य साध्य वसु मरुद्गण रुद्राप्सर गन्धर्व । नित्य जात पुष्कर निकट भरे मोदसों सर्व ॥
तेहि तीरथमे पितामह कमलासन तपरास । भरे प्रीतिमों करत हैं नित्य निरन्तर बास ॥
जेहि पुष्करमे देव ऋषि तप करि पूर्व महान । पाय सिद्धि सब पुण्यतें युक्त भए अतिमान ॥
देव पितर अर्चन करत करि कै पुष्कर स्नान । अश्वमेधतें दश गुणित पावत पुण्य महान ॥
पुष्करके ढिग एक द्विजकों जो भोजन देत । यथाशक्ति दुहुँलोकमे सो सुद लहत सनेत ॥
पुष्करमे सुस्नानकों करत जाय नर जौन । सो न लहत है योनिकों स्वर्ग वास करि तौन ॥
नर कार्तिककी पूर्णिमामे जे पुष्कर न्हात । महापुण्यकों पाय सो ब्रह्मलोककों जात ॥
दुहुसंध्यामे करत जो पुष्कर स्मर्ण सुजान । सफल होत ताकों सुनो सर्वतीर्थको स्नान ॥
नर नारी जो जन्म भरि करत पापको पास । पुष्करमे सु स्नानकेकरत होत सो नाश ॥

५० सर्बसुरनके आदि ज्यों मधुसूदन भगवान। सबतीर्थनके आदि ज्यो पुष्करहै सुखदान॥
नियत ब्रत द्वादश बरष रहै जो पुष्कर पास। सर्व यज्ञकों लहत सो ब्रह्मलोकको बास॥
अग्निहोत्र शतवर्षलों किएँ नियत फल जौन। मिलत एक बसि कार्तिकी पुष्करके ढिग तौन॥
है पुष्कर त्रय पापहर आदि सिद्ध अतिमान। नदी त्रिधातामे मिली सरस्वती सुखदान॥
दुष्कर पुष्करको गमन दुष्कर पुष्कर बास। करिबो तहँ तप दानको है दुष्कर मतिरास॥
तहँते जम्बूमार्गकों जाय रहै निशि पाँच। अश्वमेधके पुण्यकों तौन लहै नर साँच॥
होय पूत दुर्गति नहीं लहै सिद्धिकों पाय। चलै तहाँते सो परम तन्दुलिकाश्रम जाय॥
दुर्गति लहै न करै सो ब्रह्मलोकमे बास। फिरि अगस्त्य सर लहि करै देवार्चन मतिरास॥
फलाहार रहि तीनिनिशि होय कुमार समान। फेरि कण्वके जाय सो आश्रमकों मतिमान॥
धर्मारण्य सो आय है भरो धर्म अतिमान। तामें करत प्रवेश तेहि तजै पाप बलवान॥
यजातिपत्तन जाय सो अश्वमेध फलपाय। महाकालकों फेरि सो नियता सन ह्वै जाय॥
अश्वमेध फल लहै करि कोटितीर्थमे स्नान। भद्र नाम बट सर उमापतिको जो थान महान॥
तहां जाय करि गोसहस बितरणको फल पाय। शङ्करको गण होय सो अन्तकालमे जाय॥
देव पितृ तर्पण करै करि रेवामे स्नान। अग्निष्टोम सु यज्ञको फल पावै सुखदान॥
दक्षिणाब्धिकों जाय ऋषि ब्रह्मचर्य्यब्रत पर्म। अग्निहोत्र मखको लहै चढि बिमानपै धर्म॥
सरिता चर्मन्वतीमे स्नान करै फिरि जाय। रन्तिदेव पूजन करै अग्निहोत्रफल पाय॥
अर्बुद गिरि हिमवानसुत ताकों फिरि चलि जाय। पूर्ब धराकों बिबर जे मूंदि रहो अतिकाय॥
आश्रम तहाँ बशिष्टको एकनिशा करि बास। गो सहसके दानको पुण्य लहै मतिरास॥
पिङ्गातीर्थ स्नान करि ब्रह्मचर्य्य धरि बीर। कपिला शतके दानको सो फल लहै गँभीर॥
तब चलि जाय प्रभासको तीर्थ जो पुण्य प्रकास। नित्य रहत जाके निकट तेजस भरो ऊतास॥
स्नान करत तेहि तीर्थमे शुचिमत ह्वै नर औन। अग्निहोत्रमखफल लहत तीनि निशामे तौन॥
सरस्वती अरु सिन्धुको जँहँ सङ्गम तहँ जाय। लहै स्वर्ग गोसहसके बितरणको फल पाय॥
बरदान तीर्थकों जाय चलि फिरि सो नर मतिमान। दुर्बासा ऋषि बिष्णुकों दियो जहाँ बरदान॥
न्हाय तीर्थ बरदानमे गो सहस फल पाय। पुरी सो द्वाराबतीकों नियतासन फिरि जाय॥
पिण्डारकमे स्नान करि सुबरन लहै महान। जामे लक्षित होतहै लक्षण पदम समान॥
देखि परति अबहूँ तहाँ मुद्रा अद्भुत रूप। जामे पदम त्रिशूलके अङ्क लसत कुरुभूप॥
सङ्गम सागर सिन्धुको लहि शङ्करके पास। तर्पण करि सु स्नान नर लहत बरुणपुर बास॥
शङ्कुकर्ण शिवको करै पूजन जो नरभूप। अश्वमेध दशको लहै सो फल परम अनूप॥
दमीनामके तीर्थमे ब्रह्मादिक सुर सर्व। शङ्करको सेवन करत तहँ करि स्नान अखर्ब॥

सबजन्मके पापसों छूटि जात नर तैांन। प्राप्त होत है ताहि फल अश्वमेधको जान॥
बसुधारा जहँ तीर्थ है जाय तहांते तैांन। जातमात्र ताकों मिलै अश्वमेध फल जैांन॥
तहाँ स्नान करि कै करैं तर्पण सबिधि सुजान। बिष्णुलोककों जाय सो पावै मोद महान॥
तेहि सम तहँ है बसुन्हको तीरथ सुनहु सुनीति। स्नान पान करि कै तहाँ लहै बसुन्हकी प्रीति॥
सिन्धूत्तम बर तीर्थमें करै जो स्नान सुधर्म। पाप जाय सब छूटि सो काञ्चन पावै पर्म॥
भद्रतुङ्गकों जाय जो शुद्ध शील मतिरास। ब्रह्मलोकमें जाय कै करै तैांन नर बास॥
फिरि कुमारिकातीर्थकों जाय जो सेवत सिद्ध। तहाँ स्नान करि लहत नर स्वर्गलोक अति ऋद्ध॥
तहाँ रेणुकातीर्थ है जाकों सेवत सिद्ध। तहाँ स्नान करि होय द्विज शशिके सदृश समृद्ध॥
फेरि पञ्चनदतीर्थकों नियतासन करि गैांन। पञ्चयज्ञके फल लहै क्रमसों बरने जैांन॥
भीमाकों नर जाय सो योनिकुण्डमें न्हाय। देवीपुत्र सो होत है कुण्डल तप्त हि पाय॥
जाय करि श्रीकुण्डकों त्रिभुवनमाह प्रसिद्ध। करि प्रणाम बिधिकों लहै गोसहस्रफल ऋद्ध॥
बिमल तीर्थकों जाय नर भरो पुण्य अवदात। जामें कचन रजतके अबलों मत्स्य लखात॥
तहाँ स्नान करि जाय सो इन्द्रलोककों छिप्र। सर्वपापसों मुक्त करि आत्मा आपु पवित्र॥
पितृ देव तर्पण करै जाय बितस्तामाँह। बाजपेयको फल लहैं तैांन सुनहु नरनाह॥
बितस्त नाम काश्मीरमें है तक्षकको भैांन। बाजपेयको देत फल न्हात पापहर तैांन॥
बडबाकों नर जाय सो तीर्थ जो त्रिभुवन ख्यात। संध्याकों सु स्नान करि यथाविहित अवदात॥
पावककों अर्पण करै यथाशक्ति परमांन्न। अक्षय दान सो पितृनकों होत तोक महतान्न॥
पितर देव ऋषि अप्सरा गुह्यक अरु गन्धर्व। सिद्ध यक्ष किन्नर असुर बिद्याधर नर सर्व॥
रुद्र सु ब्रह्मादिक अमर तहाँ जाय अभिराम। दिव्य बर्ष सहस्रकी लैकै नियत ललाम॥
करत प्रसंन्न सु बिष्णुकों जलमाही चरु डारि। सातबार ऋग्वेदसों सुस्तुति करत बिचारि॥
बिभव देत बसु गुणित सब केशव तिन्हैं कृपाल। यथाभिलाषित कामना सोऊ देत बिशाल॥
अन्तरध्यान सुहरि तहाँ बिद्युत ज्यों घनमाहँ॥ नाम सप्तचरु ख्यात है तीर्थ तास नरनाह॥
राजसूय गोदानतें अश्वमेधतें तैांन। हैं सहस्रगुण देत चरु सप्तर्षिषमें जैांन॥
व्है निवृत तहँतें चलैं बल्लापदकों जाय। तहँ शिवको पूजन करै अश्वमेध फल पाय॥
फेरि जाय मणिमन्तकों ब्रह्मचर्य्य धरि जैांन। अग्निष्टोमको फल लहै एकरात्रि बसितौन॥
जाय देबिकाकों जहाँ शूलपाणिको धाम। बिप्रनकी उतपत्यको स्थान सुनत अभिराम॥
तहाँ स्नान करि शम्भुको अर्चन करै सुजान। करै निवेदन चरु तहाँ सो नर शक्ति प्रमान॥
दोयकोश बिस्तार है आयत योजन पञ्च। तहाँ देबिकामें बसत तजि ऋषि देव प्रपञ्च॥
जाय तहाँते तीर्थ बर दीर्घसत्र है जत्र। ब्रह्मादिक सुर करत हैं दीर्घ सत्रकों तत्र॥

व॰प॰ जातमात्र ही दीर्घ शत्रमे सुनऊ युधिष्ठिर भूप। राजसूय अरु अश्वमेधको फल फल मिलै अनूप॥
तहँतें विनशनतीर्थकों नियतासन ह्वै जाय । मेरुपृष्ठपर सरस्वती गुप्त वहति जहँ आय ॥
चमसोद्भेद शिवोद्भद अरु नागोद्भदहि जाय। अग्निष्टोमको फल लहै चमसोद्भद अन्हाय॥
शिवो भदमे स्नान करि गो सहस्र फल लेय । नागो भदसो स्नानतें नागलोककों देय ॥
शशयानतीर्थमे जाय करि स्नान धरै शशिरूप । गोसहस्रके दानको कल फल लहै अनूप ॥
कुमारकोटिमे स्नान करि अरचै देव कुमार। अयुतगायको फल लहै करै स्वकुल उद्धार॥
रुद्रकोटिकों जाय कै स्नान जो करै उदार। अश्वमेधकों फल लहै करै सुकुल उद्धार॥
सरस्वतीसङ्गम जहाँ तहाँ जाय कै भूप । ब्रह्मलोक पावै परम करि सुस्नान अनूप ॥
शत्र समाप्त कियो ऋषिण तहाँ तीर्थ अवसान। गोसहस्रको दान फल तहाँ लहै मतिमान ॥
कुरुक्षेत्रको जाय तब जाको दर्शन पाय। पाप अनेकन जन्मको सञ्चित सो तजि जाय॥
कुरुक्षेत्रकों जाँउ मैं कुरुक्षेत्रमे वास। करौं कहत ता मनुजको पाप महत है नास॥
कुरुक्षेत्रकी धूरि उडि जाकों परशत जाय । तीन परम गतिकों लहै पाप पुञ्ज जरि जाय॥
सरस्वती है याम्यदिशि जाके अति अभिराम। दृषद्वती उत्तर वहति कुरुक्षेत्रसो धाम ॥
तहाँ रहत हैं जीव जे बसत स्वर्गमे तौन। सरस्वतीके निकटमे रहत मास भरि जौन ॥
ब्रह्मादिक सब देव तहँ आवत हैं अवदात । स्पर्श करत ताको मनुज ब्रह्मलोककों जात॥
राजसूय अश्वमेधको फल पावत अभिराम। द्वारपाल अर्चन करै तेहा मङ्कण नाम॥
सतत नाम जो विष्णुको स्थान तहाँकों जाय। अश्वमेधको फल लहै स्नान तहाँको पाय॥
पारिप्लव जो तीर्थ है जाय तहाँकों जौन। अग्निष्टोमको फल लहै तीनिरात्रिमे तौन॥
पृथिवी तीर्थ हि जाय सो गोसहस्र फल लेय। जाय फेरि सालूकिनी तीर्थ जौन सुखदेय॥
अश्वमेध दशको लहै फल तहँ करि सुस्नान । सर्व देविकातीर्थकों तहँते जाय सुजान॥
अग्निष्टोमको फल लहै नागलोकको वास । जहाँ तरण्डक द्वारपाल हैं तहाँ जाय मतिरास॥
गोसहस्रको फल लहैं पूजि तरण्डक भूप । जाय पञ्चनदतीर्थकों नियतासन सुविरूप॥
कोटितीर्थमे स्नान करि अश्वमेध फल पाय । आश्विनतीर्थ स्नान करि रूपवान ह्वै जाय॥
फेरि जाय वाराहको तीर्थ जहाँ अतिमान।अग्निष्टोमको फल लहै तेहाँ करि सुस्नान॥
फेरि जयन्ती पाय सो सोमतीर्थकों जाय । स्नान तहां करि फल लहै राजसूय सुखदाय॥
एकहंसमे स्नान करि गोसहस्र फल पाय । पद्मासन सो होत है ब्रह्मलोकमे जाय॥
जाय मञ्जुवटतीर्थकों सो शिवको सुस्थान। तीनिरात्रि वसि कै लहै गाणपत्य सुखदान॥
तहां यक्षिणीतीर्थ है त्रिभुवनमे विख्यात। तहां स्नान करि कै लहै सर्वकाम अवदात॥
कुरुक्षेत्रको द्वारसो मिलै प्रदक्षिणमाह। तौन सु पुष्करतीर्थ है न्हाय तहां नरनाह॥

परशुराम पुष्कर तहां स्थापन कीन्हों ल्याय । होय तहां कृतकृत्य नर अश्वमेधफल पाय ॥ व॰प॰
जाय तहां जे रामके रचित तीर्थ ह्रद रूप । हनि क्षत्रियणके रुधिर तें भरे जे परम अनूप ॥
पितरन्हको तर्पण कियो तीन पञ्च ह्रद माह । पितर प्रीति करि रामसों यो बोले नरनाह ॥
पितर ऊचुः। हैं प्रसन्न हम राम अति तुमपै हे बलभौन। विक्रमतें अरु पितृ भक्तितें मागड वांछितजौन॥
यह सुनि पितरन्हके वचन बोले साञ्जलि राम। ह्वै प्रसन्न जौन करत हौ कृपा कृपाके धाम ॥
तौ मेरो यह पूर्व तप रहौं यथास्थित तौन । होय क्रोधवश हम कियो क्षत्रियणको वध जौन ॥
तो प्रताप तें पितर सो छोडैं मोकों पाप । तीर्थ भूत ए होहि ह्रद पुष्कर पूरित आप ॥
राम वचन यहि भांतिके सुनिकै पितर ललाम । कहे तथास्तु कृपा सहित गगण देशतें आम ॥
या ह्रदमे जो स्नान करि करिहै तर्पण राम । पितर देहिं गे कृपा करि तिन्ह सकल मनकाम ॥
ऐसे बर दै रामकों कृपा भरे सब पित्र । अन्तरध्यान भए तहां ज्यों घनमाह सवित्र ॥
भए राम ह्रद भांति यहि तिनमे करै जो स्नान । पूजि रामकों लहै सो सुवरण बहुत सुजान ॥
वंशमूल वर तीर्थमे स्नान करै नर जौन । देह शुद्धि लहि जायगो परम लोककों तौन ॥
लोकोद्धारण तीर्थमे करिहै जो सुस्नान । लोक आपने करैगे सो उद्धार सुजान ॥
स्नान करै श्रीतीर्थमे जो नर जाय ललाम । देव पित्रकों अर्चिकै लहै सो श्री अभिराम ॥
करै जो कपिलातीर्थमे स्नान जायकै पर्म । लहै सो कपिला सहसके वितरणको वर धर्म ॥
देव पितर अर्चन करै जाय धारि उपवास । सूर्य तीर्थमे लहै सो सूर्य लोकको बास ॥
गवाभवन वर तीर्थमे जाय करै सु स्नान । गो सहस्रके दानको फल पावै अति मान ॥
जाय शङ्खिनी तीर्थमे स्नान करै जो भूप । सो देवीको तीर्थ है पावै रूप अनूप ॥
ब्रह्मावर्त सु तीर्थकों तह ते नर चलिजाय । तहां स्नानकरि ब्रह्मलोकको जाय परम गतिपाय ॥
जाय सुतीर्थकको जहां देव पितरको बास । तहा स्नान करिकै लहै पित्रलोक सुखरास ॥
काशीश्वरको तीर्थ है अम्बुमतीमे जौन । गौन सु तीर्थक स्नान करि करै ब्रह्मपुर गौन ॥
मातृतीर्थ सो है तहां करै जो तहँ सु स्नान । प्रजा बृद्धि सह श्री लहै परम परम सुखदान ॥
सीतावनमे तीर्थ त्रय तहँ करि गमन विवेक । तिन्हमे कीन्हें स्नान नृप पाप रहत नहि नेक ॥
इन तीर्थन्हमे जाय नर स्नान करत हैं जौन । परम पुण्य लहिकै करत स्वर्ग लोकको गौन ॥
खाविल्लोमा यह परम तीर्थ तहां जो जाय । स्नान करत तन त्यागि सो स्वर्गलोककों पाय ॥
दशाश्वमेधिक तीर्थमे स्नान करत नर जौन । अन्तसमै तन त्यागिकै लहत परम गति तौन ॥
मानुष तीरथ जाय जहँ शरहत मृग करि गौन । तेहि शरमे गिरिकै लहो मानुषको तन तौन ॥
ब्रह्मचर्य व्रत धारि तहँ स्नान करै नर जाय । लहै मोद छुटि पापसों स्वर्गलोककों पाय ।
मानुषके पूरब दिशा कोश एक पर कहइ । नदी आपगा नाम है जाकों सेवत सिद्ध ॥

५० श्यामकाय तहँ बिप्रकों भोजन एक कराय । कोटि बिप्र भोजन जनित तौन तहां फल पाय ॥
देव पितर अर्चन करै स्नान तहां करि तौन । एकरात्रि रहिबो लहै अग्निष्टोम फल जौन ॥
ब्रह्मोदुम्बर तीर्थकों जाय जो बिधिको ध्यान । तहां सप्तऋषि कुण्डमे करि बिधिवत सु स्नान ॥
केदार कपिलके तीर्थमे शुचि करिकै सो काय । सर्ब पापसों मुक्त व्है ब्रह्मलोककों जाय ॥
जाय कपिष्ठल तीर्थकों नाम तास केदार । अन्तरध्यान सु सिद्धिकों पावै तहां उदार ॥
जाय सो शङ्कर तीर्थको कृष्ण चतुर्दशि पाय । यथा बिहित पूजन करै शङ्करको सुखदाय ॥
सर्ब कामकों पाय सो करै स्वर्गमे बास । तीनिकोटि सब तीर्थ है बसत जहां सर वास ॥
रुद्रकोटिके कूपमे कुदसे परम अनूप । ईला नामक तीर्थ है तहां सुनऊ कुरु भूप ॥
देव पितर अर्चन करत स्नान तहां करि जौन । दुर्गतिकों नहि लहत है बाजपेय फल तौन ॥
जाय तीर्थ किन्दानमे स्नान दान जप तौन । अप्रमेय सो होत है करत यथाबिधि जौन ॥
कलशी तीरथ बारिमे स्नान करत जो जाय । अग्निष्टोम को फल लहत तौन परम सुखदाय ॥
सरक तीर्थके पूर्ब है नारद तीर्थ सुजान । अनाजन्म बिख्यात सो करै तहां सु स्नान ॥
नारद आज्ञा पायकै देह त्याग करि तौन । जाय लोककों लहै सो सबसों उत्तम जौन ॥
दशमीमे शित पक्षकी पुण्डरीककों जाय । करै तहां सु स्नानको पुण्डरीक फल पाय ॥
त्रिपिष्टप तीर्थहि जाय जहँ बैतरणी हर पाप । शिव पूजन करि गति लहै जो है परम दुराप ॥
फलकी बनकों जाय जहँ देव करत तप भूप । दृषद्वतीमे स्नान करि बसि निशि तीनि अनूप ॥
फलको बन तर्पण करै अग्निष्टोम फल देय । सर्ब देवमे स्नान करि गो सहस्र फल लेय ॥
पाणिखात मे स्नान करि तर्पण करै जो भूप । तीनि निशामे अग्निष्टोमको सो फल लहै अनूप ॥
मिश्रककों तब जाय जहँ तीर्थ व्यास सब ल्याय । सर्ब तीर्थके स्नान हित राखे तहां मिलाय ॥
स्नान मनोजवमे करै व्यास बिपिनिमे जाय । गो सहस्रके दानको लसै तहां फल पाय ॥
जाय फेरि मधुबटीकों देवी तीर्थ सु तौन । लहै स्नानकरिकै तहां गो सहस्र फल जौन ॥
दृषद्वती अरु कौशिकी को सङ्गम जहँ पर्म । स्नान तहां करि पापतें छूटि लहै बरधर्म ॥
व्यासथलीकों जाय जहँ पुत्रशोकसों व्यास । प्राण तजत दे देवतन रक्षण कीन्हों तास ॥
गो सहस्रके दानको जाय तहां फललेय । किन्दत्त कूपकों जाय फिरि प्रस्थ एक तिल देय ॥
ऋणसों व्है कै मुक्त सो परगति लहै अनूप । बेदीतीर्थस्नानमे गो सहस्र फल भूप ॥
अह अरु सुदिन सुतीर्थ है तिनमे करि सुस्नान । सूर्यलोककों जालहै लहि बर पुण्य सुजान ॥
मृगधूम तीर्थकों जाय करि गङ्गामे सुस्नान । अश्वमेधको फल लहै पूजि शंभु सुखदान ॥
देवीतीर्थस्नान करि गो सहस्र फल पाय । सो बामनके तीर्थकों चलो तहां तें जाय ॥
बामनको पूजन करै न्हाय बिष्णुपद पास । पाप मुक्त व्है सो करै बिष्णुलोकमे बास ॥

स्नान कुलंपुनमे करै पूतकरै कुल सर्व । पवन कुण्डमे स्नानकरि हरिपुर लहै अखर्व ॥ ३०५०
अमरकुण्डमे स्नानकरि पूजै तहा सुरेश । स्वर्गलोकमे जायकै वास सो करै हमेश ॥
शालिहोत्रके तीर्थमे करि बिधिवत सुस्नान।गो सहस्रके दानको सो फल लहै सुजान ॥
श्रीकुञ्जसरस्वतीमे तहा जाय करै सु स्नान । अग्निष्टोमको पुण्यकों सो पावै सुखदान ॥
तबसो नैमिषकुञ्जमे जाय करै सुस्नान । अग्निष्टोमको फल लहै तेहा सुनऊ सुजान ॥
जाय सो कन्यातीर्थमे स्नाकरै नर पर्म । गो सहस्रके दानको तौन लहै फल धर्म ॥
जाय तीर्थ ब्रह्मण्यमे स्नान करतहै धन्य । सवादिक त्रयवर्ण जहँ पावतहैं ब्रह्मण्य ॥
ब्राह्मण तेहाँ स्नान करि शुद्ध परम गति लेत।सोमतीर्थमे जायकै स्नान जो करै समेत ॥
सोमलोकको लहतहै तौन परम सुखदाय। सप्त जे सारस्वत जहां तीर्थ तहाकों जाय ॥
मकणक जहां ब्रह्मर्षि हो तपसों भरो महान।कारण बस तहँ शिव बसे दै ताकों वरदान ॥
तिन सारस्वत तीर्थमे स्नान करै नर जौन । सारस्वत बर लोकमे बास करतहै तौन ॥
लहतै उशनस तीर्थकों जाय जो सुमति उदार। ब्रह्मादिक सुर ऋषि बसत जेहाँ सहित कुमार ॥
फिरि कपालमोचन जहां तीर्थ तहांकों जाय। स्नान करत सब पाप मिटि जाय तीर्थ फल पाय॥
अग्नि तीर्थमे जाय जो स्नान करै नर बुद्ध। अग्निलोककों जायसो करि सब कुलकों शुद्ध ॥
कौशिक ऋषिके तीर्थकों जाय जौन नर धन्य। स्नान करत सो लहतहै परम पुण्य ब्रह्मण्य ॥
ब्रह्मयोनिकौं जाय नर व्है शुचि मन करि स्नान । ब्रह्मलोककों जाय करि बंश पूत सुखदान ॥
पृथूदक बर तीर्थमे स्नानकरै जो जाय । कार्तिकेयको तीर्थसो परम पुण्यकों पाय ॥
नारी नरसों होय जो पाप ज्ञात अज्ञात । स्नान पृथूदकमे करत तौन नाश व्है जात ॥
अश्वमेधको फललहै स्वर्गलोककों जाय। पृथूदक सु सब तीर्थमे परम पुण्य फलदाय ॥
तहा मधुस्रव तीर्थ है करै स्नान तहँ जौन । गोसहस्रके दानको फल पावतहै तौन ॥
अरुणा सरस्वती जहाँ मिली तहाँ जो न्हाय । ब्रह्महत्याको पापसो तौनि निशामे जाय ॥
धर्मकीलमे स्नान करि कर्म भ्रष्ट द्विज जौन । फेरि लहै ब्राह्मण्यकों बिदर्भी मुनि क्रत तौन ॥
बिदर्भी ऋषि ल्याए तहाँ चारों सिन्धु महान । दुर्गतिकों नहि लहत नर करि तिनमे सुस्नान ॥
शत सहस्र अरु सहस्रकै तिनमे करि सु स्नान। गो सहस्रके दानको तहँ फल लहत सुजान ॥
न्हाय रेणुकातीर्थमे देवार्चन करि जौन । अग्निष्टोमको फल लहै पाप मुक्त व्है तौन ॥
स्नान बिमोचन तीर्थमे करै जितेंद्री जाय । प्रतिग्रहके पापसौं छूटै ताको काय ॥
पञ्चवटीमे स्नान चलि करै जितेंद्री जौन। महापुण्यको पायकै लहै लोक सत तौन ॥
तहँ योगेश्वर वृषध्वज आपु करत है बास । तिनको पूजन करि रहै गणव्हैकै शिवपास ॥
तेजस वारुण तीर्थहै भरो तेजसों तत्र । देवन सह अभिषेक बिधि किय कुमारको यत्र ॥

व०प०

सेनापतिको सुरन्हके तहा करै जो स्नान । सेनानीके लोकको पावै तैंन सुजान॥
तेजसके पूरबदिशा हैं कुरुतीर्थ महान । ब्रह्मलोकको जाय नर करि तेहाँ सुस्नान॥
स्वर्गद्वारको जाय जो नियतासन करि स्नान । ब्रह्मलोकको जाय सो पाय पुण्य मतिमान॥
जाय जो अनरक तीर्थमे स्नान करै मतिमान । सो दुर्गति पावै नही सुनकुरुभूप सुजान॥
रुद्र पत्नी तीर्थहै ताके नीरे भूप । देवी पूजन करि तहाँ लहै न दुर्गति रूप॥
विश्वेश्वर जँह उमापति पूजै तहँ करि गौन । महापापके दापसों छूटतहै नर तौन॥
फिरि नारायण तीर्थकों पद्मनाभ जहँ जाय । विष्णुलोककों लहै सो रूप अनूपम पाय॥
सर्व देवके तीर्थमे स्नान करै नर जौन । सर्व दुःखसों छूटिकै शशिसों सोहै तौन॥
जाय स्वस्तिपुरकों तहां करै प्रदक्षिण भूप । सो सहस्रके दानको फल पावै अनुरूप॥
देव पितृ तर्पण करै पावन तीर्थहि जाय । अग्निष्टोम मखको लहै पुण्य परम सुखदाय॥
गङ्गाह्रद तहँ कूपमे कोटि तीर्थको बास । जात स्वर्गकों स्नान तहँ करिकै पातक नाश॥
न्हाय आपगा तीर्थमे करै शिवार्चन जौन । गाणपत्य लहिकै करै स्वकुलोद्धारण तौन॥
स्नान करै गो स्थानु बट तट रहिकै निशि एक । रुद्रलोककों जाय गो पाय पुण्य अतिरेक॥
आश्रम परम बशिष्ठको बदरीकों जो जाय । तीनि रात्रि तेहाँ रहै बदरी फलकों खाय॥
बदरी भक्षण करि करै तप जो द्वादश वर्ष । तुल्य होत सो तौनको पाप पुण्य बर हर्ष॥
रुद्रमार्ग बर तीर्थकों तीर्थ भक्त जो पाय । अहोरात्रि उपवास करि इन्द्रलोककों जाय॥
एकरात्र बर तीर्थमे एकरात्र उपवास । नियत सत्यबादी लहै ब्रह्मलोकमे बास॥
आश्रम जहँ आदित्यको जाय करै तहँ स्नान । करै यथाविधि भानुको पूजन सो मतिमान॥
करि कुलको उद्धार सो सूरलोककों जाय । है प्रसिद्ध तिहुँ लोकमे भानु तीर्थ सुखदाय॥
सोमतीर्थमे स्नानकों करै जाय नर जौन । सोमलोकमे लहत है नित्य बासकों तौन॥
है दधीचको तीर्थमे सारस्वत सर शुद्ध । स्नान तहां करिकै लहै अश्वमेध फल उद्ध॥
करै उपास जो तीनि निशि कन्याश्रममे आय । स्वर्गलोककों जाय लहि कन्या शत सुखदाय॥
तीर्थ परम सन्निहितमे ब्रह्मादिक सुर आय । मास मासमे न्हात है रबिउपरागहि पाय॥
अश्वमेधके पुण्यकों पावत हैं सब तौन । अमा माह आवत तहां तीर्थ जगतमे जौन॥
जन्म जन्मको पाप सब करत जाय सु स्नान । ब्रह्मलोककों जाय सो करि तहँ श्राद्ध सुजान॥
करै अचलुक द्वारपालको तहँ बन्दन जो भूप । कोटि तीर्थमे स्नान करि सुबरण लहै अनूप॥
तहँ गङ्गाह्रद तीर्थ है करै जो तहाँ सुस्नान । राजसूय हैमेधको सो फल लहै सुजान॥
नैमिष क्षिति पर तीर्थ है पुष्कर नभमे पर्म । कुरुक्षेत्र तिहुँलोकमे है विशेषकर धर्म॥
कुरुक्षेत्रकी धूरि उडि जाकों परसति आय । ताके दुःकृत कर्मके पातक देति नशाय॥

कुरुक्षेत्रकों जाइ कै नित्य कर तहँ वास। वचन कहत ए रहत नहि पातक तिनके पास॥ व०प०
तरंतुक सु अरु अरन्तुक इनकोमधि अभिराम। मचक्रुक अरु रामह्रद पञ्चम तीर्थ ललाम॥
समन्तपञ्चक कहत इमि कुरुक्षेत्रकों तज्ञ। उत्तरबेदी पितामहको कीन्हों है जब यज्ञ॥
॥ * ॥ पुलस्त्यउवाच ॥ * ॥
धर्मराज जहँ तप कियो धर्मतीर्थ तहँ जाय। तहां स्नान करि सप्तकुल उद्धारै सुखदाय॥
स्नान सुपावनतीर्थ है जहां तहां फिरि जाय। अग्निष्टोमको फल लहै लोक मुनिन्हको पाय॥
सागन्धिक बन है जहां करै तहांको गौन। तहं प्रवेश करि होत है मुक्त पापतें तौन॥
प्लचादेवी सरस्वती श्रेष्ठ सरित है यत्र। कढति प्लचतट बिवरतैं स्नान करै नर तत्र॥
पितृ देव अर्चन करै अश्वमेधफल पाय। तीर्थ इशानाध्युषितकों फेरि तहांतें जाय॥
कछू दूरि है प्लचतीर्थतें तौन तीर्थ गुणगेय। कपिला दान सहस्रको बाजिमेधफल देय॥
सुगन्ध और शतकुम्भ अरु पञ्च यज्ञकों जाय। महामोदकों लहै सो स्वर्गलोकको पाय॥
शूलखातमें स्नान करि अरचि देव अरु पित्र। शङ्करको गण होय सो तन तजि परम पवित्र॥
देवी जहँ शाकम्भरी जाय तहाँ नर जौन। करै वास तहँ तीनिनिशि शाक खाय कै तौन॥
शाक खाय बारहबरष करै जो तप अतिमान। देवीजूकी कृपातें फल सो लहै सुजान॥
सुबरणमय वर तीर्थकों जाय जो भरो विवेक। जहँ अराधि हरि शम्भुकों पाये सुवर अनेक॥
तहँ पूजन करि शम्भुको भक्ति भरो मतिमान। बाजिमेधफल पाय कै शिवगण होत सुजान॥
जाय सो धूमावतीकों निश्चिय करि उपवास। मनसा वांछित फल लहै तौन तहाँ सुखरास॥
देवीके दक्षिणदिशा रथावर्तकों जाय। महादेवकी कृपा लहि लसै परम गति पाय॥
धारा नामक तीर्थकों जाय तहाँते जौन। स्नान तहाँ करि होत है शोच रहित नर तौन॥
स्वर्गद्वारके सदृश है तीर्थ जो गङ्गा द्वार। स्नान तहाँ करि कै लहै कोटितीर्थ फल सार॥
पुण्डरीककों फल लहै करि कुलको उद्धार। गोसहस्रके दानकों बसि निशि एक उदार॥
सप्तगङ्ग त्रिगङ्गते चक्रावर्त नहाय। देव पितृ तर्पण करै पुण्यलोककों जाय॥
तीनिनिशा उपबास करि जो कनखलमें न्हाय। अश्वमेधको पाय फल स्वर्गलोककों जाय॥
कपिलावटकों जाय कै एकनिशा उपवास। करि गोदान सहस्रको फल पावै मतिरास॥
कपिलनागपति तीर्थमें जाय करै सुस्नान। कपिलादान सहस्रको फल पावै सुखदान॥
ललतिकशान्तन तीर्थकों जाय करै जो स्नान। दुर्गतिकों पावै न सो सुनहु भूप मतिमान॥
गङ्गायमुना मध्यमें न्हात जो जाय उदार। अश्वमेधको पाय फल करत स्वकुल उद्धार॥
सुगन्धतीर्थकों जाय सो ब्रह्मलोकको लहत। रुद्रतीर्थमें स्नान करि जाय स्वर्गकों महत॥

प० गङ्गा और सरस्वती के सङ्गममे न्हाय । अश्वमेधको पाय फल स्वर्गलोककों जाय ॥
भद्रकर्ण शिवको करै बिधिवत पूजन जौन । दुर्गतिकों नहि होत हैं प्राप्त भूप नर तौन ॥
तवकुञ्जामक तीर्थकों जाय जौन नर भूप । गोसहस्रको पाय फल लहै सो स्वर्ग अनूप ॥
बटअरुन्धतीको तहां जाय समुद्रक न्हाय । अश्वमेध फल पाय कै स्वर्गलोककों जाय ॥
ब्रह्मावर्त सुतीर्थकों ब्रह्मचर्य्य धरि जाय । सोमलोककों जाय सो अश्वमेध फल पाय ॥
यमुना जन्मस्थान तहँ यामुनतीर्थ नहाय । अश्वमेधको पाय फल स्वर्गलोककों जाय ॥
देविसंक्रमणतीर्थकों जाय तहांते जौन । अश्वमेधको पाय फल करै स्वर्गको गौन ॥
सिन्धुप्रभव बर तीर्थकों जाय तहांतें जौन । पँचरात्रि बसि कै लहै बहु सुवर्णको तौन ॥
बेदीकों नर जाय जो अतिदुर्गम पथ भूप । अश्वमेधको फल लहै पावै स्वर्ग अनूप ॥
ऋषिकुल्याकों जाय जहँ बसे होत सब विप्र । देव पितरकों अर्चि ऋषिलोक लहै सो क्षिप्र ॥
जाय जो नर भृगुतुङ्ग सो अश्वमेधफल लेय । बीर मोक्ष सो पापकों छोरि पासतें देय ॥
कार्त्तिकामघासुमाहि जो करै जाय सुस्नान । विद्याकों सो लहत है चाहै यथा सुजान ॥
महा आश्रमहि जाय जो बसै एकनिशि भूप । सो छूटि तसब पापतें पावै धर्म अनूप ॥
एककालमे निराहार रहि पावै लोक महान । तजैं महालयमे अशन एकमास मतिमान ॥
बहु सुवर्णको लहत सो रहित पापतें होय । अश्वमेधकों फल लहै महतमोदसों मोय ॥
बसत पितामह आपु जहँ बेतसिकाकों जाय । उषनसकी गतिकों लहै अश्वमेध फल पाय ॥
सुन्दरीका बर तीर्थकों जाय जौन नर भूप । नियत लहै सो जगतमे परम अनूपमरूप ॥
जाय ब्राह्मणीतीर्थकों ब्रह्मचर्य्य धरि जौन । जाय पद्मसम जान चढि ब्रह्मलोककों तौन ॥
नैमिषकों फिरि जाय सब बसत सिद्धगण यत्र । दिव्य देवगण सह बसत आपु पितामह तत्र ॥
जावै नैमिषकों चहत ताको पाप नशात । तेहाँ करत प्रवेश सब पाप भस्म ह्वै जात ॥
पृथ्वीमे जे तीर्थ हैं ते नैमिषमे सर्व । दशपुरुषाकों पूर्व पर पावन करैं अखर्व ॥
नैमिषमे जे तजत हैं करि उपवास शरीर । स्वर्गलोकमे जाय ते पावत मोद गँभीर ॥
गङ्गोद्भेद सुतीर्थमे बसत जो रजनी तीन । ब्रह्मरूप सो होत लहि बाजपेय फलपीन ॥
देव पितृ तर्पण करै सरस्वतीमे जाय । सारस्वत बर तीर्थमे लहै स्वर्ग सुदपाय ॥
जाय बाहुदासरितकों ब्रह्मचर्य्य धरि धीर । एकनिशा बसि स्वर्गकों जाय समोद गँभीर ॥
देवपितर तर्पण करै क्षीरवतीमे जाय । परम लोककों लहै सो बाजपेय फल पाय ॥
जाय जो बिमलाशोककों एकनिशा करि बास । स्वर्गलोककों जाय सो पुण्यमान मतिरास ॥
गोप्रतारकों जाय जो सरजूमाह उदार । गए राम जहँ स्वर्गकों सह पुरजन परिवार ॥
रामप्रपाते तीर्थको लहि प्रताप तजि देह । गोप्रतारमे स्नान करि करै स्वर्गमे गेह ॥

रामतीर्थ जो गोमतीमे है सुनिए सो भूप। अश्वमेधको फल लहै तारै स्वकुल अनूप ॥ अ॰प॰
शतसाहस्रक तीर्थ तहँ तामे करि कै स्नान। गोसहस्र के दानको पावै पुण्य महान ॥
भर्तस्थान सु तीर्थकों जाय तहां नर जौंन। अश्वमेधके पुण्यकों प्राप्त होत है तौन ॥
कोटितीर्थमे स्नान करि पूजन करै कुमार। गो सहस्र को पाय फल तेजस लहै उदार ॥
जाय जो बारानशीकों पूजि बृषध्वज पर्म। कपिला ह्रदमे न्हाय लहि राजसूयको धर्म ॥
अविमुक्ततीर्थकों जाय फिरि काशी जाको नाम। छुटै ब्रह्महत्या गएँ देवदेवके धाम ॥
प्राणत्याग करि लहत जन जेहँा मोक्ष महान। और जगतमे तीर्थ नहि बारानशो समान ॥
जहँ गङ्गा अरु गोमती सङ्गम किए ललाम। तीरथ मार्कण्डेयको तहां धर्मको धाम ॥
स्नान तहां करि कै करै अपनो कुल उद्धार। अग्निष्टोमको फल लहै सो नर परम उदार ॥
फेरि गयाकों जाय धरि ब्रह्मचर्य्य ब्रत पर्म। गवनमात्रमे लहै सो अश्वमेधको धर्म ॥
है प्रसिद्ध तिहुलोकमे तहँ अक्षयवट नाम। देय पितृहित तहँा जो अक्षय होय सो माम ॥
देव पितर तर्पण करै महानदीमे न्हाय। कुलको करि उद्धार तिन अक्षयलोक हि जाय ॥
जाय सो धर्मारण्यमे जहां ब्रह्मसर पर्म। ब्रह्मलोककों जाय सो अप्रमेय लहि धर्म ॥
ब्रह्मा तहँ सरमे कियो यूपारोपण जौंन। तास प्रदक्षिण करि लहै बाजपेय फल तौंन ॥
जाय सो धेनुक तीर्थकों तँहांतें मतिरास। देइ तहां तिलधेनुकों एकराति करि बास ॥
सर्वपापसों रहित सो सोमलोककों जाय। गोपदके अवहूँ परै तेहँा चिन्ह देखाय ॥
गोपदमे जो करत है स्नान सुनहु नृप जाय। होय अशुभकृत कर्म जो तेहां तौंन नशाय ॥
जाय गृध्रवटकों तहां भस्म लेप तन देय। वृषभध्वजकों पूजि द्विज द्वादशाब्द ब्रत लेय ॥
और बर्णको होत है तहँा पापको नाश। जाय सो गिरिउद्यन्तकों चलि तहँतें मतिराश ॥
सावित्रीके चरणके चिन्ह परत तहँ देखि। तहँ संध्या ब्राह्मण करै सुब्रत भरो विशेखि ॥
संध्या द्वादशवार्षिकी होय उपासित ताहि। योनिद्वार तहँ प्रगट है जाय तहांको चाहि ॥
तामे पैठि न योनिको सङ्कट पावत तौंन। कृष्ण शुक्ल दुहुपक्षमे बसत गयामे जौंन ॥
करत पूत सो सप्त कुल सो नर सहित बिबेक। बहुत पुत्र याते चहत गया करि हि कोउ एक ॥
वृषोत्सर्गकों करि हि कै अश्वमेध बरयज्ञ। यातें चाहत पुत्रबहु जन जगमे सरवज्ञ ॥
तिहँतें फाल्गुनदीकों जाय सुमति नर तौंन। अश्वमेधको फल लहै सहित सिद्धि बर जौंन ॥
धर्मप्रस्थकों जाय सो तँहातें मतिरास। धर्मराज जहँ करत हैं नित्य नियमसों बास ॥
देव पितृ तर्पण करै कूपोदकसों न्हाय। मुक्त पापसों होय कै स्वर्गलोककों जाय ॥
ऋषिमतङ्गके जाय सो आश्रमकों मतिमान। गवामयन बर यज्ञको फल पावै सुखदान ॥
तहँतें ब्रह्मस्थानकों जाय युधिष्ठिर जौंन। राजसूय अरु अश्वमेधको फल पावत है तौंन ॥

जाय तहाते राजगृह करै तहां सुस्नान। तहँा मोदकों लहै सो काक्षीवान समान ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

पक्षिणीके नित्य जो नैवेद्यकों नरखाय। ब्रह्महत्यापापसों सो छूटि गतिकों जाय ॥ तीथमे मणिनागके जो करत है सुस्नान। गोसहस्रके दानको फल लहत तौन सुजान ॥ करत ताके सलिलको जो परम पावन पान। सर्पको बिष नही ताको चढत है अतिमान ॥ जाय जौ ब्रह्मर्षि गैातमके सुबनको जौन। कै अहल्यातीर्थमे सुस्नानकों नर तौन॥बाजपेय सु यज्ञको फल लहत है सो भूप। जाय तेहा राजऋषिवर जनकको जहँ कूप॥ जाय लोक सुबिष्णु के करि कै तहां सुस्नान। पाप मोचन जाय विनशन तीर्थकों मतिमान ॥ बाजपेय सु यज्ञकों लहि जाय शशिके धाम। सर्व तीर्थ जलोद्भवा लहि गण्डकी अभिराम ॥ जाय रविके लोककों बर बाजपेयसु पाय। है बिसल्या नदी जहँ तहँ तहाँतें सो जाय ॥ * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * *

अग्निष्टोमको पाय फल स्वर्गलोककों जाय। फेरि चलै अभिबङ्गको जो तपबन सुखदाय ॥

गुह्यकगणमे लहै सो मोद परम अभिराम। जाय कम्पनानदीकों सेबित सिद्ध ललाम ॥

पुण्डरीकको पाय फल स्वर्गलोककों जाय। धारा जहँ माहेश्वरी तहां जाय जो न्हाय ॥

अश्वमेधको पाय फल कुल उद्धारै तौन। जहँ पुष्करणी सुरनको तहां जाय नर जौन ॥

दुर्गतिकों सो नहि लहै तहां करै जो स्नान। बाजिमेधको पाय फल जाय स्वर्ग मतिमान ॥

जाय सोमपदतीर्थकों ब्रह्मचर्य्य धरि जौन। स्नान महेश्वरपद करै बाजिमेध लहि तौन ॥

कूर्मअसुर हरि तीर्थ तहँ कोटि धरे है ल्याय। ताहि मारि कै हरि धरे तेहां सकल छुटाय ॥

तहां करै सुस्नान जो तीर्थाकोटी आय। पुण्डरीकको फल लहै बिष्णुलोककों जाय ॥

स्थल नारायण है जहाँ नित्य बिष्णुको बास। ब्रह्मादिक सब देव तहँ लए ब्रह्मऋषि पास ॥

नित्य भजत जहँ बिष्णुकों शालग्राम स्वरूप। बिष्णुलोक पावैं तहां अश्वमेध लहि भूप ॥

जातिस्मर बर तीर्थमे स्नान करै जो जाय। जातिस्मर सो होत है सुनऊ भूप सुखदाय ॥

माहेश्वरपुर जाय जो पूजै हर सुखदाय। तहां करै उपबासकों मनबांछित फल पाय ॥

जाय सो बामनतीर्थको सर्बपाप हर जौन। पूजन करि हरिको तहां दुर्गति लहै न तौन ॥

सर्बपापहर कुशिकके फिरि आश्रमको जाय। सर्बपापहर कौशिकी नदीमाह तहं न्हाय ॥

राजसूय बर यज्ञको फल पावै नर तौन। फेरि चम्पकारण्यको करै तहांते गैान ॥

एकरात्रि तहं रहि लहै गोसहस्र फलदान। तहंते जेष्ठिलतीर्थको जाय तौन मतिमान ॥

गोसहस्रको दान फल निशि बसि पावै तौन। तहं बिश्वेश्वर उमासह दरशन करि है जौन ॥

लोक सो मित्रावरुणिके प्राप्त होयगो जाय। तीनिरात्रि बसि कै तहां अग्निष्टोमफल पाय ॥

कन्यासंबेद्य हि जाय जो नियतासन ह्वै जौन। मनु प्रजापतिलोक सो पावत है नर तौन ॥

कन्यामें जो देतहै कछु थोरोसो दान । सो अक्षय बहु होतहै मुनिजन कहत प्रमान ॥ व०प०
जाय निबीर सुतीर्थको त्रिभुवनमाह प्रसिद्ध । विष्णुलोकको जात सो अश्वमेध लहि ऋद्ध ॥
देत जो दान निबीरके सङ्गममे अभिराम । महापुण्यको पाय सो जात शक्रके धाम ॥
आश्रम तहां वशिष्ठको करै जो तह सुस्नान । बाजपेयके पुण्यकों पावत सो मतिमान ॥
देवकूटकों जाय जहं ऋषिगण बसत उदार । अश्वमेधकों फल लहै करै स्वकुल उद्धार ॥
तहतें कौशिकह्रद जहां तहां जाय जो भूप । बिश्वामित्र मुनीन्द्र जहं पाई सिद्धि अनूप ॥
तहां कौशिकीके निकट बसै मासभरि जौंन । अश्वमेधके पुण्यको प्राप्त होतहै तौंन ॥
बीराश्रममे बसत हैं जहं कुमार तहं जाय । नियत मोदसो न्है सो अश्वमेध फलपाय ॥
जहां अग्निधारा बिदित जाय करै तहं स्नान । अग्निष्टोमके पुण्यको पावै तौंन सुजान ॥
जाय पितामह सर जहां शैलराजके पास । अग्निष्टोम फल लहै करि स्नान तहां मतिरास ॥
कढो पितामह सुसरतें कुमार धारा जौंन । स्नान तहां करिकै लहै नर कृतारथता तौंन ॥
तव गौरीके शिखर चढि तहं स्तनकुण्ड नहाय। बाजपेय हयमेध फलपाय शक्रपुर जाय॥
ताम्रारुणको जाय फिरि ब्रह्मचर्य धरि जौंन । अश्वमेध लहि जाय सो ब्रह्मलोकको तौंन ॥
जाय नन्दिनीको जहां सुरगण सेबित कूप । जौंन पुण्य नरमेधको तौंन लहै सो भूप ॥
न्हाय कालिका संगमे अरुण कौशिकी यत्र । तीनिराति उपवास करि छुटै पापसो तत्र ॥
जहां उर्वसी तीर्थहै सोमाश्रमहै यत्र । कुम्भकर्ण आश्रम जहां जाय चलो नर तत्र ॥
पूज्य होय सो जगतमे फिरि कोकामुख जाय । जातिस्मर्ण लहै तहां ब्रह्मचर्य धरि न्हाय ॥
प्राकनदीको जाय फिरि विप्र कृतात्मा जौंन । शक्रलोकको जाय सो छूटि पापसो तौंन ॥
क्रौंच निषूदन तीर्थ जहं ऋषभद्वीपको जाय । सरस्वतीमे स्नान करि चढै बिमान सो पाय ॥
औद्दालक वर तीर्थहै मुनिगण सेबित जौंन । जाय तहां करिस्नानकों छुटै पापसों तौन ॥
धर्मतीर्थको जाय जो मुनि सेबित अभिराम । बाजपेयको पाय फल चढैं बिमान ललाम ॥
अथ चम्पाको जाय जो भागीरथी नहाय । दण्डारतको लहि निकट गो सहस्र फलपाय ॥
ललीतिकाको जाय जो भरी पुण्य अभिराम । राजसूयको पाय फल चढैं बिमान ललाम ॥

॥ * ॥ पुलस्त्यउवाच ॥ * ॥

जायतीर्थ संबेद्यमे करै जो सायं स्नान । बिद्याको सो लहै जो भरी पुण्य बरज्ञान ॥
लौहित्य तीर्थ जो रामको लहिकै भयो प्रभाव । तहँ जाय उत्तम लहै बहु सुबर्ण युतचाव ॥
करतोयाको जायकै तीनि निशा करि बास । अश्वमेधके पुण्यको प्राप्त होय मतिरास ॥
गङ्गासागरके करै सङ्गमने सुस्नान । अश्वमेध दश गुणितको सो फल लहै सुजान ॥

१०५० गङ्गाके पर पारमे स्नानकरै जो जाय। बास त्रिरात्रि करें तहँा छूटि पापसों जाय ॥
॥ वैतरणीकें जाय जो पाप प्रणासनि सर्व । विरजतीर्थमे स्नानकरि शशिसो लसै अखर्व ॥
गो सहस्रको फललहै करै सकुल उद्धार। पापपुञ्जके गहनको दहन सो तीर्थ उदार ॥
ज्योतिरथ्या रु सु शोणके सङ्गमको चलि जाय । देव पितृतर्पण करै अग्निष्टोम फलपाय ॥
शोण नर्मदाको जहाँ है उतपत्यस्थान । बाजिमेध फल लहत करि वंश गुल्ममे स्नान ॥
जाय कोशला माह जहँ ऋषभ तीर्थहै पर्म । तीनरात्रि ब्रत करि लहै बाजपेयको धर्म ॥
काल तीर्थहै कोशला मे तह करि सुस्नान। वृषभ एक दश दानको फल पावै अतिमान ॥
पुष्पवतीमे स्नान करि करै त्रिरात्रि उपास । गो सहस्रको पाय फल पूत होय कुलतास ॥
जाय बदरिका तीर्थमे स्नान करै जो भूप । दीर्घ आयुको लहै सो पावै स्वर्ग अनूप ॥
चम्पाको फिरि जाय जो भागीरथी नहाय। शिव दण्डाख्यहि पूजिकै गो सहस्र फलपाय ॥
फिरि लपेटिका तीर्थकों सुव्रती जाय जो कोय। बाजपेयको फल लहै देवपूज्य सो होय ॥
परशुराम सेवित परम गिरि महेंद्रकों जाय । राम तीर्थमे स्नान तहँ अश्वमेध फल पाय ॥
ऋषि मतङ्गको है तहां तीर्थ परम केदार। गो सहस्र फलकों लहै करि सु स्नान उदार ॥
श्रीपर्वतकों जाय करि नदी तीर सु स्नान। अश्वमेध फल लहै करि शिवपूजन मति मान ॥
श्रीपर्वतमे बसत तहँ उमा सहित अभिराम। बसत पितामह सुरण सह भरे प्रीतिसों माम ॥
श्रीगिरि पर है देव ह्रद करै स्नान तहँ जौन । अश्वमेधको फल लहै परम सिद्धिकों तौन ॥
जाय ऋषभ पर्वत जहाँ सुर पूजित अतिमान। बाजपेयको पाय फल लहै स्वर्ग सुखदान ॥
कावेरीकों जाय जेहि रही अप्सरा सेय। तहां स्नान करि गो सहस बितरणको फल लेय ॥
पुनि समुद्रके तीरमे कन्या तीर्थ सु पाय । तहां स्नान करिकै सुरन छूटि पापसों जाय ॥
जहँ गोकर्ण समुद्रमे लोक नमस्कृत सर्व । ब्रह्मादिक जहँ देवता ऋषि किन्नर गन्धर्व ॥
सिद्ध चारन नाग सरित जाकों सेवत पास । तहाँ शम्भुकों पूजिकै जो रन करै उपास ॥
अश्वमेधको फल लहै होत सर्वगुण तौन। द्वादश निशि उपवास करि होत पूत मतिभौन ॥
त्रिभुवन पूजित है जहां गायत्रीको स्थान। गो सहस्रको फललहै बशि तीनिनिशि मतिमान ॥
[illegible] वापी ऋषिसम्वर्तकी तामे करिकै स्नान। जन्म लेय भरि भाग्य सों पावै रूप महान ॥
[illegible] बेनी सरितकों करै त्रिरात्र उपास । लहै विमानस हंस सो सुनऊ भूप मतिरास ॥
[illegible] गोदावरीमे बसत सिद्ध जहँ आय । गवामयनको पाय फल बासुकिके पुर जाय ॥
[illegible] सङ्गम करि बाजिमेध फल लेय । बरदा सङ्गम स्नान तें गो सहस्र फल देय ॥
[illegible] को करै त्रिरात्र उपास । गो सहस्र फल पायकै करै स्वर्गमे बास ॥
सु कु शल बनमे जाय जो निशि त्रय करै उपास। अश्वमेध फल लहै करि स्नान तौन मतिरास ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कृष्णवेणी जलोद्भव जो देव ह्रद आरण्य । स्नान करि तहँ होत है जन जातिस्मरण सुधन्य ॥ देवराज शतक्रतु तहां करि किय स्वर्ग पयान । अग्निष्टोम फल लहै तहँ गमन करत सुखदान ॥ स्नान सर्व ह्रदमे करै गोसहस्र फल लेय । नदी पयोष्णी स्नानतें गोसहस्र फल देय ॥ जाय दण्डकारण्यमे स्नान करै नर जौंन । गोसहस्रके पुण्यकों पावतहै वर तौंन ॥ पुष्कर अरु सर भङ्गके आश्रमकों जो जाय । लहै न दुर्गति सो करै स्वकुल पूत शुचिकाय ॥ सूर्पारककों जाय जहँ परशुरामको वास । रामतीर्थमे स्नानते मिलत कनक बहु तास ॥ न्हाय सप्तगोदावरी नियतासन नर जौंन । महतपुण्य लहि जातहै देवलोककों तौंन ॥ जाय देवपथकों चलो नियता सन धरि धीर । देव सत्रके पुण्यकों पावै तौंन गभीर ॥ जाय तुङ्गकारण्यको ब्रह्मचर्य्य धरि धर्म । करी वेद शिक्षा यहां सारस्वतऋषि पर्म ॥ ब्रह्मादिक सब देवता हरि हर सह दिगपाल । जहँ भृगुकोमख हेतु की आज्ञा दई बिशाल ॥ तव भृगु दीन्हों ऋषिन्हको बिधिवत यज्ञ कराय । गए देवऋषि धामको यज्ञ पूर्णता पाय ॥ तुङ्गारण्य प्रवेशतें होत पापको नाश । शुद्ध होत प्रमदा पुरुष हे कुरुपति मतिरास ॥ नियतासन जो मास भरि तँहा रहत उदार । ब्रह्मलोक सो जातहै करि कुलको उद्धार ॥ देव पित्र तर्पण करै मेधावीमे जाय । मेधा स्मृतिकों लहत सो अग्निष्टोम फल पाय ॥ सर्वलोक विख्यात जो कालिञ्जर गिरि जाय । स्नान देवह्रदमे करै गोसहस्र फल पाय ॥ स्नान तपस्या करत जो कालिंजर मे पर्म । स्वर्ग लोककों जात सो यामे कछू न भर्म ॥ स्नान करै मन्दाकिनी चित्रकूटकों जाय । देव पितृ तर्पण करै अश्वमेध फल पाय ॥ फेरि जाय धर्मज्ञ सो जेहां भरतस्थान । नित्य कुमार बसैं जहा सिद्धि लहै मनमान ॥ कोटि तीर्थमे स्नान करि गोसहस्र फल पाय । करत प्रदक्षिण भूप सो जेष्ठस्थानहि जाय ॥ शिवको पूजन करि तहाँ लसै सुधा सुममान । तहँ सुनियतहै कूपमे चारो सिन्धु सुजान ॥ न्हाय तहाँ तर्पण करै देव पितृको भूप । नियतात्मा सो पूतव्है गति सो लहैअनूप ॥ शृङ्ग बेरपुर है जहाँ जाय तहाको तौंन । रामचन्द्र जहँ सुरसरित पार कियो हो गौंन ॥ तहा स्नान करि सुरसरित ब्रह्मचर्य संयुक्त । वाजपेयको फललहै होय पापसों मुक्त ॥ जाय मुञ्जवटको जहाँ शङ्करको सुस्थान । महादेवको तहँ करै पूजन सो मतिमान ॥ गङ्गामे सुस्नान करि करै प्रदक्षिण जौन । जन्मजन्मके पापतें मुक्तहोय नर तौन ॥ तहँते जाय प्रयागको संस्तुत जौन अखर्व । ब्रह्मादिक जहँ देवता दीक्षप्राप्त ऋषि सर्व ॥ सनतकुमारहि आदि जे ब्रह्मपुत्र हैं जौंन । नाग सुपर्ण ससिद्ध अरु सूर्य्यादिक ग्रह तौन ॥ सरिता सागर दिक बिदिक साप्सरा सुगन्धर्व । महादेव हरि प्रजापति बास करत जहँ सर्व ॥ तीनिकुण्ड तहँ अग्निके जापर सुरसरि जाति । भानुसुतादेवी तहां जो त्रिभुवनमे ख्याति ॥

व०प०

गङ्गा यमुना सङ्ग मिलि लोकपावनी जौन । गङ्गा यमुना मध्य है जघन भूमिको तौन ॥ प्रयाग जघनको अन्त है जौन उपस्थ उदार । नाग सु कम्बल अश्वतर जिन्है क्षेत्र अधिकार ॥ प्रतिष्ठांन अरु भोगवति विधि मख बेदी तौन । बेद यज्ञ जहँ मूर्ति धरि बसत सुनऊ मतिभौन ॥ करत उपासन देव ऋषि तहँ विधिको अभिराम । यज्ञ करत ऋषि देव तहँ ग्रहगण सहित ललाम ॥ नाम पुण्य वर तीर्थमे सब सो अधिक प्रयाग। नाम लेत चलि जात तहँ पाप न रहत सु भाग॥ देवनकी मखभूमि है बिधि बर विहित सुजान । जहां कोटि गुण होतहै थोरो दीन्हें दान ॥ बेदलोकके बचन तें नही फेरि ए भूप। जो प्रयागमे मरणकी उपजै बुद्धि अनूप॥ साठि कोटि अरु दश हजार जहँ तीरथ बसत सुजान। बेद शास्त्र सब लखि परत जेहां मूरतिमान ॥ गङ्गा यमुना सङ्गमे तीरथ परम ललाम । बासुकिको सो तीर्थहै भोगवती अभिराम ॥ अश्वमेधको फल लहत करत तहां सुस्नान । तहां हंस प्रयतन लसै तीर्थ असोच महान ॥ दशाश्वमेधिक तीर्थ है गङ्गामे कुरु भूप । कुरुक्षेत्र सम सुरसरित जहँ जो न्हाय अनूप ॥ कनखल और प्रयागमे गङ्गा स्नान महान । पाय सहस्र न्ह कर्मके मिटै जहां करि स्नान॥स्नान करत गङ्गा सलिल भस्म करत इमि पाप। जैसे काष्ठ समूहकों पावक प्रबल प्रताप॥ कृतयुगमे सब तीर्थ बर पुष्कर त्रेता पाय । द्वापरमे कुरुक्षेत्र त्यों गङ्गा कलि सुखदाय ॥ पुष्करमे जो तपकरै देय महालय दान । मलयाचलमें अग्निमे जरै जो नर मतिमान॥ अनसनव्रत भृगुतुङ्गमे करि छोडत जो प्रान । गङ्गा पुष्कर कुरुक्षेत्रमे सो फल कीन्हें स्नान ॥ कीर्तनतें पावन करति देति दरश तें शर्म । स्नान पान तें सप्त कुलतारति गङ्गा पर्म ॥ जबलों अस्थि मनुष्यको रहत सुरसरी माह। स्वर्ग बास तबलों करत सो सुनिए नरनाह ॥ अन्य तीर्थमे स्नान तें देवालयमे जौन । गङ्गाको सेवन किए लहत पुण्य नर तौन ॥ * ॥ श्लोकः ॥ * ॥

न गङ्गासदृशं तीर्थं न देवः केशवात्परं । ब्राह्मणेभ्यः परं नास्ति एवमाह पितामहः ॥

है गङ्गा जेहि देशमे देश तपोवन तौन । सिद्ध क्षेत्र सो भूमिहै सुरसरिता तट जौन ॥
साधु बिप्र आतमज सुहृद शिष्य जो है अनुकूल । यह रहस्य तासों कही सत्य धर्मको मूल ॥
धन्य पूत यह स्वर्गप्रद तीर्थ कथन अभिराम । गुह्य महर्षिनको महा पुण्य धर्मको धाम ॥
पाप हरण यह द्विजनके मध्य पढैगो जौन । निर्मल व्हैकै जाय गो स्वर्ग लोककों तौन ॥
श्रीप्रद अरिगण नाशकर मेधाजनक अनूप । जनकों आनदजनक यह तीर्थ कथन बर भूप॥
पावै पुत्र अपुत्र जो अधन लहै धन माम । राजा जीतै भूमिकों बिश धन लहै ललाम ॥
शूद्र लहै मनकामकों बिप्र सु बिद्या पार । तीर्थ कथन यह जो सुनै शुचि व्हैं नित्य उदार॥
गम्य अगम्य कहे सकल तीर्थ पुण्यकेधाम । जाय मानसिक वृत्ति सों जे अगम्य अभिराम ॥
देव ऋषिन्हकों साध्य है तीर्थ अगम्य सु जौन। स्नान तहाँ ते करत हैं गगण मार्ग करि गौन ॥

सुव्रत यहि विधि जाऊ तुम तीर्थन्ह कों कुरुभूप । वृद्धि धर्मसों कीजिए परम धर्मको रूप ॥ व०प०
आस्तिकतामे धारि मन नास्तिकताकों त्यागि। जाऊ मिलैंगे तीर्थ ते सह सज्जन अनुरागि॥
अव्रती अकृतात्मा अशुचि भीष्म क्रूर मति जास । नास्तिक ते नहि स्नानकों जात तीर्थके पास ॥
नित्यव्रती तुम धर्मके हो दर्शी अभिराम। पिता पितामह देव ऋषि तोषित किए ललाम ॥
लोक वसुन्हको लहोगे तुम बास वसुसम भूप । नित्य कीर्तिकों लहऊगे भीष्म सुनऊ सु अनूप ॥

॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥

ऐसे कहिकै बिदा व्है ऋषि पुलस्त्य सम भान।भरे प्रीतिसों तब भए तेहा अन्तरध्यान ॥
शास्त्र तत्वदर्शी महा भीषम भूप सनेत । गए चहूँ दिशि भूमिमे तीर्थ करनके हेत ॥
भई समाप्ति कथा परम तीर्थ कथनकी जौन । भरी पुण्य अतिमान सों पाप नाशिनी तौन ॥
यहि विधि तीरथ हेत जो फिरै भूमिमे भूप। अश्वमेध शत तें अधिक सो फल लहै अनूप॥
तुम तातें अठगुण अधिक धर्म लहोगे भूप । यथा भीष्म पायो प्रथम करि यात्रा अनुरूप ॥
तो सँग यह ऋषिवृन्द सो तीर्थ करैगो सर्व । राक्षसगण जह रहत हैं बलसों भरो अखर्व॥
तुमकों बिना अगम्य है तीर्थ मनुजकों तौन।यह देवर्षि चरित्र बर तीर्थ कथन है जौन ॥
जो पढि है उठि प्रात सो होय पापसो मुक्त । पर्म धर्मको लहै गो तौन यथाविधि उक्त ॥
ऋषिन माह जे श्रेष्ठहै ते सब तुम्हरे साथ। तीर्थ करहि गे पुण्य तुम परम लहऊगे नाथ ॥
कुण्ड जठर बाल्मीक अरु कश्यप बिश्वामित्र। गौतम देवल असित अरु मार्कण्डेय पवित्र॥
भरद्वाज गालव बसिष्ठ मुनि उद्दालक तपधाम॥शौनक सह सुत व्यासमुनि दुर्वासा अभिराम॥
जावालि धौम्य द्विजबृन्दसह महा मुनिनके साथ॥ इन तीर्थनके करनकों करु यात्रा कुरुनाथ ॥
यह महर्षि लोमस चलो आवत है तो पास। यात्रा कीजै तीर्थकों तिनके सँग मतिरास ॥
इनै सहित तुम तीर्थकों यात्रा करिहो भूप । भूप महाभिषके सदृश लहिहो कीर्ति अनूप ॥
यथा ययाति पुरुरवा भगीरथ नृपराम । यथा वृत्रहा तथा तुम सोभितहो मतिधाम ॥
जैसे मनु इक्ष्वाकु पुरु वैण्य भूप यशवान। तैसे तुमहूँ लसतहो धर्मराज मतिमान ॥
यथा मारिकै वृत्रहा दनुजन्हकों बलवान। त्रिभुवनको पालन करत कृपा सहित सुखदान ॥
तथा तुमऊ करि शत्रु क्षय प्रजा पालिहो भूप। धरणीको तुम लहऊ गे धर्मनृपति अनुरूप ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

नारद मुनि ऐसे कियो आश्वासन सुखदान। आज्ञा लै नृपधर्म सों व्है गे अन्तरध्यान ॥
धर्मनृपति सो अर्थको चिन्तन करि ठहराय। तीर्थ गमनके पुण्यकों कहो ऋषिनसों जाय ॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि तीर्थानुक्रमणिकावर्णनो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥*

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

भ्रातनको मत नियत बिचारि । अज्ञा नारद की हिय धारि ॥ बूझो जाय धौम्यके पास । ऐसे धर्मनृपति मतिरास ॥ हम बिभत्सुकों पठयो जानि । दिव्यअस्त्र लोवैं जय खानि ॥ सो समर्थ बर बीर महान । हतो धनुर्धर कृष्ण समान ॥ नारद कहत जिष्णु यदुबीर । नर नारायण हरि रणधीर ॥ हमहू जानत धौम्यसुजान । सुने व्यासके वचन प्रमान ॥ योग्य शक्र दर्शनके जानि । हमहूँ पठयो मति अनुमानि ॥ अस्त्रदिव्य लीबेकों सर्ब । जे अरिबनके दहन अखर्ब ॥ भीष्म द्रोण कृप अश्वत्थाम । सकल अस्त्रबेत्ता बलधाम ॥ धार्तराष्ट्र तिनकों रण हेत । आदर करत अनेक सनेत ॥ चहत युद्ध पारथसों तौन । महाबली ए अतिरथ जौन ॥ कर्ण सूतसुत जो बलवान । जानत दिव्यअस्त्र अति मान ॥ अनल समान युद्धमे जौन । शर सम ज्वाल जास अतिगौन ॥ धूलि धूम सम अस्त्र प्रपात । बर्धित करत सुयोधन बात ॥ मम सेना तृण गहन समान । तौन सूतसुत अनल अमान ॥ कृष्ण बायुसों प्रेरित उद्ध । शरधारा धारे अतिक्रुद्ध ॥ धनु गाण्डीव इन्द्रधनु रूप । सदृश बलाका बाजि अनूप ॥ अर्जुन घनघमण्डसो बीर । बरसि बाणबर बुन्द गँभीर ॥ कर्ण कुटिल पावकको नाश । करिहि जिष्णु तब अति बलराश ॥ देवन्ह निकट शक्रतों पाय । दिव्यअस्त्र अर्जुन बरदाय ॥ ते सब अस्त्र धरैं अभिराम । हम देखहिंगे कब बलधाम ॥ ताहि बिना एहि बनमे पर्म । हम नहि लहत धौम्यमुनि सर्म ॥ बसिए और बिपिनिमे जाय । जह फल अन्न बऊल सुखदाय ॥ आज्ञा देऊ महामुनि तौन । जहँ देखैं अर्जुन आगौन ॥ आश्रम बिबिध सहित तपधाम । सर सरिता गिरि गहन ललाम ॥ जहँ तेहि बिपिनि चलऊ मुनि पर्म । बिना जिष्णु इत लहत न शर्म ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ तिन्हैं दीन मन उत्सुक देखि । समाधान मुनि कियो बिशेखि ॥ आश्रम जहाँ बसत तपधाम । गिरि बन सर सरिता अभिराम ॥ कहत तौन तुमसों हम भूप । सुनऊ शोकहर तौन अनूप ॥ सहित द्रौपदी भ्रातन्ह बीर । सुनत लहऊगे पुण्य गभीर ॥ गए तहाँके शत गुण पर्म । पुण्य लहोगे तुम नृपधर्म ॥ प्राचीदिशि मुनि सेवित जौन । प्रथम कहत तुमसों नृप तौन ॥ नैमिष तीर्थ प्रथम अभिराम । जहँ सबतीर्थ देवगण धाम ॥ जहँ गोमती पुण्यको भान । यज्ञभूमि देवनकी तौन ॥ है गिरि गयनामक जहँ पर्म । तहाँ ब्रह्मशिर तीर्थ सधर्म ॥ जाके अर्थ कहे मुनि बैंन । पुत्र बऊत कीजे मतिचैंन ॥ तहँ तो कोऊ जायगो एक । पिण्डदान करिहै सबिबेक ॥ बृषोत्सर्ग कै करिहै तौन । अश्वमेध करिहै कै जौन ॥ दश पूरब दश पर जे पित्र । करिहि तिन्हैं उद्धार पवित्र ॥ फल्गू नदी सु गयशिर यत्र । बट अक्षयकरण है तत्र ॥ तहाँ देय पित्रन्हकों जौन । अक्षय

होय सुनऊ नृप तौंन ॥ प्राची दिशा कौशिकी नाम । बऊ फल मूल नदी अभिराम ॥ विश्वामित्र
अहँ मुनि धन्य । तप करिकै पायो ब्रह्मन्य॥गङ्गा नदी जहाँ सरवज्ञ।कियो भगीरथ जहँ बऊ यज्ञ॥
देशपर्म उत्तम पाञ्चाल।तहाँ उत्पलावन सु विशाल ॥ अतिहि मनोहर पुष्पित पर्म । मख कौशिक
जहँ कियो सधर्म॥जामदग्न्य जेहा सह बंश । विश्वामित्रहि कियो प्रसंश ॥ कान्यकुब्जमे सुरपति
साथ। सोम पियो कौशिक मुनिनाथ ॥ चात्रधर्मको करिकै त्याग । भयो महामुनि विप्र सभाग ॥
गङ्ग यमुनाको सङ्गम जौंन । मुनि सेवित अति पावन तौंन ॥ जहाँ पितामह कीन्हों याग । याहीतें
सब कहत प्रयाग ॥ तहँ अगस्त्यको आश्रम रम्य। तहां तापसारम्य सु गम्य॥ गिरि महेन्द्र भार्गवको
स्थान। जहँ बिधि कीन्हों मख बऊ मांन ॥ भागीरथी बसी जहँ जाय।बसत विप्रतहँ तपमय काय॥
केदाराश्रमहै अभिराम । जो मतङ्गमुनिको तपधाम ॥ गिरिकुण्डोद नाम अतिमान । कियो
तृषित नल जहँ जलपान॥ जहाँ देववन मुनिगण पर्म । नदीबाऊदा धारैं पर्म ॥ गिरिपर नन्दा
नदी ललाम । तीर्थ बऊत देवनके धाम ॥ पूर्व दिशामे तीरथ जौंन । विदित भूप हम बरणे तौंन ॥
तीनि दिशाके कहत ललाम । गिरि बन सरित सहित सुरधाम॥ * ॥धौम्यउवाच ॥ * ॥ दक्षिण
दिशिमे तीरथ जौंन । भरे पुण्यसों सुनिए तौंन॥ गोदावरी पुण्यमय आम । मुनिगण सेवित सुष
माधाम ॥ बेणी चक्ररथा जे सरित । पापविमोचन जिनके चरित ॥ मुनिगण सेवित सुषमाधाम ।
नदी पयोष्णी अति अभिराम ॥ मार्कण्डेय महामुनि यत्र । नृग नृप कुलहि सराहत तत्र ॥ नृगके
यज्ञनमे मघवान । मदसों छके सोम करि पान ॥ महतदक्षिणा द्विजगण पाय । धनमद मत्त भए
सुखदाय ॥ तीर्थ बराह पयोष्णी माह । तास बायु लागत नरनाह ॥ आजन्मान्त पाप उडि जात ।
तूल तुङ्गसम तजि नर गात ॥ हरको तहाँ शिखर अभिराम । लखत ताहि पावत शिवधाम ॥ गङ्गा
दिक सबतीर्थ समान । एक पयोष्णी लसति सुजान ॥ जहँ माठरवन पुण्यद भूप । बरुणस्रोत
गिरिमे वर जूप ॥ ताके उत्तरदिशि अभिराम । लसत कण्वको आश्रम साम ॥ बेदी शूर्पारकमे
तात । वर यमदग्नि सुरुचिकी ख्यात ॥ तेहाँ चन्द्रा तीर्थ ललाम । तीर्थ अशोक तहाँ अभिराम ॥
है अगस्त्यको तीर्थ अनूप । वारुण द्रविड देशमे भूप ॥ तहाँ कुमारी तीर्थ ललाम । है गोकर्ण तीर्थ
अभिराम ॥ शीत तोय ह्रदहै तह जौंन । दुर्लभ पापिनको है तौंन ॥ सो अगस्त्य शिष्याश्रम पर्म ।
जहँ बैदूर्य अद्रिसहै सर्म ॥ है वमसोद्भेदन अभिराम । है प्रभास जलनिधिढिग आम ॥ पिण्डारक
जहँ तीर्थ महान।सेवत जाको सुमुनि सुजान॥उज्जयन्त तहँ शिखर अनूप।तुरित सिद्धिदायक सो
भूप ॥ उज्जयन्तमे तपको जौंन । करै स्वर्ग पावतहै तौंन ॥ द्वारावती पुण्यकी राश । मधुसूदनको
जेहा बास॥ प्रगट सु देव सनातन जौंन । धर्मरूप जगदात्मा तौंन ॥ तत्र बेदविद जे द्विज पर्म ।
जाको कहत सनातन धर्म॥करत पवित्रनको जो पवित्र। जाके मङ्गलमई चरित्र॥कृष्ण देव देवन
के ईश । वास करत जेहां जगदीश ॥ इति पूरब दक्षिण दिशायां तीर्थवर्णनम् । अथ पश्चिम दिशा

व०प० ॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥ पश्चिमदिशा अवन्ती जौन। ताके तीर्थ कहत सब तौन ॥ नदी नर्मदा जहँ अभिराम । पश्चिम दिशिकों बहति ललाम ॥ त्रिभुवनमाह तीर्थहैं जौन । बसत नर्मदामे सब तौन ॥ देवन सङ्ग पितामह भूप। करत नर्मदा स्नान अनूप ॥ विश्वश्रवा सुमुनिको स्थान। धनद कियो जहँ यज्ञ महान॥ गिरि बैदूर्य्य शिखर अति चित्र। जामे अद्भुत स्वच्छ चरित्र ॥ तास शिखर पर सर अभिराम । फूले जामे कमल ललाम ॥ ऋदिनी तापै नदी पवित्र। ल्याए जाकों विश्वामित्र॥ जास तीर सतसङ्गम पाय। गिरे ययाति स्वर्गसों आय ॥ पायो फेरि लोककों भूप। नित्यधर्मसों भरे अनूप॥ तहा पुण्यहृदहै विख्यात।तहँ मैनाक अचल अवदात॥ तहँा असित गिरिहै अभिराम। कच्छसेनमुनिको तहँ धाम॥ च्यवनाश्रम तहँ देत सुजान। तोक करे तप सिद्धि महान ॥ जम्बुमार्ग ऋषिनको तत्र । आश्रम परम ऋषिणके यत्र ॥ केतु माल तहँ गङ्गाद्वार। तहां सैन्धवारण्य उदार ॥ यहां ब्रह्मसर पुष्कर नाम। तहाँ ऋषिणको सन्ततधाम॥ पुष्कर मनसा करतस्मरण । करत सकल पातकको हरण ॥ स्वर्गवास पावतहै तौन। स्नर्ण करत पुष्करको जौन ॥ इतिपश्चिमदिशायां तीर्थवर्णनम् ॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ *

तीर्थ उत्तरदिशामे जे पुण्यमय अभिराम। आयतन जे देवतनके कहत तौन ललाम ॥तीर्थ मालिनि सरस्वति जहँ सिन्धु गामिनि पर्म। जहाँ यमुना तहँ प्लक्षावतन तीर्थ सुधर्म।।यज्ञ करि मुनि जाय जामे करत अवभृथ स्नान। सहदेव भूपति कियो जाके तीर यज्ञ महान ॥ भरत भूपति किए तेहाँ अश्वमेध अनेक। दान दीन्हों द्विजनकों मनमान सहित बिबेक॥ सरभङ्ग आश्रमहै जहाँ सर स्वती सरिता तीर।ऋषिन्ह सह तहँ बालखिल्यन्ह कियो यज्ञ गभीर॥दृषद्वती तहँ पुण्यपूरित नदी है अभिराम॥पाञ्चालमे न्यग्रोध नामक तीर्थ पुण्यद माम॥ दाल्भ्य मुनिको परम आश्रम पुण्यमय अति मान। पलाश वन जहँ यज्ञ कीन्हों परशुराम महान॥किरात किन्नर बास गिरि बङ्क शिखर परम उदार।भेदि भागीरथी जाकों गई गङ्गा द्वार॥बसत कनखल माह सुरसरि तीर सनतकुमार। पुरुनामगिरि पूरूरवा जहँ भयो भूभर्तार॥कियो भृगु तप जहाँ सो भृगु तुङ्ग गिरि अभिराम।आदि अन्त अनन्त अव्यय बिष्णु आनदधाम ॥ तास आश्रम निकट बदरी बिपिनके है भूप। उष्णतोया बहति गङ्गा जहाँ निर्मल रूप ॥ देखि परति सुवर्ण सिकता जहाँ बदरी पास । जाय करत प्रणाम हरिकों देव ऋषि मतिरास ॥ जहाँ नारायण तहाँ सबतीर्थ सुरगण धाम। पुण्य तप पर ब्रह्म आत्मा बिष्णु हरि अभिराम ॥ कहे चितिपर तीर्थ जेते देवतनके औन। जिन्हे सेवत देवगण गन्धर्व ऋषि भरि चैन ॥ चलहु भ्रातन्ह सहित द्विजगण तहाँकों बर भूप। सहित कृष्णा धर्मनृप धरि चित्तवृत्ति अनूप ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कहत यौंसें धर्मनृपसों धौम्य हे बर बैन। देखि आवत परे लोमस महा मुनि तपऐन ॥ द्विजन सह उठि धर्मनृप बर लियो आगें जाय। कियो पूजन दियो आसन दिव्य पूत मगाय॥ आगमनको हेतु मुनिसों लगे बूझन भूप । कहन

लागे महामुनि कर हर्ष बचन अनूप ॥ फिरत हम सबलोकमे नृप गए सुरपतिधाम । तहां सुरपति पास देखो जिष्णुकों अभिराम ॥ अर्द्ध आसन पै सो बैठो इन्द्रके बर बीर । देखि बिस्मय भयो मेर चित्तमाहँ गभीर ॥ देवपति तब कहो हमसों जाउ पाण्डव पास ॥ देखिवेकों तुम्हैं आयो चिप्र हैां मतिरास ॥ बचनतें पुरुहूतके अरु जिष्णुके अभिराम । कहत हैं प्रिय बचन तुमसों नृपति आनदधाम ॥ सहित भ्रातन्ह द्रौपदी सह भूप सुनिए तैांन । जिष्णुकों तुम दई आज्ञा अस्त्र हेतुक जैांन ॥ प्राप्त अर्जुनकों भयो सो अस्त्र सुनिए भूप । ब्रह्मशिर है नाम जाको रौद्र रुद्रस्वरूप ॥ प्रगट अमृतसों भयो जो रौद्र अस्त्र महान । अस्त्र तैांन समंत्र पायो जिष्णु सहित बिधान ॥ शक्र बरुण कुवेर यमसों अस्त्र पाये चण्ड । बज्र पास समोहनास्त्र सु नाश कारक दण्ड॥ गन्धर्व विश्वावसु तनय सो तैार्य्यत्रिक सु महान । तैांन सहित विधान अर्जुन लहो है मतिमान ॥ यहिभांति लहि कै अस्त्र सब गान्धर्व बिद्या जैांन । बसत सुरपति पास सो तो अनुज अर्जुन तैांन ॥ जेहि अर्थ हमसों कहो सुरपति बचन यह अभिराम । सो अर्थ तुमसों कहत हैं हम सुनऊ नृप मतिधाम ॥ जायकै नरलोकमे तुम बचन मेरे पर्म । कहऊ गे यहिभांति निय मित पाय कै नृपधर्म ॥ आइ है तो अनुज अर्जुन सहित अस्त्र अनूप । सुरनकों जो असक्य सो करि कार्य्य दुष्कर भूप ॥ आपुकों तुम करऊ तपसों युक्त हे नृपधर्म । महत कारज हेतु है नहि और तपसों पर्म॥कर्णकों हम यथाविधिसों सुनऊ जानत भूप।सत्यवादी महोत्साही महाबलमय रूप ॥ युद्धमे अति निपुण अतिरथ अस्त्र जानत सर्ब । है कुमार समान रनमे भानुतनय अखर्ब ॥ सव्यसाची महाभुज सो आइ है बरबीर । करऊ तबलों तीर्थयात्रा चहत जैांन गँभीर ॥ जैांन लोमस महाकबि फल कहैं गे अभिराम । तैांन तैांन सुलहऊ गे फल तीर्थमाह ललाम ॥ कहे सुरपति बचन ए हम कहे तुमसों जैांन । कहत हैं अब सुनऊ भूपति कहे अर्जुन तैांन ॥ धर्म नृपकों धर्मसों तुम करऊ योजित जाय । धर्मके तुम सुमुनि जानत आपु सकल उपाय ॥ राजधर्म समस्त जानत आपु हो तपधाम । तीर्थके बर पुण्यसों चलि करऊ युक्त ललाम ॥ तीर्थकों जिहि जाहि पाण्डव करहि तहँ गोदान । तथा तुम तहँ कीजियो इमि कहो जिष्णु सुजान ॥ होय रक्षित तैांन तुमसों तीर्थमे सञ्चार । करत राक्षस नहीऊ हैं तिन्हे भयद उदार॥ दधीचितें ज्यैां शक्र रक्षित अङ्गिरसतें भान । तथा रक्षित करऊ पाण्डव जाय तपसनिधान ॥ देखि रक्षित भए तुमतें पाण्डवनकों सर्ब । निकट तिनके जाहि गे नहि दनुज निर्ऋत अखर्ब ॥ इंद्र अर्जुन बचनतें करि तुम्हें रक्षित भूप । तीर्थमे संग रावरे हम फिर हि गे सुखरूप ॥ बेर द्वै हम तीर्थ सिगरे पूर्ब देखे पर्म । बार तिसरी देखि हैं सँग रावरे नृपधर्म ॥ तीर्थ यात्रा करी यह राजर्षि जे तपधाम । भए जे मनु आदि पूरब भरे तप अभिराम ॥ कुटिल पापी अकृत आत्मा मूर्ख हैं नर जैांन । बक्र

व॰प॰ ॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥ पश्चिमदिशा अवन्ती जौन। ताके तीर्थ कहत सब तौन ॥ नदी नर्मदा जहँ अभिराम । पश्चिम दिशिकों बहति ललाम ॥ त्रिभुवनमाह तीर्थ हैं जौन । बसत नर्मदामे सब तौन ॥ देवन सङ्ग पितामह भूप । करत नर्मदा स्नान अनूप ॥ विश्वश्रवा सुमुनिको स्थान। धनद कियो जहँ यज्ञ महान॥ गिरि बैदूर्य्य शिखर अति चित्र। जामे अद्भुत स्वच्छ चरित्र॥ तास शिखर पर सर अभिराम । फूले जामे कमल ललाम ॥ ऋदिनीं तापै नदी पवित्र। स्याए जाकों विश्वामित्र॥ जास तीर सतसङ्गम पाय। गिरे यजाति स्वर्गसों आय॥ पायो फेरि लोककों भूप। नित्यधर्मसों भरे अनूप॥ तहा पुण्यह्रद है विख्यात। तहँ मैनाक अचल अवदात॥ तहाँ असित गिरि है अभिराम। काच्छसेनमुनिको तहँ धाम॥ च्यवनाश्रम तहँ देत सुजान। ताक करे तप सिद्धि महान ॥ जम्बुमार्ग ऋषिनको तत्र । आश्रम परम ऋषिणके यत्र ॥ केतु माल तहँ गङ्गाद्वार। तहां सैन्धवारण्य उदार॥ यहां ब्रह्मसर पुष्कर नाम। तहाँ ऋषिणको सन्ततधाम॥ पुष्कर मनसा करतस्मरण । करत सकल पातकको हरण ॥ स्वर्गवास पावतहै तौन। स्पर्श करत पुष्करको जौन ॥ इतिपश्चिमदिशायां तीर्थवर्णनम् ॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ **

तीर्थ उत्तरदिशामे जे पुण्यमय अभिराम। आयतन जे देवतनके कहत तौन ललाम ॥ तीर्थ मालिनि सरस्वति जहँ सिन्धु गामिनि पर्म। जहाँ यमुना तहँ प्लक्षावतन तीर्थ सुधर्म॥ यज्ञ करि मुनि जाय जामे करत अवभृथ स्नान। सहदेव भूपति कियो जाके तीर यज्ञ महान ॥ भरत भूपति किए तेहाँ अश्वमेध अनेक। दान दीन्हों द्विजनकों मनमान सहित विवेक॥ सरभङ्ग आश्रमहै जहाँ सरस्वती सरिता तीर। ऋषिन्ह सह तहँ बालखिल्यन्ह कियो यज्ञ गभीर॥ दृषद्वती तहँ पुण्यपूरित नदी है अभिराम॥ पाञ्चालमे न्यग्रोध नामक तीर्थ पुण्यद नाम॥ दालभ्य मुनिको परम आश्रम पुण्यमय यति मान। पलाश बन जहँ यज्ञ कीन्हों परशुराम महान॥ किरात किन्नर वास गिरि बङ्क शिखर परम उदार। भेदि भागीरथी जाकों गई गङ्गा द्वार॥ बसत करनखल माह सुरसरि तीर सनतकुमार। पुरुनामगिरि पूरूरवा जहँ भयो भूभर्तार॥ कियो भृगु तप जहाँ सो भृगु तुङ्ग गिरि अभिराम। आदि अन्त अनन्त अव्यय विभु आनदधाम॥ तास आश्रम निकट बदरी बिपिनके है भूप। उष्णतोया बहति गङ्गा जहाँ निर्मल रूप॥ देखि परति सुवर्ण सिकता जहाँ बदरी पास । जाय करत प्रणाम हरिकों देव ऋषि मतिरास॥ जहाँ नारायण तहाँ सबतीर्थ सुरगण धाम। पुण्य तप पर ब्रह्म आत्मा विभु हरि अभिराम॥ कहे छितिपर तीर्थ जेते देवतनके औन। जिन्हे सेवत देवगण गन्धर्व ऋषि भरि चैन ॥ चलऊ भ्रातन्ह सहित द्विजगण तहाँकों वर भूप। सहित कृष्णा धर्मनृप धरि चित्तवृत्ति अनूप॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कहत ऐसें धर्मनृपसों धौम्य हे वर बैन। देखि आवत परे लोमस महा मुनि तपऐन ॥ द्विजन सह उठि धर्मनृप वर लियो आगें जाय। कियो पूजन दियो आसन दिव्य पूत मगाय॥ आगमनको हेतु मुनिसों लगे बूझन भूप । कहन

लामे महामुनि कर हर्ष बचन अनूप ॥ फिरत हम सवलोकमे नृप गए सुरपतिधाम । तहां सुरपति पास देखो जिष्णुकों अभिराम ॥ अर्द्ध आसन पै सो बैठो इन्द्रके वर वीर । देखि बिस्मय भयो मेर चित्तमाहँ गंभीर ॥ देवपति तब कहो हमसो जाउ पाण्डव पास ॥ देखिवेकों तुम्हैं आयो छिप्र हों मतिरास ॥ बचनतें पुरुहूतके अरु जिष्णुके अभिराम । कहत हैं प्रिय बचन तुमसों नृपति आनदधाम ॥ सहित भ्रातन्ह द्रौपदी सह भूप सुनिए तौन । जिष्णुकों तुम दई आज्ञा अस्त्र हेतुक जौन ॥ प्राप्त अर्जुनकों भयो सो अस्त्र सुनिए भूप । ब्रह्मशिर है नाम जाको रौद्र रुद्रस्वरूप ॥ प्रगट अमृतसों भयो जो रौद्र अस्त्र महान । अस्त्र तौन समंत्र पायो जिष्णु सहित विधान ॥ शक्र वरुण कुबेर यमसों अस्त्र पाये चण्ड । वज्र पास समोहनास्त्र सु नाश कारक दण्ड॥ गन्धर्व बिस्वाबसु तनय सो तौर्य्यत्रिक सु महान । तौन सहित विधान अर्जुन लहो है मतिमान ॥ यहिभांति लहि कै अस्त्र सब गान्धर्व बिया जौन । वसत सुरपति पास सो तो अनुज अर्जुन तौन ॥ जेहि अर्थ हमसों कहो सुरपति बचन यह अभिराम । सो अर्थ तुमसों कहत हैं हम सुनऊ नृप मतिधाम ॥ जायके नरलोकमे तुम बचन मेरे धर्म । कहऊगे यहिभांति निय मित पाय कै नृपधर्म ॥ आइ है तो अनुज अर्जुन सहित अस्त्र अनूप । सुरनकों जो असक्य सो करि कार्य्य दुष्कर भूप ॥ आपुकों तुम करऊ तपसों युक्त हे नृपधर्म । महत कारज हेतु है नहि और तपसों धर्म॥ कर्णकों हम यथाबिधिसों सुनऊ जानत भूप।सत्यवादी महोत्साही महाबलमय रूप ॥ युद्धमे अति निपुण अतिरथ अस्त्र जानत सर्ब । है कुमार समान रनमे भानुतनय अखर्ब ॥ सव्यसाची महाभुज सो आइ है बरबीर । करऊ तबलों तीर्थयात्रा चहत जौन गँभीर ॥ जौन लोमस महाऋषि फल कहै गे अभिराम । तौन तौन सुलहऊ गे फल तीर्थमाह ललाम ॥ कहे सुरपति बचन ए हम कहे तुमसों जौन । कहत हैं अब सुनऊ भूपति कहे अर्जुन तौन ॥ धर्म नृपकों धर्मसों तुम करऊ योजित जाय । धर्मके तुम सुमुनि जानत आपु सकल उपाय ॥ राजधर्म समस्त जानत आपु हो तपधाम । तीर्थके बर पुण्यसों चलि करऊ युक्त ललाम ॥ तीर्थकों जिहि जाहि पाण्डव करहि तहँ गोदान । तथा तुम तहँ कीजियो इमि कहो जिष्णु सुजान ॥ होय रक्षित तौन तुमसों तीर्थमे सञ्चार । करत राक्षस नदीहू हैं तिन्है भयद उदार ॥ दधीचितें ज्यौं शक्र रक्षित अङ्गिरसतें भान । तथा रक्षित करऊ पाण्डव जाय तपसनिधान ॥ देखि रक्षित भए तुमतें पाण्डवनकों सर्ब । निकट तिनके जाहि गे नहि दनुज निर्ऋत अखर्ब ॥ इंद्र अर्जुन बचनतें करि तुम्है रक्षित भूप । तीर्थमे संग रावरे हम फिर हि गे सुखरूप ॥ बेर द्वै हम तीर्थ सिगरे पूर्ब देखे धर्म । बार तिसरी देखि हैं सँग रावरे नृपधर्म ॥ तीर्थयात्रा करी यह राजर्षि जे तपधाम । भए जे मनु आदि पूरब भरे तप अभिराम ॥ कुटिल पापी अज्ञत आत्मा मूर्ख हैं नर जौन । बक्र

व०प० मल सुस्नान करत न तीर्थमे नर तौंन ॥ धर्ममति धर्मज्ञ हो तुम सत्यबादी पर्म। विषयसों हो मुक्त लहि हो धर्मको नृपधर्म॥ गय भगीरथ अरु ययाति सु भए जैसे भूप। धर्ममे तुम धर्मनृप हो तिन्हैं सदृश अनूप॥ *॥ युधिष्ठिरउवाच॥ *॥ हर्षतें यहि बाक्यको है परम उत्तर जौंन। महामुनि जो दीजिए सो देखि परत न तौंन॥ स्वर्ग सुरपति करत जाको अधिक तासों कौंन। व्यास भ्राता जिष्णु तापर मिले तुम तपभौंन॥ तीर्थ दर्शनको कहत तुम हमै जो तपधाम। धौम्यसों सुनि भई ही मति हमैं तौंन ललाम॥ तीर्थके जब गमनको तुम करउ सुमुनि बिचार। रावरे हम संङ्ग तब ही चलै सुतप अगार॥गमनमे लखि बुद्धि नृपकी कहे लोमस बैंन। स्वल्प कीजै संङ्गके समुदायको मतिऐंन॥ बिदा कीजै भिक्षु ब्राह्मण जो धनार्थी जौंन। क्षुधा पथश्रम शीतको सहि सकै गे नहि तौंन॥ पाककर्मन्ह बिदा कीजै भृत्यके समुदाय। रहैं हास्तिन नगरमे धृतराष्ट्र नृप पैं जाय॥ पौरजनन बश प्रीति जे तो सङ्ग है कुरुभूप। वसैं अपने धाममे ते जाय कै सुखरूप॥ बसन भोजन देहि गे धृतराष्ट्र तिन हि बिशाल। न तह देहैं प्रीतिसों तव भूमिपति पाञ्चाल॥ यती पुरजन विप्रगण बहु भार पीडित जौंन। चले हास्तिन नगरको सब भरे करुणा तौंन॥ तिन्हैं नृप धृतराष्ट्र दीन्हो जीविका अनुरूप। बसे हास्तिन नगरमे ते भरे आनद भूप॥ तीर्थके जे योग्य ब्राह्मण बन्धुवर्ग समेत। बसे काम्यक बिपिनिमे निशि तीनि नियमितचेत॥ करत यात्रा भूप पैं जो बिपिनिवासी बिप्र। आय कै ते कहन लागे वचन ऐसें छिप्र॥जात हो तुम सहित भ्रातन्ह तीर्थको नृपधर्म। सङ्ग लोमसके महामुनि बृन्द लीन्हें पर्म॥ हीन सक्य सु हमैं तुम बिन और को कुरुभूप। परमतीर्थ अगम्यको लै जाय गो सुखरूप॥ व्याघ्र निर्झर बराह गिरि बनमाह दुर्गम यत्र। जाय हमसे सकै कैसें बिप्र दुर्बल तत्र॥ शूर भ्राता रावरे ए महा धनुधर बीर। करै गे हम तीर्थ तिनतें होय रक्षित धीर॥कृपातें तब तीर्थ करि हम पुण्य लहि हैं पर्म। राजर्षि अष्टक लोम पाद समान तुम नृपधर्म॥ प्रभास आदिक तीर्थ सुगिरि महेन्द्र आदिक जौंन। गङ्गादि सरिता बनस्थली प्लक्षादि बरणो तौंन॥ देखि हैं हम तौंन चलि तव सङ्गमे रणधीर। भरतनृपके लोकको तुम लहउ गे कुरुबीर॥रावरी है बिप्रमे जो भूप भक्ति महान। विप्र आज्ञा दीजिए करि कृपाको सुखदान॥ तीर्थ है जे व्याप्त राक्षस बिप्रकरसों घोर। तहाँ रक्षित करउ गे तुम हमैं नृप भुजजोर॥ तीर्थ नारद धौम्य लोमस कहे तुमसों जौंन। सहित भ्रातन्ह कीजिए बिधि बिहित तिनमे गौंन॥ निष्पाय लोमससों सुपालित होय कै अभिराम। बचन तिनके सुनत भूपति भए पुलकित साम॥ सहित भ्रातन्ह धर्मनृप तिन ऋषिगणके सुनि बैंन। सङ्ग चलिबेको कियो स्वीकार सादर चैंन॥ लेय आज्ञा धौम्य लोमस महामुनिकी भूप। सहित भ्रातन्ह गमनमे तब धरो सुमन अनूप॥ व्यास नारद सहित पर्वत महामुनि तपधाम। तहाँ आए धर्मनृपको देखिबैं अभिराम॥ कियो पूजित

यथा विधिसों तिन्हैं भूपति धर्म। सत्कार लहि ते भूपसों इमि बचन बोले पर्म ॥ ऋषयऊचुः॥ सहित भ्रातन्ह नृपयुधिष्ठिर गहऊ ऋजुता जौंन। प्रथम करि मनु शुद्ध कीजे तीर्थकों फिरि गौंन॥ नियम कायिककों कहत बुध सुब्रत मानुष पर्म।मन बुद्धिको जो शुद्धि सो व्रत दैव भूपति धर्म॥ तीर्थको फल लेऊ तुम धरि दैव ब्रतको भूप। कियो सो स्वीकार कृष्णा सहित नृपति अनूप॥ मुनिन्ह तब स्वस्त्ययन कीन्हों दिव्य मानुष जौंन। चरण नारद व्यास लोमस धौम्यके सुख भौंन॥ बन्दि पर्वत महाऋषिके पाय पावन पर्म। बिपिनि वासी मुनिनको सँग लेय कै नृपधर्म॥ मार्गशीर्ष बितीत करि कै पोषमे अभिराम। चीर अजिन सु धारि कै दृढ जटाजूट ललाम॥ पहिरि कवच अभेद्य तीरथको चले कुरुभूप। इन्द्रसेन सो सुरथ पन्द्रह लए सज्ज अनूप॥ भृत्य लीन्हों और जे अनुकूल हे मतिमान। लए आयुध सकल अपने आपने बलवान॥ चले पाण्डव पूर्वदिशिको तीर्थ यात्रा हेत। भरे आनद करे मनको शान्त नियमित चेत॥ ***

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि तीर्थयात्रावर्णनोनाम चतुर्दशो ऽध्यायः॥ *********

आपनो नहि दोष जानत कछू हम मुनिमौर। भए दुःखित नही हमसों होय गे नृप और॥ लहत बृद्धि समृद्ध दुर्जन पाप दुर्गुन भौंन। कहऊ लोमस महा मुनि है हेतु यामे कौंन॥ लोमसउवाच॥ पापको श्री वढति कछुदिन करति पाप प्रकाश। कछूदिनमे लहति है सो मूलसहित बिनाश॥ देव दनुजनको सुनो तुम यथा बृद्धि निपात। धर्मको श्री पापको त्यों बढति पावति घात॥लखो हम यह चरित सिगरो सत्य युगमे भूप।धर्मकी श्री नित्य है श्री पापकी हतँ रूप॥ करऊ तुम यह तीर्थ यात्रारूप पुण्य महान। लहऊ गे श्री आपनी फिरि तौंन सुरन्ह समान॥ भगीरथ वसु मनु सगर पुरु पुरूरव जिमि भूप। तीर्थगमन स्नानतें लहि पुण्य पावनरूप॥ लहऊ गे यश जगतमे श्री सहित राज्य अनूप। मुचकुन्द मान्धाता तथा तुम धर्मसखके जूप॥ लहऊ गे सम देवतनके कीर्ति यश अभिराम। पापसों लहि है सुयोधन अचिर अन्तकधाम॥ बसत बनमे जहां तहँ द्विजवृन्द लीन्ह साथ। तीर्थ नैमिषबिपिनिके ढिग गए कुरुकुलनाथ॥ पाण्डवन करि गोमतीके तीर्थमे सुस्नान। द्विजनकों वऊ धनु धनको कियो तेहाँ दान॥ तहाँ तर्पण देव पितन्हकों सविधि करि भूप। गए कन्या तीर्थकों गोतीर्थकों शुचिरूप॥ कालकोटीमे कियो विषप्रस्थ गिरि पर बास। बाऊदामे स्नान कीन्हों जाय कै मतिरास॥ देवयज्ञ स्थान जाय प्रयागमे तब भूप। स्नान करि कै बसे तेहां धरे ब्रत शुचिरूप॥ कालिन्दी सुरसरित सङ्गम मे सु दै बऊदान। ब्रह्मवेदीतें कियो सह द्विजन्ह भूप पयान॥ बसत पथमे द्विजनकों फल मूल देत अहार। गए गयगिर नाम गिरितैंह द्विजन सहित उदार॥ पुण्यमय जहँ पुलिन पूरित महा सरिता पर्म।दिव्य कूट बिचित्र है जहँ धरा धर

व०प० धुर धर्म ॥ ऋषिन्ह सेवित ब्रह्मसर जहँ लसत पुण्य स्वरूप । गए सुमुनि अगस्त्य जहँ यम
राज यसुनु भूप ॥ बसत हैं यमराज जेहाँ नित्य पूरित चाव । नदिनकों जँहतें भयो है परम
आविर्भाव ॥ नित्य ताके निकट शङ्कर रहत कीन्हें बास । तहाँ कीन्हों पाण्डवन बसि यज्ञ
चातुर्मास ॥ तहाँ अक्षयनाम बट फल देत अक्षय जौंन । द्विजन सह उपबास कीन्हों चाहि भूपति
तौंन ॥ तहाँ आए विप्र शतसह यज्ञमे तपधाम । वेदविद ते कहन लागे कथा पुण्य ललाम ॥
समठ नामक विप्र लागो कथा कहन अनूप । अमूर्तरयस महीपको सुत भयो जो गय भूप ॥ * ॥
समठउवाच ॥ * ॥ अमूर्तरयस महीपको सुत भयो हो गय जौंन । पुण्यके हम कर्म ताके
कहत सुनिए तौंन ॥ यज्ञमे बकअन्नके गिरि किए शतसह भूप ॥ दहीकी घृतकी सु कीन्ही
सरित कृत्रिम रूप ॥ प्रवाह करि कै व्यञ्जननके नित्य शतसह देत । और ब्राह्मण करत भोजन
पूत पावनचेत ॥ दक्षिणाके समय नभवे भरत ब्राह्मण सोर । वेदधुनिते सुनत हो नहिँ शब्द कोऊ
ओर ॥ अन्न पान सुदानको दिसि देश देशनमाह । विप्र गावत फिरथ गाथा जास हे नरनाह ॥
पूर्व काहूँ कियो नहि अब करै गो नहि भूप । यज्ञमे जो कियो गयनृप दान अनुपमरूप ॥ भये
गयके यज्ञमे जे तृप्त देव महान । अन्यके ते हव्यकों ले सकत ह नहि दान ॥ गगणतारा सरित
सिकता वृष्टि बिन्दु समान । सकै को गणि तथा गयके यज्ञ अगन सुजान ॥ करे यहि बिधि यज्ञ
अनगण भूप गय अभिराम । हे युधिष्ठिर भूप यहि सरपास परम ललाम ॥ तहाँतेँ तब चले
भूपति देइ दान महान । गए कुम्भज महामुनिको जहाँ परम स्थान ॥ लगे लोमससों सु बूझन
तहाँ दुमि नृपधर्म । केहि हेतु बातापी हि मारो सुमुनि कुम्भज पर्म ॥ रहो कौंन प्रभाव तासे
दनुजमे अतिमान । केहि अर्थ कुम्भज महा मुनिको भयो कोप महान ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥
मणिमतीपुरमे रहो इल्वल दैत्य मायाभान । बातपि नामक रहो ताको अनुज भूपति तान ॥
तपयुत ब्राह्मण एकसों तेहि कहें ऐसे बैंन । इन्द्रके सम पुत्र हमको दीजिए तपऐंन ॥ नहीं
ताको दियो ब्राह्मण पुत्र इन्द्र समान । क्रोध तब तेहिँ विप्र ऊपर कियो अमित अमान ॥ करै
तबतें दैत्य इल्वल अनुज छाग स्वरूप । मारि ताकों रींधि भोजन देइ द्विजकों भूप ॥ करै इल्वल
मरेको जेहि बचनसों आव्हान । देह धरि सो तहां आवै जीव तान सुजान ॥ आव्हानरूपवे
अनुजको तब करै तान पुकारि । तौंन मायावी कढै तब उदर द्विजको फारि ॥ यहिभाँति
[illegible] द्विजनकों सो देय फिरि फिरि रुष्ट । हने इल्वल विप्र शतसह सो बातापी दुष्ट ॥ गए
[illegible] सुमुनि अगस्त्य देखि चरित्र । अधो मुख करि कूपमे सब परे लटकत पित्र ॥
तिन्[illegible] लटकत हौ कहौ तुम कौंन । चहत सन्तति कहो तिन हम पित्र तो तपभान ॥
[illegible] उत्तम एक । मोच तौ यहिनर्कसों हम लहैं सहित विवेक ॥
कहो तिनसों सुमुनि कुम्भज कहत हो तुम जौंन । तजऊ मानसदुःख तुम हम ऐसि करि है तौंन ॥

करण चिन्ता लगे मुनिवर प्रसवको सुस्थान। प्रसव अर्थ न लसत सुखो कछ आपु समान॥ जेहि जीवको जो अङ्ग सुन्दर लखो ताको रूप। लेइ बिरचो मानसिक बर बाम मुनिवर भूप॥ बिदर्भ पति पुत्रार्थ तप हो करत ताको तौन। धरी महिषीमाह ताकी सिद्धिको मुनिभौन॥ तहां जनमी सदृश विद्युत ज्योतिमय अभिराम। भई बर्द्धित रुचिर सो लहि समयकों गुण धाम॥ ताहि जन्मतमात्र भूप बोलायकै बर बिप्र। जन्म कर्म बिधान भावी लगे बूझन छिप्र॥ जन्म तासु प्रसंगि विप्रन्ह कहो अति अभिराम। जन्म लग्न बिचारि राखो लोपामुद्रा नाम॥ कढति पयतें पद्मिनी त्यों भई बर्द्धित तौन। अग्निकैसी शिखा राजति महा छबिको भौन॥ यौवनस्थ बिलोकि ताकों सखी शत सँग भूप। राखि दीन्हीं तितिक दासी भजहि जे अनुरूप॥ यौवनस्थ सुशील सुन्दरि भरी गुणगण पर्म। नही काहूँ आय मागो भूमिपति नृपधर्म॥ देखि ताहि बिदर्भ भूपति भरी यौवन रूप। काहि दीजै कन्यका यह भयो चिन्तित भूप॥ महामुनि स्वगृह कार्य्य योग्य बिचारि ताहि ललाम। बिदर्भपतिसों जाय मागो कन्यका अभिराम॥ *॥ अगस्त्य उवाच॥ *॥ भूप चहत बिवाह करिबैं पुत्र कारण पर्म। लोपामुद्रहि देउ हमकों मानि बचन सुधर्म॥ सुनत मुनिके वचन भूपति भयो व्यथित अचेत। नही नाहीं सकत हैं करि बनत है नहि देत॥ जाय रानी पास भूपति कहे ऐसे बैन। दहै गो कोपाग्निसों यह महामुनि तपऐन॥ देखि दुःखित सहित माता पिताकों अतिमान। लोपामुद्रै आय ऐसे कहे बचन सुजान॥ तात मेरे हेतु कीजै नही पीडित चित्त। देउ मोहि अगस्त्यकों तुम करउ त्रास निवृत्त॥ सुताके सुनि वचन भूप अगस्त्यकों अभिराम। दई बिधिवत ब्याहि कन्या महा छबिको धाम॥ लोपामुद्रासों कहो तब महामुनि इमि बैन। छोरि डारउ बसन भूषण योग्य तुमकों हैं न॥ चीर बल्कल अजिन धारउ तजउ एकौश्रेय। धरउ मम सम सुब्रत सुन्दरि तौन आनद देय॥ गए गङ्गाद्वारकों सह भारजा तपधाम। उग्र तप तहँ करन लागे प्रिया सहित ललाम॥ भूरि आदर पाय मुनिसों भरी प्रीति महान। करति सेवन भई तत्पर भरी मोद सुजान॥ करत सुमुनि बिदर्भजा पैं प्रीति अति अनुरूप। ताहि भो बहुकाल बीतें ऋतुस्नान अनूप॥ तासु सेवा शौच तप बर देखि सुमुनि महान। मैथुनार्थ सु भूप जाको कियो मुनि आह्वान॥ कहन मुनिसों लगी सुन्दरि युगल जोरे पानि। बिहँसि लोचन किए नमित सु लाजसों सुखदानि॥ प्रजा कारण नियत भार्य्या बरत पति अभिराम। होय तुममे प्रीति मम मुनि करउ तान ललाम॥ पिताके गृह यथा मम हो शयन शय्या नाथ। तथा मन्दिर मध्यमे मुनि भजउ मेरे साथ॥ सहित भूषण बसन सुन्दर चहति देखो तोहि। सहित भूषण बसन उत्तम भजउ हे प्रभु मोहि॥ अजिन बसन कषाय रति रुचि करतहै न ललाम। होत नहि अपवित्र भूषण बसन सो अभिराम

पं० ॥ अगस्त्य उवाच ॥ तोम मेरे है न धन तो पिताके है जैांन॥ लोपामुद्रोवाच ॥ ईश तुम सब जगतके धन हरण में तपभैांन॥ अगस्त्यउवाच॥ कहति हो तुम सत्य सो तप विघ्नकारक बाम।होय नहि तप विघ्न जातें करहु तेंान सलाम॥ लोपामुद्रोवाच ॥ स्वल्पबाकी रहो मम ऋतु काल है तपधाम।और भाँतिन आइहैं हम पास तो अभिराम॥चहति हैां तो धर्मको नहि लोप है सुखदान।एहि भाँति मेरी कामनाकों करहु पूर्ण सुजान ॥ अगस्त्यउवाच ॥ तो कामनाके हेत हम यह कियो नियत विचार। जातहैं धन हेतु हम तुम इहां बसहु उदार ॥ लोमसउवाच॥ चले सुमुनि अगस्त्य मागन वित्तकों अतिमान । श्रुतर्वाणमहीप हो जहँ राजऋषि सुखदान ॥ सुनत आगम महामुनिको श्रुतर्वाण नरेश। आइ आगें पूजिकै ले गयो अपने देश ॥ जोरि अञ्जलि आगमनको हेतु बूझो भूप। अगस्त्यउवाच॥ इहाँ हम क्षितिपाल आए चाहि वित्त अनूप ॥ होय काहूकों न पीडा यथाशक्ति सुजान। देहु हमकों वित्त अपने भागमें मतिमान॥ लोमसउवाच॥ आय व्यय सु समान मुनिसों समुझि बोले भूप। होय अधिक सो लीजिए धन आपु सुतप अनूप॥ आय व्यय सम देखि सम मति चित्तमें निरधारि।लेत पीडा होय गी जनमाह महत विचारि॥श्रुतर्वाण समेत मुनि ब्रध्नश्व हों जहँ भूप। गए तहँ तेंहि आय पूजन कियो सविधि अनूप । भूप बूझो महामुनिसों आगमनकों मर्म्म । कहो मुनि हम वित्तमागन इहां आए पर्म्म ॥होय काहूकों न पीडा यथा शक्ति सुजान।देहु हमकों वित्त अपने भागमें मतिमान ॥ लोमसउवाच ॥ आय व्यय सु समान मुनिसोंसमुझि बोले भूप। होय अधिक सो लीजिए धन आपु सुतप अनूप॥आय व्यय सम देखि सम मति चित्तमें निरधारि। लेत पीडा होयगी जनमाह महत विचारि ॥ श्रुतर्वाण ब्रध्नश्व सह प्रसदस्युके गे पास। आइ आगें कियो पूजन यथाविधि मतिरास॥भूप बूझो महामुनिसों आगमनकों मर्म्म ।कहो मुनि हम वित्त मागन इहा आए पर्म्म ॥ होय काहूकों न पीडा यथाशक्ति सुजान ॥ देहु हमकों वित्त अपने भागमें मतिमान॥ लोमसउवाच॥आय व्यय सु समान मुनिसों समुझि बोले भूप।होय अधिक सो लीजिए धन आपु सुतप अनूप॥आय व्यय सम देखि सम मति चित्तमें निरधारि। लेत पीडा होयगी जनमाह महत विचारि॥ते भूप तीनो परस्पर यह कहो मंत्र विचारि।चलहु मुनि जहँ दैत्य इल्वल रहो बहुधन धारि॥तहाँ हम सब जाय तासों मागिए बसु दान।लोमसउवाच॥वित्त तासोंमागिबो है उचित हमहि समान॥गए ते तब सकल इल्वल पास सह मुनि भूप॥देखि इल्वल तिन्हें आवत सहित मुनि अनुरूप। आतिथ्य तिनको कियो चितमें राखि छल बलवान।वातापि भ्राताकों तथा विधि मेष करि सविधान। देखि शङ्कित भए ते राजर्षि मनमें भूप ॥ जानिकै वातापिको सो कर्म दुष्कर रूप ॥ समाधान सु कियो तिनकों देखि मुनि भयमान ॥ कहो याकों खाय करिहैं पचित हम सह प्रान॥ भए ते नृप स्नानकों तब जाय तहँ मुनि भूप ।पीठप तब जाय बैठे भक्ष्यकों शुचि रूप ॥ बिहँसि इल्वल परसि दीन्हों ताहि मांस अखर्ब । खाय लीन्हों महामुनि वातापिको पल

सर्व ॥ वातापिको आव्हान इल्वल करण लागो चाहि। अपान वायु पमान मुनि तब छोडि दीन्हों
ताहि ॥ निकसिश्रै वातापि फिरि फिरि कहो इल्वल बैंन। कहो तासों बिहँसिकै तब महामुनि तपश्रैन ॥ निकसि आवैं कहांतें हम दियो ताहि पचाय। भयो बिबरण जानि इल्वल पचित ताको काय ॥ जोरि पाणि अमात्य सह इमि कहन लागो बैंन। केहि अर्थ आए इहां कहिए करैं सो तपश्रैन॥ अगस्त्यउवाच॥जानिकै हम तुम्हैं आए नृपन्ह सह धनवान।देऊ भूपन्ह सहित हमकों महाधन मतिमान॥ कै प्रणाम मुनिन्द्रसों इमि कहे इल्वल बैंन। दियो चाहत तुम्हैं हम जो कहऊ सो तपश्रैन ॥ अगस्त्यउवाच ॥ अयुत गो सह अयुत सुवरण नृपनकों एक एक। कनक रथ सह द्विगुण हमकों देऊगे सबिबेक ॥ असुर तासों अधिक कछु धन दियो तिन्हहिँ ललाम। बिराव और सुराव हय युत कनकरथ अभिराम ॥ सहित धन सह नृपन्ह मुनिकों तुरग अतिमतिमान। सुमुनि आश्रमकों गए ते अस्व हे सुखदान। नृपन्ह सुमुनि निदेश लहि किए स्वपुरकों तब गैान ॥ कियो पत्नीको सुवांछित महामुनि हो जैान ॥ ***********
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि अगस्त्यमुनिनावातापिभक्षणवर्णनोनाम पञ्चदशमोध्यायः ॥ **********

॥ * ॥ लोपामुद्रोवाच ॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

हे भगवान कियो तुम सर्व। जो मो वांछित रहो अखर्व ॥ करऊ पुत्र मोमे उतपन्न। एक बार बिक्रम सम्पन्न॥ अगस्त्यउवाच ॥सुन्दरि हमहैं तुष्ट महान।तो सुवृत्ति लखिबो सुखदान॥भामिनि सुनिए पुत्रबिचार। तुम्हैं रुचै सो लेऊ उदार॥ सहस लेऊ जगजन सम तान।कै शत लेऊ सहस सम जैान॥कै दश लेऊ हजार समान। कै सहस्र सम एक सुजान॥ लोपामुद्रोवाच॥एक पुत्र जो सहस समान। तैान दीजिए मुनि सुखदान॥ कहि तथास्तु मुनि आनद पाय। तासों सङ्गम कीन्हों जाय॥ ताहि गर्भ दैकै अभिराम।आपु गए बनकों तपधाम॥बनकों गए सुमुनि अवदात।बाढो गर्भ बर्षलों सात ॥ बीतो बर्ष सात जब भूप। भयो पुत्र अति मतिमय रूप॥ ज्वलन समान देखि अभिराम। दृढस्यु धरो ताको मुनि नाम ॥ बेद साङ्ग उपनिषद समेत।बालक पढत ज्ञानमय चेत॥ होम हेत इन्धनको भार। गयो सो मुनिपहँ लएँ उदार ॥ इध्मवाह तातैं यह नाम। कहो अगस्त्य देखि बल धाम ॥ देखि तथाबिधि पुत्र अनूप। भए प्रसन्न महामुनि भूप ॥ तब अगस्त्यके पितर अतोक। प्राप्त भए जे उत्तम लोक ॥ तबसों हैं यह आश्रम ख्यात। मुनि अगस्त्यको अति अवदात ॥ भागीरथी लखऊ नृपधर्म। सेवत जाहि देव ऋषि पर्म ॥ यथा पताका प्रेरित वात। तथा धार धारैं अवदात॥ न्याय दिशा दक्षिणकों पर्म। माता सम पालति जन धर्म॥ हरके जटाजूटसों आय। भई सिन्धु महिषी सुखदाय ॥ पुण्यमई सुरसरिमे भूप। करऊ यथेष्टस्नान अनूप ॥ लोमसउवाच ॥

व०प० सुनक़ युधिष्ठिर नृप अवदात । यह भृगुतीर्थ जगतमे ख्यात ॥ परशुराम जहँ करिकै स्नान । फिरि हततेज लहो अतिमान ॥ सह कृष्णा सह भ्रातन्ह भूप । स्नान करक़ दै दान अनूप ॥ हरो सुयोधन तेजस तान । धर्म भूप लहिहो फिरि तान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सहकृष्णा सह भ्रातन्ह स्नान । कियो धर्मनृप भूप सुजान ॥ देव पित्र तर्पण सविधान । करि दीन्हों विप्रन्हकों दान ॥ भए पाय तेजस अतिमान । सिंह समरजेता बलवान ॥ लोमससों पूछो नृपधर्म । परशुराम तेजस अतिपर्म ॥ कौनभाँति केहि हरो ललाम । तान कहौ हमसों तपधाम ॥ * ॥ लोमस उवाच ॥ * ॥ परशुरामको जे जस हर्ण । सुनक़ भूप करि कहतस्मर्ण ॥ भए पुत्र दशरथके भूप । आपु विष्णु धरि देह अनूप ॥ रावणके वधकों नरनाह । हमन्ह लखो अयोध्यामाह ॥ तेहि भंजो हर चाप गँभीर । यह सुनि चले परशुधर बीर ॥ पुरी अयोध्याके ढिग जाय । मिले रामसों अम रष छाय ॥ बक़त बहस करि बोले बैन । लेक़ राम मो धनु बलऐन ॥ धनु चढाइ कै खैंचक़ बीर । आनि परे तब सबल गँभीर ॥ तास तेज लीन्हों धनु साय । खैंचि जगतपति श्रीरघुनाथ ॥ तब बोले भृगुपतिसों बैंन । रामचन्द्र त्रिभुवनके ऐन ॥ भृगुपति लखक़ हमारो रूप । देत दिव्य चख तुम्हैं अनूप ॥ रूप बिराट धरो अति मान । जामे त्रिभुवन बसत महान ॥ भृगुपति महत लखत सो रूप । व्है गए बिकल मूरछित भूप ॥ संज्ञा लहि करि बिनय बिनीति । रघुपतिसों व्है बिदा अभीति ॥ गिरि महेन्द्रमह किन्हों वास । वर्षएक रहि पूरित त्रास ॥ लखि भृगुपतिकों दुखित अचैन । तिनसों कहो पितर इमि बैन ॥ * ॥ पितरऊचुः ॥ * ॥ यह नहि योग्य बिष्णुकों पाय । त्रिभुवन पूज्य वंद्य सुखदाय ॥ बधूसरा सरिताकों जाक़ । तहाँ जायकै पुत्र नहाक़ ॥ प्रदीसोह सो तीरथ राम । भृगुमुनि जहँ तप कियो ललाम ॥ पिता बचनतें तह करि स्नान । पायो भृगपति तेज महान ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ फेरि सुनो चाहत तपधाम । मुनि अगस्त्यको चरित ललाम ॥ लोमस उवाच ॥ सुनक़ कथा अद्भुत कुरुनन्द । मुनि अगस्त्यको चरित अमन्द ॥ रहे दनुज कृतयुगमे घोर । रणदुर्मद बलवान कठोर ॥ कालकेय गण दारुण बीर । वृत्राश्रयको पाय गँभीर ॥ नाना आयुध लै अति उद्ध । सुरपति पै दौरे व्है क्रुद्ध ॥ चाहि वृत्रबध यत्न अखर्व । गए पितामहपै सुरसर्व ॥ किएँ पुरस्सर सुर सुरनाथ । ठाढे भए जोरिकै हाथ ॥ देखि कृताञ्जलि सुरन्ह बिनीत । बचन पितामह कहे सप्रीति ॥ विदित तौन हमको सुरसर्व । कियो कार्य्य जो चहत अखर्व ॥ सो तुमसो हम कहत उपाय । जातें बधक़ वृत्रको जाय ॥ दधीच नाम है मुनि तपधाम । तासो वर माँगक़ अभिराम ॥ दैन कहे जब सो तपभौन । अस्थि तास माँगक़ बर जौन ॥ सो तजिकै तब देह महान । दैहै तुम्हैं अस्थि सुखदान ॥ ताके अस्थि लेय तुम सर्ब । बज्र कीजियो तास अखर्ब ॥ घोर षटशुहनवज्र महान । तातें हनक़ वृत्र मघवान ॥ शक कहो हम तुमसो जौन । छीप्र जायकै कीजै तौन ॥ यह बिधि आज्ञा पाय अनूप । नारायणके प्रोकें भूप ॥ गे दधीचके आश्रम पास । सुरण सहित

सुरपति मतिरास॥ सरस्वती सरिताके पार । जहाँ बिपिनि अति लसत उदार ॥ षटपद गुञ्जत लस
बहुरङ्ग। बसत सिंह मृग गज एक सङ्ग॥नन्दन वनसम आश्रम तौन।शोभा तास सकै कहि कौन ॥
तहँ दधीचकों देखो जाय । सुरन्ह सूर्य्य सम धारे काय ॥ ताके चरण बन्दि अभिराम । सुरन्ह
यथाविधि कियो प्रणाम ॥ कहो पितामह विधिसों जौन । वर मागो सुरनायक तौन ॥ तव
दधीच ह्वै परम प्रसंन्न। कहे बचन आनद सम्पंन्न ॥ हम करि हैं तव हित सुखदेय। तजि हैं देह
सुयश यह लेय ॥ इमि दधीच देवनसों बैन । कहि तन त्यागि गए विधिऐन ॥ देवन्ह तास
अस्थि समुदाय। भरे हर्षसों लियो उठाय ॥ दियो विश्वकर्मकों जाय । जयकारण सब दियो
सुनाय ॥ विश्वकर्मै बिधि बिहित बनाय । बज्र इन्द्रकों दीन्हों जाय ॥ *॥ विश्वकर्मोवाच ॥
यह लै बज्र महत मघवान। करहु भस्म सब दनुज महान ॥ त्वष्टाको लहि परम निदेश। बज्र
हर्षसों लियो सुरेश ॥ *॥ लोमसउवाच॥*॥ रोलाछन्द ॥*॥ * * * *
सहित देव समूह सुरपति बज्र लीन्हों जौन । गए वृत्र समीप हो क्षिति गगण रोके जौन ॥ काल
केय कराल चहुँदिशि किए रक्षित ताहि । लएँ शस्त्र अनेक बहुविधि वाहिबेकों चाहि ॥
सुरन्ह असुरन्हसों भयो तव लोमहर्षण युद्ध । भरी हैलों चाश्चकारक लोककों अति उद्ध ॥
कटत गिरत शरीरशिर सम ताललफ अतिमान । शब्द हाहाकारसों भरि गयो गगण महान ॥
नहीं सुर सहि शके तिनकों युद्धवेग महान । भरे भय तजि चले रण लखि दुखित भे मघवान ॥
इन्द्र भयसों भरे रण तजि भए भूरि बिवर्ण । जाय सुरन समेत लीन्हों बिष्णुकी बर शर्ण ॥ भरे
कश्मल इन्द्रकों लखि बिष्णु अव्ययरूप। शक्रकों दे तेज अपनो कियो बर्धित भूप ॥ देखि रक्षित
बिष्णुसों तव इन्द्रकों सुर सर्व। ब्रह्मऋषिन्ह समेत सबहिन धरो तेज अखर्व॥ पाइ तेजस बिष्णु सों
सह ब्रह्मऋषिन्ह महान । बृत्र गर्जो देखि सुरगण भए सबल समान ॥ सुनत सो सबदिशा
धरणी लगी हलन अनूप । शब्द सो सुनि घोर घनसम त्रस भो सुर भूप ॥ भरे भयसों इन्द्र दीन्हों
छोड़ि बज्र उदार। बृत्र क्षितिपर गिरो शत्रु लगत बज्र प्रहार॥नहीं जानो बज्र छोडत पाणितें
मघवान । बृत्रको नहि मरण जानो भरे भीति महान ॥ भरे भयसों शक्र सरमे चले बूडन
हेत। बृत्रबध लखि मोद सुरगण लहो ऋषिन्ह समेत ॥ लगे असुरन्हकों हनन सुर बृत्रको बध
पाय । दनुज भयसों भरे पैठे सिन्धुमे सब जाय ॥ कालकेयन सिन्धुमे बशि कियो मंत्र बिरुद्ध ।
जगतको अब नाश कीजै इहां बसि कै उद्ध॥ बेदविद तप करत तिनको प्रथम कीजे नाश। लोक
धारण करत हैं करि यज्ञ ए तपरास ॥ भएँ तिनको नाश ह्वैहे नष्ट सिगरे लोक । अभय
हमकों बासकों हैं सिन्धुमेको ओक॥ कालकेयन निपत करि यह मंत्र महत बिरुद्ध। जगतके क्षय
हकरणकों ते भए उद्दित उद्ध ॥ रात्रिमे कढि सिन्धुतें ते मुनिनकों बरजोर । करत भक्षण पाप

व०प० आश्रम तीर्थमे अतिघोर ॥ अधिक सत्रह आठसहस बशिष्ट आश्रममाह। करे भक्षण बिप्र जे तप करत हे नरनाह ॥ च्यवनके हे करत आश्रममाहँ तप द्विज जौन । कालकेयन निशामे शत करे भक्षण तौन॥ रात्रिमे इमि करत दिनसे जात सिन्धु समाय। भरद्वाज मुनीन्द्रके फिरि सुनऊ आश्रम जाय॥ वायुभक्षी सलिलभक्षो बीस ब्राह्मण पर्म। कालकेयन खाय लीन्हें कियो महत अधर्म॥एहिभाँति कसतें मुनिनके हे महत आश्रम जौन। करत बाधा निशामे तहँ जाय अधरम भौन ॥ काल प्रेरित करत बाधा कालकेयन्ह भूप । नहो जानत कोऊ तिनको लखत है नहिँ रूप॥प्रात देखत मुनिनके बिनु मांस अस्थि समूह। परे आश्रम निकट चऊँ दिशि सङ्ख कैसे जूह॥ वेदपाठ न करत कोऊ नष्ट भे मख सर्व । कालकेयन कियो उत्सव रहित जगत अखर्व ॥ यहि भाँति संक्षयमान द्विज बर रहे बाकी जौन । भाजि कै ते दिशनमे गिरि गहणकों किय गौन ॥ गुहामे कोउ जाय पैठे बिबरमे अतिमान। दैत्यकरतें मरणभयतें तजो काहूँ प्राण॥ धनुर्धर जे बीर तिनके हनन हेतु उदार। हेरि हारे तिन्हे तिनको मिलत नहि सञ्चार ॥लहो श्रम अति नही पावत तिन्हे सुरगण सर्व। जगतको यह नाश कारण देखि अमित अखर्व ॥ भूप ऐसे देव गण सब होय दुखित उदार। सूरन्ह सहित सुरेश ऐसो कियो मंत्र बिचार ॥गए बिष्णु शरण्यकी तब शरणकों सुर भूप । लगे कहन प्रणाम करि कै भए दीन स्वरूप ॥ उतपत्य पालन नाशकर तुम हो हमारे ईश। जगन्मय तुम जगतकारण आपु हो जगदीश॥ कोलको धरि काय कीन्हेंा धराको उद्धार । होय बामन लियो बलिसों लोक तीनि उदार ॥ जम्भ असुर हि हनो जो हो यज्ञनाशक धर्म । यहिभांतिके बऊ बिदित हैं प्रभु रावरेके कर्म ॥ हमै है सब भांतिसों गति रावरो अभिराम । देत तुम्ह हि जनाय यातें सकल करुणाधाम ॥ करऊ रक्षण लोक देवन्ह सहित सुरपति नाथ। चतुर्बिधि यह प्रजा बाढति कृपा के तव साथ ॥ प्राप्त भय यह भयो ब्राह्मणवर्णकों अतिमान । जानि परत न निशामे को हनत है भगवान ॥ क्षीणब्राह्मण भए धरणी लहै गी क्षय सर्व । धराक्षयते लहै गो क्षय नाथ त्रिदिव अखर्व ॥ महाबिष्णु प्रसादते तब लोक सब अभिराम । लहैं गे क्षय नही तुमतें होय रक्षित माम ॥ * ॥ बिष्णु रुवाच ॥ * ॥ बिदित कारण प्रजाक्षयको हमै है सुर सर्ब। कहत हैं हम तौन सुनि कै लहऊ मोद अखर्ब ॥ कालेय तुमकों बिदित दारुण दुसह जे अतिमान । वृत्र सह जिन कियो मंथित प्रथम लोक महान॥शक्रतें हत वृत्रकों लखि भाजि ते भरि भीति। सिंधुमे ते बसे हैं सब प्राणसों करि प्रीति॥ लोकक्षयकों निशामे ते हनत ऋषिन्ह उदार। मारिबेके सक्य नहि ते सिंधु अगम अपार ॥ सिन्धुके क्षय करणको तुम जाय बाधऊ डौर । बिना सुमुनि अगस्त्य अब्धि न सोषि है कोउ और ॥ समुद्र सोषें बिना कबऊ सक्यमे ते हैं न। सुरन्ह सहित सुरेश ऐसैं बिष्णु के सुनि बैन ॥ पितामहकी लेय आज्ञा सकल सुर समुदाय। लखो सुमुनि अगस्त्यको तब तास आश्रम

जाय ॥ करत जास उपासना ऋषिवृन्द तेजसरूप । करण सुस्तव लगे सुरगण महामुनिको ब०प०
भूप ॥ * ॥ देवाऊचुः ॥ * ॥ नभित त्रिभुवन नहुषसो तब कियो हो तुम त्राण । डारि दिन्हों स्वर्गसों दुर्बुद्धिकों अतिमान ॥ क्रोधतें गिरिविंध बाढा भानुरथपथ घेरि । रावरेके बचन बश ह्वै बढत है नहि फेरि ॥ लोकमे जब भयो सिगरे अन्धतमस प्रवृत्त । नाथ तुमको पाय कै गिरि भयो तौन निवृत्त ॥ नित्य भयसो भरे हमको आपु गति सुखदान । भए आरतमान सिगरे प्रजा परम सुजान ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ केहि हेतु करि कै क्रोध बाढो विंध्यगिरि अतिमान । तौन हों सब सुनो चाहत कहहु मुनि सविधान ॥ * ॥ लोमशउवाच ॥ * ॥ कनक गिरिकों निति प्रदक्षिण करत रविकों चाहि । सूरसों गिरि विंध्य ऐसें कहो ऋषि अवगाहि ॥ मेरुकों जैसे प्रदक्षिण करत हो तुम नित्य । करहु मोहुकों प्रदक्षिण तथा हे आदित्य ॥ यहि भांति सुनि गिरिविंध्यसों तब कहे दिनमनि बैंन । करत स्वेछासो प्रदक्षिण मेरुको हम हैं न ॥ दियो मार्ग देखाय यह जेहि कियो जगत महान । सुनत इमि करि क्रोध बाढो विंध्य तब अतिमान ॥ रोकिबेकों सूर शशिको परम पथ है जौन । आय देवन्ह कहो बहुत न विंध्य मानो तौन ॥ अगस्त्यसों वृत्तान्त सो सब कहो देवन्ह जाय ॥ * ॥ देवाऊचु ॥ * ॥ तुम्हैं बिन को सकत ताहि निवारि हे मुनिराय ॥ सुरन्हके सुनि बचन सुमुनि सदार गिरि पहँ जाय । कहो हमकों देहु पथ गिरि सङ्कुचित करि काय ॥ जात दक्षिण दिशाकों कछु कार्य्यको करि तौन । फेरि हम जब आइ हैं तब बाढि हो बलभौन ॥ विंध्यसों यहिभाँति दे कै बचन सत्य स्वरूप । जाय दक्षिणकों न अबलों फिरे मुनिवर भूप ॥ प्रभाव सुमुनिअगस्त्यको तुम हमै बूझो जौन । कहो हम सब सहित विस्तर भूप तुमसों तौन ॥ सुरन्ह जैसें कालकेय सु दैत्य मारे सर्ब । पाय सुमुनि अगस्त्यसों बर सुनहु तौन अखर्ब ॥ सुरनके सुनि बचन ऐसें कहे मुनिवर बैंन । कौन कारण आय मागत कान बर मति ऐंन ॥ बचन सुनि कै महामुनिके कहे सुरन्ह सकाम । पान कीजै सिन्धुको यह कार्य्य मम अभिराम ॥ हनै हम कालेय तब सुर विप्र द्वेषि जौन । सुरनके सुनि बचन मुनि स्वीकार कीन्हों तौन ॥ करैगे हम कार्य्य तब सब लोक आनद ऐंन । चले पास समुद्रके मुनि बोलि ऐसे बैंन ॥ सिद्ध सुर ऋषि नाग नर गन्धर्व किन्नर जौन । चले मुनिके साथ अद्भुत देखिबेकों तौन ॥ गए तीर समुद्रके गम्भीर जामे नाद । उठै तुङ्ग तरङ्ग जामे भीमभयकर याद ॥ जाय पास समुद्रके मुनि कहे ऐसे बैंन । लखहु तुम सब पियत हैं हम बरुणको यह ऐंन ॥ पान कीन्हों सिन्धुको मुनि कियो अद्भुत कर्म । देखि कै सुर सिद्ध मानुष भरे विस्मय पर्म ॥ करण सुस्तव लगे मुनिको मनुज सुर गन्धर्ब । सुमन बर्षे देवदुन्दुभि लगी बजन अखर्ब ॥ निः सलिल देखि समुद्रकों सुर भरे हर्ष उदार । दिव्यास्त्र धरि कै असुरगणको लगे करण प्रहार ॥ कालकेयन कियो युद्ध मुहूर्त भरि अतिमान । गए मारे सकल खल ते भरे पाप महान ॥ दनुज हे जे शेष ते सब भाजि कै सुनु भूप । बसे ते पातालमे चलि धरा भेदि

व॰प॰ अनूप॥ कालकेयन्ह मारि कै सब त्रिदश मुनि पै जाय। कियो सुखव कहे ऐसे बचन आनद पाय
महामुनि तव क्रपातें सबलोक पायो चैंन । क्रपातें तव हने हम कालेय दुर्मतिऐन ॥ पूर्ण कीजै
सिन्धुको मुनि क्रपा सहित महान । छोड़ि दीजै सलिलकों प्रभु जौन कीन्हों पान ॥ सुरनके सुनि
बचन ऐसें कहो मुनि सुखदाय । सलिल गो पचि सिन्धुकारण करहु और उपाय ॥ सिन्धु
पूरणहेतु मुनिके सुरन्ह सुनि ए वैंन । महा अद्भुत मानि मनमे भए चिन्तित चैंन ॥ यथा आए
तथा सुर नर बिदा ह्वै मुनि पास । गए विष्णु समेत सुर जहँ पितामह तपरास ॥ सुरन्ह मंत्र
बिचारि ऐसें परस्पर मतिऐन । कहे सागर भरणकारण पितामहसों बैंन ॥ *❦*❦*❦*
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि
अगस्त्योपाख्याने विंध्यस्तमन समुद्रपानवर्णनोनाम षोडशोऽध्यायः ॥ *❦*❦*❦*❦*❦

लोमसउवाच ॥ * ॥ कहो विधि सब सुरनसों तुम जाहु अपने धाम । बहुत बीतें काल
भरि है सिन्धु फिरि अभिराम ॥ कुलोद्धारण होय गो जब भगीरथ छितिपाल । बचन सुनि
बिधिके गए सुर लगे परखन काल ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ ज्ञातिकारण भए कैसें कहहु
हे मुनि तौंन । सिन्धुपूरण कियो जेहि सो भगीरथ हो कौंन ॥ ❦*❦ ॥ दोहा ॥ ❦*❦*
सुनो तौंन तुमसों चहत कहहु महामुनि धर्म । बिस्तर सह इतिहास सो भूपतिको शुतधर्म ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

धर्मनृपतिके सुनि बचन लोमस ऋषि तपधाम । सगरमही पतिको लगे कहन महात्म्य ललाम॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

बर इँक्ष्वाकु बंश सम्भव हे सगर नाम बर भूप।रूप सत्व सम्पन्न अति भरो प्रताप अनूप॥
तासजङ्घ हैहय नृपति जीति युद्धमें ताहि । जीति भूप सब बश करे धर्मनीति अवगाहि ॥
भार्य्या ताकों द्वै भई भद्रा सु यौवन रूप । बैदर्भी एक दूसरी सैव्या परम अनूप ॥
पुत्रकामना धरि सगर पत्निन सह सुखदाय । उग्र लगो तप करण सो हरगिरिके ढिग जाय॥
कियो महत तप उग्र जब योगयुक्त ह्वै भूप। महादेव ताकों मिले करि कै क्रपा अनूप॥
बरद शम्भूकों देखि कै आनद भरे बिशाल। पुत्र अर्थ याचँना कियो पत्निन सह भूपाल॥
प्रीतिमान शङ्कर कहो ऐसें बचन अनूप। मागो जौन मुहूर्तमे तुम हमसों बर भूप॥
ताके फलसों लहौ गे तुम सुत साठिहजार । एकस्त्रीमे बल भंरे अतिरणके जेतार ॥
एक मरैंगे पाइ हैं सकल मरणकों भूप। दूसरी स्त्रीको एकसुत ह्वैहै परम अनूप ॥
शङ्कर अन्तर्ध्यान तव यों कहि भए ललाम। पत्निन सह राजा सगर आए अपने धाम॥
बैदर्भी सैव्याखियन्ह धारो गर्भ अनूप । बैदर्भीकों समय लहि जनमो लौवा भूप॥

इक्ष्वाकी सुत एक भो देवस्वरूप उदार। जब लौं वाके त्याग को कीन्हों नृपति बिचार॥ अ०प०
अन्तरीक्ष बाणी सुनी तब नृप सगर गँभीर। भूपन साहस करि तजऊ पुत्रन्हकों धरु धीर॥
अलाबु मद्धितें काढिके बीज सकल सुखदान। घृत पूरण घटमे धरऊ यत्न सहित मतिमान॥
साठि सहस तुम लहऊ गे तब सुत सुन्दर भूप। महादेवसों दत्त ए तुमकों पुत्र अनूप॥
अन्तरीक्ष बाणी सुनत तथा कियो नरनाह। बीज एक एक लै धरे एक एक घट माह॥
धात्री राखी घटन्ह प्रति एक एक मतिमान। भे तातें बऊ कालमे प्रगट पुत्र बलवान॥
ऐसें साठिहजार सुत लहे सगर बलधाम। एक सङ्ग नृपधर्म लहि रुद्रप्रसाद ललाम॥
घोर क्रूरकर्मा सकल करत गगण लौं गौन। काहूकों मानत नही बाऊलतासों तौन॥
देवनकों बाधा करत सह राक्षस गन्धर्व। सब भूतनकों देत दुख ते सब हूर अखर्ब॥
बाधा लहि सब सुर गए शरण पितामह पास। कियो बिरञ्चि बिदा तिन्हैं ऐसें कहि सुखरास॥
स्वल्पकालमे सगर सुत लहिहे सकल बिनास। घोर आपने कर्मसों करिहै यमपुर बास॥
सर्वलोक सह सुरन्ह सुनि ऐसें बिधिकी बैन। मागि पितामहसों बिदा आए अपने ऐन॥
तब बीतें बऊ कालके सगर भूप मतिमान। अश्वमेध बर यज्ञकी दीक्षा लई महान॥
यज्ञ अश्व क्षितिपर फिरत रक्षक साठि हजार। तीन पुत्र नृप सगरके बलसों भरे उदार॥
तोयसिन्धु तट तुरगँ सो व्है गो अन्तरध्यान। हेरि थके तब आय तिन नृपसों कह्यो मलान॥
सगर कह्यो सब दिशनमे तुम सब हेरऊ जाय। ते ढूढत चारो दिशा नृपकी आज्ञापाय॥
लह्यो नही तिन तुरगँ तब अरु यह हर्ता जौन। समाचार सब आइकै कह्यो पितासों तौन॥
नदी द्वीप बन शैल सब सागरसह चऊ ओर। ढूढि थके नहि हय लहत नही तुरगँकों चोर॥
ऐसें भूपति सगरसों कह्यो सुतन्ह सब आय। तिनसों नृपबर सगर सुनि बोले बचन रिसाय॥
फेरि न मोपह आइयो बिना तुरँग तुम सर्व। पाय पिता शासन चले ढूढन अश्व अखर्ब॥
हेरत ते चारो दिशा बेगभरे जिमि बात। देखो जाय समुद्रको बिना सलिलको खात॥
खोदन लगे समुद्रकों लेकै फरस कुदार। सागरकों सुत सगरके अतिबल भरे उदार॥
असुर उरग राक्षस रहे और जीव तहँ जौन। महानाद लागे करण बध्यमान व्है तौन॥
भिन्न शीस त्वक अस्थि भे तहँके जीव महान। देखि परे अनगणित तहँ गिरे भए बिनप्रान॥
तिनकों खनत समुद्रकों बीति गयो बऊकाल। तिन न अश्व देखो तहाँ सुनऊ धर्म क्षितिपाल॥
पूर्वोत्तरके कोणमे खनि ते गे पाताल। तहा महीतलमे लखो बिचरत अश्वबिशाल॥
कपिल तहाँ तप करतहे तेज राशि सम ज्वाल। तिन्हैं निदरि ते तब चले हर्षित प्रेरित काल॥
बढ़िवेकों हय क्रोध करि लखि मुनि कपिल महान। बासुदेव जाकों कहत मुनिबर बिदुषसुजान॥

१०५० देखो मुनि करि विकृत चख पूरित तेज महान । भए भस्म सब सगरके रहे जे पुत्र अमान ॥
भस्मभूत तिनकों चितै नारद मुनि तहँ आय । भए भस्म ते यथा सो दीन्ही कथा सुनाय ॥
सगर तौन सुनिके कथा कही जो मुनि दुखदान । भरे शोक समुझो बहुरि शिवको वचन प्रमान ॥
असमञ्जसको पुत्रजो अंशुमान बरवीर । ऐसें कहो बोलाइकै सगर बचन गम्भीर ॥
पौत्र पुत्र मेरे रहे साठि सहस्र सु जौन । भए भस्म मेरे लएँ कपिल कोपते लौन ॥
त्याग तिहारे पिताको कीन्हो जानि अनेत । रक्षणकोवें धर्मको पुरजनके हित हेत ॥
॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥
कौन हेत नृप सगर सुत त्याग करो मतिमान । सुनो चहत सो महामुनि कहिए सहित विधान ॥
॥ * ॥ लोमस उवाच ॥ * ॥
असमञ्जस सैव्या तनय गहि पुरजनके बार । बोरि नदीमे देयसो सदन करत सुकुमार ॥
गए पौर भय शोक लहि सगर भूपके पास । कहन लगे करजोरिकै सकरुण वचन प्रकास ॥
पर चक्रादिक भीतिसों तुम रक्षत क्षितिपाल । असमंजस भयसों करऊ रक्षित हमकों हाल ॥
घोर वचन पुरजननके सुनि नृप रहे बिचारि । सचिवनसों ऐसें कहो परम धर्म निरधारि ॥
पुरतें देऊ निकासि तुम असमञ्जसकों अद्य । जो मेरो प्रिय चहत तौ जाय करऊ यह सद्य ॥
यह सुनि मंत्रिण सो कियो दियो जो भूप निदेश । असमंजसकों नगरतें दीन्हों काढि नरेश ॥
यह सब हम तुमसों कहो यथा पुत्रको त्याग । पुरजनके हितहेतु किय यथा सगर बडभाग ॥
अंशुमानसों सगर नृप कहे बचन बर जौन । सो अब तुमसों कहतहैं सुनऊ धर्मनृप तौन ॥
॥ * ॥ सगर उवाच ॥ * ॥
असमञ्जसके त्यागत लहि पुत्रन्हको नाश । अरु अलाभतें अश्वके हमदुःखित मतिरास ॥
यज्ञविघ्नके मोहसों मोहित हमकों जोहि । ल्याय अश्वकों नर्कतें रक्षित कीजे मोहि ॥
अंशुमान सुनि सगरके बचन दुःखसों घूमि । चले तहाँ जहँ सिन्धु मे रही बिदारित भूमि ॥
तौन मार्गसों सिन्धुमे कीन्हों जाय प्रवेश । लखो तहा मुनि कपिलकों उदित मनऊ दिनेश ॥
देखि तुरग मुनिके गए सोहैंचले उदार । साष्टांग मुनि कपिलकों कीन्हों सो नमस्कार ॥
कहो सुमुनिसों कार्य तब साञ्जलि बिनया पन्न । अंशुमानकों कपिल मुनि देखत भए प्रसन्न ॥
कहो सुमुनि हम देत बर मागऊ चाहत तात। अंशुमान मागो तुरगँ हेतु यज्ञको जौन ॥
मागो फेरि द्वितीय बर पितरोद्धारण पर्म । कहो सुमुनि हम देत तुम मागो जौन सधर्म ॥
क्षमा धर्म अरु सत्यहै तामे सुत अवदात । धन्य सगर तो तें भए पुत्र मान तो तात ॥
तो प्रभावतें जाहिगे स्वर्ग तिहारे पित्र । भूप भगीरथ होय गो जब तो पौत्र पवित्र ॥
सो जब गङ्गा गगनतें ल्यावैगो तपधाम । आराधन करि शंभुको करि तप महत ललाम ॥

अश्वयज्ञको अंग हय सो लैआउ अनूप। करै समापन यज्ञ तो सगर पितामह भूप॥ व०प०
अंशुमान सुनि कपिलके ऐसे बचन ललाम। अश्वलेय आए जहाँ रहो यज्ञको धाम॥
बन्दि पितामहके चरण अंशुमान सह धर्म। मूर्द्धाघ्राण कियो नृपति वृत्त सकल सुनि पर्म॥
मख समाप्ति भूपति कियो लहिकै अश्व सुजान। देवन सागरकों कहो नृपको पुत्र समान॥
बहुत कालतों राज्य करि भूपति सगर उदार। गए स्वर्गको सौंपि सब अंशुमानकों भार॥
अंशुमान पालन कियो सागरलौं छिति सर्व। भो दिलीप ताको तनय तेजस भरो अखर्व॥
दै दिलीपकों राज्य गो अंशुमान सुरभौन। नृप दिलीप विधिवत सुनो निधन पितृन्हको तान॥
सुनि दिलीप भूपति भयो दुःखित महत सुजान। गङ्गाके अवतरणको कीन्हों यत्न महान॥
गङ्गा गिरी न स्वर्गतें कियो बिविधि विधि कर्म। नृप दीलीपको पुत्र भो भूप भगीरथ पर्म॥
धर्मपरायण शीलमय सत्यवाक अभिराम। राज्य देय ताकों गए नृप दिलीप सुनिधाम॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

भयो चक्रवर्ती महा भूप भगीरथ वीर। जनमनरञ्जन जगतको पालक सुमति गँभीर॥
सुनो भगीरथ कपिल मुनि किय पितरनको नास। यथा न पावत हैं पितर स्वर्गलोकको वास॥
राज्य सौंपिकै सचिवकों भरो दुःखसों भूप। गए हिमालयके निकट कीबे सुतप अनूप॥
आराधन सुरसरितको कीबेकों अभिराम। हिमगिरिको सुषमा लही अद्भुत परम ललाम॥
लगे घोर तप करन तहँ भूप भगीरथ जाय। कीन्हों वर्ष सहस्र लों फल सु मूल जल खाय॥
बीतो वर्ष सहस्र जब भरो कृपा अभिराम। दरशन दीन्हों सुरसरित धरिकै रूप ललाम॥

॥ * ॥ गङ्गोवाच ॥ * ॥

महाराज चाहत कहा देहिँ कहा हम तोहि। तुम्हे भगीरथ देहि सो जौन मागिबे मोहि॥
सुनि सुरसरिताके बचन कहो भगोरथ भूप। किए हमारे पितामह भस्म कपिल तपरूप॥
तुरग ढूंढिबे सगर सुत गे तहँ साठिहजार। कियो कपिल तिनकों लखत भस्मभूत सम छार॥
स्वर्ग वासकों लहैं ते तव सुरसरिता शर्म। तिनको तनय रसै सलिल जब तो पावन पर्म॥
महा नदी याचत तुम्हें यातें हों अभिराम। तो जलके परसैं बिना ते न लहत सुरधाम॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

सुनत भगीरथके बचन सुरसरि कहो प्रसन्न। करिहै हम तुम कहत जो कारज सब सम्पन्न॥
गिरत गगणतें बेग मम भूप धारिहै कौन। त्रिभुवनमे शङ्कर बिना धारि सकै को तौन॥
हरकों करउ प्रसन्न तुम ह्वैकै तप आसन्न। जटाजूट पर धारिहैं शङ्कर मोहि प्रसन्न॥
तो पितरनको कार्य ते करिहैं कृपानिधान। भूप भगीरथ बचन सुनि गङ्गाके सुखदान॥
जाय सु गिरि कैलाशकों तप करि उग्र महान। भूप भगीरथ शम्भुकों कियो प्रसन्न सुजान॥

व०प०१ गङ्गा धारण करैंगे शिव इमि कह्यो ललाम । दियो भगीरथ भूपकों बर हर करुणाधाम ॥
बर दै शङ्कर कृपा करि गए जहां हिमवान । सहित पार्षदन जगतपति तहँ बैठे सुखदान ॥
कहो भगीरथ भूपसों ऐसें हर बरदान । जाचऊ नृप सुर सहितकों पतन हेतु मतिमान ॥
यह सुनि शङ्करके बचन शुचि व्है नर बर भूप । स्मर्ण करण सुरसरितको लागे परम अनूप ॥
[illegible] भगीरथको समुझि पुण्यसलिलकी धाम । गिरो स्वर्गते सुर सहित हर शिरपर अभिराम ॥
देखि गिरत सुर सरितकों सुरमहर्षि गन्धर्व । उरग यत्त आए तहां देखन चरित अखर्व ॥
। उद्धत धरें तरङ्गकों भरी मीनगण घार । धरी शम्भु सो शीशपर सुरसरि सुखद सनाद ॥
सो ललाटपर शम्भुके मुक्ता कैसी माल । तीनि धार धरिकै भई सुरसरि लसत बिशाल ॥
हंसपंक्ति सी फेणको धारैं धारा पर्म । कहू कुटिल सूधी कहूँ अति गति गहति सधर्म ॥
भरी फेणसों लसति कछ मत्त बधूसी धार । मंद मधुर धुनिसों भरीधारी धार उदार ॥
यहि प्रकार तें गगणसों त्तितिपर आइ सचैंन । भूप भगीरथसों कहो सुरसरि ऐसे बैंन ॥
हमहि देखावऊ तौन पथ जित व्है चलैं अनूप । तो कारजकों धरणिपर हम आई हैं भूप ॥
यह सुरसरिके सुनि बचन चले भगीरथ बीर । सगर सुतन्हके है जहां त्तितितल माह शरीर ॥
गङ्गा धरि हर सुरन सह गए जहां कैलास । गङ्गा सहित समुद्रकों गए भूप मतिरास ॥
पूरण कीन्हों सलिलसों बरुणालयको रूप । गङ्गाकों दुहिता सद्दश करो कल्पना भूप ॥
पूरण करो मनोर्थ करि पितन्हकों जलदान । भूप भगीरथ धर्मधुर कीर्ति जास अतिमान ॥
गङ्गा आई जौन बिधि कहो सो हम नृपधर्म । करिवैं पूर्ण समुद्रकों पावन जलसों पर्म ॥
सिन्धु पान जैसे करो मुनि अगस्त्य तपधाम । पूण यथा समुद्र भो सोसब कहो ललाम ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी[illegible] [illegible]कवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कृतमहाभारदर्पणे बनपर्वणि अगस्त्योपाख्याने [illegible] [illegible]वतरणवर्णनो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जयकराछन्द ॥ * ॥

[illegible] तहांतें भूपति धर्म । क्रमतें भरे मोदसों पर्म । नन्दा परनन्दा अभिराम । सरिता तहां गए मतिधाम ॥ हेमकूट पर्वत जहँ पर्म । तहँ देखे अति अद्भुत कर्म ॥ बातावद्ध सु मेघ महान । [illegible] तहां बर्षत पाषान ॥ कोऊ चढि न सकत गिरि तौन । घन बर्षत सह आतुर पौन ॥ तहां बेद [illegible] सुपर्म । कोऊ देखि न परत सधर्म ॥ साँझ भोर पावक अभिराम । देखि परति तहँ [illegible]याम ॥ डसैं मत्तिका तेहां जात । सहि न शकै कोउ यह उतपात ॥ यहि बिधि तहँ अद्भुत [illegible] युधिष्ठिर भूप ॥ लोमससों बूझो नृप तौन । अद्भुत तहँ देखो नृप जौन ॥ लोमस[illegible] सुनो पूर्व हम भूप । तैसे कहत सुनऊँ अनुरूप ॥ ऋषभ कूट यहि गिरिके

माह। ऋषभ रहो मुनिवर नरमाह॥ जियो अनेक वर्ष सम तौन। महातपस्वी तामसभान॥ व०पु० जनगण वचन सुनत करि क्रोध। यहि गिरिसों इमि भाखो रोध॥ तो पै चढै जौन नर आय॥ तापै उपल गिरै अतिकाय॥ बोलत इहां आइ नर जौन। बारत मेघशब्दसों तौन॥ तेहि मुनि इहां कियो यह कर्म। वारणार्थ सुनिए नृपधर्म॥ नन्दा नदीपास सुर सर्व। आए द्विजवर सकल अखर्व॥ शक्रादिकके दर्शन हेत। गए विप्र आंनदमय चेत॥ दुर्गम कियो देव यह भूप॥ एहि गिरिको करि रोधक रूप॥ तबते एहिगिरिके कोउ पास॥ आवत नहो सुनो मतिरास॥ दर्शनको एहि गिरिके माम। होत न शक्त बिना तपधाम॥ तातें धरऊ मौनको रूप। चढ़ौ चढ़ो जों गिरिपर भूप॥ इत देवन तप कियो महान। चिन्ह तासु देखऊ सुखदान॥ कुशाकार दूर्वा घन जौन। सम आस्तरण लसति भू तौन॥ बृत्त जूप सम सोहत सर्व। इहँ मुनि सुर सब बसत अखर्व॥ सायं प्रात ऊताशन तास। देखि परत है नृप मतिरास॥ इहां भूप कीन्हेतें स्नान। छूटि जात सब पाप महान॥ सानुज कऊ स्नान कुरुभूप। कियो धर्मनृप स्नान अनूप॥ चलेऊ कौशिकी सरिता यत्र कौशिक कियो उग्रतप तत्र॥ नन्दामे करि कै सुस्नान। गए कौशिकीकों कुरुभान॥ देवनदी यह पुण्यस्वरूप। कौशिकको आश्रम शुचिरूप॥ यह आश्रम काश्यपको पर्म। जाहि विभाण्डक कहत सधर्म॥ शृङ्गीऋषि जाके सुत भूप। तप प्रभाव सुनु तास अनूप॥ अनावृष्टिमे लहि भय जास। वर्षे वासव आंनदरास॥ जन्म मृगीतें पायो तौन। काश्यप सुत शृङ्गीऋषि जौन॥ लोमपाद दुहिता अभिराम। दीन्ही ताकों शान्ता नाम॥ युधिष्ठिरउवाच॥ भो ऋषिशृङ्ग मृगीमे जान। काश्यपसुत सुनि कारण कौन॥ विरुध योनितें ऋषि अभिराम। भयो कौन बिधिसों तप धाम॥ वर्षे शक्र तास भय पाय। अनावृष्टिमे कैसे आय॥ राजसुता शान्ता अभिरामा बरी मृगी सुतकों किमि बाम॥ लोमपाद राजर्षि सधर्म। ताके देशमांहँ केहि कर्म॥ वर्षे इन्द्र न कृपा समेत। तान कहऊ सब क्षमा निकेत॥ सुनो चहत सह बिस्तर तौन। कियो शृङ्गऋषि कारज जौन॥ लोमस उवाच॥ वैभाण्डक ऋषिशृङ्ग महांन। जैसे भयो सो सुनऊँ सुजान॥ करत रहे ह्रदमे तप उग्र। ठाढे सुमुनि बिभाण्डक शुद्ध॥ करत भयो तप काल बिशाल। आई तहँा उर्वसी बाल॥ देखत ताहि सुमुनिको रेत। गिरो बारिमे बिह्वल चेत॥ मृगी आय सो पयके साथ। रेतस पियो सुनऊँ कुरुनाथ॥ मृगी गर्भ धारो अभिराम। पूर्व रही सुरसुता ललाम॥ शाप पितामहसों सो पाय। मृगी भई छिति ऊपर आय॥ तो तें जन्मि हिं ऋषि तपधाम। तब तों मोक्ष होयगो बाम॥ यह बिधिसों सुनि शापोद्धार। मृगी भई सो भूप उदार॥ बर अमोघऋषि रेतस तौन। भावी होत दैवकृत जौन॥ भयो मृगीसुत ऋषि तपधाम। सो ऋषिशृङ्ग जास है नाम॥ शृङ्गशीश मे तास अनूप॥ नाम शृङ्गऋषि यातें भूप॥ भयो भूप सो बासी बन्य। लखो पितातें मनुज न अन्य॥

व०प० तातें ताको मानस पर्म । ब्रम्हचर्य्यमे रहत सधर्म ॥ लोमपाद दशरथको मित्र। अङ्गदेशपति परम चरित्र ॥ कहो लोभवश मिथ्याबैन । विप्रनसों जेहे तपचैन ॥ कियो द्विजवरन्ह ताको त्याग। लोमपाद नृपको बश भाग ॥ पूरोहित तासों मखकर्म्म । करवाओ बिधि बिहित न पर्म ॥ तातें करि सुरपति अतिकोप । कियो अवर्षणको आरोप ॥ तब करि लोमपाद अनुमान। गए रहे जहँ विप्र सुजान ॥ कियो अवर्षण सुरपति जौन। बूझो हेतु मुनिनसों तौन ॥ जौन भाँति बर्षे परजन्य। कहहु उपाय तान मुनि धन्य ॥ भूपतिके ते सुनि के बैन । स्वमत कहन लागे मतिऐन ॥ तिनसे एक विप्र मतिमान। कहो भूपसों वचन प्रमान ॥ तुमसों कुपित भए नृप विप्र। तास शान्ति यह कोजे क्षिप्र ॥ वैभाण्डक ऋषिशृङ्ग महान। तौन इहां त्यावऊ तपवान ॥नारी ज्ञान न ताहि अनूप। सो बनितावश ह्वै है भूप ॥ सो जब आवे तुम्हरे देश । दृष्टि करै मघवान विशेश ॥ यह सुनि शान्ति हिए निरधारि। चले तहांतें चिन्ता भारि॥ करि मिथ्याको प्रायश्चित। करि एकाग्र भूपति निजचित्त ॥ सुनि समाजसेंं आवत भूप। लह्यो प्रजा अति आनदरूप॥ कहो भूप मंत्री बोलवाय। ऋषि आगमको करऊ उपाय ॥ मंत्रिनसों सुनि भूप उपाय। बारवधू माँगी बोलवाय ॥ निपुण सर्वविधि तिनकों जानि । कहन लगे भूपति सनमानि ॥ शृङ्गीऋषि अति बर तपधाम । ताहि इहाँ त्यावऊ अभिराम ॥ तहां जाय करि कछू उपाय ।त्यावऊ इहाँ स्वबशमे पाय ॥ राज भीति लहि ऋषिभय भूरि । तिहि असक्य गुणि कहौ बिसूरि ॥ तिनमे एक बृद्ध मतिमान । नृपसों कहो बचन सुखदान ॥ यत्न करैगी हम क्षितिपाल । ऋषिके आननहेत बिशाल ॥ सरञ्जाम चाहैं हम जौन । देव दिवाय भूपमनि तौन ॥ तब ऋषिशृङ्ग आनिबे साहँ। हम समर्थ ऊहैं नर नाहँ ॥ सरञ्जाम तिन मागो जौन । दीन्हों भूप तिन्हैं सब तौन ॥ बसन रत्न भूषण अभिराम। दीन्हों भूप यथा मनकाम ॥ स्यामा चतुरा अनुपम रूप । चली लेइ सँग थबिरा भूप ॥ जोरि नाव बऊ बिपिनि बनाय । कृत्रिम दल फल फूल लगाय ॥ अतिरमणीय मनोहर रूप । बिपिनि नाव पर रचो अनूप ॥ मुनि आश्रमके नेरेँ जाय। बारवधुन दिय नाव लगाय ॥ चार पठै लीन्हों ठहराय। जब ऋषि बृद्ध बिपिनिकों जाय ॥ तब तेहिँ बृद्धै सुता सुजान। शीघ्रित करि सब मोह बिधाँन ॥ गे आश्रमते जब मुनिवृद्ध । तव तँह गईं सुरूप समृद्ध ॥ तौन परम आश्रमसे जाय। देखो ऋषिसुत तपमय काय ॥ बारवधू ऋषिसुत पहँ जाय । बूझो कुशल मधुर मुसकाय ॥ तापस कुशल इहाँके सर्व । कन्द मूल फल कुशल अखर्व ॥ रमत कुशलसों आश्रममाँह । हम देखन आए तुम पाँह ॥ सुमुनि कुशल है पिता तुम्हार। तुमतैं पावत प्रीति उदार ॥ होत अबिघ्न नित्य स्वाध्याय । रहत कुशलसों मृग समुदाय ॥ *॥ ऋषिशृङ्गउवाच॥ * ॥ ऋद्धि रूपसों योनि समान। लसत प्रकाशमान सुखदान॥ वंदनीय हम तुम्है बिचारि । दियो अर्घ्य चाहत निरधारि ॥ सहित अजिन कुश आसन पर्म । बैठऊ तापर ससुख सुधर्म ॥ कहाँ तिहारो आश्रम

जौन । देवसमान फिरत तपभौन ॥ * ॥ वेश्योवाच ॥ * ॥ मम आश्रम अति रम्य उदार । योजन तीनि शैलके पार ॥ सुनऊ धर्म मम तपस निकेत । हम न प्रणाम काह्नको लेत ॥ पाद्य अर्घ्य नहि कुञ्चत सुजान।हमै वंद्य तुम हौ सुखदान॥ हम न बन्दन तुमतें लेत। सुनु ब्रत मेरो तपस निकेत ॥ आलिङ्गन को हमरे रीति । तौन करौ तुम गहि कै नीति ॥ * ॥ ऋषिशृङ्गउवाच ॥ * ॥ देत पक्कफल तुमकौं न तौन । भल्लातक अमलकके जौन ॥ करूष कदङ्गुद अरु धन्वान । पिप्पलके फल मधुर महान ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ दिए जे ऋषि फल ताकौं जौन । चोखि विसर्जन कीन्हें तौन ॥ मोदक ऋषिकों दए ललाम । कहि ममबनके फल अभिराम ॥ माल्य दए सौरभ गम्भीर । दए विचित्र बसन कहि चीर ॥ क्रीडन हसन लगे एक सङ्ग । ऋषिमन रँगौ ताके रङ्ग ॥ कन्दुक खेलन लगी सहास । नानाभाव करति ऋषिपास ॥ ऋषिके अङ्गनसों अँग लाय । करति अलिङ्गन गहि लपटाय ॥ कुसुमित गहति तरुणकी डारि । त्रिवली उदर उरोज उघारि ॥ भरी मदनमद लाज बिहीन । ऋषिसुतकों किय स्ववश अधीन ॥ विकृत शृङ्ग ऋषिको मन पाय । बार बार भोडो हियलाय ॥ करि मिसि चली दिनान्त बिचारि । बिव्हल व्है ऋषि रहे निहारि ॥ ताकों गए मदनमद मत्त । रहे होय ऋषिशृङ्ग अशक्त ॥ ऋषिमन बसो जाय तेहि पास । शून्य विपिनिमे लेत उसास ॥ आए आश्रमको ऋषिवृद्ध । कश्यप सुत तप योगसमृद्ध ॥ बैठो देखि पुत्रको रूप । ध्यान धरै मनव्यथित स्वरूप ॥ दृष्टि ऊर्द्ध करि लेत उसास । चित्तवृत्ति लखि बिव्हल तास ॥ कहो समिध ल्याए नहि तात । कहा न कियो होम अवदात ॥ धोए स्रुवा चषस नहि तौन। दुही न होमधेनु है जौन॥ नही पूर्ब सम हौ तुम तात ।चिन्ता भरे विचेतन गात॥ देखि परत तुम दीन समान । इहाँ कौन आयो दुखदान ॥ * ॥ ऋषिशृङ्गउवाच ॥ * ॥ आयो इहाँ तपस्वी तात । जटिल प्रभामय मध्यमगात ॥ चख इन्दीवरसे श्रुति सर्ण । अरुण पाणि पद सुवरण वर्ण ॥ नील सचिक्कन जटा सुगन्ध । एक विशाल कनकगुन बन्ध ॥ आल बाल सम सुबरण दाम । धरे कण्ठमे अति अभिराम ॥ हृदयोपरि द्वै पिण्ड समान । रोम रहित देखत सुखदान ॥ प्रियुल नितम्ब क्षीण कटिदेश । बँधी मेखला सुबरण बेश ॥ अद्भुत लता चरणमे तास । बँधी चलत कूजति सुखरास॥करसे कनक बनक धुनिमान । अक्षमाल सम मम सुखदान॥ अद्भुत तन अति कोमल चीर । तथा न मेरे लसत गभीर ॥ सुषमा सदन बदन बर जास । बचन सुधासम आनदरास ॥ कोकिल कूजितसी रमणीय । बाणी जास हृदै हरणीय ॥ बन सुगन्ध लहि यथा बसन्त । सौरभ भरे तथा ते सन्त ॥ चकवाक सम चित्र ललाम । कल्पित कर्णन्हमे अभिराम ॥ वृत्त बिचित्र परम फल लेहि । ताकों डारि भूमिमे देंहि ॥ सो फिरि उछरि पाणिमे जाय। यह अद्भुत देखो सुखदाय॥ तिन्हें देखि सुर सुतन्ह समान । तात प्रीति बाढी सुखदान॥ तिन मोकों हियसों लपटाय । दियो बदनसों बदन लगाय ॥ चूँवि ओष्ठ कछु बोलै बैन।

अ॰प॰

व०प० सो तो परम मोदको अन॥अर्घ्य पाय लीन्हों नहि पर्म।कहो हमारो यह ब्रत धर्म॥सम फल खाय
दियो फल पर्म।अपनो अद्भुत दायक शर्म॥ जास स्वाद कछु कहो न जात। सोरभ भरे मधुर अति
तात॥ छिकुला औा गुठली जिनमे न। खाए असे पूरब मै न॥दियो आपनो सलिल पियाय। सोरभ
स्वादभरो सुखदाय॥ बढो पियत सो हर्ष उदार। लगत भ्रमत से बिपिनि पहार॥चित्रित भरी सुगन्ध
बिशाल।डारिगए ते सुमन समाल॥मोसों गए स्नेह करि जैंान।तात रहत तन मेरो तैान॥चहत पास
तिनके हैा जान। सदा सङ्ग तिनको सुखदान॥ तिनके संग तप करिबो पर्म।यथा करत ते सुमुनि
सधर्म॥ चहत रहो तिनके संग नित्य। तिन बिन लहत न मानस थित्य॥ * ॥ बिभाण्डकउवाच॥
रात्तस धारैं अद्भुत रूप।फिरत पुत्र बनमाह अनूप॥करत बिघ्न तपको बलवान। स्वेच्छारूप धरत
अतिमान॥ मोहित करत रूप धरि धर्म। करत निपात लोक सुखधर्म॥ तिन्हैं न सेवत हैं मुनि
लोग। करिबो तास बिस्वास न योग॥ करि तप बिघ्न लहत हैं शर्म। तिन्हैं न देखत मुनिजन पर्म॥
पुत्र असज्जन सेवत जैांब। होत पाप मधु पीवत तैांन॥ मुनि सुगन्ध नहि पहिरत माल। है न बेद
बिधि बिहित बिशाल॥ सु ऋषिशृङ्गकों यों समुझाय। बीभाण्डक ऋषि तामसछाय॥तिन्हे बिपि
निमे ढूढन हेत। फिरे चहूदिशि कोपित चेत॥ तीनि दिवसलों हेरत हारि। चुको समिध
फल मूल बिहारि॥ मुनि जब लेन गये फल मूल। तब तिन पायो समय अतूल॥ तब ऋषिशृङ्ग
हि सोहँनहेत। ते तँहँ आईं पुलकित चेत॥ देखि तिन्हैं मुनि शृङ्ग उताल। गो तिन पै लहि मोद
बिशाल॥ कहो चलै तव आश्रम यत्र। जबलों पिता न आवै अत्र॥ एकपुत्र काश्यपको जैान।
गईं नाव पर ले तब तैान॥ चारु चरित करि ऋषिहि भुलाय। सैंन हि दीन्हीं नाव खोलाय॥
लोमपाद भूपति ढिग जाय। दीन्हों नाव तहाँ लगवाय॥ हो तहँ आश्रम कृत्रिम रूप। ऋषिकों
तहँ ले गईं अनूप॥ लोमपाद नृप ऋषि पहँ आय। अन्तःपुरकों गयो लेवाय॥ बरषे आइ मेघ
अतिमान।भो जलमय सब देश महान॥लोमपाद नै ऋषि हि ललाम।दीन्हीं कन्या शान्ता नाम॥
सुऋषि कोपको हरत उपाय। किय भूपति सुरभी समुदाय॥ पथमे ठैार ठैार अभिराम। राखे
सह गोपाल ललाम॥ खेतकार राखे अति ऋद्ध। देखै आय जैांन ऋषि बृद्ध॥तिनकों असों दियो
शिखाय। जब बूझै कोपित ऋषिआय॥ तब कहियो तव सुतको सर्व। देश सहित गोबृन्द
अखर्व॥ कहा करैं तब प्रिय तपधाम। हम तव सेवक दास ललाम॥ काश्यप ऋषि आश्रममे
आय। तहां न देखो सुत सुखदाय॥ छल भूपतिको करि अनुमान। चण्डकोपसों भरे महान॥
चम्पापुर दाहन सह भूप। चले महाऋषि अनल स्वरूप॥ श्रान्त क्षुधित अति ऋषि तपधाम॥
गो ब्रजमें कीन्हो बिश्राम॥ गोपन्ह बिधिवत पूजो आय। तहां बसे सुखसों ऋषिराय॥ ऋषि
प्रसन्न ह्वै लहि सतकार। गोपनसों इमि कहो उदार॥ यह ब्रज कहो कैानको पर्म। देश कैानको
शुद्ध सधर्म॥ अञ्जलि जोरि कहो गोपाल। तव सुतको धन बिषय बिशाल॥ ठैार ठैार पूजित तप

धाम । सुनत तथाबिधि गिरा ललाम ॥ शान्त क्रोध व्है के तपरास । गए अङ्गपति नृपके पास ॥ छं०५०
पूजित नृपसों सु ऋषि महान। देखो सुतकों इन्द्र समान॥ शान्ता पुत्र वधू अभिराम। देखी बिद्युत
सी छबिधाम ॥ ग्रामबधू सह सुतकों देखि । शांत भयो ऋषि कोप बिशेखि ॥ लोमपाद भूपति पैं
पर्म । कियो प्रसाद जानि ऋषि पर्म ॥ राखि पुत्रकों तहँ ऋषि बैन । कहो शृङ्गऋषिसों तपऐन ॥
पुत्र एक करिकै उतपन्न । भूपतिको प्रिय करि सम्पन्न ॥ वनकों पुत्र कीजियो गैन । किय
स्वीकार शृङ्गऋषि तान ॥ करि उतपन्न एक सुत पर्म । पिता प्रणीत कियो ऋषि कर्म ॥
शान्ता सहित बिपिनमें जाय । बसे पिता सह तप रत काय ॥ ताको यह आश्रम अभिराम । तुम
बूझो सो कहो ललाम ॥ ताको ऋद यह पुण्यद पर्म । स्नान इहां कीजे नृपधर्म ॥ **
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसाज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि
काश्यपऋष्यशृङ्गोपाख्यानवर्णनोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ ******

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कौशिकीते धर्मनृप तब चले सुनिए भूप । यथाक्रमतें देवतनके स्थान लखत अनूप ॥ गए
जहँा कियो गङ्गा सिंधु संगम पर्म । संधिमें सत पांच सरिताके महा नृपधर्म ॥ सहित भ्रातन्ह
द्रौपदी सुस्नान कीन्हों भूप।दान दीन्हों द्विजनकों बहु धेनु कनक अनूप ॥ चले तीर समुद्रके पथ
गहे भूपति धर्म । जहा बैतरणी नदी सु कलिङ्गमें अतिपर्म ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ यह देश
भूप कलिङ्ग बैतरणी नदी अभिराम । पितृपति जह यज्ञ कीन्हों सुरन सह अभिराम ॥ कूल
उत्तर परम बैतरणी नदीको भूप । ब्रह्मलोकहि जाइबेको सदृश पंथा रूप ॥ इहा क्रतु हे करत
ऋषि तहँ आपु शङ्कर आय । यज्ञके सब हरण कीन्हों परम पशु समुदाय ॥ कहो मेरो भाग यह
सब ऋषिनसों हर बैन ॥ ऋषिरुवाच ॥ धर्म द्रोह न कीजिए प्रभु धर्मके है ऐन ॥ कियो सुस्तव
भाग हरकों दियो उत्तम जैान । हर्षपूर्वक रुद्र पूजनकियो नृप मतिभौन ॥ छाडि गे पशु रुद्र
अपनो पाय भाग ललाम । इहा जो यह गाय गाथा न्हाइगो मतिधाम ॥ इहा जो सुस्नान
करिहै गाइ गाथा तौन । ब्रह्मलोकहि जाइबेको देखिहै पथ तौन ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥
सहित भ्रातन्ह द्रौपदी नृप कियो तह सुस्नान। उतरि बैतरणी नदीमें सहित तर्पण दान ॥ * ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ स्नान कीन्हें इहा मोमे नाहि मानुष भाव । लोग सिगरे लखत है हम
परम पूरित चाव ॥ सुनत बैखानसनकी हम बेदधुनि है जैान ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ लच्छ
योजन तीनि शत पर होतिहै धुनि तौन ॥ है स्वयम्भूको सुवन यह धर्मनृप अभिराम । पितामह
जहँ यज्ञ कीन्हों सुरन सह तपधाम ॥ दई कश्यपकों मही बिधि दच्छिणामें सर्ब । यज्ञान्तमें सह

प० देश पर्वत सहित बिपिनि अखर्व ॥ दुखित व्है तब कहो छिति इमि पितामहसो बैंन । दानकीबो मनुजको मोहि योग्य तुमको हैं न ॥ दान व्है है नाथ तुम्हरो हों रसातल जाति । कहो कश्यप देखि दुःखित धरासों एहि भांति ॥ भई फेरि प्रसन्न धरणी जान सुनिकै भूप । रसातलते निकसि कै इत रही बेदी रूप ॥ सुस्थान बेदी रूपसों यह लसत हैं अतिपर्म । होऊगे बलवान यापै जाय कै नृपधर्म ॥ स्वस्त्ययन यापैं चढनको हम करत धर्म नरेश । मनुजके यह छुवत बेदी करति सिंधु प्रवेश ॥ बेदिका पर जाय यह पढि मंत्र भूप सुजान । सिन्धुमे तब पैठिकै तुम करऊ बिधिसों स्नान ॥ * ॥ मंत्र ॥ *॥ नमस्ते बिश्वगुप्ताय नमो बिश्वधराय ते । सान्निध्यंकुरु देवेश सागरे लवणां भसि ॥ अग्निर्मित्रो योनिरापोऽथ देव्यो विष्णोरेतस्त्वममृतस्य नाभिः । यह मंत्र पढिकै बेदिका पैं जाय चढिए भूप ॥ * ॥ मंत्र ॥ * ॥ अग्निस्तेयोनिरिडाचदेहोरेतोधा विष्णोरमृतस्य नाभिः । यह मंत्र पढिकै सिन्धुमे सुस्नान करऊ अनूप ॥ यह मंत्र पठिकै सिन्धुमे सुस्नान करिबो पर्म । सिन्धुको न कुशाग्रहूते परस कीबो धर्म ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ मंत्र पढिकै बेदिकापै चढे भूपति जाय । मंत्र पढि यह सिन्धुमे सुस्नान कीन्हों आय ॥ कियो लोमस यथा आज्ञा तथा करिकै भूप । बसे जाय महेन्द्र गिरिपैं निशामे शुचि रूप ॥ तहां रजनी एक बसिकै धर्मनृपति उदार । चले भ्रातन्ह सहित करिकै मुनिन्हको सतकार ॥ कहे लोमस भूपसों सब मुनिनको कुल नाम । भृगु अंगिरस सु बशिष्ठ कश्यप बंशके तपधाम ॥ जाय तिनके पास साञ्जलि कियो बन्दन भूप । अकृतब्रण हो रामको जो शिष्य बीर स्वरूप॥कहो तासों राम दर्शन देत कब इत आय । होहिं हमहूँ धन्य तुम्हरे संग दर्शन पाय ॥ * ॥ अकृतब्रणउवाच ॥ * ॥ आगमन तो बिदित है भृगुनाथकों नृपधर्म । विप्र दर्शन देहिंगे है प्रीति तुमपै पर्म ॥ लहत चौदशि अष्टमीकों दरश ए तपधाम । भोर चौदशि होयगी तब देखि हो नृप राम ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ अनुग हो तुम रामके प्रत्यक्षदर्शी पर्म । कहऊ ज्यो भृगुनन्द जीती भूमि सकल सधर्म ॥ क्षत्रबंश निपात कैसें कियो कारण पाय । तौंन हमसों कहऊ सिगरो कृपा करि मुनिराय ॥ * ॥ अकृतब्रणउवाच ॥ * ॥ कहत हैं आख्यान यह हम महत तुमसों भूप । कहत जो भृगुबंश भूषण कियो चरित अनूप॥ रहे हैहय अधिप अर्जुन भूमिपति बलवान । राम मारो युद्धमे तेहि सहित बंश अजान॥ रहो बाऊ सहस्र ताके चण्ड दण्ड स्वरूप । लहो दत्तात्रेय कृपाते स्वर्गजान अनूप ॥ ऐश्वर्य्य सिगरी भूमिको लहि दिव्य सुरथ अरोक । तौंन रथपर चढो बर लहि जीति लीन्हो लोक ॥ किये मर्दित देव राक्षस ऋषिनको अतिमान । देव ऋषि गे बिष्णुकी तप शरणकों सुखदान ॥ लगे कहन बिनीत ऋषि सुर जोरिकै युगपानि । हनऊँ अर्जुन भयो हैहय वंशमे दुखदानि ॥ जातहै सुरलोककों सो पाय जान बिमान । सचीके संग करत क्रीडा जीतिकै मघवान ॥ इन्द्रके सँग मंत्र बिष्णु बिचारिकै अभिराम । बदरिकाश्रमकों गए तप करणकों तपधाम ॥

एहिकालमे छितिपाल छितिपर रह्यो गाधि नरेश। पुण्यशील सो रह्यो पालत कान्यकुब्ज सुदेश॥ व८५॰
गयो सो बनबासको तहँ भई कन्या पर्म। रूप कैसी रासि सो अपसरण सदृश सधर्म ॥ ऋचीक भार्गव जाय मागी ताहि भूपति पास। भूप ऐसें कहे मुनिसें बचन हे मतिरास ॥ बंशको यह धर्म मेरे नित्य सुमुनि उदार। देहि कन्या देय जो हय श्यामकरण हजार॥ * ॥ ऋचीकउवाच

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देहैं अश्व सहस्र हम श्यामकर्ण सित रूप । होइ हमारी भारया तव दुहिता हे भूप॥

॥ अशतब्रण उवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

करि प्रतिज्ञा बरुणसें ऋषि अश्व मागे जाय। दिए अश्व सहस्र मुनिकों बरुण निर्मलकाय॥ अश्व गङ्गातें कढे तह अश्वतीर्थ प्रसिद्धि। अश्व देकै भूपको मुनि लई कन्या ऋद्धि॥ गए आश्रमकों रिचीक सभार्य तपके धाम । देखिबेकों गए भृगु तह बधू पुत्र ललाम ॥ देखिकै सुतबधू भृगुमुनि लह्यो मोद अनूप । यथाविधि तिन कियो बन्दन पिताको अनुरूप॥ बधूसें एहि भाँति भृगुमुनि कह्यो होय प्रसन्न। चह्यो सो तुम लेऊ हमसें मागि बर संपन्न॥ कह्यो तेहि कर जोरि द्वै सुत दीजिये तपधाम। एक मोकों एक मेरी जननिकों अभिराम॥ * ॥ भृगुरुवाच ॥ * ॥ पुत्रकी उतपत्तिको करि ऋतुस्नान सधर्म। अश्वत्थ औदुम्बरहि लीजो अङ्कमे भरि पर्म॥ * * * * *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तुम औदुम्बर भेटऊ जाय। माता तो पिप्पलकों पाय॥ यामे नहि कीजो क्रम भङ्ग। पुत्र होहिंगे परम सदङ्ग॥ * * * ॥ * ॥ रोलाच्छन्द ॥ * ॥ * * * * * *

देतहैं द्वैभाग चरु को जननिकों अरु तोहि। बिसुको अति अंश यामे धरोहै हम पोहि ॥ यत सो कहि खाइयो मुनि भए अन्तरध्यान । भयो सो क्रम भंग इनसें सुनऊ भूप सुजान ॥ जननि खायो सुताको लै सुतै जननी भाग। वृक्षको आलिंगनो सो पलटि उलटो लाग॥ जानिकै क्रम भंग आए तहा मुनि तपऐन । बहु सो करि कृपा ऐसें कह्यो भृगुमुनि बैन॥ तरु अलिंगन चरु सुभक्षण भयो सो बिपरीति । जननि बंचित कियो तुमकों सुनऊ तोन सनीति॥ पुत्र तुम्हरो होयगो सो धरी क्षत्रीधर्म । धर्म धारिहि बिप्रकोतो जननिको सुत पर्म ॥ श्वशुरसें करि बिनै फिरि फिरि कहे सांजलि बैंन। पुत्रमेरो होय ऐसो नहीहै तपऐन॥ क्षात्रधर्महि धरै मेरो पौत्र अति बलवान। कृपाकरिकै कह्यो भृगुमुनिसो तथास्तु सुजान ॥ पुत्र भे यमदग्नि ताके पाइकै बर काल। भयो भार्गवबंशभूषण भरो तेज बिशाल॥ भयो बेदाध्ययनतें सो महा बर्धित भूप। होत ताके सदृश कोऊ नही मुनि अनुरूप ॥ धनुर्वेद अशेष ताकों भयो भासित सर्व। चतुर बिधिकी शस्त्रबिद्या मिली ताहि अखर्व॥ बेदको अध्ययनकरि तप बेद बस करि भूप । प्रसेन जित नृपकी सुकन्या बरो मागि अनूप॥ रेणुका मुनि पाइ भार्या भरो आनदराश। जाय आश्रमके बसे मुनि

ब॰प॰ परम पत्नीपाश ॥ भये पांच कुमार ताके अनुज तामे राम । भए सबसो श्रेष्ठ तपबर वीर रसके धाम ॥ गए तपके हेतु बनकों पुत्रसब जब धीर । स्नानकीबे रेणुका तब गई सरिता तीर ॥ चित्रसेन महीप हो तह स्नान करत ललाम । देखिकै मन रेणुकाको ह्वै गयो बश काम॥करत क्रीडा सहित बनितन देखिकै सो भूप । रेणुकाको रेत जलमे गिरो बिन्हल रूप ॥ गई आश्रमको संशङ्कित जानि सुमुनि उदार । कोप कीन्हों रेणुकाको मानसिक व्यभिचार ॥ धिक्कार कहिकै कियो निन्दित रेणुकहि मुनि रुष्टपुत्र आयो जेष्ठ बनतेंरुमणवान सु युष्ट ॥ सुषेण बसु बिस्वाबसैा तह गए क्रम अनुरूप । कहो तिनसों मातिबधकों कोपकरि मुनिभूप ॥ कहो मातास्नेह बस तिन नही बचन सुजान । दयो मुनिबर शाप तिनकों भए सुतरु समान॥गए पीछे राम सबके रहे जहँा तात । देखि तासों कहो मुनिवर जननि शीस निपात॥ परशु लेकै झटित काटो जननि मस्तक राम । कोपगो य मदग्निको तब देहतें अतिमाम ॥ बचनतें समपुत्र तुम यह कियो दुष्कर कर्म । जोंन मनमे होंहि ते सब मागु सुतवर पर्म ॥ राम मागो उठै माता भूलि बधते जाय । मातृबधको पाप हमकों तात लगय न आय ॥ मम सु भ्रातनको प्रकृति सो पूर्व वतही होय॥ तात इनको आपु दाया दृष्टिसेती जोय । प्रतिद्वंदी युद्धमे नहि होय मोहि समान । रामको बर दिए ते यमदग्नि अति सुखदान ॥ एक दिन सब पुत्र मुनिके गए बनको भूप । तहां आयो कार्तबीर्य नरेश मत्त स्वरूप ॥ कियो पूजन रेणुकै फल मूलसों तब तास । भयो सो न प्रसन्न रणमदमत्त दुर्मतिरास ॥ मथित आश्रम कियो मुनिको छोरिलीन्हों गाय । चलो तरुबर तोरि सिगरे दए उढज गिराय ॥ राम आये बिपिनि तें तब कहो मुनि बृतान्त । हरण सुरभीको सुनत कियो राम कोप नितान्त ॥ धनुष लै तब चले आतुर तास पीछे राम । मारि भल्लन भुजा काटी परिघ सो अति माम ॥ राम रणमे भुजा ताको काटि एक हजार । मरो अर्जुन धेनु लै फिरि गए राम उदार ॥ बैर बांधो सुतन्ह ताके रामसों अति माम । एक दिन जब गए बनकों सहित भ्रातन्ह राम ॥ खबरि लै ते गए आश्रममे महा मुनि पास । मारि तीक्षण शरनसों यमदग्निको कियो नास ॥ राम राम पुकारिकै यमदग्नि छोडो प्रांन । गए अर्जुनके तबै यह कर्म करि अति मान ॥ गए जब ते तहां आए समिध लीन्हें राम । पिताको एहि भाति देखो तेज पपको धाम ॥

॥ * ॥ रामउवाच ॥ * ॥

एहि भांतिके नहि योग्य एकहिँ कियो दुखित बिलाप। क्षुद्र मूर्खन्ह हनो इनकों मानि मेरो पाप ॥ हनो मृग सम धर्म पथ रथ महा मुनि तप वृद्ध । कार्तबीर्य महीपके सुत कुमति पाय सम्बृद्ध ॥ कहैं गे का सचिव सुहृदन्ह पास ए सठ जाय । अशस्त्र मुनि धर्मज्ञकों हनि एक बनमे पाय ॥ एहि भांति बहुत बिलाप करि सह बन्धु द्विजन्ह सुजान।रामकीन्हों पिताको सब प्रेत कर्म बिधान॥ शङ्कल्प कीन्हों चत्रबंशबिनाशको तव राम । युद्धमे धरि दिव्य अस्त्र अमोघ धनु अति माम ॥

कार्तवीर्य्यमहीपके सब हनें सुत बलवान । और तिनके सङ्गमे जे रहे भूप अमान ॥
करी एकविसबार पृथिवी बिना क्षत्री भूप । श्यमन्तपञ्चक करे क्रद सर रुधिर पूरण रूप ॥
पितृतर्पण कियो तिनमे राम राजिव नैन । प्रत्यक्ष तहँ यमदग्नि बोले शान्तिके बर बैन ॥
यज्ञ करि कै त्रिप्ति कीन्हो इन्द्रकों तब राम । भूमि कश्यपकों दई सब दक्षिणामे माम॥
कनकवेदी दई चौरी रही जो दशव्याम । द्विजनकों सो दई मुनि नवव्याम उच्च ललाम ॥
खण्ड करि ले गए द्विज ते भए खाण्डव ग्राम । देइ कश्यपकों मही भृगुनन्द तेजसधाम ॥
बसत नित्य महेन्द्रगिरि पर सुनऊ हे कुरुभूप । एहिभाति क्षत्रिणको भयो सब नाश कारण रूप॥
राम आए शम्भु तिथिकों तहां तेजसधाम । कियो दर्शन सहित बिप्रन्ह धर्मनृप अभिराम ॥
कियो अर्चन सहित भ्रातन्ह रामको नृपधर्म । करी पूजा द्विजनकी सब प्रीति पूरित पर्म ॥
रामआज्ञा सो सु पूजित होय कै कुरुभूप । तहां बसि निशि चले दक्षिणदिशाकों सुखरूप ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि कार्तवीर्य्यबध वर्णनोनामोएविंशतितमोऽध्यायः ॥ ********

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चलत सिन्धुके तीरके तीर्थ लखे अभिराम । जहां जहां जिनकों भजत बिप्रबृन्द तपधाम ॥
तहां तहां भ्रातन्ह सहित स्नान कियो नृपधर्म । पुण्य सहित सङ्गम जहां स्नान कियो तहँ पर्म ॥
देव पितृ तर्पण करत देत दान बहु भूप । गए जहां गोदावरी सङ्गम सिन्धु अनूप ॥
द्रविड देशमे सिन्धु तट गए भूप निष्पाप । नारीतीर्थ अगस्त्यको तीर्थ जहां हरताप ॥
नारीतीर्थ समीप नृप सुनो जिष्णुको कार्य्य । अति अद्भुत नर जगतमे करै औरको आर्य्य ॥
कृष्णा औ भ्रातन सहित स्नान कियो नृपधर्म । चले सराहत जिष्णुको तिर्यउद्धरणक कर्म ॥
दई सिन्धुके तीर्थमे भूप सहस्रन्ह गाय । दान प्रसंशो जिष्णुको सह भ्रातन्ह सुखदाय ॥
देखत तीर्थ समुद्रके सह भ्रातन कुरुभूप । सुर्पारक देखो नृपति परम पुण्यको रुप ॥
कछुक दूरि चलि बन लखो जैान परम बिख्यात । जहां देवतन्ह तप कियो राजन मख अवदात ॥
तहां अग्र धरती लखी बेदी परम अनूप । फिरि ऋचीक सुतके गए आश्रमकों कुरुभूप ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बिष्णु ब्रह्मा ईश रवि शशि सुरन सह दिग पाल। सिद्ध ऋषि बसु पितर सागर नदिन सहित बिशाल॥
आय तन तहँ लखे तिनके बिबिधि बिधिके भूप । तहां करि उपवास दीन्हो दान सबिधि अनूप ॥
स्नान तिन्हके तीर्थमे करि सबिधि भूपति धर्म । सूर्पारककों फिरि चले भूपति पुण्य पूरित पर्म ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सिन्धुतीरको पथ गहे धर्मनृपति सह भ्रात । गए सुतीर्थ प्रभासकों त्रिभुवनमे विख्यात ॥
भ्रातन सह सह द्रौपदी लोमसादि द्विज साथ । परम प्रभास सु तीर्थमे स्नान कियो कुरुनाथ ॥
द्वादशनिशि दिन करि तहां पाणी पवण अहारा । अग्नि चहूँदिशि बारि नृप कीन्हो सुतप उदार ॥
तहां उग्रतप करत सुनि भ्रातन्ह सह कुरुनाथ । राम कृष्ण आये तहाँ लए वृष्णिवर साथ ॥
पाण्डु सुतन्हकों तिन्ह लखो शयन करत क्षितिमाहँ । वृष्णिवीर रोए सकल भरे शोक नरनाहँ ॥
देखि द्रौपदीकों दुखित योग्य न दुःख उदार । यदुवंशिनके नेत्रतें वही अम्बुकी धार ॥
राम कृष्ण सात्यकि सहित वृष्णिवंश सब वीर । धर्मनृपति पूजन कियो तिनको सविधि गँभीर ॥
पाण्डुसुतनको तिन कियो पूजन सविधि उदार । राम कृष्ण बैठे तिन्हैं घेरि सहित परिवार ॥
तिनसों अर्जुणको चरित कहो सहित बनबास । अस्त्रहेतु अर्जुनगमन सुरपतिपास निवास ॥
धर्मराजके बचन सुनि लखि दुःखित कृशरूप । वही वृष्णिवंशीनकी दृगजल धारा भूप ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥

सु प्रभासमे पाण्डुसुत मिले वृष्णिबरवीर । भई तहां वार्त्ता कहा ठहरो मंत्र गँभीर ॥
सकल महात्मा शास्त्रके वेत्ता सब अभिराम । पार्थनको अरु वृष्णिको प्रेम पुरातन नाम ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

पाण्डु सुतनके चहूँदिशि वृष्णिवीर आसीन । तहां राम लागे कहन भरे क्रोधसों पीन ॥

॥ * ॥ रामउवाच ॥ * ॥

धर्म करत नहि वृद्धिकों क्षय नहि करत अधर्म । पार्थ सुयोधनकों लखे जानि परत है कर्म ॥
धर्मनृपति बनमे फिरत धरे जटिलको बेश । राज्य सुयोधन करत हैं अधरम भरी अशेश ॥
यह धर्मते मानि है जन अज्ञान अधर्म । दुर्य्योधन नृपधर्मको देखि असत सतकर्म ॥
भीष्म द्रोण कृप वृद्ध नृप कैसे पावत शर्म । पाण्डुपुत्र नृपधर्मकों बनवासी करि पर्म ॥
जे कुरुवंश प्रधान हैं तिन्हैं महत धिक्कार । कहा कहैगें स्वर्गमे पितरन्ह पास लबार ॥
समुझत नहिँ हम कौन करि कर्म भए हैं अन्ध । अबहूँ नहि धृतराष्ट्रनृप तजत पापको धन्ध ॥
कछु दोषमे सुतन सह लखि है जाय महान । अन्तकपुरके बिटप जे फूले कनक समान ॥
भीष्मादिकको करैगो नाश खोसि नृप अन्ध । धर्मनृपतिको बास बन दियो सो भलो न धन्ध ॥
भीमसेन परदलदमन रोषे समन समान । जास हांक सुनि समरते को न भजै बलवान ॥
अब भारत बनबासके दुखकों समुझि महान । नाश करैगो धनुष धरि रणमे समन समान ॥
भीमसेन प्राचीदिशा लई अकेलें जीति । दक्षिणदिशि सहदेव सब लीन्ही जीति सनीति ॥
पश्चिमदिशि बशमें करी नकुल अकेलें वीर । खात फूल फल मूल ते बनमे फिरत गँभीर ॥

वज्र कृतासनसों भई शिखा समान अनूप । तैंान द्रौपदी विपिनिमे फिरति तपस्विनि रूप॥ व०प०
धन समीरण शक्रते आश्विनेयते जैान । भए फिरत बनमे सहत दुख मुनिव्रत धरि तैंान ॥
उज्ज्वल जोति नृपधर्मको भार्य्या भ्रात समेत । राज्य सुयोधन करत नहि धरणि धसति केहि हेत ॥
ऐसें श्रीश्रीकृष्णसों राम कहे बड़ बैन । सुनत भरे दुखसों नहीं बोले करुणा ऐन ॥

॥ * ॥ सात्यकिरुवाच ॥ * ॥

राम न करुणाको समै करिबे है अब जैान । धर्मनृपति कछु कहत नहि बेगि कीजिए तैंान ॥
जाके होत सहाय जन सो न करत कछु कार्य्य । स्वजन सहायक करत हैं ताको कारज आर्य्य ॥
कीन्हो यथा ययातिको अष्टक सैव्य सहाय । बन्धुवर्ग हित मित्र त्यौं करत समयको पाय ॥
जाके स्वजन सहाय ते नहि असहाय समान । ते न लहत हैं जगतमे दुःख राम बलवान ॥

॥ * ॥ अर्द्धचरण ॥ * ॥

राम कृष्ण प्रद्युम्न सांब हमसे लहि स्वजन सहाय । पार्थ बसत ए विपिनिमे कैान हेतु दुखपाय ॥
चलो सैन यदुवंशकी अस्त्र शस्त्र धरि भास । मारि तनै धृतराष्ट्रके पठै देहिँ यमधाम॥
तुम सब लोक लपेटि हो विति राम क्रोध करि उग्र । नाश सुयोधनको कहा तुमको करि कै युद्ध॥
अर्जुन भ्रातासखा गुरु मेरे पिता समान । बासुदेव जानत जिन्हैं आत्मासम सुखदान ॥
जैान हेत चाहत मनुज गुरु सुत शिष्य सुजान । सो मोकों करिबो उचित सुनऊँ राम अतिमान॥
करत सुयोधन युद्धको जिनके साथ विचार । काटि अस्त्रसों अस्त्र सब तिनके सुनऊ उदार ॥
तिन्हैं मारि कै लेउगों दुर्य्याधनको प्राण । तास सहाय कहों हिँगे जे कैारव बलवान॥
प्रद्युम्न शरासन मुक्तशर निशित सकै सहि कैान । शक्र न भीषम कृप करण अरु विकर्ण सह द्रोण ॥
जानत बल अभिमन्युको कृष्ण तनै बर वीर । सांब दुःशासनको करि हि रणमे मथन गभीर ॥
भीष्म द्रोण सेना सहित सोमदत्त बलवान । कृष्ण भस्म करि हैं तिन्हैं तजि शर अनल समान ॥
खड्ग चर्म्म अनिरुद्ध गहि हनि धृतराष्ट्र कुमार । रुण्ड मुण्डसों देहिँगे धरणी पाटि उदार ॥
गद उल्मुक सारण निसट बाऊक धनु धरि पर्म । चारुदेष्ण सब करैंगे वृष्णिवंश सम धर्म ॥
वृष्णि भोज अन्धक सुभट करि कै क्रोध महान । मारि पुत्र धृतराष्ट्रके लैहैं सुयश अमान ॥
भू शासन मवलों करि हि जिष्णु तनै बलभैान । जवलों नाघै धर्मनृप द्यूतभूत व्रत जैान ॥
मम बाणनतैं हतें भए करण सुयोधन वीर । करै धर्मनृप राज्य यह है यश कार्य्य गभीर ॥

॥ * ॥ बासुदेवउवाच ॥ * ॥

सात्यकि तुम जे कहे ते सत्य वचन सब वीर । जीति भूमि न औरते चहत युधिष्ठिर वीर ॥
का[illegible] भयते नही तजै युधिष्ठिर धर्म । भीमार्जुन माद्रीतनय सहित द्रौपदी पर्म ॥
[illegible] सम युद्धमे कैान धरा बर बीर । कैान करैंगे भूमिको भोग भुजा बरवीर ॥

व०प० हम कैकय पाञ्चाल अरु चेदिराज बलरास। विक्रम धरि लरि युद्धमे करि है अरिको नाश॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥

यामे नहि सन्देह तुम सात्यकि कहत जो बैन। राज्य हमारो रह है तुमते हे बलऐन॥
कृष्ण एक जानत हमैं हम तिनकों सबिधान। परै यदा बिक्रम समै तुम्हैं जानि मतिमान॥
तब तुम रणमे कीजियो दुर्य्योधनको नाश। हम देखो फिरि देखि है जांहिं दशार्ह सवाश॥
कीजो नहीं प्रमाद तुम धर्ममाह सुखदाय। देखो हम समुदाय सह फेरि देखि है आय॥
बिदा परस्पर भए करि इहन्हकों सुप्रणाम। बालन्हकों भरि अङ्कमे दे आशिष अभिराम॥
बिदा कृष्णकों करि चले भ्रातन्ह सह नृपधर्म। गए पयोष्णीनदी जहँ तीर्थ पुण्यमय पर्म॥
मिलो सोमरससो सलिल जाको सोम समान। ताके तट बसि करि रहे केवल जलको पान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि तीर्थयात्रायां प्रभासतीर्थाभिगमनश्रीकृष्णसमागमवर्णनोनाम तितविंशमोऽध्यायः॥ * * *

॥ * ॥ लोमस उवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

इहांयज्ञ कीन्हों नृग भूप। शक्र सोम करि पांन अनूप॥ भए तृप्त लहि मोद महान। सुरगण सहित सुरपति अतिमान॥ देवन सहित इहाँ सुरनाथ। कीन्हें यज्ञ पितामह साथ॥ गयभूपति इत यज्ञ महान। किए द्विजनको दे बहु दान॥ बाजिमेध मुनिमित अभिराम। सोमपान किय इन्द्र ललाम॥ यज्ञ समग्री शाला सर्व। कियो हिरन्मय रचित अखर्व॥ दियो द्विजनकों दान महान। कौन करै संख्या अतिमान॥ सलप रहो वाको भू भूप। जहा न किय मखसदन अनूप॥ गयनृप सो करि कर्म अतोक। पायो सब सुरपतिको लोक॥ करैं पयोष्णीमे सुस्नान। सो पावै ते लोक महान॥ स्नान करहु यामे सहभ्रात। पाप मुक्त ह्वजै अवदात॥ वैशम्पायन उवाच॥ *॥ भ्रातन्ह सह तामे नृपधर्म। स्नान कियो दियो दान सुपर्म॥ गिरि वैडूर्य्य नर्मदा यत्र। गए सहित भ्रातन्ह नृपतत्र॥ तीर्थ तहा देवालय जौन। रहे कहे लोमस मुनि तौन॥ तहँ तहँ गए जथाबिधि भूप। दियो द्विजनकों दान अनूप॥ * ॥ लोमस उवाच ॥ * ॥ वैडुर्य्य अद्रिको दर्शन पाय। नदी नर्मदामे जो न्हाय॥ जाय तौन देवन्हके ओक। राजऋषिन्हको पावै लोक॥ यह सर्जाति यज्ञको देश। हे शोभित सो लखहु नरेश॥ इन्द्र जहाँ आश्विन सह सोम। पान कियो लहि आनद तोम॥ च्यवन इन्द्र पर करि जहँ कोप। करि जड कियो स्तम्भ सम रोप॥ लही सु कन्या भार्य्या बाम। राजसुता जहँ च्यवन ललाम॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ भए इन्द्र जड लहि किमि रोध। च्यवन कियो केहिं कारण क्रोध॥ आश्विन पियो कौनविधि सोम। तौन सकल कहिए तपतोम॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ भृगुसुत च्यवन नाम हो भूप। सर समीप तप करत अनूप ॥ बीरा सुन बैठो बहुकाल। तापर भो बल्मीक बिशाल ॥ तहँ पिपीलिका भरी महान। भयो मृत्तिका पिण्ड समान ॥ बहुतकाल बीतो एहि रूप। गो सर्याति तहाँ चलि भूप ॥ एहि सरमेसो करण बिहार। लिएँ भारया चारिहजार ॥ कन्या एक सुकन्या नाम। परम रूप गुणगणकी धाम ॥ करत सखिन सह बिपिनि बिहार। गई सो जहँ मुनिच्यवन उदार ॥ मत्त मदन यौवन मदरूप। तोरति सुमन फिरति तहँ भूप ॥ एक बसन पहिरें तनु तौंन। करत फिरत दामिनिसी गौंन ॥ ताहि अकेली लखि तप औंन। स्नेह भरे बोले मृदु बैंन ॥ सुने सुकन्यै नहि मुनिबोल। इत उत फिरत गई तहँ लोल ॥ मुनिके नैंन सु कन्यै चाहि। मनमे अति अद्भुत अवगाहि ॥ कहिए हैं का अद्भुतरूप। कण्टकसों भेदे चख भूप ॥ तातें बिद्ध भए जब नैंन। कियो क्रोध दारुण तपऔंन ॥ सबको भो मुनिको लहि क्रोध। मूत्र पुरीष सहित अवरोध ॥ देखि दुखित सेनाको रूप। सबसों बूझन लागे भूप ॥ च्यवन महामुनिको इत बास। महाक्रोधमे सो तपरास ॥ काहू करो तास अपराध। जासों भयो महत यह बाध ॥ दुखित पिताकों लखि सह सैंन। कहे सभीत सु कन्यै बैंन ॥ फिरत इहां बल्मीक उदार। तात लखो हम बिपिनि मझार ॥ तामें देखे जीव अजान। योति भरे खद्योत समान ॥ तिनको भेदकियो हम बाप। भो अज्ञानवश्य यह पाप ॥ यह सुनिकै बल्मीक समीप। गए महा भय परे महीप॥ मुनिसों प्रणत भूप करजोरि। बिबिधि प्रार्थना कियो निहोरि ॥ क्षमापराध करहु तपभौंन। भयो बाल्यवश अबिदित जौंन ॥ च्यवन भूपको सुनि इति बैंन। बोले क्रोध भरे तपऔंन ॥ बेधो चख मम करि अपमान। धरे रूप गुणमान महान ॥ तातें देहु हमै यह भूप। सुता रावरी जौंन अनूप ॥ सुनहु भूप यह बचन बिशाल। तब हम करें क्षमा क्षितिपाल ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ ऋषिको बचन मानिकै भूप। कन्या दीन्ही तिन्हैं अनूप ॥ कन्या लै मुनि भए प्रसन्न। गए भूप घर सुख सम्पन्न ॥ पाय सु कन्या पति तपधाम। सेवा करण लगी अभिराम ॥ कछूकाल बीते तहँ भूप। आश्विनेय तहँ गए अनूप ॥ तेहि सरमे करिकै सुस्नान। कन्यहि आवत लखी सुजान ॥ ताकों देखि परम छबि औंन। आश्विनेय बोले बर बैंन ॥ हो तुम कौंन कौंनकी बाम। एहि बनमे बिहरति छबिधाम ॥ सुकन्योवाच ॥ * ॥ नृप सर्याति हमारे तात। च्यवन महामुनि पति अवदात ॥ आश्विनेय हँसिकै फिरि बैन। कहो सुकन्यासों मतिऔंन ॥ दियो बृद्ध मुनिकों किमि भूप। तुम्हैं रूप गुण भरी अनूप ॥ बिद्युतसी तुम लसति ललाम। तुमसी त्रिभुवनमे नहि बाम ॥ दिव्याम्बर भूषण बर जौंन। योग्य तिहारे सो हैं तौंन॥ है न चीर यह तुम्हैं समान। तुम हौ राज सुता सुखदान॥ राज जर्जरित बिरहित भोग। पति न सेइवे तुमकों योग ॥ रक्षण पोषण मे न समर्थ। औसे पतिको

५० सेवन व्यर्थ ॥ छोडि च्यवनको हममे एक । बरऊ सुकन्या सहित बिबेक ॥ व्यर्थ न यौवन करु
छबिअैंन । सुने सुकन्यै तिनके बैंन ॥ * ॥ सुकन्योवाच ॥ * ॥ हम रत च्यवन माहँ ब्रतधारि ।
अैसो कहहु न हमै निहारि ॥ सुने सुकन्याके इमि बैंन । दस्र कहो तासो लहि चैंन ॥ हम हैं
देवभिषक अभिराम । तरुण करैं तो पतिकों बाम ॥ तब तुम हम तीनहुँमे एक । बरेहु प्रीति
करि सहित बिबेक ॥ बचनबन्ध यह मुनिकों जाय । बेगि सुकन्या देहु सुनाय ॥ कहो सुकन्यै
मुनिसों जाय । तिनको बचनबन्ध सुखदाय ॥ प्रियाबचन सुनि तथा उदार । च्यवन कियो
करिबो स्वीकार ॥ सुनि मुनि बचन दस्रपहँ जाय । कहो सुकन्यै करहु उपाय ॥ कहे सुकन्यासों
तिन बैंन । सलिल प्रबश करो तपअैंन ॥ रूपार्थी अति च्यवन नरेश । झटित कियो सरमाह
प्रवेश ॥ दस्रो तीनसरोवर माहँ । भए मग्न मुनिसह नरनाहँ ॥ दोय घरी मे निकसे सर्ब । भरेरूप
तारुण्य अखर्ब ॥ तीनो धारैं रूप समान । देखत चख चितके सुखदान ॥ कहे सुकन्यासों तिन बैंन ।
बरहु जाहि चाहहु छबिअैंन ॥ तिन्हैं सुकन्या लखि समरूप । रही बिचारि चित्त दै भूप ॥
बरी च्यवन ऋषिकों सो पर्म । मुनि पायो बय रूप सशर्म ॥ कहो दस्रसों च्यवन प्रसन्न । जिमि
हम भए रूप सम्पन्न ॥ तैसेँ तुम्हैं सोमको पान । देहै मखमे सहित बिधान ॥ देवराजके देखत पर्म ।
सत्य कहत यह बचन सधर्म ॥ सुनत दस्र मुनि बचन प्रसन्न । गए स्वर्गकों सुखसम्पन्न ॥ च्यवन
सुकन्या सुरन्ह समान । करण बिहार लगे सुखदान ॥ सुनि मुनिकों सर्याति बयस्थ । तहँ
आए लहि मोद अकथ्य ॥ च्यवन सुकन्यहि देखि समान । पायो भूपति मोद महान ॥ ऋषि
नृपको करिकै सतकार । कही कथा अति शुभद उदार ॥ नृपसों मुनि बोले सुखदाय । देहैं
मख हम तुम्हैं कराय ॥ सरञ्जाम मखको हैं जैांन । करहु एकत्र भूप तुम तैांन ॥ सुनि मुनि
बचन प्रसन्न उदार । कियो भूप मखको सम्भार ॥ पाय प्रशस्त दिवस बर भूप । रची यज्ञशाला
अतिरूप ॥ तहां च्यवन भूपतिसों यज्ञ । करवायो बिधिवत सरवज्ञ ॥ भयो तहां जो अद्भुतकर्म ।
तैांन कहत सुनिए नृपधर्म ॥ च्यवन पात्र भरि सोम सुजान । लियो दस्र हित सहित बिधान ॥
लेत पात्र किय बारण शक्र । मुनि न कीजिये कारज बक्र ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ दस्र न योग्य
सोमके पान । देवभिषज नहिँ सोम समान ॥ च्यवनउवाच ॥ दस्र महात्मा सुरन्ह समान । भानु
तनै गुण भरे महान ॥ वृद्ध महा यैावन सम्पन्न । कियो हमै करि कृपा प्रसन्न ॥ देवन सह तुम बिन
मघवान । योग्य सोम ए सुरन्ह समान ॥ इन्द्रउवाच ॥ करत चिकित्सा धारि स्वरूप । मृत्युलो
कमे फिरत अनूप ॥ मुनि न योग्य ए सोम समान । मानु कहतसो बचन सुजान ॥ * ॥ लोमस
उवाच ॥ * ॥ बेर बेर जब अैसें शक्र । कहे च्यवनसों बचन सबक्र ॥ शक्रनिरादर करि मुनि
भूप । लियो सोम भरि पात्र अनूप ॥ दीबैं चहत दस्रकों देखि ॥ बोले बचन इन्द्र अति तोख ॥
इनके अर्थ सोम तुम लेत । तो हम बज्र शीश तव देत ॥ यह सुनि बिहसि इन्द्रकों देखि ॥ सोम

पाच मुनि लीन्हों तेखि ॥ कीब मुनि पर बज्र प्रहार । इन्द्र उठाई भुजा उदार ॥ भुजा स्तम्भ करिकै तपतोम । करण मंत्र पढि लागे होम ॥ कृत्यार्थ किय होम महान । इन्द्र नाशकों करि अनुमान ॥ कृत्या भई प्रगट अति घोर । च्यवन महामुनिके तपजोर ॥ मद नामक भो असुर महान । भरो भूरिबल काय अमान ॥ बदन घोर अति दशन कराल । मुख चिति नभलों बिवृत बिशाल ॥ दशन चारि जाके अति रूप । शत शत योजनको सुनु भूप ॥ और दशन दश योजन मान । अति कराल गिरिके समान ॥ योजन अयुत बाहुको मान । चख रबि शशि येकूर महान ॥ जिव्हा चपल तडित आकार । जातें चाटत बदन उदार ॥ भक्षण करिवेकों अति उद्ध । चलो शक्र पँहँ दनुज सुक्रुद्ध ॥ घोर असुर मद देखो शक्र । आवत भक्षण करिवे वक्र ॥ तम्भित भुज भरि भीति महांन। चाटन ओट लगे मघवान॥कहो च्यवनसों सुरपति बैंन।भीति भरे पीडित हत चैंन॥ दस्र आजुतें करिहैं पान । सोम कृपा करि करु मुनि चान ॥ तो कृत काव्यं सत्य सब विप्र । को उल्लङ्घ करै सो क्षिप्र ॥ तो तपबलको चाहि प्रकाश । हम यह कार्य्य कियो तपराश ॥ सर्य्याति सुकन्याको यश जौंन । होय प्रसिद्ध कियो हम तौंन ॥ तातैं कृपा करहु तपधाम । तो बांछित ह्वहै अभिराम ॥ ऐसे सुनि सुरपतिके बैंन । तजो क्रोध मुनि करुणाऐंन ॥ भए मुक्त भुज तब मघवान । मद बिभाग करि सुमुनि महान ॥ यूत तरुणि मृगया अरु मद्य। तिनमे धरो भाग मद सद्य ॥ दस्र सङ्ग सुरपतिकों सोम । पान करायो तब तप तोम ॥ आश्विनेय सह नृपको यज्ञ । करवायो मुनिबर सरबज्ञ ॥ तप प्रभाव जगमे बिख्यात । भयो महामुनिको अवदात ॥ सहित सुकन्या अति अभिराम । कियो बिहार तहां तपधांम ॥ ताको यह सोहत सर पर्म । स्नान इहां कीजै नृपधर्म ॥ देव पितर तर्पण सबिधान । करिदीजै बिप्रणकों दान ॥ करत सैंधवारण्य बिहार । पुष्करकों नृप गयो उदार ॥ शिवकों जँहँ जपि मंत्र समृद्ध । पावत परम सिद्धि जन ऋद्ध ॥ * ॥ लोमशउवाच ॥ * ॥ इहां स्नान करिकै मतिराश । कीजै पाप पुरातन नाश ॥ यह आचीक सुगिरि अभिराम । इहां नित्य सुर मुनिके धाम ॥ सोमतीर्थ यह इहां सुजान । बालखिल्य तप कियो महांन ॥ पुष्कर तीनि सु धर्म स्वरूप । करहु प्रदक्षिण इनको भूप ॥ शान्तनु नर नारायण अत्र । तप करि पायो परम परत्र ॥ एहिँ आचीक सु गिरिमे भूप। चरु भोजन किय ऋषिन्द अनूप॥ यमुनाको यह सोत ललाम । कियो कृष्ण तप जहँ अभिराम ॥ भ्रातन सह कृष्णा नृपधर्म । स्नान तहां चलि कीजै पर्म ॥ यह यमुना अघहरणि गभीर । यज्ञ अनेक भये तेहि तीर ॥ मांधाता सोमक नृप अत्र । किय सह देवि भूप बहु सत्र॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि च्यवनसौत्युपाख्यानवर्णनोनाम एकविंशोऽध्यायः ॥

व०प० ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भूप मान्धाता भए तिहुँलोकमे विख्यात । यौवनाश्वमहीप सो केहिभांति सों अवदात ॥ केहि भांति पायो लोक पावन परम सबसों उद्ध । लोक तीनौं सुबस कीन्हें बिष्णु सदृश अबद्ध ॥ सुनो सो हम चहत हैं सब कहहु हे तपधाम । नाम मान्धाता भयो केहि भांतिसों अभिराम ॥ ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ भयो मान्धाता महीपति जौन भांति समृद्ध । कहत हैं हम सुनहु हे नृप चरित तौन प्रसिद्ध ॥ इक्ष्वाकु कुलमे भयो नृप युवनाश्व सुमति महान । अश्वमेध सहस्र कीन्हें देइके बहुदान ॥ औ नाना भाँतिके मख किए सविधि अनेक । भयो नहि युवनाश्वकें सुत सुता कोउ ऐक॥पुत्र बिन व्है खिन्न सौंपि अमात्यकों भूभार । नित्य बनमे बास कीन्हों जाय भूप उदार॥ शास्त्र विधिसों धारि आत्मा ज्ञानकों मतिमान । क्षुधासों अरु त्रिषासों नृप होय दुखित महान ॥ गए आश्रमको रहे भृगु जहाँ अति तपधाम । तेहि रात्रिमे मुनि यज्ञ किय युवनाश्वके सुत काम ॥ मंत्र पूत सु भरो चरुसों धरो कलश महान । जेहि खाय जनमे भूप पत्नी पुत्र इन्द्रसमान ॥ कलश चरुको यज्ञ वेदी उपरि धरिकै तौन । जागरण तें निद्रा स्ववश ते होत भे तपभौन ॥ सुष्ककण्ठ त्रिषार्त जल तहँ जाय मागो भूप । सुनो काहु नहीं नृपके बचन अति क्षम रूप ॥ लखो सो तहँ कलश नृप चरु सलिलसों परिपूर्ण । खाय चरु जल पान कीन्हों जायकै तह तूर्ण॥ पानकै जल परम शीतल खायकै चरु पर्म । तृप्त व्है अतिमान भूपति महत पायो शर्म ॥ जगे मुनि बर कलश देखो शलिल रीतो कौंन । लगे बूझन महामुनि यह कर्म कीन्हों कौंन ॥ कहो नृप युवनाश्वमुनिसों कियो हम यह कर्म । कहो भृगुमुनि कियो कारज योग्य नहिँ यह पर्म ॥ पुत्र कारक आप चरु यह धरो हो अभिराम । उग्रतपसों पूर्ण करि हम ब्रह्मतेज ललाम ॥ महाबल अति पैारुषी तप तेज पूर्ण महांन। जीति लै जो युद्धमे मघवानकों अतिमान ॥ एहि भांतिसों हम कियो हो चरु पूर्ण तेजस पर्म ।कियो नृपतुम तौन भच्छण भयो योग्य न कर्म॥अन्यथा सो करणको नहिँ शक्य मेरे भूप । दैव कृत यह भयो जो तुम कियो कर्म अनूप ॥ तृषारत जलपान कीन्हों मंत्र पूरित जौन । रहो भूपति भरो मेरे महातपसों तौन॥ तेहि आपसों सुत होय गो तव कुक्षितेँ नृप पर्म । करै गे तव रक्षणार्थ सु दृष्टि अद्भुत मर्म ॥ शक्र सम सुत लेय ऐसेँ जन्म तुमसों भूप । गर्भ धारण दुःखकों तुम लहहु गे न कुरूप ॥ एकशत जब वर्ष बीते बाम कुक्षि बिदारि । भयो सुत युवनाश्वके रबि सदृश तेजस धारि ॥ मरे नहिँ युवनाश्व नृप यह भयो अद्भुत कर्म । सुनत देखन इन्द्र आए सुरण सहित सधर्म ॥ सुरण बूझो इन्द्रसों यह प्रीति पावन पाय । कहा करि है पान बालक करहु तौन उपाय ॥ तर्जनी शिशुके बदनमे दै कहो अभिराम । पान मो ते धारि है मान्धाह याको नाम ॥ बढ़ो सो दशहस्त अति बलभरो अनुपम रूप । बेद अरु धनुबेद सिगरे दिव्य अस्त्र अनूप ॥ करतही अभ्यास ताको मिले सब अतिमान । धनुष पायो शम्भुको शर दिव्य

निश्चित महांन ॥ मिलो कवच अभेय ताकों दिव्य अति सुखदाय । राज्यको अभिषेक कीन्हों इन्द्र ताकों आय॥लयो त्रिभुवन जीति विक्रमसों सु विष्णु समान। भो अबारित तास शासन जगतमे सुखदान॥रत्न सह राजर्षि आपुहि मिले ताहि सधर्म। भरी बसु सब भई बसुधा स्ववश ताके पर्म। बिविधि भांतिनके करे तेहि यज्ञ दै बक्रदान।अर्धआसन इन्द्रको तेहि लहो भूप महांन॥द्वादशाब्द अवृष्टिमे जेहि घेरि कै परजन्य। वृष्टिकों करवाय कीन्हीं भूमि बसु सम्पन्न॥अयुत पयोब्धि सु दई सुरभी मानधाता भूप। सुनो हमहूँ कहत जनगण द्विजनकों अनुरूप॥ सोमकुल गान्धार पतिकों शरनसों मथि भूप। कियो शासन भूमिमे करि प्रजनकों सुखरूप॥ मानधाता भूपके यह यज्ञकों सुस्थान । पुण्यमय एहि कुरुक्षेत्र सु देशमे सम भान॥ कहे मान्धाता महीपतिके चरित अभिराम। जन्मकारण सहित बूझो जौंन आपु ललाम ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तान सुनि सब जौंन लोमस ककी चरित अनूप। फेरि बूझो चरित सोमक भूपको अनुरूप ॥ * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि मान्धातोपाख्यानवर्णनोनाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ * * * * * * * * *

॥ * ॥ * युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

भो सोमक भूपति निमि पर्म । कहहु तास सुनि कथा सधर्म ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ धार्मिक सोमकनृप अभिराम। शतभार्य्या जाके छबिधाम ॥तिन पत्निनमे करि बहु यत्न। लहो भूप नहिँ पुत्र सुरत्न ॥भयो बृद्ध जब भूप सुजान। करत हेतु सुत यत्न महांन॥ भयो जन्तु नामक सुत भूप। सो बनितनमे सुनहु अनूप ॥ ताकों घेरे माता सर्व। करैं यत्न बहुभांति अखर्व ॥ तँहँ पिपीलिका आई एक। ताकों लखो न काहू नेक॥ जन्तु कुँवरके चढि कटि माँहँ। तेहि काटो सुनिए नरनाँह ॥ काटत रोयो जन्तु महान। रोई तासु जननी अतिमान॥ भयो कोलाहल नृपके भौंन। दुचित भयो सुनि कै नृप तौंन॥ दूत भूपसौं आतुरमान। आय कहो सो सहित बिधान॥ दुखित होय तंह भूपति जाय। जन्तु पुत्र लिय हियसो लाय ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ दोहा ॥

कियो प्रजापति यत्र इत इष्टीकृत अभिराम। सहस्र बर्षलों सुरन सह सह मुनि ऋषि तपधाम॥

अम्बरीष नाभाग नृप इत मख करो महाँन। सुरभी तिन दश पद्म इत करी द्विजनको दान॥

नृप ययातिके यज्ञको यह सुस्थान ललाम। बेदिनते बहुभातिको भूषित भू अभिराम ।

हृए हृद भृगुनन्दके पांच विदित हैं जौंन । आश्रम यह अति रम्य है नारायणको जौंन ।

एकरात्रि इत बास करि भोर कीजिए गौंन। कुरुक्षेत्रको द्वार यह धर्मराज मतिभौंन॥

यज्ञ ययाति महीप किय इहाँ देय मणिदान। सोमपान करि कै लहो मोद महा मघबान॥

तीर्थ सुप्रस्नावतरण यमुनामाह उदार । सुमति सकल जाको कहत महत स्वर्गको द्वार ॥
भरत भूप कीन्हो इहां शतयज्ञ अतिमान । अश्वमेधको तुरग इत छोडो पूत महान ॥
मरुत मख कीन्हों इहाँ पालित ऋषि संवर्त । इहाँ करे सुस्नानके लोक देखि सब पर्त ॥
पूत पापतें होउ तुम स्नानइहाँ करि भूप॥वैशम्पायनउवाच॥तहँस्नान भ्रातन्हसहित कीन्हों भूप अनूप॥
स्नान तहां भ्रातन सहित विधिवत करि नृपधर्म । लोमससों ऐसें कहे बचन मोदमय पर्म ॥
देखत हैं हम लोक सब तवतें मुनि मितिधाम । लखत धनुर्धर जिष्णुकों इन्द्र सहित अभिराम ॥
॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥
कहत युधिष्ठिर सत्य इमि लखत महाऋषि जौन । धर्मशील सेवित नदी यह सरस्वती तौन ॥
स्नान जो यामे करत नर छुटत पापसों सर्व । इहां सारस्वत मख करो आय सुरेश अखर्व ॥
करे ऋषिन्ह इत यज्ञ बऊ आय सुनऊ नृपधर्म । योजन पांच चऊदिशा यह विधि बेदी पर्म ॥
धर्मशील कुरु भूपको यह है चेत्र ललाम । इहाँ त्यागि तन खर्गकों जात मनुज अभिराम ॥
नदी सरस्वती रम्य यह निर्मल सलिल प्रवाह । बिनशन नामक तीर्थ है पुण्य पूर नरनांह ॥
मिलो सिन्धुगा सरित जहँ सरस्वतीमे आय । चमसोद्भेद सुतीर्थ तहँ पापहरण सुखदाय ॥
लसत सिन्धुको तीर्थ यह परम पुण्यकों रूप । लोपामुद्रा बरी जहँ मुनिअगस्त्यकों भूप ॥
भरो प्रभासों इन्द्रकों परम प्रीतिकर जौन । नाम विष्णुपद तीर्थ यह देखि परत है तौन ॥
नदी विपासा नाम यह जहँ सुतशोक निविष्ट । हाथ पाय जहँ बांधि कै बूडत रहे बशिष्ट ॥
मण्डल यह काश्मीरको भरो पुण्यसों पर्म । देखो बसत महर्षि जहँ भ्रातन सह नृपधर्म ॥
उत्तरवासी ऋषिनसों भो ययातिसों बाद । जहँ कश्यपसों अग्निसों भयो बाद अतिनाद ॥
देखि परत यह मानसर जावेको पथ भूप । परशुराम जेहि अद्रिपर कीन्हो बास अनूप ॥
बारचप्रतिपदाकों इहां अद्भुत होत चरित्र । सहित उमा हर देत हैं दरशन प्रगट पवित्र ॥
एहि सर तट मधुमासमे जन करि हर उद्देश । कुल कुशलारथ करत मख चारो वर्ण नरेश ॥
एहि सरमे विधिवत करत स्नान भूप नर जौन । चीण पापहै स्वर्गको बास लहत जन तौन ॥
यह उज्जानक तीर्थ है जहँ तप कियो कुमार । अरु बशिष्ठमुनि तप कियो सह अरुन्धती दार ॥
अल्लपूरण यह ह्रद लसत जहँ शतपत्र अनूप । इहां रुक्मिनी तप कियो पाई त्रिभुवनभूप ॥
देखऊ यह भृगुतुङ्ग गिरि धर्मनृपति अतिमान । नदी बितस्ता देखिऐ पुण्य सलिल सुखदान ॥
जला उपजला सरित ए पूरी पुण्य अनूप । जहँ मख समकरि इन्द्रके भयो उसीनर भूप ॥
भूपसभामे तहँ गए इन्द्र अग्नि मतिधाम । करण परीचा भूपको धर्म धारि मनकाम ॥
चहत उसीनर भूपकों बर दीवेकों पर्म । यातें पहिले आइ कै करी परीचा धर्म ॥
श्येन बने मघवान धरि अग्नि कपोत स्वरूप । जंघमाह भूपालके छपे जाय कै भूप ॥

भरे श्येनकी भीतिसों कम्पित रूप बनाय। शरनार्थी नृप जङ्घमे छपे ऊतायन जाय ॥श्येनउवाच॥ व॰प॰
धरमात्मा सब नृपन्हमें तुम्हें कहत सब भूप। तुम्हें न धर्म बिरुद्ध यह कीनो कर्म अनूप॥
बिधि बिरचित यह भक्ष मम क्षुधा सतावति मोहि। याको रक्षण धर्म नहिँ त्याग धर्म है तोहि॥
॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥
शरनार्थी तोसों चकित आयो इहाँ कपोत। श्येन त्याग ताको किए योग्य न मेरे होत॥
गो ब्राह्मणके हननते होत पाप जो उद्ध। शरनागतके त्यागतें पातक तथा बिरुद्ध॥ श्येनउवाच॥
होत बढत जीवत जगत मे लहि भक्ष उदार। करम करै दुष्कर सकल तजो न जात अहार॥
भक्ष हरे तन तजै गो क्षुधित हमारो प्राण। दारासुत सब मरैगे मेरे मरे सुजान॥
रक्षत एक कपोतकों छोडि बज्जतको प्राण। धर्म जो बाधत धर्मको सो नहि करत सुजान॥
काह्लको न बिरोध करि करै धर्मसोधर्म। दोय बिरोधी धर्ममे गुरु लघु देखे पर्म॥
होय न बाधा धर्ममे गुरु लघु लेइ बिचारि।धर्म अधिक जामे नृपति कीजै सो निरधारि॥राजोवाच।
भाषत बज्जत सुनीति हो बिहगोत्तम तुम बैंन। हो है कहा सुपर्ण तुम ऐसी मतिके ऐंन॥
जानि परत सरबज्ञ तुम जानत धर्म बिधान। शरणागतको त्याग है कह्ल न बिहित सुजान॥
श्येन तुम्हारे हेतु हम करि है तीन उपाय। यथा तृप्ति व्हैहै तुम्है क्षुधा शान्ति व्है जाय॥
॥ * ॥ श्येनउवाच ॥ * ॥
नहि बराह नहि छागको नहि मृगको पल भूप। और जीवको मास नहिँ भक्षण मम अनुरूप॥
देव बिहित यह भक्ष मम मानज्ञ हे मतिपोत। भूमि पाल यह दीजिये मो हित छोडि कपोत॥
भक्षत श्येन कपोतकों यह बिधि बिरचित नीति। बिना सार जाने चढत करि केदलि पर प्रीति॥
॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥
षट्ट राज्य हम देत हैं तुमकों खेचर सर्व। बिन कपोत हम देहिगे जो तुम चहऊ अखर्व॥
॥ * ॥ श्येनउवाच ॥ * ॥
जो कपोत पर प्रीति है तुमकों भूप महान। धरि कपोतकों तुलापर देऊ स्वमाँस समान॥
यह खग हम मानी कृपा तुम पल मागो जौन। मांस तुलापर राखि कै देत आपनो तौन॥
काटि काटि पल तुलापर ज्यौं ज्यौं राखत भूप। त्यौं त्यौं गरू भो परत है मनु कपोतको रुप॥
तनसे रहो न मास जब भूप उसीनर वीर। चढो तुला पर आपु तब धरम धुरन्धर धीर॥
॥ * ॥ श्येनउवाच ॥ * ॥
हम हैं इन्द्र कपात यह है ऊतभुक अभिराम। धर्म परीक्षा करण तव हम आए मखधाम॥
काटो अपनी देहतें माँस जो भूप सुजान। तातें ह्लहै लोकमे कीरति सुधा समान॥
जवलौं जगमे मनुज यह कहि है तो बृत्तान्त। स्वर्गबास तुम करऊगे तबलौं भूप निताान्त॥

व०प० गए स्वर्गकों इन्द्र तब यह कहि बचन अनूप। भू नभलों भरि धर्मधुर महा उसीनर भूप ॥
गये उसीनर स्वर्ग धरि तन प्रकाशमय पर्म। भरी तेजसों यज्ञ भू यह ताको नृपधर्म ॥
इहां देवता आय कै करत निरन्तर बास। ऋषि मुनि तिनकों लखत हैं भरे जे तपस प्रकास ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि श्येनकपोतीयोपाख्यानबर्णनोनाम त्रयोविंशतितमोऽध्यायः॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चिन्तामणि गणनाथकी लहिकै कृपा सहाय। गोकुल भार्त समुद्रकों पैरि पारकों जाय ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

उद्दालकको सुत तपधाम। स्वेतकेतु है जाको नाम ॥ ताको यह आश्रम नृपधर्म। सदा पुष्प फल पूरित पर्म। सरस्वती धरि प्रगट स्वरूप। जाकों दरशन दीन्हों भूप ॥ जाकी बाणी सुनिबे हेत। भरी सारदा आनँद चेत ॥ एहि युगमे तप भरे असन्द। स्वेतकेतु उद्दालक नन्द ॥ अष्टाबक्र कहोडकजन्य। स्वेतकेतुके भे नेधन्य ॥ मातुल भागिनेय जे तौन। जनक भूप पहँ कीन्हों गौन ॥ तहँ यज्ञशालामे जाय। कियो बाद बन्दी बुध पाय ॥ तिन तासों करि बाद हराय। पकरि नदीमे दियो बुडाय ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ कहऊ महामुनि सहित बिधान। इन सबहिंनको चरित महान ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ उद्दालक शिष्य कहोडक नाम। रहा एक अतिमतिको धाम॥करि मुनिकी सेवा बऊकाल। पढो बेद सब शास्त्र बिशाल॥ उद्दालक मुनि कन्या ताहि। दई सुजाता नाम बिबाहि ॥ ताके भयो गर्भ मतिऔन। पढत पितासों बोले बैंन ॥ पढत पिता तुम निशा समस्त। यह तौ कारज करत न सस्त ॥ बेद शास्त्र सिगरे अवदात। पढो कृपाते तव हम तात ॥ सुनि गर्भस्त पुत्रको बैंन। शिष्यन्ह माह अनादर ऐंन ॥ दियो कहोडक शाप रिसाय। अष्टाबक्र होय तो काय॥स्वेतकेतुके बैस समान। अष्टाबक्र भयो मतिमान॥ पूर्णगर्भसों पीडित ऐंन। कहो सुजाते पतिसों बैंन ॥ मुनि कहोडककों निर्धन जानि। धनके अर्थ बऊत सनमानि ॥ नहिं तुम पै धन सुमुनि उदार। प्रसव बिपत्ति बिदारण हार ॥ कछु धन यत्न करऊ अभिराम। प्रसव मास यह दशम ललाम ॥ सुनि कहोडक भार्याके बैंन। गए धनार्थ जनकनृपऐंन ॥ तहँ बन्दीकरि बादि हराय। दियो बारिमे ताहि बुडाइ ॥ उद्दालक सो सुनि मतिऐंन। कहो सुजातासों इमि बैंन ॥समाचार यह कीजो मौन। अष्टाबक्र सुने नहि तौन ॥ जानत उद्दालककों तात। स्वेतकेतुकों सो निज भ्रात॥द्वादशबर्ष गयो जब बीति। अष्टाबक्र जानि पितु प्रीति॥ उद्दालककी बैठो अङ्क। मानि आपनो पिता निसङ्क ॥ स्वेतकेतु तेहा चलि आय। बाह पकरि कै दियो उठाय ॥ यह तो नही पिताको अङ्क। है जहँ बैठे आइ

निसङ्क ॥ यह कटुबचन हृदयमे धारि। गये जननिपहँ दृगजलधारि ॥ भरे क्रोध इमि बूझो बात। जननि कहाहै मेरो तात॥शाप भीतिसों भरी नितान्त। कहो सुजातै सब इत्तान्त॥तब्ब राचिमे निज निरधारि। खेतकेतुसों कहो बिचारि॥हमतुम मातुल कियो अधीत। साङ्गबेद स्मृतिशास्त्र सनीत॥ बेदघोष स्मृतिशास्त्र बिचार। सुनै जनक मखमाह उदार ॥ मातुल भागिनेय दोउ प्रज्ञ।गए जनक नृपको जहँ यज्ञ ॥ मिलो सुपथमे भूपति एक। ताके भृत्तन करिय बिबेक ॥ कहो सुपथ तजिबेके बैन। अष्टाबक्र सुनो मतिऐन ॥ अष्टाबक्र उवाच ॥ अन्ध बधिर स्त्री बहै जो भार। भूपतिकों पथ देत उदार ॥ भूपतिको पथ तजै न बिप्र। देय भूप द्विजकों पथ चिप्र ॥ राजोवाच ॥ बिप्र तुम्हैं हम तजि पथ देत। मानि तिहारो बचन सनेत॥ इन्द्रौ डरत बिप्रकों बिप्र। जाऊ यथारुचि सु मुनि सु चिप्र ॥ गए जनकको जेहां यज्ञ। अष्टाबक्र समातुल तज्ञ॥द्वारपालसों वारित होय। ऐसे बचन कहे ऋषि सोय ॥ अष्टाबक्र उवाच॥ आए यज्ञ लखन तो भूप। सो देखो हम चहत अनूप॥ प्राप्त भए हम अतिथि नरेश। तो आज्ञातैं चहत प्रबेश ॥ भूप जनक हम आए अत्र। देखो चहत तिहारो सत्र ॥ क्रोध व्याधिसों पीडित उद्ध। हमै किएँ दौवारिक रुद्ध॥ द्वारपालउवाच ॥ बन्दीकी आज्ञा अनुसार। करत कार्य हम हे मुनिबार ॥ बालक इहां न पावत जान। जात बृद्ध पण्डित मतिमान ॥ * ॥ अष्टाबक्र उवाच ॥ * ॥ बुधि बृद्धनको तुम्हैं निदेश। तौ हमहूहैं योग्य प्रबेश॥ बृद्धाचरण करत हम सर्व। पढे बेद सब शास्त्र अखर्व ॥ सुब्रत जितेंद्री ज्ञान बिधान। हम सबसे अति निष्ठ सुजान ॥ करऊ न बाल जानि अपमान। लघु गुर पावक दहत समान ॥ ॥ * ॥ द्वारपालक उवाच ॥ * ॥ पढऊ बेदवाणी तुम तौन। अद्वैतामृत वर्षति जौन ॥ लखऊ आपनो बाल स्वरूप। करऊ गर्ब नहि इतिक अनूप ॥ * ॥ अष्टाबक्र उवाच ॥ * ॥ काय बृद्धते नहि गुणबृद्धि। सेमर फल पाके का ऋद्धि ॥ अल्पकाय फल सुरस महान। निरसः कुफल गुरु तजत सुजान ॥ * ॥ द्वारपालकउवाच ॥ * ॥ बालक लहत बृद्धसों बुद्धि। बढत बयक्रम पावत शुद्धि ॥ अल्पकालमे बढत न ज्ञान। शिशुन्है बोलत बृद्ध समान ॥ * ॥ अष्टाबक्र उवाच ॥ * ॥ बार पके ते होत न बृद्ध। सोई बृद्ध जो ज्ञान समृद्ध ॥ बन्दीके देखनकों अत्र। हम आएहै नृपके सत्र ॥ द्वारपाल भूपतिपैं जाय। आगम मेरो देऊ जनाय ॥ तब हमकों लखिहो प्रतिहार। जब बाढैगो बाद उदार ॥ बन्दीकों हम लैहैं जीति। तब लखिहै बुध बिप्र सनीति ॥ सहित समाज लखैगो भूप। गुर लघुताको कारण रूप॥ * ॥ द्वारपालकउवाच॥ दशवार्षिक तो तहां प्रबेश। सक्य न जहँ बुध जठर अशेश ॥ तो प्रबेशको यत्न उदार। करत जातहों तजिकै द्वार ॥ तब तुम कीजो झटित प्रबेश। जाएऊ जहँ आसीन नरेश॥ कियो तथा तिन तहां प्रबेश। गए भूपके पास नरेश ॥ * ॥ अष्टाबक्रउवाच ॥ * ॥ समुद्रान्त चितिके तुम भूप। बहुबिधि कारक यज्ञ अनूप॥

शङ्कर हित बन्दी बुध जौंन। जीति बादमे विदुषन्ह तौंन ॥ तो मनुजनसों तिन्हें गहाय ।सुनो बारिमे देत बुडाय ॥ सो हम सुनि बिप्रन्हके पास ।तुम पहँ हम आए मतिरास ॥ ब्रह्माद्वैत महत मत जौंन। करै नाश ताको कहि तौंन ॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥ बन्दीके जीतनकी आस। करि तुम कहत जो मेरे पास॥ तास प्रभाव न जानत बिप्र । बादि बृन्द मर्दन सो छिप्र ॥ बन्दिहि जीतनको करि काम। आए जौन विदुष मतिधाम॥ व्है पराक्त तिन कीन्हों गौंन। लखि रबि ज्यों उडुगणसे तौंन॥ * ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ * ॥ हमसो बादी मिलो न भूप। रहो धारि सो सिंह स्वरूप ॥ मोसों मिलत होयगो तौंन । भग्न अत्तसम सकट अगौंन ॥ * ॥ राजोवाच॥ * ॥ सावन सौर चान्द्र सम जौंन।होत भचक्र फिरत ते तौंन॥ तिनके संभवको फलमूल। जो जानै सो विदुष अतूल ॥ * ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ * ॥ इनमे विहित कहे जे कर्म। यथाकाल कीन्हेते पर्म॥ काल विपर्जय कीन्हे भूप। फल यथोक्त नहि मिलत अनूप ॥ त्रिबिधि बर्षको संभव हेतु। है यह नियत सुनऊ नृपकेतु ॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥ रथमे युक्त यथा हय जौंन। अकस्मात आवतहैं तान ॥ तिनको राखि गर्भमे जौन । फिरि ताहीसों उपतत कौंन ॥ * ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ * ॥ देह सुरथमे तुरगँ समान। दुख सुख आगम जास अजान ॥ तिनको गर्भ धारि मन भूप। ताते होत आपु बक्र रूप ॥ * ॥ राजोवाच ॥ मूंदि नैन नहि सोवत कौंन। जन्मि न जात जननि पह जौंन ॥ काके हृदै न होत सुजान। कौन बेगते बढत महान ॥ * ॥ अष्टावक्र उवाच ॥ * ॥ सोवत मीन न मूंदत नैन। हृदय भूप पाथरके हैं न ॥ बढति बेगते सरिता भूप । दुऊ दिशिकौं खनि कूल अनूप॥ * ॥राजोवाच ॥ * ॥ तुमतौ हौ नहि मनुज सुजान। देवरूप हौ अति मतिमान ॥ नहि बालक तुम थबिर समान। तुम सो बक्ता विदुष न आन ॥ करऊ प्रबेश द्वारमे छिप्र। देखऊ वह बन्दी बुध बिप्र ॥ * ॥ अष्टावक्र उवाच ॥ * ॥ उग्रसेन सम भूप समाज। जाकी सभामाह मह राज ॥ जानि परत नहि बन्दी मोहि। जाको ग्रास करै हम जोहि ॥ पण्डित मानी बन्दी जौंन। मम सन्मुख का बोलै तौंन ॥ जो प्रलयानलसोंहैं पाय ।सूखि सलिल सरितनको जाय ॥ बन्दो मम सोंहे थिर रहऊ। शीघ्र पराजयको फल लहऊ ॥ सुप्त ब्याघ्रकों देइ जगाइ । धरै चरण फण ऊपर जाइ ॥ ताको बचिबो दुस्तर प्रान । तथा हमारो बाद महान ॥ यथा सुरणमहं स्रेष्ठ सुरेश। तथा नृपनमह जनक नरेश ॥ बन्दिहि मम सन्मुख करि देऊ। महाराज करि कृपा सनेऊ ॥ अष्टावक्र महा मतिऐंन।गरजि कहे जब ऐसे बैंन ॥ तब बोलो बन्दीकरि क्रोध। सकल शास्त्रको जाकोबोध मम बचनन्हको उत्तर देऊ । प्रश्न आपनेको तुम लेऊ ॥ बंद्युवाच ॥ एक अग्नि सब ठौर समान। तथा देहमे ज्ञान प्रधान ॥ बिनसे देह ज्ञानको नास। स्वर्ग नर्कके दाता तास ॥ ॥ अष्टावक्रउवाच॥ आत्मा जीव दोयको सङ्ग । जीवकर्म कारक बहु रङ्ग ॥ आत्मा आतौ ईश्वर तौंन । देत कर्मके फलकों जौंन ॥ त्रिविधि प्रजाको कारक कर्म। होत कर्मतें त्रिभुवन

पर्म ॥ सुख दुख लहत कर्मकृत सर्व । सुखद दुखदको अन्य अखर्व ॥ * ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ * ॥ व०१० चारिवर्ण है आश्रम चारि । तीनि क्रमकों करत विचारि ॥ देत चतुर्थनकों फल जान । ईश्वर ब्रह्मसनातन तौंन ॥ कर्म करत सोई है कर्म । कहत अन्यथा सो मतिभर्म ॥ ऐसे करिके बाद महान । बन्दीकों जीतो मतिमान ॥ अष्टावक्र प्रसंशित भूप । लखि बन्दी भो मौन स्वरूप ॥ तहां कोलाहल भो अति नाद । लखि परास्त बन्दी करि बाद ॥ अष्टावक्रहि पूजित भूप। कियो यथा विधिसों अनुरूप ॥ साञ्जलि आय तहा बर विप्र । अष्टावक्रहि पूजो छिप्र ॥ ॥ * ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ * ॥ सुनो जीति एहिँ विप्र अनेक । जलमे बोरे करि अविवेक ॥ तौंन कर्मके फलको अद्य । प्राप्त होय बन्दी नृप सद्य ॥ पकरि वारिमे देऊ बुडाय । गए विप्र ते जहँ तहँ जाय ॥ * ॥ बंद्युवाच ॥ * ॥ वरुण पुत्र हम आज्ञाकार । सत्र करत है वरुण उदार ॥ द्वादशाब्द तो यज्ञ समान । पठये ते तह विप्र सुजान ॥ ते आवतहाँ देखऊ भूप । देखि वरुणको सत्र अनूप ॥ अष्टावक्र पूज्य अवदात । जास कृपातें लखिहौं तात ॥ * ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ * ॥ द्विजबाचा मेधातें जौन । विजित सिन्धुमे बूडे तौन ॥ बचन बुद्धि हम जीतो सर्व । जो न आदरत सुमति अखर्व ॥ सत्य बचन जे कहत अनूप । पावक दहत न ताकों भूप ॥ बाल पुत्रको कुत्सित बैंन । ग्रहण करत नहि जे मतिऐन ॥ छीण दर्प तुम मत्त स्वरूप । मेरो बचन सुनत नहि भूप ॥ जनकउवाच ॥ * ॥ सुनत दिव्य तव बचन सुजान। तुम हो देव न मनुज समान ॥ जीतो बन्दीकों चहि जौन । भयो पूर्ण तव कारज तौंन ॥ वर्तमान यह बन्दी विप्र । योग्य होय सो कीजै छिप्र ॥ * ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ * ॥ बन्दिहि जिअत न अर्थ अनूप । पिता वरुण जौं याको भूप ॥ तौ याको जलमहँ परवेश । शीघ्र कराबऊ जनक नरेश ॥ * ॥ बंद्युवाच ॥ * ॥ वरुण पुत्र हम भूप सुनीति । जल प्रवेशमे हमै न भीति । मुनि कहोडकों एहि छण छिप्र । अष्टावक्र लखैगो विप्र ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ पूजित विप्र वरुणतें सर्व । कढे जनक ढिग आइ अखर्व ॥ * ॥ कहोडउवाच॥ * ॥ याते ईछत जन सुत पर्म । रहो अशक्य हमै जो कर्म ॥ अष्टावक्र कियो सुत तौंन । होत अवलके सुत बलभौंन ॥ व्है है पुत्र तिहारे भूप । अरिहन्ता बलवान अनूप ॥ होत सामको अद्भुत गान । पियत सोम सुर मुनि अतिमान ॥ शुचि मख भाग पाय सुर सर्व । जनक मोदसों भरे अखर्व ॥ * ॥ लोमसउवाच॥ * ॥ बन्दी नृपसों आज्ञा पाय । किय प्रवेश सागरमे जाय ॥ अष्टावक्र पूजिके तात । पूजित आपु द्विजनसों ख्यात ॥ आए आश्रमकों भरि प्रीति । जनक यज्ञमे बन्दिहि जीति ॥ अष्टावक्र पुत्रसों बैंन । ऐसैं कहो कहोड सचैंन ॥ नदीमाह एहि करऊ प्रवेश । अष्टावक्र सों कियो निदेश ॥ भए अङ्ग सम सकल सुवेश । गुरु अज्ञालहिकियो प्रवेश ॥ नदी समङ्गा तबसों ख्यात । भरीपुण्यसों अति अवदात ॥ यह किल्विषहा सरिता पर्म । स्नान सभात करऊ नृपधर्म । इहां एक निशि रहिके भूप । अन्य तीर्थ चलि लखऊ अनूप ॥ *

व॰प॰ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि अष्टावक्रोपाख्यानवर्णनो नाम चतुर्विंशोध्यायः॥ *

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

मधुविला एहि नदीको तबसों समङ्गा नाम। कर्दमिल यह भरतको जहँ भो भिषेक ललाम॥ वृत्रकों हनि ब्रह्महत्या युक्त ह्वै मघवान। एहिँ समङ्गामे छुटे है तेहि पापसों करि स्नान॥ कुक्षिमैं नाकके यह तीर्थ विनशन भूप। अदिति जहँ पुत्रार्थ दीन्हों अन्नपाक अनूप॥ चढ़ऊ एहि गिरिराजपैं नृप मानिकै सु निदेश। अयशरूपा जो अलक्ष्मी दूरि करऊ नरेश॥ ऋषिनकों प्रिय तीर्थ कनखल लसत ए अति रूप। लखऊ यह सुरसरित गङ्गा परम पावनि भूप॥ पुरा पाई परम सिद्धि सु इहां सनतकुमार। इहां कीन्हे स्नान छूटत पापपुञ्ज अपार। परम ऊद भृगु तुंगगिरि पर भरो सलिल ललाम। स्नान तामे कीजिए है उष्णिगङ्गा नाम। रैभ्यको यह लसत आश्रम भरो पुण्य प्रकाश। भरद्वाज सु तनय जहँ जवक्रीत पायो नाश॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ भरद्वाज सु महामुनिको जवक्रिन सुत जौंन। कौन विधिसों नाश पायो महामुनि कऊ तान ॥ लोमसउवाच ॥ भरद्वाज सु रैभ्य दोऊ सखा हे मुनि भूप। वसत हे ते इहां दोऊ ह्वै अनन्तर रूप॥ रैभ्य अपने सुतनकों सह शिष्य वेदाध्ययन। हैं करावत भरद्वाज सु करत तप मतिअयन॥ जवक्री तब पिताकों लखि असत्कृत तप निष्ट। रैभ्यको सत्कार देखा करत शिष्य विशिष्ट॥ जवक्री तप करण लागे क्रोधसों भरि चेत। पढ़े विनु सब वेदको वर ज्ञान लहिवे हेत॥ आपु बैठो मध्यपावक वारि कै चऊँ ओर। तास तप लखि इन्द्रकों अति पात वाढ़ो घोर॥ जवक्रो सों इन्द्र तव इमि कह्यो आय सनेत। करत है तुम विप्रवर यह घोर तप केहि हेत॥ जवक्रीतउवाच ॥ द्विजनकों विन पढ़ें आवै वेद जाते सर्व। एहि हेत है प्रारम्भ मेरो सुनहु इन्द्र अखर्व॥ चहत तपतें श्रुतिस्मृतिको विविधि बिधिको ज्ञान। पास गुरुके जाय बीतत पढ़त काल महान॥ इन्द्रउवाच॥ नहीहै यह मार्ग द्विज तुम करत जामें गौन। करऊ कष्ट न गुरूसों पढ़ि लेऊ श्रुति स्मृति जौंन॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ एहि भांति कहि जवक्रीत सो जब गए श्रीमघवान। जवक्रीत फिरि वर करन लागे घोर तप अतिमान॥पायकै सन्ताप अतिशय इन्द्र तेहाँ आय।जवक्रो सो कह्यो वारण वचन वऊ समुझाय॥ ॥ * ॥ जवक्रीउवाच ॥ * ॥ कहत तुमसो करहिबे नहि सुनऊ हे मघवान। घोर तप को करत हैं प्रारम्भ हम अतिमान॥होम करिहै काटिकै हम अङ्ग अपने सर्व।जौं न वांछित करऊ गे मम देवराज अखर्व॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ जानि निश्चय जवक्रीको कियो इन्द्र विचार ॥ * ॥ गए ताके पास धरिकै विप्र रूप उदार॥ महा कृश अति वृद्ध रोगी वैशमे अतिमान। जाय बैठो जवक्रो क्षिति करत जहँ सुस्नान॥ मूठि भरि भरि डारि सिकता सुरसरीमे देत। देखाइवेकों

यवक्रीकों चहत बांधो सेत ॥ कहो तासों यवक्री लखि करत हौ का कर्म ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * कहो द्विज तेहिँ सेतु बाँधो चहत है हम पर्म ॥ बाँधि दोन्हें सेतुके इत सुगम पन्था होय । जात आवत पारकों दुख लहत है सब कोय ॥ * ॥ यवक्रीतउवाच ॥ * ॥ सेतुबन्धन समका मे नहिँ रावरे मतिभौन । अशक्यको तजि करऊ कारज शक्य लायक जौन ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ बेदार्थकों तुम यथा उद्दित करत हो तप बिप्र । तथा कार्य्य अशक्य हमऊँ कियो चाहत क्षिप्र ॥ ॥ * ॥ यवक्रीतउवाच ॥ * ॥ यथा यह देवेश कारज रावरो है व्यर्थ । तथा जौं तप आपु मेरो मानिए बिन अर्थ ॥ करहु सो तुम होय मेरे शक्य लायक जौन । दीजिए बर अन्य हमकों योग्य ह्वै जौन ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ इन्द्र ताकों दियो बर जो चहत हो यवक्रीत । वेद भासित होय तुमकों सहित तात पुनीत ॥ और सुरपति दियो बर जो रहो बांछित तास । कहो सो यवक्रीत अपने पिताके चलि पास ॥ * ॥ यवक्रीतउवाच ॥ * ॥ बेद भासित होहिँ गे हम तुम्ह तात अखर्व । बिदुषके जे वृन्द जगमे जीति लै हैं सर्व ॥ * ॥ भरद्वाजउवाच ॥ * ॥ दर्प तुमकों होयगो बर पाय इप्सित जौन । दर्पपूर्ण सो निन्य आतुर नाश पावत तौन ॥ पूर्व देवन्ह कहो गाथा सुनऊँ सो मतिमान । बालधी मुनि पूर्व हो सुत तपस तेजनिधान ॥ पुत्रको लहि शोक तेहिँ मुनि कियो तप सुतकाम । पुत्र मेरे होय सो नहि मरै अति अभिराम ॥ कृपा करि कै आय देवन्ह कहो तासों बन । मर्त्य लहत प्रमाण आयुष अमर कोऊ हैं न ॥ * ॥ बालध्युवाच ॥ रह जबलों अचल ए गिरि धरामाह अखर्व । पुत्र मेरो जियै तबलों सुनो हे सुरसर्व ॥ * ॥ भरद्वाजउवाच ॥ * ॥ तास मेधावी भयो सुत भरो क्रोध महान । तौन मुनि बर करण लागो मुनिनको अपमान ॥ करत अप्रिय मुनिन्हको सो फिरत चारोंओर । गयो सो धनुकाक्ष ऋषिपहँ भरो तामस घोर ॥ दियो ताकों शाप ऋषि धनुकाक्ष लहि अपकार । भस्म हो नहि भस्म भो तब कियो सुऋषि बिचार ॥ महिष क्रिय उतपन्न ऋषि गिरिनाश कारण पाय । मरो सो जब दियो महिषन अचल तौन गिराय ॥ बालधी खे मृतक सुतकों लगे करण बिलाप । पढो गाथा द्विजन्ह तब यह देखि तास उताप ॥ शकत कोऊ न टारि बिधितैं बिहित कारज जौन । दियो महिषन डारि देखो धराधर बर तौन ॥ अबुध लहि बर दर्प बल है नाश पायो क्षिप्र । कीजियो मुनिबरणको तुम नहीँ अप्रिय बिप्र ॥ महावीर्य्य सुरैभ्य मुनि यह पुत्र ताको जौन । तास नहिँ अपराध कीजो सुनऊँ सुत मतिभौन ॥ रैभ्य पीडित करणके है योग्य कीन्हें क्रोध । भूलि तासों कीजिओ मति सुनऊ पुत्र बिरोध ॥ * ॥ यवक्रीतउवाच ॥ * ॥ करहिँ वे हम तौन तुम जो कहतहौ सुखदान ॥ मान्य हमकों यथा तुम हौ तथा रैभ्य सुजान ॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥ पितासों यहिभांति कहि कै बचन परम ललाम । मुनिनको सो लगो अप्रिय करण दुर्मतिधाम ॥ फिरत बनमें

५० यवक्री सो भरो कुमति प्रकाश । गयो आश्रम रैभ्यको हो जहाँ लहि मधुमास ॥ स्नुषा मुनिकी फिरत बनमें लखो अति अभिराम । कहो तासों यवक्री भजु मोहि हे बरबाम ॥ निर्लज्ज कामा शक्तकों लखि सलज सो मुनिदार । भरी जानि स्वभाव ताको शाप भीति उदार ॥ कियो तेहि स्वीकार गहि एकान्तमें ले जाय । सुरति करिकै दियो ताकों सिन्धुमाहँ गिराय ॥ बँचो बूडति निकसि कै सो गई अपने धाम । सासुसों सब कहो रोदण करत दुःखित वाम ॥ परावसुसुतकी सुमाता स्नुषा सहित बिलाप । रैभ्यमुनि तहँ आइ देखो भरे महत उताप ॥ कहो मुनिसों सकल तेहि यवक्रीतको सब कर्म । सुनत बाढो रैभ्यको अतिकोप दारुण धर्म ॥ जटा एक उखारि बिधि बत अग्निमें किय होम । भई तासों प्रगट नारी तरुण तेजसतोम ॥ दूसरी फिरि जटाको मुनि कियो होम उखारि । भयो तासो प्रगट राक्षस शूल करमें धारि ॥ कहो तिन मुनि कहहु सो हम करैं कारज उद्ध । यवक्रीत हि जाय मारहु कहो मुनि ह्वै क्रुद्ध ॥ हो यवक्री जहां ते तहँ गए दारुण रूप । हरि कमण्डलु लियो नारी धारि रूप अनूप ॥ शूल लै सो चलो राक्षस ताहि मारण हेत । भजो ताहि बिलोकि आवत यवक्री जलहेत ॥ गयो सरवर सरिततट मुनि लखो नहि तहँ नीर । अग्निशाला पिताको तहँ गयो भजत अधीर । गयो खेदैं तहां राक्षस शूल लीन्हैं घोर । अन्ध रक्षक शूद्र राखो रोकि तहँ बरजोर ॥ आइ राक्षस हनो तब तेहि शूलसों अतिमान । यवक्री हत गिरो क्षितिपर छोडि दीन्हो प्राण ॥ यवक्रीकों मारि राक्षस रैभ्यके गो पास । रैभ्य आज्ञा पाइ बनमें दुहुन्ह कीन्हों बास ॥ कर्म आन्हिक नदी तठ करि भरद्वाज नरेश । समिध लीन्हें कियो आश्रम माहँ आइ प्रवेश ॥ मिलत हे चलि पञ्चपावक सदा नुनिको जाय । जानि कै हतपुत्र अग्नि न मिले आगे आय ॥ अग्निहोत्र बिलोकि बिक्षित बिचारि कै तपश्रैंन । लगे बूझन अन्ध रक्षक शूद्रसों इमि बैंन ॥ शूद्र दर्शन नहीं दीन्हों आजु पावक आय । तोहि लखत बिवर्ण है इत कुशलको समुदाय ॥ रैभ्यके तो गयो आश्रमकों न मम सुत मन्द । बेगि कहि सो शूद्र मेरो लहत मानस दन्द ॥ शूद्र उवाच ॥ कहो सो बृत्तान्त सिगरो शूद्र मुनिके पास । घोर राक्षस कियो जैसें यवक्रीको नाश ॥ शूद्रको सुनि बचन मुनि बर भरे महत उताप । मृतपुत्रकों ले लगे नाना भाँति करण बिलाप ॥ ॥ * ॥ भरद्वाजउवाच ॥ * ॥ रैभ्य आश्रमकों न तुमकों कहो हो हम जान । गए ताकों देखिबे तुम कुटिल काल समान ॥ बृद्ध मेरे एक पुत्र सो रहो जानत दुष्ट । कियो ऐसो कोप तापैं पापपूरण तुष्ट ॥ रैभ्य कृत यह भयो हमकों पुत्रशोक महान । पुत्रके हम शोकसों यह यथा तजि हैं प्रान ॥ तथा हनि है रैभ्यकों सुत ज्येष्ठ ताको जैांन । भयो जाके पुत्र नहिँ जन सुखी जगमें तैांन ॥ पुत्रको करि शोक व्याकुल सखाकों जो शाप । देत तासों अधिक जगमें कैांन पूरण पाप ॥ लोमसउवाच भरद्वाज बिलाप करि यहिँभाँति सुनहु नरेश । गए सुत सह स्वर्गकों करि अग्निहोहिँ प्रवेश ॥ बृहद्युम्न नरेश तब तेहिँ कालमें मख अत्र । करण लागो रैभ्यके सुत भयो याजक तत्र ॥ कनिष्ठ

अर्वावसु परावसु रैभ्यपुत्र सु ज्येष्ठ। वर्ण तिनको यियो भूपति यज्ञकारक श्रेष्ठ॥ रैभ्य आश्रमसे रहे सह परावसुको बाम। परावसु एकद्योस निशिमे गयो अपने धाम॥ रैभ्य धरि मृगचर्म बनमे रहे बैठे भूप।परावसु बस साप मारो जानि हिंसकरूप॥ प्रेत कारज पिताको करि परावसु शुचि पाय। कहो भ्रातासों सकल बृत्तान्त मखमे जाय॥नहीं अर्वावसु तिहारे शक्तको यह कर्म। पिता हींसनको लगो है हमे महत अधर्म॥ ब्रह्म हींसन करऊ ब्रत तुम तात मेरे अर्थ। सबके कार बाइबेमे जानि मोहि समर्थ॥ अर्वावसुरुवाच॥ बृहद्युम्नको यह सत्र पूरण करऊ तुम अनुरूप। तब अर्थ करि हैं महाब्रत हम ब्रह्महिंस अनूप॥ लोमसउवाच॥ भयो सो करि महाब्रतकों ब्रह्महत्या पार। गयो अर्वावसु तहां जहँ होत सत्र उदार॥ परावसु तेहि देखि बैसे कहो नृपसों जाय।ब्रह्महा यह यज्ञ योग्य न देऊ भूप बराय॥ लोमसउवाच॥द्वारपालनसों दियो कहि भूप यह सुनि बैन। ब्रह्महा यह करऊ बाहेर योग्य मखके है न॥द्वारपालन कियो बाहेर खैंचि मखतें ताहि। परावसु यह कियो कारज लोभ धनको चाहि॥ अर्वावसु तब गयो बनकों मौन ह्वै तप काम।सूर्य्यको तहँ कियो राधन धारि कै तप साम॥ मंत्र दिनमणिको जपो ब्रत नियमसों सम्पन्न। मूर्त्तिधरि कै दियो दर्शन ताहि भानु प्रसन्न॥ कियो देवन्ह बरण ताको देखि तप ब्रत कर्म। परावसुकों काढि मखते दियो जानि अधर्म॥ कहो अर्वावसु हि मागन परम बर अभिराम। सहित पावक देवगण सब कृपा पूरित साम॥ अर्वावसुरुवाच॥ पिता जीवै परावसुकों करै पातक त्याग। रैभ्य समुझै मरणकों नहि रहै पूरित राग॥ भरद्वाजो जियै अपने सहित पुत्र ललाम। देव दीजै कृपा करि यह मोहि वर अभिराम॥ देवतन स्वीकार करि कै दिए ए बर सर्व।प्रगट ते सब भये धारे यथा रूप अखर्ब॥यवक्री इमि देवतनसों कहे बचन प्रमान।बेद हम सब पढे ब्रत तप कियो विहित विधान॥ भयो कैसे रैभ्य मेरे हननमाह समर्थ। देव याको कहऊ मोसों विहित बिधि जो अर्थ॥ * ॥ देवाऊचुः ॥ * ॥ यवक्रीत न कियो तैसें कहत जैसे बैन। बेदगुरुसों पढो नहि तुम सहित अस मतिश्रैन॥ रैभ्य गुरुसों कष्ट करि बऊ पढो बेद सुजान। कालसे बऊ होत तातें तुम न तास समान॥ लोमसउवाच॥ भांति एहि यवक्रीतकों तिन्हहिँ सब हि जिवाय। गए सुर सब स्वर्गकों तब सत्र शान्ति कराय॥ तास आश्रम पुण्यमै यह पुष्प फल युत पर्म। नाश कीजै पापकों बसि एक निशि नृपधर्म॥ * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारदर्पणे वनपर्वणि यवक्रीतोपाख्यानबर्णनोनाम पञ्चविंशतितमोऽध्यायः॥

॥ * ॥ लोमसउवाच॥ * ॥ दोहा॥ * ॥

उशिर बीज मैनाक गिरि श्वेत शैल अरु काल। नाघत तुम यह सप्तधा गङ्गा लखऊ बिशाल॥

व०प० बिरजसु पुण्यस्थान यह नित्य अग्निको बास।मनुज गमनको शक्य नहिं यह गिरि है मतिरास॥
करि समाधि एकाग्र व्है लखहु तीर्थ ए सर्ब। देखिपरत ए सुरनके क्रीडाबिपिनि अखर्ब॥
श्वेत सुमन्दर अद्रिमे अब तुम करत प्रवेश। माणिभद्र यक्षेन्द्र सह धनाधीशको देश॥
सहस अठासी सङ्गमे है जाके गन्धर्व। हैं तिनसों किम्पुरुष अरु यक्ष चतुर्गुण सर्व॥
धरें अनेकन रूपकों धारि शस्त्र महांन। माणिभद्र यक्षेन्द्रको सेवत सकल सुजान॥
तिनकी अति सम्पति इहां इन्द्र सदृश बलवान। चहुँओर रक्षा करत जातुधान अतिमान॥
पर्वत दुर्गम ए महा करु समाधि कुरुभूप॥ सखा धनदके रहत इत उग्र सु सौम्य स्वरूप॥
तिनसों मिलिबेकों रहो बिक्रम सहित तयार। ऊंचो योजन साठि है गिरि कैलाश उदार॥
आवत हैं तहँ देवता बदरीकाश्रम यत्र। किन्नर राक्षस यक्ष गण अनगण बासो तत्र॥
रहत धनदके धाम ढिग पन्नग खग गन्धर्व। तहां जाहु गे भूप तुम करि तप योग अखर्व॥
हमतें रक्षित भीमके बलते भूपति धर्म। कुशल करे तो बरुण यम अग्नि सरित सरपर्म॥
देव दनुज गिरि सबसु करैं सु तौ कल्याण। करै कृपा गङ्गा सुनत जाको शब्द महान॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच॥

लोमसके मुखते सुनत यह अपूर्व भय बैंन। रक्षा कृष्णाकी करहु यत्न सहित मतिअैंन॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥

कहो भीमसों भूप तुम कृष्ण हि रक्षेहु बीर। शरण तिहारी लेइ यह आएँ भीति गम्भीर॥
तब नृप माद्रीसुतनकों करि कै मूर्धा घ्रान। कहो न भय कीजो चलत ह बर बीर सुजान॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

अन्तरध्यान फिरं इहाँ भयङ्कर भूत महान। अग्नि सहित करि शौच इत चलहु भीम बलबान॥
सुने महाऋषिके बचन चलिबेके कैलाश। कैसें कृष्णा चलेगी अतिकोमल छबिराश॥
अथवा सह सहदेव मुनि धौम्य पौरजन तौन। रथ परि चारक बिप्र जे करि नशकत हैं गौन॥
सहित द्रौपदी फिरहु तुम सुनहु बृकोदर बीर। तीनजने हम जाहिंगे मुनिब्रत धारि गँभीर॥
लोमस हम अरु नकुलकों लीन्हें सङ्ग उदार। मम आगमकों देखि हो तुम बसि गङ्गाद्वार॥

॥ * ॥ भीमसेनउवाच॥ * ॥

राजसुता श्रम दुःखतैं आरत यद्यपि भूप। चलिति लालसासों भरी लखिवैं अर्जुनरूप॥
तुमहूकों इच्छा महति चितमे बढी गभीर। लखिवेकों पारथ परम नविन पावक बीर॥
कृष्णा सहदेव सह होत निवृत्त न भूप। औ द्विजन सह जाँउ सब परिचारक जे भूप॥
हम तुमकों नहि छोडि है एहि गिरि दुर्गममाहँ। जो राक्षसके बृन्दसों हैं पूरित नरनाहँ॥
यह कृष्णा पतिब्रत भरी तुम्हे बिना मरनाहँ। और ठौरके रहनको क्यों करि है उतसाहँ॥

तुम्ह छोडि सहदेव ए परम भक्त तो भूप। आर ठौर रहिहै न हम जानत इनको रूप ॥
अर्जुनको हम लखनको सबहैं इच्छामान। और ठौर रहिहै नही तुम्हैं छोडि सुखदान ॥
बङ्क कन्दर गिरि दुर्गमे चलि न सकत रथ जौन। तौ हम करिहै चरणसों साथ तिहारे गौन ॥
हम कृष्णाकों वाहिहै चलि न सकी जह भूप। दुर्गममे माद्री तनय तिनह्कों सुखरूप ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

इन्हैं वाहिवें कहतहो श्रमसों भरे गँभीर। को तुमसो या जगतमे धन्य वृकोदर बीर ॥
ऐसो तुम जो कहतहो भीमसेन वर बैंन। कबहू होऊ न श्रम सहित तुम्है पराभव हैं न ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सुनि बोली कृष्णा वचन सस्मित मधुर अमन्द। हम चलिहै सुखसों नृपति मो प्रति करऊ न दन्द ॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

गन्धमादन पै चढैं नहिं तप तेजस ते हीन। ताते धरि ब्रत नियमको करिये तपबल पीन ॥
हम तुम सह माद्री तनय भीमसेन बलधाम। चढि गिरिदुर्गम पर लखै अर्जुनकों अभिराम ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

आयमान ऐंसैं सकल नृप सुबाऊको देश। देखो गजरथ तुरग बर सम्पति भरो नरेश ॥
तहाँ किरात पुलिन्दको सङ्कुल देखो भूप। हिम गिरिके तीरे बसत अद्भुत भरो अनूप ॥
सुनि सुबाऊ नृपधर्मको पूजन कीन्हों आय। अपने सीमाके निकट साञ्जलि गयो लेवाय ॥
एक निशा तँहा रहे तासों लहि सतकार। रथ परिचारक राखि तहँ भोरहिँ चले उदार ॥
पाण्डव कृष्णा चरण गति लोमसके सगँ भूप। चले बिलोकन जिष्णुकों पूरे प्रीति अनूप ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

भीम नकुल सहदेव सह सुनऊ द्रौपदी बैंन। पूर्वजन्म कृत कर्म फल सो न मिटत मतिऐंन ॥
लखऊ वनेचर भए हम बहत एककों एक। पाय पियादे फिरत हैं सहि दुख भाँति अनेक ॥
फिरत असक्य सु बिपिनिमे लखिवे अर्जुन बीर। दाहतहै अभिलाष सो हमैं वृकोदर धीर ॥
देखत अर्जुनकों नही यह दुख सहो न जात। तूलराशि पावक दहत तथा हमारो गात ॥
कृष्णाको अपमान जो कियो सुयोधन पाप। और अदर्शन जिष्णुको हमकों करत उताप ॥
तीर्थ बिपिनि गिरि सर नदी तुम्है सहित रणधीर। फिरत भरत दुखसों लखत तहाँ न अर्जुन बीर ॥
पाँचवर्ष बीते फिरत धारें धनु गाँडीव। यह दुख हमकों दहत है लखत सो नहि बलसीव ॥
सिंहगवन बलधाम जो घनश्याम अभिराम। ताहि न देखत दहतहै ताप तरुण तन माम ॥
फिरत शत्रु समुदायमे काल क्रुद्ध सम जौंन। अरिगण बनको दहन सम बीर न देखत तौंन ॥

दुर्बलसों अपमान लहि जो छमतु होत सुजान। प्रबल कुटिलता करत जो ताकों शमन समान ॥
शत्रुकों आएँ शरण अभय देत जो बीर। हम सबकों आश्रय सुखद अरिमर्दन रणधीर ॥
जाके भुजबलतें लहे हम बह्न रत्न सुजान। दिव्य ख्यात तिऊ लोकमे पाई सभा महान ॥
जास बाहुबल तुल्यहै त्रिभुवनमे मघवान। जवमे बायु समान सो रणमे मृत्यु समान ॥
ताहि देखिवे चहत हम दखसों भरे अशेष। चढे गन्धमादन अचल धारे मुनिव्रतबेष ॥
पद्माकर धनपालको जह राचस समुदाय। चहत पधारे जान तह तपकरिकै अतिकाय ॥
ज्ञानमानके जानको जौन वृकोदर देश। लुब्ध क्रूर क्रोधी न जह जाय सकत मतिवेश ॥
तहा जान हम चहतहै द्विजबर बृन्दसमेत। जहा मक्षिका व्याघ्र अहि दुःखद दारुण चेत ॥
व्है सशोच चलिये तहां नियताहार सुधीर। जहां गन्धमादन अचल लखिवे फाल्गुण बीर ॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

गिरि पुर कानन सरित तुम देखो चाहत सर्व। चलऊ आचमन करि सबिधि देखन तीर्थ अखर्व ॥
गिरि मन्दरको जातहै यह पन्था कुरु भूप। सावधान व्है कै चलऊ हे पाण्डव शुचि रूप ॥
यहि गिरि देव निवासहै दिव्य ऋषिनको पर्म। इहा तुम्हैं चलिवो परम सशुचि सुनऊ नृपधर्म ॥
पुण्यमयी यह जव शिला यह सुरसरिता भूप। बदरीकाश्रम सों भई प्रगट पुण्यमय रूप ॥
जाकों सेवत देव ऋषि वालखिल्य तपधाम। जास सुरासुर करत है अर्चन अति अभिराम ॥
शामग गावत शाम जहँ पुण्यभरे सुर भूप। मरीचि पुलह भृगु अङ्गिरस आन्हिक करत अनूप ॥
साध्य दश्र रवि चन्द्रमा ग्रह नक्षत्र सुर सर्व। निशिदिनमे सुरसरि भजत पावत पुण्य अखर्व ॥
सुरसरिता शिरपै धरी बृषभध्वज नृपधर्म। जगकारण अव्यय अमित जौन चराचर पर्म ॥
तौन भगवती सुरसरितकों अभिवादन भूप। भ्रातन सह कीजै सविधि करि आत्मा शुचिरूप ॥
धर्मनृपति सुनिकै वचन लोमसके सुखदान। गगण गामिनीको कियो पूजन सहित विधान ॥
बन्दन करि सुरसरितको ऋषिगण सह नृपधर्म। चले दूरि तें गिरि सदृश देखो पाण्डुर पर्म ॥
मुनिसों बूझनको कियो ताकों भूप बिचार। जानि हृदय नृपको लगे लोमस कहन उदार ॥

॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥

पाण्डुर यह कैलासके लसत जो शिखर समान ॥ नरक दैत्यको अस्थि है यह अतिमान सुजान ॥
विष्णु सनातन करि कृपा सुरपतिपै अवदात। पूर्व कालमे दनुको कीन्हों इहा निपात ॥
करि तप बर्ष हजार दश भरो गर्व अतिमान। लोबेकों उद्दित भयो जब सुरपति को स्थान ॥
सो तपबल तें बाहुबल माया बलतें भूप। देन लगो सो सुरनकों दुःख दुसह अति रूप ॥
ताका तपबल जानि अति व्याकुल व्है मघवान। ध्यान धारिकै विष्णु कों लगे भजन सुखदान ॥
सर्वव्यापक जगतपति प्रगट भये तब आय। सुस्तव लागे करन सुर महा मोदसों छाय ॥

बरद विष्णुको देखिकै साञ्जलि सुर मघवान। करि प्रणाम लागे कहन जो भय बिहित बिधान॥ बं०प०
॥ * ॥ विष्णुरुवाच ॥ * ॥
भयो नरक तें भय तुम्हे सो हम जानत शक्र । तव पद सो चाहत लियो तपबलसों अति वक्र ॥
सो हम याकों देहतें भिन्न करत मघवान। समाधान करिकै रहो एक मुहूर्त सुजान ॥
विष्णु मारिकै पाणि सों हरो नरकको प्रान । गिरो भूमिमे बज्र हत यथा अद्रि अतिमान ॥
तास अस्थि समुदाय यह देखत जो नृपधर्म । और कहत हम सो सुनऊ जौंन विष्णुकृत कर्म ॥
भई मग्न पातालमे नष्ट होय भू भूप। विष्णु करी उद्धार सो धरि बराहको रूप॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ * ॥
यह भगवन बिस्तर सहित कहऊ कथा तुम तौन । शतयोजन पाताल तें हरि उद्धारी जौन॥
भई मग्न पातालमे भू लहि कारण कौन। यथा तत्व सुनवेचहत कहिए मुनिवर तौन ॥
॥ * ॥ लोमसउवाच ॥ * ॥
जो तुम सुनवें चहतहो बूझत हमसों भूप। सो हम तुमसों कहतहैं विस्तर सहित अनूप ॥
अभयङ्कर कृत युग रहो वर्तमान जब धर्म। करत रहे यम भाव तब आदिदेव नृपधर्म ॥
तब नहि कोऊ मरत हे जीव होत हे तौन। प्राणिनकों सङ्कुलभयो महाभयङ्कर तौन ॥
छिति अति भाराक्रान्त व्है गई रसातल भूप। नारायणकी शरण तब लई दीन धरि रूप॥
॥ * ॥ पृथिव्युवाच ॥ * ॥
विष्णु तिहारी कृपाते इत चिर करिहौं बास। भई भारतें श्रांत अति सहि न शकति सुखरास ॥
मेरे एहि वर भारके हरिवेमे तुम ईश । शरणागत मो कों छिति कृपा करऊ जगदीश ॥
सुनि धरणीके बचन ए कृपा भरे भगवान। नैन चैनकारक कहे ऐसे सुनऊ सुजान ॥
॥ * ॥ बिष्णुरुवाच ॥ * ॥
तुम्हें न करिवे भय धरा बसुधारिणि अभिराम। जाते हलुकी होऊगी तौन करत हम काम ॥
बिदा भूमिकों करि धरो हरि वराहको रूप। एक दन्त पर छितिधरी शैलकुण्डला भूप॥
बढेधूमके तोमसे औ सह सुनऊ सुजान। एकशृङ्ग बाराह बनि धरा धरी भगवान॥
सौयोजन ऊरध किया धरणीको उद्धार। धरत धरा तिऊलोकमे बाढा कम्प उदार ॥
हाहाकार भयो महा त्रिभुवनमे अति सोर। देव दनुज नहिँ धीर धरि रहे भरे भय घोर ॥
गए देवऋषि विधि निकट साञ्जलि बोले बैंन । भए चराचर विकल सब लोकनमाहि अचैन ॥
शत योजन धरणी धसी सीघ्र भए चलमान । कौन पाय कारण भयो यह विधि चरित महान ॥
कहऊ पितामह सो हमै व्याकुलजानि अखर्व। ब्रह्मोवाच। असुरनसों नहिँ भीति यह तुम्हे सुनो मुनि सर्व॥
भयो छोभ यह हेतु जेहि कहत सुनो सुर तौन । अक्षर अव्यय सर्व मय बिष्णु कहावत जौन ॥

१०८० ताके भयो प्रभावतें यह संक्षोभ उदार। धसी धरणि ताको कियो फिरि तेहि धरि उद्धार॥
साहि उठावत यह भयो कम्प जगतमें सर्व। यह तुम जानऊ सुर सकल संशय तजऊ अखर्व॥

॥ * ॥ देवाऊचुः ॥ * ॥

कहऊ पितामह है कहा भयो जो यह अौतार।जौन देशमें है तहा देखें जाय उदार॥

॥ * ॥ ब्रह्मोवाच ॥ * ॥

कोऊ रूप भगवान सो है नन्दनवन माहँ। तहा जाय दर्शन करऊ तीनिलोकके नाह॥
देखऊ इहां सुपर्ण यह करे प्रकाश उदार। धरि बाराह स्वरूप हरि कियो धरा उद्धार॥
कालानल सम लसतहै तीनिलोकको धाम। हृदय माहँ श्रीवत्स धरि चिन्ह परम अभिराम॥
सुरण पितामह सङ्ग लखि तौन महात्म स्वरूप। बिदा होय बिधिसों गए लोक आपने भूप॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

लोमससों यह कथा सुनि भ्रातन सह नृपधर्म। मुनि आज्ञा लहिकै चले फिरि गिरिवरकों पर्म॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना कृतभाषायां महाभारत दर्पण गन्धमादनप्रवेशवर्ण्णोनाम षड्विंशोध्यायः॥ * * *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तब पाण्डव धरि धनुष तुणीर। खड्ग चर्म वर वर्म गँभीर॥ पाञ्चाली सह द्विजवर जौन। कियो गन्धमादनकों गौन॥ सर सरिता गिरिवर बकु रङ्ग। तरुवर धरें सुमन उतमङ्ग॥ जह तह देखत देश विशाल। मुनिगण सेवित सुषमा जाल॥ सावधान आत्मा करिसर्व। असन मूलफल करत अखर्व॥ उच्च नीच पथमें संचार। करत लखत मृगवृन्द उदार॥ गए गन्धमादनके पाश। गिरि प्रवेश कीन्हों सतिराश॥ करत प्रवेश प्रभंजन चण्ड। वहन लगो सह जलद घमण्ड॥ चिति अकाश दिशि विदिशि उदार। अन्धकारसों भरो अपार॥ उडन रेणु लागी अति भूप। देखि आपनो परत न रूप॥ नहि अन्योन्य सकें कहि बैन। देखि न सकें खोलिकै नैन॥ सहित पषाण बात अति रूप। तिन्हैं उडावन चाहत भूप॥ टूटिगिरत जे तरु झकझोर। तिनको होत शब्द अतिघोर॥ गिरि फाटत कै गगण महान। असो होत शब्द अतिमान॥ भए बातमें मोहित सर्व। ऐसो मानत शब्द अखर्व॥ शिला वृक्ष हाथन्हसों टोय। तहाँ सरकि बैठत तन गोय॥ भीमसेन लै धनुष महान। कृष्णाकों गहिकै बलवान॥ आडम्ब तरुको गहि जाय। बैठे महा दुःखकों पाय॥ धौम्य सहित नृपधर्म नरेश। छपे सघन बनमें कछ देश॥ अग्निहोत्र सहदेव सुजान। गिरिकन्दरमें छपे महान॥ लोमस नकुल विप्रगण जौन। वृक्षनमध्य सहित तौन। मन्दभयो जब कछुक समीर॥ तबआए घन उमडि गँभीर। बरसन

लागे धारा धारि। चहूँ ओरते उमडो बारि॥ फिरति नचति चपला चहुँ ओर। बारिधार धाइ अतिघोर॥ उमडी नदी पर्वताधीन। कलुष सफेण भयंकर पीन॥ मिटो बात सह बृष्टि महान। ज्यो दिवाकर जब सुखदान॥ ह्वै एकत्र लहि कुशल अनूप। चले गन्धमादनको भूप॥ एककोश जब गए नरेश। उच्च निच्च नाघत बऊदेश॥ जानु पकरि कै कृष्णा भूप। बैठि गइथकि दुःखितरूप॥ सलिल बातको लहि उतपात। सुकुमारी अति कम्पित गात॥ परी भूमिपर पाय पसारि। भरी मोहसों गतिमति हारि॥ नकुल देखि कै सहसा धाय। भरे दुःखसों पकरो आय॥ *॥ नकुल उवाच॥*॥ यह पाञ्चाल राजजा भूप। गिरो भूमिपै व्यथित स्वरूप॥ भरी दुःखसों देखऊ आय। आखासन कीजै सुखदाय॥*॥ बैशम्पायन उवाच॥*॥ राजा सुनत नकुलके बैन। बगि गए तहँ भरे अवैन॥ भीमसेन सहदेव समेत। आए वेग तहाँ हतचेत॥ लखि बिवर्ण बदना नृप ताहि। धरो अङ्कमे दुख अवगाहि॥ युधिष्ठिरउवाच॥ रचित सदन सेज अभिराम। ताको उचित जान छबिधाम॥ दुःखित परी भूमि पर तौन। करति कमलसे पाइन्ह गौन॥ ममकृत कर्म उपाधि हि पाय। ऐसो दुख यह पावति होय॥ रहा युत नहि हमको योग। ताको हम यह पावत भोग॥ जातैं कृष्णा सह इत आय। फिरत बिपिनिमे यह दुखपाय॥ फिरत बिपिनिमे कृष्णा सङ्ग। जहाँ व्याघ्र मृग बृक बऊरङ्ग॥ सुख लहि है सबभांति उदार। पाय पाण्डवनको भर्त्तार॥ यातें दीन्हों द्रुपद बिबाहि।यह दुख परो बिपिनिमे ताहि।।लही न सुख पथश्रमकों पाय। चिति पर परो मृतक सम हाय॥ ममकृत पापकर्म फल जौन। प्राप्त भयो एहि बनमे तौन॥ बैशम्पायनउवाच॥ करत बिलाप देखि नृपधर्म। धौम्यादिक जे द्विजवर पर्म॥ आए तहाँ दुखित अतिमान। आशीर्बाद कियो सुखदान॥ जप रचोघ्नमंत्रको कीन्ह। धौम्यादिक सब ऋषिए प्रवीन॥ ऋषिन्ह कियो जप मंत्र सुपर्म। शीतलकर फेरो नृपधर्म॥ कियो समीर सींचि मुख बारि। कछु चैतन्य भई सुकुमारि॥ कृष्णाजिन पर दियो सुताय। धर्मनृपति करसों गहि ल्याय॥ अरुण कमलसे कोमल पाय।लत्तख भरे परम सुखदाय॥ चिति परशनके योग्य न जौन। चलत गहन गिरि भू पर तौन॥ इमि कहि समाधानके बैन। आखासन करि कै मतिऐन॥ कहो भीमसों धर्मनरेश। यह बऊगिरिसे दुर्गम देश॥तामे कृष्णा भीम सुजान। कौनभांति चलि है सुखदान॥ भीमसेनउवाच॥ तुम्हैं राजपुत्रिको भूप। सहित नकुल सहदेव अनूप॥ हम लै चलि हैं सुनऊ नरेश।करऊ बिषाद न तजऊ यदेश॥ बिहग घटोत्कच मोहि समान। तुम सबको वहि है बलवान॥ बैशम्पायनउवाच॥ आज्ञा दियो सुनत नृपधर्म। स्मर्ण तासु किय भीम सुपर्म॥ करत स्मर्ण घटोत्कच बीर। तिहि आयो ऊ भरो गभीर॥ जोरे अञ्जलि आगे आय। ठाढो भयो बन्दि पितुपाय॥ बन्दि पाण्डवन द्विजन उदार। आमिष सहित लहो सत्कार॥ *॥ घटोत्कचउवाच॥ *॥ स्मर्ण मात्र तो आयो

व०प० [illegible] सो कहज्ञ गँभीर ॥ आज्ञा करज्ञ करैां सो सर्ब । पिता तिहारो काय्य अखर्ब ॥ यह [illegible] भीमसेन सुखपाय।लियो घटोत्कचको उरलाय॥ युधिष्ठिरउवाच ॥सूर बली धर्मज्ञ उदार। [illegible] औरस पुत्र कुमार।।तो भुजबलतें जान उदार।चहैं गन्धमादनके पार॥ वैशम्पायनउवाच॥ [illegible] वचन जानि कै भीम ।कहो घटोत्कचसों बलसीम ॥ भीमउवाच ॥पुत्र श्रान्त तव माता पर्म। [illegible] तुम्हैं वाहिवो धर्म॥हम सब मध्यकन्ध पर राखि। चरज्ञ गगणपथ मे भ्रमनापि। ऐसें करज्ञ [illegible] तुम तात। होय न पीडित जों तो मात ॥ घटोत्कचउवाच॥ धर्मराज कृष्णा सह धैाम्य । तुम [illegible] सुन्दर सैाम्य॥ हम बहवेमे सबे समर्थ। खेचर औार सहाय किमर्थ॥ खेचर और जो [illegible] साथ। सकल द्विजनकों वहि हैं नाथ ॥ ऐसे बोलि घटोत्कच वीर । पाण्डुसुतन्ह सह [illegible] ॥ लियो कन्ध पर शीघ्र चढाय। चलो गगणपथमे अतिकाय॥ सिद्ध मार्ग गहि [illegible] भूप । चले गगणसे दिनकर रूप॥ और रहे जे द्विजवर काय । तिन्हैं राक्षसन्ह लिये [illegible] ॥ देखत [illegible] उपवन रमणीय। बीशाला बदरी कमनीय॥ राक्षस तहँ ले गए उताल्ल। [illegible] सब मार्ग बिशाल॥ म्लेच्छाकीर्ण लखत बज्ञदेश। रत्नके जहँ आकर बेश ॥ छोटे [illegible] गिरि सर्ब। जहँ बिद्याधर बसत अखर्ब ॥ किन्नर वानर बसत उदार ॥ गन्धर्बनको जहँ [illegible] ॥ नानाभाँति मृगनकी जाति । सिंह बराह गजनकी पांति ॥ नानाजाति बिहंग बज्ञ [illegible] बहिनको गिरि बर सङ्ग ॥ उत्तरकुरु देखत बर भूप । शङ्कर गिरिको देखो रूप॥ [illegible] सुस्थान। बदरी निकट लखो सु उदान॥ दिव्य जहां पादप अभिराम । मानो [illegible] भास॥ तहां लखी बदरी नृपधर्म। वृत्तस्कन्ध जास अतिपर्म ॥ अविरल छाया [illegible] पत्र सचिक्कन हरित गँभीर॥ शाखा अति विशाल बिस्तीर्ण । स्वाद भरे फलसों [illegible] ॥ महर्षि जिहिँ सेवत अभिराम। प्रमुदित पक्षिनको निजधाम ॥ हैं न मक्षिका जेहां [illegible] सलिल प्रसंश ॥ कोमल भूमि हरित तृण सर्ब। देवन सह सेवत गन्धर्ब॥ [illegible] । देखि भूप सह द्विजगण भ्रात॥ ऐसो लखि भूभाग अनूप । तात [illegible] नारायण आश्रम यत्र। गए सहित द्विज भ्रातन्ह तत्र ॥ तमस रहित [illegible] । [illegible] लगति उदार ॥ शीत उष्ण जहँ सदा समान। ऋषिगण सेवित [illegible] कर्म बिरहित नर जैान । आय सकत नहिँ तेहँा तैान ॥ बलि होमार्चित [illegible] द्विव्यसों रचित अखर्ब ॥ यज्ञ सदन तहँ बने अनूप । स्रुवा चमस मखपात्र [illegible] भरे सपर्म। वेदघोषसों नादित पर्म॥ आश्रम तैान सेइवे योग । जैान [illegible] ब्रह्म श्री ऋषि अभिराम ।सेवत जाहि तेज तपधाम॥ फल मूलाशन [illegible] बर बास ॥ सूर्य्य अग्निसम जिनको रूप । आत्मज्ञानसों भरे [illegible] नृप धर्म । गए शैाच करि बिधिवत पर्म ॥ दिव्य ज्ञानतें
[illegible] महर्षि महान। धर्म नृपतिकों

लखि सुखदान॥ आशीर्वाद दियो तिन भूप। वेदपाठमे निरत अनूप॥ पावक सदृश मुनिन्ह सत्कार। धर्मनृपतिको कियो उदार॥ दियो मूल फल पुष्प सवारि। भए प्रसन्न भूप सो धारि॥ शक्र सदन सम आश्रम तौन। भरो सुगन्ध स्वर्ग सम जौन॥ धर्मनृपति सह कृष्णा भ्राता तहँ प्रवेश कीन्हों अवदात॥ साङ्ग वेदपारग वर विप्र। सहसन्ह सङ्ग लिए शुचि छिप्र॥ तहां लखो नृपधर्म महांन। नर नारायणके सु स्थान॥ भागीरथी निकट अभिराम। रमे भूप देखत छविधाम॥ स्रवत मधुर मधु कल फल यत्र। बसत ब्रह्मऋषि तपमय तत्र॥ तहां जाय कौरव तपरासी विप्रन्ह सहित कियो सुख बास॥ स्वर्णशिखर गिरि लखो अनूप। जहां बिन्दुसर अनुपम रूप॥ कृष्णा सह बिहरे तहँ पर्म। पाई मनोरम बन नृपधर्म॥ तहँा तुङ्ग तरु लहि फलभार। रहे नमित सम क्षमित उदार॥ कोकिल कूजत गुञ्जत भौंर। जिन पैं भए रहत निति चौंर॥ पद्माकर सह पद्म अनूप। अति रमणीय लखे तहँ भूप॥ सौरभ भरो बऊत जहँ पौन। करत प्रसन्न पाण्डवन्ह जौन॥ सीता सुर सरिता अभिराम। तामे तीर्थ पुण्यके धाम॥ बिशाला बदरीके नृप पास। करैं देवऋषि जेहँा बास॥ देव पितृ ऋषि तर्पण भूप। तहां बिहित बिधि कियो अनूप॥ बसे द्विजन सह तहँ नृपभान। कृष्णा कोडन लखत सुजान॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तहां बसे षटनिशा सुधीर। लखिबेंहेतु धनञ्जय बीर॥ तब ईशान दिशातैं पौन। बिधि इच्छातें करि अतिगौन॥ सहस पत्र पङ्कज अभिराम। तहँा ल्याय डारो छबिधाम॥ ताहि लखो पांचाली भूप। दिव्य गन्धसो भरो अनूप॥ सौगन्धिक लहि सौरभ चैंन। कहे समोद भीमसो बैंन॥ भीम पद्म यह अति कमनीय। लगत मोहि अतिशय रमणीय॥ धर्मराजकों देहैं जाय। यह सुगन्ध अति सुन्दर काय॥ जौं हम तव प्रियकारनि शर्म। तौ ल्यावऊ पङ्कज यह पर्म॥ ले जै हैं काम्यकको तौन। ल्याय देहुगे पङ्कज जौन॥ भीमसेनसों कहि इमि बैंन। गई धर्मनृप पहँ छविचैन॥ दियो भूपकों पङ्कज तौन। कहो याहि ल्यायो द्रुत पौन॥ जानि द्रौपदीको मनकाम। लेन चले पङ्कज बलधाम॥ रुक्मपृष्ठि धरि धनुष बिशाल। आशीविषसे बाण कराल॥ चले वायु सन्मुख बलवान। कनककल्हार हरण सुखदान॥ करत उध्य मृगपतिसो गौन। लखो वन्यजीवन बलभौन॥ श्रम भय जात न जाके पास। करें बाऊबलको बिश्वास॥चढो शैलपर आतुर बीर। देखत गिरि छबि गहण गँभोर॥ किन्नर सेबित गिरिवर तौन। लखत तास सुषमा मतिभौन॥ स्रवत धातु धारा बऊ रङ्ग। चित्र बिचित्र मृगणके सङ्ग॥ कूजत कलरव गुञ्जत भौंर। भए सुपुष्पित तरुणके चौंर॥ कुसुमोद्भव वर गन्ध गँभीर। घ्राण करत पांडव बरबीर॥ मारुत गन्ध भरो तहँ आय। परसत तास अङ्ग सुखदाय॥ देखि भरो श्रमसो सुत गात। कविकर परस हरत मनु तात॥ गिरि निर्झर इमि लसत उदार। मनु पहिरें मुकुतनके हार॥ नदी प्रवाह लसत छबिरास। परो छूटि [illegible] मनु बास॥ प्रिया मनोरथ करिबे काम। गिरिपर चढो जात बलधाम॥ प्रांशुकनक [illegible]

व॰प॰ कारण तात सो कहङ्ग गँभोर ॥ आज्ञा करङ्ग करैां सो सर्ब । पिता तिहारो काय्य अखर्ब ॥ यह सुनि भीमसेन सुखपाय।लियो घटोत्कचको उरलाय॥ युधिष्ठिरउवाच॥सूर बली धर्मज्ञ उदार। तुममम औरस पुत्र कुमार॥तो भुजबलतें जान उदार।चहैं गन्धमादनक पार॥ वैशम्पायनउवाच॥ भ्राता वचन जानि कै भीम।कहो घटोत्कचसों बलसीम॥ भीमउवाच॥पुत्र श्रान्त तव माता पर्म। कामगतुम्हैं बाहिबो धर्म॥हम सब मध्यकन्ध पर राखि। चरङ्ग गगणपथ मे भ्रमनापि॥ ऐसें करङ्ग गमन तुम तात। होय न पीडित जों तो मात ॥ घटोत्कचउवाच॥ धर्मराज कृष्णा सह धैाम्य। तुम माद्रीसुत सुन्दर शैाम्य॥ हम बहबेमे सबे समर्थ। खेचर और सहाय किमर्थ॥ खेचर और जो मेरे साथ। सकल द्विजनकों बहि हैं नाथ ॥ ऐसे बोलि घटोत्कच बीर । पाण्डुसुतन्ह सह कृष्णा धीर ॥ लियो स्कन्ध पर शीघ्र चढाय। चलो गगणपथमे अतिकाय॥ सिद्ध मार्ग गहि लोमस भूप। चले गगणमे दिनकर रूप॥ और रहे जे द्विजवर काय । तिन्हैं राक्षसन्ह लिये उठाय॥ देखत बन उपबन रमणीय। बीशाला बदरी कमनीय॥ राक्षस तहँ ले गए उताल। लघुपन्था सम मार्ग बिशाल॥ म्लेच्छाकीर्ण लखत बङ्गदेश। रत्ननके जहँ आकर बेश ॥ छोटे बडे लखत गिरि सर्ब। जहँ बिद्याधर बसत अखर्ब॥ किन्नर वानर बसत उदार॥ गन्धर्बनको जहँ परिबार॥ नानाभाँति मृगनकी जाति । सिंह बराह गजनकी पाँति॥ नानाजाति बिहँग बङ्ग रङ्ग।जाल नदिनको गिरि बर सङ्ग ॥ उत्तरकुरु देखत बर भूप । शङ्कर गिरिको देखो रूप॥ नरनारायणको सुस्थान। बदरी निकट लखो सु खदान॥ दिव्य जहां पादप अभिराम । मानो फल फूलनके धाम॥ तहां लखी बदरी नृपधर्म। बृत्तस्कन्ध जास अतिपर्म ॥ अबिरल छाया स्निग्ध शरीर। पत्र सचिक्कन हरित गँभीर॥ शाखा अति बिशाल बिस्तीर्ण । स्वाद भरे फलसों आकीर्ण॥ महर्षि जिहिँ सेवत अभिराम। प्रमुदित पक्षिनको निजधाम ॥ हैं न मक्षिका जेहां दंश।मूल फलोदक सहित प्रसंश॥ कोमल भूमि हरित तृण सर्व। देवन सह सेवत गन्धर्व॥ भूमि सचिक्कन सम अवदात। देखि भूप सह द्विजगण भ्रात॥ ऐसो लखि भूभाग अनूप । तात कन्धतें उतरे भूप॥ नर नारायण आश्रम यत्र। गए सहित द्विज भ्रातन्ह तत्र ॥ तमस रहित बिन रबि सञ्चार। क्षुधा तृषा नहि लगति उदार॥ शीत उष्ण जहँ सदा समान। ऋषिगण सेवित श्रीसुखदान। धर्म कर्म बिरहित नर जैान । जाय सकत नहिँ तेहाँ तैान ॥ बलि होमार्चित लिम्पित सर्ब। पुष्प दिव्यसों रचित अखर्ब॥ यज्ञ सदन तहँ बने अनूप । स्रुवा चमस मखपात्र सुरूप॥ धरे कलस जल भरे सशर्म। वेदघोषसों नादित पर्म॥ आश्रम तैान सेद्रबे योग । जैान हरत श्रमखिन्न रोग॥ भरे ब्रह्म श्री ऋषि अभिराम।सेवत जाहि तेज तपधाम॥ फल मूलाशन दायाराम। कृष्णाजिन धारें बर बास ॥ सूर्य्य अग्निसम जिनको रूप । आत्मज्ञानसों भरे अनूप ॥ ऐसे ऋषिन्ह पास नृप धर्म । गए शोच करि बिधिवत पर्म ॥ दिव्य ज्ञानतें मुनिन्ह बिचारि । आए धर्मनपति निरधारि॥ भए प्रसन्न महर्षि महान। धर्म नृपतिकों

लखि सुखदान॥ आशीर्वाद दियो तिन भूप। वेदपाठमे निरत अनूप ॥ पावक सदृश मुनिन्ह सत्कार। धर्म्मनृपतिको कियो उदार ॥ दियो मूल फल पुष्प सवारि। भए प्रसन्न भूप सो धारि॥ शक्र सदन सम आश्रम तौन। भरो सुगन्ध स्वर्ग सम जैान॥ धर्मनृपति सह कृष्णा भ्रात।तहँ प्रवेश कीन्हों अवदात ॥ साङ्ग वेदपारग बर विप्र। सहसन्ह सङ्ग लिए शुचि छिप्र॥ तहां लखा नृपधर्म महांन। नर नारायणके सु स्थान॥ भागीरथी निकट अभिराम। रमे भूप देखत छविधाम॥ स्रवत मधुर मधु कल फल यत्र। बसत ब्रह्मऋषि तपमय तत्र॥ तहां जाय कौरव तपरास। बिप्रन्ह सहित कियो सुख वास ॥ स्वर्णशिखर गिरि लखो अनूप। जहां बिन्दुसर अनुपम रूप॥ कृष्णा सह बिहरे तहँ पर्म। पाई मनोरम बन नृपधर्म ॥ तहँा तुङ्ग तरु लहि फलभार। रहे नमित सम अमित उदार ॥ कोकिल कूजत गुञ्जत भौंर। जिन पैं भए रहत निति चैांर॥ पद्माकर सह पद्म अनूप। अति रमणीय लखे तहँ भूप॥सैारभ भरो बहुत जहँ पैांन। करत प्रसन्न पाण्डवन्ह जैान॥ सीता सुर सरिता अभिराम। तामे तीर्थ पुण्यके धाम॥ विशाला बदरीके नृप पास। करैं देवऋषि जेहँा बास॥ देव पितृ ऋषि तर्पण भूप। तहां बिहित बिधि कियो अनूप॥ बसे द्विजन सह तहँ नृपभान। कृष्णा क्रीडन लखत सुजान॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तहां बसे षटनिशा सुधीर। लखिवेंहेतु धनञ्जय बीर ॥ तब ईशान दिशातैं पैांन। बिधि इच्छातें करि अतिगैांन॥ सहस पत्र पङ्कज अभिराम। तहँा ल्याय डारो छबिधाम॥ ताहि लखो पांचाली भूप। दिव्य गन्धसो भरो अनूप॥ सैागन्धिक लहि सैारभ अैन। कहे समोद भीमसो बैंन॥ भीम पद्म यह अति कमनीय। लगत मोहि अतिशय रमणीय॥ धर्मराजकों देहैां जाय। यह सुगन्ध अति सुन्दर काय॥ जैां हम तव प्रियकारनि शर्म। तै ल्यावहु पङ्कज यह पर्म॥ ले जै हैं काम्यककों तैांन। ल्याय देहुगे पङ्कज जैांन॥ भीमसेनसों कहि इमि बैंन। गई धर्मनृप पहँ छविअैन॥ दियो भूपकों पङ्कज तैांन। कहो याहि ल्यायो इत पैांन॥ जानि द्रैापदीको मनकाम। लेन चले पङ्कज बलधाम॥ रुक्मपृष्ठि धरि धनुष बिशाल। आशीबिषसे बाण कराल॥ चले बायु सन्मुख बलवान। कनकल्हार हरण सुखदान॥ करत उध्य मृगपतिसो गैान। लखो बन्यजीवन बलभान॥ श्रम भय जात न जाके पास। करैं बाहुबलको बिश्वास॥चढो शैलपर आतुर बीर। देखत गिरि छवि गहण गँभोर॥ किन्नर सेवित गिरिवर तैांन। लखत तास सुषमा मतिभैांन॥ लखत धातु धारा बहु रङ्ग। चित्र बिचित्र मृगणके सङ्ग॥ कूजत कलरव गुञ्जत भैांर। भए सुफुल्लि तरुणके चैांर॥ कुसुमोद्भव वर गन्ध गँभीर। घ्राण करत पांडव बरबीर॥ मारुत गन्ध भरो तहँ आय। परशत तास अङ्ग सुखदाय॥ देखि भरो श्रमसो सुत गात। करिकर परश हरत मनु बात॥ गिरि निर्झर इमि लसत उदार। मनु पहिरें मुकुतनके हार॥ नदी प्रवाह लसत छविरास। परो छूटि गिरिका मनु बास॥ प्रिया मनोरथ करिबें काम। गिरिपर चढो जात बलधाम॥ प्रांशु कनक सम

ब०प० सुन्दर काय । सिंह समान बनक सुखदाय ॥ प्रिया कामना करिबें काम । जात लखत गिरि गहण ललाम ॥ प्रियन्ह पास किन्नर गन्धर्ब । बैठे देखत ताहि अखर्ब ॥ समुजत क्लेश सुयोधन कृत्य । लहत न मनमे बीर निवृत्य॥ बिपिनिबासिनी कृष्णा तास । प्रिय कारबें चाहत मतिरास॥ बसत स्वर्गमे अर्जुन बीर । चहत आगमन ताको धीर ॥ पुष्प हेतु हम आए अत्र । करि हैं कहा युधिष्ठिर तत्र ॥ स्नेहबश नहिं बल बिस्वास । माद्रीसुतन्ह राखि हैं पास ॥ मिलि हि कमल केहि भाँति उताल । यह चितचिन्ता धरें बिशाल ॥ गिरि कानन छबि देखत जात । करत भूमि कम्पित पदघात ॥ गजन्ह करत कम्पित बलवान । सिंह व्याघ्र मृग मर्दि महान ॥ जात गिरावत तरु बर बोर।चढो गन्धमादन पर धीर॥ गरजो घनसम बियुत मान । भजे व्याघ्र तजि गुहामहान॥ खग तरु तजि भजि चले उडाय । मृगगण बसे औरबन जाय ॥ करिनिन्ह सहित भजे गज राज। गए औरबन सहित समाज॥ मत्त नाग करिनिन्ह सङ्ग जैन । चले भीमपहँ क्रोधित तैन ॥ सिंह व्याघ्र ते अतिबलवान । चलेभीमसों लरन असान ॥ भीमसेन तब भुजबल धारि । गज गहि मारत गजपर डारि ॥ सिंह पकरि कै ताहि घुमाय । मारत सिंहनकों अतिकाय ॥ करतलसों ऋक्षादिक जान । महिष बराह हने सब तैन ॥ डारत मूत्र पुरीष पराय । बसे औरबनमे ते जाय ॥ गरजे भीमसेन अतिघोर । भरो दिशा विदिशन्हमे रोर ॥ लखो गन्धमादन पर भूप । बन कदलीको भीम अनूप । तामे गए बेगसों बीर । मथन कियो बन तैन गभीर ॥ कदलीतरु गहि खेत उखारि । देत तिन्हैं छिति ऊपर डारि ॥ गर्जो फेरि सिंह सम बीर । पशु पक्षी सुनि भजे अधीर ॥ जलवासी पक्षी है जैन । उडे जलार्द्र पक्ष सुनि तैन ॥ लखि जलचर पक्षिनको बीर । गए तिन्है अनुसरि सर तीर ॥ कनक कदलिनको चहुँ पास । सरके लसत बिपिन छबिरास ॥ कनक कदली कम्पित पौन । सरहि करै बीजन मनु तैन॥ पैठे सरमे कुरुबर भीम। फुल्लित कमल भरो छबिसीम ॥ महामत्त गजसे बलधाम । क्रीडा करण लगे अभिराम ॥ क्रीडा करि सरसाह गँभीर । आयो निकसि बाहिरे बीर ॥ गिरि ऊपर करि चलन बिचार । शङ्खधमित किय भीम उदार॥ कियो यथा बल धमित प्रकाण्ड । ध्वनिसों मनङ्ग फटत ब्रह्माण्ड ॥ सुनत शङ्खधुनि गुहन्ह महान।दिए निकारि सिंह बलवान॥सिंह कुञ्जरनन्ह कीन्हों नाद । सुनत महान शङ्खको क्राद ॥ सो सुनि नाद बीर हनुमान । भ्राता भीम जानि सुखदान ॥ मगण गमनकी रोकी राह । प्रीति भीम पर करि कपिनाह ॥ नहि एहि पथ व्है आगे जाय । धर्षन साप लहै सुखदाय ॥ जहँ सङ्की रन पथ यतिमान । तहाँ जाय रोको सुखदान ॥ रक्षण तास चाहि कपिबीर । तहँ सोए धरि बिपुल शरीर॥ इन्द्र ध्वज सम उन्नत काय । हनत पुच्छ छितिपर कपिराय ॥ तासों होत सु शब्द महान । इन्द्रबज्रके पात समान ॥ लांगुल शब्दतें गिरिवर भूप । लागो हलन खलन अतिरूप ॥ सुनत भीम सो शब्द गँभीर । रोमाञ्चित भो सकल शरीर ॥खखन शब्दको जन्मस्थान। चले कदली

बन बलवान॥ लखो कदलीमे आसीन । हनुमत बीर शिला परवीन ॥ बली गौर बिद्युत सम काय। बज्रपात सम शब्द सुनाय॥ पीन बाऊ शिर अधर ललाम। स्कन्ध बच्छ उन्नत कटि छाम॥ बक्र अग्र गुरु लोम महान । लसत पुच्छ अतिध्वजा समान ॥ ऋस्व ओष्ट जिव्हा मुख लाल। चल भ्रू आसी खुले कराल ॥ उवत सुधाधरसो मुख तास । भीमसेन देखो छबिरास ॥ कनक कदली बनमे सैन। करत अनल सम तेजस्रैन ॥ मधु पिङ्गल चखसों कपिवीर। लखो भीमकी ओर गभीर। कपिकों लखो भीम तब जाय । पथ रोके सोअत अतिकाय॥ निर्भय भीम जाय कपि पास । सिंहनाद कीन्हों बलरास ॥ सुनि बन जीव भजे भय भारि । कपि देखो कछु नैन उघारि॥ सस्मित लिए अनादर बैन। कहो भीमसों अतिबलऐन ॥ * ॥ हनुमानुवाच ॥ * ॥ सरुज बृद्ध सुखसोवत मोहि । दियो जगाय उचित नहि तोहि॥ भूत दयाहै तोहि समान। होत मनुज बुध ज्ञान प्रधान॥ हम नहि जानत धर्म बिधान। तिर्यग् योनि ते सुनऊ सुजान॥ काय बाक मनतें बुध पर्म । धर्म बिघाती करत न कर्म ॥ नहि जानतहो धर्म निधांन। तुमसे ए नहि बिदुष सुजान॥ कहऊ कौंन तुम कारण कौंन। आतें कीन्हों एहि बन गौन॥ इहा मनुज कोउ सकत न आय। कहां गमनको तो व्यवसाय ॥ गिरि आगें यह दुर्गम काय । खेचर बिना सकत नहि जाय॥ देव लोकको पथ यह रम्य। है मानुषकों सदा अगम्य ॥ बारत कृपा सहित मतिभौंन। है अशक्य आगेको गौंन ॥ भए कुशल सों इहा प्रवृत्त। खाय पक्क फल होऊ निवृत्त॥ नतरु लहऊगे बध बलऐन। गहऊ हमारो हित मित बैन ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनि कपोन्द्रके वचन ललाम। बोले भीमसेन बलधाम॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ को तुम कपि तन धरि मतिऐन। हमसों ऐसे बूझत बैन॥ हम छत्री शशिसम्भवबंश। पाण्डव कुन्ती तनय प्रसंश॥ बायु तनय हम भीम प्रसिद्ध। सुनि कपि सस्मित बचन सुस्निद्ध॥ हनूमान इमि बोले बैन। हनुमानुवाच ॥ * ॥ बानर हम पद देत तुम्हैं न॥ साधु जाऊ के फिरि ए बीर। इहिँ बिरोधकों लहऊ गभीर॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ होय बिरोध भलोकै मोहि। हम कपि नहीं बूझि हैं तोहि॥ इततें जाऊ छोडि पथ देऊ । नतरु कष्ट हमसों मति लेऊ ॥ * ॥ हनुमानुवाच ॥ * ॥ नही सक्य उठिबेको मोहि। व्याधिग्रस्त निजु जाबैं तोहि॥ तो नाघऊ मोकों बलभौंन। जौंन अवश्य करिबे है गौंन॥ * ॥ भीमसेनउवाच॥ * ॥ निर्गुण है परमात्मा जौंन। बसत देहमे सबके तौंन॥ तातें नही नाघिबो तोहि। बेद बिहित है सम्मत मोहि ॥ नाघत तो सहअवल महांन। ज्यौं नाघो सागर हनुमान ॥ * ॥ हनुमानउवाच ॥ * ॥ नाघो सागर सो हनुमान। रहो कौंन सो कहऊ सुजान॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ भ्राता मम गुण मति बलवान। रामायणमे सुनियत आन॥ गो सीतहि खोजन बलवान । शतयोजन सागरको मान ॥ गयो नाघि गोपद से बीर।

८० सो भ्राता मम कपि रणधीर ॥ हम ताके बल वीर्य समान । तो निग्रह करिहु बलवान ॥ उठङ्क छोडि प्रन्था यह देऊ । बल पौरुष मेरो लखि लेऊ ॥ जौ न मानि हौ शासन मोर । तौ यमधाम लखऊगे घोर ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बल उनमत्त जानि हनुमान । बिहसि कहो यह वचन सुजान ॥ * ॥ हनुमानुवाच ॥ * ॥ नही शक्ति उठबेकी मोहि । कृपा सहित यह करिबे तोहि ॥ पुच्छ हमारी दीजै टारि । चले जाहु करि पथ निरधारि ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच यह हनुमतके सुनिकै बैन । शक्ति हीन गुणिकै मतिश्रैन ॥ पूछि पकरिकै याहि उठाय । यम सादन को देउँ पठाय ॥ पूछि निरादर सों कर बाम । भीमसेन पकरो बलधाम ॥ बल करि पूछ न शके हिलाय । दुहूँ पाणि सो पकरो जाय ॥ सकै न पुच्छ टारि बलधारि । भरे महाश्रम सों हिय हारि ॥ बैठे तजि कपिके ढिग जाय । भरे लाजसो कम्पित काय ॥ कहन विनीत लगे इमि बैन । क्षमापराध करहु बलश्रैन ॥ हो तुम सिद्ध देव गन्धर्व । बूझत हैं सो कहहु अखर्व ॥ रहे धारि इत कपिको रूप । कहहु शिष्य मम जानि अनूप ॥ * ॥ हनुमानुवाच ॥ * ॥ बूझत हमैं जानिवैं जौंन । कहत सविधि सुनु पाण्डव तौंन ॥ ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ * *

केशरीके क्षेत्रमे हम वायुते उत्पन्न । भए बानर कारणान्तर पाय गुण सम्पन्न ॥ भानु सुत सुग्रीव सुरपति पुत्र वालि अनूप । भयो बानर युद्धमनको बालि अति बलरूप ॥ भई हमसों मित्रता सुग्रीवसो सुखदाय । काढि दिय सुग्रीवको कछु बालि कारण पाय ॥ कियो गिरि ऋषिमूक पर सुग्रीव हम सहवास । राम नामक भये दशरथतनय जगत निवास ॥ विष्णु मानुष रूप धरिकै कियो भूमि विहार । गए बन लहि तात आज्ञा बन्धुसहित सदार ॥ धरे धनुष तुणीर दंडकमे बसे बलधाम । हरी रावण राम भार्या जनकजा अभिराम ॥ धरि मरीचि विचित्र मृगको रूप तेहा आय । कियो वञ्चित रामको सिय हरी छल करि जाय ॥ राम हेरत जनकजाको सहित भ्राता वीर । मिले कपि सुग्रीवसों ऋषिमूक ऊपर धीर ॥ भई मैत्री राम सों सुग्रीव सों अभिराम । बालिको हरि राज्य ताको दियो राम ललाम ॥ राज लहि सुग्रीव कोटिन्ह दिए प्लवग पठाय । ढूढिबेको जनकजाको चोर चारों जाय ॥ गए दक्षिण दिशाको हम सहित कपि समुदाय । लही सुधि सम्पातिसों हम सियाकी सुखदाय ॥ रावणालय मै जनकजा हैं कहो तेहि गिद्ध । जानि करिवें राम कारज सकल भाँति समृद्ध ॥ नाधिकै हम सिन्धु सीतहि देखि लङ्का जारि । कहो सो रघुबीर सो वृतान्त आनद भारि ॥ बचन मेरो सुनत श्रीरघुबंशमणि अभिराम । सेतु बाधो सिन्धुमे सुग्रीव सह बलधाम ॥ सहित बानरवृन्द रघुवर जाय बारिधि पार । कियो राक्षस राजको परिवार सह सँहार । राज्य लङ्काको विभीषणको दियो रघुबीर ॥ विष्णु भक्ति विचारि ताको दयो धर्म गँभीर । व्योमजान महानमें चढि राम राजिव नैन । गए कोशल पुरीको सह जनकजा छविऐन ॥ भयो श्रीरघुबीरको जब राज्यको अभिषेक । मागि राजिव नैनसों हम लियो यह बर एक ॥ होय जबलौं

लोकमें यह कथाते श्रीराम। देहको यह धरें तबलो सुनो सुखद ललाम ॥ कहो राम तथास्तु सीता भरी दायाधर्म। दियोवर तुम रहो जहँ तहँ मिलै भोजन पर्म॥ मिलत हमको नित्य भोजन स्वाद सुखद ललाम। रहि एकादश सहसवर्ष सु भूमि ऊपर राम ॥ गए कोशल पुरीको सगँ लए अपने धाम। बसत हम एहि विपिनिमें यह पाइकै मनकाम ॥ रहत सह अप्सरन्ह गावत राम गुण गन्धर्व। इहा हम सो सुनत पावत मोद परम अखर्व ॥ मनुजको नहि गम्यहै पथ इहांतें अति उद्ध। देव सेवित देश आगे कियो यातै रुद्ध ॥ हनै गो कोउ दहै गो सुर भीम तुम्हहि विचारि। देवपथ इत जात नहि कोउ मनुज यह निरधारि॥ आइ यातें रोकि यहपथ रहे हम रणधीर। जानि भ्राता चहत तुमको सहित कुशल गँभीर ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ एहि भाँतिसो हनुमानके सुनि बचन भीम सप्रीति। बैंन ऐसे कहे फिरि कपिराजसों सह नीति ॥ चहत हम यह रावरेसों आपनो प्रिय जौंन। चहत देखन सिन्धुनांघत रूप धारो तौंन ॥ एहि भाँतिके सुनि भीमके प्रियबचन हसि हनुमान। कहन लागे जानि भ्राता कृपाकरि बलवान ॥ * ॥ हनुमानुवाच ॥ * ॥ नही तुमको देखिबेको शक्यहै वह रूप। नहीहैं वह काल अब तब रहो जौंन अनूप॥ नही कृतयुग नही त्रेता नही द्वापर भूप।है नहीं कलिकालमें वह पूर्व मेरो रूप॥ भूमि सरिता शैल भूरुह सिद्ध सुर ऋषि जौंन। युगनमें सबकालके सम सुनहु बर्तत तौंन ॥ बल प्रभाव शरीर युग सम बढत घटत अनूप। निबृत्त होउ सो देखिबेमें पूर्व मेरो रूप ॥*॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ युगनके आचार सह धर्मार्थ काम बिचार। कहहु लाभालाभ बिधिवत जन्म अरु संहार ॥ हनुमानुवाच ॥ * ॥ भीमसेन सु रहो कृत युगमें सनातन धर्म। सिद्ध मिलत पदार्थ सब नहि परत कीबे कर्म॥ धर्म दूषित होनहो नहि प्रजा होत न चीण। देवदानो परत सम लखि धरे समता पीन ॥ काल भव गुण पाय कृतयुग भयो नाम समान। नही क्रय बिक्रय रहो तब एक बेद महान ॥ करत चारो बरणहे नहि मानवीकृत जौंन। मिलत है सङ्कल्पसों फल सिद्ध चाहत तौंन॥ कर्म फलकी वासना बिन धर्म करहि प्रकाश। तौन युगमें व्याधि द्रोहि न नही इन्द्रीनाश ॥ नहि असूया नही रोदन नही दर्पबिकार। नही विग्रह द्वेष आलस पिसुनता सञ्चार॥ नही भय सन्ताप ईर्षा नही मत्सरचार। ब्रह्मपर सब योगकी गति लखत मनुज उदार ॥ जगत आत्मा बिष्णुहै तब धरे उज्ज्वल रूप। रहो चारोवर्णको कृतकर्म लच्चण भूप ॥ रहे कृतयुगमाह अपनो वर्ण धारे धर्म। समाश्रय आचार सम समज्ञान धारे पर्म॥ करतहे सम कर्म चारोवर्ण धर्म बिचार। ब्रह्मकोहे भजत सब धरि प्रणव मंत्र उदार॥ एक बेद सु एक धारे धर्म आश्रम चारि।नही आशा राखि फलकी करत कर्म बिचारि ॥ आत्मज्ञान समान समको रहो नित्यस्मरण। वर्णको हो धर्म कृतयुग माह चारो वर्ण॥ भए यज्ञ प्रवृत्त त्रेतामें फलाश्रित कर्म।रहो तब त्रय चरणसों सब बरण धारत धर्म॥ बिष्णु धारा वर्ण अपनो अरुण सु युग समान। क्रियाधर्म प्रवृत्त नर सब धरैं सत्य सुजान॥

व०प० सङ्कल्प फलकी प्राप्तिमे करि क्रिया करत उदार। चलतहे नहि धर्मते धरि दान तपस प्रचार॥ रहे त्रेतामाह नर धर्मस्थ कारक कर्म।रहे द्वापर माहँ आधो दोय पदते धर्म ॥पीतधारो विष्णु अपनो वर्ण सु युग समान। बेद चारो पढत कोऊ कोऊ तीनि सुजान॥ दोय कोऊ एक कोऊ पढतहे द्विज बेद।भिन्न भिन्न सुशास्त्रके मत क्रियनको बऊभेद॥भई राजस दानते सब प्रजा राजसरूप। एकबेद समस्तको नहि पढेगे सुखरूप॥ कियो चारि प्रकार यात बेदकों मुनिव्यास।सत्य द्वापर माहँ कऊ कऊ रहो द्विपद प्रकाश॥भए ह्रास स्वधर्मको भइ प्रगट नाना व्याधि। देवकृत तव प्रगट फैली वि विधि बिधिकी आधि॥आधि व्याधिनतें व्यथित नर करतहै तप जान। कामकामी स्वर्गकामी करत मख बिधि तैान। एहि भाँति द्वापरमे भईहै प्रजा सिगरी हीन। एक पदसों धर्म कलियुगमे रहै गे दीन ॥ भए तामस पायकै युग विष्णु श्याम सरूप। शान्ति ह्वै है धर्म यज्ञ समेत बेद अनूप॥ इति आलस व्याधि क्रोधहि आदिदे बऊ दोष। आदि नाना भाँतिसों बऊ प्रगटिहै करि रोष॥युगनके आवततें आवर्त्त लेहे धर्म। धर्मके आवर्त्ततें फिरि लोक ल्हहे पर्म ॥ तैान कलियुग होत अचिर प्रवृत्त हे कुरुबीर। चिरञ्जीव समान युगके धरत भाव गभीर॥ रूप मेरो देखिबेकी तुम्हें इच्छा जान। कार्य्य मे बिन अर्थके बुध करत इच्छा कैान॥ भीम हमसों जैान पूछो कहो हम सब तैान। युगनको व्योहार सो सुनि कीजिए अब गैान॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥ बिना देखें रावरो सा पूर्व रूप गँभीर। जाहिँगे नहि कृपा करिकै देऊ दर्शन बीर ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बचन सुनिकै भीमसो मुसुकायकै हनुमान। सिन्धु लङ्घन समै को सो धरो रूप महान ॥ चाहि कै प्रिय भीमको कपि बपुष धारो माम। कनकगिरि सम गगणलों अति तेज पुञ्ज ललाम ॥ अरुण चख रद तीक्ष्ण भृकुटी वक्र आनन लाल। लाँङ्गूल ताडन शब्दसों अति भरत भुवन विशाल॥ देखिकै हनुमानको सो महा अद्भुत रूप। भीमसेन सशङ्क मनमे भरे विस्मय भूप ॥ चण्डकर सो चण्ड पावक सदृश तेजस अैान। देखिकै भय भरे कम्पित भीम मूदे नैन॥ बिहसिकै तब भीमसों हनुमान बोले बैन। इहांलों मम रूप लखिवे शक्य तुम मतिअैन॥ बढैं याते और आगैं चहे जहँलो बीर। शत्रु लहि बलवान रणमे परे युद्ध गँभीर ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * देखि बर्द्धित महा कपिको बिंध्य गिरिसो काय । भए अतिशय भ्रान्त मानस भीम बिस्मय पाय॥ भरे अति रोमाञ्च अैसे भीम बोले बैन। जोरि अञ्जलि महा कपिकों जानि अति बलअैन ॥ लखो अतुल प्रमाण यह तन रावरो अभिराम। कायको संहार कीजै कृपाकरि बलधाम ॥ शक्य हम नहि देखिबेके रावरो यह रूप। अप्रमेय अदृश्य गिरि मैनाक सदृश अनूप॥ होत बिस्मय पास जाके तुम्हें सो रणधीर। रावणहि संहारिवेकों गए कैां रघुबीर॥ रहे लङ्कानाशिबेकों एक तुम सामर्थ। कियो सह सुग्रीव रघुबर इतो परिश्रम व्यर्थ ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बचन सुनिकै भीमके हनुमान अति बल अैन। फेरि अैसें कहन लागे स्निग्ध सुन्दर बैन ॥ सत्यहै जो

कहत हो तुम बचन सो कुरुनन्द। नहि मेरे तुल्य हो दशकन्ध राक्षस मन्द॥ मारते हम रावण वंश हि तो कीर्ति यह अभिराम। होति क्यों रघुबीर कीर्तिऊ लोकमे गुणधाम॥ रावण हिँ सह बंश हनि कै युद्धमे रघुनन्द। भरी कीरति मोक्षदा तिऊलोकमाह अमन्द॥ जाऊ तुम तहँ भ्रात प्रिय जहँ द्रौपदी नृपधर्म। बायु रक्षण करैंगे यह तीन पन्था पर्म॥ है जहां सौगन्धिपङ्कज तौन पथ यह जाम। देखि परत कुबेरके उद्यान ए अभिराम॥ करत रक्षण जास राक्षस यक्षगण गन्धर्ब। नहीं सहसा कीजियो तहँ जाय कार्य्य अखर्ब॥ कुसुम हरण न कीजियो तुम जाय आतुर बीर। देवता सबभाँति नरको मान्य सुनु कुरुधीर॥ होम पूजन मंत्र जप लहि नमस्कार सभाव। होत देव प्रसन्न याते देत नाना चाव॥ धर्म पालन कीजियो करियो न सहसा कर्म। श्रेष्ठ धर्म बिचारिवो धर्मस्थ है अतिपर्म॥ होत धर्म अधर्म सदृश अधर्म धर्म समान। याहि प्रथम बिचारि कै कृत करत हे मतिमान॥ आचार सम्भव धर्म है श्रुति धर्ममे हैं सर्ब। बेदमे सब यज्ञ सुरगण यज्ञमांह अखर्ब॥ बेद बिहित सु यज्ञतें सुर तृप्ति पावत पर्म। जीव उषनस कही नीति सु धरत भूप सधर्म॥ बणिज सेवा कृषी गो बृष अजाको प्रतिपाल। ब्राह्मणादिक बर्ण ऐसैं करत बृत्ति बिशाल॥ बिप्रको है धर्म केवल आत्मज्ञान बिचार। अध्ययन दान सुयज्ञ तीनोवर्ण करत उदार॥ देय यज्ञ कराय बेद पढाय प्रतिग्रह लेय। तीनि हैं ए धर्म द्विजके बिहितबिधि सुखदेय॥ प्रजा पालन धर्म क्षत्रिणको कहो अभिराम। वैश्यको है धर्म धनकी करै बृद्धि ललाम॥ शूद्र सेवन करै ब्राह्मणआदि जे त्रयवर्ण। होम ब्रत नहिँ शूद्रको है नही भिक्षा कर्ण॥ क्षात्र धर्म सो है तिहारो सुनऊ पाण्डुकुमार। ह्वै जितेन्द्री पालियेधरि शौम्य सील उदार॥ बृद्ध पण्डित सुमतिसों जो करत मंत्र बिचार। धराको सो करत शासन नतरु लहत बिकार॥ करत निग्रह अरु अनुग्रह समुझि कै जो भूप। जगतमे मर्य्याद बांधत सुनऊ तौन अनूप॥ देश दुर्ग अमित्र मित्र समेत सेना जौन। चारचखतैं बृद्धि क्षय निति लखै इनकी तौन॥ ग्रहण निग्रह कार्य्य साधत बुद्धिसों अभिराम। सामादि चारि उपाय करि कै भूप जे मतिधाम॥ करणीय कारज एकतैं कै करै चारि उपाय। सधत जैसें तथा साधत सुमति औसर पाय॥ मंत्रसों जेहि सिद्धि कीजै तौन द्विज बुध पास। मूढ बालाबाल लोभी खर्बसों न प्रकाश॥ उनमत्त मद्दिपसों न कीजै मंत्र कबहूँ आर्य्य। मंत्र लीजै बिदुषसों सामर्थसों सब कार्य्य॥ धर्म कारजमे करी धर्मज्ञ पास बिचार। अर्थसञ्चयमाह बूझी बिदुष बृद्ध उदार॥ क्लीब भक्षिन्ह पास राखी क्रूर क्रूर जे कर्म। शरण आवे ताहि दीबो शरण नृपको धर्म॥ करै निग्रह दुष्टको नृप धारि निर्दय रूप। ग्रहण निग्रह जौन जानत भली बिधिसों भूप॥ बँधे तो मर्य्याद सिगरे लोकमाह गभीर। उचित है यह धर्म तुमको सुनऊ कुरकुलबीर॥ बिप्र पावत स्वर्गको करि यज्ञ तप दम धर्म। दान करि आतिथ्य

व॰प॰ पावत वैश्य सद्गति पर्म॥ प्रजा पालन धरै च्यो करै निर्भय शुद्ध। स्वर्ग पाव यथाविधि जो दण्ड धारै उद्द ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ देहको संहार करि कै धरीहो जो महान। लाय लीन्हों हृदयसों गहि भीमकों हनुमान ॥ विगत श्रमसों होय जानो भीम आपु हि धन्य । महाबलकों पाय आनो आपु सदृश न अन्य।।सुहृदतासों भरें लोचन कहो फिरि हनुमान।स्मर्ण मेरो भीम कीजो जाऊ अब स्वस्थान।।धनदपुरतें आइवेको भयो है अवकाल।देश है यह आइ हैं गन्धर्व किन्नरबाल।। राम नामक बिष्णु जगदानन्द कारण धाम । जानकीके वदन वारिजको दिनेश ललाम ।। राम तनके परशको भो स्मरण मोहि गँभीर। मनुज तुमकों लाय कै हियमाहँ कुरुबर बीर ॥ भीमसेन अमोघ है यह दरश मेरो जौंन। भ्रातृत्वते बर माँगी लीजै तुम्हैं बांछित तौंन ॥ कहहु जौं तुम जाय हास्तिन नगरकों हम अद्य।क्षुद्रसुत धृतराष्ट्रके सब मारि आवैं सद्य॥ * ॥वैशम्पायनउवाच वचन सुनि हनुमानके इमि भीम बोले बैंन। कार्य्य कृत सब भए मम तव कृपातें बलऐंन ॥ भए सकल सनाथ पाण्डव नाथ तुमकों पाय । कृपातें तब मारि है हम तिन्हें सह समुदाय ।। भीमके सुनि वचन बोले कृपाकर हनुमान । जानि भ्राता करैंगे प्रिय रावरो सुखदान ॥ शक्तिसङ्कुल चमूमे तुम पैठि कै बरबीर। करऊ गे जब सिंहनाद उदार अति गम्भीर ।। नादसों तब करहिँगे हम तौंन बर्धित रोर । बिजयके वर ध्वजाऊपर बैठि कै अतिघोर ॥ अरिणको हरप्राण तब तुम हनऊ मे सुखरूप। भीमसों एहिभाति कहि हनुमान वचन अनूप ॥ दियो मार्ग बताय जेहां कमल हे कल्हार। भए अन्तरध्यान तब हीं पवनपुत्र उदार॥ * * * * * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि गन्धमादनप्रवेशे हनुमद्भीमसेनसङ्गमवर्णनोनाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥* * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भए बीर हनुमान जब य्यों कहि अन्तरध्यान। भीमसेन पथ गहि चले तौन जानि सुखदान ॥
स्मरण करत हनुमानको सो अतिमान शरीर। धरैं चित्तमे चरित जौ सुनो कियो रघुबीर॥
बन उपवन देखत चले नानाबिधिके बीर । खग मृग भृङ्गनसो भरे फूल फरे गम्भीर ॥
सर सरिता बहुभातिकी देखत अमल सरोज । महा बीर तेहां फिरत निर्भय धारे ओज ॥
दिवस भयो कछु नमित तब देखो भीम उदार । सरिता जामे अतिसघन कनक बनक कल्हार ॥
हंसबंश जामे बसत कारण्डव कल कोक। मालासी गिरि राजकी बिधि बिरचित छविओक॥
तामे फूले अति सघन सौगन्धिक सुखदान। भोर समैके मनु करें उदय अनेकन भान ॥
भीमसेन जाको तिन्है देखि पूर्ण मनकाम। स्मर्ण द्रौपदीको भयो बनवासिनि छविधाम ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

गए सु पद्माकर जहां राक्षस रक्षित भूप । भीमसेन कैलाशके देखो निकट अनूप ॥
धनदसदनके निकट गिरि निर्झरतें उतपन्न । रम्यलता तरुकी चहूँ दिशि छाया सम्पन्न ॥
कनक कमल फूले सघन बने घाट अभिराम ।पक्षिणको समुदाय जहँ सोहत सुरस ललाम ॥
निर्मल जल गिरि सानुपर अति अद्भुत सुखदान । तहां अमृत सम सलिलको कियो वृकोदर पान॥
लखि पुष्करणी रम्य अति भरी सुगन्ध अनूप । फूले सौगन्धिक जहां जात रूपके रूप ॥
क्रीडावन धनपालको जहां देव गन्धर्व । सहित अप्सरन्हँ रमत हैं आनँद भरे अखर्व ॥
शासनसों धनपालके राक्षस किन्नर बीर । रक्षा जाकी करत हैं चारोओर गँभीर ॥
भीमसेन सो सर चितै भरे मोद अभिराम । रक्षक राक्षस धनदको तास क्रोधवश नाम ॥
नाना आयुधकों धरें पहिरि कवच गम्भीर । तिन देखो अजिनाम्बरी भीमसेन बरबीर ॥
रुक्माङ्गद धारें धरें शस्त्र सकल बलवान। पुष्कर लीबे चहत तिन कियो परस्पर ज्ञान ॥
भीमसेनके पास तब तिन सब कीनो गौन । आए इत बूझन लगे कौनहेतु तुम कौन ॥
धारे आयुध हौ धरे वेष मुनिनको जौन । आए हौ जेहि अर्थकों कहहु वीर तुम तौन॥

॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥

पाण्डव भीम कनिष्ठ हम धर्मनृपतिके भ्रात । बसत विशाला है जहां बदरी पुण्यविभात ॥
पाञ्चाली देखो तहां सौगन्धिकअभिराम । वायु उडाए लेगयो तेहां एक ललाम ॥
चहति बहुत सो धर्मनृपकी महिषी कल्हार । ताको प्रिय करिबैं चहत आयो लेन उदार ॥

॥ * ॥ राक्षसाऊचुः ॥ * ॥

है आक्रीड कुबेरको यह अतिप्रिय अभिराम । मनुज विहार न करि सकै इहाँ आइ बलधाम ॥
देव यक्ष ऋषि अप्सरा इहा जे करैं विहार । यक्षाधिपकी पाइ कैं आज्ञा परशैं वार ॥
निदरि धनेश्वरकों करै इहा जो अन्य विहार । नाश हमारे हाथसों पावत तौन उदार ॥
करत निरादर धनदको हरो चहत कल्हार । भ्राता धर्मनरेशके कैसें कहत उदार ॥
यक्ष राजकी लेइ कै आज्ञा पीवहु नीर । नातरु तुम्हे अशक्य है जाबो पुष्करतीर ॥

॥ * ॥ भीमसेनउवाच ॥ * ॥

इहां न देखत हैं कहूँ यक्षणको नरनाह । रहत धनदके नहि हमै जाचनको उतसाह ।
राजनको है मागिबो नही सनातन धर्म । राक्षस हम न तजो चहत धर्म आपनो पर्म ॥
गिरिनिर्झरसों यह भयो सरवर सह कल्हार । यामे कछू न धनदको सबकों तुल्य उदार ॥
होतिजे जैसे द्रव्य सोसबकोंसदासमान।वैशम्पायनउवाच।कहि ऐसें तिनसों बचनभीमसेनबलवान॥
पैठे सरवरमाह जहँ रहे कमल कल्हार । माने नही निषेधके तिनके बचन उदार ॥

व०प० तब दौरे चहुँओरते राक्षस करत पुकार। बाँधहु मारहु लेहु गहि कहि सो चले उदार॥
करण लगे ते शस्त्रको नानाभाँति प्रहार। किन्नर राक्षस यक्ष सब धारे क्रोध उदार॥
वायुतनय अतिबल भरो कुन्तीसुत बरबीर। सत्य धर्ममें रत सदा धरे पराक्रम वीर॥
चरणचालकी करि क्रिया तिनके शस्त्र बराय। राक्षस मारि अनेक शत सरतट दिए गिराय॥
ते लखि विद्या बाहुबल शस्त्रप्रहार अखर्व। सहि न शके रण छोडि कै भागे राक्षस सर्व॥
गए गगण कै लाशकों राक्षस मर्दित तौन। कमल लेनकों भीम तब किय पुष्करमें गौन॥
अमृत सदृश जलपान करि सरमें पैठि उदार। लीन्हें भीम उखारि कै यथाकाम कल्हार॥
जाय धनेश्वरके निकट राक्षस भागे सर्व। सकल पराक्रम भीमको लागे कहन अखर्व॥
कहे धनेश्वर बिहँसि कै औसे तिनसों बैंन। हम जानत आयो इतै भीमसेन बलऐन॥
लेनदेहु ताकों कमल यथाकाम कल्हार। कृष्णाकों दीबे चहत सो बर वीर उदार॥
आज्ञा ते लहि धनदकी गए वृकोदर पास। देखो करत बिहार तिन एकबीर बलरास॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

भीमसेन कल्हार तब लिए बहुत बहुरूप। भरे सुगन्ध प्रकाशमय प्रफुलित दिव्य अनूप॥
भूप युधिष्ठिर हे जहां तहां चण्ड अतिबात। बहन लगो रजसों भरो सूचक रण उतपात॥
उलकापात भयो महा अशनिपात अतिघोर। भानु भए निःप्रभ भरो अन्धकार चहुँओर॥
गरजो नभ जब होत हो भीमसेनसों युद्ध। हलो भूमि चहुओरतें बरषी पांशु बिरुद्ध॥
अरुण भई दिशि खग शिवा बोलो बचन बिरुद्ध। हाथो हाथ न लखि परत बाढो तम अतिउद्ध॥
देखि परे उतपात तब नानाभाँति कुरूप। अति अद्भुत उतपात तब देखि युधिष्ठिर भूप॥
करो चहत को युद्धको मम सन्मुख सञ्चार। रहहु सज्ज ह्वै युद्धकों पाण्डव रणजेतार॥
धर्म नपति इमि कहि लगे चहुदिशि लखन सुजान। तहाँ न देखो भीमकों महावीर बलवान॥
पूछो माद्रीसुतनसों कृष्णासों गँभीर। गए कहाँ केहि कार्य्यकों कुशल वृकोदर वीर॥
कियो कछू साहस कहा महा साहसी वीर। महा समर सूचक परत लखि उतपात गभीर॥
यह सुनि बोली द्रौपदी प्रिय प्रियकरणि अनूप॥द्रौपद्युवाच॥वायु ल्याय डारो इहाँ सौगन्धिक जो भूप
कहों प्रीतिसों भीमसों वह दै कमल ललाम। औसे ल्यावहु और बहु ममहित हे बलधाम॥
सो मेरे प्रियकों सुनत दिशि ईशानको भूप। गए लेन पङ्कज बिमल सौगन्धिक शुचिरूप॥
सुनि नृप माद्रीसुतन्हसों औसें बोले बैंन। हम सब चलिए तहांकों जहाँ गयो बलऐन॥
वहो तथाविधि द्विजनकों ए राक्षस बलवान। बहहु घटोत्कच जननि तो कृष्णाकों सुखदान॥
गए वृकोदर दूरि बहु होत मोहि अनुमान। इतनो करत बिलम्ब नहिं बायुवेग बलवान॥
तबलों ल्यावैं पुन हम ताकों इत निरबाध। देव द्विजनको नहिं करे जबलों सो अपराध॥

हैडिम्बादिक राक्षसन्ह कहि तथासु सुखपाय।सह द्विज भ्रातन्ह द्रौपदिहि लीन्हो कन्धचढाय ॥ ३०५०
लोमस धौम्य समेत ले गए तहां बलधाम। पद्माकर धनपालको रहो जहाँ अभिराम ॥
लखो तास तट भीमको पैठो कोपित एक। देखो तहँ मारे परे राक्षस यक्ष अनेक ॥
चढी भौंह लोचन फटे गदा किए गहि उद्ध। प्रलय कालके समनसो लखो भीमकों क्रुद्ध ॥
उतरि धर्मनृप भीमको हिय लायो लहि चैन। कियो कहा यह यो कहे मधुर सुधासे बैन ॥
देवनको अप्रिय कियो यह साहस तुम बीर। फेरि न ऐसो कीजियो मम प्रिय चाहि गँभीर ॥
शिक्षा करिकै भीमकों लेकै ते कल्हार। द्विजन्ह सहित तहँ धर्मनृप लागे करण विहार ॥
आए बन रक्षक तहाँ धरे शस्त्र तेहि काल। धर्मनृपति देखो तिन्हैं धारे काय विशाल ॥
तिन देखो नृपधर्मकों सह लोमस तपधाम। नकुल सहित सहदेवकों द्विजवरबृन्द ललाम ॥
धर्मनृपतिकों आय तिन सविनय कियो प्रणाम। समाधान नृपधर्म तव तिनको कियो सु साम ॥
आगम तहँ नृपधर्मको सुनो सविधि धनपाल। रमत तहाँ पाण्डव प्रबल बसे नहीं बहुकाल ॥
करत परीक्षा जिष्णुकी तेहि गिरि पर कुरुबीर। बसे कछुकदिन धर्मनृप भरेभिलाष गभीर ॥

॥ *॥ वैशम्पायन उवाच ॥

तहां बास करि धर्मनृप सह भ्रातन्ह सुखरूप। एक दिवस लागे कहन ऐसे बचन अनूप ॥
देखे तीर्थ अनेक हम स्नान करे सविधान। सुने महर्षिन्हके चरित पूजे देव महान ॥
गिरि कानन निर्झर सरित सहित सिन्धु अभिराम। पुण्य क्षेत्र लोमस कहे जौन जौन तपधाम ॥
देव पितृ तर्पण करे कन्द मूल फल पाय। नरनारायणको लखो आश्रम अति सुखदाय ॥
आश्रम यह वैश्रवणको सेवत जाकों सिद्ध। भीम कौनविधि जाहि कित गति नहि सूझतिऋद्ध ॥

॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥

धर्मनृपति ऐसे कहत रहे भीमसों बैन। भई गगणवाणी प्रगट तबहीं आनदऐन ॥
शक्य न आगे जाइबे को पथ धर्मनरेश। धनद धामतें इहांलो है अति दुर्गम देश ॥
जेहि पथसों आए इहां जाऊ तौन पथ भूप। नरनारायणको जहां आश्रम अनुपम रूप ॥
फेरि तहां ते जाइयो जाकों सेवत सिद्ध। विषपर्वाको है जहां आश्रम रम्य समृद्ध ॥
लष्टिषेणको है जहां आश्रम तहाते भूप। जाय लखऊ गे धनदको उतते धाम अनूप ॥
ताहीसमैं समीर अति शीतल भरो सुवास। दिव्य पुष्प बर्षण लगे धर्मनृपतिके पास ॥
भए भूप बिस्मित परम सुनि नभगिरा अनूप। धौम्य कहो याको कछु उत्तर है नहि भूप ॥
गगण गिरा गहिकै तहां फिरि आए नृपधर्म। नरनारायणको जहां आश्रम वदरी पर्म ॥
भीमादिक भ्रातन्ह सहित कृष्णा सङ्ग ललाम। बसे तहां मुनिवृन्द सह धर्मनृपति अभिराम॥

व°प° स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि कल्हारहरणगन्धमादनप्रवेशबर्णनोनामाष्टाविंशोऽध्यायः ॥ * * * * * * *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बसत तहांकीन्हे बिस्वास । फाल्गुणके दर्शनकी आस ॥ आज्ञा धर्मनृपतिसों पाय ॥ गया घटोत्कच सह समुदाय ॥ भीमसेन मृगयाकों भूप । गए पाय तब समय अनूप ॥ राक्षस एक विप्र बनि बीर । रहो सङ्ग धरि कपट गभीर ॥ तेहिँ राक्षस कृष्णा नृपधर्म । हरो सहित माद्रीसुत पर्म ॥ भूषण सहित शस्त्र समुदाय । हरो भीम बिनु औसर पाय ॥ नाम जटासुर ताकोभूप । रहो सङ्ग धारें द्विज रूप ॥ पोषण तास करत है धर्म । द्विजन सहश सबभाँति सुपर्म ॥ जानो तास न पाप सु आन । मुदो भस्मसों अनल समान ॥ भीम गए मृगयाकों जाँनि । दूरि घटोत्कच गो अनुमानि ॥ लोमशादि हे द्विज बरजाँन । गए स्नान करिबेकों तैंान ॥ धरि अति बिस्तर भैरव रूप । शस्त्रन्ह सह कृष्णासगँ भूप ॥ नकुल सहित सहदेव किशोर । चलो बेगसों गहि बर ज़ोर ॥ करिके कछु सहदेव उपाय । खड्ग सहित कूदे बिलगाय ॥ टेरन लगे भीमकों बीर । सुनो दूरि ते बचन न धीर ॥ तासों धर्मनृपति बड़ बैंन । कहे सुनीति धर्मके अैन ॥ भोजन कीजै जाको अन्न ॥ रहिये जास पास सम्पन्न ॥ तासों छल्ल कीजै नहि दुष्ट । भोजन कियो निकट बसि पुष्ट ॥ यहि बिधि बड़ त कहो समुझाय । सुनो न तेहि ले चलो उडाय ॥ शस्त्र हमारे हमकों देऊ । जीति युद्धमे कृष्णहि लेऊ ॥ सुनो न तब तेहि वचन उदार । तब नृपधर्म धरो अति भार ॥ भरो भार सों राक्षस तैान । करन लगो तब मंथर गैंान ॥ कहो नकुल कृष्णासों भूप । हम राक्षस गति हरी अनूप ॥ तुम मति डरऊ धरऊ धुरधीर । आवत निकट बृकोदर बीर ॥ आयो तैंान मुहूरत पास । राक्षस जामे लही बिनास ॥ देखि मूढमति राक्षस तैंान । सहदेव सो बोले बलभैान ॥ याते क्षत्रीको शत कर्म । कौंन अधिकहे भूपति धर्म ॥ सन्मुख रणमे छोडे प्रान । कै जीते अरिकों बलवान ॥ यह हमकों कै हम ए हि अघ । जीतत रणमे भूपति सघ ॥ देश काल सो पऊचोआय । जों क्षत्रिन्हकों अति सुखदाय ॥ हम जीतत मारत यह क्रूर । अबलों अस्त होय नहि सूर ॥ नातरु अपनो क्षत्री नाम । हम न कहै बे हे मतिधाम ॥ तिष्ठ तिष्ठ राक्षस बलवान । हम सहदेव भरत कुल भांन ॥ हमै मारि कृष्णाकों लेऊ । कै तुम प्राण आपनो देऊ ॥ बिधिबस भीमसेन बर बीर । आवत देखि परे रणधीर ॥ रणपाणिमे गदा महान । जैसें बज्र सहित मघवान ॥ नकुल सहित कृष्णा नृपधर्म । देखि लहो आनद अतिमर्म ॥ रोकें तेहि सहदेव अमन्द । भारभरो राक्षस रत दन्द ॥ जहँ तहँ फिरत भरो स्रमभार । कालवश्य सो रक्ष उदार ॥ सहित द्रौपदी भ्राता सर्ब । हरें जात लखि दुष्ट अखर्ब ॥ भीम क्रोध कीन्हों अति उद्ध । राक्षससों बोले अति क्रुद्ध ॥ शस्त्र परीक्षण कियो हमार । तव हम

आनो रूप तुम्हार ॥ रूप विप्रको धरे निहारि। अप्रिय कछु नहि करत विचारि ॥ अतिथि धरें ब्राह्मणको वेष। हनो न बिनापराध विशेष॥ यको नहीं तो बधको काल। अब याको लखि कर्म कराल ॥ कृष्णा हरण बढि स अतिरूप। काल सूचसों बँधो अनूप॥सो लीलो तुम मीन समान। कुमति सलिलमें हारक प्रान ॥ एहि विधि सुनें भीमके बैंन। राक्षस काल वश्य बलअैंन॥ छोडि दियो तिनकों बलवान। भयो युद्धकों सज्ज अमान॥ बोलो भीमसेनसों तैंन। कियो त्वदर्थ न आतुर गैंन॥ हने जैंन तुम राक्षस वीर। भीमसेन करियुद्ध गभीर॥याहु लेड तो रुधिर महान। तिन्हें करोगो अञ्जलिदान॥ भीमसेन सुनि ताके बैंन। भरे क्रोधसों अति बलअैंन॥बाहु ठोकिके चले विशाल। तथा चलो राक्षस वसकाल॥ वर्तमान ताको लखियुद्ध। माद्री तनय चले अतिक्रुद्ध॥भीमसेन करिवारण तास। कहो करत हों याको नाश॥कहत सपथ करि वचन प्रमान। हनत आजु यह असुर अमान॥ ऐसें कहि राक्षस अरु भीम। भिरे प्रचारि दोऊ बलसीम॥ तरुवर दोऊ लेहि उखारि। दोऊ दुऊव हनैं परचारि॥ दोरैवनसें गरजि गभीर। तोरे सरुन्ह अघनसों बीर॥ भए टूटि तरु मूञ्ज समान। तब तिन लीन्हें महत पखान॥ लरे शिलनसों दोऊवीर। बज्रपात सम गरजि गँभीर॥पकरि भुजनसों दोउबलवान।लागे खैचन द्विरद समान॥ बज्र समान मुष्टिसों उद्ध। दोऊ लरे परसपर क्रुद्ध॥ ग्रीवा मारि मुष्टिसों भीम। स्रमित कियो राक्षस बलसीम॥ स्रमित देखि ताकों बलवांन। भीम प्रहार कियो अतिमान॥ पकरि उठाय भूमिपर डारि। मर्दन लागे भीम पछारि॥ताके चूर्ण किए सब अङ्ग। भिन्न कियो शिर धरको सङ्ग॥ मारि जटासुरकों बरबीर। गए युधिष्ठिरपै धरि धीर॥ * * * * * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथेन कविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि जटासुरवधो नामोएचिंशोध्यायः ॥ * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

मारि राक्षस तीन जह नारायणाश्रम पर्म। जायतहँ फिरि बास कीन्हों द्विजन सह सहधर्म॥ द्रोपदी सह भ्रातणसों धर्मनृप अभिराम। स्मर्ण अर्जुनबीरको करि कहे बचन ललाम ॥ चारि वर्ष बितीतभो बनवास करत अधर्म। लगत पञ्चम अब्द आगम जिष्णु कहिगो पर्म॥ स्वेत पर्वत राजपैं जहँ फुल्ल बिपिनि महान। भृङ्गखग मृग जहाँ नाना भाँतिके सुखदान॥ कमल जिनमे बिबिधि बिधिके भरे वनक ललाम। स्वच्छ सलिल समेतहैं जह सरित सर अभिराम॥ तहाँ तुमसों आइ मिलिहैं गए हे कहि बीर। बिद्यार्थ संवत पाँच बसि सुरपुरी माह गँभीर॥पाय अस्त्र सु आय सुरपुरतें इहा अभिराम। देखिहैं गाण्डीव धनुधर बीरकों बलधाम॥ जिष्णु आगम हेतु कहिके द्विजनसों नृपपर्म। उग्रतपसन्हकों प्रदक्षिण किये उठि नृपधर्म॥ होयके सुप्रसन्न तातें कहो

व०प० द्विजन प्रमान । होयगो सुखअन्तमे दुखके तुम्हैहि सुजान ॥ छात्रधर्म सु सिन्धुके लहि पारको नृप धर्म । धर्मज्ञ करिहौ यथा विधिसौं भोग भू को पर्म ॥ चले तहँते द्विजनके सुनि बचन सुखद अनूप सहित लोमस सङ्ग लीन्हे राक्षसन्हकौं भूप ॥ कछू लेत उठाय राक्षस कछूँ पाइन्ह जात । तहां तहके लखत गिरिवन सहित कृष्णाभ्रात ॥ चले उत्तर दिशाको वन सघन लखत अनूप । लखत गिरिसैनाककी कैलाश सुषमा भूप ॥ चले गिरि हिमवान ऊपर लखत सुषमा पर्म । गए जहँ विष पर्वको हो रम्य आश्रम धर्म ॥ जाइकै राजर्षिहो विषपर्व जह तपधाम । सहित भ्रातन कियो विधि वत धर्मनृपति प्रणाम ॥ पुत्रवत विषयर्व तिनको दियो आशीर्वाद । होय पूजित बसे तह निशि सप्त बिगत बिषाद ॥ बिदाव्है दिन आठये बिशपर्वसों नृपधर्म । राखि ऋषिके पास भूषण रत्न हेशे पर्म ॥ धर्मनृपको कियो शीक्षा पुत्रवत बिषपर्व । चले उत्तर दिशाकौं व्है बिदा कुरुवर सर्व ॥ राज ऋषि बिषपर्व पाण्डव सङ्गगे कछु दूरि । धर्मनृपकौं सौंपि बिप्रन्हकौं फिरे मुदपूरि ॥ गए पंथ देखाइकै बिषपर्व जब स्वस्थान । चले भ्रातन सह पदाती धर्मनृप मतिमान ॥ बसे तरुवर सघन लखि गिरिशृङ्ग ऊपर पर्म । स्वेत गिरिकौं गए चौथे द्योश भूपतिधर्म ॥ सरद घन सङ्काश निर्झर सरित सहित अनूप । शिला जाकी कनक वनक सु मणिन्हमै वऊरूप ॥ गए तह उद्देश हो जहँ लखत गिरि अभिराम । एक ऊपर एक पर्वत गुहा दुर्गम माम ॥ गए दुर्गम मार्गमे सब चले ते सुखरूप । धौम्य लोमस सहित कृष्णा लए बन्धुन्ह भूप ॥ लखत वनकी अमित शोभा तरुणकी अभिरास । फरे फूले भरे नवदल हरित ललित ललाम॥लसत खग मृग बिबिधि विधिके भरे रङ्ग अनूप । सहित पङ्कज सरित सर शुचि लखत पल्वल भूप ॥ माल्यवत गिरिकों गए सह द्विजन्ह भूपति धर्म । बसत जहँ किंपुरुष सेवत सिद्ध चारण पर्म ॥ गन्धमादनको लखो रोमा श्र पूरि ललाम । चरित बिद्याधरणको सह किन्नरी अभिराम ॥ सिंह व्याघ्र बराह मृग गज गजिन सहित अनूप । गन्धमादनके बिपिनिको लखत नन्दन रूप ॥ मुदित कृष्णा सहित भ्रातन द्विजन सह नृपधर्म । पुख कानन तौन माहँ प्रवेश कीन्हों पर्म ॥ खगनके बऊ भाँतिके कल सुनत मञ्जल राव । सर्वर्तुके फल पुष्प पूरे लखत तरु कर चाव॥ लखत सरवर जहां पङ्कज रहे बऊ विधि फूलि। हंश सह कारण्ड गण घन रहे मधुकर भूलि ॥ गन्धमादन सानपै एहिँ भाँति देखत भूप । नचत कुञ्जन माह मत्त मयूर नाना रुप ॥ लसत तरु बऊ जातिके बऊ रङ्ग फूले फूलि । मत्त मधुकर पुञ्ज जिनपैं रहे गुञ्जत भूलि ॥ मत्त कोकिल करें सुरस रसालको बऊ पान । काकली धुनि धरें बऊँ दिशि करत पञ्चम गान ॥ एहि भाँतिकी गिरि गहन शोभा लखत पाण्डव सर्व । महत अद्भुत मानि मनमे भरे मोद अखर्व ॥ बसत मुनि गन्धर्व अमर सिद्ध सुर सह शर्म । सहित द्विज समुदाय सुषमा लखत भूपति धर्म ॥ भरे आँनद परम पाण्डव पायकै पथ तत्र । गए आश्रम आर्ष्टिषेण महर्षिको हो यत्र ॥ रही धमनी मात्र जाके देहमे अभिराम । आर्ष्टिषेण महर्षिकों नृप

लख्यो तेजसधाम ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ धर्मनृप तब गए ह्वै शुचि महाऋषिके पास। शीषसों पद बन्दि अपनो कियो नाम प्रकाश॥ द्रौपदी फिरि भीम माद्रीतनय फिरि अभिराम। महाऋषिके चरण बंदे धारि शीश ललाम॥ धैाम्य सह द्विजवृन्द सिगरे बंदि ऋषिके पाय। महाऋषिके चहुँदिशि सह भूप बैठे जाय ॥ जानि कै तपदृष्टिसों नृपधर्मको अनुरूप। कहो बैठन महाऋषि करि कृपाकों अति भूप॥ अर्ष्टिषेण महर्षि पूजो भूपकों सविधान। कुशल बूझो सहित भ्रातन्ह कृपा करि सुखदान ॥ *॥ अर्ष्टिषेणउवाच॥ *॥ अनृत तैान हि कहत हो तुम करत नित्य सुधर्म। वृत्ति माता पिताकी सो तजत तो न हि पर्म ॥ वृद्ध गुरुको करत सेवन धरत तो न विकार।करत है उपकार ताको करत प्रत्युपकार॥देत हो तुम दण्ड दुष्कृत करत ताकों भूप।योग्य पूजन साधु तुमसों लहत मोद अनूप॥करत हो बनवासहूमे भूप सेवन धर्म। धैाम्य तो नहिँ होत पीडीत देखि कै तो कर्म॥दानधर्म सु शैाच ऋजुता सह तितिक्षा भूप। रहत अपने वंशको तुम धरे धर्म अनूप॥ अर्ष्टिषेण ऋषीन्द्रके सुनि नीति गर्भित बैंन। कहन लागे धर्मनृप एहिँभाँतिसों मति ऐँन ॥ *॥ युधिष्ठिरउवाच॥ *॥ कहे भगवन नीतिमय तुम धर्म निश्चै जैान । यथामति हम यथाशक्ति सु करत विधिवत तैान ॥ *॥ अर्ष्टिषेणउवाच॥ *॥ वायुभक्षी सलिल भक्षी गगण चारी भूप। रहत है एहि अद्रिमे ऋषिवृन्द तेजसरूप ॥ रहत कामी सहित कान्ता भरे प्रीति महांन। परत लखि गिरिशृङ्ग पै किम्पुरुषमे सुखदान॥ धरें पट कैाशेय निर्मल भरे रूप अखर्व। अप्सरणके गण सङ्ग गिरिपर परत लखि गन्धर्व ॥ बृन्द विद्याधरणके धरि माल अमल अनूप। सुपर्ण उरग अमान गिरिपर परत लखि अतिरूप॥ पर्वमे एहि शैल ऊपर सुनऊँ भूप सुजान। शङ्खभेरी मुरजकी सुनि परति धुनि अतिमान॥ इहां रहि कै सुनत है शुभ शब्द हे नृपधर्म। तहां जाबेको न है कछुकार्य्य तुमकों पर्म॥इहांतें नहि तहां जावे योग्य है पथ भूप। करत देव विकार तेहां जात मानुषरूप॥ करत जैां चापल्यकों इत कोऊ मनुज अबुद्ध। भूत दुःखित होत तासों हनत राक्षस क्रुद्ध॥ नाघि कै एहि शिखरकों कैलाशको पथ पर्म । सिद्ध अरु देवर्षि पावत गगणगामी धर्म॥ चपलतासो मनुज जैा एहिमार्गमे चलिजाय। ताहि राक्षस हनत हैं शूलादि शस्त्र चलाय॥ पर्व सन्धिन्ह मांह लीन्हें अप्सरन्हकों साथ। देखि एहि गिरि शिखर ऊपर परत किन्नरनाथ॥ देव दानव सिद्ध सह धनपालको अभिराम । बनो क्रीडा विपिनि एहिगिरि शिखरपर छविधाम॥ पर्व सन्धि सु पाय कै इत आइ किन्नरनाह। गान तुम्बुरुको सुनै गिरि गन्धमादनमाह॥ भाँतिको एहि लखत अद्भुत भूत सब सुखदाय। धर्मनृप एहि शिखरपर निति पर्व सन्धिन्ह पाय ॥ भरे रस अति स्वाद फल मुनि भोज्य भोजन खाय।बसऊ पाण्डव इहां जबलों मिलै अर्जुन आय॥चपलता नहि तुम्है करिबे इहाँ बसि कै बीर। यथाकाम बिहार एहिबनमांह करऊँ गभीर॥ शस्त्रसों

व०प० फिरि जीति पृथिवी पालि हौ तुम भूप॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ रहे कबलों तहां पाण्डव कहहु मुनि अनुरूप॥ तहां बसि कै कियो कारज कौन भूपति धर्म । भयो तौन धनेश सङ्गम पाण्डवनसों पर्म॥भीमसों फिरि लरे तौन हिं यत्त जे बलवान। अर्ष्टिषेन जो कहो सो सब कहहु मुनि सविधान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ कियो यह ऋषि जौन आज्ञा कियो सो नृपधर्म। शुद्ध शरसों मारि मृगपल खाय कै फल पर्म ॥ विविधि विधिके पान करि मधु तुहिन गिरिके माह। सहित भ्रातन्ह द्रौपदी द्विज बसे तहँ कुरुनाह ॥ बीति पञ्चमवर्ष मो तहँ बसत पाण्डव भूप। सुनत लोमस बदन सम्भव कथा अमृत अनूप॥ गो घटोत्कच बिदा व्है समुदाय सहित स्वदेश। समुझि हो तब आइ हौं जब परैं काम नरेश ॥ बसत आश्रममाह ऋषिके बहुत बीते मास। लखत शोभा अद्रिकी अति भरी अद्भुत रास ॥ * * ॥ दोहा ॥ * *

आय प्रीति भरे जहां मुनिबर जहँ नृपधर्म। तिनसों नृप इतिहास बहु कहे सुने अतिपर्म ॥
बसत तहां ह्रदमे रहो ऋद्धिमन्त बरनाग। आय ताहि गहि लै गए वैनतेय बडभाग॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

पत्त बहुबात लागे हलें गिरिबर सर्व। टूटि छितिपर परे तरुबर रहे जौन अखर्व ॥ माल्य सुमन सुगन्ध गिरिके शिखरतें तहँ ल्याय। भरे नाना रङ्गसों तहँ गये बायु गिराय॥लखो सबहिन सहित पाण्डव सुमन अद्भुत रूप। द्रौपदी लखि भरो मनमे कामना अतिरूप ॥भीमकों एकान्त गिरिमे मुदित बैठे पाय। भरी अति अभिलाष लागी कहन ऐसैं जाय॥ सुमन सुरङ्ग सुगन्ध गिरितें गिरे जे इत आय । सरित अश्वरथा समीप सु लखे तुम सुखदाय॥अनुज तव गाण्डीवधनुधर कियो खाण्डव दाह। उरग सुरगण सहित जीतो इन्द्रकों रनमाह॥हने मायामई राक्षस धनुष धरि व्है क्रुद्ध। तेज तुमहूमे महतबल बायुको अतिउद्ध ॥ त्रसित व्है तव बाहुबलतें छोडि शैल अखर्व। चहत सोमन बहुतदिनतें जाहिँ राक्षस सर्व॥बाहुबलते होय रक्षित तो बृकोदर बीर।भरो सुषमा शैल यह हौं लखो चहति गँभीर॥ द्रौपदीके बचन सुनि यह भरे अमरष भीम । कनक बनक बिशाल भुजबर सिंहसो बलसीम ॥ रुक्म पृष्ठसु धारि कै धनु खड्ग तूण गभीर। गदा गहि तेहि शैल पं चढि चलो निर्भय बीर॥ अभय उग्र मृगेन्द्रसो धनु धरैं आवत ताहि । शैलवासी चकित करि चख रहे चहुँ दिशि चाहि॥ एक पथ गहि चढे गिरिके गए ऊपर बीर। नाग किन्नर यक्ष देखत भरे मोद गँभीर लखो तहतें भीमसेन धनेशको बरधाम। फटिक सुबरण रचित सौध सु सुधांशुसे अभिराम॥ कनकको प्राकार जाके चहूँओर महान । खचित रतन्हसो बनें बन बाग जहँ सुखदान॥ शैलसी अट्टारिका बर द्वार तोरण माम । बीजुरी सी अप्सरा जहँ रहैं नचत ललाम ॥ कनक ध्वजन्ह धनेशको लखि धाम मण्डित बीर। कोटो धनुको धरें शोचत बिसव आत्म गभीर॥ सुमन मण्डित बिपिनतें मृदु बहो सौरभ पौन। राक्षसाधिपको लखो मणिमयी तहँते भौन॥ गदा अखि

धनु धरे कीन्हे सत्य जीवित आस। अचलसे तहँ रहे ठाढे भीम अतिवलरास ॥ ध्वनित कीन्हों शंखको करि धनुषको टङ्कार। अचलवासी जीव सो सुनि भरे मोह उदार ॥ सुनत सह रोमाञ्च विस्मय भरे वीर अखर्ब। यक्ष राक्षस चले तहँकों सहित गण गन्धर्ब ॥ शस्त्र नानाभांतिके धरि गे वृकोदर पास। भीमसों ते युद्ध लागे करण अति बलरास ॥ शस्त्र तिनके काटि डारे शरनसों कुरुवीर। गगण चितितें रहे जौन प्रहार करत गँभीर ॥ भीम बेधे शरनसो सब राक्षसनके अङ्ग। रुधिरधारा गिरण लागी अचलके उतमङ्ग ॥ बाहुबलतें भीमके लगि शरनके समुदाय। लगे कटि कटि गिरन गिरिपर राक्षसनके काय ॥ भीमकों तिन चहूँदिशितें घेरि लीन्हों आय। शरनसों हनि किए तिनके भीम खण्डितकाय ॥ भए तर्जित असुर लागे करण सकरुण राव। महाबल कुरुवीरके चित चढो चौरो चाव ॥ भए मर्दित भजे ते सब यक्ष राक्षस वीर। डारि कै सब शस्त्र भाजे त्यागि युद्ध अधीर ॥ गए दक्षिणदिशाकों जहँ निऋति हो मणिमान। गदा धारि शूलको अति काय बर बलवान ॥ राक्षसाधिप सखा हो धनपालको बर वीर। भजे आवत देखि तिनकों कहँ वचन गँभीर ॥ एकमानुष भीमते तुम भजे आवत सर्व। कहा धनपतिसों कहउगे जाय वचन अखर्व ॥ वचन ऐसे राक्षसनसों बोलि कै मणिमान। शूल शक्ति सु गदा गहि तहँ चलो अति बलवान ॥ वेगते तिहिँ चलो आवत देखि कुरबर वीर। तीनि शर बर हने ताको पार्श्व माह गभीर ॥ क्रोध करि मणिमान महती गदाकों भुजजोर। फेंकि दीन्ही भीम ऊपर मारिवेकों घोर ॥ वज्रसी सो गगणमे लखि गदाकों बलवान। भीम ताहि निवारिवेकों हने आतुर बान ॥ शरणसों सो थँभी नहिँ जब गदा घोर महान। गदाबिद गति भेदसों सो करी व्यर्थ सुजान ॥ तेही अन्तरमे चलाई शक्ति राक्षस वीर। भीमके सो लगी दक्षिण भुजामांह गभीर ॥ शक्तिसों ह्वै विद्ध पाण्डव गदा गहि बलवान। क्रोध करि कै चले आतुर हरण राक्षसप्राण ॥ शूल डारो भीम पैं मणिमान ह्वै अतिक्रुद्ध। भीमसेन सो व्यर्थ कीन्हों गदासों हनि उद्ध ॥ भीम धाय घुमाय कै गुरुगदा घोर महान। कूदि मारो शीष पै मणिमानके बलवान ॥ भीमतें हत देखि कै मणिमाण राक्षस घोर। रहे नैऋति शेष ते सब भजे पूरबओर ॥ गयो क्रन्दित राक्षसनको दिशाने भरि भूरि। गहन गिरिके कन्दरनमे रहो प्रतिधुनि पूरि ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धर्मनृप सह बन्धु विप्रन्ह सुनत सो धुनिघोर। भीमसेन हि लखो नहिँ तकि चकित भे चहुँओर ॥ आर्ष्टि षेण ऋषीशकों तब सौंपि कृष्णा पर्म। सहित माद्रीसुतन्ह सायुध होय कै नृपधर्म ॥ शैल ऊपर जाय कै तकि रहे चारोंओर। भीमसेन हि लखो ठाढे मारि राक्षस घोर ॥ धर्मनृप भरि प्रेम भीम हिँ लियो हियसों लाय। तहां बैठे सहित भ्रातन्ह महा आनद पाय ॥ भयो गिरिको शृङ्ग शोभित पाय कुरुबर वीर। लोकपालनतें लसै जिमि गगणलोक गभीर ॥ धनदको लखि धाम मारे परे राक्षस जौन। भीमसों इमि कहन लागे धर्मनृप मतिभौन ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

व॰प॰ भीम सहसा मोह वश कै कियो जो यह कर्म। धारि मुनिको बेष इनको वध न तुमको धर्म ॥ राजद्वेष न कीजिए तुम कियो देव बिरोध । पापको जो करत हैं जन धर्मको करि रोध॥ प्राप्त तिनकों होत निश्चय पापको फल तौन। चहत मम प्रिय तौ न कीजो फेरि एहिपथ गौन ॥ धर्म नृप एहिभाँति कहि कै धर्मनियमित श्रौन। बिश्राम करि तहँ अर्थ चिन्तन लगे सो मतिश्रौन ॥ भजे जे हत शेष राक्षस गए धनपति पास । घोरक्रन्दित करण लागे व्यथित पूरित त्रास ॥ व्यथित शोणित भरे तनुक्षत बिगतआयुध हस्त । शीघखोले धनदसों इमि लगे क्रहन समस्त ॥ गदा परिघ त्रिशूलधारक रहे राक्षस जौन । महाबल तव पुरःसर सब भीम मारे तौन ॥ क्रोधवश गए एक मारे भीम गिरिपर आय ॥ परो क्षिति पर मरो है मणिमान जो अतिकाय ॥ सखा तो मणिमान मारो शेष जे हम खर्ब। धनाधीश्वर शरण आए रावरेकी सर्व ॥ सुनत ही करि अरुण लोचन क्रोधवश धनपाल ॥कहो यह अपराध दूजो कियो भीम बिशाल। क्रोध करि रथ सज्ज कीवैं कहो यक्ष नरेश ॥ कियो यक्षन्ह सज्ज रथ गिरि शृङ्गसम मणिदेश ॥ बिमलाक्ष हयसों करे योजित भर जे गुणसर्ब । मणिनसों सब अङ्ग भूषित तेजपुञ्ज अखर्ब ॥ विजयके बऊ बचन बोलत यक्ष राक्षस सङ्ग । क्रोध करि अति चले धनपति चढे रथ उतमङ्ग ॥ देवगण गन्धर्व सुस्तव पढत सह अभिराम । चले यक्ष सहस्र सँगमे करे अक्ष ललाम ॥ धरे आयुध बिबिधि बिधिके गगणगामी यक्ष। सङ्ग रथपर चढे धनद सुजुक्त अस्त्र सपक्ष ॥ भरे पाण्डव पुलक लखि धनपालको प्रियरूप । धनद देखो पाण्डवनको धनुष धारे भूप ॥ जानि कारक देवतनके कार्यके धनपाल । भए पुलकित कृपाकों करि भरे मोद बिशाल ॥ यक्ष पक्षिन्ह सदृशते सब पाण्डवनके पाश। गए जे धनपालके है पुरःसर बलराश॥ प्रसन्नमन लखि पाण्डवनकों यक्षसह गन्धर्व । निर्बिकार बिचार करि तहँ भए ठाढे सर्ब ॥ नकुलसह सहदेव कीन्हों धर्मनृपति प्रणाम । चित्तमे अपराध अपनो जानि कै बलधाम॥ जोरि अञ्जलि भए ठाढे धनदके चऊ पाश । चढे पुष्पक प चितै धनदेशकों मतिराश ॥ तहाँ आए यक्ष राक्षस अमित गण गन्धर्ब । अप्सरण सह धनदके चऊओर बैठे सर्ब ॥ भीमसेन सु धरैं माला काञ्चनी अभिराम।गदा असि धनु धरे देखत धनदकों बलधाम॥राक्षसनसों सो लगे बऊक्षत छुवत श्रम नहि बीर। निशित सर कर लए देखत धनदकों धरधीर॥भीमकों लखि धर्मनृपसों कहोइमि धनपाल। भूतहितरत तुम्हैं जानत सकल भूत बिशाल ॥ बसऊ निर्भय शैल पैं एहि धर्म नृपसुख रूप।भीम पैं नहि क्रोध करिबो तुम्हैं कारज भूप॥ कालहत ए प्रथम हे नृप लगो तुम्ह हि निमित्त। सुनऊ यातैं तुमन ब्रीडा धरऊ अपने चित्त ॥जौन साहस कियो इन बिधि बिहित ही बिधितौन। यक्ष राक्षस नाशको नहि कोप मम हिय भौन॥ भीम पैं यह कहत तुमसों सुनऊ सो बर भूप। पूब क्रतसों लहो हम सन्तोषकों अतिरूप ॥ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ ॥ भीमसों धनपाल ऐसें कहे

सुप्रिय बैंन। तात तुमपैं क्रोध मेरे कछू मनमे है न ॥ जौंन साहस कियो कृष्णाहेतु तुम बलराम। व०प०
निदरि हमहि सदैवतन किय यक्षराक्षस नाश ॥ बाहुबलतें भए यातें प्रीतिसो हम युक्त। कर्मसो
तब भए हम अवशापसो अति मुक्त ॥ पूर्व हमहि अगस्त्य दीन्हो शाप लहि अपराध। कियो तुम
यह कर्म करिकै शापको तेहि बाध ॥ रहो भावी हमै ह्वैवें दुःख यह गम्भीर। रावरो नहिँ दोष
यामे कछू है कुरुवीर ॥ *॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ *॥ दियो तुमको शाप कैसे महामुनि तपभौन।
धनद सो सबिधान चाहत सुनो कहिए तान ॥ महामुनिको क्रोध पावक प्रबल सो अतिमान।
सबल तुम नहि भए तासो दग्ध कौंन बिधान ॥ *॥ धनेश्वर उवाच ॥ *॥ देवतनको मंत्र हो
कुशवतीमे कुरुभूप। चले हमहूँ सङ्ग सेना पद्म तीनि अनूप ॥ लखो सुमुनि अगस्त्यको पथमाह
यमुनातीर। ऊर्ध बाहु दिनेश सन्मुख करत तप गम्भीर ॥ दियो जडता दर्पतें मणिमान थूक
खलाय। भाग्यबश सो शीस ऊपर परो मुनिके जाय ॥ गगण दिशि लखि कहो मोसो महामुनि
करि कोप। प्रबल पावक पुञ्जसे जग कियो चाहत लोप ॥ धनद कीन्हो सखा तव मम महतहै
अपमान। सबल यातें मारि याको मनुज लैहै प्रान ॥ सैन्यसह एहि हते तुमहू दुःख लहिहो
भूरि। देखिहो तेहि मनुजको तव शाप ह्वैहै दूरि ॥ सैन्यके एहि पुत्रपौत्रन्हको न लगि है शाप। धनद
रहिहै साथमे तव तौन बिगलित पाप ॥ भाँति यहि हम शाप पायो महामुनिसों भूप। भीमसेन सो
दूरि कीन्हो भए अब सुखरूप ॥ *॥ धनद उवाच ॥ *॥ धैर्य दाक्ष्य पराक्रमो अरु देश काल
बिचार। जगतमे ए कार्य साधक पाँच कहत प्रकार ॥ देश अरु कालज्ञहैं धर्मज्ञ जे धृतमान। भूमिको
ते भोग क्षत्री करत सहित बिधान ॥ करत जे एहि भाँतिसो सबकर्मको नृपधर्म। लोकमे यश लहत
ते गति अन्तमे अतिपर्म ॥ देश काल बिचारिकै कीन्हो पराक्रम भूप। इन्द्र पायो स्वर्गको सह
बसुन्ह राज्य अनूप ॥ जैान केवल कोपतें नहि करत पतन बिचार। पापको फल लहतहै ते पाप
मति अनुसार ॥ कर्मको न बिभाग जानत नही काल बिचार। प्रारम्भ तिनको सिद्ध
होत न लहैं लोक बिकार ॥ करै सहसा बचन वञ्चक दुष्ट आत्मा जैान। आपुमे सामर्थ्य
मानै सर्व पापी तैान ॥ भीम निर्भय ताहि शीक्षित करहु हे नृपधर्म। आर्ष्टिषेण मह
र्षिके अब जाय आश्रम पर्म ॥ कृष्ण पक्ष बितीत कीजै तहां बसिकै भूप। यक्षगण गन्धर्व रक्षा
करहिँ गे अनुरूप ॥ शैल बासी पाय शासन परम हमसों सर्व। नित्य रक्षा करहिँ गे तव द्विजन
सहित अखर्व ॥ प्राप्त सहसा भयो इत यह भीमसेन बिचारि। साधुबादन तुम्हैं करि भो धर्मबिद
निरधारि ॥ अन्नपान सुस्वादु तुमको नित्य मम परिचार। धर्म नृप पथऊचाय देहैं भूरि भक्ष्य उदार ॥
इन्द्रकों जिमि जिष्णु जैसे वायुकों प्रिय भीम। धर्मकों तुम दस्रकों सुत दस्रके सुखसीम ॥ तथा
तुम सब रक्ष हमकों इहां हो बर बीर। अर्थ तत्व बिधानबिद धर्मज्ञ सुमति गँभीर ॥ कुशल सों है

व०प० जिष्णु सुरपुरमाह गुणगण धाम।दम दान धृति बल बुद्धि जामे बसति है अभिराम॥जो हनम नहि करत फाल्गुण कछू गर्हित कर्म।नहीं मिथ्या वचन मुखते कहत धारे धर्म॥कीर्तिबर्धन जाहि मानत पितृ सुर गन्धर्ब। शक्रके सो सदनमे सब शिखत अस्त्र सुखर्ब ॥ धर्म ते बश किए नृप सब तीन शान्तनु भूप।तीन होत प्रसन्न गुण मम देखि फाल्गुण रूप॥देव पितृ ऋषान्ह करिकै तीन पूजित भूप। सत्र कीन्हे अश्वमेध सु दान दे अनुरूप॥ भूप शान्तनु पितामह तो पिताको नृपधर्म।इन्द्र पुरमे वास करि तव कुशल बूझत पर्म॥बैशम्पायनउवाच॥एहिँ भांति सुनिकै धनदके वर बचन पाण्डव सर्ब। सहित कृष्णा द्विजन्ह पायो मोद परम अखर्ब॥गदा असि धनु छोडिकै तब भीम साञ्जलि बीर।नम स्कार धनेशकों चलि कियो प्रणत गभीर॥ भीमकों लखि शरणगत इमि कहे धनपति बैन। मानहा भव मनुको भव मित्र आनद ऐन॥शीघ्र अर्जुन आइ हैं सब अस्त्र लहि बरबीर।बिदा करि हैं इन्द्र तब तुम पाइहो रणधीर॥ एहि भाँति शीशित धर्मनृपकों करि धनेश्वर भूप। गए अपने स्थानकों समुदाय सहित अनूप॥ गगण पथमे भयो कलकल शब्द चलत धनेश। लखत बाजी नीकसी रथ कान्ति की नभदेश॥ बिना प्राण जे राक्षसनके परे हे तहँ काय। देय आज्ञा धनद तिनकों दिए दूरि फेकाय॥ महामुनिके शापको जब काल आयो भूप। गए मारे युद्धमे ते शाप शमन स्वरूप॥ रहे पाण्डव तहां तेहिनिशि सदनमे अभिराम।राक्षसन्ह तहँ आय पूजन कियो बिबिधि ललाम॥ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनवपर्वणि पाण्डवकुबेरसमागमवर्णनोनाम त्रिंशदध्यायः॥ *❧❧❧❧❧❧❧❧❧❧*❧*

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

धौम्य आर्ष्टिषेण तपधाम। प्रातः संध्या करि अभिराम॥ गए पाण्डनके चलि पास। गिरि पर द्विजन्ह सहित तपरास॥ धौम्य आर्ष्टिषेणके पाय। पाण्डुसुतन्ह बंदे सुखदाय॥ सकल ब्राह्मण न्हकों सु प्रणाम। कुन्तीसुतन्ह कियो अभिराम॥ धौम्य युधिष्ठिरको गहि पानि। दक्षिण करसो अति सुखदानि॥ प्राचीदिशा देखिकै भूप। कहन लगे इमि वचन अनूप॥ यह मन्दरगिरि नृप अतिमान। सागरलों क्षिति धरे महांन॥ यह धनेश रक्षित क्षिति भूप। बसत जहां ऋषि मुनि सुखरूप॥ इहां उदयको लहत दिनेश। बन्दत जाको जगत अशेश॥ यह दक्षिणदिशि कुरु बर पर्म। जहां बसतहै राजा धर्म॥ यह अस्ताचल लसत अनूप। सिन्धुमहोदधिके ढिग भूप॥ जहां बरुणको लोक बिशाल। पश्चिम दिशाधीश दिगपाल॥उत्तर दिशा सुमेरु सुधर्म। ब्रह्म बिदनकी जेंह गति पर्म॥ ब्रह्मसभा जापैं छबिभौन। रचत चराचरमय जग जौन॥ ब्रह्मपुत्र जे मानस भूप। दक्षादिक जहँ बसत अनूप॥बशिष्टादि जे ऋषिबर सात। उदय करत तहँ निति अवदात॥ सर्ब भूतको कारण भूप। ध्रुव अनादि अव्यय सुखरूप॥ तास लसत यह अनुपम धाम। ब्रह्म

सभा ऊपर अभिराम॥जाहि न सकत देवतौ देखि। अनल अर्क शत सम अवरेखि॥तीन विष्णुको अव्यय धाम। ज्योति मई अतिशय अभिराम॥ पूर्व तास नारायण ओक। जह भूतेश्वर बसत अतोक॥ नहि ब्रह्मर्षि शकत तहँ जाय। और जायको ऋषि गति पाय॥ तहँ जती योगी गति लेत। भरो भक्तिसों जिनको चेत॥ अचिंत्य आत्मा तहँ भगवांन। बसत सर्वब्यापक अति मान॥ वर तप करि शुभकर्म अनेक। योगी विगत मोह सविवेक॥ जात जे विष्णु सनातन ओक। ते फिरि नहिँ आवत एहिँलोक॥ स्वयम्भु अव्यय ईश्वर जाँन। यह ज्योतिर्मय ताको भाँन॥नमस्कार करिए नृपधर्म। यह सुमेरुगिरि सोहत पर्म॥ सूर्य्य चन्द्रमा ग्रह सभ सर्व। जाइ प्रदक्षिण करत अखर्व॥ ज्योतिमान सब लीन्हें साथ। करत प्रदक्षिण रवि निशिनाथ॥ जात मेरुके जेहि दिशि सूर। होत दिवस तहँ आँनद पूर॥देखि परत नहि जहाँ भान। तहाँ रहति निशि नित्य सुजान॥ पर्व सन्धिको लहिके काल। दिनमणि रचत मासको माल॥सोम नक्षत्रणको सँग पाय।चन्द्रमास विरचत सुखदाय॥ शिशिरस्त्रवन चाहत जब सूर। भजत दिशा दक्षिण द्युतिपूर॥ तब उतपन्न होत अति शीत। देत दीन दुर्बलकों भीत॥ उत्तर पथ गहिँ दिनमणि भूप। हरत सार सबको अनुरूप॥ तब आलस निद्रा अरु खेद। सार हरे ते बढत सखेद॥ नित्यक्रम यह अकथित भूप। सार सो बर्षत रवि जलरूप॥ आतप मारुत बर्षा देय। भानु जगत बर्धित करि लेय॥ काल चक्र यह ऐसे भूप। फिरत हरत निशिदिनके रूप॥ *॥ वैशम्पायनउवाच॥ *॥ बसत तीन नगमें अभिराम। जिष्णु मिलनको धरि मनकाम॥ तीन अद्रिकी सुषमा पर्म। देखत प्रीति भरे नृपधर्म॥ ऋषिन्ह सहित तहँ गे गन्धर्व। लखि तिनको व्रतधर्म अखर्व॥ सगिरि औषधिन्हको सु प्रकाश। लहि न होत जहँ निशिदिन भाश॥ धनद रचित पद्माकर यत्र। क्रीडास्थान बने बऊ तत्र॥ जहाँ बास करि सुमति समस्त। देखत उदय भानुको अस्त॥ सत्यव्रत अर्जुनको भूप। तहाँ लखत आगमन अनूप॥ जिष्णु समागमको अति हर्ष। होइ तुम्हें द्रुत सह उतकर्ष॥ यह ऋषिगणको आशिष पर्म। सुनि समाधि धारो नृपधर्म॥ करत जिष्णु चिन्तन मतिमान। भयो योग निशि बर्ष समान॥ भए धौम्यको सम्मत पाय। धारि जटा अर्जुन सुखदाय॥ भयो न हर्ष तिन्हे तब भूप। तद्गत मनकों कहँ सुखरूप॥ भ्रातन्ह सहित सकृष्णा पर्म। करत जिष्णु चिन्तन नृपधर्म॥ बसत गन्धमादनमें भूप। एकमास बीतो एहि रूप॥ पञ्चबर्ष रहि सुरपति धाम। अस्त्र दिव्य सीखे अभिराम॥ ब्रह्मा विष्णु सुरेश महेश। अग्नि वायु यम वरुण धनेश॥ नारायण त्वष्टा रवि सोम। और जहालो सुरगण तोम॥ इनके अस्त्र रहे जे पर्म। शत्रुनाश कारक कर कर्म॥ सहसाक्षसों लहिके तेन। अभिवादन करिके मतिमेन॥ सुरपतिसों आज्ञाकों पाय। जिष्णु प्रदक्षिण करि सुखदाय॥चले गन्धमादनकों बीर। भरे प्रीति अति मोद गभीर॥ *॥ वैशम्पायन उवाच॥ *॥ रथ नरेन्द्रको अति अभिराम। विद्युत प्रभा वेगको धाम॥ मातलि वाहित नभमें

देखि । उल्का सो मनमे अवरेखि ॥ अर्जुनको चिन्तन करि बीर । पाण्डव मोद भरे गम्भीर ॥ तापर चढो जिष्णुकों भूप । लखो धरे भूषण अति रूप ॥ शक्रप्रभाव पायकै बीर । ज्वलितः श्रीसों भरो गभीर ॥ गए गन्धमादनपैं तत्र । भ्रातन सहित धर्मनृप यत्र ॥ रथतैं उतरि जिष्णु बलधाम । धौम्य चरण बन्दे अभिराम ॥ बन्दि धर्मभूपतिके चर्ण । फेरि भीमके बारिज वर्ण ॥ माद्री सुतन्ह आइ अभिराम । जिष्णु चरण बन्दे छबिधाम ॥ बोलि मधुर कृष्णासों बैन । शान्तिमान आनदके चैंन ॥ भ्रातृ समागमको अति मान । बढो हर्ष तहँ सिन्धुसमान ॥ जिष्णु प्रशंशित ह्वै नृपधर्म । भए मोदसों पूरित पर्म ॥ जेहि रथपै चढिकै सुरराय । हनो असुर सेना समुदाय ॥ जाय इन्द्ररथ निकट गभीर । कियो प्रदक्षिण कुरुकुल बीर ॥ करि मातलिको बहु सत्कार । कियो धर्मनृप तुष्ट उदार ॥ मातलि कियो भूपकों तुष्ट । शिक्षा बचन बोलि अति पुष्ट ॥ पर्म प्रकाश भयो रथ तौंन । लै मातलि किय सुरपुर गौंन ॥ गो मातलि तव सुरपुर भूप । भूषण दए जे शक्र अनूप ॥ सूर्य्यसमान प्रभामे जौंन । जिष्णु दए कृष्णाकों तौंन ॥ जिष्णु मध्य द्विजवर समुदाय । भ्रातन सह बैठे सुखपाय ॥ कहे अस्त्र हम शिखे अखर्ब । बायु शम्भु सुरपतिसों सर्ब ॥ शील शौच तप लखि मम भूप । दिए सुरन्ह सब अस्त्र अनूप ॥ स्वप्न रीतिसों गगण प्रवास । कहो जिष्णु कुरुपतिके पास ॥ माद्री सुतन्ह सहित सुखदान । गए जिष्णु जहँ निद्रास्थान ॥*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि अर्जुनसमागमबर्णनोनाम एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रजनी भई व्यतीत जब प्रात सुकृत करि बीर । सह भ्रातन्ह नृपधर्मसों बोले जिष्णु गँभीर ॥
एहि अन्तरमे गगणमे बाजे बजे ललाम । सुनो पाण्डवन्ह सुरनको शब्द कोलाहल साम ॥
रथध्वनि घण्टाको क्वणित सुनि पाण्डव अतिरूप । लखो सहित गन्धर्बगण अमरबृन्द अनूप ॥
सूर्य्य सदृश नभजान चढि चहुओर द्युतिमान । मध्य हरित हय सुरथपै तेज पुञ्ज मघवान ॥
आए जहँ पाण्डव रहे द्विजन सहित बर बीर । सुनाशीर गिरि शिखर पर उतरे मुदित गँभीर ॥
देवराजकों देखिकै धर्मनृपति सह भ्रात । गए तहां द्विजबरन्ह सह भरे मोद अवदात ॥
सुरपतिकी पूजा कियो बेदबिहित नृपधर्म । नमस्कार सुरराजको कियो जिष्णु सह शर्म ॥
भृत्य सदृश ठाढे भए प्रणत देवपति पास । जडित भरो शक्रास्त्रसो लखि कुरुपति मतिरास ॥
भरे महत आनन्दसों जानि बन्धु सुखदान । परम प्रीति पायो नृपति करि पूजित मघवांन ॥
देखि दिन मानस खरे भरे पुलक सह शर्म । देवराज नृपधर्मसों कहे बचन अति पर्म ॥
अगदां बरा भूमको भोग करऊ गे भूप । काम्यक बनकों जाऊ फिरि सहित कुशल सुखरूप ॥

अस्त्र पाय हमसों सकल मम प्रिय कियो गभीर। त्रिभुवनमे नहिँ जिष्णुको कोउ जीतिहै बीर॥ ५०५॥
ऐसे कहि नृपधर्मसों शक्र कृपाके बैन। भरे मोद सुरगण सहित गए आपने ऐन॥
जो धनपतिके स्थानमे पाण्डव शक्र मिलाप। एकवर्ष भरि करै गो नर शुचि ह्वै कै जाप।
बाधा रहित सो जिअैगो शतसम्वतलौं भूप। सन्तति सम्पति सहित सो सुखसों भरो अनूप॥
स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकविश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि पाण्डवशक्रसमागमवर्णनोनाम द्वात्रिंशोऽध्यायः॥ **

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥

गएँ शक्र भ्रातन सहित द्रुपदसुता सह भूप। जिष्णु कियो नृपधर्मको पूजन सविधि अनूप॥
मूर्द्धाघ्राण बिभत्सुको करि नृपधर्म सचैन। बोले ऐसें जिष्णुसों सुख भरि गद गद बैन॥
कैसें बीतो काल यह स्वर्गमाह तव तात। कैसें पाये शक्रसों अस्त्र सकल विख्यात॥
कियो विहित विधि अस्त्र तुम ग्रहण सकल कुरुवीर। इन्द्र शुक्र तुमकों दिये जे करि प्रीति गँभीर॥
शङ्कर शक्र दिये तुम्हें जैसें अस्त्र अनूप। आराधन तिनको कियो तुम जेहिविधि अतिरूप॥
त्रिय जो कीन्हो शक्रको तुम जेहिभाँति ललाम। जिष्णु तौन सुनवे चहत कहहु सविस्तर आम।

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

जैसें शङ्कर शक्रको दर्शन पायो भूप। सुनऊँ तौन हम कहत हैं विस्तर सहित अनूप॥
विद्या तुम हमकों दियो जो सो लै अभिराम। विदा होय तुमसों गए हम तपकों हिमधाम॥
काम्यकतें गिरितुङ्गमे जाइ वसे हम भूप। एकनिशा हमकों मिलो तहँ वर विप्र अनूप॥
तेहि बूझो हमसों कहाँ जात कौन तुम बीर। यथा तथ्य तासों कहो हम सुनि सुमति गँभीर॥
तब तेहि हमसों प्रीति करि कहो करऊ तप जाय। तप प्रभावतेँ जगतपति रुद्र मिलैं गे आय॥
तब अपनो कहि कै कहो हर किरातको युद्ध। कहो सो शिव करि कै कृपा दियो पशुपति उद्ध॥
अस्त्र धनद यम वरुण जे दिये सविधि तहँ आय। कहो फेरि सुरपुर गवन सुरपतिको रथ पाय॥
आदर करि सुरपति दिये अस्त्र सविधि जे सर्व। कहो तौन फिरि आपनो अस्त्राभ्यास अखर्व॥
कही कथा यह प्रथम ही याते कही न फेरि। जानि ग्रन्थ बाहुल्य बुध याते लीजो हेरि॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

जानि कुशल सब अस्त्रमे धरि विश्वास अनूप। मेरो मूर्धा घ्राण करि इन्द्र कहो इमि भूप॥
तुम्हे जीतिबे योग्य अब नहि रणमे सुर सर्व। मनुज लोकमे मनुजको तुम्हे जीति है खर्व॥
अप्रमेय अप्रधृष्य तो अस्त्र युद्धमें बीर। और न तुम सम होयगो सुरपति कहो गँभीर॥

दं०पं०

सूर अस्त्रविद बीर तुम कुरुकुलके सुखदान । अस्त्र प्राप्त तुमकों भए जे दशपञ्च महान ॥
और न पञ्चविधानमें तो सम धनुधर बीर । संहार प्रयोगादिक कहे जे धनुबेद गँभीर ॥
काल भयो है प्राप्त सो करिबेकों अब कर्म । कहेउ प्रतिज्ञा प्रथम तब कहै जो चाहिये पर्म ॥
तब सुरपतिसों हम कहो ऐसे सुनि कै भूप । शक्य हमारे होय गो करि है तौन अनूप ॥
तब हँसिकै सुरपति कहो ऐसे हमसों बैन । नहि अशक्य तुमको कछु त्रिभुवनमे बलऐन ॥

॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥

निवातकवच नामक असुर शत्रु हमारे वीर । सिन्धुकुक्षिमे बसत है लहि कै दुर्ग गभीर ॥
तीनि कोटि ते है प्रबल तुल्य पराक्रम रूप । तिन्हैं मारि गुरदक्षिणा दीजै हमै अनूप ॥
मातलि सह जामे लगे है बरबरण मयूर । तौन सज्ज करि रथ दियो तेजपुञ्ज छवि पूर ॥
यह कीरटी मेरे धरो मस्तक पैं अभिराम । रूप सदृश मेरे दियो भूषण दिव्य ललाम ॥
यह अभेद्य दीन्हों कवच सुखस्पर्श अतिरूप । कियो अजर गाण्डीव पै मौर्वी रोपित भूप ॥
तेहि रथ पैं हम चढि चले जेहिरथ चढि सुरराज । बलिकों जीतो समरमे दितिकुल सहित समाज ॥
देव सकल रथघोष सुनि जानि हमै मघवान । आए मेरे पास चलि भरे हर्ष अतिमान ॥
देखि हमै बूझन लगे चहत कियो कापार्थ । हम तिनसों बृतान्त कहि दीन्हों सकल यथार्थ ॥
नेवातकवच जे असुर हैं तिन्हैं हनन हम जात । यह सुनि कै आशिष दियो हमै सुरन्ह अवदात ॥
नमुचि बृत्र सम्बर प्रभृति असुर महाबलवान । एहि रथपर चढि करि हने शक्र समर अतिमान ॥
देवदत्त देवन्ह दियो यह कहि शङ्ख महान । बिजयहेतु हमसो लयो सुनि सुखब सुखदान ॥
शङ्ख कवच बरबाणधर गहे धनुष अभिराम । चले तहां हम सिन्धुसे जहँ असुरनको धाम ॥
सुनत महर्षिणसों तहां पथमे सुस्तव भूप । देखो जाय समुद्रको अतिगम्भीर स्वरूप ॥
फेण लता लपटी उठै गिरिसे महत तरङ्ग । बेला बिलसत रतनै नौकागण बहुरङ्ग ॥
मत्स्य तिमिंगिल आदि बक्र गिरिसे याद महान । बायु भ्रमत जामे रहत अद्भुत रूप असान ॥
महाबेग अम्भोधि सो देखि सर्व अतिमान । लखो दनुजपुर फेरि हम दनुजन भरो महान ॥
तहँ पृथ्वीतलमे गयो मातलि लै रथ भूप । आतुर तहँ रथ हांकि गो रथबिद बीर अनूप ॥
कम्पित कीन्हों दनुजपुर रथको घोष सुनाय । घनगर्जित सम सुनत सो चौंके दनुज सबाय ॥
रथधुनिसों जानो हमै तिन मनमे मघवान । ह्वै बिस्मित ठाढे भए गहि धनुबान महान ॥
मुसल गदा असि परशुधर चक्र त्रिशूल उदार । भरे त्रास तिन नगरके मुद्रित कीन्हें द्वार ॥
कोऊ देखि परे न तहँ रक्षण करि पुर सर्ब । लीन भए जहँ तहँ सकल पूरे त्रास अखर्ब ॥
देवदत्त तब शङ्ख लै हम करमे अतिघोर । पूरित कीन्हों दिशन्हमे उग्र भयानक शोर ॥
शब्द सो पूरो दिशन्हमे प्रतिध्वनि भई असान । अलङ्कार करि कै सकल तब दनुजन्ह बलवान ॥

वर्म चर्म धरि सज्ज ह्वै लए धनुष तूणीर। गदा मुसल पट्टिश परिघ चक्र शूल बरबीर॥ व०पु०
आयुध नानाभाँतिके धरि कै निशित अखर्व। प्रगट भए लाघत तहाँ दानव दुर्मद सर्व॥
मातलि तुरँगनको समुझि बहुविधिको सञ्चार। गयो हाँकि रथको तहां जहँ समदेश उदार॥
मातलि प्रेरित तुरग ते महा बेगते भूप। कछु कोऊ लखि नहि परै सो रथ अद्भुत रूप॥
दनुजन तब बादित्र बहु बजवाए चहुँओर। भयो रोर अतिशय महा भरे बिकृत स्वर घोर॥
सुनत शब्द सो सिन्धुके पर्बत जैसे पीन। बिना जीवके सलिल पैं उतराने बहुमीन॥
तब दानव वर बेगसों लागे बरषण बान। दनुजनसों हमसों भयो तुमुल युद्ध अतिमान॥
देवर्षि ब्रह्मर्षि सिद्ध तँह देखन लागे आय। लगे सराहन हमै करि मधुर गिरा जय हाय॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

तब निवातकवची दनुज धरि कै शस्त्र महान। वर्षण लागे बेगसों मोपर अति बलवान॥
रथको पथ चहुँओरते घेरि महा करि रोर। मूदिँ लियो मोकों बरषि बाणवृष्टि अतिघोर॥
गदा शूल पट्टिश परिघ शक्ति मुशल अतिमान। शस्त्र निरन्तर ते लगे वर्षण दनुज महान॥
ते हमपर दौरे सकल धरे शस्त्र समुदाय। तिन्हके दश दश बाणसों हम बेधे अतिकाय॥
मेरे बाणनतें भए बिमुख दनुज ते सर्व। मातलि हाको बेगतें रथ गतिज्ञान अखर्व॥
नाना विधिकी गति गहँ नृत्ते तरल तुरङ्ग। चरणघातसों मरदि तिन कियो दनुज बल भङ्ग॥
दशहजार रथमे तुरग लगे हरित बलबान। जन्ता मातलि सो महारथ रथगतिविद मतिमान॥
तिनके चरण निपातते रथध्वनिते गँभीर। निशित हमारे शरणसों मरे दनुज बहुबीर॥
दशौ दिशनतें घेरि ते बर्षे शस्त्र महान। भयो हमारो मन व्यथित देखि तिन्है बलवान॥
मातलिको तव वीर्य्य हम देखो अद्भुत रूप। बेगवान तिन हयनको गहे यथाबिधि भूप॥
तव हम अति लाघव सहित अस्त्र बिचित्र चलाय। असुर हने आयुध सहित शतसहस्र अतिकाय॥
युद्ध करत ऐसे हमै लखि मातलि अतिरूप। अति प्रसन्न मोपै भयो शक्रसारथी भूप॥
बध्यमान रथ हयन्हतें ते दितिसुत बलवान। मरे बहुत रणतें चले भाजि भीति भरि प्रान॥
तव ब्रह्मास्त्र चलाय हम करि लाघव अतिरूप। चण्ड शरणसों दनुज गण हने सहस्रन्ह भूप॥
पीडित ते हमसों दनुज महाक्रोधकों धारि। आय हमै पीडित कियो शक्ति शूल शर डारि॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

तिग्मतेजस अस्त्र लै हम नाम माधव चण्ड। डारि दैत्यन्हके किए सहस्र शतधा खण्ड॥
काटि तिनके शस्त्र दश दशबाण निशित अखर्व। मारि तिनसां किए बेधित दनुज दुर्मद सर्व॥
भ्रमर कैसी पांति धनुतें कढत शरबर चाहि। इन्द्र सारथि देखि मातलि रहो मोहि सराहि॥
शरावली तिनकी प्रबंशित कियो मातलि भूप। शरणसों हम काटि कीन्हो तीन तिलसम रूप॥

व॰प॰ बध्यमान निवातकवची फेरि बरषे बान । मूदि दीन्हो मोहि चारोओरते अतिमान ॥ शस्त्र घाती अस्त्रसों हम शस्त्र तिनके काटि । मारि तिनकों शरणसों फिरि दिए चितिपर साटि ॥ कढत तिनके कायतें बऊ बही शोणित धार । यथा वर्षत मेघ निर्झर झरत शृङ्ग पहार ॥ अश निसै वरबाण मेरे लगे व्याकुल सर्व । भए शतधा भिन्न तिनके काय शस्त्र अखर्व ॥ बिरचि माया करण लागे दनुज ते अतिमान । लगे वर्षण चहूँदिशिते विपुल वृन्द पषान ॥ वज्रसे इन्द्रास्त्र सो हम उपल कीन्हें खण्ड । उपल खण्डें प्रगट तासों भयो पावक चण्ड ॥ फेरि लागी गिरण नभतें मुसलसी जलधार । बारिधारा सहित धायो चण्डवायु उदार ॥ लगे गर्जन दनुज गो दिश विदिशको घटिज्ञान । बारिधारा बँधी नभसों बढो तमस महान ॥ इन्द्रसों हम लहो हो दिशास्त्र पूर प्रकाश । छोडि ताकों बारि धारा कियो सह तमनाश ॥ अग्नि वायु प्रचण्डा तसै बढो माया भूप । शैल वारुण अस्त्रसों हम हरो तिनको रूप ॥ देखि मायानाश दुर्मद दनुज ह्वै अतिक्रुद्ध । करण नाना भाँतिकी तव लगे माया उद्ध ॥ शस्त्र पावक सलिल वर्षण लगे घोर पषान ॥ वायुसों अति चण्ड कीन्हों व्यथित मोहि महान ॥ अन्धतमस महान बाढो थकत चखि न तुरङ्ग । भए मातलि खलित गो गिरि कसो जो बऊ रङ्ग ॥ कहो हमसों सभय मातलि कहा हो वरबीर ॥ भरी मोमे भीति ताकों देखि सभव गँभरो ॥ सभय हमसों बचन ऐसें कहो मातलि पार्थ । सुरा सुर संग्राम पहिले भयो हो अमृतार्थ ॥ युद्ध सम्बरसों भयो यव इन्द्रसों अतिमान । कियो हम सारथ्य बलिसों लरे यव मघवान ॥ किए एतने युद्धमे हम शक्र सेवन बीर । बिगत ज्ञान न भए कबहूँ भाँति एहि गम्भीर ॥ जगतको संहार बिधि का करे गो यह अब । महाघोर न युद्ध ऐसो भयो हो अन्यच ॥ बचन मातलि महात्माके सुने हम यह भूप । कियो मोहित दानवनको महा माया रूप ॥ भीत मातलिसों कहो एहिभाँतिके हम बैन । लखड्ढ मेरे भुजनको बल धनुषकों मतिऐन ॥ अस्त्रमायासों जो इनकी प्रबल माया बीर । करत हैं हम अस्त्र देखड्ढ सूत धारैं धीर कियो हम तव अस्त्र मायामोहिनी अतिमान । असुरमाया आपनि लखि पीडमाम महान ॥ फेरि माया बहुत बिधिकी करि असुरन्ह औंन । भयो हो जो प्रकाश ताको ग्रास कीन्हों तौंन ॥ मग भो जलधारमे सबलोक शोक महान । सूत चारो सुरथ पाय प्रकाशको अतिमान ॥ भए व्याकुल दनुज तव हम पाय औसर भूप । पठै यमपुर दए मारि अगन्यते अतिरूप ॥ अदृश्य ह्वै ते लरन लागे दनुज हमसों आय । अदृश्यहन्ता अस्त्रसों हम हने तिनके काय ॥ भरे अस्त्र प्रता पसों गाण्डीव सुश्चित बान । काटि तिनके शीष दीन्हो पाटि भूमि महान ॥ बध्यमान निवात कवची दनुज जे अतिकाय । आपने पुरमाह पैठे भाजि कै तेजाय ॥ भजे दानव मिटी माया भयो लोक प्रकाश । लखें दानव परे लाखन्ह तहा पाये नाश ॥ रहो नहिँ तव संहले रथ चलनको पथ भूप । गयो तव रथ लेय मातलि गगणमाह अनूप ॥ क्रोध करि कै दनुज ते तव व्योममण्डल

छाय । लगे बरषन गिरिनको गए परैं कछु न लखाय ॥ गए तुरगँनके चरणसों दनुज बहु लप टाय । चक्र रथके पकरि लीन्हें दितिज जे बरकाय ॥ रोध करि गति सुरथकी बहु बरषिकै गिरि भूप । लियो हमकों मूँद चहुँदिशि गुफाको रचि रूप ॥ एहि भाँति मोकों देखि आरत कहे मातलि बैंन । भीति अर्जुन भरहु मति बज्रास्त्र तजु मतिऐंन ॥ सूतको सुनि बचन किय हम बज्र अस्त्र प्रहार । इन्द्रको प्रिय परम दारुण भीम भूरि उदार ॥ बज्रसम गाण्डीव ते शर ब्रात करि सन्धान । मारि माया तौन तिनके कवच काटि महान ॥ बज्र मंत्र सुयुक्त शरतैं बज्रसे अतिचण्ड । दनुजगणके काय गिरिसे काटि कीन्हे खण्ड ॥ असुर पकरे चक्र जे हे तुरग गणके पाय । मारि तिनकों डारि दीन्हें बाण ते तहँ जाय ॥ निवातकवचनके परे जहँ देह पर्वतमान । भयो गिरि गण कीर्णसों सो देश नृपति महान ॥ बिहसिकै तब कह्यो मातलि भूप ऐसे बैंन । बीर्य्य तुममें जौन अर्जुन सुरनमें सो हैं न ॥ मरे असुरनकी लगी तब करण रोदन बाम । बिना पतिकी यथा कुररी करै क्रन्दित साम ॥ गए मातलि सङ्ग तब हम असुर पुरमें भूप । सुनत रथको घोष असुरी भई कम्पित रूप ॥ सहस दश हय युक्त रथकों देखिकै रबिरूप । डारि भूषण असुर बनिता भजी चहुँदिशि भूप ॥ कोउ धामन माहँ पैठी मूदि अपने द्वार । जड़ित मणिगण घटित कञ्चन बन जौन उदार ॥ देखि अद्भुत नगर सो हम देवपुरतें पर्म । लगे मातलिसों सुबूझन भाँतिसों नृप धर्म ॥ इन्द्र ऐसे नगरमें नहि कियो काहे बास । शक्रपुरते अधिक है यह भरो रूप प्रकाश ॥ मातलिरुवाच ॥ * ॥ पूर्व यह सुरराजको हो परम पुर अभिराम । दियो काढि निवातकवचन्ह युद्ध करि बलधाम ॥ महा तप करि पितामहकों कियो दनुजन तुष्ट । दियो यह पुर बासकों बिधि कृपा करिकै पुष्ट ॥ पितामहसों कह्यो ऐसे बिनयसों सुरकन्त । कीजिए भगवान बरको नियम कारण अन्त ॥ * ॥ब्रह्मोवाच ॥ * ॥ नाश इनको करहुगे देहान्यते मघवान । दियो इन के नाशको हरि अस्त्र तुमहि महान ॥ सुरणके नहिँ जीतिबेके शक्य हे ए बीर । कालको परिणाम लहि तुम हनो इनको धीर ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ नगरको करि समाधान निपाति दानव भूप । सहित मातलि चले तब सुरपुराकों सुखरूप ॥ * * * * * * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनः श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि निवातकवचवधवर्णनोनाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

लखो पथमें कामचर पुर सदृश सूर प्रकाश । रत्नमय द्रुम लसै जिनपैं बिहंग सुषमा रास ॥ पौलोम दानव कालखञ्जनसों भरो अभिराम । सौध नाना भाँतिके पुर द्वार चारि ललाम ॥ शक

व०प० नानाभाँतिके धरि दनुज बृन्द महान। करत चारोंओर रक्षण स्वपुरको बलवान ॥ दैत्य पुर हम देखिके सो महत अद्भुत रूप। कहो मातलिसों कहा यह देखि परत अनूप ॥ मातलिरुवाच कालखंजा अरु पुलोमा आसुरीं द्वौं पर्म। दिव्य बर्ष सहस्र कीन्हों महा तप युत धर्म॥ दियो तपके अन्तमे वर पितामह अभिराम। मागि तिन वर लयो अपने सुतन्हकों सुखधाम ॥ अबध्यता सुर असुर राक्षस पन्नगनसों सर्ब। नगर मणिमय महत खेचर प्रभा पूर अखर्ब ॥ यक्ष ऋषि गन्धर्ब राक्षस सुरन सहित अजेय। शोक रहित सु काम गुणसों भरो अरुज असेय ॥ पैालोम दानव कालखञ्ज सु बसत यामे उद्ध। हिरण्यपुर यह बिदित शाश्वत सुरन साथ बिरुद्ध ॥ सुरनसों नहिँ बद्ध ए उद्वेग रहित महान। मृत्यु इनकी मनुज सो बिधि रचित है बलवान ॥ सपुर हनि बज्रा स्त्रसों तुम करहु इनको नास॥ *॥ अर्जुनउवाच॥ *॥ सुरासुरतें जानि तिन्हहिँ अबध्य हो मतिरास॥ कहो मातलिसों चलो तुर नगर पास अखर्ब। शक्र शत्रु बिचारि हमकों बध्यहैं ए सर्ब॥ मारि अस्त्रणसों करौंगो दनुज दुर्मति नास। सुनत मातलि बेगि रथ ले गयो तेहि पुर पास॥ देखि हमकों धारि ते बर बर्म भूषण पर्म। रथनपैं चढि कढे पुरतें दनुज ते नृपधर्म ॥ शस्त्र नानाभाँतिके धरि दनुज दारुण क्रुद्ध। घेरि चारोओरते ते करन लागे युद्ध ॥ शरनसों हम कियो बारण शस्त्र वर्षा तैांन। जैान दानव रहे बर्षत मेघसे करि गैांन ॥ फेरि छोडो अस्त्रकों हम बिबुध बिद्या रूढ। हनन लागे परसपर ते भए दानव मूढ॥ शरनसों तब शीघ्र तिनके हने हम बज्र भूप। भाजि ते पुर माहँ पैठे भए व्याकुल रूप॥ गगणकों उडि गयो फिरि सो नगर माया जोर। शरन सो हम मार्ग तिनको कियो रूधित घोर ॥ यथा सुख दैत्येयपुर सो धरत बश बरदान। गगणमे पाताल जलमै दिशनमे गतिमान ॥ अमरपुर सम तैान पुर अति कामचारी जैांन। दिव्यास्त्र मय शर जालसों हम कियो रुन्धित तैांन ॥ फेरि मेरे शरनसों व्है भग्न सो पुर भूप। भूमिपैं गिरिपरो सो गति रहित होय अनूप ॥ मथित मेरे शरनसों ते असुर अति बलवान। भ्रमरसे ते भ्रमनलागे गगणमे अति मान ॥ गयो नभते भूमिपै रथ हाकि मातलि भूप। असुर साठिहजार रथ चढि क्रोधमय अति रूप॥ युद्ध लागे करन तैांन बिचित्र हमसों आय। निशित बाणनसों लगे हम हनन तिनके काय॥ सिन्धु कैसी लहरि लागे लरन ते बलवान। शक्य ए न मनुष्यके रणमाह करि अनुमान॥ क्रमहि ते हम दिव्य अस्त्र प्रयोग कीन्हो जैांन। अस्त्रसों तिन अस्त्र मेरे व्यर्थ कीन्हें तैांन॥ बिबिधि बिधिकी रथनकी गति चालिके ते सर्ब। देखि रणमे परे शतसहस्र महाबीर अखर्ब ॥ धरे नाना भाँतिके मणि मुकुट भूषण भूप। भयो सुमन प्रसन्न मेरो देखि तिनको रूप ॥ अस्त्रमय शर बर्षकों हम बर्षिकै अति काम। तिन्हैं पीडि न सके किय तिन हमै पीडित माम ॥ बज्रत तैान शतास्त्र रणमे कुशल अति लखि भूप। व्यथित मेरे हृदयमे भय भयो व्यापक भूप ॥ देव देव महेंद्रको हम लखि बोलि उदार। रैाद्र अस्त्र प्रयोगको तब कियो उग्र बिचार॥ तीनि शिर नव नयन षडभुज चण्ड

सूर समान। अग्निज्वाला सदृश जाके केशवेश महान ॥ वमत अग्नि भुजङ्ग तिनको किए भूषण बास। अभों हमसों रौद्र अस्त्र बिलोकि चण्ड प्रकास ॥ गाण्डीवसों सो युक्त करिकै बन्दि शङ्कर सर्व। मुक्त कीन्हों असुर नाशन हेतु असुर अखर्व॥त्यजतहा तेहि अस्त्रसों अनगणिन निकसे रूप। सिंह व्याघ्र बराह मृग गज महिष ऋच्छ अनूप॥ शरभ पन्नग उन्न बानर बृक बिडाल बिशाल। ग्टद्ध गरुड पिशाच प्रेतसु यच्छ रच्छ कराल ॥ देव ऋषि गन्धर्व गुह्यक याद जूथ अति माम। अस्त्रतें ते कढे सायुध घोररूप महान ॥ और नाना रूपके जे जीवहै जगमाहँ। शस्त्र लीन्हें घोर निकसे अस्त्र ते नरनाहँ॥अस्त्रतेँ वज्र रूप व्यापक भयो जगत बिशाल। चतुर्भुज चतुरास्य त्र्यशिर चतुर्दन्त कराल ॥ रुधिर मांस बसास्थिसों संयुक्त भू करि सर्व। मारिकै तिन नाश कीन्हों दनुज तैांन अखर्व ॥ अर्क ज्वलन समान तातेँ बज्रसे कढिवान। हने एक मुहूर्तमे सब दनुज ते बलवान॥ गाण्डीव मुक्त महास्त्रतें हत देखि दानव माम। कियो अम्बक देवकों भरि भाव भूरि प्रणाम ॥ देखि मातलि मुदित औसें कहे हमसों बैन। कियो यह तुम कर्म सो सुर शक्य करिबे है न ॥ शक्य हो न सुरेशहूके कियो यह तुम जैांन। सुर असुरसों नहिँ वध्यहो यह हनो पुर तुम तैांन॥असुर पुरके हने तिनकी बिकल रोवति बाम। हनत उर शिरके सखी ले छोडि निकसीं धाम॥ पिता पति सुत शोकसों अति भई व्याकुल सर्व। गिरे छितिपर उठै फिरि गिरि परै व्यथित अखर्व॥ भयो हतश्री नगर सो गन्धर्व नगर समान। मोहि मातलि गयो ले सुर नगरको सुखदान॥ हिरण्य पुर हनि मारि सकल निवातकवचन भूप। गए हम सुरराजके तब पास आनद रूप ॥ कर्ममेरो क्रमहिते बिस्तार करिकै सर्व। कहो मातलि इन्द्रसों अति भरो मोद अखर्व॥ सुनत सो सह सुरन्ह सुरपति भये मोद महान। सहित आदर कृपाकरि मम लगे करण बखान॥ कर्म जैांन असक्यहो यह सुरणकों गम्भीर। कियो मेरे अर्थ सो तुम गुरु सुसूर्षण बीर॥ होय औसें बिजय तुमकों युद्धमे सबठैार। अस्त्रको अभ्यास कीजो अनिस कुरुकुल मैार ॥ देव दानव यच्छ राच्छस उरगगण गन्धर्व। युद्धमे सहिसकैंगे नहि तुम्हे मानव सर्व ॥ भूमि निर्जित सकल तो बर बाहुबलतें पर्म। सहित भ्रातन्ह भोग करिहै धर्मधर नृपधर्म ॥ ******

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे बन पर्वणि हिरण्यपुरनिपातोनाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥ *******

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कार मोमे बिश्वास दृढ रिपु रणजयको भूप। इन्द्र कहन मोंसों लगे औसें बचन अनूप ॥
दिव्यअस्त्र तुममे बसत फाल्गुण सबिधि गभीर। तुम्है जीतिबे योग्य नहि मनुज भूमिपर बीर ॥
भीष्म द्रोण कृप कर्ण अरु शकुनि सुयोधन जैांन। षोडशांश नहि रावरे पुत्र समरमे तैांन॥

व॰प॰ यह अभेद्य दीन्हो कवच दिव्य तुष्ट मघवान। दई हिरण्मय माल यह द्युतिसों भरी महान ॥
दियो महा रव शंख यह देवदत्त अभिराम। यह किरीट दीन्हों हमैं तेजपुञ्ज छविधाम ॥
दिव्यअस्त्र भूषण दए ए सुरपति अतिरूप। पाँचवर्ष ऐसें बसे तह पूजित हम भूप ॥
गन्धर्बनके मिथुन सँग सुनासीरके धाम। ऐसैं हमसों शक्र तब कहे बचन अभिराम ॥
अर्जुन जावेको भयो समै तिहारो बीर। भ्राता तव पथ लखतहैं उत्सुक भए गभीँर ॥
पञ्चवर्ष ऐसे रहे इन्द्र भवनमे भूप। स्मर्ण करत हम द्यूत भव भावी कलिको रूप ॥
तुम्है लखो इत आइ अव भ्रातन्ह सह नृपधर्म। गन्ध मुमादनकी बसे लहि अधित्यका पर्म ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥

लहे भाग्यवश अस्त्र ए दिव्य धनञ्जय सर्व। राधित कीन्हों इन्द्रकों तुम वश भाग्य अखर्व ॥
तुम देखो वश भाग्यसों शङ्कर गिरिजा साथ। कियो भाग्य वश युद्धमे तोषित त्रिभुवननाथ॥
तुम दिगपालनसों मिले जिष्णु भाग्यवश बीर। बर्द्धित हम वश भाग्य व्है देखो तुमकों धीर ॥
स्ववस भूमि देवी बिजित हम मानी अब सर्व। जीतेसे धृतराष्ट्रके माने पुत्र अखर्व ॥
तैंन अस्त्र देखो चहत दिव्य सकल हम बीर। जाते तुम जीते असुर बलसो भरे गभीँर॥

॥ * ॥ अर्जुन उवाच ॥ * ॥

प्रातःकाल देखायहै तुम्हैं अस्त्र हम तैंन। निवातकवच दानव हने हम जिनतें बलभौंन॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

ऐसें कहि आगमनके धर्मनृपतिसों बैंन। जिष्णु सहित भ्रातन्ह कियो तैंन निशामे शैन ॥
भोर भयो तब नित्य करि बिधिवत आन्हिक कर्म। अस्त्र देखावनकों कहो अर्जुनसों नृपधर्म ॥
देवदत्त सब अस्त्र जे वहे धनञ्जय बीर। तैंन देखावनकों भए सज्ज महारणधीर ॥
बिधिवत करिकै शौच चढि गिरिवर सुरथ समान। दिव्य कवच धारे भए शोभित जिष्णु महान ॥
देवदत्तसो शङ्खधरि धनु गाण्डीव उदार। जिष्णु अनुक्रमसों कियो अस्त्रप्रयोग बिचार ॥
चहो देखायो अस्त्र जब दिव्य धनञ्जय बीर। धरी दाबि छिति चरणसों बलमय बीर गँभीर ॥
कँपन लगी छिति सरित सर सिन्धुन्ह सहित महान। व्है बिदीर्ण गिरिवरणतें लागे गिरन पषान॥
बहत समीरण भानुको व्है गो मन्द प्रकाश। वेद भूलिगो द्विजनकों ज्वाला रहित ऊताश ॥
रहे जीव जे भूमिमे ते बाहेर कढि आय। त्राहि त्राहि लागे कहन साञ्जलि कम्पितकाय ॥
सुर ब्रह्मर्षि सिद्धि देवर्षी जङ्गम जीव अखर्व। गुह्यक राक्षस यक्षगण सह किन्नर गन्धर्व ॥
लोकपाल सह पितामह शङ्कर सगण सुरेश। आये तह ठाढे भए पारथ पास नरेश ॥
तब समीर बज्ररङ्गके दिव्य सुगन्ध अनूप। सुमन वृष्टि लागे करण फाल्गुण ऊपर भूप ॥
सुरगणके गावन लगे गाथा सब गन्धर्व। लगे अप्सरणके तहाँ नाचन बृन्द अखर्व ॥

सुरन पठायो ब्रह्मऋषि नारदकों तेहिकाल । कहे महामुनि जिष्णुसों ऐसे बचन बिशाल ॥ ८०५
अर्जुन नहि योजित करऊ दिव्य अस्त्र बरबीर। बिना लक्ष्य दिव्यास्त्रको योजन भलो न धीर॥
भए बिना पीडित नहीं दिव्य अस्त्रको त्याग । करत न कोउ करेतें लगत दोष बडभाग ॥
बिना लक्ष्य दिव्यास्त्रको करं प्रयोग गम्भीर । कारण त्रिभुवननाशको होत नकरु कुरुबीर ॥
अस्त्र सकल तुम लखऊ गो युद्ध जुरें नृपधर्म । करि हैं जिष्णु प्रयोग जब अरिगणनाशकपर्म ॥
॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥
अस्त्र निवारण करि गए सुरसग निज निज धाम । पाण्डव कृष्णा सहित तेहिबनमे बसे ललाम॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्व्वणि अस्त्रसन्दर्शनोनाम पञ्चत्रिंशदध्यायः ॥ *** ******** ***** **** ** *
॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥
दिव्यअस्त्र लहि अर्जुन बीर । आए धर्मनृपति पहँ धीर ॥ तब का कियो पाण्डवन्ह कर्म । कहउ सविस्तर सो मुनि पर्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ धनदरचित क्रीडाबन धाम । तिन्हें किरीटी लखत ललाम ॥ धनद प्रसादउ लहि बरभौंन । भक्ष्य भोज्य उत्तम अति तौंन ॥ मानुष सुख नहि ईक्षत भूप । भयो काल अति आनदरूप ॥ बीते तिन्हें चारि तहँ बर्ष । एकरात्रि सम पूरित हर्ष ॥ प्रथम गए षटबर्ष अनूप । बनमे बसत कुशलसों भूप॥ तब चारो भ्राता मतिरास । बैठे धर्म नृपतिके पास ॥ ऐसें कहन लगे ते बैंन । एकान्तस्थल पाय सचैंन ॥ सत्य प्रतिज्ञा तो नृप जौंन ॥ सप्रिय चहत कियो हम तौंन ॥ यहबन छोडि चलऊ कुरुराय । हनिबे शत्रु सहित समुदाय ॥ एकादशसुवर्ष यह भूप । बसें सुयोधन ढिग सुखरूप ॥ निकट रहे जब जाय भुलाय । तब छलि बसी दूरि कऊ जाय ॥ बर्षएक अज्ञात नरेश । बसिए तहां धारिए कुवेश ॥ बर्षएक तहँ करि कै बास । करें प्रगट व्है रिपुको नाश॥ करि कै बैर समापन भूप । करिए भूमिभोग सुखरूप ॥ स्वर्गोपम एहिँ बसि कै देश । शोकनाश नहिँ होत नरेश ॥ पुण्यमयी कीरति तब जौंन । लहि है नाश लोकमे तौंन ॥ लहि कुरुकुलको राज्य अखर्व । करि हो यज्ञादिक क्रत सर्व॥ सोम धनदसों पावत जौंन । तुम्हैं अशक्य न लहिबो तौंन ॥ बुद्धि शत्रु मारणको भूप । धारण कीजै तौंन अनूप ॥ सिद्धि तवार्थ चाहत गम्भीर । श्रीश्रीकृष्ण सात्वको बीर ॥ तिन्हैं सहित तुमकों रणमाह । जीति न सकत सुनो नरनाह ॥ हम सब तथा अर्थ तो भूप । सिद्ध कियो चाहत अतिरूप ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ भ्रातन्हको मन दृढ अतिपर्म । समुझि भली बिधिसों नृपधर्म ॥ धनदरचित जे हे तहँ धाम । तिन्ह प्रदक्षिण करि चभिराम ॥ घर सरिता तहँ राक्षस जौंन । तिनसों बिदा भए मतिभौंन ॥ सबन

पन्थकों देखि अनूप। फेरि लखो गिरिवरको भूप॥ जौति शत्रु करि कर्म समाप्ति। भोग राज्यको करि को प्राप्ति॥ ह्वै तपनिष्ठ बिलो के तोहि। यह गिरिराज देऊ मति मोहि॥भ्रातन्ह सह बिप्रन्ह नृपधर्म। चले तौनपथ गहि कै पर्म॥ भ्रातन्ह सहित बिप्र समुदाय।सगए घटोत्कच तहां आय॥ सबकों लिये कन्ध धरि बीर। चलो यथा पथ गहैं गभीर॥करि श्रौचित सुत शिष्य समान। लोमश बिदा भये सुखदान॥आर्ष्टिषेनक मुनि मिलापर्म॥कियो सभ्रात बिदा नृपधर्म॥सर सरिता गिरि गहन ललाम। देखत चले भूप अभिराम॥ **✿***✿✿**✿✿✿**✿***

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनका श्रीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि गन्धमादनवाससमाप्तिर्नाम षट्त्रिंशदध्यायः॥ ✿**✿*****✿******✿*

॥*॥ वैशम्पायनउवाच॥ *॥ जयकरीछन्द॥*॥

लखत न गोत्तमकी छवि भूप। किन्नर यक्षन सहित अनूप॥ छोडत तौन परम सुखबास। नहि आनद पायो मतिरास॥ गिरि कैलाश लखत अभिराम। लहो धर्मनृप मोद ललाम॥ गह्वर गिरि देखत अतिकाय। जहां मृगेन्द्रनके समुदाय॥चले लखत गिरि कानन बीर। अस्त्र शस्त्र धारे रणधीर॥ सर सरिता गिरि गह्वर पाय। करत बास तेहां सुखदाय॥ बिषपर्वाके आश्रम पर्म। गए कछुदिनमे नृपधर्म॥ बिषपर्वाको पूजो भूप। तातें पूजित भए अनूप॥ प्रवासकथा बिस्तर सह सर्व। बिषपर्वासें कहो अखर्व॥ बसे एकनिशि तहँ नृपधर्म। बिषपर्वाके आश्रम पर्म॥ जहां बिशाला बदरी भूप।गए तहां ते चलि सुखरूप॥नारायणको आश्रम यत्र।धनद बन जब न देखत तत्र॥ एकमास तहँ कीन्हों बास। बिप्रन्ह सहित भूप मतिरास॥ देखत गिरि गए देश अनेक। भ्रातन्ह सह कुरुपति सबिबेक॥ जहां सुबाहु किराताधीश। गए तासपुरढिग अवनीश॥ आए फेरि सुनत कुरुभूप। नृप सुबाहु भरि मोद अनूप॥ पुनन्ह पौचन्ह लीन्हें सङ्ग। मिलो आय अति भरो उमङ्ग॥ सङ्ग सुबाहु भूपतिके भूप। सूत बिशोकादिक सुखरूप॥ महेन्द्रसेन परिचारक श्रौन। सूत सहित पुरवासी तौन॥ गए तहां नृप जिन्हे बसाय। ते सब मिले भूपसें आय॥ बसे एकनिशि तहँ नृपधर्म। सहित सारथिन्ह लहि रथ पर्म॥ बिदा घटोत्कचकों करि भूप। यामुनगिरिकों गए अनूप॥ गिरि शोभा देखत सुखदाय। बसे बिशाख जूपमे जाय॥ मृग बराह केशरि समुदाय। बसत महाबनमे अतिकाय॥ तहां करत मृगया कुरुबीर। बसे एक सम्बत रणधीर॥ तहँ गिरि कन्दरमाह भुजङ्ग। बिधिवश पाय भीमसें सङ्ग॥ गयो सकल तनमे लपटाय। परवश भयो बीर बरकाय॥ कियो वृकोदरको उद्धार। तहां धर्मनृप सुमति उदार॥ प्रात बारहें बर्ष उदार। भयो तिन्हें बन करत बिहार॥ नन्दन बनसम बनतें तौन। कियो मरुस्थलकों तिन गौन॥ धनुर्वेदबेत्ता ते बीर। सरस्वती सरिताके तीर॥ बसे द्वैतबनमे अभिराम

तहां तिन्ह लखि के तपधाम ॥ आए द्विजवर कुशकर पर्म । योग समाधि धारण धर्म ॥ नाना विधिके विटप गँभीर । सरस्वती सरिताके तीर ॥ प्रिय गन्धर्व ऋषिन्हकों भौन । परम प्रिय देवनको भौन ॥ सरस्वती सरिताके तीर । तहँ बसि विहरण लागे वीर ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ नागायुत बल भीम महान । भो अजगर बश किम बलवान ॥ मारि यक्ष राक्षस गन्धर्व । हरे धन देवनकमल अखर्व ॥ सो अजगरवश कैसें वीर । भयो भरो भयसों गम्भीर ॥ सुनो चहत सो कहिए तौन । कहहु सविस्तर मुनि मतिभौन ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दैवोच्छातें धनुधर वीर । भीम सो वन लखि रम्य गभीर ॥ देखत हिमगिरिके शुभदेश । ऋषिगण मण्डित नाना वेश ॥ वनफल पुष्प भरो अभिराम । बन्य जीव जहँ बसत ललाम ॥ गिरि सर सरिता लखत अनूप । जिनमे बसत हंस बकरूप ॥ मृगया करत फिरत तहँ भूप । मृगण हने शर छोडि अनूप ॥ मारत सिंह व्याघ्र बकवीर । अयुत नागबल भरो गँभीर ॥ विटप उखारत तोरत उद्द । गर्जत बनमे फिरत अरुद्द ॥ दरत चरणतें गिरिके सान । ताल फोट करत अतिमान ॥ मृग ढूँढत जहँ गहन गँभीर । गयो तहां चलि कुरुवर वीर ॥ भीमसेन देखो तहँ जाय । महा भयङ्कर अहि अतिकाय ॥ गिरि कन्दरमे गिरि सम जौन । महा भोग अति भयको भौन ॥ चित्र बिचित्रित अङ्ग महान । लखत हरिद्रा वर्ण समान ॥ गुहाकार मुख दंष्ट्रा चारि । ताम्र अग्निसे चख भयकारि ॥ अग्निशिखासी जीभि निकाशि । चाटत बदन भूरि भय राशि ॥ कालान्तक सम जाको रूप । छोडत श्वास भयङ्कर भूप ॥ सो व्है भीमसेन पर क्रुद्ध । सहसा आइ गहो अतिउद्ध ॥ गहो अजगर ग्राह समान भीमसेनकी भुजा महान ॥ गहत मात्र भो मोहित वीर । वर प्रताप लहि तास गभीर ॥ दश हजारगजको बल जौन । भयो भीमको निष्फल तौन ॥ भीमसेन हलि शकत न वीर । अयुत नाग बल भरो गँभीर ॥ छूटिवेको बहु करत प्रकार । तासो छूटि न शकत उदार ॥ भीमसेन तेजस्वी वीर । कैसे भयो सर्पवश धीर ॥ लागे मनमे करण विचार । सर्पपराक्रम अमित उदार ॥ कहो भीम इमि अहिसों वैंन । कहहु कौन तुम हो बलऐंन ॥ कियो कहा चाहत गहि मोहि । बूझत सर्प महाबल तोहि ॥ भीमसेन हम पाण्डव पर्म । अवरज हम जेठे नृपधर्म ॥ नागायुत बल मोमे सार । तो बश भयो सो कहहु प्रकार । यक्ष रक्ष किन्नर गन्धर्व । हम जीते रणमाह अखर्व ॥ कै विद्या बल के बरदान । है तुमसे पन्नग अतिमान ॥ चलत न मम उद्योग सदर्प । हों बश भयो तिहारे सर्प ॥ है असत्य नर बिक्रम सब ॥ यह मत मोमति धरति अखर्व ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भीमवचन यह सुनि अतिकाय । गयो सकल तनमे लपटाय ॥ दृढ गहि जग भीमको भूप । छोडि दियो भुजबन्ध अनूप ॥ कहन लगो तब ऐसे बैंन । भुजङ्ग भीमसों अति बलऐंन ॥ क्षुधित मोहि वश भाग्य अहार । मिले आजु तुम वीर उदार ॥ जैसे मिलो हमे यह रूप । सो तुमसों हम कहत अनूप ॥ लहो अवस्था यह हम वीर । कोपित करि ऋषिवरह गँभीर ॥ शापअन्तकी इच्छा मोहि । कहत बृकोदर सो सब तोहि ॥ *******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

२०५९

नहुष नाम राजर्षि हम अयकेसुत शशिवंश । हमहीतेँ तव पूर्व सब भए भूपअवतंस ॥
हम अगस्त्यके शापतें करि ब्राह्मण अपमान । प्राप्त भए यहि दशाकों हम अब भाग्य सुजान ॥
तुम अवध्य मम वंशभव प्रिय दर्शन बरबीर । ताको हों भक्षण करत यहबिधि रचित गभीर ॥
ग्रसित होय हमसों कोऊ छुटत न जीव अखर्व । सिंह व्याघ्र मृग महिष गज भक्ष्य कालमे सर्व ॥
भए न केवल सर्पसों ग्रस्त सुनहु कुरुवीर । भयो हमै बरदान जो तासु प्रताप गँभीर ॥
शक्रासनसों गिरत हम कहो सुमुनिसों बैंन । शाप अन्त कीजै नियम हे मुनिबर तपऐन ॥
तब मुनि करि मोपैं कृपा कहो गगँ कछुकाल । शाप अन्त तव होयगो हे नृप नहुष बिशाल ॥
गिरे आइ कै भूमिमे जब हम घोर नितान्त । स्मर्ण हमै सो सब रहो पूर्वभूत वृत्तान्त ॥
उत्तर जो तो प्रश्नको देहै आत्मा ज्ञान । तब नहुष भूप तब लहहु गे मोक्ष परम सुखदान ॥
तुमतें व्हैहै ग्रसित जो प्राणी अतिबलवान । भक्ष्य होय गो तौन तो तजि है प्राण महान ॥
ऐसे कहि मोसों बचन मुनि करि कृपा अनूप । भए सकल द्विजबरन सह अन्तरध्यान स्वरूप ॥
तब व्है कै हतकर्म हम परे नरकमे आय । मोक्ष काल कांक्षो रहत सर्पयोनिकों पाय ॥
भीमसेन तब यों कहो महासर्पसों बैंन । आपु हिँ निन्दत हम नहिँ तुमपर कोप करैं न ॥
होनहार सुख दुःख है जासों जितिक प्रमाण । आगम व्ययमे करत हैं तहाँ न हानि सुजान ॥
पुरुषारथ करि को करै व्यर्थ दैवकृत नित्य । पुरुष पराक्रम व्यर्थ ध्रुव बिधिको रचित निमित्त ॥
शोच आपने नाशको हमकों हैं न महान । भ्राता बनबासीनको यथा शोच बलदान ॥
यत तज हि ग राज्यको ते सुनि मेरो नाश । परुष बचन हम कहत हे राज्य हेतु नृपपाश ॥
करि है दूरि बिपत्यकों अथवा अर्जुन वीर । देव असुर गन्धर्वसों जो अजेय रणधीर ॥
सो जेता तिहुलोकको वेत्ता अस्त्र अखर्व । कहा पुत्र धृतराष्ट्रके कितव अधर्मी सर्व ॥
शोच हमै अति जननिको पुत्र वत्सला पर्म । चाहत हमै समृद्ध जो सबसों अधिक सधर्म ॥
व्है है सर्व अनाथ सो लहि मम नाश अनर्थ । निष्फल ताके होहिं गे सकल मनोरथ व्यर्थ ॥
नकुल और सहदेव मम भुजबल रक्षित वीर । व्है हैं मेरे नाशते अहि दुखमग्न गभीर ॥
भीमसेन एहिभाँतिसों करत बिलाप अमान । बँधे सर्पकी कायसों हलि न शकत बलवान ॥
यहँ दिशि लखि उतपात बहु भए व्यग्र नृपधर्म । दक्षिणदिशि रोवति शिवा भयकर शब्द अपर्म ॥
पक्ष पक्ष एक चरणको पक्षी भयकर रूप । रक्त बमत दिशि भानुकी लखो युधिष्ठिर भूप ॥
घोरवायु लागो बहन दशदिशि क्षार उपाय । मृग पक्षी अपसव्यदिशि बोलन लागे आय ॥
कारे काग सु आय कै पीछे भरे अचैन । चलहु चलहु लागो कहन भरो भोतिसों बैंन ॥
फुरण भयो दक्षिण भुजा अरु बामदुख दान । शकुन शुभाशुभ लखि कियो भय आगम अनुमान ॥

कहो द्रौपदीसों कहाँ गए भीम नृपधर्म । गए भीमको काल बहु बीति गयो नहि मर्म ॥
चले धौम्य सह भीमके ढूढनकों कुरुभूप । सौंपि द्रौपदि हि जिष्णुकों रक्षण हेत अनूप ॥
भीमसेनके चरणके चिन्ह लखत नृपधर्म । प्राचीदिशमें जाय कै देखे गजगण पर्म ॥
भीमसेनके चिन्हतें चिन्हित बन भू सर्व । सिंह व्याघ्र वाराह मृग मारे लखे अखर्व ॥
तोरत तरुवर जघनसों गए जौन पथ भीम । लखत चिन्ह तेहि पथ चले धर्मनृपति मतिसीम ॥
कर्कस मारुत बस सघन विटप पत्र निःशेश । ऊषर निर्जल कण्टकित दुर्गम दारुण देश ॥
तहाँ ग्रसित भुजगेंद्र घन गुहामाहँ गम्भीर । लखो जायकै धर्मनृप भीमसेन बर वीर ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सर्प ग्रसित लखि भीमकों धर्मराज मतिऐन । कहन वृकोदरसों लगे सकरुण ऐसें बैन ॥
तुम कैसें आपद अमित यह पायो कौन्तेय । कौन सर्प यह गिरि सदृश धारे देह अमेय ॥
भीमसेन नृपधर्मकों लखिकै करि चित शान्त । कहो सर्पते ग्रहणको आपने सब बृतान्त ॥
भोजनार्थ यह सर्पहै हमैं करें नृप ग्रास । नहुष नाम राजर्षि हो पूर्व महाबलरास ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

छोडि देहु अहिराज मम भ्राता यह बलधाम । देह अन्य अहार हम क्षुधा हरण अभिराम ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

हमकों मिलो अहार यह सुखमय राजकुमार । तुमहूँ हमकों होउगे भोर भूत आहार ॥
व्रत यह मेरो जीव जो आवत है एहि देश । भक्ष्य हमारो होत सो आए तुमहु नरेश ॥
तव भ्राता हमकों मिलो भक्ष्य गएँ बहु काल । याहि नहीं हम छोडिहैं चहत न अन्य विशाल ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

देव दनुज कै सर्प तुम सत्य कहहु अहि रूप । बूझत है पंन्नग तुम्हैं सत्य युधिष्ठिर भूप ॥
कौन हेत तुम भीमकों कियो महाअहि ग्रास । का अहार लहि छोडिहो भ्राता मम बलरास ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

नहुष नाम हम नृपति हैं पूर्व तिहारे भूप । शशितें पञ्चम आयनृपति ताके पुत्र अनूप ॥
यज्ञ तपस्या करि लहो त्रिभुवनको हम राज । बढो हमैं तव मद महा कारक सर्व अकाज ॥
हम अपनी शिबिका धरी बर बिप्रन्हके कन्ध । कियो निरादर द्विजनको भए दर्पबश अन्ध ॥
हमैं अवस्था दियो यह मुनिवर कुम्भज भूप । अघ है सुसर्प हमको बीतत तीन अनूप ॥
मुनि अगस्त्यकी कृपासों हमको आजु उदार । प्राप्त भयो भोजन समै यह तो अनुज अहार ॥
इन्हैं छोडि नहि लेहिगे अन्य अहार अनूप । प्रश्न कहत हम कहहुगे जो तुम ताको भूप ॥

तौ हम देहैं छोडि तौ भ्राता यह मतिराव ।

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

कहऊ प्रश्न हम देहिगे उत्तर अहिवर तास ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

ब्राह्मण को है जगतमे योग्य जानिबे जौन । है पदार्थ ताको कहऊ निर्णय सह मतिभाव ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

सत्य दान दाया छमा शील सुतप अक्रूर । ए गुण जामे बसतहै सो ब्राह्मण मतिपूर ॥

सुख दुख रहित अचिन्त है ब्रह्म जानिबे योग । जाहि पाय जन लहत नहि फेरि कर्मकृत भोग ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

चारिवर्ण है जगतमे ब्राह्मणादि बर भूप । शूद्रऊमे सत्यादि जौ ए गुण होहि अनूप ॥

तौ ताको ब्राह्मण कहा कहिये हे नृपधर्म । सुगुणमे ब्राह्मणको स्थापन कीन्हों पर्म ॥

सुख दुख रहित जो कहत तुम वेद्य ब्रह्म नृपधर्म । सुख दुख हीन सकर्म जन को पद पावत पर्म ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

ब्राह्मणके लक्षण बिहित होहि शूद्रमे जौन । सो न शूद्रहै सर्प वर है ब्राह्मण मतिभौन ॥

ब्राह्मणके लक्षण रहित है ब्राह्मण मतिहीन । नहि सो ब्राह्मण शूद्र सम ताहि कहत मतिपीन ॥

वेद्य पदारथको कहत तुम अभाव अहि जौन । कर्मज सुख दुखते रहित पावतहै पद कौन ॥

यह तुम कहो सो सत्य कछु सुख दुखते नहि हीन । नही शीतमे उष्णता उष्ण शीतते छीन ॥

सुख दुख कर्मज होत है सुख दुखरहित अकर्म । ज्ञान गम्य सो ब्रह्म है निर्बिकार पद पर्म ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

सद्गुण जामे कहत तुम ताको ब्राह्मण भूप । जाति होहिंगो व्यर्थ सब गुणगण बिना अनूप ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

जाति जो कहत मनुष्यमे महासर्प मतिभौन । सो अनादि शङ्कर भए ताहि परीक्षत कौन ॥

सब नारिनमे सब पुरुष करत पुत्र उतपन्न । जन्म होत मैथुन भए जन्म मरण सम्पन्न ॥

कहत वेदविधि बिहित नर जबलौं नहि संस्कार । शूद्र सदृश तबलौं रहत है मनुबचन उदार ॥

महा सर्प हमसों कहो प्रश्न परम तुम जौन । वेदबिहित तुमको दियो हम उत्तर अहि तौन ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

वद्य वस्तु बूझो जो हम सो तुम कहो अनूप । हम भक्षण कैसे करै अब तव भ्राता भूप ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

वेद और वेदाङ्गके तुम ज्ञाता मतिधाम । कौन कर्म करिके लहैं जन सद्गति अभिराम ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

देय पात्रकों प्रिय करै बोलै सत्य सुजान। होय अहिंसा निरत सो लहै स्वर्ग सुखदान ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

दान सत्यमे सर्प जो गुरु लघु कहिए तौंन । अहिंसा प्रियवचनमे न्यूनाधिकहै जौंन ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

दान अहिंसा सत्यमे प्रियमे समय स्वरूप। बडो कार्य्य जासों कटै सोई गुरु वर भूप ॥
कहूँ दानतें सत्य बर कहूँ सत्यतें दान । ऐसे ही प्रिय बचनतें अहिंसा सु सुखमान ॥
होत अहिंसासों कहूँ है प्रियबचन उदार। जैसो कारज परै जहँ तैसो तहां बिचार ॥
होय तुहैं बांछित नृपति कहहु कहैं हम तौंन।

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

कौंन कर्म फलसों करत जीव स्वर्गकों गौन ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

उत्तम मध्यम अधम गति कर्मजहैं मतिसीव । स्वर्ग मनुज पशुयोनिको तातैं पावत जीव ॥
दानादिक मत कर्म करि हिँसात्याग सुजान । मनुज लोककों छोडि नर लहत स्वर्ग सुखदान ॥
उत्तम मध्यम कर्मते होत मनुज नृपधर्म। तिर्य्यगयोनिहि जात नर त्याग करै सतकर्म ॥
तिर्य्यग्योनिमे गवादिक जीव अहिंसक जौंन। प्राप्त होत देवत्वकों सुनहु धर्मनृप तौंन ॥
जन्म लेय धरि देहकों जौंन आत्मा शुद्ध। कर्म फलार्थी करतहै भोग विषयकों उद्ध ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

शब्द स्पर्श सु रुप रस गन्ध जो कहत सुजान। इनको को आधारहै कहिए सर्व सुजान॥
एक सङ्ग इन बिषयको गहति न बुद्धि बिचार। याको निर्णय करि कहो एहो सर्प उदार॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

अब आत्मा एहि देहको करत आश्रय न भूप। इन्द्रिए पर आरूढव्है करत भोग अनुरूप॥
ज्ञान बुद्धि मन भूप धरि आत्मा सङ्ग अखर्ब। होत बिषयके भोगमे करण भूत ए सर्ब ॥
आत्मा मन सह क्रमहितें बिषयन्हमे चलिजात। बिषयधाम इन्द्रीएनते आत्मा कढिकै तात ॥
बिषय ग्रहणमे जीवको मन यह करत बिधान। एक सङ्ग सब बिषयको ग्रहण न करत सुजान ॥
नित्य बसतहै आतमा भ्रू अन्तरमे भूप। नाना विधिके बिषयको लखत बुद्धिमय रुप ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥

बुद्धि और मनको कहहु लक्षण सर्प सुजान । है ज्ञानिनको जानिबो यहबर कार्य्य महान ॥

१०५०

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

बुद्धि आत्माके रहति सङ्ग अभेद स्वरूप । जलके हाले हिलत ज्यौं शशि प्रतिबिम्ब अनूप ॥
विषयेन्द्री संयोगतें बुद्धि होतिहै भूप । मूल न कारण बुद्धिको सुमन वासना रूप ॥
अन्तर यह मनु बुद्धिमे हम जानत नृपधर्म । तुमहूँ हौ मतिमान अति मानत कैसो पर्म ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तुम ऐसो मतिभरे सुजान । जौन जानिबे योग्य महान ॥ सो तुम जानत सहित विधान । हम न बूझिबे योग समान ॥ तुममे है सरवज्ञ नरेश । कियो मोह केहि भाँति प्रवेश ॥ सर्पउवाच ॥ सूर विदुष जे सुमति समृद्धि । तिनको मोह करतिहै ऋद्धि ॥ भयो हमै सुख सकल अखर्ब । तब भरिगो अति मतिमे गर्ब ॥ गिरे स्वर्गसो तब भो चेत । सो हम तुमसो कहत सहेत ॥ कियो पर्म तुम मम उपकार । यह मेरो अति शापोद्धार ॥ तो सम्भाषणते बर भूप । गयो नष्ट ह्वै ताको रूप ॥ स्वर्ग माह हम दिव्य बिमान । चढे फिरत हे अति सुखदान ॥ सुर ब्रह्मर्षि रच्छ गन्धर्ब । हमै देतहे दण्ड अखर्ब ॥ हम जब दृष्टि जाहि पर देहि । ताको तेज लखत हरि लेहि ॥ ब्रह्मर्षि सहसन्द शिबिका माम । मेरीवहै भूप अभिराम ॥ अनय हमारो अति दुखदाय । श्री समाजसों दियो गिराय ॥ मुनि अगस्त्यको हम भरि दर्प ॥ मारि चरणसों कहो सु सर्प ॥ तब अगस्त्य करि बोले क्रोध । ध्वंस महा हो सर्प अबोध ॥ तब शिबिकाते गिरे अनूप । करे अधोमुख पन्नग रूप ॥ मागो शापअन्त मुनिपास । सकरुण हम अतिशै धरि त्रास ॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥ मोहि प्रमादो जानि अयान । कृपाकरहु मुनि कृपानिधान ॥ तब मुनि कहो कृपाकरि पर्म । शापमोच्च करिहै नृपधर्म ॥ गर्ब पापमय घोर बिनाश । भएँ होयगो पुण्य प्रकाश ॥ ताको तपबल देखि महान । भयो मोहि विस्मै अतिमान ॥ सत्य दान दम तप फलदान । साधक नहि कुलजाति सुजान ॥ रहो कुशल तव भ्राता भूप । भीमसेन अतिबल अतिरूप ॥ रहो कुशल तब भूपति धर्म । जात स्वर्गको हम फिरि पर्म ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ यह कहि नहुष दिव्य धरि रूप । गए स्वर्गको फिरि कुरुभूप ॥ धौम्य भीम सह भूपतिधर्म । आए फिरि आस्रमको पर्म ॥ सकल द्विजनसों कथा अनूप । तीन कही क्रमसों सब भूप ॥ भ्राता त्रय कृष्णा द्विजसर्ब । लज्जित भे सुनि कथा अखर्ब ॥ द्विजन्ह पाण्डवन्हके हित हेत । कियो भीम भर्त्सन सहनेत ॥ सह भ्रातन्ह सह द्विजगण पर्म । सम्मुद तहां बिहरे नृपधर्म ॥ * * * * * * * * * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि नहुष शापमोचनअजगरोपाख्यानोनाम सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ * * * * * * *

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

तहाँ बसत निदाघ गो भो प्राप्त बर्षाकाल । घनेघन चहुँओर गर्जन लगे आइ बिशाल ॥ ग्रीष्मानलमे बिरचिताकरए धाम शतसह भूप । सूर्यमण्डल सदृश जिनमे बिमल बिद्युत रूप ॥ लगे बरषन मेघ चहुँदिशि गर्जिकै नभ छाय । रटैं भेकी मोर सबदिशि रहे सोर सुनाय ॥ हरित तृणसों छपी धरणी भरी बारि महान।जानि भू सम बिषम परति न एकरूप समान।।बढी सरिता तरङ्गितोया स्वसनसी सबओर । कूल कानन जाशि परत न पार वार न छोर ॥ मत्त नाना भाँति के बर बिहग बोलत राव । झमकि जुगुनू रहे कूजत भरे कोकिल चाव।। क्रौंच हंस समेत खचित भयो सरद स्वरूप । बिमल भो आकाश दरसो सुधासिन्धु अनूप ॥ कुमुद कानन भरे सरवर सुधासे अभिराम । फुल्लवारिज भए नानारङ्गके छबिधाम ॥ भई रजनी सुधासी धरि सुधासिन्धु प्रकाश । सतोगुनके सिन्धुसे चहुँओर फूले काश ॥ ओर दुङ वा नीरको बनमध्य सम सीमन्त । सरस्वति सरितहि बिलोकत मुदित भो कुरुकन्त ॥ भई तिनकों राति तेहां शारदी सुखधाम । कार्तिकी अति पुण्य पूरण पूर्णिमा अभिराम ॥ किए योजित तुरग रथसों बाहवर बलवान । पाण्डवन सह बिप्रबृन्द सु तेज तपस निधान ॥ भोर होत सधौम्य भ्रातन्ह द्रौपदी सुखदान । गए काम्यक बिपिनिकों नृपधर्म पर्म सुजान ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ जाय काम्यक बिपिनिकों सह सङ्ग भूपति धर्म ।मुनिनसों आतिथ्य लहि तहँ बसे पूरत शर्म ॥ तहा आए बिप्र बङ तपपुञ्ज तेजस रूप । कहन लागे धर्मनृपसों एक द्विजबर भूप ॥ जिष्णु को प्रिय सखा आवत इहा श्रीयदुबीर । काम्य बनमे बसे तुमकों जानिकै कुरुधीर ॥ इहा आवत मारकण्डे महामुनि तपधाम । कहत बो श्रीकृष्णको रथ प्रगट भो अभिराम ॥ सत्यभामा सहित जैसें सचीसह मघवान । उतरि रथतें कृष्णबन्दे धर्मनृपहि सुजान ॥ भीमकों फिरि बन्दि कृष्णहि कियो शान्त सुजान । चरण माद्रीसुतन्ह बन्दे कृष्णके सुखदान ॥ पूजिकै मुनि धौम्यकों लखि जिष्णुकों सुखपाय । कृपाकर श्रीकृष्ण हियसों लियो फिरिफिरि लाय॥ सत्यभामा द्रौपदी सो भरी मोद अनूप। मिली हियसों लाय फिरिफिरि प्रेमपूरी भूप॥ सहित प्रोहित सहित भ्रातन्ह धर्मनृप मतिऐन । पूजिकै श्रीकृष्णकों इमि मधुर बोले बैन॥कहो अर्जुन पूर्व सिगरो भयो जो बृतान्त। स्वर्गमे बनबासमे सब कृष्णसों अतिकान्त। कुशल बूझो फिरि सुभद्रा सहित सुत सुखरूप। कृष्ण पूजो पाण्डवनको सहित धौम्य अनूप ॥ बैठि यदुपति धर्मनृपके भरे आनद पास । लगे तिनके गुण प्रसंशन महामतिके रास ॥ राज्यके है लाभतेँ बर धर्म लाभ सुजान ।धर्मको तप मूल कारण सुनहु कुरुकुल भान॥सत्य ऋयुता सहित हो तुम धर्मधारे भूप । लोक तुम सब जीति लीन्हे पुण्य पूर्ण अनूप॥ग्राम्य धर्म न रुचत तुमकों करत कछु नहि कांम । कर्म तजत न अर्थके तुम लोभतेँ अभिराम ॥ दान श्रद्धा सत्य

व० धृति मति क्षमा तप वर धर्म। भोग धन लहि रहत इनमे प्रीति तौ नृपधर्म॥ कुरुजांगलनके मध्य
कृष्णाको करो अपमान। सहै यह अन्याय तुम बिन और को बलवान॥ प्रजाप्रिय प्रतिपालकार
तुम हो असंशय भूप। कियो हम सब चहत निग्रह तास नाशक रूप॥ धौम्य कृष्णा धर्मनृप सह
बन्धु सों भगवान। कहो आए भाग्यसों लहि शिशु अस्त्र महान॥ फेरि कृष्णासों कहो श्रीकृष्ण
ऐसे बैन। भाग्य पूरण भई हो लहि जिष्णुको छबिऐन॥ प्रीतिसों धनुबेद तो सुत करतहैं अभ्यास।
रहत हैं शत बृत्तिमे शत बृत्तिजनगण पास॥ कहत मातामहँ सु तिनको देन राज्य सनीति। तऊ
मातुलि बंशमे ते रमत है न सप्रीति॥ गए अब ते द्वारिका धनुबेद बिधिवत चाहि। बृष्णि पुरमे
रहत हैं नहि और भावत ताहि॥ यथा तुम ही तिन्हे पालत सहित कुन्ती धर्म। करत पालन त्यौं
सुभद्रा तिन्हैं ससुत सधर्म॥ अनिरुद्ध भानु सुनीथको अभिमन्यु को अभिराम। प्रद्युम्न त्यौं तो सुत
न्हकों धनुबेद बिधि अतिमान। गदा धनु असि चर्म बिद्या देत बिबिधि बिधान॥ अस्त्र दिव्य अनेक
बिधिके महा आतुर जांन। शस्त्र बिद्या देय लखि प्रद्युम्न सत्व महान। अभिमन्यु सों तव सुतन
सों सुख लहत हैं अतिमान॥ कहे फिरि नृपधर्म सों श्रीकृष्ण ऐसे बैन॥ चहति आसन सैन तो
यदुबंशकी बलऐन॥ रहतिहै चतुरङ्गिणी सब योस सज्ज महांन। दियो चहति सुयोधनै यम पुरी
कों प्रस्थान॥ सभामे तुम कियो जो पण रहऊ तामे धीर। मारि अरि भट देखि हौ पुर नाग नामक
धीर॥ आनि मत श्रीकृष्णको सुनि वचन अति सुखदान। कहे साञ्जलि कृष्णसों नृपधर्म वन
प्रमान॥ *॥ युधिष्ठिरउवाच॥ *॥ निश्चय गति तुम पाण्डवनकों कृष्णहौ अभिराम। शरण
पाण्डव रावरेको रहत आनदधाम॥ समय लहि करतव्य ते तुम अधिक करिहौ बीर। बर्ष द्वादश
बीति गो बन बसत हमहि गभीर॥ अज्ञात बास समाप्त करि हम होहिगे प्रभु पार। बुद्धि तव यह
रहो हमपै कृष्ण नित्य उदार॥ दान धर्म सदार भ्रातन्ह सहित हे यदुबीर। शरण हैं हम रावरी
चहि कृपा पूर गभीर॥ वैशम्पायन उवाच॥ धर्मनृप श्रीकृष्णसों जब कहत हे इमि बैन। मार्कण्डेयसु
महामुनि लखि परे तब तपऐन॥ अजर अमर अनन्त जाको बैस बृद्ध अमान। चले आवत भान
से तप तेजपुञ्ज निधान॥ पञ्च बिंशति बर्षको लखि परत जाको रूप। बृष्णि पाण्डव द्विजन सह चखि
कियो पूजन भूप॥ होय पूजित तहां बैठे महामुनि सह चैन। पाण्डवनको पाय मत श्रीकृष्ण बोले
बैन॥ श्रीकृष्णउवाच॥ सुनो चहत सविप्र पाण्डव द्रौपदी अभिराम। सत्यभामा सहित हम तव
वचन सुमुनि ललाम॥ कथा पुण्या पूर्व वृत्त विधान भूषित जौन। स्त्री पुरुष नृप ऋषिनकी मुनि
महा कहिए तौन॥ वैशम्पायनउवाच॥ तहा नारद महामुनि तेहि समै आए भूप। पाण्ड
वनकों देखि बे तप तेजपुञ्ज स्वरूप॥ कियो तिन पुरुषर्षभन मुनिराज पूजन धर्म। कथा सुनिबेकों
निमंत्रित तिन्हहि जानि सधर्म॥ कहो नारद मार्कण्डेय सों सु सस्मित बैन। कहहु बांच्छित पाण्ड
वनको महा मुनि तपऐन॥ मार्कण्डेय केरवचन सुनि यह कहो पाण्डव पास॥ चित्त देके सुनहु तुम

सब विपुल यह इतिहास॥सुनत यह मुनि बचन बैठि समासु चित्त स्वरूप। ह्वर सो मध्याह्नको मुनि रूप देखत भूप॥ बैशम्पायनउवाच॥कथा कहिवे चहत मुनिको देखिकै नृपधर्म।कथा कहिवे हेत ऐसे बचन बोले पर्म॥ देव दानव मनुज ऋषिगण नाग किन्नर जौंन। चरित तिनको आपु जानत पुरातन तपभौन॥ उपास्य सम्वत बहुत दिनते मो हित बांच्छित जौंन॥ मोहि देखन हेत आये देवकीसुत तौंन॥ देखि सुखते नष्ट आपु हिँ होति यों मम बुद्धि। दुष्ट मति धृतराष्ट्र सुत की ऋद्धि लेखि अरुद्धि॥ पुरुष कारक कर्मको है अशुभ कै शुभ रूप। कर्म फलकों करत है सो भोग मुनि अनुरूप॥ सुख दुःखमे कृत कर्मको फल करत प्राणी भोग। इहाके पर देहको लहि महामुनि संयोग॥ छोडि कैयह देह देही कर्मको फल जौंन। इहां कै परलोकमे फल लहत ताको तौंन॥ मार्कण्डेयउवाच॥प्रश्न यह तुम कियो हमसो जौन हे नृपधर्म। जगतको स्थिति हेत जानो तौंन हम अति पर्म॥ कहत हम यहि विषयमे सो सुनो चित दै भूप।जीव ज्यों दुक लोक मे सुख दुःख लहत अनूप॥ देह देहिन को रची अति शुद्ध निर्मल पर्म।धर्ममय जो भो प्रजापति प्रथम हे नृपधर्म॥ सत्यबादी सत्यमय सङ्कल्प सुब्रत भूप। ब्रह्मबादी प्रजा सिगरी भई ब्रह्म स्वरूप॥जात आवत स्वर्गको हे देवतनके साथ। स्ववश जिनको मरण हो अरु गमन हे कुरुनाथ॥ सभै बाधारहित हो सिद्धार्थ जिनको सर्व। लखत हे सुर ऋषिनको जे प्रगट रूप अखर्व॥ रहित मत्सर जियत हैं जे बर्ष अयुतन्ह भूप। तौंन बीते काल भूचर भए भानुस्वरूप॥ काममाया क्रोध बश परि जन्म जोवत सर्व। कर्म फल बश लहत है फिरि तिर्यग्योनि अखर्व॥ कर्म नाना भाँतिके अश जठर पावक साँहँ। पचत जन्मत मरत हैं फिरि परत है नरनांहँ॥ सङ्कल्प मिथ्या ज्ञान मिथ्या दृष्ट मिथ्या जास। परत काहूको न जोके चित्तमे बिश्वास॥ अशुभ कर्मी दुष्ट कुलके दुष्ट आत्मा जौन। दुः कर्मके फल पाकते अल्पायु पावत तौंन॥ सुमति दुर्मतिको रहै कहँ कोशको भाँडार। सुकृत दुःकृतको करै बसि कहां भोग उदार॥ प्रश्न यह तव धर्मनृप सुनि तास निर्णय भूप। आदि सूक्ष्म शरीर जो यहि देहमाह अनूप॥ लिङ्ग सो तन तजत यह धरि अन्य देह सुजांन। सङ्ग छायासदृश ताके जात कर्म महान॥ फलत सो सुख दुःखकों कृत कर्मके सम भूप। शुभाशुभ फल देत अन्तक कर्मके अनुरूप॥अवश ह्वैकै सहत सो सुख दुःखको सुनु तौंन।कही गति यह कुमति जनकी भरी कुकरम जौंन॥ज्ञानवान महान जनकी सुनहु अब गति पर्म।करत तप श्रुति पढत दृढ मति सत्य रत कृत धर्म॥शान्त दान्त शतोगुणी गुरु भक्त शील उदार। जितेन्द्री दुख भीति रहित सुयोनिमे अवतार॥ जन्म लीन्हें चहत जन्मो गर्भमे हैं जौंन। ज्ञान चक्षुष आत्म और परात्म जानत तौंन॥ ऋषि महात्मा तिन्हें भूत भविष्यको है ज्ञान। कर्म भूलहि जात ते फिरि स्वर्गको सुखदान॥ इहां सुखकों लहत हैं कोऊ स्वर्गमे नहिँ जाय। स्वर्गमे सुख लहत है कोउ नहीं

प॰ क्षिति पर आय ॥ एहि लोकमे परलोकमे सुख लहतहै कोऊ भूप। एहि लोकमे परलोकमे कोउ लहत नहिँ सुखरूप ॥ पाय अति धन देह सबल कुटुम्ब सकल सुजान । तिन्हैं सुख एहि लोकमे बिन दान धर्म महान ॥ करत तप ह्वै योग युक्त सुपढत बेद सचेत।छोडि हिँसा जीति इन्द्रिन्ह स्वर्गमे सुख लेत ॥ धर्म पथमे चलत जे धन लहत सुकृत समेत । सहित दारा यज्ञ करि दुऊ लोकमे सुखलेत ॥ तप दान बिद्या रहित जे जड सुयश सन्तति हीन । रहतहैं दुऊ लोकमे ते सदा सुखसों छीन ॥ अति पराक्रम भरे तुमसब दिव्य ओयश धाम । देह धारें धरापै सुरकार्जकों अभिराम ॥ कर्म करिकै महा तप दम युक्त बिहरत बीर । पितृ ऋषि करि देव तर्पण किए तृप्त गभीर ॥ सुकृत बश फिरि स्वर्गकों तुम लहऊगे सुखरूप । सुखद लखि यह दुःख अपनो तजऊ मह्ला भूप॥ वैशम्पायनउवाच॥मार्कण्डे महामुनिसों कहो फिरि नृपधर्म । चहतहों द्विजबर न्हकों यश सुनो कऊ मुनि पर्म ॥ मारकण्डे महामुनि सुनि भूप बचन ललाम । कहनतब इतिहास लागे पूर्व अति अभिराम ॥ ✻ ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ ✻ ॥ रहोहै हयबंश सम्भव भूप रूप उदार । गयो मृगया हेत बनमे तीन राजकुमार ॥ कृष्ण मृगको अजिन ओढें फिरत घनबन माह । जानिकै मृग हनो मुनिकों बाणसों नरनाह ॥ देखिकै बध बिप्रको अतिभयो दुःखित भूप । हैहयाधिप पास चलि तेहि कहो कर्म कुरूप।।सुनत ते तहँ होत दुःखित लगे ढूढन आय। अरिष्टनेमि सु महामुनिको लखो आस्रम जाय ॥ करि सुबन्दन महामुनिके जाय बैठे पास । कियो चाहो महामुनि तब सबिधि पूजन तास॥ कहो तिन हम नहीं पूजन योग्यहै मुनिपर्म । भयो हमसों बिप्र हिंसन महा दुस्कर कर्म ॥ कहो तिनसों महामुनि तुम हनो कैसे बिप्र । कहांहै सो कहऊ देखऊ तपसबल मम छिप्र ॥ सकल कहि बृत्तान्त ते तहं गए मुनिसह भूप। लखो तह न गतासु मुनिको धरो हो जहँ रूप ॥ ढूढि तहँते भए लज्जित कपट कुञ्चित चेत।कहो तिनसों तीन मुनि तब बिहसि बचन सनेत ॥ जौंन मारो गयो तुमसों बिप्र सुनिये भूप । पुत्र मेरो तौनहै नृप तेजपुञ्ज स्वरूप ॥ देखि बिस्मित हैहयाधिप कहो मुनिसों बैन । भयो जौंन गतासु सो मुनि फेरि जीवत है न ॥ कौंन सो तप बीर्य जातें मरो जीवत बिप्र।कृपाकरिकै कहऊ सो मुनि सुनो चाहत छिप्र॥ मुनिरुवाच ॥ कहो मुनि तब मृत्यु हमकों जीति सकति न भूप। तौंन कारण कहतहैं हम युक्ति सहित अनूप ॥ सत्यमे रत रहतहैं जे अनृत कहत न बैंन । धर्ममे रत मनुज ताकों मृत्युको भय है न ॥ करत नहि दुश्चरित देत जो अतिथिकों जल अन्न । भृत्य सेवन करत ताकों करत जो सम्पन्न ॥ क्षान्त दान्त सुशील करत जो पुण्यथलमे बास । सुनऊ भूप न जाति ताके मृत्यु अनमित पास ॥ लेश मात्र सु कहो तुमसों मृत्यु बारण रूप । जाऊ तुमकों बिप्रबधको पाप लगिहि न भूप ॥ भाँति सुनि एहिँ पूजि मुनिकों पाय परम निदेश । गयो सह समुदाय हैहय भूप अपने देश ॥ ✻ मार्कण्डेयउवाच ॥ महाभाग्य सु ब्राह्मणन्हको सुनऊ फिरि यह भूप । खई दीक्षा बैण्यनृप हयमेधकी सु अनूप॥ अत्रि

मुनि तहँ चलन चाहो वित्तहेतुमहान । फेरि चलिबो चहो नहि करि धर्मको अनुमान ॥ धर्म पत्नीसों कहो सब सुतन्हसों इमि बैन । लहतहैं फल बिपिनिमे बज्ञ बिविधि भाँति सचैन॥ तुमहिँ सबकों रुचै तौ वनबास कीजै पर्म । धर्मपत्नी कहो मुनिसों बचन मधुर सधर्म ॥ बैण्य नृपपैं जाय मागऊ बज्ञल धन मतिमान । देयगो राजर्षि तुमकों महाधन यजमान ॥ लेय सो धन देय सेवक सुतन्हको करि भाग । फेरि वनमे बासको मुनि कीजिए अनुराग ॥ * ॥ अत्रिरुवाच ॥ * कहो गौतम महामुनि यह बचन हमसो पर्म । अर्थ धर्म संयुक्तहै नृप वैण दायक शर्म ॥ जौन मोसों द्वेष राखत बज्ञत ते तह बिप्र । यथा गौतम कहो सो हों सकत नहि करि छिप्र ॥ कहैगे हम तहाँ जो कल्याण कारक बैन । ताहि कहिहैं अन्यथा ते दुष्ट दुर्मतिऐन ॥ मानि हम तव बचन सुन्दरि जाहिगें तहँ हाल । देयगो नृपवैण्य गोगण सहित हेम बिशाल ॥ अत्रिमुनि एहि भाँति कहिकै गए जहँ नृप यज्ञ । सहित आशिष भूप सुस्तव पढो तहँ सरबज्ञ ॥ ॥ ❦ ॥ अत्रिरुवाच ॥ ❦ ॥ धन्यहो तुम ईश हो तुम भूप प्रथम सुजान । धर्मबिद है और जगमे कौन तुमहिँ समान॥ गोत्र गौतम एक ऋषि करि क्रोध बोलो बैन ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ अत्रि ऐसें कहऊ मति फिरि तुम्हें प्रज्ञा है न ॥ इहां हमकों प्रथम रक्षक प्रजापति मघवान । बचन ताके सुनत बोले अत्रि नीतिनिधान ॥ है बिधाता भूप यह इत ज्यों प्रजापति शक्र । भई गौतम बुद्धि तो अति मोह मोहित बक्र ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ भयो मोह न अत्रि हमको भए तुम बश मोह । करत सुस्तव भूपको धन पाइबेको छोह॥ नहीं जानत हो प्रयोजन धर्म को न बिचार । बाल मति अति मूढ कीन्हें व्यर्थ उज्जल बार॥ बाद लखि दुऊँ मुनिनको एहि भाँतिसों अति मान । करतहैं ए कहा बूझन लगे बिप्र सुजान ॥ बैण्यनृपकी सभामे दिय इन्हें आवन कौन । सोर करिकै करत हैं ए कलह अनुचित भौन ॥ तहां हो मुनि एक काश्यप धर्मबिद तप धाम । जाय बूझो दुऊन्ह मुनिसों बादकारण नाम ॥ कहन गौतम सभामे इमि लगो बचन प्रमान । सुनऊ हमसों अत्रिसों जो भयो बाद बिधान ॥ बैण्यकों इन कहि बिधाता दियो आशिष आय । सुनत हमकों भयो संशय बचन अनुचित काय ॥ सुनत तहँ सब गए मुनि जहँ रहे सनत कुमार । कहो तिनको कलह कारण प्रश्न जौन उदार ॥ मुनिनको सुनि बचन बोले ब्रह्मपुत्र सुजान । बचन संशय हरण सम्मत यथा तत्व प्रमान ॥ * ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ * ॥ मिलो क्षत्री बिप्रसों भो बिप्र क्षत्री अङ्ग । नाश अरिको करत ज्यो बन अनल मारुतसङ्ग ॥ धर्मधुर नृप करत है जो प्रजनको प्रतिपाल । शक्र सोई शुक्र सोई बृहस्पति गुणमाल ॥ प्रजापति सम्राट तौन बिराट क्षत्री भूप । एहि भाँति सुस्तुति भूपकी सो योग्य अर्चन रूप ॥ सत्य धर्म प्रवृत्तिकर ऋषि पाय अवभय भूरि । दियो अपनो तपस बल सब क्षत्रगणमे पूरि ॥ देव तनमे गगण गत तम हरत जैसे

भाँन। करत अधर्म नाश क्षत्री धारि धर्म विधान ॥ शास्त्र बिधिसों है प्रधान महान क्षत्री भूप। कहत धाता भूपकों सो पक्ष सिद्ध अनूप ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ वैश्यभूपप्रसन्न भो मुनि पक्ष अपनो सिद्ध। अत्रिऋषिसों कहे ऐसें वचन मोद समृद्ध ॥ पूर्व पालक प्रजा धाता कहो हमकों विप्र। देव ऋषिको भयो सम्मत तीन पक्ष सुक्षिप्र ॥ दान तातें देहिंगे हम तुम्हें बिबिधि विधान। वेश श्यामा सह सदासी सुन्दरी सुखदान॥ देहिंगे दश कोटि सुवरण सकल भार अनेक। महा ऋषि हम वित्त इतनो तुम्हे सहित बिबेक ॥ यथा बिधि ऋषि अत्रि इतनो लेइकै वसु दान। गए अपने धामकों मुनि भरे मोद महान ॥ दियो सर्व विभाग करिकै सुतनकों धन तौन। करणको तप आपु कीन्हों महा बनकों गौन ॥ *✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿**

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि ब्राह्मणमहात्म्यवर्णनोनाम अष्टत्रिंशदध्यायः ॥ *✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

कहो सरस्वति तार्क्ष्य मुनिसों बूझे हैं जे बैंन। सो हम तुमसों कहतहै सुनहु भूप मतिचैंन ॥

॥ * ॥ तार्क्ष्यउवाच ॥ * ॥

कहा श्रेयहै पुरुषकों कौंन किएते कर्म। गिरत नही नर धर्मतें कहहु सारदा पर्म ॥

होम करै किमि अग्निमे पूजनकों केहि काल। कौन कर्मते होतहै नष्ट न धर्म बिशाल ॥

सरस्वती यह सब कहहुँ सहित कृपा अभिराम। जाते लोकनमे फिरै लाहकै शुद्धि ललाम ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

सुनि मुनिके ऐसे वचन सरस्वती सुखदान। सहित कृपा ऐसे कहे बचन सुधर्म निधान ॥

॥ * ॥ सरस्वत्युवाच ॥ * ॥

जानतहै जो ब्रह्मकों पढत निरन्तर बेद। ब्रह्मलोककों जात करि देवलोकको भेद ॥

निर्मल पुष्करणी जहां सहित पद्म अभिराम। मणिन मई सोपानसों बिरचित सुषमाधाम ॥

ते वसि तिनके तीरमे पुण्य भरे जे जात। सेवैं तिनको अप्सरा जास कनकसे गात ॥

परम लोककों जात जे करत सविधि गोदान। बृषभ दान करि कै लहै सूरलोक सुखदान ॥

बसन देत सो जातहै चन्द्रलोककों भूप। कनक देय नर लेय सो अमर स्वरूप अनूप ॥

धेनु सवत्सा देय जो सविधि साधुता ओक। जेतिक रोमलताके लहै तेतिक वर्ष सुरलोक ॥

बृषभ बली सूधो युवा हल वाहक गुणधाम। देत धेनु दश दानको लोक परम अभिराम ॥

सविधि उपस्कर देतहै कपिला गो नर जौन। स्वर्गलोकमे मिलतिहै कामधेनु व्है तौन।

जितने ताके रोम फल होत तितिक गोदान। कुलके पुत्र पउत्र सह तरै सत्य सविधान ॥

सविधि देत तिल धेनुकों सहित दच्छिणा जौंन । लहत वसुन्हके लोककों सदा मोदमय तौन॥ व०प०
नरकार्णवमे परत जो कुकरमको फल धारि । नौकालों गोदान फल तांकों लेत उबारि ॥
कन्या देत विधानसों देत भूमिकों जौंन । इन्द्रलोककों जातहै पाय दान फल तौन॥
सातवर्षलों अग्निमे निवत करै जो होम । सात पूर्व पर वंशके तारैं जनगण तोम ॥
॥ * ॥ ताच्र्य उवाच ॥ * ॥
कहहु सारदा अग्निहोत्रको जो पुराण व्रत पर्म। तुमतें सुनि हम जानिहैं अग्निहोत्र व्रत धर्म॥
॥ * ॥ सरस्वत्युवाच॥ * ॥
जे अपवित्र अवेदविद अबुध देत हवि जौंन । देव अश्रद्धावानको ग्रहण करत नहि तान॥
अफल अश्रोत्रीकों करैं हव्यदानमे युक्त। अपूर्ब अश्रोत्री विप्र नहि अग्निहोत्रमे उक्त॥
गर्ब रहित श्रद्धा सहित सत्यव्रत हुतशेष । भोजन करि गोलोककों जात सो पुण्य विशेष॥
॥ * ॥ ताच्र्य उवाच ॥ * ॥
प्रज्ञा देवी बुद्धिमे आत्मस्वरूप प्रविष्ट । बूझत तुम्हैं विचारि हो तुमको रूप वरिष्ट॥
॥ * ॥ सरस्वत्युवाच ॥ * ॥
अग्निहोत्रते आगमन भयो हमारो विप्र । संशय हरिबें द्विजनको जौन मानसिक चिप्र॥
तो सङ्गमतें यह कहो हम यथार्थ सब बैंन । हम सद्भाव निवासिनी हैं जानहु मतिश्रैंन॥
॥ * ॥ ताच्र्य उवाच ॥ * ॥
और न तुमसो है कोऊ श्री सम धारैं रूप । दिव्यकान्तिमय लसति हो देवी परम अनूप॥
पंच द्रव्य यज्ञाङ्ग जो सो हम सब मतिधाम। तिनहीतें हम वृद्धि लहि तृप्ति होहि अभिराम॥
आयस पार्थिव दारु भव यज्ञ द्रव्य है जौंन । दिव्य बुद्धि धरि मानिए आत्म रूप सब तौन॥
मोक्षरूपजो परमहै यामे प्रविशत धीर । सो हम नहिं जानत कहहु तांको रूप गभीर॥
जौन सगुणते पर परम निर्गुण व्यापक जौन । ज्ञान गम्यहै मोक्षको भाजन जगमय तौन॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि सरस्वतीताच्र्यसम्वादवर्णनोनामोणचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ मार्कण्डे मुनिसो नृपधर्म । मनु वैवस्वतको अति पर्म ॥ कहिबे चरित कहो अभिराम । कहन लगे मुनिके तपधाम ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ वैवस्वत सुत तेजसऔन । वैवस्वत मनु भयो महान॥ ओज तेज तप लक्षमी पाय। भयो पिता सम सो सुखदाय ॥ विशाला बदरीके चलि पास । ऊर्द्ध बाहु करिकै मतिरास॥ एक चरण व्है ठाढो भूप।

५० लगे करण तप उग्र स्वरूप ॥ ऊर्द्धचरण करिकै फिर तौन । चख अनमिष कीन्हें मतिभौन ॥ अयुतवर्ष तप ऐसे पर्म । मनु वैवस्वत कियो सधर्म ॥ नदी चीरिणीमे सुस्नान । वैवस्वत मनु करि सविधान ॥ नदी तीर एक आयो मच्छ । मनुसों बोलो बचन समत्स्य ॥*॥ मत्स्यउवाच ॥ *॥ क्षुद्र मत्स्य हमहैं भगवांन । करत हमै भक्षण बलवान ॥ तिनते रक्षण करिए मोहि । कृपानिधान उचितहै तोहि ॥ हम करिहै तव प्रत्युपकार । मत्स्य बचन मनु सुनो उदार ॥ सहित कृपा करसों गहि भूप । वैवस्वत लिय मत्स्य अनूप ॥ रत्नपात्र जल पूरण जौन । धरो मत्स्य तामे मनु तौन ॥ तामे बढो मत्स्य सुखदान । कियो यत्न मनु पुत्र समान ॥ बढो मीन को पीन सुगात । रत्नपात्रमे नहीं समात ॥ बोलो मनुसों मत्स्य बिशाल । रत्न पात्रमे रहि बहु काल ॥ मनुसों मत्स्य कहो मतिरास । हमै न इहा बास अवकास ॥ मनु यह सुनत मत्स्यको बैंन । ताहि पात्रतें लै मतिऐंन ॥ छोडि दियो बापी मे जाय । अति गम्भीर सविस्तर पाय ॥ मत्स्य तहां रहिकै बहुकाल । बृद्धि पाय अति भयो बिशाल ॥ द्वै योजन बापी बिस्तार । चारि योजन एक उदार ॥ भयो मत्स्य तहँ दीरघ गात । नहि बापीके मध्य समात ॥ कहो मत्स्य फिरि मनुके पास । नहिँ प्रभु बापीमे अवकास ॥ सिन्धुप्रिया गङ्गामे बास । अब दीजै मोको मतिरास ॥ हम अति बृद्धि लहतहैं जौन । हे मनु तव उपकारक तौन ॥ सुनत मीनको मनु यह बैन । लियो उठाय ताहि तपऐन ॥ दियो छोडि गङ्गामे जाय । तेजस पुञ्ज मत्स्य अतिकाय ॥ पाय बृद्धिसों भयो बिशाल । सुरसरि तामे लहि कछु काल ॥ हलि चलि सकत न सुरसरि माहँ । एतिक बृद्धि सों भो नरनाह ॥ मनुसों कहो मत्स्य फिरि बैन । सिन्धुबास दीजै तपऐन ॥ गङ्गाजलते लियो उठाय । मनु तेहि दियो सिंधुमे नाय ॥ मनुकों बहत मत्स्य सों भूप । भयो सुगन्ध भरो सुख रूप ॥ सिन्धु माह जब डास्यो मत्स्य । तेहिँ मनुसों यह कहो रहस्य ॥ रक्षित मोहि कियो भगवान । तुम हमकों मनु सकल विधान ॥ करिवें तुम्है कार्य्यहै जौन ॥ आए काल कहत हम तौन । भूमिज सकल पदारथ जौन ॥ अचिर प्रलयकों पावत तौन ॥ आवतहै प्रक्षालन काल । लोकनको मनु सुनहु बिशाल ॥ देत अद्य हम तुमहिँ जनाय । जो हितहै तुमकों सुखदाय ॥ स्थावर जङ्गम है जगजौन । प्रलय प्राप्त ह्वैहै तौन ॥ राखहु तुम दृढ नाव बनाय । सहित बरत्रा दृढ सुखदाय ॥ तापै सप्तऋषिन सह पर्म । चढेहु जाय तुम मनु बर धर्म ॥ बीजन्हको धारण करि सर्व । प्रथम नावपर चढेहु अखर्व ॥ नीकी भाँति गुप्त करि नाव । मम अर्पण कीजो सह भाव ॥ धारैं शृङ्ग आइहैां तत्र । नाव चढे मनु रहिहैा यत्र ॥ महा शृङ्ग शिर ऊपर ओहि । तव तुम जानि मानियो मोहि ॥ ऐसें करि मम बचन प्रमान । प्रथम कीजियो यह सुखदान ॥ महा अशक्य प्रलयको बारी । तरिबो मोहि बिना निरधारी ॥ * ॥ मनुरुवाच ॥ * ॥ मत्स्य बचन तुम भाषत जौन । समय परें हम करिहैं तौन ॥ बिदा परस्पर ह्वै ऋषि भूप । गए यथा

इच्छा अनुरूप ॥ कहो मत्स जो प्रथम विधान। मनु सब सो कीन्हो मतिमान॥ बढो प्रलय सागर जब भूप। बीज सकल ले कै अनुरूप॥ नौकापर बैठे अभिराम। चिन्तित कियो मत्स्य बलधाम॥ स्मरण करत मनुकों निरधारि। चलो मत्स्य तहँ कृपा बिचारि॥ शृङ्गवान आवत तहँ मीन। गिरि सो मनु देखो अति पीन ॥ डारि शृङ्गमे गुणको पास। नौका सो बाँधो मतिरास॥ बधो नावसों मीन महांन। चलो सिन्धुमे लै बलवान॥ महा लहरिवश नौका तौन। हल चल चली गहे अति गौन॥ भूमि दिशा बिदिशा नभ सर्व। भयो सलिलसों पूर्ण अखर्व॥ भयो लोक सङ्कुल सब पीन। मनु सप्तर्षि दृश्य हो मीन॥ ऐसें बक्रत बर्ष सो नाव। खैचे फिरो मत्स्य सह चाव॥ तब हिमवान शृङ्गके पास। खैचे नाव गयो बलरास॥ ऐसे मत्स्य कहो तब बैन। बिहसि ऋषिणसें अति मति ऐन॥ एहि हिमवान शृङ्गसो नाव। बांधि दीजिऐ मुनि सह चाव॥ मत्स्य बचनतें नौका तौन। बाँधि दियो ऋषि मनु तपभौन॥ बाँधो नौका जहँ तपधाम। नौ बन्धन सो शृङ्ग ललाम॥ ख्यात मत्स्य फिरि मनुके पास। ऐसे बचन कहे सुखरास॥ मनु सुप्रजापति ब्रह्मा मोहि। जानऊँ मतस्य रूप यहि जोहि॥ तुमकों भयतें मोचन हेत। हो आयो बनि मीन सनेत॥ मनुते प्रजा सना मन सब। देव असुर नर नाग अखर्ब॥ हैं रचिबे सबलोक समेत। है जहँ लोक सचेत अचेत॥ करें तीब्रतप प्रतिभा तौन। ह्वहै प्राप्त जगत कर जौन॥ मम प्रसाद लहि कैं नहि मोह। करि है प्रजारचणमे द्रोह॥ यह कहि बचन मत्स्य अतिमान। भयो सलिलमे अन्तरध्यान॥ मनु बैबस्वत तपसागार। प्रजा रचणको कियो बिचार॥ प्रजा रचण लागे अभिराम। तप प्रताप लहि श्रुति तपधाम॥ प्रजा रचणमे भयो न ज्ञान। तब तप मनु कीन्हो अतिमान॥ मत्स्यक नामक परम पुराण। यह इतिहास कहो सुखदान॥ मनुइतिहास सुनो गो जौन। मुक्त पापसों ह्वहै तौन॥ सुखी होय लखि अर्थ महान। लहिहै लोक परम सुखदान॥ *****

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि मत्स्यावतारोपाख्यानवर्णनोनाम चत्वारिंशदध्यायः॥ ***

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

मार्कण्डे महामुनिसों धर्मनृप फिरि बैन। बिनय सह इमि लगे बूझन महामतिके ऐन॥ लखो अन्त अनेकयुगको महामुनि तपधाम। कौन आयुषमान तुमसों और है अभिराम॥ कोडि ब्रह्म हि और है दीर्घायु तुमसो कौन। प्रलयमे बिधि साथ तुम हीं एक हे मतिभौन॥ भये प्रलय निवृत्ति निद्रा मुक्त बिधिकों एक। रहे तुम हीं लखत रचना करत सृष्टि अनेक॥ *

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सिंदुर भरो भुसुण्ड एकदन्त लम्बो उदर । गिरिजातनय सुतुण्ड चारोफलदायक भजत ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बायुमय करि दिशनको अप ढारि जहँ तहँ सर्ब । सृष्टि करते पितामहकों भजे तुमहि अखर्ब ॥
तुम हि देखो चतुर्युगको असित अन्त अनेक । जीति बिधिको जयो तुम करि घोरतप सबिबेक ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

खोलि कै हृदयाब्जको तुम कोस बारम्बार । परब्रह्म स्वरूप हरिको लखो परम उदार ॥ एहि भाँति मार्कण्डेय मुनिको करि प्रसंशन भूप । भई जैसे आदि सृष्टि सो लगे बूझन रूप ॥ अग्नि मारुत भूमि रबि शशि भए नष्ट अखर्ब।प्रलयमे चर अचर जब दिति अदित बिनशे सर्ब॥शेषशायी बिष्णुके तब रहे तुम हो पास । कहहु सो वृत्तान्त सुनबे चहत हों मतिराश ॥ कियो तुम अनुभूत पूरब हेतु भूत अखर्ब। नही अबिदित सृष्टिको उतपत्य तुम हो सर्ब ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ कहत तुमसे भूत तीन चरित्र परम उदार।अव्यक्त अव्यय स्वयम्भूजो कियो जगताागार॥ताहि जानत औन ताकों शकत बेद न जानि। कियो जेहि आश्चर्य्य रूपी जगत यह सुखदानि ॥ कियो कृतयुग प्रथम बर्ष सहस्र चारि प्रमान। दिव्यबर्ष सु चारि शत की तास संध्यां ज्ञान॥ बर्ष शत है चारिको संध्यांश ताको भूप । तीणी बर्ष सहस्रको है दिव्य त्रेता रूप ॥ त्रीणिबर्ष सहस्रको युग कहत त्रेता तीन।त्रीणी त्रोणी सुकहत शत संध्यांश संध्या जौन॥बर्ष दोय सहस्र द्वापरको कहे परमान। संध्यांश संध्या दोय दै शत बर्षको सबिधान ॥ एकबर्ष सहस्र कलिको भोग जानहु भूप। संध्यांश संध्या एकशत शतबर्षको अनुरूप॥ क्षीण कलियुग भये कृतयुग होत है सुखदान। सहस्र द्वादश बर्ष चारो युगनको परमान॥चतुर्युग ए सहस आहत जात हैं जब बीति।ब्रह्मदिवस प्रमाण इतनो कहत सुमति सुनीति॥ बिश्व सिगरो जात है जब ब्रह्म भवन हिं भूप। कहत लोकनको प्रलय तब बुद्धिमान अनूप ॥ चतुर्युगके अन्तमे जब रहत कलियुग शेश। अनृतवादी होत तब जन पतित बञ्चक बेश॥ यज्ञको अरु दान ब्रतको करत प्रतिनिधि खर्ब। शूद्रकर्मी होहिं गे द्विज शूद्रधनकर सर्ब॥ दण्ड अजित बिहाय ब्राह्मण त्यजि धरि हैं धर्म। सर्बभक्षी होहिँ गे द्विज धरे हिंसाकर्म॥ अजप ब्राह्मण होहिँ गे सब शूद्र जपकर भूप। होय गो बिपरीतिते तब प्रलयपूरब रूप॥ होहिं गे बहु म्लेच्छ राजा भूमि पै चहुँओर । जास शासन मृषा पापी कर्मकरता घोर॥नही करत स्वधर्म जीवन बिप्र सिगरे भूप। होहिँ गे क्षत्रादि बर्ण स्वकर्मरहित कुरूप॥ बीर्य्य बल स्वल्पायुके सब होहिँ गे नर खर्ब। शून्य जनपद होहिँ गे जन अनृतबादी सर्ब॥ब्रह्मचारी धूत ह्वै है युगक्षय लहि भूप। शूद्र कहि है द्विजनसों सब बचन नीच स्वरूप॥बिप्र शूद्रनसों कहै गें बिनयवारे बैन।जन्तु ह्वै है बहुत जगमे क्रूर करण अचैन ॥ गन्धगुण नहिँ औषधिनमे अन्नस्वल्प अस्वाद। ह्रस्व ह्वै है मनुज

कल्पित शील मिथ्यावाद ॥ होहिँ गी मुखभगा नारी लिङ्ग मुखमे धारि । बङ्गमाहँ प्रसिद्ध हैं पति
हुना सकाम बिचारि॥ अन्न बिक्रय करैं गे जन बेदबिक्रय बिप्र। योनि बिक्रय करैं गी बङ्ग अधम
नारी चिप्र ॥ अल्पक्षीरा गौउ ह्वैहै वंध्यबृक्ष महान । बङ्गन वायस रहैं गे तरुतुङ्ग पै दुखदान॥
युगक्षयमे होहिँ गे जन द्यूत मिथ्याधर्म । भिक्षार्थ बाधा करैं गे द्विज द्विजनको हतकर्म॥ब्रम्हहिंसक
नृपनसों द्विज लेहि गे नृप दान । दण्डभयतं गही भजि वसि बिपिनिमे अतिमान॥छन्न ह्वै मुनिबेष
धरि बाणिज्य करि हैं तौन। ब्रह्मचारी बेष धरि हैं अर्थलोभी जौन॥वृथाचारी आश्रमी बनि पाप
करि है भूप। बसन भोजन देय करि है पुष्ट कपटी रूप॥ पाषण्ड पुञ्ज बखानि हैं पर अन्नको बङ्ग
स्वाद।युगक्षयमे होहि ये इमि आश्रमी छलबाद॥यथाकाल न बर्षिहै घन आदृ कै अभिराम।किए
ऊ बपन न जामि है सबबीज भूप ललाम ॥ होंहि गे बङ्ग जीव हिंसक क्रूर कारक काम। पापको
फल होय गो अत्यन्त अर्पित आम॥होय गो तबधर्मधारक जौन कुरुपति भूप।होय गो अल्पायु सो
सुखदाय उत्तमरूप॥धूर्त है है बनिक सिगरे अनृत करि हैं भाव। अल्पायु और दरिद्र ह्वै हैं जास
धर्म स्वभाव॥दीर्घायु और समृद्ध ह्वै है हैं अधर्मी जौन।नगर बाहेर पापको बलिकर्म करि है तौन॥
स्वल्पधनते धनिकको मद धरै गे नर खर्ब।न्यास करि बिश्वास धरि है हरै गो सो सर्ब॥पुरुष भक्षक
जीव बसि हैं नगरमे बङ्ग आय।वर्ष सतएँ स्त्री धरै गी गर्भ पतिको पाय॥ बर्ष बरहे करहि गे नर पुत्र
को उतपन्न। लहत षोडश वर्ष क्वैह जरासों सम्पन्न॥क्षीण आयुष पुरुष ह्वै है तरुण बृद्ध समान।बृद्ध
धरि हैं तरुण कैसो शील अमित अपाण॥ छोडि पतिको दाससो तिय भजैं गी पशुरूप । बीरपत्नी
रचहि गी सगँ जारके रति भूप ॥ होयगी कलि अन्त होते अनाबृष्टि महान । अल्प बल सब जीव
तजि हैं क्षुधापीडित प्रान ॥ सप्तरबि करि उदै पीहैं सिन्धु सरिता तोय । तृण बृक्ष सिगरे सूखि जैहै
भस्म ऐसे होय ॥ फेरि संवर्तक अनल सह बायु दारुण रूप । प्रगट ह्वैकै भस्म करि है भूमि भूतल
भूप॥लहैं गे भय देव दानव जरत अहिगण लोक। अनल पीडित होहिँ गे दिति अदितओक सशो
क ॥अशिव वायु प्रचण्डके सगँ अनल कर्ता नाश । देय गो एहि भाँतिसों सब जगतको जब त्राश॥
महाघन तब सघन ठमडे अरे अद्भुत रूप। कोउ कारे कोउ पीरे अरुण उज्जलभूप ॥ कोउ पुरसे
कोउ गजगण सकारसे अतिमान ॥ धरे बिद्युतमाल आये जलद जीवन दान।घार गरजत गगणमे
मढि महा धारैं धार। बरषि कै सब बोरिदेहैं भूमि सहित पहार ॥ पितामहको पाय शासन बढे
मेघ अखर्ब।बरषि कै करि नाश देहै प्रलय पावक सर्ब॥स्वयंभूव करि पानसों ए बायु तौन अखर्ब।
बायुको लहि बेग जलधर नाश पायो सर्ब॥रहे बरषत वर्ष बारह पयोधर इमि भूप। दिवो जलसों
पूरि सब ब्रम्हाण्डको अतिरूप ॥ लही फेरि समुद्र बेला आपनी अभिराम । सहित पर्बत धरा
जलमे भई मग्न ललाम॥ देव दनुजन मनुजको कहुँ देखि परत स्वरूप। तेहि एकार्णवमाह हम
एक बङ्गत फिरत अनूप॥ तेहि एकार्णवमाह परि हम भए व्याकुल भूप। दिशा बिदिशा चराच

रको देखि परत न रूप । गए हम तब दूरि बऊलों बहे जलमे भूप॥शरण कोउ न मिलो हमकों भए श्रान्त स्वरूप ॥ लखो तब बटवृक्ष हम अतिरम्य हेमतिमान। तास शाखा महत ऊपर तेजमय सुखदान॥पर्य्यङ्क तापैं ज्योतिमय आस्तर्ण अनुपम रुप। लखो बैठो तास पैं शिशु सूर शशिसो भूप ॥ देखि बिस्मय भयो मेरे चित्तमे अतिमान । इहाँ शोवत कौनविधि यह बालकेय महान ॥ ध्यान धरि हौं जानिबेको कियो चिन्तन तास । त्रिकालदर्शी हमै सो नहि भयो भूप प्रकाश ॥ लसत अतसी पुष्पसों श्रीवत्स बारिज नैन। पीतबसन बिशाल लोचन परम परमाश्रैन ॥ कहो तब तोह बिहसि बालक बचन हमसों भूप । श्रान्त हमको बिदित तुम बिश्राम चहत अनूप ॥ आय मेरे उदरमे कुछ महामुनि बिश्राम। चहो जबलों रहो तबलों मोदसो अभिराम ॥ बचन सुनि कै तौन बालकके अनूपम रुप। भयो जीवित जन्मसे निर्बेद हमकों भूप ॥ कियो तब तेहि बिवृत्त आनन बाल सुषमा देश। अवश कीन्हो दैववश हम बदनमाहँ प्रवेश ॥ जाय ताके उदरमे हम सुनऊ सहसा भूप। सपुर राष्ट्र सकानना सक्षिति गिरि देखी भूप॥ लखी हम गङ्गादि सरिता भूमि पर है जैान। करण ताके उदरमे हम लगे चऊँदिशि गैान॥ लखे सकल समुद्र तेहाँ भरे यादः गभीर। सूर शशि उडुगणन सह नभ लखो तहँ कुरुबीर ॥ करत देखे यज्ञ द्विज नृप प्रजा पालत सर्ब । लखे चारोवर्ण अपनो धरे धर्म अखर्ब ॥ लखो आदि सुमेर सिगरे अद्रि जे अभिराम। बन्य जीवन्ह सहित कानन फलित कुसुमित नाम ॥ और भू पर हे चराचर बस्तु जेतनी भूप। फिरत ताके उदरमे हम लखी सकल अनूप ॥ इन्द्रादि देखे देवता सब पित्र बसु गन्धर्ब। दैत्य दानव यक्ष राक्षस अप्सरागण सर्ब ॥लखे ग्रह ऋषि नाग किन्नर लखत हे हम जैान॥ लखत हे हम जैान त्रिभुवनमाह देखे तैान ॥ फिरे हम सौ बर्ष तहँ करि फलाहार अनूप ॥ नही ताके देहको हम अन्त पायो भूप॥नित्य धावत रहे चऊँदिशि लहो नहि बिश्राम।नहि महात्माके लहो हम देहको परिनाम ॥ गए हम तब शरण ताके जानि बरद शरण्य । काय बाचिक मानसिकसों धारि बृत्ति अनन्य ॥ बायुबश हम कढे ताके बदनते अभिराम।फेरि देखो जगत्पति तहँ चराचरको धाम ॥ तैान बटकी शाख तेहि शयन पैं सुखदान। आसीन बाल स्वरूप मानो उदय कीन्हे भाँन ॥ कहो हमसों बचन तब तेहो बिहसि बालस्वरूप ॥ श्रीवत्स धारें पीत पट कमलाक्ष अद्भुत भूप ॥ भए मेरे उदरमे बसि श्रान्त सुमुनि महाँन । भई दृष्टि प्रकाश मम तब धरिकमे सुखदान ॥ लखो जातें आपनो हम रूप भूप सचेत । चरण बारिज बरण ताके लखे अगत निकेत॥ यततें हम लाय मस्तक कियो जाय प्रणाम । बिनय सह करि यत देखो तैान आनदधाम ॥ नमस्कार सबिनय करि इमि कहे तासों बैंन। देव जानो चहत तुमको महत माया ऐन॥ बदनपथ व्है देहमे तब पैठि कै भगवान। चराचरमय लखो त्रिभुवन उदरमाँह महान ॥ देव दानव मनुज किन्नर निऋत अहि गन्धर्ब । सरित गिरि सह सिन्धु देखी भूमि बिपिनि

अखर्ब ॥ ह्यपाते तव रही मेरी बनी स्मृति अभिराम । उदरमे तव फिरो देखत लोक बिबिधि ललाम ॥ कढे फेरि हम प्रबलइच्छा रहे हैं तव साथ । तुम्हे जानो चहतहैं हम देव त्रिभुवननाथ॥ इहाँ व्है शिशुरूप सो तव कहहु कारण कौंन। पान करि सब जगतको सो कहहु त्रिभुवन भौंन ॥ बसत यह सब रचतहै तव उदरमे केहि अर्थ । रहहुगे एहि भाँति कबलो इहाँ कहहु समर्थ ॥ ब्राह्मणेच्छासों चहत यह सुनो तुमसों सर्ब । कमललोचन कहहु बिस्तर सहित तौन अखर्ब ॥ सुनत हमसो देवदेव प्रकाशमय अभिराम । शान्त्य करिकै हमै बोले बैन आनँदधाम ॥ * ॥ देवदेवउवाच ॥ * ॥ यथातत्व सुरासुरो मम नहीं जानत रूप । प्रीतिसों तव कहत जग यह यथा सृजत अनूप॥पितृ भक्त सु भये मेरे शरण तपसागार । कहत यह बृत्तांत तो लखि ब्रह्मचर्य्य उदार ॥ नार कहियत आपकों मम अयन नियमित तौंन । कहत नारायण हमै एहितें सुवेत्ता जौंन ॥ रचत हमही भूत सिगरे करत तिनको नाश । बिष्णु ब्रह्मा रुद्रहैं हम शक्र सुरगण पास ॥ बरुण यम हम सोम कश्यप प्रजापति तपधाम । हैं बिधाता हमै धाता यज्ञहैं अभिराम ॥ अग्नि मुख मम चरण प्रिथिवी सूर शशिहै नैन । गगण मूर्धा दिशा स्रुतिहै स्वेद सलिल सदैन ॥ दिशन सह नभ काय मेरो वायु मन अभिराम।किए क्रतु हम सकल सहसन्ह दक्षिणा सह साम।।यजत सोकों बेदबिद मख पुरुष मोहि बिचारि।स्वर्गकांक्षी भूप ममख करतहै निरधारि।।जपत हमको बैश्य बिधिवत स्वर्ग कांक्षी तौन । सिन्धुलो सब मही धारे मेरु मन्दर जौंन ॥ शेष व्है हम तौन धरणी कियो धारण सर्ब । धरी हो जो पूर्ब धारि बराह रूप अखर्ब ॥ अग्नि बडवा बदन व्है हम नित्य जलको पान।करतहै फिरि सृजत ताको प्रलयसे अति मान।।भए मुखतें बिषम क्षत्री बाहुते बिप्र जौन । उरूते ते भए पदतें शूद्र कहियत तौन ॥ भए मोतें बेद सब फिरि बसत मोमे आय । काम कलमष मोह मत्सर बिगत जिनको काय ॥ यती शान्त मुमुक्षु आत्मक ज्ञानको धरि शुद्ध । क्रोध ममता हीन जे शुभमार्गगामी उद्ध ॥ करत मेरो रूप चिन्तन बिप्र उत्तम तौंन । ज्योति अनिल सभानु पावक प्रलय कारक जौंन ॥ मारकण्डे जानियो सब तौन मेरो रूप । लखत तारा जौन ए मम रोम कूप अनूप ॥ दिशा औ रसमुद्र सब मम बसन शयन सुजान । काम क्रोध सहर्ष भय अरु मोह रोम न आन॥सत्य दान सु तप अहींसा सुगति दायक जौंन । बिहित हमसों बसत मेरी देहमे सब तौंन।।दुःख्कस क्षत अरु मूढ लोभी पाप पुञ्ज अयान।महा फलसो हमै ते नहिं लहतहै सुखदान ॥ होत जब जब धर्मको क्षय सुनहुँ तब तब बिप्र । देह उत्तम पुरुषके गृहमाह धारत चिप्र ॥ धारि मानुष देह पापिनको करत तब नाश । देव दानव मनुज राक्षस रचित करि भ्रतिराश ॥ फेरि अपनी करत मायामाहँ लीन अखर्ब । काल लहि नर देह धरि मर्य्याद बांधत सर्ब ॥ स्वेत कृतयुगमे रहे हम पीत त्रेता पाय । रक्त द्वापरमे रहैं धरि कृष्ण कलिमे काय।। कालक लहि अन्तको हम होय दारुण काल । करत अपने माहि लयको सकल जनको जाल॥ चराचर

सह करतहै हम वास नियत सुदृत्य।भूतके उतपत्यके हम नाशकारक नित्य॥भूतमे एहि भाँति सरी
बसत आत्मा विप्र। जीवमति ते हमै कोउ नहीं जानत छिप्र॥जौंन कछु तुम क्लेश पायो लहत हम
कों तौंन।श्रेयकर सो होयगो द्विज तुम्है आनदभौन॥ चराचर सब लोकमेतुम बिप्र देखो जौंन।
सदा मेरी आतमासो रचितहै सब तौन॥ पिता मह मम देहको है अर्धभाग अनूप। हो नारायण
शङ्ख चक्र सु गदा धारक रूप॥ युगनकी आवृत्ति जौलों होयगी सु हचार। सोयहै तबलों सुविश्व
स्वरूप जगदाधार॥इहां हम सब काल तबलों बसैगे तपधाम। अशिशु शिशु व्है परम जबलों पिता
मह अभिराम॥ ब्रह्म रूपी देतहै हम तुम्है वर बरदान। ब्रह्मर्षि गणमे होऊगे तुम पूज्य परम सु
जान॥ देखि एकार्णव भए तुम बिकल जानो विप्र। दियो जगत देखाय तुमको देहमे हम छिप्र॥
भरे बिस्मय देखि समस्त जगत जनगण जौंन।तुम्है मुखतें काढिबेको भयो कारण तौन॥कहो अपने
रूपको हम चरित तुमसों सर्व।जगैं जबलों पितामह तपतेजपुञ्ज अखर्व॥ बसों तबलों इहां तुम जब
जगैगो भगवान। एक व्है हम रचहिँ गे तब सृष्टि सहित बिधान॥ पञ्च तत्व सचराचर सब देव
दनुज अखर्व। करहिगे सब लोकमांह अशेष रचना सर्व॥ मार्कण्डेयउवाच॥ वचन ए कहि भयो
अन्तर्ध्यान सो प्रभु भूप। देखि हमकों परी सिगरी प्रजा सृष्टि अनूप॥ एहि भाँतिकों हम चरित
अद्भुत लखो हे नृपधर्म। पूर्व देखो देव जो वह पद्मलोचन पर्म॥ तौन सम्बन्धी तिहारो कृष्ण
यह अभिराम। रही स्मृति यह हमै इनकी कृपातैं सुखधाम॥ भए हम दीर्घायु जाकी कृपातें
कुरु भूप। वार्ष्णेय भूषण तौन है यह कृष्ण उत्तम रूप॥ एई धाता हैं बिधाता जगतके अभिराम।
आदि अन्त अचिन्त अव्यय अजर करुणाधाम॥भई इनकों देखि कै स्मृति तौन हमकों भूप। विष्णु
हैं ए आदिदेव अचिंत्य अव्यय रूप॥ शरण इनकी लेऊ जानि शरण्य करुणाधाम। वैशम्पायन
उवाच॥ सुनत पाण्डव महामुनिके बचन ए अभिराम॥चरण वन्दे द्रौपदी सह कृष्णके कुरुभूप॥
शांत्वमय कहि बचन माधव मधुर मञ्जुल रूप॥ शान्त तिनकों कियो करुणासिन्धु करि सनमान।
आनि आदर योग्य पाण्डव भक्तप्रिय सुखदान॥ ************

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि
युगान्तेएकार्णववर्णनोनामैकचत्वारिंशदध्यायः॥ ****

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

फिरि मुनिसों पूछो नृपधर्म। जो भविष्य कलियुगमे कर्म॥ युधिष्ठिरउवाच॥ आश्चर्य्य भूत
हम सब वृतान्त। तुमसों मुनिवर सुनो नितान्त॥ कलि चरित्र सुनिबेकों सर्व। मम मन इच्छा
करत अखर्व॥ सह बिस्तर कहिए मुनिराज। चहत सुनो हम सहित समाज॥ मार्कण्डेयउवाच॥
तुमसों भूप हम देखो जौन। किय अनुभूत कहत सब तौन॥ चतुष्पाद कृतयुगमे धर्म। हो वृष रूप

अजनमे पां ॥ त्रिपद धर्म त्रेतामे भूप। एक अंश भो अधरम रूप॥ भो द्वापरमे धर्म द्विपाद। आधो अधरम रत मर्य्याद॥ तीनि अंश भो अधरम जौन। भो प्रवृत्ति कलियुगमे तौन॥ चौथो अंश रहो जग धर्म। करण प्रजा तब लगी कुकर्म ॥ आयु बुद्धि बल तेजस जौन। भयो क्षीण मानुषको तौन॥ चारिउवर्ण सुनङ्ग कुरुभूप। करिहै धर्म कर्म छल रूप॥ धर्महानि तें आयुष छीन। ह्वैकैं मनुज ज्ञान ते हीन॥ लोभो क्रोधी कामो खर्ब। बैर परस्पर करिहै सर्ब ॥ वर्ण होंहिगे शङ्कर सर्ब। करिकै शूद्र सदृश छल खर्ब ॥ बिप्र होहिँगे शूद्र समान। द्विजको धरिहै शूद्र विधान॥ ऐसो ह्वैहै युगत्रय माहँ। शण पाको धरिहैं नरनाह॥परुष बोलि हैं भार्य्या मित्र।अन्योन्य करेगें चोर चरित्र॥अजा मत्स्यके पलको खाय। मनुज मानि है अति सुखदाय॥ खोदि कुदारिन सरिता तीर। खेत करेगें नर सुनु वीर॥ अल्प बीज तेऊहै सर्ब। तातें जीवन करिहैं खर्ब ॥ श्राद्ध देव पूजन है जौन। करिहैं लोभग्रस्त अति तौन ॥ ज्योति परस्पर नियमित भूप। भोजन करिहैं रिणस्वरूप। पिता पुत्रके भोजन जाय। करिहै पुत्र पिताके आय ॥ नीम्न देशमे करिहैं खेत। गाय जोतिहै अधरम चेत॥ एक बर्षको बछवा जौन। हलसे अधम जोतिहैं तौन ॥ पुत्र पिता बध करिहै भूप। पिता पुत्रबधकर्म कुरूप॥ करिहैं खेद न करिकै पाप। सहन शील निन्दाको दाप ॥ वर्ण होहिँगे म्लेच्छ समान। नष्ट होहिँगे यज्ञविधान॥ निरानन्द ह्वैहै जन सर्ब। बिधवनको धन हरिहै खर्ब ॥ सब सबको बध करं बिचार। ह्वैहै मनुज कष्ट काङ्कार॥ साधुनकी दारा धन जौन। दर बसभूप भोगिहै तौन॥ पर कन्या कीन्हे बिनुदान। सरबस लेहै नृप बलवान॥ चोरी करिहै हाथोहाथ। प्राय युगत्रयको कुरुनाथ॥ भीरु सूरको धरिहै मानि। सूर हनैगे कादर जानि॥ छोडि धर्मपत्नी सुखरास। बसिहैं बार बधूके पास॥ तिनकी पत्नी कामाशक्त। अन्य पुरुषसों ह्वैहै रक्त॥ कोउ न काहूको बिश्वास। करिहै भए धर्मको नाश॥ वर्ण होहिँगे एकाकार। सुत पितु तजिहै तमा बिचार॥ तजि पति सेवन बनिता जौन। करिहै अन्य पुरुषसों गौन॥ जब गोधूम होयगो यत्र। प्रजा जाय बसिहैं सब तत्र॥ स्वेच्छा चार पुरुष अरु बाम। करिहै भए युगत्रय साम ॥ ह्वैहै म्लेच्छमई जग सर्ब। भय युगत्रय भूप अखर्ब॥ बेद कर्म सब ह्वैहै नाश। महा पाप तम करी प्रकाश॥ सोरह वर्ष आयु परमान। वर्ष सत्रहे तजिहै प्रान॥ षठ पञ्चम लहि बार्षिक रूप। कन्या गर्भ धरेगी भूप॥ सप्तम अष्टम वर्षासन्न। पुरुष प्रजा करिहै उतपन्न॥ दम्पति नहीं परस्पर तोष। लहिहै नहीं भरे मतिरोष॥ कोऊ न काहू देहै दान। म्लेच्छाचार बढे अतिमान॥ लै कलियुगको पश्चिम काल। ऐसो बढिहै पाप बिशाल॥ करिहै वृक्ष बागको नाश। जीव धरैंगे जीवित त्रास॥ ब्राह्मण जौन मारिहैं क्षिप्र। भोजन तिनके करिहैं बिप्र॥ शूद्रनसों भय पाय उदार। द्विज भजिहैं करि हाहाकार॥ नहिँ त्राता कोउ रहिहैं सूर। प्रबल होहिँगे हिंसक क्रूर॥ नदी पर्ब्बताश्रय लहि बिप्र। लहि भय भाजि बसैंगे क्षिप्र॥ भरे चौरभय काक समान।

पीड़ित होय बिप्र अतिमान ॥ व्हैहै द्विज तजि धैर्य्य अनूप । शूद्रनके परिचारक भूप ॥ धरिहै बिप्र शूद्रको धर्म । तास भृत्य ह्वै ताको कर्म ॥ दिन दिन यह बढिहै बिपरीति । बढै पापको पाथ अनीति ॥ कबुर पूजिहै करि बिश्वास । जैहै जन न देवालय पास ॥ जहां महर्षिनको सुथान । जहां बसत द्विज बर्ण महान ॥ यहां देव आलय अति रूप । तहां कबुर करिहै जन भूप ॥ मांसाद सुरापान जब सर्ब । जब ह्वै हैं कर पाप अखर्ब ॥ पुष्प पुष्पमे फल फल माहँ । जब व्हैहैं सुनिए नरनाहँ ॥ तब युगक्षयको अन्त अनूप । देखि परैगी सुनिऐ भूप ॥ घन बिनु काल बरषिहैं पाथ । बैर शूद्र करिहै द्विज साथ ॥ म्लेच्छाक्रान्त भए संसार । बिप्र भाजिहै लहि कर भार ॥ औरै नष्ट भए मर्याद । शिष्य गुरूसों करिहैं बाद ॥ उग्र बहैगो बायु कठोर । उल्कापात होहिंगे घोर । सात सूर्य्य करिकै परकाश । तिनतैं सृष्टि लहैगो नाश ॥ बिना पर्ब व्हैहै उपराग । लगिहै अग्नि बड़त हत जाग ॥ पत्तन नगर होहिंगे यत्र । प्रजा भाजिकै बसिहै तत्र ॥ हा सुत हा माता हा तात । यह धुनि च्यहुँ दिशि भरी अघात ॥ भये युगक्षय घोर महान । कृपा करहिंगे तब भगवान ॥ लोक द्विजादिक बर्ण अनूप । तब क्रमसों बढिहैं कुरुभूप ॥ लोक वृद्धिको कारण मूल । म्लेच्छासों ह्वैहै अनकूल ॥ रबि गुरु चन्द्र पुष्यमे आय । एक सङ्ग बसिहैं सुखदाय ॥ तब कृतयुग व्हैहै सुखधाम । ग्रह नक्षत्र धन सह अभिराम ॥ व्हैहै क्षेम सुभिक्ष उदार । यशा नाम कल्की औतार । बुद्धि पराक्रम बलको धाम ॥ बिष्णु रूपसों अति अभिराम ॥ सम्भल बिप्रके भौन । व्हैहैं कृपासिन्धु तब तौन ॥ बाहन शस्त्र सैन सह बर्म । इच्छासो ताको अति पर्म ॥ ह्वैहै बिजय नामसो भूप । फिरिहै सब जगजैत अनूप ॥ सहित बिप्रगण दुर्जन जौन । तिनको नाश करैगो तौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि कलिचरित्र कल्कीअवतारबर्णनोनाम द्विचत्वारिंशदध्यायः ॥ *********

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चौरनको क्षय करि कियो बिप्रण सह अभिराम । अश्वमेध मखदानदै करी भूमि धनधाम ॥

जगत सुखद मर्य्यादको स्थापन कीन्हों भूप । भरी प्रजा आनन्दसों बर्द्धित भई अनूप ॥

बिष्णु कृपा लहिकै प्रजा भई धर्मरत सर्ब । कल्की मारे भूमिपै रहे जे दुष्ट अखर्ब ॥

धर्म कर्म मख दान धन बल पौरुष सुख ज्ञान । विष्णुकृपातें प्रगट ए युग सम भए सुजान ॥

तजत न कोउ मर्य्यादको अपने बर्ण समान । धर्मशील भूपति भए भू युत शस्य महान ॥

त्रेता द्वापर कलि कथा प्रथम कही हम भूप । जन्म कर्म आयुष सकल धर्म समान अनूप ॥

कही ध्यवस्था युगनकी लखी जो करि अनुभूत । कहत सहित अच्युत सुनउ धर्म मोक्षपथ रूप ॥

धरउ आत्मा धर्ममे धारि नियम नृपधर्म । धर्म शील भूपति लहै आनद अवनी पर्म ॥

परम शुभद बाणी कहत और सुनऊ सुखरूप । विप्रनिरादर कीजियो कबहू भूलि न भूप ॥
कोप करेतें विप्रके पावत लोक बिनाश । ब्राह्मणको अपमान नहिँ करत जो सुमति निवास ॥
॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥
सुनि मार्कण्डेके वचन धर्मनृपति मतिऐन । लागे बूझन धर्मपथ पालत प्रजा सचैन ॥
॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥
दयावान सब जीवने सत्यबाक मृदु जौन । गिरत धर्मते नहि प्रजापालक भूपति तौन ॥
देव पितृ पूजन करऊ देय दान अभिराम । जीति भूमिकों बश करऊ धारे मोद ललाम ॥
छपे नहीं तुमसों कछू भूत भविष्य विधान । तातें यह बनवासको क्लेश न धरऊ सुजान ॥
मोह सुरनहूको करत भूप काल बलवान । बचन कहे हम कीजियो तामे नियत प्रमान ॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥
जौन कहे मुनि तुम बचन श्रुतिसुख करि अभिराम । तौन करहिँगे यत्नसों शासन तव तपधाम ॥
॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥
सहित विप्र बर कृष्ण सह पाण्डव सुनि मुनिबैन । भए सविस्मय कथा सकल अद्भुत दायक चैन ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिमामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि मार्कण्डे कथित भविष्य वर्णनोनाम चयचत्वारिंशदध्यायः ॥ *
॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
फिरि कहिबे मुनिसो कह्यो विप्र महात्म्य सु भूप । सुनि मुनि भूपतिसों कह्यो सुनु द्विजचरित अनूप ॥
भयो भूप इच्वाकुबंशमे पूर्व परिक्षित भूप । मृगयामे एकाकी खेदो मृगको एक अनूप ॥
गयो दूरि देखो तहां गहन तडाग अनूप । तृषित तुरग सह पान करि जल तहँ बैठो भूप ॥
तहां एक गावत लखी कन्या तीरत फूल । बूझो नृप तुम कौन हौ छबिसों भरी अतूल ॥
हम तुमको चाहत बरो सुनि सो बोली बैन । बचन एक दीजै हमै तब बरिऐ छबिऐन ॥
जबलों नहिँ जल देखि हो तबलों रहि हौ भूप । कहि तथास्तु भूपति बरो आनद भरो अनूप ॥
आए सैन चढाय तेहि सिबिका पर अभिराम । राखि प्राण समान करि भूपहि अपने धाम ॥
राजकाज भूलो नृपति तव लखि चतुर प्रधान । भेद लेय सबसखिनसो बिरचो बाग महान ॥
परम रम्य बिरची तहां बापी अति सुखदाय । तहँ बिहाररहित नृपतिकों गो सह प्रिया लेवाय ॥
करत बिहार गए तहां जहँ बापी अभिराम । भूलि भूप पैठो तहां सहित प्रिया छबिधाम ॥
प्रिया तौन तेहि सलिलमे भई मग्न लखि भूप । शोधनार्थ सूखी करी बापी तौन अनूप ॥

लखो तहां मंडूक एक बैठो भूप महांन । जानो एहि खाई प्रिया करि ताकों बिनुप्रान ॥
मंडुक हनि मेरे निकट आवैगा जन जैान । सकल मनोरथ करैांगो ताको मम प्रिय तात ॥
हनन लागे मंडूक बज्ज जनपदके जन सर्ब । मरे भीति मंडुक चितै आयो मरण अखर्ब ॥
गए भाजि मंडूक सब जहँ मण्डूक जनेश । कहो सकल बृत्तान्त जो भूपति करत अशेश ॥
सुनि आयो मंडूकपति जहां परीक्षित भूप । समुझायो बज्ज बिप्र बनि कहि कहि नीति अनूप ॥
नहिं निबृत्त भूपति भयो मंडुकबधतैं जानि । तब मंडुकपति भूपसों कहो सत्य सनमानि ॥

॥ * ॥ मंडूकपतिरुवाच ॥ * ॥

हों मंडूकपति सो सुता मेरी है छबिधान । तुमसे तेहि बज्जनृप छले छली चुद्र है बाम ॥
करि आवाहन तास तेहिं दियो भूपके हाथ । सेवा करिवेकी करो आज्ञा मंडुकनाथ ॥
मंडुकबधतें सुताकों दिये मंडुकपति शाप । ब्रह्मभक्ति हत होय गे अरे सुत युतपाप ॥
गो मंडुकपति बिदा ह्वै जेहां राजसमाज । मंडुककी पायो नृपति जैसे त्रिभुवनराज ॥
दोय पुत्र तामे भयो ताके छल दल नाम । राज ताहि दै भूप गो सहित प्रिया यमधाम ॥
मृगयाको छल भूप गो देखि महामृग रूप । दैारायो रथ हननको ताकों आतुर भूप ॥
सूत कहो मुनि बामदेवके है द्वै दिव्य तुरङ्ग । जैां रथमे ते जोरिऐ तैा नृप साध्य कुरङ्ग ॥
यह सुनि नृप मुनि पै गयो मागें तुरगति नीति । कहि मृग हनि हम देहिं गे तुरग पठै करि प्रीति ॥
सो मुनि कै सुनि नृपतिकों दीन्हे तरल तुरङ्ग । ते रथमे नृप जोति कै मारो जाय कुरङ्ग ॥
तुरग लए छलनृप गयो घरकों छल निरधारि । राखे भीतर भवनके अदेय है ए बिचारि ॥
अश्वनको आगमन लखत मुनि हिँ गयो एकमास । आत्रेय शिष्यकों भूपके तब पठयो मुनिपास ॥
आत्रेय कहो छलनृपतिसों बज्जतभाँतिके बैन । भूप कहो ए मुनिनके योग्य तुरङ्गम है न ॥
आत्रेय जाय मुनिसों कहो दे हैं अश्व न भूप । बामदेव सुनि क्रोध करि गए कृशान स्वरूप ॥
बज्जत कहो मुनि भूप नहि दीन्हे तुरग महांन । मुनि बोले यमपाशते बद्ध देऊ मति प्रान ॥
बामदेवसों नृप कहे हेलाबचन कठोर । सुनि मुनिके मनमे बढो कोपानल अतिघोर ॥

॥ * ॥ मुनिरुवाच ॥ * ॥

बेगि भूप दीजै तुरग नतरु चारि बलबान । राक्षस आवत शूलधर हरण तिहारो प्रान ॥
भूप कहो तुमकों चही गर्दभको रथ बिप्र । तुम्है योग्य ए तुरग नहिँ नृपबाहन अतिक्षिप्र ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

तब हों आए कालसे राक्षस घोर महान । नृपति परिक्षितको लियो शूलनसों हनि प्रान ॥
मरे परीक्षित भूप हे जे इक्ष्वाकु अनेक । लघुभ्राता ताको रहो दलकों कियो भिषेक ॥
बाम देव फिरिकै गए दल भूपतिके पास । कहो तुरग दीजै नृपति जानि धर्म मतिराश ॥

दल मुनि धनुष मगाय शर किय मुनि पै सन्धान। मुनि बोले यह शर हनै तव सुतको नृप प्रान॥
दश वार्षिक नृपसुत रहो नाम शेनजित जौन। अन्तः पुरमे जाय शर ताकों लागो तौन॥

॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥

और बाण सौं दल कहो लखऊ स्वजनगण सर्व। हरत प्राण या विप्रको शरसों मारि अखर्व॥

॥ * ॥ बामदेवउवाच ॥ * ॥

जौं तुम शरवर्षा कियो मोपैं चाहत भूप। तौ तुम जडके हो रहो निश्चल थूल स्वरूप॥
एहि शरसों महिषी हनौ अपनी हे दलभूप। तव तुम्हरो मिढि है सुनो सिगरो एन सरूप॥
कियो तथा शर छोडि दल मुनिके वचन प्रमाण। मुनिसों राणी कहन इमि लागी वेधित बाण॥

॥ * ॥ महिष्युवाच ॥ * ॥

बामदेव द्विजभक्ति निति इनसों हम उपदेश। कियो होय तौ दीजियै हमकों पुण्य निवेश॥

॥ * ॥ बामदेवउवाच ॥ * ॥

सुन्दरि तुम रक्षण कियो राज्य बंश घह सर्ब। देत तुम्हे वर राज्यको पालन करऊ अखर्ब॥

॥ * ॥ राजपत्न्युवाच ॥ * ॥

करत कृपा मुनि तौ करऊ भूप पापसों मुक्त। सहित पुत्र पति राज्यको शासन करिवो युक्त॥

॥ * मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

मुनि तथास्तु बोले सुनत शुभ महिषीको बैन। व्है प्रसन्न भूपति दये तुरग विनीत सचैन॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेबनपर्बणि मण्डुकोपाख्यानवर्णनोनाम चतुश्चत्वारिंशदध्यायः॥ * * * * * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

फेरि मार्कण्डेयसों इमि कहो भूपतिधर्म। सुनत बकदालभ्य मुनि चिरजीव अतिपर्म॥ सखा हैं सुरराजके केहिभांति कहिए तौंन।जगतको सुख दुःख पावत कहऊ सिगरे रौंन॥मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ शक्र मुनि के प्रज्ञा जनपद भरो आंनद तास। गजो पैं चढि सो गए वकराजर्षि आश्रम पास॥ भरो आनद देखि जनपद सरित सर अभिराम। लखे ब्राह्मण वृन्द प्रमुदित तेज तपके धाम॥ इन्द्र आश्रम देखि ऋषिकों सिन्धुतढलों पर्म। उतरि गजसों गए तेहां लहो लखि वक शर्म॥ भए प्रमुदित परस्पर हरि सविधि पूजन पाय। प्रश्न कीन्हो इन्द्र मुनिसो बैठि तहँ सुखदाय॥ कहऊ मुनि जे बऊत जीवत लहत ते दुख तौंन। बकउवाच॥सत वियोग संयोग अस तनसों सु दुखको भौन॥ पुत्र दारा मित्रको दीर्घायु देखत नाश। लखत परकी नाश यातें दुःख को अतिराश॥ लहत अबिभव परनते धनहीन व्है कै जौंन। संयोग और वियोग देखत बऊत जीवत

तैान॥सृष्टिकी उतपत्य क्षय चिरजीव लखत महान। कौन याते अधिक दुख है सुनऊ हे मघवान॥ करत क्लेश कुलीन हतकुल रहत सुखसो जैान । आत्य देत दरिद्रकों दुख महादुख है तैान ॥ इन्द्रउवाच॥ * ॥ कैान सुख चिरजीव देखत कहऊ सो तपधाम ॥ * ॥ बकउवाच ॥ * ॥ स्ववश सायं स्वग्रहमे सुख शाक सद्य ललाम ॥ देय अतिथिनकों करावत अन्न भोजन जैाँन । कवल प्रति गोदान शतको लहत है फल तैांन ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *****

करत युवासे पाप जो ताको करत बिनाश । भोजन देत जो बिप्रको सहित मान मतिराश ॥
भाजन करि के द्वार पैं जाके आचवत बिप्र॥ ताके प्रचालन करत सकल पापकों चिप्र॥
ऐसी सुनि बकसों कथा बऊबिधिकी त्रिदिवेश। बिदा हाेय बकसों गए सानँद अपने देश॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन करिनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि बकइन्द्रसंवादवर्णनोनाम पञ्चचत्वारिंशदध्यायः ॥ *******

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

धर्मनृप फिरि महामुनिसों कहे ऐसे बैंन। भऐ नृप बरभाज तिनको कहऊ पूरित बैंन ॥ सत्य ऋषिको पूजि राज उसीनर हे जात। चले शिविनृप करण पूजन ऋषिन्हको अवदात ॥ मिले पथमे करि परस्पर दोऊ शिष्टाचार । तजत पथ न समान तासो दोऊ दुऊन उदार ॥ तहां नारद देखि आए कहे ऐसे बैन। खडे का तुम दोऊ कोऊ तजत काऊ न ऐन ॥ भूपउवाच ॥ धर्म बेत्त न कहो ऐसे पूर्ब सम्मत बाग। श्रेष्ठ वृद्ध समर्थ नारीको करो पयत्याग॥ नारदउवाच॥ देत है पथ साधुजनहि देत क्रूर न भूपासमुझि कोजे साधु हो तुम दोउ ज्ञान स्वरूप॥रहे चुप व्है महामुनि यह बचन कहि अभिराम। गए शिबिकों करि प्रदचिण सुनि उसीनर धाम॥ मार्कण्डेयउवाच ॥नऊष पुत्र ययातिको अब चरित सुनिए भूप। दान मागन एक आयो बिप्र तापसरूप॥ सहित बत्सन्ह दई नृपति ययाति कोटिन्ह गाय । गयो होय प्रसन्न ब्राह्मण दचिणा बऊ पाय॥ भूप भर तादिकन्हको बऊ पुण्य पूर चरित्र । महामुनि नृपधर्मसो सब कहे करब पबित्र ॥ धर्मधुर जे भऐ भूपति पूर्ब सुत बृतान्त । कहे तिनके चरित हम नृप पुण्यपूर नितान्त ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच॥ * ॥धर्मनृप फिरि प्रश्न कीन्हो मार्कण्डेपाश। धर्मभय इतिहास सुनिवे चहत अति मति राश॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सुनो चाहत पतिब्रतरत जैान स्त्रीको धर्म । कहऊ हमसों महामुनि सो सहित बिस्तर पर्म ॥ प्रत्यच देखे परत है ए देवता अतिऊर्ध्य । बायु भू आकाश पावक सलिल शशि अरु सूर्य्य॥ बिदित तुमको महामुनि ए सप्त दैवत पर्म । मान्य ऐ प्रतिदिन सुस्त्री एक पतिब्रत धर्म ॥पतिशुश्रूषण पतीब्रतन्हको महादुष्कर कर्म । महात्म्य सो पति ब्रतन्हको कहिऐ महामुनि पर्म॥रोकि इन्द्रीग्रामकों करिरहमन बलवान।करै चिन्तन स्वपतिको

हियमांह देव समान ॥ पितामाताकी शुश्रूषा महत सुतको धर्म । पतिव्रतहै धर्म नारिनको महा अतिपर्म ॥ कुक्षिमे दशमास नारी गर्भकों धरि धीर । कालपाएँ प्रसवकों करि व्यथा सहहिँ गम्भीर ॥ पितामाताकों शुश्रूषण पतिव्रत फल जौन । महामुनि भृगुवंश भूषण कहहु हमसों तौन ॥
॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥ कहतहैं हम सुनहु भूपति प्रश्नकीन्हो जौन । प्रजावध न करै नारी कर्म दुष्कर तौन ॥ यंत्र मंत्र सु देवबन्दन करि तितिक्षा कर्म । करत मातापिता रक्षण पुत्रको अतिपर्म ॥ कष्टसहि बहु भाँति पालत पुत्र जननी तात । भाग्य चिन्तन करत ताको भरत पोषण गात ॥ करत माता पितहि तोषित धर्मधुर सुत जौन । लेत सो दुहुलोकमे सुख सुयश अविचल तौन ॥ पित्र पोषण पुत्रको तियको पतिव्रत धर्म । यज्ञ दानादिक न इनके सदृश कोउ कर्म ॥ तौन तुमसों कहतहै हम सुनहु सहित बिधान । पतिव्रत अरु पित्रपोषन जन्य फल सुखदान ॥ नाम कौशिक विप्र बनमे करत वेदाध्ययन । बैठके तरुमूलके ढिग धारि ध्यान सचैन ॥ वृक्ष ऊपर रहि बलाका क्षपी पत्र मझारि । दियो कौशिक शीशपर तेहि बीट अपनो डारि ॥ विप्र कौशिक लखो ताकों क्रोधसों चखछाय । भस्महैके सो बलाका गिरी क्षितिपर आय ॥ देखि ताकों शोच करि मुनि रहे दोष बिचारि । जानि तपबल आपनो कछु गर्व मनमे धारि ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ गए भिक्षा हेतु कौशिक ग्रामको चलि भूप । लगे भिक्षालेन घर घर जानिकै शुचि रूप ॥ लेत भिक्षा गए चलि जहँ रहीं पतिव्रत बाम । देहि भिक्षा बोलि ठाढे भए बाहेर धाम ॥ गेहिनी तेहि कहो तबलों रहो ठाढे विप्र । धोय भाजन देतिहै हम तुम्हैं भिक्षा क्षिप्र ॥ एहि बीच आयो क्षुधा पीडित तासु पति अतिमान । देखि पतिहि क्षुधार्त भूलि सो गई भिक्षा दान ॥ धोइ पद आचमन पतिको दियो आसन पर्म । दियो भोजन मधुर व्यञ्जन रचित दायक शर्म ॥ कियो पति उच्छिष्ट भोजन आपु अति सुखदान । चित्त बृत्यनुसरति पतिकों जानि देव समान ॥ कर्म मनसा बचनतें पतिमाह सो अनुरक्त । पति शुश्रूषण करति सो सबभावसों अतिभक्त ॥ देवतातिथि सासु ससुरहि करति तोषित तौन । किए नियमित रहति इन्द्रिनको महामतिभौन ॥ सकल बिधि करि स्वपति सेवन स्मरण कीन्हो विप्र । रहो द्विजवर तहाँ आई लए भिक्षा क्षिप्र ॥
॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ मोहि ठाढे होउ कहि तुम कियो बिलम्ब महान । कियो अति अपराध आई देनकों अब दान ॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥ क्रोधसों सन्तप्त ब्राह्मण भयो अग्नि समान । देखिकै तेहि शान्ति पूरित कहे बचन प्रमान ॥ * ॥ स्त्र्युवाच ॥ * ॥ क्षान्ति कीजै विप्र आयो क्षुधित मम भर्त्तार । देन भोजन लगी दैवत स्वपति मोहि उदार ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ द्विज न गुरु पति आपनो तुम कियो महत महान । करतहौं गृहकर्म करिकै विप्रको अपमान ॥ डरत ब्राह्मणकों सुराधिप कहा मानव मर्म । सुनो बृद्धनसों न कीन्हो गर्वतै यह कर्म ॥ करै पृथिवी

भस्म ब्राह्मण लहि अमान विरोध ॥ स्त्र्युवाच ॥ नहि बलाका विप्रहैं हम क्षमा कीजे क्रोध ॥ क्रोधकी यह दृष्टि तव मम करैगो न विरोध । विप्र देव समान मेरे नियतहै यह बोध ॥ क्षमा कीजै क्रोध मोपै करउ नहि तपधाम । विप्रको हम क्रोध जानति भाग्य अति अभिराम ॥ कियो सिन्धु अपेय जल करिकै महामुनि क्रोध । बातापि असुर पचाय दीन्हो उदरमे करि रोध ॥सुनो बहुत प्रभाव हम द्विजबरणको अतिराम । क्रोध विप्रन्हको क्षणिक द्विज होत करुणाधाम ॥ पति शुश्रूषण धर्म मोको रुचत विप्र उदार । देवतनतैं अधिक दैवत गननिहों भर्त्तार ॥ पति सुश्रूषाको लखउ फल प्रगट मोमे जौन । दहो बनमे तुम बलाका बिदित हमकौं तौन ॥ मनुज कैहै देह बासी क्रोध शत्रु महान । क्रोध मोह बिहीन ब्राह्मण होत देव समान ॥ सत्य बोलत गुरुन्ह तोषत हनत नहि सो ताहि। शुचि जितेन्द्री धर्म पर निति पढत श्रुति अवगाहि॥ लोक जानै सदृश आत्मा काम क्रोधहि जीति । करै यज्ञ कराय जानैं देय दान सप्रीति ॥ पढै आपु पढाय जानै बेद बिद्या मर्म । लहत ब्राह्मण ताहि बिबुध बिचारि नियमित धर्म ॥ *❦*❦*❦*

॥ *॥ दोहा ॥

बोलै सत्य असत्य नहि दम आर्य्यव गुण युक्त। स्वाध्यायी द्विजबरणको बेद बिहित गुण उक्त ॥
धर्म देखि बहु विधि परत कहत धर्मविद जौन । बसत नियमित सत्यमे है धर्म कह्रियत तौन ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

धर्म माह प्रमाण है श्रुति कहत बृद्ध सुजान । सूक्ष्म बहुधा परत है लखि धर्म हे भगवान ॥ धर्मको तत्वार्थ तुमको बिदित हौं सब विप्र । धर्म व्याधहि बूझि ए करि गमन मिथिला क्षिप्र ॥ पिता माता भक्त सो है व्याध सुमति महान। करै सो उपदेश तुमको तौन तत्वज्ञान ॥यथा इच्छा जाऊ तापै भद्र लहि हो क्षिप्र । कहो हम कछु जौन तुमको क्षमा कीजे बिप्र ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ भए बहुत प्रसन्न हम गतक्रोध तव कल्यान । लहो हम तव बचन ते शुभ मोक्ष करता ज्ञान ॥ होय तव कल्यान मैथिल नगरको हम जात । बसत है जहँ धर्म नामक व्याध गुण अवदात॥होय कौशिक बिदा तातें गए अपने धाम । करत निन्दा आपनी मन किए बिस्मित माम ॥ ❦❦ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणिपतिव्रतोपाख्यानवर्णनोनाम षष्ठचत्वारिंशदध्यायः ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

कौशिक श्रद्धावान ह्वै धर्म प्राप्तिको भूप । चले सुमैथिल नगरको जनपद लखत अनूप ॥
मैथिल पुर कौशिक गऐ जनक सुरक्षित तौन । चारो बर्ण स्वधर्म रत अपनो अपनो जौन ॥
राजभौन सम भौन सब यथा रचित अति रूप । गो पुर सौध प्रकार बर बीथी परम अनूप॥

चतुरङ्गिणि सेना सहित यज्ञोत्सव सह धाम। कौशिक देखो नगर जन भरो मोद अभिराम ॥
कौशिक बूझो द्विजनसों धर्म व्याध को स्थान। तिन बताय दीन्हे लखो जाय व्याध मतिमान ॥
व्याध करत पशु बध जहां तहँ लखि कौशिक ताहि। खडे भए एकान्तमे विप्र घृणा अवगाहि ॥
जानि व्याध सहसा उठो आयो कौशिक विप्र। रहे खडे एकान्तमे गयो तहा चलि विप्र ॥

॥ * ॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

विप्र तुम्हे बन्दन करत भो आगम तव धर्म। तव किंकर हम व्याध सो कहहु करै सो कम ॥
पतिब्रते तुमसों कहो जावे मिथिलां जौन। आए तुम जेहि हेतु इत हम जानत है तौन ॥
व्याध वचन सुनतै भए कौशिक बिस्मयमान। पतिब्रता सम व्याधको जानि त्रिकालज्ञान ॥
ठाढेह्वै योग्य नहिँ तुम्हे ठौर यह विप्र। ताते मेरे धामकों रुचै तौ चलिये छिप्र ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

कहि तथास्तु आगें भए चले व्याधके धाम। कौशिक लखि बिस्मय भरे तास ज्ञान अभिराम ॥
व्याध गयो ले विप्रको धाम आपने धर्म। पाद्यासन आचमन तहँ सविधि दियो सहशर्म ॥
पूजित व्हे सुखसों तहाँ बैठि विप्र मतिधाम। कहो व्याधसों कर्म यह नहि तो सम अभिराम ॥
खेद होत मनमे महा लखि तव कर्म अधर्म। व्याधउवाच। विप्र कुलोचित धर्म यह पारंपरिक स्वधर्म ॥
विहित विधाता कर्म जो सो पालत मतिमान। सेवन माता पिताको करत सजन सविधान ॥
सत्य कहत अनसूयव्है देत स्वशक्ति प्रमान। देवातिथि अवशिष्ट सो भोजन करत सुजान ॥
हम न करत कछु कर्म नहि निन्दत जो बलवान। करहि लागत पूर्व कृत कर्म सुखद दुखदान ॥
करत स्ववर्ण समान जन कर्म जीविका हेत। यथायोग्य पालन करत तिनको भूप सनेत ॥
योजित करत स्वकर्म मे तजै जो अपनो धर्म। प्रजा डरैं नृपकों सदा नीति निपुण जे धर्म ॥
देत दण्ड नृपजनक जौं सुत दुर्वृत्त लखाय। धर्मशील सुख लहैं जौ अधरमशील डराय ॥
चारचक्षु सब धर्म रत प्रजा बिलोकत भूप। राज्य दण्ड स्त्री लखत हैं चचिन्हको अनुरूप ॥
चाहत जनक स्वधर्मतें बर्धित श्री अतिमान। त्राता चारो वर्णको है भूपति सुखदान ॥
परतें हनित बराह मृग महिष मांस क्रय कर्त। बेंचि ताहि अपनो कुटुम्ब स्वधरम सो सब भर्त ॥
मांस न भक्षण करतहैं ऋतुगामी तियपास। सदा नक्त भोजन करत दिनभरि धरे उपास ॥
नृपकों होत अधर्म रत होत प्रजासब चीन। कुब्ज अन्ध पंगुल बधिर जन्मत षट अरि पीन ॥
जनक नृपति यातें लखत सिगरी प्रजा सधर्म। धरे अनुग्रह प्रजन्ह पर करत धर्मरत कर्म ॥
करत प्रसंशत हमै जन निन्दत हमको जौन। करत साधु ताते तिन्है हम तोषित मतिभौन ॥
जे जन रहत स्वधर्मते पालत तिनकों भूप। सन्तत बितरत अंश सब धर्म तितीक्षा रूप ॥
यथा योग्य पूजन करत भूत साचकों सर्व। नहो त्यागतैं अन्यगुण जनगणमाहँ अखर्व ॥

व°प° करत अयाचित परम प्रिय कहत न मिथ्या बैन । काम क्रोध बश द्वेषते धर्म त्यागकर है न॥
प्रियतें करत न हर्ष अति अप्रियतें न उताप। कष्टभरे नहि धर्मको कोऊ करत अयाप ॥
पापी प्रति जो पापव्है सो नहि पाप सुजान । नास्तिधर्म कहि साधुकों हँसत जो भरो अयान ॥
नास्तिक पावत नाशको जोहै दूषक धर्म । साधु भूलि पातक करत नष्ट होत सो कर्म ॥
पापी पुष्ट असारहै चर्मपात्र सम तैान । आत्म प्रसंशनसों सुनऊ सो तहँ मूर्ख न जैान ॥
धन बिन शोभित होतहै शील सहित गुणवान । यथा बाल शशिको करत बन्दन साधु सुजान ॥
औरनको निन्दाकरै कछू एक गुण पाय । किंशुक सुमन सुकाश सम जाय प्रकाश नशाय ॥
शोचै भ्रमवश पापकरि फिरि न करौं यहकर्म । जाय छूटि सो पापतें करै शोचसो शर्म ॥
जप तप तीरथ गमनते होय पापसो नष्ट। पाप नाशकर कहतिहैं यह स्रुति अथविस्पष्ट ॥
करै पाप अज्ञानवश नरवध धार्मिक जैान । धर्म कर्मतें लहतहै नाश कलुष कृत तैान ॥
पाप करै करिके न हम कियो जो मानत मूढ । हनत ताहिं ते देवता रहत जे अन्तर गूढ ॥
प्रथम पाप करि फिरि चहै करिबे मोक्ष उपाय । छुटै पापते भानु ज्यौ घन घनते कढिजाय ॥
लोभ पापको मूल नर होत लोभबश जैान । पाप अनेकनभाँतिके करत बिप्र सुनु तैान ॥
धर्म समान अधर्म तृण जैान दम्भको रूप । दम्भी मूरे रहतहैं पापकर्मको कूप ॥
दम्भिनते अरु साधुते जानि न परत बिशेष । शिष्टाचार बिहीनते धरें कपटको वेष ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

धर्मव्याधसों फिरि कियो कौशिक प्रश्न उदार । कहऊ हमै जानो परै जैसे शिष्टाचार ॥
यज्ञ दान तप बेदको जो अध्ययन उदार। एहै पाँच प्रकारके नियमित शिष्टाचार ॥
काम क्रोध अरु दम्भको जीतै लोभ महान । नित्य धर्म ऋजुता सहित शिष्टाचार सुजान ॥
गुरु सुश्रूषणको करै कहै सत्य तजि क्रोध । है यह शिष्टाचारको लक्षण रहित बिरोध ॥
सत्य बेदको सारहै सत्य सार दम जैान। त्याग सार दमको कहत शिष्टाचार सु तैान ॥
करत असूया धर्मको भरे मोह मति जैान । चलत कुपथमें होतहैं पीड़ित हे द्विज तैान ॥
शिष्ट निरत श्रुति त्यागमें सत्य धर्म रत जैान। एहि सह शिष्टाचार जन लहत परमहै तैान ॥
नास्ति कहत मर्याद जे क्रूर पाप मतिमन्द । तिन्है त्याग जे करतहै पाय ज्ञान सम चन्द ॥
काम लोभ मद ग्राह मय पञ्चेंद्री जल पूर । जन्म नदी तरि जात ते करि धृति नौका सूर ॥
कर्म नाश है ज्ञानको धर्म बुद्धि सम राग । शिष्टाचारी साधुपट शुक्ल सदृश बड भाग ॥
सत्य अहिंसा जगतमे सर्व भूत हित तान । परम अहिंसा धर्मको सदा सत्यमे भैान॥
सत्य माहँ धरि बृत्तिको करै प्रवृति जो शान्त । गुरु है शिष्टाचारमे हे द्विज सत्य नितान्त ॥
लक्षण है द्विज साधुको प्रथम धर्म आचार । यथा प्रकृति जो जन्तु है तास प्रकृति सो सार ॥

काम क्रोध मोहादि बहु पावत दोष अपान। न्याययुक्त है कर्म जो सो सत धर्म महान ॥
क्रोध असूया दम्भ मद मत्सर रहित सुजान। ऋजु समदर्शी लहत हैं शिष्टाचार महान ॥
बेदविहित शुचि सुद्धमति गुरु शुश्रूषण जौन। वृद्ध दान्तसों लहत हैं शिष्टाचार सु तौन॥
शिष्टाचारी महत ते लहत स्वर्गको बास। सत्कृत ते नर धर्मधुर करत पापको नाश॥
बेदधर्म शास्त्रोक्त जो परमधर्म है तौन। शिष्टाचार सु शिष्टको त्रिविधि धर्म मतिभौन॥
क्षमा सत्य ऋजुता दया सताचार युत जौन। दयावान सब भूतमें अहिंसक मतिभौन॥
परुष बचन बोलत नहीं सन्तत द्विज प्रिय इष्ट। पाक शुभा शुभ कर्मको जे जानत हैं शिष्ट॥
न्याययुक्त गुणयुक्त है सर्वभूत हित जौन। सन्त स्वर्ग जीतत चलै सदा सु सत्पथ तौन॥
दाननिष्ट सुख लोककों प्राप्त होत है विप्र। यथाशक्ति बसु देत हैं सन्त अतिथिको क्षिप्र॥
तीनि कहत सत परमपद बिनो क्रोधको दान। सबपर दया करत निति कहत सत्य सुखदान॥
सेवत शिष्टाचारको जौन विहितपथ उक्त। लहत सन्तज परमपद महामोदसों युक्त॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

धर्मव्याध फिरि विप्रसों ऐसे बोलो बैन। सदा करत हम कर्मसों घोर रूपको ऐन॥
पूर्वकर्म दुस्तर महा विधि कर्त्ता बलवान। कर्म पुराकृत पापको दोष न मिटत महान॥
बिप्र पुरातन कर्मको दोष न शकत नशाय। बिधि हत हम यातें भए घातक घोर प्रभाय॥
निमित्त भूत हम विप्र यह याते करि ए कर्म। या बशबिक्रय मांसको करत सनातन धर्म॥
होत विप्र यह मांसके भक्षणमें मति धर्म। देवातिथि अरु पितृको करिवो पूजन पर्म॥
पशु पक्षी मृग औषधी अन्नादिक अरु ऐन। भूत लोकमें सकल रस नियमित श्रुतिके बैन॥
आत्ममांसके दानतें शिबी उशीनर भूप। क्षमावान दुर्गम लहो स्वर्ग बास सुखरूप॥
रन्तिदेव भूपालको होय जहां जेवनार। द्वै हजार पशुको तहाँ नित बध होय उदार॥
अहंन्यहनि द्वैसहस गो बध करि सो भूपाल। अन्न सहित द्विजबरनको भोजन दियो विशाल॥
कीरति ताकी जगतमें अतुल भइ सब सोम। रन्तिदेव विधिवत हनत रहो जो गो पशु तोम॥
कहत मांसप्रिय अग्निको बेदविहित विधि पर्म। याते ब्राह्मण यज्ञमें पशुबध करत सधर्म॥
देव पितरको देय कै सदा मांस जे खात। मांसाशनके दोषको सो बिधि करत निपात॥
सत्य ज्ञानके मार्गको करि विचार अनुरूप। मनुज मांस भक्षण कियो नृप सौदास अनूप॥
बिप्र साध भयते करत हम यह स्वधरम कर्म। जानि पुरातन आपनी जाति बंशको धर्म॥
करै कर्म केहिभांति शुभकर्म हरै यह जौन। घोर कर्मको बहुत विधि है निर्णय मतिभौन॥
सत्य दान गुरु भक्तिमें द्विज पूजनमें नित्य। तजि अतिवाद अभिमान मम बसत धर्ममें चित्य॥

साधु कृषी करिबो कहत ताको सुनऊ विधान। हल बाहत भूमिस्थ बऊ मरत जीव मतिमान ॥
धान्य बृहीमे बीज जो जीव जानिये तौन । होत तुन्है भाषित कहऊ बिप्र मतिके भौन ॥
मारि खात जो पशुन्हकों सो सब जीव समान । वृक्ष औषधी फलन्हमे बसत जीव बऊमान ॥
करिबो जौन स्वकर्मको तौन नियत है धर्म । देहीकों नहिँ तजत है पूर्व कियो जो कर्म ॥
बसत उदकमे जीव बऊ सुनऊ बिप्र मतिभौन । जगत व्याप्त सबजीवसों प्राणी जीवन तौन ॥
मत्स्य मत्स्यको खात त्यों जीव जीवको सर्व । भक्षत प्राणी जीवको खर्व हि सदा अखर्व ॥
जीव जीवसों जियत है करि भक्षण बऊरूप । सूक्ष्मरूप जे धरापर बासी जीव अनूप ॥
मनुज तिन्हैं चलि चरणसों नित्य हनत बऊमान। सूते बैठे जीवकों ज्ञानी जन अज्ञान ॥
जीवनसों व्यापक लहो पृथ्वी अरु आकाश । तिन्है हनत बऊ भांतिसों पाए बिना प्रकाश ॥
करत न हिंसा हम कहत भूल भरे नर तौन । जीवन मारत जगतमे बऊबिधिके नर कौन ॥
धर्माधर्म बिचार बऊ को कहि पावै पार । जोरत रहत स्वधर्ममे ताको सुयश उदार ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयवाच ॥ * ॥

धर्माधर्म बिचारबिद धर्मव्याधसो भूप । फेरि लगे ऐसें कहन नियत धर्मको रूप ॥

॥ * ॥ धर्मव्याधउवाच ॥ * ॥

प्राणघात अरु व्याहमे मिथ्या कहत सुजान । सो मिथ्या सम सत्यके सो न अनृत समान ॥
जीवन्हको अत्यन्त हित सो है निश्चय धर्म । प्राप्त पुरुषको होत जो करत सुभाशुभ कर्म ॥
करत दैवनिन्दा मनुज पाए दुःख महान । दोष न अपने कर्मको जानत सो अज्ञान ॥
नीतिमानको होत है पौरुष व्यर्थ न विप्र । जौन कामना करत तेहि प्राप्त होत सो क्षिप्र ॥
पराधीन नहिँ होत जो पौरुषको फल तौन । दक्ष जितेन्द्री जगतमे बुद्धिमान नर जौन ॥
सर्व कर्मते हीन हैं निष्फल मानुष जौन । पूर्वजन्ममे जीवके हिंसाकारक तौन ॥
पूर्वजन्म कृत कर्म फल आधि व्याधिको रूप । धरि के बाधा करत है नानाभांति अनूप ॥
औषधी दै तिनको करत वारण बैद्य सुजान । या विधि नानाभांतिके औषध रोग महान ॥
पूर्वजन्मके कर्म सम जीव लहत कृत सिद्धि । जीव सनातन नित्य है बेद बचन यह ऋद्धि ॥
सबको देह अनित्य है जीवमात्रको जौन । देहान्तरको लेत है जीव देह तजि तौन ॥

॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥

कर्मबिदनको होत क्यों जीव श्रेष्ठ मतिमान । सो हम सुनिबे चहत है तुमसों सुनऊ सुजान ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

जीवनाशको लहत नहिँ भए देहको नाश । देहान्तरको लेत है जीव सुनऊ मतिराश ॥
जीव लहत कृतकर्मको करि देहान्तर बास । भोग करत कृतकर्म सो नही कर्मको नाश ॥

पुण्यशील ते होत है पुण्यशील नर जौंन। पापशील ते होत हैं जीव पापरत जौंन ॥

॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥

पाप पुण्यमद योनिमे लेत जन्म केहि भांति । जाय लहत केहिभांतिसों पाप पुण्यकी जाति ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

लहत पुण्यकृत पुण्यमय देवयोनि अभिराम । पाप पुण्य मिश्रित लहत मानुषयोनि सकाम ॥
लहत तामसी योनिकों तिर्य्यक तामसि जौंन । फेरि कर्मको करत हैं नूतन बहुविधि तौंन ॥
तिनतें फिरि सो पचत ज्यों रोगी सेय कुपथ्य । नित्य लहत सो दुःखकों सुखसो चहत अतथ्य ॥
व्है निवृत्त सो कर्मते जीव शुद्धता पाय । योग तपस्या करत लहि ज्ञानमार्ग सुखदाय ॥
बहुत कर्म करि जीव सो बहुलोकनको जात । बन्धन मुक्त न होत हैं तहँते लहत प्रपात ॥
छुटे बासना बन्धतें होय शुद्ध अवदात । लहत लोक सुकृती परम जहाँ न शोच प्रयात॥
प्राय करत ते पापको पापी लहत न अन्त । पुण्ययत्न तातें करहिं पापकर्म तजि सन्त ॥
कृतघ्न असूया छोडि जे सेवत पथ कल्यान। धर्म अर्थ अरु स्वर्ग सुख पावत तीन सुजान॥
प्रभुता पावत मनुज है विप्र धर्मफल तौंन । लहत तहां सन्तोषको पाय धर्मफल जौंन ॥
होत धर्मफल वश्य नहि ताको होत विराग । दोषवद्ध नहिँ होत सो लहत मोक्ष बडभाग ॥
सर्वकामकों लहत सो चहत जौंन सुखदान । इन्द्रिनको अवरोध करि समदमसों मतिमान ॥
ब्राह्मणपदकों होत है प्राप्त तौन मतिधीर । इन्द्रीनको जो करत है निग्रह बुद्धिगभीर ॥

॥ * ॥ कौशिकउवाच ॥ * ॥

इन्द्री जिनकौ कहत है तिनको निग्रह जौंन । कौन भाँतिसों होत है कहहु व्याध मतिभौन ॥
कैसे ताको लहत फल इन्द्रीनिग्रहजन्य । तुमसे सुनबे चहत हम कहहु तौन मतिधन्य ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

कौशिकके सुनि कै बचन धर्मव्याध नृपधर्म । यथा कहो तेहिविप्रसों बचन सुनहु अतिपर्म ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

अन्धकारवासी जो मन रूप ज्ञानके अर्थ ।इन्द्रिणके सो छिद्रतें निकशत सुनहु समर्थ॥
रूप ज्ञान लहि कै लहत काम क्रोध मद मोह । करत दम्भ धरि धर्म करि लोभादिकतें छोह ॥
लोभादिक बश करत है सो सब दाम्भिक कर्म । ताके फलकों लहत नहिँ शोचा मानत पर्म ॥
इनदोषनके त्यागकों करत जो पूर्व सुजान । सुख दुखमे सो भजत है साधुसङ्ग मतिमान ॥
साधुसङ्गतें धर्ममे फैलति ताकी बुद्धि । कौशिकउवाच । धर्मतत्व कहुव्याध जौ करै सुमतिकों शुद्धि॥
तुमसों वक्ता धर्मको है न जगतमे आन । दिव्य प्रभावसो व्याध हो तुम ऋषिराज समान ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

महाभाग ब्राह्मण सदा पितर अग्रभुज धर्म । करै सर्वथा तासप्रिय जो जगमाँह सुधर्म ॥
तुम्है जौंन प्रिय बिप्र है कहत तौन हम सर्व। ब्राह्मीबिद्या जौंन है भाषत सुमति अखर्व॥
है अलभ्य यह कर्मतें बिश्व कहत बुध जौंन । महद्भूतात्मक ब्रम्ह है तातें परतर कौन ॥
गगण बायु अप अग्नि भू महातत्व जग मूल । शब्द परस्पर रूप है गुण गन्धादिक तूल ॥
षष्टम इनसों कहत है मन चैतन्य स्वरूप। बुद्धि सतमी अहङ्कार है अष्टम सुनऊ अनूप॥
पञ्चन्द्री अरु आत्मा गुण सत्व रज तम जौंन। व्यक्त कछू अव्यक्त है यह सबह मतिभौंन॥
इन्द्रियार्थ ए सर्व हैं व्यक्ता व्यक्त स्वरुप । चौबिश व्यक्ताव्यक्त ए गुण मैं कहौ अनूप ॥
तुम बूझो हम कहो सो कौशिक मुनि मतिमान। अब आगे सुनिवे चहत जो सो कहऊ सुजान॥

॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥

धर्मव्याधके सुनि वचन ऐसे सुमुनि अनूप। फेरि व्याधसों प्रीति करि कियो प्रश्न सुनु भूप ॥

॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥

महाभूत तुम पञ्च जे कहे सुनऊ बिदधर्म। एक एकके गुण कहऊ भिन्न भिन्न करि पर्म॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

भूमि आप पावक अनल पञ्चम जो आकाश। सकल गुणो इनके कहत गुण सुनिये मतिराश॥
बसत भूमिमे पांच गुण उदकमांह गुण चारि । तीनि तेजमे वायु नभमे गुण तीनि निचारि॥
रूप शब्द रस गन्ध है स्पर्श भूमिगुण पांच। गन्ध बिना गुण सलिलभे बसत चारि ए सांच ॥
स्पर्श शब्द अरु रूप है पावकमे गुण तीनि। स्पर्श शब्द गुण बायुमे शब्द गगणमे पीनि ।
ऐसे ए गुण भूतके बसत देहमे सङ्ग। इन्हैं तजत है जीव तब होत देहको भङ्ग ॥
देहान्तरको लेत है तव देही लहि काल। एहि अनुक्रमसों लहत असु जीवन मरण बिशाल ॥
तहां तहां रेतादि रस भौतिक धातू सभूह। देखि परत सबभूत ए गुणिगण कीन्हे ऊह॥
इन्द्रिनसों जो करत है कर्म व्यक्त है तौन। लिङ्ग कहत अव्यक्तको विषय प्रकाशक जौंन॥
आत्मा जानै लोकमय आत्मामे सब लोक । अन्य भावते रहित व्है भूत लखै मति ओक ॥
लखत ब्रह्मभव भूतको सदा ब्रह्ममे जौंन। पाप पुण्यके कर्मसों लिप्त होत नहि तौन ॥
होति अबिद्या क्लेशको मूल कहत मतिभौन। यातें बिद्या बश्य करि ज्ञानपन्थमे मौन॥
अनादि निधन अव्यय अमित आत्मयोनि भगवांन। अनुपम जीव अमूर्तिसों कहतसकल मतिमान॥
तप मूलक यह सर्व है द्विज पूछत तुम जौंन। इन्द्रिनके जीतें बिना व्यर्थ होत तप तौन ॥
स्वर्ग नर्कके गमनको कारण इन्द्री सर्व। इन्द्रिनको जय योगको है विधि बिहित अखर्व॥
षटइन्द्रिन्हकों जीति के करै जो योग समर्थ। युक्त होत ताको नहीं जो कृत पाप अनर्थ॥

रथ शरीर इन्द्री तुरग बुद्धि सूत धृतिमान। सावधान व्है सुपथमें चलै सुखीहित जान॥
इन्द्रिन्हके आधीन मन जास होय युतभाव। तास बुद्धि हरि लेय जौ सिन्धुलहरि परि नाव॥
इन्द्रिनके वश करत है कर्म शुभाशुभ जौंन। लिङ्ग देह ताको ग्रहण करत सो अव्यय तौंन॥
शब्दादिक इन्द्रीनको जीव तपत ज्यौं धारि। लोकमयी आत्मामय त्यौं लोकही निरधारि॥
रहित परापर ज्ञान सब देखै भूत स्वरूप। ब्रह्म भूत संयोगसो आनद सुखद अनूप॥
जौंन परापर ज्ञान है क्लेश मूल है तौन। लहत परापर ज्ञान नहिँ भूत ज्ञानरत जौंन॥
ज्ञानमार्ग चलि परमपद को योगी चलि जात। अनादिनिधन जो जीव सो अव्यय अतनु सुख्यात॥
तपो मूल यह सर्व है सुनि तुम बूझो जौन। इन्द्री निग्रहतें न तप व्यर्थ होत है तौन॥
इन्द्रिनहीसो होत है स्वर्ग नर्कको बास। स्ववश अवश इन्द्री करै पुण्य सुपाप प्रकास॥
इन्द्रिनके वश किए बिन बाढत दोष अखर्व। इन्द्रिनको वश किएते सिद्धि लहत जन सर्व॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

कौशिक मुनिके व्याधसों ऐसे धर्म विचार। धर्मव्याधसों प्रश्न फिरि कीन्हो सुमति उदार॥

॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सत रज तमगुणको गुण जौंन। कहहु व्याध हमसों सब तौंन॥ व्याधउवाच॥ कियो प्रश्न जो विप्र सुजान। कहत तौंन हम सुनहु प्रमान॥ मोहात्मक है तमगुण जौंन। तास प्रवर्तक रज मतिभौंन॥ सतगुण महताकाश स्वरूप। क्रोध रहित मतिमान अनूप॥ दान्त धीर धुर शान्त उदार। रुचत न रज तमको व्यवहार॥ तमगुणव्याप्त पुरुष है जौंन। निद्राशील अचेतन तौन॥ दुष्टेंद्री आलसमय तब्ध। भरो क्रोध क्षतकुत्सित लब्ध॥ कहै प्रवृत्तवाक्य सह गर्व। मानी मत्सर मन्द अखर्व॥ राजस भरे पुरुष है जौंन। है पद दूषण दर्शी तौंन॥ कहे त्रिगुणके गुण गणरूप। कहा सुनो अब चहत अनूप॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच॥ * ॥ पार्थिवधातु पाय गभ्भीर। भयो अग्नि केहिभाँति शरीर॥ तामे अनिल पाय अवकाश। कौनभाँति प्रसरत मतिराश॥ मार्कण्डेयउवाच॥ ऐसे प्रश्न कियो द्विज पर्म्म। फेरि व्याधसों सुनु नृपधर्म॥ सुनि कै व्याध विप्रके बैन। ऐसो कहन लगो मतिऐन॥ व्याधउवाच॥ मूर्धामे करि पावक वास। पालै देह सुनो मतिराश॥ प्राणहि मूर्द्धा अग्नि मझार। बसि कै चेष्टा करै उदार॥ भूत भविष्य सहित व्रतमान। बसत प्राणमे सुनहु सुजान॥ ब्राह्मणयोनि सो रूप बिराढ। श्रेष्ठा प्राण भूतात्म निराढ॥ सोइ अहङ्कार अरु बुद्धि। विषय सोई भूतात्मा शुद्धि॥ भीतर बाहेर पालत प्रान। देहेन्द्रिनको दीप समान॥ बस्ति नाभि गुदमे पवमान। बसत समान अपान सुजान॥ बसत कण्ठमे वायु उदान। गमनागमन करत सुखदान॥ फिरत अस्थिसन्धिनमे जौंन। व्यान वायु बुध भाषत तौंन॥ अग्नि धातुगत जौन समीर। सो समान

भाखत मतिधीर ॥ षटवायुन्हको मेलन जौन । तातेँ उष्मा उपजति तौन ॥ सो जठराग्नि होय रुम्हन्न। जो पाचन करत है अन्न ॥ समान वायुके मधि आय। प्राण अपान बसत जब जाय ॥ सत्य धातु लै देहाधार । बाल्य जरालों करै उदार ॥ बातज पावक अन्न पचाय। मिलि अपानसों देय गिराय ॥ अग्नि वेगवह बायु जो प्राण। गुदप्रवेश करि ताड़ि अपान॥ कंदुकलों फिरि उछरत तौन । पुनः करत पावककौ गौन ॥ पक्वास नाभी अध जौन । ऊरध रहत आमासय तौन ॥ नाभिमध्य प्राणादिक पौन। पांचौ किएँ रहत हैं भौन॥ नाडी तिर्य्यक उर्ध अध जौन। करै प्रवृत्ति किये दश तौन ॥ प्रेषे तनमे प्रेरित प्राण। लेय अन्नको रस सुखदान ॥ है योगिन्हको मारग तौन।एहि पंथ करै अनिस जे गौन॥ आत्मा मूर्द्धामांह गभीर। राखत हैं जो तेज सुधीर॥स्थूलदेह इन्द्रिनको भौन। तामे प्राण अग्नि है जौन ॥ नित्य आत्मा जानक आहि। योगी जीति करत बश ताहि ॥ स्थूल प्रकाशक पावक तौन । ता पावकमे कीन्हे भौन॥ रहत देव क्षेत्रज्ञ सुजान। सोइ प्रकाशक ज्योति समान ॥ है परमात्मा जीव सुजान। गुणी जीव निर्गुण है जौन ॥ सो परमात्मा आंनदभौन। बिम्ब भिन्न प्रतिबिम्ब समान ॥है परमात्माजीव समान। जीव सचेतन गुणमय जौन॥ करै सचेष्टित सबको तौन।ताते पर क्षेत्रज्ञ सुजान॥सात भुवन जो रचो महांन।भूतात्मा सबभूतन्ह माहँ ॥ किए प्रकाश यथा निशिनाह ॥ सूक्ष्मबुद्धि ते देखत तौन। ध्यान ज्ञानरत हैं जन जौन ॥ शुद्ध चित्त लहि कलुष बिहाय। आत्मामे स्थिति सुखमय पाय ॥ तजि सारूप्य चित्तकी तौन। सुखमय सोच लहत जन तौन ॥ चित्त प्रसन्नको लखन अनूप । यथा टप्न सों बत सुखरूप ॥ जो निर्वात दीप लहि भौन।करत प्रकाश यथा स्थिति भौन॥शुद्ध चित्त करि पुरुष अनूप। लखै आपुमे आत्मारूप ॥ चित्त होय जब आत्मा लीन । आत्मा दर्शन लहै प्रवीन ॥ लोभ क्रोधको करिबो नाश।सो तप मूल सुनो मतिराश॥तप रक्षण करिए हनि क्रोध। धर्म करिहिँ मत्सरको रोध॥बिद्या रक्षण करै सुजान । मानामान हिँ मानि समान ॥ तपके पार पाइबे हेतु । ज्ञान बिहित यह निर्भयसेतु॥ है अनृशंस होयबो धर्म । क्षमा परम बल जनको पर्म ॥ आत्मज्ञान सो निश्चय ज्ञान। सत्य परमव्रत सुनऊ सुजान॥ सत्य श्रेयको निर्भय धाम। सत्य भूत हित है अभिराम ॥ फल करि त्याग करै ऊतदान। सोई त्यागी कहत सुजान॥ भूतमात्रकी हिंसा हीन। चलै मैत्रसो मार्ग प्रबीन ॥ नहि दरिद्र कीन्हे सन्तोष । आशा तजै चपल तामोष ॥ ज्ञान अपन यह जानऊ पर्म। हे कौशिकमुनि सुनऊ सधर्म॥ सङ्ग छोडि कै यतब्रत होय। अचल लहै सुरपुरको सोय ॥ यथा वेद बिधि बिहित बिधान। बिप्र कहो हम सो सब ज्ञान ॥ अब हमसों का बूझत बिप्र। हम तुमसों सो कहि है छिप्र॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ धर्मव्याधसों यों सुनि धर्म। बोलो बिप्र प्रीति लहि पर्म॥ कहे न्याययुत तुम सब बैन। अबिदित व्याध तुम्है कछु है न॥ * ॥ व्याधउवाच॥ * ॥ धर्म प्रगट है मेरो जौन। सो तुम लखत बिप्र मतिभौन॥ जातें सिद्धि लहो हम बिप्र। लखऊ चलऊ

मम गृहमें छिप्र ॥ माता पिता हमारे जौन । तिनको लखऊ विप्र मतिभौन ॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥ यह सुनि विप्र गए ता धाम । देवालय सम लखो ललाम ॥ शयनासन सम्पन्न अनूप । परम विचित्र सुगन्ध स्वरूप ॥ जननी जनक धरें शुचिबास । दिव्यासन बैठे सुखरास ॥ धर्म व्याधसों पूजित तौन । दिव्याहार तुष्ट सुखभौन॥धर्मव्याध तिनकों लखि जाय। प्रणित शीसतो परशे पाय ॥ उठु सुपुत्र ते बोले पर्म । रक्षण करो तुम्हे निति धर्म ॥ होऊ शतायु पुत्र ते शर्म । मिले ज्ञान गति सुमति सधर्म ॥ यामदग्नि तुम पुत्र समान। पितृभक्त अनुपम सुखदान॥ व्याध पितासो औसर पाय । मुनिको आगम दियो सुनाय ॥ कुशल विप्रसों बूझि सुजान । पूजन कियो वृद्ध सुखदान ॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥ पूजन कियो विप्र स्वीकार । तव लखि बोलो व्याध उदार ॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥ माता पिता सुदैव समान । मोकों सुनऊ विप्र भगवान ॥ माता पिता कहें जो बैन। सो करतव्य हमें मतिऐन॥ इन्द्र सहित सब सुरन्ह समान । माता पिता हमें भगवान ॥ परब्रह्म सम माता तात । हम पूजत सब विधि अवदात ॥ माता पिता अग्नि गुरु जौन। ए सबको गुरु हैं सुखभौन॥ इनको पूजन करिबो पर्म । है गृहस्थको नियमित धर्म ॥ दिव्य दृष्टिसों देखो तौन । कहो पतिव्रते तुमसों जौन ॥ ज्ञानलाभ हित मोपै विप्र । तेहि पठयो मिथिलाको छिप्र ॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ मोकों ज्ञानदृष्टिसों जोहि । तब तेहि पठयो मोपहँ तोहि ॥ सुनऊ विप्र यह मोसो बैन । तुमको जौन कहत हित ऐन ॥ माता पित हि छोडि तुम जान । वेदपढन आए मतिभौन ॥ यह तुम कीन्हो अनुचित धन्ध । भए शोकतें तबतें अन्ध ॥ तिन्है प्रसन्न करऊ तुम जाय। है यह धर्म तुम्है सुखदाय ॥ रुचत हमें यह सुनिए विप्र। तौन जाय यह करिए छिप्र ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ सत्य सधर्म कहत तुम जौन। सुमति व्याध हम करि हैं तौन॥माता पिता पास तुम जाय। सेवा करऊ धर्म समुदाय ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ धर्मव्याध हम तुमपहँ आय । पायो ज्ञान धर्म समुदाय ॥ हम तुमसों अति भए प्रसंन्न । रहो भद्र तुमको सम्पन्न ॥ शूद्रयोनिमे ऐसो ज्ञान । होत नहीं सो कहऊ सुजान ॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥ रहे पूर्व हम ब्राह्मण पर्म । सांगवेद सब पढे सधर्म ॥ धनुर्वेद पारायण भूप । रहो हमारो सखा अनूप ॥ भए धनुर्द्धर हम ता पास । मृगयाकों नृप गो बलरास ॥ हम ह्व गए भूपके सङ्ग । हने तहाँ मृगगण बहुरङ्ग ॥ ऋषि आश्रम ढिग करि सन्धान । छोडो एक घोर हम बान ॥ ऋषिकों लगो बाण चलि तौन। हाहा करि बोलो तपभौन ॥ हम मृग जानि गए तहँ छिप्र । लखो भूमिगत घाएल विप्र ॥ भए दुखित अति जानि अकार्य्य। भरे भीति हम बोले आर्य्य ॥ हमसों यह अपराध अजान । भयो छमा कीजे भगवान ॥ तव करि क्रोध दियो ऋषि शाप । व्याधयोनि लहि हो कृतपाप ॥ तब हम त्राहि त्राहि ऋषि पास । कहि प्रसंन्न कीन्हो तपरास ॥ * ॥ ऋषिरुवाच ॥ * ॥ मिथ्या होत न शाप हमार । सुनऊ कहत हम

श्रापोद्धार ॥ शूद्रयोनि लहि हौ बस कर्म । व्याध होय हौ ज्ञाता धर्म ॥ माता पिता सुश्रूषा जान । तुम सब भांति करऊ गे तान ॥ पितृभक्तते सहित समृद्धि । तुमको प्राप्त होय गो सिद्धि ॥ जाति स्मर्ण होऊ गे पर्म ।फेरि स्वर्ग लहि हौ सह धर्म ॥विप्रज्योति लहिहौ अति पर्म ।पाय श्रापको अन्त सशर्म ॥ हम ऋषितनतें काढो बान । जियो सो ऋषि नहि छोडो प्रान ॥ मुनि हमसों तुम पूछो जौन । सबृतान्त कहो हम तौन ॥ है सन्तोष मोदको मूल । असन्तोषमे दुःख अमूल ॥ *❁*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पितृसुश्रूषा करणकों कौशिक करि स्वीकार । भरे मोद लहि ज्ञान घन चलिवे कहो उदार ॥
व्याध प्रदक्षिण विप्रकों करि सह विनय ललाम ।भरो मोद कीन्हो बिदा गे कौशिक निजधाम॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जाय अपने धाम कौशिक मुनि आनद भरे । पितृभक्ति अभिराम यथा न्याय लागे करण ॥
हमसों तुम नृप धर्म जो बूझो हम सो कहो । धर्मकथा अति पर्म शर्मद पुण्य पियूषमय ॥
कौशिक मुनिसों जौन पतिव्रता सम्वाद सह । धर्मव्याध मतिभौन पितृसुश्रूषण जो कहो ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

सो सब सहित विधान हम सुनि कै मुनि आपुसों । पायो मोद महान पर्म धर्ममय कथा यह ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि पतिव्रतोपाख्याने कौशिकधर्मव्याधसंवादबर्णनोनाम सप्तचत्वारिंशदध्यायः ॥ ❁*❁*❁**

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कार्त्तिकेयको जन्म अब तौन सुनऊ नृपधर्म । अग्निपुत्र अद्भुत भयो यथा तेजमय पर्म ॥
भार्य्यनते ब्रह्मर्षिको भो ब्रह्मण्य सुजान । देव असुर दोउ परस्पर लरे महाबलवान ॥
देवन्हकों जीतत असुर सदा युद्धमे भूप । बध्यमान लखि स्वबल भे इन्द्र सचिंत्य स्वरूप ॥
सेनापतिके अर्थ कै तब चिन्तित मघवान । मानष गिरिपैं जाय सो चिन्तो अर्थ महान ॥
स्त्रीको आरत शब्द तहँ सुनो उच्च मघवान । बीर पुरुष कोउ आय कै करै हमारो त्रान ॥
मोहि देय पति होय कै आपुहिं मो भर्त्तार । आय सुनत यह शक्र तेहि करसो गहि उदार ॥
कहो शक्र अब डरो मति भीरु तोहि भय है न । केशी नामक दनुज तहँ इन्द्र लखो बलत्र्यैन ॥

॥ * ॥ केश्युवाच ॥ * ॥

सऊ इन्द्र ताकों चहत बरिवें हम बलवान । जाऊ अपने धामकों राखि आपनो प्रान ॥
कहि यह केशी शक्रपर घालो गदा प्रचण्ड । इन्द्र बज्रसो मारि सों काटि करो द्वै खण्ड ॥
शैलशृङ्ग फिरि इन्द्र पै केशी दीन्हो डारि । तापै दीन्हो डारि सो शक्र बज्रसो मारि ॥

तजि कन्या सो भै भयो केशी भजो अचैन । ता कन्यासों इन्द्र तब बूजन लागे बैन ॥
कहो कौनकी कौन तुम कहाकरति इत काम।कन्योवाच।सुता प्रजापतिकी सुनज देवसेना नाम॥
केशी भगिनी हरी मम दनुसेना हो जौन । पितु नियोगतें हम दोज इत बिहरैं करि गौन ॥
नित्य हरण चाहै हमै केशी दुष्ट अमान । दनुज दैत्यसेनहि बरी इच्छासों मघवान ॥
मोहि बचाइ प्रभु तुम करिकै युद्ध उदार । शक्रदत्त तुमतें चहति हौं दुर्जय भर्त्तार ॥

॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥

भिमाति स्वसा दाक्षायणी मम तनया तुम तास । ताते तुम अपनो कहो बल जेतनो तव पास ॥

॥ * ॥ कन्योवाच ॥ * ॥

हौं अबला हौं अमरपति पति मेरो बलवान । सुर बन्दित भो बिष्णुकूँ पितादत्त बरदान ॥

॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥

तवपतिको बल होयगो कैसो कहहु उदार।कन्योवाच।सहित सुरासुर नाग नर त्रिभुवनके जेतार ॥
तुम्हे सहित सब भूलपै चलिहै जास निदेश । यह ताके सुनिके बचन दुःखित भए सुरेश॥
या देवीके पति नहीं यथा चहति बलवान । उदित भानुमे मिलो शशि तब देखो मघवान ॥
आमा प्रवृत भई लखो रुद्र मूहूरत नाम । होत उदै गिरिपै लखो देवासुर संग्राम ॥
हव्य सु भृगु अङ्गिरज लहि बेद बिहित लहि बेश । देखो सुरपति भानुमे पावक करत प्रवेश ॥
पर्व चतुर्दशि तदा रबिमे कियो प्रवेश । सूर्य्य चन्द्र परवेश लखि भो चिन्तित अमरेश ॥
और लखे बहुभांतिके जहलो हैं उतपात । जानो आजु निशीथमे व्हैहै रण अतिघात ॥
सोम सूर्य्य अरु अग्निको सङ्गम भयो अनूप । होय सोमसुत होय सो याको पति अनुरूप ॥
अग्निपुत्र जो होय तो याको पति बलरास । सहित देवसेना गये यह बिचार बिधिपास॥
शक्र पितामहसों कहे ऐसे बचन ललाम । याहि देउ पति कृपाकरि सूर साधु बलधाम॥

॥ * ॥ ब्रह्मोवाच ॥ * ॥

तुम चिन्तित जैसो कियो कारज हे मघवान । गर्भ होयगो तैसोई बिक्रममय बलवान ॥
सो सेनानी होयगो सुरसेनाको बीर । या देवीको होयगो सो पति अति रणधीर ॥
यह सुनिकै कन्या सहित बिधिको शक्र प्रणाम । करि आए जहं सप्त ऋषि रहे तेज तपधाम ॥
यज्ञ भाग लीबे चहत कियो सोमको पान । गए देवगण ऋषिनके आश्रम सह मघवान ॥
कियो यज्ञ तिन यथाबिधि करि हुतभुकहि सप्टद्ध।दियो हव्य सब सुरनको बेद बिहितअतिऋद्ध ॥
यज्ञ पूर्ण करि चले जब पावक अपने लोक । ऋषि पत्निन्ह देखी तहां सुषमा कैसी ओक ॥
कामाशक्त भए लखत पावक तिनको भूप । फेरि बिचारो लोभ यह नही हमै अनुरूप ॥

साध्वी ऋषिपत्नीनको करिबो सर्व न नीति। होमगेहमे बास करि निति लखिए करि प्रीति ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

ज्वालनसों परसत गए तिन्हैं होमके धाम। तहां बास करिकै लखत नित्य भरे मनकाम ॥
कामतप्त तन त्यजनकों लखिँ अलाभ ऋषि बाम। अग्नि गए बनको चले छोडि होमको धाम ॥
स्वाहा दक्षसुता रही भरी मनोरथ माम। बरो अग्निको चहति हो देखत समय ललाम ॥
काम तप्त लखि अग्निको एकाकी बनमाह। स्वाहा तब यह हृदयमे मत धारो नरनाह ॥
ऋषिपत्निनको रूप धरि पावकको बश काम। सिद्धि मनोरथ आपनो हो करि लेऊं ललाम ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

शिवा नाम अङ्गिरसकी भार्याको धरि रूप। जाय अग्नि ढिग कहन इमि लागी बचन अनूप ॥
अग्नि काम सन्तप्त मोहि बरिबो समुचित तोहि। नतरु मदनशरसों व्यथित मरी देखिहो मोहि ॥
हों भार्या अङ्गिरसकी शिवानाम सुखदाय। औरन्ह करि मत प्रथम ही दीन्हों मोहि पठाय ॥

॥ * ॥ अग्निरुवाच ॥ * ॥

जानो किमि कामार्त मोहि सप्तऋषिन्हको बाम। जैांन कहति तुम हम सकल भजिहै तुम्है सकाम ॥

॥ * ॥ शिवोवाच ॥ * ॥

तुम हमको प्रिय नित्यहैं करत रही हम त्रास। सबहिन तव इङ्गित चितै मोहि पठई तुव पास ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

मैथुनार्थ आई इहां चिप्र सो करि प्रिय प्रान। ज्ञाति परिहा करैगे बीते काल महान ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

अग्नि शिवाको रति कियो भरे मदनमद चेत। प्रीति भरी तेहिँ पाणिमे लियो अग्निको रेत ॥
चिन्तन करि मोहि देखिकै सो करिहै परिहास। धरि पक्षीको रूपसों गई सेतगिरि पास ॥
सरस्तम्भ सङ्कुल सघन अहिविष भरे अखर्ब। भूत प्रेत राक्षस जहाँ बसैं जीवगण सर्ब ॥
शैल पृष्ठपर जाय तहं कनककुण्डमे रेत। धरि द्रुत आई अग्नि पहँ सो मदनाकुल चेत ॥
सप्तऋषिनको भारयाको धरिहैं स्वाहा रूप। मिली अग्निसो रेत लै राखो तहाँ अनूप ॥
सकी न धारि अरुन्धती को स्वाहा सुनि रूप। ताके सुतप प्रभावतें पति अनुरुप सु भूप ॥
रेतस हुतभुकको धरे लै स्वाहा षढ बार। प्रतिपदको ताते भयो तेजस भरो कुमार ॥
षट शिर द्वादश कर्ण चख द्वादश भुज अभिराम। और काय सब यथास्थिति सोते सबको भाम ॥
प्रतिपदतें अरु चैाथिलो भे सब अङ्ग महान। लोहिताभ्रमे भोरको उदित भयो जनु भान ॥
भयो अमल रोमाञ्च लखि धरो धनुष तेहि तैांन। मारि त्रिपुरको प्रथमहीं धरो रहो हर जैांन ॥
घन समान गरजो मधुर धारि शब्द सुकुमार। चितै परावत नाग तहं सुनि धुनि गए उदार ॥

तिन्है गह्यो द्वै हाथ सौं शक्ति एकसों भूप । ताम्रचूड एक हाथसों कुकुंठ पर्वत रूप॥
हाय पाणिसों शङ्ख गहि धमिति कियो अतिमान। दोय भुजनसो गगणको मन्थन कियो महाँन॥
फिरि पर्वत पर बैठिकै कियो नाद अतिघोर। सुनत नाद जे शरणको गए भरे भै रोर॥
शरण गए जे बर्ण सब भए पारषद तौंन । शान्त मान तिनको कियो बोलि वचन सुखभौंन ॥
शर तजि भेदो क्रौंचिगिरि तानि शरासन चण्ड। सो सुत गिरि हिमवानको होय गयो बङ्क खण्ड ॥
फिरि भेदो गिरि सेतको मारि शक्तिसो सान । छोडि भूमि सह गिरिन्ह गो नभको खेत महान॥
व्यथित भूमि सब ह्वै गई भई बिदिशि अखर्ब। लहि कुमार की शरण फिरि भई यथास्थिति सर्ब॥
नमस्कार करि स्कन्दको गिरि भो भूम्यासन्न। शुक्ल पञ्चमीको भजो स्कन्दहि जगत प्रसन्न ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि कुमारोत्पत्ति वर्णनोनाम अष्टचत्वारिंशदध्यायः ॥ *

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

होत महा सेनहि उतपन्न । भे उतपात महा सम्पन्न ॥ महा ऋषिन्ह तब शान्त उदार। कियो चाहि जगती उपकार ॥ कहैं अमर बनवासी जौंन। अग्नि कियो यह अनरथ भौन ॥ षट महर्षि भार्य्यनमे गौन। करि उतपन्न कियो भय भौंन॥ कोऊ कहै गरुडी भव भूप। जिन देखो तब तैसो रूप॥ कियो जौंन स्वाहा यह कर्म । सो न कोऊ जानत नृपधर्म॥ ऋषिन्ह कियो सुनि पत्निन्ह त्याग। एक बशिष्ठ बिना बडभाग॥ सप्त ऋषिन्हसो स्वाहा जाय। कह्यो पुत्र यह मम सुखदाय॥ बिश्वामित्र यज्ञमे तान। लखो सकाम अग्नि हिय भौंन॥ पीछे लागि अग्निके भूप। देखो स्वाहा कर्म अनूप॥ कौशिक प्रथम गए गुह पास।सुस्तव प्रथम कियो मतिरास॥ मङ्गल सह जे जातक कर्म। कौशिक गुहके किय नृपधर्म॥कौशिकको प्रिय कियो कुमार।सुनि स्वाहाको कर्म उदार॥ फिरि कुमारसों आज्ञा पाय। कौशिक कहो ऋषिनसों जाय॥ पत्नी त्याग न करऊ पवित्र। यह स्वाहाको सकल चरित्र॥ लोक अपवाद बिचारि महाँन। ऋषिन्ह तजी पत्नी सुखदान॥ * ॥ मार्कंडेयउवाच॥ * ॥ देवन्ह कहो इन्द्रसो बैंन । हनऊ भयो यह शिशु बल ऐन॥ नतरु होय गो यह देवेश। जीति लेयगो त्रिभुवन देश॥ * ॥ इन्द्रउवाच॥ * ॥ त्रिभुवनको कर्त्ता है जौंन। ताकों जीति सकै नहि तौन॥ देवाऊचुः॥ शक्र बीर्य्य तुमसे कछु है न। जो ऐसो तुम भाषत बैन॥ मातर सत्य कामबल जौन। पठवऊ ताहि मारिहै तौन॥ मातर तेहि लखि अति बलवान। जाय बचन बोली सुखदान॥ तुव होऊ मेरे बरबीर । उरसिज बहन लगे तव छीर ॥ सुस्तन पान पिपासा धारि। गुह पूजो नव जननि बिचारि॥ आवत देखि अग्नि अभिराम। मातन सह बूझो बलधाम॥ महा सेनको घेरे सर्ब। ते रक्षणको करत अखर्ब॥ मात क्रोधते ह्वै सम्पन्न। भई एक

पुत्री उतपन्न ॥ शूल हस्त सो पुत्र समान। लागी रक्षण करण महान ॥ लोहिताब्धि कन्या अति क्रूरि। रक्षति गुहको सो मुद पूरि ॥ छाग वक्त्रहै अग्नि सुजान। रक्षत गुहकों पुत्र समान॥ विजय विकल्प धरे मघवान। सुरसेना सह दिग्गज जान ॥ नाना शस्त्र धरे सुरसर्व। चले लरण गुहसों गहि गर्व ॥ कियो देवगण उन्नत नाद। जानो आवत भरे प्रमाद॥ चले कुमार तहां बलवान। गर्जे प्रलय पयोद समान॥ चले क्षिप्र सुरगण सह शक्र। गर्जत भरे क्रोधसों बक्र॥सुनि सुरगणको नाद कुमार। गर्जे सिन्धु समान उदार॥सुरसेनासों सुनिकै नाद। भई चेतहत भरी बिषाद॥ हनन हेतु आवत सुरजाल। लखि गुह मुखते छोडी ज्वाल ॥ तासों जरन लगी सुरसैन। सह आयुध वाहन बलअन॥ गिरत गगणते ऐसो भात।होत सघन मनु उल्कापात॥ गहो देवतन शरण कुमार। शान्ति भई तब अग्नि उदार ॥ दक्ष पार्श्वमे अशनि महान। गुहके हनो क्रुद्ध मघवान ॥ कढो बज्रक्षततें नर भूप। धरे शक्ति पावकसम रूप ॥ नाम विशाख देखि तेहि शक्र। काल कराल सदृश अति बक्र ॥ भय भरि इन्द्र जोरिकैं पानि। गे गुहशरण अभय अनुमानि ॥दियो इन्द्रको अभय कुमार। सहित शयन करि कृपा उदार ॥ कढे वज्र क्षत ते गण भूप। महा प्रलय धरि नाना रूप ॥ जात गर्भमे पशु शिशु जौन। तिनके प्राण हरतहैं तौन ॥ लहिकै वज्र प्रहार उदार। उपजी कन्या बहुत कुमार॥ते विशाखको पिता समान।मानत भई सुनो सुखदान॥स्वाहा रुद्र अग्नि सुखदान॥ ते कुमार ते पितर सुजान ॥ पुत्रकाम अरु पुत्री जौन। ताकों यजन करत है तौन ॥काकी हलि भा मालिनि नाम। और बृंहिता आर्या आम ॥ निबा और पलाला जौन। कही सत्त्व मातर ए तौन ॥ तिनके भयो वीर्य्य सम्पन्न। लोहिताक्ष एक सुत उतपन्न ॥ स्कन्द सुमातृ गणोद्भव आम। यह बीराष्टक कहे ललाम ॥ मध्यम जो कुमारको शीश। छाग वक्त्र समहै अवनीश ॥ भो यह विविधाकार समाज। शुक्ल पञ्चमीलो कुरुराज ॥ भो षष्ठीकों युद्ध प्रवृत्त। देवराज सो हे कुरुमित्त ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ स्कन्द हिरण्य कवच अभिराम। हिरण्य मुकुट चख पद्म ललाम ॥ धारे लोहित अम्बर सर्व। त्रिभुवन सुखकर लक्षण सर्व ॥ वरद युवा सार्द्ध शत सूर। भजसि जाहि श्रीसुषमा पूर ॥ देखि विप्रबर जे तपधाम। पूजन करि इमि कहो ललाम ॥ * ॥ ऋषयऊचुः ॥ * ॥ होऊ कुमार कृपाकर शर्म। बश त्रैलोक्य भयो तब पर्म ॥ इन्द्र होऊ तातें सु स्कन्द। जगतीके अभयङ्कर कन्द ॥ * ॥ स्कन्द उवाच ॥ * ॥ करत सुरेश कौन सो कर्म। कैसे पालत सुरन्ह सधर्म ॥ * ॥ ऋषयऊचुः ॥ * ॥ इन्द्र देत बल तेज सशर्म। तुष्ट कामना बितरत पर्म ॥ सुष्ठ प्रजा पालत मघवान। दुष्टन्हको नाशक बलवान॥ भएं सूर्य्य शशि अनल अभाव। सानिल होत आयु युत चाव ॥ इतने करत इन्द्रवर कर्म। तुम बरवीर बली युत धर्म॥ * ॥ शक्रउवाच ॥ * ॥ होऊ इन्द्र बर बीर कुमार। तुम हम सबके मोदाधार ॥ लेऊ इन्द्र पदको अभिषेक। स्कन्दउवाच ॥पालन करि त्रिभुवन सविवेक ॥हम इन्द्रत्व न चहत सुरेश।

करि है तब आज्ञा निःसेश॥ * ॥ शक्रउवाच ॥ * ॥ तुममें बल अद्भुत वर वीर। हनऊ सुरारि सकल रणधीर॥ हीन हमैं एहि पदमें जानि। तुमसों भेद परस्पर मानि॥ मत भेद व्है है तव बीर। बढि है तब विग्रह गँभीर ॥ जीतऊगे तब रणमें मोहि। इन्द्रत्व देत यातें हम तोहि॥ स्कन्दउवाच॥ * ॥ तुम मम राजा त्रिभुवनसाथ। कहऊ करैं सो हम सुरनाथ॥ इन्द्रउवाच॥ तब हम इन्द्र होहिँ बरवीर। दीजै जो यह बचन गभीर॥ कियो चहत मम शासन एक। सेनानी ऊजैं सबिबेक॥ * ॥ स्कन्दउवाच॥ * ॥ दानव नाश सुरनकी वृद्धि। गो ब्राह्मणकी चाहि समृद्धि॥ सुरसेनानीको अभिषेक।करु मोपहँ सुपरति सबिबेक॥*॥मार्कण्डेयउवाच॥ अभिषेक इन्द्रसों पाय कुमार। ऋषि पूजित अति लसो उदार॥ काञ्चन छत्र धरे अतिमान। ज्यौं पावक मण्डलमे भान॥ सहित उमा शङ्कर तहं आय। कनकमाल दीन्हो पहिराय॥ अग्निहि रुद्र कहत श्रुतिरूप। स्कन्द रुद्रसुत यातें भूप॥ शिवसो पूजित देखि कुमार। सुपति देवतन्ह कहो उदार॥ इन्द्र देवतनको स्वर्ण। कियो पूर्ण गेह दीन्हो सर्व॥ आई तीन सहित लङ्कार। इन्द्र गए लै जहां कुमार॥ विधि तुमको यह कन्या पर्म। दीन्ही याहि बरऊ सह धर्म॥ देखि रूप तप भरी कुमार। बरा ताहि धरि मोद उदार॥ जहलों रहो ब्याहको कर्म। सो सुरगुरु सब कीन्हो पर्म॥ सो षष्ठी तिथि परम पुनीति। जास करत ब्रत जन गुहप्रीति॥ लहो देव सेनै गुहनाथ। तब श्री वसी आय तेहि साथ॥ भए पञ्चमाको श्रीयुक्त। स्कन्दपञ्चमी श्रीसो उक्त॥ *

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच॥ * ॥ दोहा॥ * ॥

सुनि श्रीसहित कुमारको सप्त ऋषिन्हकी बाम। षठदेवी गुह पै गई भई दुःखसे छाम॥
बिनापराध तजी पतिन्ह सत्यधर्मकी ऐन। लागी कहन कुमारसों ऐसे सकरुण बैन॥
पुत्र हमैं छोडी पतिन्ह कारण बिनापराध। पुत्र हमारो कहत कोउ तुमकों सुमति अगाध॥
स्वर्गबास अक्षय हमैं पुत्र कृपा करि देऊ। हम तुमसों पुत्रत्वको परम फल यह पाऊ॥

॥ * ॥ * ॥ स्कन्दउवाच॥ * ॥ * ॥

हौ तुम जननी सर्व मो हों तब पुत्र सधर्म। जो तुम बांछति होय गो तीन तुम्है पद पर्म॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच॥ * ॥

स्कन्द कह्यो तब इन्द्रसों बांछित कऊ मतिऐन। स्कन्द वच सुनि कै कहन बासव लागे बैन॥
कनिष्ठ रोहिणी सों नखत अभिजित स्पर्द्धा धारि। लहिबेको जेष्ठत्व तप करिबे भई बिचारि॥
गणनामे नक्षत्रको मूढ भए हम बीर। ब्रह्मासों चिन्तन करऊ तुम कालक्रम धीर॥
गई कृत्तिका स्वर्गको यह सुनि सुरपति बैन। अग्नि देवता सप्तशिर भई ऋक्ष मतिऐन॥
बिनतै आय कुमारसों कहे बचन अभिराम। पिण्डद मेरे होऊ सुत दे सह बास ललाम॥

॥ * ॥ स्कन्द उवाच ॥ * ॥

देवी तुमजो कहति हौ तथा होय गो पर्म । पूज्य मात व्है सुपासों इहाँ बसहु सह शर्म ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥

लागी कहए कुमारसों तब सब मातर आय । सर्वलोक माता कहैं हमकों कवि सुखदाय ॥

ता माता चाहति भई हँम सब सुनहु कुमार।स्कन्दउवाच।हम सुत हैगे रावरे तुम ममभात उदार॥

कहहु कार्य्य सो करहिँहम अब तुमकों सुखदान ।मातरऊचुः।रही जोमातरपूर्बहमतिनकोपाबैंस्थान॥

लोकपूज्य हम होहि सब जाहि न पूजि तौंन । लहैं प्रजा हम आपने प्रथम हरी तिन जौंन ॥

॥ * ॥ स्कन्द उवाच ॥ * ॥

हतन प्रजा फिरि लहहुगी और चहहु तुम जौंन।और करहहु सब देहिँ गे हे मातर हम तौंन॥

॥ * ॥ मातरऊचुः ॥ * ॥

तिनकी हम चाहति प्रजा भक्षण कियो कुमार ।

॥ * ॥ स्कन्द उवाच ॥ * ॥

रक्षण करिबो योग्य तव भक्षण कष्ट उदार ॥

जबलौ षोडश वर्षको होय न मनुजकुमार । तबलों तुम बाधा करहु धरिकै रूप उदार ॥

रौद्र तेज हम देत है तुमको भरो प्रकास । तेहि सह तुम पूजित करहु समुद जगतमे बास ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

कढो स्कन्दकी देहतें तव एक पुरुष सधाम । मनुजप्रजा भक्षण करण हेत किए मनकाम ॥

गिरो क्षुधार्दित भूमि पैं निकसत मूर्छित भूप । स्कन्दाज्ञातैं ग्रह भयो सो अति रौद्र स्वरूप ॥

शकुनि ग्रह बिनिता भई धारो उग्र सभाव । भई राक्षसी पूतना बालक बाधक चाव ॥

कुमार कुमारी जे भई स्कन्द देहतें भूप । ते सब मानुषगर्भभुक अनरथ कारक रूप ॥

सरमा देवी श्वानकी जननी कहिए जौंन । सदा मानुषी गर्भको भक्षणकारक तौंन ॥

जो करन्तनिलया कहैं तरु माता शुभ रूप । वरदा ताको पूजिए करहु वृक्षमे भूप ॥

ए अष्टादश ग्रह कहे मांस मद्यप्रिय जौंन । बसत सूतिकाभौंनमे दश निशीथिनी तौंन ॥

कद्रुगर्भ प्रवेशकों करति सूक्ष्म धरि रूप । गर्भ खाति ताके प्रसव होत सर्प सुत भूप॥

गन्धर्वणकी जननि जो तौन गर्भ ले जाति । शून्य गर्भ सो मानुषी धारि गर्भव्है जाति ॥

निरशन कीजो जननिसो सोषति गर्भ सुजान । नष्ट गर्भ तव कहत है देखि सकल मतिमान ॥

लोहिताब्धिकी कन्यका गुहकी धात्री जौंन । लोहितायनी पुज्य सो तरु कदम्बमे तौंन ॥

पुरुषनमे हैं रुद्रलों आर्य्या नारि न माहँ । आर्य्या जननि कुमारकी जगत पूज्य नरनाहँ ॥

कहे जे एतने महाग्रह षोडशाब्दलौं भूप । शिशुकों बाधा करत हैं पूजनतें सुखरूप ॥

कहे जौन हम मातृगण कहे पुत्रग्रह जान । स्कन्द ग्रह नामक सकल भूतप जानो तौन ॥
बिबिधि भाँति पूजन करें सुस्रव सहित कुमार । होत सकल आनन्दके करता सकल उदार ॥
षोडश ऊरध करत है जिनको ग्रह उनमाद । तीन दैवग्रह यानिए सुनऊ भूप निरबाद ॥
सूतत जागत लखत है जो पित्रन्हको रूप । कारक सो उनमादको क्षिप्र सुनऊँ कुरुभूप ॥
सिद्धनको अपमान जे करत देत जे शाप । सिद्ध ग्रह उनमादकों करत सो क्षिप्र अमाप ॥
अकस्मात आवत जिन्हे नानाभाँति सुगन्ध । सो राक्षस ग्रह जानियो कर उनमादक धन्ध ॥
जहि नरमांह प्रवेश करि वसत आइ गन्धर्व । गन्धर्वग्रह भूप सो कर उनमाद अखर्व ॥
चढि पिशाच उनमाद जेहि करत सो ग्रह पैशाच । करत अन्तमे यक्षजो सो उनमाद अलांच ॥
बात पित्त कफ दोषतैं चित्त भयो भ्रम जास । कीजै शास्त्र प्रमाणतैं भूपति भेषज तास ॥
भयतें घोर स्वरूप लखि होति बिकलता जौन । शान्ति किएतें होति है दूरि सुनो नृप तौन ॥
कोऊ भोजनकाम कोउ इस्त्रिणकाम सनाद । कोऊ सङ्ग तजै न ग्रह कहे त्रिबिध उनमाद ॥
ए ग्रह सतरि वर्षलों ग्रसत मनुजको आय । आगे ग्रहगण सदृश ज्वर जरा ग्रसति है आय ॥
इन्द्रि निग्रह दान्त शुचि आस्तिक श्रद्धावान । देवभक्तके निकट ग्रह नाही जात सुजान ॥
यह हम ग्रह उद्देश बिधि कहो मनुजकों भूप । शङ्कर सेवन करत जो सो नलखत ग्रह रूप ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

प्रीति हमसों कीजिए सुत करत औरस जौन ॥ स्कन्दउवाच ॥ प्रीति हमसों चहति अम्बा कहऊ शर्मद तौन॥ स्कन्दसों एहि भाँति स्वाहा आय बोली बैन ॥ पुत्र औरस हो हमारे चहति तुमसो बैन ॥ स्वाहोवाच ॥ दक्षकी हम परम कन्या नाम स्वाहा तात । रही मेरी कामना निति अग्नि पैं अवदात ॥ नही जानत कामिनी मोहि भलीभाँति ऊतास । करो चाहति हों निरन्त वास ताके पास ॥ हव्य कव्य सुहोम करि है मंत्र पढि द्विज जौन । नही स्वाहा बिना बोलं अग्नि लहैं तौ तौन ॥ अग्नि बसि है आपुतें इमि जननि तुम्हरे पास । जननि पूजन कियो कहि एहि भाँति गुह मतिराश ॥ लहो स्वाहा बचन यह सुनि अग्नि सङ्ग ललाम । पितामह तब कहो ऐसे स्कन्दसों अभिराम ॥ उमा शिवपहं चलऊ गुह यह मानि मन सुनिदेश । अग्नि स्वाहामाहँ जिन करि उमा सहित प्रवेश ॥ जगतहितके अर्थ तुमसों कियो सुत उतपन्न।उमाकी धरि योनिमे वर रेतपत आसन्न ॥ शेष रेतस गिरो लोहित उदकमे अतिमान । इमिका तहँ भई मिञ्जिक तास पति बलवान ॥ भूमि गिरिप मानुकरपर तरुन्ह पैं कछु भूप । गिरों जहँ जहँ रैत तहँ तहँ भए गण अतिरूप ॥ ~~~~~~~~ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ~~~~~~~~

एवमस्तु कहि कै गये शङ्कर पास कुमार । पूजन माताको बिधिवत कियो उदार ॥
अर्कपुष्पसों पन्नगण पूजत जे धनकाम । व्याधि हरणक अर्थहूँ पूजन करी ललाम ॥

व०प० ऐरावतके जे रहे घण्टा द्वै अति रूप॥ शक्र एक गुहको दयो एक विशाखकों भूप॥
सह पिशाच गण देवगण काञ्चन गिरिपर पर्व। शोभित भए कुमार लहि सह गिरि सुषमासर्व॥
फल पुष्पित घन तरुन सह पशु पच्छी बहुरङ्ग। लहि शोभित भो श्वेतगिरि सुषमा भरो उमङ्ग॥
तहाँ देवगण अप्सरा किन्नर गण गन्धर्व। तूर्य्यघोष घन सदृश करि नाचत गावत सर्व॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

सेनापतिको जब लहो शुभ अभिषेक कुमार। गए भद्र वटकों शिवा सह हर वरद उदार॥
चढे श्वेतरथ पै लगे जामे सिंह हजार। काल सारथी गगणकों लै रथ गयो उदार॥
आगे पुष्पक पै चढे जात धनद अभिराम। किन्नर गुह्यक यक्षगण लीन्हे सङ्ग ललाम॥
ऐरावत पर इन्द्र चढि सुरन्ह सङ्ग अवदात। सांव सदाशिवके लखे सानद पीछें जात॥
हरके दच्छिण वसुन सह जात यच्छ बलधाम। ताके दच्छिण देवगण रणकोबिद अभिराम॥
मृत्यु व्याधिगण सहित यम जात घोर धरि रूप। यमके पीछे त्रिशिख सित शम्भु शूल सँग भूप॥
विजय शूल रच्छित किये वरुण उग्र धरि पास। घोर यादगणको महा सेना शोहति जास॥
गदा मुसल पट्टिस परिघ चले शूल सँग सर्व। चलो कमण्डलु छत्र शित पट्टिश सङ्ग अखर्व॥
चले अङ्गिरस भृगु सहित वेद सङ्ग श्री भूप। रुद्र चले इन अनु महास्यन्दन चढे अनूप॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ऋषि सुरसह गन्धर्व भुजग नदी ह्रद समुद सर। ग्रह नच्छत्र अखर्व असर सुरसुत शिशु सकल॥
धारें विविधाकार चली रुद्र पीछे सकल। वरषत फल उदार सुरबनिता आनन्द भरी॥
अनुगमने परयन्य धरे सुधा धर चन्द्रको। अनिल अनल अति धन्य चमर सांव शिवकों करत॥
सह सुर सैन अखर्व चले शक्र श्रीसों भरे। चले राजऋषि सर्व सुस्तुति करत महेशको॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गौरी गन्धारी चली केशिनी छविधाम। सह सावित्री पार्वतीके अनु ऐ अभिराम॥
राच्छस ग्रह आगें चले धरे पताका सर्व। बासी जौन मसानको पिङ्गल यच्छ अखर्व॥
त्रिभुवन जाको जपत है शङ्कर सर्व उदार। आवृत करि सुरसैनसों ताको चले कुमार॥
सेनानीसों शम्भु तब ऐसो बोले बैन। सप्तम सुर समुदायकों रच्छण करु बलऐन॥

॥ * ॥ स्कन्दउवाच ॥ * ॥

सप्तम सुर समुदाय हम रच्छण करि हैं सर्व। और कार्य्य जो होय सो मोसो कहहु अखर्व॥

॥ * ॥ रुद्रउवाच ॥ * ॥

कार्य्य परे तुम देखिये मोकों सुत सुखदान। मम दर्शनसों लहहु गे श्रेय समृद्धि महान॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

यह कहि कै शङ्कर कियो गुहको मुर्धाघ्रान । बिदा कियो तब दिशनमे भे उत्पात महान ॥
नभ नखतन्ह सह ज्वलित भो भुवन भरो भय भूरि।शब्दित हलन लगी धरा जगत गयो तम पूरि॥
तब देखी आई चमू सघनघटासी भूप। उमा सह शिव सुरन्ह सब भए बिस्मय रूप ॥
नानाबिधिके अस्त्रकों दनुज धरें अतिघोर । गर्जत बिबिधि प्रकारसें आइ मिले बरजोर ॥
शस्त्र अनेक प्रकारके वर्षे दनुज महान । दोयघरी लरि देवगण बिमुख भए बलवान ॥
दनुजशस्त्रखण्डित गिरी सुरसेना कुरुबीर । चण्डअग्नि लागे सघन ज्यों वन जरत गभीर ॥
भगी चमू लखि सुरणको सुरपति बोले बैन । आश्वासन करि कै कहो तिन्हे शक्र बलऐन ॥
आश्रय लहि कै शक्रको सुर सब फिरे प्रचारि । असुरनसें लागे लरण शस्त्र संहसें मारि ॥
क्रुद्धसुरनके शर निसित पैठि असुरतनमाह । रुधिरपान लागे करण सर्प सदृश नरनाह ॥
सुरशस्त्रन्हसें कटि गिरन लागे असुरशरीर । प्रवल बायु आगैं यथा घनकी घटा गँभीर ॥
भजी असुरसेना सकल सुरशरमर्दित भूप । सुरन्ह कियो हर्षित तुमुल तूर्य्य बाद्य अतिरूप ॥
युद्ध भयो अन्योन्य अति सुरासुरन्हसो सर्व । मांस रुधिर कर्दममयी भू भई भूप अखर्व ॥
सुरन्ह मारि असुरन्ह कियो महाभयानक रोर । असुर सैनसो तब कढो महिषासुर अतिघोर ॥
देखि महिषकों महागिरि लीन्हे आवत भूप । सुरसेना भाजी भरी भयसें बिवरण रूप ॥
महिष दौरि सुरसैन पैं डारो अद्रि महान । तेहि गिरितें दश सहस सुरन्हे गए चूर्ण समान ॥
सुरन्ह भजाय गयो महिष क्रुद्ध रुद्ररथ पाश । लियो रुद्ररथ कोप करि कूबर पकचो नाश ॥
गयो भुवन भरि नाद सो ऋषिन्ह लहो तब क्षोभ । गर्जन लागो दनुजदल तब सुविजयके लोभ ॥
महिषहननको रुद्र तब कीन्हो स्मर्ण कुमार । निर्मित हन्ता जानि कै ताको प्रवल उदार ॥
महिष देखि रथ रुद्रको गर्जो अतिबलवान । त्रासित करि कै सुरनकों असुरन्हको सुखदान ॥
सुनत शब्द अतिघोर सों अमर भरे भय सर्व । आए तहाँ कुमार तब पूरित क्रोध अखर्व ॥
लोहिताक्षि लोहित धरे शूल बिसाल गभीर। तास कवच लखि हिरन्मय भजे असुर रणधीर ॥
शक्ति महिष नाशक तजो करि कै क्रोध कुमार । महिषशीस कटि शक्तितें क्षितिपर गिरो उदार॥
शेष रहे जे दैत्यगण स्कन्दपार्षदन जाय । मारि बिभुक्षितसे तिन्हे लियो पकरि कै काय ॥
तिन्हे मारि करि रुद्रको लिये पारिषद सर्व । कियो लोक बिन दैत्यको ज्यौं तम सूर्य्य अखर्व ॥
पूज्यमान भे सुरनसों शत्रु संघारि कुमार। महादेवसों इमि कहो महिष लाय उदार ॥
ब्रह्मारक्त वर महिषकों स्कन्द हनो तुमबीर। तृणसमान जो सुरनकों गणत रहो रणधीर ॥
तीनि लोकमे कीर्ति तव अक्षय व्हैहै बीर । वशग होहिंगे महीभुज आगे तव रणधीर ॥

कहि एहिभाँति कुमारसों अवंक त्रिभुवन नाथ।कियो निवृत्त सुरेशकों कहि इमि सुरगणसाथ॥
सुरपति सम सम जानियो मनमें नियत कुमार। एकदिवसमें स्कन्द सब जीते असुर उदार॥
इन्द्र गए वटभद्रकों करि निवृत्त सुर सर्व। पढि हैं जौन कुमारको जन्म चरित्र अखर्व॥
इहां लहैंगे सर्व सुख दहनिधनको पाय। बास करैंगे अमर सम स्कन्दलोकमें जाय॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

चहत गुहको नाम तुमसों सुनो हम हेत प्रधान। ख्यात त्रिभुवनमाह जे है पुण्य पावन धाम॥ ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ आग्नेय गुह सुकुमार कहि एहि महिषमर्दन भूप। सत्यवाग सूर केतु सु कामजित शिशु रूप॥ भुवन ईश्वर मातृवत्सल स्कन्द कामद कान्त। दीप्तशक्ति प्रशान्त आत्मा चण्डरूप नितान्त॥ बकुतरूप विशाखके सब कहे कहलों भूप। यथा मेरे शक्ति हैं हम कहत सुनऊ अनूप॥ कौशिकप्रिय शरोद्भव सुसेनप्रिय अभिराम। षाण्मातुर रुद्रसुत स्वाहेय गुह बलधाम॥ जगतपालक जगतमय ब्रह्मण्य विश्वस्वरूप। स्कन्दको जो नाम जपि है जन्म चरित अनूप॥ सुनैगो जो सहित श्रद्धा चित्त दे अभिराम। लहैगो दीर्घायु सो धन पुत्र यश जप नाम॥ तुष्टि पुष्टि सु पाय कै करि भोग मोद अतोक। लहैगो देहान्तमें सो स्कन्दको वर लोक॥ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि स्कन्दजन्ममहिषासुरबधवर्णनोनामैकोणपञ्चाशदध्यायः॥ * * * *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

रहे बैठे सहित विप्रन्ह जहां भूपतिधर्म। तहातें उठि गई सकृष्णा सत्यभामा पर्म॥ दुऊन अपने वंशको बृत्तान्त जौन अनूप। कहन लागी परस्पर भरि मोद प्रीति सुभूप॥ दिव्य आसनमाहँ बैठो रहसमें अभिराम। सत्यभामै द्रौपदीसों बिहँसि बचन ललाम॥ कहे कैसें रहति हो तुम पाण्डवनके पास। लोकपाल समान हैं ए महाबलके रास॥ रहत है तव वश्यमें ते करत क्रोध न खर्व। लखत रहत चकोरसे तो बदन शशिसों सर्व॥ स्नान व्रत मंत्रौषधी तुम करति साधन कौन। पाय जास प्रभाव वश सब रहत ते बलभौन॥ भाग्यशाली देऊ कृष्णा तौन मोहि अवश्य। जौन साधेह्वैहैं नित्य नित कृष्ण मेरे बश्य॥ कहे ऐसें द्रौपदी सुनि सत्यभामा बैन। बचन असतिन योग्य तुमको उचित कहिवे है न॥ शत्रुजितकी सुता महिषी कृष्णकी सतिधान। जौन हमसों कहति तुम सो सुनऊ तौन सयान॥ मंत्र कारिणि आनि कै पति होत तियपर रुष्ट। औषधीसो करति पतिकों दोष भरैसनि पुष्ट॥ पाण्डवनमें करति जो हम बृत्ति सो सुनु तौन। सत्यभामा सत्य सो हम कहति है छविभौन॥ अहङ्कार सकाम क्रोध विहाय कै हम सर्व। पाण्डवनको भजति है सहदार नित्य अखर्व॥ स्वस्थ मन करि चित्तचारिणि करि सुश्रूषा जौन। दुर्बादसों डरि दुष्टजनके बचन सुनति

न तौन ॥ त्यागि दुष्ट कटाक्ष इङ्गित बचन बोलि प्रमान। पाण्डवनको भजति हैं हम सूर्य्य अग्नि समान ॥ देव गण गन्धर्ब मानुष युवा सुन्दर जौन । और पुरुष न हमै सम्मत धनो भूपति तौन ॥ स्नान भोजन शयन निद्रा प्रथा तिनहिँ कराय । भृत्यजनको भरण करि अनु सरति औसर पाय ॥ जाय आवत कहूँतें भर्तार अपने धाम । जाय आगे ल्याय धोवति चरण चापि ललाम॥ उदक आसन देय भोजन देति मधुर अनूप। बोलि कै मृदु बचन सज्या देति रचि अनुरूप ॥ कहति बचन बिनीत मृदु निति रहति हो अनकूल।विना हास न हसति ब्रोडा युवतिको सुखमूल॥ नियत पतिके सदा सेबनमे रहति सुखदान। बिना पति कछु सर्बथा नहिँ हमै इष्ट सुजान ॥ करत काहु कार्य्यकों भर्तार कबहूँ प्रवास । अङ्गराग बिहाय तव हम धरै ब्रत मतिरास ॥ पियत जो नहि खात भर्त्ता करत भोजन जौन । हमहूँ भोग्य पदार्थ सिगरे पियति स्वामि न तौन ॥ पाय आज्ञा व्है अलङ्कृत जाति पतिके पास । पूर्ब स्वश्रू कहे वनिताधर्म जे सुखरास ॥ उचित सिगरे कार्य्य ते हम करति नीति विधान। सत्यशील समान पावक भजति पति सुखदान ॥ कुलस्त्रिनको धर्म आश्रय स्वपतिको अभिराम। भजति हम सो वामकों गति एक स्वपति ललाम ॥ करति अति क्रम नहीं पतिको शासुसों नहिँ वाद । करति हैं हम कार्य्य जितने भई बिगत प्रमाद ॥ रहत हैं भर्तार मेरे सहित कुन्ती वश्य। हो सुश्रूषनकी करति सो वृत्ति चरित यशस्य ॥ बिप्र आठ सहस्र भोजन करत हैं सह शर्म । धर्मनृप सह विविधि बिधिके छरस व्यञ्जन पर्म॥ द्विज अठासी सहस स्नातक धर्मनृपके धाम । कनकपात्रन्हमाहँ भोजन करत हे अभिराम ॥ एक एक हि भज हिँ दासी तोस तीस सुजान । ऊर्ध्वरेतस सहस जे हैं यती हे तप मान ॥ कनक पात्रन्हमांह तिनकों रही भोजन देत । बसत भोजन मात्यसो हम तिन्है पूजि सनेत ॥ लक्ष दासी बसन बेस्नि जडित भूषण सर्ब । धरें नृत्य सु गानमे अति चतुर चारु अखर्ब ॥ नाम भोजन बसन तिनके क्रताक्रत जे कर्म । रही जानत बिबिधि बिधि हम नीति सो अनुपर्म ॥ लक्षदासी धर्मनृपकी सुन्दरी शुचि नेत । कनक भाजन लए भोजन रही अतिथिन देत ॥ अयुत नाग सुलक्ष बाजी धर्मनृपके सङ्ग। चलत हे लखि तिन्है हमको बढत मोद उमङ्ग ॥ भार सकल कुटुम्बको धरि दयो सोपै भूप। छोडि कै सुख सर्व ताको वहत हो अनुरूप ॥ अगाधमय है धर्मनृपको सिन्धुसो भाण्डार। एक जानत रही हम हीँ बिबिधिभाँति उदार॥ रात्रि दिन हम पाण्डवनको क्षुत् पिपासा मान। भरण पोषण करत हीँ सबभाँतिसों सुखदान ॥ भोर जागैं प्रथम पतिसों करै पीछे सैन। बशीकरण सु और औते हमै आवत है न ॥ असत बनितनको न हमको कम आवत एक। सत्यभामा कहो तुमसों तौन सहित बिबेक ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तौन सुनि कै धर्म पूरित द्रौपदीके बैन। कहन लागी सत्यभामा पाय कै अतिचैन ॥ क्षमा कीजे हमै कृष्णा प्रणित प्रीति बिचारी। काम कारिणि सखी भाषित हाससो निरधारि ॥ द्रौपद्युवाच ॥

ब॰प॰ कहौ हमपति चित्तहारक परम पंथा जौंन। करहौं गी तौ अनिश बसि है कृष्ण तुम्हरे भान॥ नहीँ पतिसौं और दैवत लोकमे अभिराम। भए तौन प्रसन्न पूरण करत सब मनकाम॥ स्वर्गपावति पतिव्रत धरि पति हि सेवति जौंन। नही सुखते मिलत सुखव्रत दुःख सुखको भौन॥ कृष्ण राधन करकु भामा सुहृदता धरि प्रेम। बसै गे तव पास सुन्दर श्याम नियमित नेम॥ गन्ध आसन माल्य भोजन देय कै अभिराम। परम प्रीतिजनायकी जो स्वबशमे घनश्याम॥ पतिव्रतमय प्रीतिभूषित पतिसुश्रूषण जौंन। सत्यभामा ओर यातें बशीकर बिधि कौंन॥ हैं कुलीना रहित पातक सखीको जो ताहि। त्याग कीजो चण्ड दुष्ट स्वभाव चञ्चल चाहि॥ पति सूश्रूषण सकल बिधिसों भाग्य दैवत तौंन। सत्यभामा ओर तुमसी भाग्य भाजन कौंन॥ वैशम्पायनउवाच॥ मार्कण्डेयादि बिप्रन्ह पाण्डवनके पास। बिदा व्है हरि चढन रथपर चले जब सुखरास॥ सत्यभामाकों बोलायो कृष्ण आनद ऐंन॥ द्रौपदीको अङ्कमे भरि चली कहि इमि बैन॥ नहीं कृष्णा करकु चिन्ता दुःख लहि मतिधाम। पतिनसों यह बिजित भू तुम लहौगी अभिराम॥ शीलसों सम्पन्न तुमसी भरी लक्षण वाम। रहति नहिं चिरकाललौं एहि भाँति दुःखित माम। पतिनसह भोग करिहौ भूमि तुम सुखदान। होय कै निर्द्वन्द कृष्णा कहति बचन प्रमान॥ धार्तराष्ट्रन्ह मारि कै करि बैर शान्ति गभीर। भूमिको तुम भोग करि हौ सहित पति वर बीर॥ तुम्है बनकों चलत कीन्हो हास्य बनितन जौन। देखि हौ बैधव्य भूषित रूप तिनकौ तौंन॥ पुत्र तव प्रतिविंध्य अरु सुतसोम भीमज बीर। श्रुतकर्म अर्जुन तनय नकुलज शतानीक सुधीर॥ श्रुतसेन सह सहदेवसुत सब कुशलहै तब नन्द। अस्त्रविद सब भए सह अभिमन्यु कुरुकुलचन्द॥ करति भद्रा प्रीति सम अभिमन्यु के सुखदान। प्रद्युम्न माता करति तिन पैं प्रीतिको अतिमान॥ कृष्णसुतन समान तिनसों करत है अतिप्रेम। भरण पोषण करत है बसुदेव धारे नेम॥ राम आदिक बृष्णि अन्धक प्रीति करि सुखदान। अनिश तिनकों भजत हैं प्रद्युम्न सदृश महान॥ सत्यभामा द्रौपदीसों बोलि ऐसे बैन। करि प्रदक्षिण गईं रथपर जहाँ आनदऐन॥ समाधान सु द्रौपदीको कृष्ण करि सुखदान। गए द्वारावतीकों रथ हाँकि पौन समान॥ * * * * * * * * * * * * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेबनपर्वणि द्रौपदीसत्यभामासंबादवर्णनोनाम पञ्चाशदध्यायः॥ * * * * * * * *

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बसे तौन बनमे अभिराम। कियो कहा सो कहु तपधाम॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बिदा महामुनिको करि भूप। सरतट बसे धारि ऋषि रूप॥ देखत गिरि बन सुषमा जौंन। रहे बिहार करत बलभौन॥ आए तहाँ बेदबिद बिप्र। पूजन तास कियो नृप चिप्र॥ कथा कुशल

तिनमे एक बिप्र । गयो कौरवनके ढिग छिप्र ॥ गो धृतराष्ट्र निकट द्विज तौन । पूजि ताहि बूझ्यो मतिभौन॥ कहते आवत सुनिके बिप्र । कहो धर्मनृप ढिग ते छिप्र॥ बातातप ते कर्षित गात। जानि धर्मनृपकों सह भ्रात ॥ परे उग्र दुखके मुख माह। जानि द्रौपदी सह नर नाह॥ तिनकी कथा सुनत कुरुराज। तप्त भए लहि कृपा समाज॥ बनमे बसत पाण्डुसुत सर्व। दुःख सिन्धुमे बहत अखर्व॥ तप्त दुःखसों बोले बैन। ऊरध स्वास लेइ हत चैन ॥ चित्त स्वस्थ करिकै कछु भूप । जानि आत्म कृत कर्म कुरूप॥ सत्य सुवृत्त जेष्ठ नृपधर्म। योग्य से जे सुखमय अति पर्म ॥ सो सोवत पृथिवी पर वीर । अजिन दर्भ पर धारे धीर ॥ बन्दी मागध सूत सुजान। जाहि जगावत हे मतिमान ॥ सो निशान्तमे जागत बीर। पच्छिनकी सुनि सोर गँभीर ॥ भरो बृकोदर कोप महान । छितिपर सोवत कृश बलवान॥ योग्य परम शय्याके जौन । छितिपर सोवत कृष्णा तौन॥ धर्मनृपति बश जिष्णु कुमार। छितिपर सोवत बोत उदार॥ धर्मनृपति सह कृष्णा भ्रात। सोवत छितिपर लखि कृश गात ॥ स्वास सर्प समले बलभौन। निद्रा पार्थ न लहि है तौन ॥भीमसेन अतिबलको धाम। धाये ससा बधो सुललाम॥ सम पुत्रन्हकों कदन बिचारि। छितिपर सोवत अमरष धारि॥ सत्य धर्मते बारित जौन। काल प्रतीच्छण नियमित जौन॥ धर्म नृपति कह छल करि जीति। कह दुःशासन बचन अतीति॥ पैठि बृकोदरके तन तौन । दहत दवानल सम बलभौन॥ स्वर्ण करत अपराध न धर्म। याते धरत जिष्णु अति कर्म॥ अर्जुन भीम काल से जौन। बर्षत बाण अशनि सम तौन॥ शकुनि दुशासन सूत कुमार। पुत्र सुयोधन कुमति उदार॥चाहत लाभ न देखत घात। मधु लखि मधुहा ज्यौंन प्रपात॥ करत शुभाशुभ जो नर कर्म। लहत तास फल परम अपर्म॥ बोवत बीज खेत नर जोति। बृष्टि यथा ऋतु पाऐ होति॥ स्वल्प ता ब फल होइ कि पीन। है प्रसिद्धि यह दैवाधीन॥ द्यूत खेलिबेको स्वीकार। धर्महि करिबो होन उदार ॥ हो सुत बस दिये रोकि न द्यूत। भो कुरुकुल अन्तक सो भूत॥ होनहार है सो ध्रुव होत। ज्यौंघन बरिसै सरिता सोत॥ हमै योग्य यह हो नहि कर्म ।बित्त अर्थ जन करत अधर्म॥ बिना बित्त कृत बित्तज जौन। नष्ट होत भाषत मतिभौन॥ बित्त न चहत कियो कोउ चीन। दैवाधीन सो बिनसत पीन ॥ जिष्णु जाय बनतें सुर लोक । लै आयो सब अस्त्र अतोक॥ देखि स्वर्गमे कुरुकुल सर्ब। आयो भए काल बस खर्ब॥ दिव्यास्त्र जिष्णु गाण्डीव सुचाय। इनको कौन सहैगो दाय॥ ए प्रलापके सुनि नृप बैन । कहो कर्णसो शकुनि सचैन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ कर्ण शकुनि औसरको पाय॥ कहो सुयोधन सों इमि जाय ॥ करऊ भोग भूषण तुम भूप। सिन्धु मे खला ऋद्धि अनूप॥ करद करे तुम भूपति सर्व ।धर्मनृपतिकी श्री जो अखर्व ॥भ्रात न सहित लखी तुम तौन। इन्द्र प्रस्थमे देखी जौन ॥ लई बुद्धि बलतें तुम भूप। श्री पांडवकी तौन अनूप॥ तो

बश कहत भूपवर जौंन।कहहु करैं हम कारज तौंन॥ तौ बश भू यह भई अखर्व। बन्दत तुम्हें भूप द्विज सर्व॥लसत सुरण सह ज्यो मघवान। त्यो तुम कुरुकुल भूषण भाँन॥ मानत तो शासन नहि जौंन। है पाण्डव सम ओहत तौन॥सुनत द्वैतवनमें सर नाय।बसत तहाँ द्विज भिक्षुक साथ॥तहां चलहु श्री सहित महान। पांडुन्ह तम करहु सम भाँन॥ सङ्ग लए भट भूपति भीर। चलहु द्वैं तव नकों कुरुबीर॥ पांडव तुम्हें ययाति समान। देखि दहैं ज्यों की रव भाँन॥धन सुत लाभ जन्य सुख जान। लखे पांडवनके अब तौन॥ धरे जिष्णु वल्कल तन छाम। तुम देखे सह ऋद्धि ललाम॥ याते सूख मोदता ओर। सुनहु सुयोधन क्षितिपति मौर॥ तो भार्या सह भूषण बास॥सचो समान महा छविरास॥ धरे अजिन वल्कल हत रूप। कृष्णा तिन्हें देखिके भूप॥ जीवितते लहिहै निरवेद। पाय द्यूतते अघकी खेद॥ कर्ण शकुनि कहि ऐसे बैन। चुपव्है रहे पापके ऐन॥ ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ बैन सूतसुतके सुनि भूप। हर्षितव्है फिरि दीन स्वरूप॥ कहो कर्ण तुम भाषत जौन। मनमे बसति हमारे तौन॥ जहां बसत पाण्डव कृश रूप। तहां गमनकी आज्ञा भूप॥ हमै न देहैं तिनके हेत। रोवत रहत भरे दुख चेत॥ हमतें अधिक तिन्हैं अनुमानि। नृप धृतराष्ट्र तपोबल जानि॥ द्वैत विपिनमे और न कार्य्य। जेहि मिसितें तहँ चलिए आर्य्य॥ द्यूत समयमे कत्ते जौंन। कह्यौ वचन तुम जानत तौंन॥ तातें व्है न सकत निरधार। नहीं गमन अरु गमन विचार॥ भीम फालगुण कृष्णा सङ्ग। धरे अजिन वल्कल कृश अङ्ग॥ तिन्हैं देखिकै आनद आन। हमकों जानि न परत सुजान॥ मम श्री पाण्डव देखैं माम। तब मेरो जीवित अभिराम॥ तहां चलनको जौन उपाय। तुम अरु शकुनि विचारहु जाय॥ जो सुनिकै नृप गमन निदेश। हमकों देय न करै अन्देश॥ हमहूँ गमन अगमन विचार। करि ऐहैं नृप पास सबार॥ हसे भीष्म सह तहां पाय। सह सौबल सो कहेहु उपाय॥ भीष्म भूपको गमन निदेश। लहि चलिवेको करै उदेश॥ कहि तथास्तु ते घरकों जाय। कहो कर्ण उठि भोरहि आय॥ यह उपाय हम कियो विचार। तौन सुयोधन सुनहु उदार॥ गोधन सकल द्वैतवन माह। तिन्हैं देखिबेको नरनाह॥ यह मिसि कहि भूपतिके पास। चलहु पाय आज्ञा मतिरास॥ जात घोष यात्राकों भूप। नृप शासन देहै सुखरूप॥ कहत कर्ण हे जब यह बैन। आए शकुनि तहा मतिऐन॥ ठहरायो हम यहै उपाय। कहो सुयोधनसो सुखदाय॥ सुनि यह दुष्ट चतुष्टय सर्व। कर पर कर धरि हसे अखर्व॥ यह मत निश्चय मानि अनूप। गए सकल जहँ है कुरु भूप। बूझो तिन नृपसों आनंद। तिनसो सुख बूझो कुरुचन्द॥ समय पाय ले गए बनाय। तेहि भूपतिसों भाषो जाय॥ गोधन आयो निकट नरेश। ताहि लखनको करहु निदेश॥ कर्ण शकुनि तब बोले बैन। नाथ विकट गोधन सह चैन॥ आयो तिन्हे बिलोकन हेत। चहत सुयोधन गयो सनेत॥संख्या अङ्कन लेखन जौंन। चाहत दियो सविधि सो तौन॥ तह रमणीय देशमे भूप।

मृगया चाहत कियो अनूप ॥ आज्ञा देऊ भूप अभिराम। यह दुर्योधनको मन काम ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ मृगया गो खेलन सुखरास। हित न गोपगणको बिस्वास ॥ ह नरव्याघ्र पांडु सुत जौंन। सुनो समीप बसत तहँ तौंन ॥ देत न आज्ञा हम एहि हेत । सुनऊँ कर्णसो बचन सनेत ॥ छलते निर्जित दुःखित सर्ब। अतिशय निति तप करत अखर्ब ॥ धर्म्म अक्रोध अमर्षी भीम। अग्नि सदृश कृष्णा छवि सीम॥ दर्प मोह बश हो तुम सर्ब । करिहो तहँ अपराध अखर्ब ॥ भस्म करैंगे तपतें तौंन। न तरु शस्त्रतें अतिबलभौंन ॥ बसो धनञ्जय सुरपुर जाय। सब दिव्यास्त्र इन्द्रसों पाय॥ फिरि बनको आयो सो बीर । जेहि जिति भूपन्ह प्रथम गभीर॥सह दिव्यास्त्र वीर है तौंन। सुरपतिसुतसो लरिहै कौंन ॥ सावधान रहियो तहँ जाय। ननरु लहऊगे दुख समुदाय ॥ धर्मराजको कोउ अपकार। सैनिक करिहै जाय उदार ॥ तामे पठवऊ मानुष आन। नहो सुयोधन गमन बिधान ॥ * ॥ शकुनिरुवाच ॥ * ॥ भूप युधिष्ठिर पन करि जौंन । धर्म धीर करिहै सब तौंन ॥ भ्राता तास तास बश सर्ब। भूपति करिहै कोप न खर्ब ॥ मृगया इच्छा अति सब रूप। जैहैं तहां न जहँ ते भूप ॥*॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ ऐसे सुनि सौबलके बैन। दियो भूप आज्ञा बिनु चैन ॥ आज्ञा पाय सुयोधन भूप। चले सैन सब साजि अनूप॥ सह भ्रातन्ह सौबल राधेय। बनितन सह भरि मोद अमेय॥ चले पौरजन बालक बृद्ध । सहस अठारह पारथ रुद्ध ॥ तीनि अयुत गज अचल समान। पति असंख्य शकट बऊ मान ॥ नव हजार बाजी असवार। बऊ मृगया कर मनुज उदार ॥ भई पटह धुनि सघन महांन। दोय कोश चलि बसे सुजान ॥ *✽*✽*✽*✽*✽*✽*✽*✽*✽*✽*✽*✽*✽*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनायकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बन पर्वणि घोषयात्रायां दुर्योधनगमनोनामैकपञ्चाशदध्यायः ॥ *✽✽✽✽✽✽✽✽✽

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दुर्योधन जहँ तहँ बसत गए घोष जेहि बैर। बसे सजल सम देशमे सहित सैन नृपमौर ॥
शकुनि कर्ण भ्राता सकल बसे नृपतिके पास। गोधन लखो असंख्य तहँ सह बत्सन मतिरास ॥
अङ्क चिन्ह संख्या सहित गोधन लखो ललाम। बत्सन्हकों अङ्कित कियो रहे जे नूतन माम॥
गोपन सहित बिहार तहँ करन लगे कुरुबीर। सह सैनिक अरु पौर जन आनद भरे गभीर ॥
गायक नृत्तक गोपगण तहँ आए सह बाम। ह्वै प्रसन्न भूपति दए तिनको धन अभिराम ॥
व्याघ्र महिष मृग ऋक्ष गण सोरे सहित बराह। लिए सङ्ग यो पाल गण भूपति भरि उतसाह॥
शरसों भेदे वण्य गज पकरे बऊ मृग भूप। गोरसको भोजन कियो सह सैनिक सुख रूप ॥
देखत थल रमणीय बन कुसुमित फलित ललाम। गए द्वैतबनमे जहां रहो सो शर अभिराम॥

दैवेच्छासों तहँ गए रहे जँहां नृपधर्म । एकान्हिक मख करत हे बण्य हव्यसों पर्म ॥
रचि आश्रम सरके जहां चारो दिशि अभिराम । बसत धर्मनृप द्रौपदी भ्रातन्ह सहित ललाम ॥
दुर्योधन पठए तहां भृत्य चरनकों वास । चले द्वैतवनमे सकल ते सब सरके पास ॥
गन्धर्बन बारित कियो बनमे करत प्रवेश । गन्धर्बराज क्रीडार्थ तह कीन्हे रहो निवेश ॥
सहित अप्सरन्ह सुर सुतन्ह सरके चारो ओर । भृत्य भूपके फिरि गऐ करि न सके कछु जोर ॥
कहो सुयोधनसों बचन गन्धर्बनको जौन । नृप सैनिक पठए तिन्है काढनको बल तौन ॥
तिन गन्धर्बनसों कहे भटन्ह जाय ते बैन । तिन गन्धर्बनसों कहो दूत कुरु नृप बलऐन ॥
जाऊ इहांते चहत सो कीन्हो इतै बिहार । तब गन्धर्बन कहे इमि हसिकै बचन उदार ॥
भूप सुयोधन मन्दमति जनक समान लखै न । एसब हमको लखत नहि जौन कहत है बैन ॥
तुमहूँ जड हमसों कहत शासन ऐसों तास । जाऊ सुयोधन पै त्वरित नातरु लहिहौ नास ॥
यह सुनिकै सैनिक गऐ जहँा सुयोधन भूप ।

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

गन्धर्बनके बचन सब कहे तथा अनुरूप ॥

सुनत सुयोधन भटनसों ऐसे कहो रिसाय । गन्धर्बनको बिपिनि ते मारि निकारऊ जाय ॥
सुनत सुयोधनके बचन सज्य होय भट बीर । मथि गन्धर्बनको कियो बिपिनि प्रवेश गभीर ॥
गन्धर्बन बारित कियो सज्य होय भट बीर । मथि गन्धर्बनकों कियो बिपिनि प्रवेश गभीर ॥
गन्धर्बन बारित कियो कहि सु सामके बैन । तिन्है निदरि बनमे चले कुरु भट अति बलऐन ॥
चित्रसेन गन्धर्बपति पै गन्धर्बन जाय । कहो भिरे गहि शस्त्र लहि प्रभु शासन फिरि आय ॥
तिन्है देखिकै भट भजे दुर्योधनके सर्ब । तिन्है भजत लखि सूतसुत करिकै क्रोध अखर्ब ॥
बाण वृष्टि करिकै महत गन्धर्बनके अङ्ग । काटि गिराऐ भूमिपै सह कुण्ड सउमङ्ग ॥
चित्रसेनके लखित भे बध्यमान गन्धर्ब । फेरि लरे गन्धर्ब ते कोटिन आय अखर्ब ॥
गन्धर्बनतें पूर्ण भू क्षणमे भई अमान । शकुनि दुशासनभूप सङ्ग बैठि बन्धु बलवान ॥
लरण लगे करि कर्णकों आगे रथ चढि उद्ध । गंधर्बा लागे करण घेरि कर्णकों युद्ध ॥
भयो तुमुल रणरङ्ग तब बर्षत शस्त्र अखर्ब । शर सो पीडित व्है भए शिथिल रूप गन्धर्ब ॥
कियो उच्चस्वर सब्द तब कुरु सैनिक बरबीर । चित्रसेन लखिकै चलो पूरित क्रोध गभीर ॥
मारै अस्त्रनसों लगो लरन बीर बलवान। कौरव बीर भए सकल मोहित ते अति मान ॥
एक एक कौरव सुभटको दश दश गन्धर्ब। घेरि लयो चऊओर ते लागे लरन अखर्ब ॥
भजी कौरवी सैन सब व्है पीडित अति मान। एक रहो ठाढो तहां कर्ण बीर बलवान ॥
कर्ण सुयोधन शकुनि सह करन लगे तव युद्ध । शक्ति शूल पट्टिश कुलिश लगे चलावन उद्ध ॥

कीन्हिन्ह ते गन्धर्व तव भिरे कर्णसों घेरि । मारण लागे कर्णको चहुँ दिशनिसों ढेरि ॥
मारि सूत हय अङ्ग सब रथके लए उखारि। तिल समान करि तोरि कै छितिपर दीन्हे डारि॥
खङ्ग चर्म धरि स्यन्दनते कूदि सूतसुत वीर । रथरप बैठि बिकर्णके रथतें भज्यो अधीर ॥
भजत कर्णके चमू सब देखत भाजी भूप। भयो सुयोधन युद्धतें नहीं पराजित रूप ॥
गन्धर्वणको चमू लखि आवत प्रबल महान। दुर्योधन धरि धनुषको लागो बर्षण बान॥
गन्धर्वन शरवृष्टि लखि रथसों लपटे जाय । मारि सुयोधनको दियो खडित रथते गिराय ॥
देखि सुयोधनको गिरो रथते अति सुकुमार । चित्रसेन गहि लेचलो जीवित वीर उदार ॥
सहित दुशासन अरु वीविंशित चित्रसेन रणधीर। बिन्द और अबिंद सह पहिले चलो अधीर॥
भूपग्रहण भ्रातन सहित रानिन्ह लखि भय पाय । सेना भजि नृप धर्मकी लई शरण सुखदाय॥
सैनिकाऊचुः॥ रानिन सहित सुयोधनहिं गहि गन्धर्व गभीर। लेयँजात हैं समरतें धावहु पारथवीर॥
भूपसुयोधनके सकल वृद्ध अमात्य सुजान । आर्त पुकारत तहँ गए जहँ पाण्डव बलवान॥
दीन वृद्ध मागत शरण ऐसें करत पुकार । धर्मनृपतिसों सुनत सो बोले भीम उदार ॥
सहतयत्न करि सङ्ग लैं सेना साजि अखर्ब । करिबैं जो हमकों रह्यो सो कीन्हो गन्धर्व ॥
दुष्ट मंत्रकरि करनको कार्य्य अन्यथा जौन । कितव कियो हो औरविधि भयो कार्य्य सो तौन॥
ताको हन्ता और है अरि अशक्तको जौन। गन्धर्वन सो प्रगट करि चरित देखायो तौन॥
प्रियकरता मम पुरुष कोउ हैगो अगम उदार। यत्न बिना ह्यां जेहि हरो हमरे शिरको भार॥
शीतातप सहि भए हम बनमे बसि कृशरूप। ताहि देखायो चहत शठ अपनो बिभव अनूप॥
सुने युधिष्ठिर भीमके एहिविधिके बहु बैन । परुषबचनको कहनको बोले औसर है न॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥

प्राप्त हमारी शरणमे कौरव आरतरूप। ऐसे कहिबे बचन हैं भीम न तुम्हें अनूप॥
कलहै बैर कुलसे भए कछू कारणकों पाय। कुलधर्षण परते नहीं सहै सन्त समुदाय॥
जानत दूत हमकों रहत बहुदिनते गन्धर्व । हमै निदरि कै यह कियो अप्रिय कर्म अखर्ब॥
दुर्योधनके ग्रहणते सह दुखिन मतिराश । कुरुकुलको जो धर्म सो भयो सर्बथा नाश॥
शरण प्राप्तके नाशकों रक्षणकों कुलधर्म। उठहु बीर तुम सज्ज व्है अस्त्र शस्त्र धरि पर्म॥
जिष्णु नकुल सहदेव सह भीम महाबल धीर। दुखिनसहित सुयोधनहि मोचि लेहु बरबीर॥
ए रथ कञ्चन घटित है सायुध बलमय सर्ब। वायुबेग सूतन सहित ध्वजको धरे अखर्ब॥
सूत इन्द्रसेनादि सह रणकोविद मतिउद्ध । तिन पै चढि गन्धर्वगनसों करि कै अतियुद्ध॥
मोचन करहु सुयोधन हि प्रथम साम कहि बैन।मृदु कर्कश फिरि युद्ध करि तिन्हे जीति बलऐन॥

रक्षणार्थ धावन कहे साँजलि रणहीं आय। अरिको मोचन पुत्रके जन्मकृते सुखदाय ॥
लहे सुयोधन शत्रुसों तो भुजबलसों त्रान। सुनऊ बृकोदर जगतमे याको कहा समान ॥
मख कीन्हे प्रारंभ मख भङ्ग होयगो तौन। ननरु कुटावन शत्रुकों हमऊ करते गौन ॥
धर्मराजके बचन सुनि उठि फाल्गुण रणधीर। हेतु सुयोधन मोक्षके करी प्रतीज्ञा बीर ॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

सुतन जौन धृतराष्ट्रके ते तजिहै सुनि साम। गन्धर्व राजको रक्त तौ भू पीहै अभिराम ॥
सत्य प्रतिज्ञा जिष्णु की कुरु सैनिक सुनि सर्व। भए सचेत बिचारि कै आनद भरे अखर्व॥
बचन युधिष्ठिरके सुनत भीमादिक बरबीर। व्है प्रसन्न ठाटे भए आनद भरे गभीर ॥
अभेद्य कवचन पहिरे सकल दिव्य अस्त्र धनुधारि। पवनबेग रथपै चढे अरिजय युद्ध बिचारि ॥
नरव्याघ्र आतुर चले तिन्हे देखि गन्धर्व। जय बांछित रणको फिँरे ते धरि शस्त्र अखर्व ॥
पैठे फिरि गन्धर्व सब चमुमे आय गँभीर। चारिचढे रथपैं चितैं पाण्डुतनय रणधीर ॥
बाँधे व्यूह बिलोकि कै गन्धर्वनकों उद्ध। धर्मराजके बचनतें करण लगे मृदु युद्ध ॥
नहीं शक्य मृदुयुद्धतें तिनकों बिजै बिचारि। जिष्णु कहे तिनसों वचन सहित साम निरधारि ॥
तजऊ सुयोधन बन्धु मम धातन्ह सबबलश्रैन। गन्धर्वन सुनि जिष्णुके साम सहित ए बैन॥
गन्धर्वन हसि कै कहो सुनि फाल्गुणको बैन।शासन मान्य सुरेशको हमै औरको है न॥
गन्धर्वनके सुनि बचन औसे जिष्णु अमान। फिरि गन्धर्वनसों कहे बचन जिष्णु बलवान ॥
योग्यन गन्धर्वेशके करिबो निन्दित काम।करिकै सङ्गम मनुजसों हरि लीबो परबाम॥
तजऊ पुत्र धृतराष्ट्रके दारुण सह सुनि साम।ननरु जीति कै तुम्हे हम लेहैं बन्धु सबाम ॥
यह कहि कै तीक्षण शरन्ह बर्षे फाल्गुणबीर। गन्धर्वौ लागे लरन छोडन शस्त्र गभीर ॥
लरे तुमुल करि युद्ध अति दुऊँदिशि बीर रिसाय।गन्धर्वन शरबृष्टि करि चऊँ दिशि लीन्हो छाय॥
चारि बीर पाण्डव तहाँ हे गन्धर्व अनेक। ते दौरे चऊँओरतें करि रथ भग्न बिबेक ॥
कर्ण सुयोधनको कियो जेहिबिधिसों रथभग्न। तथा पाण्डवनपै चले खेचर रणमदमग्न ॥
मारि पाण्डवन्ह शरणसों ते गन्धर्व अमान। मारिभूमिपर डारि दिय सघन बरषि कै बान ॥
शरपण्डित गन्धर्व ते भए महा अतिकाय। पाण्डव बीरन्हके निकट नहीं शके ते जाय ॥
गन्धर्वनपर क्रोध करि जिष्णु बीर बलवान। दिव्यास्त्रन छोडन लगे करि प्रयोग अभिमान ॥
कोटिन्ह हनि गन्धर्व ते यमपुर दए पठाय। महाबीर अर्जुन प्रबल आग्नेयास्त्र चलाय॥
महा धनुष धरि भीम तव बिशिख बज्रसे डारि। महिमण्डित कीन्ही तहाँ गन्धर्वनकों मारि ॥
[illegible] माद्रीतनय करि लाघव तजि बान। हने अमित गन्धर्वगण चण्ड सशर सनमान ॥
पीडित व्है दिव्यास्त्रसों ते गन्धर्व सुजान। गान्धारीके सुतन्ह लै नभकों कियो पयान ॥

जए जात नभको चिते कौरवको कुरुबीर । पक्षोसे रोके सकल करि शरपञ्जर धीर ॥
रुद्ध होय ते क्रोध करि वर्षे शस्त्र अनन्त । खड खंड अर्जुन करे शस्त्र तीन धृतिमन्त॥
भल्लनसों भेदित करे गन्धर्वनके गात । गिरन लगे ते गगणतें जैसे उपल प्रपात ॥
अस्त्रनसों शरवृष्टिसों काटि धनञ्जय सर्व । स्थूणकरण अरु ऐन्द्र तब डारो अस्त्र अखर्व ।
वध्यमान गन्धर्व ते छिति नभतें धरि बीर । शरवर्षा लागे करण करि के क्रोध गँभीर ॥
आग्नेय और सौम्यास्त्रकों कुन्तीसुत वर बीर । दह्यमान गन्धर्व व्है तिनते भए अधीर ॥
गन्धर्वनकों व्यथित लखि चित्रसेन बलवाँन । चलो क्रोध करि जिष्णुपर लेकै गदा अमान ॥
गदा आयसी तास हनि बाणनसों कुरुबीर । सात खण्ड करि भूमि पैं दीन्हो डार गँभीर ॥
सप्त खण्ड लखि गदाके चित्रसेन बलवान । अर्जुनसों लागो लरण व्हैकै अन्तरध्यान ॥
अस्त्र जौन गन्धर्वपति दिव्य तेज द्युतिमान । दिव्यास्त्रन्हसों व्यर्थ ते किए अर्जुन बलवान॥
चित्रसेनकों जानि कै अर्जुन अन्तर्ध्यान।दिव्यास्त्रन्हसों हनन तब ताहि लगे बलवान ॥
चित्रसेनकी धनुष धुनि सुनि अर्जुन गम्भीर । अस्त्र शब्दवेधीनसों मारण लागे बीर ॥
तिन शस्त्रन्हसों बिद्ध व्है चित्रसेन गन्धर्व । रूप देखायो आपनो कहि प्रियसखा अखर्व ॥
सखा निरखि कै चित्रसेनको प्रिय अर्जुन बीर। कियो अस्त्र संहार तब धनुर्वेदबिद वीर॥
करत अस्त्र संहार लखि अर्जुनको कुरु सर्व।धनुकर्षनकों छोडि कै रथगति कीन्ही खर्व॥
भीमसेन अर्जुन नकुल सह सहदेव सुजान । चित्रसेन सब कुशलको कियो प्रश्न सुखदान ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

चित्रसेनसों जिष्णु इमि कहे वचन मुसकाय । कियो कौरवनके ग्रहणमे यह का बेवसाय ॥
कहो सदारसुयोधनहिकौनहेतुतुमधीर।चित्रसेनउवाच। अभिप्राय ताकौबिदित हमैभयायहबीर ॥
कर्ण सुयोधन पापमय दुष्टात्मा दुखदान । क्लेशित जानि बनस्थ ते तुम्हे अनाथ समान॥
बिभव देखावन आपनो इत आए अतिमान।हँसिवेकों सह द्रौपदी तुम्है दुष्ट बलवान॥
वाञ्छित तिनको जानि कै हमसों कहो सुरेश। सहित अमात्य सुयोधन हिँ गहिवेको सुनिदेश ॥
शिष्य सखा प्रिय पांडुसुत तव अर्जुन बर बीर । आए इतै सुरेशकी आज्ञा पाय गभीर ॥
। एहि दुरात्म हि पकरि हम लेजै है सुरधाम ।

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

। भ्राता मम यातें तजहु चित्रसेन अभिराम ।
। शासनतें नृप धर्मके यह मम प्रिय कुरुबीर ।

॥ * ॥ चित्रसेनउवाच ॥ * ॥

। नहीं बिमोक्षण योग्य यह पापीगर्व गभीर ।

आयो यह करि के कपट बांछित करिबे जौन। धर्मराज तुम द्रौपदी जानत हौ नहि तौन ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

चित्रसेन सह पार्थ सब गए जहाँ नृपधर्म । चित्रसेन सिगरो कहो ताकों बाँछित मर्म ॥
धर्मराज गन्धर्बपतिके सुनो सिगरे बैन । मोदए कहो सुयोधन हिं भ्रातन सहित सचैन॥
आए मेरे भाग्यतें चित्रसेन सह सैन । निग्रह कीन्हो दुष्टको सह अमात्य मदश्रैन ॥
कियो महा उपकार मम गन्धर्बन सह बीर । याके मोचनते रहो मम कुल सुयश गभीर ॥
धर्मनृपति सो बिदा ह्वै चित्रसेन गन्धर्ब । गयो आपने लोककों सहित अप्सरन्ह सर्ब ॥
शक्र अमृतकी वृष्टि करि ज्याए सब गन्धर्ब । जिन्है पांडवन्ह समरमे मारे शरन्ह अखर्ब ॥
दियो सुयोधनभूपकों दारए सहित छुटाय । कियो पांडवन्ह कर्म यह दुष्कर अति बलकाय ॥
कुरुकुलते पूजित लसे पांडवन्ह सर्ब । यथा यज्ञके धाममे पावक पाचँ सपर्ब ॥
मुक्त सुयोधनसों कहो धर्मराज इमि बैन । ऐसो साहस फेरि है करिबो योग्य तुम्हैं न ॥
साहस करता नहि लहत सुखकों भासत बेद । कुशल जाऊ भ्रातन सहित कीजो कछू न खेद ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

बन्दि धर्मनृपको चले दुर्योधन सह भ्रात । मरण समैमे पुरुष ज्यौं हतइन्द्री ह्वैं जात ॥
गएँ सुयोधनके सकल बिप्र आय तपधाम । पूजि प्रशंशित धर्मनृपको कीन्हो अभिराम॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथेनकविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि घोषयात्रा वर्णनोनाम द्विपञ्चाशदध्यायः ॥ * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बध्य जीतो शत्रुतें मदमान अमरषधाम । बाऊबलतें कियो मोचित पांडवन सह बाम ॥ गर्ब गिरिसो सो सुयोधन धरे लज्जित वेश । कियो हास्तिननगरमे तिन कौनभाँति प्रवेश॥ कहऊ सह बिस्तार हमसों कथा तौन ललाम । चहत हम सब सुनो तुमसों कथा मतिकेधाम ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्मराज कीन्हो बिदा दुर्योधनकों भूप । चले अधोमुख दुःखसो पूरित लज्जित रूप ॥
चले सैन सह स्वपुरकों भरे शोक अतिमान । बसे सजलथल लखि गए कछू दूरि तजि जान ॥
बैठे जहँ पर्य्यङ्कपर रहे सुयोधन भूप । राहुग्रसित शशि भोरको जैसे लसान स्वरूप ॥
कर्ण तहां आयो भजो रहो जो तजि रणरङ्ग । कुशल तुम्हारो भाग्य बश फेरि लहो हम सँग ॥
गन्धर्बनको तुम कियो बिजय भाग्य बश भूप । लखत भाग्यते बन्धु तव रणजेतार अनूप ॥
लखत तिहारे हम भजे गन्धर्बनते बीर । भजी सैनको फेरि हम सके धरायन धीर ॥

शरक्षतते हम व्यथित व्है रण तजि भागे भूप । अक्षत तुम्है भ्रातन सहित देखत अद्भुत रूप ॥
मुक्त भये देखत तुम्है एहि रणतें अतिमान । गन्धर्वनकों युद्धमे जीतै कौन पुमान ॥
भ्रातन सह यह कर्म तुम कीन्हो अद्भुत वीर । गन्धर्वनकों समरमे और न जेता धीर ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सुनत सूतसुतके वचन दुर्योधन बिलखाय । कहन लगे गद गद गरें दृगजलसों उमगाय ॥

॥ * ॥ दुर्योधनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बिना जाने कहत हो तुम सूत सुत ए बैंन। नहीं यातें करत निन्दित तुम्है हे बलअैंन ॥ जानि हम गन्धर्व जीतो युद्धमे बलवाँन । कहत ऐसे वैन तुम सुतसूतके मतिमान ॥ युद्धमेरे कियो भ्रातन हम हि सह चिरकाल । हने चारोओरतें तिन डारि शस्त्र बिशाल ॥ नहि हँम सम खेचरणके याते करि जब युद्ध । सह पराजय समरमे हम लहो बन्धन उद्ध॥ सहित भ्रातृ अमात्य पुत्र सदार हमकों तैंान। पकरि कै गन्धर्व बिहसत कियो नभपथ गान ॥ गए भाजि अमात्य सैनिक पांडवनके पास । जानि शरणद तिन्है मागो शरण पूरित त्रास ॥ जात है गन्धर्व लीन्हे पकरि कै बलधाम । करह मोक्षण वीर भूप सुयोधनहिँ सह बाम॥होय गो कुरुबधुनसों पर पुरुष परश सुजान। पांडुके सुत ज्येष्ठ यह सुनि बचन धरिकै मान ॥ कहे अनुजनसों हमारे मोचिवे कै बैंन । सज्ज व्है चढि रथन पैंते गए तहँ बलअैंन ॥ सामके कहि बचन तिनसो प्रथम अर्जुन वीर । नहीं छोडो हमै सुनि सो क्रोध करि रणधीर ॥ भीमादि पांडव लगे वर्षण खेचरण पर वान । छोडि रण गन्धर्व भाजे गगणकों बलवान ॥ हमै खैचत दीनसें सब मुदितमन गन्धर्व । तहाँ शरपञ्जर बिलोको जिष्णु रचित अखर्व ॥ तजत अर्जुन दिव्य अस्त्रनकों बिलोकि महाँन । सखा कहि तव प्रगट भो गन्धर्वपति बलवाँन ॥ चित्रसेनसो पांडवनसो मिलो बूझत चैंन। परस्पर मिलि तजो तिन सन्नाह बलके अैंन ॥ एक व्है गन्धर्व पांडव महत आनद पाय । जिष्णुकों अरु चित्रसेनं हिँ सबिधि पूजे आय ॥ मिलत अर्जुन चित्रसेन हि कहो अैसो बैंन । मोचिवेको कौरबनके योग्य तुम बल अैंन ॥ नहीं धर्षण जियत पांडव कुरुनको है आम । सुनत अर्जुनके वचन ए चित्रसेन ललाम ॥ कहो सो गन्धर्व करि हम मंत्र आए जैंान । लखो हम ए तुम्हैं जात देखाइवे श्री तैंान ॥ वचन सुनि हम कर्ण तिनकों कहे जो गंधर्व । चहो पैठो भूबिवरमे भरे लाज अखर्व ॥ धर्मनृप पहँ जाय सह गन्धर्व पांडव वीर । कियो हम दुर्मंत्र जो सो कहो सर्व गँभीर ॥ स्त्रियन सह हम बद्ध पर बश भए हे सुतसूत । जो युधिष्ठिर कियो मोचित दुःख तैंान अकूत ॥ जे निकासे गए हमसों सदा हम रिपु तास । दुर्बुद्धि मोचित कियो तिन मम वारि जोते नास ॥ मरण होतो प्राप्त हमकों युद्धमे अभिराम । श्रेय होतो सुयश हमको सूरलोक ललाम ॥ करतव्य हमकों जैान है अब

सुनऊ तात गँभीर । करि निराशन मरैंगे हम जाऊ तुम घर बीर ॥ जाऊ हस्तिन नगरको मम सकल भ्राता कर्ण।तुमहिं आदिक करत रहि हो नित्य मेरो स्मर्ण।।जाऊ सहित दुशासनहि तुम स्वपुरकों निरधारि। नहीं पुर हम देखि हैं रणमाँह अरिसों हारि।।शत्रुके हम मानहर ह्वै मित्रके हतमान।मित्र सों कह भयो क्षत यह शत्रुको सुखदान।।वारणाव्हय नगरमें का कहैंगे प्रति भूप। विदुर भीषम द्रोण कृप जहँ सोमदत्त अनूप ॥ और जे बाल्हीक सञ्जय वृद्ध सम्मत जौन। कहा हमसों कहैंगे हम कहैंगे क्षत कौन ॥ रिपुनके उरशीश पैं हम चढे विक्रम चैन। भ्रष्ट होय स्वकर्मतें तहँ कहैंगे का बैन ॥ दुर्विनीत हि पाई कै श्री रहति नहिँ चिरकाल। तजत है ऐश्वर्य विद्या यथा हमकों हाल।।नहीं यह दुश्चरित हमकों रहो करिबो कर्म्म । आपनी दुर्बुद्धितें यह लह्यो हम दुःशर्म।।नही जीवन योग्य याते हमै हे सुनु कर्ण। शत्रु उद्धत कष्टते को लहत है नहि मर्ण।। शत्रुभयेते हसित हम मान पौरुष हीन। भरे विक्रम मान देखत पाण्डवनको पीन ।।वैशम्पायनउवाच।। कहो चिन्तित ह्वै सुयोधन यों सुदुशासन पास।करत हम अभिषेक भूपति होऊ तुम मतिरास।करऊ शासित कर्ण शोबल भूमिपालित जौन।सहित भ्रातन्ह इन्द्र ज्यों सह सुरन्ह त्रिभुवनभौन।।ब्राह्मणन्हमे वृत्ति कीजो नहीं सहित प्रमाद।सुहृद गुरगण पौरजन पुर पालियो निरवाद।।कण्ठसों लपटाय कै फिरि जाऊ बोलो भूप।सुनि दुशासन बैन नृपके कहो सकरुण रूप ।। गरो गद गद जोरि अञ्जलि भूपके परि पाय। साश्रु बोलि प्रसीद क्षितिपर गिरो कम्पित काय।। नेत्रजलसों धोय नृपपद कहो ऐसे बैन । नही हमसों होय गो यह सुनऊ हे मतिऐन ।। भूमि नभ फटिजाय छोडै प्रभाके शशि भान। वायु निश्चल होय शीतल अग्नि चल हिमवान ।। नहीँ शासन करिहि गे हम तुम्है बिनु भू भूप। कहो फिरि फिरि यों दुशासन धरें सकरुणरूप।। भूप तुम एहि वंशके हो कहत सत्य विचारि। पाय पै परि लगे रोवन उच्चस्वरकों धारि ।। लखि सुयोधन सह दुशासनको सुदुःखित रूप। भरो दुखसो कर्ण बोलो करऊ खेद न भूप।।कहा रोदन करत बालक सदृश कौरव बीर। शोक ते जौं जाय दुख तौ करऊ भूप गभीर ।। नहीँ तातें शोक करिए धीर्य्य स्वधरम धारि। शत्रु हर्षित होंहि गे सह शोक तुम्हहि निहारि।।पाण्डवन यह कियो तुमप्रति जौन मोचन कर्म। देशमें निज बसत नृप प्रिय करण ताको धर्म ।। पाल्यमान स्वदेशमें तव बसत पाण्डव सर्व। नहीँ तुमकों योग्य एहिविधि भएँ शोच अखर्व॥ दुखित है तव भ्रात तो व्रत देखि अनशन भूप। चलऊ उठि कै करऊ भ्रातन्हकों समोद अनूप ।। प्राप्त नहि लघु सत्व ताको भए हो द्रुत धीर। पाण्डवन जो कियो मोचन कहा अद्भुत बीर ॥ देशवासी आपने निज सुभट सैनिक जौन। ज्ञातहू अज्ञातहू नृपको करै प्रिय तौन ।। न्यायतें एहि कियो मोचण पाण्डवन तव भूप। दैव इच्छातैं छुटे अव कहा रुदन अनूप।।उठऊ भूपति स्वस्ति तव अब करऊ नहि चिरकाल। करऊ गे मम बचनको नृप नही जौं प्रतिपाल ॥ औसि तजि ह प्राण हम तव

चरण ढिग मतिरास। करत अनशन ब्रती नृप को भूप भूसुर हास॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ सुनि सुयोधन कर्णके एहि भांतिके वर बैन। उठे नहि करि नियत जावें स्वर्गकों मतिऐन॥ धरे अनशन मरणको ब्रत नृप सुयोधन धीर। शकुनि बोले नीतिके तब बचन बुद्धि गभीर ॥ * ॥ शकुनिरुवाच॥ * ॥ कर्णके तुम सुने वचन सुनीति नियमित गाथ।हरी हम जो परम श्री सो तजें का नृपनाथ॥ योग्य हो न अबुद्धिते तुम भूप तजिबे प्राण। बृद्ध सेवन कियो तुम नहि जौंन हैं मति मान॥ हर्ष नाशक दैन्य आए करत जोन बिचार। नष्ट ताको होति श्री जिमि आमपात्र सबार। क्लीव कादर दीर्घसूत्री जो प्रमादी भूप। व्यसन बिषयाक्रान्तको नहि प्रजा भजति अनूप॥ कृपा करज्ञ न तजज्ञ आपु हि सुकृत समुझज्ञ बीर। राज्यकों चलि नृपन्हकों यश धर्म लेज्ञ भगीर॥ किया यह तुम जानिके सुकृतज्ञज्ञजे भूप । सौभ्रात्र करि कै पाण्डवनको देज्ञ राज्य अनूप॥ होज्ञ गे सब भांतिसो तब सुखी तुम कुरुबीर ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ शकुनिके एहि भांतिके सुनि सकल बचन गँभीर॥ चरण पतित दुशासन हि गहि लाय उरसों भूप। बचन ऐसे कहे गहि निर्वेद ताको रूप॥ हमै काम न भोगसों तन तजैंगेव अनित्य। जाज्ञ तुम सब नगरकों गुरुन्ह पूजेज्ञ नित्य॥ भूपके तिन वचन सुनि कैं कहे ऐसे वैंन। जौंन गति है रावरी सों हमै है मतिऐंन॥ तुन्हैं बिन हम जाहिं कैसें नगरमे सुनु भूप। सुहृद भ्रातन सहित हम सबकों न धारे रूप॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ बज्ञत बिधिसों सुहृद भ्राता हारि गे समुझाय। मरणनिश्चयसों नहीँ मन हरत भो कुरुनाय॥कुर बिछाय सुभूमि पर शुचि जाय बैठो भूप। चीरा म्बरी करि भक्ष धारण मरणको सब रूप॥दाहार्थ बस्तु मगाय राखी मौन ब्रतको धारि।पाताल बासी दैत्यपति मत भूपको निर धारि॥ मरणते कुरु भूपके निज जानि हानि स्वपक्ष। करी तिन उतपन्न कृत्या मंत्र जपि कै दक्ष॥ कहो कृत्यज करैं का हम कहो तब दनुजेश। नृप सुयोधन ताहि ल्यावज्ञ जायके एहिदेश॥ सुनत जाय सुयोधन हिँ तुर तहां ल्याई तौंन। नृपसुयोधन पास दनूजन्ह कियो निशिमे गान॥ दनूज होय प्रसन्न ऐसे कहे नृपसों वैंन॥ * ॥ दानवाऊचुः॥ * ॥ धीर बीर समर्थ तुमकों योग्य अनशन हैं न॥आत्मत्यागी अधोगतीकों जात है सुनु भूप।पाप कर्म न करत तुमसे बीर सुमति अनूप॥ धर्मार्थ सुयश बिनाशिनी सुख शत्रु वर्धनि जौंन।बीर्य्य प्राण प्रताप हारिणि धरज्ञ मनहीं तौंन॥ कहत तुमसों दिव्य करि हम सत्य भूपति बैन। सुनज्ञँ तुम निर्मान अपनी देहको मतिऐन॥पुरा हम सह करि तपस्या लहे वर हर पास । उर्द्धतन तो भयो निर्मित बज्रमय बलरास॥ अस्त्रसों सु अभेद्य सो है ऊर्द्धतन तव भूप। अधो तन तव कियो देवा पुष्पमय अतिरूप॥ कियो इश्वर सहित देवी देह तो बलभौंन। देव हो तुम भूप तुमकों कहत मानुष कौन॥दिव्यास्त्रबिद भगदत्त आदिक भूपक्षत्री जौंन।कियो चाहत रिपुनको तव नाश रणमे तौंन॥ करज्ञ तुम न बिषाद तुमकों है नहो भय भूप। भए सह तो बीर दानव धारि क्षत्री रूप॥

ब०प० द्रोण कृप हि समेत क्षत्री और जे बलवान। कृपा तजि ते लरैंगे तव रिपुनसों अतिमाम ॥ पुत्र भ्राता शिष्य बालक वृद्ध जे जन ज्ञात। तिन्है रणमे मारिहैं नहि छांडि है सुनु तात ॥ निस्नेह है ए दनुज भूपस्वरूपते करि क्रोध। अरिनको संहार करि ह धरऊ कुरुपति बोध ॥ जिसु सम्भव बसति है भय जौन तुम मे बीर। तौन ताके नाशकी बिधि बिहित सुनऊ गभीर ॥ असुर नरक जो बयो मारो तास आत्मा आय। कर्णकी सो मूर्त्तिमे बशि धरे अति बल काय॥ समुझि कै सों बैर लहि है केशवार्जुन साथ। तिन्है रणमे जीति है सों महा बल कुरुनाथ॥महारथ अरिदमन कर्णहूँ जानि कै सुर भूप। तास छल करि कवच कुण्डल लयो मांगि अनूप॥ दैत्य राक्षस पटै यातें दए हम वऊमान। तौन संशप्तक भए हैं महारथ बलवान॥हनैगे ते जिष्णुको करि युद्ध अति रणधीर। भूमिको तुम भोग करि हो एक कुरुपति बीर॥नष्ट तुमकों भए बिनशत दनुज पक्ष अनूप। अन्यथा नहँ करऊ मति तुम दनुजकों गति भूप॥ सुरनकों गति सदा पाण्डव भूप हैं सुखदाय॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ एहि भांति दनुजन्ह नृपसुयोधनसों सु कहि समुझाय ॥ बिदा कीन्हो पुत्र सम हिय लाइ करि सनमान। यथा स्थिति करि बुद्धि नृपकी दनुज बिबिधि बिधान॥ कहो कृत्या गइ तहँ ले सो सुयोधन भूप। रहे अनशन धरे व्रत जहँ भरें खेद कुरूप ॥ पूजि कृत्यहि बिदा करि यह चरित भोर बिचारि। जीति हैं हम पाण्डवनको कियो दृढ निरधारि ॥ कर्णकों संशप्तगणकों युद्ध जेता मानि।धरो धीरज बिष्णु के बधयोग्य नृप अनुमानि॥ बसति आत्मा नरककी सो कर्णके तन धीर। जनम जानि सुदैत्यगणको घातरुप गँभीर ॥ भीष्म कृप अरु द्रोणको है चेत दनुजाक्रान्त।लरैं मे ए युद्धमे निस्नेह होय नितान्त॥दनुजको सम्बाद कहत न मौन धारें भूप। कर्ण बूझो जाय भोरहि दीन धारे रूप॥ मृतन जीतत शत्रु देखत जियत भद्र अनूप। मरण भीति बिषादको यह है न औंर न भूप॥अङ्कमे गहि भूपको कहि कर्ण ऐसे बैन। उठऊ शोचत कहा औसर शोचिबेको है न॥तापकरता अरिनको सोसहत मृत्युनबीर।लखि पराक्रम करऊभय का जिसु को गँभीर॥ सत्य तुमसों करत हैं हम यह प्रतिज्ञा उद्ध। गएँ तेरह बर्ष हमसों होय गो जब युद्ध॥पाण्डवनको जीति तब बश करै गे हम भूप। समुझि असुरन्हके बचन सुनि कर्णके अनुरूप॥ दई आज्ञा सैन सज्जित करनको गम्भीर। चली सो चतुरङ्गिनी सजि सहित हर्षित बीर ॥ सुनत आशीर्वादके द्विजबरनसों बर बैन। चलें नृप धृतराष्ट्र आगे सुनतहीं सह सैन ॥ कर्ण शकुनि सभ्रात आवत नृप सुयोधन बीर। बाल्हीक भूरिश्रवा भूपति सोमदत्त गभीर ॥ गए नृप धृतराष्ट्रके सँग भरे आनद वेश। क्षिप्र जाय लेवाय आए कियो नगर प्रवेश ॥ *—*—*—*—*—*—*—

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वनि दुर्योधनप्रायोपवेशनवर्णनोनाम त्रिपञ्चाशदध्यायः ॥ *—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

वन बसत श्रीनृपधर्म । तेहि द्वैतवनमे पर्म ॥ धृतराष्ट्रसुत सह कर्ण । अरु शकुनि दुर्मति भर्ण ॥ भीष्म कृप सह द्रोण । कियो का मतिभौन ॥ कहहु सञ्जय तौन । करि हस्तिनापुर गौन ॥ * *

॥ * ॥ सञ्जयउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यह भीषम सुनिके बृत्तान्त । कहो सुयोधनसोंमतिकान्त ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ कहो बचन जो तुमसों तात । भूप सुयोधन बनको जात ॥ गवन तुम्हारो रुचो न तौन । तुम तह जाय कियो छत जौन ॥ ग्रहण तिहारो भो तहँ बीर । शत्रुणसों रण हारि अधीर ॥ तुम्हे पाण्डवन्ह मोचो बीर । कर्ण लखत तब भजो अधीर ॥ कर्ण पराक्रम देखो जौन । तूर्यांस नहीं पाण्डवके तौन ॥ सौर्य धर्म बिधिवत धनुबेद । कर्ण न जानत इनको भेद ॥ तातें चमा करहु कुरुभूप । सन्धि पाण्डवनसों सुख रूप ॥ सुनत भीष्मके हित मित बैन । चले सुयोधन गहि गृह ऐन ॥ शकुनि कर्ण दुःशासन साथ । तेउ गए जहां कुरुनाथ ॥ तिन्हे जात व्है लज्जा भाल । भीषम गयो अपने धाम ॥ गए भीष्मके फिरि तह आय । मंत्रकरण लागे कुरुराय ॥ कौन कार्य करि लहिऐ श्रेय । कहहु मंत्र सो हित सुख देय ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥ सुनहु कहत हम सो कुरुभूप । भीष्म हमैं निन्दत अति रूप ॥ प्रसंशित करत पाण्डवन्ह जौन । राखि द्वेष तुमसों हियभौन ॥ प्रभु तव निंदा तुम्हे समच्छ । कहो पाण्डवनको यश स्वच्छ ॥ आज्ञा मोहि देउ सह सैन । जीतौ भूमि सकल बलऐन ॥ चारि पाण्डवन्ह जीती जौन । लेहै जीति एक हम तौन ॥ देखै भीष्म कुला धम तौन । हमैं तुम्हे निन्दकहैं जौन ॥ यह सुनि बचन कर्णके भूप । बैन कर्ण सो कहे अनूप ॥ खहिकै तुम्हे भए हम धन्य । तुमसो प्रबल न ममहित अन्य ॥ कियो चहत दिग्विजय सुधीर । तौ तुम जाऊ सबल बरबीर ॥ कर्ण सुयोधनके सुनि बैन । सेना सज्ज कियो बलऐन ॥ पाय मुहूर्त शुभ सुखदान । चलो सविधि करि मङ्गल स्नान ॥ * ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ कर्ण महाबल सहित सहाय । रुन्धित कियो द्रुपदपुर जाय ॥ द्रुपद नृपतिसों करि अति युद्ध । बश करिकै कर लियो समृद्ध ॥ तिनके निकट रहे जे भूप । तिन्हे जीति कर लियो अनूप ॥ तहँते उत्तर दिशिको जाय । भूपन्ह जीति कहु कर पाय ॥ भगदत्तहि जीति लियो कर बीर । हिमगिरिपै चढि गयो गभीर ॥ जीति तहाँके भूपति सर्व । बशकरिकै कर लियो अखर्व ॥ गिरितें उतरि पूर्वदिशि जाय । जीते भूप महाबल काय ॥ अङ्ग कलिङ्ग बङ्ग मिथिलेश । कर्कखंड सह मगध नरेश ॥ आवसीर सह कोशल भूप । तिन्हे जीति कर लियो अनूप ॥ पूरब दिशा जीतिकै सर्व । बत्स भूमिकों गयो अखर्व ॥ मृतिकावती कौशली पुरी । मोहन पत्तन त्रिपुरी रुरी ॥ इन्हे जीति कर लेय महान । फिरि दचिण दिशि गो बलवान ॥ रुक्मिण नृपसों करि अति युद्ध । कियो प्रसन्न कर्ण बल उद्ध ॥

भो प्रसन्न तव रणतें बीर। कहि रुक्मिन बसु दयो गँभीर॥ वेणुदारि आदिक नृप जौन। दक्षिण दिशिके जीते तौन॥ फिरि शिशुपाल पुत्रकों जीति। तासु निकटके नृपन्ह सनीति॥ जीति अवंती पुरी महान। पश्चिम दिशिकों कियो पयान॥ बर्बर यवन भूप जे बीर। तिन्है जीति कर लियो गँभीर॥ जीति दिशा बिदिशाके भूप। कर्ण लये कर रत्न अनूप॥ गयो सु हास्तिनपुरको बीर। जीति दिशन्ह कर लए गँभीर॥ भूप सुयोधन आगे आय। भ्रात पिट सह गए लेवाय॥ पूजि कर्णकों बोले बैन। तो कृतकर्म सुनो बलऐन॥ भीष्म द्रोण कृपसों नहि जौन। भयो कर्ण तुम कीन्हो तौन॥ और कहा कहिए बलगाथ। तुम्है पाय हम भए सनाथ॥ पाण्डव तव न सोरहे अंश। और पुरुषको बीर प्रसंश॥ गान्धारी धृतराष्ट्र सधर्म। दर्शन तास करऊ चलि पर्म॥ एतने माहँ हल हला शोर। भयो नगरसे अतिशय घोर॥ हाहाकार करत जन सर्व। निन्दत सुजन प्रसंशत खर्व॥ कर्ण जीति सब धरणी भूप। सागराम्बरा सगिरि अनूप॥ अल्पकालसे अतिबल वान। कनक रत्न मणि हेम महान॥ गान्धारी नृपके ढिग जाय। बन्दे चरण पुत्रके भाय॥ नृप धृतराष्ट्र हृदैसों लाय। कर्णहि बिदा कियो सुखपाय॥ कर्णहिँ शकुनि दुशासन भूप। पाण्डव निर्जित मानि अनूप॥ निर्भय रहत कुमतिके ऐन। यथा शशा मूदे तेन नैन॥ *❦*❦*❦*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि कर्णदिग्विजयवर्णनोनाम चतुःपञ्चाशदध्यायः॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जीति भूमि सब कर्ण इमि कहो सुयोधन पास। कहत जो हम तुमसों नृपति करऊ तौन मतिरास॥

॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥

है पृथवी सब रावरी पालऊ शक समान। वैशम्पायनउवाच। भूपकहो दुर्लभ कहा जासह तुम बलवान॥
अभिप्राय मम सुनऊ सो कहियत सो हम बीर। राजसूय जो पाण्डवन कियो सो लखो गँभीर॥
हम चाहव हैं कियो सो राजसूय बरयज्ञ। ताको तुम साधन करो सकल भाँति सो तज्ञ॥

॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥

भूमि भूमिपति रावरे सकल बश्य क्षितिपाल। द्विजन्ह बोलावऊ बेदविद करि सँभार बिशाल॥
यथा बेदबिधि कीजिए सहित ऋत्विजन्ह तज्ञ। करिबेको तुम योग्य हौ राजसूय बर यज्ञ॥
बचन कर्णके भूप सुनि पुरोहित हि बोलाय। राजसूय करिबे कहो आदर सह सुखदाय॥
सुनत सुयोधनके बचन कहो पुरोहित तज्ञ। होत न जियत युधिष्ठिर हि राजसूय नृप यज्ञ॥
[illegible] यह भूप हम कहत सुनऊ सो बैन। राजसूय सम कीजिए और यज्ञ मतिऐन॥
करद भूप जे रावरे ते कर देहि ललाम। तासों तुम सह दक्षिणा करऊ यज्ञ अभिराम॥

हलसों बाहक्त भूमिहैं यज्ञ सदनकी जैन । विष्णु यज्ञ तह कीजिए वेदविहित मतिश्रन ॥
कियो न काह्न यज्ञ यह बिष्णु यज्ञभगवान । राजसूयके सदृशहैं यह क्रतु वर सुखदान ॥
श्रेय तिहारो चहतहैं हम सबविधिसों भूप । भए समाप्ति अबिघ्न मख तो बाँछित सुखरूप ॥
ब्राह्मणके सुनिकैं बचन भूप महामतिश्रेन । अनुज कर्ण अरु शकुनि सो ऐसे बोले बैन ॥
हमैं रुचत तुमकों रुचैं जो विप्रन्हके बैंन । सबहिन कहो तथास्तु तव भूप पायकैं चैंन ॥
कादोबारिनसों कहों जहाँ यज्ञ भू पर्म । हल प्रवाह करि यज्ञकी शाला रचि सह शर्म ॥
यथा भूप आज्ञा कियो सबहिन कीन्हो तौन । आमात्य श्रेष्ठ अरु शिल्पके रचना कारक जौन ॥
विदुर आय नृपसों कहो ऐसे बचन विशाल। सज्ज यज्ञ सब बिधि भयो प्राप्त महूरत काल ॥
लाङ्गल करिकै कनकके किय भूको संस्कार । सुनि नृप यज्ञारम्भको शासन दयो उदार ॥
कियो यज्ञ प्रारम्भ तब सविधि द्विजवरन्ह आय । भये सुयोधन भूप तहँ दीक्षित आनद पाय ॥
धृतराष्ट्र बिदुर भीषम करण कृप सह द्रोण बिशाल। निमंत्रणार्थ क्षितिपतिनके पठये दूत उताल॥
दूत दुशासन द्वैतबन पढयो इमि कहि बैन । जाऊ जहां पांडव बसत महा पापके ऐन ॥
तिन्है निमंत्रण दीजियो बसत तहां जे विप्र । गयो दूत पांडव जहां दियो निमंत्रण क्षिप्र ॥
अर्जित करि धन वीर्यते करत यज्ञ कुरुराज । तुम्है निमंत्रित कियो चलि देखऊ भूप समाज ॥
। यजत सुयोधन भाग्य वश मख यश करण विशाल ।

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

। बीति गऐ हम आइहैं त्रयोदशाब्दिक काल ।

॥ * ॥ भीषमउवाच ॥ * ॥

कहो दूतसों भीम तब भरे क्रोध अति रूप । शस्त्र अनलमे हव्य करि ऊनै आइहै भूप ॥
वर्ष त्रयोदश बीतिहै कियो जो भूपति नेम । तब हम तुमकों देखिहै रण भू पर सह क्षेम ॥
धृतराष्ट्र सुतन सो जायकै कहियो यह मति ऐन । और पांडवन्ह दूत सो कहोन अप्रिय बैन ॥
बचन पँडवनके कहे दूत सुयोधन पास । आए चऊदिशिके नृपति तह ब्राह्मण मतिरास॥
तिन्है यथा विधि यथा क्रम पूजन करिकै भूप । बैठि सभामे विदुर सों बोले बचन अनूप ॥
सुखी यथा सब भाँतिसो होय स्वजन समुदाय । यज्ञ सदनमे तथा विधि वेगि विरचिए जाय ॥
सब वर्णनकों विदुर तब आज्ञा देकै भूप । पूजन सबहीको कियो यथा योग्य अनुरूप॥
यथा योग्य जनको दयो भक्ष भोज्य अरु पान । माला बसन सुगन्ध तें कियो प्रसन्न सुजान ॥
पूर्ण यज्ञ करि नृप दयो गोधन सुवरण दान।यथा योग्य द्विजवरनको भूपन्हको भ्रतिमान॥
द्विज भूपनको बिदा करि सह भ्रातन्ह कुरु भूप । गए शकुनि सह कर्ण तब हास्तिन नगर अनूप ॥

०प० इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि दुर्योधनकृतयज्ञवर्णनोनाम पञ्चपञ्चाशदध्यायः ॥ *

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

नगर माह प्रबेश करत सु हूत बन्दी आय। भूप सुस्तुति पढन लागे महत आनद पाय॥ श्रीखण्डलिप्त बिक्षाय लाजा ओर पथमे पर्म। लगे कहन सुभयो नृपति अबिघ्न तोमख कर्म॥ सुनत नाना भांतिके पुर जनन्हके स्तुति बैन। जाय बंदे चरण माताके महामति ऐन॥ भीष्म द्रोण कृपादि बिदुर शरद्ध बंदेभूप। आपु बन्दित भए अनुजनसों भरे सुख रूप॥ जाय बैठे सभामे तब सुत सकल उठि आय। जीति पार्थन राज सूय सु करङ्ग गे कुरराय॥ कहत हो तुत सत्य बोले सुनि सुयोधन भूप। मारि करिहै पांडवनको राजसूय अनूप॥ फेरि बांधित करङ्ग गे तुम महा मख तबतात॥ कहो ऐसे लाय हियसों कर्णको बलभौन॥ खाउ गो नहिँ माँस तबलों असुर ब्रतको धारि॥ जिष्णुकों जब लोंन रणमे मारि दे हो डारि। सुनि प्रतिज्ञा कर्णकी धृतराष्ट्र सुत अतिमान॥ कियो निश्चय जिष्णुको यह हनैगो बलवान ॥ बिदा करिकै सभासदन्ह सु आपु कुरु कुलभूप। गए अपने सदनमे तो रहत हे सुखरूप ॥ कर्णकी सुनिकै प्रतिज्ञा दूतसो नृपधर्म। कर्ण चिन्तन लगे चितमे तौन दुस्तर कर्म॥ जानि कवच अभेद्य कर्णहिँ महा धनुधर बीर। भए ब्याकुल धर्म नृप नहि धरत मनमे धीर ॥ द्वैतवनके छोडवेको कियो भूप बिचार। भूमिपालत नृप सुयोधन लए सुभट उदार॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ मोचिकैं धृतराष्ट्रसुतको महा पांडव बीर। कियो कारज कौन बसि तेहि बिपिनि माह गभीर॥ बैशम्पायनउवाच ॥ रहे सोवत निशामे जहँ धर्म धुर नृपधर्म। स्वप्नमे तहँ मृगाआए रूप धारे पर्म॥ भूप लागे तिन्हैं बूझन देखि तेहि अखर्ब। कौनहो तुम कहाँ आए कहत हो का सर्ब॥ द्वैतवनके मृगाहैं हम बद्ध शेष नरेश। प्राण भयसों बसा चाहत नहीं हम एहि देश॥ सूर धनुधर बन्धु तब मम कियो कुलको छीन। बीजसे हम रहे बचि हैं तो कृपाते पीन॥ देखि करुणाभौन भूपति मृगनको दुख भूरि। कहङ्ग सो हम करैं बोले बचन दाया पूरि॥ जागिकैं नृप भोर ऐसैं कहो भ्रातन्ह पास। स्वप्न धारे मृगन पर अति दया आनद रास॥ मृगन पर तुम करङ्ग दाया हनङ्ग नहिँ बरबीर। चलङ्ग काम्यक बिपिनिकों मृग गणन्हसह गम्भीर॥ तृणबिंदु सर तहँ बासकी जे भूमि बन अभिरा। गए भ्रातन्ह सहित नृप तहँ द्विजन सह तपधाम॥ इन्द्रसेनहिँ आदि शिगरे भृत्यके गण साथ। बसे काम्यक बिपिनिमे द्विजन सह कुरुनाथ॥ बसत बनने पांडवनको गो एकादशबर्ष। मूल फल दल खात भयके भरे क्रोध अमर्ष। स्वर्णनियमितकालको करि सहत दुःख महान॥ क्लेश भ्रातन्ह को लखत सुत धर्म्य ते बलवान। शल्य बिद्ध समान समुझत द्यूतको अपमान॥ नही सोंवतलेतश्वास

भरे क्रोध छशान ॥ तहां आए व्यास योगी महातपकेधाम। जाय आगें धर्मनृप पद बन्दिकैं अभि
राम ॥ ल्याय आसन पद्म पैं बैंठाय पूजे भूप। व्यास सकरुण भए पौत्रन्ह देखिकैं छशरूप ॥
भरे गद गद गरैं ऐसें कहन लागें व्यास। तप होत न दुःखते जन लोकमे मतिरास ॥ ज्ञान द्दगतें
लखत जे सुख दुःखकों सम रूप। उतपत्य स्थिति अरु प्रलयकों तें नही शोचत भूप ॥ सुख दुःख
प्राप्त जो होत ताको भजतहै सम भाव। छषिक बोवत लवत जैसे छषीकों सम चाव ॥ नही
तपतें अधिक कछु तपते अराधि न भूप। सत्य सम दम शौच नियम अहिंस आनद रूप ॥ तीर्थक
योनि सो लहतहै नर पाप कारक जौन। इहांको क्षत कर्म लहत परत्रमे जन तौन ॥ करउ
तपते युक्त तातें देहकों कुरुभूप। सत्यबादी अरु बिमत्सर रहतहैं सुखरूप ॥ दांत लहत न
क्लेशकों अति भोग सुखकों पाय। रहित हिंसा लहत आनद सुकुलमे धरि काय ॥ लहत दुःख
संयोग कौ नहि है जितेन्द्री जौन। काल साधक सुमति शुभ कल्याण पावत तौन ॥ * ॥ युधिष्ठिर
उवाच ॥ * ॥ दान धर्म अरु तप व्रत इनमे अधिक प्रभु कौन ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * । दानतें
नहिँ कछू दुर भूमि पै मतिभौन ॥ अर्थमे जनकी सुष्कटसा रहतिहै अतिमान। मनुज धनके लोभ
सों तजि देत अपनो प्रान ॥ करतहै जन जगतमे धनहेतु नाना कर्म। दुःख अर्जित बित्तको है
त्याग दुष्कर मर्म ॥ न्यायते करिकै उपार्जित वित्त जोरै जौन। पात्रकों सो देय प्राप्त सुकालमे
मतिभौन ॥ अन्यायते जो बित्त जोरत तास कीन्हे दान। नही रहत तौन आए विपति दुःख
महान ॥ दान देत सुपात्रमे जन बित्तमाफिक जौन ॥ शुद्ध मनसों स्वल्पसो फल करत अगिनित
तौन ॥ कहतहै इतिहास ताको सुनऊ भूप सुजान। द्रोण एक सु अन्नको कियो बिप्र मुद्गल
दान ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ ब्रिहो द्रोण प्रमाणकै सें कियो मुद्गल दान। कौन बिधिसों
दियो काकों कहऊ सो भगवान ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ रहो बृत्ति शिलोंछ धारे बिप्र
मुद्गल भूप। बसतहो नृप देश पाय सु कुरुक्षेत्र अनूप ॥ करि कपोतो वृत्ति धारैं अतिथि व्रत
अभिराम। करत इष्टो क्रत सुनामक सत्रको तपधाम ॥ करि कपोती वृत्ति जोरत ब्रिहो द्रोण
प्रमान। करत पक्षाहार स्त्री पुत्र सह शुचि दान ॥ अमा पूनो सविधि करिकै देवतातिथि
शेख। करत सहित कुटुम्ब भोजन धर्मको धरि रेख ॥ तास दत्त सुभाग सुरपति पर्ब पर्बन्ह माहँ।
सुरण सहित सो लेत हे तहँ आयकै नरनाहँ ॥ अतिथि विप्रन्ह देत बाकी रहत हो जो अन्न।
त्यागको फल पाय बर्धित होत हो सम्पन्न ॥ गए दुर्बासा तहां जँह रहे मुद्गल भूप। नगन बसन
बिहीन धरि उनमत्तकैसो रूप ॥ हसत नाना भांतिके बऊ परुष बोलत बैंन। कहो हमकों
देऊ भोजन छिप्र हे तपऐंन ॥ बोलि स्वागत महा मुनिसों उठो मुद्गल विप्र। अर्घ पाद्य रमो
आसन दयो भोजन छिप्र ॥ जानिकै उनम[illegible] श्रद्धा भरो बिप्र अखर्ब। दयो मुद्गल महा मुनि सों

खाय लीन्हो सर्व ॥ रहो जो उच्छिष्ट सो सब देहमे लपठाय। गए तह आए जहात महा मुनि सुखपाय॥ एहि भांति दुसरे पक्षमे आत्रेय मुनि तहँ आय।दयो मुद्गल अन्न सो मुनि लयो सिगरो खाय॥ भाति एहि पक्षान्तमे षटवार मुद्गल पास । अन्न सिगरे करै भक्षण महा ऋषि दुर्वास॥ क्रोध सह मात्सर्ज मुद्गलको छुधा नहि क्लेश। दयो पुत्र सदार मुनिवर भरो मोद नरेश॥ कियो मुनि दुर्वास निश्चय तास मन व्यापार। धरो नेक विकारको नहिँ रहो शुद्ध उदार॥ कहो ऋषि दुर्वास मुद्गल सों सप्रीति सुजान। रहित मत्सर नही दाता और तोहि समान॥ कष्टसों करिकै उपार्जित वित्त सिगरो जौन। दियो हमको ह्वै विमत्सर साधुतासों तौन॥ कर्मतें तुम जीति लीन्हे लोक सिगरे छिप्र। जाऊगे तुम स्वर्गकों सह विप्रदारा विप्र॥ कहो ऐसी भांतिसों जब हाम मुनि दुर्वास। देवदूत विमान लीन्हे गए मुद्गल पास॥ *॥ देवदूतउवाच॥ *॥ विप्र अपने कर्मतें तुम लही दिव्य विमान। चढऊ यापैं सिद्धिकों तुम भए प्राप्त महान॥ दिव्य दूत नसों कहो तब सुमुनि मुद्गल बैंन।स्वर्गमे सुखदुःखहै सो कहऊ है मतिऐन॥विप्र सबसुख स्वर्गमेंहै दिव्य कहियत जौन। लोभ मद मात्सर्य्य त्यागी लोक पावत तौन॥ लसत तैंतिस सहस योजन कनकमय गिरिराज। नन्दनादिक देववन तहँ बसत सुकृत समाज॥ छुधा प्यास न करति बाधा शीत ऊष्ण समान। भीति रोग न शोक की है स्वर्गमे मतिमान॥ कर्मके फल सदृश तेहां करतहै नर वास॥ चुकत फल जब कर्मको तब सुनऊ हे मतिरास॥ ध्वंशताको होतहै तब स्वर्ग तें दुखदान। दोष एतनो स्वर्गमे है सुनऊँ मुनि मतिमान॥ तहां कर्म न करत भोगत पूर्ब कृत फल जौन। स्वर्गमे यह दोषहै सुनि महा मुनि मतिभौन॥ पतन जो दुख व्याप्त मनकों करत ताप महांन। असन्तोष विलोकि औवर होत दुखद सुजान॥ दोष सुकृती जननकों है स्वर्गमे यह एक। नाक बासी जननकों है सुगुण सुखद अनेक॥ और है गुण एक सो मुनि कहतहैं अभिराम। जहां पावत जन्मकों तहँ भरो भाग ललाम॥ नही बूझत जाय तेहां करत अधरम कर्म। तौन भोगत करत जो इत कर्म धर्म अधर्म॥ भूमिहै यह कर्म फलकी मृत्युलोक महांन। जौन बूझो कहो तुमसों तौन हम सविधान॥ *॥ व्यासउवाच॥ *॥ तौन मुद्गल वचन सुनि सुरदूतके सविधान। चित्तमाह विचारि तासों कहो वचन प्रमान॥ देवदूत प्रणाम तुमको यथा सुख तुम जाह। महत दोष सस्वर्ग प्रति हम करत नहि उतसाह॥ स्वर्गमेहै पतनको अति दुःख दारुण रूप। स्वर्गमे बसि आय फिरि इत धरत रूप अनूप॥ नही चिन्ता व्यथा पावत अचलता जहँ जाय। तौन हम सुस्थान ढूढत मोद मङ्गल दाय॥ *॥ मुद्गलउवाच॥ *॥ कहो तुम यह स्वर्गमे है दोष दूत महान। लोक जो निर्दोष होय सो कहऊ नित्य सुजान॥ *॥ देवदूतउवाच॥ *॥ उपरि ब्रह्म सुलोकके है विष्णुलोक अनन्त। ज्योति रूप अचिन्त्य अव्यय बेद बक्ता भन्त॥ जातहै नांह पुरुष तेहां विप्र विषई तौन। लोभ क्रोध समोह द्रोही दुष्ट दारुण

जौन॥ मोह मद मात्सर्य ममता द्रोह रहित विकार। ध्यान योग सु शुद्धता वश तहां जात उदार। एहि भांति कहि द्विज देवदूतहि बिदा करि सबिमान। करण फेरि शिलोंच्छ वृत्तिहि लगे विप्र सुजान॥ निर्वाण लक्षण शाश्वती तेहि लही सिद्धि अनूप। योग्य तुमको शोक करिबो नहीं तातें भूप॥ राज्यते तुम भ्रष्ट हो तपते लहहुगे तौन। सुख अन्त दुख दुख अन्तमे सुख करत क्रमतें गौन॥ वर्षबीतें तेरहों तुम लहहु गे सुखरास॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ एहिभांति कहि स्वस्थानको तब गए मुनिवर व्यास॥ * * * * * * * * * * * * * * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि व्रीहीद्रोणोपाख्यानवर्णनोनाम षट्पञ्चाशदध्यायः॥ *

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

जनमेजयउवाच॥ * ॥ एहि भांति बनमे बसत पाण्डव बिप्रबृन्द समेत। सूर्य्यदत्तसु अन्न कृष्णा भोजनावधि देत॥ दुर्योधनादिक सर्व जे धृतराष्ट्र सम्भव दुष्ट। कियो का तिन कार्य्य तिन सों पाय सो परिपुष्ट॥ कहहु सो तुम महामुनि बृत्तान्त सह विस्तार॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ सुनि सुयोधन पाण्डवनको सकल धर्माचार॥ दुष्ट मंत्रिण सहित लखत उपाय दुष्ट अनेक। गए दुर्वासा महामुनि तहां सहित बिबेक॥ अयुत शिष्य समेत आगे नृप सुयोधन आय। सहित भ्रातन्ह प्रणत पूजे बिबिधि बिधि मुनि पाय॥ बहुत दिनलों राखि मुनिको बिबिधि भोजनदेय। कियो बहुत प्रसन्न मुनिको भांति नानासेय॥ * ॥ दुर्वासोवाच॥ * ॥ देत हम वर नृप सुयोधन रुचै मागहु तौन। भएँ मोहि प्रसन्नहै न अलभ्य कछु मतिभौन॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ सुनत मुनिके बचन अतिशय भरे आनद भूप। भए मानत फेरि अपनो भयो जन्म अनूप॥ कर्ण दुःशासन सुयोधन मंत्र कीन्हो जौन। पूर्व जाको समय पायो यथा वांछित तौन॥ भूप मागो महामुनिसों तौन पर सह काम। सहित शिष्यन अतिथि मेरे भए ज्यो तपधाम॥ अतिथि तैसे धर्मनृपके होहु शिष्यन्ह साथ। बसत बनमे धर्मशील सु ज्येष्ठ कुरुकुल नाथ॥ द्रौपदी दे चूके भोजन पतिनको सह बिप्र। आपु भोजन करै तब मुनि जाहु तेहां छिप्र॥ अतिथि ह्वजै तास मोपै कृपा जो तपधाम॥ दुर्वासोवाच॥ करैगे हम तथा भूपति यथा तो मन काम॥ गए ताहीसमै मुनि तहँ कहो हो जो भूप। अन्नमागे जाय धारें क्षुधा पीडित रूप॥ दुर्योधनादिक दुष्ट चारो भए पूरण काम। हसन लागे सकल गहि कर करनसों अभिराम॥ कहन लागे कर्ण ऐसे हंसत हर्षित रूप। भाग्यसों भो काम बर्धित भए तुम कुरुभूप॥ भाग्य तें तब पांडुके सुत सुनहु कौरव नाह। जरैगे दुर्वास मुनिके क्रोधपावक मांह॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच कपटमति एहि भांति हसि दुर्योधनादिक सर्व। गए अपने सदनको अति भरे मोद अखर्व॥

जानि कृष्णा सहित पांडव किएँ भोजन बीर । रहे बैठे गए तहँ मुनि लिएँ शिष्य गँभीर ॥ देखि आवत अतिथि तिनको जानिकै नृपधर्म। गए आगे सहित भ्रातन्ह भरे आनँद पर्म॥ल्याय मुनिको दयो शासन यथा योग्य अनूप। आतिथ्यकों कीन्हो निमंत्रित पूजि विधिवत भूप॥ कहो आह्निक शीघ्र करिकै आइए मुनिराज । स्नानकों मुनि गए कीन्हो अयुत शिष्य समाज ॥ देऊ शिष्यन्ह सहित भोजन हमै भूपति धर्म । गए कहिकै स्नानकों औ सकल आह्निक कर्म ॥ एहीं अन्तर माहं कृष्णा भई चिन्तित भूरि। अन्न दीबे को न बाकी रहो हेतु बिसूरि॥ लगी चिन्तन करन मनमें कृष्ण कृष्ण पुकारि। महाभुज जगदीश अव्यय जगन्मय कंसारि ॥ देवकीसुत बासुदेव सु प्रणत पालन हार। प्रणतार्त्ति नाशन जगत जनके सुख स्वरूप उदार ॥ विश्वआत्मा विश्वहरण प्रपञ्च पालक ईश । प्रजापाल गोपाल गुणमय गरुडध्वज जगदीश॥ अगतिकै गति नाथ पुरुषपुराण पावन कर्ण। हे अगोचर बरद गोचर होत करतहिँ स्मर्ण ॥ पद्म लोचन पीतपट सम स्याम घन तन वर्ण। इन्दु आनन मुकुट धर कलकलित कुण्डल कर्ण॥ आदि अन्त सु परापर तुम भूतके हौ पर्म। ज्योति रूप सु सर्व तो मुख सर्वव्यापक धर्म ॥ बीजहो तुम जगतके हौ सर्व सम्पति धाम॥ बिपति भय नहिँ लहत जाके नाथ तुम अभिराम॥दुष्टसों ज्यो द्यूतमे तुम कियो हो उद्धार। तथा एहि दुखसिन्धुसों अब कृष्ण कीजय पार॥*॥वैशम्पायनउवाच॥ *॥ एहि भांति संस्तुत द्रौपदी सो कृष्ण करुणाधाम । जानि शङ्कट रुक्मिणीकी सेज तजि अभिराम ॥ जहां पांडव रहे आए तहां करुणा काम। प्रेम पूरित देखि कृष्णहि बिकलताकेधाम ॥ देखि कृष्णा कृष्णको भरि बारि मोचित नैन। कहो मुनिके आगमनको कष्ट गद गद बैन॥देखि कृष्णाकों प्रणत इमि कहो हरि हर भीति । देऊ भोजन क्षुधितहै हम द्रौपदी करि प्रीति ॥ कृष्णके सुनि बचन कृष्णा कहो लज्जा सन्न। भानुदत्त सुपात्रमे मम भोजनावधि अन्न॥ करो है हम देव भोजन अन्न तामे है न। ॥*॥कृष्णउवाच॥ *॥ क्षुधितहैं हम द्रौपदी यह हास औसर है न। शीघ्र कृष्णा पात्र सो वह ल्याउ मेरे पास ॥ आनि दीन्हे पात्र तौन सु द्रौपदी छबिरास । पात्रके लखि कण्ठ लग्न सुअन्न शाक सु तोक॥ कृष्ण भोजन कियो ऐसे बोलि त्रिभुवन थोक। बिश्व आत्मा यज्ञ भुक प्रभु होऊ अति सन्तुष्ट । भोजनार्थ बोलाइबेकों कहो करुणा पुष्ट ॥ गए तब सहदेव मुनिहि बोलाइबे सह बृन्द। स्नान करि तिन चहो संध्या करन सुनऊ नरिन्द ॥ अन्नके रस सहित तिनको लगी चलन डकार। परसपर ते लखन लागे भो तृषा अधिकार॥कहन लागे शिष्य मुनि दुर्वाससों इमि बैन। नृपति भोजनको बोलाएँ सुनऊ मुनि तपऐन॥ कण्ठलो है तृप्ति हमको खायगो को अन्न। ब्यर्थ पाक कराय आए भूपसो सम्पन्न ॥ *॥ दुर्वासोवाच ॥ *॥ बृथा करि अपराध पाक कराय आए बिप्र। दहै नहिँ चख क्रोधसों अब हमै पांडव छिप्र॥ अम्बरीष सु राज ऋषि को स्मरण करि परभाव। डरत हैं हरिचरणसेवी जनन सो हत चाव॥ सूर सुव्रती धर्मरतहै कृष्ण भक्त

उदार। पाण्डुनन्दन है महात्मा धरे नित्याचार ॥ दहैं गे क्रोधाग्निसे ए पाण्डुपुत्र सधर्म। सुनऊ तुम सब शिष्य हमकों भागिबो अतिपर्म ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच ॥ *॥ पांडवनकी भीतिसों सह शिष्य मुनि सम चोर। छोडि सादर भजे तहँते गए चारोंओर ॥ ढूंढि कै सहदेव शिष्यन्ह सहित मुनिको तत्र। तहाँ वासी द्विजनसों सुनि गए भूपति यत्र ॥ कहो सो वृत्तान्त सह सहदेव नृप पहँ जाय। चहत ल्यायो मूनिहि भूपति कछुक आगे जाय ॥ आय कै सु निशीथमे मुनि हमै छलि है तौन। धर्मनृप एहि भांति शोचत रहे अति मतिभौन ॥ प्रत्यक्ष ह्वै श्रीकृष्ण तब इमि कहे नृपसों बैन ॥ *॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ *॥ जाति आपद रावरी अतिक्रोधको मुनिऐन ॥ द्रौपदीतें भयो चिन्तित बेगि आयो भूप। तुम्है भय नहि करै गो दुर्वासतें मुनिरूप ॥ भजो तुमरे तेजतें तजि कै सजेज सहान। दुखित होत न धर्मनिष्ठ मनुष्य जो मतिमान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ बचन सुनि कै कृष्णके भय छिगतज्वर नृपधर्म। द्रौपदी सह कृष्णसों इमि बचन बोले पर्म ॥ नाथ तुम हमकों कियो एहि बिपति दुस्तर पार। नाव बूडत सिन्धुमे जिमि कर्णधार उदार ॥ बिदा व्हैके पाण्डवनको द्रौपदीसो भूप। द्वारिकाको गए श्रीयदुवीर आनदरूप ॥ काम्य बनमे बसे पाण्डव द्रौपदी अभिराम। बिप्रगण घन सहित बिहरत बिपिनमे अभिराम ॥ *—*—*—

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसाज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेवनपर्वणि दुर्वासोपाख्यानवर्णनोनामसप्तपञ्चासदध्यायः ॥ *—*—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बज्रस्रग तेहि बनमाह गभीर। बिहरत भ्रातन सह बरबीर ॥ प्रफुल्लित फलित बिपिनि छवि भौन। देखत फिरत मोद भरि तौन ॥ कछुकाल बसि कै बनमाहँ। मृगया हेत गए नरनाहँ ॥ तृणबिन्दु सुमुनिको आज्ञा पाय। राखि द्रौपदी हि तहँ सुखदाय ॥ धौम्य महामुनिकों तपधाम। सौंपि द्रौपदीको अभिराम ॥ जयद्रथ सिंधुदेशको भूप। शाल्वदेशकों चलो अनूप ॥ ब्याह हेत आयो तहँ तौन। कृष्णा जहाँ रही छविभौन ॥ काम्यकबनमे भूपनन सङ्ग। गयो मार्गवश भयो उमङ्ग ॥ तहाँ पाण्डवनकी बरबास। लखो द्रौपदीकों छविधाम ॥ ठाढी सो आश्रमके द्वार। भरी ज्योतिमय रूप उदार ॥ देवसुताकी सेवी घर्म। ते साञ्जलिसे अबिदित मर्म ॥ देखि जयद्रथ हर्षित होय। पठयो दूत चतुरमति जोय ॥ बूजऊ जाय कौन यह बास। होय मानुषी जौं अभिराम ॥ तौ हम याहि लेइ अतिरूप। जाहि स्वपुर करि कर्म अनूप ॥ जानऊ जाय सुमति सह नेत। है को इह इत रूपनिकेत ॥ जौ यह हमै बरै छबिधाम। तौ मम सफल होय मनकाम ॥ रथते उतरि दूत वह तौन। कियो द्रौपदीके ढिग गौन ॥ व्याघ्रवधू ढिग जैसे स्यार। जाय कुमति सो भरो उदार ॥ *॥ दूतउवाच ॥ *॥ *॥ को तुम गहे कदमकी डारि। एहि आश्रममे एक

उदारि॥ अग्नि शिखाके दिपति समान। भरी परम छविसों सुखदान॥ देवी कै यक्षी अभिराम। कै अप्सराकी दनुजा बाम॥ बरुण सोम पत्नी कै पर्म। कै धनेशबनिता सह धर्म॥ कै तुम सची भरी अति रूप। एहिबन बसति न डरति अनूप॥ हम बर्द्धित करि कै तबमान। बूझत प्रभु तव जनक सुजान॥ कहहु आपनो कुल अरु तात। इहाँ कार्य्यकृत का अवदात॥ सुरथ भूप सुतके यह दूत। यह रथपर सम अग्नि प्रभूत॥ त्रिगर्तराज कमलायत नैन। सूर बीर सुन्दर सम मैन॥ पुष्करणी तट स्याम स्वरूप। अरिबन दहन सुबलसुत भूप॥ द्वादश सौबीरक नृपनन्द। करत जास अनुगमन अमन्द॥ षट सहस्त्र सँगरथी सवीर। गज हय पदग बृन्द गभीर॥ सौवीराधिप अतिबल भूप।नाम जयद्रथ जास अनूप।।सुनो होय गो सुन्दरि जौन।यह अरिमर्दन भूपति तौन॥ सौंवीर बीर जे युवा नरेश। ते सब अनुग जास सहदेश॥ हम अजान बूझत हैं बाम। जनक कौ।न तौ पति अभिराम॥ बैशम्पायन उवाच॥ कहैं द्रौपदी तासो बैन। स्वाशा छोडि मधुर छविऐन॥ कौशिक उत्तरीय सम धारि। हम जानो नृपपुत्र विचारि॥हमैं न तुमसो बचन सुजान। कहिबेको बिधि बिहित प्रमान॥ बक्ता औार न इत नर नारि। करैं जो तुमसो बचन बिचारि॥ इहा एक हम याते बैन। तुम जो कहत दूत सब चैन॥ तुमसों सुरथपुत्र सो सर्व। स्वपनो कहति कुटूम्ब अखर्व॥ हम हैं द्रुपदसुता अभिराम। कृष्णा कहत हमारो नाम॥ बरो पञ्च हम पुरुष गँभीर। धर्मराज आदिक बरबीर॥ हमैं राखि कैं ते एहि ठौर। मृगया हेत गए चँहु औार॥ पूरब राजा दक्षिण भीम। अर्जुन पश्चिम दिशि बलसीम॥ उत्तर माद्री तनय बिशाल। निकट तास आगमको काल॥तिनसो लहि सनमान अखर्व। जाएहु टिकहु जान तजि सर्व॥अतिथि प्रिय हैं भूपति धर्म। तुम्हे देखि लहि हैं अति शर्म॥ असे दूत पास कहि बैन। किय प्रवेश आश्रमके ऐन॥ तिन्है अतिथि आतिथ्य बिचारि। आश्रम धर्म नित्य निरधारि॥ *॥ वैशम्पायनउवाच॥ दोहा॥ *॥

कृष्णाके सुनि कै बचन दूत जयद्रथ पास। सकल सैनके सामुहे कीन्हो जाय प्रकाश॥
कहत बचन जब रही तब तामे मो मन जाय। बसो कौन बिधिसों कहै सुखनिवासको पाय॥

॥ * ॥ दूतउवाच ॥ * ॥

राजसुता यह द्रौपदी है यशस्विनी भूप। महिषी पाण्डव पञ्चकी प्रिया सती अतिरूप॥
ताहि सङ्ग लेकै चलो देश आपनेभूप॥वैशम्पायनउवाच॥कहो जयद्रथ दूतके सुनि कै बचनअनूप॥
देखत है हम जाय कै कृष्णाको अभिराम।यह कहि आश्रमे गयो ज्यो बृक केहरिधाम॥
कहो जयद्रथ जाय कै कृष्णा सों पुनि सैन। हो तुम भर्त्तन सह कुशल हे सुन्दरि छविऐन॥

॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥

राज्य राष्ट्र बलमे कुशल है तो राजकुमार। पालत हो तुम धर्मसों जनपद प्रजा उदार॥
कुशल युधिष्ठिर भूप हैं सह भ्रातन बर बीर। आसन लैं यह बैठिऐ हे नृपसुत धरि धीर॥

पञ्चाशत मृग देहि गे तुमको भोजन हेत । उत्तम नाना जातिके महिष वराह समेत ॥
आवत मृगयाते चले कछु छणमे नृपधर्म। करि हैं सो आतिथ्य तव सह भ्रातन्ह अतिपर्म॥

॥ * ॥ जयद्रथउवाच ॥ * ॥

भोजन सों हम तृप्त हैं दियो चहति तुम जौन । मेरे रथपर चढि चलहु सुख भोगहु छविभान ॥
हतश्री हैं छ्तराज्य सब पाण्डव विपिनि निवास । नहीं तिनके पास रहिवे योग्य तुम छविरास ॥
पाण्डवनकी भक्तिते नहिँ सहहु क्लेश सुजान । होहु मेरी भारया सुख भोग करहु महान ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सुनत कृष्णा जयद्रथके हृदय कम्पन बैन । छोडि आसन चली भृकुटी करे भङ्ग अचैन॥
निदरि ताके वचन कृष्णा कहे ऐसे बोल । कहु न ऐसे वचन सैंधव निलज दुर्मति लोल ॥
अरुणरोषते नैन करि भृकुटी भङ्ग कराल । कृष्णा सैंधवसों कहे बचन सक्रोध बिशाल ॥
तीक्षण शस्त्रधर जैयजसो अतिरथ जे वर बीर।तिन्हैं निदरि बोलत वचन ऐसे मूढ गभीर ॥
शक्र सदृश शुभकर्मरत दनुज निकृत जेतार । तिन्हे योग्य बोलत नही भरिमति पाप बिकार ॥
सप्तसिंहकी बाल्यतें खैंचहु मुख न भूप । भाजि जात गे भीमको क्रोधदेखि कैं रूप ।
गिरि सम्भव हरि क्रुद्ध सो अर्जुन अरिहा बीर । तासों लरिबेको करैं साहस कौन गभीर ॥
भीमार्जुन अहिविष भरे कुवन चरण सो मूढ । माद्रीसुत हरिसासुहे हो न ससा समरूढ ॥
फलित विसुसो आपुको करु न मूढमति अर्भ । तिनमे रचित मोहि चहत यथा कर्कटी गर्भ ॥

॥ * ॥ जयद्रथउवाच ॥ * ॥

जानत हम कृष्णा यथा हैं पाण्डव बलऐन।नही डरत हम रावरे सुनि भयकारक बैन॥
पाण्डवगुण सब रहित हैं हम न धरी गुण पीन । तिनको हम कछु डरत नहि जे दुर्बल बलहीन ॥
ताते गज रथ पैं चढहु छिप्र न करहु बिलम्ब। भोग राज्य सुखको करैं लहि मेरो अवलम्ब ॥
नही बारण शक्य तुम वचन बोलि कैं मोहि ।जीति पांडवन्ह होउ गो सदा स्ववश कर तोहि॥

॥ * ॥ द्रौपद्युवाच ॥ * ॥

अतिवल पति मम कहैं को हम दुर्बल सम बैंन।काल वश्य जयद्रथ वचन कहत कुमतिके ऐन॥
कृष्णार्जुन चढि एकरथपर ढूँढैं गे जाहि । मनुजकहा इंद्रो नही हरण योग्य हैं ताहि ॥
रथवरचढि अर्जुन प्रबल हरत सो अरि गणमान । सोमदर्थ तो सैंनको ह्वैहैं दवल कृशानु॥
अन्धक बृष्णि समेत हार केकय भूपति जौन । राजपुत्र सह सैन सब हमै ढूढिहैं तौन ॥
सुनिधुनि धनु गांडीवकी अति घन गरज समान । महा कोप करि अनल सम जिष्णू बर्षिहैं बान॥
तब तुम अपनी बुद्धिको निन्दित करि है दुष्ट । अर्जुनशर तव हृदयमे जब पैठै गे पुष्ट ॥
भीमसेन अति क्रोध करि धरैं गदा गुरु घोर । भाजि जाहु गे कौनदिशि जब चलि है तो ओर ॥

१०५० सिंह सदृश माद्रीतनय भरे क्रोध अति पुष्ट । भिरि हैं तोसों आय तब कैसे बँचि है दुष्ट ॥
सत्य पतीव्रत होय जो मम व्रत शुचिरूप । बश करि पाण्डव लेंयगे तब तो लखि हौं रूप॥
॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥
सैंधव लेनन गहत लखि भरी क्रोध अतिघोर । भर्त्सन करि झेरण लगी धौम्य धौम्य करि सोर ॥
सैंधव कृष्णाको गहो उत्तरीय पट आय । पासोंको झटको गिरो सो उर धार कार पाय॥
फिरि सैंधव उठि कै गहो करि कछो अनुमान । रथपर बैठी धौम्यके बन्दि चरण सुखदान ॥
॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥
कृष्णा हरिवे शक्य नहिं बिन जीतें कुरुबीर । सैंधव क्षत्रिनको धरम समुझऊ जोन गँभीर ॥
मिले पाण्डवन्ह पाइ है तुरं पाय फल जौंन । कियो पदातिग साह कहि धौम्य महामुनि गौन ॥
॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥
करि मृगया चहुँदिशि मिले पाण्डुतनय सब आय।कहन लगे नृपधर्म तब सकुन भयानक पाय॥
कहत सकुन आयास अति मनु अन्व बरबीर । तातें छोड़ि निरत्त अब तजि यह बिपिनि गँभीर ॥
छाय बुद्धिकों क्रोध बढि दुखित करत है प्रान। काम्यक लागत राज्य ज्यों बिना भूप बलवान॥
वायुवेग करि तुरग सब हाँकि सुरथ बरबीर। सनमुख आश्रमके चले पाण्डव तुर रणधीर॥
घोर सोर गोमायु करि बाम दिशामे आय। बोलन लागे धर्मनृप सो सुनि कै भयदाय ॥
जानि परति एहि सकुनिते सुनऊँ भीम बरबीर । कुरुन्ह आय कीन्हो कछू बलात्कार गँभीर ॥
रोवत भार्य्या दासकी आश्रम बनके पास । देखि उतरि रथते गयो इन्द्रसेन ता पास॥
भूप ओरसों जाय कै बूझो तासों बैन । रोवति का आरत बदनु सूखो बरषत नैन ॥
कियो तौन पापी कुरुन्ह द्रुपद सुता ढिग जाय । बलात्कारको कर्म कछु आश्रम सूनो पाय ॥
जाय स्वर्ग पाताल ज्यों कृष्णा सिन्धु समाय । जाहि तहां पाण्डव प्रबल नृप हित हेतु सुभाय ॥
॥ * ॥ दास्युवाच ॥ * ॥
भूप जयद्रथ सिन्धुपति बलात्कार सों आय । महा रतसी लैं गयो कृष्णाकों हरि हाय ॥
॥ * ॥ इन्द्रसेनउवाच ॥ * ॥
नाथवती जानो नहीं पाण्डव हृदय समान । छूटै बेधि अब कौनको धरां पैठि हैं बान ॥
कृष्णाप्रति नहि शोच कछ अरिहा पाण्डव बीर।मारि अरिन्ह फिरि ल्याइ हैं आश्रममाह गभीर ॥
॥ * ॥ धात्र्युवाच ॥ * ॥
फिरि धात्री लागी कहण पोंछि दृगणके बारि । निदरि कै लैगो जयद्रथ पाण्डवनको नारि ॥
एहि नूतन पथ व्है गयो जह तरु भग्न लखात । फेरि द्रौपदि चि ल्याइए करि अरिबृन्द निपात ॥
दूरि गयो नहि निकट व्है बीतो बजतन काल।भए सज्ज पाण्डव प्रबल सुनि करि क्रोध बिशाल॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

धाचो आश्रमको फिरऊ कहऊ परुष मति बैन।

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

यह कहि पाण्डव हांकि रथ चले तीन गहि ऐंन ॥

श्वास लेत अहि उग्र सम महा क्रोधसों पूरि। कछुक दूरि चलिकैं लखी तास सैनकी धूरि ॥
जात पदाती बृन्दमे देखि धौम्यको भीम। आश्वासन कीन्हो निकट जोरि पाणि बलसीम ॥
सेनासे सन्मुख चले भरे क्रोध गम्भीर। रथपर बैठे द्रौपदी जयद्रथके बलबीर ॥
हांक जयद्रथको दयो करि अति क्रोध कठोर।पाण्डव पञ्च महेन्द्रसे भरो भुवनमे रोर ॥
देखि पाण्डवन्हकी ध्वजा जयद्रथ ऐसे बैन। कहन द्रौपदीसों लगो लहि रथस्थ छबिऐन ॥
आए पाण्डव पञ्च ए कृष्णा तो भर्त्तार। जानत हम नहिँ तुम कहो को लघु कौन उदार॥

॥ *॥ द्रौपद्युवाच ॥ *॥

कहा जानिकै करऊगे मरण करम करि भूप। मेरे पति ए करैंगे तुम्हे अशेष स्वरूप॥
बूझेते तो कहतिहो नहि मम तो भय बाध। भ्रातन सह नृपधर्मको देखत सुबल अगाध ॥
कनक बरण जाकी बडी नासा नेत्र बिशाल। महाबीर दाया सदन तौन धर्म क्षितिपाल॥
देत शरण ए शत्रुको शरण गहत जे आय। मूढ जोरि अञ्जलि गहऊ ताके शरणद पाय॥
शाल बृक्ष सम महा भुज रथपर चढो जो धीर। दसत ओष्ठ भृकुटी चढी तौन बृकोदर बीर ॥
बँचत न इनसों बैर करि बिसरत ए नहि बैर। बैर शान्ति करिकै त्यजत महा क्रोधको सैर ॥
धीरधाम अति धनुर्द्धर यशी जितेंद्री बीर। शिष्य बन्धु नृपधर्मके ए अर्जुन रणधीर ॥
काम लोभ भयते नहो तजत धर्म नहि क्रूर। मम पति कुन्तीसुत अनल सम तेजसको पूर ॥
जानत सब धर्मार्थको भय हर्ता मतिमान। नकुल खड्गजोधी सु ए मम पति रूप निधान ॥
शूर कृतास्त्र सु नृपति प्रिय मनस्वीसु मतिमान। चन्द्र अर्क सम सुमति मम ए सहदेव सुजान॥
कहे पांडुके पुत्र ए जे मेरे पति बीर। लरि उनसों तन त्यागिहो जयद्रथ पाप गभीर ॥
दीन पदातिन्ह छोडिकै पाण्डव शक्र समान। अन्धकार चऊदिशि कियो निशित बरसिकै बान ॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ * ॥

रहऊ न भाजऊ लरऊ धरि क्षात्रधर्म अनूरूप। भूप भटन सो कहन इमि लगो जयद्रथ भूप ॥
घोर शब्द रणमे भयो लखि पाण्डव बरबीर। शिबि सैंधवसो बीर नृप भरे बिषाद गभीर ॥
धरि जयद्रथको लयो कोटि काश्य तब आय। बारण कीन्हो भीमको रथ समूहसों जाय ॥
बरषे शस्त्र अनक बिधि बीर बाऊ सहसैन। नेक भए कम्पित नहो भीमसेन बलऐन ॥

हने चतुर्दश गदासों गजन्ह सहित असवार । भीमसेन अति क्रोध करि सैंधव सेना द्वार ॥
हर महारथ पाँचशत पर्वत बासी बीर । हने सैनके द्वारपर अर्जुन अति रणधीर ॥
हने धर्मनृप एकशत करता युद्ध उदार । सुभट सु सैंधव भूपके रहे जे सेना द्वार ॥
नकुल कूदि रथते परे खड्गचर्म धरि बीर । मारि पदातिनके करे शिरते रहित शरीर ॥
यों सहदेव हने सघन जन्तुनको बलपूर । यथा तुङ्ग तरुते परत छितिपर उतरि मयूर ॥
त्रिगर्तराज रथते उतरि घोर गदाकों धारि । धर्मराजके चारि हय रथके डारे मारि ॥
धर्मराज तेहि निकट लहि महा क्रोध करि घोर । बेधो निशित नराचसों ताको हृदय कठोर ॥
छिन्नमूल तरुसो गिरो बमत सो रुधिर अशेश । चढे जाय सहदेवके रथपर धर्मनरेश ॥
क्षेमङ्कर नृप महासुख दुङ्कन घेरि दुहु ओर । बरषन लागे नकुल पर निशित बाण अतिघोर ॥
एक एक शरसों हने तिन्हैं नकुल मतिमान । रथ तोरवायो नकुलको तीह गजते अतिमान ॥
सुरथ त्रिगर्ताधिप नृपनि रथ तजिकै बलवान । चढो जाय गजमत्तपैं द्विरदज ज्ञान विधान ॥
खड्गचर्म धरिकै नकुल करि गति भ्रमण सुजान। तासों निर्भय व्है रहो गिरि समान बलवान ॥
सुरथ भूप प्रेरित द्विरद दौरो सुण्ड उठाय । नकुल खड्गसो काटि कर छितिपर दियो गिराय ॥
मुख भर सो गिरि परो गज सुरथ नृपतिको शोश । भिन्न कियो धरते नकुल मरो सुरथ अवनीश ॥
अति अद्भुत करि कर्म यह खड्गचर्मधर धीर । भीमसेनके सुरथपर चढो जाय बरबीर ॥
कोटि काश्यके सूतको क्षुर शायकसों भीम । काटो शीश कशीश करि महाबीर बलसीम ॥
कटो सूत शिर तेहि नहीं जानो भाजे अर्ब। तास शीश रथ हांकिकै काटो भीम अखर्ब ॥
द्वादश नृप सौबीरके धनुष शीश अतिमान । काटि भूमि पाटी समर अर्जुन अति बलवान ॥
जे शिविनृप कुरु मुख्य जे सिन्धु त्रिगर्त नरेश। तिन्है मारि अर्जुन कियो सह वाहनन निशेश॥
गजरथ सादी पतगँ ध्वज बर्म चर्म धनु खण्ड । काटि पाटि दीन्ही धरणि अर्जुन बीर प्रचण्ड ॥
धर बिन शिर शिर रहित धर देखि परे चहुओर । भए दृप्त पल रुधिरसों बायश जम्बुक घोर ॥
हते बीर सिगरे चितै भजो जयद्रथ भूप । तजि कृष्णाकों स्वरथतें भयसों भयो कुरूप ॥
आगे लखि मुनि धौम्यके कृष्णाको नृपधर्म । रथपर दियो चढाय तब माद्रीसुत अतिपर्म ॥
भजे जयद्रथके भजी सैन शेष बल छाम । तिन्है भीम मारण लगे टेरि टेरिकै नाम ॥
भजो जयद्रथकों चितै अर्जुन अति बलधाम । बारण कीन्हो भीमको भजे न हनियत छाम ॥

॥ * ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥

हम जाके दुःकर्मतें लहो क्लेश अतिमान। ताहि न देखत समरमे गयो कहां सहजान॥
तेहि ढूढऊ कीन्हे कहां बिना लाभको कर्म । दीन भजेन्हको मारिबो नहि क्षत्रिन्हको धर्म ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

भीम निबर्त भए सुनत ए अर्जुनके बैन । देखि धर्मनृपसों बचन कहन लगे मतिऐन ॥
बीरहने सबसैनके भजो जयद्रथ भूप । हूजै आप निवृत्त अब कृष्णा सहित अनूप ॥
सहित नकुल सहदेवलै धौम्य महा मुनि साथ । शान्त द्रौपदीकों करौ चलि आश्रममे नाथ ॥
जियत न हमसों बचैगो सैन्धव मूढ महान । जाय रसातलमे जऊ जौ रखहि मघवान ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

सैंधव दुष्ट न योग्यहै हनिबेके रणधीर । दुःशला गान्धारजा को करि स्मरण गभीर ॥
जामाता धृतराष्ट्रको दुःशला पति तौन । गान्धारी दुख लहैगी महत पतिव्रत भौन ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

कृष्णा सुनि नृपके बचन क्रोधाकुल हत बैन । भीमार्जुनसों नीतिमय ऐसें बोली बैन ॥
जौ मेरो करतव्यप्रिय बध्य जयद्रथदुष्ट । राजस्त्रीहरको हनत शरण गहे हूँ तिपुष्ट ॥
यह सुनि भीमार्जुन चलैं जहँा जयद्रथ भूप । आश्रमकों कुरुपति फिरे कृष्णा सहित अनूप ॥
सहित धौम्य नृपधर्म चलि आश्रम देखो जाय । मार्कण्डेयादिक व्यथित बिप्रनको समुदाय ।
सह माद्रीसुत द्रौपदी लखि बिप्रन्ह नृपधर्म । बिजय सहित आए बहुरि भरे मोदसों पर्म ॥
गयो जयद्रथको सभंरि सुनि भीमार्जुन बीर । हाकि बेगसों रथ चलो भरे क्रोध गम्भीर ॥
यह कीन्हो अद्भुत महा कर्म जिष्णु बलभौन । हने जयद्रथके तुरग गए क्रोश भरि जौन ॥
भीमार्जुन आतुर चले भरे क्रोध अतिमान । एक भरो भय जयद्रथ व्याकुल भयो महान ॥
देखि जयद्रथ मरे हय अर्जुनको अति कर्म । भजो छोडि रथ बिपिनिकों भरो भूरि भय भर्म ॥
भाजत सैन्धवकों चितै अर्जुन बोले बैन । एहि बलतें पर तिय हरण चाहो दुर्मतिऐन ॥
राजपुत्र भाजऊ नही तजि अनुचर गण सर्व । भजत सो ठाढो होत नहि लखि रिपु प्रबल अखर्व ॥
तिष्ठ तिष्ठ कहिकै चले भीम क्रोध अति धारि । याको बध मति कीजियो अर्जुन कहो पुकारि ॥
भजो जयद्रथ बेगसो चलो बिपिनिकी ओर । रथ तजि दौरे भीम तब भरे क्रोधसों घोर ॥
पीछेतें पकरो शिखा तास वृकोदर जाय । मरदन लागे पायसो ताहि भूमिपर नाय ॥
शीश जयद्रथको पकरि भीमसेन बलवान । तल प्रहार लागे करण गिरिपर अशनि समान ॥
लागो करण बिलाप सो करि तब मुष्टि प्रहार । डारि भीम छितिपर दयो ताको जानि सुमार ॥
तब अर्जुन बारण कियो जानि भीम अति क्रुद्ध । दुःशला हित कहो नृप तौन बचन कहि उद्ध ॥

॥ * ॥ भीमसेन उवाच ॥ * ॥

जीवित योग्य न पाप यह दुराचार क्रूर नष्ट । कष्ट योग्य कृपालनहीं ताकों दीन्ही कष्ट ॥
फेरि जयद्रथसों कहो भीमसेन बलवान । भए दास हम रावरे कहऊ जौं चाहत प्राण ॥

कृष्यमाण सधव कहो भयो दास तव बीर । साधु सभाके मध्य यह कहिहै सत्य गभीर॥
भीम जयद्रथकों लयो बांधि रथ पर डारि । धूरि भरो नृपधर्मके चलि ढिग दियो उतारि ॥
देखि जयद्रथकी दशा करुणाकर नृपधर्म । बन्धन मुक्त करो कहो भीमसेनसों पर्म ॥
भीम धर्मनृपसों कहो यह जौं कृष्णापास । कहै पाण्डवनके भए हारि तुह्मे दास ॥
कहो भीमसों द्रौपदी चितै धर्मनृप वोर । भयो पञ्चशिष दाश पदकों पकड़ो यह चोर ॥
बन्धन मोचन कीजिए सैन्धवको रणधीर। छाडि जयद्रथकों दयो बिहँसि बृकोदर बीर॥
सैंधव बन्धन मुक्तव्है बन्दि युधिष्ठिर पाय । फिरि धौम्यमुनिके चरण बन्दे बिव्हल काय ॥
फेरि जयद्रथसों कहो धर्मनृपति अति आर्य । जाऊ अदाश भए न फिरि ऐसो कीजो कार्य ॥
स्त्री कामुक है तोहि धिग तुद्र बुद्धि मतिभौन । तो बिन ऐसे कर्मकों करै अधम नर कौन ॥
देखि दीन करिकै कृपा फेरि कहो नृपधर्म । होय धर्म मति बृद्धि तव मन न धरै अघकर्म ॥
रथ पदाति सहँ जाऊ तुम अपने देश अनूप । यह सुनिकै जयद्रथ चलो मौन अधोमुख भूप ॥
गयो सो गङ्गाद्वारकों दुखसों भरो अचैन । पूजि प्रसन्न करे सविधि शङ्कर शम्भु त्रिनैन ॥
मागो बरद महेशसों यह बर तेहि गम्भीर । जीतैं पाण्डव पञ्च हम रणमे धारैं धीर ॥
पाण्डव सकल अवध्यहैं हैं अजेय बरबीर । एक रोक तुम रोकिहौ हर वर दयो गँभीर ॥
महा उग्र जेहिं तप करो बदरोके ढिग जिष्णु। को ताको जेतारहै जास सहायक विष्णु॥
दियो पाशुपत अस्त्र हम इन्द्र बज्र दिगपाल। अपनो अपनो अस्त्र तिन दीन्हे सविधि बिशाल ॥
देव देव अनन्त आत्मा पुरुष अव्यय जौन। प्रलय करि जेहि फेरि कीन्ही सृष्टि त्रिभुवन भौन॥
कोलहोय नृसिंह बपुधरि भयो बावन रूप। इन्द्रकों फिरि दियो त्रिभुवन जीतिकै बलिभूप॥
आदि अन्त अनादि गोचर है अगोचर जौन। ब्रह्म नारायण स्वरूपी ईश यदुपति तौन॥
अस्त्र विदमे श्रेष्ट अर्जुन कृष्ण रक्षक जास। रहत जाको सारथीव्है महा आनदराश ॥
नहीं जीतिबे सक्य सो सुरा सुरनसों भूप । जिष्णु धनुर्द्धर बीरबर कहा मनुज तनुरूप ॥
एकबीर अर्जुन बिना चारि पण्डुसुत जौन। तिन्है युद्धमे रोकिहौ एक दिवश बलभौन ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

सैंधवसों एहि भाँति कहि त्र्यंबक हर भगवान। उमा पार्षदन सहित सब व्है गए अन्तरध्यान ॥
फेरि जयद्रथ मन्दमति गयो आपने धाम । पाण्डव काम्यक बनसे कृष्णा सहित ललाम ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि द्रौपदी हरणे षट्पञ्चाशदध्यायः ॥ ****************

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

द्रौपदीके हरणते लहि क्लेश यो नृपधर्म । तहां बसि कै पांडवन फिरि कौन कीन्हो कर्म ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ तहां बसि द्विज गणनमे नृपधर्म चिन्तित चैन । मार्कण्डे महामुनिसो कहे ऐसे बैन ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ भूत भावी महा मुनि है विदित तुमको सर्व । हृदयस्थ संशय कहत तुमसों करहु दूरि अखर्व ॥ द्रौपदी यह धर्मचारिणि है अयोनिज जौन । पाप कर्म न करति द्विजगण चरण सेवति तौन ॥ हरण ताको कियो सैंधव दुष्ट दुर्मति राश । लखो सो तुम लहो हमसों जौन तेहि हम त्रास ॥ करत मृगया जीवनार्थक दुख यह बनबास । अल्प भाग्य न और हमसो होय गो नरराश ॥ सुनो देखो होय हमसों अल्पभागी जौन । कहहु हमसों सहित विस्तर महामुनि तपभौन ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ रामको दुख दयो रावण निकृति बनमे घोर । प्रिया तिनकी जनकजा हरि लै गयो जिमि चोर ॥ मारि गृद्ध जटायुकों लै गयो लङ्कामांह । सुग्रीवको बल लै लइ फिरि राम श्रीनरनाह ॥ बाँधि सेतु समुद्रमे करि भस्म लङ्का सर्व । मारि रावण दनुज पतिकों सबल बन्धु अखर्व ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ भरे बलतों भए कैसे कौन कुलमें राम । कौन कुलते भयो रावण बैर भो किमि माम ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ इक्ष्वाकु कुलमें भए अजनृप पुत्र दशरथ ताश । चारि ताके भये सुत रामादि अतिबलराश ॥ राम माता कौशला भे कैकेयी सुत भर्त । भे सुमित्रा पुत्र लछमण शत्रुघन गुणधर्त ॥ जनक भूप बिदेहकी हो सुता सीता पर्श । रामकी सो भई महिषी भरी शील सुधर्म ॥ राम सीताको कहो यह जन्म हम अभिराम । कहत जैसे भयो रावण महाबलको धाम ॥ ब्रह्मसुत हे मानसिक पुलस्त्य तेजस्वरूप । बिश्रव ताके भए सुत गवि भार्य्यासे भूप ॥ पिताको तजि पितामहको लगे भजन धनेश । बिश्रवा तेहि क्रोधते सुत कियो अति बल बेश ॥ धनदके प्रतिकार करिवे हेत सुनहु नरेश । पितामह सु कुबेरको किय अमर दिगप धनेश ॥ पुत्र नलकूबर दियो ईशानको करि मित्र । दई लङ्का पुरी राक्षसवृन्द सहित विचित्र ॥ तातको सह क्रोध जानि कुबेर गेय प्रवीन । रइ हेतु प्रसन्न कन्या राक्षसनकी तीन ॥ पुष्पोत्कटा अरु मालनी अरु नाम राका जास । पुष्पोत्कटा सुत भए रावण कुम्भश्रुति बलवास ॥ मालिनीके भे बिभीषण रही राका जौन । भई सूर्पनखा सुता खरपुत्र अति बलभौन ॥ भो बीभीषण धर्मचारी बली अति अभिराम । विष्णु आराधन करे निति विष्णुभक्त ललाम ॥ ज्येष्ट रावण कुम्भकर्ण सो महाबल अतिकाय । विप्र द्वेषी भयो खर मनुजाद अति बल पाय ॥ भई सुर्पनखातिक्रोधी हरषि तप नरनाहँ । पिताके सँग बसत सिगरे गन्धमादनमाहँ ॥ चहद्धि लखि बैश्रवणकी ते रावणादिक सर्व । नियम धरि तप करण लागे करि अमर्ष अखर्व ॥ कियो बिधिको तृप्त रावण सहसवर्ष प्रमाण । एक पदसों खडो ह्वै पञ्चाग्नि

माहँ महान॥ बायु भक्षण करत बीतें वर्ष दशशत तोभादशबार यों सो एक मस्तक अग्निमे किय होम ॥ कुम्भकर्ण सु कियो तप क्षितिशयन रहित अहार । त्यो विभीषण खाय सूखो पत्र एक उदार॥ कियो खर सह भगिनि तिनको सविधि सेवन पुष्ट। जाय विधि तिनको निवारण कियो तपसों तुष्ट॥लोभ दे बरदानको एक एक तिनहिँ समान॥ *॥ ब्रह्मोवाच ॥ * ॥पुत्र बर मांगहु स्ववांछित हम प्रसन्न महान ॥ छोडि कै अमरत्वको बर चहहु मागहु तौन । होहिँ गे तब यथा इच्छा शोश होमे जौन॥विकृत रूप न होऊगे तुम कामरूप उदार। युद्धमे तुम होऊ गे अरि बृन्दके जेतार ॥ * ॥ रावणउवाच ॥ *॥ सुर असुर राक्षस नाग किन्नर यक्ष अरु गन्धर्व। नहिँ पराजय लहौं इनसों जीति रणमे सर्व ॥ *॥ ब्रह्मोवाच ॥ * ॥ बिना मानुष जीति हौं तुम सर्व इनको बीर। * ॥ मार्कण्डेयउवाच॥ *॥ सुनत बिधिके बचन रावण लहो मोद गभीर ॥ कुम्भकर्ण हि कहो तैसे जाय कै बिधि बैन । महातमसों यक्ष निद्रा कहो दुर्मति जैन ॥ कहि तथास्तु सु गए ब्रह्मा जहँ बिभीषण भूप । पूत्र मागहु चहहु सो बर हों प्रसन्न अनूप ॥ * ॥ बिभीषणउवाच ॥ परेहूँ न ब्रिपत्य मेरी बुद्धि छोडै धर्म । ब्रह्मास्त्र मोको बिना शिक्षा होय भासित पर्म॥ब्रह्मोबाच॥ धर्मको नहि तजत हो तुम योनिराक्षस पाय। देत है अमरत्व याते तुम्हे अति सुखदाय ॥ ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ जीति लङ्का लई बर लहि धनदसो करि युद्ध । सहित भ्रातन बसो तहां जाय रावण उद्ध ॥ गन्धमादन पै कियो चलि धनद अपनो भौन । ब्रह्मदत्त बिमान पुष्पक लियो रावण तौन ॥ वैश्रवण दीन्हो शाप तेरो होय गो न बिमान। जौन तोको हनैगो सो लेय गो सुरजान॥धर्मपथ गहि कै बिभीषण लही श्री सुअशेष। यक्ष राक्षसको कियो सैनेश ताहि धनेश ॥ मनुजाद राक्षस अरु पिशाचन धारि बुद्धि बिबेक । कियो लङ्कामाह रावण राज्यको अभिषेक॥दशग्रीव लिय सुरगणको जीति रत्न अनूप।देवर्षि अरु ब्रह्मर्षि सिगरे देवगण सह रूप॥ गए पावक सहित विधिकी शरण जानि समृद्ध ॥ * ॥ अग्निरुवाच ॥ * ॥भयो सुत विश्रवसको दशकन्ध दुर्मति वृद्ध ॥ कियो ताहि अबध्य पहिलें देय बर भगवान।प्रजनको सो करत बाधा देय दुःख महान ॥ करहु रक्षण तुम्हे बिन है हमै रक्षक कौन ॥ * ॥ ब्रह्मोवाच ॥ * ॥ जीतिवेके शक्य है सुर असुरके नहिँ तौन ॥ तास बधके हेतु कारण कियो है हम जौन ॥ मनुजको ताते धरे गो जन्म त्रिभुवनभौन ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ पितामह तब शक्रसों एहिभाँति बोले बैन । धरा पर चलि जन्म लीजे सुरन सह बलऐन ॥ बिष्णुकी सु सहाय हेतुक ऋक्षि वानरि मांह । वीरसुत उतपन्न कीजे सुरन सह सुरनाहँ ॥ भाग अपनेसों करै उतपन्न सुत बरवीर। आय आपुसमे कियो यह मंत्र सुरन्ह गभीर ॥ सुरन्ह देखत दुंदुभी गन्धर्विनी ही जौन। कहो विधि व्है मंथरा तुम जाऊ दशरथभौन॥ दुंदुभी तब मंथरा बनि बसी दशरथ धाम।ऋक्षि वानरि मिलि यो सुर शक जन्म ललाम ॥ अंश माफिक सुबल सबको बज्रसार शरीर । काम

रूपी युद्धवेत्ता महा बलबर बीर॥ एहिभाँति सों सब बिरचि ब्रह्मा मन्थरा सों तौन। दियो कहि करतव्य कारज रहो आगें जौन॥ *॥ युधिष्ठिर उवाच॥ *॥ रामादिको तुम जन्म बिधिवत कहो मुनि तपधाम। कहहु अब प्रस्थानकारण सुनो चहत ललाम॥ जौन बिधि बन गए लछमण सहित सीता राम॥ *॥ मार्कण्डेयउवाच॥ *॥ प्रीति मानस भए दशरथ सुतन रुङ्ग ललाम॥ क्रियारति सतसङ्ग रति धरि धर्मरति बर भूप। क्रमहितें सुत सर्ब ताके भे कुमार स्वरूप॥वेदबिद सरहस्य भे धनुवेदवेत्ता सर्ब। भए धरि उपनीत ते सह दार बन्धु अखर्ब॥राम सब गुण भरे रञ्जन प्रजन्हके अभिराम। मनोहर पितु हृदय नन्दन भए आनद धाम॥ जानि अपनी बैस बीती बहुत दशरथ भूप। रामके अभिषेकको तब कियो मंत्र अनूप॥ लोहिताच सु महा भुजमदमत्त गजगति बीर। महोरस्क सु नील कुञ्चित केश पास गँभीर॥ भरे औसो दिपत शक्र समान गुणगणग्राम॥बृहस्पतिसे सु मति सागर धर्मधुर धृतिधाम॥सर्ब बशकर प्रकृति बिद्या सर्बके आधार। जितेन्द्री खलनिग्रही शतपाल प्रकृति उदार॥ अजित जेता अरिनके अपराजितात्मा रूप। हृदयनन्द जननिके लखि राम दशरथ भूप॥ प्रीति भरि गुण रामके लखि नृप पुरोहित पास। कहो आजु सुचौस मुनि वर पुख्य योग्य प्रकास॥सरंजाम समृद्ध कीजे जो अभिषेक समान। जाय कै करिए निमंत्रित रामकों सुखदान॥ भूपको यह बचन सुनिकै मन्थरा तहँ जाय। कहो औसे कैकईसों बचन औवर पाय॥ दुर्भाग्य तुम्हरो कियो सञ्चित कपट धरि छितिपाल। दशौ तुमकों सर्प अति बिष ग्रसो कोपित काल॥ भाग्य कौशल्या भरी है पुत्र जाके राम। होत है अभिषेक जाको राज्यको सुखधाम॥ पुत्र राज्य न लहत तब हत भाग्य तू गत मान। कैकई भरि कपट मनसे भरी रूप लहान॥ रहससे पति पास औसें बिहसि बोली बैन। प्रणय सहित मनोहरण अति माधुरीके औन॥ भूप सत्य प्रतिज्ञ मोको दीजिऐ बरदान। मोहिमोचन कीजिए सङ्कष्टसो अतिमान॥ राजोवाच॥ देत हम बरदान तुमकों चहति जो अभिराम। जौन दुष्कर कहहु मी सों करै सो छबिधाम॥जौन बाँछित होय तुमकों तौन मागहु छिप्र। एक तजि जो दियो हम कहि स्वस्ति लीन्हो बिप्र॥ जानि अपने बस्य सुनि कै भूपके बर बैंन। कहो कीजै भरतकों अभिषेक नृप मतिऔन॥ राज्य दीजे भरतकों नृप जाहिं बनकों राम॥भूप सुनि कैं बचन सों अति घोर दुखको धाम। कछुक बोले नही भूपति रहे जड ह्वै मौन। पिताको पण पालि बनकों राम कीन्हो गौन॥ धरे धनुष तुणीर गमने सङ्ग लछ्मन बीर। बली सीता संग धारं पातिब्रत्य गँभीर॥ गए बनको राम जब तब सुनत दशरथ भूप। गए सुरपुर देहको करि त्याग धर्म स्वरूप॥ राम बनको गए दशरथ मरे सुधरम औन। भरतको बोलवाय बोली कैकयी इमि बैंन॥ गए दशरथ स्वर्गकों बन बसे लछमण राम। निहत कण्टक राज्यको तुम करहु भोग ललाम॥ भरत जननीसों कहो तुम क्रूर कीन्हो कर्म। हतो पति धनलोभतें कुलनष्ट कीन्हो पर्म॥

अयश मेरे शशपर तुम धरो जननि महान। लगे रोदन करण ऐसें बोलि भरत सुजान ॥ आज्ञा क्षत यह कर्म नहि यह करि प्रसिद्ध चरित्र।कहे राम हि फेरिबेकों बचन भरत पवित्र ॥ शत्रुघ्नके सँग जननि सिगरी बिदा करि कै भूप। वामदेव वशिष्ट आदिक विप्रगण तपरूप॥ जानपद पुर जननके सँग चलत प्यारें भर्त। जाय देखो चित्रकूट सुराम गुणगण स्मर्त ॥ धनुष धारे रामको तह लखो तापसरूप। कहे सविनय बचन नानाभाँतिके बहु भूप ॥ बिदा कीन्हो भरतको प्रतिपालि पितुपण राम। पादुका ले रामकी गे भरत नन्दीग्राम ॥ करत पूजन पादुकाको राज्यक्षत मुनि रूप। प्रजागम लखि राम छोडो चित्रकूट अनूप॥ महाबनमें गए जहँ सरभङ्ग आश्रम पर्म। गऐ दण्डक बिपिनिकों सरभङ्गको दे शर्म ॥जाय कै गोदाबरीतट बसे रघुबर धीर॥ सुपनखाको दोष लहि खर सबल मारो बीर॥ रक्षणार्थक तापसनके धर्मधुर रघुनाथ। चतुर्दश बरबीर राक्षस हने दूषण साथ ॥ रम्य दण्डकबिपिनिकों फिरि कियो श्रीरघुबीर॥ गई रावण पैं सुपनखा कटी नाक अधीर॥ गिरी ताके चरणपैं मुख सुष्क शोणित रुद्ध। रूप ताको बिक्षत लखि अतिभयो रावण क्रुद्ध ॥ दशनसों दँसि ओठ मंत्रिन्ह टारि करि एकान्त। लगो बूझन भगिनिसों सब बिपिनिको वृत्तान्त ॥ कियो कौने कर्म यह कहु भगिनि मोहि बिसारि। गहो यमपुर जाइबेकों मार्ग केहिँ निरधारि ॥ कढी रोमहरंध्रतें तब तास क्रोध ज्वाल॥ कहो सब सुपनखैं बिक्रम रामको सु बिशाल ॥ अतःपर करतव्य तौन बिचारि रावण भूप। गयो पास मरीचके पुर रचिकै अनुरूप॥राम भयते जायकै मारीच मुनिगण पास। बसत हो गोकर्ण शिव ढिग जानि अभय निवास॥ भरो संभ्रम देखि रावण आगमन मारीच। फूल फलसों कियो पूजन जानि मित्र निभीच ॥ स्वस्थ ह्वैकै लगो बूझन निशिचरपतिसों तौन। व्यग्रसे इत आगमन किय कहहु कारण कौन ॥ कहो रावण रामको क्षतकर्म सहित बिधान। कहो हो करतव्य जो क्षत भरो क्रोध महान॥ कहो इमि मारीच रावण बचन सुनत अखर्ब। राम निकट न जाहु जानत तास बल हम सर्ब ॥ रामशरको बेगको सहि शकै गो बलवान। हेतु मेरे सुतप को है तौन बीर महान॥ कियो केहि उपदेश तुमको मंत्र यह क्षत नास। क्रोध करिकै कियो रावण सहत भर्सन तास॥ नियत है तो मरण जौनहि मानि हौ मम बैन। राम करतें मरण मङ्गल अधमतें एहि हैन॥ प्राप्त मरण अवश्य यातें करैं याकों कार्य्य। चिन्ति रावणसों कहो सु मारीच अति मति आर्य्य॥ हमै कारज कौन करिबे कहहु रावण तौन।*॥ रावणउवाच ॥*॥ कारज शोभित जनकजाको बिपिनिमें करि गौन ॥ रतनै मृग बनहु सीता दृष्टि गोचर जाय। सहज गहिबे तुम्है देहै रामकों सो पठाय॥ राम बिन हम हरैंगे तब सियाको अभिराम।बिरह बस त ब नष्ट ह्वै हैं बिपिनिवासी राम॥बचनसुनिकिय और्धदैहिक आपनो शुभकर्म।चलो रावणके सो पीछे मरण माने पर्म ॥ गयो मृग बनि तथाबिधिसों रामआश्रम पास। भिक्षुको धरि रूप

रावण दण्ड गैरिक बास ॥ देखि सीता बनो मृगको रूप अद्भुतअन । देऊ मृग एह रामसों तब सहठ बोली बैन ॥ करणको प्रिय जानकीको राम धनु धरि धीर । रच्छणारथ लखनको तहां राखि गमने बीर ॥ धरेधनुतूनीर दौरे राम मृग परभात । यथा मृग नच्छत्र पीछें प्रजापति तुरजात ॥ प्रगट कबहू अप्रगट व्है लेगयो रामहिँ दूरि । निशाचर तेहि भए जानत राम बरबल पूरि ॥ बाण लेय अमोघ मारो निशाचर मृगरूप । बाणबिद्ध सो कहेसि ऐसैं रामस्वर सम भूप ॥ हाय सीता हाय लच्छण रुदित आर्त उदार । सुनो बचन सो जानकी अति उच्च करुनागार ॥ भयो जहँ यह शब्द लच्छण जाऊ तहँ रणधीर । जनकजा को करै पीडित रामको बरबीर ॥ लखनके सुनि बचन लागी करण रोदन भूप । जनकजा कहि बचन मुखते महत अनुचितरूप ॥ सुनत अनुचित बचन सकरुण लखन मूदे कान । गए हे जह राम धारें धनुष तून महान ॥ रामको पद परशि लच्छण चले पाछे धीर । सियाढिग तब गयो रावण भरो कपट गभीर ॥ बेश धारैं यतीको लखि जनकजा धृतधर्म । अतिथि ताको जानि चाहो देन फल मूल पर्ण ॥ धारि अपनो रूप ए बैन जनकजासों बैन । कहो ऐसैं राच्छसाधिप जानु मोहि छबिऐन ॥ नाम रावण पुरी लङ्का महोदधिके पार । होऊ सुन्दरि भारया मम भजऊ ऋद्धि उदार ॥ राम तापसकों तजऊ लखि करऊ मोर बिलास । कार्ण मूदे जानकी ए बचन सुनि कै त्रास ॥ बचन ऐसे कहसि मति जो गिरैं रबि शशि मन्द । धरानभ फटि जाय तबऊ न तजैा रघुबर चन्द ॥ मत्त गजकों छोडि करिणी चहै शूकर कौन । एहिभांति कहि कै बचन सीता गई आश्रमभौन ॥ अधर कांपत क्रोधते करसों निवारति ताहिँ । गहो रावण दौरि आश्रममाहँ पैठति चाहिँ ॥ करत भर्त्सन केश गहिँ कै लियो रथपर डारि । गगणपथ व्है चलो रावण बेग आतुर धारि ॥ लखो गृद्ध जटायु सीतहि लए रावण जात । राम राम पुकारि रोवती बिकल बोव्हल गात ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि सीताहरणवर्णनोनाम एकोणषष्ठितमोऽध्यायः॥ *❦❦❦❦❦❦❦❦❦❦*

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

अरुणपुत्र जटायु देखो रावणा दै हांक । निदरि मोहि हरि जनकजहि कहँ जात दुष्ट निसांक ॥ जियत मोसों जात नहिँ जो न तजत सीत हि दुष्ट । बोलि ऐसे नखनसो चलि कियो घाएल रुष्ट ॥ पच्छतुण्ड प्रहारतें च्छत किए अमित उदार । व्यकल रावण देहतें बऊ बहो शोणित धार ॥ गृद्धसों हतमान रावण रामप्रिय निरधारि । खड्गसो भुज काटि गृद्धहि दियो च्छितिपर डारि ॥ गृद्ध राज हि मारि रावण अभ्रशिखर समान । लऐं सीता गगणपथ गो करे आतुरज्ञान ॥

जहँ जहाँ सीते लखे आश्रम सरित सर अभिराम। डारि भूषण दए तहँ तहँ मणिनमय छवि धाम ॥ लखे बानर पञ्च बैठे शिखर पर अतिकाय। उत्तरीय समान विहित दियो तत्र गिराय ॥ सहित वायुबशसों गिरो तिनके मध्य जाय अनूप। अचिर सीत हि लए लङ्का गो निशाचरभूप ॥ देखि लक्षणसों सीतापुरी मांह प्रवेश कीन्हों दुष्ट। फिरे रघुबर मारि राक्षस महा मायापुष्ट ॥ दूरि लै मृग कहो तुम कोडि सीत हि एक। इहा आए विपिनिमे यह कियो अति अबिबेक ॥ करत निन्दित रूप राक्षस गयो मायाभौन। लखनको आगमन कारण चले चिन्तत तौन ॥ महा दुखसों भरे लखनको तब चले आतुर राम। कहे लक्षण सियाके जे बचन अनुचितधाम ॥ जानि राक्षस तानि कै धनु आश्रमको गए श्रीराम। लखो मारो गृद्ध तेहां परो गिरिसम भाम ॥ कहे दशरथके सखा हम अरुणके चले श्रीरघु बीर। देखि लक्षण रामको इमि गृद्ध बचन गभीर॥ सखा जानो जनकको सुनि बचन तास सुत गृद्ध। बचन ताके सुनत नीरे गए धनु करि रुद्ध ॥ बूझिकै सीतार्थ जानो गृद्धबध रघुबीर। ललाम। छिन्नपक्ष जटायुकों तहा लखो करुणाधाम ॥ मरो गृद्ध बताय दक्षिणदिशा शीस हलाय। गयो रावण कौनदिशि इमि ताहि बूझो धीर ॥ भरे मोक्ष ताकों दिये देखो राम आश्रम आय ॥ भ्रष्ट आसन हत कमण्डलु भरी जम्बुक भीर। लखो दुख हतश्री चले दिशि याम्यकों रघुबीर ॥ भजे आवत देखि मृगगण बिपिनिमे अतिघोर। छदयमे शिर्के सम करत नाना जीव आरत सोर ॥ लखो नाम कबन्धराक्षस कछू आगे जाय। ग्रसित मुख महाभुज सम अचल उन्नत काय ॥ लखनकों तेहि महाभुजसों गहो दैवाधीन। लखके ताकों भए लक्षण विषाद पूरित पीन ॥ दनुज खैंचो बदनकों दिशि रामको तब हेरि। राज्यते तुम मेरी दशाकों प्रभु कहन लागे टेरी। हरण सीताको भयो हम भये एहिबिधि राम। देखि है अभिषेक भ्रष्ट दशरथ गए अन्तकधाम ॥ हम न तुमकों जनकजा सह कोशलामे राम। कहो तब शिथिल राज्यके सुखधाम ॥ एहिभांति सो कहि लगे लक्षण करण बहुत बिलाप। बामभुज हम रघुनाथ निश्चम भरे भूरि प्रताप ॥ मोहि आछत नरव्याघ्र न करउ खेद गँभीर। मारि लक्षण करत खण्डन दक्ष तुम रणधीर ॥ राम लक्षण बाम दक्षिण काटि कै भुज तास। खङ्गसो प्रभु कियो ताको नाश ॥ पुरुष ताके देहतें कढि गगणस्थित बरि रूप। देखि पूछो रामकों तुम कहउ तौन अनूप॥ लहो ब्राह्मण शापते हम नीचयोनि अखर्बो नाम विश्वावसु हमारो रास हम गन्धर्व ॥ हरी रावण जनकजाको करत लङ्कावास। जाऊ राम सहाय करि है बानरेश्वर पास ॥ हंस कारण्डवन्ह शोभित सर सुपम्पा नाम। ऋष्यमूक समीप है सुग्रीब जहँ बलधाम ॥ चारि सचिव सहित भ्राता बालिको भय पाय। बसत है ऋष्यमूक पै सुग्रीव अतिबलकाय॥ करै सो सहाय तव सम शोध है बलवान। रावणालय तौन जानत कहत हम सु प्रमान ॥ बचन यह गन्धर्व कहि कै भयो अन्तरध्यान। राम लक्षण गए जेहां रहो सर सुखदान॥ ❦ * ❦ * ❦

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि रामोपाख्यानेजटायुकबन्धवधवर्णनोनाम षष्टितमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

राम लखण देखि पम्पा परम सरबर भूप। करण राम बिलाप लागे समुझि सीतारूप ॥ कहन लखण लगे तुमकों योग्य नहि यह राम। आत्म रूपनिधान हो तुम महाबलके धाम ॥ सोध खोजे जनकजाको जहाँ रावण तौन। बसत जहँ सुग्रीव गिरिपर तहाँ करिए गौन ॥ एहिभांतिके कहि वचन लखण रामकों समुझाय। चले पम्पा छोडि जहँ सुग्रीव कपिबर पाय ॥ जाय के ऋषिमूक ढिग कपि पञ्च देखो तौन। देखि कै सुग्रीव पठयो शचिव कपि मतिभौन ॥ हनूमान समान गिरिबर राम नीरे जाय। यथाविधि कहि वचन गो सुग्रीव पास लेवाय ॥ सख्य तब सुग्रीवके सँग कियो लखण राम। रामको पट जानकीकों दियो कपि अभिराम ॥ फेरि सीत हि ल्याय बेकी शपथ करि सुग्रीव। राम ताको बानराधिप कियो अति बलसीव ॥ कियो बालि हि मारिबेकी युद्धमें पण राम। कियो पण सुग्रीव सीत हि ल्यायबेको नाम ॥ एहिभांति करि बिस्वास बधित परसपर गम्भीर। गए किष्किन्धा निकट सुग्रीव सह रघुबीर ॥ युद्धार्थ किष्किन्धा निकट सुग्रीव गर्जे जाय। सहो सुनत न बालि अतिबल उठो बीर रिशाय ॥ * ॥ तारोवाच ॥ * ॥ स्वबलतें सुग्रीव गर्जे है न यह गम्भीर। तास कोउ भो सहायक आयकै बलबीर ॥ नही तातें जाइए पति मानि मेरो बैन ॥ * ॥ बालिरुवाच ॥ * ॥ कौन आश्रम तास है सुग्रीव दुर्मतिऐन ॥ कहन तारा बालिसों तब लगी सहित बिधान। दारहृत तहँ राम आए अनुज सह बलवान ॥ सुग्रीव तिनसों करी मैत्री ते धनुर्द्धर बीर। अनुज ताको जौन लखण तौन अति रणधीर ॥ द्विविद और मयन्द मंत्री ऋक्षपति हनुमान। सर्ब हैं एँ महा आत्मा सुमति अति बलवान ॥ रामको बल पाय चाहत कियो तुमको नाश। बालि वचन न तास मानो बंधो अन्तकपास ॥ बोलि तासो परुष निकसो गुहासों बलऐन। महाबल सुग्रीवसों इमि बलकि बोलो बैन ॥ तोहि कै यो बार जीतो निलज तौन बिसारि। छोडि दीन्हो जियत यातें तोहि बन्धु बिचारि ॥ बालिसो सुग्रीव बोलो गरजि पाय सहाय। प्राप्त औसर रामकों पण दियो सो समुझाय ॥ हरी दारा राज्य तू मम कहा जीवन माँह। बीर दोउ भिरे ऐसे बोलि कै नरनाह ॥ शिला तरुसों लरत दोउ भिरत पाय प्रहार। दन्त नख क्षत करत मुष्टिक मारि मारि उदार ॥ फुल्लकिंशुकसे लसे दोउ भरे शोणित धीर। भिन्न रूप न जात जाने देखि कै रघुबीर ॥ लता बाँधी जाय तब हनुमान सुमन ललाम। चीन्हि कै सुग्रीवकों तब धनुष लीन्हो राम ॥ बालिको करि लक्ष खैंचो समर धनु बलवान। बालि कम्पित भयो उरमे लगत रघुबर बान ॥ बालि शोणित बमन लागो बदनसों अतिमान। देखि ठाढे राम

लक्ष्मण धरे धनुष महान ॥ काकुत्स्थको करि के सो निन्दित गिरो क्षितिपर भूप। लखो तारैं परो क्षितिपर बालिको मृतरूप॥ कियो किष्किन्धाधिपति सुग्रीवको तब राम। सुग्रीब तारा सहित सानन्द बसे अपने धाम ॥ माल्यबत गिरि पै बसे चलि सहित लक्ष्मण राम। योग्य चातुरमासके रचि दयो कपिपति धाम ॥ जाय लङ्कापुरीमे सह सिया रावण भूप। जाय राखो सियाको जहँ सदन अद्भुत रूप॥ असोकबनिका निकट तपस्याश्रम समान अनूप।करति राम स्मरण धारी तपस्विनीको रूप ॥ धरे तप ब्रत करै सीता मूल फल आहार। करै रक्षण राक्षसी गण लएँ शस्त्र उदार॥ द्विकि अक्षि ललाटाक्षिणि कोउ द्विजिह्वा तीन। त्रिस्तनी एकपाद त्रिजटा एकनैना पीन॥राक्षसी अति बिकट ऐसी करै रक्षण जौन।राति दिन नहिँ लेति निद्रा रहै घेरे तौन॥ राक्षसी ते करै तर्जन बचन बोलहि घोर। खाऊ मारऊ काटि डारऊ याहि गहि बरजोर॥ एहि भांति भर्त्सन करै निसुदिन जनकजाको भूप। राम बिरहाकुलित सीता कहै बचन अनूप॥ बेगि मोको खाऊ तुम नहि जीबि ताशा पीन। बिना रघुबर कमललोचन भई दुर्बल दीन॥ करति सोषण देहको ब्रत धरें निरशन जौन। राम बिन एहिजगतमे है पुरुष मेरो कौन ॥ सुनत सब निशिचरी कहिबे गई रावण पास। कहन तब त्रिजटा लगी प्रिय बैन सुमति निवास ॥ कहति तो प्रिय सुनऊ सीता छोडि भय धरि चैन। अविन्ध्य नामक बृद्धराक्षस नाम प्रिय मतिऐन॥ कहति मोसों कहो तुमसों कहनकों प्रिय जौन। रामपति तव कुशलसो है अनुज सह बलभौन॥ शक्र सदृश कपीशसों करि सख्य लक्ष्मण राम। करत सैन त्वदर्थ उद्यत रहत है बलधाम ॥ धनदसुतके शापते तुम रहति रक्षित पर्म। लहो एहिँ जब भजो रम्भाबधूको तजि धर्म॥ भजि न बरबश शके नारीकों दशानन दुष्ट। क्षिप्र लक्ष्मण राम आवत सहित कपिपति पुष्ट॥ तूम्हे मोचन करै मे नहि निशाचर गण सर्ब। लखे रावण नामके हम लिङ्ग महत अखर्ब ॥ तैल लाएँ बिकच बूडित पङ्कसे दशशीश। चढो खरजुत जान ऊपर नचत सो भुज बीश॥ कुम्भकर्ण हिँ आदि राक्षस नग्न दक्षिण ओार। जात लाएँ रक्तलेपन माल पहिरे घोर॥ खेत धारे छत्र मणिमय मुकुट उज्वल माल। खेतगिरि पर यों बिभीषण चढो मुदित बिशाल॥ सचिव ताके चारि तैसँ चढे गिरिपर पर्म। हमै सबकों करत मोचन भीतिसो धरि धर्म॥ रामास्त्रसों भू भई व्यापित सहित सिन्धुउदार। सुयशसों क्षिति भरत देखो सिया तो भर्तार॥ अस्थि चयपर चढो [illegible]धु परमान्नखात अखर्ब। लखो लक्ष्मण चहत कीन्हो भस्म दिशिदश सर्ब॥ करति रोदन रुधिर सिञ्चित व्याघ्र रक्षित पर्म।तुम्है देखो जात उत्तरदिशाकों धरि शर्म॥क्षिप्र मिलिहैा रामको तुम सहित भ्राता बीर। सुनत त्रिजटाके बचन सिय भरी मोद गभीर॥ नहीं जबलो राक्षसी ते तहँ आई भूप। लखो त्रिजटै जनकजाकैा तैान पूरब रूप॥ ******

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि रामोपाख्याने त्रिजटाश्वासन वर्णनो नाम एकषष्ठितमोऽध्यायः॥******

॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

शोकसों भर्तारके छशरूप भूषण हीन। मलिन बसना राक्षसीगण ग्रसित दुःखित दीन॥ शिला ऊपर जहा बैठी जनकजा दुखधाम। तहा आयो अधम रावण लोकजित बश काम॥ दिव्य अम्बर धारि मणिमय मुकुट भूषण सर्ब। मूर्तिमान बसन्तसों धरि कुसुममाल अखर्ब॥ बनो सुरतरु सदृश तबहूँ अधम भयकर रूप। जाय सीता निकट ऐसे कहन लागो भूप॥ बरऊ सुन्दरि मोहि पूरण करऊ पति अनुराग। बसन भूषण ऋद्धिसों बरि मोहि भूषऊ भाग॥ सिरो भूषण होऊ मेरी प्रियाहै जे ताश। देवदनु गन्धर्बकन्या राक्षसीं छबिराश॥ कोटि चौदह भजे मोकों तुम्हें भजिहै तौन। द्विगुण राचउ त्रिगुण तिनतें यक्ष किन्नर जौन॥ जीति धनदहि लियो पुष्पक लहऊगी सो जान। ब्रम्हर्षि विस्त्रवनासुत हम लोकपाल समान॥ सची सम तुम होऊ मेरी होय भार्या पर्म। दुःख तजि वनवासको तुम लहऊगी अति शर्म॥ जनकजा एहि भांतिके दशकन्धके सुनि बैन। देयकै तृणमध्य बोली भरें जलसौं नैन॥ जाऊ होय निवृत्त मोसों लहऊ भद्र उदार। लभ्य तोहि न पतिव्रत ब्रत धरे हो परदार॥ नहो हमतुम योग्य भार्या मानुषी छश रूप। बिबस करिकै मोहि धर्षित चहत प्रीति अनूप॥ प्रजापति सम पिता तेरो ब्रह्मयोनि महान। सो न पालत धर्मकैसें लोकपाल समान॥ बोलिकै एहि भाँति सीता लगी रोवन भूप। भूमि देखति अधोमुखन्है काँपति व्याली रूप॥ सियाकें ए वचन सुनिकै निलज बोलो बैन। सुनऊ सीता कामनोकों देतहै नहिं चैन॥ कहा मोहि अशक्य करिबो तोहित अनुरूप॥ राम मानुष भक्ष्य मेरेहों दशानन भूप॥ जनकजासौं बोलि ऐसे निलज अधम अयान॥ गयो अभिमत भरो न्है दशकन्ध अन्तरध्यान॥ राक्षसिनके मध्य सीता रही छशित स्वरूप। रही सेवत एक त्रिजटा सुमति ताकों भूप॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ सुग्रीव सेवित रामलक्ष्मण माल्यवत पर बास। करत हे सो बिमल अम्बर गयो चातुर्मास॥ बिमल शशि नक्षत्र ग्रहगण भए गोधन घोर। कञ्ज कैरव काश फूले लसत चारों ओर॥ जनकजा के बिरह व्याकुल भोर उठि रघुबीर। लगे लक्ष्मणसों कहन एहि भाँति बचन गभीर॥ जाऊ जानो मत्तभो कपिराज न्है बश काम। कृतघ्न निपुण स्वकार्यमे लहि कुमति राज्य ललाम॥ बानराधिप कियो मारो बालिको जेहि अर्थ। तौन भूलो अधम कृत मम कियो चाहत व्यर्थ॥ होय नहि उद्योगमे सो मदन मत्त गभीर। बालि पथमे प्राप्त करिबे योग्य तो कपिबीर॥ होय जौ उद्योगमे मम अर्थ कपिबर तौन। ताहि आदर इहाँ ल्यावऊ छिप्र

कीजै गौन॥ महागुरु श्रीरामके सुनि बचन लक्ष्मणबीर । चले धनुधरि महा निठुर तूण बाँधि गभीर ॥ गए किष्किन्धा पुरीमे बिना बारित भूप । मिलो आगे आय कपिपति सहित दार अनूप॥ क्रोध पूरित जानि पूजे कीशपति सबिनीत। कहे रघुबर बचन लक्ष्मण महाबीर अभीत॥ सुनो कपिपति राम उक्त अशेष सिगरे बैन।कहन तब कपिराज लागे लखनसो मिति अैन ॥ नही मेरे दुष्टमेधा हौं कृतघ्नबीर।कियोन्वषणहेतु कीन्हो यतनसों सुनुधीर॥ओर आठौ पठैदीन्हे कीश अतिबलभौन। एक बीते मास अैहैं ढूढिकै सब तौन॥ अद्रि पुर बन ग्राम सागर तीरलों भू सब। आइहै फिरिढूढि पैतिस दिवसमध्य अखर्ब ॥सुनत दारा सचिव सह इमि कीशपतिके बैन। कियो पूजित बानरहिँ लच्छन पूरित चैन॥गए सह सुग्रीव लक्ष्मण मुदित रघुबर पास।कहो सिगरो कार्य को जो यत्न किय मतिरास। तेहि समै आए तहाँ बानर ढूढिकैं दिशितीनि। गए दक्षिण दिशाकों ते नहीं आये पीन ॥कहो तिन बन नगर परगिरि फिरे शोधत सर्ब।नही देखो जनकजा कों भूमि रावण खर्ब॥गए दक्षिण दिशाकों अबकरततिनकोआस।महा बलले नहीं आए दोय बितेमास॥ तेहि समै बानर आइ बोले कीशपतिसों बैन। हनुमान अङ्गद कियो मधुबन ध्वंस हे बलअैन ॥ आय दक्षिण दिशातें सगँ लये बाँनर बीर । बालि तुमते रहे। पाले जौन बन गम्भीर ॥ भए सुनि कृत कृत्य कपिपति बाँनरनके बैन। बिना कारजके किये हम भृत्यकौ कृत हैं न ॥ जायकै सुग्रीव सो सब कहो रघुबर पास । राम जाना देखि आए सियाकों बलरास ॥ तहां करि बिश्राम कछु ते हनुमतादिक बीर । गए कपिपति पास हैं जहँ राम सन्निधि धीर ॥ देखि गति मुख बर्ण श्रीहनुमान की रघुबीर । लही निश्चै देखि आयो सियाको रणधीर ॥ रामकों करि दण्डवत ते हनुमतादिक जाय । सुग्रीव लक्ष्मणकों कियो फिरि दण्डवत सुखदाय॥ राम हनुमतसों कहो इमि जानिकै सत मृत्य । कियो जीवन सहित हमकों भए तुम कृत कृत्य ॥ सहित सीता राज्य करिहैं मारि अरिगण सर्व । दार हृत व्है होत हमकों बीर जीवन खर्व ॥ कहन सुनि हनुमान लागे राम बचन महांन । लखी दक्षिण दिशा ढूढत गुहा एक महांन ॥ अमित क्षुधित सतृषा पैठे जाय तामे बीर। बहुत योजन गए पूरित अन्धकार गभीर ॥ जहां जाय प्रकाश पायो लखी तहँ तपधाम। प्रभावति हो नाम ताको तेजपुञ्ज ललाम ॥ दत्त तासों पाय भोजन मधुर करि जलपान। बद्ध बलव्है तृप्त निकसे तास आज्ञा मान॥ देखि ददुर सह्यगिरि चढि मलय पैं अतिमान।तहातें लवणोदधि देखो भरो जाद महांन॥देखिकै योशत सुयोजन सिन्धुकों बिस्तार। जीवितासा छोडिकै अति भए व्यथित उदार॥ तहां अनशन धारिकै ब्रत रहे सागर तीर। तहा चरित जटायुको सब लगे कहन गभीर ॥तहां आयो गृद्ध पर्वत सदृश घोर सहान। चाहि हमकों खाइबेको पक्षिराज समान ॥ कहत नाम जटायुको तुम कौनहो बलअैन। कहो हम सम्पाति तासों ज्येष्ठ सकरुण बैन ॥ भरे बल मद दर्पसो हम गए रबि रथ पास । जरे मेरे पक्ष उबरो

अनुज सो बलरास ॥ बझत दिनसो नहीं देखो अनुजसों बरबीर । रहे हम बिन पत्त अबलों गुहामाह गभीर ॥ मरण सबिधि जटायुको हम कहो तासों राम । जानकीके हरणको दुख आपुको अति माम ॥ सुनत सो सम्पाति मूर्च्छित होय बोले बैन । मरण ताको सिया हरण सो सबिधि कझ बलअैन॥कथा हम सबरावरे की दई ताहि सुनाय।कहो कारण आपने ब्रतको सो ताहि बुझाय ॥ मरण ब्रतसों तेहि उठाये हमै कहि यह बैँन । बसत लङ्कापुरी मे दशकन्ध दुर्मतिअैन ॥ लखतहैं हम पुरी लङ्का बसति सागर पार । मैथिली तहँ होयगी सब सुनऊ प्लवग उदार ॥ उठे हम सब तुरित ताको सुनत बचन ललाम । मंत्र लागे करण सागर नाघिबेको राम ॥ सिन्धु लंघनको न काह्न कियो जब ब्यवसाय । स्मरण करि तब रावरेको चरण हम सुख दाय ॥ सिन्धु नाघो मारि छाया ग्राहनीकों भूप । जनकजा हम लखी लङ्कापुरीमे कृशरूप ॥ एक बेणी मलिन बसना धरे ब्रत निरहार । मलिनाङ्ग बैठी भूमिपै तव नाम जपति उदार ॥ चिन्ह दे तब सियाके हम भए सन्मुख जाय । रामके हम दूत कहिकै एक ताकों पाय ॥ पवन सुत कपि इहां आए गगण पथ तव पास । कुशल सो है राम लक्ष्मण राजसुत बलरास ॥ करत रक्षण कीशपति सुग्रीव अति बल जैांन। कुशल तुमकों कहो लक्ष्मण राम बिक्रमभैान ॥ कुशल बूझो कीशपति प्रिय रामको सु अखर्ब । बेगि आवत राम लक्ष्मण सहित कपि दल सर्ब ॥ नियत बानर मोहि जानऊँ नहीं राक्षस रूप । मैान रहि धरि ध्यान मोसो कहे बचन अनूप ॥ तुम्हे जानो हनूमत हम साधु सुत तव बैँन । अरे राक्षस कपट बोलत क्रूर दुर्मतिअैन ॥ सचिव तुम से जास कपिपति राम आज्ञा पाल । बिश्वासकों मणि देयकै यह कहे बचन बिशाल ॥ चित्र गिरिपै काकको तुम दण्ड दीन्हो जैांन । कही सब बिश्वास कारण कथा हमसों तैांन ॥ ग्रहण आत्म करायकै हम पुरी बारी सर्ब । राम पूजा हनूमतको सुनत बचन अखर्ब ॥ ***

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि रामोपाख्यानेसेतुबन्धनसमुद्रतरणबर्णनोनामद्विषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ******

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

रहे बैठे राम जहँ तँह प्लवग जूथप बीर । पाय आज्ञा कीशपति को लगे आवन धीर ॥ बालि को हो स्वसुर नाम सुषेन जूथप जैांन । कोटि शत संग लएँ बाँनर महाबलके भैांन ॥ गवय गज अति प्रबल लीन्हे साटि कोटि प्लवङ्ग । कीश कोटिसहस्र लीन्हे गो प्रहर्षण सङ्ग ॥ गवाक्ष बासी गन्धमादन गन्धमादन जैांन । शत सहस्र सु कोटि बानर सङ्ग आये तैांन ॥ पनस नामक जैान जूथप भरो सुमति उमङ्ग । कोटि दश द्वादश सु त्रिंशत लए बांनर सङ्ग ॥ बृद्ध दधिमुख महाबल सँग लए सैन महान । जाम्ब बानर सहस कोटि सऋक्ष अति बलवान ॥ एतीक अैार जे जूथ

शूर्पणखा कहि कहँलो भूप। सिंघुसे गर्जे भयामक ग्रोल शृङ्ग स्वरूप ॥ श्रवण माला वरणके अमित काय बलमय घोर। सैन उमडी बानरी जग सिन्धु चारो ओर ॥ पायकै शुभ योग कपि पति सहित श्रीरघुबीर। चले लङ्का ओर लीन्हे सुभट सैन गभीर ॥ चले आगे सैन रक्षक बायुसुत बलधाम। पृष्ठ पालक लखन रक्षक मध्यमे श्रीराम ॥ सहित कपिपति लसत रवि शशि यथा ग्रहगण माहँ। नील अङ्गद द्विबिद पालत सैन सो कुरुनाह ॥ राम कारय सिद्धिको सो सैन सिन्धु समान। बसी जाय समुद्रके तट बिपिनि माहँ महान ॥ कहो तब कपिराजसों श्रीराम ऐसे बैन। सहित बानर मुख्य गणसे सबै लहि मतिऐन ॥ कहहु कौन उपाय सागर तरणसे मतिधीर। महत सेना महत सागर भरो बारि गँभीर ॥ कोऊ नावन कहै कोऊ नाव प्लव सों बैन। शान्त करि कै तिन्है बोले राम राजिव नैन॥ सिन्धु लंघन जोग्य है नहि सकल बानर बीर। यादगण सों भरो योजन एक शत गम्भीर ॥ नावप्लव सों महा सेना होय शक्ति न पार। और बिधि लहि भेद सेना हनी शत्रु उदार॥करै राधन प्रथम देहै सिन्धु पथ अभि राम। किये राधन प्रगट हमसों मिलैगो जलधाम॥ नतरु हम अग्न्यास्त्रसों सो भस्म करिहै सर्व। स्नान करि सह लखन रघुबर डारि आसन दर्व॥ स्वप्नमे तब आइ सागर कहो रघुबर पास।कहो का हम करै कारज रावरे बल रास ॥ देऊ मेरी सैनकों पथ कहो तब रघुबीर। जाय जेहि पथ हनो रावण कुमति कूप गभीर॥ जो न मागे देऊगे तुम हमै पथ अभिराम। दिव्यास्त्र सो हम तुम्है करि है भस्म तो जलजाम ॥ जलधि सुनि श्रीरामको एहि भाँतिके वर बैन। व्यथित व्है इमि कहो अंजलि जोरिकै जलऐन ॥ नही चाहत बिघ्न तव हम सुनऊ हे रघुबीर। कार्य कारण बचन तुम सो कहत सुमति गभीर ॥ देहि पथ जों तुम्है हम तो धनुर्द्धर कोउ और। फेरि हमसों आय मागे सुनऊ रघुबर मोर ॥ नाम नल है बिश्वकर्मापुत्र बानर जोंन। काष्ठ तृण पाषाण देहै डारि जलमे तोंन॥ तोन धारण करैंगे हम रचेगो सो सेतु। भयो अन्तरध्यान सागर सेतुको कहि हेतु ॥ कहो नलसों सेतु बन्धन बचन राम गभीर।सेतु बाँधो नल दियो गिरि बानरन्ह बर बीर॥ बिस्तार दशयोजन सुयोजन एक शत आयाम। आयो बिभीषण तहां ताकों शरण दीन्हे राम॥ चारि मंत्रिन सहित लखि करि कृपा श्रीअवधेश।कहो करि अभिषेक ताको दे अभै लङ्केश॥कियो लक्ष्मण सहश ताको बन्धु अवरज राम। गए सागर पार तासों मंत्र करि बलधाम ॥ टिके राम सुबेल पर लङ्केश कपिपति सङ्ग। कपिन्ह लङ्काके करे सब जाय उपवन भङ्ग ॥ तहां रावण पठै मंत्री दये चार बनाय। नाम शुकसारण बिभीषण गहे तिनको आय ॥ राक्षसी तनु धरो जब तिन तिन्हैं सैन देखाय। कृपा सागर राम तिनको दयो बेगि छुटाय ॥ बुद्धि बलको धाम अङ्गद बालि सुत धरि धीर। राम रावण पास पठयो दूतताको बीर॥ ❦*❦*❦*******

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि रामोपाख्याने सेतुबन्धनसमुद्रतरणवर्णनोनाम त्रिषष्टितमोऽध्यायः ॥ *****

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

बजत जल फल मूल बलने राम रचित सैंन। बसी पास सुवेलके चऊँओर अति बल ऐंन॥ करी रावण दुर्ग रचना उग्र युद्ध समान। राखिकैं चऊधा शतघ्नी यन्त्र अति गुरुमान॥ करे सुदृढ कपाट परिखा करी अति गम्भीर। धरे नानाशस्त्र चऊँदिशि घोरराचस बीर॥ अश्व रथ अनगणित गज मदमत्त गिरि सम घोर। करे ढाढे चढे राचस महाबल चऊँओर॥ गयो अङ्गदवीर लङ्का पुरीकों जहँ द्वार। बिदित करि दशकन्धकों किय पुरप्रवेश उदार॥ लसो राचस वृन्दमे एहिँ भाँति अङ्गद वीर। भोरकैंसों भानु ज्यौं घनघटामाहँ गँभीर॥ गए रावण पास ताके सहित मंत्रिन्ह बीर। बूझि लागे कहन तासों कहो जो रघुवीर॥ अङ्गदउवाच॥ कहो तुमसों कहनकों वह कोशलापति चन्द्र। समय आयो करऊ सो तुम धीर धारि अमन्द्र॥ नृपतिके अन्यायसो पुर नगर पावत नाश। कियो तुम अपराध मेरो दारहरण प्रकाश॥ कियो नहि अपराध तिनकौ कियो बध तुम जौंन। सुरनको अपमान करि ऋषि हने जे तपभौंन॥ हने जे राजर्षि तिनकी करहिँ रोदन बाम। लहत हौं तेहिकर्मको फल अचिर भाखो राम॥ हनैं गे हम तोहि ससुत सबन्धु सह परिबार। मनुज हम मम धनुषको लखु वीर्य्य निकृत उदार॥ तजेऊँ सीताके न तुमको छोडि हिं अघओक। कियो चाहत शरणसो हनि बिना राचसलोक॥ सुनत अङ्गदके वचन अति भयो रावण क्रुद्ध। देखि अङ्गदसों भिरे उठि चारि राचस उद्ध॥ लगे अङ्गद अङ्गसों तेहि निशाचर बलवांन। कूदि बाहेर आइ पटके तिन्हें कपिकुलभाँन॥ नाघि लङ्कापुरी अङ्गद गए जहँ रघु बीर। रामसों वृतान्त सिगरो कहो तौंन गभीर॥ कियो कछु बिश्राम कपिकों किया प्रसंशित राम। कियो पैठि प्रकार मंथन बानरन्ह बलधाम॥ सङ्ग लछमनके बिभीषण ऋच्छपति बरवीर। जाय दचिणद्वार घेरो पुरीको गम्भीर॥ घोरदन्त कराल आनन कोटि शत कपिबीर। चढे लङ्कापुरी पर लरि भजी निशिचर भीर॥ दन्त नख अतिघोर जिनके ऋच्छ अतिबलवान। चढे लङ्कापुरी ऊपर तीनिकोटि अमान॥ मूदँ रजसों गयो रबि नहि देखि परत प्रकाश। चलत नानारङ्गके कपि ऋच्छ अति बलराश॥ प्राकारलङ्काको भयो सब कपिल बानर रूप। भए बिस्मित सकल राचस देखि अद्भुत भूप॥ कपिन्ह खम्भा कनकके अट्टारिका दिय डारि। कियो मथित प्रकार सिगरे यंत्र दीन्हे टारि॥ बानरन्ह फेंकीं शतघ्नी सो परी लङ्कामांह। रहे जौन प्रकार रचक भजे ते नरनाहँ॥ चले राचस कामरूपी रावणाज्ञा पाय। लग बर्षण शस्त्र नानाभांतिके अतिकाय॥

व०प० काटि कोटिन्ह विकट राक्षस बानरन बिचलाय। लियो फेरि प्रकार अपने खबग कीन्हों आय बज्ञत शस्त्रनसों गिरे ते भगीं बानर बीर। शिला स्तम्भ सुनखनसों भई मथित राक्षस भीर ॥ पर स्पर गहि केश बानर निशाचर बलवान। दशन मुष्टिकवातसों रण भयो प्रबल महान॥ गरजि गरजि लरे अतिबल कीस राक्षस बीर। मरत मारत तजत तबऊ न भरे क्रोध गभीर॥ बरषि शर बर राम मारे दनुज असित महान। किये लक्षण शरणसों हनि निरितगण गतप्राण। फिरे वानर युद्धसों लहि राम आज्ञा भूप। गए पास सुबेलके घन निपिनिमाह अनूप ॥ ***॥ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि रामोपाख्याने लङ्कायां प्रथमयुद्धवर्णनोनाम चतुर्षष्टितमोऽध्यायः ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

निवेसमान बिलोकी सेना निशामे बलवान। चले रावण अनुग राक्षस क्षुद्रगण अतिमान॥ पतन पर्वण जम्भ खरगण प्ररुज अरुज अखर्व। होय अन्तर्धान बर्षे आयु धर्षण सर्ब॥ परी देखि न कपिनकों सो निरूत सैन गभीर। मारि तिन्ह हिँ गिराय क्षितिपर दियो बिभीषण बीर॥ क्रोध करि कै चलो रावण सज्ज व्है अतिमान। सङ्ग सैन पिशाच राक्षसकी महाबलवान ॥ युद्धशास्त्र बिधान बेत्ता शुक्रसों मतिमान। बिरचि उशनसव्यूह रावण लगो बर्षण बान ॥ देखिव्यूहारुढ रावण सबलकों करि उह। रामसेना सहित बिरचो बृहस्पतिकृत ब्यूह॥ लरण लागो रामसो तब सबल रावण बीर। आय लक्षणसों लरो तब इन्द्रजित रणधीर ॥ बिरुपाक्ष कपीशकों संग तारखर्वट जान। तुण्डनलसों लरो दुःसह पनससों बलभान ॥ लरे बानर राक्षसनसों पाय समबल बीर। तुमुल बाढो युद्ध बर्षे शस्त्र उपल गभीर ॥ लरो हर्षनसो सलोमस निशाचर बलवान। राम पैं दशकन्ध बर्षे शक्ति शूल महान॥ राम रावण शीष ऊपर निशित बर्षे बान। लरे लक्षण इन्द्रजित दोउ बीर प्रबल महान॥ त्यो बिभीषणसों प्रहस्त सो लरो अति कै क्रुद्ध। दुऊन कीन्हो दुऊन पै अतिबाण बर्षा उद्ध॥ तब बिभीषणको गदासो हनो दौरि प्रहस्त। रहो ठाढो बीरबरसों भयो नेक न त्रस्त॥ तब बिभीषण शक्ति लीन्ही ज्वलित अग्नि समान। हरो शीष प्रहस्तको तेहि शक्तिसो बलवान ॥ हतो देखि प्रहस्तकों धूम्राक्ष राक्षस बीर। घनो पस सगँ लएँ सेना भिरो आय गभीर॥ देखि ताको प्रबल सेना भजी बानर सैन। बानरनको भजत लखि हनुमान बल अतिअैन॥ देखि कै हनुमानकों तहँ भरो क्रोध अखर्व। प्रबल पाय सहाय रणको फिरे बानर सर्ब॥ राम रावण सैनमे तब भयो शब्द महान। धूम्राक्ष कीन्हो व्यथित कपि दल बरषि कै बज्ञवान॥ धुम्राक्ष अरु हनुमान लागे लरण अतिबल बीर। गदा पट्टिस परिघसों तरु शिलासों गम्भीर॥धुम्राक्षकों करि क्रोध मारे महाबल हनुमान।वानरन हनिकै सैन बिगरी

किये विरहित प्राण ॥ बानरनसों है बध्य भाजी राक्षसनकी भीर । गई लङ्कामाहि छोडे युद्ध
श्राम गभीर ॥ शेष राक्षस गए भाजी लङ्कपतिके पास । युद्धको वृत्तान्त लागे कहन पूरित त्रास ॥
प्रहस्त अरु धूम्राक्षको बध सबल सुनि दशशीस । दीर्घ स्वासा लई चितिपर पटकि कै भुज बीश ॥
युद्धको अब काल आयो कुम्भकर्ण समान । देऊ ताहि जगाय कार कै यत्न अति बलवान ॥ उग्र
बाद्य बजाय नानाभांतिके चहुँओर । कुम्भकर्ण हिँ कियो निद्रारहित करि अतिशोर ॥ कुम्भ
कर्ण हि करि विनिद्रित सबै रावण बैन । कहो तुमको धन्य जो एहिभांति निद्राश्चैन ॥ नही
जानत रहे हम यह महाभय बलधाम । सेतु बांधि समुद्रमे तरि सहित कपिदल राम ॥ निदरि
सोको हनी राक्षस चमूं जो बलभौन । रामकी हम हरी भार्य्या नाम सीता तौन ॥ ताहिलीवें
काज आयो इहां सो रघुबीर । हने मेरे प्रहस्तादिक सुभट जे बरबीर ॥ तुम्है विनु एहि जगतमें
नहि तास हन्ता आन । सज्ज व्है तुम ताहि मारो जाय कै बलवान ॥ अनुज दूषणको
प्रमाथी वज्रबेग सु जौन । तिन्है सँग लै हनऊ सानुज राम कपिदल तौन ॥ दूषणानुज महा
बल दशकन्ध शासन पाय । कुम्भकर्ण हि पुरःसर करि चले ते अतिकाय ॥ कुम्भकर्ण
ससैन पुरतें निकसि बाहेर जाय । लखी सेना बानरनकी खडी सन्मुख आय ॥ रामदर्शन
लालसा करि लखत चारोओर । तहाँ देखो खरे लक्ष्मण धणुष धारे घोर ॥ लगे मारण डारि
गिरितरु ताहि कपिवर बीर । बानरनते ताड्यमान सो लगो भक्षण धीर ॥ भरे भय तब भजे
बानर करत आरत सोर । देखि कुम्भश्रवनको अति कर्म दारुण घोर ॥ दौरि कै सुग्रीव कुम्भ
श्रवनके ढिग जाय । साल तरुसो हनो ताको शीष पै अतिकाय ॥ जगो सो तरु घाततें तव गरजि
कै अतिघोर । भुजनसों कपिराजको तेहिँ लियो गहि बरजोर ॥ देखि राक्षस गहे है कपिराजको
रणधीर । निसित शरसों हनो ताको हृदय लक्ष्मण बीर ॥ वर्म सह हिय भेदि कै शर कियो चितिमें
गौन । छोडि कै कपिराजको हियभेद राक्षस तौन ॥ शिला गहि कै चलो लक्ष्मण पै निशाचर
धीर । चुरप्रशरसों तास काटी भुजा लक्ष्मण बीर ॥ चतुर्भुज फिरि भयो सो धरि शिला राक्षस
तौन । तीन काटी शरन्हसो सौमित्रि अतिबलभौन ॥ भयो सो बङ्कपादशिर भुज निकटति अति
बलवान । ब्रम्हास्त्रसों ते काटि डारे लखन लसत महान ॥ वज्र मारो शिखरसो चिति परो कुम्भ
श्रौन । भजे राक्षस देखि ताको गयो अन्तकभौन ॥ कुम्भकर्ण हिँ मरो लखि कै दूषणानुज बीर ।
वज्रबेग सु सह प्रमाथी चले क्रुद्ध गभीर ॥ हनो तिनको शरणसों सौमित्र व्है अतिक्रुद्ध । लरे राक्षस
तौन तिनसों भयो सङ्कुल युद्ध ॥ महत वर्षा शरणकी तिन करी दुजन अमान । बीर लक्ष्मण राक्ष
सन पर अमित वर्षे बान ॥ लिए तब गिरिशृङ्ग आए बेगसों हनुमान । वज्रबेग निशाचर हि हनि
कियो विरहित प्रान ॥ नील मारो शिलासों राक्षस प्रमाथी जौन । द्वन्द्वदलसों होन लागो युद्ध

फिरि भयभौन ॥ बहुत मारे गए राक्षस मरो कपिदल तोक। भरो हाहाकार अति सब राक्षसन्हके श्रोक॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

स्वस्तिश्रीकाशिराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासी रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि रामोपाख्याने कुम्भकर्णवध वर्णनोनाम पञ्चषष्ठितमोऽध्यायः॥ *~*~*~*~*~*

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सुनो रावण हनो लक्ष्मण कुम्भकर्ण ससैन। करत रोदन इन्द्रजितसों कहन लागो बैन॥ हनहु सह सुग्रीव लक्ष्मण रामको बरबीर। जीति लीन्हो इन्द्रको तुम सुरन्ह सह रणधीर॥ प्रगट अन्तरध्यान व्है दिव्यास्त्रसों अतिमान। हनहु मेरे शत्रुकों सुत कौन तुम हि समान॥ राम लक्ष्मण सहि न शकि है पुत्र तो शरपात। कहा बांनर बापुरे जे सहै शस्त्राघात॥ कुम्भकर्णादिक हने तिन जौन राक्षस बीर। बैर तिनको लेहु तुम अब जाय कै रणधीर॥ शरन्हसों हनि शत्रुकों करु मोहि नन्दित नन्द। इन्द्रजित दशकन्धके सुनि बचन पूरक दन्द। इन्द्रजित व्है सज्ज रथ चढि चलो रणकों बीर। आह्वान लक्ष्मणको कियो तेहि बोलि कै गम्भीर॥ सशर धनु धरि चले लक्ष्मण सुनत अपनो नाम। लरे लक्ष्मण इन्द्रजित जय चाहि अति बलधाम॥ दिव्यास्त्रबेत्ता दोउ स्पर्द्धा भरे बल अति मान। बाण बर्षा इन्द्रजितकी दरी लक्ष्मन सुजान॥ महत तरुसों हनो अङ्गद तास उत्तम काय। भ्रान्त व्है यों इन्द्रजित तब लियो परशु उठाय॥ हनो चाहत बालिसुतकों देखि लक्ष्मण बीर। खण्ड कीन्हो परशु ताके पानिमे रणधीर॥ गदासों तेहिँ हनो ताको बाम पार्श्व महान। हनो अङ्गद क्रोध करि तब सालतरु अतिमान॥ इन्द्रजितको हनो ताको सूत रथसह अर्ब। भयो अन्तरध्यान रथ तजि इन्द्रजीत अखर्ब॥ जानि अन्तरध्यान राक्षस महामायाभौन। राम रक्षित करी सेना तहाँ करिकै गौन॥ होय अन्तरध्यान बर्षै बरद तीक्ष्ण बान। करे लक्ष्मण रामके सब बिद्ध अङ्ग महान। अदृश्य शरसों लरे तासों राम लक्ष्मण बीर॥ फेरि लागे करण राक्षस बाण वृष्टि गभीर॥ गगण गत बहु भए बानर शिला आयुध धारि। इन्द्रजित हनि शरणसों दिय तिन्है क्षितिपर डारि॥ सर्बाङ्ग बेधित शरणसों व्है व्यथित लक्ष्मण राम। गिरे क्षितिपर मनहु रबि शशि भूमि पै छबिधाम॥ देखि क्षितिपर परे लक्ष्मण रामको बलवान। रचोशरपञ्जर चहूँधा बर्षि कै बरवान॥ बाण बद्ध सु भए शोभित रामलक्ष्मण बीर। परे पञ्जरमांह मानहु लसत सुन्दर कीर॥ एहिभाँति लक्ष्मण रामको सुग्रीव लखि तहँ आय। भए चारोओर ठाढे कपिन सह अतिकाय॥ नील अगद हनूमान सुषेन द्विविद मयन्द। याम्बुबानहि आदि जूथप भरे देखत दन्द॥ तहँ बिभीषण आय प्रज्ञास्त्रसों अभिराम। कियो बेधित मोह तजि तब उठे लक्ष्मण राम॥ देखि बिज्वर रामसों बोले बिभीषण बैन। धनद पठयो लेहु सो यह अंम्भ राजिव नैन॥ श्वेत गुह्यक तोन ल्यायो तुम्है अति

सुखदान। चखन्हमे सो लाइ देखऊ निश्चति अन्तरध्यान ॥ मंत्र संस्कृत तौन लीन्हो वारि अतिगुण धाम। राम लक्ष्मण सहित कपिवर धोय चख अभिराम॥भयो दिव्य विलोल लोचन परम सुखद महान॥लगे देखन चराचर सम प्रगट अन्तरध्यान॥ इन्द्रजित कृत कर्म अपनो पितासों कहि सर्व। फेरि आयो वेगि सो रण भूमिमाह अखर्व॥इन्द्रजितको देखि आवत भरे क्रोध गभीर। ले विभीषण को सुमत तव चले लक्ष्मण वीर ॥ करें आन्हिक नही जवलों अधम राक्षस तौन। महाशरसों हनत तवलों याहि हे बलभौन ॥ होन लागो युद्ध लक्ष्मण इन्द्रजितसो घोर। दुऊन दोऊ हनन लागे शरणसों वर जोर ॥ मर्मवेधी शरणसों हनि लखनको घननाद । अङ्ग वेधित किए सिगरे भयो चित्त अवाद ॥ अग्निसे सौमित्रके शर लगत राक्षस बीर।आठ छोडे सर्पसे विष भरे वाण गभीर ॥ तजे लक्ष्मण तीनि शर तव क्रोध करि अतिमान। एकतें शिर दोयतें भुज दोऊ सह धनु बान॥ इन्द्रजितके काटि डारे भूमि पै वर वीर। चलत तास कबन्ध काटो सूत सह रणधीर ॥ गए लङ्कामाह सह रथ तास ले मजि अर्व । पुत्रको वध जानि रावण भरो शोक अखर्व॥ चलो सीतहि मारिवेको खङ्ग लीन्हे दुष्ट।कियो ताहि अविन्ध्य वारण वचन कहि मति पुष्ट।।वाम बधके योग्य तुम नहिँ वीर विदित उदार। मरैगी यह विना मारे हनेतें भर्तार ॥ इन्द्रके जेतार व्है तुम मारि के स्त्री वाम। अयश यह तुम लेऊ मति दशकन्ध अतिबलधाम ॥ फिरत सुनत अविन्ध्यके एहि भाँतिके वर बैन । सज्ज करिवें कह्यो स्यन्दन सहित राक्षस सैन॥ ****

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि रामोपाख्यानेइन्द्रजितवध वर्णनोनाम षष्ठषष्ठितमोऽध्यायः ॥ * * * * * *

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * । रोलाछन्द ॥ * ॥

भएँ वध प्रिय पुत्रके अति होय रावण क्रुद्ध।चलो रथ चढि सज्ज व्है सँग लए सेना उद्ध॥चलो लरिवे रामसों सँग सुभट ले रणधीर।देखि अङ्गद नील अरु हनुमान अति बलबीर॥सहित ऋक्षण ऋक्षपति सह कीश यूथप जौन। आय रावणकी चमू तिन करी बानर तौन ॥ मारि तिन गिरि तरुनसो किय ध्वंश रावण सैन। देखि सैनाध्वंश रावण क्रोध करि बलऐन॥ धारि माया दनुज काढे देहँते अतिमान। शस्त्रधर ते राम मारे डारि अस्त्र महान॥ धारि लक्ष्मण रामको अनगनित रावण रूप । चले धनु धरि बिरचि माया राम सन्मुख भूप ॥ देखि लक्ष्मणसों कह्यो एहि भाँति सो रघुबीर । धरे मम तव रूप राक्षस हनऊ ते रणधीर॥ हनी रावणकी सो माया एक सुयश राम। लए मातलि हरित हय युत सुरथ तेजसधाम ॥ जाय रणमे रामके ढिग कहे ऐसे बैन। मातलिरुवाच॥ शक्रको यह सुरथ यापै इन्द्र चढि बलऐन॥ हने शतसह दनुज सेना सहित

अति बलवान। सज्ज मोते चढक्त यापै हनक्त निरित महान ॥ सुनत मातलि वचन रघुबर रहे कछुक बिचारि। तब बीभीषण कहो राक्षसको न रथ निरधारि॥ जायके तब चढे रथपर हर्षसो रघुबीर। चले रथचढि राम रावण रहो जह रणधीर॥ चले रघुबर क्रोध करि जब निर्ऋति पतिकी ओर। भयो हाहा कार चक्रदिशि भुवनमे अति घोर॥सिंह नाद सु बजी दुंदुभि गगनमे अभिराम। रामसों दशकन्धसे भो युद्ध दारुण माम॥ राम ऊपर तजो रावण शूल दारुण चण्ड। राम सो सितशरणसों हनि कियो शतसह खण्ड॥ देखि दुष्कर कर्म रावण भरो भीति महान। राम ऊपर लगो वर्षण निसित बज्रबिध बान॥ शस्त्र नानाभाँतिके अति निशित घोर अखर्व।भरी भयसों भजी सेना बानरनकी सर्व॥ खर्ण पुंख सु निसित लीन्हो राम करमे बान। कियो योजित मंत्रसों ब्रह्मास्त्र पढि सन्धान॥ देव हर्षित भए सुरपति सहित सो शर देखि। महा राक्षसराजको अल्पायु निश्चय लेखि॥ क्रोध करि दशकन्ध पर ब्रह्मास्त्र नाना भाँति।महा ज्वाला जाल मण्डित प्रलय पावक काँति॥ राम करते छुटत सो शर ब्रह्मदण्ड समान।सूत रथ सह भस्म कीन्हो दनुज पतिहि महान॥ सैंद्र सुर गन्धर्ब किन्नर भरे आनद सर्ब। राक्षसेश्वरको मरण लखिराम कर्म अखर्ब॥ ब्रह्मास्त्र सें सो भयो ऐसें भस्म रावण भूपारहो शेष न निर्ऋति पतिकी भस्मह्रको रूप॥ *❦**❦**❦*********❦**❦*❦❦*❦❦*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे बनपर्बणि रामोपाख्यानेरावणबधवर्णनोनाम सप्तषष्ठितमोऽध्यायः॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦**

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

मारि रावण क्षुद्रको श्रीराम राजिव नैन। भए लक्ष्मण सहित कपिपति परम पूरित चैन॥ मरत रावण सहित सुरगण महाऋषि तहँ ध्याय। रामको जय युक्त आशिष दियो आँनद पाय॥ राम ऊपर पुष्प वर्षा कियो सुर गन्धर्ब। यथाबिधिसो पूजि ए महिँ गए नभको सर्ब।तब बिभीषण कों कियो लङ्केशको अभिषेक। शरणगत अनुमानिकै श्रीराम सहित बिबेक॥ सह बिभीषण पुरस्कृत करि जानकीको जान। सचिव वृद्धअबिन्ध ऐसें कहे बचन प्रमान॥ राम सीता धर्म सीला भरी पतिव्रत नेह। भरी अति सतवृत्तिसों यह जानकीकों स्नेह॥ सुनत बचन अबिन्धके रथते उतरि श्रीराम। भरी लोचन बारि देखो जानकी छबिधाम॥ मलिन बसना महाकृश सम जटा बेणी भार। धूलि पूरित अङ्ग अर्दित शोकसों सुकुमार॥ जानकीसों राम बोले बचन शङ्काधाम। जाऊ तुम व्है मुक्त करिकै कियो सो हम काम॥ मोहि पति लहि जरा लहऊ न निर्ऋतिपतिकै भौंन। हनो राक्षस हेतु एहिँ तुम करऊ सो चितिगौन॥ नियत ज्ञाता धर्मको है पुरुष हमसो जौंन। भई जो परहस्त नारी चणक बरि है कौंन॥सुवृत्त हो

अस्तुवृत्तके तुम जनकजा सुनु बैंन । नहो हमकों भोग इच्छा सङ्ग तो छबिअैंन ॥ रामकेए बंप सुनत सीता महादारुण बैंन । कनक केदली कटीसी छिति पै गिरी हत चैंन ॥ मोदमै कछु रङ्ग मुखपै चढोहो अभिराम । रामको सुनि वचन गो उडि धूम कैसो धाम ॥ रामके सुनि बचन लछमण सहित कपिबरबीर । भए सदृश गतासु चेष्टा रहित महत अधीर ॥ तहां आए पितामह तव चढे बिमल बिमान । इन्द्र पावक बायु यम सह बरुण धनद सुजान ॥ अमरगण गन्धर्व किन्नर यच्छ गुह्यक आम । दिव्य रूप सुभूप दशरथ सप्तऋषि तपधाम ॥ चढे बिमल बिमानपै सब निकट नभसे आय । प्रत्यच्छ व्है कै भए ठाढे बिमल बेष वनाय ॥ पितामह सँग देखि दशरथ भूपको सुखदान । रामसें उठि करन लागी सिया बचन प्रमान ॥ राजपुत्र न दोष यह तुव कहतहो तुम जैांन । कहति प्रमदा परुषकों गति विहित बिधिकी तैांन ॥ मातरिश्वा भूत तनमे सदा गतिहै जैांन । पाप हम जो कियो होय तो तजो हमको तैांन ॥ जो कियो हम पाप कृत तो सुनऊ राम सुजान । तजो मेरे प्राणकों तो पञ्च तत्व महांन । जौन चिन्त्यो स्वप्नहूँमे तुम्हे तजि प्रिय अन्य । देवआज्ञा पाय तो मम होऊगे पति धन्य ॥ भई तव आकाश बाणी सुनी सबहिन तैांन। सुनत बिगरो कपिनको दल भयो आनद भैांन ॥ * ॥ बायुरुबाच ॥ * ॥ सदा गति हम बायु जानऊँ कहत सत्य गँभीर । मैथिली नीष्पाप की जे ग्रहण श्रीरघुबीर ॥ * ॥ अग्निरुवाच ॥ * ॥ बसतहैं हम जगत जनके हृदयमे सुखदान । मैथिली नहि कियो कछु अपराध राम सुजान ॥ * बरुणउबाच ॥ * बसतहै हम जगत जनके देहमे रसरूप । मैथिली नीःष्पापको करु ग्रहण रघुबर भूप ॥ पुत्र नहि आश्चर्य्य तुमसे धर्मधुरकों वीर । सुरासुरको महा बैरी हनो जो तुम बीर ॥ सर्ब भूतनसें अवध्य जो निशाचर बलवान । भयो पाय असाद मेरो सुनऊ तैान सुजान ॥ कारणान्तर सो रहो अवलो बचो खर तैांन ॥ आत्मबधको हरी सीता महापतिब्रत भैांन ॥ नल सु कूबर शापसें ही सिया रच्छत राम । बलात्कार जो करै रावण बाम सँग बश काम ॥ शीश शतधा जाहि ताके फूटि व्हैबश शाप । नहीं सीता महा कीबो योग्य शङ्का थाप ॥ कियो तुम यह महत कारज देवतन्हको राम । * ॥ दशरथ उवाच ॥ * । होयतो कल्याण हम तव पिता दशरथ नाम ॥ राज्यकों तुम जाऊ पालऊ प्रजाजन अनुरूप ॥ रामउबाच ॥ करत बंदन जो पिता मम आपु दशरथ भूप ॥ जाहिगे हम तात कोशल पुरीको अभिराम ॥ मार्कण्डेयउबाच ॥ फेरि दशरथ रामसें यह कहो बचन ललाम ॥ जाऊ कोशलपुरीको भए पूर्ण चौदह बर्ष । कियो बन्दन देवतनको राम तव भरि हर्ष ॥ सचो इन्द्र समान सीता ग्रहण कीन्हो राम । अविन्ध त्रिजटाकों दयो बर फेरि करुणाधाम ॥ रामको बर दयो ब्रह्मा भरे मोद अखर्ब । धर्ममे मति रहो तव ध्रुब शत्रु जीतऊ सर्ब ॥ राच्छसनसें निहत बानर लहो ते सब प्रान॥बिधि बचनते ते उठे बानर भरे मोद महान॥दियो बर हनुमानको यह

१०५० जनकजा अभिराम। राम कीर्त्ति समान जीवज्ञ लरङ्क भव्य ललाम॥ लखन सबके देवता गण भए अन्तरध्यान। जानकी सह रामसों तब कहो यों मघवान ॥ देव नर गन्धर्बगणको हरो तुम दुख राम। धरा जबलो रहैगी तव कीर्त्ति करुणाधाम ॥ सबिधि रामहिँ पूजिकै एहि भाँति कहि मघवान। तौन रथ चढि सहित मातलि कियो गगण पयान॥ दई लङ्कापुरी तौन बिभीषण हि अभिराम। सहित कपिपति राम सीता लखन दायाधाम ॥ चढ लछमण सहित पुष्पक पै सु सीता राम। सहित कपिपति मुख्य बानर जूत्थपति बलधाम ॥ सेतु पथतें सिन्धु नाघो बानर न्ह बलऐन। पार आए सिन्धुके जहँ राम कीन्हो सैन ॥ तहां पार समुद्रके करि बास राजिव नैन। रत्न भूषण देय कीन्ही बिदा बानर सैन॥ गए बानर जूत्थ जब तब सहित कपिपति राम। गए किष्किन्धापुरीकों फेरि आनदधाम ॥ सह बिभीषण चढे पुष्पक जानपै रघुबीर। जनक आकों ते देखावत बिपिनि अट्ट गँभीर ॥ जाय किष्किन्धापुरीमे राम सहित बिवेक। क्रत कर्म अङ्गदको कियो युवराजकों अभिषेक ॥ तिन्हे सह सौमित्रि पुष्पक पै चढे श्रीराम। गगण पथसो चलि अयोध्या पुरीकों सुखधाम॥जायके तह भरतपै हनुमानकों पठवाय।तास इङ्गित जानिबेकों कुशल प्रश्न सभाय ॥ फेरि आए हनूमत तब गए नन्दि ग्राम। चीरावलीं तह लखो भरतहि धरसकैसो धाम ॥ करत पूजन पादुकाको भस्म भूषित अङ्ग। जटाधर शत्रुघ्न सह बिर बेद बिप्रन्ह सङ्ग॥ राम लछमणसों मिले चलि भरत सानुज पाय। गुरु बशिष्ट समेत आनद भरे द्दग उमगाय ॥ राम सीता सहित लछमणको चितै क्रत कार्य्य। न्याससो सो राज्यसों य्यो भरतहै अमि आर्य्य॥ श्रवण लहि नक्षत्र उत्तम योग तिथि शुभ बार। रामको अभिषेक कीन्हो मुनि बशिष्ट उदार ॥ राम लहि अभिषेक कपिपति पास बोले बैन। जाऊ अपने राज्यकों सह लङ्क पति बलऐन ॥ तिन्हे बिधिवत पूजिकै मणि बसनसो श्रीराम। बिदा कीन्हो भरे लोचन गए ते निजधाम। धनेशकों सो बिमान दीन्हो महत पुष्पक नाम। अश्वमेध सु किए दश तब गोमती तट राम ॥ * * * * * * * * * * * *

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्बणि रामो पाख्याने रामाभिषेकवर्णनोनामअष्टषष्ठितमोऽध्यायः ॥ * * * * * * *

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

महाबाहु जैसे रघुबीर। बन बसि पायो दुःख गभीर ॥ करिवो शोच न भूप समान। बलते लहिहौ राज्य महान ॥ तुममे भूप न पातक लेश। एहि पथ चलि सुर सहित सुरेश ॥ दनुज मारि वृत्रादिक सर्ब। लीन्हो त्रिभुवन राज्य अखर्ब ॥ तुम्हे सहाय समृद्ध अनूप। भ्राता जास धनञ्जय भूप ॥ सो नहि जीतै कासों युद्ध। भ्राता जास भीम बल उद्ध ॥ बन्धु जास माद्रीसुत बीर।

सो किम शोच करै गँभीर ॥ एहि सहायसों सुर संग्राम। जीति सकत हौ नृप बलधाम॥ एहि सहायसों तुम नृपधर्म। शत्रु जीतिहु करहु न भर्म ॥ सैंधव भूप मत्तबल जौन। तब भ्रातन्ह कीन्हो बस तौन॥ फेरि द्रौपदी हि ल्याये भूप। सो देखो तुम कर्म अनूप ॥ लहि सहाय कपि दल श्रीराम। जीतो दशग्रीव बलधाम॥ ताते यह बिचारि नृपधर्म। तुम्है शोच कीबो नहिँ पर्म॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ मार्कण्डेयके सुनि बैन। समाधान लहि नृप मतिऐन ॥ लगे कहन मार्कण्डे पास। ऐसे वचन भूप मतिराश ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ शोच आपनो नहि सह भ्रात। राज्य हरणको शोच न तात॥ धूर्तन्ह दयो कष्ट जो मोहि। कृष्णै तारो तातें जोहि॥ पतिव्रता कोउ ऐसी और। देखी सुनी सो कहु मुनिमौर॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ सुनहु कुलस्त्रिनको सुप्रभाव। तुमसो कहत भूप युत चाव॥ साबित्री व्रत पायो जौन। धर्म पतिव्रत बरणत तौन ॥ मद्रदेशपति भूप सधर्म। पालक प्रजा सत्यव्रत पर्म॥ नाम अश्वपति ताको भूप॥ बीति गएँ तारुण्य अनूप॥ प्रजाहेतु करि भूप विचार। धरो नेम व्रत उग्र उदार ॥ साबित्रीको राधन भूप। लगो यथाबिधि करण अनूप॥ अष्टादश बीते जब वर्ष। साबित्री भइ प्रगट सहर्ष॥ अग्निहोत्रतें प्रगटी भूप। साबित्री धरि उत्तमरूप॥ कहे भूपसों ऐसे बैन। साबित्री अति आनद ऐन ॥ * ॥ साबित्र्युवाच॥ * ॥ ब्रह्मचर्य्य दम नियम तुम्हार। भक्ति देखि निष्कपट उदार॥ हम प्रसन्न बर माँगहु तौन। भूप तुम्है है वांछित जौन॥ * ॥ अश्वपतिरुवाच ॥ * ॥ प्रजाहेतु मम यह व्रत सत्य। देहु बंशकर बहुल अपत्य॥ है सन्तान धर्मको ऐन। द्विजन्ह कहो हमसों यह बैन॥ * ॥ साबित्र्युवाच॥ * ॥ पुत्रार्थ जानि तव मानसकर्म। हम बिधिसो बूझो हो मर्म॥ कन्या भरी तेज अतिरूप। चिप्र होय गी तुमको भूप॥ आगे कहहु कछू मति मोहि। बिधि बिरचित हम दीन्हो तोहि॥ मार्कण्डेयउवाच॥ बचन कहो साबित्री जौन। अङ्गीकार कियो नृप तौन॥ भए प्रसन्न अश्वपति भूप। जानि सुकन्या प्राप्ति अनूप॥ साबित्रि हि लखि अन्तरध्यान। भूप स्वपुरको कियो पयान॥ ज्येष्ठा पत्नी नृपकी जौन। भई सगर्भा महिषी तौन॥ शुक्लपक्षके इन्दु समान। बढो गर्भसों अति सुखदान॥ प्राप्त काल जब भयो सुपर्म। भई कन्यका दायक शर्म॥ जातकर्म सब कियो अनूप। करि साबित्री पूजन भूप ॥ बिप्रन्ह सहित भूप अभिराम। तास कियो साबित्री नाम॥ श्रीसम धरी बाढी सो रूप। यौवन प्राप्त भई सो भूप॥ तास देखि कै रूप अखर्व। सुरकन्या सम भाषत सर्व॥ ताहि देखि कै तेजसधाम। काहू बरी न भूप ललाम॥ तेहि करि बिधिवत स्नान सुधर्म। देव द्विजन्हकों पूजो पर्म॥ देवदत्त लहि कै सो माल। पितुपद बन्दे जाय बिशाल ॥ सुरप्रसादसों माल अनूप। बिदित पितासों कीन्हों भूप॥ साञ्जलि जाय पिताके पास। बैठी साबित्री छबिराश॥ यौवनस्थ ताको लखि भूप। सुता देवकन्या सम रूप॥

बर कोऊ नहिं मांगत ताहि। दुखित भयो नृप मति अवगाहि ॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥ दान काल तब सुता अनूप। मोसों कोउ न मांगत भूप॥ ढूँढ़ऊ बर तुम महिप समान। गुणगण भरो स्वरूप महान॥ ताको हम गुणपूरण जोहि। बिधिवत करै प्रदान सु तोहि॥ कहत बेदविद बिधि बर जौन। हे पुत्री हम भाषत तौन॥ पिता अदाता बाच्य प्रमान। मिलै न बर जब सुता समान॥ यह सुनि कै मम वचन बिचारि। तुम पति ढूँढ़ऊ सम निरधारि॥ पितावचन साबित्री मानि। चली हेमरथ चढ़ि सुखदानि॥ राजऋषिन्हके तपबन जौन। तहां कियो साबित्री गौन॥ राजर्षि मान्य जे बृद्ध महान। तिनके बन्दि चरण महान॥ क्रमतें लखो तीर्थ बन भूप। पुर पट्टन सब लखे अनूप॥ तहाँ आइ साबीत्री पर्म। बृद्ध सचिव सँग लिये सुधर्म॥ तहँ तहँ दिए द्विजनको दान। लहि मनमे बर आपु समान॥ भूप मद्रपति नारद सङ्ग। पाय कहत कछु कथा प्रसङ्ग॥ बैठे सभामाँह यह भूप। फिरि बन तीरथ सकल अनूप॥देखि पिताकों नारद साथ। धरे दुहूनके पद पर माथ॥ तहँ आई साबित्रि हि देखि। मुनि नृपसों किय प्रश्न बिशेखि॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ सुता गई ही कहँ तब भूप। आइ कहाते यह अति रूप॥ कौनहेत यह युवती बाम। पतिकों देत नहीं अभिराम॥ * ॥ अश्वपतिरुवाच ॥ * ॥ जेहि कारजकों याकों नाथ। हम पठई ही मंत्रिन्ह साथ॥ तौन कहत सुनिए तपधाम। इच्छित बर यह बरे ललाम॥*॥ मार्कण्डेयउवाच ॥*॥ पिता कहेउ मुनि बूझत जौन। सह बिस्तर कहु दुहिता तौन॥ * ॥ साविन्यु उवाच ॥ * ॥ साल्वबंशमे क्षत्री भूप। द्युमत्सेन भो ख्यात अनूप॥ कछुवय गए अन्ध भो तौन। बालक रहो पुत्रवत्स भौन॥ रहे निकट जे बैरी भूप। हरो राज्य तिन तास अनूप॥ नृप सबाल सुत बनिता साथ। बनमे बसे जाय मुनिनाथ॥ महा रण्यमे सुतप महान। करण लगे सो भूप सुजान॥ बर्धित भयो भूपसुत तौन। सत्यबान मम सम छबि भौन॥ ताहि मानसिक हम भर्त्तार। कियो जानि गुण भरो उदार॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ महत कियो साबित्रीं कर्म। बरो भूपसुत गुणमय पर्म॥ माता पिता जास मतिऔन। कबहू कहत न मिथ्या बैन॥ सत्यबाक ताको सब नाम। कहत बिप्र जे मतिके धाम॥ पुत्र अश्वप्रिय नृपको जौन। मृन्मय अश्वे बनावै तौन॥ कहैं अश्वप्रिय ताको नाम। सुमति देखि छत तास ललाम॥ ॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥ सत्यबान तेजस्वी सूर। पितृभक्त मतिमय बलपूर॥ नारदउवाच ॥ * तौन बृहस्पतिसो मतिमान। तेजस्वी सम सूर महान॥ इन्द्र समान महाबलभौन। क्षमी भूमि सम नृपसुत तौन॥ * ॥ अश्वपतिरुवाच ॥ * ॥ भरो सर्बगुण सो सुत भूप। सत्यादिक जे कहे अनूप॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ सांकृत रन्तिदेव सम तौन। दाता सत्यबाक मतिभौन॥ औशीनर शिबि यथा ययाति। तथा उदार सोम सम कांति॥ आश्विनेय सम रूप उदार। द्युमत्सेन नृपको सुकुमार॥ * ॥ अश्वपतिरुवाच ॥ * ॥ कहे सर्बगुण तामे अतिमान। सो नाशक

गुण सर्व महान ॥ कोऊ ताहि न शकत मिटाय। सो हम तुमको देत बताय ॥ एकवर्षमें मरि है
तौन। औरसि आइ कै यमके भौन ॥*॥ राजोवाच ॥ *॥ हे साविची सुनु मम बैन। और वरऊ
बर आयुषऐन ॥ एकवर्षमें यमपुर गौन। करि है सो नृपसुत गुणभौन ॥ * ॥ साविच्युवाच ॥ *
एकवार तरु गिरत पहार। कन्यादान एकही बार ॥ एकहिँ वार वस्तुको दान। कहत सकल
विदनीति विधान ॥ दीर्घायु कै अल्पायुष तौन। कै निर्गुण कै गुणगणभौन ॥ एकवार हम जेहि
भर्तार। बरो मानसिक जानि उदार ॥ फेरि कहो हम तुमसों जौन। ताहि तजै कैसें मतिभौन ॥
॥ * ॥ नारदउवाच ॥ *॥ भूपसुता तव ध्रुव मतिमान। यह न धर्मपथ तजी महान ॥ औरन
यह पति वरि है भूप। देऊ ताहि यह सुता अनूप ॥ मानि वचन तव अविचल पर्म। सोई करि है
मुनि यह धर्म ॥ * ॥ नारदउवाच ॥*॥ अविघ्न होय तव सुता प्रदान। साविची पावै कल्यान॥
हम तव भद्र साधि है भूप। कन्यादान करऊ अनुरूप ॥ * ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ * ॥ यह
कहि कै नारद तपभौन। उठि कै कियो गगणकों गौन ॥ राजा कन्यादान विचार। करि कीन्हो
सब सौज उदार ॥ सङ्ग पुरोहित द्विजवर वृद्ध। लै भूपति शुभ सुदिन समृद्ध ॥ गऐ सङ्ग लै सुता
अनूप। द्युमत्सेनके आश्रम भूप ॥ प्यादे पाय द्विजनको साथ। गए अश्वपति नृप कुरुनाथ ॥ देखे
द्युमत्सेनको भूप। वृक्षाश्रित तप पुञ्ज स्वरूप ॥ कुशासनाश्रित लोचन हीन। पूजन कियो तास ब्रिषि
पीन॥ द्युमत्सेनकों पूजि ललाम। कहो अश्वपति अपनो नाम॥ अर्घ्यपाद्य दै आसन पर्म। द्युमत्सेन
बोले यह मर्म ॥ कहहु आगमन कारण जौन। भूप अश्वपति सतमति भौन ॥ सत्यवन्त जानो नृप
तौन। कहो अश्वपति कारण जौन ॥ * ॥ अश्वपतिरुवाच ॥ * ॥ मम कन्या साविचीनाम। द्युम
त्सेन सबगुणकी धाम॥सो स्वधर्म सह हे धर्मज्ञ। *॥ द्युमत्सेन उवाच ॥*॥ हम च्युतराज्य वसत
बन भूप। करत तपस्या धरि मुनिरूप॥ सुता न तो बनबास समान। सहि है नहि बनक्लेश महान॥
॥ अश्वपतिरुवाच॥उतपत्ति विनाशक है सुख जौन। हम सह सुता जानि पथ तौन ॥ हमसों यह
कहिए नहि भूप। हम आऐ धरि निश्चय रूप ॥ प्रणत हमारि न आशाभङ्ग। कीजै आपु सुहृदता
सङ्ग ॥ हमको तुम तुमको हम योग्य। मम दुहिता करु स्नुषा मनोज्ञ ॥ द्युमत्सेनउवाच ॥ हम
तुमसो चाहो सम्बन्ध। हम तव भए राज्यहत अन्ध ॥ अभिप्राय मम बांछित जौन। पूरण कियो
आय तुम तौन ॥ आश्रमवासी द्विजन बोलाय। दइ व्याहि कन्या सुखदाय ॥ भूप अश्वपति
कन्यादान। करि दै दायज यथा विधान॥ गये भूप निजभौन सधर्म। सत्यवान लहि भार्य्या पर्म॥
साविची भइ प्रमुदित भूप। मनवांछित पति पाय अनूप ॥ गए अश्वपति जब निज धाम। तजि
तब भूषण बसन ललाम ॥ साविची तब पहिरे चीर। पटक साय रँगसों गभीर ॥ सुश्रूषण करि
यथा विधान। काम कलाते अति सुखदान ॥सासु ससुरको पतिकों पर्म। तेहि प्रसन्न कीन्हो सह
धर्म ॥ कहि कै बचन परमप्रिय पर्म। किय साविची पतिहि सधर्म ॥ ऐसे आश्रममाह बिशाल।

बास करत कछु बीते काल ॥ रहत साबित्री दुःखित पूरि । नारदको सो बचन बिसूरि ॥ *॥ मार्कण्डेयउवाच॥ *॥ बज्जत काल बीतो जब भूप । आयो सो वहकाल कुरूप ॥ सत्यबानको जामे मर्ण। साबित्री करि मनमे स्मर्ण ॥बाकी चारि रहो दिन जानि। साबित्री मनमे अनुमानि॥ धरो त्रिरात्र महाब्रत जौंन । द्युमत्सेन सुनि अतिब्रत तौंन॥ *॥ द्युमत्सेनउवाच॥ *॥ कहो जाय साबित्री पास। धरो तीब्रब्रत तुम मतिराश ॥ तीनिदिबस तुम बिना अहार। किम रहि है तन अतिसुकुमार॥ *॥ साबित्र्युवाच॥ *॥ चिन्ता करज्ज न तात उदार । हम सुखसों करि है ब्रतपार ॥ *॥ द्युमत्सेनउवाच॥ *॥ कहि न शकत हम ब्रतको त्याग । पार होय ब्रत तब बडभाग ॥ *॥ मार्कण्डेयउवाच॥ *॥ द्युमत्सेन इमि कहि गे भूप । साबित्री भई जड स्वरूप ॥ भोर मरैगो पति यह जानि । महा भई सो निशि दखदानि ॥ गई निशा सो प्रगटो भोर। पति नाशक दिन जानो घोर ॥ पूर्वाह्णिक करि कीन्हो होम । उदै होत रबि तेजस तोम ॥ ससुर सासुजे द्विज तपबृद्ध। जाय प्रणाम तिन्हे करि स्पृद्ध॥ साञ्जलि तिन लखि कै अभिराम। सौभाग्याशिष दियो ललाम॥ अबैधव्य सु आशिष पाय। साबित्री भई मुदित सुभाय॥ एवमस्तु साबित्री बैन। कहो मुनिन सोहे लहि चैन ॥ लखति काल साबित्री तौंन ॥ पतिनाशक आवै गो जौंन॥ साबित्रीसो बोले बैन। ताके सासु ससुर भरिचैन ॥ बज्ज करज्ज पारण ब्रतअन्त । भरे कृपासों पाय एकान्त॥ *॥ साबित्र्युवाच॥ *॥ संध्या समै पाय कै अल्प। मम पारणको है सङ्कल्प॥ ॥ *॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ *॥ तब हीं धरि कै कन्ध कुठार। सत्यबान बन चले उदार॥ तब साबित्री बोली बैन । हमह्न सङ्ग चलि है छबिऐन ॥ *॥ सत्यबानउवाच ॥ *॥ कबज्जँ तुम बनचली न बाल। बनपन्था है कठिन बिशाल॥करि उपवास भई तुम छाम। पदते चरि न शकौगी बाम ॥ *॥ साबित्र्युवाच ॥ *॥ नहिँ उपासते हम बलहीन । बारण करज्ज नहीं छबिपीन॥ ॥ *॥ सत्यबानउवाच ॥ *॥ चलिबो तुम्हे नियत छबिऐंन । लेज्ज तातआज्ञाको बैन॥ *॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ *॥ बन्दि ससुरको सासु हि जाय। साबित्री बोली सुखदाय॥ फलाहार आननके हेत। पुत्र राबरो रूप निकेत॥बनको जात कहज्ज तुम नाथ। हमह्नँ गयो चहति तेहि साथ॥ असह बिरह है ताको भूप। हारि शकति नहिँ ताहि अनूप॥ जात सो अग्निहोत्रके अर्थ। तास निवारण है न समर्थ॥ कछू ऊन गो सम्वत एक । आश्रम बाहेर भई न नेक॥ फुल्ल बिपिनि देखनकी चाह। मोहि देज्ज आज्ञां नरनाह॥ *॥ द्युमत्सेनउवाच ॥ *॥ पितारक्त तुम बधू अनूप । जबसो मोहि मिली शुभरूप ॥ कछु न कहो अभिलाषित मोहि । देत सु आज्ञा तातेँ तोहि॥ जाज्ज सुपति सँग बनको पर्म । कुशुमित बन देखज्ज सह धर्म ॥ *॥ मार्कण्डेयउवाच॥ सासु ससुरसो आज्ञा पाय। चली स्वपति सँग सो सुखदाय॥ कुशुमित बिपिनि लखत रमणीय। मृग बिहङ्ग सबलित कमनीय॥नदी सुनग लखि कै अभिराम। लखज्ज कहो नृपसुत छबिधाम॥

भक्ताकों साविची देखि । मृतक समान चित्तसे लेखि ॥ सत्यवानके पीछें जाति । चिन्ता प्रबल न हिए समाति ॥*॥ मार्कण्डेयउवाच ॥*॥ सत्यवान साविची साथ । लेय यथेच्छित फल कुल नाथ ॥ सत्यवान एक काठ कठोर । तोरण लगे भयो श्रम घोर ॥ खेद बढो शिरशूल महान । बिकल गए जहँ प्रिया सुजान॥साविचीसो ऐसे बैन । सत्यवान बोले हतचैन ॥ सत्यवानउवाच॥ भा शिर शूल महत श्रम पाय । भयो बेदना पूरित काय ॥ बिकल हृदय धरि सकत न धीर । शीश मथत सो शूल गभीर ॥ कियो चहत हम चितिपर सैन । शक्ति खडे रहिवेकी है न ॥ यह सुनिकै सावीची धाय । सत्यवानकों पकरो जाय ॥ अङ्कमाहँ पति मस्तक धारि । व्यथित भई मुनि बचन बिचारि॥चितिपर बैठी व्है दुखभौन । लखति काल पति नायक जौन ॥ कछु चणने एक पुरुष महान । रक्त बसन सम तेजसमान ॥ बाधें चिकुर अरुण अति अच्छ । श्याम अङ्ग सो भयो प्रतच्छ ॥ लए पाश अति कारक त्रास । सत्यवानके ठाढो पास ॥ देखत सत्यवानकी ओर । कीन्हे कुटिलनयन अतिघोर ॥ साविचा लखिकै कुरुनाहँ । उठी राखि पति शिर चितिमाहँ ॥ कम्पित कहन लगी इमि बैन । देखि ताहि अति भरी अचैन ॥ *॥ साविच्युवाच॥ * ॥ जानि परत तुम दैवत मोहि । अद्भुत रूप आपुको जोहि । को तुम करिबें कारज कौन । कहिए सत्यबचन प्रभु तौन ॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥ तुम सावीची पतिव्रतधाम । तप तेजससों भरी ललाम ॥ याते तुमसों कहियत बैन । हमकों यम जानहु मतिऐन ॥ सत्यवान यह तो भर्तार । चीणायुष भो राजकुमार ॥ बाँधि पाससों याको आर्य्य । लेजै है यह करिवें कार्य्य ॥ सुनत रहे तब दूत महान । मनुज पाप हारक भगवान ॥ तुमही आपु कियो इत गौन । धर्मराज सो कारण कौन ॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ************

साविचीकेसुनि बचन धर्मराज मतिमान । अपने आगमको लगे कारण कहन महान ॥
सत्यवान यह धर्मयुत रूपवान गुणमान । मम दूतनतें लेनकों जानो यह न समान ॥
सत्यवानके देहतें पास बद्ध नररूप । काढि अँगुष्ठ प्रमाण तब लीन्हो अन्तक भूप ॥
आशा रहित निश्वास तब भयो भयानक तौन।ताहि बांधि ले यम कियो दच्चिणदिशिको गौन॥
साविची यमके चली अनु दुख पूरित साम । भरी तपस्या सिद्धि सो महा पतिव्रतधाम ॥

॥ * यमउवाच ॥ * ॥

साविची फिरिजाहु तुम अनृण कियो पति धर्म । प्रेतकर्म पतिकों करहु यथा बिधान सधर्म॥

॥ * ॥ साविच्युवाच ॥ * ॥

जहँ भर्त्ता मम जायगो मोहि गमन तहँ धर्म । धर्मराज पतिव्रतनकों यहै सनातन धर्म ॥
तप ब्रततें गुरुभक्तिते पातिब्रततें धर्म । पतिहत गति मम होति नहिँ तवँ प्रसादते धर्म ॥

मैत्री नियमित सप्त पद कहत सकल मतिमान। आगे करि सो मित्रता कहति सो सुनऊ सुजान॥
आत्मज्ञानी धर्म रत बुध बनवासी जौंन। भाषत धर्म प्रधान करि साधु सनातन तौंन॥
सत मत एक सुधर्म ते शत पथ मिलत सुपर्म। करत न वाँछित और पथ साधु छोडिकै धर्म ॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

तुष्ट भए सुनि तव गिरा सावित्री अभिराम। पति जीवन बिन और वर मागु यथा मनकाम॥

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

अन्ध खसुर बन बसत मम भ्रष्ट ओजते जौंन। चक्षु सहित बलवान व्है लहै राज्यकों तौंन ॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

दियो तुम्है हम तौन वर जो तुम मागो मोहि।पथश्रम लहिहऊँ जाऊ फिरकहत तुमहिँ श्रम जोहि॥

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

पति समीप नहिँ होत श्रम गति मम जहँ भर्त्तार।जहँ ममपतिको राखिहो तहँ मम सुगति अबार॥
सतसङ्गति एक बार लहि पावत मैत्री पर्म। अफल होत सतसङ्ग नहि सुनियत राजाधर्म॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

मन भावन बुध जनप्रिय कहे जो तुम प्रिय बैन। सत्यवान जीवन बिना मागऊ वर शतऐन॥

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

तुम नियह करिकै सृजत देखि यथा ऋत कर्म। कर्म करत निःकाम जे ते तव बसत सुधर्म॥
भक्ति हीन मनुजन्ह भरो है एहि विधिको लोक। करत अमित्रऊ पैँ दया शत शरणागत तोक॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

यथा पिपासितकों शलिल तथा कहे तुम बैन। सत्यवान जीवित बिना वर मागऊ शतऐन॥

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

प्रजा रहित मेरो पिता शत सुत लहै सधर्म।हो प्रसन्न तौ देऊ वर यह मोको अति पर्म॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

पुत्र एकशतवंशकर बल तेजसके धाम।औरस जनक सु तव लहै सावित्री अभिराम॥
यह वर लै फिरि जाऊ तुम है पन्था अति भूरि।

॥ * ॥ सावित्र्युवाच ॥ * ॥

पति ढिग पथ सब निकट मम मनधावत अति दूरि॥
जगदात्मा रविके तनय भरें प्रताप महांन। तव सधर्म शासन लहे बिचरत प्रजा समान॥
फल अलभ्य प्राणी लहत सत सङ्गम सों सर्व। यातें सतसंगति करत जनपद लाभ अखर्व॥
सौहृदतें सब भूतकों होत महत विश्वास। याते करत विश्वास बस ते जनम मतिराश॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

तादृश सुने न और सो कहे वचन तुम जैान। पति जीवित बिनु मागु वर साविची मतिभैान॥

॥ * ॥ साविच्युवाच ॥ * ॥

मोभे औरस सत्यवानतें पुत्र एकशत पर्म। होंहि महाबल तेजमय देज सो बर बर धर्म ॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

पुत्र होहिंगे एकशत भरे महाबल बीर। साविची औरस तुम्है व्हैहै श्रम न गभीर ॥

सन्त होत सतवृति सब कहत करत सो सिद्ध। होत अफल सतसङ्ग नहिँ भयहर मोदद बद्ध ॥

सन्त सत्य ते रवि लहत धरत धराकों धीर। जगजन करता सन्तहै भयहर सत गँभीर॥

आर्य्य युक्त एहि कार्यकों जानि निरन्तर पर्म। प्रत्युपकार न चाहिकै सन्त परार्थ सधर्म॥

सत प्रसाद नहिँ मोघ हैं सहित अर्थ सनमान। याते सज्जन होतहै चाता सुनज्ञ सुजान॥

॥ * ॥ यमउवाच ॥ * ॥

ज्यों ज्यों भाषति बचनतुम सहितधर्म सुख मूल। त्यांत्यांबाढति भक्ति मम मागज्ञ वर अनुकूल॥

॥ * ॥ साविच्युवाच ॥ * ॥

तुमतें चाहति पुत्र नहिँ क्षेत्रज लहि पति अन्य। जीवितको व्यवसाय नहि मोहि बिन भर्ताधन्य॥

दियो मोहि शत पुत्रको बर हरि भर्त्ता पर्म। सत्यवान जीवै सो बर दीजैं सत्य सधर्म॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

सत्यवानको पास ते मोचन करि लहि चैन। धर्मराज तब यो कहो साविची सों बैंन॥

यह भामिनि भर्तार तो मोते मुक्त ललाम। वर्ष चारिशत जिऐगो तो सर्ग लहि मनकाम॥

व्है अरोग करि यज्ञ बज्ज व्है है जगत प्रसिद्ध। जनमावै गो पुत्रशत तोभे सुमति समृद्ध॥

ते सब राजा होहिगे वंशकार अवदात। वंश तिहारे नाम सह भू पर व्है है ख्यात॥

जननीमे तव जनक तो शत सुत लही प्रशंस। मालवमे मालव्यते व्है है करता वंस॥

भ्राताते तव होंहिगे राजा चिदश समान। साविचीकों करि बिदा ए बर दे सुखदान॥

साविची पति प्राण सह गई तहा फिरि भूप। बैठो छितिपर अङ्कमे धरि पति शिर शव रूप॥

सत्यवान सह प्राणन्है साविची सो बैंन। खोलि पलक लागे कहन भरे प्रेम सह चैंन॥

॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥

मोहि जगायो क्यों नहीं सोयो सो बज्जकाल। श्याम पुरुष सो कह गयो जेहिँ मोहि गहो कराल॥

चिर सोए मम अङ्कमे तुम श्रम पाय महान। गयो सो अपने लोकको पुरुष शमन भगवान॥

निद्रा श्रमसों रहित जो भए होज्ञ अभिराम। उठज्ञ सको जो होयतो भई निशा तमधाम॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

सत्यवान सुख सुप्त सम लहि संज्ञा उठि भूप । दिशा विपिनि लखिकै निशा बोले वचन अनूप ॥
तुम सगँ हम फल मूल लै चले स्वआश्रम ओर । तोरत काष्ठ बढी व्यथा मस्तकमे अति घोर ॥
बिकल होय तव अङ्कमे हम सोए हत शर्म । तब बाढो गत मन भयो रहो व्यथित अति मर्म ॥
तव देखो हम पुरुष सो महा घोर अति श्याम । तुम जानति जौं ताहि तौ कहु प्यारी छबिधाम ॥
ताहि लखो हम स्वप्नमे कैसो सत्य महान । साबित्री तुम कहहु सो बीतति रजनि सुजान ॥
भोर कहैगी चरित सब उठहु शीघ्र छबिधाम । काढत रजनीं पिता पद चलि देखहु अभिराम ॥
लगे निशाचर फिरन ते करत क्रूर रव घोर । शिवा सब्दको करतिहै दक्षिण पश्चिम वोर ॥
इहा रहत अब कँपतहै मेरो मन सुखदान ।

॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥

घन बनमे पथ मिली नहिँ बाढो तिमिर महान॥

॥ * ॥ साबित्र्युवाच ॥ * ॥

दग्ध विपिनिमे ज्वलित यह देखि परतहै दारु । ल्याय ताहि इत अग्निको सञ्चय कीजै चारु ॥
चलि न सकत तुम जौं नहो देखि परै पथ पम । तौ बसिऐ इत भोर चलि लखिहैँ पिता सधर्म ॥

॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥

मस्तक पीडा मिटि गई स्वस्थ भए सब गात । देखो चाहत जननि सह धर्मधुरन्धर तात ॥
पूर्व नही कबहू भयो श्रम हमको सु सुजान । दुख लहिहै जननी जनक बिनु मोहि गए महान ॥
दिनहूमे मोहि गए कहु दुखित होतहै तात । निशिमे हम तुमको इहा रहे महत उतपात ॥
कौन भाँतिते होहिगे दुखसो भरे महान । बिना मोहि देखे बढै चिन्ता महति अमान ॥
पूर्व कहो हमसो पिता तुम जीवन आधार । बिना तुम्है देखे नही जीवन मोहिँ उदार ॥
वृद्ध पिता मातु तिन्हैं हमही यष्टि समान । निशिमे बिनु देखें हमै व्है हैं बिकल महान ॥
हमै प्राण संशय भयो परी बिपति हम मर्म । बिना पिता मातहि लखे जीवित हमै न पर्म ॥
अन्ध पिता बिन लखें मो महत विकलता पाय । बूझत व्है है द्विजनसो आश्रम आश्रम जाय ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

ऐसे बहुत बिलाप करि सत्यवान सतिमान । समुझि पिता मातहि लगो रोदन करन सुजान ॥
साबित्री यहि भांति सों प्रतिको देखि सधर्म । लगी कहन एहि भांति सों वचन सुनीति सुधर्म ॥

॥ * ॥ साबित्र्युवाच ॥ * ॥

सत्य पतिव्रत जौं न मम सत्य होय सुखदान । स्वसुर सासु मम तौ नहीं तजै निशामे प्राण ॥

॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥

देखो चाहत जनकको सहित जननि अभिराम। मिलिहै मेरे भाग्य बश धर्मके तीन धाम॥
चहत जिवायो मोहि जौ धरि मति धीरज धर्म । साविची तौ मोहि सह चलु आश्रमका पर्म ॥

॥ * ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ * ॥

साविची दृढ बांधिकै केश पास अतिकाय। सत्यवानकों पकरिकैं ठाढो कियो उठाय॥
सत्यवान उठि पाणिसों पोछि अङ्ग अभिराम। चहुंदिशि लखि फलसों भरो देखो पात्र ललाम॥
भोर जायगो पात्र फल साविची यो भाखि। परशु लियो फल पात्रसो दियो बिटप पर राखि॥
बामकन्ध पर पति भुजा दच्छ बाहु सो नाह। गहें चली गजगामिनी आश्रमको जिमि छांह॥

॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥

नित्य गमनते बिदितहै हमको पन्था बाम। वृक्षान्तरमे परतिहै लखि ज्योत्स्ना अभिराम॥
आए सुन्दरि भोर हम फल लीवे जेहिँ औंन। सावधान ताहीं चलो पथव्है दायक चैंन॥
बन पलासकें दोय पथ तजि दच्छिण पथ जौंन। उत्तर पथ गहि चलहु हम भए सबल छबिभौंन॥
माता पितहि बिलोकिबेको अति इच्छावान। आश्रमको आतुर चले जायापति मतिमान॥
एहि अन्तरमे दृष्टि लहि द्युमत्सेन बर भूप। व्है प्रसन्न देखन लगे यथा चराचर रूप॥
सैव्या भार्य्या सह गए आश्रम वासिन्ह पास। पुत्रहेतु बिलपन लगे भरे महा दुख चास॥
आश्रम सर सरिता बिपिनि सह भार्य्या नृप तौंन। निशिमे ढूढत चहुंदिशि भए बिकल करि गौन॥
बन औवनको चरण धुनि सुनिकै करि अनुमान। पुत्रबधू आए कहत सैव्यासो सुखदान॥
कुश कण्टकसों बिद्ध लखि नृपको बिकल सभार्य्य। आश्रमको गहि लै गए बिप्र सकरुणा आर्य्य॥
भार्य्या सह नृपको कियो आश्वासन अभिराम। पूर्व बृत्त कहिकै तहां रहे जे मुनि तपधाम॥
बाल चरित कहि पुत्रको दुखसों भरे अमाप। द्युमत्सेन भार्य्यां सहित लागे करण बिलाप॥
भरद्वाज गौतम सुमुनि धौम्य सहित गालभ्य। आपस्तम्बादिक रहे तहां जे मुनि द्विज सभ्य॥
द्युमनत्सेनसो तिन कहो ऐसे बचन प्रमान। साविची लच्छण भरी प्रद सौभाग्य महांन॥
शोच करहु मति पुत्र तव सह भार्य्या अभिराम। भरो मोद कछु कालमै आवत अपने धाम॥
ऐसे सुनि सब मुनिनके बचन सुमानि प्रमान। स्वस्थ भए सह भारया द्युमत्सेन मतिमान॥
इतनेमे आए तहा सह साविची पर्म। बन्दे जननी जनक पद सत्यवान सह धर्म॥

॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥

पुत्र सहित हम लखि तुम्हे देत सु आशिरबाद। पुत्र बधू तव सृष्टिके व्है है बुद्धि अबाद॥
अग्नि बारि बैठे तहा पुत्र बधू सह भूप। एक ओर मुनिगण सकल आनद भरे अनूप॥

सत्यवानसों मुनिन तब बूझो बन वृत्तान्त। कारण कहौ बिलम्बको है नृप सुत अतिकान्त॥
दुखित किया माता पितहि रात्रि बिताय महान। कहहु तौन वृत्तान्त सब सत्यवान मतिमान॥
॥ * ॥ सत्यवानउवाच ॥ * ॥
दारु हरत बेदन बढ़ो मम शिरमे अतिमान। मूर्छित ह्वै सोए तहां हम बहुकाल सुजान॥
॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥
द्युमत्सेनकों प्राप्त चख अकस्मात् से जान। सावित्री ताको कहहु तुम सब कारण तौन॥
॥ मार्कण्डेयउवाच ॥
सावित्री मुनिसों कहो पूर्व सकल वृत्तान्त। नारद बचन प्रमाण दै यम सम्वाद नितान्त॥
कियो प्रसंशित ऋषिन्ह सुनि सावित्रीके बैन। दीन्हो कुल उद्धार तुम कियो महा मतिश्रैन॥
निशागएँ करिकै मुनिन्ह पूर्वान्हिक कृत सर्व। सावित्री कृत नृपतिसों फिरि फिरि कहो अखर्व॥
एतनेमे आऐ तहा द्युमत्सेन नृप पास। साल्वदेशते प्रजा बहु भरे मोद मतिरास॥
देखि सचख नृपको भरे ते अद्भुत अतिमान। द्युमत्सेनके बन्दि पद आनद भरे महान॥
कहन लगे चलिकै करो भूप आपनो राज। हने अमात्यन्ह रावरे बैरिन्हकों ससमाज॥
चतुरङ्गिनि आई लखो सेना प्रबल अनूप। सचख अचख राजा सो मम ते एक मत सब भूप॥
यह मत करि पठयो हमैं सब सचिवन्ह अभिराम। चढहु यथोचित जान पर चलहु आपनेधाम॥
बन्दि चरण मुनिबरन्हके पुत्रबधू सह भूप। लहि आशिष प्रमुदित चले चढि बर जान अनूप॥
गए आपने नगरकों पौरोहित सह आय। कियोभिषेक स्वराजको सह अमात्य सुखदाय॥
पौरोहित युवराजको सबिधि कियो अभिषेक। सत्यवान गुणधामपै मंत्रिन्ह सह सबिबेक॥
बहुतकाल बीते भऐ पुत्र परम अभिराम। सावित्रीके एकशत सर्व गुणन्हके धाम॥
कछू यौसने अश्वपति के शतपुत्र उदार। भरे परम गुणसों भए सकल बंश कर्त्तार॥
ऐसे माता पिताको सासु ससुरको बंश। सावित्री उद्धार करि जगमे भई प्रसंश॥
सावित्री सम द्रौपदी भरी शील गुणधाम। तुम्हैं सकल तारो चहति तैसे अति अभिराम॥
॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥
ऐसे सुनि मुनिके बचन खेदत्याग नृपधर्म। बास कियो भ्रातन्ह सहित काम्यक बनमे पर्म॥
सावित्रीको सुनै गो उपाख्यान यह जौन। आनद अर्थ सो लहै गो दुख न देखिहै तौन॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बन
पर्वणि सावित्रीउपाख्यानवर्णनोनाम एकोणसप्ततितमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कहो लोमस धर्मनृपसों इन्द्रको जो बैन । तुम्है जो भय मानसिक हम हरैंगे मतिऐन॥ धरे कुण्डल कवच जानत कर्णको बलभौन। धर्मनृप नहि कहत काह्न पास संशय तौन ॥ कहउ मुनि केहि भाँति भयसों हरण किय मघवान। * । वैशम्पायनउवाच। * । सुनउ सनदै कहतहैं हम तौन सहित बिधान॥ सो त्रयोदशवर्ष नीरे बसत बन नृपधर्म। पाण्डवन्ह हित कर्ण सो तब चहो मागन मर्म ॥ इन्द्रको मत जानि कै रवि स्वप्नमे बनि बिप्र । कवच कुण्डल दान वारणकों गए चलि छिप्र ॥ कर्णसों बऊभाँतिसों रवि कहो सहित विधान। नहीं मानो कर्ण चाहत सुयश दीन्हेऊ प्रान॥ रविरुवाच॥ श्रेयसों हत होऊगे अरु मरण व्है है छिप्र। इन्द्र आवत कवच कुण्डल मागिबे बनि बिप्र ॥ कर्णउवाच ॥ मागिहै सुरनाथ मोसों कवच कुण्डल खर्ब। बिना दीन्हे सुयश मेरो नष्टव्है है सर्व॥ दान ब्रतकों त्याग करिबो कहउ मोहि न भांन। दानसों हम विमुखव्हैहैं नहीं जबलों प्रान ॥ सुयश बिनसे रहैं का कछु धोस देह अनित्य। सुयशतनते जगतमे नर लहत अबिचल थित्य॥ बिमुख जासो होत भिक्षुक बिना पाए दान। मृतक सम ते होत अयशी बिना बिनसे प्रान॥ शक्र मागै दान मोसों जानि मोहि बदान्य। दान पात्र न और वैसो हमै मिलिहै मान्य॥ पाण्डवनको करैं हित ले शक्र कुण्डल बर्म। भानुमान न छोडिहैं हम दानको ब्रत पर्म॥ दान कारण कीर्त्ति को है कीर्त्ति स्वर्गद शर्म। दान ब्रतको त्याग भानु न योग्य मेरे कर्म। कीर्त्ति ज्यावति पुरुषकों जगमाह जननि समान। करि अकीरति देति जनकों मृतक सम यह प्रान॥ द्विजनकों दे दान विधिवत समरमे तनत्याग। करि लहैंगे स्वर्गकों हम जीति अरि बडभाग॥ शक्रकों दे दान वाँछित धरें ब्राह्मण रूप। स्वर्गलोक सो लहैंगे बिधि बिहित जौन अनूप ॥ * ॥ सूर्यउवाच ॥ * ॥ करत कर्ण न आपनो हित सहित कुलको जौन। देहको अबिरोध कारण चहत जन यश तौन ॥ प्राणको सुबिरोध करि जो चहत कीरति बीर । जायगी सो सङ्ग तुम्हरे प्राणके रणधीर ॥ जानिकै हम भक्त तुमकों कहत यो समुझाय। करत रक्षा भक्तकी हम जानि शुचि सुखदाय॥ देव गुह्य न कहत तुमसों जानिबें नहि शक्त। समय आए जानिहो तुम हो हमारे भक्त ॥ द्वेष राखत जिष्णु सो तुम तुम्है तौन समान। सहित कुण्डल तुम्है जीति न सकत सो बलवान ॥ नहीं कुण्डल कवच तातैं दीजियो बरबीर। फेरि दीजो इन्द्रको हित पार्थके गम्भीर ॥ * ॥ कर्णउवाच ॥ * ॥ मोहि जानत भक्त तुम मम इष्टहो भगवान। कहत मोसों परम हित करि कृपाको अतिमान ॥ कृपा करिकै सुनउ प्रभु यह प्रणत मेरो बैन। अनृतको भय मोहि दारुण प्राणको भय है न ॥ जीतिहै हम जिष्णुको रणमाह तेजस भौन । राम हमकों दियो अस्त्र सो बिदित तुमकों तौन ॥ आपु जानत नाथ व्रत मम सत्य सहित बिधान। इन्द्र भिक्षुक होय मागैं देये मोको प्रान ॥ सूर्यउवाच ॥ देऊ कुण्डल इन्द्रकों तो सुनउ कर्ण सुजान । शक्ति मागेऊ शक्र सो अरि दमन जो बलवान॥

जिष्णु मागो इन्द्रसों वर तुम्हे बधकर जौन। हरो कुण्डल चहत मनमे राखिकै मत तौन ॥ शक्ति
लेकै दीजियो तुम वर्म कुण्डल बीर। शक्र शक्ति अमोघ अरिगण गहन दहन गभीर ॥ * ॥ वैश
म्पायन उवाच ॥ * ॥ कर्णसों एहि भाँति रवि कहि भए अन्तरध्यान। ध्याय रविकों कर्ण स्वम
सो कहो भोर सुजान ॥ विहँसि कै रवि कहो तासों तथा स्वम स्वरूप। कर्ण तबसों शक्ति लीवे
प्रहो मनसे भूप ॥ * ॥ जनमेजय उवाच ॥ * ॥ कहा गुह्य न कहो दिनमणि कर्णसों सविधान।
कवच कुण्डल कौन विधिके लहो कहँ बलवान ॥ कहहु विस्तर सहित मुनि हम सुनो चाहत
तौन। * । वैशम्पायनउवाच। * । कहतहैं हम तौन तुमसो गुह्य रवि किय जौन ॥ कुन्तिभोज
महीपपैं मुनि गए तेजसरूप। कहो मत्सर रहित भोजन देहु हमकों भूप ॥ कहहु मन न विकार
तुमसह अनुगमे मतिमाम। तौ कछूदिन करैं भोजन बसै तुम्हरे धाम ॥ यथा आए तथा करिहैं
भूप स्वेच्छा गौन। करैं सज्या शयनसे कछु कहू व्यतिक्रम जौन॥कुन्तिभोज सप्रीति मुनिसों कह
ऐसे वैन। करी सेवा रावरी मम कन्यका मतिऐन॥ एहि भाँति कहिकै कियो पूजन सुमुनिको
तब भूप। पृथासों कहि दियो सेवन करण तास अनूप ॥ सुताहै ए विप्र मुनिवर माह तेजसधाम।
विप्र वाँछित देत सेवन करेते अभिराम ॥ नन्दिनी हम सुमति जानत बाल्यपनतें तोहि। भार हम
यह धरो तुमपै योग्य सबविधि जोहि॥वृष्णि कुलमे भई तुम शुभलक्षणा अभिराम।पिता तव मोहि
दई तुम बसुदेव भगिनी आम ॥ और मेरे प्रजा नहि तुम सुता भूषण वंश। करहु तातें विप्र सेवन
धर्म धारि प्रसंश ॥ छोडि मत्सरदम्भ मुनिको करहु सेवन पर्म। विप्र सेवनसों सुता तुम लहहुगी
सब शर्म ॥ कोप कीन्हे ते करेगो विप्र कुलको नाश। सावधान समेति याते सेइयो मतिराश ॥
॥ कुन्त्युवाच ॥ नियम सो हम करैंगी निति विप्र सेवन तात। कबहु कहिहै नही मुनिवर यास
मिथ्यावात॥ विप्रसेवनको हमारो पिता नित्य स्वभाव। अनिश सेवन करैगी तव वचनतें युतचाव॥
गेहमे तव बसत मुनिको तात अप्रिय जौन। करहु तुम विश्वास हमसों होय गो नहि तौन॥ हित
तुम्हारो विप्रको प्रिय करैंगो हम भूप। छोडि चिन्ता हरहु मनमे धरे आनद रूप ॥ पूजि है हम
द्विजनको नृप कुन्तिभोज उदार। वृद्धि कारण विप्रकोपें नाशके कर्तार ॥ ब्राह्मणन्ह प्रति कहो
सवन तात जैसो पर्म। करैंगी हम तथा मनते दूरि कीजे भर्म ॥ पृथाके सुनि वचन भूपति लयो
हिय सो लाय। कहो तुम सव करहुगी मम बचन सम सुखदाय॥ बचन सुनिकै पृथाके नृप भरे
चामर चेत। कहो मुनिसों बचन ऐसे सौंपि सेवन हेत ॥ राजोवाच ॥ विप्र मेरी सुता वर्द्धित भई
यह सुख साथ।करै जौं अपराधकछु तौ छमाकीजो नाथ॥यथोत्साहस यथा शक्ति सुकरै पूजाजौन।
कृपा करि सो ग्रहण कीजो नाथ करुणा भौन॥कहो सुमुनि तथास्तु सुनि नृप भरे मोद महान।
गए मुनिको राखि गृहमे चन्द्रकान्ति समान ॥ अग्नि सन्निधि महा मुनिकों दियो आसन पर्म।
तों भोजन वस्तु गिरी पृथहि सौंपि सधर्म ॥ गए भूपति धामकों तब पृथा अति मतिमान। छोडि

आलस कियो सेवन बिप्रको सुखदान॥ बैशम्पायनउवाच॥ कियो कुन्तीं शुद्ध मनसों बिप्रसेवन धर्म। बूझि सायं प्रात कुन्ती पितासों मतिमान। भोजनासन पान दै किय मुनि हिँ तृप्त महांन॥ एकसम्वत बीति गो एहिभाँति सेवत ताहि। कहो ऐसें बैन मुनि निष्कपट कुन्तीहि चाहि॥ मागु कल्याणि सो बर है तुम्है बांछित जौन। सीमन्तिनी व्है लहऊ जातें सुयश हे छबिभौन॥ कुन्त्युवाच॥ *॥ कियो सेवन बिप्र हम तव जानि कै तुम तौन। बात सहित प्रसन्न तुम यह परम बर तपभौन॥ *॥ ब्राह्मणउवाच॥ *॥ जौन हमसों चहति तुम बर सुनऊँ तौ यह बैन। सुरनके आव्हानको यह लेऊ मंत्र सचैन॥ जेहि देवताको मंत्रतें यहि करौ गी आव्हान। एहि मंत्रतें वश होहि गे तव देव भृत्यसमान॥ अकाम कै सह काम जाको करऊ गी आव्हान। बैशम्पायनउवाच॥ टारि कुन्ती शकी नहिँ मुनि बचनकों अतिमान। देय कुन्तीकों महामुनि मंत्रको सो ग्राम। कुन्तिभोज महीपसों एहिभाँति कहि तपधाम॥ भूप तोषित कियो हमकों सुता तव मतिऐन। भए मुनि दुर्बासा अन्तरध्यान कहि इमि बैन॥ होय बिस्मित कियो पूजन प्रथाको तव भूप। कछुद्योस बीतें चहो कुन्तीः लखो मंत्रस्वरूप॥ भयो रज बिनु काल ताको करत चिन्तन भूप। दैव इच्छाते भई लखि प्रथा लज्जित रूप॥ स्नान करि सोहर्म्य ऊपर परम शज्यामाहँ। रहौं बैठी प्रथैं देखो उदित रबि नरनाहँ॥ लगी देखन भानुकों दे दृष्टि मन अभिराम। आचमन करि बारिसों शुचि होय कै छबिधाम॥ दिव्यदृष्टि सु भई कुन्ती लखो रबिको रूप। कवच कुण्डल धरें अद्भुत दिव्यदर्शन भूप॥ मानि कौतुक मंत्र पढि किय भानुको आव्हान। सोम्य धरि रबि रूप आए प्रथाढिग सुखदान॥ मुकुट कुण्डल दिव्य भूषण धरे रबि छबिऐन। कहन कुन्तीसों लगे इमि मधुर मंजुल बैन॥ मंत्रबल बश इहां आए पास तव छबिधाम। कहऊसों हम करैगे तव मान बाञ्छित काम॥ कुन्त्युवाच॥ जाऊ आए जहांतें तुम तहांकों भगवान। हम कुतूहलतें कियो आह्वान तुमकों भान॥ सूर्य्यउवाच॥ तथा सुन्दरि जाहिँ गे तुम यथा बोलति बैन। देवको आव्हान करि फिरि बिदा योग्य सु है न॥ सूर्य्य सङ्गम हसु तुमकों पुत्र व्है है बीर॥ धरें कुण्डल कवच अतिबल समर सुयशी धीर॥ करऊ आत्म प्रदान हमकों सुनऊ सुन्दरि बैन। पुत्र मम शङ्कल्प सम तुम लहऊ गी सहचैन॥ जौ न मेरो कैहौ करिहो सुनऊ सुन्दरि क्षिप्र। भस्म करि है शापतें सह तात तुम हिँ सविप्र॥ तुम्है शील समान दैहै दण्ड सुनऊ अखर्ब। तुम सङ्ग हमको लखत सस्मित शक्र सह सुर सर्ब॥ पूर्ब दीन्हो दृष्टि तुमको दिव्य हम सुख दान। लखत हमकों देवगण जे तिनहि लखऊ सुजान॥ बैशम्पायनउवाच॥ सुरनकों गगणस्थ कुन्ती देखि भानु प्रभाव। कहन रबिसों लगी कुन्ती बैन लज्जित राव॥ जाऊ रबि नहि कन्यकामे योग्य यह उपचार। पिता माता चहत मेरो कियो दान उदार॥ धर्मलोप न कियो चाहति तौन हम ब्रत

पर्म। मंत्र बलके जानिबेको कियो हम यह कर्म ॥ बाल्यभाव बिचारि कीजे छमा हे भग वान । सूर्य्यउवाच ॥ जानि बाला करत याते छमा हम सुखदान। रही तब कन्यत्व अपनो करऊ हमको दान ॥ कीर्तिमान सु होहिँगी लहि पुत्र मोहिँ समान॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भई सो न समर्थ भानहिँ बारिबेको भूप । शापकोभय मानि मनमे पिता सह अतिरूप ॥ भई लज्जा बिकल कुन्ती कहो रबिके पास॥ कुंत्युवाच ॥ *॥ पिता माता जियत मेरे बन्धुगण मति राश॥ तिन्है जीवत होत है यह बेदविधिको लोप। सङ्ग तुमसो होय गो सो अविधिको आरोप॥ पितादत्त बिना करैं हम तुम्हे अपनो दान । कीर्ति मेरे बंशकी मिटि जाय गो भगवान॥ देऊ यातें कीर्त्ति आयुष सुयश रबि सह धर्म । * ॥ सूर्य्यउवाच ॥ * । जायगो कन्यत्व नहिँ तव सुयशकी रति पर्म ॥ सङ्ग हमसों करि लहौं गी तथा कन्या भाव। होय गो बरबीर सुत तुम रहो गी युत चाव ॥ * ॥ कुंत्युवाच ॥ * ॥ होय गो जो पुत्र मेरे कबच कुण्डलवान । महा बल बरबीर ताको कहऊ नाथ निधान ॥*॥ सूर्य्यउवाच ॥*॥ कवच कुण्डल सहित लैहै जन्मसों बलवान । * ॥ कुंत्युवाच ॥ * ॥ होय ऐसो पुत्र तो कुरु सङ्ग हमसों भान ॥ * ॥ सूर्य्यउ वाच ॥ * ॥ अदिति हमको कवच कुण्डल दयो जो अभिराम। देहि गे तव पुत्रको हम तौन हे छबिधाम ॥ * ॥ कुंत्युवाच ॥ * ॥ होय ऐसो पुत्र हमसों रमऊ तो भगवान । * ॥ वैश म्पायनउवाच ॥ * ॥ पृथा सँग रबि रमे दे तव पुत्रको बरदान ॥ भई बिव्हल पृथा रबिके तेजसों सुकुमारि । मूढसी व्है रही सङ्गम प्रथमको श्रम धारि ॥ * ॥ सूर्य्यउवाच ॥ * ॥ होय गो तव पुत्र कुन्ती भरो सुबल अनूप ।रहऊ गी तुम कन्यकाको धरे सुन्दरि रूप ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच होय लज्जित कहो कुन्ती कहत हो प्रभु जौन। होय सत्य सो बचन तव तिग्मांशु करुणाभौन ॥ प्रथे करि रबि गए मोहित देय कन्यारूप। जागि कुन्ती लखो अपनो तथा रूप अनूप ॥ * ॥ वैश म्पायनउवाच ॥ * ॥ धरो कुन्ती गर्भ रबिसों परम सङ्गम पाय । नहीं जानो गर्भ काहूँ एकधाय बिहाय ॥ भयो प्रसव सुकाल पाए देवदर्शन रूप । व्याघ्राक्ष बृषभस्कन्ध धारे कवच कुण्डल भूप ॥ धायसो करि मंत्र धरि सन्दूकमे सुत तौन। मानसो मढि जाय डारो सरितमे करि गौन ॥ स्नेहसों तब लगी कुन्ती करण रोदन भूप । आत्मसम्भव पुत्र सरितामाहँ तजत अनूप॥ अस सरिता माहँ त्यजत सन्दूक कुन्ती बैन । कहे सो हम कहत सुनिए भूप अति मतिऐन ॥ दिशा बिदिशा भूत दिव्य सु गगण चारी जौन। करहि पथमे बिघ्न हो तव बिघ्न करता तौन॥ पवन पासी पिता तव जेहिँ तोहि दोन्हो मोहि । साध्य बसु आदित्य सुर सब करैं रक्षित तोहि ॥ चीन्हिहैं जहँ देखि हैं तोहि कवच कुण्डल मान्य। धन्य जाको करऊगे तुम पुत्र सुस्तन पान॥ पुत्र तेरो देखि हैंजो बालभाव स्वरूप । यौवनस्थ जो तुम्हे लखि है सिंह सदृश अनूप॥ भाग्य ताको सफल व्है है

धन्य ताके नैंन। एहिभाँति बहुत विलापके कहि प्रथा दुःखित बैंन ॥ छोडि मञ्जूखा नदीमें सङ्ग धाची एक। गई जानि निशीय घरकों भरी लाज विवेक ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि कुन्तीसूर्य्यसङ्गमकर्णोत्पत्तिवर्णनोनाम सप्ततितमोऽध्यायः ॥ *❦*❦*❦❦❦❦❦

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

तेहि नदीतें संदूक सो चर्मण्वतीमें आय। जाय यमुनामें गयो सुर सरितमें सुखदाय ॥ वारि वेग तरङ्ग वश हो सूतपुर जहँ भूप। सूत है अति महाबल रथकार दुर्जय रूप ॥ दैव वश सो सत भार्या सहित सुरसरि तीर। स्नान करिबेको गयो अति भरो भाग्य गँभीर ॥ लहरि लुण्ठित देखिकै संदूक अति अभिराम। वारिमेतें काढि देखो खोलि शिशु छविधाम॥रही बाम अपुच ताकी नाम राधा जास। गोदमें ले दियो ताको भरो आनदराम ॥ दैव दीन्हो पुच हमको दिव्य अद्भुतरूप।कवच कुण्डल धरे भानु समान तेज अनूप॥ पुच विधिसो लेय राधे कियो पोषण तास। नाम धरि वसुषेण सुतको भरो आनदरास ॥ सूत हो धृतराष्ट्रको सो सखा रथकार कर्म। भयो वर्धित कर्णताके धाममें सहशर्म ॥ वारणावत पुरीको गो कर्णको ले सूत। भो सुयोधन सखा कर्ण सो द्रोण शिष्य अकूत॥ द्रोण कृप अरु रामते लहि धनुर्विद्या सर्व। सो धनुद्धर कर्ण जगमें भयो ख्यात अखर्व॥ सङ्गकरि धृतराष्ट्र सुतको पाण्डवन सो वैंन। करण लागो जिष्णुसों संग्रामको धरि मैंन ॥ कर्णसों यह गुह्य कीन्हो भानु सब वृतान्त। देखि कुण्डल कवच ताको जानि अजित नितान्त ॥ रहे मनमें भरे चिन्ता धर्मराज नरेश। जलस्थित मध्यान्हलों जब भजत कर्ण दिनेश॥ तहां तब जो विप्र मागत देत ताको तौन। जानि यह तहँ शक्र कीन्हो विप्र बनि कै गौन॥ देऊ भिक्षा कर्ण सो यह शक्र बोले बैंन। देहि सो तुम कहा मागत कहो कर्ण सचैन॥ *॥ ब्राह्मणउवाच ॥ *॥ और कछु हम लेत नहिं गो कनक ग्राम महांन। कवच कुण्डल आपनो यह हमै दीजै दान ॥ सत्यब्रत तुम होऊ तो यह छिप्र हमकों देऊ। और कछु हम चहत नहि दे सूतसुत यश लेऊ ॥*॥ कर्णउवाच ॥*॥ ग्राम धाम सु भूमि बनिता चहऊ माँगऊ तौन। देय मोहि न कवच कुंडल सुनऊ द्विज मतिभौन ॥ *॥ वैशम्पायनउवाच कर्ण ऐसे बचन तासों कहे सुमति समान। सुनऊँ भूप न और कछु तेहि विप्र मागो दान॥ बिहसि कै तब विप्र सों इमि कर्ण बोले बैंन। अजेय जासो हम सो कुण्डल देय तुमकों हैं न॥ और माँगऊ जोन बांछित होय तुमकों छिप्र। कवच कुंडल बिना हम अरि बध्य व्है हैं विप्र ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच॥ * ॥ और बर जब नही मागो पाकशासन भूप। कर्ण बोलो जानि कै सुरराज हर्षित रूप ॥ पूर्व हमकों विदित हो तुम सम प्रभू लोकेश। तुम्हे

व० हम वरदे हिँ सो यह न्याय है न सुरेश॥भूत भ्रत देवेश तुमको चहत हम बरदान । दए कुण्डल कवच हनि है हमै अरि वलवान॥ देऊ मांगे तौंन तब तुम लेऊ कुण्डल वर्म ॥ शक्रउवाच॥*॥ विदित हमकों गए कहि जो भानु तुमसों मर्म ॥ कर्ण मागऊ वस्तु बांछित होय तुमकों जौंन। एकवज्र बिहाय कै हम तुम्है देहै तौंन॥ *॥ बैशम्पायनउवाच॥*॥ कर्ण सुनि यह बचन मनमे भरे हर्ष अशेश। जाय मागो शक्ति मोहि अमोघ देऊ सुरेश॥*॥ कर्णउवाच॥*॥ देऊ कुण्डल वर्म बदले शक्ति मोकों तौंन। युद्धमे अरि गहनकों सम दहन जारै जौंन॥ चिन्ति मनमे कहो सुरपति कर्णसो इमिवैन। लेऊ शक्ति अमोघ कुण्डल बर्म दै बलअैन॥ एक अरिपर छोडि हो तुम तास करि संहार। फेरि तुम यह आई है नहि शक्ति तौन उदार॥ कर्णउवाच॥ एक अरि हम हनो चाहत युद्धम अमरेश।*। इन्द्रउवाच।*। जाहि चाहत हनो रहत कृष्ण तेहि जगतेश॥ देऊ शक्ति जो प्रवल मारै एक अरि मम हांथ। कवच कुण्डल काटि तनतैं लेऊ तुम सुरनाथ॥नहीं देह विभत्स मेर रहो पकरिए तौंन।*। इन्द्रउवाच।*। कनक सो तन रहैं गो तव विनाहत वलभौंन॥*॥ बैशम्पायनउवाच॥*॥ शक्ति दकै इन्द्र काढो कवच कुण्डलपर्म। काटि कै सितशस्त्रसो नहिँ भयो पोडित पर्म॥ देव दानव मनुज लखि इमि कवच कुण्डल हर्ण। उच्च कीन्हो नाद लखि थिर कर्णको सुख वर्ण॥ देव दुन्दुभि भई वर्षे सुमन सुर गन्धर्व। कवच कुण्डल हरण देखत कर्ण कर्म अखर्व॥ कवच कुण्डल रुधिर पूरित कियो हरिकों दान। इन्द्र वरसों भयो फिरि तन तास कनक समान॥ एहि भांति बचन कर्णसों करि लेय कुण्डल बर्म। पाण्डवनको कार्य्य करि कै गए इन्द्र सशर्म॥ सुनि सुयोधन सूत सुतको कवच कुण्डल हर्ण। दीन मानस दर्प करि कै भए बिवरन वर्ण॥भए हर्षित पांडुसुत सुनि कर्णको वृत्तान्त। कर्ण तवते नाम ताको भयो ख्यात नितान्त॥*॥ जनमेजयउवाच॥*॥ रहे पांडव कहा जव यह सुनो प्रिय अभिराम। कियो बोते वर्षद्वादश कहा कऊ मतिधाम॥*॥ बैशम्पायनउवाच॥*॥ जीति सैंवध लियो कृष्णहिं मार्कण्डेयपास। सुनो वृत्त पुराण सब करि काम्यवनमे बास॥ गए सरथ सविप्रगण फिरि द्वैतवनकों भूप। तहां बसि वनवास पूरण कियो धर्म स्वरूप॥*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे वनपर्वणि कुण्डलहरणवर्णनोनाम एकसप्ततितमोऽध्यायः॥ *

॥*॥ मार्कण्डेय उवाच ॥*॥ मधुभारछन्द ॥*॥

एहिँ भातिकों लहि क्लेश। बनमाह धर्मनरेश॥ कियो का कऊ तौंन। हे महामुनि भौन॥ ॥*॥ बैशम्पायनउवाच॥*॥ हरि कृष्ण हि पाय। तजि काम्यवन सुखदाय॥ फिरि द्वैतबनकों भूप। ले जानि रम्य अनूप॥ जहँ स्वादु फल मृग वृन्द। तँह गए धर्म नरेन्द॥ तहँ कन्द फल दल

खाय। सह द्विजन बन्धु सहाय॥ तब बसे तहँ नृपधर्म। सह द्रौपदी अतिपर्म॥ तह सहित अरणी दण्ड। धरि शृङ्गपै मृग चण्ड॥ गो बिपिनिकों कुरुराज। भो अग्निहोत्र अकाज॥ एहिभाँति बिप्रन्ह आय। दियो धर्मनृपहि सुनाय॥ नृप द्विजन्हके सुनि बैन। धरि धनुष अति बलश्रैन॥ अति कोप करि कुरुनाथ। उठि चले भ्रातन्ह साथ॥ अति बेगसों बर बीर। गे बिपिनिमाह गँभीर॥ तब देखिके मृग तौन। धरि धनुष अति बलभौन॥ बज्र भाँतिके बरबान। तब तजे करि सन्धान॥ नहि ताहि लागो एक। तब कियो यत्न बिबेक॥ तब भयो अन्तरध्यान। सो महामृग बलवान॥ जब पाण्डवन्ह मृग तौन। नहि लखो अति जव भौन॥ ह्वैकै पिपासा क्रान्त। वट देखि सघन नितान्त॥ तहँ जाय बैठे भूप। सह बन्धु चिन्तित रूप॥ तब नकुल बोले बैन। एहि बंशमे नहि चैन॥ एहि बंशके अनूरूप। भो धर्म लोपन भूप॥ आलस्यतें नहि अर्थ। भो कबहुँ लोप समर्थ॥ ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ ॥ मर्य्यादतें न बिपत्ति। को कछू कारण अत्ति॥ धर्म द्विविध लखाय। सुनि पुण्य पापहि प्राय॥ ॥ भीमउवाच॥ ॥ अति कहो तीक्षण बैन। सुन सूतके हत चैन॥ सो सहो हम अति रूप। तेहि दियो संशय भूप॥ ॥ सहदेवउवाच॥ ॥ जब शकुनि तुमसों द्यूत। नृप चहो जीति न धूत॥ हम हनो ताहि न जौन। यह देत संशय तौन॥

॥ ॥ वैशम्पायनउवाच॥ ॥ दोहा॥ ॥

कह्यो धर्मनृप नकुलसो तरुपर चढहु उदार। लखहु चहूदिशि दृष्टि दे कहु जलको आधार॥
नकुल बृक्षपर चढि चितै दिशि चारो बन सर्ब। कहो इतै घन सलिल तरु सारस शब्द अखर्ब॥
कहो इतै जलहै नियत जानि परत नृपधर्म।

॥ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ॥

जाहु नकुल भरि तूणसे सलिल लेआवहु पर्म॥
नकुल सुनत उठिकै चले गए बेगसों तत्र। रहो सरोवर बिमल जल बारिज भूषित यत्र॥
पियन चहो जल तब सुनो बचन यक्षण तब भूप।

॥ ॥ यक्षउवाच ॥ ॥

पिअहु सलिल मम प्रश्नकों दे उत्तर अनुरूप॥
मानो बचन न नकुल सो पियो तृषा बश नीर। पियत सलिल मूर्छित गिरे सर तट बीर अधीर॥
बिलम्ब लगे सहदेवसों कहो धर्मनृप बैन। जाय लेआवहु नकुलकों करि जलपान सचैन॥
तहां जाय सहदेव सुनि यक्ष बचन जलपान। करि मूर्छित सरतट गिरे ह्वैकै मृतक समान॥
ऐसेहीं अर्जुन गए भीमसेन बरबीर। शोच भरे भ्रातन्ह चितै धनुधरि जिष्णुगभीर॥
गिरे तहां आए नहीं जानि बिलवँ अतिमान। धर्मराज तहकों गए पूरित शोच महान॥

लखो चहूदिशि नहि लखो कहूँ भूत बलवान। महा तृषारत ह्वै चले तब करिबो जलपान॥
सुनो यक्षको वचन हत तास जानि बरबीर। शब्द बेधकारी लगे बर्षन बाण गंभीर॥
लगो न सर तब यक्ष फिरि कहो प्रश्नके बैन। मानो जिष्णु न कीन जल पियत गिरे बलऐन॥
निर्जन बन अति सघनमें कीन्हो जाय प्रवेश। सिंह व्याघ्र मृग महिष जहँ करत बिहार बिशेष॥
जाय लखो सरवर तहां कनक रचित अभिराम। जलखग नाना भांतिके कमल अमल छबिधाम॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

सब सम भ्रातन्हकों चितै लोकपाल समबीर। भरे शोक निश्वास नृप लागे लेन गभीर॥
करि बिलाप लागे कहन भूपति ऐसे बैन। करी प्रतिज्ञा व्यर्थ तुम भीमसेन बलऐन॥
जघन सुयोधनको हनन करिकै गदा प्रहार। व्यर्थ भयो सो लखत हम सब सम तुम्है उदार॥
दिव्य बचन तव धनञ्जय मिथ्या होति न बीर। हनन प्रतिज्ञा कर्ण प्रति मिथ्या होति सो धीर॥
नहि जाको जेतार कोउ अखिल जेता जैान। मम आशाको नष्ट करि सब सम सोवत तैान॥
सदा शत्रु जेतारके कुन्तीसुत बलरास। भीमार्जुन सब अस्त्रविद वज्रसार तन जास॥
माद्रीसुत क्षितिपर परे सब समान बलभैान। देखि न फाटत मम हृदै है पषाण सम तैान॥
ऐसे बहुत बिलाप करि धर्मराज मतिमान। लगे बिचारण केहिँ हतो महाबीर बलवान॥
शस्त्रघाव देखत नहीँ नहि बिमर्द अतिमान। महत भूत कोउ है इहां यह हत जात सज्ञान॥
जल करि पान एकाग्र ह्वै कीजै चिन्तन तैान। कियो सुयोधन तैानहो यह हत छल मति भैान॥
यह छल बुद्धी शकुनि हत है तो कछु न बिकार। गूढ पुरुष काहू न तो जल बिष भरो उदार॥
मम भ्रातनकी बदन छबि बिकृत न भई गँभीर। सुखसो सोवत है मनो निद्राबस बरबीर॥
यह बिचारि जल पानकों चले तृषित नृपधर्म। अन्तरिक्ष बाणी सुनी तव कुरुकुल हत कर्म॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

हम बध कीन्हो प्रेत बस तव भ्रातन्हकों भूप। पूर्व प्रश्न मम किए बिनु तुम लहिहो सोइ रूप॥
प्रश्नोत्तर देकै करो तुम भूपति पै पान। युधिष्ठिरउवाच। रुद्र महत वसु कैान तुम हो अनि पुरुषप्रधान॥
पर्वतसे तेजस भरे मम भ्राता बलभैान। पातित तुम तिनकों कियो कहहु सत्य तुम कैान॥
नहीं तुम्हारो कार्य हत बांछित जानो जात। जैान करें मम दुःखको नष्ट होय उतपात॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

धर्मनृपति हम यक्ष है जल चर पक्षी है न। हते तिहारे बन्धु हम महा बीर बलऐन॥

॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

फिरिकै ठाढे भये तव यक्ष बचन सुनि भूप। वृक्षाश्रित गिरि सम लखो ज्वलित यक्षको रूप॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

हम बोरख बऊ विधि कियो तव भ्रातन्हको भूप। बलसों चाहो पियन जल तब पायो यह रूप॥
पेय नहीं यह सलिल है राखो चहै जो प्रान। करऊ न साहस भूप तुम मम निवन्ध बलवान॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

कहऊ यक्ष तुम प्रश्न सो तुम्है पूछिबे जौन। यथा बुद्धि हम करहिंगे समाधान तव तौन॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

आदित्य उदयको को करत सह चर ताके कौन। अस्त करत को भानुको रहत कहा मतिभौन॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

ब्रह्म उदै रविको करत सह चर देव सुजान। धर्म अस्तको लहत हैं सत्य कहत मतिमान॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

श्रोत्री का सो होतहै होत महत ब्रिधि कौन। जनको कौन द्वितीय है होत सुधौ मतिभौन॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

श्रुति सो श्रोत्री होत है तपसों होत महान। जनको धैर्य द्वितीय है वृद्ध भजे मतिमान॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

क्षत्रीको दैवत कहा कौन सनातन धर्म। कहा भाव है मनुजको समता है का मर्म॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

क्षत्री दैवत शस्त्र है मनुज भाव भय दक्ष। समता कहियत त्यागकों जौन करतहैं यक्ष॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

देहवानको श्रेष्ठका श्रेष्ठ बयनमे कौन। श्रेष्ठ प्रतिष्ठा मानमे प्रसव श्रेष्ठ कऊ तौन॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

वर्ष श्रेष्ठ तनकों कहै बीज बयनमे पर्म। गऊ प्रतिष्ठा मानमे पुत्र प्रसवमे शर्म॥ यक्षउवाच॥
भूमिऊतें गुरु कौन है उच्च गगण ते कौन। कौन शीघ्र तर वायु तें तृण तें बऊ कऊ तौन॥
युधिष्ठिरउवाच॥ भू तें गुरु र जननि है उच्चगगणते तात। तृणतें चिंता बऊतरी मन जीततगतिबात॥
यक्षउवाच॥ मित्र प्रवासीको सु को को गेही को मित्र। आतुरको को मित्रको मरतें मित्र पवित्र।

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

आर्य प्रवासी मित्र है गृहमे मित्र सु बाम। आतुर मित्र सु औषधी मरतं दान हित साम॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

कौन अकेलो फिरतहै फिरि फिरि जनमत कौन। हिमको औषध कौनकों बयनश्रेष्ठ मतिभौन॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥
सूर्य अकेलो फिरत भ्रमि फिरि फिरि करत प्रकाश। हिमको औषध अग्नि भू वयन श्रेष्ठ मतिरास॥
॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥
को आत्माहै मनुजको सखा दैव कृत कौन। कौन जीव का करत को अन्त सुखद मतिभौन॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥
पुत्र आतमा दैव कृत भार्या सखा सुजान। देत जीवको मेघ सुख दे जलदान महान॥ यक्षउवाच ॥
कहा तजे हित होत जन शोचत तजे न काहि। अर्थ धनी काको तजें सुखी होत तजि जाहि॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥
मानत जँ प्रिय होत जन शोच न छोडें क्रोध। काम तजे ते अर्थ वान है लोभ तजे सुखबोध॥
॥*॥ यक्षउवाच॥ * ॥
मृतक होत कैसें पुरुष देश मृतक किमि भूप। श्राद्ध मृतक किमि होत हैं यज्ञ मृतक किमि रूप॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥
मृतक दरिद्री पुरुषहैं देशबिना नृप तज्ञ। श्राद्ध मृतक श्रोत्री बिना बिना दक्षिणा यज्ञ॥ यक्षउवाच॥
तपको लक्षण है कहा दम कहियतहै काहि। परा क्षमा कासों कहत लज्जा कासों चाहि॥
॥ *॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ *॥
तप स्वधर्म रति मनद मन दम कहियत हैं तौन। क्षमा सहन परवादही त्याग अकार्य जौन॥
॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥
ज्ञान कहत कासों कहत समता कासों भूप। दया कहत कासो परा आर्जवको का रूप॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥
तत्व बोध सो ज्ञानहै समता चिन्ता सोध। सबको सुख चहिबो दया आर्जव समता बोध॥
॥ * ॥यक्षउवाच॥ * ॥
दुर्जय अरि को पुरुष को व्याधि अनन्त सो कौन। साधु असाधुनको कहो लक्षण भूपति जान॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥
शत्रु सुदुर्जय क्रोधहै लोभ सो व्याधि अनन्त। सबकें हित ते साधुहै अहित असाधुहि भन्त॥
॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥
मोह कहा है जगतमे कासों कहियत मान। आलस कासों कहत हैं कहा शोक दुखदान॥
॥ युधिष्ठिरउवाच ॥
धर्म भूलिबो मोहहै मान आत्म अभिमान। आलस तजिबो धर्म पथ कहत शोक अज्ञान॥
यक्षउवाच॥ थिरताको अरु धैर्यको कहिये रूप अनूप। परमस्नान कहा कहा महतदान है भूप॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

स्थिरता धर्मस्थिति कहैं धीरज इन्द्री रोध । शुचि मन करिबो स्नान दान अशु रक्षण करि बोध॥
यक्षउवाच॥को पण्डित को मूर्ख हैं कहिए भूपति तौन। काम कहा मत्सर कहा है जगमे मतिभौन

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

पण्डित ज्ञाता धर्मको मूर्ख जो नास्तिक पाय।जगतहेतु सो काम है मत्सर जौन उताय। यक्षउवाच।
पावतनर्क अक्षय्यकोंकहज्ञमनुजकेहिहेत। युधिष्ठिरउवाच।आयोब्राह्मणक्षुधितकोंमांगे अन्न न देत॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

देव पितर अरु धर्म सास्त्रमे बेद विप्रमे जौन।मिथ्यावादी लहत है नर्क अक्षय्य हि तौन॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

कुल स्वाध्याय सुवृत्तते बेदपढेतें कौन । प्राप्त होत ब्राह्मण्यको कहज्ञ भूप तुम तौन॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

इनते नहिँ ब्राह्मण्यकौ। यक्ष लहत को रूप। कारण है ब्राह्मण्यको एक सुवृत्त अनूप॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

को मोदत आश्चर्य्य का पन्था वार्ता कौन। कहज्ञ प्रश्न भूपति जियैं तव भ्राता बलभौन॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

पचँए छटए दिवस लहि साक खात नर जौन। अऋणी अपने धाम बसि जलचर मोदत तौन॥
भूत जात दिनदिन चले निर्मित यमके भौन। अचल विचारत आपुको। शेष रहत हैं जौन॥
तर्क स्मृति श्रुति धर्मशास्त्रको भिन्न भिन्न मत मर्म । गए महाजन जौन पथ है सोई पथ धर्म॥
जगकटाहमे मोह रवि अग्नि समिध दिन रैन । भूतन पचवत काल यह बात और कछु हैं न॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

बूझो हम जो प्रश्न तुम कहों यथारथ भूप। कहज्ञ पुरुष कासों कहत सर्व धनी नररूप॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

स्वर्ग भूमिमे पुण्यको जास शब्द विख्यात। रहत रहत तवलों पुरुष यश शरीर अवदात॥
तुल्य प्रिया प्रियमे रहत सुख दुख माहँ समान। सुसम गता मतमे सदा धनी सर्व सुखदान॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

सर्व धनीनरको कहो तुम लक्षण अनुरूप । तातें कहज्ञ सो एक तव भ्राता जीवै भूप॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

श्याम अरुणचख सालवृक्षसों महाबाज्ञ बरवक्ष। भ्रातम जीवै नकुल मम आये प्रथम जो यक्ष॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

भीम तवप्रिय महाबल अर्जुन धनुधर बीर । तिन्ह छोडि ज्यावत नकुल काऊ सो है मतिधीर ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

धर्म हनत हतकों करत रक्षित रक्षण धर्म । यक्षन तजि है धर्म हम जिअै नकुल अतिपर्म ॥

कुन्ती माद्री मम पिताके व्है भार्य्या पर्म । दोऊ रहै सपुत्र यह मममति यक्ष सधर्म ॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

सार्वकाम अनृशंस तुम धर्म बुद्धि गम्भीर । ताते भ्राता जियौ तव भरे महाबल बीर ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

उठे यक्षके बचनते ते पाण्डव बरबीर । क्षुधा पिपाशाते रहित आनद भरे शरीर ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

अपराजित व्है के रहत तुम एहि सरवरमाहँ । नही यक्ष सुरबर कोऊ कै बसु कै सुरनाह ॥

ए ममभ्राता महारथ तिन्है किये। सब रूप । फेरि कृपाते तव उठे आनद भरे अनूप ॥

कै तुम मेरे सुहृद कै पिता धर्म सुखरूप ।

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

सुदृढ़ पराक्रम पिता हम धर्मराज तव भूप ॥

देखन अए हम तुम्हे जानि सत्यको धाम । सत्य शौच तप दान है मम शरीर अभिराम ॥

हो तुम मेरे पुत्र प्रिय बर मांगऊ सुखदान

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

अरणी दीजै मृग हरण कियो प्रथम भगवान ॥

जातें होय न अग्निको लोप प्रथम बरदान ॥

॥ * ॥ यक्षउवाच ॥ * ॥

मृग व्है हम अरणीहरी तुम्हे जानिबेहेतु । वैशम्पायनउवाच । सोहमतुमकोंदेहिगेहेकुरुकुलकेकेतु ॥

बरमागऊतुमऔरजोहोयतुम्हेसुखदाय । युधिष्ठिरउवाच । द्वादशवीतावर्षभोनिकटत्रयोदशआय ॥

तामे हमै न मनुजकोउ चीन्हैहेभगवान । वैशम्पायनउवाच । धर्मराजकरिकैंकृपादीन्होसोबरदान ॥

आश्वासन करिकैं कहो धरे आपनो रूप । तुम फिरि हैा क्षितिपर तऊ कोउ न चीन्हिहैं भूप ॥

बर्ष तेरहो जैान यह तुम बिराटपुर माह । जाय बितावत गुप्त व्है सह भ्रातन्ह नरनाह ॥

तुम मानस सङ्कल्प करि देहो जैान स्वरूप । तैान तैान ए बन्धु तव धारण करि है भूप ॥

अरणि यह द्विजअग्निहित लेऊ पुत्र नृपधर्म । अरणीते हम और वर तुम्हे देहिगे पर्म ॥

तुम मेरे औरस तनय अंशज बिदुर सुजान।

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

तुम्हें लखो साक्षात हम देव देव भगवान॥

जो इच्छ प्रभु करि कृपा ले है हम वर तात। लोभ मोह अरु काम नहि मोहि करै उतपात॥

। सत्य तपस्या दानमे मम मति रहै सुधर्म।

॥ * ॥ धर्मउवाच ॥ * ॥

। इनगुणनं सम्पन्न तव है स्वभाव अतिपर्म।

यथा कहत तुम रहैगी तव मति तथा ललाम।

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

धर्मराज कहि कै गए ऐसे अपने धाम॥

गतश्रम व्है पाण्डव गए आश्रमको अभिराम। अरणी देकै द्विजनकें बंदे चरण ललाम॥

पिता पुत्र सम्बाद यह पाठ करैगो जैंान । जीहै पुत्र पैात्र सह शतसम्वतलों तीन॥

नही धर्मके मार्गमे सो चलि है सव धर्म। ऋद्धि सिद्धि मति वृद्धिकों तीन लहैगो पर्म॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे वनपर्वणि अरणिहरणेपाख्यानवर्णनोनाम द्विसप्ततितमोऽध्यायः॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बसत हैं बनवासमे सँग विप्र जे तपधाम । कहन तिनसों लगे ऐसें धर्मनृप अभिराम॥ वर्ष द्वादश बास बनमे कियो हम तुम साथ । गुप्त रहिवे तेरहों सो बर्ष आयो नाथ॥ कियो छल धृतराष्ट्रके सुत राजकारण जैंान । विदित तुमकों सकल है सों जगत जानत तैांन॥सह सुयोधन कर्ण सैांबल दुष्ट ए अतिमान।जानि हैं तो बिषम करि हैं बैर कर्म महांन॥ वैशम्पायनउवाच॥ बिदा मागो द्विजनसों इमि बोलि कै जब पर्म । सहित भ्रातन्ह चलत मूर्छित व्है गिरे नृपधर्म॥ लगे आश्वासन करण सब विप्र अति मतिऐन । धैाम्य तव इमि कहन लागे अर्थ गर्भित बैंन॥ सत्य सन्ध वदान्य विद्यामान तुम नृपधर्म । मोहकों नहिँ लहत तुमसे पुरुष है जे पर्म॥ देवतनकों परी है जब घोर आपद आय । शत्रुको तब हनो है तिन नियत रूप छपाय॥ नृसिंह बामन राम आदिक विष्णु धरि बहु रूप।दुष्ट निग्रह कियो तैसें करहु तुमहूँ भूप॥ एहि भाँतिकें सुनि ध्योम्यके सह नीतिके बर बैंन । नहीं छलसों शत्रुको बध बहो नृप मति ऐन॥ भीम बोले बैन नृपको करत हर्षित रूप।कियो साहस जिष्णु न हिँ तव बिना शासन भूप॥ करत माद्रीसुतन कों हम रहे बाँनर बीर।शत्रुके बिध्वंस करिवे योग्य ए गम्भीर॥ हम न त्यागो छोडि है तुम हनन

चढ़ि द्वी जाहि। चिप्र हनि हैं युद्धमे नृप शत्रु है तब ताहि ॥ देय आशिष द्विजन्ह सुनि ऐ भीमके वर बन। बिदा व्हैकै पाण्डवनसे गए अपने ऐन॥ सहित कृष्णा धौम्य पाण्डव कोश भरि चिति जाय। कियो बनमे बास लहि निशि शकुन अति सुखदाय ॥ भोर उठि कै पाण्डवन्ह चढ़ि गुप्त करिवे बास। मंत्र शास्त्र सु बेदबेत्ता धनुर्धर मतिराश॥ काल बिग्रह सन्धिको सबिधान जानत तंत्र। धर्मनृप तहँ सहित भ्रातन्ह करण लागे मंत्र॥ इसे उनसत्तरि बिहित करी व्यास अध्याय। चौषठिनौशत एकदश पद्य परम सुखदाय ॥ सुयश सुमन मयपुण्य फल पूरित यह बन पर्व। तास अर्थ दर्पण करो हम सहकथा अखर्व ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे बनपर्वणि त्रिसप्ततितमोऽध्यायः॥ ** ॥ इति महाभारतदर्पणे बनपर्व समाप्तं ॥ ****